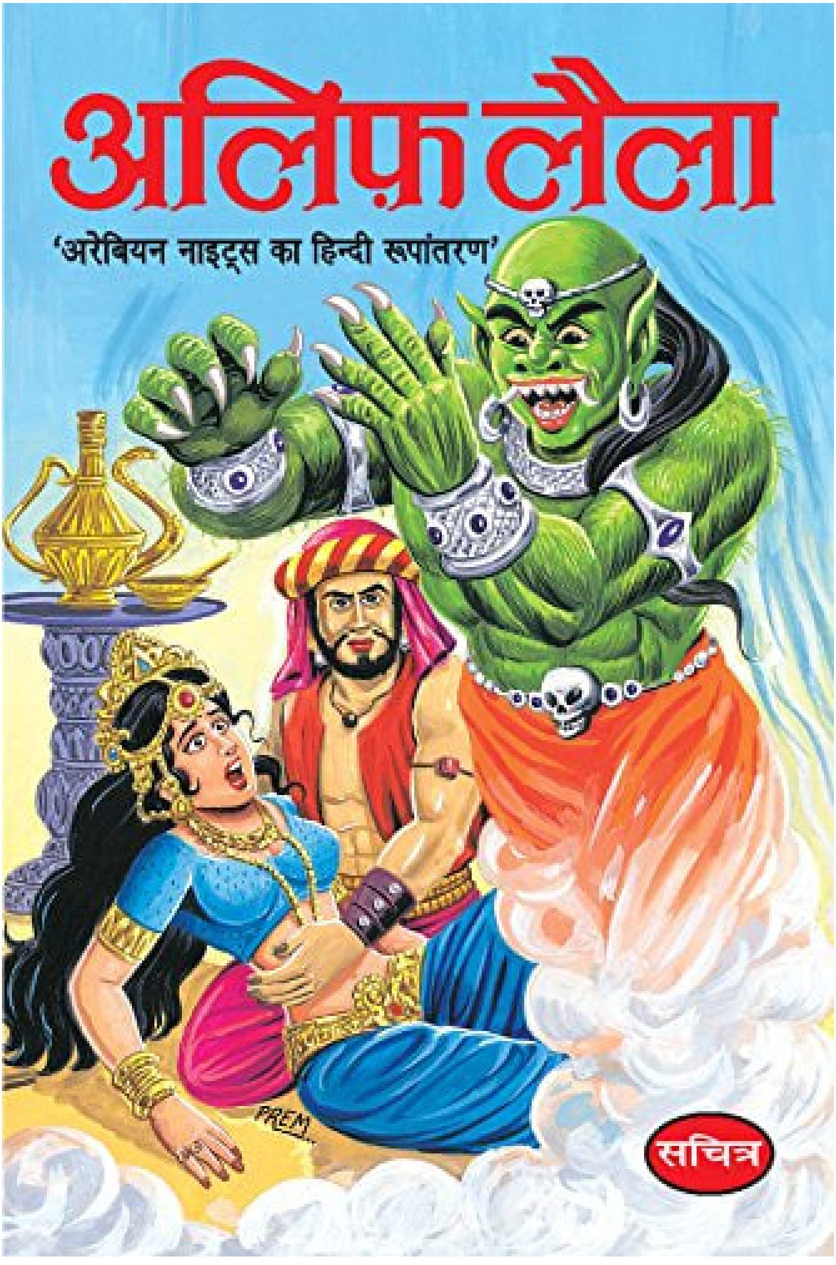
अलिफ़ लैला
'अरेबियन नाइट्स का हिन्दी रूपांतरण'
PREM
सचित्र

हजार और एक रातें; जिसे आमतौर पर अरेबियन नाइट्स एंटरटेनमेंट्स कहा जाता है।

सूचना

यह पुस्तक इंटरनेट आर्काइव द्वारा EPUB प्रारूप में तैयार की गई है।
पुस्तक के पृष्ठों को स्कैन करके स्वचालित रूप से EPUB प्रारूप में परिवर्तित किया गया है। यह प्रक्रिया ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन (ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन) पर आधारित है और इसमें कुछ त्रुटियां हो सकती हैं। पुस्तक में पढ़ने का सही क्रम नहीं हो सकता है, और इसमें कुछ अटपटे अक्षर, शब्दहीन शब्द और संरचना का गलत अनुमान हो सकता है। स्कैन किए गए पृष्ठ से कुछ पृष्ठ संख्याएँ और शीर्षक/पादक रह सकते हैं। छवियों की पहचान करने वाली प्रक्रिया में पृष्ठ पर कुछ ऐसे निशान मिल सकते हैं जो वास्तव में पुस्तक की छवियां नहीं हैं। आपके ई-रीडर पर दिखाई देने वाली छिपी हुई पृष्ठ संख्या मुद्रित संस्करण में क्रमांकित पृष्ठों से मेल खाती है, लेकिन यह पूरी तरह से मेल नहीं खाती है; पृष्ठ संख्याएँ मुद्रित संस्करण के समान दर से बढ़ेंगी, लेकिन हो सकता है कि हमने मुद्रित पुस्तक की दिखाई देने वाली पृष्ठ संख्याओं से पहले ही क्रमांकन शुरू कर दिया हो। इंटरनेट आर्काइव स्कैनिंग प्रक्रिया और परिणामी पुस्तकों को बेहतर बनाने के लिए काम कर रहा है, लेकिन इस बीच, हमें उम्मीद है कि यह पुस्तक आपके लिए उपयोगी होगी।
इंटरनेट आर्काइव की स्थापना 1996 में एक इंटरनेट लाइब्रेरी बनाने और सभी प्रकार के ज्ञान तक सार्वभौमिक पहुंच को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई थी। आर्काइव का उद्देश्य शोधकर्ताओं, इतिहासकारों, विद्वानों, दिव्यांगजनों और आम जनता को डिजिटल प्रारूप में मौजूद ऐतिहासिक संग्रहों तक स्थायी पहुंच प्रदान करना है। इंटरनेट आर्काइव में टेक्स्ट,

ऑडियो, चलचित्र और सॉफ्टवेयर के साथ-साथ संग्रहित वेब पेज भी शामिल हैं, और यह दृष्टिबाधित और अन्य दिव्यांगजनों के लिए सूचना तक पहुंच हेतु विशेष सेवाएं प्रदान करता है।

hocr-to-epub (v.1.0.0) के साथ बनाया गया

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान मात्र **0.00%** है।

पूँछ

मैं

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **7.75%** है।

लंदन : CHftTTO AKD

the THOUSAND & ONE Nights

VOL. II.

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.05%** है।

'द थाउजेंड एंड वन नाइट्स' (जिसे आमतौर पर 'अरेबियन नाइट्स एंटरटेनमेंट्स' कहा जाता है) का अरबी से अनुवाद, विस्तृत टिप्पणियों के साथ, एडवर्ड विलियम लेन द्वारा किया गया है। इसका संपादन उनके भतीजे एडवर्ड स्टेनली टूल ने किया है। अनुवादक द्वारा टिप्पणी की गई प्रति से, स्टेनली लेनरपूल की प्रस्तावना और विलियम हार्वे के डिजाइनों से लिए गए चित्रों के साथ, यह तीन खंडों में एक नया संस्करण है। खंड II, लंदन, चैटो, विंडस, IQI2□

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.58%** है।

लंदन: विलियम क्लोव्स एंड संस लिमिटेड द्वारा मुद्रित। ड्यूक स्ट्रीट, स्टैमफोर्ड स्ट्रीट, दक्षिण-पूर्व, और ग्रेट विंडमिल स्ट्रीट, पश्चिम।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **24.72%** है।

दूसरे खंड की विषयसूची, अध्याय 9, पृष्ठ 1: बक्कर के पुत्र अली और शेम्स-एन-नाहर की कहानी। ..... टिप्पणियाँ, जिनमें दो दंतकथाएँ शामिल

हैं। .... 48 अध्याय 10. राजकुमार कमर-एज़-ज़ेनियन और राजकुमारी बुदूर की कहानी। .... 70 दो राजकुमारों अल-अमजद और अल-असद की कहानी। .... 136 नीमे और नोआम की कहानी। .... 170 अल-अमजद और अल-असद की कहानी का निष्कर्ष, आदि। .... 192 टिप्पणियाँ। .... 19£ अध्याय 11. 'अला-ए-दीन अबू-श-शमत' की कहानी .... 223 नोट्स .... 283 उनकी मृत्यु के बाद हातिम एट-ताई की उदारता .... 295 ज़ैदेह के बेटे मान का किस्सा .... 297 अल-महदी के बेटे इब्राहिम के कारनामे .... 298 आइरीन ज़त अल-इमाद की खोज और इतिहास, विज्ञापन के पुत्र शेडदाद का स्थलीय स्वर्ग.......... . ... 303 इस-हक अल-मदसिले और खदीजेह और एल-मा-मू का किस्सा ...... 308 अध्याय XII□ अबू-1 की कहानी-हसन द वैग, या स्लीपर अवेकनेटल .... 313 नोट्स .... 335 अध्याय XIII□ मोहम्मद 'अली द ज्वैलर, या झूठे खलीफे नोट्स की कहानी। द्वितीय. 338 355

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.63%** है।

vi विषय-सूची। पृष्ठ। उदासीन प्रेमी का किस्सा 357 जाफ़र अल-बरमेकी का किस्सा 360 अध्याय 14. आलसी अबू-मोहम्मद की कहानी 302 टिप्पणियाँ 380 खालिद अल-बरमेकी के पुत्र याहिक का किस्सा 381

उसी का एक और किस्सा 383 अल-मा-मून और एक विद्वान का किस्सा 386 अध्याय 15. अली शेर और ज़ुमुर्रुद की कहानी 387 टिप्पणियाँ 421 अध्याय 16. • इब्न-मंसूर और लेडी बुदूर तथा जुबेर, 'ओमेयर एशशेबानी के पुत्र की कहानी 426 टिप्पणियाँ 442 भाग्य के उतार-चढ़ाव के उदाहरण .... 445 होसम-ए-दीन वली और एक चालाक 448 तीन वली 449 साहूकार और चालाक 451 इब्राहिम, अल-महदी के पुत्र का किस्सा 452 एक दानशील महिला का किस्सा 455 एक दानशील इसराइली का किस्सा 456 अबू-हसन एज़-ज़ियादी का किस्सा 457 ज़रूरतमंद मित्र 459 एक सपना 460 अल-मुतावेक्किल और महबूबे 461 अध्याय XVII. जादुई घोड़े की कहानी 463 टिप्पणियाँ 489 अध्याय XVIII. उन्स-अल-वुजूद और अल-वार्ड की कहानी (अकमम 492) नोट्स 516 एक आदमी और उसकी दासी का किस्सा 518 प्रेम के दो पीड़ितों का किस्सा 519 स्कूल में प्रेम 520 एक बेवफा पत्नी का किस्सा 521 एक सीधे-सादे आदमी और एक चालाक आदमी का किस्सा 522 अल-हाकिम बि-अमरी-अल्लाह और काहिरा के एक व्यापारी का किस्सा 523 अनूशीरवान का किस्सा 523 खुसरो और शीरीन और एक मछुआरे का किस्सा 525

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.04%** है।

विषय-सूची। 7. मुखपृष्ठ। याह्या अल-बरमेकी का किस्सा 526. मोहम्मद अल-एमीन और दासी अल-बेद्र अल-कबीर 526. अल-फदल और जाफर बरमेकी का किस्सा 527. एक धोखेबाज पत्नी का किस्सा 52g. एक हत्या का किस्सा 528. एक ढीठ चोर का किस्सा 531. मेसरूर और इब्न-अल-करीबी के बीच समझौता 533. हारून एर-इलाशीद के पुत्र, एक भक्त का किस्सा 534. एक अनपढ़ स्कूल मास्टर का किस्सा

537. बुख' 538. दो प्रेमियों पर संयम का परिणाम 539. एक विचलित प्रेमी का किस्सा 540. धर्मांतरित मठाधीश। 541 अबू-ईसा और कुर्रत-अल-ऐन 543 अध्याय XIX. काहिरा के अली की कहानी . . . . 546 टिप्पणियाँ 568 एक नगरवासी और एक बेदावीयेह का किस्सा 570 एक अत्याचारी राजा और मृत्यु का दूत 572 धर्मपरायणता और परिश्रम के लाभ 573 एक मुस्लिम योद्धा और एक ईसाई युवती का किस्सा . . 574 ईश्वरीय न्याय . 577

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.72%** है।

खंड II में चित्रों की सूची। उत्कीर्णकों के नाम। सजावटी शीर्षक .... ली। विषय-सूची का शीर्ष-भाग .... लैंडेल्स। विषय-सूची का अंत-भाग .... जेनिंग्स। चित्रों की सूची का शीर्ष-भाग .... ली। अबू-अल-हसन की दुकान और सजावटी सीमांकन। आदर्श वाक्य, "दयालु, कृपालु ईश्वर के नाम पर"। जैक्सन। चार स्तंभों वाला कक्ष .... एम. जैक्सन। दासी भीम-ए-नहार के पैर मलती हुई .... ग्रे। खलीफा अपने सेवकों आदि के साथ बगीचे में प्रवेश करते हुए। टी. विलियम्स। बक्कर के पुत्र अली का नाव में पलायन .... व्हिम्पर। चिकित्सक, बेकर के पुत्र अली के साथ .... वासेव दासी .... एलिज़. क्लिंट जौहरी को पत्र मिलना .... प्लाडकर शेम्स-एन-नाहर की जौहरी के पास पहली यात्रा .... थॉम्पसन। जौहरी के घर पर शेम्स-एन-नाहर और बेकर का पुत्र अली .... थॉम्पसन। घुड़सवारों से घिरे शेम्स-एन-नाहर और बेकर का पुत्र अली .... लैंडेल्स। शेम्स-एन-नाहर को महल वापस लाया गया .... ग्रीन। लुटेरों द्वारा शेम्स-एन-नाहर और बेकर के पुत्र अली से पूछताछ .... वासेय। लुटेरों द्वारा बेकर के पुत्र अली और उसके सेवकों

पर हमला। एस. विलियम्स। बेकर का पुत्र अली लड़की को गाते हुए सुन रहा है .... ग्रे। 1 4 7 9 11 14 17 23 2(3 30 34 37

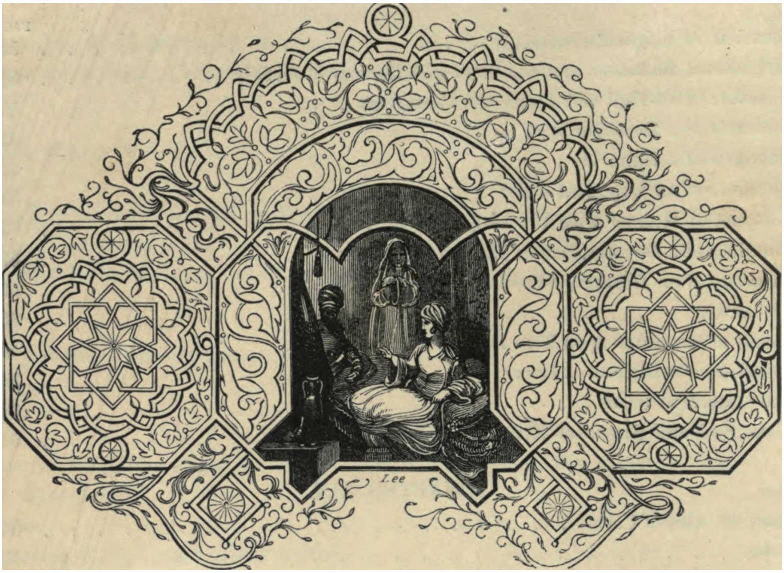

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.04%** है।

चित्रों की सूची। 9 उत्कीर्णकों के नाम। पृष्ठ। शेम्स-ए-नाहर पर शोक मनाते खलीफा (मिस विलियम्स)। 47 अध्याय 9 के नोट्स के लिए शीर्षक चित्र (लैंडेल्स)। 48 शेर अपने घर का निरीक्षण करते हुए (राइट और फोल्कर्ड)। 53 मृग और मोरनी (राइट और फोल्कर्ड)। 54 लोमड़ी भेड़िये को लुभाते हुए (राइट और फोल्कर्ड)। 56 बाज़ और तीतर (राइट और फोल्कर्ड)। 58 भेड़िये की मृत्यु (राइट और फोल्कर्ड)। 63 महिला कानू बजाते हुए (वेसी)। 69 अध्याय 10 के लिए शीर्षक चित्र। बच्चे का प्रदर्शन। आदर्श वाक्य, "उत्कृष्ट निर्माता की पूर्णता की प्रशंसा हो!"। टी. विलियम्स। 70 कमर-एज़-ज़ेमान अपने पिता के सामने खड़े हुए (मैरी एन कुक)। 72 कमर-एज़-ज़ेमान अदालत के सामने एम. जैक्सन ... 75 जिन्नियेह द्वारा कमर-एज़-ज़ेमान को सोते हुए पाना थॉम्पसन 78

जिन्नियेह का स्वर्ग की ओर उड़ान भरना ग्रीन 80 बुदूर के पिता द्वारा उससे विवाह करने का आग्रह करना क्लैस. जेनिंग्स ... 82 इफ़्रीत दहनश द्वारा बुदूर को ले जाना लैंडेल्स .... 85 मेमूनेह और दहनश द्वारा अपनी शर्त तय करना जैक्सन 88 इफ़्रीत कश्कश और दहनश द्वारा बुदूर को वापस लाना राइट और फोकर्ड 91 कुएँ में हिजड़ा ग्रे 93 कमर-एज़-ज़ेमान द्वारा वज़ीर को पीटना मिस एच. क्लार्क ... 95 बुदूर कहरामनेह को मारने का प्रयास कर रहा है (ग्रे)। 101 बुदूर कैद में है (ग्रे)। 103 वज़ीर को मरज़वान का जहाज़ डूबा हुआ मिलता है (फुसफुसाहट)। 105 वज़ीर मरज़वान को बचाता है (फुसफुसाहट)। 107 कमर-एज़-ज़ेमान और मरज़वान अपनी यात्रा पर निकलते हैं (राइट और फोकर्ड)। 111 कमर-एज़-ज़ेमान और मरज़वान अपनी यात्रा में विश्राम करते हैं। राइट एंड फोल्कर्ड 111 कामार-एज़-ज़ेमान ज्योतिषी के वेश में वासी 113 कामार-एज़-ज़ेमान और बुदूर राजा अल-घायूर से विदा लेते हुए राइट एंड फोल्कर्ड 113 उनकी यात्रा राइट एंड फोल्कर्ड 118 ताबीज वाला पक्षी राइट एंड फोल्कर्ड 119 बुदूर अपने पति के कपड़ों में थॉम्पसन . . . .122 पक्षियों की लड़ाई वासी 128 कामार-एज़-ज़ेमान माली को खजाना दिखाते हुए . . . मिस विलियम्स . . 130 समुद्र में जहाज व्हिम्पर . . . .133 क्ल-अमजद और अल-असद थॉम्पसन .... 133 अल-असद द्वारा मारी गई बूढ़ी औरत मिस एच. क्लार्क . . 140 रेगिस्तान में कोषाध्यक्ष, संदूकों में दो राजकुमारों के साथ (लैंडेल्स) .... 142 कोषाध्यक्ष का घोड़ा भाग रहा है (लैंडेल्स) .... 145 शेर और कोषाध्यक्ष (टी. विलियम्स) ... 147 रेगिस्तान में दो राजकुमार (ग्रे) 149 रेगिस्तान में भाषण कला (एम. जैक्सन) ... 150 अल-अमजद अपने कपड़े धो रहा है (कुक) 154 युवती बहादिर को पीट रही है (जैक्सन) 159 रानी मरजानेह का शहर (जैक्सन) 163 नाविक अल-

असद को सोते हुए पाते हैं (ग्रे) 166 बहरीन की बेटी अल-असद से मिलने आती है (थॉम्पसन) .... 168 बूढ़ी औरत प्रार्थना कर रही है (सी. जेनिंग्स) ... 173 नीमे की महिला दासियाँ खुद को छिपा रही हैं (जेनिंग्स) ... 177 नेमेह अपने पिता और चिकित्सक टी. विलियम्स के साथ, 179 नोआम नेमेह का नाम थॉम्पसन देखकर जाग उठा। 132 खलीफा की बहन ने नेमेह विलियमसन को खोज निकाला। 186

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **24.73%** है।

चित्रों की सूची। उत्कीर्णकों के नाम। पृष्ठ संख्या। खस्लीफेह की बहन नेमेह और नोआम के लिए विनती करती हुई। . . लैंडेल्स . . . ,191 दूसरी सेना का आगमन व्हम्पर . . . .195 अध्याय X का अंतिम अंश। — कमर-एज़-ज़ेमान अपने पिता से मिलते हुए। . . .198 अध्याय X की टिप्पणियों का प्रारंभिक अंश। — (टिप्पणी 67 का चित्र)। . . .199 अध्याय X की टिप्पणियों का अंतिम अंश लैंडेल्स .... 222 अध्याय XI का प्रारंभिक अंश ग्रीन 223 सोता हुआ बच्चा थॉम्पसन .... 224 'अला-एद-दीन का अपनी माँ के अपार्टमेंट में अचानक प्रकट होना। . . ग्रे 226 सूक, या बाज़ार की गली विलियमसन . . . 220 बेदावी मृतकों को भाले से मारते हुए (अक्कम लैंडेल्स) .... 234 अला-ए-दीन पर भौंकते कुत्ते (राइट और फोल्क ए आरडी) 236 जुबैदेह नमाज़ की चटाई उठाते हुए (जेनिंग्स) .... 242 खलीफा और उनके साथी दरवेशों के वेश में (मिस एच. क्लार्क) .... 246 अला-ए-दीन के दरवाजे पर दो हिजड़े (ए. जे. मेसन) .... 251 जेल में अहमद कामाकिम (थॉम्पसन) .... 256 अहमद कामाकिम चोरी की वस्तुएं जमा करते हुए (ग्रे) 259 मारे गए दो यहूदी (ग्रीन) ..... 264 अमीर खैद और बच्चा एशियन (टी. विलियम्स) .... 266 एशियाई वेसी द्वारा जासूस को मार गिराया गया 269 मुस्लिम

जहाज पर कब्जा लैंडेल्स .... 273 कब्र से जिन्न का पुनरुत्थान ग्रीन 277 अध्याय XI का अंतिम अंश - अहमद कामाकिम का निष्पादन लैंडेल्स .... 282 अध्याय XL की टिप्पणियों का प्रारंभिक अंश - शाह-बंदर अपनी दाढ़ी का अवलोकन करते हुए लैंडेल्स .... 283 हातिम एत-ताई ज़ू-1-केला के सामने प्रकट हुए जैक्सन .... 296 ज़ू-1-केला और हातिम के पुत्र अदी की मुलाकात लैंडेल्स .... 297 युवतियाँ मान को पानी पिलाती हुई थॉम्पसन .... 298 नाई अपने दरवाजे पर खड़ा है मिस विलियम्स . . 299 अल-महदी के पुत्र इबियाहीम द्वारा सैनिक को गिराया गया लैंडेल्स . . . 301 इरेम ज़ात अल-'एमा*द की खोज व्हिमपर .... 304 'आद के पुत्र शेद्दई और उसके परिवार और सैनिकों का विनाश जैक्सन . . . .307 टोकरी में इस-हदक अल-म6सिली ग्रे 308 लालटेन विलियमसन . . . 312 अध्याय XII का मुख्य भाग। — अबू-1-हसन को महल ले जाया गया। ग्रे 313 खलीफा के सोफे पर अबू-1-हसन टी. विलियम्स 317 महल के दृश्य। राइट और फोल्कर्ड 317 वही राइट और फोल्कर्ड 318 वही राइट और फोल्कर्ड 3 अबू-1-हसन अपने शानदार वस्त्र की प्रशंसा करते हुए मिस एच. क्लार्क . . 319 महल के दृश्य, इत्यादि राइट और फोल्कर्ड 320 अबू-1-हसन मेज पर, दस दासियों द्वारा सेवा की जा रही है .... ग्रीन 321 इमाम और चार शेखों पर अबू-1-हसन के आदेशों का निष्पादन, इत्यादि लैंडेल्स ... 321 महल के दृश्य लैंडेल्स .... 322 अबू-1-हसन कैद में राइट और फोल्कर्ड 323 मेमलुक अबू-1-हसन का कान काट रहा है वैसी ... 396 अबू-1-हसन अपनी साजिश कबूल कर रहा है? वैसी अध्याय XII के नोट्स का शीर्षक - अबू-1-हसन ब्लाइंडसे पर बैठा है * लैंडेल्स .... 335 अध्याय XIII का शीर्षक - झूठे खलीफा की नाव का आगमन व्हिम्पर , , .338

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

26.38% है।

चित्रों की सूची। X1 उत्कीर्णकों के नाम। पृष्ठ। झूठा खलीफा अपने महल में प्रवेश करते हुए ग्रे 342 महिला दुन्या हार की जाँच करते हुए • थॉम्पसन .... 347 अध्याय XIII का उपसंहार।— झूठे खलीफा की नाव। थॉम्पसन .... 354 अध्याय XIII के नोट्स का उपसंहार लैंडेल्स .... 355 उदासीन प्रेमी राइट और फोकर्ड 359 अध्याय XIII के नोट्स का उपसंहार।— बेडा वी व्हिम्पर . . . .361 अध्याय XIV का उपसंहार। • थॉम्पसन .... 362 आलसी अबू-मोहम्मद का अंगरक्षक राइट और फोकर्ड 364 मनुष्य और बंदर मेसन जैक्सन . . 367 अबू-मुज़फ़्फ़र द्वारा आलसी अबू-मोहम्मद को बंदर भेंट करना (जैक्सन) .... 370 आलसी अबू-मोहम्मद द्वारा भूरे सर्प का वध करना .... टी. विलियम्स .... 374 आलसी अबू-मोहम्मद का आकाश से समुद्र में गिरना .... लैंडेल्स .... 376 अध्याय 14 का समापन - आलसी अबू-मोहम्मद के आह्वान का पालन करते हुए इफ़्रीत (थॉमस गिल्क्स) .... 379 अध्याय 14 के नोट्स का आरंभिक भाग (लैंडेल्स) .... 380 मंसूर का अपने परिवार से विदा लेना (मिस एच. क्लार्क) .... 381 अल-एराक के व्यक्ति द्वारा जाली पत्र प्रस्तुत करना (मिस विलियम्स) .... 383 घोड़े लैंडेल्स .... 385 अध्याय XV का शीर्षक जैक्सन 387 ज़ुमुरुद द्वारा अली शेर को सोने का थैला देना ग्रे 394 क्रेट वाली बूढ़ी औरत विलियमसन ... 400 ज़ुमुरुद का खिड़की से उतरना स्लेडर 403 ज़ुमुरुद का सिपाही के घोड़े के साथ भागना लैंडेल्स .... 405 ज़ुमुरुद द्वारा बार्सूम का पता लगाना राइट और फोकर्ड 409 ज़ुमुरुद के भागने का जवडन द्वारा पता लगाना राइट और फोकर्ड 412 अली शेर की याद में ज़ुमुरुद का रोना .... ए. जे. मेसन . . . 415 अली शेर मस्तबा पर सो रहा है मिस एच. क्लार्क . . 417 अध्याय XV का अंतिम भाग। — दान देना लैंडेल्स 420

अध्याय 15 के नोट्स का शीर्षक लैंडेल्स - . . . 421 अध्याय 15 के नोट्स का समापन — कढ़ाई करती महिला . . . ए. जे. मेसन . . . 425 अध्याय 16 का शीर्षक — हारून-रशीद और मेसरूर जैक्सन 426 बुदूर महिला के घर के द्वार पर इब्न-मंसूर . . जेनिंग्स .... 429 दासी बुदूर महिला को चूमती है स्लेडर 431 जुबेर बेहोश हो जाता है टी. गिल्क्स 434 दास इब्न-मंसूर को फटकारता है बैस्टिन 436 अध्याय 16 का समापन — जुबेर और बुदूर महिला का विवाह मिस विलियम्स . . 441 अध्याय 16 के नोट्स के लिए शीर्षक - लैंडेल्स .... 442 भाग्य के उतार-चढ़ाव। - समृद्धि - व्हिम्पर .... 445 वही। विपत्ति - एम. जैक्सन ... 447 सिपाही का पर्स लेकर भागता हुआ चोर - ग्रे 448 बुलक के वाले के पास संदूक लाते हुए लुटेरे ... लैंडेल्स ... 450 दयालु महिला और उसकी दो रोटियाँ .... जैक्सन ... 455 एक तीर्थयात्री (वासी) 457 फव्वारे के नीचे खुदाई (बास्टिन) 460 अध्याय 17वीं का शीर्षक (जैक्सन) 463 सना में महल की छत पर उतरना (जैक्सन) 466 अपने सिर पर धूल फेंकता हुआ हिजड़ा (स्लेडर) 469 सना में सैनिकों के बीच जादुई घोड़े पर सवार राजा का पुत्र (फोल्कर्ड) 473 सना का राजा और उसकी पत्नी फारसी राजकुमार से याचना करते हुए (एम. जैक्सन) 476 राजकुमारी की खोज में राजा का पुत्र (टी. विलियम्स) 481 पागलपन का नाटक करती राजकुमारी (यासी) 484

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.30%** है।

चित्रों की सूची। उत्कीर्णकों के नाम, पृष्ठ संख्या, राजा के पुत्र और युवती का ग्रीक जंगलों से पलायन। फेल्डविक .... 487 अध्याय XVII के नोट्स का शीर्षक। लैंडेल्स .... 489 अध्याय XVII के नोट्स का अंतिम भाग। ली 491 अध्याय XVIII का शीर्षक। टी. विलियम्स ... 492

रेगिस्तान में उन्स-अल-वुजूद। विलियमसन ... 498 उन्स-अल-वुजूद और शेर। मिस एच. क्लार्क ... 498 लौकी पर उन्स-अल-वुजूद। व्हिम्पर .... 503 अल-वार्ड फी-1-अकम और नाविक। ग्रे 507 जिन्न अपने प्रिय को ले जा रही है। ग्रीन 510 अध्याय XVIII का अंतिम भाग। जेनिंग्स .... 515 अध्याय XVIII के नोट्स के लिए हेडपीस लैंडेल्स .... 516 इब्न-मामर की उदारता टी. विलियम्स ... 519 स्कूल में प्यार मिस एच. क्लार्क ... 520 सीधा-सादा और चालाक जैक्सन 522 अनूशी वान और किसान लड़की लैंडेल्स .... 524 सईद अल-बहिली को समृद्धि की बहाली विम्पेउ ... 527 अपने बगीचे में बूढ़ा आदमी बास्टिन ..... 529 धृष्ट चोर बास्टिन 532 कब्रों के बीच सरकंडों का बूथ विम्पेउ .... 530 ईसाई लड़कों द्वारा मुस्लिम प्रेमी पर पत्थर फेंके गए टी. विलियम्स ... . . 542 अध्याय XIX का शीर्षक (ग्रे) 546 किलोमीटर, और मंसर-अल-अतीका का भाग, इत्यादि (श्री ई. डब्ल्यू. लेन के एक रेखाचित्र से) व्हिम्पर .... 550 नील नदी की एक नाव (जैक्सन) .... 551 सोने की वर्षा (विलियमसन) .... 555 व्यापारी और उनके हरम, काहिरा के अली के कारवां के आगमन की प्रतीक्षा में (फेल्डविक) .... 558 जौन का फैलाव (जीकीन) 559 काहिरा के अली द्वारा खजाने के संदूक खोलना (एम. ए. विलियम्स) .... 560 सुल्तान को हसन भेंट किया गया (एम. जैक्सन) .... 564 अध्याय XIX का अंतिम भाग - कदी और परिचारक उलेमा .... स्लेडर 568 अध्याय XIX के नोट्स का शीर्षक (लैंडेल्स 569 टाउनसमैन और बेदावसेयेह) फोल्कर्ड 571 मुस्लिम वानीउर और ईसाई युवती ग्रे 576 अध्याय XIX के नोट्स का अंतिम भाग (अरबी फूलदान, श्री गौरी और जोन्स के महान कार्य से अनुमति लेकर प्रतिलिपि बनाई गई) ली 578

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

19.80% है।

अध्याय 9. ^^ एक सौ तिरपनवीं रात से शुरू होकर एक सौ उनसठवीं रात को समाप्त होता है। y» 5! बक्कर के पुत्र अली और शेम्स- -^ fe^. एन-नाहल की कहानी। m प्राचीन काल में, खलीफा हारून एर-रशीद के शासनकाल में, एक व्यापारी था जिसका एक पुत्र था जिसका नाम अबू-1- _^क हसन अली, ताहिर का पुत्र था,2 > r जो प्रचुर संपत्ति का स्वामी था, \ सुंदर व्यक्तित्व का था, और उसे देखने वाले हर व्यक्ति का प्रिय था; और

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.22%** है।

2 बक्कर के पुत्र अली की कहानी: वह खलीफा के महल में बिना अनुमति के प्रवेश किया करता था; और खलीफा की सभी रखैलें और उसकी अन्य दासियाँ उससे प्रेम करती थीं; और वह राजा के साथ संगति करता था, उसे कविताएँ सुनाता था और उसे विचित्र किस्से सुनाता था। लेकिन फिर भी वह व्यापारियों के बाज़ार में खरीद-फरोख्त करता था; और उसकी दुकान पर फारसी राजाओं के पुत्रों में से एक युवक बैठा करता था,3 जिसका नाम बक्कर का पुत्र अली था।4 यह युवक सुंदर कद-काठी, सुडौल शरीर, गुलाबी गालों, जुड़ी हुई भौहों, मधुर वाणी, हंसमुख मुखमंडल और आनंद-प्रसंग का प्रेमी था। एक बार वे दोनों साथ बैठे बातें कर रहे थे और हंस रहे थे, तभी अचानक दस दासियाँ चंद्रमाओं के समान आईं, और उनमें से प्रत्येक सुंदरता, आकर्षण और सुडौल कद-काठी से परिपूर्ण थी; और उनमें एक युवती थी जो कढ़ाईदार काठी वाले खच्चर पर सवार थी, जिसके रकाब सोने के थे, और उसने नाजुक कपड़े का इज़ार ओढ़ा हुआ था, और उसकी कमर पर सोने की कढ़ाई वाली रेशम की कमरबंद थी। जब वे अबू हसन की दुकान पर पहुँचे, तो वह

उतरी और उसकी दुकान पर बैठकर उसे सलाम किया, और उसने भी उसे सलाम किया। जब बक्कर के बेटे अली ने उसे देखा, तो वह मोहित हो गया और उठने की इच्छा हुई; लेकिन उसने उससे कहा, अपनी जगह पर बैठो। हमारे आने पर तुम क्यों चले गए? यह उचित व्यवहार नहीं है। तो उसने उत्तर दिया, अल्लाह की कसम, हे मेरी स्वामिनी, मैं उस चीज़ से भागता हूँ जिसे मैंने देखा है। और कवि का कथन कितना उत्कृष्ट है! वह सूर्य है: उसका स्थान स्वर्ग में है: इसलिए उचित धैर्य के साथ हृदय को शांत करो: क्योंकि तुम उसके पास नहीं जा सकते; और न ही वह तुम्हारे पास आ सकती है। जब उसने यह उत्तर सुना, तो वह मुस्कुराई और अबू हसन से बोली, "इस युवक का नाम क्या है और यह कहाँ से आया है?" उसने उत्तर दिया, "यह अजनबी है: इसका नाम अली है, जो बक्कर का पुत्र है, और यह फारसी राजा का पुत्र है; और अजनबी का आदर किया जाना चाहिए।" तब उसने उससे कहा, "जब मेरी दासी तुम्हारे पास आए, तो तुम इसे मेरे पास ले आना।" इस पर अबू हसन ने उत्तर दिया, "सिर पर।" तब वह उठी और चली गई। अब बक्कर के पुत्र अली की ऐसी हालत हो गई कि उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे; थोड़ी देर बाद, दासी अबू हसन के पास आई और उससे बोली, "मेरी मालकिन तुम्हें और तुम्हारे साथी को बुला रही हैं।" तब अबू हसन उठे और अपने साथ बक्कर के बेटे अली को लेकर वे दोनों हारून एर कशीद के महल में गए, और उसने उन्हें एक निजी कक्ष में ले जाकर बैठाया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.46%** है।

और शेम्स-एन-खार। 3 उनके सामने मेजें लगाई गईं, और उन्होंने भोजन किया और अपने हाथ धोए। फिर वह उनके लिए शराब लाई, और उन्होंने उसका आनंद लिया; जिसके बाद, उसने उन्हें उठने के लिए कहा।

इसलिए वे उठे और उसके साथ चले गए, और वह उन्हें एक दूसरे निजी कक्ष में ले गई, जो चार स्तंभों पर बना था, विभिन्न प्रकार के फर्नीचर से सजा हुआ था, और अत्यंत सुंदर ढंग से सजाया गया था, मानो वह स्वर्ग के महलों में से एक हो, जिससे वे वहाँ की दुर्लभ वस्तुओं को देखकर चकित रह गए। और जब वे इन असाधारण वस्तुओं को देखकर आनंदित हो रहे थे, तभी देखो, दस दासियाँ एक सुंदर और अभिमानी चाल से पास आईं, जो चंद्रमाओं के समान थीं, दृष्टि को चकाचौंध कर रही थीं और कल्पना को भ्रमित कर रही थीं। वे पंक्तियों में खड़ी थीं, स्वर्ग की काली आँखों वाली अप्सराओं की तरह दिख रही थीं; और उनके पीछे दस और दासियाँ आईं, जिनके हाथों में वीणा और अन्य वाद्य यंत्र थे; उन्होंने दोनों अतिथियों का अभिवादन किया, वीणा बजाई और गीत गाए; और उनमें से प्रत्येक ईश्वर के सेवकों के लिए एक प्रलोभन थी। इनके बाद, उन्हीं की तरह दस और दासियाँ आईं, ऊँची छाती वाली, समान आयु की, काली आँखों और लाल गालों वाली, जुड़ी हुई भौहों वाली और उदास दिखने वाली; ईश्वर के सेवकों के लिए एक प्रलोभन और देखने वालों के लिए एक आनंद; और उन्होंने विभिन्न रंगों के रेशमी वस्त्र पहने थे, जो मन को चकित कर देते थे। वे द्वार पर खड़ी हो गईं; और उनके पीछे दस और दासियाँ आईं, जो उनसे भी अधिक सुंदर थीं, भव्य वस्त्रों में सजी हुई; और वे भी द्वार पर खड़ी हो गईं। अंत में द्वार से बीस दासियाँ निकलीं, और उनमें से एक का नाम शेम्स-एन-नाहर था, जो तारों के बीच चंद्रमा के समान थी। उसके घने बाल उसके गले में हार की तरह सजे हुए थे; उसने नीली पतलून, सोने की कढ़ाई वाला रेशमी इज़ार और कमर पर तरह-तरह के गहनों से सजी कमरबंद पहन रखी थी। वह गरिमापूर्ण चाल से आगे बढ़ती रही और अंततः पलंग पर बैठ गई; और जब बेकर के पुत्र अलेक ने उसे देखा, तो उसने ये छंद पढ़े: — • निश्चय ही यही वह है जो मेरी

बीमारी, मेरे उन्माद और मेरी वासना के बढ़ने का कारण है! उसकी उपस्थिति में मुझे लगता है कि मेरी आत्मा पिघल गई है, मेरी कामुकता की लालसा और मेरी हड्डियों के क्षय के कारण। फिर उसने अबू हसन से कहा, “यदि तुमने मेरे प्रति अच्छा व्यवहार किया होता, तो मुझे यहाँ आने से पहले ही इन बातों की सूचना दे दी होती, ताकि मैं मामले पर विचार कर पाता और धैर्य से इस विपत्ति को सहने की शक्ति प्राप्त कर पाता।” और उसने

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.80%** है।

वह रोया, कराह उठा और विलाप किया। तब अबू हसन ने उससे कहा, "हे मेरे भाई, मैं उसके लिए केवल भलाई चाहता था; परन्तु मैं तुम्हें यह बताने से डरता था, कहीं तुम इतने भावुक न हो जाओ कि उससे मिलने में बाधा आ जाए और उसके साथ तुम्हारा मिलन न हो पाए। इसलिए प्रसन्न और खुश रहो; क्योंकि वह तुम्हें सौभाग्य प्रदान करती है और तुम्हारा स्नेहपूर्वक स्वागत करती है।" — तब बक्कर के पुत्र अली ने पूछा, "इस युवती का नाम क्या है?" अबू हसन ने उत्तर दिया, "उसका नाम शेम्स-एन-नहार है और वह धनी राजकुमार हारून-एर-रशीद की रखेलों में से एक है, और यह स्थान खलीफा का महल है।" तब शेम्स-एन-नहार बक्कर के पुत्र अली के आकर्षण को निहारने लगी, और अली उसकी सुंदरता को निहारने लगा, और वे एक-दूसरे के प्रेम में लीन हो गए। और उसने दासी महिलाओं को आदेश दिया कि वे प्रत्येक अपनी उचित जगह पर एक पलंग पर बैठ जाएँ: इस प्रकार प्रत्येक महिला एक पलंग के सामने बैठ गई।

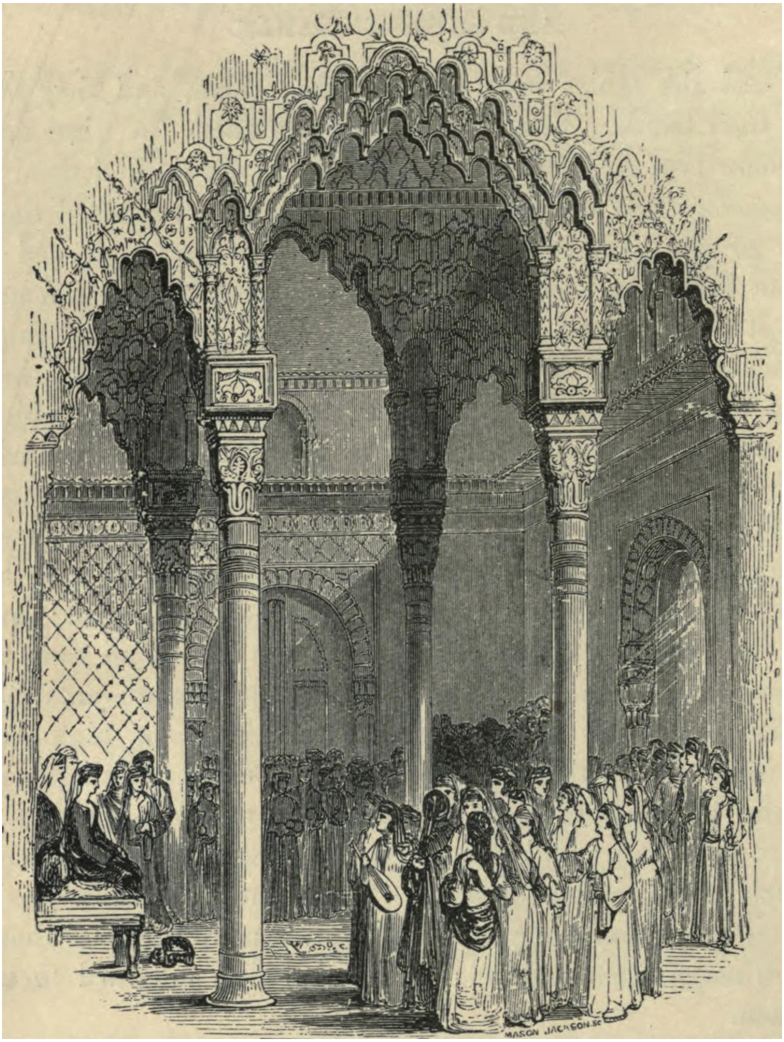

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.15%** है।

कहानी; प.फ. 'अली, बेकर का बेटा, आदि। 5 खिड़की; और उसने उन्हें गाने का आदेश दिया; जिस पर उनमें से एक ने उसका वीणा उठाया और इस प्रकार गाया: — .संदेश को दूसरी बार दोहराओ, और उत्तर ज़ोर से सुनो। हे सुंदरियों के राजकुमार, मैं अपने मामले की शिकायत करने के

लिए आपके पास आया हूँ! हे मेरे स्वामी! हे मेरे हृदय के समान प्रिय, और मेरे जीवन के समान अनमोल! मुझे एक चुंबन उपहार के रूप में, या ऋण के रूप में प्रदान करें। मैं इसे आपको ठीक उसी तरह लौटा दूँगा (आपका जीवन लंबा हो!) जिस तरह मैंने इसे लिया था; और यदि आप कुछ और चाहते हैं, तो उसे स्वीकार करें और संतुष्ट रहें। हे मुझे बीमारी के वस्त्र से ढकने वाले, स्वास्थ्य का वस्त्र आपको प्रसन्न करे! और बेकर का पुत्र 'अली मोहित हो गया; और उसने उससे कहा, मुझे इसी तरह के कुछ और छंद गाकर सुनाओ। इसलिए उसने वाद्ययंत्र के तारों को छुआ और ये पंक्तियाँ गाईं: — हे मेरे प्रियतम, अत्यधिक दूरी के कारण तूने मेरी पलकों को आँसुओं से भर दिया है। हे मेरी आँखों के आनंद, मेरी इच्छा, मेरी परम कामनाओं और मेरी आराधना के लक्ष्य! उस पर दया कर जिसकी आँखें व्याकुल और दुखी प्रेमी के आँसुओं में डूबी हैं! फिर शेम्स-एन-नाहर ने एक और दासी को गाने का आदेश दिया; और उसके बाद एक और को: और फिर बक्कर के पुत्र अली ने अपने पास खड़ी एक दासी से ऐसा ही करने का अनुरोध किया; और जब उसने अपना गीत समाप्त किया, तो उसने आह भरी और खूब आँसू बहाए; और शेम्स-एन-नाहर, उसे रोते, कराहते और विलाप करते देख, आवेश और प्रेम से जल उठी, और अत्यधिक प्रेम और व्याकुलता में डूब गई। इसलिए वह पलंग से उठी और कमरे के द्वार की ओर बढ़ी; और बक्कर का पुत्र अली भी उठा और उससे मिला; और वे एक-दूसरे को गले लगाकर द्वार पर बेहोश होकर गिर पड़े। इसलिए दासियाँ उनके पास आईं और उन्हें उठाकर कमरे में वापस ले आईं और उन पर गुलाब जल छिड़का। जब वे होश में आईं, तो उन्हें अबू हसन नहीं मिला; क्योंकि वह पलंग के किनारे छिपा हुआ था। दासी ने पूछा, अबू हसन कहाँ है? तब वह पलंग के किनारे से उसके पास आया; और उसने उसे प्रणाम किया और कहा, हे दयालु स्वामी, मैं

ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि वह मुझे आपका प्रतिफल देने में सक्षम बनाए! फिर उसने बक्कर के पुत्र अली से कहा, हे मेरे स्वामी, आपका प्रेम इतना अधिक हो गया है कि मुझे भी वैसा ही अनुभव करना पड़ा है; और हमारे पास जो कुछ भी विपत्ति आई है, उसे धैर्यपूर्वक सहने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। — ऐ मेरी प्रेमिका, अली बक्कर के बेटे ने उत्तर दिया, अल्लाह की कसम, तुम्हारे साथ मेरा मिलन मुझे संतुष्ट नहीं करेगा, न ही तुम्हारे लिए मेरे दिल में बसी लौ बुझेगी, न ही तुम्हारे लिए मेरे दिल में बसा प्यार मुझे तब तक छोड़ेगा जब तक मेरी आत्मा शरीर से अलग न हो जाए! यह कहकर वह रोने लगा, और उसके आँसू

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.33%** है।

अली की कहानी, उएक्कलज के मोज़े, आदि। उसके गालों पर बारिश की तरह आँसू बरसने लगे; और जब शेम्स-एन-नहार ने उसे इस प्रकार रोते हुए देखा, तो वह भी उसके साथ रोने लगी। इस पर अबू-हसन ने कहा, अल्लाह की कसम, मैं तुम्हारी हालत देखकर हैरान हूँ और तुम्हारी स्थिति से व्याकुल हूँ; क्योंकि तुम्हारी हालत अद्भुत है और तुम्हारा मामला असाधारण है! अगर तुम साथ होते हुए भी इस तरह रोते हो, तो अलग होने के बाद क्या होगा! यह विलाप और रोने का समय नहीं है, बल्कि खुशी और आनंद का समय है। तब शेम्स-एन-नहार ने एक दासी को इशारा किया, जो उठी और कुछ दासियों के साथ एक मेज लेकर लौटी, जिस पर चांदी के बर्तन थे और तरह-तरह के व्यंजन परोसे गए थे। दासी ने फिर मेज उनके सामने रख दी; शेम्स-एन-नाहर ने खाना शुरू किया और बक्कर के बेटे अली को भी खिलाया, जब तक कि वे तृप्त नहीं हो गए। फिर मेज हटा दी गई और उन्होंने अपने हाथ धोए। विभिन्न प्रकार की अगरबत्ती से भरे सुगंधित बर्तन और गुलाब जल से भरी छिड़काव की

बोतलें लाई गईं और उन्हें सुगंधित किया गया। इसके बाद, उन्हें सोने के खुदे हुए बर्तन भेंट किए गए, जिनमें कई प्रकार के पेय और ताजे और सूखे फल थे, जो भूख और देखने में आकर्षक थे। फिर एक दासी उनके लिए शराब से भरा एक कटोरा लाई। तब शेम्स-एन-नाहर ने दस दासियों को चुना और उन्हें उनके पास तैनात किया, और गायन करने वाली स्त्रियों में से दस दासियों को भी चुना। बाकी सभी दासियों को उनके कमरों में भेजकर, उसने वहाँ मौजूद कुछ दासियों को वीणा बजाने का आदेश दिया; और उन्होंने वैसा ही किया जैसा उसने आदेश दिया था। उनमें से एक ने गाया; और जब उसने अपना गीत समाप्त कर लिया, तो शेम्स-एन-नाहर ने एक प्याला भरा और उसे पी लिया, फिर उसे दोबारा भरकर बक्कर के पुत्र अली को दे दिया और एक दूसरी दासी को गाने का आदेश दिया; जिसके बाद, बक्कर के पुत्र अली ने अपना प्याला पी लिया और उसे शेम्स-एन-नाहर को लौटा दिया, जिसने उसे भरा और अबू-अल-हसन को दे दिया। फिर उसने एक वीणा ली और कहा, मेरे प्याले पर मेरे सिवा कोई नहीं गाएगा: और तारों को कसकर उसने ये छंद गाए: — प्रेम की आग उसके सीने में धधक रही है, उसके गालों पर आँसू बेतरतीब ढंग से बह रहे हैं। वह मिलन में भी रोता है, उनके वियोग से भयभीत होकर; उसके आँसू तब भी बहते हैं जब वे पास होते हैं और जब दूर होते हैं। फिर उसने कवि के निम्नलिखित शब्द गाए: — • हे प्याला धारण करने वाली, जिसने अपने बालों की उज्ज्वल मांग से लेकर अपने पैरों तक सुंदरता से सजाया है, हमारा जीवन ही तेरा बलिदान है! 7 तेरे हाथों से सूर्य की किरणें निकलती हैं, और तेरे मुख से प्लीएड्स चमकते हैं, और पूर्णिमा का चंद्रमा तेरे वस्त्र के ऊपरी किनारे से उगता है। 8 निश्चय ही तेरे प्याले, जिन्होंने हमें मदहोश कर दिया है, वे हैं जो तेरे "हाँ" के द्वारा चारों ओर वितरित किए जाते हैं।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.51%** है।

क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि तुम पूर्णिमा हो, जिसका घटता हुआ रूप तुम्हें नहीं, बल्कि तुम्हारे प्रेमियों को अनुभव होता है? क्या तुम कोई देवता हो, जो अपनी इच्छा से हत्या और पुनर्जीवन करते हो, और दूसरों से विमुख हो जाते हो? तुम्हारे स्वरूप से ईश्वर ने सौंदर्य की रचना की है, और तुम्हारे स्वभाव से हवा की सुगंध उत्पन्न की है। तुम इस श्रेणी के प्राणी नहीं हो; बल्कि तुम अपने सृष्टिकर्ता द्वारा भेजा गया एक देवदूत हो। जब बेक्कीर के पुत्र अली, अबू हसन और वहाँ उपस्थित अन्य लोगों ने शेम्स-एन-नहार द्वारा गाए गए इन छंदों को सुना, तो वे आनंद से झूम उठे, और खिलखिलाकर हँसे; परन्तु जब वे आनंद मना रहे थे, तभी एक दासी भय से काँपती हुई आई और बोली, “हे मेरी स्वामिनी, धनियों का राजकुमार आ गया है, और वह अफीफ, मेसरूर और अन्य लोगों के साथ द्वार पर है।” और जब उन्होंने उसकी बातें सुनीं, तो वे भय से लगभग मर ही गए; परन्तु शेम्स-एन-नाहर हँसी और बोली, डरो मत। और उसने दासी से कहा, जब तक हम यहाँ से चले जाते हैं, तब तक उन्हें उत्तर दे दो। फिर उसने कमरे के दरवाजे बंद करने और उन पर पर्दे डालने का आदेश दिया, जब तक वे अंदर रहे, और उसने बगल के बैठक कक्ष का दरवाजा भी बंद कर दिया, और फिर बगीचे में चली गई, और अपने पलंग पर बैठकर, एक दासी को अपने पैर मलने का आदेश दिया,10 शेष दासियों को अपने कमरों में जाने का आदेश दिया, और अपने साथ रहने वाली लड़की से द्वार खुला छोड़ने को कहा, ताकि खलीफा अंदर आ सकें। और मेसरूर अंदर आया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.29%** है।

8 बक़्क़र के मोज़े 'अली की कहानी, इत्यादि। और उसके साथ बीस लोग थे, जिनके हाथों में तलवारें थीं; उन्होंने शेम्स-एन-नाहर को प्रणाम किया, और उसने उनसे पूछा, तुम यहाँ क्यों आए हो? उन्होंने उत्तर दिया, मोमिनों का राजकुमार तुम्हें प्रणाम करता है: वह तुम्हें देखने की इच्छा से उदास हो गया है, और तुम्हें सूचित करता है कि उसने आज असाधारण आनंद और प्रसन्नता का अनुभव किया है, और अब तुम्हारी उपस्थिति से इसे पूरा करना चाहता है। तो क्या तुम उसके पास आओगी, या वह तुम्हारे पास आएगा? — और वह उठी, और ज़मीन चूमते हुए बोली, मैं मोमिनों के राजकुमार के आदेशों को सुनती और मानती हूँ। फिर उसने अपनी मुख्य महिला परिचारिकाओं और अन्य दासों को लाने का आदेश दिया, और वे

अंदर आए, और उसने उन्हें बताया कि वह खलीफ़ा के आदेशों का पालन करने जा रही है। स्थान पूरी तरह से तैयार था; लेकिन उसने हिजड़ों से कहा, "मोमिनों के सरदार के पास जाओ और उन्हें बता दो कि मैं जल्द ही उनका इंतज़ार कर रही हूँगी, जब मैं उनके लिए कालीन और अन्य सामान से जगह तैयार कर लूँगी।" तो हिजड़े जल्दी से मोमिनों के सरदार के पास गए, और शेम्स-एन-नाहर उठी और अपने प्रिय बक्कर के बेटे अली के पास गई, और उन्हें अपने सीने से लगा लिया और उनसे विदा ली। वह फूट-फूटकर रोया और बोला, "हे मेरी स्वामिनी, मुझे यह विदाई थोड़ी देर और करने दो; शायद तुम्हारे प्रेम के कारण इससे मेरे जीवन का अंत जल्दी हो जाए: लेकिन मैं अल्लाह से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे उस पीड़ा को सहने की शक्ति दे जिससे उसने मुझे पीड़ित किया है।" - "अल्लाह की कसम," शेम्स-एन-नाहर ने उत्तर दिया, "मेरे सिवा कोई भी इस पीड़ा में नहीं पड़ेगा;" क्योंकि तुम बाजार की गलियों में जाओगी, और ऐसे लोगों की संगति का आनंद लोगी जो तुम्हारा मनोरंजन करेंगे, और तुम खतरे से बची रहोगी, और तुम्हारा जुनून छिपा रहेगा। लेकिन मैं मुसीबत में पड़ जाऊँगा, खासकर इसलिए कि मैंने खलीफा से मिलने का समय तय किया है; क्योंकि शायद इसके परिणामस्वरूप मुझे बड़ा खतरा होगा, तुम्हारे लिए मेरी चाहत, प्रेम और जुनून के कारण, और तुमसे बिछड़ने के मेरे दुख के कारण। मैं किस ज़बान से गाऊँगा, किस दिल से खलीफा के सामने पेश होऊँगा, किस भाषा में अमीरुल मोमिनीन से बात करूँगा, किस नज़र से उस जगह को देखूँगा जहाँ तुम नहीं हो, मैं उस सभा में कैसे रहूँगा जिसमें तुम शामिल नहीं हो, और किस स्वाद से उस शराब को पीऊँगा जिसमें तुम मौजूद नहीं हो? — अबू हसन ने उससे कहा, घबराओ मत; बल्कि धैर्य रखो; और आज रात धनवानों के राजकुमार से बातचीत करने में लापरवाही न करें, उन्हें किसी भी प्रकार

की उपेक्षा न करें। और जब वे इस प्रकार बातें कर रहे थे, एक दासी आई और बोली, हे मेरी स्वामिनी, धनवानों के राजकुमार के सेवक आ गए हैं।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.65%** है।

वह उठी और दासी से बोली, "अबू हसन और उसके साथी को ले जाओ और उन्हें बगीचे की ओर खुलने वाली ऊपरी खिड़की तक ले जाओ और उन्हें अंधेरा होने तक वहीं छोड़ दो; फिर उन्हें बाहर निकालने का उपाय करो।" दासी उन्हें लेकर खिड़की तक गई और दरवाजा बंद करके चली गई; वे बगीचे की ओर देखते रहे। तभी खलीफा आ गए, उनके आगे लगभग सौ हिजड़े तलवार लिए चल रहे थे, और उनके चारों ओर बीस दासियाँ थीं, जो चाँद की तरह चमक रही थीं, सबसे कीमती वस्त्र पहने हुए थीं, और प्रत्येक के सिर पर माणिक और अन्य रत्नों से जड़ा मुकुट था, और हाथ में जलती हुई मोमबत्ती थी। खलीफा उनके बीच में चल रहे थे, जबकि वे चारों ओर से उन्हें घेरे हुए थीं, और मेसरूर, अफीफ और वसीफ उनके आगे चल रहे थे; और वह उनके बीच एक सुंदर चाल से आगे बढ़ा।12 शेम्स-एन-नाहर और उसके साथ की सभी दासियाँ उसके पास उठीं और बाग के द्वार पर उससे मिलीं, और उसके सामने ज़मीन चूमकर उसके आगे-आगे चलीं जब तक कि वह पलंग पर नहीं बैठ गया। तब बाग में मौजूद सभी दासियाँ और हिजड़े उसके चारों ओर खड़े हो गए, मोमबत्तियाँ जलाई गईं और वाद्ययंत्र बजाए गए, जब तक कि उसने अपने सेवकों को तितर-बितर होने और पलंगों पर बैठने का आदेश नहीं दिया; तब शेम्स-एन-नाहर खलीफा के बगल वाले पलंग पर बैठ गई और उससे बातचीत करने लगी। — इस पूरे समय, अबू-अल-हसन और बक्कर का पुत्र अली देख और सुन रहे थे; खलीफा उन्हें नहीं देख रहा था। — द्वितीय अध्याय

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.80%** है।

10 बक्कर के पुत्र अली की कहानी। खलीफ़े ने शेम्स-एन-नाहर से छेड़छाड़ शुरू की और उस कमरे को खोलने का आदेश दिया जहाँ वह बैठी थी; उन्होंने उसके दरवाजे और खिड़कियाँ खोल दीं और मोमबत्तियाँ जला दीं, जिससे अँधेरे में भी वह जगह दिन के उजाले की तरह जगमगा उठी; इसके बाद, हिजड़ों ने वहाँ पीने के बर्तन रख दिए। — इन चीजों को देखकर अबू-अल-हसन ने कहा, “सचमुच मैंने ऐसे बर्तन, पेय और दुर्लभ वस्तुएँ पहले कभी नहीं देखीं, न ही मैंने कभी ऐसी किसी चीज के बारे में सुना है जिसकी तुलना इन रत्नों की किस्मों से की जा सके! मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं सपना देख रहा हूँ! मेरी बुद्धि चकरा गई है और मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा है!” — लेकिन जहाँ तक बक्कर के पुत्र अली की बात है, शेम्स-एन-नाहर के चले जाने के बाद, वह अपने आवेश के कारण कुछ देर तक ज़मीन पर पड़ा रहा; और जब उन्हें होश आया, तो वे इस अद्वितीय दृश्य को निहारने लगे और अबू हसन से बोले, "हे मेरे भाई, मुझे डर है कि खलीफा हमें देख लेंगे या हमारे हालचाल जान लेंगे; और मेरा

डर मुख्य रूप से तुम्हारे कारण है; क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं भी उन्हीं में से हूँ जो नाश होने वाले हैं; और मेरी मृत्यु का कारण मेरे प्रेम और वासना तथा मेरे अति उत्साह और उन्माद के सिवा कुछ नहीं है; और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे इस पीड़ा से मुक्ति दिलाएँ।" बक्कर के पुत्र अली और अबू हसन, खलीफ़े और उनके आस-पास के दृश्य को खिड़की से तब तक निहारते रहे जब तक कि उनके सामने दावत पूरी तरह से तैयार नहीं हो गई। फिर खलीफ़े ने एक दासी की ओर देखा और कहा, "हे ग़राम, हमें अपना मधुर गीत सुनाइए।" इस पर उसने मनमोहक स्वर में ये पंक्तियाँ गाईं: "एक बेदावीयेह (महिला) का हर्ष, जिसका परिवार उससे बिछड़ गया है और जो हिजाज़ के विलो वृक्ष और उसके लॉरेल (एक प्रकार का लबादा) की ओर तड़पती है, जिसकी उमंग और आँसू यात्रियों के समूह को आग और पानी की तरह मनोरंजन करते देखकर उमड़ते हैं, वह उस हर्ष से अधिक नहीं है जो मुझे अपने प्रियतम के लिए महसूस होता है, जो मुझे उससे प्रेम करने में पापी समझता है।" और जब शेम्स-एन-नाहर ने यह गीत सुना, तो वह जिस पलंग पर बैठी थी, उससे बेहोश होकर गिर पड़ी। इसलिए दासी उठीं और उसे ऊपर उठाया। और जैसे ही बक्कर के पुत्र अली ने खिड़की से उसे देखा, वह भी बेहोश होकर गिर पड़ा; और अबू हसन ने कहा, निश्चय ही भाग्य ने तुम दोनों के बीच इच्छा को समान रूप से बाँट दिया है! लेकिन जब वे बातें कर रहे थे, तभी वह दासी जो उन्हें खिड़की तक लाई थी, उनके पास आई और बोली, हे अबू हसन, उठो, तुम और तुम्हारा साथी, और नीचे उतरो; क्योंकि दुनिया हमारे लिए तंग हो गई है, और मुझे डर है कि हमारा मामला

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.68%** है।

AX1) SHEMS EX-XAHAR. 11 भेद खुल जाएगा: इसलिए तुरंत

उठो, वरना हम मर जाएँगे। अबू-1 हसन ने उत्तर दिया, "क्या यह युवक मेरे साथ उठेगा? इसमें स्वयं उठने की शक्ति नहीं है।" — तब दासी ने उसके चेहरे पर गुलाब जल छिड़का जब तक कि वह संभल नहीं गया, और अबू-1 हसन और दासी ने उसे उठाया और खिड़की से नीचे ले आए, और थोड़ी दूर चले गए, जब दासी ने लोहे का एक छोटा दरवाजा खोला, और अबू-1 हसन और बक्कर के पुत्र अली को बाहर एक मस्तबा पर बिठा दिया। फिर उसने ताली बजाई,16 और एक नाविक के साथ एक नाव आई, और उसने उन्हें नाव पर चढ़ाया, और नाविक से कहा, "इन्हें दूसरे किनारे पर उतार दो।" और जब वे सवार होकर बाग से निकल गए, तो बेकर के पुत्र अली ने कमरे और बाग की ओर मुड़कर देखा और इन शब्दों में उन्हें विदाई दी: — मैं विदा लेने के लिए अपना एक कमजोर हाथ बढ़ाता हूँ, दूसरा हाथ अपने जलते हुए सीने पर, अपने हृदय के नीचे रखता हूँ। हे, हमारे मिलन का यह अंत न हो; और न ही यह मेरे जीवन का अंतिम सुख हो।

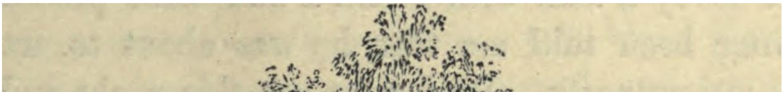

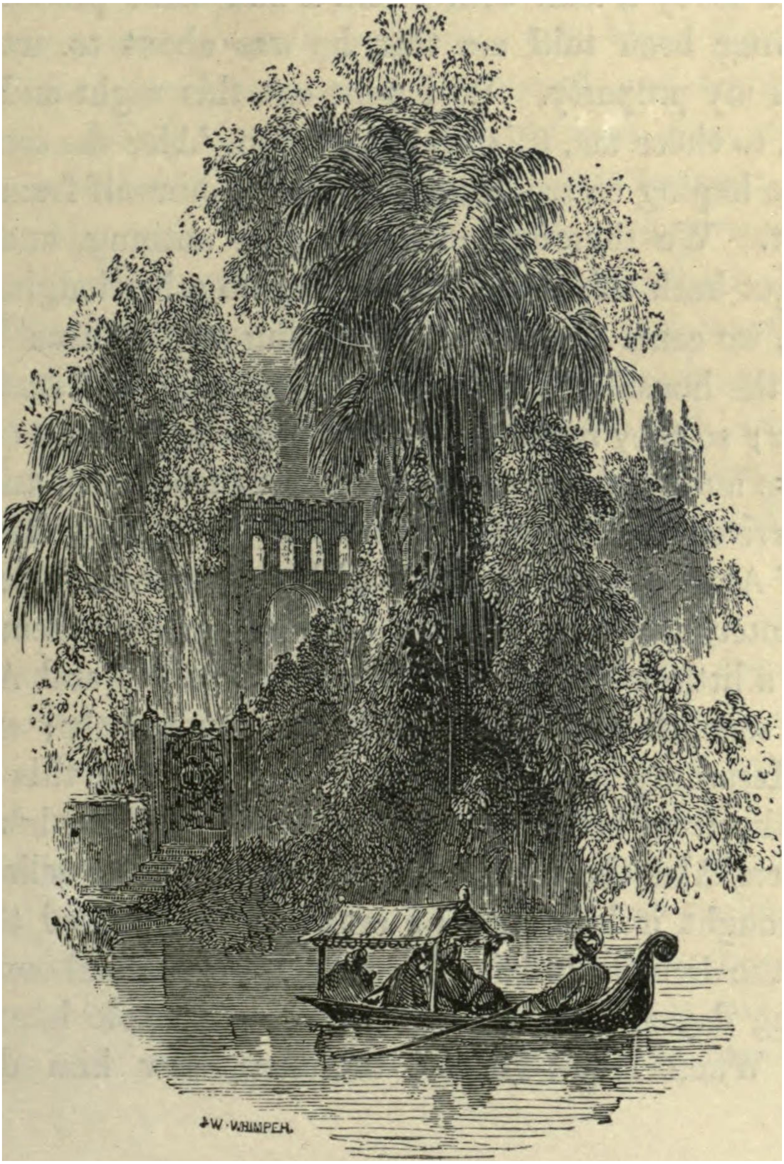

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.50%** है।

12 बक्कर के बेटे अली की कहानी, दासी ने नाविक से कहा, "इन्हें जल्दी ले चलो।" तो उसने चप्पू चलाकर नाव को तेज़ी से चलाया, और दासी के

साथ वे दूसरी तरफ़ चले गए। किनारे पर पहुँचते ही दासी ने उनसे विदा ली और कहा, "मेरी इच्छा थी कि मैं तुमसे अलग न होऊँ; लेकिन मैं इस जगह से आगे नहीं जा सकती।" और वह लौट गई। बक्कर का बेटा अली अबू हसन के सामने ज़मीन पर पड़ा था, उठने में असमर्थ था; तो अबू हसन ने उससे कहा, "यह सुरक्षित जगह नहीं है, और हम यहाँ डाकुओं और दुष्टों के कारण अपनी जान के डर से हैं।" इस पर बक्कर का बेटा अली उठा और थोड़ा आगे बढ़ा; लेकिन वह आगे नहीं चल सका। अबू हसन के उस इलाके में दोस्त थे; और वह अपने एक भरोसेमंद साथी के पास गया और उसके दरवाजे पर दस्तक दी; वह व्यक्ति तुरंत बाहर आया; और जब उसने उसे और उसके साथी को देखा, तो उसने उनका स्वागत किया और उन्हें अपने घर में ले गया, और उन्हें बैठाकर उनसे बातचीत की और पूछा कि वे कहाँ थे। अबू-1-हसन ने उत्तर दिया, "हम आज शाम बाहर आए थे, क्योंकि एक व्यक्ति के साथ मेरा कुछ आर्थिक लेन-देन था, और मुझे बताया गया था कि वह मेरी संपत्ति लेकर यात्रा पर जाने वाला है। इसलिए मैं आज रात बाहर गया और उसके पास गया, अपने साथी अली (बेकर का बेटा) को भी साथ ले गया ताकि मेरा मन बहला सके, और हम उससे मिलने की उम्मीद में आए थे; लेकिन वह हमसे छिप गया, और हम उसे देख नहीं पाए। इसलिए हम खाली हाथ लौट आए, और आज रात वापस जाना मुश्किल होने के कारण, और तुम्हारे घर के अलावा हमारे लिए कोई और ठिकाना न देखकर, हम तुम्हारी हमेशा की दयालुता पर भरोसा करते हुए तुम्हारे पास आए हैं।" घर के मुखिया ने उनका फिर से स्वागत किया और उनका सम्मान करने का प्रयास किया; इसलिए वे रात भर उनके साथ रहे; और जब सुबह हुई, तो वे उनके पास से चले गए और शहर पहुँचकर उसमें प्रवेश किया; जब वे अबू-अल-हसन के घर के पास से गुज़रे, तो उन्होंने अपने साथी अली,

बेक्जिर के बेटे को अंदर आने का आदेश दिया और उन्हें अंदर ले गए। फिर वे थोड़ी देर के लिए बिस्तरों पर लेट गए, जिसके बाद वे जागे; और अबू-अल-हसन ने अपने नौकरों को घर को अच्छे से सजाने का आदेश दिया; और उन्होंने ऐसा ही किया; अबू-अल-हसन मन ही मन सोच रहे थे, मुझे इस नौजवान को खुश करना चाहिए और उसका ध्यान उसके वर्तमान विचारों से हटाना चाहिए; क्योंकि मैं उसकी स्थिति जानता हूँ। और जब बक्कर के पुत्र अली को होश आया, तो उन्होंने पानी मंगवाया, और वे उनके लिए पानी लाए। वे उठे और स्नान किया, और दिन-रात में छोड़ी हुई ईश्वरीय प्रार्थनाएँ पढ़ीं, और बातचीत से अपना मन बहलाने लगे। जब अबू हसन ने उन्हें ऐसा करते देखा, तो उन्होंने

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.36%** है।

शेम्स-एन-नाहर 13 उसके पास आकर बोला, "हे मेरे स्वामी अली, आपकी वर्तमान स्थिति के लिए यह सबसे उपयुक्त होगा कि आप आज रात मेरे साथ रहें, ताकि आपका हृदय प्रसन्न हो जाए, और आपकी इच्छा की पीड़ा दूर हो जाए, और आप हमारे साथ समय बिता सकें।" उसने उत्तर दिया, "जो तुम्हें उचित लगे वही करो; क्योंकि किसी भी हालत में मैं उस विपत्ति से बच नहीं सकता जो मुझ पर आई है; इसलिए जैसा तुम चाहो वैसा करो।" अबू-1-हसन उठा और अपने सेवकों को बुलाया और अपने मित्रों को लाया, और गायकों और वाद्य यंत्र बजाने वालों को भी बुलवाया, जो आ गए; और वे दिन भर खाते-पीते और आनंद मनाते रहे, शाम तक, जब उन्होंने मोमबत्तियाँ जलाईं, और शराब के प्याले उनके बीच बाँटे गए, और उन्होंने सुखद समय बिताया। फिर एक महिला गायिका ने वीणा उठाई और इस प्रकार गाया: — भाग्य ने मुझे आँख के तीर से घायल कर दिया है, जिसने मुझे गिरा दिया है और मैं अपने प्रियतम से

बिछड़ गई हूँ। भाग्य मेरे प्रति शत्रुतापूर्ण रहा है और मेरा धैर्य टूट गया है; परन्तु मुझे पहले से ही इस बात का आभास था। जब बक्कर के पुत्र अली ने ये शब्द सुने, तो वह बेहोश होकर गिर पड़ा और भोर तक उसी अवस्था में रहा; अबू हसन उससे निराश हो गया; परन्तु जब उजाला हुआ, तो वह संभला और अपने घर लौटना चाहता था। अबू हसन उसे रोक नहीं सका, क्योंकि उसे उसके मामले के परिणाम का डर था; इसलिए उसके नौकर उसके लिए एक खच्चर लाए और उसे उस पर बिठाया, और अबू हसन उसे उसके घर तक ले गया; और जब वह वहाँ सुरक्षित पहुँच गया, तो अबू हसन ने इस विपत्ति से बचने के लिए ईश्वर का धन्यवाद किया और उसे सांत्वना देने लगा; परन्तु अपने आवेश के कारण वह स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख सका। अबू-अल-हसन ने उन्हें विदाई दी; और बक्कर के पुत्र अली ने उनसे कहा, "हे मेरे भाई, जो भी जानकारी आपको देनी हो, मुझे अवश्य दीजिएगा।" उन्होंने उत्तर दिया, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।" तब अबू-अल-हसन उठे और अपनी दुकान पर चले गए, और दुकान खोलकर उस युवती से कोई खबर मिलने की प्रतीक्षा में बैठ गए; परन्तु कोई उन्हें कोई खबर नहीं लाया। उन्होंने अगली रात अपने घर में बिताई, और जब सुबह हुई, तो वे उठे और बक्कर के पुत्र अली के घर गए, और अंदर जाकर देखा कि वे अपने पलंग पर लेटे हुए थे, उनके मित्र उनके चारों ओर थे, और उनके साथ चिकित्सक भी थे, जिनमें से प्रत्येक उन्हें कुछ न कुछ दवा दे रहा था और उनकी नाड़ी जाँच रहा था। जब अबू-अल-हसन अंदर गए और उन्हें देखा, तो वे मुस्कुराए; और अबू-अल-हसन ने उन्हें प्रणाम किया और उनकी स्थिति के बारे में पूछा; जिसके बाद, वे उनके पास तब तक बैठे रहे जब तक कि बाकी सभी लोग चले नहीं गए।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.96%** है।

जब उसने उससे कहा, “मैं तुम्हें किस हालत में पा रहा हूँ?” तो बक्कर के पुत्र अली ने उत्तर दिया, “यह अफवाह फैल गई है कि मैं बीमार हूँ, और मेरे मित्रों ने भी यह खबर सुनी है, और मुझमें उठकर चलने की भी ताकत नहीं है ताकि मैं उस व्यक्ति को झूठा साबित कर सकूँ जो मुझे बीमार बता रहा है; इसलिए मैं यहाँ उसी तरह पड़ा हुआ हूँ जैसे तुम मुझे देख रहे हो, और मेरे मित्र मुझसे मिलने आए हैं; लेकिन, हे मेरे भाई, क्या तुमने दासी को देखा है, या उससे कोई खबर सुनी है?” अबू हसन ने उत्तर दिया, “जब से वह टिगरिस नदी के किनारे हमसे अलग हुई है, तब से वह मेरे पास नहीं आई है।” और उसने आगे कहा, “हे मेरे भाई, अपमान से सावधान रहो, और रोना बंद करो।” लेकिन बक्कर के बेटे अली ने कहा, "हे मेरे भाई, मेरा अपने ऊपर कोई नियंत्रण नहीं है।" उसने आह भरी और कुछ आयतें पढ़ीं, और आगे कहा, "मैं एक ऐसी विपत्ति से पीड़ित हूँ जिससे मैं कुछ समय पहले तक बचा हुआ था, और मुझे मृत्यु के सिवा कोई राहत नहीं मिल सकती।" अबू हसन ने कहा, "शायद ईश्वर तुम्हें फिर से जीवित कर दे।" और वह उसके पास से नीचे उतरकर अपनी दुकान पर गया और उसे खोला। वहाँ बैठे हुए उसे ज़्यादा देर नहीं हुई थी कि दासी आई और उसने उसे प्रणाम किया। उसने भी उसे प्रणाम किया और उसे देखकर पाया कि उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था और वह उदास दिख रही थी। उसने उससे कहा, "आपका स्वागत है! शेम्स-ए-नाहर कैसी हैं?" उसने उत्तर दिया, "मैं अभी आपको उसके बारे में बताऊँगी।" और पूछा, "बक्कर के बेटे अली कैसे हैं?" तब अबू हसन ने उसे अपने सारे अनुभव बता दिए। और वह विलाप करती, आहें भरती और उसकी हालत पर आश्चर्य करती। फिर उसने कहा, मेरी मालकिन की हालत इससे भी कहीं अधिक भयावह है; क्योंकि जब तुम चले गए, तो मैं तुम्हारे कारण धड़कते दिल के साथ लौटी, तुम्हारे बच निकलने पर मुश्किल से ही विश्वास कर

पा रही थी; और लौटने पर मैंने अपनी मालकिन को कमरे में बेसुध पड़ा पाया, वह न बोल रही थी और न ही किसी को जवाब दे रही थी। विश्वासियों का राजकुमार उसके सिर के पास बैठा था, उसे कोई नहीं मिल रहा था।

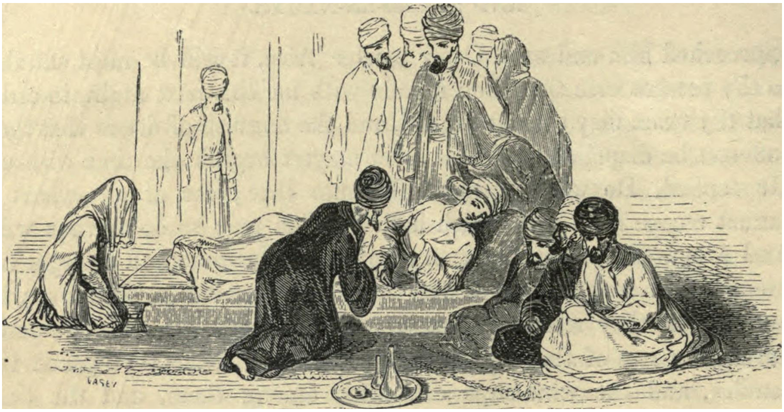

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.07%** है।

अली, बेक्कर के पुत्र, की कहानी, इत्यादि। 15 उसे उसके मामले से अवगत कराया, और यह न जानते हुए कि वह क्या पीड़ा झेल रही थी; और वह आधी रात तक दौरे में रही, जब तक कि वह संभली नहीं गई, और अमीरुल मोमिनीन ने उससे कहा, हे शेमसेन-नाहर, तुम्हें क्या हुआ है, और आज रात तुम्हारे साथ क्या हुआ है? और जब उसने खलीफा के शब्द सुने, तो उसने उनके पैर चूमे, और उत्तर दिया, हे अमीरुल मोमिनीन, क्या अल्लाह मुझे अपना बलिदान बना सकता है? पेट की गड़बड़ी ने मुझे सिरदर्द दिया है, और मेरे शरीर में गर्मी पैदा कर दी है, इसलिए मैं अपनी पीड़ा की तीव्रता से दौरे में गिर गई, और मुझे नहीं पता कि उसके बाद मेरे साथ क्या हुआ। इसलिए खलीफा ने उससे पूछा, तुमने आज क्या खाया है? और उसने उत्तर दिया, मैंने एक ऐसा व्यंजन खाया जो मैंने पहले कभी नहीं खाया था। फिर उसने तंदुरुस्ती का नाटक किया और शराब मंगाई।

शराब पीने के बाद उसने अमीरुल मोमिनीन से अपने मनोरंजन में लौटने की विनती की। तब वह अपने कमरे में वापस बैठ गया; और जब मैं उसके पास आया, तो उसने मुझसे तुम्हारे और तुम्हारे साथी के बारे में पूछा। मैंने उसे बताया कि मैंने तुम्हारे साथ क्या किया था और उसे वे आयतें सुनाईं जो बक्कर के बेटे अली ने पढ़ी थीं। इस पर वह चुप हो गई। फिर खलीफा बैठ गया और उसी दासी को गाने का आदेश दिया; और उसने ये दो आयतें गाईं: — तुम्हारे जाने के बाद से मेरे जीवन में कोई सुख नहीं रहा! काश मैं तुम्हारे जाने के बाद से तुम्हारी हालत जान पाता! काश मेरे आंसू खून के होते, जब तुम मेरी अनुपस्थिति में रो रहे हो। और जब शेमस-एन-नाहर ने ये शब्द सुने, तो वह फिर बेहोश होकर गिर पड़ी। मैंने उसका हाथ पकड़ा और उसके चेहरे पर गुलाबजल छिड़का, जिससे वह संभल गई। इस पर मैंने उससे कहा, "हे मेरी स्वामिनी, अपने आप को और अपने महल में रहने वालों को खतरे में मत डालो! अपने प्रियतम के अस्तित्व की कसम खाकर मैं तुमसे धैर्य रखने की विनती करती हूँ।" लेकिन उसने उत्तर दिया, "क्या मृत्यु से भी बदतर कुछ हो सकता है? मैं तो यही चाहती हूँ, क्योंकि इससे मुझे शांति मिलेगी।" और जब हम इस तरह बातें कर रहे थे, तभी एक समझदार दासी ने कवि के ये शब्द कहे: "उन्होंने कहा, शायद धैर्य के बाद आराम मिल सकता है।" लेकिन मैंने उत्तर दिया, "उसके जाने के बाद धैर्य कैसे मिलेगा? क्योंकि उसने मुझे गले लगाते समय मुझसे धैर्य के बंधन तोड़ने का वादा किया था।" और जैसे ही उसने अपनी बात समाप्त की, शेमस-एन-नाहर फिर बेहोश होकर गिर पड़ी। खलीफा ने उसे देखा और तुरंत उसके पास आकर शराब हटाने का आदेश दिया और सभी दासियों को अपने-अपने कमरे में लौटने का हुक्म दिया। फिर वह रात भर उसके साथ बैठा रहा, सुबह होने तक, जब उसने चिकित्सकों को बुलाया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

27.58% है।

16 बक्कर के पुत्र अली की कहानी, इत्यादि। और उनसे उसके स्वास्थ्य लाभ के लिए उपाय करने का अनुरोध किया, यह जाने बिना कि वह प्रेम और वासना से पीड़ित थी। मैं उसके साथ तब तक रहा जब तक मुझे लगा कि वह ठीक हो गई है, और यही कारण था कि मैं पहले आपके पास नहीं आ सका। मैंने उसके कुछ विशेष सेवकों को उसके साथ छोड़ दिया था, जब उसने मुझे आपके पास जाने का आदेश दिया ताकि मैं बक्कर के पुत्र अली के बारे में खबर प्राप्त कर सकूँ और उसके पास लौट आऊँ। — और जब अबू-1-हसन ने उसकी बातें सुनीं, तो वह आश्चर्यचकित हुआ और उससे कहा, अल्लाह की कसम, मैं तुम्हें उसके पूरे मामले से अवगत करा चुका हूँ। इसलिए, अपनी मालकिन के पास लौट जाओ, उसे प्रणाम करो, और उसे धैर्य रखने के लिए प्रेरित करो, और उससे कहो, अपना रहस्य छुपाओ: — और उसे बताओ कि मैं उसके मामले से अवगत हूँ, और जानता हूँ कि यह एक कठिन मामला है, जिसके लिए विवेकपूर्ण प्रबंधन की आवश्यकता है। — और दासी ने उसे धन्यवाद दिया, और उसे विदाई दी, और अपनी मालकिन के पास लौट गई। अबू हसन दिन ढलने तक अपनी दुकान में ही रहे; और जब दिन ढल गया, तो वे उठे, अपनी दुकान बंद की और बक्कर के बेटे अली के घर गए और दरवाजा खटखटाया; तभी उनका एक नौकर उनके पास आया और उन्हें अंदर ले गया। जब वे अंदर गए, तो उनके मित्र मुस्कुराए और उनके आने को शुभ संकेत मानते हुए उनसे कहा, "हे अबू हसन, आज मेरे पास से दूर रहकर तुमने मुझे बहुत दुखी कर दिया है, और मेरा मन जीवन भर तुमसे जुड़ा रहेगा।" अबू हसन ने उत्तर दिया, "इन शब्दों को मत कहो; क्योंकि अगर तुम्हें छुड़ाना संभव होता, तो मैं अपनी जान तुम्हारी कुर्बानी के रूप में दे देता।" आज शेम्स-एन-नाहर की दासी आई और उसने मुझे बताया कि वह

पहले इसलिए नहीं आ पाई क्योंकि खलीफा अपनी मालकिन के साथ बैठे थे, और उसने मुझे अपनी मालकिन के साथ हुई घटना के बारे में बताया। और उसने दासी से सुनी हुई सारी बातें उसे बताईं; इस पर बक्कर के पुत्र अली ने ज़ोर-ज़ोर से विलाप किया और रोने लगा, फिर अबू हसन की ओर देखकर उससे कहा, अल्लाह की कसम, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मेरी इस मुसीबत में मेरी मदद करो और मुझे बताओ कि क्या करना चाहिए; और मैं तुमसे यह भी विनती करता हूँ कि तुम आज रात मेरे साथ यहीं ठहरो, ताकि तुम्हारी बातों से मुझे शांति मिले। अबू हसन ने उसकी इच्छा मान ली और कहा कि वह उस रात उसके साथ ठहरेगा; और वे रात भर बातें करते रहे, यहाँ तक कि बक्कर के पुत्र अली ने बहुत रोने और आँसू बहाने के बाद कुछ आयतें पढ़ीं, ज़ोर से रोया और बेहोश होकर गिर पड़ा। अबू-1-हसन को लगा कि उनकी आत्मा उनके शरीर से निकल गई है; और वे सुबह होने तक इसी अवस्था में रहे, जब वे होश में आए और फिर से अबू-1-हसन से बातचीत करने लगे; और अबू-1-हसन सूर्योदय और दोपहर के बीच के मध्य समय तक उनके साथ बैठे रहे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.61%** है।

फिर वह उससे विदा लेकर अपनी दुकान पर गया और उसे खोला; तभी दासी आकर उसके सामने खड़ी हो गई; जब उसने उसकी ओर देखा, तो उसने उसे अभिवादन किया, और उसने भी उसे अभिवादन किया। उसने अपनी मालकिन का अभिवादन उसे देते हुए कहा, “बेकर के पुत्र अली कैसे हैं?” – “हे दासी,” उसने उत्तर दिया, “उसकी हालत और उसकी तीव्र इच्छाओं के बारे में मत पूछो, क्योंकि वह रात को सोता नहीं, दिन को आराम नहीं करता; जागते-जागते वह कमजोर हो गया है, और पीड़ा ने उसे व्याकुल कर दिया है, और उसकी हालत किसी मित्र को भी प्रसन्न

नहीं करेगी।” तब उसने उससे कहा, “मेरी मालकिन ने तुम्हें और उसे नमस्कार किया है, और उसे एक पत्र लिखा है, और उसकी हालत अली से भी अधिक कष्टदायक है; उसने मुझे पत्र सौंपा है, और कहा है, “इसका उत्तर दिए बिना मेरे पास मत लौटना, और जैसा मैंने तुम्हें आज्ञा दी है वैसा ही करना।” — ये रहा पत्र मेरे पास। क्या तुम मेरे साथ बक्कर के बेटे अली के पास चलोगे, ताकि हम उनसे जवाब पा सकें? — अबू हसन ने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। फिर उसने अपनी दुकान बंद कर दी और दासी को साथ लेकर उस रास्ते से अलग रास्ते से चला गया जिससे वह आया था। वे चलते-चलते बक्कर के बेटे अली के घर पहुँचे, जहाँ उसने दासी को दरवाजे पर खड़ा किया और घर में प्रवेश किया। बक्कर के बेटे अली ने उसे देखते ही प्रसन्न हुए और अबू हसन ने उनसे कहा, मेरे आने का कारण यह है कि फलाँ व्यक्ति ने तुम्हें अपना पत्र भेजा है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.29%** है।

18 अली का पुत्र, जिसने तुम्हें अपना अभिवादन भेजा है, एक पत्र के साथ आया है और उसमें उल्लेख किया है कि उसके न आने का कारण एक ऐसी घटना है जो उसके साथ घटी है और उसे क्षमा योग्य ठहराती है। दासी द्वार पर खड़ी है। क्या तुम उसे अंदर आने की अनुमति दोगे? अली ने उत्तर दिया, उसे अंदर ले आओ। अबू हसन ने उसे संकेत दिया कि वह शेम्स-एन-नहार की दासी है; और वह संकेत समझ गया; और जब उसने उसे देखा, तो वह भावुक हो गया, और प्रसन्न हुआ, और उससे संकेत के साथ कहा, स्वामी कैसे हैं? ईश्वर उन्हें स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती प्रदान करें! उसने उत्तर दिया, ठीक हैं; और उसने पत्र निकाला और उसे दे दिया; और उसने उसे लिया, चूमा, पढ़ा और फिर अबू-1-हसन को दे दिया, जिसने

उसमें निम्नलिखित लिखा पाया: — यह दूत तुम्हें मेरी खबर देगा: इसलिए मुझे देखने के बजाय उसकी खबर से संतुष्ट रहो। तुमने अपने कारण एक प्रेमी को घोर पीड़ा में छोड़ दिया है, और उसकी आँखें लगातार नींद से वंचित हैं। मैं अपनी पीड़ा में धैर्य की वेदना सह रहा हूँ; क्योंकि कोई भी प्राणी भाग्य के प्रहारों को रोक नहीं सकता। आगे: — मैंने तुम्हें बिना उंगलियों के पत्र लिखा है,17 और बिना जीभ के तुमसे बात की है, और मेरी स्थिति का पूर्ण वर्णन यह है, — कि मेरी एक आँख है जो कभी नींद नहीं छोड़ती, और एक हृदय है जिससे चिंताएँ कभी दूर नहीं होतीं; और मैं ऐसा हूँ मानो मैंने कभी स्वास्थ्य या सुख का अनुभव नहीं किया हो, न ही किसी सुंदर चेहरे को देखा हो, न ही सुखद जीवन व्यतीत किया हो: मैं ऐसा हूँ मानो मेरा स्वभाव वासना और अत्यधिक प्रेम और उदासी की पीड़ा से बना हो; और मेरी बीमारी निरंतर बनी हुई है; और इच्छा बढ़ गई है; और लालसा और भी तीव्र हो गई है।18 मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह हमारे मिलन को शीघ्र कर दे, ताकि मेरे मन का कष्ट दूर हो जाए; और मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे अपने कुछ शब्द भेजो, जिनसे मुझे सांत्वना मिले; और जब तक ईश्वर राहत न दे, तब तक तुम उचित धैर्य बनाए रखो। और तुम पर शांति हो। जब बेक्कीर के पुत्र अली ने इस पत्र को शुरू से अंत तक पढ़ा, तो उसने कहा, मैं किस हाथ से लिखूँ, और किस ज़बान से शिकायत और विलाप करूँ? तब वह बड़ी मुश्किल से उठा, और बैठ गया, और अपने हाथ में एक कागज़ लेकर इस प्रकार लिखा: — दयालु, कृपालु ईश्वर के नाम पर। — हे मेरी स्वामिनी, तुम्हारा पत्र पहुँच गया है, और उसने उत्साह और इच्छा से थकी हुई आत्मा को आराम दिया है, और रोग से घायल हृदय को पुनर्जीवन दिया है; और तुम्हारे दुबले-पतले दास ने इसमें निहित सभी दयालु शब्दों को समझ लिया है; और हे मेरी स्वामिनी, तेरे सिर की कसम, मैं कवि द्वारा वर्णित अवस्था में हूँ:

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.97%** है।

और शेम्स-एन-खार। 19 हृदय संकुचित है; चिंता फैली हुई है; आँखें नींद से वंचित हैं; शरीर थका हुआ है; धैर्य टूट गया है; अलगाव निरंतर बना हुआ है; बुद्धि विक्षिप्त है और हृदय छीन लिया गया है। और जान लो कि शिकायत से पीड़ा की आग नहीं बुझती; बल्कि यह उसे शांत करती है जिसे लालसा और इच्छा ने अस्त-व्यस्त कर दिया है, और जिसे वियोग नष्ट कर देता है; और मैं "मिलन" शब्द के उल्लेख से स्वयं को सांत्वना दूंगा: और कवि का यह कथन कितना उत्कृष्ट है: - यदि प्रेम में असंतोष और संतोष न होते, तो गीतों और पत्रों की मिठास कहाँ होती? अबू-अल-हसन ने जब यह पत्र पढ़ा, तो उनके मन में पीड़ा का भाव जागा और इसके भाव ने उन्हें गहरा आघात पहुँचाया। उन्होंने यह पत्र दासी को दे दिया और जब उसने इसे ले लिया, तो बक्कर के पुत्र अली ने उससे कहा, "अपनी स्वामिनी को मेरा प्रणाम कहना और उन्हें मेरी प्रसन्नता और इच्छा के बारे में बताना, और यह बताना कि प्रेम मेरे हृदय और अस्थियों में व्याप्त है; और उन्हें यह भी बताना कि मुझे विनाश के सागर से बचाने और इस दुविधा से मुक्त करने के लिए एक व्यक्ति की आवश्यकता है।" फिर वह रोने लगे, और दासी भी उनके साथ रोने लगी, और उनसे विदा लेकर चली गई। अबू-अल-हसन उसके साथ गए, उसे विदाई दी और अपनी दुकान पर चले गए; और जब वह वहाँ बैठे, तो उन्होंने पाया कि उनका हृदय संकुचित और हृदय विक्षिप्त है, और वे अपनी स्थिति को लेकर व्याकुल हैं। वह दिन भर और अगली रात भी विचारों में डूबा रहा। अगले दिन वह बक्कर के बेटे अली के पास गया और बाकी लोगों के चले जाने तक उसके साथ बैठा रहा। फिर उसने अली से उसकी हालत के बारे में पूछा। अली ने अपनी इच्छा, अत्यधिक प्रेम और बेचैनी के बारे में

शिकायत करना शुरू किया और कवि के ये शब्द दोहराए: "मुझसे पहले भी कई लोगों ने प्रेम की पीड़ा का वर्णन किया है, और जीवित और मृत दोनों ही अलगाव से भयभीत हुए हैं; लेकिन मेरे हृदय में जो भावनाएँ हैं, वैसी मैंने न कभी सुनी हैं और न कभी देखी हैं।" अबू हसन ने उससे कहा, "मैंने तुम्हारे जैसा प्रेमी न कभी देखा है और न कभी सुना है। जब तुम किसी ऐसे प्रेमी से प्रेम करते हो जो तुम्हारी इच्छा के अनुरूप हो, तो यह उमंग, कमजोरी और बेचैनी क्यों होती है? अगर तुम किसी ऐसे व्यक्ति से प्रेम करते जो तुम्हारे प्रति शत्रुतापूर्ण और कपटी हो, और तुम्हारा यह प्रेम सबके सामने आ जाए, तो क्या होगा?" और अली, बक्कर का बेटा, अबन-हसन कहते हैं, मेरी बातों से सहमत हुआ और इसके लिए मुझे धन्यवाद दिया। अब मेरा (वह आगे कहते हैं) एक मित्र था जो मेरे और अली, बक्कर के मामले से परिचित था और जानता था कि हम दोनों एक साथ थे, लेकिन हमारे बीच जो कुछ भी हुआ, उसकी जानकारी किसी और को नहीं थी।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.76%** है।

बेक्काक के बेटे अली की कहानी: एक व्यक्ति मेरे पास आया और मुझसे बेक्काक के बेटे अली की हालत के बारे में पूछा; और कुछ ही देर बाद, उसने मुझसे उस युवती के बारे में पूछा। मैंने उसे उत्तर दिया, उसने उसे अपने पास बुलाया है, और उनके बीच जो कुछ हो चुका है, उससे आगे कुछ नहीं हो सकता; और यह उनके मामले का अंत है; लेकिन मैंने अपने लिए एक योजना बनाई है जिसे मैं तुम्हारे सामने रखना चाहता हूँ। —उसके मित्र ने पूछा, वह क्या है? और अबू-इलासन ने उत्तर दिया, मैं पुरुषों और महिलाओं के साथ व्यापक संबंध रखने वाला व्यक्ति हूँ, और मुझे डर है कि इन दोनों व्यक्तियों का मामला उजागर हो सकता है, और

ऐसी घटना मेरे विनाश, मेरी संपत्ति की ज़ब्ती और मेरे परिवार के बर्बाद होने का कारण बनेगी। मेरा मानना है कि मुझे अपनी संपत्ति इकट्ठा करनी चाहिए, खुद को तैयार करना चाहिए, और अल-बसरा शहर जाना चाहिए, और वहाँ तब तक रहना चाहिए जब तक मैं उनके मामले का परिणाम न देख लूँ, ताकि कोई भी मेरी स्थिति न जान सके; प्रेम ने उन पर पूर्ण अधिकार कर लिया है, और उनके बीच पत्र-व्यवहार होता रहा है। उनकी मध्यस्थ एक दासी है, जो फिलहाल उनके राज़ छुपाए रखती है; लेकिन मुझे डर है कि चिंता उस पर हावी हो जाएगी और वह किसी को उनका राज़ बता देगी, जिससे उनके प्रेम प्रसंग की खबर फैल जाएगी और मेरा विनाश हो जाएगा; क्योंकि मेरे पास अपने आरोप लगाने वालों को देने के लिए कोई बहाना नहीं है। — उसके मित्र ने उत्तर दिया, “तुमने मुझे एक खतरनाक मामले से अवगत कराया है, जिसे बुद्धिमान और जानकार भी भय से देखते हैं। ईश्वर तुम्हें उस विपत्ति से बचाए जिसका तुम्हें डर है, और तुम्हें उस परिणाम से बचाए जिसका तुम्हें भय है! यह राय सही है।” — तब अबू-1-हसन अपने घर चले गए, और अपने काम निपटाने और अल-बसरा शहर की यात्रा की तैयारी में जुट गए, और तीन दिन भी नहीं बीते थे कि उन्होंने अपना काम पूरा कर लिया और अल-बसरा के लिए निकल पड़े। इसके तीन दिन बाद, उसका मित्र उससे मिलने आया, और उसे न पाकर उसने उसके पड़ोसियों से उसके बारे में पूछा, और उन्होंने उसे बताया कि वह तीन दिन पहले अल-बसरा चला गया है; क्योंकि उसका उस शहर के व्यापारियों के साथ आर्थिक लेन-देन था, और इसलिए वह अपने देनदारों से पैसे लेने गया है, और वह जल्द ही लौट आएगा। यह सुनकर वह व्यक्ति व्याकुल हो गया, और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे, और कहने लगा, काश मैं अबू-अल-हसन से अलग न हुआ होता! तब उसने अली, बक्कर के बेटे, से मिलने की एक

तरकीब सोची; और वह उसके घर गया, और अपने एक नौकर से कहा, अपने मालिक से मेरे लिए अनुमति मांगो कि मैं अंदर जाकर उन्हें प्रणाम कर सकूँ। तो नौकर अंदर गया, और अपने मालिक को अनुरोध बताया, फिर वापस आकर उसे अंदर जाने की अनुमति दी। तब वह अंदर गया, और उसे तकिये पर लेटा हुआ पाया। और उसने उसे सलाम किया, और बीटी मुर के पुत्र अली ने अपना अभिवादन लौटा दिया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.66%** है।

और शेम्स एन-नैल्लाह। 21 अभिवादन किया और उनका स्वागत किया; इस पर उस व्यक्ति ने अपनी बीमारी के दौरान उनसे मिलने न आ पाने के लिए क्षमा मांगी और कहा, हे मेरे स्वामी, मेरे और अबू हसन के बीच घनिष्ठ मित्रता है, और मैं उन्हें अपने रहस्य बताता था और एक घंटे के लिए भी उन्हें नहीं छोड़ता था; मैं अपने कुछ मित्रों के साथ तीन दिनों के लिए किसी काम से बाहर गया हुआ था, और फिर जब मैं उनके पास गया तो उनकी दुकान बंद मिली; इसलिए मैंने पड़ोसियों से उनके बारे में पूछा, और उन्होंने कहा, वह अल-बसरा चले गए हैं। अब मैं तुम्हारे जैसा उनका कोई सच्चा मित्र नहीं जानता: अल्लाह की कसम, तो मुझे उनके बारे में बताओ। और जब अली बिन बक्कर ने उनकी बातें सुनीं, तो उनका रंग बदल गया, और वह व्याकुल हो गए, और उत्तर दिया, मुझे आज से पहले उनके जाने की खबर नहीं मिली थी; और यदि मामला वैसा ही है जैसा तुमने कहा है, तो मुझ पर विपत्ति आ पड़ी है। फिर वह रो पड़ा और उसने ये दो आयतें पढ़ीं: — मैं बीते हुए सुख के कारण रो रहा था, जब मेरे मित्र मुझसे अलग नहीं हुए थे; परन्तु अब मेरे दुर्भाग्य ने हमें अलग कर दिया है, और मुझे अपने मित्रों के लिए भी रोना पड़ रहा है। और वह सोच में डूबा हुआ अपना सिर ज़मीन की ओर झुका लिया; और थोड़ी देर बाद उसने

अपना सिर उठाया, और अपने एक सेवक की ओर देखकर उससे कहा, अबू हसन के घर जाओ, और उसके बारे में पूछो कि क्या वह अभी भी वहीं है या यात्रा पर गया है; और यदि वे उत्तर दें, कि वह यात्रा पर गया है, — तो पूछो कि वह कहाँ गया है। तो सेवक गया, और थोड़ी देर बाद अपने मालिक के पास लौट आया, और कहा, जब मैंने अबू हसन के बारे में पूछा, तो उसके आश्रितों ने मुझे बताया कि वह अल-बसरा की यात्रा पर गया है; लेकिन मुझे दरवाजे पर एक दासी प्रतीक्षा करती मिली, और जब उसने मुझे देखा तो वह मुझे पहचान गई; लेकिन मैं उसे नहीं पहचानता था; और उसने मुझसे कहा, क्या तुम बक्कर के बेटे अली के सेवक हो? और मैंने उसे उत्तर दिया, हाँ। और उसने कहा, मेरे पास उसके सबसे प्रिय मित्र का पत्र है। तो वह मेरे साथ आई, और वह दरवाजे पर खड़ी है। — इस पर, बक्कर के बेटे अली ने कहा, उसे अंदर लाओ। और सेवक उसके पास गया, और उसे अंदर ले आया; और जो व्यक्ति बक्कर के बेटे के साथ बैठा था, उसने दासी को देखा, और पाया कि वह एक सुंदर महिला थी। दासी तब बक्कर के बेटे के पास गई, और उसे प्रणाम किया, और उससे धीमी आवाज में बात की; और उसने बातचीत के दौरान कसम खाई, यह कहते हुए कि उसने उस बात का जिक्र नहीं किया था जिसका उसने जिक्र किया था; जिसके बाद, उसने उसे विदाई दी, और चली गई। अब अबू-1-हसन का मित्र एक जौहरी था; और जब दासी चली गई, तो उसे बोलने का अवसर मिल गया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.74%** है।

22 बक्कर के पुत्र अली की कहानी, और जौहरी ने बक्कर के पुत्र अली से कहा, "इसमें कोई संदेह नहीं है कि खलीफा के महल का तुमसे कोई अनुरोध है, या तुम्हारा उससे कोई संबंध है।"19 — बक्कर के पुत्र अली

ने पूछा, "तुम्हें यह किसने बताया?" जौहरी ने उत्तर दिया, "मुझे इसकी जानकारी इस दासी से मिली है; क्योंकि वह शेम्स-एन-नाहर की दासी है; और वह कुछ समय पहले मेरे पास एक पत्र लेकर आई थी जिसमें लिखा था कि उसे रत्नों का हार चाहिए; इसलिए मैंने उसे एक कीमती हार भेजा।" जब बक्कर के पुत्र अली ने उसकी बात सुनी, तो वह इतना व्याकुल हो गया कि जौहरी को उसके बेहोश होने का डर सताने लगा; लेकिन तुरंत ही उसने खुद को संभाला और कहा, "हे मेरे भाई, मैं अल्लाह की कसम खाकर तुमसे विनती करता हूँ कि मुझे बताओ कि तुम उसे कैसे जानते हो।" जौहरी ने उत्तर दिया, "पूछताछ पर ज़ोर मत दो।" लेकिन बक्कर के बेटे अली ने उससे कहा, मैं तुम्हें तब तक परेशान करता रहूंगा जब तक तुम मुझे सच न बता दो। तब जौहरी ने कहा, मैं तुम्हें बता दूंगा, बशर्ते कि मेरे बारे में तुम्हारे मन में कोई संदेह न हो, और न ही मेरे शब्दों से तुम पर कोई दबाव पड़े, और मैं तुमसे कोई राज़ नहीं छुपाऊंगा, बल्कि तुम्हें सारी सच्चाई बता दूंगा; लेकिन शर्त यह है कि तुम मुझे अपनी पूरी कहानी और अपनी बीमारी का कारण बता दो। तब उसने उसे अपनी कहानी सुनाई, और फिर कहा, अल्लाह की कसम, ऐ मेरे भाई, तुम्हारे सिवा किसी और से अपनी बात छुपाने का कारण मुझे यही डर था कि लोग दूसरों से सुरक्षा का पर्दा हटा देंगे। तब जौहरी ने उससे कहा, मैं तुमसे मिलना चाहता हूं, केवल इसलिए कि मुझे तुमसे बहुत स्नेह है, तुम्हारे लिए मेरी बहुत चाहत है, और तुम्हारे दिल पर दया आती है, क्योंकि जुदाई से तुम्हारा दिल बहुत पीड़ा झेल रहा है। शायद मैं अपने मित्र अबू-अल-हसन की अनुपस्थिति में उनकी जगह तुम्हें सांत्वना दे सकूँ। इसलिए प्रसन्न और प्रसन्न रहो। — और बक्कर के पुत्र अली ने उनके भाषण के लिए उनका धन्यवाद किया और ये दो आयतें पढ़ीं: — यदि मैं कहूँ कि मैं उनके वियोग के बाद धैर्यवान था, तो मेरे आँसू और

मेरा विलाप झूठ साबित हो जाएँगे। और मैं अपने मित्र के वियोग के कारण बहते आँसुओं को कैसे छुपा सकता हूँ? फिर वह कुछ देर चुप रहे; उसके बाद उन्होंने जौहरी से कहा, क्या तुम जानते हो कि दासी ने मुझे गुप्त रूप से क्या बताया? उसने उत्तर दिया, नहीं, अल्लाह की कसम, हे मेरे स्वामी। और बक्कर के पुत्र अली ने कहा, उसने सोचा कि मैंने अबू-अल-हसन को अल-बसरा शहर जाने की सलाह दी थी, और इस प्रकार मैंने एक चाल चली ताकि अब कोई पत्राचार और संपर्क न रहे; और मैंने उससे शपथ ली कि ऐसा नहीं था; लेकिन उसने मेरी बात नहीं मानी और अपनी बुरी राय को बरकरार रखते हुए अपनी मालकिन के पास चली गई; क्योंकि उसका झुकाव अबू-एन की तरफ था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.97%** है।

और... आसन। जौहरी ने उत्तर दिया, "हे मेरे भाई, दासी की हालत देखकर मुझे यह सब समझ आ गया; परन्तु यदि यह ईश्वर की इच्छा हो (जिसका नाम महान हो!), तो मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करने में तुम्हारी सहायता करूँगा।" - और बक्कर के पुत्र अली ने पूछा, "जब वह रेगिस्तान के जंगली जानवर की तरह डर जाती है, तो तुम उसके साथ कैसे व्यवहार करोगे?" जौहरी ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारी सहायता करने के लिए अपने सारे प्रयास करूँगा और बिना किसी को बताए या कोई हानि पहुँचाए उससे जान-पहचान करने की तरकीब अपनाऊँगा।" फिर उसने जाने की अनुमति माँगी; और बक्कर के पुत्र अली ने उससे कहा, "हे मेरे भाई, इस रहस्य को छुपाए रखना।" और उसने उसकी ओर देखा और रोने लगा। जौहरी ने उसे विदाई दी और चला गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि बक्कर के बेटे अली के मामले को आगे बढ़ाने के लिए क्या करे। अली अपने मामले पर विचार करते हुए आगे बढ़ता रहा और सड़क पर पड़ा

एक कागज देखा। उसने उसे उठाया और उस पर लिखा देखा, "सबसे विनम्र मित्र की ओर से सबसे प्रिय व्यक्ति के लिए।" उसने कागज खोला और उसमें लिखा पाया: "तुम्हारा दूत मुझे मिलन की आशा दिलाने आया था; लेकिन मुझे लगा कि उसने गलत समझा है। इसलिए मुझे खुशी नहीं हुई; बल्कि मेरा दुख बढ़ गया, क्योंकि मुझे पता चला कि मेरे दूत ने सही बात नहीं समझी थी।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.93%** है।

24 अली के पुत्र की कहानी आगे: — हे मेरे स्वामी, जान लो कि मैं तुम्हारे और मेरे बीच पत्राचार में रुकावट के कारण से अनभिज्ञ हूँ; परन्तु यदि क्रूरता तुम्हारी ओर से हुई है, तो मैं उसका प्रतिफल निष्ठा से दूँगा; और यदि स्नेह तुमसे विमुख हो गया है, तो मैं विरह के दौरान भी स्नेह

बनाए रखूँगा; क्योंकि मैं तुम्हारे प्रति कवि के कहे अनुसार व्यवहार करूँगा: — अभिमानी बनो: मैं सहन करूँगा: — और अत्याचार करो: मैं धैर्य रखूँगा: — और कठिन बनो: मैं तिरस्कृत करूँगा: — और चले जाओ: मैं पास आऊँगा: — और कहूँगा: मैं सुनूँगा: — और आज्ञा दो: मैं आज्ञा का पालन करूँगा। और जब उसने इसे पढ़ा, तो देखो, दासी दाईं और बाईं ओर देखते हुए पास आई और उसके हाथ में कागज देखा; इसलिए उसने उससे कहा, हे मेरे स्वामी, सचमुच यह कागज मुझसे गिर गया। लेकिन उसने उसे कोई उत्तर नहीं दिया और आगे बढ़ता रहा। दासी उसके पीछे-पीछे उसके घर तक गई; वह घर में दाखिल हुआ और दासी भी उसके पीछे-पीछे गई। उसने उससे कहा, "हे स्वामी, यह कागज़ मुझे लौटा दीजिए; यह मुझसे गिर गया है।" उसने उसकी ओर देखा और कहा, "हे दासी, डरो मत, दुखी मत हो, बल्कि मुझे सच-सच बता दो; क्योंकि मैं रहस्यों को छुपाने वाला हूँ; और मैं तुम्हें शपथ दिलाता हूँ कि तुम अपनी मालकिन के मामले में मुझसे कुछ भी मत छुपाओगी: शायद ईश्वर मुझे उसकी इच्छा पूरी करने में सहायता करे और मेरे प्रयासों से जो चीज़ें अभी कठिन हैं, उन्हें आसान बना दे।" जब दासी ने उसकी बातें सुनीं, तो उसने उत्तर दिया, "हे स्वामी, जब आप किसी रहस्य के संरक्षक होते हैं, तो वह कभी खोता नहीं है, और जब आप किसी काम को पूरा करने का प्रयास करते हैं, तो वह कभी असफल नहीं होता। जान लीजिए कि मेरा मन आपकी ओर आकर्षित हो गया है, और मैं आपको इस मामले की सच्चाई बता दूँगी, और आप मुझे वह पत्र दे दीजिए।" फिर उसने उसे पूरी कहानी सुनाई और कहा, "ईश्वर मेरी कही हुई बातों की सच्चाई का साक्षी है।" उसने उत्तर दिया, "तुमने सत्य कहा है; क्योंकि मैं कहानी की मूल बातें जानता हूँ।" फिर उसने उसे बक्कर के पुत्र अली का मामला सुनाया और बताया कि कैसे उसे उसके मन की स्थिति का पता चला, पूरी कहानी शुरू

से अंत तक सुनाई। यह सुनकर वह प्रसन्न हुई; और उन्होंने आपस में तय किया कि वह कागज लेकर बक्कर के पुत्र अली को दे देगी और जो कुछ भी होगा, वह लौटकर उसे बता देगी। तो उसने उसे कागज दे दिया, और उसने उसे लेकर पहले की तरह सील कर दिया, और कहा, "मेरी स्वामिनी शेमसन-नाहर ने इसे मुझे सील करके दिया था; और जब वह इसे पढ़कर मुझे उत्तर देगा, तो मैं इसे तुम्हारे पास ले आऊँगी।" फिर दासी ने उसे विदा किया और बक्कर के पुत्र अली के पास चली गई, जो उसके आने का इंतजार कर रहा था। और उसने उसे कागज़ दिया, और उसने उसे पढ़ा, फिर उसके लिए उत्तर लिखा और उसे दे दिया। इसलिए उसने वह कागज़ लिया और उसे लेकर वापस लौट गई।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.09%** है।

और शेम्स-एन-नाहर। 25 जौहरी, समझौते के अनुसार; और उसने उसकी मुहर तोड़कर उसे पढ़ा, और उसमें लिखा देखा, — निश्चय ही वह दूत जिसके द्वारा हमारा पत्र छिपाया गया था, अप्रसन्न होकर असफल हो गया है: 20 इसलिए मेरे लिए तुममें से एक वफादार दूत चुनो, जो सत्य को स्वीकार करता हो, और असत्य को नहीं। आगे: — निश्चय ही क्रूरता मुझसे उत्पन्न नहीं हुई है, न ही मैंने वफादारी छोड़ी है, न ही मैंने कोई वाचा तोड़ी है, न ही मैंने स्नेह को कम किया है, न ही मैं शोक से मुक्त हुआ हूँ, न ही मैंने वियोग के बाद विनाश के सिवा कुछ पाया है, न ही मुझे उस बात का कोई ज्ञान है जिसका तुमने उल्लेख किया है, न ही मैं तुम्हारे सिवा किसी और से प्रेम करता हूँ: उस परमेश्वर की कसम जो हर गुप्त और छिपे हुए कार्य को जानता है, मेरी इच्छा केवल उस व्यक्ति से मिलन की है जिससे मैं प्रेम करता हूँ; और मेरा काम उस इच्छा को छुपाना है जिसके लिए मैं कष्ट सहता हूँ, भले ही इसके परिणामस्वरूप मुझे बीमारी

हो। यही मेरी स्थिति का वर्णन है: और तुम पर शांति हो। जब जौहरी ने वह पत्र पढ़ा और उसकी सामग्री जानी, तो वह फूट-फूटकर रोने लगा। दासी ने उससे कहा, जब तक मैं तुम्हारे पास वापस न आ जाऊं, तब तक तुम इस जगह से मत जाना; क्योंकि उसने मुझ पर आरोप लगाया है; लेकिन वह निर्दोष है; और मैं किसी भी तरह से तुम्हारे और मेरी मालकिन शेन्र्स-एन-नाहिर के बीच मुलाकात करवाना चाहती हूं। मैंने उसे वहीं बैठा छोड़ दिया, ताकि वह मेरे द्वारा उत्तर लाने की प्रतीक्षा करे। — फिर दासी अपनी मालकिन के पास चली गई, और जौहरी ने पूरी रात व्याकुल मन से बिताई; और जब सुबह हुई, तो उसने उस समय की नमाज़ पढ़ी और उसके आने की प्रतीक्षा में बैठ गया; और देखो, वह पास आई और खुशी से उसके पास आई, और उसने उससे कहा, हे दासी, क्या खबर है? उसने उत्तर दिया, मैं तुम्हारे पास से अपनी मालकिन के पास गई और उन्हें वह पत्र दिया जो बक्कर के बेटे अली ने लिखा था; और जब उन्होंने इसे पढ़ा और इसका अर्थ समझा, तो उनका मन व्याकुल हो गया; इसलिए मैंने उससे कहा, "हे मेरी स्वामिनी, अबू-1-हसन की अनुपस्थिति के कारण तुम्हारे बीच के संबंध के विफल होने से भयभीत मत हो; क्योंकि मैंने एक ऐसा व्यक्ति ढूंढ लिया है जो उसकी जगह लेगा, और जो उससे बेहतर है, उच्च पद का है, और जो राज़ रखेगा।" — और मैंने उसे बताया कि तुम्हारे और अबू-1-हसन के बीच क्या हुआ था, और तुमने कैसे उसका और बक्कर के पुत्र अली का विश्वास जीता, और कैसे वह नोट मुझसे गिर गया और तुमने उसे पाया, और मैंने उसे तुम्हारे और मेरे बीच हुए समझौते के बारे में बताया। — और जौहरी बहुत आश्चर्यचकित हुआ। — तब उसने उससे कहा, "वह तुम्हारी बातें सुनना चाहती है, ताकि वह तुम्हारे और उसके बीच हुए समझौतों में अपने विश्वास को और मजबूत कर सके: इसलिए तुरंत मेरे साथ उसके पास चलने का निश्चय कर लो।" लेकिन

जब II. E

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.51%** है।

जौहरी ने जब उस सियावी लड़की की ये बातें सुनीं, तो उसने सोचा कि उससे मिलने जाना एक महत्वपूर्ण और बड़ा जोखिम भरा काम है, जिसे अचानक या बिना सोचे-समझे नहीं करना चाहिए। इसलिए उसने उत्तर दिया, “हे मेरी बहन, मैं साधारण वर्ग का पुत्र हूँ, अबू हसन जैसा नहीं; क्योंकि अबू हसन ऊँचे दर्जे का, प्रसिद्ध और खलीफा के महल में अक्सर आता-जाता रहता था, क्योंकि वहाँ के निवासी उसका सामान चाहते थे; लेकिन मैं तो अबू हसन से बातें करता था और मैं उसके सामने काँपता था। इसलिए, यदि तेरी स्वामिनी मुझसे बात करना चाहती है, तो बेहतर होगा कि हम खलीफा के महल के अलावा किसी और जगह पर मिलें, जो अमीरुल मोमिनीन के निवास से दूर हो; क्योंकि मेरा मन तेरे प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करेगा।” इस प्रकार उसने उसके साथ जाने से इनकार कर दिया। लड़की ने उसे बताया कि वह उसकी सुरक्षा की ज़मानत देगी और उससे कहा, “चिंता मत करो, डरो मत।” लेकिन जब वे इस तरह बातें कर रहे थे, तभी अचानक उसके पैर काँपने लगे और हाथ थरथराने लगे; तब दासी ने उससे कहा, “यदि खलीफा के महल में जाना तुम्हारे लिए कष्टदायी हो और तुम मेरे साथ नहीं जा सकते, तो मैं उसे तुम्हारे पास आने के लिए मना लूँगी; इसलिए जब तक मैं उसे लेकर तुम्हारे पास वापस न आ जाऊँ, तब तक तुम अपनी जगह से मत हिलना।” फिर वह चली गई; लेकिन थोड़ी देर बाद जौहरी के पास लौट आई और उससे कहा, “ध्यान रखना कि तुम्हारे साथ कोई दासी या नौकर न हो।”

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.44%** है।

हक्ककार के मोज़े 'अली' की कहानी, प्रेरितों के काम 27: उसने उत्तर दिया, "मेरे साथ केवल एक अधेड़ उम्र की काली दासी है, जो मेरी सेवा करती है।" दासी उठी और जौहरी की दासी और उसके बीच के दरवाज़े बंद कर दिए, और उसके जवानों को घर से बाहर भेज दिया। इसके बाद, दासी बाहर गई और अपने पीछे एक युवती को लेकर लौटी, और वह युवती जौहरी के घर में प्रवेश कर गई, जिससे घर में मीठी सुगंध फैल गई; और जब जौहरी ने उसे देखा, तो वह उठा और खड़ा हो गया, और उसके लिए एक तकिया रखा, और स्वयं उसके सामने बैठ गया। वह कुछ देर तक बिना बोले बैठी रही, जब तक कि वह आराम से बैठ नहीं गई, तब उसने अपना चेहरा खोला, और जौहरी को ऐसा लगा मानो उसके घर में सूर्योदय हो गया हो। तब उसने अपनी दासी से कहा, "क्या यह वही

आदमी है जिसके बारे में तुमने मुझसे बात की थी?" दासी ने उत्तर दिया, "हाँ।" और उसने जौहरी की ओर देखा और उससे कहा, तुम कैसे हो? उसने उत्तर दिया, खुशहाल हूँ — और उसके लिए प्रार्थना की।21 और उसने उससे कहा, तुमने हमें अपने पास आने और अपना रहस्य बताने के लिए प्रेरित किया है। और उसने उससे उसके परिवार और बच्चों के बारे में पूछा; और उसने उसे अपनी सारी परिस्थितियाँ बताईं, और उससे कहा, मेरे पास इसके बगल में एक घर है, जिसे मैंने अपने मित्रों और भाइयों के साथ इकट्ठा होने के लिए समर्पित किया है, और उसमें मेरे पास वही है जो मैंने तुम्हारी दासी को बताया है। इसके बाद, उसने उससे पूछा कि उसे कहानी की मूल बातें कैसे पता चलीं; और उसने उसे घटना की शुरुआत से अंत तक, उसके द्वारा पूछे गए सभी विवरण बताए: जिस पर वह अबू-1-हसन के वियोग पर आहें भरने लगी, और बोली, हे ऐसे व्यक्ति, जान लो कि मनुष्य की आत्माएँ अपनी इच्छाओं में एकरूप होती हैं, और लोग एक-दूसरे के लिए तरसते हैं; कोई भी कार्य शब्दों के बिना पूरा नहीं होता; बिना परिश्रम के कोई इच्छा पूरी नहीं होती; परिश्रम के बाद ही आराम मिलता है; और उदारता के बिना सफलता नहीं मिलती। अब मैंने तुम्हें हमारे मामले से अवगत करा दिया है, और यह तुम्हारे अधिकार में है कि तुम हमें उजागर करो या हमारी रक्षा करो; परन्तु तुम्हारी उदारता के लिए कुछ भी अतिरिक्त करने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि तुम पहले से ही जानते हो कि मेरी दासी मेरा रहस्य छुपाती है, और इसी कारण वह मेरे साथ उच्च स्थान रखती है; और मैंने उसे अपने मामलों के संचालन के लिए चुना है। इसलिए, तुम्हारी दृष्टि में उससे अधिक योग्य कोई न हो, और तुम उसे अपनी कार्यवाही से अवगत कराओ; और निश्चिंत रहो; क्योंकि तुम हमारे कारण जिस बात से भयभीत हो उससे सुरक्षित हो, और कोई भी स्थान तुम्हारे लिए बंद नहीं रहेगा जिसे वह तुम्हारे लिए न

खोले, और वह तुम्हें बक्कर के पुत्र अली के लिए मेरे संदेश पहुंचाएगी, और तुम मेरे और उसके बीच संचार के माध्यम बनोगे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.24%** है।

28 बक्कर के पुत्र अली की कहानी, शेम्स-एन-नाहर बड़ी मुश्किल से उठी और चली गई, और जौहरी उसके आगे-आगे तब तक चलता रहा जब तक वह महल के द्वार पर नहीं पहुँच गई, जिसके बाद वह लौटकर अपनी जगह पर बैठ गया, क्योंकि उसने उसकी सुंदरता को देखकर आश्चर्यचकित कर दिया था, और उसके शब्दों को सुनकर उसकी बुद्धि चकरा गई थी, और उसकी शालीनता और विनम्रता को देखकर वह दंग रह गया था। वह उसके गुणों पर विचार करता रहा जब तक उसका मन शांत नहीं हो गया; फिर उसने भोजन माँगा और उतना खाया जितना उसकी आत्मा को तृप्त कर सके। फिर उसने अपने कपड़े बदले और अपने घर से निकलकर बक्कर के पुत्र अली के पास गया, जिसके नौकर आकर उससे मिले और उसके आगे-आगे तब तक चलते रहे जब तक उन्होंने उसे अपने स्वामी से नहीं मिलवाया, और उसने उसे अपने बिस्तर पर लेटा हुआ पाया; और जब उसने जौहरी को देखा, तो उसने उससे कहा, तुम मेरे पास आने में देर कर गए, और मेरी चिंता बढ़ा दी। ऐसा कहकर उसने अपने नौकरों को विदा किया और अपने दरवाजे बंद करने का आदेश दिया। फिर उसने जौहरी से कहा, “तुम्हारे जाने के बाद से मेरी आँखें खुली हैं; क्योंकि कल दासी मेरे पास अपनी मालकिन शेम्स-ए-नहार का एक सीलबंद पत्र लेकर आई थी।” उसने जौहरी को अपने और उसके बीच हुई सारी बातें बताईं; फिर उसने कहा, “मैं अपने मामले में उलझन में पड़ गया हूँ और मेरा धैर्य टूट गया है; क्योंकि अबू-अल-हसन मेरा हौसला बढ़ाने वाला साथी था, क्योंकि वह दासी को जानता था।”

जौहरी ने उसकी बातें सुनकर हँसा। तब बक्कर के पुत्र अली ने उससे कहा, “तुम मेरी बातों पर क्यों हँस रहे हो, जबकि मैंने तुम्हारे आने की अच्छी भविष्यवाणी की थी और तुम्हें विपत्तियों से बचने के लिए सहारा बनाया था।” फिर वह रोने लगा और उसने ये आयतें पढ़ीं: “बहुत से लोग मुझे देखकर मेरे आँसुओं पर हँसते हैं, परन्तु यदि उन्होंने मेरी तरह कष्ट सहा होता, तो वे भी रो पड़ते।” किसी पीड़ित पर दया नहीं आती, सिवाय उसके जैसे ही चिंतित व्यक्ति के, जिसका कष्ट लंबा खिंच गया हो। मेरी उमंग, तड़प, आहें, विचार और बेचैनी, सब उस मित्र के लिए हैं जो मेरे हृदय की गहराइयों में निवास करता है: उसने वहीं अपना घर बना लिया है और कभी उसे नहीं छोड़ता; फिर भी उससे मिलना मुझे बहुत कम ही संभव हो पाता है: मेरे पास कोई ऐसा मित्र नहीं है जिसे मैं उसके स्थान पर स्वीकार कर सकूँ; और मैंने उसके सिवा किसी और मित्र को नहीं चुना है। और जब जौहरी ने उससे ये शब्द सुने और उसके द्वारा पढ़े गए छंदों को समझा, तो वह उसके रोने पर रो पड़ा और उसे दासी के साथ उसके द्वारा छोड़ दिए जाने के बाद से जो कुछ भी हुआ था, वह सब बताया। बक्कर के पुत्र अली ने उसका भाषण सुना; और उसके हर शब्द पर उसके चेहरे का रंग पीले से लाल होता चला गया, और उसका शरीर कभी मजबूत तो कभी कमजोर हो जाता था। और जब उसने अपना विवरण समाप्त किया,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.47%** है।

और शेम्स-एन-नाहार। 29 बेक्सिर का पुत्र रोया और उससे कहा, हे मेरे भाई, मैं तो मर ही रहा हूँ, काश मेरा अंत निकट होता! हे कृपा करके, मैं तुझसे विनती करता हूँ कि जब तक परमेश्वर अपनी इच्छा के अनुसार कार्य न करे, तब तक तू मेरी सभी बातों में मेरा साथ दे, और मैं तुझसे

शब्दों में कोई विरोध नहीं करूँगा। — जौहरी ने उत्तर दिया, तेरे मन की यह आग केवल उस व्यक्ति से मिलने से बुझेगी जिससे तू प्रेम करता है; परन्तु यह मुलाकात इस खतरनाक स्थान से दूर किसी और स्थान पर होनी चाहिए: यह मेरे घर के पास वाले मेरे किसी घर में होनी चाहिए। दासी अपनी मालकिन के साथ वहीं मेरे पास आई थी, और यह वही स्थान है जिसे उसने चुना है: इसलिए मैं चाहता हूँ कि तू दोनों आपस में मिलें, और वहाँ तू एक-दूसरे को अपने कष्टों के बारे में बता। —तो बक्कर के पुत्र अली ने कहा, जैसा तुम चाहो वैसा करो, और जो तुम्हें उचित लगे वही सही है। जौहरी कहता है, मैं उस रात उसके साथ रहा, उससे सुबह तक बातें करता रहा, फिर मैंने सुबह की नमाज़ अदा की और उससे विदा लेकर अपने घर चला गया। वहाँ पहुँचे हुए मुझे ज़्यादा देर नहीं हुई थी कि दासी आई और उसने मुझे प्रणाम किया, मैंने भी उसे प्रणाम किया और उसे बक्कर के पुत्र अली के साथ तय हुई योजना के बारे में बताया; इस पर उसने कहा, जान लो कि खलीफ़ा हमसे दूर चला गया है, और हमारे घर में कोई नहीं है, और यह हमारे लिए ज़्यादा सुरक्षित और बेहतर है। मैंने उत्तर दिया, तुम्हारी बात सही है; लेकिन मेरा घर ऐसा नहीं है; क्योंकि यह अधिक सुरक्षित है और हमारे लिए अधिक उपयुक्त है। (इसलिए दासी ने कहा, जैसा आप उचित समझें वैसा ही होगा; और मैं अपनी मालकिन के पास जाकर उन्हें आपके द्वारा बताई गई बात से अवगत कराती हूँ और उनके सामने आपका प्रस्ताव रखती हूँ। फिर वह अपनी मालकिन के पास गई और उनके सामने प्रस्ताव रखा, और मेरे घर लौटकर मुझसे कहा, मेरी मालकिन आपकी बात मान गई हैं। और उसने अपनी जेब से सोने के कुछ सिक्कों से भरा एक पर्स निकाला और मुझसे कहा, मेरी मालकिन आपको प्रणाम करती हैं और कहती हैं, इसे ले लीजिए और इससे हमारे लिए वह सब कुछ प्राप्त कीजिए जिसकी हमें

आवश्यकता है। — लेकिन मैंने शपथ ली कि मैं इसमें से कुछ भी खर्च नहीं करूँगा। इसलिए उसने पर्स वापस ले लिया और अपनी मालकिन के पास लौटकर उनसे कहा, उन्होंने पैसे स्वीकार नहीं किए; बल्कि मुझे लौटा दिए। — और दासी के जाने के बाद, मैं अपने दूसरे घर गया और वहाँ बर्तन और फर्नीचर, जो भी आवश्यक था, ले गया। मैंने चांदी और चीनी मिट्टी के बर्तन मंगवाए और खाने-पीने की सारी आवश्यक चीजें तैयार कर लीं; और जब दासी वापस आई और उसने मेरा काम देखा, तो वह प्रसन्न हुई; और उसने मुझे बेकर के पुत्र अलेक को लाने का आदेश दिया; लेकिन मैंने उत्तर दिया, उसे तुम्हारे सिवा कोई नहीं लाएगा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.23%** है।

30 बक्कर के पुत्र अली की कहानी, तदनुसार वह उसके पास गई और उसे अत्यंत उत्तम वस्त्रों में, और तेजस्वी रूप में लेकर आई; और जब वह आया, तो मैंने उसका स्वागत किया और उसे उसकी स्थिति के अनुरूप गद्दे पर बैठाया, और उसके सामने चीनी मिट्टी और क्रिस्टल के बर्तनों में सुगंधित फूल रखे, और उससे लगभग एक घंटे तक बातचीत की; जिसके बाद, दासी चली गई, और सूर्यास्त की नमाज़ के बाद तक अनुपस्थित रही, जब वह शेर्न्स-ए-नाहर और दो दासियों के साथ लौटी, और कोई नहीं था। जैसे ही उसने बक्कर के पुत्र अली को देखा और उसने उसे देखा, वे दोनों बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़े, और एक घंटे तक उसी अवस्था में रहे; और जब उन्हें होश आया, तो वे एक-दूसरे के पास आए, और प्यार से बातें करने लगे; और इसके बाद, उन्होंने कुछ इत्र का प्रयोग किया, और मेरे आचरण के लिए मुझे धन्यवाद देने लगे। तब मैंने उनसे कहा, क्या तुम्हें भोजन की इच्छा है? और उन्होंने उत्तर दिया, हाँ। तो मैं उनके लिए कुछ भोजन लाया, और उन्होंने तृप्त होकर खाया और अपने हाथ

धोए; और मैं उन्हें दूसरे कमरे में ले गया, जहाँ मैं उनके लिए शराब लाया; और उन्होंने उसे पिया और मदहोश हो गए: तब शेम्स-एन-नाहर ने मुझसे कहा, हे मेरे स्वामी, अपनी कृपा पूरी कीजिए और हमारे लिए एक वीणा या कुछ और लाइए।

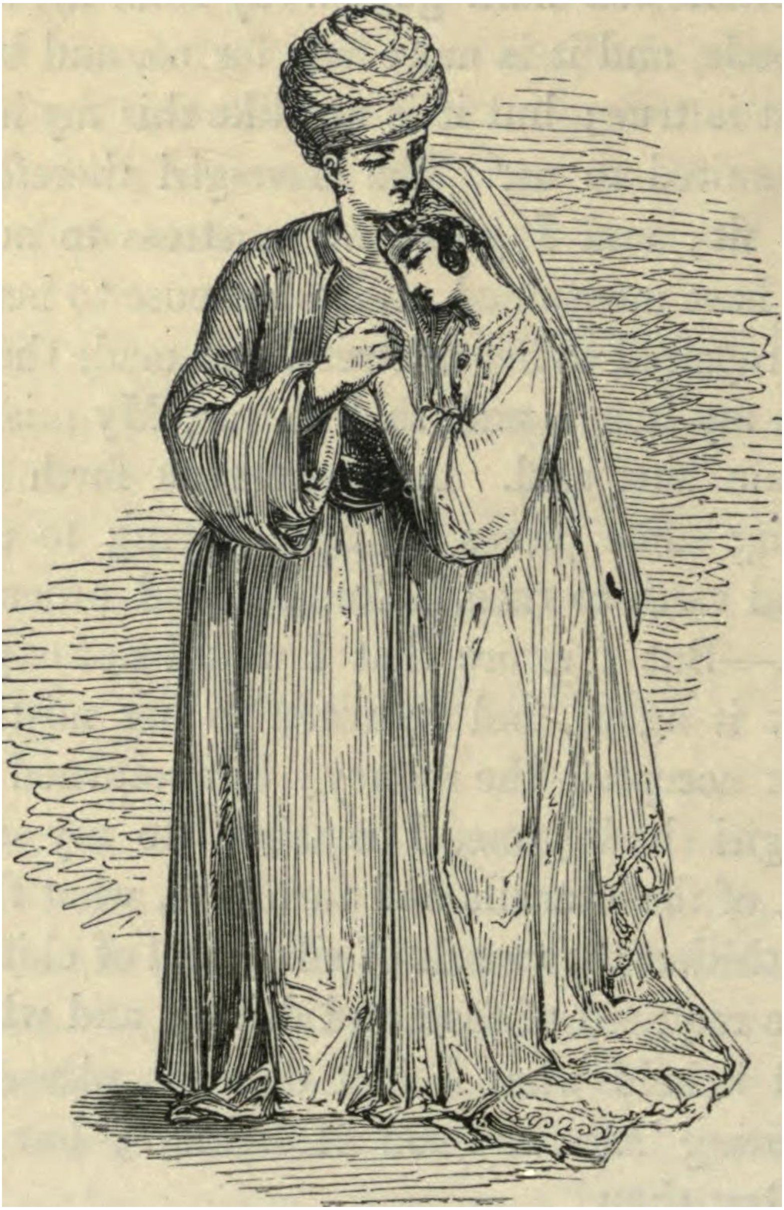

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.32%** है।

और शेम्स-एन-नाहर। 31 अन्य वाद्य यंत्र, ताकि अब हम अपने आनंद को

पूर्ण कर सकें। मैंने उत्तर दिया, मेरे सिर और मेरी आँख पर। और मैं उठा, और एक वीणा लाया, और उसने उसे लिया और उसे सुर दिया, और उसे अपनी गोद में रखकर, उस पर अद्भुत ढंग से बजाया, और ये दो छंद गाए: — मैं इतनी नींदहीन रही हूँ कि ऐसा लगता है जैसे मुझे नींदहीनता से प्यार हो गया हो; और इतनी दुबली हो गई हूँ कि बीमारी मेरे लिए स्वाभाविक लगती है; और मेरे आँसू मेरे गालों पर बहते रहे हैं, उन्हें जलाते रहे हैं। काश मुझे पता होता कि क्या हम अपने वियोग के बाद मिलेंगे! उसने मन को चकित कर देने वाले छंदों को विभिन्न उतार-चढ़ावों और मनमोहक संकेतों के साथ गाना शुरू किया, और श्रोता उसके अद्भुत गायन पर आनंद से झूम उठे; कुछ देर बैठे रहने और प्याले आपस में बाँटने के बाद, उस युवती ने मधुर स्वर में कुछ छंद गाए, जो इस प्रकार शुरू होते थे: — मेरे प्रिय ने मुझसे मिलने का वादा किया था और उसे उस रात पूरा किया जिसे मैं कई रातों के बराबर मानती हूँ। इसके बाद, मैंने उन्हें उस घर में छोड़ दिया और अपने घर चली गई, और वहाँ सुबह तक रात बिताई। और जब सुबह हुई, तो मैंने ईश्वर द्वारा निर्धारित प्रार्थनाएँ कीं और थोड़ी शराब पी,22 और अपने दूसरे घर में उनसे मिलने जाने के बारे में सोचने लगी; और जब मैं बैठी थी, तभी मेरा पड़ोसी डरा हुआ मेरे पास आया और मुझसे बोला, हे मेरे भाई, पिछली रात तुम्हारे दूसरे घर में जो कुछ हुआ, वह मेरे लिए मामूली बात नहीं है। तो मैंने उससे कहा, हे मेरे भाई, क्या हुआ है? मुझे बताओ कि मेरे घर में क्या हुआ है। — उसने उत्तर दिया, "कल हमारे पड़ोसियों के यहाँ जो लुटेरे आए थे और जिन्होंने फलाँ व्यक्ति की हत्या कर उसका सामान लूट लिया था, उन्होंने तुम्हें कल अपने दूसरे घर में सामान ले जाते हुए देखा था और रात में वहाँ आकर तुम्हारा सामान लूट लिया और तुम्हारे मेहमानों की हत्या कर दी।" — इसलिए मैं और मेरा पड़ोसी उठे और उस घर में गए, तो वह खाली

मिला; उसमें कुछ भी नहीं बचा था; मैं अपनी स्थिति को लेकर व्याकुल था और मैंने कहा, “सामान की तो मुझे परवाह ही नहीं है; और अगर मैंने उनमें से कुछ अपने दोस्तों से उधार लिया था और वे खो गए हैं, तो इसमें कोई बुराई नहीं है; क्योंकि वे मेरे सामान के गायब होने और मेरे घर की लूटपाट के बारे में मेरा बहाना जानते हैं; लेकिन जहाँ तक बक्कर के बेटे अली और अमीरुल मोमिनीन की रखैल का सवाल है, मुझे डर है कि उनका मामला बाहर फैल जाएगा और यही मेरी जान का कारण बनेगा।” — तब जौहरी ने अपने साथी की ओर देखा और उससे कहा, “तुम मेरे भाई और पड़ोसी हो, और जो बात मुझे नहीं बतानी चाहिए, उसे तुम छुपाओगे: तो फिर तुम मुझे क्या करने की सलाह देते हो?” उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, “मैं तुम्हें यही सलाह देता हूँ कि तुम सावधान रहो; क्योंकि वे

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.23%** है।

32 बक्कर के मोज़े 'अली की कहानी, जिन्होंने तेरे घर में घुसकर तेरी संपत्ति लूट ली, खलीफा के महल के एक प्रतिष्ठित दल की हत्या कर दी, और पुलिस के मुख्य मजिस्ट्रेट के घर के एक दल की भी हत्या कर दी, और अदालत के पहरेदार उनकी हर जगह तलाश कर रहे हैं, और शायद वे उन्हें पा लें, और तेरी इच्छा बिना किसी प्रयास के पूरी हो जाएगी। और जब जौहरी ने ये शब्द सुने, तो वह अपने घर लौट आया, जहाँ वह रहता था, और मन ही मन बोला, "निःसंदेह जो मेरे साथ हुआ है, वही अबू-1-हसन को डर था, और जिसके कारण वह अल-बसरा चला गया, और मैं उसी में फँस गया हूँ।" उसके घर की लूट लोगों में सार्वजनिक रूप से फैल गई, और लोग हर तरफ से उसके पास आए; और उनमें से कुछ उसकी बदकिस्मती पर खुश हुए, और कुछ उसकी चिंता में शामिल हुए, जबकि वह उनसे अपनी शिकायतें करता रहा, और न तो कुछ खाया और न ही

कुछ पिया। जब वह पश्चाताप करते हुए बैठा था, तभी उसका एक सेवक उसके पास आया और उससे कहा, “द्वार पर एक व्यक्ति है जो तुम्हें बुला रहा है, जिसे मैं नहीं जानता।” तब जौहरी उसके पास गया और उसे प्रणाम किया, और पाया कि वह एक अपरिचित व्यक्ति है; और उस व्यक्ति ने कहा, “मुझे तुमसे कुछ कहना है।” इसलिए वह उसे अपने घर ले गया और उससे पूछा, “तुम्हें मुझसे क्या कहना है?” उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, “मेरे साथ अपने दूसरे घर चलो।” जौहरी ने कहा, “क्या तुम मेरे दूसरे घर को जानते हो?” उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, “तुम्हारा सारा मामला मुझे ज्ञात है, और मैं यह भी जानता हूँ कि परमेश्वर तुम्हारी चिंता कैसे दूर करेगा।” — तब मैंने मन ही मन कहा (गौरी आगे कहता है), “मैं उसके साथ जहाँ वह जाना चाहता है, वहाँ चलूँगा।” तब मैं उसके साथ घर गया, और जब उस व्यक्ति ने घर देखा, तो उसने कहा, “इसमें कोई द्वारपाल नहीं है, और हम इसमें नहीं बैठ सकते; इसलिए मेरे साथ दूसरे घर चलो।” और वह आदमी एक जगह से दूसरी जगह जाता रहा, और मैं भी उसके साथ, जब तक रात नहीं हो गई; और मैंने उससे कोई सवाल नहीं किया। वह अपने रास्ते पर चलता रहा, और मैं भी उसके साथ, जब तक हम खुले मैदान में नहीं पहुँच गए, और उसने कहा, "मेरे पीछे आओ।" वह तेज़ी से आगे बढ़ा, और मैं उसके पीछे-पीछे, जब तक हम नदी पर नहीं पहुँच गए, तब वह मेरे साथ एक नाव में सवार हो गया, और नाविकों ने हमें तब तक चप्पू चलाया जब तक हम दूसरे किनारे पर नहीं पहुँच गए; फिर वह नाव से उतरा, और मैं भी उसके पीछे उतरा, और उसने मेरा हाथ पकड़ा, और मुझे एक ऐसी गली में ले गया जिसमें मैं अपने पूरे जीवन में कभी नहीं गया था, और मुझे नहीं पता था कि वह किस तरफ है। फिर वह एक घर के दरवाजे पर रुका, और उसे खोलकर अंदर चला गया, मुझे भी अपने साथ ले गया, और लोहे के ताले से दरवाजा बंद कर दिया;

इसके बाद, वह मुझे उस गलियारे से ले गया जब तक हम दस आदमियों के सामने नहीं आ गए, जो मानो एक ही आदमी थे, और वे भाई थे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.61%** है।

जब हम उनके पास गए, तो पहले बताए गए व्यक्ति ने उन्हें सलाम किया, और उन्होंने भी सलाम का जवाब दिया, और मुझे बैठने का आदेश दिया। तो मैं अत्यधिक थकान से कमजोर होकर बैठ गया; और वे मेरे लिए गुलाब जल लाए, और उसे मेरे चेहरे पर छिड़का, और मुझे पीने के लिए शराब दी, और मेरे सामने कुछ भोजन रखा। तब मैंने [मन ही मन] कहा, यदि भोजन में कुछ हानिकारक होता, तो वे मेरे साथ भोजन नहीं करते। और जब हमने अपने हाथ धो लिए, तो हममें से प्रत्येक अपने-अपने स्थान पर लौट गया, और उन्होंने कहा, क्या तुम हमें जानते हो? मैंने उत्तर दिया, नहीं: न ही मैंने अपने जीवन में कभी तुम्हारा पता जाना है: बल्कि, मैं उसे भी नहीं जानता जो मुझे तुम्हारे पास लाया है। तब उन्होंने कहा, हमें अपनी कहानी बताओ, और झूठ मत बोलो। तो मैंने कहा, जान लो कि मेरा मामला अद्भुत है, और मेरा मामला असाधारण है। और क्या तुम, मैंने आगे कहा, मेरी कहानी से कुछ भी परिचित हो? उन्होंने उत्तर दिया, "हाँ: हम ही वो लोग हैं जिन्होंने कल रात तुम्हारा सामान लिया था, और हम तुम्हारी सहेली और वो गायिका को भी ले गए थे।" इस पर मैंने कहा, "अल्लाह अपनी सुरक्षा का पर्दा तुम पर डाले! मेरी सहेली और गायिका कहाँ हैं?" उन्होंने हाथ से इशारा करते हुए एक तरफ कहा, "यहाँ हैं। लेकिन अल्लाह की कसम, ऐ हमारे भाई, हममें से किसी को भी उनका राज़ नहीं पता चला है, और जब से हम उन्हें लाए हैं, हमने उनसे कोई बातचीत नहीं की है, न ही उनकी हालत के बारे में पूछा है, क्योंकि हमने उनमें गरिमा और सम्मान देखा है; और इसी वजह से हमने उन्हें नहीं

मारा। इसलिए हमें उनकी सच्ची कहानी बता दो, और तुम अपनी और उनकी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त रहोगे।" - जौहरी ने कहा, "जब मैंने ये शब्द सुने, तो मैं डर और दहशत से लगभग मर ही गया था, और मैंने उनसे कहा, 'जान लो कि अगर उदारता खो जाए, तो वह केवल तुममें ही मिलेगी।'" और अगर मेरे पास कोई ऐसा राज़ है जिसे ज़ाहिर करने से मैं डरता हूँ, तो उसे केवल तुम्हारे सीने ही छुपा सकते हैं। मैंने इस तरह विस्तार से बताना शुरू किया और पाया कि इसे छुपाने के बजाय उन्हें तुरंत बता देना ज़्यादा फ़ायदेमंद होगा; इसलिए मैंने उन्हें अपने साथ घटी सारी बातें बताईं, जब तक कि कहानी का अंत नहीं हो गया। जब उन्होंने मेरी कहानी सुनी, तो उन्होंने कहा, "क्या यह युवक अली, बेक्कीर का पुत्र है, और यह स्त्री शेम्स-एन-नाहर है?" उन्होंने उन दोनों से माफ़ी मांगी और बाद में मुझसे कहा, "सचमुच, जो कुछ हमने तुम्हारे घर से लिया था, उसका कुछ हिस्सा गायब हो गया है; और यही बचा है।" फिर उन्होंने मुझे ज़्यादातर चीज़ें लौटा दीं और उन्हें मेरे घर में उनकी जगह पर वापस पहुँचाने का वादा किया, साथ ही यह भी वादा किया कि वे बाकी चीज़ें भी लौटा देंगे: लेकिन वे दो गुटों में बँट गए; एक गुट मेरे पक्ष में और दूसरा मेरे विरुद्ध। इसके बाद, हम उस घर से निकल गए। — यह मेरी कहानी थी। II. ¥

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.93%** है।

34 बक्कर के पुत्र अली की कहानी, अब बक्कर के पुत्र अली और शेम्स-एन-नाहर डर के मारे मरने की कगार पर थे। मैं उनके पास गया और उन्हें प्रणाम किया, और उनसे पूछा, दासी और दोनों दासियों का क्या हुआ, और वे कहाँ चली गईं? उन्होंने उत्तर दिया, हमें उनके बारे में कोई जानकारी नहीं है। और हम अपने रास्ते पर चलते रहे जब तक कि हम उस

स्थान पर नहीं पहुँच गए जहाँ नाव थी, और उन्होंने हमें उसमें बिठा दिया; और यह वही नाव थी जिसमें हम पिछली शाम को पार गए थे। नाविक हमें तब तक चप्पू चलाता रहा जब तक कि वह हमें दूसरे किनारे तक नहीं ले गया, और उन्होंने हमें उतार दिया। लेकिन जैसे ही हम किनारे पर बैठे, घुड़सवारों का एक दल आया और हमें चारों ओर से घेर लिया; तब हमारे साथ के लोग चीलों की तरह झपट पड़े, और नाव उनके पास लौट आई, वे उसमें सवार हो गए, और नाव उन्हें लेकर नदी पार चली गई, जबकि मैं बक्कर के पुत्र अली और शेम्स-एन-नाहर के साथ नदी के किनारे पर ही रह गया, क्योंकि हम न तो हिल पा रहे थे और न ही आराम कर पा रहे थे। घुड़सवारों ने हमसे पूछा, तुम कहाँ से आए हो? और हम उत्तर देने में असमर्थ थे; तब मैंने उनसे कहा, वास्तव में जिन्हें तुमने हमारे साथ देखा, उन्हें हम नहीं जानते; लेकिन हमने उन्हें यहाँ देखा; और जहाँ तक हमारी बात है, हम गायक हैं, और वे हमें अपने साथ गाने के लिए ले जाना चाहते थे, और हम उनसे केवल चतुराई और मीठे शब्दों से ही बच पाए: इसलिए इस अवसर पर हमें मुक्त कर दो, क्योंकि तुमने उनका व्यवहार देखा है। लेकिन घुड़सवारों ने शेम्स-एन-नाहर और बक्कर के बेटे अली की ओर देखा और मुझसे कहा, "तुमने सच नहीं कहा है: यदि तुम सच बोलने वाले हो तो हमें बताओ कि तुम कौन हो, कहाँ से आए हो और शहर के किस हिस्से में रहते हो।" मुझे कुछ समझ नहीं आया कि क्या कहूँ; लेकिन शेम्स-एन-नाहर उठा और घुड़सवारों के सरदार के पास गया, और

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.00%** है।

और शेम्स-एन-नाहलर 35 ने उससे अकेले में बात की; इस पर वह अपने घोड़े से उतरा और उसे उस पर सवार किया, और लगाम हाथ में लेकर उसे आगे ले गया; और उसने बक्कर के पुत्र अली और मेरे साथ भी ऐसा ही किया। फिर घुड़सवारों का सरदार हमें नदी के किनारे एक जगह ले गया और अपनी विदेशी भाषा में पुकारा, 23 जिस पर कई लोग उसके पास आए, और उसने हमें एक नाव में बिठाया, उसके साथी दूसरी नाव में सवार हुए, और वे हमें तब तक चप्पू चलाते रहे जब तक हम खलीफा के महल में नहीं पहुँच गए, जबकि हम अत्यधिक भय के कारण मृत्यु के मुंह में धकेल दिए गए। [शेम्स-एन-नाहर के वहाँ उतरने के बाद,] हम आगे बढ़ते रहे जब तक कि हम उस स्थान पर नहीं पहुँच गए जहाँ से हमारे क्वार्टर की ओर जाने वाला रास्ता था, और वहाँ हम उतरे, और हम चलते रहे, घुड़सवारों का एक दल हमारा हौसला बढ़ाता रहा, जब तक कि हम [बेकर के बेटे अली के] घर में प्रवेश नहीं कर गए, जहाँ हमारे साथ आए घुड़सवारों ने हमें विदाई दी और अपने रास्ते चले गए। जहाँ तक हमारी बात है, हम घर में प्रवेश कर गए, और अपनी जगह से हिल नहीं पाए, क्योंकि हमें सुबह और शाम का पता नहीं चल रहा था, और हम सुबह

होने तक इसी स्थिति में रहे। और दिन ढलने पर, बेकर का बेटा अली एक दौरे से गिर पड़ा, और औरतें और मर्द उसके ऊपर रोने लगे, क्योंकि वह बेसुध पड़ा था; और उसके परिवार के कुछ लोग मेरे पास आए, और बोले, हमें बताओ कि हमारे बेटे के साथ क्या हुआ है, और हमें उसकी इस हालत का कारण बताओ। मैंने उत्तर दिया, हे लोगों, मेरी बात सुनो, और मेरे साथ कुछ भी अप्रिय मत करो; लेकिन धैर्य रखें, वह ठीक हो जाएगा और आपको अपनी कहानी खुद बताएगा। तब मैंने उनसे आग्रह किया और उन्हें इस बात का डर दिखाया कि कहीं मैं उनके सामने शर्मिंदा न हो जाऊं। जब हम इस तरह बात कर रहे थे, तभी अचानक बक्कर का बेटा अली अपने बिस्तर पर करवट बदलने लगा, उसका परिवार खुश हो गया और लोग उससे दूर चले गए, और उसके परिवार ने मुझे उसे छोड़कर जाने से मना कर दिया। उन्होंने उसके चेहरे पर गुलाब जल छिड़का, और जब वह ठीक हो गया और उसकी खुशबू फैल गई, तो उन्होंने उससे उसकी हालत के बारे में पूछना शुरू किया, और उसने उन्हें बताना शुरू किया; लेकिन उसकी ज़बान जल्दी जवाब नहीं दे पा रही थी। इसके बाद, उसने उन्हें इशारा किया कि वे मुझे अपने घर जाने की इजाज़त दें। तदनुसार, उन्होंने मुझे जाने दिया, और मैं मुश्किल से अपनी जान बचाकर निकल पड़ा, और दो आदमियों के बीच से अपने घर की ओर बढ़ा, जब तक कि मैं पहुँचकर अपने परिवार के पास नहीं गया; और जब उन्होंने मुझे उस हालत में देखा, तो उन्होंने अपने चेहरे पर थप्पड़ मार लिए। लेकिन मैंने उन्हें हाथ से इशारा किया कि वे चुप रहें, और वे चुप हो गए। फिर वे दोनों आदमी अपने रास्ते चले गए; और मैं बाकी रात अपने बिस्तर पर करवटें बदलता रहा, और सूर्योदय और दोपहर के बीच के मध्य समय तक नहीं जागा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

27.97% है।

36 बक्कर के मोज़े 'अली की कहानी, इत्यादि। जब मैंने अपने परिवार को अपने चारों ओर घेरा बनाकर यह कहते हुए पाया, “किसने तुझ पर विपत्ति लाई है और अपनी दुष्टता से तुझे मारा है?” तो मैंने उनसे कहा, “मुझे थोड़ी शराब लाओ।” तो वे ले आए और मैंने तृप्त होने तक उसे पिया, और फिर उनसे कहा, “जो हुआ सो हुआ।” और वे अपने रास्ते चले गए। इसके बाद, मैंने अपने साथियों से क्षमा मांगी और उनसे अपने घर से गायब हुई चीजों के बारे में पूछा, यह पूछते हुए कि क्या कोई संपत्ति वापस आई है। उन्होंने उत्तर दिया, “कुछ हिस्सा वापस आ गया है; क्योंकि एक आदमी आया और उसने उसे घर के दरवाजे के भीतर फेंक दिया, और हमने उसे नहीं देखा।” तो मैंने खुद को तसल्ली दी और दो दिन तक अपने घर में ही रहा, अपनी जगह से उठने में असमर्थ था; इसके बाद मैंने स्वयं को बल दिया और स्नानघर की ओर चल पड़ा। मेरा हृदय बक्कर के पुत्र और शेम्स-एन-नाहर के विषय में व्याकुल था, क्योंकि उस दौरान मुझे उनके बारे में कोई खबर नहीं मिली थी, और मैं बक्कर के पुत्र अली के घर नहीं जा सका था, तथा अपने भय के कारण मुझे आराम भी नहीं मिल रहा था। तब मैंने अपने द्वारा किए गए कार्यों के लिए ईश्वर (जिसका नाम महान है!) के समक्ष पश्चाताप किया और अपनी सुरक्षा के लिए उनका धन्यवाद किया। कुछ समय बाद, मेरे मन में उस स्थान पर जाने और तुरंत लौटने का विचार आया; और जब मैं जाने ही वाला था, तो मैंने एक स्त्री को खड़ी देखा और उसे ध्यान से देखा, और देखा कि वह शेम्स-एन-नाहर की दासी थी; और जब मैंने उसे पहचान लिया, तो मैं आगे बढ़ा और अपने कदमों को तेज कर दिया; लेकिन वह मेरे पीछे-पीछे आई, और मैं उससे भयभीत हो गया: और हर बार जब मैं उसे देखता, तो उसका भय मुझ पर हावी हो जाता, जबकि वह लगातार कहती रही,

रुको, ताकि मैं तुम्हें कुछ बता सकूँ। लेकिन मैंने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया और तब तक नहीं रुका जब तक कि मैं एक ऐसी जगह पर मस्जिद के पास नहीं पहुँच गया जहाँ कोई लोग नहीं थे; तभी उसने मुझसे कहा, इस मस्जिद में प्रवेश करो, ताकि मैं तुमसे कुछ कह सकूँ, और डरो मत। और उसने मुझे वश में कर लिया; इसलिए मैं मस्जिद में दाखिल हुआ, और वह मेरे पीछे दाखिल हुई; और मैंने दो रकअत नमाज़ पढ़ी; जिसके बाद मैं आह भरते हुए उसके पास गया और उससे पूछा, तुम क्या चाहती हो? उसने मुझसे मेरी हालत के बारे में पूछा, और मैंने उसे अपने और बक्कर के बेटे अली के साथ जो हुआ था, वह बताया, और उससे पूछा, तुम्हारी कहानी क्या है? उसने उत्तर दिया, जान लो कि जब मैंने देखा कि उन आदमियों ने तुम्हारे घर का दरवाजा तोड़कर अंदर प्रवेश किया है, तो मैं उनसे डर गई, मुझे आशंका थी कि वे खलीफा के हैं, और वे मुझे और मेरी प्रेमिका को ले जाएंगे, और हम तुरंत मर जाएंगे; इसलिए मैं दोनों दासियों के साथ छतों से भाग निकली, और हम एक ऊँची जगह से लोगों के बीच कूद गईं, और वहाँ से भागती रहीं जब तक कि हम इवहालीफेह के महल में नहीं पहुँच गईं, जो कि एक बेहद खतरनाक जगह थी।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.18%** है।

बेहद अपमानजनक स्थिति। हमने अपने संबंध को गुप्त रखा और अगली रात अंधेरा होने तक जलते अंगारों पर तड़पते रहे। फिर मैंने नदी का द्वार खोला और उस नाविक को बुलाया जिसने हमें पिछली रात नदी में उतारा था। मैंने उससे कहा, "हम नहीं जानते कि मेरी प्रेमिका का क्या हुआ; इसलिए मुझे नाव में ले चलो ताकि मैं नदी में उसकी तलाश कर सकूँ: शायद मुझे उसके बारे में कुछ खबर मिल जाए।" तो वह मुझे नाव में ले गया और आधी रात तक नदी में मेरे साथ चलता रहा। तभी मैंने एक नाव

को द्वार की ओर आते देखा, जिसमें एक आदमी चप्पू चला रहा था और कुछ अन्य पुरुष भी थे,24 और उनके बीच एक स्त्री लेटी हुई थी; नाविक चप्पू चलाता रहा जब तक कि वह किनारे पर नहीं पहुँच गया; और जब वह स्त्री किनारे पर उतरी, तो मैंने उसे ध्यान से देखा और देखा कि वह शेर्न्स-एन-नाहुर थी। इसलिए मैं भी किनारे पर उतरा और उसके पास गया, उसे फिर से देखने की उम्मीद छोड़ देने के बाद उसे देखकर मैं खुशी से स्तब्ध था; और जब मैं उसके सामने आया, तो उसने मुझे आदेश दिया कि मैं उसे

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

27.08% है।

38 बक्कर के पुत्र अली की कहानी, इत्यादि। वह व्यक्ति जो उसके लिए एक हजार सोने के सिक्के लाया था। तब मैं और दो दासियाँ उसे उठाकर उसके बिस्तर पर लिटा दिया, और वह उस रात भर व्याकुल अवस्था में रही; और जब सुबह हुई, तो उसने दासियों और हिजड़ों को उस दिन उसके पास आने या उसके करीब आने से मना कर दिया। लेकिन अगले दिन वह ठीक हो गई, और मैंने उसे ऐसा पाया जैसे वह किसी कब्रिस्तान से निकली हो; इसलिए मैंने उसके चेहरे पर गुलाब जल छिड़का, उसके कपड़े बदले, उसके हाथ-पैर धोए, और उसे तब तक मनाती रही जब तक कि उसमें भोजन की इच्छा जागृत नहीं हो गई; और मैंने उसे थोड़ी शराब पिलाई, हालाँकि उसे भूख नहीं थी। और जब उसने ताज़ी हवा ली, और उसमें शक्ति लौट आई, तो मैंने उससे कहा, हे मेरी स्वामिनी, अपना ध्यान रखो, क्योंकि तुमने बहुत कष्ट सहे हैं, और विनाश के कगार पर पहुँच गई थी। लेकिन उसने उत्तर दिया, हे दयालु दासी, जो मुझ पर विपत्ति आई है, उससे तो मृत्यु भी मेरे लिए आसान होती; क्योंकि ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मैं मारी जाऊंगी और कोई भी युक्ति मुझे बचा नहीं सकती थी; क्योंकि जब लुटेरे हमें जौहरी के घर से ले गए, तो उन्होंने हमसे पूछा, तुम कौन हो और तुम्हारी क्या स्थिति है? — लेकिन मैंने उत्तर दिया, मैं एक गायिका हूँ — और उन्होंने मेरी बात मान ली: फिर उन्होंने बेक्कर के पुत्र अली से उसके बारे में पूछा और उससे पूछा, तुम कौन हो और तुम्हारी क्या स्थिति है? — और उसने उत्तर दिया, मैं आम लोगों में से हूँ। और वे हमें ले गए, और हम उनके साथ तब तक चलते रहे जब तक वे हमें अपने घर नहीं ले आए, और हम अपने अत्यधिक भय के कारण उनके साथ जल्दी-जल्दी चले; और जब वे अपने घर में हमारे साथ विश्राम कर रहे थे, तो उन्होंने मेरी ओर देखा और मेरे वस्त्र, हार और गहने

देखकर मेरी बात पर विश्वास नहीं किया और कहा, ये हार किसी गायिका के नहीं हैं। तब उन्होंने मुझसे कहा, सच बताओ और सच्चाई बताओ। क्या यही तुम्हारी कहानी है? लेकिन मैंने उन्हें कोई जवाब नहीं दिया, मन ही मन कहा, अब क्या वे मुझे मेरे गहनों और वस्त्रों के लिए मार डालेंगे? और मैंने एक शब्द भी नहीं कहा। उन्होंने बक्कर के बेटे अली की ओर देखा और उससे कहा, तुम कहाँ से आए हो? तुम्हारा रूप आम लोगों जैसा नहीं है। लेकिन वह चुप रहा। हमने अपनी बात छुपा ली और रोने लगे। ईश्वर ने लुटेरों के दिलों को हमारी ओर झुका दिया और उन्होंने हमसे पूछा, जिस घर में तुम थे, उसका मालिक कौन है? हमने उन्हें उत्तर दिया, उसका मालिक जौहरी है। उनमें से एक ने कहा, मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ और मुझे पता है कि वह अपने दूसरे घर में रह रहा है, और मैं उसे तुरंत तुम्हारे पास लाऊँगा। उन्होंने मिलकर मुझे और बक्कर के बेटे अली को अलग जगह पर रखने का फैसला किया और हमसे कहा, आराम करो; और डरो मत।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.88%** है।

कि तुम्हारा मामला उजागर हो जाएगा, क्योंकि तुम हमसे सुरक्षित हो। तब उनका साथी जौहरी के पास गया और उसे ले आया, और उसने उन्हें हमारा मामला बताया, और हम उसके पास गए; जिसके बाद, एक आदमी ने हमारे लिए एक नाव का इंतजाम किया, और उन्होंने हमें उसमें बिठाया, और हमें लेकर दूसरे किनारे पर चले गए, और हमें वहाँ उतारकर चले गए। तभी गश्ती दल के घुड़सवारों का एक दस्ता आया और पूछा, तुम कौन हो? तो मैंने गश्ती दल के मुखिया से बात की और उससे कहा, मैं शेम्स-एन-नाहर हूँ, खलीफा की रखैल। मैंने शराब पीकर मौजमस्ती की, और वज़ीरों की पत्नियों में से कुछ परिचितों से मिलने गई, और लुटेरे

मुझ पर आ गए, और मुझे पकड़ लिया, और मुझे इस जगह ले आए, और जब उन्होंने तुम्हें देखा तो वे भाग गए; और मैं तुम्हें बदला नहीं दे सकती। और जब घुड़सवारों के सरदार ने मेरी बातें सुनीं, तो उसने मुझे पहचान लिया और अपने घोड़े से उतरकर मुझे अपने घोड़े पर बिठा लिया, और इसी तरह उसने बक्कर के पुत्र अली और जौहरी को भी बिठाया; और अब मेरे हृदय में उनके कारण, विशेषकर जौहरी के लिए, जो बक्कर के पुत्र का साथी था, क्रोध की ज्वाला जल रही है: इसलिए उसके पास जाओ, उसे प्रणाम करो और बक्कर के पुत्र अली के विषय में उससे पूछताछ करो। (दास ने कहा) मैंने उसे उसके किए के लिए फटकारा और उसे चेतावनी देते हुए कहा, हे मेरी स्वामिनी, अपने लिए सावधान रहो: — परन्तु वह मुझ पर चिल्लाई और मेरी बातों से क्रोधित हो गई। तब मैं उठी और उससे दूर चली गई और तुम्हारे पास आई; परन्तु तुम्हें नहीं पाया; और मुझे बक्कर के पुत्र के पास जाने से डर लग रहा था;25 इसलिए मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही, ताकि मैं उससे उसके विषय में पूछ सकूँ और जान सकूँ कि वह किस हालत में है। और मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मेरी कृपा स्वीकार करें।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.21%** है।

40 बेकर के मोज़े 'अली की कहानी, इत्यादि। धन; क्योंकि शायद तुमने अपने मित्रों से कुछ वस्तुएँ उधार ली थीं और उन्हें खो दिया है, और यह आवश्यक है कि तुम उन्हें उनके उन सामानों के लिए मुआवज़ा दो जो तुम्हारे घर में खो गए हैं। - तो मैंने उत्तर दिया, जौहरी ने कहा, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। फिर मैं उसके साथ तब तक चला जब तक हम मेरे घर के पास नहीं आ गए, तब उसने मुझसे कहा, जब तक मैं तुम्हारे पास वापस न आ जाऊँ, यहीं रुको। और वह चली गई, और धन लेकर लौटी, और मुझे देते हुए कहा, हे मेरे स्वामी, हम आपसे किस स्थान पर मिलेंगे? मैंने उसे उत्तर दिया, मैं तुरंत अपने घर जाऊँगा, और तुम्हारे लिए कष्ट सहूँगा, और तुम्हारे लिए उससे मिलने का कोई उपाय निकालूँगा; क्योंकि इस समय उससे मिलना कठिन है। फिर उसने मुझे विदाई दी, और चली गई, और मैं धन अपने घर ले गया, और उसे गिनकर पाया कि वह पाँच हज़ार सोने के सिक्के थे; और मैंने उसमें से कुछ अपने परिवार को दे दिया, और जिन लोगों के पास मेरी कोई भी वस्तु थी, उन्हें मैंने मुआवजा दिया। इसके बाद, मैं अपने जवानों को लेकर उस घर गया जहाँ से सामान खो गया था, और बढ़ई और राजमिस्त्री को बुलाया, और उन्होंने उसे पहले जैसा बना दिया; और मैंने अपनी दासी को उसमें रखा, और जो कुछ मेरे साथ हुआ था उसे भूल गया। फिर मैं बक्कर के पुत्र अली के घर गया, और जब मैं वहाँ पहुँचा, तो उसके दासों ने मुझे रोका, और उनमें से एक ने मुझसे कहा, हमारे मालिक के दास दिन-रात तुम्हें खोज रहे हैं, और उसने उनसे वादा किया है कि जो कोई भी तुम्हें उसके पास लाएगा, वह उसे मुक्त कर देगा; इसलिए वे तुम्हें खोज रहे हैं, लेकिन उन्हें नहीं पता कि तुम कहाँ हो। मेरे मालिक में कुछ शक्ति लौट आई है; लेकिन वह

बार-बार बीमार पड़ जाता है: और जब वह ठीक होता है, तो वह तुम्हारा जिक्र करता है, और कहता है, तुम्हें उसे एक पल के लिए मेरे पास लाना होगा, और वह लौटकर अपने रास्ते चला जाएगा। — तो मैं उस युवक के साथ उसके स्वामी के पास गया, और पाया कि वह बोल नहीं पा रहा था; जब मैंने उसे देखा, तो मैं उसके सिर के पास बैठ गया, और उसने अपनी आँखें खोलीं, और मुझे देखकर रो पड़ा, और मुझसे कहा, आपका स्वागत है। तब मैंने उसे उठाया, और उसे बैठाया, और उसे अपने सीने से लगा लिया; और उसने मुझसे कहा, हे मेरे भाई, जान लो कि जब से मैं लेटा हूँ, तब से अब तक उठा नहीं हूँ; और ईश्वर की स्तुति हो कि मैंने तुम्हें देखा! — जौहरी कहता है, मैंने उसे तब तक उठाए रखा जब तक कि मैंने उसे उसके पैरों पर खड़ा नहीं कर दिया, और उसे कुछ कदम चलने को कहा, और उसके कपड़े बदले, और उसने कुछ शराब पी; और जब मैंने उसमें शक्ति के लक्षण देखे, तो मैंने उसे दासी के साथ हुई घटना के बारे में बताया; मुझे कोई और नहीं सुन रहा था; जिसके बाद मैंने उससे कहा, अपने हौसले बुलंद रखो, क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम क्या सह रहे हो। और वह मुस्कुराया, और मैंने उससे कहा, तुम्हें केवल वही अनुभव होगा जो तुम्हें प्रसन्न करेगा और तुम्हें ठीक करेगा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.43%** है।

AXD SHEMS-EX-XAHAR. 41 thce. तब बक्कर के पुत्र अली ने भोजन लाने का आदेश दिया; और वे भोजन ले आए; और उसने अपने जवानों को संकेत दिया, जिसके बाद वे तितर-बितर हो गए; और उसने मुझसे कहा, हे मेरे भाई, क्या तुमने देखा है कि हम पर क्या विपत्ति आई है? और उसने मुझसे क्षमा मांगी, और पूछा कि मैं बीते दिनों में कैसा था। तो मैंने उसे शुरू से अंत तक अपने साथ घटी सारी बातें बताईं; और वह

आश्चर्यचकित हुआ, और नौकरों से कहा, मुझे ऐसी-ऐसी चीजें लाओ। और वे उसके लिए कीमती फर्नीचर, और सोने-चांदी की वस्तुएं लाए, जो मेरे नुकसान से कहीं अधिक थीं, और मुझे वे सब दे दीं; और मैंने उन्हें अपने घर भेज दिया, और अगली रात उसके साथ रहा। और जब सुबह हुई, तो उसने मुझसे कहा, जान लो कि हर चीज का एक अंत होता है; और प्रेम का अंत मृत्यु या मिलन है; और मैं मृत्यु के निकट हूँ: काश, जो कुछ मेरे साथ हुआ है, उससे पहले ही मेरी मृत्यु हो गई होती! यदि ईश्वर हम पर कृपालु न होते, तो हम अपमानित होते; और मुझे नहीं पता कि मेरी इस वर्तमान स्थिति से मुझे क्या मुक्ति दिलाएगा। यदि ईश्वर का भय न होता, तो मैं स्वयं अपनी मृत्यु को शीघ्र बुला लेता। और हे मेरे भाई, जान लो कि मैं पिंजरे में बंद पक्षी के समान हूँ, और मेरी पीड़ाओं के कारण मेरा जीवन समाप्त हो रहा है; परन्तु इसका एक निश्चित समय और एक नियत अंत है। — और वह फूट-फूट कर रोने लगा; और मैंने उससे कहा, हे मेरे स्वामी, जान लो कि मैं अपने घर जा रहा हूँ: क्योंकि शायद दासी मुझे खबर लेकर लौटेगी। उसने उत्तर दिया, ऐसा करने में कोई हानि नहीं है; परन्तु मुझे सूचित करने के लिए जल्दी लौट आना। इसलिए मैंने उससे विदा ली और अपने घर चला गया; और मैं मुश्किल से बैठा ही था कि मैंने दासी को रोते-बिलखते हुए आते देखा; और मैंने उससे पूछा, इसका कारण क्या है? — हे मेरे स्वामी, उसने उत्तर दिया, जान लीजिए कि हमारे साथ एक ऐसी घटना घटी है जिससे हम भयभीत हैं; क्योंकि जब मैं कल आपसे विदा हुई, तो मैंने अपनी मालकिन को उस रात हमारे साथ मौजूद दो दासियों में से एक पर क्रोधित पाया, और उसने उसे पीटने का आदेश दिया; और वह अपनी मालकिन से डरकर भाग गई; और द्वारपाल द्वारा पहरा दिए गए एक अधिकारी ने उसे पकड़ लिया, और उसे उसकी मालकिन के पास वापस भेजने का अनुरोध किया। लेकिन उसने

उसे संकेत दिया, और उसने उसे फुसलाया, और उससे अपना मामला बताने का अनुरोध किया, जिस पर उसने उसे हमारी सारी बातें बता दीं; और यह खबर खलीफा तक पहुँच गई, और उसने तुरंत मेरी मालकिन शेम्स-एन-नाहर और उसकी सारी संपत्ति को अपने महल में ले जाने का आदेश दिया, और उसकी सुरक्षा के लिए बीस हिजड़ों को नियुक्त किया। मेरी अभी तक उससे मुलाकात नहीं हुई है, और न ही मैंने उसे इस घटना का कारण बताया है; लेकिन मुझे संदेह है कि यह इसी कारण से है, और इसलिए मैं अपने लिए भयभीत हूँ, और हे मेरे स्वामी, मैं असमंजस में हूँ, क्योंकि मुझे कुछ पता नहीं है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.00%** है।

अली द सॉफ्ट की कहानी: मुझे और उसके मामले में क्या रणनीति अपनानी है, इस बारे में चिंता हो रही है, और मुझसे ज़्यादा वफ़ादार कोई भी राज़ नहीं रख सकता। इसलिए, हे मेरे स्वामी, जल्दी से बेक्कीर के पुत्र माइस के पास जाओ और उसे यह बात बता दो, ताकि वह तैयार रहे; और अगर मामला खुल गया, तो हम अपने भागने का कोई उपाय निकाल लेंगे। — यह सुनकर, जौहरी ने कहा, मैं बहुत चिंतित हो गया, और दासी के शब्दों से मेरे सामने सब कुछ अंधकारमय हो गया। उसने जाने का प्रस्ताव रखा, और मैंने उससे पूछा, तुम्हारी क्या सलाह है? — उसने उत्तर दिया, मेरी सलाह है कि अगर अली तुम्हारा मित्र है और तुम उसे बचाना चाहते हो, तो तुम जल्दी से बेक्कीर के पुत्र के पास जाओ: यह खबर उसे जल्दी से पहुँचाना तुम्हारा काम है; और आगे की जानकारी जुटाना मेरा काम है। फिर उसने मुझे विदा किया और चली गई। जब दासी चली गई, तो मैं उठा और उसके पीछे-पीछे गया और बेक्कीर के पुत्र अली के पास पहुँचा। मैंने उसे मिलन की उम्मीदों में डूबा हुआ और असंभव बातों से

खुद को दिलासा देते हुए पाया; और जब उसने देखा कि मैं जल्दी लौट आया हूँ, तो उसने मुझसे कहा, मैं देख रहा हूँ कि तुम तुरंत मेरे पास लौट आए हो। मैंने उत्तर दिया, अपनी आसक्ति और सफलता की उम्मीदों में लिप्त होना छोड़ दो, और अपने मन को इस तरह व्यस्त रखना बंद करो; क्योंकि एक ऐसी घटना घटित हुई है जिससे तुम्हारा जीवन और तुम्हारी संपत्ति दोनों नष्ट हो सकते हैं। और जब उसने ये शब्द सुने, तो उसकी स्थिति बदल गई, और वह व्याकुल हो गया, और बोला, हे मेरे भाई, मुझे बताओ कि क्या हुआ है। – हे मेरे स्वामी, मैंने उत्तर दिया, जान लो कि ऐसी-ऐसी बातें घटित हुई हैं, और यदि तुम दिन ढलने तक अपने इस घर में रहे, तो तुम्हारा निश्चित रूप से नाश होगा। और बक्कर का पुत्र अली घबरा गया, और उसकी आत्मा लगभग उसके शरीर से निकल गई, और वह

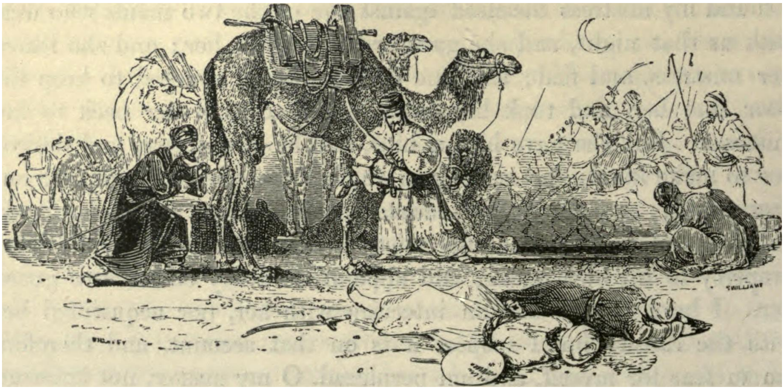

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.94%** है।

और शेखम्स-केएक्स-नाहर ने कहा, 'निःसंदेह हम ईश्वर के हैं, और निश्चय ही हम उसी के पास लौटेंगे!' और कहा, 'हे मेरे भाई, मैं क्या करूँ? और तुम्हारी क्या सलाह है?' मैंने उत्तर दिया, 'मेरी सलाह यह है कि तुम अपनी संपत्ति का जितना हो सके उतना हिस्सा और अपने भरोसेमंद जवानों को

अपने साथ ले जाओ, और आज का दिन समाप्त होने से पहले हमारे साथ किसी दूसरे देश चले जाओ।' उसने मुझसे कहा, 'मैं सुनता हूँ और मानता हूँ।' फिर वह अपनी स्थिति से व्याकुल होकर उठा, कभी चलता, कभी गिरता, और जो कुछ ले जा सका, ले गया, और अपने परिवार से बहाना बनाकर उन्हें अपनी इच्छानुसार आदेश दिए, और तीन लदे ऊँटों को साथ लेकर अपने घोड़े पर सवार हो गया। मैंने भी ऐसा ही किया था, और हम चुपके से निकल पड़े, और दिन भर और अगली रात तक बिना रुके चलते रहे, जब तक कि रात ढल नहीं गई। हमने अपना सामान नीचे रखा, अपने ऊँटों के पैर बाँधे और सो गए; और थकान से चूर होकर हम अपनी देखभाल करने में लापरवाह हो गए; और तभी लुटेरों ने हमें घेर लिया, और हमारा सारा सामान छीन लिया, और हमारी रक्षा करने की कोशिश करने वाले युवकों को मार डाला। फिर वे हमें हमारी दयनीय हालत में वहीं छोड़कर चले गए, संपत्ति ले जाने के बाद; और जब हम उठे, तो सुबह तक चलते रहे, और एक कस्बे में पहुँचे, और उसमें प्रवेश करके, अपने कपड़े उतारकर उसकी मस्जिद में चले गए। हम दिन भर मस्जिद के एक कोने में बैठे रहे, और अगली रात बिना भोजन-पानी के वहीं बिताई; और भोर होते ही हमने सुबह की नमाज़ अदा की, और फिर बैठ गए। और तभी एक आदमी अंदर आया, उसने हमें सलाम किया, और दो रकअत नमाज़ पढ़ने के बाद हमारी ओर देखकर बोला, “ऐ लोगों, क्या तुम अजनबी हो?” हमने जवाब दिया, “हाँ; लुटेरों ने हमें रोककर हमारा सामान लूट लिया है, और हम इस कस्बे में आ गए हैं, पर यहाँ हमें कोई नहीं पता जिसके पास हम ठहर सकें।” तब उस आदमी ने हमसे कहा, “क्या तुम उठकर मेरे घर चलोगे?” मैंने बक्कर के बेटे अली से कहा, “उठो और चलो उसके साथ चलें, और दो मुसीबतों से बच जाएँ: पहली यह कि हमें डर है कि कोई हमें इस मस्जिद में पहचान ले और हमारी

बेइज्जती हो जाए; और दूसरी यह कि हम अजनबी हैं और हमारे पास ठहरने की कोई जगह नहीं है।" बक्कर के बेटे अली ने जवाब दिया, "जो तुम चाहो करो।" तब उस आदमी ने हमसे दोबारा कहा, "ऐ गरीबों, मेरी इच्छा मानो और मेरे घर चलो।" तब मैंने जवाब दिया, "हम सुनते हैं और मानते हैं।" और उस आदमी ने अपने कुछ कपड़े उतारकर हमें दिए और हमें पहनाए, और हमसे प्यार से बातें कीं; और हम उठे और उसके साथ उसके घर गए; और उसने दरवाजा खटखटाया, और एक जवान हिजड़ा बाहर आया, जिसने दरवाजा खोला; और घर का मालिक अंदर गया, और हम भी उसके पीछे अंदर गए। फिर उसने हमें कपड़ों से भरा एक लबादा लाने का आदेश दिया, और

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.70%** है।

उसने हमें पगड़ी बनाने के लिए मलमल के टुकड़े दिए, और हमें दो सूट पहनाए, और मलमल के दो टुकड़े दिए, और हमने पगड़ी बांधी और बैठ गए; तभी एक दासी हमारे पास एक मेज लेकर आई और उसे हमारे सामने रख दिया, और हमने थोड़ा सा भोजन किया; जिसके बाद मेज हटा दी गई, और हम रात तक उसके साथ रहे। और बक्कर के पुत्र अली ने आह भरी, और मुझसे कहा, हे मेरे भाई, जान लो कि मैं निश्चित रूप से मर रहा हूँ, और मैं तुम्हें एक आज्ञा देना चाहता हूँ, जो यह है: कि जब तुम मुझे मरा हुआ देखो, तो मेरी माँ के पास जाना, और उसे सूचित करना, ताकि वह मेरे लिए शोक व्यक्त करने वालों से मिलने के लिए यहाँ आए, और मेरे शव को धोने के समय उपस्थित रहे; और उसे मेरे इस दुःख को धैर्य से सहने के लिए प्रेरित करना। फिर वह बेहोश होकर गिर पड़ा; और जब उसे होश आया, तो उसने दूर से एक युवती को गाते और कविताएँ पढ़ते सुना; उसने उसकी आवाज़ सुनी; एक पल के लिए वह बेहोश हो

गया; दूसरे पल होश में आया; और तीसरे पल अपने ऊपर आई विपत्ति के कारण अपने दुख और शोक में रोने लगा; और उसने युवती को मधुर स्वरों में ये पंक्तियाँ गाते सुना: • घनिष्ठ मेलजोल, मित्रता और सद्भाव के बाद, हमारे बीच वियोग शीघ्र ही आ गया है। भाग्य के उतार-चढ़ाव ने हमें अलग कर दिया है। काश मुझे पता होता कि हमारी मुलाकात कब होगी! मिलन के बाद वियोग कितना कड़वा होता है! काश यह प्रेमियों को कभी पीड़ा न देता! मृत्यु का गला घोंटना क्षणिक होता है और समाप्त हो जाता है; परन्तु प्रियतम का बिछड़ना हृदय को सदा पीड़ा देता है। और जैसे ही बेक्कीर के पुत्र अली ने उसका गीत सुना, उसने एक कराह भरी और उसकी आत्मा शरीर से निकल गई। जौहरी कहता है, जब मैंने देखा कि वह मर गया है, तो मैंने उसे सौंप दिया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.75%** है।

अली, बक्कार के पुत्र, की कहानी, इत्यादि। 45 मैंने उसके विषय में घर के मुखिया से कहा, "जान लीजिए कि मैं बगदाद जा रहा हूँ, उसकी माँ और उसके अन्य रिश्तेदारों को सूचित करने के लिए, ताकि वे उसके अंतिम संस्कार की तैयारी में शामिल हो सकें।" फिर मैं बगदाद गया,

अपने घर में प्रवेश किया और अपने कपड़े बदले; उसके बाद मैं अली, बक्कार के पुत्र, के घर गया। जब उसके जवानों ने मुझे देखा, तो वे मेरे पास आए और उसके विषय में मुझसे पूछताछ की; मैंने उनसे उसकी माँ से मिलने की अनुमति माँगने का अनुरोध किया; और उसने मुझे अनुमति दे दी। इसलिए मैं अंदर गया और उसे प्रणाम किया, और कहा, "निःसंदेह, जब ईश्वर किसी घटना का निश्चय कर देता है, तो उससे बचना संभव नहीं है; और कोई भी आत्मा ईश्वर की अनुमति के बिना, उसके निर्धारित समय के अनुसार, शरीर नहीं छोड़ सकती।" इन शब्दों से अली, बक्कार के पुत्र, की माँ ने अनुमान लगाया कि उसके पुत्र की मृत्यु हो गई है; और वह फूट-फूट कर रोने लगी, और फिर बोली... मैंने अल्लाह की कसम खाकर कहा, "क्या मेरे बेटे की आत्मा चली गई है?" लेकिन मैं अपने अत्यधिक शोक के कारण उसे कोई उत्तर नहीं दे सका। जब उसने मुझे इस हालत में देखा, तो वह रोने से व्याकुल हो गई और ज़मीन पर गिर पड़ी। संभलते ही उसने पूछा, "मेरे बेटे को क्या हुआ?" मैंने उत्तर दिया, "अल्लाह तुम्हें उसके इस नुकसान की भरपूर भरपाई करे!" और फिर मैंने उसे उसके साथ जो कुछ भी हुआ था, शुरू से अंत तक बताया। उसने पूछा, "क्या उसने मुझे कोई काम सौंपा था?" मैंने उत्तर दिया, "हाँ।" और मैंने उसे बताया कि उसने मुझे क्या काम सौंपा था, और उससे कहा, "जल्दी से उसका जनाज़ा कर दो।" लेकिन मेरी बात सुनकर वह फिर बेहोश हो गई। संभलते ही उसने वैसा ही करने का निश्चय किया जैसा मैंने उसे करने को कहा था। फिर मैं अपने घर लौट आया, रास्ते में उसके यौवन के आकर्षण के बारे में सोचता रहा। और जब मैं इस तरह आगे बढ़ रहा था, तभी एक औरत ने मेरा हाथ पकड़ लिया और... उसे देखकर मुझे लगा कि वह शेम्स-एन-नहार की दासी है। वह निराशा से घिरी हुई थी; और जब हमने एक-दूसरे को पहचाना, तो हम घर पहुँचने तक साथ-साथ रोते रहे। घर

पहुँचकर मैंने उससे पूछा, क्या तुम्हें बक्कर के बेटे अली के बारे में पता है? उसने जवाब दिया, नहीं, अल्लाह की कसम। मैंने उसे अली के साथ हुई घटना के बारे में बताया और फिर उससे पूछा, तुम्हारी मालकिन की क्या हालत है? उसने जवाब दिया, अमीरुल मोमिनीन उसके प्रति अपने प्रेम की तीव्रता के कारण उसके विरुद्ध किसी की भी बात नहीं सुनते; बल्कि उसके सभी कार्यों को सकारात्मक दृष्टि से देखते हैं और उससे कहते हैं, हे शेम्स-एन-नहार, तुम मेरी नज़रों में प्रिय हो, और मैं तुम्हारे शत्रुओं के बावजूद तुम्हारा साथ दूंगा। फिर उन्होंने एक सोने से जड़ा कमरा और एक सुंदर कोठरी बनवाने का आदेश दिया; और वह उच्च पदस्थ हो गई।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.03%** है।

यदि, बेक्कार के पुत्र अली की कहानी, उस घटना के फलस्वरूप उसके साथ कृपा करे। और ऐसा हुआ कि वह अपना नियमित पेय पीने बैठा था, और रखैलें उसके सामने थीं, और उसने उन्हें अपनी-अपनी जगह पर बैठने का आदेश दिया, और शेम्स-एन-नाहर को अपने बगल में बैठाया (पर उसका धैर्य टूट चुका था, और उसकी बेचैनी बढ़ गई थी); और फिर उसने एक दासी को गाने का आदेश दिया: तो, उसने वीणा ली और उसके तार बजाए और इस प्रकार गाया: — कई लोगों ने मुझे प्रेम के लिए आमंत्रित किया है, और मैं मान गई हूँ; और मेरे आँसू मेरे आनंद की कहानी मेरे गालों पर लिखते हैं; मानो आँखों से टपकती बूँदें हमारे मामले से परिचित हों, और जो मैंने छिपाया उसे प्रकट करें, और जो मैंने प्रकट किया उसे छुपाएँ। तो फिर, मैं गोपनीयता या अपने प्रेम को छुपाने की इच्छा क्यों करूँ, जब तेरे लिए मेरे जुनून की तीव्रता ही मेरे भावों को प्रकट करती है? मेरे प्रियजनों के खोने के बाद से मृत्यु मुझे सुखद लगने लगी है; लेकिन

काश मुझे पता होता कि मेरे बाद उन्हें क्या प्रसन्न करेगा! और जब शेम्स-एन-नहार ने उस दासी का गीत सुना, वह अपनी जगह पर नहीं बैठ सकी और बेहोश होकर गिर पड़ी। खलीफा ने प्याला नीचे फेंक दिया और उसे अपनी ओर खींच लिया, और चिल्लाया, और दासियों ने शोर मचाया, और अमीरुल मोमिनीन ने उसे पलटकर देखा तो पाया कि वह मर चुकी थी। उसने उसकी मृत्यु पर शोक व्यक्त किया और वहाँ मौजूद सभी कानून26 और अन्य संगीत वाद्ययंत्रों को तोड़ने का आदेश दिया, और उसके शव को एक कोठरी में ले गया, जहाँ वह रात भर उसके साथ रहा;27 और जब सुबह हुई, तो उसने उसके जनाज़े की तैयारी की, और उसे धोने, कफ़न पहनाने और दफ़नाने का आदेश दिया, और उसके लिए बहुत शोक मनाया, उसकी हालत या उसके पिछले आचरण के बारे में कोई सवाल नहीं पूछा। तब दासी ने कहा, मैं अल्लाह की कसम खाकर आपसे विनती करती हूँ कि आप मुझे वह समय बताएँ जब बक्कर के बेटे अली का जनाज़ा निकलने वाला है, और मुझे उसके दफ़नाने में उपस्थित होने दें। तो मैं उसने उत्तर दिया, "जहाँ तक मेरा सवाल है, तुम मुझे जहाँ चाहो वहाँ पाओगे; परन्तु जहाँ तुम्हारा सवाल है, जहाँ तुम रहते हो वहाँ तुमसे कौन मिल सकता है?" उसने कहा, "जब शेम्स-एन-नाहर की मृत्यु हुई, तो मोमिनों के राजकुमार ने उसी दिन उसकी दासियों को मुक्त कर दिया, और मैं उनमें से एक हूँ, और हम उसकी कब्र पर, एक ऐसी जगह पर ठहरे हुए हैं।23 इसलिए मैं उठी और उसके साथ चली गई, और कब्रिस्तान पहुँचकर शेम्स-एन-नाहर की कब्र पर गई, और फिर अपने रास्ते चली गई, और बक्कर के पुत्र अली के अंतिम संस्कार जुलूस का इंतज़ार करती रही जब तक कि वह नहीं आ गया, जब बगदाद के लोग उसमें शामिल होने के लिए निकले, और मैं उनके साथ चली गई: और मैंने दासी को स्त्रियों के बीच पाया, और वह उनमें सबसे हिंसक थी।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **23.60%** है।

और विलाप; और मैंने बगदाद में इससे बड़ा अंतिम संस्कार जुलूस कभी नहीं देखा। हम घनी भीड़ के साथ आगे बढ़ते रहे, जब तक कि हम उनकी कब्र पर नहीं पहुँच गए और उन्हें दफना दिया; और मैंने उनकी कब्र और शेम्स-एन-नाहर की कब्र पर जाना बंद नहीं किया है।

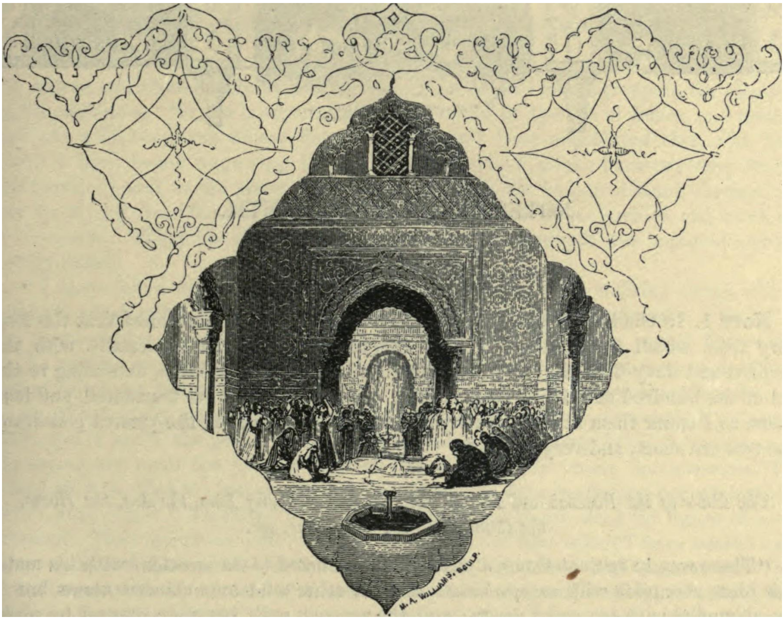

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.92%** है।

अध्याय नौ की टिप्पणियाँ। टिप्पणी 1. अध्याय 8 की टिप्पणियों में से पहली टिप्पणी में मैंने उल्लेख किया है कि जिस दीर्घ कथा से उस अध्याय की विषयवस्तु ली गई है, वह एक सौ पैंतालीसवीं रात को समाप्त होती है। इसके बाद कई नैतिक कथाएँ आती हैं, जो एक सौ बावनवीं रात के अंत तक चलती हैं। इनमें से दो का मैंने अनुवाद किया है और यहाँ शामिल कर रहा हूँ, क्योंकि मुझे लगता है कि वे इस संग्रह में

कम से कम द्वितीय श्रेणी का स्थान पाने के योग्य हैं। शेष कथाएँ छोटी और बहुत ही निम्न स्तर की हैं। मोर और मोरनी की कथा, बत्तख की कथा, शेर का बच्चा, गधा, घोड़ा, ऊँट और बढ़ई की कथा, इत्यादि। प्राचीन काल में, एक मोर अपनी मादा साथी के साथ समुद्र तट पर गया। यह स्थान खूंखार जानवरों और अन्य सभी जंगली पशुओं से भरा हुआ था, लेकिन यहाँ वृक्ष और नदियाँ भी बहुतायत में थीं। मोर और उसकी मादा साथी जंगली पशुओं के भय से रात में एक वृक्ष पर सोते थे और सुबह भोजन की तलाश में निकलते थे। वे इसी प्रकार तब तक रहते रहे जब तक कि उनका भय बढ़ता गया और उन्होंने रहने के लिए कोई दूसरा स्थान खोजना शुरू कर दिया। जब वे उस स्थान की तलाश कर रहे थे, तभी उनके सामने एक द्वीप प्रकट हुआ, जिस पर अनेक वृक्ष और नदियाँ थीं। इसलिए उन्होंने उस द्वीप में अपना निवास स्थान बनाया और उसके फल खाए और नदियों का जल पिया। जब वे इस प्रकार रह रहे थे, तभी अचानक एक बत्तख उनके पास आई, जो बहुत भयभीत थी, और बिना रुके तब तक आगे बढ़ती रही जब तक कि वह उस वृक्ष तक नहीं पहुँच गई जिस पर मोर और उसकी मादा साथी थे; वहाँ पहुँचकर उसने स्वयं को सुरक्षित महसूस किया। इसलिए मोर को इसमें कोई संदेह नहीं था कि इस बत्तख के पास बताने के लिए कोई अद्भुत कहानी है; और उसने उससे पूछा। उसकी हालत और उसके डर के कारण को समझते हुए, उसने उत्तर दिया, मैं शोक से बीमार हूँ, और मुझे आदम के पुत्र से डर लगता है। इसलिए सावधान रहो, आदम के पुत्रों से सावधान रहो। तब मोर ने उससे कहा, अब जब तुम हमारे पास आ गई हो, तो डरो मत। बत्तख ने उत्तर दिया, ईश्वर की स्तुति हो जिसने तुम्हारे पास आकर मेरी चिंता और शोक दूर कर दिया! मैं तुम्हारा स्नेह पाने की इच्छा से आई हूँ। और जब उसने ये शब्द कहे, तो मोर की साथी उसके पास उतरी और उससे कहा, मित्रता,

आराम और विशालता में तुम्हारा स्वागत है! कोई बुराई तुम्हारा इंतजार नहीं कर रही है। और आदम का पुत्र हम तक कैसे पहुँच सकता है जब हम समुद्र के बीच इस द्वीप में हैं? वह ज़मीन से हम तक नहीं पहुँच सकता, और समुद्र से भी नहीं आ सकता। 1 जिस शब्द का अनुवाद मैं "समुद्र" (अर्थात "बहर") के रूप में कर रहा हूँ, उसका अर्थ "एक बड़ी नदी" भी है।

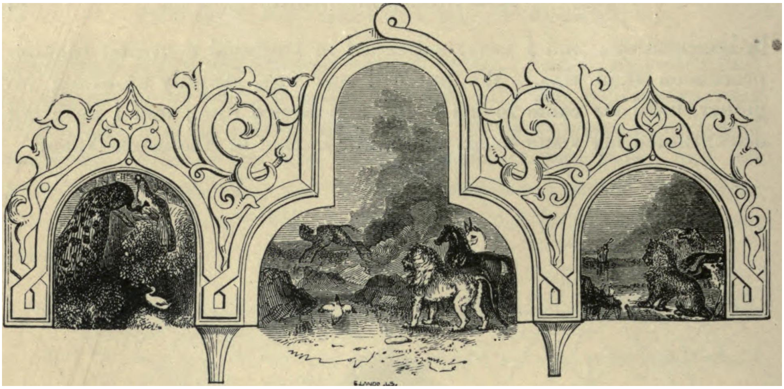

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.48%** है।

अध्याय नौवें के लिए टिप्पणियाँ। 49 हमारे विरुद्ध। इसलिए, इस घोषणा पर आनन्द मनाओ, और हमें बताओ कि आदम के पुत्र से तुम्हारे साथ क्या हुआ है। तब बत्तख ने कहा, "हे मोरनी, जान लो कि मैंने अपना सारा जीवन इस द्वीप में सुरक्षित बिताया है और कुछ भी अप्रिय नहीं देखा, जब तक कि एक रात सोते समय मुझे सपने में आदम के पुत्र की आकृति दिखाई नहीं दी, जो मुझसे बातें कर रहा था और मैं उससे बातें कर रही थी। लेकिन मैंने किसी को मुझसे कहते सुना, 'हे बत्तख, आदम के पुत्र से सावधान रहो, और उसके शब्दों और सुझावों से धोखा मत खाओ; क्योंकि वह छल और कपट से भरा है। इसलिए सावधान रहो, उसकी धूर्तता से पूरी तरह अवगत रहो; क्योंकि वह कपटी और धूर्त है, जैसा कि कवि ने

उसके बारे में कहा है, – वह अपनी जीभ से तुम्हें मीठी बातें कहेगा; लेकिन वह लोमड़ी की तरह तुम्हें चकमा देगा। और जान लो कि आदम का पुत्र मछलियों को घेर लेता है, और उन्हें पानी से बाहर निकाल लेता है, और पक्षियों को मिट्टी की गोली से मारता है, और अपनी धूर्तता से हाथी को फंसा लेता है। आदम के पुत्र की शरारतों से कोई भी सुरक्षित नहीं है, न पक्षी और न ही जंगली जानवर।" उससे बच सकता हूँ। इस प्रकार मैंने तुम्हें आदम के पुत्र के विषय में जो कुछ सुना है, वह बता दिया है। — इसलिए मैं भयभीत और डरा हुआ नींद से जागा; और अब तक मेरा हृदय भयभीत है, क्योंकि मुझे आदम के पुत्र से अपने लिए डर है, कहीं वह अपनी चालाकी से मुझे पकड़ न ले। जब दिन ढलने लगा, तो मेरी शक्ति क्षीण हो गई और मेरी ऊर्जा समाप्त हो गई। तब मुझे खाने-पीने की इच्छा हुई। इसलिए मैं व्याकुल मन और संकुचित हृदय से चलने लगा, और उस पर्वत पर पहुँचकर, मैंने एक गुफा के प्रवेश द्वार पर एक पीले रंग का युवा शेर देखा। जब उस युवा शेर ने मुझे देखा, तो वह मेरे आगमन पर अत्यंत प्रसन्न हुआ; मेरा रंग और मेरा सुंदर रूप उसे भा गया, और उसने मुझे पुकार कर कहा, मेरे पास आओ: और मेरे पास आने पर उसने मुझसे कहा, तुम्हारा नाम क्या है, और तुम्हारा वंश क्या है? इसलिए मैंने उत्तर दिया, मेरा नाम बत्तख है और मैं पक्षियों की श्रेणी में आता हूँ। फिर मैंने उससे पूछा, तुम अब तक इस स्थान पर क्यों ठहरे हो? उस युवा शेर ने उत्तर दिया, इसका कारण यह है कि मेरे पिता शेर कई दिनों से मुझे आदम के पुत्र से सावधान कर रहे हैं; और कल रात मैंने सपने में आदम के पुत्र की आकृति देखी। तब उस युवा शेर ने मुझे वही बात बताई जो मैंने तुम्हें बताई है; और जब मैंने उसकी बातें सुनीं तो मैंने उससे कहा, हे शेर, मैं तुम्हारे पास इसलिए आया हूँ ताकि तुम आदम के पुत्र को मार डालो और उसे मारने का निश्चय कर लो; क्योंकि मुझे उससे बहुत डर

लगता है, और मेरा डर इसलिए और बढ़ गया है क्योंकि तुम भी आदम के पुत्र से डरते हो, जबकि तुम जंगली जानवरों के सरदार हो। — हे मेरी बहन, मैंने उस जवान शेर को आदम के पुत्र से सावधान करना और उसे मार डालने के लिए उकसाना बंद नहीं किया, जब तक कि वह अचानक अपने स्थान से उठ खड़ा नहीं हुआ और आगे नहीं बढ़ा, मैं उसके पीछे-पीछे चल रहा था; और उसने अपनी पूंछ से उसकी पीठ पर प्रहार किया।

• "वह आगे बढ़ा, और मैं उसके पीछे-पीछे सड़क पर चल पड़ा; और हमने देखा कि धूल उड़ रही है, जो बाद में बैठ गई, और उसके बीच में एक भागा हुआ, नंगा गधा दिखाई दिया, जो कभी दौड़ रहा था, कभी ज़मीन पर लोट रहा था। जब शेर ने उसे देखा तो उसने उसे पुकारा: तो गधा विनम्रतापूर्वक उसके पास आया: और शेर ने उससे कहा, हे पागल मन वाले जानवर, तेरा वंश क्या है, और इस स्थान पर तेरे आने का क्या कारण है? - हे सुल्तान के पुत्र, गधे ने उत्तर दिया, जहाँ तक मेरे वंश का सवाल है, मैं एक गधा हूँ; और इस स्थान पर मेरे आने का कारण आदम के पुत्र से मेरा भागना है। तो युवा शेर ने कहा, और क्या तू आदम के पुत्र से भी डरता है कि वह तुझे मार डालेगा? गधे ने उत्तर दिया, नहीं, हे सुल्तान के पुत्र; लेकिन मेरा डर यह है कि कहीं वह मेरे विरुद्ध कोई चाल न चले और मुझ पर सवार न हो जाए; क्योंकि उसके पास एक चीज़ है जिसे पैड कहते हैं,3 जिसे वह मेरी पीठ पर रखता है, और एक वस्तु जिसे वह मेरे पेट के चारों ओर कसता है, जिसे वह कमरबंद कहता है, और एक वस्तु जिसे वह मेरी पूंछ के नीचे डालता है, जिसे वह लगाम कहता है, जिसे वह मेरे मुंह में डालता है; और वह मेरे लिए एक अंकुश बनाता है, और उससे मुझे प्रेरित करता है, और वह मुझसे मेरी क्षमता से अधिक दौड़ने की अपेक्षा करता है। 2 यह धनुष-बाण की ओर संकेत करता प्रतीत होता है। 3 गधों और खच्चरों के लिए एक प्रकार की भरी हुई

काठी। II. II

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.17%** है।

अध्याय नौ के लिए 50 टिप्पणियाँ। मैं ठोकर खाता हूँ, वह मुझे शाप देता है; और जब मैं रेंकता हूँ, तो वह मुझे कोसता है।4 बाद में, जब मैं बूढ़ा हो जाता हूँ, और दौड़ नहीं पाता, तो वह मुझ पर लकड़ी का बोझ लाद देता है, और मुझे पानी बेचने वालों (सक्का) के हवाले कर देता है, जो नदी से बकरियों की खालों और इसी तरह की चीजों, जैसे घड़ों में, मेरी पीठ पर पानी लाद देते हैं; और मैं मरने तक अपमान, तिरस्कार और थकान सहता रहता हूँ, जब वे मुझे लकड़ी के जूतों के ढेर पर फेंक देते हैं।5 तो फिर इस चिंता से बढ़कर क्या हो सकता है जो मैं सहता हूँ, और इन विपत्तियों से बड़ी क्या विपत्ति हो सकती है जो मैं झेलता हूँ? — अब जब मैंने, हे मोरनी, गधे के शब्द सुने, तो आदम के पुत्र के भय से मेरा शरीर काँप उठा, और मैंने युवा शेर से कहा, हे मेरे स्वामी, गधे को क्षमा कर दिया गया है, और उसके शब्दों ने मेरे भय को और बढ़ा दिया है। तब युवा शेर ने गधे से पूछा, “तू कहाँ जा रहा है?” गधे ने उत्तर दिया, “मैंने सूर्योदय से पहले आदम के पुत्र को दूर से देखा था, और मैं उससे डरकर भाग गया था, और अब मैं वहाँ से निकलना चाहता हूँ, और बिना रुके भागना चाहता हूँ, क्योंकि मुझे उससे इतना डर लगता है कि शायद मुझे कोई ऐसी जगह मिल जाए जहाँ मुझे आदम के उस कपटी पुत्र से शरण मिल सके।” जब गधा इस विषय पर युवा शेर से बातचीत कर रहा था और हमें विदाई देकर जाने की इच्छा कर रहा था, तभी हमें धूल का एक बादल दिखाई दिया; यह सुनकर गधे ने धूल की दिशा में देखते हुए रेंकना और चिल्लाना शुरू कर दिया। थोड़ी देर बाद, धूल छंट गई और एक काला घोड़ा दिखाई दिया, जिसके माथे पर दिरहम के समान एक सफेद धब्बा

था।6 माथे पर सफेद धब्बे से सुंदर, खुरों के पास सफेद निशानों से सजे, आकर्षक पैरों वाले और हिनहिनाते हुए यह घोड़ा तब तक नहीं रुका जब तक वह युवा शेर के सामने नहीं आ गया। जब युवा शेर ने उसे देखा, तो वह उसकी प्रशंसा करने लगा और उससे बोला, “हे राजसी जंगली जानवर, यही तुम्हारी जाति है, और इस विशाल और विस्तृत रेगिस्तान में भागने का क्या कारण है?” — घोड़े ने उत्तर दिया, “हे जंगली जानवरों के स्वामी, मैं घोड़ों की जाति का हूं, और मेरे भागने का कारण आदम के पुत्र से मेरा पलायन है।” युवा शेर घोड़े के शब्दों पर आश्चर्यचकित हुआ, और उत्तर दिया, “ऐसा मत कहो, क्योंकि यह तुम्हारे लिए अपमानजनक है। तुम लंबे और बलिष्ठ हो; तो फिर तुम आदम के पुत्र से कैसे डरते हो, अपने विशाल शरीर और तेज दौड़ के बावजूद, जबकि मैंने, अपने छोटे शरीर के साथ, आदम के पुत्र का सामना करने, उस पर हमला करने, उसका मांस खाने और इस बेचारी बत्तख के भय को शांत करने और उसे उसके घर में सुरक्षित स्थापित करने का निश्चय किया है? अब, तुम्हारे यहाँ आने पर, तुमने अपने शब्दों से मेरा हृदय तोड़ दिया है और मुझे वह करने से रोक दिया है जो मैं करना चाहता था; क्योंकि आदम के पुत्र ने तुम्हारी महानता के बावजूद तुम्हें हरा दिया है और तुम्हारी ऊँचाई और चौड़ाई से नहीं डरा, यद्यपि यदि तुम उसे अपने खुर से लात मारते, तो तुम उसे मार डालते और वह तुम पर विजय प्राप्त नहीं कर सकता था; बल्कि तुम उसे विनाश का प्याला पिला देते।” — लेकिन युवा शेर के शब्दों को सुनकर घोड़ा हँस पड़ा, और उसने कहा, "हे राजा के पुत्र! उसे हराना मेरी शक्ति से बहुत दूर है! आदम के पुत्र के संबंध में मेरी ऊँचाई, चौड़ाई या भारीपन तुम्हें धोखा न दे, क्योंकि शैतान को देखने के परिणामस्वरूप गधा रेंकता है। 4 इसका कारण यह है कि गधा शैतान को देखने के परिणामस्वरूप रेंकता है। 5 अध्याय 2 के नोट 47 देखें। — "अंतिम 6 यानी, गोल और

चांदी के सिक्के जैसा — नूह [या नोआ, नाव में] के साथ प्रवेश करने वाला जानवर गधा था; और इब्लीस (जिस पर ईश्वर का श्राप हो!) उसकी पूंछ से चिपका हुआ था। गधा अभी-अभी नाव में प्रवेश कर चुका था। पैगंबर ने कहा, "सबसे अच्छा जहाज़ काले घोड़े हैं, जिनके माथे सफेद हैं, और जिनका ऊपरी होंठ सफेद है। इनके बगल में एक काला घोड़ा है, जिसका माथा सफेद है, और तीन पैर सफेद हैं। 'अंदर आ जाओ, तुम पर धिक्कार है!' लेकिन गधा अभी भी बेचैन था और आगे नहीं बढ़ पा रहा था। इसलिए नूह ने कहा, 'अंदर आ जाओ, इस भूरे घोड़े में, जिस पर ये निशान हैं।" - "भूरा घोड़ा, चाहे शैतान तुम्हारे साथ हो।" और सफेद माथे और सफेद आगे-पीछे के पैरों वाला गधा अंदर आ गया। उसके साथ सफेद माथे और पैरों वाला एक भूरा घोड़ा भी था। नूह ने कहा, "तुम्हें जहाज़ में प्रवेश करने दो।" उन्होंने उत्तर दिया, “पैगंबर ने शिकल [या जिसके पास है] को घोड़े में बुरा माना। “तू: तूने गधे से कहा, ‘प्रवेश कर, यद्यपि शैतान तेरे साथ हो।’— इसलिए कहा जाता है कि यही कारण है कि जब गधा शैतान को देखता है, तो वह रेंकता है” (किताब अल-%ओनवान फी मक्कैद सीएन-निसवान।)

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.63%** है।

अध्याय 115 के उद्धरण। 51 छल और उसकी चालाकी से वह मनुष्यों के लिए एक वस्तु बनाता है जिसे बांधने की रस्सी कहते हैं; और मेरे चारों पैरों में ताड़ के रेशों से बनी दो रस्सियाँ बाँधता है, जिन पर फेल्ट लिपटा होता है, और मुझे सिर से एक ऊँचे खंभे से बाँध देता है। मैं इस प्रकार बँधा हुआ खड़ा रहता हूँ, न लेट पाता हूँ और न सो पाता हूँ। और जब वह मुझ पर सवारी करना चाहता है, तो वह मेरे लिए लोहे की एक वस्तु बनाता है जिसमें वह अपने पैर रखता है, जिसे रकाब कहते हैं, और मेरी

पीठ पर एक वस्तु रखता है जिसे काठी कहते हैं, जिसे मेरे अगले पैरों के नीचे दो पट्टियों से बाँधता है; और वह मेरे मुँह में लोहे की एक वस्तु डालता है जिसे लगाम कहते हैं, और उस पर चमड़े की एक पट्टी लगाता है जिसे लगाम कहते हैं। फिर जब वह मेरी पीठ पर, काठी पर सवार होता है, तो वह लगाम पकड़कर मुझे उससे नियंत्रित करता है और रकाब से मेरे पार्श्वों पर तब तक मारता है जब तक कि उनसे खून न बहने लगे। हे सुल्तान की आत्मा, यह मत पूछो कि आदम के पुत्र से मुझे क्या कष्ट सहना पड़ता है; क्योंकि जब मैं बूढ़ा और दुबला हो जाता हूँ और तेज दौड़ने में असमर्थ हो जाता हूँ, तो वह मुझे चक्की चलाने वाले को बेच देता है, ताकि वह मुझे चक्की चलाने में लगा दे, और मैं दिन-रात यही काम करता रहता हूँ, जब तक कि मैं बुढ़ापे से दुर्बल न हो जाऊँ, तब वह मुझे कसाई को बेच देता है, जो मेरा वध करता है: वह मेरी खाल उतार देता है और मेरी पूंछ नोच लेता है और उन्हें छलनी करने वालों को बेच देता है, और वह मेरी चर्बी पिघला देता है।8 — और जब युवा शेर ने घोड़े के ये शब्द सुने, तो वह और भी क्रोधित और व्याकुल हो गया, और उससे बोला, तू आदम के पुत्र से कब अलग हुआ? उसने उत्तर दिया, मैं उससे दोपहर में अलग हुआ, और वह मेरे पदचिह्नों का पीछा कर रहा है। और जब युवा शेर घोड़े से इस प्रकार बातें कर रहा था, तभी अचानक धूल उठी और फिर बिखर गई, और उसके बीच में एक क्रोधित ऊँट प्रकट हुआ, जो गुर्राता हुआ अपने पैरों से ज़मीन पर पटक रहा था। वह ऐसा ही करता रहा जब तक कि वह हमारे पास नहीं आ गया; और जब युवा शेर ने उसे देखा, जो विशाल और बलिष्ठ था, तो उसने सोचा कि वह आदम का पुत्र है, और उस पर झपटने ही वाला था; लेकिन मैंने उससे कहा, हे सुल्तान के पुत्र, यह आदम का पुत्र नहीं है, बल्कि यह एक ऊँट है; और ऐसा लगता है कि यह आदम के पुत्र से भाग रहा है। और जब मैं इस प्रकार

युवा शेर से बातें कर रही थी, हे मेरी बहन, तो ऊँट युवा शेर के सामने आया और उसे प्रणाम किया; और शेर ने भी उसे प्रणाम किया और उससे पूछा, तुम यहाँ क्यों आए हो? उसने उत्तर दिया, मैं आदम के पुत्र से भागकर आया हूँ। और तुम, युवा शेर ने कहा, अपने विशाल शरीर, ऊँचाई और चौड़ाई के साथ, आदम के पुत्र से कैसे डरते हो? हे आदम के पुत्र, तू उसे अपने पैर से लात मारकर मार डालेगा। — हे सुल्तान के पुत्र, ऊँट ने उत्तर दिया, जान लो कि आदम के पुत्र में ऐसी चालाकियाँ हैं जिनका कोई मुकाबला नहीं, और मृत्यु के सिवा कोई भी उसे हरा नहीं सकता; क्योंकि वह मेरी नाक में नथनी नामक डोरी डालता है,9 और मेरे सिर पर फंदा डालता है: फिर वह मुझे अपने सबसे छोटे बच्चे को सौंप देता है, और वह छोटा बच्चा मुझे मेरे भारी-भरकम शरीर के बावजूद डोरी से खींचता है। वे मुझ पर भारी बोझ लादते हैं और मुझे अपने साथ लंबी यात्राओं पर ले जाते हैं। वे मुझे दिन-रात कठिन परिश्रम में लगाते हैं; और जब मैं बूढ़ा और अपाहिज हो जाता हूँ, तो मेरा स्वामी मेरा साथ नहीं सहता; बल्कि मुझे कसाई को बेच देता है, जो मुझे काट डालता है, और मेरी खाल चमड़ा बनाने वालों को और मेरा मांस रसोइयों को बेच देता है। इसलिए, यह मत पूछो कि मैं आदम के पुत्र से क्या सहता हूँ। — तब युवा शेर ने उससे कहा, तू आदम के पुत्र से किस वक्त विदा हुआ? उसने उत्तर दिया, मैं उससे सूर्यास्त के समय विदा हुआ; और मुझे लगता है कि मेरे जाने के बाद जब वह मेरे स्थान पर आएगा और मुझे नहीं पाएगा, तो वह मुझे ढूंढने के लिए रास्ते में होगा; इसलिए हे सुल्तान के पुत्र, मुझे रेगिस्तानों और वीरान जगहों में भागने की अनुमति दे। लेकिन युवा शेर ने उत्तर दिया, हे ऊंट, थोड़ा रुक जा, ताकि तू देख ले कि मैं उसे कैसे फाड़ूंगा, और उसका मांस खाऊंगा, उसकी हड्डियां तोड़ूंगा और उसका खून पीऊंगा। — हे सुल्तान के पुत्र, ऊंट ने उत्तर दिया, मुझे आदम के पुत्र

से तेरे लिए डर लगता है; क्योंकि वह कपटी और धूर्त है। और उसने कवि की यह कहावत दोहराई, — जब किसी जाति के देश में क्रूर व्यक्ति आता है, तो उसके निवासियों के पास जाने के अलावा कोई चारा नहीं होता। -° 7 फावड़े के आकार का अरबी रकाब सवारी के लिए इस्तेमाल होने वाले हल्के ऊंट (या ड्रोमेडरी) के लिए इस्तेमाल किया जाता है। 9 यह आमतौर पर सवारी के लिए इस्तेमाल होने वाले हल्के ऊंट (या स्पर्स, ड्रोमेडरी) के साथ किया जाता है। "मोमबत्तियाँ बनाने के लिए।" (शेख मोहम्मद 'इयाद की टिप्पणी) हाशिये पर टिप्पणी करते हुए शेख मोहम्मद 'इयाद कहते हैं कि "यह और भी मुश्किल होता।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.54%** है।

अध्याय नौ के लिए 5j टिप्पणियाँ। "लेकिन जब ऊँट जवान शेर से इस प्रकार बातें कर रहा था, तभी अचानक धूल उठी, और थोड़ी देर बाद चारों ओर से एक छोटा और पतला बूढ़ा आदमी दिखाई दिया। उसके कंधे पर बढ़ई के औजारों से भरी एक टोकरी थी, उसके सिर पर एक पेड़ की शाखा थी, जिस पर आठ तख्ते लगे थे, और वह छोटे बच्चों का हाथ पकड़कर तेज़ी से चल रहा था। वह बिना रुके तब तक आगे बढ़ता रहा जब तक कि वह जवान शेर के पास नहीं पहुँच गया; और जब मैंने उसे देखा, हे मेरी बहन, मैं डर के मारे गिर पड़ी। लेकिन जहाँ तक उस जवान शेर की बात है, वह उठा और उसकी ओर बढ़ा और उससे मिला; और जब वह उसके पास आया, तो बढ़ई ने उसके चेहरे पर हँसते हुए, उससे बड़ी ही प्रभावशाली भाषा में कहा, हे महिमावान राजा, उदारता से संपन्न, अल्लाह तुम्हारी शाम और तुम्हारे इरादे को सफल बनाए, और तुम्हारे साहस और तुम्हारी शक्ति को बढ़ाए!" मुझे उससे बचाओ जिसने मुझे सताया है और अपनी दुष्टता से मुझे मारा है; क्योंकि तेरे सिवा मेरी

सहायता करने वाला कोई नहीं है। — तब बढ़ई शेर के सामने खड़ा होकर रोने, आहें भरने और विलाप करने लगा। जब युवा शेर ने उसका रोना और विलाप सुना, तो उसने उससे कहा, मैं तुझे तेरे भय के कारण से बचाऊंगा। तो फिर वह कौन है जिसने तुझे सताया है, और तू कौन है, हे जंगली जानवर, जिसके जैसा मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा, और जिसके जैसा सुंदर रूप और वाक्पटुता मैंने कभी नहीं देखी; और तेरी क्या हालत है? — तब बढ़ई ने उत्तर दिया, हे जंगली जानवरों के स्वामी, मैं एक बढ़ई हूँ; और जिसने मुझे सताया है, वह आदम का पुत्र है, और इस रात के बाद की सुबह वह तेरे साथ इसी स्थान पर होगा। जब उस युवा शेर ने बढ़ई के ये शब्द सुने, तो उसके चेहरे के सामने प्रकाश अंधकार में बदल गया: वह गुर्राया और फुफकारा; उसकी आँखों से चिंगारियाँ निकलीं; और वह चीखते हुए बोला, अल्लाह की कसम, मैं आज रात सुबह तक जागता रहूँगा, और अपनी इच्छा पूरी होने तक अपने पिता के पास नहीं लौटूँगा! फिर बढ़ई की ओर देखकर उसने उससे कहा, मैं तुम्हारे कदमों को छोटा देखता हूँ, और मैं तुम्हारी भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचा सकता; क्योंकि मैं उदार हूँ; और मैं समझता हूँ कि तुम जंगली जानवरों के साथ कदम मिलाकर नहीं चल सकते: तो मुझे बताओ, तुम कहाँ जा रहे हो। बढ़ई ने उत्तर दिया, जान लो कि मैं तुम्हारे पिता के वज़ीर, यानी लिंक्स के पास जा रहा हूँ; जब उसे पता चला कि आदम का पुत्र इस क्षेत्र में आया है, तो वह बहुत भयभीत हुआ और उसने जंगली जानवरों में से एक दूत को मेरे पास भेजा, ताकि मैं उसके लिए एक घर बना सकूँ जिसमें वह रह सके, शरण पा सके और उसके शत्रुओं को उससे दूर रख सकूँ, ताकि आदम के पुत्रों में से कोई भी उस तक न पहुँच सके। इसलिए, जब दूत मेरे पास आया, तो मैंने ये तख्ते लिए और उसके पास चल पड़ा। बढ़ई की ये बातें सुनकर, युवा शेर को लिंक्स से ईर्ष्या होने

लगी और उसने उससे कहा, “मेरी जान की कसम, लिंक्स के लिए घर बनाने से पहले तुम मेरे लिए इन तख्तों से एक घर बनाओ; और जब मेरा काम पूरा हो जाए, तो लिंक्स के पास जाओ और उसके लिए उसकी इच्छा के अनुसार घर बनाओ।” लेकिन जब बढ़ई ने युवा शेर की बात सुनी, तो उसने उत्तर दिया, “हे जंगली जानवरों के स्वामी, मैं तुम्हारे लिए तब तक कुछ नहीं बना सकता जब तक मैं लिंक्स के लिए उसकी इच्छा के अनुसार घर न बना दूं; फिर मैं तुम्हारी सेवा करने आऊंगा और तुम्हारे लिए एक ऐसा घर बनाऊंगा जो तुम्हें तुम्हारे शत्रु से बचाएगा।” लेकिन युवा शेर ने कहा, “अल्लाह की कसम, मैं तुम्हें तब तक यहाँ से नहीं जाने दूंगा जब तक तुम मेरे लिए इन तख्तों से घर न बना दो।” फिर वह रेंगता हुआ बढ़ाई पर झपटा, उससे मजाक करने के इरादे से, और अपने पंजे से उसे मारा, जिससे उसके कंधे से टोकरी गिर गई। बढ़ई गिर पड़ा। वह बेहोश हो गया, और युवा शेर उस पर हँसा, और बोला, "हे बढ़ई, तुझ पर धिक्कार! तू सचमुच कमज़ोर और शक्तिहीन है; इसलिए आदम के पुत्र से डरने के लिए तुझे क्षमा किया जाता है।" लेकिन जब बढ़ई पीठ के बल गिर पड़ा, तो वह भयंकर रूप से क्रोधित हो गया। हालाँकि, उसने अपने डर के कारण युवा शेर से यह बात छुपा ली; और बाद में, वह बैठ गया और युवा शेर के सामने हँसते हुए उससे बोला, "ठीक है, मैं तेरे लिए घर बना दूँगा।" इसलिए उसने यहाँ एन-खबीगाह [एध-धुबयानी] के कथन को उद्धृत करना उचित समझा: "मुझे बताया गया है कि अबू-कबूस ने मुझे धमकी दी है; और शेर के दहाड़ने की आवाज़ में आराम नहीं किया जा सकता।" * 'अबू-कबूस' ज़ुमान इब्न-अल-मुंधिर इब्न-इमरा-अल-कीज़ का उपनाम था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.48%** है।

बढ़ई ने अपने पास मौजूद तख्तों को जोड़कर घर बनाया, जो जवान शेर के नाप का था, और उसका दरवाजा खुला छोड़ दिया; क्योंकि उसने उसे संदूक के आकार में बनाया था। उसने उसमें एक बड़ा छेद बनाया, जिस पर कई छेदों वाला ढक्कन लगा था, और कुछ नई कीलें निकालकर जवान शेर से कहा, "इस छेद से घर में प्रवेश करो, ताकि मैं इसे तुम्हारे ऊपर मेहराब बना दूं।" जवान शेर यह सुनकर प्रसन्न हुआ और छेद की ओर बढ़ा; लेकिन उसने देखा कि वह संकरा था। बढ़ई ने उससे कहा, "अंदर जाओ और अपने चारों पैरों पर बैठ जाओ।" शेर ने वैसा ही किया और संदूक में प्रवेश कर गया, लेकिन उसकी पूंछ बाहर रह गई। तब उसने पीछे हटकर बाहर आने की इच्छा जताई; लेकिन बढ़ई ने उससे कहा, "रुको, मैं देख लूं कि क्या यह तुम्हारी पूंछ को अंदर आने देगा।" जवान शेर ने उसकी बात मान ली; और बढ़ई ने जवान शेर की पूंछ को मोड़कर संदूक में ठूंस दिया, और जल्दी से ढक्कन को छेद पर रख दिया और कीलों से ठोक दिया। युवा शेर चिल्लाया, “हे बढ़ई, यह कैसा तंग घर है जो तूने मेरे लिए बनाया है? मुझे इससे बाहर निकलने दे।” — लेकिन बढ़ई ने उत्तर दिया, “ऐसा कभी न हो! जो हो चुका है उसके लिए पश्चाताप व्यर्थ है; तू इस जगह से बाहर नहीं निकल सकता।” — तब बढ़ई हँसा और युवा शेर से कहा, “तू पिंजरे में गिर गया है और जंगली जानवरों में सबसे नीच बन गया है।” — “हे मेरे भाई,” युवा शेर ने कहा, “यह कैसी बात है जो तू मुझसे कह रहा है?” — “हे रेगिस्तान के कुत्ते,” बढ़ई ने उत्तर दिया, “जान ले कि तू उसी जाल में फँस गया है जिससे तू डरता था: भाग्य ने तुझे गिरा दिया है, और सावधानी तुझे नहीं बचाएगी।” — इसलिए जब युवा शेर ने उसके शब्द सुने, “हे मेरी बहन,” तो वह जान गया कि वह आदम का पुत्र है, जिसके बारे में उसके पिता ने जागते समय उसे चेतावनी दी थी, और जो अदृश्य वक्ता था जिसने उसे सोते

समय चेतावनी दी थी; और मुझे पूरा यकीन था कि यह वही है, इसमें कोई शक या संदेह नहीं था। इसलिए मैं उससे बहुत डर गई और उससे थोड़ी दूरी पर छिपकर इंतज़ार करने लगी कि वह उस जवान शेर के साथ क्या करेगा। और मैंने देखा, हे मेरी बहन, आदम के बेटे ने उस जगह पर, उस संदूक के पास जिसमें वह जवान शेर था, एक खाई खोदी; और उसने उसे खाई में फेंक दिया, उस पर लकड़ी डाली और आग से जला दिया। हे मेरी बहन, मेरा डर और बढ़ गया; और दो दिन से मैं आदम के बेटे से डरकर भाग रही हूँ। जब मोरनी ने बत्तख के ये शब्द सुने, तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ और उसने कहा, “हे मेरी बहन, अब तुम आदम के पुत्र से सुरक्षित हो; क्योंकि हम समुद्र के उन द्वीपों में से एक में हैं जहाँ आदम के पुत्र का कोई रास्ता नहीं है; इसलिए हमारे साथ निवास करो जब तक कि ईश्वर तुम्हारा और हमारा मामला आसान न कर दे।” बत्तख ने उत्तर दिया, “मुझे डर है कि रात में मुझ पर कोई विपत्ति आ पड़ेगी; और कोई भी भगोड़ा गुलाम अपने भाग्य से खुद को अलग नहीं कर सकता।” लेकिन मोरनी ने कहा, “हमारे साथ रहो और हमारे जैसी बनो।” और वह उसे तब तक मनाती रही जब तक उसने ऐसा नहीं किया; और उसने मोरनी से कहा, “हे मेरी बहन, तुम जानती हो कि मेरा धैर्य कितना कम है; और अगर मैंने तुम्हें यहाँ न देखा होता, तो मैं यहाँ नहीं रुकती।” मोरनी ने उत्तर दिया, “यदि हमारे माथे पर कुछ लिखा है, तो हमें उसका पूरा होना ही होगा; और जब हमारा नियत अंत निकट आएगा, तो हमें कौन बचाएगा? आत्मा तब तक शरीर नहीं छोड़ती जब तक वह पूर्ण जीवन का आनंद न ले ले।” इसके भरण-पोषण के 11 इस लाक्षणिक अभिव्यक्ति ने अरबों की एक आम धारणा को जन्म दिया है कि प्रत्येक मनुष्य का अपरिवर्तनीय भाग्य उसकी खोपड़ी पर लिखा हुआ है जिसे हम "टांके" कहते हैं।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.10%** है।

अध्याय नौ के लिए नोट्स। और इसकी निर्धारित अवधि।— जब वे इस प्रकार बातचीत कर रहे थे, तभी धूल का एक बादल उनकी ओर आया; इस पर बत्तख चिल्लाई और समुद्र में उतर गई, यह कहते हुए, सावधान रहो, सावधान रहो, हालांकि भाग्य से कोई शरण नहीं है। धूल बहुत अधिक थी; लेकिन जैसे ही वह छटी, उसके बीच में एक हिरण दिखाई दिया। इसलिए बत्तख और मोरनी ने सुरक्षित महसूस किया; और मोरनी ने बत्तख से कहा, हे मेरी बहन, जिससे तुम डर रही हो वह एक हिरण है, और देखो, वह हमारे पास आ गया है: उससे हमें कोई हानि नहीं होगी; क्योंकि हिरण धरती से उगने वाली जड़ी-बूटियाँ खाता है; और जैसे तुम पक्षियों की प्रजाति की हो, वह जंगली जानवरों की प्रजाति का है; इसलिए सुरक्षित महसूस करो, और चिंतित मत हो; क्योंकि चिंता शरीर को कमजोर करती है। और मोरनी ने अभी अपनी बात पूरी भी नहीं की थी कि हिरण उनके पास आकर पेड़ के नीचे छाया करने लगा; मोरनी और बत्तख को देखकर उसने उन्हें प्रणाम किया और कहा, "आज मैं इस द्वीप पर आया हूँ और इससे अधिक उपजाऊ और रहने के लिए इससे अधिक सुखद कोई स्थान नहीं देखा।" फिर उसने उन्हें अपने साथ रहने और सच्ची मित्रता का व्यवहार करने के लिए आमंत्रित किया; और जब बत्तख और मोरनी ने उसके प्रति स्नेह देखा, तो उन्होंने भी उससे विनम्रतापूर्वक बात की और उसकी संगति की इच्छा करने लगीं। उन्होंने एक-दूसरे के प्रति वफादार मित्र होने की शपथ ली और रात साथ बिताई और साथ भोजन किया। इस प्रकार वे सुरक्षित रूप से खाते-पीते रहे, जब तक कि समुद्र में अपने मार्ग से भटकता हुआ एक जहाज उनके पास से नहीं गुजरा। वह उनके पास लंगर डालकर रुका, और लोग बाहर आए और द्वीप में फैल

गए, और हिरण, मोरनी और बत्तख को एक साथ देखकर उनके पास गए। इस प्रकार हिरण रेगिस्तान में भाग गया और मोरनी आकाश में उड़ गई; लेकिन बत्तख अभी भी मोहित थी, और वे उसका पीछा करते रहे जब तक कि उन्होंने उसे पकड़ नहीं लिया, तब वह चिल्लाई, "भाग्य और नियति के आगे सावधानी मेरे किसी काम की नहीं है!" और वे उसे लेकर अपने जहाज पर चले गए। हिरण और मोरनी बत्तख के खो जाने पर लगातार शोक मनाते रहे, और उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि उसका दुखद अंत ईश्वर की स्तुति न करने के कारण हुआ; क्योंकि ईश्वर द्वारा सृजित प्रत्येक प्राणी का यह सामान्य अभ्यास है कि वह उसकी स्तुति करे,13 और ऐसा न करने से उसका विनाश होता है। लोमड़ी और भेड़िये की कहानी। "एक लोमड़ी और एक भेड़िया एक ही मांद में रहते थे, और वे लंबे समय तक वहीं रहे। लेकिन भेड़िये ने लोमड़ी पर अत्याचार किया; और ऐसा हुआ कि लोमड़ी ने भेड़िये को दयालु बनने और दुष्टता छोड़ने की सलाह दी, और उससे कहा, "यदि तू अपने अहंकार में बना रहेगा, तो शायद ईश्वर तुझ पर आदम के पुत्र को अधिकार दे देगा; क्योंकि वह छल, कपट और कपट से परिपूर्ण है; वह आकाश से पक्षियों को, समुद्र से मछलियों को पकड़ता है, पहाड़ों को काटकर उन्हें दूसरी जगह ले जाता है; और यह सब वह अपने छल-कपट से करता है। इसलिए न्याय का मार्ग अपनाओ और बुराई और अत्याचार का त्याग करो; क्योंकि 12 "सावधान रहना और विनाश से बचना उचित है।" (शेख मोहम्मद की टिप्पणी - अन्यथा यह ऐसा होगा जैसे कोई पागल होकर खुद को फेंक दे।) कुरान, खंड 2, आयत 191 देखें। 13 प्रस्तावना की टिप्पणी 30 देखें।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.74%** है।

अध्याय उन्नीसवें के उद्धरण। 55 तुम्हारे स्वाद को अधिक भाएगा। —

भेड़िये ने उसकी सलाह नहीं मानी; इसके विपरीत, उसने उसे कठोर उत्तर दिया और कहा, तुम्हें महत्व और बड़ी बातों पर बोलने का कोई अधिकार नहीं है। फिर उसने लोमड़ी को ऐसा प्रहार किया कि वह बेहोश होकर गिर पड़ी; और जब उसे होश आया, तो उसने भेड़िये के चेहरे पर मुस्कुराते हुए अपने शर्मनाक शब्दों के लिए क्षमा मांगी और ये दो श्लोक पढ़े: — यदि मैंने तुम्हारे प्रति अपने स्नेह में कोई गलती की है और कोई शर्मनाक काम किया है, तो मैं अपने अपराध के लिए पश्चाताप करता हूँ, और तुम्हारी दया उस पापी पर भी लागू होगी जो क्षमा मांगता है।1* इस प्रकार भेड़िये ने उसकी क्षमा स्वीकार कर ली और उसके साथ दुर्व्यवहार करना बंद कर दिया, लेकिन उससे कहा, उस विषय पर बात मत करो जिसका तुमसे कोई लेना-देना नहीं है, कहीं ऐसा न हो कि तुम वह सुन लो जो तुम्हें पसंद न आए। लोमड़ी ने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। मैं उस बात से दूर रहूंगा जो तुम्हें पसंद नहीं है; क्योंकि ऋषि ने कहा है, उस विषय पर जानकारी मत दो जिसके बारे में तुमसे प्रश्न न पूछा गया हो; और जब तुम्हें आमंत्रित न किया गया हो तो शब्दों का उत्तर मत दो; जो तुम्हें प्रभावित नहीं करता उसे छोड़ दो और जो तुम्हें प्रभावित करता है उस पर ध्यान दो; और दुष्टों को सलाह मत दो, क्योंकि वे इसका प्रतिफल तुम्हें बुराई से देंगे। — और जब भेड़िये ने लोमड़ी के ये शब्द सुने, तो वह उसके चेहरे पर मुस्कुराया; लेकिन उसने उसके विरुद्ध कोई चाल चलने का मन बनाया और कहा, मुझे इस लोमड़ी का नाश करना ही होगा। हालांकि, लोमड़ी ने भेड़िये के अपमानजनक व्यवहार को धैर्यपूर्वक सहन किया और मन ही मन कहा, सचमुच, उद्दंडता और निंदा विनाश का कारण बनती हैं और व्यक्ति को दुविधा में डाल देती हैं; क्योंकि कहा गया है, जो अभिमानी होता है उसे चोट पहुँचती है, जो अज्ञानी होता है उसे पश्चाताप होता है, और जो भयभीत होता है वह सुरक्षित रहता है: संयम

श्रेष्ठता का एक गुण है, और अच्छे शिष्टाचार सबसे श्रेष्ठ लाभ हैं। इस अत्याचारी के प्रति छलपूर्ण व्यवहार करना उचित है, और वह निश्चित रूप से पराजित होगा। — तब उसने भेड़िये से कहा, निश्चय ही प्रभु अपने सेवक को क्षमा करते हैं और उस पर कृपा करते हैं जब वह पाप करता है; और मैं एक कमजोर दास हूँ, और तुम्हें सलाह देकर मैंने पाप किया है। यदि मुझे तुम्हारे प्रहार से होने वाले दर्द का पूर्व ज्ञान होता, तो मैं जानता कि हाथी इसे सहन नहीं कर सकता; परन्तु मैं उस प्रहार के दर्द की शिकायत नहीं करूँगा, क्योंकि उससे मुझे सुख प्राप्त हुआ है; क्योंकि यदि उसका मुझ पर गंभीर प्रभाव पड़ा, तो उसका परिणाम सुख ही था; और ऋषि ने कहा है, गुरु द्वारा दी गई मार शुरू में अत्यंत कष्टदायी होती है; लेकिन अंत में यह शुद्ध शहद से भी मीठा होता है। — तब भेड़िये ने कहा, मैं तेरा अपराध क्षमा करता हूँ और तेरा दोष मिटा देता हूँ; परन्तु मेरी शक्ति से सावधान रहना और अपने आप को मेरा दास मान लेना; क्योंकि तूने उस व्यक्ति के प्रति मेरी कठोरता देखी है जो मुझसे शत्रुता दिखाता है। तब लोमड़ी ने उसके सामने घुटने टेक दिए और उससे कहा, ईश्वर तेरी आयु बढ़ाए और तू अपने विरोधियों को पराजित करना कभी न छोड़े! और वह भेड़िये से डरता रहा और उसके प्रति छल करता रहा। इसके बाद, एक दिन लोमड़ी एक अंगूर के बाग में गई और उसकी दीवार में एक दरार देखी; लेकिन उसे शक हुआ और उसने मन ही मन कहा, इस दरार का कोई कारण जरूर होगा; और यह कहा गया है कि जो कोई जमीन में छेद देखता है और उससे दूर नहीं भागता, और साहसपूर्वक उसकी ओर नहीं बढ़ता, वह अपने आप को खतरे और विनाश में डालता है। यह सर्वविदित है कि कुछ लोग अंगूर के बाग में लोमड़ी की आकृति बनाते हैं और उसके सामने थालियों में अंगूर रख देते हैं, ताकि लोमड़ी उसे देखे और उसकी ओर बढ़े और विनाश का शिकार हो जाए। वास्तव में, मैं इस दरार को

एक जाल मानता हूँ; और यह कहा गया है कि सावधानी ही चतुराई का आधा हिस्सा है। सावधानी मुझे इस दरार की जांच करने और यह देखने के लिए प्रेरित करती है कि क्या मुझे वहाँ कुछ ऐसा मिलता है जो विनाश की ओर ले जा सकता है। लालच मुझे अपने आप को विनाश में धकेलने के लिए प्रेरित नहीं करता। — फिर वह उसके पास गया और चारों ओर सावधानीपूर्वक उसकी जांच करते हुए उसे देखा; और देखो, वहाँ एक गहरा गड्ढा था, जिसे अंगूर के बाग के मालिक ने छिपा रखा था। उसने जंगली जानवरों को पकड़ने के लिए गड्ढा खोदा था जो अंगूर की बेलों को नष्ट कर देते थे; और उसने देखा कि उस पर एक हल्का आवरण है। इसलिए वह उससे पीछे हट गया और बोला, ईश्वर की स्तुति हो कि मैंने सावधानी बरती! मुझे आशा है कि मेरा शत्रु, भेड़िया, जिसने मेरा जीवन दुखमय बना दिया है, उसमें गिर जाए; ताकि मैं अकेले ही अंगूर की बेल पर पूर्ण अधिकार का आनंद ले सकूँ।14 यह दोहा, थोड़े से संशोधित रूप में, राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान और राजकुमारी बुदूर की कहानी में फिर से आता है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.63%** है।

अध्याय नौ के 56 नोट्स, "अंगूर के बाग में जाओ और उसमें सुरक्षित रहो!" फिर, सिर हिलाते हुए और ज़ोर से हंसते हुए, उसने खुशी से ये छंद गाए: - "काश, इस समय मैं इस कुएँ में उस भेड़िये को देख पाता जिसने लंबे समय से मेरे दिल को सताया है और मुझे जबरदस्ती कड़वाहट पिलाई है! काश, मेरी जान बच जाए और भेड़िये की मृत्यु हो जाए! तब अंगूर का बाग उसकी उपस्थिति से मुक्त हो जाएगा और मुझे उसमें मेरा लूटा हुआ माल मिल जाएगा।" अपना गीत समाप्त करके, वह जल्दी से भेड़िये के पास पहुँचा और उससे कहा, "सचमुच, ईश्वर ने तुम्हारे लिए अंगूर के बाग

तक का मार्ग बिना किसी परिश्रम के सुगम बना दिया है। यह तुम्हारे सौभाग्य से हुआ है। इसलिए, ईश्वर ने तुम्हें जिस चीज़ तक पहुँच प्रदान की है, उसका आनंद लो, उस लूट और उस प्रचुर जीविका तक तुम्हारा मार्ग सुगम बनाकर बिना किसी कठिनाई के!" — तब भेड़िये ने लोमड़ी से कहा, तूने जो कहा है उसका क्या प्रमाण है? लोमड़ी ने उत्तर दिया, मैं अंगूर के बाग में गया और पाया कि उसका मालिक मर गया था; और मैं बाग में गया और पेड़ों पर फल चमकते हुए देखे। इसलिए भेड़िये को लोमड़ी की बातों पर कोई संदेह नहीं हुआ, और वह उत्सुकतावश उठा और दरार की ओर चल पड़ा। उसके लालच ने उसे व्यर्थ आशाओं में फंसा लिया था, और लोमड़ी उसके पीछे मृत समान रुक गई और इस श्लोक को कहावत की तरह लागू करते हुए बोली: — क्या तू लैला से मिलना चाहता है? 5 लालच ही मनुष्यों के सिर काटे जाने का कारण बनता है। और जब भेड़िया दरार के पास पहुँचा, तो लोमड़ी ने उससे कहा, "अंगूर के बाग में प्रवेश करो; क्योंकि तुम्हें बाग की दीवार तोड़ने की परेशानी से मुक्ति मिल गई है, और यह ईश्वर का कार्य है।" इसलिए भेड़िया अंगूर के बाग में प्रवेश करने की इच्छा से आगे बढ़ा, और जब वह छेद के आवरण के बीच में पहुँचा, तो वह उसमें गिर गया; इस पर लोमड़ी अत्यधिक प्रसन्न और आनंदित हो उठी; उसकी चिंता और दुःख समाप्त हो गए, और प्रसन्न स्वर में उसने ये श्लोक गाए: — भाग्य ने मुझ पर दया की है, और तरस खाया है।" मेरे कष्टों की अवधि के लिए, और उसने मुझे मेरी इच्छा पूरी की, और मेरे भय को दूर किया। इसलिए मैं उसके द्वारा पहले किए गए अपराधों को क्षमा करूँगा; यहाँ तक कि मेरे बालों को सफ़ेद करने में उसने जो अन्याय किया है, उसे भी। भेड़िये के लिए पूर्ण विनाश से कोई बच नहीं सकता; और यह अंगूर का बाग केवल मेरे लिए है, और मेरा कोई मूर्ख साथी नहीं है। तब उसने गड्ढे में देखा, और भेड़िये को अपने

पश्चाताप और शोक में रोते हुए देखा, और लोमड़ी भी उसके साथ रो रही थी। तब भेड़िये ने उसकी ओर सिर उठाया, और कहा, हे अबू-हुसैन, क्या तू मुझ पर दया के कारण रोया है? 16 - नहीं, '•' "लैला" महिलाओं का एक सामान्य नाम है। जो उन क्षेत्रों में सियार के लिए प्रयोग किया जाता है • लेकिन 15 "अबू-हुसैन" एक उपनाम है जो आमतौर पर मुझे लगता है कि इन दोनों जानवरों को अक्सर लोमड़ी के लिए गलत नाम दिया जाता है; और कुछ क्षेत्रों में, एक नाम लिया जाता है, एक के लिए अन्य। इसका अर्थ है "छोटे किले का पिता (यानी, हमेशा "थालाब," निवासी के बजाय उस जानवर को दिया जाता है)"।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.65%** है।

अध्याय नौवें के नोट्स। 57 लोमड़ी ने उत्तर दिया; जिसने तुझे इस गड्ढे में डाला, उसी की कसम; लेकिन मैं तेरे बीते जीवन की लंबी अवधि पर रोया, और इस बात पर अफ़सोस किया कि तू आज से पहले इस गड्ढे में क्यों नहीं गिरा। अगर तू मुझसे मिलने से पहले ही इसमें गिर गया होता, तो मुझे आराम और सुकून मिलता। लेकिन तुझे तेरे निर्धारित समय और अवधि तक बख्श दिया गया है। — भेड़िये ने उससे कहा, हे दुष्ट, मेरी माँ के पास जा, और उसे मेरे साथ जो हुआ है, वह बता: शायद वह मेरी मुक्ति का कोई उपाय निकाल ले। लेकिन लोमड़ी ने उत्तर दिया, तेरे लालच और तीव्र इच्छा ने तुझे विनाश के जाल में फंसा लिया है, क्योंकि तू एक ऐसे गड्ढे में गिर गया है जिससे तू कभी नहीं निकल पाएगा। हे अज्ञानी भेड़िये, क्या तू नहीं जानता कि इस कहावत के रचयिता का कहना है, जो परिणाम की चिंता नहीं करता, वह संकटों से सुरक्षित नहीं रहेगा? — हे अबू-हुसैन, भेड़िये ने उत्तर दिया, तू मुझसे स्नेह प्रकट करता था, मेरी मित्रता चाहता था और मेरी शक्ति की महानता से भयभीत होता

था। इसलिए, जो मैंने तेरे साथ किया है, उसके लिए मुझसे द्वेष मत रख; क्योंकि जो किसी को अपने वश में रखता है और फिर भी क्षमा करता है, उसे ईश्वर से प्रतिफल मिलेगा; और कवि ने कहा है, — अनुपयुक्त भूमि पर भी अच्छा बीज बोओ; क्योंकि वह जहाँ कहीं भी बोया जाएगा, फलहीन नहीं होगा। निश्चय ही, अच्छा है, चाहे वह कितना भी दबा रहे, उसे बोने वाले के सिवा कोई नहीं काटेगा।17 – हे शिकारी जानवरों में सबसे अज्ञानी, लोमड़ी ने कहा, और पृथ्वी के क्षेत्रों के जंगली जानवरों में सबसे मूर्ख, क्या तू अपना अहंकार, उद्दंडता और घमंड भूल गया है, और सहचर्य के अधिकारों की अवहेलना करना और कवि की सलाह न मानना भूल गया है? – यदि तेरे पास ऐसा करने की शक्ति है, तो अत्याचार मत कर; क्योंकि अत्याचारी प्रतिशोध के खतरे में है। तेरी आँखें सोती रहेंगी जबकि उत्पीड़ित जागते हुए तुझ पर शाप देंगे, और ईश्वर की आँखें कभी नहीं सोतीं।18 – हे अबू-हुसैन, भेड़िये ने कहा, मेरे पूर्व अपराधों के लिए मुझसे क्रोधित मत हो; क्योंकि उदार से क्षमा की अपेक्षा की जाती है, और दयालु आचरण स्वयं को समृद्ध करने के सर्वोत्तम साधनों में से एक है। कवि का कथन कितना उत्कृष्ट है! जब तुम सक्षम हो, तब भलाई करने में शीघ्रता करो; क्योंकि हर समय तुम्हारे पास यह सामर्थ्य नहीं होती। • "वह लोमड़ी के सामने खुद को नीचा दिखाता रहा और उससे बोला, शायद तू मुझे विनाश से बचाने का कोई बहाना ढूंढ ले। लेकिन लोमड़ी ने उत्तर दिया, हे धूर्त, कपटी, धोखेबाज भेड़िये, मुक्ति की आशा मत रख; क्योंकि यही तेरे नीच आचरण का प्रतिफल और उचित प्रतिशोध है। फिर हंसते हुए अपने जबड़े हिलाते हुए उसने ये दो श्लोक पढ़े: — अब मुझे बहकाने का प्रयास मत करो; क्योंकि तू अपना उद्देश्य प्राप्त नहीं कर पाएगा। तू मुझसे जो चाहता है वह असंभव है। तूने बोया है, और अब काट रहा है कष्ट। — हे शिकारी पशुओं में सबसे कोमल, भेड़िये ने फिर

कहा, तू मेरी दृष्टि में इतना वफादार है कि मुझे इस गड्ढे में नहीं छोड़ेगा! फिर उसने आंसू बहाए और ये दोहे दोहराए: — हे तू, जिसने मुझ पर अनेक कृपाएँ की हैं, और जिसके उपहार अनगिनत हैं! आज तक कोई विपत्ति तुझ पर नहीं आई है।" मुझे केवल एक ही बात पता है कि तुम इसमें मेरी सहायता करने के लिए तैयार हो। लोमड़ी ने उत्तर दिया, हे मूर्ख शत्रु, अपने तिरस्कार, अभिमान, अत्याचार और घमंड के बाद तू कैसे नम्रता, अधीनता, दीनता और चापलूसी में लिप्त हो गया! मैं तेरे अत्याचार के भय से तेरे साथ रहा और तेरी दया को प्रसन्न करने की आशा के बिना तेरी चापलूसी की; परन्तु अब, आतंक ने तुझे जकड़ लिया है और दंड तुझे आ पड़ा है। — और उसने ये दो श्लोक पढ़े: — हे छल करने वाले, तू अपने नीच इरादे में गिर गया है। तो फिर, शर्मनाक विपत्ति का दर्द चखो और अन्य भेड़ियों के साथ काट दिया जा। • — भेड़िये ने फिर भी उससे विनती करते हुए कहा, हे सज्जन, 17 की जीभ से मत बोलो। इस दोहे का पहला श्लोक पृष्ठ 50 पर है। यह दोहा, थोड़ा संशोधित रूप में, खंड 1 में मिलता है। खंड I: और पृष्ठ 210 से ठीक पहले के चार छंद। मैं इस प्रकार की हर पुनरावृत्ति को नोट नहीं करता, क्योंकि सभी छंद उद्धरण हैं। II. I

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.14%** है।

अध्याय नौ के लिए 58 टिप्पणियाँ। शत्रुता मत रखो, न ही उसकी ओर देखो; परन्तु उपाय खोजने का समय बीतने से पहले मेरे साथ संगति की वाचा पूरी करो। उठो और मेरे लिए एक रस्सी लाओ, उसका एक सिरा एक पेड़ से बाँध दो, और उसका दूसरा सिरा मुझे नीचे लटका दो, ताकि मैं उसे पकड़ सकूँ। शायद इस तरह मैं अपनी वर्तमान विपत्ति से बच निकलूँ, और मैं तुम्हें अपना सारा खजाना दे दूँगा। — लेकिन लोमड़ी ने

उत्तर दिया, तूने ऐसी बातचीत को लंबा खींच दिया है जिससे तुझे मुक्ति नहीं मिलेगी। इसलिए, मेरे माध्यम से अपने बचाव की आशा मत रखो; परन्तु अपने पूर्व के दुष्ट आचरण, और उस विश्वासघात और छल पर विचार करो जो तूने मेरे विरुद्ध करने का सोचा था, और तू पत्थर मारकर मारे जाने के कितना निकट है। जान ले कि तेरी आत्मा संसार को छोड़ने और नष्ट होकर इससे विदा होने वाली है: तब तू विनाश की ओर अग्रसर होगा; और वह एक बुरा निवास स्थान है जहाँ तू जा रहा है! — हे अबू-हुसैन, भेड़िये ने उत्तर दिया, मित्रता में लौटने के लिए तैयार रहो, और इतना द्वेष मत रखो। जान लो कि जो किसी आत्मा को विनाश से बचाता है, वह उसे जीवित रखता है, और जो किसी आत्मा को जीवित रखता है, वह मानो समस्त मानव जाति के जीवन को बचाता है।19 बुराई का मार्ग मत अपनाओ; क्योंकि बुद्धिमान इससे घृणा करते हैं; और मेरे इस गड्ढे में पड़े होने, मृत्यु की घुटन भरी पीड़ा सहने और विनाश को देखने से बढ़कर कोई बुराई नहीं है, जबकि तुम मुझे उस विपत्ति से बचा सकते हो जिसमें मैं गिर गया हूँ। — लेकिन लोमड़ी ने कहा, हे बर्बर, कठोर हृदय वाले दुष्ट! मैं तेरे कथनों की अच्छाई और तेरे इरादों की नीचता के संदर्भ में तेरी तुलना बाज़ और तीतर से करता हूँ। —और, भेड़िये ने पूछा, बाज़ और तीतर की कहानी क्या है? लोमड़ी ने उत्तर दिया, "एक दिन मैं अंगूर खाने के लिए एक अंगूर के बाग में गया, और वहाँ मैंने एक बाज़ को एक तीतर पर झपट्टा मारते देखा; लेकिन जब उसने उसे पकड़ लिया, तो तीतर उससे बचकर अपने घोंसले में घुस गया और उसमें छिप गया; तब बाज़ उसके पीछे गया और उसे पुकारते हुए बोला, 'हे मूर्ख, मैंने तुझे रेगिस्तान में भूखा देखा, और तुझ पर दया करके तेरे लिए कुछ अनाज इकट्ठा किया और तुझे खाने के लिए पकड़ लिया; लेकिन तू मुझसे भाग गया, और तेरे भागने का मुझे कोई कारण नहीं दिखता सिवाय इसके कि तू मुझे

अपमानित करना चाहता है। तो फिर आ जा, और जो अनाज मैं तेरे लिए लाया हूँ उसे ले ले, और खा ले, और यह तुझे हल्का और पौष्टिक लगे।'" — तो जब तीतर ने बाज़ की ये बातें सुनीं, तो उसने उस पर विश्वास किया और उसके पास आ गया; और बाज़ ने अपने पंजे उसमें गाड़ दिए और उसे पकड़ लिया। तब तीतर ने उससे कहा, "क्या यह जिसके बारे में तूने कहा था कि तू उसे मेरे लिए रेगिस्तान से लाया है, और जिसके बारे में तूने मुझसे कहा था, "इसे खा ले, और यह तेरे लिए हल्का और पौष्टिक हो?" तूने मुझसे झूठ बोला है; और ईश्वर करे कि जो तू मेरा मांस खाए, वह तेरे पेट में घातक विष बन जाए। — और जब उसने उसे खा लिया, तो उसके पंख झड़ गए, उसकी शक्ति क्षीण हो गई, और वह तुरंत मर गया। लोमड़ी ने आगे कहा, "हे भेड़िये, जान ले कि जो अपने भाई के लिए गड्ढा खोदता है, वह स्वयं भी उसी में गिर जाता है; और तूने पहले मेरे साथ विश्वासघात किया।" भेड़िये ने उत्तर दिया, "मुझे इस तरह की बातें सुनाना और मनगढ़ंत कहानियाँ गढ़ना बंद कर दे, और मेरे पिछले बुरे कामों का ज़िक्र न कर। मेरे लिए इस दयनीय स्थिति में होना ही काफी है क्योंकि मैं एक ऐसी विपत्ति में फँस गया हूँ जिस पर शत्रु भी मुझ पर दया करेगा; सच्चा मित्र तो और भी अधिक दया करेगा।" कोई ऐसा उपाय सोचो जिससे मैं खुद को बचा सकूँ, और मेरी सहायता करो। यदि ऐसा करने से तुम्हें परेशानी हो, तो तुम जानते हो कि ये शब्द, "और जो बचाता है," इत्यादि, कुरान के अध्याय 35 से हैं।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.98%** है।

अध्याय नौ के लिए टिप्पणियाँ। सच्चा मित्र अपने सच्चे मित्र के लिए सबसे कठिन परिश्रम सहता है, और उसकी मुक्ति के साधन प्राप्त करने में विनाश का भी सामना करता है; और यह कहा गया है कि एक स्नेही

मित्र अपने भाई से भी श्रेष्ठ होता है। यदि तू मेरे भागने का साधन जुटा ले, तो मैं तेरे लिए ऐसी वस्तुएँ एकत्र करूँगा जो संकट के समय तेरे लिए भंडार का काम करेंगी, और फिर मैं तुझे ऐसी असाधारण युक्तियाँ सिखाऊँगा जिनसे तू भरपूर अंगूर के बागों तक पहुँच सकेगा और फलदार वृक्षों से फल तोड़ सकेगा: अतः प्रसन्न और प्रसन्न रहो। — परन्तु लोमड़ी हँसते हुए बोली, तेरे जैसे अति अज्ञानी के विषय में विद्वानों ने जो कहा है वह कितना उत्तम है। — और विद्वानों ने क्या कहा है? भेड़िये ने पूछा। लोमड़ी ने उत्तर दिया, विद्वानों ने देखा है कि शरीर और स्वभाव से असभ्य व्यक्ति बुद्धि से बहुत दूर और अज्ञानता के निकट होता है; हे विश्वासघाती मूर्ख, तेरा यह कथन कि सच्चा मित्र अपने सच्चे मित्र की मुक्ति के लिए कष्ट सहता है, उचित है, जैसा तूने कहा है; परन्तु मुझे अपनी अज्ञानता और बुद्धिहीनता से अवगत करा, कि मैं तेरे विश्वासघात के साथ सच्ची मित्रता कैसे निभाऊँ। क्या तूने मुझे अपना सच्चा मित्र समझा है, जबकि मैं तेरा शत्रु हूँ जो तेरे दुर्भाग्य में प्रसन्न होता है? यदि तू समझे तो ये शब्द तीरों के चुभने से भी अधिक कठोर हैं। और जहाँ तक तेरे इस कथन का सवाल है कि तू मुझे ऐसी वस्तुएँ देगा जो मेरे लिए अभाव के समय भंडार का काम करेंगी, और मुझे ऐसी युक्तियाँ सिखाएगा जिनसे मैं समृद्ध अंगूर के बागों तक पहुँच सकूँ और फलदार वृक्षों को तोड़ सकूँ— हे कपटी गद्दार, तू स्वयं को विनाश से बचाने की कोई युक्ति क्यों नहीं जानता? तो फिर, तुम स्वयं लाभ उठाने से कितनी दूर हो, और मैं तुम्हारी सलाह पाने से कितनी दूर हूँ! यदि तुम कोई युक्ति जानते हो, तो उसका प्रयोग करके स्वयं को इस विकट परिस्थिति से बचाओ, जिससे मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारा बचना बहुत दूर हो। हे मूर्ख, देखो, यदि तुम कोई युक्ति जानते हो, और उसके द्वारा स्वयं को मृत्यु से बचाओ, इससे पहले कि तुम किसी और को उपदेश दो। परन्तु तुम उस व्यक्ति के समान हो

जिसे कोई रोग हो गया हो, और उसी रोग से पीड़ित एक अन्य व्यक्ति उसका इलाज करने आया हो, और उससे कहे, क्या मैं तुम्हारा रोग ठीक कर दूँ? तब पहले व्यक्ति ने दूसरे से कहा, तुमने पहले अपना इलाज क्यों नहीं किया? अतः वह उसे छोड़कर चला गया। और हे भेड़िये, तुम भी उसी स्थिति में हो। इसलिए अपने स्थान पर ही रहो, और जो कुछ तुम पर विपत्ति आई है, उसे सहन करो। जब भेड़िये ने लोमड़ी के ये शब्द सुने, तो वह समझ गया कि लोमड़ी को उससे कोई दया नहीं है; इसलिए वह अपने लिए रोने लगा और बोला, "मैंने अपनी लापरवाही बरती है; लेकिन अगर ईश्वर मुझे इस कष्ट से मुक्ति दिलाए, तो मैं अपने से कमजोर व्यक्ति के प्रति अपने अहंकारपूर्ण व्यवहार के लिए अवश्य पश्चाताप करूँगा; और मैं निश्चित रूप से ऊनी वस्त्र पहनकर पहाड़ों पर चढ़ूँगा, ईश्वर की स्तुति करूँगा (जिसका नाम महान हो!), और उसके दंड से भयभीत रहूँगा: और मैं अपने आप को सभी अन्य जंगली जानवरों से अलग रखूँगा; और निश्चय ही मैं धर्म की रक्षा करने वाले योद्धाओं और गरीबों को भोजन कराऊँगा।" फिर वह रोया और विलाप किया। तब लोमड़ी का हृदय उसके प्रति कोमल भावनाओं से भर गया। उसकी विनम्र अभिव्यक्ति और अहंकार और घमंड के पश्चाताप को दर्शाने वाले शब्दों को सुनकर, लोमड़ी को उस पर दया आ गई, और खुशी से उछलते हुए, वह गड्ढे के किनारे पर बैठ गया, अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और अपनी पूंछ को पानी में लटका दिया। गड्ढा। इस पर भेड़िया उठा और उसने अपना पंजा लोमड़ी की पूंछ की ओर बढ़ाया और उसे अपने साथ नीचे खींच लिया: इस प्रकार लोमड़ी भी उसके साथ गड्ढे में गिर गई। तब भेड़िये ने उससे कहा, हे निर्दयी लोमड़ी, तूने मेरे दुर्भाग्य पर क्यों प्रसन्नता मनाई? अब तू मेरी साथी और मेरे वश में हो गई है। तू मेरे साथ गड्ढे में गिर गई है और तुझे शीघ्र ही दंड मिलेगा। ऋषियों ने कहा है, यदि तुममें से कोई अपने भाई

को कष्टदायी साधनों से अपना भरण-पोषण प्राप्त करने के लिए धिक्कारे, तो उसे भी उसी प्रकार का कष्ट सहना पड़ेगा: — और कवि का कथन कितना उत्कृष्ट है! — जब भाग्य किसी पर भारी विपत्ति डाले और दूसरों के साथ डेरा डाले, तो हम पर प्रसन्न होने वालों से कह, जाग जाओ: हम पर प्रसन्न होने वाले भी उसी प्रकार कष्ट भोगेंगे जैसा हमने सहा है। इसलिए मैं ऊनी वस्त्र पहनूंगा, जो सूफियों और वली मुसलमानों के वस्त्रों में धार्मिक भक्तों की विशिष्ट सामान्य प्रथा है। (हाशिया में) ऊनी वस्त्र (शेख मोहम्मद इयाद द्वारा लिखित टिप्पणी)। यह एक

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.03%** है।

अध्याय नौ के लिए 60 टिप्पणियाँ। उसने आगे कहा, "अब मुझे तेरा वध शीघ्र करना होगा, इससे पहले कि तू मेरा वध देखे।" लोमड़ी ने मन ही मन कहा, "मैं इस अत्याचारी के जाल में फँस गई हूँ, और मेरी वर्तमान स्थिति में छल और कपट का सहारा लेना आवश्यक है। कहा जाता है कि स्त्री उत्सव के दिन के लिए अपने आभूषण बनाती है; और एक कहावत है, 'हे मेरे आँसू, मैंने तुझे केवल अपनी विपत्ति के समय के लिए ही रखा है: और यदि मैं इस अत्याचारी जंगली जानवर के मामले में कोई युक्ति नहीं अपनाती, तो मेरा विनाश निश्चित है।' कवि का कथन कितना उत्तम है! छल से अपना जीवन यापन करो; क्योंकि तू ऐसे युग में जी रहा है जिसके पुत्र जंगल के शेरों के समान हैं; और छल के भाले को घुमाते रहो, ताकि जीविका की चक्की चलती रहे; और फल तोड़ लो; या यदि वे तेरी पहुँच से बाहर हों, तो घास-फूस से ही संतोष कर लो।" तब उसने भेड़िये से कहा, “मुझे मारने में जल्दी मत करो, कहीं ऐसा न हो कि तुझे पछतावा हो, हे वीर जंगली जानवर, जो बलवान और अति-साहसी है। यदि तू रुकेगा और मेरी बात पर विचार करेगा, तो तुझे मेरी इच्छा का पता चल

जाएगा; और यदि तू मुझे मारने में जल्दी करेगा, तो तुझे इससे कोई लाभ नहीं होगा; बल्कि हम यहीं साथ मरेंगे।" — तब भेड़िये ने कहा, "हे धूर्त धोखेबाज़, तू मेरी और अपनी सुरक्षा की आशा कैसे कर सकता है कि तू मुझसे समय देने का अनुरोध कर रहा है? मुझे अपनी इच्छा बता। — लोमड़ी ने उत्तर दिया, "जहाँ तक मेरी इच्छा का सवाल है, वह ऐसी है जिसके लिए तुझे मुझे अच्छा प्रतिफल देना होगा; क्योंकि जब मैंने तेरे वादे, तेरे अतीत के आचरण की स्वीकारोक्ति, और पहले पश्चाताप न करने और अच्छा काम न करने पर तेरा पछतावा सुना, और जब मैंने तेरा अपने साथियों और दूसरों के प्रति हानिकारक आचरण से दूर रहने, अंगूर और अन्य सभी फलों का सेवन त्यागने, स्वयं पर नम्रता का दायित्व ग्रहण करने, अपने पंजे काटने, अपने नुकीले दांत तुड़वाने, ऊनी वस्त्र पहनने और ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) को बलिदान अर्पित करने का वचन दो, यदि वह तुम्हें तुम्हारी वर्तमान स्थिति से मुक्ति दिलाए, तो मुझे तुम पर दया आ गई, यद्यपि मैं पहले तुम्हारे विनाश की कामना करता था। इसलिए जब मैंने तुम्हारे पश्चाताप के कथन और ईश्वर द्वारा मुक्ति दिलाने पर तुम्हारे द्वारा किए जाने वाले वचनों को सुना, तो मुझे तुम्हें तुम्हारी वर्तमान विकट परिस्थिति से बचाने के लिए विवश होना पड़ा। इसलिए मैंने अपनी पूंछ नीचे लटका दी ताकि तुम उसे पकड़कर भाग सको। लेकिन तुमने अपनी कठोरता और हिंसा की आदत नहीं छोड़ी, न ही कोमलता से अपने लिए बचाव और सुरक्षा की इच्छा की। इसके विपरीत, तुमने मुझे इस प्रकार खींचा कि मुझे लगा जैसे मेरी आत्मा निकल गई हो। मैं विनाश और मृत्यु के निवास में तुम्हारा साथी बन गया हूँ; और मुझे और तुम्हें बचाने का एक ही तरीका है। यदि तुम मेरी इस योजना को स्वीकार करते हो, तो हम दोनों बच जाएँगे; और उसके बाद, तुम्हारा कर्तव्य होगा कि तुम अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो, और मैं तुम्हारा साथी रहूँगा।— तो

भेड़िये ने कहा, और तुम्हारा क्या प्रस्ताव है जिसे मुझे स्वीकार करना चाहिए? लोमड़ी ने उत्तर दिया, कि तुम सीधे खड़े हो जाओ; फिर मैं तुम्हारे सिर पर बैठ जाऊँगा, ताकि मैं पृथ्वी की सतह तक पहुँच सकूँ, और जब मैं सतह पर पहुँच जाऊँगा तो मैं बाहर जाकर तुम्हारे लिए कुछ ऐसा लाऊँगा जिसे तुम पकड़ सको, और उसके बाद तुम स्वयं को बचा लोगे। लेकिन भेड़िये ने उत्तर दिया, मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं है; क्योंकि विद्वानों ने कहा है, जो घृणा करते हुए विश्वास करता है, वह गलती पर है: — और यह भी कहा गया है, जो विश्वासघाती पर विश्वास करता है धोखा खाने वाला, और जो परीक्षा लेने वाले की परीक्षा लेता है, उसे पछतावा होगा। और जो परिस्थितियों में भेद नहीं करता और प्रत्येक को उसकी उचित सफलता का श्रेय देता है, बल्कि सभी परिस्थितियों को एक समान मानता है, उसका भाग्य कम होगा और विपत्तियाँ अनेक होंगी। कवि का यह कथन भी कितना उत्कृष्ट है! - अपनी राय को बुराई के सिवा कभी मत रखो; क्योंकि बुरी राय बौद्धिक गुणों में सबसे प्रबल होती है। अच्छाई का अभ्यास और निष्पक्ष राय किसी व्यक्ति को खतरे में डाल देती है। और एक अन्य का कथन है: - हमेशा बुरी राय रखो, और इस प्रकार सुरक्षित रहो। जो सतर्क रहता है, उसकी विपत्तियाँ कम होंगी। शत्रु का सामना मुस्कुराते हुए और खुले चेहरे से करो; परन्तु हृदय में उसके विरुद्ध युद्ध करने के लिए सेना खड़ी करो।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.14%** है।

XOTKS TO CHAFFER NiXTH". 61 और दूसरे का :-' — तुम्हारे शत्रुओं में सबसे कड़वा वही है जिस पर तुम सबसे अधिक विश्वास करते हो: ऐसे लोगों से सावधान रहो और उनसे चालाकी से मेलजोल रखो। भाग्य के प्रति तुम्हारा अनुकूल दृष्टिकोण एक कमजोरी है: इसलिए

इसके बारे में बुरा सोचो और इसे आशंका से देखो। — सचमुच, लोमड़ी ने उत्तर दिया, हर स्थिति में बुरा दृष्टिकोण उचित नहीं होता; परन्तु अच्छा दृष्टिकोण उत्कृष्टता के लक्षणों में से एक है, और इसका परिणाम भय से मुक्ति है। हे भेड़िये, यह उचित है कि तुम अपनी वर्तमान विकट परिस्थिति से बचने के लिए कोई रणनीति अपनाओ; और हम दोनों के लिए मरने से बेहतर होगा कि हम बच निकलें। इसलिए, अपने बुरे दृष्टिकोण और अपनी दुर्भावना को त्याग दो; क्योंकि यदि तुम मेरे बारे में अनुकूल सोचोगे, तो मैं दो में से एक काम अवश्य करूँगा: या तो मैं तुम्हारे लिए कुछ ऐसा लाऊँगा जिसे तुम पकड़ सको, और तुम बच निकलोगे या तो मैं तुम्हारी वर्तमान स्थिति पर ध्यान दूं, या मैं तुम्हारे प्रति विश्वासघात करूंगा और खुद को बचाकर तुम्हें छोड़ दूंगा; लेकिन ऐसा संभव नहीं है; क्योंकि मैं भी तुम्हारे जैसी किसी विपत्ति से सुरक्षित नहीं हूं, और वह विश्वासघात का दंड होगा। एक कहावत है, वफादारी अच्छी है और विश्वासघात नीच। इसलिए यह उचित है कि तुम मुझ पर भरोसा करो; क्योंकि मैं विपत्तियों से अनजान नहीं रहा हूं। इसलिए, हमारे भागने की योजना बनाने में देरी न करो; क्योंकि मामला इतना गंभीर है कि तुम्हारे लिए इस पर लंबे समय तक बात करना व्यर्थ है। तब भेड़िये ने कहा, "सचमुच, तुम्हारी वफादारी पर मुझे कम भरोसा होने के बावजूद, मैं तुम्हारे दिल की बात जानता था, कि जब तुम्हें मेरे पश्चाताप का यकीन हो गया था, तब तुमने मेरी मुक्ति चाही थी।" और मैंने मन ही मन कहा, यदि वह अपने कथन में सत्य है, तो उसने अपने पाप का प्रायश्चित कर लिया है; और यदि वह झूठा है, तो उसे उसके प्रभु द्वारा दंड मिलेगा। अतः अब मैं तुम्हारा प्रस्ताव स्वीकार करता हूँ; और यदि तुम मेरे प्रति विश्वासघात करोगे, तो तुम्हारा विश्वासघात ही तुम्हारे विनाश का कारण बनेगा। — तब भेड़िया गड्ढे में सीधा खड़ा हो गया और लोमड़ी को अपने कंधों पर उठा लिया, जिससे उसका सिर

ज़मीन की सतह तक पहुँच गया। लोमड़ी तुरंत भेड़िये के कंधों से कूद गई और ज़मीन पर गिर पड़ी, जहाँ वह बेहोश हो गई। भेड़िये ने उससे कहा, हे मेरे मित्र, मेरी स्थिति को मत भूलो, और मेरी मुक्ति में देरी मत करो। लेकिन लोमड़ी ज़ोर से हँसी और बोली, "हे धोखे में आए हुए! तुम्हारे साथ मेरा मज़ाक करना और तुम्हारा उपहास करना ही मुझे तुम्हारे जाल में फँसाने का कारण बना। जब मैंने तुम्हारे पश्चाताप का वचन सुना, तो मुझे बहुत खुशी हुई, मैं आनंद से भर उठी और नाचने लगी, मेरी पूंछ गड्ढे में लटक गई; इसलिए तुमने मुझे खींच लिया और मैं तुम्हारे पास गिर गई। तब परमेश्वर (जिसका नाम महान हो!) ने मुझे तुम्हारे हाथ से छुड़ाया। तो फिर मैं तुम्हारे विनाश में क्यों न साथ दूँ, जबकि तुम शैतान के साथियों में से हो? जान लो कि मैंने कल सपना देखा था कि मैं तुम्हारी शादी में नाच रही थी, और मैंने वह सपना एक स्वप्न व्याख्याकार को सुनाया, जिसने मुझसे कहा, 'तुम एक भयानक खतरे में पड़ोगी और उससे बच जाओगी।' तो मुझे पता चल गया कि तुम्हारे जाल में फँसना और उससे बच निकलना ही मेरे सपने की व्याख्या थी। हे धोखे में आए हुए मूर्ख, तुम भी जानते हो कि मैं तुम्हारा शत्रु हूँ। तो फिर तुम कैसे...?" अपनी अल्प बुद्धि और अज्ञानता के साथ, क्या तुम आशा करते हो कि मैं तुम्हें बचा लूँगा, जबकि तुमने मेरी अभद्र भाषा सुन ली है? और मैं तुम्हें कैसे बचा सकता हूँ, जबकि विद्वानों ने कहा है कि पापी की मृत्यु से मानव जाति को शांति और पृथ्वी का शुद्धिकरण होता है? यदि मुझे यह भय न होता कि तुम्हारे प्रति निष्ठा के कारण मुझे विश्वासघात से भी अधिक कष्ट सहना पड़ेगा, तो मैं तुम्हारी मुक्ति के उपाय पर विचार करता। — इसलिए जब भेड़िये ने लोमड़ी के शब्द सुने, तो उसने पश्चाताप में अपना पंजा काट लिया।22 फिर उसने उससे कोमल स्वर में बात की; परन्तु इससे उसे कुछ प्राप्त नहीं हुआ। धीमी आवाज़ में उसने उससे कहा, “सचमुच, तुम लोमड़ियों

की जाति जीभ से सबसे मधुर और मज़ाक में सबसे सुखद हो; और यही तुममें मज़ाक है; परन्तु हर समय खेल और मज़ाक के लिए उपयुक्त नहीं होता।" — ओ 21 एट-तुघराई, "लीमीयेत" के लेखक। पूर्व अभिव्यक्ति "आई एल-'अजम।" (शेख मो-हमद 'ईयिद द्वारा हाशिये पर टिप्पणी।) काहिरा में मेरे एक मित्र को अक्सर ऐसा करने की आदत थी। 52 "हाथ काटना" अरबों में एक आम अभिव्यक्ति है, जो हमारी "होंठ काटना" के समान है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.21%** है।

अध्याय नौ के लिए 62 टिप्पणियाँ। लोमड़ी ने उत्तर दिया, "मूर्ख! मज़ाक की भी एक सीमा होती है जिसे उसका स्वामी नहीं तोड़ता। यह मत सोचो कि ईश्वर मुझे तुम्हारे अधिकार से मुक्त करने के बाद तुम्हें मेरा अधिकार दे देगा।" तब भेड़िये ने उससे कहा, "तुम ही वह हो जिसमें मेरी मुक्ति की इच्छा रखना उचित है, क्योंकि हमारे बीच पहले भाईचारा और मित्रता थी; और यदि तुम मुझे मुक्त करोगे, तो मैं तुम्हें निश्चित रूप से अच्छा प्रतिफल दूंगा।" लेकिन लोमड़ी ने उत्तर दिया, "ऋषियों ने कहा है, अज्ञानी और दुष्ट को अपना भाई मत बनाओ; क्योंकि वह तुम्हें अपमानित करेगा, सम्मान नहीं देगा; और झूठे को अपना भाई मत बनाओ; क्योंकि यदि तुमसे बुराई निकलेगी तो वह उसे छिपाएगा, और यदि तुमसे बुराई निकलेगी तो वह उसे प्रकट करेगा।" और ऋषियों ने कहा है, "मृत्यु को छोड़कर हर चीज़ के लिए एक युक्ति होती है; और सार के भ्रष्टाचार को छोड़कर हर चीज़ को सुधारा जा सकता है।" और नियति को छोड़कर सब कुछ दूर किया जा सकता है। और जिस प्रतिफल की तुम मुझसे अपेक्षा करती हो, मैं तुम्हारी तुलना उस सर्प से करता हूँ जो हवाई से भाग रहा था,[13] जब एक व्यक्ति ने उसे भयभीत अवस्था में देखा और उससे कहा, हे सर्प, क्या हुआ है?

उसने उत्तर दिया, मैं हवाई से भागी हूँ; क्योंकि वह मुझे खोज रहा है; और यदि तुम मुझे उससे बचा लो और मुझे अपने साथ छिपा लो, तो मैं तुम्हें अच्छा प्रतिफल दूँगी और तुम पर हर प्रकार की कृपा करूँगी। इसलिए उस व्यक्ति ने इनाम पाने के लिए और प्रतिफल की लालसा में उसे अपनी जेब में रख लिया; और जब हवाई गुजर गया और अपने रास्ते चला गया, और जिस चीज से वह डर रही थी वह उससे दूर हो गई, तो उस व्यक्ति ने उससे कहा, प्रतिफल कहाँ है? क्योंकि मैंने तुम्हें उस चीज से बचाया है जिससे तुम डरती और भयभीत होती थी। सर्प ने उत्तर दिया, “मुझे बताओ मैं तुझे किस अंग में काटूँ; क्योंकि तू जानता है कि हम इस प्रतिफल से अधिक नहीं देंगे।” तब उसने उसे काट लिया जिससे उसकी मृत्यु हो गई। लोमड़ी ने आगे कहा, “और हे मूर्ख, मैं उस सर्प की तुलना उस मनुष्य से करता हूँ। क्या तूने कवि की यह बात नहीं सुनी? उस व्यक्ति पर भरोसा मत करो जिसके हृदय में तूने क्रोध भर दिया हो; और यह मत सोचो कि उसका क्रोध शांत हो गया है। निश्चय ही, वे विषैले साँप, जो छूने में चिकने और सुंदर चाल दिखाते हैं, घातक विष छिपाते हैं।” भेड़िये ने उत्तर दिया, “हे वाक्पटु और सुंदर मुख वाले प्राणी, मेरी स्थिति और मनुष्यों के मेरे प्रति भय से अनभिज्ञ मत रहो। तू जानता है कि मैं मजबूत स्थानों पर आक्रमण करता हूँ और लताओं को नष्ट कर देता हूँ। इसलिए, जो मैंने तुझे आज्ञा दी है, उसका पालन कर और मेरी सेवा उसी प्रकार कर जैसे दास अपने स्वामी की सेवा करता है।” — हे अज्ञानी मूर्ख, जो व्यर्थ की चीजों की तलाश करता है, लोमड़ी ने कहा, मुझे तेरी मूर्खता और तेरे कठोर व्यवहार पर आश्चर्य होता है, जिस तरह तू मुझे अपनी सेवा करने और अपने सामने इस प्रकार खड़े रहने का आदेश देता है जैसे मैं तेरा दास हूँ। परन्तु तू शीघ्र ही देखेगा कि तेरा क्या हश्र होगा, जब तेरा सिर पत्थरों से फोड़ दिया जाएगा और तेरे कपटी दाँत तोड़ दिए

जाएँगे। फिर लोमड़ी अंगूर के बाग के ऊपर एक टीले पर बैठ गई और बाग के लोगों को लगातार पुकारती रही, जब तक कि उन्होंने उसे देख नहीं लिया और जल्दी से उसके पास नहीं आ गए। वह उनके सामने तब तक स्थिर रही जब तक वे उसके पास और उस गड्ढे के पास नहीं पहुँच गए जिसमें भेड़िया था, और फिर वह भाग गई। तो बाग के मालिकों ने गड्ढे में देखा, और जब उन्होंने उसमें भेड़िये को देखा, तो उन्होंने तुरंत उस पर भारी पत्थर फेंके, और उस पर पत्थर और लकड़ी के टुकड़े फेंकते रहे, और भाले की नोकों से उसे छेदते रहे, जब तक कि वे उसे मार नहीं डाला, और फिर वे चले गए। फिर लोमड़ी गड्ढे में लौट आई, और भेड़िये के वध स्थल पर खड़े होकर उसे मरा हुआ देखा; यह देखकर वह अत्यधिक प्रसन्नता में अपना सिर हिलाने लगी, और ये छंद पढ़े: - भाग्य ने भेड़िये की आत्मा को निकाल लिया, और वह छीन ली गई। उसकी आत्मा जो नष्ट हो गई है, सुख से बहुत दूर हो! हे अबू-सिरहान, तूने उसे नष्ट करने के लिए कब तक प्रयास किया? हे भगवान! अब तुम पर भयंकर विपत्तियाँ आ पड़ी हैं। तुम एक ऐसे गड्ढे में गिर पड़े हो जिसमें मृत्यु की ज्वालाओं के बिना कोई नहीं उतर सकता। » हावी हाथ की सफाई का एक कलाकार है जिसका वर्णन मैंने अपनी पुस्तक 'आधुनिक तरकीबें, और साँपों से जुड़े विभिन्न करतब, आदि' में किया है, जो मिस्रियों, खंड 2, अध्याय 7 में वर्णित है। ** यह भेड़िये का एक उपनाम है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.85%** है।

अध्याय नौवें पर टिप्पणियाँ। 63 — इसके बाद, लोमड़ी अंगूर के बाग में अकेली और सुरक्षित रही, उसे किसी भी प्रकार के खतरे का डर नहीं था। टिप्पणी 2. कई प्रतियों में, और शायद अधिकांश में, इस व्यक्ति को "अत्तर" कहा गया है, जो उपाधि सामान्यतः न केवल सुगंध बेचने वाले

को, बल्कि औषधि विक्रेता और इत्र विक्रेता को भी दी जाती है। टिप्पणी 3. जिस शब्द का अनुवाद मैं यहाँ "फ़ारसी" (अर्थात "अजम") कर रहा हूँ, वह उन सभी लोगों के लिए प्रयोग किया जाता है जो अरब नहीं हैं; लेकिन अक्सर विशेष रूप से फ़ारसी लोगों के लिए; और ऐसा प्रतीत होता है कि बाद में "अजम के राजा" के उल्लेख के कारण यहाँ इसकी आवश्यकता है। यहाँ मैं यह भी कहना चाहूँगा कि "राजाओं के पुत्रों" आदि वाक्यांश का प्रयोग अक्सर "राजाओं के वंशजों" आदि के लिए किया जाता है; और बाद के एक अंश में बक्कर के पुत्र अली के लिए "राजा का पुत्र" के स्थान पर इस वाक्यांश का प्रयोग करना अधिक सुसंगत होता। क्योंकि कहानी में उन्हें राजकुमार के रूप में नहीं दर्शाया गया है। टिप्पणी 4. मनोरंजन के लिए दुकानों पर जाने की प्रथा पर। अबू हसन को खलीफा के साथ संगति करते हुए और अली (बेकर का पुत्र) को अबू हसन की दुकान पर बैठने की आदत के रूप में वर्णित करना, वर्तमान समय में प्रचलित और इतिहासों में वर्णित अरबी रीति-रिवाजों के अनुरूप है। आम तौर पर मुसलमानों में व्यापार को इस देश के स्वतंत्र वर्गों के एक बड़े हिस्से की तुलना में कहीं अधिक सम्मानजनक माना जाता है; इतना अधिक कि स्वतंत्र वर्ग के लोग इसे किसी व्यक्ति के लिए, चाहे उसका पद कितना भी ऊंचा हो या धन कितना भी अधिक हो, किसी व्यवसाय, जैसे शस्त्र, साहित्य या विज्ञान, या किसी व्यापार या कला के माध्यम से आवश्यकता पड़ने पर अपनी जीविका का प्रबंध न कर पाना शर्मनाक मानते हैं। इसलिए व्यापार करने से उनमें से किसी भी अच्छे संस्कार वाले व्यक्ति को अपने से उच्च पदस्थ लोगों की संगति से वंचित नहीं किया जाता है। लेकिन स्त्री-विभाजन के कानून से मुसलमानों के विभिन्न वर्गों के बीच स्वतंत्र मेलजोल को और भी अधिक बढ़ावा मिलता है; इस कानून के तहत लोग धन या सामाजिक स्थिति के अंतर की परवाह किए बिना,

असमान वैवाहिक संबंधों के जोखिम के बिना एक-दूसरे के साथ मेलजोल कर सकते हैं। इसलिए, इस कानून को किसी भी लिंग द्वारा दमनकारी नहीं माना जाता है, बल्कि इसे ऐसे परिणाम देने वाला माना जाता है जो मुसलमानों के प्रमुख सुखों का आधार हैं - उच्चतम स्तर का घरेलू सुख और अपने साथी मनुष्यों के साथ सबसे स्वतंत्र और व्यापक समाज। यह दोनों लिंगों के लिए समान है; और कोई भी इस कानून से प्राप्त होने वाले सुख को किसी अन्य सामाजिक व्यवस्था के लिए नहीं छोड़ेगा, जो उनके घरेलू मेलजोल को कुछ हद तक बढ़ाएगी, लेकिन अक्सर घर के सुखों को नष्ट कर देगी और बाहर प्राप्त होने वाले मेलजोल को अपेक्षाकृत सीमित कर देगी। आम तौर पर अरब लोग विवाह या खतना जैसे विशेष अवसरों को छोड़कर शायद ही कभी दावतें देते हैं; और इसलिए, ऊपर बताए गए कारणों के साथ-साथ, सुखद बातचीत में समय बिताने के उद्देश्य से अक्सर दुकानों पर जाया जाता है। आज के समय में महिलाओं के लिए ऐसा करना उचित नहीं माना जाता; लेकिन उनके भी पुरुषों की तरह ही मिलने-जुलने के स्थान होते हैं: उनके लिए, किसी चर्च में जाना पुरुषों की तुलना में कहीं अधिक लंबा और सामाजिक कार्यक्रम होता है; और वहाँ वे अपनी ही जाति की अजनबियों से बातचीत करती हैं। अपने दोस्तों से मिलने के दौरान

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.99%** है।

अध्याय नौ के लिए 64 टिप्पणियाँ। और रिश्तेदारों के मामले में भी, उन्हें पुरुषों की तुलना में एक लाभ होता है; क्योंकि ये मुलाकातें न केवल बार-बार होती हैं, बल्कि घर की सभी महिलाएँ आमतौर पर मालकिन के साथ आती हैं, और अक्सर यह प्रवास सुबह जल्दी से लेकर सूर्यास्त के समय तक चलता है, और मेहमानों का उदारतापूर्वक और आनंदपूर्वक स्वागत

किया जाता है। — लेकिन मुझे दुकान पर वापस जाना होगा। — काहिरा में रहते हुए मुझे जो आनंद और लाभ प्राप्त हुआ, उसका अधिकांश हिस्सा उन लोगों की दुकानों से मिला जिनसे मैं परिचित था, और अजनबियों की दुकानों से भी। इस कृति के पाठक को अरब दुकानों की सामान्य संरचना का पर्याप्त ज्ञान है कि मस्तबाह पर बैठा व्यक्ति एक ही समय में मालिक और शायद अन्य आगंतुकों के साथ बातचीत का आनंद ले सकता है, और सड़क पर जो कुछ भी चल रहा है उसका स्पष्ट और निर्बाध दृश्य देख सकता है। मुझे खेद है कि मैंने इस प्रकार के स्थानों पर सुनी और देखी गई बातों की पूरी स्मृति को संरक्षित करने के लिए उचित उपाय नहीं अपनाए। यदि मैंने ऐसा किया होता, तो मैं पाठक को मिस्र की अपनी दूसरी यात्रा के दौरान, जब भी मेरा खाली समय होता था, दिन भर की घटनाओं को लिखने वाली मेरी डायरी के निम्नलिखित अंश से कहीं अधिक मनोरंजक सामग्री प्रस्तुत कर सकता था। 27 अक्टूबर (1834) - मैं आमतौर पर सोमवार और गुरुवार की सुबह बाशा के पुस्तक विक्रेताओं (सरकारी प्रेस में छपी पुस्तकों को बेचने के लिए नियुक्त दो व्यक्ति) की दुकान पर जाता हूँ, जब दुकान वाली गली और पास के खान अल-खलीली23 (प्रमुख तुर्की बाज़ार) में नीलामी बाज़ार लगते हैं, जिससे गली में बहुत भीड़ हो जाती है और एक मनोरंजक दृश्य बनता है; लेकिन मैं अक्सर दुकान पर आने वाले लोगों से अधिक आनंदित होता हूँ। आज मुझे वहाँ एक बूढ़ा आदमी मिला, एक प्रसिद्ध व्यक्ति, जिसका नाम मैं नहीं बताऊँगा: उसके पास बहुत संपत्ति थी; लेकिन उसका अधिकांश भाग जब्त कर लिया गया था; हालाँकि, उसने अपनी अधिकांश संपत्ति छिपाने का प्रबंध किया था, और तब से वह निजी तौर पर व्यापार करने के लिए मित्रों को नियुक्त करता रहा है; इसलिए उसकी आय अभी भी अच्छी है; जिसका एक तिहाई वह हमेशा गरीबों को दे देता है! — दो पुस्तक

विक्रेताओं में से बड़ा विक्रेता अपने द्वारा हाल ही में खरीदे गए एक घर के बारे में बता रहा था। उसने कहा कि उसके बगल में एक फ़िक़ी26 रहता था, जो अज़हर का सदस्य था और काफी प्रतिष्ठित था, जिसके पास उस घर का चौदह कीरत (या चौबीसवाँ भाग) था जिसमें वह (फ़िक़ी) रहता था: इस घर के अन्य दस कीरत एक दर्जी की संपत्ति थे। पुस्तक विक्रेता के घर में छत से तीन बार घुसकर गेहूँ, मक्खन आदि लूट लिए गए। और उस फिकई पर उसने इन चोरियों का आरोप लगाया, और उसने कबूल कर लिया कि उसने ऐसा किया था; उसने बचाव में कहा कि उसने केवल अपना खाना लिया था। पुस्तक विक्रेता ने उसे किले में कैद करवा दिया; और कई दिनों तक कैद रहने के बाद, उसने उसे रिहा करवाने की पेशकश की, बशर्ते वह उसे घर में उसका हिस्सा बेच दे। ऐसा ही हुआ: वह हिस्सा साढ़े छह पर्स में बिक गया।27 फिर पुस्तक विक्रेता ने दर्जी का हिस्सा भी हथियाने की इच्छा जताई, और उसे मरम्मत करने, अलग करने या बेचने का प्रस्ताव दिया; क्योंकि घर बहुत जर्जर हालत में था; लेकिन उसने इनमें से किसी भी मांग को मानने से इनकार कर दिया: इसलिए उसे कदी की अदालत में बुलाया गया, और उसे अपना हिस्सा बेचने के लिए मजबूर किया गया; जिसके लिए उसने पाँच पर्स की मांग की। यह रकम मिलने पर, घर जाते समय उसकी मुलाकात एक दोस्त से हुई, जिसे उसने अपने किए के बारे में बताया। "अरे मूर्ख!" दोस्त ने कहा, "तुम दस थैले भी मांग सकते थे, और तुम्हें मिल जाते।" ये शब्द सुनते ही दर्जी ने थैला सड़क के बीचोंबीच फेंक दिया, अपने जूते उतार दिए और कई मिनट तक अपना चेहरा पीटता रहा और औरत की तरह चिल्लाता रहा, "ओह, मेरा दुख!" फिर उसने थैला उठाया और उसी तरह रोता हुआ भाग गया, अपने दोस्त को उसके पीछे आने के लिए छोड़ दिया। 23 अल-मकरेज़ी कहते हैं कि यह खान (मुझे पाठक को पहले के एक लेख में अल-खलीली द्वारा

संदर्भित करना चाहिए था) पलायन की आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, फातिमी खलीफ़ियों के दफन स्थल पर बनाया गया था, जिनकी हड्डियाँ शहर के बाहर कूड़े के ढेर पर फेंक दी गई थीं। यह अल-खलीली द्वारा आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बनाया गया था, क्योंकि इसमें अरब और तुर्की महिला समाज के उल्लेखनीय रूप से विश्वसनीय चित्रों की एक श्रृंखला प्रस्तुत की गई है। यह एक ऐसे व्यक्ति का सामान्य नाम है जो... धर्म और कानून के निम्न वर्ग के प्रोफेसरों के बारे में यह और अन्य रोचक तथ्य। काहिरा और मिस्र के इतिहास से संबंधित इसी प्रकार के तथ्य, मुस्लिम शासन के तहत, "इंग्लिशवुमन इन इजिप्ट" नामक कृति में दिए गए हैं, जिसमें एक पर्स पाँच सौ पियास्टर की राशि है: यह उस समय ठीक पाँच पाउंड के बराबर था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.95%** है।

अध्याय नौवें के लिए टिप्पणियाँ। 65 उसे उसके जूतों के साथ। — पुस्तक विक्रेता द्वारा यह कहानी सुनाए जाने के तुरंत बाद, हमारे साथ एक फ़ारसी दरवेश आकर बैठ गया, जिससे मैं पहले भी वहाँ कई बार मिल चुका था, और एक मोटा, हंसमुख दिखने वाला, लाल चेहरे वाला आदमी, फटे-पुराने कपड़ों से लदा हुआ, जिसकी पगड़ी के नीचे घुंघराले बालों का किनारा दिख रहा था, और एक लंबी छड़ी लिए हुए था। दुकान में मेरे अलावा सभी ने उसका हाथ चूमा: उसने अपना हाथ मेरी ओर बढ़ाया, और उसे लेने के बाद मैंने भी अपना हाथ चूमा; और उसने भी ऐसा ही किया। मुझे बताया गया कि वह एक प्रसिद्ध संत था। उसने नसवार ली, मेरी पाइप से धुआँ किया, और उसके चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती थी; हालाँकि वह शायद ही कभी बोलता था: उसने लगभग केवल एक ही शब्द कहा, वह था फ़ारसी को दिए गए मेरे उत्तर की

हार्दिक प्रशंसा; जब उसने (फ़ारसी ने) मुझसे पूछा कि मैं अपने इरादे के अनुसार काहिरा से अभी तक क्यों नहीं निकला, तो मैंने कहा कि ईश्वर का सेवक निष्क्रिय होता है, न कि स्वैच्छिक; और यह भावना, यद्यपि आम थी, उपस्थित लोगों को बहुत प्रसन्न करती प्रतीत हुई: उसने इसे ज़ोर देकर दोहराया। — फिर हमारे पास एक अत्यंत सम्मानित और बुद्धिमान दिखने वाला व्यक्ति आया, जो हाल ही में बूलक में छपी शेख रिफ़ाह की फ़्रांस यात्रा की पुस्तक की एक प्रति माँग रहा था। जब उसने पूछा कि इस पुस्तक की सामान्य विषयवस्तु क्या है, तो उपस्थित एक व्यक्ति ने उत्तर दिया कि लेखक ने अलेक्जेंड्रिया से मार्सिले तक की अपनी यात्रा का वर्णन किया है; कैसे वह जहाज़ पर नशे में धुत हो गया, और उसे मस्तूल से बाँधकर कोड़े मारे गए; कैसे उसने कुफ़्र और हठ की भूमि में सूअर का मांस खाया, और यह एक अत्यंत उत्तम मांस है; कैसे वह फ़्रांसीसी लड़कियों से प्रसन्न हुआ, और कैसे वे मिस्र की महिलाओं की तुलना में आकर्षण में श्रेष्ठ हैं; और, हर योग्यता से स्वयं को नरक में एक उच्च स्थान के योग्य बनाकर, अपने वतन लौट आया। यह शेख रिफ़ाह पर एक व्यंग्यात्मक प्रश्न था, क्योंकि उन्होंने अपनी यात्रा और फ़्रांस में रहने के दौरान अल-इस्लाम के सिद्धांतों का कड़ाई से और ईमानदारी से पालन किया था। इस पुस्तक के आवेदक की दोनों आँखों में मोतियाबिंद था; मैंने उन्हें फ़्रांसीसी सर्जन क्लॉट बे से इलाज कराने की सलाह दी; लेकिन उन्होंने कहा कि उन्हें अस्पताल जाने से डर लगता है; क्योंकि उन्होंने सुना था कि वहाँ कई मरीजों को मारकर कंकाल बनाने के लिए उबाल दिया जाता है: हालाँकि, बाद में, जब मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि उनका डर निराधार है, तो उन्होंने जाने का वादा किया। — जब मैं उनसे बात कर रहा था, तभी दुकान के सामने से एक लंबी जनाज़े की शोभायात्रा गुज़रने लगी, जिसमें कई फिक़ी और कई प्रतिष्ठित उलम्क

शामिल थे। जब मैंने पूछा कि यह किसका जनाज़ा है, तो मुझे उत्तर मिला, "शेख अल-मेंज़ेलवी," सादेये दरवेशों के शेख। मैं आश्चर्यचकित था, क्योंकि मैंने उन्हें कुछ दिन पहले ही स्वस्थ देखा था। थोड़ी देर बाद मैंने उन्हें जनाज़े की शोभायात्रा में चलते हुए देखा: इसलिए मैंने फिर से पूछा; लेकिन मुझे पहले जैसा ही उत्तर मिला। "अरे," मैंने कहा, "अल्लाह का शुक्र है, शेख आपके साथ स्वस्थ चल रहे हैं।" तब मुझे बताया गया कि मृतक उनकी पत्नी थीं। जुलूस में शामिल कुछ सादीये महिलाएं ज़िक्र कर रही थीं; वे बार-बार "अल्लाह!" का जाप कर रही थीं। जब अर्थी नज़र आई, तो मैंने पीछे चल रही महिलाओं को विलाप करने के बजाय खुशी से चिल्लाते हुए सुना; क्योंकि मृतक एक प्रसिद्ध संत थीं। वे सादीये के दिवंगत शेख की बहन थीं; और ऐसा माना जाता है कि उनके पति, वर्तमान शेख, अपनी चमत्कारी शक्तियां उनसे ही प्राप्त करते हैं। कहा जाता है कि उन्होंने कल अपनी मृत्यु का ठीक समय भविष्यवाणी की थी। जब शव घर से निकला तो महिलाएं विलाप करने लगीं; और, जैसा कि आमतौर पर किसी संत के अंतिम संस्कार में होता है, शव ले जाने वालों ने कहा कि वे उसे हिला नहीं सकते: जैसे ही विलाप खुशी की चीखों में बदल गया, शव ले जाने वालों ने ऐसा दिखाया जैसे उनका काम बहुत आसान हो। टिप्पणी 5. "शेम्स-एन-नहार" का अर्थ है "दिन का सूर्य"। टिप्पणी 6. यहाँ पुल्लिंग का प्रयोग स्त्रीलिंग के लिए किया गया प्रतीत होता है। अध्याय 8वीं की टिप्पणी 36 देखें। टिप्पणी 7. सिर मुंडवाने की आधुनिक प्रथा के बारे में अध्याय 6वीं की टिप्पणी 25 देखें। टिप्पणी 8. इस श्लोक में, मदिरा के प्याले की तुलना सूर्य से, प्याला लाने वाले के दाँतों की तुलना प्लीएड्स नक्षत्र से और उसके चेहरे की तुलना पूर्णिमा के चाँद से की गई है। टिप्पणी 9. "'अफीफ'" का अर्थ है "पवित्र" और "संयमित"।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.79%** है।

(अध्याय नौवें के लिए 56 टिप्पणियाँ। टिप्पणी 10. यह आदेश दूतों को यह मानने के लिए दिया गया था कि वह सो रही थी। अध्याय 3 की टिप्पणी 55 देखें। टिप्पणी 11. यहाँ "वसीफ़" का प्रयोग एक उचित नाम के रूप में किया गया है, जिसका अर्थ है "एक युवा नौकर"। टिप्पणी 12. काहिरा की सड़कों पर इसी प्रकार का एक जुलूस देखा जाता है, जब दूल्हा मस्जिद से अपने घर लौटता है, जहाँ उसने दुल्हन से मिलने से पहले सूर्यास्त की नमाज़ अदा की होती है। वह और उसके दोस्त और अन्य परिचारक एक आयताकार घेरे के रूप में आगे बढ़ते हैं, सभी घेरे के अंदर की ओर मुंह किए होते हैं (ताकि सबसे आगे वाला पीछे की ओर चले), और प्रत्येक के हाथ में एक या अधिक मोमबत्तियाँ होती हैं, और कभी-कभी मेहंदी की एक टहनी या कोई अन्य फूल होता है, सिवाय दूल्हे और उसके दोनों ओर के दोस्तों के। ये तीनों घेरे के पिछले हिस्से में होते हैं, जिसमें आमतौर पर बीस या अधिक व्यक्ति होते हैं। जुलूस के आगे संगीतकार होते हैं, और लोग मशालें (या मोमबत्ती) लिए होते हैं।) और अन्य लोग दीपक लिए हुए हैं। टिप्पणी 13. "घरम" का अर्थ है "इच्छा," "इच्छा की तीव्रता," या "जुनून," इत्यादि। टिप्पणी 14. मैं पुराने नाम "अरबीयेह" के स्थान पर आधुनिक शब्द "बेदावीयेह" (रेगिस्तान की एक अरब महिला का प्रतीक) का प्रयोग करता हूँ। टिप्पणी 15. जिस शब्द का अनुवाद मैं "लॉरेल" के रूप में करता हूँ, अर्थात् "रेंड," वह मर्टल और अगरबत्ती के लिए भी प्रयोग किया जाता है। विलो (जिसे प्राच्य प्रकार का कहा जाता है) और रेंड को यहाँ बेदावीयेह के प्रेम के प्रतीक के रूप में समझा जाना चाहिए। टिप्पणी 1G. ताली बजाना (दाहिने हाथ की उंगलियों से बाएं हाथ की हथेली पर प्रहार करना) नौकर को बुलाने का

सामान्य तरीका है। टिप्पणी 17. मेरा मानना है कि इसका तात्पर्य यह है कि उसके मानसिक विकार ने उसे कलम का उपयोग करने में असमर्थ बना दिया था। - स्त्रीलिंग के स्थान पर पुल्लिंग का प्रयोग (जैसा कि पिछले छंदों में है) असामान्य नहीं है। टिप्पणी 18. काहिरा संस्करण में यहाँ एक चूक है, और ब्रेस्लाउ संस्करण से यह प्रतीत होता है कि पूर्व में शेन्स-एन-नाहर के पत्र की सामग्री के रूप में जो दिया गया है, उसमें आंशिक रूप से उनका पत्र और आंशिक रूप से अली का उत्तर शामिल है। मैंने कलकत्ता संस्करण से पहले दो सौ रातों के लिए इस चूक (शब्दों, "और तेरे सिर की कसम, हे मेरी स्वामिनी,") को जोड़ा है, ताकि ब्रेस्लाउ संस्करण में होने वाली त्रुटियों को सुधारने के लिए मुझे अपने विवेक का उपयोग करने की आवश्यकता न पड़े, हालाँकि बाद वाला संस्करण मेरे मानक प्रति से पूर्व की तुलना में अपने संदर्भ में कम भिन्न है। टिप्पणी 19. इसका अर्थ है, "महल की महिलाओं के साथ तुम्हारा संबंध है।" - "तेरा घर कैसा है?" यह वाक्यांश अक्सर किसी पुरुष की पत्नी या हरम के स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ करने के एक नाजुक तरीके के रूप में प्रयोग किया जाता है। टिप्पणी 20. मेरे शेख कुछ लोगों का मानना है कि यह अबू-1-हसन के प्रस्थान से संबंधित है, लेकिन आगे जो लिखा है उससे मुझे लगता है कि यह दासी पर लागू होता है। टिप्पणी 21. उसके लिए प्रार्थना करने का तात्पर्य केवल "ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे!" या "ईश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे!" जैसे शब्दों का उच्चारण करना है। टिप्पणी 22. जिस शब्द का अनुवाद मैंने "शराब" किया है, वह "कहवे" है, जो अब "कॉफ्टी" के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द है। मेरा मानना है कि यहाँ इससे कॉफी का तात्पर्य है; लेकिन संभवतः यह किसी नकल करने वाले की त्रुटि या प्रक्षेप है। टिप्पणी 23. हारून एर-रशीद के पुत्र और तीसरे उत्तराधिकारी अल-मोअतासिम को पहला खलीफा कहा जाता है जिसने

विदेशियों (इस मामले में, तुर्की दासों) की एक सैन्य टुकड़ी का गठन किया था; और उसके समय से, अरब साम्राज्य के अधिकांश भाग के मूल निवासी धीरे-धीरे तुर्की और अन्य विदेशी रक्षकों और गवर्नरों के सैन्य निरंकुशता के अधीन हो गए। मिस्र और सीरिया में भी ऐसा ही हुआ। मेमलुक सुल्तानों का वंश, जिसकी उत्पत्ति सलाहुद्दीन वंश के अंतिम शासक एस-सालिह अयूब द्वारा गठित सेना से हुई थी; और इस प्रकार सुल्तान सलीम के नेतृत्व में उस्मानी तुर्कों द्वारा उन देशों पर विजय प्राप्त करने के बाद, मोहम्मद अली के शासनकाल तक जारी रहा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.45%** है।

अध्याय नौ के लिए टिप्पणियाँ। जी7 ने हेमलॉक की सेनाओं का सफाया या उन्हें खदेड़ दिया, अपनी मिस्री सेना को संगठित किया और तुर्की सैनिकों को लगभग पूरी तरह से विस्थापित कर दिया। टिप्पणी 24. मैंने "अन्य पुरुष" के स्थान पर "अन्य पुरुष" का प्रयोग किया है। टिप्पणी 25. मैंने आधुनिक मिस्रियों पर अपने कार्य में उल्लेख किया है कि किसी महिला के लिए अपने घर में हरम रखने वाले पुरुष से निजी मुलाकात करना लगभग असंभव है; या किसी ऐसे पुरुष के घर में प्रवेश करना जो न तो विवाहित है और न ही उसकी कोई रखैल है, पड़ोसियों का ध्यान आकर्षित किए बिना और उनके तत्काल हस्तक्षेप के बिना असंभव है। यह टिप्पणी उन मामलों पर लागू होती है जिनमें दोनों पक्ष बहुत करीबी रिश्तेदार नहीं हैं। मिस्र में अपने दूसरे निवास के दौरान, मेरे नौकरों की पत्नियाँ अक्सर काहिरा में मेरे घर आती थीं, फिर भी उन्होंने कभी अंदर आने का साहस नहीं किया। लगभग नौ वर्ष की एक नौकरानी अक्सर अपने मालिक से मेरे लिए संदेश लाती थी और जब मैं अकेला होता था तो मेरे बैठक कक्ष में आ जाती थी; लेकिन इससे कोई बदनामी नहीं हुई।

एक बार मेरी प्रतिष्ठा पर सवाल उठने लगे: मुझ पर एक महिला को अपने कमरे में लाने का आरोप लगा और पड़ोसियों व अन्य लोगों को संतुष्ट करना मेरे लिए मुश्किल हो गया। मैंने कुछ महिलाओं के गहने और सिर के आभूषण खरीदे थे और अपने एक मित्र, जो चालीस से पचास वर्ष की आयु का था, के साथ मैंने उसे अपनी पगड़ी की जगह उन्हें पहनने के लिए राजी किया ताकि मैं उन्हें बेहतर ढंग से परख सकूँ; फिर मैंने उसे गली के किनारे वाली एक खिड़की के पास बैठाया और एक मूर्खतापूर्ण मज़ाक के लिए अचानक उसके बगल वाली छोटी खिड़की खोल दी और उसका सिर बाहर निकाल दिया। लेकिन मुझे इसके परिणाम की बिल्कुल भी उम्मीद नहीं थी। सामने वाली गली में अपनी दुकान पर बैठा एक सेम विक्रेता उस प्रेत को देखकर दो-तीन अन्य लोगों को इसके बारे में बताने लगा, और जल्द ही घर के सामने एक छोटी सी भीड़ जमा हो गई, जिसे सेम विक्रेता भाषण देने लगा, और आश्चर्य व्यक्त करने लगा कि मुझ जैसे एफेंडी, जो हमेशा उसे अत्यंत सम्मानजनक व्यवहार करते हुए दिखाई दिए थे, बिना हरम के अपने घर में एक महिला को लाने जैसे घृणित कृत्य के दोषी कैसे हो सकते हैं: एक अध्ययनशील व्यक्ति, जिसके पास अज़हर23 के शेख अक्सर आते थे, और जो धार्मिक त्योहारों में भाग लेने में आनंद लेता था, वह इतनी बेशर्मी से कैसे व्यवहार कर सकता है! जो कुछ हो रहा था उसे देखकर और सुनकर मैं बेचैन होने लगा; और लोग इस बात पर विचार-विमर्श कर रहे थे कि उन्हें क्या करना चाहिए, तभी मैंने अपने मित्र को, जिसने जल्दी से अपना सिर पीछे कर लिया था, 'फिर से अपना सिर दिखाने और अपनी दाढ़ी प्रदर्शित करने के लिए मजबूर किया; इस पर सेम बेचने वाला और भी हैरान हो गया, जब उसने एक सम्मानित शेख का जाना-पहचाना चेहरा देखा, जो अज़हर से भी जुड़ा हुआ था और जिसने मेरे दरवाजे पर आते समय सौ बार उसे सलाम किया था। लेकिन

इससे न तो उसके श्रोता संतुष्ट हुए और न ही वह खुद: संदेह था कि शेख मेरे अपराध में भागीदार था; और जब उसे गली में जाकर पूरी बात समझाने के लिए मजबूर किया गया, तभी शांति बहाल हुई। अंततः, सामान्य रीति-रिवाज से जानबूझकर विचलन करने के आरोप से भी मेरी छवि को कोई नुकसान नहीं हुआ; क्योंकि अरबों के उच्च समाज में भी शरारतें आम बात हैं। नोट 26. कानून एक प्रकार का डुलसिमर है, जिसका मैंने आधुनिक मिस्रियों पर अपने काम (खंड 2. eh. \'.) में उत्कीर्णन और विवरण दिया है। इसका नाम ग्रीक KO.VUV या उसी मूल से है; और इसका अर्थ भी वही है; यानी, "नियम," "कानून," "रीति-रिवाज।" इसे वादक के घुटनों पर रखा जाता है और तर्जनी उंगलियों से जुड़े दो प्लेक्ट्रम से बजाया जाता है; प्रत्येक प्लेक्ट्रम उंगली और एक अंगूठी या अंगुली के बीच रखा जाता है। प्रत्येक स्वर के लिए तीन कॉर्ड (भेड़ की आंत से बने) होते हैं, और आम तौर पर, कुल मिलाकर चौबीस ट्रेबल कॉर्ड होते हैं। नोट 27.- मृत्यु और न्याय के बीच आत्मा की स्थिति पर। ऐसा माना जाता है कि आत्मा दफनाने के बाद पहली रात बीतने तक शरीर के साथ रहती है, जब वह अच्छे आत्माओं के निवास के लिए निर्धारित स्थान पर अंतिम समय तक के लिए प्रस्थान करती है। 28 काहिरा की महान कॉलेजिएट मस्जिद। 2'J इन नोट्स के टेल-पीस का विषय एक महिला है जो कानून बजा रही है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.02%** है।

अध्याय नौवें के लिए ओएस नोट्स। दिन, या उस निर्धारित कारागार में जिसमें दुष्ट आत्माएं अपने अंतिम भाग्य की प्रतीक्षा करती हैं; लेकिन मृत्यु और न्याय के बीच की अवधि में आत्माओं की स्थिति के संबंध में, विभिन्न मत हैं, जिन्हें साले इस प्रकार बताते हैं।30 अच्छे लोगों की

आत्माओं के बारे में वे कहते हैं, "1. कुछ लोग कहते हैं कि वे कब्रों के पास रहती हैं; हालाँकि, उन्हें जहाँ चाहें वहाँ जाने की स्वतंत्रता है; वे इसकी पुष्टि मोहम्मद द्वारा उनकी कब्रों पर उन्हें सलाम करने के तरीके और उनके इस कथन से करते हैं कि मृतकों ने भी जीवितों की तरह ही उन सलामों को सुना, हालाँकि वे उत्तर नहीं दे सकते थे। शायद यहीं से मुसलमानों में रिश्तेदारों की कब्रों पर जाने की प्रथा शुरू हुई, जो बहुत आम है। 2. अन्य लोग मानते हैं कि वे आदम के साथ, सबसे निचले स्वर्ग में हैं; और वे अपने इस मत का समर्थन अपने पैगंबर के प्रमाण से भी करते हैं, जिन्होंने बताया कि अपनी कथित रात्रि यात्रा में ऊपरी स्वर्ग से लौटते समय, उन्होंने आदम के दाहिनी ओर स्वर्ग के लिए नियत आत्माओं और बाईं ओर नरक के लिए निंदा की गई आत्माओं को देखा। 3. अन्य लोग मानते हैं कि विश्वासियों की आत्माएँ ज़मज़म कुएँ में रहती हैं।" और काफिरों की आत्माएं हद्रामद प्रांत के एक कुएँ में हैं, जिसे बरहूत कहा जाता है; 31 परन्तु इस मत को विधर्मी करार दिया गया है। [इस विषय पर, अगला अनुच्छेद देखें।] चौथा। कुछ लोग कहते हैं कि वे सात दिनों तक कब्रों के पास रहते हैं; परन्तु उसके बाद वे कहाँ जाते हैं, यह अनिश्चित है। पाँचवाँ। कुछ लोग कहते हैं कि वे सब तुरही में हैं, जिसकी ध्वनि मृतकों को जीवित करती है। और आठवाँ। कुछ लोग कहते हैं कि अच्छे लोगों की आत्माएं ईश्वर के सिंहासन के नीचे सफेद पक्षियों के रूप में निवास करती हैं। दुष्टों की आत्माओं की स्थिति के बारे में, पहले से उल्लिखित मतों के अलावा, अधिक रूढ़िवादी मानते हैं कि उन्हें स्वर्गदूतों द्वारा स्वर्ग में अर्पित किया जाता है, जहाँ से उन्हें दुर्गंधयुक्त और गंदा बताकर ठुकरा दिया जाता है, और उन्हें पृथ्वी पर अर्पित किया जाता है, और वहाँ भी स्थान न मिलने पर, उन्हें सातवीं पृथ्वी पर ले जाया जाता है, और एक कालकोठरी में फेंक दिया जाता है, जिसे वे सिज्जीन कहते हैं,

एक हरी चट्टान के नीचे, या एक परंपरा के अनुसार। मोहम्मद, शैतान के चंगुल में, वहाँ तब तक यातनाएँ झेलते रहेंगे जब तक कि उन्हें उनके शरीरों में फिर से मिलाने के लिए नहीं बुलाया जाता।— लेकिन ऐसा माना जाता है कि पैगंबरों की आत्माओं को सीधे स्वर्ग में प्रवेश मिलता है, और शहीदों की आत्माओं के बारे में कहा जाता है कि वे हरे पक्षियों के पेट में विश्राम करती हैं जो स्वर्ग के फल खाते हैं और उसकी नदियों का पानी पीते हैं। ऊपर उल्लिखित मतों में से, विश्वासियों की आत्माओं के संबंध में, मेरा मानना है कि पहला मत सबसे अधिक प्रचलित है। आमतौर पर कहा जाता है कि ये आत्माएँ प्रत्येक शुक्रवार को अपनी-अपनी कब्रों पर जाती हैं; और कुछ के अनुसार, वे उस दिन दोपहर की नमाज़ के बाद, और शनिवार और सोमवार को; या गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार को अपने शरीरों में लौट आती हैं; और सूर्योदय तक रहती हैं।32— मेरा यह भी मानना है, क्योंकि मैंने इसके बारे में बार-बार उल्लेख सुना है, कि बरहूत के कुएँ के बारे में मत आज भी आम तौर पर प्रचलित है। अल-कज़वीनी इसके बारे में कहते हैं, "यह हद्रामदत के पास एक कुआँ है; और पैगंबर (अल्लाह उन पर रहमत और सलाम भेजे!) ने कहा, 'इसमें काफिरों और पाखंडियों की आत्माएँ रहती हैं।' यह एक आदि कुआँ है, [अर्थात प्राचीन, मानो प्राचीन आद जनजाति द्वारा बनाया गया हो,] एक सूखे रेगिस्तान और एक सुनसान घाटी में; और अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो!) से यह वर्णित है कि उन्होंने कहा, 'अल्लाह (जिसका नाम महान हो!) के लिए सबसे घृणित क्षेत्र बरहूत की घाटी है, जिसमें एक कुआँ है जिसका पानी काला और दुर्गंधयुक्त है, जहाँ काफिरों की आत्माएँ निवास करती हैं।' अल-अस्माई ने हद्रामदत के एक व्यक्ति के बारे में बताया है कि उसने कहा, "हमें बरहूत के पास एक अत्यंत घृणित और दुर्गंधयुक्त गंध मिली, और फिर हमें काफिरों के सरदारों में से एक

महान व्यक्ति की मृत्यु की खबर मिली।" यह भी बताया गया है कि बरहूत घाटी में एक रात बिताने वाले एक व्यक्ति ने कहा, "मैंने पूरी रात [आश्चर्यचकित] 'ओ रूमेह! ओ ईओमेह!' की आवाजें सुनीं - और मैंने इस बारे में एक विद्वान व्यक्ति से बात की, और उसने मुझे बताया कि यह उस देवदूत का नाम है जिसे काफिरों की आत्माओं की रक्षा करने का काम सौंपा गया है।" (80 प्रारंभिक प्रवचन, खंड 4. धर्मी लोगों की कब्रों के आगंतुकों के निदेशक) 31 इसी प्रकार कामूस में, और मेरी पांडुलिपि में भी। 'अब्द-एर-रहमान अल-खज़रेजी अल-अंसारी' द्वारा: 'अल-काज़वीनी के अजायब अल-मखलूकत; लेकिन एमएस द्वारा. मेरे कब्जे में. बिक्री लिखा "बोरहुत।" ^ 'अजतफिब अल-मखलुकत। 82 मुर्शिद एज़-ज़ूविलर इला कुबूर सीएल-अबरार (द

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.50%** है।

अध्याय नौ की ओर! टिप्पणी 28. किसी की मृत्यु पर दासों को मुक्त करना एक प्रचलित प्रथा है। कभी-कभी यह मृतक की इच्छा के अनुसार किया जाता है, तो कभी-कभी वारिसों की स्वतंत्र इच्छा से; लेकिन बाद के मामलों में, इस कार्य का पुण्य मृतक की आत्मा को हस्तांतरित हो जाता है; इसका उद्देश्य भविष्य में उसके सुख को बढ़ाना होता है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.86%** है।

अध्याय X. एक सौ सत्तरवीं रात से शुरू होकर दो सौ उनतालीसवीं रात के कुछ भाग तक। राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान और राजकुमारी बुदूर की कहानी।1 प्राचीन काल में, शाह-ज़ेमान नाम का एक राजा था,2 जिसके पास असंख्य सैनिक, सेवक और रक्षक थे। वह खालिदन द्वीप समूह में रहता था,3 जो फारसियों के देश से सटा हुआ था;4 और उसने राजाओं की चार पुत्रियों से विवाह किया था, जिनके अलावा उसकी दासियों में साठ रखैलें थीं। हालाँकि, उसकी उम्र बढ़ गई थी, उसकी हड्डियाँ कमजोर हो गई थीं, और उसे कोई पुत्र नहीं हुआ था: इसलिए वह मन ही मन चिंतन करता, शोक करता और बेचैन हो जाता, और अपने एक वज़ीर से इसकी शिकायत करते हुए कहता, मुझे डर है कि जब मैं मर जाऊँगा, तो मेरा राज्य छिन जाएगा; क्योंकि मेरे बाद इसका उत्तराधिकारी बनने के लिए मेरा कोई पुत्र नहीं है। लेकिन वज़ीर ने उत्तर दिया, शायद ईश्वर अभी

भी कुछ लाएगा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.96%** है।

राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी, इत्यादि। 71 किसी घटना को घटित करने के लिए: इसलिए, हे राजा, ईश्वर पर भरोसा रखो, और स्नान करो, और दो रकअत की नमाज़ पढ़ो।5 मेरी सलाह यह भी है कि तुम एक भोज दो, और उसमें गरीबों और ज़रूरतमंदों को आमंत्रित करो, और उन्हें भोजन करने दो और ईश्वर (जिसका नाम महान है!) से प्रार्थना करने दो कि वह तुम्हें पुत्र का आशीर्वाद दे: शायद उनमें से कोई पवित्र आत्मा हो, जिसकी प्रार्थना, उचित होने के कारण, स्वीकार की जाएगी।6 इसके बाद तुम्हारी इच्छा संभवतः पूरी हो जाएगी। — राजा ने उसकी सलाह का पालन किया, और उसकी पत्नी गर्भवती हुई, और जब उसके माह पूरे हुए तो उसने एक नर बच्चे को जन्म दिया जो अंधेरी रात में निर्मल पूर्णिमा के

समान था: इसलिए उसने उसका नाम कमर-एज़-ज़ेमान रखा।7 उसने उसके जन्म पर अत्यंत हर्षोल्लास मनाया, और उन्होंने सात दिनों तक शहर को सजाया; ढोल बजाए गए, और दूतों ने शुभ समाचार सुनाया; दाइयाँ और दाइयाँ उसे लेकर आईं, और पंद्रह वर्ष की आयु तक उसका पालन-पोषण बड़े ही वैभव और स्नेह से हुआ। वह अत्यंत सुंदर, सुडौल और कद-काठी में परिपूर्ण था, और उसके पिता उससे इतना प्रेम करते थे कि वे दिन-रात उससे दूर नहीं रह सकते थे; और बादशाह शाहज़ेमान ने अपने एक वज़ीर से अपने पुत्र के प्रति अपने अत्यधिक प्रेम की शिकायत करते हुए कहा, "हे वज़ीर, मुझे अपने पुत्र कमर-एज़-ज़ेमान के लिए विपत्तियों और दुर्भाग्य का भय है, और मैं अपने जीवनकाल में ही उसका विवाह करना चाहता हूँ।" वज़ीर ने उत्तर दिया, "हे बादशाह, जान लीजिए कि विवाह प्रशंसनीय है, और अपने जीवनकाल में अपने पुत्र का विवाह करने में कोई हानि नहीं है।" इस पर बादशाह शाहज़ेमान ने कहा, "मेरे पुत्र कमर-एज़-ज़ेमान को यहाँ लाओ।" और वह आया, और अपने पिता के सामने लज्जापूर्वक अपना सिर झुका लिया। तब उसके पिता ने उससे कहा, “हे कमर-एज़-ज़ेमान, जान लो कि मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ और जीवन भर तुम्हारे साथ सुख भोगना चाहता हूँ।” परन्तु उसने उत्तर दिया, “हे मेरे पिता, जान लो कि मुझे विवाह की कोई आवश्यकता नहीं है, और मेरा मन स्त्रियों की ओर नहीं झुकता; क्योंकि मैंने ऐसी पुस्तकें पढ़ी हैं जिनमें उनके छल-कपट का वर्णन है, और उनकी धूर्तता से चमत्कार हुए हैं।” कवि ने कहा है, “यदि तुम स्त्रियों के विषय में मेरी राय पूछो, तो मैं तुम्हें बताऊँगा कि मैं एक चिकित्सक हूँ जो उनके स्वभाव से भलीभांति परिचित हूँ: जब किसी पुरुष के बाल सफेद हो जाते हैं, या उसका धन कम हो जाता है, तो उसे स्त्रियों का स्नेह नहीं मिलता।” और दूसरे ने कहा है, “स्त्रियों का विरोध करो; क्योंकि ऐसा करके तुम ईश्वर

की आज्ञा का उचित पालन करोगे; क्योंकि जो युवक उन्हें अपने वश में रखता है, वह फलता-फूलता नहीं है: वे उसे अपने गुणों में पूर्णता प्राप्त करने से रोकेंगी, चाहे वह विज्ञान के अध्ययन में हज़ार वर्ष व्यतीत कर ले।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.61%** है।

72 राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी, इत्यादि — इन छंदों का पाठ करने के बाद उन्होंने कहा, हे मेरे पिता, विवाह एक ऐसी वस्तु है जिसे मैं कभी नहीं करूँगा, चाहे मुझे विनाश का प्याला ही क्यों न पीना पड़े। और जब राजा शाह-ज़ेमान ने अपने पुत्र के ये शब्द सुने, तो उनके चेहरे पर अंधकार छा गया, और वे अपने पुत्र कमर-एज़-ज़ेमान द्वारा दिखाई गई आज्ञाकारिता की कमी से अत्यंत दुखी हुए: फिर भी, अपने प्रेम के कारण, उन्होंने उसकी कही हुई बात को दोहराया नहीं, न ही उसे क्रोधित किया: इसके विपरीत, उन्होंने उसके प्रति स्नेह और सम्मान दिखाया, और उसके साथ हर प्रकार का स्नेहपूर्ण व्यवहार किया जिससे हृदय में प्रेम जागृत हो सके। इस बीच, कमर-एज़-ज़ेमान दिन-प्रतिदिन सौंदर्य और सुंदरता में, और शालीनता और कोमलता में बढ़ते गए। शाहज़ेमान ने पूरे एक साल तक धैर्यपूर्वक उसका साथ दिया, जब तक कि वह वाक्पटुता और शिष्टाचार में परिपूर्ण नहीं हो गया: मनुष्य उसकी सुंदरता से मोहित हो गए, और हर हवा उसकी सुंदरता की प्रशंसा करती हुई बहने लगी: वह प्रेमियों के लिए एक आकर्षण और अभिलाषाओं के लिए स्वर्ग बन गया; उसकी वाणी मधुर थी; उसका चेहरा पूर्णिमा के चंद्रमा को भी क्षीण कर देता था; वह कद और रूप की सुंदरता से परिपूर्ण था, और उसके व्यवहार में पूर्वी विलो की टहनी या भारतीय बेंत जैसी कोमलता थी, और उसका गाल एनीमोन फूल की तरह सुंदर था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.11%** है।

और बुदूर प्रक्रिया। -73 आकृति विलो शाखा जैसी थी। वह इतना सुंदर था कि कवि ने उसका वर्णन इस प्रकार किया है: — वह प्रकट हुआ, और उन्होंने कहा, अल्लाह धन्य हो! उसकी महिमा हो जिसने उसे गढ़ा और परिपूर्ण किया! वह सर्वत्र सुंदरों का राजा है; क्योंकि वे सब उसके अधीन हो गए हैं। उसके मुँह की नमी पिघले हुए शहद के समान है; और उसके

दाँत आपस में जुड़े मोतियों के समान हैं। सभी आकर्षण केवल उसी में समाहित हैं, और समस्त मानवजाति उसकी सुंदरता से चकित है। सुंदरता उसके गालों पर अंकित है, मैं स्वीकार करता हूँ कि उसके सिवा कोई सुंदर नहीं है। अब जब उसने एक और वर्ष पूरा कर लिया, तो उसके पिता ने उसे बुलाया और उससे कहा, हे मेरे पुत्र, क्या तू मेरी बात नहीं सुनेगा? इस पर कमर-एज़-ज़ेमान भय और शर्म से अपने पिता के सामने ज़मीन पर गिर पड़ा और उनसे बोला, "हे मेरे पिता, मैं आपकी आज्ञा का पालन करने से कैसे इनकार कर सकता हूँ, जबकि ईश्वर ने मुझे आपका आज्ञापालन करने और आपका विरोध न करने का आदेश दिया है?" तब राजा शाह-ज़ेमान ने आगे कहा, "हे मेरे पुत्र, जान लो कि मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ और जीवन भर तुम्हारे साथ सुख भोगना चाहता हूँ, और अपनी मृत्यु से पहले तुम्हें अपने राज्य का सुल्तान बनाना चाहता हूँ।" लेकिन जब कमर-एज़-ज़ेमान ने अपने पिता के ये शब्द सुने, तो वह कुछ देर के लिए सिर झुकाए बैठा; फिर उसने सिर उठाया और उत्तर दिया, "हे मेरे पिता, यह ऐसा काम है जो मैं कभी नहीं करूँगा, चाहे मुझे विनाश का प्याला ही क्यों न पीना पड़े। मैं जानता हूँ कि ईश्वर ने मुझ पर आपका आज्ञापालन करने का दायित्व डाला है; लेकिन ईश्वर के अधिकार के कारण मैं आपसे विनती करता हूँ कि आप मुझे विवाह करने के लिए विवश न करें: और यह न सोचें कि मैं जीवन भर विवाह करूँगा।" मैंने पिछली और अगली पीढ़ियों की किताबें पढ़ी हैं और उन सभी विपत्तियों और दुर्भाग्य को जाना है जो स्त्रियों द्वारा उत्पन्न अशांति, उनके अंतहीन छल और उनसे उत्पन्न आपदाओं के कारण उन पर आई हैं। कवि का यह कथन कितना उत्कृष्ट है: — जिसे निर्लज्ज स्त्रियों ने फँसा लिया है, उसे कभी मुक्ति नहीं मिलेगी, चाहे वह सीसे से जड़े हज़ार किले ही क्यों न बना ले; क्योंकि उनका निर्माण व्यर्थ होगा; किले लाभ नहीं पहुँचाएँगे।

निश्चय ही स्त्रियाँ निकट और दूर, सभी के साथ विश्वासघात करती हैं: मेहंदी से रंगी उँगलियों से; चोटी में गुंथे बालों से; काजल से रंगी पलकों से; वे व्यक्ति को दुःखों का घूंट पिलाती हैं।8 —और जब बादशाह शाहज़ेमान ने अपने पुत्र कमर-एज़-ज़ेमान से ये शब्द सुने और उसके द्वारा उद्धृत छंदों को समझा, तो उन्होंने अपने अत्यधिक स्नेह के कारण उसे कोई उत्तर नहीं दिया; बल्कि उसके साथ और अधिक कृपा और सम्मान का व्यवहार किया। II. L

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.48%** है।

74 राजकुमार कमारेज़-ज़ेमान की कहानी, इत्यादि। सभा तुरंत भंग हो गई; और उसके भंग होने के बाद, बादशाह शाहज़ेमान ने अपने वज़ीर को बुलाया और निजी तौर पर उससे कहा, "हे वज़ीर, मुझे बताओ कि मैं अपने पुत्र कमारेज़-ज़ेमान के मामले में क्या करूँ; क्योंकि मैंने उससे सुल्तान बनाने की तैयारी के रूप में विवाह करने के विषय पर तुमसे परामर्श किया था, और तुमने मुझे ऐसा करने और उससे विवाह के विषय पर चर्चा करने की सलाह दी थी: इसलिए मैंने उससे यह प्रस्ताव रखा, और उसने मेरी अवज्ञा की: इसलिए, अब मुझे वह बताओ जो तुम्हें सर्वोत्तम लगता है।" वज़ीर ने उत्तर दिया, "हे बादशाह, मैं तुम्हें यही सलाह देता हूँ कि तुम उसके साथ एक और वर्ष के लिए धैर्य रखो; और जब तुम उसके बाद उससे विवाह के विषय पर बात करना चाहो, तो उससे अकेले में बात मत करना, बल्कि न्याय के दिन उससे बात करना, जब सभी अमीर और वज़ीर उपस्थित हों और सभी सैनिक तुम्हारे सामने खड़े हों। फिर, जब ये सब एकत्रित हो जाएँ, तो अपने पुत्र कमर-एज़-ज़ेमान को बुलाओ और उसे अपने समक्ष बुलाओ; और जब वह आ जाए, तो सभी अमीर और वज़ीरों, दरबारी और सेनापतियों, साम्राज्य के अन्य सरदारों,

सैनिकों और प्रखर योद्धाओं की उपस्थिति में उससे विवाह के विषय पर बात करना; क्योंकि वह उनके सामने लज्जित होगा और उनकी उपस्थिति में तुम्हारा विरोध नहीं कर पाएगा। — और जब बादशाह शाह-ज़ेमान ने अपने वज़ीर के ये शब्द सुने, तो वह अत्यंत प्रसन्न हुआ; उसने वज़ीर की सलाह को स्वीकार किया और उसे एक भव्य सम्मान वस्त्र प्रदान किया। 9 बादशाह शाह-ज़ेमान ने अपने पुत्र कमर-एज़-ज़ेमान के साथ एक और वर्ष धैर्य रखा; और जैसे-जैसे दिन बीतते गए, उसकी सुंदरता और आकर्षण बढ़ता गया, और वह अपने लज्जा और परिपूर्णता में निखरता गया, यहाँ तक कि वह लगभग बीस वर्ष का हो गया। ईश्वर ने उसे सौंदर्य के वस्त्र पहनाए और पूर्णता का मुकुट पहनाया: उसकी आँखें हारूत से भी अधिक मोहक थीं;10 और उसकी दृष्टि एत-ताघूत से भी अधिक मोहक थी; उसके गाल लालिमा से चमक रहे थे; और उसकी पलकें तेज, भेदी तलवार को भी चुनौती दे रही थीं;12 उसके माथे की सफेदी चमकते चाँद के समान थी; और उसके बालों का कालापन अंधेरी रात के समान था। — राजा शाहज़ेमान ने वज़ीर की बातों पर ध्यान दिया और एक और वर्ष तक उस उत्सव के दिन का इंतज़ार किया, जब राजा के दरबार में सभी अमीर और वज़ीर, दरबारी और साम्राज्य के अन्य सरदार, सैनिक और जोशीले योद्धा उपस्थित होते थे। फिर उसने अपने पुत्र कर्णर-एज़-ज़ेमान को बुलवाया, जो आकर उसके सामने तीन बार ज़मीन चूमकर खड़ा हो गया और अपने पिता के सामने पीठ पीछे हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।13 उसके पिता ने उससे कहा, “हे मेरे पुत्र, जान लो कि मैंने तुझे इस अवसर पर परमेश्वर के समक्ष बुलाया है।”

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.61%** है।

मैं अपने समक्ष समस्त सैनिकों के साथ उपस्थित सभा में तुम्हें एक आदेश

देने आया हूँ, और मेरी बात का विरोध मत करना। आदेश यह है कि तुम विवाह करो; क्योंकि मैं तुम्हारा विवाह किसी राजा की पुत्री से कराना चाहता हूँ, और अपनी मृत्यु से पहले तुम्हारे साथ सुख भोगना चाहता हूँ। — परन्तु जब कामर-एज़-ज़ेनमन ने अपने पिता के ये शब्द सुने, तो वह कुछ देर के लिए अपना सिर ज़मीन की ओर झुकाए बैठा; और फिर जब उसने अपना सिर अपने पिता की ओर उठाया, तो जवानी के उन्माद और किशोरावस्था की नासमझी ने उसे वश में कर लिया, और उसने उत्तर दिया, "जहाँ तक मेरी बात है, मैं कभी विवाह नहीं करूँगा, चाहे मुझे विनाश के प्याले ही क्यों न पीने पड़ें; और जहाँ तक तुम्हारी बात है, तुम तो बहुत बूढ़े हो चुके हो और तुम्हारी समझ बहुत कम है। क्या तुमने आज से पहले, दो बार विवाह के विषय में मुझसे नहीं पूछा था, और मैंने प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था?" 14 —तब कमार-ज़ेमान ने क्रोध में आकर अपने पिता के सामने अपने हाथ पीछे से खोल दिए और अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ा लीं। उसके पिता लज्जित और शर्मिंदा हुए, क्योंकि ऐसा हुआ था।

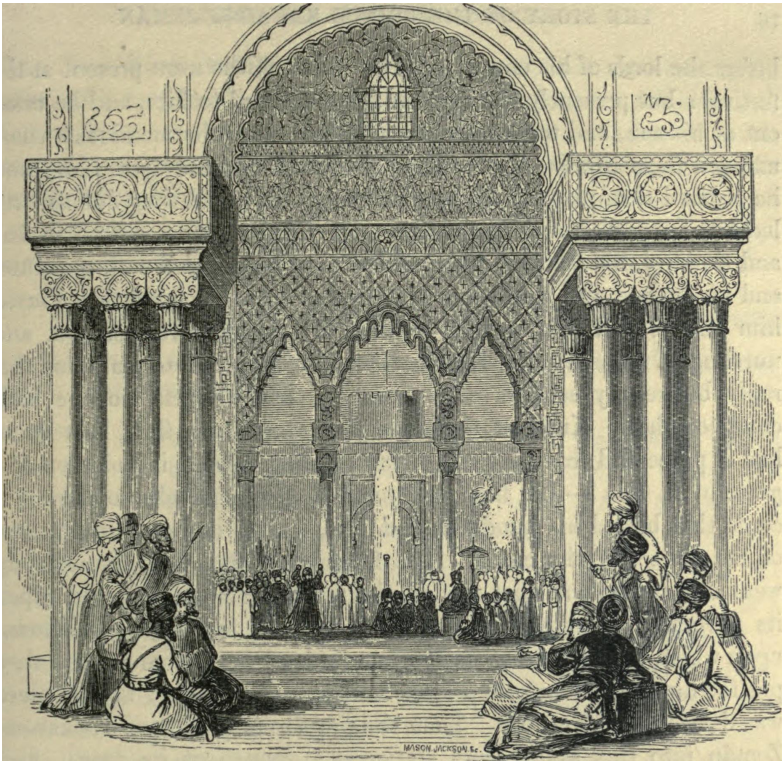

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.43%** है।

7जी राजकुमार कामर-कज़-ज़ेमान की कहानी, अपने साम्राज्य के सरदारों और उत्सव में उपस्थित सैनिकों के सामने: लेकिन जल्द ही उनमें शाही ऊर्जा लौट आई, और उन्होंने अपने बेटे पर चिल्लाकर उसे डराया; और मेमलुक को बुलाकर उन्हें उसे पकड़ने का आदेश दिया। इसलिए उन्होंने उसे पकड़ लिया; और उन्होंने उन्हें उसके हाथ पीछे बांधने का आदेश दिया, और उन्होंने ऐसा ही किया, और उसे उसके पिता के सामने ले आए। वह भय और कायरता से अपना सिर झुकाए हुए था, उसका चेहरा और माथा आँसुओं से भीगा हुआ था, और उसकी शर्म और घबराहट अत्यधिक थी, जबकि उसके पिता उसे गालियाँ देते और उसका अपमान

करते हुए उससे कहते, हे नीच कुल के, अपवित्रता के बच्चे, तुझ पर धिक्कार! 15 तू मेरे सैनिकों और सेनाओं के सामने मुझे यह उत्तर देने का साहस कैसे कर सकता है? लेकिन अब तक किसी ने तुझे दंडित नहीं किया है। क्या तुम नहीं जानते कि जो तुमने किया है, यदि वह किसी आम आदमी ने किया होता, तो उसके लिए शर्मनाक होता? — फिर उसने मेमलुकों को आदेश दिया कि उसके हाथों को पीछे बांधने वाली रस्सियों को खोल दें और उसे किले के एक बुर्ज में कैद कर दें। इसलिए, भूखों ने तुरंत बुर्ज में बने बैठक कक्ष में जाकर उसे साफ किया और फर्श को पोंछा; और उन्होंने कामर-एज़-ज़ेमान के लिए एक पलंग रखा, जिस पर उन्होंने गद्दा और चमड़े का आवरण बिछाया; और उसके लिए एक तकिया, एक बड़ी लालटेन और एक मोमबत्ती रखी; क्योंकि दिन के समय वह जगह अंधेरी थी। फिर मेमलुक कामर-एज़-ज़ेमान को उस बैठक कक्ष में ले गए और उसके दरवाजे पर एक हिजड़े को तैनात कर दिया। और जब उन्होंने यह कर लिया, तो कामर-एज़-ज़ेमान टूटे हुए मन और शोकग्रस्त हृदय से पलंग पर चढ़ गया। उसने पहले ही स्वयं को दोषी ठहराया था और अपने पिता के प्रति अपने दुर्व्यवहार के लिए पश्चाताप किया था, लेकिन जब पश्चाताप से उसे कोई लाभ नहीं हुआ, तो वह चिल्लाया, "विवाह, कन्याओं और कपटी स्त्रियों पर लानत हो! काश मैंने अपने पिता की आज्ञा मानकर विवाह कर लिया होता; क्योंकि यदि मैंने ऐसा किया होता, तो इस कारागार में रहने से बेहतर होता!" - इस प्रकार कमारेज़-ज़ेमान का हाल हुआ। अब उसके पिता की बात करें तो, वे दिन के शेष समय तक सूर्यास्त तक अपने सिंहासन पर विराजमान रहे, फिर वे वज़ीर के साथ एकांतवास में गए और उनसे कहा, "हे वज़ीर, जान लो कि तुमने मुझे जो सलाह दी, उसी के कारण मेरे और मेरे पुत्र के बीच यह सब कुछ हुआ है; अब तुम मुझे क्या करने की सलाह देते हो?" - वज़ीर ने

उत्तर दिया, "हे महाराज, अपने पुत्र को पंद्रह दिनों के लिए कारागार में छोड़ दो; फिर उसे अपने समक्ष बुलाओ और उसे विवाह करने का आदेश दो; क्योंकि वह फिर कभी तुम्हारा विरोध नहीं करेगा।" राजा ने वज़ीर की यह सलाह मान ली और उस रात अपने बेटे के कारण व्याकुल मन से सो गया; क्योंकि वह उससे बहुत प्यार करता था, और उसका कोई दूसरा बेटा भी नहीं था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.42%** है।

और राजकुमारी बुदूर। 77 उसे। बादशाह शाहज़ेमान हर रात तब तक नहीं सो पाते थे जब तक कि वे कमर-एज़-ज़ेमान की गर्दन के नीचे अपना हाथ नहीं रख देते, और तब उन्हें नींद आती थी। इसलिए उन्होंने वह रात कमर-एज़-ज़ेमान के कारण व्याकुल हृदय से गुजारी, और करवटें बदलते रहे मानो वे नरक की जलती हुई चिंगारियों पर लेटे हों: बेचैनी उन पर हावी हो गई, और उन्हें पूरी रात नींद नहीं आई: उनकी आँखों से आँसू बहते रहे, और उन्होंने कवि के शब्दों को दोहराया: - हे रात कितनी उबाऊ है, जब तक निंदा करने वाले सोते रहते हैं। इतना ही काफी है कि तुम्हारा हृदय विरह से भयभीत है। मैंने पुकारा, जब मेरी रात चिंता से लंबी हो गई, हे सुबह की रोशनी, क्या तुम नहीं लौटोगी? लेकिन कमर-एज़-ज़ेमान के लिए, जब रात हुई, तो हिजड़े ने उनके सामने लालटेन रखी, और मोमबत्ती जलाई, जिसे उसने मोमबत्तीदान में रखा था; और इसके बाद वह उनके लिए कुछ भोजन लाया। इसलिए उसने थोड़ा खाया और अपने पिता बादशाह शाहज़ेमान के प्रति अपने बुरे बर्ताव के लिए खुद से पश्चाताप करते हुए कहा, “क्या तुम नहीं जानते कि आदम का पुत्र अपनी ज़बान का गुलाम है, और मनुष्य की ज़बान ही उसे मुसीबतों में डालती है?” वह इसी तरह खुद से पश्चाताप करता रहा और खुद को दोषी ठहराता

रहा, यहाँ तक कि उसकी आँखों से आँसू बहने लगे; उसका हृदय पीड़ा से भरा हुआ था और उसे अपने पिता के विरुद्ध कही गई बातों पर बहुत पछतावा हो रहा था। भोजन समाप्त करने के बाद उसने हाथ धोने के लिए पानी माँगा और भोजन से चिपके हुए हाथों को साफ किया। फिर उसने नमाज़ से पहले वज़ू किया और सूर्यास्त और सूर्योदय की नमाज़ पढ़ी। इसके बाद वह पलंग पर बैठकर कुरान का पाठ करने लगा।17 उसने "गाय", "इमरान का परिवार", "या-सीन", "दयालु", "धन्य है वह जिसके हाथ में राज्य है" और "दो निवारक" अध्यायों का पाठ किया और प्रार्थना करते हुए और ईश्वर की शरण मांगते हुए पाठ समाप्त किया।18 ऐसा करने के बाद, वह दो परतों वाले और शुतुरमुर्ग के पंखों से भरे हुए मादीनी साटन से ढके गद्दे पर पलंग पर लेट गया;19 और जब उसे नींद आने लगी, तो उसने अपने बाहरी वस्त्र उतार दिए और एक कोमल मोमयुक्त कपड़े की कमीज पहनकर सो गया, उसके सिर पर मरू के कपड़े का एक नीला रूमाल था,20 और वह चौदहवीं रात के चंद्रमा की तरह दिखाई दे रहा था। फिर उसने अपने आप को रेशम की चादर से ढक लिया और अपने पैरों के पास जलती हुई लालटेन और अपने सिर के पास जलती हुई मोमबत्ती रखकर सो गया। और वह रात के पहले तिहाई हिस्से तक सोता रहा, उसे इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि उसके साथ क्या होने वाला है और सर्वज्ञ ईश्वर ने उसके लिए क्या तय किया है। अब वह बैठक कक्ष और मीनार प्राचीन थे और वीरान पड़े थे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.41%** है।

78 राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी कई वर्षों तक; और मीनार 21 में एक रोमन 22 कुआँ था, जिसमें शापित इब्लीस की संतान की एक जिन्निये रहती थी। उस जिन्निये का नाम मेमूनेह ^ था, जो जतिन के

प्रसिद्ध राजाओं में से एक, एड-दिरनीरयात की पुत्री थी।-4 और जब कमर-एज़-ज़ेमान रात के पहले तिहाई भाग तक सोता रहा, तो यह इफ्रीतेह रोमन कुएँ से स्वर्ग की ओर चुपके से सुनने के उद्देश्य से ऊपर चढ़ी; -5 और कुएँ के ऊपरी भाग पर पहुँचकर उसने मीनार में एक प्रकाश चमकता हुआ देखा, जो सामान्य से अलग था। वह उस स्थान पर कई वर्षों से रह रही थी, और उसने मन ही मन कहा, मैंने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं देखा। और वह इस बात पर अत्यंत आश्चर्यचकित हुई, और अनुमान लगाया कि इसके पीछे कोई विचित्र कारण रहा होगा। फिर वह प्रकाश की दिशा में आगे बढ़ी और पाया कि वह बैठक कक्ष से आ रहा था; इसलिए वह उसमें प्रवेश कर गई और उसने देखा कि हिजड़ा उसके दरवाजे पर सो रहा था; और जब वह बैठक कक्ष में दाखिल हुई तो उसने वहाँ एक पलंग रखा हुआ पाया, जिस पर एक आदमी सो रहा था, और उसके सिर के पास एक जलती हुई मोमबत्ती और उसके पैरों के पास एक जलता हुआ लालटेन था;

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.23%** है।

और राजकुमारी बुदूर। 79 और इफ़्रीतेह इस प्रकाश को देखकर चकित रह गई। वह धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ी और अपने पंख फैलाकर पलंग के ऊपर खड़ी हो गई, और उसके चेहरे से चादर हटाकर उसे देखने लगी। वह एक घंटे तक उसकी सुंदरता और आकर्षण को देखकर विस्मित रही, और उसने पाया कि उसके चेहरे का प्रकाश मोमबत्ती के प्रकाश से भी कहीं अधिक था: वह वैभव से जगमगा रहा था: उसकी आँखें हिरण की तरह चंचल और अत्यंत काली थीं; उसके गाल चमकीले लाल थे और उसकी

पलकें झुकी हुई थीं; उसकी भौहें धनुषाकार थीं; और उसकी सुगंध सुगंधित कस्तूरी की तरह फैल रही थी। उसे देखकर, एड-दिमिरियत की पुत्री मेमूनेह ने ईश्वर की पूर्णता की प्रशंसा की और कहा, धन्य हो अल्लाह, सर्वश्रेष्ठ सृष्टिकर्ता! - क्योंकि यह इफ़्रीतेह विश्वासी जिन्नों में से था। इसलिए वह कुछ देर तक कमर-एज़-ज़ेमान के चेहरे को निहारती रही और कहती रही, अल्लाह के सिवा कोई देवता नहीं! और ईर्ष्या रहित मन से, यह कामना करती रही कि काश वह भी सुंदरता और आकर्षण में उसके समान होती। उसने मन ही मन कहा, अल्लाह की कसम, मैं उसे न तो चोट पहुँचाऊँगी और न ही किसी को उसे चोट पहुँचाने दूँगी, बल्कि हर बुराई से उसे बचाऊँगी; क्योंकि यह सुंदर चेहरा इसके सिवा किसी और चीज़ का पात्र नहीं है कि लोग इसे निहारें और अल्लाह की पूर्णता की प्रशंसा करें: लेकिन उसका परिवार उसे इस खंडहर में कैसे उपेक्षित छोड़ सकता है! अगर हमारे मारिदों में से कोई भी अब उसके पास आ गया तो वे उसे नष्ट कर देंगे! तब इफ़रीते उसके ऊपर झुकी और उसकी आँखों के बीच चूमा; इसके बाद उसने चादर उसके चेहरे पर डाल दी और उसे ढक दिया। ऐसा करके उसने अपने पंख फैलाए और आकाश की ओर उड़ गई। वह बैठक के परिसर से उठी और आकाश में ऊपर की ओर उड़ती रही जब तक कि वह सबसे निचले आकाश के निकट नहीं पहुँच गई, तभी उसे हवा में उड़ते पंखों की फड़फड़ाहट सुनाई दी। अतः वह उनकी ध्वनि की दिशा में आगे बढ़ी, और जब वह उस प्राणी के पास पहुँची जिससे वे ध्वनियाँ आ रही थीं, तो उसने पाया कि वह दानाश नामक एक इफ़्रीत था, जिस पर वह बाज़ की तरह उस पर झपटी। जब दानाश ने उसे देखा और जाना कि वह जिन्नों के राजा की पुत्री मेमूनेह है, तो वह उससे भयभीत हो गया; उसकी पसली की मांसपेशियाँ काँप उठीं, और उसने उससे विनती करते हुए कहा, “मैं तुम्हें सबसे महान नाम और सुलेमान की मुहर

पर खुदे हुए सबसे उत्तम ताबीज़27 की कसम दिलाता हूँ, कि तुम मेरे साथ दयालुता का व्यवहार करो और मुझे हानि न पहुँचाओ!” और जब मेमूनेह ने दानाश के ये शब्द सुने, तो उसका हृदय उसके प्रति कोमलता से भर गया, और उसने उससे कहा, “तुमने मुझे एक शक्तिशाली शपथ से वश में किया है; परन्तु मैं तुम्हें तब तक मुक्त नहीं करूँगी जब तक तुम मुझे यह न बता दो कि तुम कहाँ से आए हो।” — हे स्वामिनी, उसने उत्तर दिया, जान लो कि मैं चीन देश के सुदूरतम छोर से आया हूँ, और उन लोगों में से हूँ जो

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.42%** है।

द्वीपों के बारे में, मैं तुम्हें उस चमत्कार के बारे में बताऊँगी जो मैंने आज रात देखा है; और यदि तुम मेरी बातों को सत्य पाओ, तो मुझे जाने दो, और अपने हाथ से एक दस्तावेज़ लिखकर मुझे दे जिसमें यह घोषित हो कि मैं तुम्हारी मुक्त दास हूँ, ताकि जिन्नों के किसी भी समूह, चाहे वे उड़ने वाले हों, नीचे वाले हों या गोता लगाने वाले हों,28 मेरा विरोध न कर सकें। मेमूनेह ने उससे कहा, “और तुमने आज रात क्या देखा है, हे दहनश? मुझे बताओ, और मुझसे झूठ मत बोलो, अपने झूठ से मेरे हाथ से बचने की इच्छा मत रखो; क्योंकि मैं सुलेमान पुत्र दत्तूद (उन दोनों पर शांति हो!) की मुहर के पत्थर पर खुदे हुए शिलालेख की कसम खाती हूँ कि, यदि तुम्हारी बातें सत्य नहीं हैं, तो मैं तुम्हारे पंख अपने हाथ से नोच लूँगी, तुम्हारी खाल फाड़ दूँगी और तुम्हारी हड्डियाँ तोड़ दूँगी।” — फिर शेमहोरीश का पुत्र इफ्रीत दहनश 23 उड़ने वाला

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.97%** है।

राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमैक्स की कहानी, इत्यादि। 81 ने उससे कहा, "यदि मेरे शब्द सत्य न हों, तो हे मेरी स्वामिनी, मेरे साथ जो चाहो करो।" और उसने आगे कहा, "मैं आज रात चीन क्षेत्र के आंतरिक द्वीपों से आया हूँ, जो राजा अल-घायूर,31 द्वीपों और समुद्रों के सम्राट और सात महलों के राज्य हैं, और मैंने उस राजा की एक ऐसी पुत्री को देखा है, जिससे

अधिक सुंदर ईश्वर ने अपने युग में किसी को नहीं बनाया है। मैं नहीं जानता कि उसका वर्णन कैसे करूं; क्योंकि मेरी जीभ ऐसा करने में असमर्थ है; लेकिन मैं यथासंभव उसके कुछ गुणों का वर्णन करूँगा। — उसके बाल प्रवास और विरह की रातों के समान हैं; और उसका चेहरा मिलन के दिनों के समान है।" कवि ने उसका वर्णन करते हुए ठीक ही कहा है, — उसने एक रात अपने बालों की तीन लटें फैलाईं, और लगातार चार रातों तक उन्हें प्रदर्शित किया; और उसने अपना चेहरा आकाश के चंद्रमा की ओर उठाया, और मुझे एक ही क्षण में दो चंद्रमा दिखाए। उसकी नाक पॉलिश की हुई तलवार की धार जैसी है, और गाल गहरे लाल रंग की शराब या एनीमोन जैसे हैं; उसके होंठ मूंगे और कार्नेलियन जैसे हैं, और उसके होंठों की नमी बेहतरीन शराब से भी अधिक स्वादिष्ट है, और उत्तेजित व्यक्ति की आग को बुझा सकती है; उसकी जीभ भरपूर बुद्धि और तत्परता से चलती है; उसका वक्षस्थल देखने वाले के लिए एक प्रलोभन है - जिसने इसे बनाया और पूर्ण किया है, उसकी पूर्णता की प्रशंसा हो! - जिसके बगल में दो चिकनी और गोल भुजाएँ हैं; और, जैसा कि कवि ने कहा है, - उसकी कमर पतली है, जो मुझ पर और उस पर दोनों पर हावी है: जब मैं उनके बारे में सोचता हूँ तो वे मुझे भ्रमित कर देते हैं, और जब वह उठना चाहती है तो उसे नीचे गिरा देते हैं। उसके अन्य आकर्षणों का वर्णन करने वाला नहीं कर सकता; लेकिन मैंने जिन सब बातों का ज़िक्र किया है, उन्हें दो कोमल पैर, जो रक्षा करने वाले और प्रतिफल देने वाले सृष्टिकर्ता की रचना हैं, सहारा देते हैं; और मुझे आश्चर्य हुआ कि वे अपने ऊपर की चीज़ों को कैसे संभाल सकते हैं।32 अन्य विवरण मैं छोड़ रहा हूँ; क्योंकि भाषा उनका वर्णन करने में असमर्थ होगी, और कोई भी संकेत उनका सही चित्रण नहीं कर पाएगा। इस युवती (दहनश ने आगे कहा) के पिता एक शक्तिशाली राजा

हैं, एक प्रखर घुड़सवार हैं, जो रात-दिन आसपास के क्षेत्रों के समुद्रों को पार करते हैं, न तो मृत्यु से डरते हैं और न ही अपने शत्रु के भागने से, क्योंकि वह एक निरंकुश अत्याचारी और दमनकारी विजेता हैं; वह अनेक सेनाओं, क्षेत्रों, द्वीपों, शहरों और बस्तियों के स्वामी हैं। उनका नाम राजा अल-गयूर है, और वह द्वीपों, समुद्रों और सात महलों के सम्राट हैं। उन्होंने इस द्वितीय माह को प्यार किया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.99%** है।

82 राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी: मैंने तुम्हें जिस पुत्री का वर्णन किया है, उससे उन्होंने अत्यंत प्रेम किया, इसलिए उन्होंने अन्य सभी राजाओं के खजाने एकत्र किए और उनसे उसके लिए सात महल बनवाए/3, प्रत्येक एक विशेष प्रकार का। पहला महल क्रिस्टल का है; दूसरा संगमरमर का; तीसरा चीन के लोहे का; चौथा गोमेद और अन्य बहुमूल्य पत्थरों का; पाँचवाँ चाँदी का; छठा सोने का; और सातवाँ रत्नों का। उन्होंने सातों महलों को विभिन्न प्रकार के भव्य फर्नीचर, सोने-चांदी के बर्तनों और हर प्रकार के उपकरणों से भर दिया, जिनकी राजाओं को आवश्यकता हो सकती थी, और अपनी पुत्री को आदेश दिया कि वह वर्ष की एक निश्चित अवधि के लिए प्रत्येक महल में रहे और फिर दूसरे महल में चली जाए। उसका नाम रानी बुदूर है।34 जब उसकी सुंदरता प्रसिद्ध हुई और उसकी प्रसिद्धि आसपास के देशों में फैल गई, तो सभी राजाओं ने उसके पिता के पास उससे विवाह का प्रस्ताव रखने के लिए संदेश भेजा; और उन्होंने उससे विवाह का विषय उठाया; लेकिन उसे यह पसंद नहीं था, और उसने अपने पिता से कहा, "हे मेरे पिता, मेरी शादी करने की कोई इच्छा नहीं है; क्योंकि मैं एक राजकुमारी और रानी हूँ, पुरुषों पर शासन करती हूँ, और मैं नहीं चाहती कि कोई पुरुष मुझ पर शासन करे।"

फिर भी, वह जितनी अधिक शादी करने से कतराती रही, उसके चाहने वालों की उत्सुकता उतनी ही बढ़ती गई। चीन के आंतरिक द्वीपों के सभी राजाओं ने उसके पिता को उपहार और दुर्लभ वस्तुएँ भेजीं।

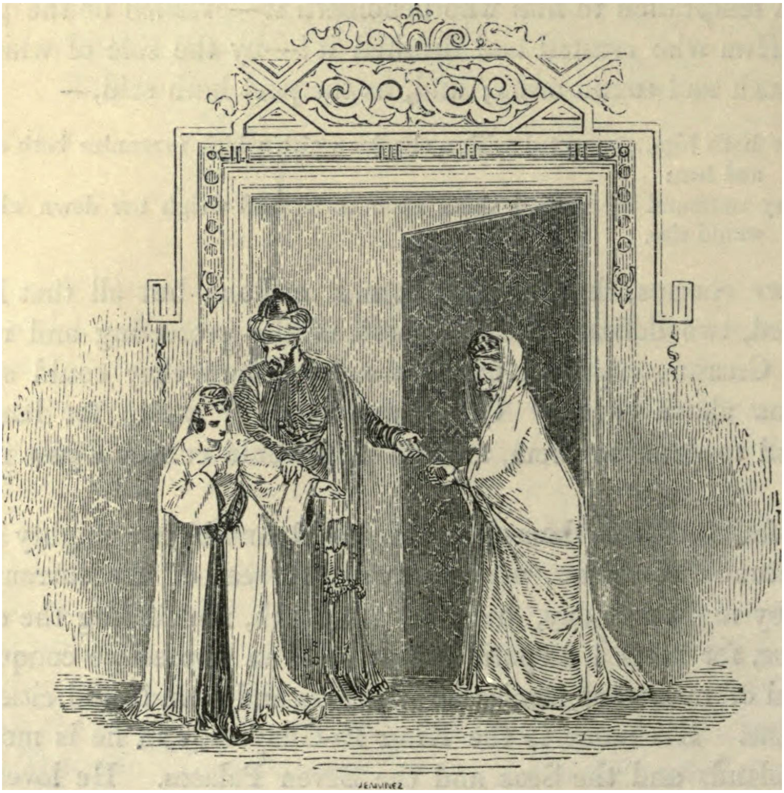

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.58%** है।

AX1) राजकुमारी बुदूर। s:* ने उसे पत्नी के रूप में अनुरोध करते हुए पत्र भेजे, और उसने कई बार प्रस्ताव दोहराया; लेकिन उसने उसकी इच्छा का विरोध किया, और उससे क्रोधित होकर कहा, "यदि तुमने मुझसे फिर से विवाह का विषय उठाया, तो मैं तलवार उठाऊंगी, और उसकी मूठ को फर्श पर और नोक को अपनी छाती पर रखूंगी, और तब तक उस पर झुकूंगी जब तक वह मेरी पीठ से बाहर न निकल जाए, और इस प्रकार

स्वयं को मार डालूंगी।" जब उसके पिता ने उसके ये शब्द सुने, तो उनके चेहरे के सामने प्रकाश अंधकार में बदल गया, और उनका हृदय उसके कारण अत्यधिक पीड़ा से भर गया; क्योंकि उन्हें डर था कि वह आत्महत्या कर लेगी। वह उसके और उन राजाओं दोनों के बारे में चिंतित थे जो उससे विवाह करना चाहते थे, और उससे कहा, "यदि तुमने विवाह न करने का निश्चय कर लिया है, तो बाहर आना-जाना बंद कर दो।" फिर उन्होंने उसे एक कमरे में ले जाकर कैद कर दिया, और दस बूढ़ी महिलाओं, कहरामनेहों,30 को उसकी रखवाली करने का आदेश दिया, और उसे सात महलों को देखने से मना किया; इसके बाद, उसने ऐसा दिखाया कि वह उससे बहुत क्रोधित है, और सभी राजाओं को पत्र भेजकर सूचित किया कि वह पागल हो गई है और उसे एक वर्ष से कैद में रखा गया है। ये बातें इफ्रीत दानाश ने इफ्रीत को बताईं और कहा, "हे मेरी स्वामिनी, मैं हर रात उसके पास जाता हूँ, उसे निहारता हूँ, उसके चेहरे को लंबे समय तक देखता हूँ और सोते समय उसकी आँखों के बीच चुंबन करता हूँ; परन्तु उसके प्रति अपने प्रेम के कारण मैं उसे कोई हानि नहीं पहुँचाता; क्योंकि उसकी सुंदरता अतुलनीय है: जो भी उसे देखता है, वह अपने आप से भी अधिक उससे ईर्ष्या करता है। हे मेरी स्वामिनी, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम मेरे साथ आओ और उसकी सुंदरता, आकर्षण, और उसके सुडौल रूप-रंग को देखो; और उसके बाद, यदि तुम मुझे दंडित करना या मुझे गुलाम बनाना चाहो, तो कर लो; क्योंकि आज्ञा देना और रोकना दोनों ही तुम्हारा अधिकार है।" — तब इफ्रीत दहनश ने अपना सिर धरती की ओर झुका लिया और अपने पंख नीचे कर लिए। लेकिन इफ्रीत मेमूनेह ने उसकी बातों पर हंसते हुए और उसके चेहरे पर थूकते हुए उससे कहा, यह युवती कौन है जिसके बारे में तू बात कर रहा है? यह तो मिट्टी के एक टुकड़े से भी कम मूल्यवान है! अगर तू मेरे प्रियतम को देख ले तो

क्या कहेगा? अल्लाह की कसम, मैंने सोचा था कि तेरे पास कोई अद्भुत कहानी या असाधारण किस्सा होगा, ऐ अभिशाप! मैंने आज रात एक ऐसे आदमी को देखा है, जिसे अगर तू सपने में भी देख ले तो आश्चर्य से स्तब्ध रह जाएगा। — और दहनश ने कहा, इस युवक की कहानी क्या है? — उसने उत्तर दिया, ऐ दहनश, जान ले कि इस युवक के साथ भी वही हुआ है जो तेरे प्रियतम के साथ हुआ है, जिसका तूने जिक्र किया है। 88 उसके पिता ने उसे कई बार शादी करने का आदेश दिया; लेकिन उसने इनकार कर दिया; और जब उसने उस पर इस प्रकार अत्याचार किया, तो उसके पिता को उस पर बहुत क्रोध आया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.03%** है।

81 राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी, इत्यादि। X और उसे उस कस्बे में कैद कर दिया जिसमें मैं रहती हूँ; और आज रात जब मैं बाहर निकली, तो मैंने उसे देखा। हे मेरी स्वामिनी, दानाश ने उत्तर दिया, मुझे इस युवक को दिखाओ, ताकि मैं देख सकूँ कि वह मेरी प्रियतम, रानी बुदूर से अधिक सुंदर है या नहीं; क्योंकि मुझे नहीं लगता कि इस युग में मेरे प्रियतम के समान कोई है। - तू झूठ बोल रही है, हे अभिशापित! हे मारिदों में सबसे अभागी और शैतानों में सबसे घृणित! क्योंकि मुझे यकीन है कि इन देशों में मेरे प्रियतम के समान कोई नहीं है। तो क्या तू पागल है कि तू अपने प्रियतम की तुलना मेरे प्रियतम से कर रही है? - हे मेरी स्वामिनी, मैं अल्लाह की कसम खाकर तुमसे विनती करती हूँ, दानाश ने फिर कहा, कि तुम मेरे साथ मेरे प्रियतम को देखने चलो, और मैं तुम्हारे साथ लौटकर तुम्हारे प्रियतम को देखूँगी। — हे शापित, ऐसा ही होना चाहिए, मेयमूनेह ने कहा; क्योंकि तू एक धूर्त शैतान है; परन्तु मैं तेरे साथ नहीं चलूँगी, और न ही तू मेरे साथ जाएगा, सिवाय एक शर्त के:

यदि तेरा प्रियतम, जिसे तू श्रेष्ठ मानता है, मेरे प्रियतम से अधिक सुंदर सिद्ध हुआ, तो शर्त तेरी होगी और मेरे विरुद्ध; परन्तु यदि मेरा प्रियतम अधिक सुंदर सिद्ध हुआ, तो शर्त मेरी होगी और तेरे विरुद्ध। इफ्रीत दहनाश ने उत्तर दिया, हे मेरी स्वामिनी, मैं इस शर्त को सहर्ष स्वीकार करता हूँ: तो मेरे साथ द्वीपों पर चलें। परन्तु मेयमूनेह ने कहा, मेरे प्रियतम का स्थान तेरे स्थान से निकट है: वह हमारे नीचे ही है: तो मेरे प्रियतम को देखने के लिए मेरे साथ नीचे उतरें; और उसके बाद हम तेरे स्थान पर चलेंगे। और दहनाश ने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। फिर वे नीचे उतरे और मीनार में बने बैठक कक्ष में पहुँचे। मेमूनेह ने दहनश को पलंग के पास बिठाकर अपना हाथ बढ़ाया और बादशाह शाहज़ेमान के पुत्र करनार-एज़-ज़ेमान के चेहरे से चादर हटा दी; यह देखकर उसका चेहरा दमक उठा, चमक उठा और दमकता चला गया। मेमूनेह ने उसे देखा और फिर तुरंत दहनश की ओर देखते हुए उससे कहा, "देखो, हे अभिशाप, मूर्ख मत बनो: क्योंकि मैं कुंवारी हूँ और उस पर मोहित हो गई हूँ।" तो दहनश ने उसकी ओर देखा और कुछ देर तक उसे निहारता रहा; फिर उसने अपना सिर हिलाया और मेमूनेह से कहा, "अल्लाह की कसम, हे मेरी स्वामिनी, तुम्हें माफ़ किया जाता है।" परन्तु यह सिद्ध करना आवश्यक है कि स्त्री पुरुष से भिन्न है: फिर भी, अल्लाह की कसम, तुम्हारा यह प्रियतम, समस्त पुरुषों में, मेरे प्रियतम से सौंदर्य, मनमोहकता, शालीनता और पूर्णता में सबसे अधिक मिलता-जुलता है: दोनों को सौंदर्य के साँचे में समान रूप से ढाला गया है। परन्तु जब मेमूनेह ने दहनश के ये शब्द सुने, तो उसकी आँखों के सामने प्रकाश अंधकार में बदल गया, और उसने अपने पंख से उसके सिर पर इतनी ज़ोर से प्रहार किया कि वह लगभग मर ही गया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

27.38% है।

प्रहार की हिंसा से पूर्वनियोजित अंत; और उसने उससे कहा, मैं उसके तेजस्वी रूप की चमक की कसम खाकर कहती हूँ कि हे शापित, तू अभी इसी क्षण जाए और अपनी प्रेमिका को उठाकर यहाँ जल्दी लाए, ताकि हम उन्हें एक साथ रख सकें और उन्हें सोते हुए एक साथ देख सकें: तब हमें पता चल जाएगा कि उनमें से कौन अधिक सुंदर है। हे शापित, यदि तू मेरी आज्ञा का तुरंत पालन नहीं करेगा, तो मैं तुझे अपनी आग से जला दूँगी,37 और तुझ पर अपनी विनाशकारी चिंगारियाँ बरसाऊँगी, और तुझे टुकड़े-टुकड़े करके रेगिस्तानों में बिखेर दूँगी, तुझे स्थिर और रात्रि-यात्रियों के लिए एक उदाहरण बना दूँगी। — तब दहनश ने उत्तर दिया, हे मेरी स्वामिनी, आपकी आज्ञा का पालन किया जाएगा; परन्तु मैं जानता हूँ कि मेरी प्रेमिका अधिक सुंदर और मधुर है। तब इफ्रीत दहनश तुरंत उड़ गया, और मेमूनेह उसकी रक्षा के लिए उसके साथ उड़ गई; और एक घंटे की अनुपस्थिति के बाद, वे उस युवती को लेकर लौटे, जिसने नाजुक वेनेशियन कपड़े की कमीज़ पहनी हुई थी, जिसकी दो सोने की कढ़ाई अत्यंत सुंदर ढंग से की गई थी, और प्रत्येक आस्तीन के किनारों पर निम्नलिखित छंद उकेरे गए थे:

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.24%** है।

86 द स्टोरी ऑफ़ द रॉयल कामार-एज़-ज़ेमान: तीन चीज़ों ने उसे जासूस और ईर्ष्यालु के डर से हमारे पास आने से रोक रखा था: उसके माथे की चमक, उसके आभूषणों की झंकार और उसमें बसी अंबरग्रीस की निरंतर सुगंध। मान लो कि वह अपने माथे को अपनी आस्तीन के सिरे से ढक ले और अपने गहने उतार दे; तो वह अपनी सुगंध से कैसे छुटकारा पा सकती है? पृष्ठ 33: इफ़्रीत और इफ़्रीतेह इस युवती के साथ नीचे उतरे और उसे युवक के बगल में लिटाकर दोनों के चेहरे खोल दिए। वे एक-दूसरे से इतनी समानता रखते थे मानो जुड़वाँ हों या इकलौते भाई-बहन हों: वे संयमी लोगों के लिए भी प्रलोभन थे। दहनश और मेमूनेह उन्हें निहारने लगे और दहनश ने कहा, "सचमुच मेरा प्रियतम अधिक सुंदर है।" मेमूनेह

ने उत्तर दिया, "नहीं, मेरा प्रियतम अधिक सुंदर है।" हे दहनश, तुझ पर धिक्कार! क्या तू अंधा है? क्या तू उसकी सुंदरता, आकर्षण, कद-काठी और रूप की भव्यता को नहीं देख सकता? परन्तु मेरी प्रियतम के विषय में मेरी बात सुन, और यदि तू उस स्त्री का सच्चा प्रेमी है जिससे तू मुग्ध है, तो उसके विषय में वही कह जो मैं अपनी प्रियतम के विषय में कहूँगी। — फिर उसने कमर-एज़-ज़ेमान को कई बार चूमा और उसकी प्रशंसा में एक कविता पढ़ी। जब दहनश ने यह सुना, तो वह अत्यंत प्रसन्न और प्रशंसा से भर गया; परन्तु उसने कहा, तूने अपने प्रियतम के विषय में ये कोमल कविताएँ उसके प्रेम में लीन होकर पढ़ी हैं: अब मैं भी कुछ कविताएँ पढ़ने का प्रयास करूँगा, जो मेरे मन में सर्वोत्तम हों। अतः वह अपनी प्रियतम बुदूर के पास गया और उसकी आँखों के बीच चूमकर, इफ़रीते मेमूनेह और अपनी प्रियतम की ओर देखा और एक कविता पढ़ी; परन्तु उसका मन कहीं और भटक रहा था। जब अज्क्सल ने अपनी बात समाप्त की, तो इफ्रीतेह ने कहा, "हे दहनश, तुमने अच्छा किया है; परन्तु इन दोनों में से अधिक सुंदर कौन है?" उसने उत्तर दिया, "मेरी प्रियतमा, बुदूर, तुम्हारी प्रियतमा से अधिक सुंदर है।" मेमूनेह ने उत्तर दिया, "हे शापित! तुम झूठ बोल रहे हो; क्योंकि मेरी प्रियतमा तुम्हारी प्रियतमा से अधिक सुंदर है।" इस प्रकार वे एक-दूसरे का खंडन करते रहे, यहाँ तक कि मेमूनेह दहनश पर चिल्लाई और उस पर हाथ उठाने ही वाली थी; परन्तु वह उसके सामने विनम्र हो गया और अपने शब्दों को नरम करते हुए उससे कहा, "सत्य तुम्हें कष्ट न दे; तुम और मैं दोनों अपने-अपने प्रियतमा के पक्ष में हैं; इसलिए हम दोनों ही मतों को अस्वीकार करें और निष्पक्षता से हमारे बीच न्याय करने के लिए किसी एक को चुनें और उसके निर्णय का पालन करें।" मेमूनेह ने उत्तर दिया, "ऐसा ही होगा।" फिर उसने अपने पैर से ज़मीन पर प्रहार किया, और उसमें से एक इफ़्रीत

(एक प्रकार का राक्षस) उठा, जो एक आँख से अंधा था और जिसकी त्वचा रोगग्रस्त थी; उसकी आँखें ऊपर की ओर धँसी हुई थीं; उसके सिर पर सात सींग थे, और उसके बालों की चार लटें ज़मीन तक लटक रही थीं; उसके हाथ कुत्रब (एक प्रकार का राक्षस) के हाथों जैसे थे, और उसके पंजे कुत्रब (एक प्रकार का राक्षस) जैसे थे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.51%** है।

और राजकुमारी बुदूर। 87 शेर के पंजे; और उसके पैर हाथी के समान थे, और खुर गधे के समान थे। जैसे ही यह इफ्रीत उठा और मेवमूनेह को देखा, उसने उसके सामने ज़मीन चूमी और अपने हाथ पीठ पीछे जोड़कर उससे कहा, हे मेरी स्वामिनी, हे राजा की पुत्री, तुम क्या चाहती हो? उसने उत्तर दिया, हे कश्कश, मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे और इस शापित डबनाश के बीच न्याय करो। तब उसने उसे पूरी बात बताई; और इस पर, इफ्रीत कश्कश ने उस युवक और उस युवती के चेहरे को देखा और पाया कि वे सोते हुए एक-दूसरे को गले लगाए हुए थे, एक-दूसरे की बांहें एक-दूसरे की गर्दन के नीचे थीं, सुंदरता और आकर्षण में एक-दूसरे से मिलते-जुलते और मोहक थे। मारिद कश्कश उनकी सुंदरता को निहारते हुए मंत्रमुग्ध हो गए। काफी देर तक उन्हें निहारने के बाद उन्होंने मेमूनेह और दहनश की ओर देखा और कुछ प्रेम-प्रधान छंद पढ़े। फिर उन्होंने कहा, "अल्लाह की कसम, उनमें से कोई भी दूसरे से कम या ज्यादा सुंदर नहीं है; बल्कि सुंदरता, आकर्षण, शालीनता और पूर्णता में वे एक-दूसरे से अत्यंत मिलती-जुलती हैं; और इन मामलों में उन्हें एक-दूसरे से भिन्न नहीं कहा जा सकता, क्योंकि वे अलग-अलग लिंग की हैं। हालांकि, मुझे इस प्रश्न का हल निकालने का एक और तरीका सुझाना है; और वह यह है कि हम दोनों को एक-दूसरे की जानकारी के बिना जगाएं; और जो एक-

दूसरे के प्रति सबसे अधिक प्रेम से प्रज्वलित होगी, उसे सुंदरता और आकर्षण में कमतर माना जाएगा।" मेमूनेह ने कहा, "यह सलाह बहुत अच्छी है, और मैं इसे स्वीकार करती हूं।" दहनश ने कहा, "और मैं भी इसे स्वीकार करता हूं।" इस पर दानाश ने अपना रूप बदलकर कमर-एज़-ज़ेमान की गर्दन पर एक कोमल जगह पर काट लिया। कमर-एज़-ज़ेमान ने दर्द से कराहते हुए अपना हाथ गर्दन पर रखा और उस जगह को खुजलाया। करवट बदलते हुए उसने देखा कि उसके पास कोई पड़ा है, जिससे कस्तूरी से भी अधिक सुगंधित सांस आ रही है और उसका शरीर मक्खन से भी कोमल है। कमर-एज़-ज़ेमान को इस पर बहुत आश्चर्य हुआ और वह तुरंत उठ खड़ा हुआ। अपने बगल में लेटी उस व्यक्ति को देखकर उसने पाया कि वह एक कीमती मोती या चमकते सूरज जैसी युवती है,40 जिसका आकार अलिफ़ अक्षर जैसा है,41 जिसकी लंबाई पंचक4* है, ऊंचे स्तन हैं और गाल लाल हैं। और जब कमर-एज़-ज़ेमान ने राजा अल-ग़यूर की पुत्री, लेडी बुदूर को देखा और जब वह उनके बगल में सो रही थी, तो उसने उसके शरीर पर वेनिस के कपड़े की कमीज़, उसके सिर पर सोने के कपड़े की कूफीयेह (रत्नों से सजी हुई) और उसके गले में कीमती रत्नों का एक लंबा हार देखा, ऐसा हार जो किसी भी राजा के पास नहीं हो सकता था। उसका कारण

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.27%** है।

 यह देखकर वह व्याकुल हो गया और मन ही मन बोला, जो ईश्वर चाहता है वही होगा, और जो नहीं चाहता वह नहीं होगा! फिर उसने उसे हाथ से पलटा और जगाने का प्रयास किया; परन्तु वह नहीं जागी; क्योंकि दहनश ने उसे गहरी नींद सुला दिया था: इसलिए कमारेज़-ज़ेमान ने उसे हाथ से दबाया और हिलाते हुए

कहा, हे मेरी प्रियतमा, जाग और देख कि मैं कौन हूँ; क्योंकि मैं कमारेज़-ज़ेमान हूँ। परन्तु वह नहीं जागी और न ही उसने अपना सिर हिलाया। और वह एक घंटे तक उसके मामले पर विचार करता रहा, और मन ही मन बोला, यदि मेरा अनुमान सही है, तो यह वही युवती है जिससे मेरे पिता मेरा विवाह कराना चाहते हैं, और मैंने तीन वर्षों से ऐसा करने से इनकार कर दिया है: लेकिन, ईश्वर की कृपा से, जब सुबह होगी, तो मैं अपने पिता से कहूंगा, मेरा विवाह उससे करा दीजिए: और मैं दोपहर बीतने से पहले ही उसे पा लूंगा और उसकी सुंदरता और आकर्षण का आनंद उठा लूंगा। — फिर वह बुदूर की ओर उसे चूमने के लिए झुका: जिस पर मेमूनेह जिन्नियेह कांप उठा और घबरा गया: लेकिन इफ्रीत दहनश खुशी से उछल पड़ा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.19%** है।

अतफब राजकुमारी बुदूर, 89 इतामर-ए-ज़ेमान, हालांकि, उसे होंठों पर चूमने ही वाला था कि उसे ईश्वर का भय लगा और उसने अपना चेहरा फेर लिया, मन ही मन कहा, मैं धैर्य रखूंगा; क्योंकि शायद मेरे पिता, जब मुझसे क्रोधित थे और मुझे इस जगह कैद कर दिया था, तो मेरे पास इस दुल्हन को लाए और उसे मेरे पास सोने का आदेश दिया, ताकि वह मेरी परीक्षा ले सकें, और उसे यह निर्देश दिया कि जब मैं उसे जगाने की

कोशिश करूं तो वह जागती हुई दिखाई न दे, और उससे कहा, कामार-ए-ज़ेमान तुम्हारे साथ जो कुछ भी करे, मुझे बता देना। और शायद मेरे पिता कहीं छिपकर मुझे देख रहे हैं, जबकि मैं उन्हें देख नहीं पा रहा हूं, और वह इस युवती के साथ मेरे सभी कार्यों के साक्षी होंगे, और सुबह मुझे धिक्कारेंगे और कहेंगे, तुम कैसे कहते हो कि मुझे विवाह की आवश्यकता नहीं है, और उस युवती को चूमते हो और उसे गले लगाते हो! इसलिए मैं उससे दूर रहूंगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं अपने पिता के सामने बेनकाब हो जाऊं। अब से मैं इस युवती को न तो स्पर्श करूँगा और न ही उसकी ओर देखूँगा; बल्कि उससे केवल एक ऐसी वस्तु लूँगा जो मेरे पास उसकी स्मृति के रूप में रहे, ताकि मेरे और उसके बीच एक निशानी बनी रहे। — फिर कमर-एज़-ज़ेमान ने युवती का हाथ उठाया और उसकी छोटी उंगली से अंगूठी उतार ली। वह अंगूठी बहुत कीमती थी; क्योंकि उसका पत्थर एक अनमोल रत्न था; और उस पर ये आयतें खुदी हुई थीं: — यह मत सोचो कि मैं तुम्हारे वादे भूल गया हूँ, चाहे तुम मुझसे कितने ही समय से दूर रहे हो। हे मेरे स्वामी, मुझ पर कृपा और दया करो! शायद मैं तुम्हारे होंठों और गालों को चूम सकूँ। अल्लाह की कसम, मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा, चाहे तुम प्रेम की सीमाएँ ही क्यों न पार कर दो। इस प्रकार कमर-एज़-ज़ेमान ने रानी बुदूर की छोटी उंगली से वह अंगूठी उतार ली और उसे अपनी छोटी उंगली में पहनकर उसकी ओर पीठ करके सो गया। जिन्निये मेमूने ने यह देखकर प्रसन्नता जताई और दहनश और कश्कश से कहा, “क्या तुमने मेरे प्रियतम कमर-एज़ज़ेमान को देखा है कि वह इस युवती से कैसे दूर रहा? यह उसके गुणों की पूर्णता का परिणाम है। देखो, उसने इस युवती और उसकी सुंदरता और आकर्षण को देखा, फिर भी उसे गले नहीं लगाया, न ही उस पर हाथ फेरा; बल्कि उसकी ओर पीठ करके सो गया।” उन्होंने उत्तर दिया, “हमने उसका उत्तम आचरण देखा

है।” तब मेमूने ने अपना रूप बदलकर एक पिस्सू का रूप धारण किया और दहनश के प्रियतम बुदूर के वस्त्रों के नीचे घुसकर उसे काट लिया; जिसके बाद उसने अपनी आँखें खोलीं और उठ बैठी, और अपने बगल में एक युवक को सोते हुए देखा, जो नींद में खर्राटे ले रहा था, जिसके गाल एनीमोन जैसे थे, आँखें सुंदर हूरियों को भी लज्जित कर देती थीं, और मुँह सुलेमान की मुहर जैसा था।43 जब उसने उसे देखा, तो वह विचलित हो गई।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.98%** है।

मुन्स की कहानी सुनाइए, और उस पर प्रेम और वासना हावी हो गई, और उसने मन ही मन कहा, हे मेरे लिए कितनी शर्म की बात है! यह युवक अजनबी है: मैं इसे जानती नहीं; और यह मेरे बगल में एक ही बिस्तर पर क्यों लेटा है? — फिर उसे दोबारा देखते हुए, और उसकी सुंदरता, उसके मोहक रूप, और उसकी खूबसूरती और आकर्षण पर विचार करते हुए, उसने कहा, अल्लाह की कसम, यह चाँद के समान सुंदर युवक है, और मेरा दिल उसके लिए प्रेम की उन्माद और उसकी सुंदरता और आकर्षण से उत्पन्न तीव्र वासना से फट गया है! लेकिन मैं उसके कारण कितनी शर्मिंदा हूँ! अल्लाह की कसम, अगर मुझे पता होता कि यह सुंदर युवक वही है जिसने मेरे पिता से मेरा विवाह मांगा था, तो मैं उसे अस्वीकार नहीं करती, बल्कि उससे विवाह कर लेती और उसके आकर्षण में आनंदित हो जाती। — तब रानी बुदूर ने तुरंत कमर-एज़-ज़ेमान के चेहरे की ओर देखा और उससे कहा, “हे मेरे स्वामी, मेरे दिल के प्यारे, मेरी आँखों की रोशनी, अपनी नींद से जाग जाओ।” और उसने उसे अपने हाथ से हिलाया। लेकिन मेमूनेह जिन्नियेह ने उसे नींद में डुबो दिया और अपने पंख से उसका सिर दबा दिया, जिससे वह नहीं जागा। रानी बुदूर ने उसे

फिर से अपने हाथ से हिलाया और उससे कहा, “मैं अपनी जान की कसम खाकर तुमसे विनती करती हूँ कि मेरी इच्छा पूरी करो और अपनी नींद से जाग जाओ! उठो, हे मेरे स्वामी, और तकिये पर लेट जाओ, और सो मत!” — लेकिन कमर-एज़-ज़ेरमिउ ने उसे कोई जवाब नहीं दिया, न ही उससे एक शब्द कहा; वह अभी भी नींद में खर्राटे ले रहा था। तब रानी बुदूर ने कहा, “तुम अपनी सुंदरता, आकर्षण, शालीनता और कामुक रूप पर इतना घमंड क्यों करते हो? जैसे तुम सुंदर हो, वैसे ही मैं भी हूँ। तो फिर तुम ऐसा क्यों करते हो?” क्या उन्होंने तुझे मुझसे घृणा प्रकट करने का आदेश दिया है, या मेरे पिता, उस अशुभ बूढ़े व्यक्ति ने तुझे आज रात मुझसे बात करने से मना किया है? — तब कमर-एज़-ज़ेमान ने अपनी आँखें खोलीं; और उसके लिए रानी का प्रेम और बढ़ गया। ईश्वर ने उसके हृदय में उसके लिए प्रेम भर दिया, और उसने उसे ऐसी दृष्टि से देखा जिससे उसके मन में हज़ार आहें उठीं; उसका हृदय धड़क उठा, और उसने कमर-एज़-ज़ेमान से कहा, हे मेरे स्वामी, मुझसे बात करो! हे मेरे प्रियतम, मुझसे बात करो! हे मेरे प्रेम के पात्र, मुझे उत्तर दो, और मुझे अपना नाम बताओ; क्योंकि तुमने मेरी बुद्धि को मोहित कर लिया है! — लेकिन इस पूरे समय कमर-एज़-ज़ेमान नींद में डूबा रहा, और उसने एक शब्द भी नहीं कहा। और रानी बुदूर ने आह भरी, और कहा, तुम इतने आत्मसंतुष्ट क्यों हो? फिर उसने उसे दोबारा हिलाया और उसका हाथ पलट दिया। उसकी छोटी उंगली पर अपनी अंगूठी देखकर वह आश्चर्य से चिल्लाई और प्रेम भरे लहजे में बोली, "हाय! हाय! अल्लाह की कसम, तुम मेरे प्रिय हो और मुझसे प्रेम करते हो; लेकिन तुम मुझसे घृणा करते प्रतीत होते हो, जबकि सोते समय तुमने मुझसे प्रेम का भाव दिखाया था। मुझे नहीं पता तुमने मेरे साथ क्या किया है; फिर भी मैं तुम्हारी उंगली से अपनी अंगूठी नहीं उतारूंगी।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.43%** है।

और राजकुमारी बुदूर। 91 छोटी उंगली। — और उसने उससे कुछ लेने के लिए खोजा, और उसकी उंगली से उसकी अंगूठी उतारकर अपनी अंगूठी के स्थान पर अपनी उंगली में पहन ली; इसके बाद उसने उसके मुंह और हाथों को चूमा, और अपना एक हाथ उसकी गर्दन के नीचे और दूसरा उसकी बांह के नीचे रखकर उसके बगल में फिर से सो गई। जब मेमूनेह ने यह देखा, तो वह अत्यंत प्रसन्न हुई, और दानाश से कहा, हे घटना, क्या तुमने देखा है कि तुम्हारे प्रिय ने मेरे प्रिय के लिए अपने जुनून में कैसे पागलपन दिखाया है, और उसने अपने घमंड और कपट में कैसे व्यवहार किया है? इसमें कोई संदेह नहीं है कि मेरा प्रिय तुम्हारे प्रिय से अधिक सुंदर है: लेकिन मैं तुम्हें क्षमा करती हूँ। — फिर उसने उसके लिए मुक्ति पत्र लिखा, और कश्कश की ओर देखते हुए उससे कहा, तुम उसके प्रिय के नीचे उसके साथ जाओ, और उसे उसके स्थान पर वापस ले जाने में उसकी सहायता करो; रात बीत चुकी थी, और मेरे इरादे को पूरा करने का मौका भी हाथ से निकल गया था। इसलिए दहनश और कश्कश रानी बुदूर की ओर बढ़े, और उसके नीचे छिप गए, और उसे अपने साथ ले जाकर उसके स्थान पर वापस ले आए और उसे उसके बिस्तर पर लिटा दिया, जबकि मेमूनेह अकेली रह गई, और सोते हुए कमारेज़-ज़ेमान को देखती रही, जब तक कि रात का कुछ ही समय शेष नहीं रह गया, तब वह अपने रास्ते चली गई। अब जब सुबह हुई, तो कमारेज़-ज़ेमान नींद से जागा, और दाएं-बाएं देखा; लेकिन उसे वह युवती अपने साथ नहीं मिली। तो उसने मन ही मन कहा, यह सब क्या है? लगता है मेरे पिता मुझमें उस युवती से विवाह करने की इच्छा जगाना चाहते थे जो मेरे साथ थी, और ऐसा करके उसे चुपके से ले गए हैं, ताकि उसके लिए मेरी चाहत बढ़

जाए। — फिर उसने हिजड़े को पुकारा

per of manumission, and,
sh, said to him, Do thou
im beneath his beloved,
y her back to her place;
d the opportunity for the
tention is past. So Dah-
anced towards the Queen
themselves beneath her,
vith her and conveyed her
ed her to her bed, while
one, gazing at Ḳamar-ez-
, until but little of the
e went her way.
me, Ḳamar-
s sleep, and
d left; but
h him. So
What mean-
eth that my
a desire to
s

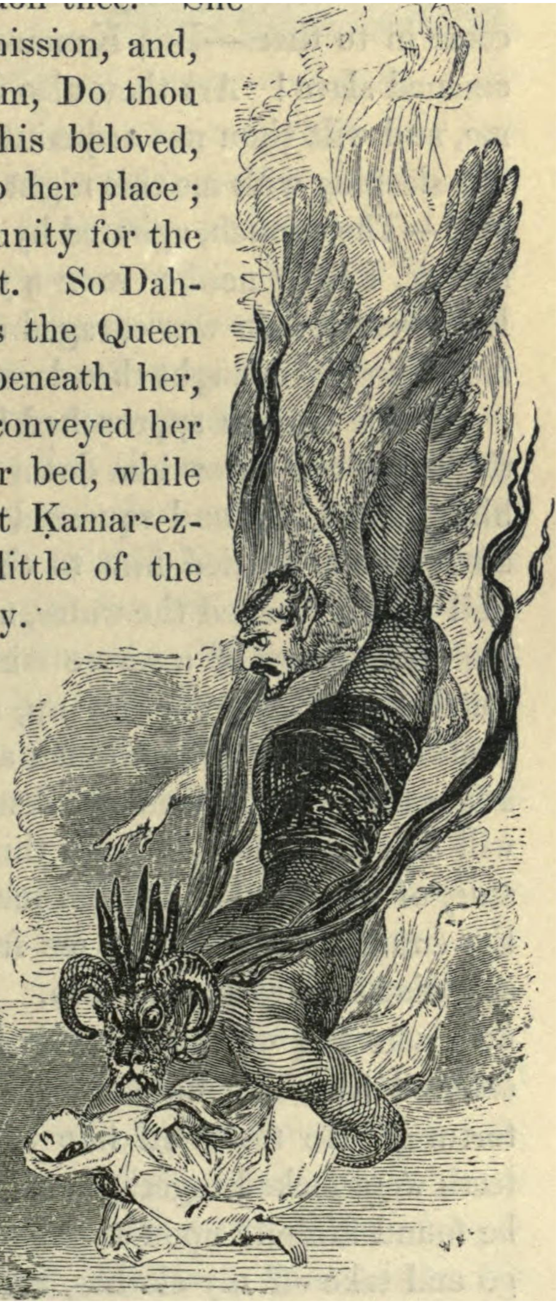

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

27.69% है।

92 राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी, जो द्वार पर सो रहा था, और उसने उससे कहा, हे अभिशाप! उठ! — तब हिजड़ा नींद से जागकर उठा और उसके लिए बेसिन और सुराही ले आया। कमर-एज़-ज़ेमान उठा, उसने स्नान किया, सुबह की नमाज़ पढ़ी और अल्लाह की स्तुति दोहराते हुए बैठ गया। 44 फिर हिजड़े की ओर देखकर उसने उसे अपने सामने खड़ा पाया और उससे कहा, हे सवाब! कौन यहाँ आया और सोते समय मेरी बगल से उस युवती को ले गया? — हिजड़े ने कहा, हे मेरे मालिक, कौन सी युवती? — कमर-एज़-ज़ेमान ने उत्तर दिया, वह युवती जो आज रात मेरे साथ सो रही थी। और हिजड़ा उसकी बातों से विचलित हो गया और बोला, तुम्हारे साथ न तो कोई युवती थी, न ही कोई और। और जब मैं दरवाजे के पीछे सो रहा था और वह बंद था, तो कोई युवती अंदर कैसे आ सकती थी? अल्लाह की कसम, ऐ मेरे मालिक, न तो कोई पुरुष आया और न ही कोई स्त्री। — लेकिन कमर-एज़-ज़ेमान चिल्लाया, ऐ निर्वस्त्र दास, तू झूठ बोल रहा है! क्या तू इतना बड़ा है कि मुझे धोखा देने की हिम्मत कर रहा है? क्या तू मुझे यह नहीं बताएगा कि वह युवती कहाँ गई जो आज रात मेरे साथ सो रही थी, और न ही मुझे बताएगा कि उसे मुझसे कौन ले गया? — हिजड़ा उसकी बातों से व्याकुल होकर बोला, अल्लाह की कसम, ऐ मेरे मालिक, मैंने न तो कोई युवती देखी है और न ही कोई युवक। और कमर-एज़-ज़ेमान हिजड़े की बातों पर क्रोधित हो गया और उससे बोला, ऐ अभिशापित, उन्होंने तुझे छल करना सिखाया है! तो इधर मेरे पास आ। तो हिजड़ा उसके पास आया, और कर्नार-एज़-ज़ेमान ने उसे कॉलर से पकड़कर ज़मीन पर पटक दिया, फिर उस पर घुटने टेककर उसे लात मारी और उसका गला तब तक दबाया जब तक वह बेहोश नहीं हो गया; इसके बाद, उसने उसे कुएँ की रस्सी से बाँध

दिया और कुएँ में तब तक उतारा जब तक वह पानी तक नहीं पहुँच गया, और उसे पानी में छोड़ दिया; और यह भीषण सर्दी का मौसम था। उसने हिजड़े को पानी में डुबोया, फिर उसे ऊपर खींचा और फिर नीचे छोड़ दिया; और वह ऐसा ही करता रहा। हिजड़ा लगातार मदद के लिए चिल्लाता, चीखता और पुकारता रहा; लेकिन कर्नार-एज़-ज़ेमान ने कहा, अल्लाह की कसम, ऐ बदनसीब, मैं तुझे इस कुएँ से तब तक नहीं निकालूँगा जब तक तू मुझे उस लड़की की कहानी न बता दे और यह न बता दे कि सोते समय उसे कौन ले गया। तो हिजड़े ने कहा, ऐ मेरे मालिक, मुझे कुएँ से निकाल दे, और मैं तुझे सच बता दूँगा। इसलिए कमर-एज़-ज़ेमान ने उसे कुएँ से बाहर निकाला और बाहर ले गया। वह कुएँ में डुबोने, झटकने, ठंड, मार-पीट और यातनाओं से बुरी तरह स्तब्ध था। वह तूफ़ानी हवा में सरकंडे की तरह काँप रहा था, उसके दाँत आपस में भींचे हुए थे और उसके कपड़े भीग रहे थे। जब वह ज़मीन पर पहुँचा, तो उसने कहा, "हे मेरे स्वामी, मुझे जाने दीजिए और मैं अपने कपड़े उतारकर निचोड़ लूँ और उन्हें फैला दूँ।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.87%** है।

और राजकुमारी बुदूर। धूप में जाओ, और दूसरे कपड़े पहन लो: फिर मैं तुम्हारे पास जल्दी लौटकर आऊंगा और तुम्हें उस युवती के बारे में बताऊंगा और उसकी कहानी सुनाऊंगा। - अल्लाह की कसम, ऐ मनहूस गुलाम, कमर-एज़-ज़ेमान ने जवाब दिया, अगर तुमने मौत का दर्द न सहा होता, तो तुम सच न बताते! तो जाओ, जो चाहो करो, और जल्दी लौटकर मुझे उस युवती की कहानी सुनाओ। यह सुनकर हिजड़ा मुश्किल से अपने बचने पर यकीन करते हुए निकल पड़ा और बिना रुके तब तक दौड़ता रहा जब तक वह कमर-एज़-ज़ेमान के पिता बादशाह शाह-ज़ेमान

के पास नहीं पहुँच गया, जहाँ उसने वज़ीर को उसके पास पाया और वे कमर-एज़-ज़ेमान के मामले पर बातचीत कर रहे थे। उसने राजा को वज़ीर से यह कहते सुना, “सचमुच, मैं कल रात कमर-एज़-ज़ेमान के बारे में अपने दिल की बेचैनी के कारण सो नहीं पाया, और मुझे डर है कि उस प्राचीन मीनार में कैद रहने से उस पर कोई विपत्ति आ पड़ेगी: उसे कैद करना बिल्कुल भी उचित नहीं था।” लेकिन वज़ीर ने उत्तर दिया, “उसके लिए चिंता न करें: अल्लाह की कसम, उसे कोई हानि नहीं होगी। उसे एक महीने के लिए कैद रहने दें, ताकि उसका स्वभाव नरम हो जाए।”—और जब वे इस प्रकार बातें कर रहे थे, तभी ऊपर वर्णित अवस्था में हिजड़ा उनके पास आया और राजा से कहा, “हे हमारे सुल्तान, आपके पुत्र को पागलपन हो गया है, और उसने मेरे साथ ऐसा किया है; और उसने मुझसे कहा, एक युवती कल रात मेरे साथ रही और चुपके से चली गई: इसलिए मुझे उसके बारे में बताइए।”—पर मैं उस युवती के बारे में कुछ नहीं जानता। — और जब सुल्तान शाह-ज़ेमुई ने अपने बेटे कमर-एज़-ज़ेमान के बारे में ये बातें सुनीं, तो वह चिल्ला उठा, “हे मेरे बेटे!” —और उन घटनाओं के कारण बने वज़ीर पर भयंकर क्रोधित हो गया और उससे कहा, “उठो और मुझे मेरे बेटे का हाल बताओ।” इसलिए वज़ीर राजा के भय से अपने वस्त्रों के किनारों को घसीटते हुए गया और हिजड़े के साथ मीनार की ओर चल पड़ा। सूरज निकल चुका था और वज़ीर कमर-एज़-ज़ेमान के पास गया और उसे पलंग पर कुरान पढ़ते हुए पाया; उसने उसे प्रणाम किया और उसके पास बैठकर कहा, “हे मेरे स्वामी, इस अशुभ दास ने हमें ऐसी सूचना दी है जिससे हम परेशान और विचलित हो गए हैं और राजा इस पर क्रोधित हो गया है।” तब कमर-एज़-ज़ेमान ने कहा, “हे वज़ीर, उसने मेरे बारे में तुम्हें क्या बताया है जिससे मेरे पिता परेशान हो गए हैं?” सच तो यह है कि उसने किसी को परेशान नहीं किया

है सिवाय

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.50%** है।

9t राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी, इत्यादि। — वज़ीर ने उत्तर दिया, वह हमारे पास दयनीय हालत में आया और उसने हमें एक बात बताई — अल्लाह न करे कि वह तुम्हारे बारे में सच हो! — उसने तुम्हारे बारे में ऐसा झूठ बोला है जिसका ज़िक्र करना उचित नहीं है। अल्लाह तुम्हारी जवानी, तुम्हारी बुद्धि और तुम्हारी वाक्पटुता को सलामत रखे, और तुमसे कभी कोई नीच बात न निकले! — इसलिए कमर-एज़-ज़ेमान ने उससे कहा, ऐ वज़ीर, इस अशुभ दास ने क्या कहा है? — वज़ीर ने उत्तर दिया, उसने हमें बताया कि तुम पागल हो गए थे और तुमने उससे कहा था, कल रात मेरे साथ एक युवती थी। — क्या तुमने तब हिजड़े से ये शब्द कहे थे? — और जब कमर-एज़-ज़ेमान ने यह सुना, तो वह बहुत क्रोधित हुआ और वज़ीर से कहा, मुझे स्पष्ट है कि आपने उस हिजड़े को ऐसा करने की शिक्षा दी थी, और उसे मना किया था कि वह मुझे उस युवती के बारे में न बताए जो पिछली रात मेरे साथ सो रही थी: परन्तु हे वज़ीर, आप हिजड़े से अधिक समझदार हैं; इसलिए मुझे तुरंत बताइए कि वह सुंदर युवती कहाँ चली गई जो पिछली रात मेरी गोद में सो रही थी; क्योंकि आप ही थे जिसने उसे मेरे पास भेजा था और उसे मेरी गोद में रात बिताने का आदेश दिया था; और मैं उसके साथ सुबह तक सोया, जब मैं जागा तो वह वहाँ नहीं थी। तो अब वह कहाँ है? — हे मेरे स्वामी कमर-एज़-ज़ेमान, वज़ीर ने उत्तर दिया, अल्लाह का नाम आपको घेरे रहे! अल्लाह की कसम, हमने पिछली रात आपके पास किसी को नहीं भेजा था, और आप अकेले सो रहे थे, दरवाजा आपके ऊपर बंद था, और हिजड़ा उसके पीछे सो रहा था; और न तो युवती और न ही कोई और

आपके पास आया। तो फिर, हे मेरे स्वामी, अपनी समझ में लौट आइए, और अब और परेशान न हों। हृदय। — लेकिन कमारेज़-ज़ेमान, उसकी बातों से क्रोधित होकर उससे बोला, हे वज़ीर, वह युवती मेरी प्रेमिका है, और वह काली आँखों और लाल गालों वाली सुंदर स्त्री है जिसे मैंने कल रात गले लगाया था। वज़ीर उसकी बातों पर आश्चर्यचकित हुआ और उससे पूछा, क्या तुमने उस युवती को आज रात अपनी आँखों से जागते हुए देखा था, या सोते हुए? हे अपशकुन बूढ़े, कमारेज़-ज़ेमान ने कहा, क्या तुम सोचते हो कि मैंने उसे अपने कानों से सुना था? नहीं, मैंने उसे अपनी आँखों से जागते हुए देखा था, और उसे अपने हाथ से पलटा था, और आधी रात तक उसके पास जागता रहा, उसकी सुंदरता, आकर्षण, शालीनता और कामुक रूप का आनंद लेता रहा: लेकिन तुमने उसे मना किया था कि वह मुझसे बात न करे; इसलिए उसने सोने का नाटक किया, और मैं सुबह तक उसके पास सोता रहा, जब मैं नींद से जागा, और उसे नहीं पाया। — वज़ीर ने उत्तर दिया, हे मेरे स्वामी कमर-एज़-ज़ेमान, शायद तुमने इसे अपने सपने में देखा होगा, और यह विभिन्न प्रकार के भोजन के मिश्रण के सेवन से उत्पन्न भ्रमित सपनों या व्यर्थ कल्पनाओं का परिणाम है, या दुष्ट शैतानों द्वारा प्रेरित कोई इड"क्यू है। — हे अशुभ ओएलसी| आदमी, ई^

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.63%** है।

कमर-एज़-ज़ेमान ने दावा किया, "तुम भी मेरा मज़ाक क्यों उड़ा रहे हो, और मुझसे क्यों कह रहे हो कि शायद यह उलझे हुए सपनों का नतीजा है, जबकि हिजड़े ने मुझसे कबूल किया है कि वह लड़की यहाँ थी, और मुझसे कहा, 'मैं तुरंत तुम्हारे पास लौटकर तुम्हें उसकी कहानी सुनाऊँगी'?" फिर वह तुरंत उठा, और वज़ीर के पास आकर उसकी दाढ़ी

अपने हाथ में पकड़ ली। दाढ़ी लंबी थी, और कमर-एज़-ज़ेमान ने उसे अपने हाथ में मरोड़कर वज़ीर को इस तरह खींचा कि वह पलंग से ज़मीन पर गिर पड़ा; वज़ीर को ऐसा लगा जैसे उसकी आत्मा निकल गई हो, जिस ज़ोर से उसकी दाढ़ी खींची गई थी। फिर कमर-एज़-ज़ेमान ने वज़ीर को लातों से मारना जारी रखा, और हाथों से उसकी गर्दन के पीछे तब तक पीटता रहा जब तक कि वह लगभग मरणासन्न नहीं हो गया। तब वज़ीर ने मन ही मन कहा, "यदि उस दास, उस हिजड़े ने झूठ बोलकर इस पागल युवक से अपनी जान बचाई, तो मेरे लिए भी झूठ बोलकर अपनी जान बचाना ज़्यादा उचित है; अन्यथा वह मुझे नष्ट कर देगा: इसलिए अब मैं झूठ बोलकर अपनी जान बचाऊँगा; क्योंकि वह पागल है: उसके पागलपन में कोई संदेह नहीं है।" तदनुसार, उसने कमर-एज़-ज़ेमान की ओर देखा और उससे कहा, "हे मेरे स्वामी, मुझ पर क्रोधित न हों; क्योंकि आपके पिता ने मुझे इस युवती के मामले को आपसे छुपाने का आदेश दिया था; परन्तु अब मैं मार से कमजोर और थका हुआ हूँ; क्योंकि मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मार सहने की शक्ति नहीं है: इसलिए मुझे थोड़ी देर का समय दीजिए, ताकि मैं आपको उस युवती की कहानी सुना सकूँ।" इस पर उसने उसे मारना बंद कर दिया और उससे कहा, "तुमने मार और अपमान के बाद ही मुझे उसकी कहानी क्यों नहीं बताई? अब उठो, हे अशुभ बूढ़े, और मुझे उसकी कहानी सुनाओ।" — तब वज़ीर ने उससे कहा, दोस्त

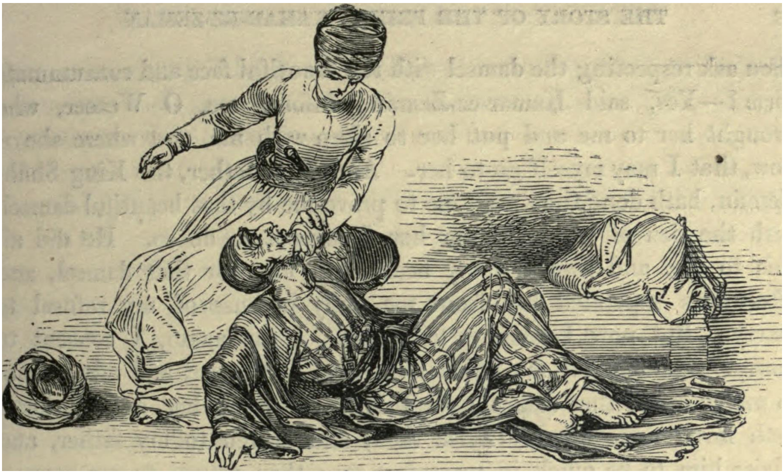

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.56%** है।

राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी: हे वज़ीर, मुझे बताइए कि उसे मेरे पास कौन लाया और मेरे साथ सुलाया, और वह अब कहाँ है, ताकि मैं स्वयं उसके पास जा सकूँ। और यदि मेरे पिता, बादशाह शाहज़ेमान ने मुझे उस सुंदर कन्या के द्वारा परखने के लिए ऐसा किया है, ताकि मैं उससे विवाह कर सकूँ, तो मैं इसके लिए तैयार हूँ। उन्होंने मेरे साथ यह सब किया और मेरे दिल में उस कन्या के लिए प्रेम जगाया, और बाद में उसे मुझसे अलग कर दिया, केवल इसलिए कि मैंने विवाह करने से इनकार कर दिया था। लेकिन अब मैं विवाह करने के लिए तैयार हूँ। मैं फिर कहता हूँ, मैं विवाह करने के लिए तैयार हूँ। इसलिए हे वज़ीर, मेरे पिता को यह बता दीजिए और उन्हें सलाह दीजिए कि वे मेरा विवाह उस कन्या से करा दें; क्योंकि मैं उसके सिवा किसी और को नहीं चाहता, और मेरे दिल ने किसी और से प्रेम नहीं किया है। उठो, जल्दी से मेरे पिता के पास जाओ और उन्हें सलाह दो कि वे मेरी शादी जल्दी कर दें; फिर तुरंत मेरे पास लौट आओ। वज़ीर को तब तक कमर-एज़-ज़ेमान से अपने बचने पर विश्वास नहीं हुआ जब तक कि वह मीनार से बाहर नहीं निकल गया;

और वह तब तक दौड़ता रहा जब तक कि वह बादशाह शाह-ज़ेमान के सामने नहीं आ गया; जब बादशाह ने उससे कहा, हे वज़ीर, मैं तुम्हें इस घबराहट की हालत में क्यों देख रहा हूँ, और किसने अपने दुष्टता से तुम्हें इतना दुख पहुँचाया है कि तुम भयभीत होकर आए हो? उसने उत्तर दिया, मैं तुम्हारे लिए समाचार लाया हूँ।47 — और वह क्या है? बादशाह ने पूछा। — जान लो, वज़ीर ने उत्तर दिया, कि तुम्हारे पुत्र कमर-एज़-ज़ेमान को पागलपन हो गया है। — और जब बादशाह ने ये शब्द सुने, तो उसके चेहरे के सामने उजाला अंधेरा हो गया, और उसने कहा, हे वज़ीर, मुझे मेरे पुत्र के पागलपन का कारण समझाओ। वज़ीर ने उत्तर दिया, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।" उसने राजा को अपने पुत्र के किए गए कार्य के बारे में बताया। इस पर राजा ने उससे कहा, "हे वज़ीर, जान लो कि मेरे पुत्र के पागलपन की सूचना देने के बदले में मैं तुम्हारा सिर कलम कर दूँगा और तुम पर से अपनी कृपाएँ समाप्त कर दूँगा। हे वज़ीरों में सबसे अशुभ और अमीरों में सबसे नीच! क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुमने मुझे जो दुष्ट सलाह दी, उसी से मेरे पुत्र का पागलपन हुआ है। अल्लाह की कसम, यदि मेरे पुत्र को कोई हानि या पागलपन हुआ है, तो मैं तुझे कुब्बे पर कीलों से ठोक दूँगा और तुझे कष्ट का स्वाद चखाऊँगा।" तब राजा उठा और वज़ीर को अपने साथ लेकर उस मीनार में प्रवेश किया जिसमें कमर-एज़-ज़ेमान स्थित था। और जब वे उसके पास आए, तो वह अपने पिता के सामने खड़ा हो गया, जिस पलंग पर वह बैठा था, उससे जल्दी से नीचे उतर गया; और अपने पिता के हाथों को चूमने के बाद, पीछे हट गया, और अपना सिर जमीन की ओर झुका लिया, और अपने पिता के सामने अपने हाथों को पीठ के पीछे जोड़कर खड़ा हो गया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.14%** है।

और राजकुमारी बुदूर। 97 एमएस वह कुछ देर वहीं रुका रहा; उसके बाद उसने अपने पिता की ओर सिर उठाया और आँखों से आँसू बहते हुए, कवि के शब्दों का पाठ किया: — यदि मैंने आपके विरुद्ध कोई दोष किया है और कोई शर्मनाक काम किया है, तो मैं अपने अपराध के लिए पश्चाताप करता हूँ, और आपकी दया उस पापी पर भी पड़ेगी जो क्षमा माँगता है। इस पर राजा उठे और अपने पुत्र कमर-एज़-ज़ेमान को गले लगाया, उसकी आँखों के बीच चूमा और उसे अपने पास पलंग पर बैठाया। फिर क्रोध भरी दृष्टि से वज़ीर की ओर देखते हुए उन्होंने उससे कहा, हे वज़ीरों के कुत्ते, तू मेरे पुत्र के विषय में ऐसी-ऐसी बातें क्यों कहता है और उसके कारण मेरे हृदय को भयभीत क्यों करता है? फिर वे अपने पुत्र की ओर मुड़े और उससे कहा, हे मेरे पुत्र, आज का क्या नाम है? — हे मेरे पिता, उसने उत्तर दिया, आज शनिवार है, कल रविवार है, उसके बाद सोमवार, फिर मंगलवार, फिर बुधवार, फिर गुरुवार और फिर शुक्रवार। और राजा ने उससे कहा, हे मेरे पुत्र, हे कमर-एज़-ज़ेमान, तुम्हारी सुरक्षा के लिए ईश्वर का धन्यवाद! अरबी में इस महीने का नाम क्या है? — उसने उत्तर दिया, "इसका नाम ज़ू-1-कादेह है, और इसके बाद ज़ू-1-हेज्जेह, मोहर्रम, सफ़र, रबीआ अल-ओव्वल, रबीआ एथ-थानी, जुमादा-1ओला, जुमादा-थ-थानीयेह, रेजेब, शाबान, रमज़ान और शोवल आते हैं।"49 इस उत्तर से राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसने वज़ीर के मुँह पर थूकते हुए कहा, "हे दुष्ट बूढ़े, तू कैसे कह सकता है कि मेरा पुत्र कमर-एज़-ज़ेमान पागल हो गया है, जबकि वास्तव में तेरे सिवा कोई पागल नहीं हुआ है?" वज़ीर ने अपना सिर हिलाया और कुछ बोलने ही वाला था कि उसके मन में यह विचार आया कि उसे थोड़ा इंतजार करना चाहिए और देखना चाहिए कि आगे क्या होता है। तब राजा ने अपने पुत्र से कहा, "हे मेरे पुत्र, तूने हिजड़े और वज़ीर से क्या कहा था, जब तूने

उनसे कहा था कि मैं कल रात एक सुंदर कन्या के साथ सो रहा था? और तूने जिस कन्या का ज़िक्र किया है, उसका क्या मामला है?" — और कमर-एज़-ज़ेमान अपने पिता की बातों पर हँसा और उत्तर दिया, "हे मेरे पिता, जान लीजिए कि मुझमें मज़ाक सहने की शक्ति नहीं है; इसलिए मुझ पर एक और शब्द मत जोड़िए; क्योंकि आपने जो मेरे साथ किया है, उससे मेरा स्वभाव बिगड़ गया है। हे मेरे पिता, जान लीजिए कि मैं विवाह के लिए सहमत हूँ; लेकिन इस शर्त पर कि आप मेरा विवाह उस कन्या से करा दें जो कल रात मेरे साथ सो रही थी; क्योंकि मुझे पूरा विश्वास है कि तूने ही उसे मेरे पास भेजा था और मुझे उससे प्रेम हो गया था, और तूने ही उसे सुबह होने से पहले भेजा था।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.83%** है।

 और उसे मुझसे ले गए। — इस पर राजा ने कहा, हे मेरे पुत्र, अल्लाह का नाम तुझे घेरे रहे! अल्लाह तेरी बुद्धि को कुटिल होने से बचाए! यह कौन सी युवती है जिसके बारे में तू कहता है कि मैंने उसे पिछली रात तेरे पास भेजा था और फिर सुबह होने से पहले उसे तुझसे ले जाने के लिए भेजा था? हे मेरे पुत्र, अल्लाह की कसम, मुझे इस मामले की कोई जानकारी नहीं है। तो मैं तुझसे विनती करता हूँ कि मुझे बता: क्या यह कोई भ्रमित सपना है, या भोजन के कारण उत्पन्न कल्पना? क्योंकि तू पिछली रात विवाह के विषय में व्याकुल हृदय से, और उस विषय के उल्लेख से प्रेरित कल्पनाओं से प्रेरित होकर गुजरा। विवाह और उसके समय पर, और उस पर भी अभिशाप हो जिसने मुझे इस मामले में सलाह दी! इसमें कोई शक नहीं कि तुम्हारा स्वभाव इसी कारण विचलित है, इसीलिए तुमने सपने में देखा कि एक सुंदर युवती तुम्हें गले लगा रही थी, और तुम अपने मन में यह मानते हो

कि तुमने यह सब जागते हुए देखा, जबकि हे मेरे पुत्र, यह सब एक भ्रमित सपना था। — लेकिन कमर-एज़-ज़ेमान ने उत्तर दिया, इन शब्दों से दूर रहो, और अल्लाह, सृष्टिकर्ता, सर्वज्ञ, शक्तिशाली का नाश करने वाले और दुष्टों का नाश करने वाले, की कसम खाकर कहो कि तुम्हें उस युवती या उसके निवास स्थान का कोई ज्ञान नहीं था। तब राजा ने कहा, महान अल्लाह, मूसा और इब्राहीम के ईश्वर की कसम, मुझे उस बात का कोई ज्ञान नहीं है जिसका तुम उल्लेख कर रहे हो, और संभवतः यह एक भ्रमित सपना था जो तुमने नींद में देखा। तब कमर-एज़-ज़ेमान ने कहा, मैं तुम्हें एक दृष्टांत सुनाता हूँ, जिससे यह सिद्ध हो सके कि यह घटना मेरे जागते समय घटी थी। मैं तुमसे पूछता हूँ कि क्या कभी ऐसा हुआ है कि किसी व्यक्ति ने सपने में देखा हो कि वह युद्ध कर रहा है, और एक भयंकर लड़ाई के बाद जब वह नींद से जागा तो उसके हाथ में खून से सनी तलवार मिली हो? उसके पिता ने उत्तर दिया, नहीं, अल्लाह की कसम, मेरे बेटे: ऐसा कभी नहीं हुआ। तब कमर-एज़-ज़ेमान ने कहा, मैं तुम्हें अपने साथ घटी घटना के बारे में बताता हूँ; और वह यह थी: मुझे ऐसा लगा जैसे मैं पिछली रात आधी रात को नींद से जागा और अपने बगल में एक युवती को सोते हुए पाया, जिसका शरीर और आकृति बिल्कुल मेरे जैसी थी। मैंने उसे गले लगाया, अपने हाथ से उसे छुआ और उसकी अंगूठी लेकर अपनी उंगली में पहन ली। उसने मेरी अंगूठी उतारकर अपनी उंगली में पहन ली। लेकिन मैंने तुम्हारे प्रति शर्मिंदगी के कारण उससे संकोच से देखा। क्योंकि मैंने सोचा था कि तुमने ही उसे भेजा है और तुम कहीं छिपकर मेरी हरकतों पर नज़र रख रहे हो। इसलिए तुम्हारे कारण मुझे उसके होंठों पर चुंबन करने में शर्म आ रही थी, क्योंकि मेरे मन में यह ख्याल आया कि तुम उसके ज़रिए मुझे लुभाना चाहते हो, मुझे शादी के लिए राजी करना चाहते हो। बाद में भोर होते ही मैं नींद से जागा,

और मुझे वह लड़की न मिली, न ही उसके बारे में कोई खबर मिली; और उसके बीच क्या हुआ?

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.22%** है।

राजकुमारी बुदूल। 99 मैं, हिजड़ा और वज़ीर इसी का परिणाम थे। अब यह मामला वैसा कैसे हो सकता है जैसा तुम सोचते हो, जबकि अंगूठी वाली घटना सच है? अगर अंगूठी न होती तो मैं इसे सपना समझता; लेकिन यह उसकी अंगूठी है जो इस समय मेरी छोटी उंगली में है। देखो, हे राजा, इसका क्या महत्व है। तब कमर-एज़-ज़ेमान ने अंगूठी अपने पिता को सौंप दी, जिन्होंने उसे लेकर घुमाया और अपने बेटे की ओर देखकर कहा, "निश्चित रूप से इस अंगूठी पर कोई बड़ा और महत्वपूर्ण रहस्योद्घाटन निर्भर करता है, और जो कुछ तुम्हारे साथ कल रात इस युवती के साथ हुआ वह एक रहस्यमय घटना है। मुझे नहीं पता कि यह आगंतुक हमारे बीच कैसे आया, और इस सब का कारण वज़ीर के अलावा कोई नहीं था। फिर भी, हे मेरे बेटे, मैं अल्लाह की कसम खाकर तुमसे विनती करता हूँ कि तुम धैर्य रखो; क्योंकि संभवतः ईश्वर इस कष्ट को तुमसे दूर करेगा और तुम्हें पूर्ण राहत प्रदान करेगा।" जैसा कि कवि ने कहा है, — शायद भाग्य अपना रुख बदलेगा और समृद्धि लाएगा; क्योंकि भाग्य परिवर्तनशील है। मेरी इच्छाएँ पूरी हों, मेरी ज़रूरतें पूरी हों, और सुखद घटनाएँ प्रतिकूल परिस्थितियों के बाद आएँ। हे मेरे पुत्र, उन्होंने आगे कहा, अब मुझे यकीन हो गया है कि तुम पागल नहीं हो; लेकिन तुम्हारे मामले का समाधान ईश्वर के सिवा कोई नहीं कर सकता। — इस्मार-एज़-ज़ेमान ने उत्तर दिया, अल्लाह की कसम, हे मेरे पिता, मेरे लिए इस युवती को ढूँढ़ो और उसके आने में जल्दी करो; अन्यथा मैं पीड़ा से मर जाऊँगा। फिर, प्रसन्नता के भाव से, उसने अपने पिता की ओर

देखा और ये दो छंद पढ़े: — यदि वास्तविक मुलाकात का तुम्हारा वादा झूठा हो, तो प्रेमी को स्वप्न में मुलाकात या दर्शन कराओ। लेकिन, उन्होंने उत्तर दिया, नींद से वंचित युवक की आँखों के सामने प्रेत कैसे प्रकट हो सकता है? हे मेरे पिता, उन्होंने आगे कहा,51 मेरे पास उसके लिए एक घंटे भी प्रतीक्षा करने का धैर्य नहीं है। इस पर राजा ने अपने हाथ जोड़कर कहा, "सर्वोच्च, महान ईश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है! इस मामले में कोई छल-कपट काम नहीं आएगा!" फिर उन्होंने अपने पुत्र का हाथ पकड़ा और उसे महल ले गए, जहाँ कमारेज़-ज़ेमान बीमारी के बिस्तर पर लेट गया, और उसका पिता उसके सिरहाने बैठकर अपने पुत्र के लिए शोक मनाता और रोता रहा, और न रात न दिन, न उसके पास से हटा। अंत में वज़ीर ने राजा से कहा, "हे युग के राजा, आप अपने पुत्र कमारेज़-ज़ेमान के साथ कब तक सेना से अलग-थलग रहेंगे? संभवतः आपके साम्राज्य के स्वामियों से अलगाव के कारण राज्य की व्यवस्था भ्रष्ट हो सकती है। यह आपका कर्तव्य है कि..."

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.99%** है।

100 राजकुमार क़मर-एज़-ज़ेमान की कहानी: जब भी उनके शरीर में विभिन्न रोग हों, तो वे अपनी हड्डियों के लिए औषधियाँ लेते हैं; और मेरी सलाह है कि आप अपने पुत्र को इस स्थान से महल के समुद्र की ओर मुख वाले मंडप में ले जाएँ और वहाँ अपने पुत्र के साथ एकांतवास में समय बिताएँ, और सप्ताह में दो दिन, अर्थात् गुरुवार और सोमवार, राजकीय जुलूस और दरबार के लिए निर्धारित करें। अतः, इन दो दिनों में, अमीर, वज़ीर, चैंबरलेन, लेफ्टिनेंट, साम्राज्य के अन्य स्वामी और राज्य के प्रमुख व्यक्ति, उग्र योद्धा और शेष सैनिक और प्रजा, आपके पास आएँगे और अपने मामले आपके समक्ष प्रस्तुत करेंगे, और आप उनकी

आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगे और उनके बीच न्याय करेंगे, उनसे लेंगे और उन्हें देंगे, और आदेश देंगे और मना करेंगे; और सप्ताह के शेष दिन आप अपने पुत्र क़मर-एज़-ज़ेमान के साथ बिताएँगे। इस प्रकार तुम तब तक ऐसा करते रहो जब तक ईश्वर तुम्हारे और उसके दुखों को दूर न कर दे; और हे राजा, भाग्य के उतार-चढ़ाव और समय की विपत्तियों से अपनी सुरक्षा के प्रति आश्वस्त मत रहो; क्योंकि बुद्धिमान व्यक्ति हमेशा सतर्क रहता है। — और जब सुल्तान ने वज़ीर के ये शब्द सुने, तो उसने उसकी सलाह को स्वीकार कर लिया और पाया कि यह उसके मामले के अनुकूल है: इससे उस पर गहरा प्रभाव पड़ा और उसे भय हुआ कि उसके राज्य की व्यवस्था उसके चारों ओर भंग हो जाएगी; इसलिए वह तुरंत उठा और अपने पुत्र को उस स्थान से महल में समुद्र के किनारे बने मंडप में ले जाने का आदेश दिया। उस तक पहुँचने का मार्ग समुद्र के बीचोंबीच बने एक पुल से होकर जाता था, जिसकी चौड़ाई बीस क्यूबिट थी। मंडप के चारों ओर समुद्र की ओर खुलने वाली खिड़कियाँ थीं, उसका फर्श रंगीन संगमरमर से बना था और उसकी छत हर रंग के उत्तम रंगों से रंगी हुई थी और सोने और गहरे नीले रंग से सजी हुई थी; और उन्होंने कमर-एज़-ज़ेमान के लिए उसमें रेशमी कालीन बिछाए, दीवारों पर जटाएँ लगाईं और रत्नों से सजे पर्दे टांगे। कमर-एज़-ज़ेमान उसमें दाखिल हुआ और अपनी अत्यधिक वासना के कारण वह अत्यंत बेचैन हो गया, उसका हृदय व्याकुल हो गया, उसका रंग पीला पड़ गया और उसका शरीर क्षीण हो गया। उसके पिता उसके पास बैठकर उसके लिए शोक मनाते रहे; और प्रत्येक गुरुवार और सोमवार को राजा सभी अमीरों, वज़ीरों, दरबारी, सेनापतियों और साम्राज्य के अन्य सरदारों, और सभी सैनिकों और प्रजाजनों को, जो आना चाहते थे, उस तंबू में आने की अनुमति देता था। इस प्रकार वे प्रवेश करते, अपनी-अपनी सेवाएँ करते और दिन ढलने तक

उसके साथ रहते, फिर वे अपने-अपने रास्ते चले जाते; इसके बाद, राजा उस स्थान पर अपने पुत्र कमर-एज़-ज़ेमान के पास जाता और उसे दिन-रात नहीं छोड़ता; और इस प्रकार वह कई दिनों और रातों तक ऐसा करता रहा। कमर-एज़-ज़ेमान के साथ यही हुआ। अब मुझे रानी बुदूर के साथ घटी घटनाओं का वर्णन करना होगा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.24%** है।

और राजकुमारी बुदूर, जो द्वीपों और सात महलों के स्वामी राजा अल-गयूर की पुत्री थीं। — जब जिन्न उन्हें वापस ले जाकर उनके पलंग पर लिटा दिया, तो रात के केवल तीन घंटे ही बचे थे; और जब सुबह हुई तो वह नींद से जाग उठीं, उठ बैठीं और दाएं-बाएं देखा; लेकिन उन्हें अपना प्रियतम नहीं दिखा जो उनकी गोद में सो रहा था। इस पर उनका हृदय व्याकुल हो गया, उनकी बुद्धि काम करना बंद कर गई और वह जोर से रोने लगीं। तब उनकी सभी दासियां, दाइयां और कहरामनेह जाग उठीं और उनके पास आईं, और उनमें से मुखिया ने उनकी ओर बढ़ते हुए उनसे कहा, हे मेरी स्वामिनी, तुम्हें क्या हो गया है? — हे अशुभ बुढ़िया, बुदूर देवी ने कहा, मेरा प्रियतम कहाँ है, वह सुंदर युवक जो आज रात मेरी गोद में सो रहा था? मुझे बताओ वह कहाँ चला गया है। — और जब कहरामनेह ने ये शब्द सुने, तो उसके चेहरे के सामने उजाला अंधेरा छा गया, और अपनी शक्ति से बहुत भयभीत होकर उसने कहा, हे मेरी स्वामिनी बुदूर, इन अपमानजनक शब्दों का क्या अर्थ है? लेकिन बुदूर ने कहा, हे अशुभ बुढ़िया, तुझ पर धिक्कार है! मेरा प्रियतम कहाँ है, वह सुंदर युवक, जिसका चेहरा प्यारा था, जिसकी आँखें काली थीं और जिसकी भौहें जुड़ी हुई थीं, जो सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय तक मेरे साथ था? — बुढ़िया ने उत्तर दिया, अल्लाह की कसम, मैंने न तो किसी युवक

को देखा है और न ही किसी अन्य व्यक्ति को, और हे मेरी स्वामिनी, अल्लाह की कसम, मैं तुमसे विनती करती हूँ कि तुम इस अनुचित तरीके से मज़ाक न करो, कहीं ऐसा न हो कि हमारी जान चली जाए; क्योंकि शायद यह मज़ाक तुम्हारे पिता को पता चल जाए, और कौन हमें उनके हाथ से बचाएगा? रानी बुदूर ने उससे कहा, पिछली रात मेरे साथ एक युवक था, जो दिखने में सबसे सुंदर था। — हे ईश्वर, अपनी बुद्धि की रक्षा करो! कहरामनेह ने कहा, "तुम्हारे साथ रात बिताने वाला कोई नहीं था।" इस पर बुदूर ने अपना हाथ देखा और उसकी उंगली पर कमर-एज़-ज़ेमान की अंगूठी पाई, अपनी अंगूठी नहीं। तब उसने कहरामनेह से कहा, "धिक्कार है तुम पर, हे धोखेबाज़! क्या तू झूठ बोल रहा है और मुझसे कह रहा है कि तुम्हारे साथ रात बिताने वाला कोई नहीं था, और अल्लाह की झूठी कसम खा रहा है?" कहरामनेह ने जवाब दिया, "अल्लाह की कसम।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.49%** है।

102 प्रिक्सिक कामर-एक्स-ज़ेमैक्स आदि की कहानी। मैंने तुमसे झूठ नहीं बोला, न ही झूठी कसम खाई है। और बुदूर नाम की महिला उस पर क्रोधित हो गई; और उसने पास पड़ी तलवार निकालकर कहरामनेह पर वार किया और उसे जान से मार डालना चाहा।52 लेकिन हिजड़े और दासियों ने उसे देखकर शोर मचाया और जाकर उसके पिता को उसकी हालत बताई। इसलिए राजा तुरंत अपनी बेटी, बुदूर नाम की महिला के पास आया और उससे कहा, हे मेरी बेटी, तुम्हें क्या हुआ है? - हे मेरे पिता, उसने कहा, वह युवक कहाँ है जो कल रात मेरे पास सो रहा था? - उसका दिमाग सुन्न हो गया और वह इधर-उधर देखने लगी और फिर उसने अपनी बनियान को फाड़कर उसका किनारा बना दिया। जब उसके

पिता ने उसे ऐसा करते देखा, तो उन्होंने दासियों और हिजड़ों को उसे पकड़ने का आदेश दिया; और उन्होंने उसे पकड़ लिया, उसे बांध दिया, उसके गले में लोहे की जंजीर डाल दी और उसे महल की खिड़की से लटका दिया।53 अब उसके पिता की स्थिति बहुत खराब हो गई; क्योंकि वह उससे प्रेम करते थे और उसकी हालत से बहुत दुखी थे। इसलिए उन्होंने ज्योतिषियों, ऋषियों और जादू-टोने में निपुण लोगों को बुलाया और उनसे कहा, जो कोई मेरी बेटी को इस बीमारी से ठीक करेगा, मैं उससे उसका विवाह कराऊंगा और उसे अपने राज्य का आधा हिस्सा दूंगा; और जो कोई उसे ठीक करने में असफल रहेगा, मैं उसका सिर काट दूंगा और उसे महल के द्वार पर लटका दूंगा। और वह ऐसा तब तक करता रहा जब तक उसने उसके कारण चालीस सिर नहीं काट दिए। उसने सभी ऋषियों से परामर्श लिया; लेकिन सभी लोगों ने उसके उपचार का प्रयास करने से परहेज किया और सभी ऋषि उसे ठीक करने में असमर्थ रहे; उसकी स्थिति ने विज्ञानियों और जादू-टोने में निपुण लोगों को भी उलझन में डाल दिया। बुदूर देवी तीन साल तक इसी हालत में रहीं। अब उसका एक दत्तक भाई था जिसका नाम मरज़वान था, जो सुदूर देशों की यात्रा पर गया हुआ था और इतने समय तक उससे दूर रहा था। वह उससे बहुत अधिक प्रेम करता था, भाइयों के प्रेम से भी कहीं अधिक। जब वह लौटा, तो उसने अपनी माँ के पास जाकर अपनी बहन, बुदूर की पत्नी के बारे में पूछा। माँ ने उससे कहा, "हे मेरे पुत्र, तेरी बहन पागल हो गई है; वह तीन वर्ष से इसी अवस्था में है, उसके गले में लोहे की जंजीर है, और चिकित्सक उसे ठीक करने में असमर्थ हैं।" मरज़वान ने ये शब्द सुनकर कहा, "मुझे उससे मिलने जाना चाहिए: शायद मैं उसकी बीमारी का पता लगा सकूँ और उसे ठीक कर सकूँ।" उसकी माँ ने यह सुनकर उत्तर दिया, "तुम्हें उससे मिलने जाना चाहिए, लेकिन कल तक प्रतीक्षा करो, ताकि मैं

तुम्हारे उद्देश्य को पूरा करने के लिए कोई उपाय सोच सकूँ।" फिर वह बुदूर महिला के महल में गई और द्वारपाल के रूप में तैनात हिजड़े से मिलकर उसे एक उपहार दिया और कहा, मेरी एक बेटी है जिसका पालन-पोषण बुदूर महिला के साथ हुआ है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.91%** है।

और मैंने उससे विवाह कर लिया है; और तुम्हारी मालकिन के साथ जो कुछ हुआ, उसके कारण उसका हृदय उसकी स्थिति को लेकर बहुत चिंतित हो गया। इसलिए मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मेरी बेटी उससे मिलने के लिए थोड़ी देर के लिए जाए, और फिर बिना किसी को बताए उसी रास्ते से वापस लौट आए। - हिजड़े ने उत्तर दिया, यह रात के अलावा असंभव होगा: इसलिए जब सुल्तान अपनी बेटी से मिलने आएँ और चले जाएँ, तब तुम अपनी बेटी के साथ अंदर आना। तब बुढ़िया ने हिजड़े का हाथ चूमा और अपने घर चली गई; और अगली रात होते ही वह तुरंत उठी और अपने बेटे मरज़वान को लेकर उसे महिलाओं के वस्त्र पहनाए, फिर उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसे महल में ले गई। वह उसे लेकर तब तक आगे बढ़ी जब तक कि सुल्तान अपनी बेटी से विदा नहीं हो गया, और जब हिजड़े ने उसे देखा, तो वह उठा और उससे कहा, अंदर आओ; लेकिन ज्यादा देर मत रुको। जब बूढ़ी औरत अपने बेटे मरज़वान के साथ अंदर आई, तो उसने बुदूर नाम की महिला को उसी हालत में देखा जैसा पहले बताया गया था, और अपनी माँ के स्त्री वस्त्र उतारने के बाद उसने उन्हें प्रणाम किया। फिर मरज़वान ने अपने साथ लाई किताबें निकालीं और मोमबत्ती जलाई। लेकिन बुदूर नाम की महिला ने उसे देखते ही पहचान लिया और उससे कहा, "हे मेरे भाई, तुम यात्रा पर थे, और तुम्हारे बारे में खबर नहीं मिली।" — सत्य।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.62%** है।

104 प्रिसे कामर-एज़-ज़ेमान की कहानी, इत्यादि। उसने उत्तर दिया; परन्तु ईश्वर ने मुझे सुरक्षित लौटा दिया है, और मैं फिर से यात्रा करना चाहता था, और तुम्हारे विषय में सुनी इस खबर के सिवा मुझे कोई और चीज़ नहीं रोक रही थी; जिसके कारण मेरा हृदय तुम्हारे कारण व्याकुल है; इसलिए मैं तुम्हारे पास इस आशा से आया हूँ कि मैं तुम्हारी बीमारी का पता लगा सकूँ और तुम्हारा इलाज कर सकूँ। — परन्तु उसने कहा, हे मेरे भाई, क्या तुम सोचते हो कि मुझ पर पागलपन छा गया है? फिर, उसे इशारा करते हुए, उसने ये दो श्लोक सुनाए: — उन्होंने कहा, तुम जिससे प्रेम करती हो, उस पर पागल हो रही हो। और मैंने उत्तर दिया, जीवन का आनंद केवल पागलों के लिए है। ठीक है: मैं पागल हूँ: तो उसे मेरे पास लाओ जिस पर मैं पागल हूँ; और यदि वह मेरे पागलपन का इलाज कर

दे, तो मुझे दोष मत देना। तब मरज़वान समझ गया कि वह प्रेम में है; और उसने उससे कहा, मुझे अपनी कहानी और अपने साथ घटी सारी बातें बताओ: शायद ईश्वर मुझे वह रास्ता दिखा दे जिससे तुम्हें मुक्ति मिल सके। तब बुदूर नाम की महिला ने उत्तर दिया, हे मेरे भाई, मेरी कहानी सुनो। कहानी यह है: — एक रात, रात के आखिरी तिहाई हिस्से में, मैं नींद से जागी और उठकर बैठ गई, तो मैंने अपने बगल में एक युवक को देखा, जो अत्यंत सुंदर था, ऐसा सुंदर जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता, मानो वह पूर्वी विलो की टहनी या भारतीय बेंत हो। तो मैंने सोचा कि मेरे पिता ने उसे ऐसा करने का आदेश दिया है, ताकि वह मुझे उससे लुभा सके; क्योंकि जब राजाओं ने मुझसे विवाह करने की मांग की थी, तो उन्होंने मुझसे विवाह करने के लिए कहा था, और मैंने इनकार कर दिया था; और इसी विचार ने मुझे उसे जगाने से रोक दिया। मुझे डर था कि अगर मैं उसे गले लगा लूँगी, तो शायद वह मेरे पिता को इसके बारे में बता देगा। और जब मैं सुबह उठी, तो मैंने अपनी अंगूठी की जगह उसकी अंगूठी पाई। यही मेरी कहानी है; और, हे मेरे भाई, जब से मैंने उसे देखा है, मेरा हृदय उसी पर आसीन है; मेरी अत्यधिक वासना और इच्छा के कारण मुझे नींद नहीं आती, और मेरे पास आँसू बहाने और दिन-रात श्लोक पढ़ने के सिवा कोई काम नहीं है। तो देखो, हे मेरे भाई, तुम मेरी इस पीड़ा में मेरी सहायता कैसे कर सकते हो। — यह सुनकर मरज़वान कुछ देर तक अपना सिर ज़मीन की ओर झुकाए बैठा रहा, सोचता रहा और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। फिर उसने अपना सिर उठाया और उससे कहा, जो कुछ भी तुम्हारे साथ हुआ है, वह सब सच है; और सचमुच इस युवक की कहानी ने मेरी कल्पना को थका दिया है; लेकिन मैं सभी देशों में घूमूंगा और तुम्हारे उद्धार का उपाय खोजूंगा। शायद ईश्वर मेरे हाथों से यह कार्य पूरा कर दे। इसलिए धैर्य रखो और

विचलित मत हो। — ऐसा कहकर उसने उसे विदाई दी, प्रार्थना की कि उसे धैर्य मिले, और वहाँ से चला गया। वह अपनी माँ के घर लौट आया और उस रात वहीं सो गया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.17%** है।

सुबह होते ही उसने यात्रा की तैयारी की। वह निकल पड़ा और पूरे एक महीने तक शहर-शहर और द्वीप-द्वीप घूमता रहा। इसके बाद वह एत-तर्फ नामक शहर में पहुँचा,34 और रानी बुदूर के इलाज की उम्मीद में लोगों से जानकारी लेने लगा। जब भी वह किसी शहर में प्रवेश करता या उसके पास से गुजरता, तो उसे यही सुनने को मिलता था कि बादशाह अल-गयूर की बेटी रानी बुदूर पागलपन से पीड़ित है; और वह एत-तर्फ पहुँचने तक जानकारी लेता रहा, जहाँ उसे पता चला कि बादशाह शाह-ज़ेमान का बेटा कमर-एज़-ज़ेमान बीमार है और उसे मानसिक विकार और पागलपन हो गया है। इसलिए जब मरज़वान ने उसकी कहानी सुनी, तो उसने उस शहर के कुछ लोगों से उसके देश और राजधानी के बारे में पूछा; और उन्होंने उसे उत्तर दिया, खालिदान के द्वीप; और हमारे और उनके बीच समुद्र के रास्ते पूरे एक महीने की यात्रा है; लेकिन सड़क मार्ग से यात्रा में छह महीने लगते हैं। ii. पी

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.89%** है।

राजकुमार कमाई-केजेड/केमैक्स आदि की कहानी। मरज़वान खालिदन द्वीप समूह के लिए रवाना हुए। जहाज यात्रा के लिए तैयार था और एक महीने तक हवा भी अनुकूल रही, जिसके बाद शहर उनके सामने आ गया; लेकिन जैसे ही वे शहर के नज़दीक पहुँचे और तट के लगभग करीब आ गए, अचानक तेज़ हवा चलने लगी, जिससे पाल उखड़ गया और जहाज अपने सामान समेत पलट गया। हर कोई अपनी जान बचाने के लिए

भागा; लेकिन मरज़वान को धारा अपने साथ बहाकर ले गई और वह राजा के तंबू के नीचे पहुँच गया, जहाँ कमर-एज़-ज़ेमान विराजमान थे। संयोगवश, अमीर और वज़ीर उनकी सेवा में एकत्रित थे और राजा शाह-ज़ेमान अपने पुत्र कमर-एज़-ज़ेमान का सिर अपनी गोद में लिए बैठे थे और एक हिजड़ा उनके सिर से मक्खियाँ हटा रहा था। कमर-एज़-ज़ेरनान ने दो दिनों से न कुछ खाया था, न पिया था और न ही बोला था। वज़ीर, जो उसके चरणों में, समुद्र की ओर खुलने वाली खिड़की के पास खड़ा था, ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और देखा कि मरज़वान लहरों में बहकर अपनी अंतिम साँसें ले रहा है। यह देखकर उसका हृदय उस पर दया से भर गया और वह सुल्तान के पास जाकर, उसकी ओर सिर झुकाकर बोला, “मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि मुझे तंबू के प्रांगण में उतरने और उसका द्वार खोलने की अनुमति दें, ताकि मैं समुद्र में डूब रहे एक व्यक्ति को बचा सकूँ और उसकी पीड़ा को आनंद में बदल सकूँ। शायद इसी कारण ईश्वर आपके पुत्र को इस विपत्ति से मुक्ति दिला दे।” सुल्तान ने उत्तर दिया, “मेरे पुत्र के साथ जो कुछ भी हुआ है, वह तुम्हारे कारण हुआ है। संभवतः यदि तुम इस डूबते हुए व्यक्ति को बचा लोगे, तो वह हमारे बारे में जान जाएगा और मेरे पुत्र को इस हालत में देखकर मुझ पर प्रसन्न होगा।” लेकिन मैं अल्लाह की कसम खाता हूँ कि अगर यह डूबता हुआ आदमी ऊपर आकर मेरे बेटे को देखे और फिर हमारे किसी भी राज़ को उजागर करे, तो मैं निश्चय ही उसके सामने तेरा सिर काट दूँगा; क्योंकि हे वज़ीर, हम पर जो भी विपत्ति आई है, उसका कारण तू ही है। तो जैसा तू चाहे, वैसा कर। वज़ीर उठा और आँगन का दरवाज़ा खोलकर पुल पर उतर गया और बीस कदम चलकर समुद्र तक पहुँचा, जहाँ उसने मरज़वान को मृत्यु के कगार पर देखा। उसने उसकी ओर हाथ बढ़ाया और उसके बालों को पकड़कर उसे ऊपर खींच लिया; और मरज़वान बेहोशी की

हालत में, पेट में पानी भरा हुआ और आँखें बाहर निकली हुई, समुद्र से बाहर आया। वज़ीर ने तब तक प्रतीक्षा की जब तक उसकी प्राण शक्ति वापस नहीं आ गई, फिर उसने उसके कपड़े उतारकर उसे दूसरे कपड़े पहनाए और अपने जवानों में से एक की पगड़ी उसके सिर पर रख दी; इसके बाद उसने उससे कहा, जान लो कि मैं तुम्हारे लिए एक माध्यम बना हूँ।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.78%** है।

मुझे डूबने से बचाओ, और तुम मेरी और अपनी मृत्यु का कारण मत बनो। — ऐसा कैसे? मरज़वान ने पूछा। वज़ीर ने उत्तर दिया, क्योंकि अब तुम अमीरों और वज़ीरों के बीच आओगे, जो सब चुप हैं, कुछ नहीं बोल रहे, सुल्तान के पुत्र कमर-एज़-ज़ेमान के कारण। और जब मरज़वान ने कमर-एज़-ज़ेमान का ज़िक्र सुना, तो वह उसे पहचान गया, क्योंकि उसने उसके बारे में उन देशों में सुना था जहाँ से वह आया था; लेकिन उसने पूछा, कमर-एज़-ज़ेमान कौन है? वज़ीर ने उत्तर दिया, वह सुल्तान शाहज़ेमान का पुत्र है, और बीमार है, बिस्तर पर पड़ा है, बिना आराम किए, रात-दिन का पता नहीं। उसका शरीर क्षीण हो गया है, और वह लगभग मर चुका है, और मृतकों में गिना जाता है; वह दिन भर जलता है और रात भर पीड़ा में रहता है, और हमने उसके जीवन की उम्मीद छोड़ दी है, और उसके अंत के बारे में निश्चित हो गए हैं। उसे देखने से सावधान रहो, और उस स्थान के अलावा किसी और स्थान को मत देखो जहाँ तुम अपना पैर रखते हो; अन्यथा तुम्हारा और मेरा जीवन बलिदान हो जाएगा। — तब मरज़वान ने कहा, मैं तुम्हें आदेश देता हूँ।

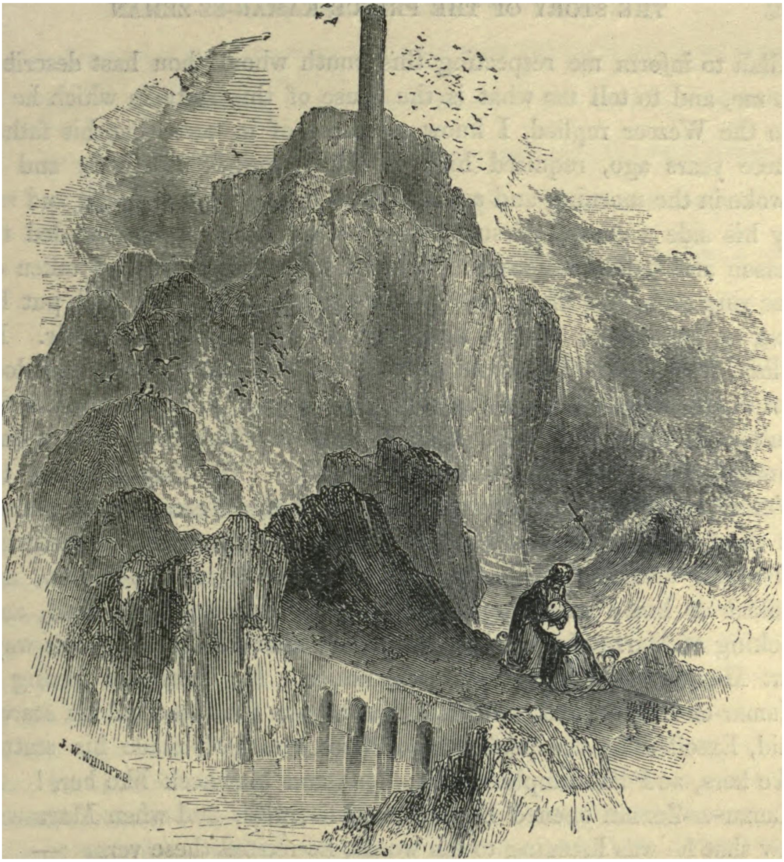

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.94%** है।

108 राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमलिन की कहानी: हे अल्लाह, मुझे उस युवक के विषय में जानकारी दे जिसका वर्णन तूने किया है, और मुझे यह भी बता कि वह इस हालत में क्यों है। तो वज़ीर ने उत्तर दिया, मुझे इसका कोई कारण नहीं पता, सिवाय इसके कि तीन साल पहले उसके पिता ने उससे विवाह करने की मांग की थी, और उसने इनकार कर दिया था; और वह सुबह उठा और दावा किया कि वह सो रहा था और उसने अपने पास एक अत्यंत सुंदर युवती को देखा, जिसकी सुंदरता अकल्पनीय थी, और उसने हमें बताया कि उसने उसकी उंगली से अंगूठी

उतारकर अपनी उंगली में पहन ली, और अपनी अंगूठी उसकी उंगली में पहना दी; और हम इस मामले के रहस्य को नहीं जानते। तो अल्लाह की कसम, हे मेरे पुत्र, मेरे साथ तंबू में आओ, और बादशाह के पुत्र को मत देखो। उसके बाद, तुम चले जाओ। क्योंकि सुल्तान का हृदय मेरे प्रति क्रोध से भरा हुआ है। — तो मरज़वान ने मन ही मन कहा, अल्लाह की कसम, यही तो मैं चाहता था! फिर वह वज़ीर के पीछे-पीछे मंडप तक गया; और वज़ीर कमर-एज़-ज़ेमान के चरणों में बैठ गया। लेकिन मरज़वान तुरंत आगे बढ़ा और कमर-एज़-ज़ेमान के सामने आकर उसे देखने लगा; इस पर वज़ीर मानो मुर्दे जैसा हो गया, और मरज़वान को देखकर उसे जाने का इशारा किया; लेकिन मरज़वान ने अनसुना कर दिया। वह कमर-एज़-ज़ेमान को घूरता रहा, और यह जानते हुए कि वही उसकी खोज का लक्ष्य है, बोला, "उसकी पूर्णता की प्रशंसा हो जिसने उसका कद, रंग और गाल उसके जैसे बनाए हैं!" तो कमर-एज़-ज़ेमान ने अपनी आँखें खोलीं और सुना; और जब मरज़वान ने देखा कि वह उसकी बातें सुन रहा है, तो उसने ये छंद पढ़े: - "मैं तुम्हें परमानंद, चिंता और मधुरता से परिपूर्ण देखता हूँ, सौंदर्य के आकर्षण का वर्णन करने में आनंदित।" क्या तुम प्रेम से ग्रस्त हो, या बाणों से घायल? क्योंकि यह तो केवल घायलों की ही आदत होती है। तो मुझे पीने के लिए मदिरा के प्याले दो, और सुलेमा, रबाब और तेनोम की प्रशंसा में गीत गाओ।55 मैं उसके शरीर पर लिपटे वस्त्रों से ईर्ष्या करता हूँ, जब वह उनसे अपने कोमल शरीर को ढकती है; और मैं उन प्यालों से ईर्ष्या करता हूँ जो उसके मुँह को छूते हैं, जब वह उन्हें चुंबन स्थल पर रखती है। मुझे तेज धार वाली तलवार से मारा हुआ मत समझो; क्योंकि मैं आँखों के बाणों से घायल हुआ हूँ। जब हम मिले तो मैंने उसकी उंगलियाँ लाल रंग से रंगी हुई पाईं, मानो उन पर 'अंदम का रस लगा हो; 56 और उसने, मेरे भीतर ज्वाला

प्रज्वलित करते हुए, प्रेम को छुपाए बिना कहा, धैर्य रखो: यह कोई रंग नहीं है जिसका मैंने प्रयोग किया है; 57 और मुझ पर झूठ और छल का आरोप मत लगाओ; परन्तु जब मैंने तुम्हें सोते हुए देखा, मेरा हाथ, मेरी बांह और मेरी कलाई खुली हुई थी,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.25%** है।

और राजकुमारी बुदूर। 109 1 मैंने बिछड़ते समय खून के आँसू बहाए, और उन्हें अपने हाथ से पोंछा; इसलिए मेरी उंगलियाँ खून से रंग गईं। यदि मैं उसके लिए अपने प्रेम में उसके सामने रोता, तो पश्चाताप आने से पहले ही मैं अपने मन को शांत कर लेता; परन्तु वह मेरे सामने रोई: उसके आँसुओं ने मुझे भी रुला दिया; और मैंने कहा, पुण्य तो पहले वाले का है,58 मुझे उससे प्रेम करने के लिए दोष मत दो; क्योंकि मैं प्रेम की कसम खाता हूँ कि मैं उसके कारण पीड़ा से भरा हूँ। मैं उसके लिए रोता हूँ जिसके चेहरे को सुंदरता ने सजाया है, और जिसके समान अरबों या विदेशियों में कोई नहीं है: उसमें लुकमान का ज्ञान, यूसुफ का रूप, दाऊद की मधुर वाणी और मरियम की पवित्रता है; जबकि मुझमें याकूब का दुःख, यूनुस का पछतावा, अयूब का कष्ट और आदम की स्थिति है।59 फिर भी उसे मत मारो, चाहे मैं उसके लिए अपने प्रेम से मर जाऊँ; लेकिन उससे पूछो कि उसने मेरे खून को जायज़ क्यों माना। जब मरज़वान ने ये आयतें पढ़ीं, तो ये शब्द कमर-एज़-ज़ेमान के दिल में शीतलता और स्वास्थ्य की तरह उतर आए, और उसने अपनी जीभ मुंह में घुमाते हुए सुल्तान को हाथ से इशारा किया, मानो कह रहा हो, इस नौजवान को मेरे पास बैठाओ। और जब सुल्तान ने अपने बेटे कमर-एज़-ज़ेमान के ये शब्द सुने, जो उस नौजवान पर क्रोधित था और उसका सिर कलम करने का निश्चय कर चुका था, तो वह अत्यंत प्रसन्न हुआ। वह उठा और मरज़वान

को अपने बेटे के पास बैठाया, और उससे विनम्रतापूर्वक कहा, तुम किस देश से हो? उसने उत्तर दिया, भीतरी द्वीपों से, द्वीपों और समुद्रों के स्वामी, राजा अल-ग़यूर के राज्य से, और सात महलों के स्वामी से। और राजा शाहज़ेमान ने कहा, शायद तुम्हारे माध्यम से मेरे बेटे कमर-एज़-ज़ेमान को राहत मिल जाए। तब मरज़वान ने कमर-एज़-ज़ेमान को संबोधित करते हुए उसके कान में कहा, "हिम्मत रखो, प्रसन्न और प्रसन्न रहो; क्योंकि जिसके कारण तुम्हारी यह हालत हुई है, उसके बारे में मत पूछो। तुमने अपना मामला छुपाया, और बीमार पड़ गए; परन्तु उसने अपने भाव प्रकट कर दिए, और व्याकुल हो गई, और अब लोहे के पट्टे में जकड़ी अत्यंत दयनीय अवस्था में कैद है। परन्तु यदि ईश्वर की इच्छा हुई, तो तुम दोनों का उद्धार मेरे द्वारा अवश्य होगा।" — और जब कमर-एज़-ज़ेमान ने ये शब्द सुने, तो उसकी आत्मा उसे लौट आई, और वह होश में आ गया, और उसने अपने पिता राजा को संकेत दिया कि वह उसे बैठने की मुद्रा में उठाए। तब राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ, और उसने अपने पुत्र को बैठाया। फिर उसने सभी वज़ीरों और अमीरों को विदा कर दिया, और कमर-एज़-ज़ेमान दो तकियों के बीच आराम से बैठ गया। राजा ने मंडप को केसर से सुगंधित करने और शहर को सजाने का आदेश दिया, और मरज़वान से कहा, अल्लाह की कसम, हे मेरे बेटे, यह

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.51%** है।

110 राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी एक शुभ घटना है। राजा ने उनका बहुत सम्मान किया और उनके लिए भोजन मंगवाया। भोजन उनके सामने रखा गया और उन्होंने तथा कमर-एज़-ज़ेमान ने भी उनके साथ भोजन किया। उन्होंने अगली रात उनके साथ बिताई और राजा भी अपने पुत्र की वापसी की अपार खुशी में उस रात उनके साथ रहे। अगली सुबह,

मरज़वान ने कमर-एज़-ज़ेमान को अपनी कहानी सुनाना शुरू किया और उनसे कहा, "जान लो कि मैं उस स्त्री को जानता हूँ जिसके साथ तुम थे, और उसका नाम बुदूर है, जो राजा अल-ग़यूर की पुत्री है।" फिर उन्होंने बुदूर स्त्री के साथ घटी सारी घटनाएँ शुरू से अंत तक बताईं और उनके प्रति बुदूर के अपार प्रेम से अवगत कराया। — जो कुछ तुम्हारे साथ तुम्हारे पिता के साथ हुआ है, वही उसके साथ उसके पिता के साथ हुआ है: तुम निःसंदेह उसके प्रेमी हो, और वह तुम्हारी है: इसलिए अपने हृदय और संकल्प को मजबूत करो; क्योंकि मैं तुम्हें उसके पास ले जाऊंगा, तुम दोनों का मिलन कराऊंगा, और तुम्हारे साथ वैसा ही व्यवहार करूंगा जैसा एक कवि कहता है: — यदि प्रेम का पात्र अपने प्रेमी के प्रति शत्रुतापूर्ण हो, और अत्यधिक घृणा प्रदर्शित करता रहे, तो भी मैं उनके मिलन को इस प्रकार संपन्न करूंगा जैसे मैं कैंची का धुरी हूं। वह कमर-एज़-ज़ेमान को तब तक प्रोत्साहित करता रहा जब तक उसने खा-पी नहीं लिया, उसकी आत्मा को शांति नहीं मिली और वह अपनी बीमारी से उबर नहीं गया; और वह उससे तब तक बातचीत करता रहा, उसका उत्साह बढ़ाता रहा, उसका मनोरंजन करता रहा और उसे कविताएँ सुनाता रहा, जब तक कि वह स्नानघर में नहीं चला गया। स्नानघर में जाते ही उसके पिता ने इस अवसर पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए शहर को फिर से सजाने का आदेश दिया, सम्मान के वस्त्र प्रदान किए, दान दिया और जेलों में बंद लोगों को रिहा कर दिया। तब मरज़वान ने कमर-एज़-ज़ेमान से कहा, “जान लो कि मैं बुदूर नाम की महिला के पास से नहीं आया हूँ, बल्कि इसी उद्देश्य से आया हूँ: मेरी यात्रा का उद्देश्य उसे उसके वर्तमान कष्टों से मुक्ति दिलाना था; और अब हमें बस कोई तरकीब सोचनी है जिससे हम उसके पास जा सकें; क्योंकि तुम्हारे पिता तुम्हारे बिछड़ने का विचार सहन नहीं कर सकते। लेकिन कल तुम उनसे रेगिस्तान में शिकार करने जाने

की अनुमति मांग लेना, और अपने साथ पैसों से भरे दो थैले ले जाना, एक तेज़ घोड़े पर सवार होना, और एक अतिरिक्त घोड़ा साथ ले जाना। मैं भी ऐसा ही करूँगा, और तुम अपने पिता से कहना, मैं रेगिस्तान में मनोरंजन करना चाहता हूँ, शिकार करना चाहता हूँ, खुले मैदान देखना चाहता हूँ, और वहाँ एक रात बिताना चाहता हूँ: इसलिए मेरे कारण बिल्कुल भी परेशान मत होना।" मरज़वान की बातें सुनकर कमर-एज़-ज़ेमान प्रसन्न हुआ, और अपने पिता के पास जाकर, शिकार पर जाने की अनुमति मांगते हुए, उसने कहा, "मरज़वान की तरह।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.92%** है।

और राजकुमारी बुदूर। बीमार व्यक्ति ने उसे चाहा। उसके पिता ने उसे अनुमति दे दी, परन्तु उससे कहा, एक रात से अधिक दूर मत रहना, और कल मेरे पास लौट आना; क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हारे बिना जीवन में मुझे कोई आनंद नहीं है, और मुझे विश्वास नहीं है कि तुम अपनी बीमारी से पूरी तरह ठीक हो गए हो। बादशाह शाहज़ेमान ने ये दो छंद पढ़े: — यदि मैं अपने आप को हर सुख से परिपूर्ण पाऊं, और दुनिया किसरिस साम्राज्य के साथ मेरी हो,152 तो भी मेरे लिए एक मच्छर के पंख से भी कम होगा यदि मेरी आँख तुम्हारा रूप न देखे। ऐसा कहकर, उसने कमर-एज़-ज़ेमान और मरज़ावुन को सुसज्जित किया, और आदेश दिया कि उन्हें छह घोड़े, धन ढोने के लिए एक ऊँट, और पानी और भोजन ढोने के लिए एक ऊँट दिया जाए; और कमर-एज़-ज़ेमान ने किसी को भी अपने साथ जाने से मना किया। तो उसके पिता ने उसे विदाई दी और उसे अपने सीने से लगा लिया, और उससे कहा, अल्लाह की कसम, मुझसे एक रात से ज़्यादा दूर मत रहना; और उस रात सोना मेरे लिए हराम होगा। फिर कमर-एज़-ज़ेमान और मरज़वान दो घोड़ों पर सवार हुए, उनके साथ धन

से लदा ऊंट और पानी और भोजन से लदा ऊंट भी था। वे खुले मैदान की ओर मुँह करके पहले दिन शाम तक चलते रहे, फिर उतरे और भोजन किया।

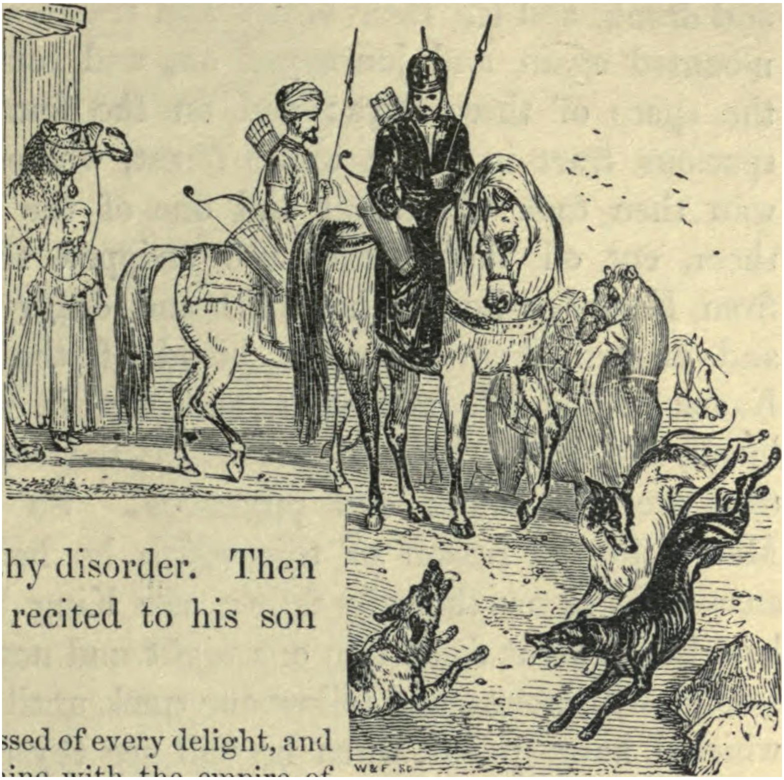

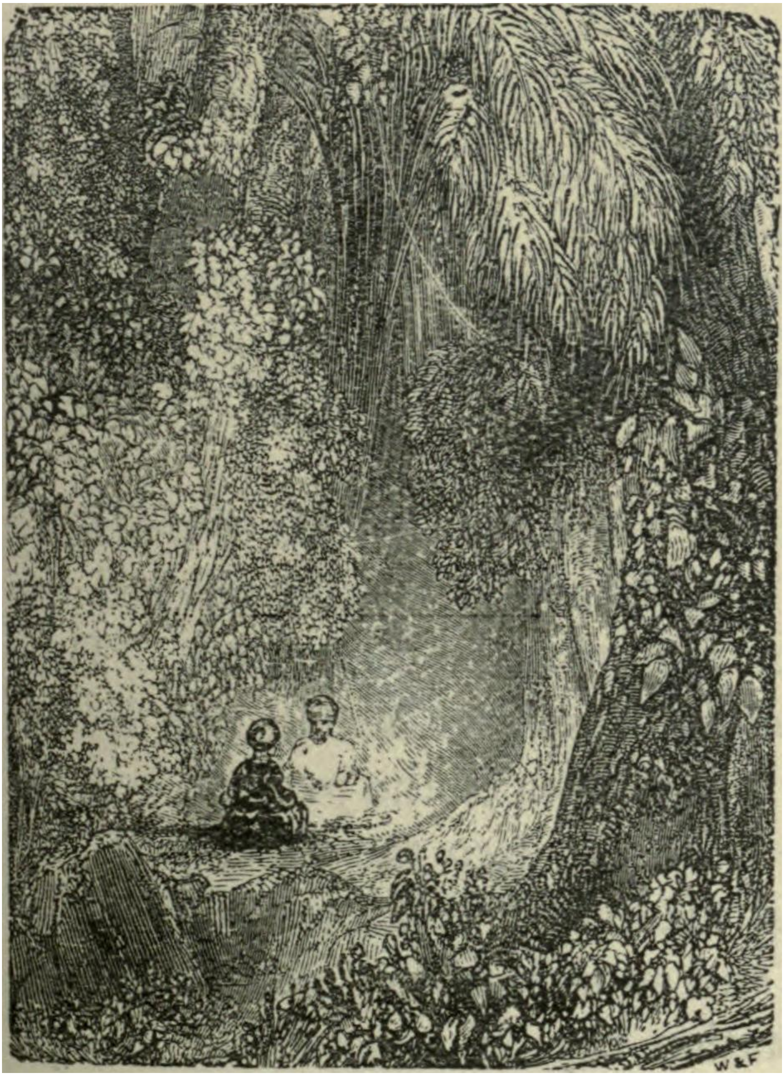

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.98%** है।

 उन्होंने पानी पिया, अपने पशुओं को चारा खिलाया और थोड़ी देर विश्राम किया। इसके बाद वे फिर से घोड़ों पर सवार हुए और आगे बढ़े, और तीन दिनों तक अपने रास्ते पर चलते रहे; चौथे दिन वे एक विशाल वन क्षेत्र में पहुँचे,

जहाँ वे उतरे। तब मरज़वान ने ऊँट और एक घोड़े को लिया, और उन्हें मारकर उनका मांस नोच लिया, उनकी हड्डियाँ निकाल लीं, और कमर-एज़-ज़ेमान से उसकी कमीज़ और अंडकोष लेकर उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया, और घोड़े के खून से उन्हें पोत दिया। उसने कमर-एज़-ज़ेमान का मेलवताह भी लिया, और उसे फाड़कर खून से पोत दिया, और उसे उस स्थान पर फेंक दिया जहाँ सड़क दो भागों में बँटती थी; इसके बाद, उन्होंने खाया-पिया और आगे बढ़े। तब कमर-एज़-ज़ेमान ने मरज़वान से उसके इस कार्य का कारण पूछा; और मरज़वान ने उत्तर दिया, जान लो कि तेरा पिता, जब तुम एक रात बादशाह शाहज़ेमान से दूर रहोगी और दूसरी रात भी नहीं लौटोगी, तो वह घोड़े पर सवार होकर हमारा पीछा करेगा, जब तक कि वह उस खून तक न पहुँच जाए जो मैंने बहाया है। वहाँ वह तुम्हारे फटे और खून से सने कपड़े देखेगा और सोचेगा कि तुम्हें लुटेरों ने, जो सड़कों पर रुकावट डालते हैं, या रेगिस्तान के किसी जंगली जानवर ने मार डाला है; तब वह तुमसे सारी उम्मीदें छोड़ देगा और शहर लौट जाएगा; और इस चाल से हम अपनी इच्छा पूरी कर लेंगे। तब कमर-एज़-ज़ेमान ने उत्तर दिया, "तुमने बहुत अच्छा किया है।" वे दिन-रात अपनी यात्रा जारी रखते रहे, कमर-एज़-ज़ेमान लगातार रोता रहा, जब तक कि वह उस देश के पास पहुँचकर प्रसन्न नहीं हो गया जिसकी वे तलाश कर रहे थे, तब उसने ये छंद पढ़े: — क्या तुम उस प्रेमी पर अत्याचार करोगी जिसने तुम्हें कभी नहीं भुलाया, और तुम्हारे चाहने के बाद भी उसके प्रति उदासीन रहोगी? क्या मैं तुम्हारी सहमति खो दूँ यदि प्रेम में मैं मैंने तुम्हें धोखा दिया है, और यदि मैं झूठा हूँ तो तुम्हें त्याग का दंड मिलेगा! मैंने ऐसा कोई दोष नहीं किया है जिसके लिए मुझे कठोर व्यवहार सहना पड़े; या यदि मैंने कोई अपराध किया है, तो मैं पश्चाताप करता हूँ। तुम्हारा मुझे त्याग देना एक भयानक दुर्भाग्य है; परन्तु भाग्य तो हमेशा चमत्कारों को

जन्म देता है। जब उसने ये छंद समाप्त किए, तो राजा अल-गयूर के द्वीप उसके सामने प्रकट हुए, और कमर-एज़-ज़ेमान अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसने मरज़वान को उसके द्वारा किए गए कार्य के लिए धन्यवाद दिया। वे शहर में प्रवेश कर गए, और मरज़वान ने कमर-एज़-ज़ेमान को एक खान में ठहराया, जहाँ उन्होंने यात्रा की थकान से तीन दिन विश्राम किया। इसके बाद, मरज़वान कमर-एज़-ज़ेमान को स्नानघर ले गया, और उसे एक व्यापारी के वस्त्र पहनाए, और उसके लिए सोने की एक भूगर्भीय पट्टिका,63 उपकरणों का एक सेट और सोने का एक ज्योतिषीय लेब बनवाया। फिर उसने उससे कहा, उठो, हे मेरे स्वामी; राजा के नीचे खड़े हो जाओ।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.87%** है।

महल में जाकर, पुकारो, मैं ही तो गणनाकार, लेखक, ज्योतिषी हूँ! फिर वह कहाँ है जो मुझसे परामर्श करना चाहता है? क्योंकि राजा, जैसे ही तुम्हारी बात सुनेगा, तुम्हें बुलवाएगा और अपनी पुत्री, तुम्हारी प्रेमिका से तुम्हारा परिचय करवाएगा; और जब वह तुम्हें देखेगी, तो उसका पागलपन दूर हो जाएगा; और उसका पिता, उसकी सुरक्षा देखकर प्रसन्न होकर, उसका विवाह तुमसे कर देगा और अपना राज्य तुम्हारे साथ बाँट लेगा; क्योंकि उसने स्वयं पर यह शर्त लगाई है। इसलिए कमर-एज़-ज़कमान ने मरज़ाववान की सलाह मानी और खान से निकल पड़ा, वही वस्त्र पहनकर और अपने साथ वही उपकरण लेकर जिनका हमने वर्णन किया है, और तब तक चलता रहा जब तक वह राजा अल-गयूर के महल के नीचे नहीं पहुँच गया, जहाँ उसने पुकारा, मैं ही तो हूँ, लेखक, गणनाकार, ज्योतिषी! मैं विवाह अनुबंधों की रस्में पूरी करता हूँ,64 और निश्चित मंत्र लिखता हूँ, गणनाएँ करता हूँ और भू-ज्योतिषीय अक्षर लिखता हूँ जिनके द्वारा छिपे

हुए II. Q

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.41%** है।

1'KINCE KAMAR-K2-2i'LMAN का स्तोत्र: खजाने मिल गए! तो खोजकर्ता कहाँ है? — और जब नगरवासियों ने ये शब्द सुने, क्योंकि उन्होंने लंबे समय से किसी गणनाकार या ज्योतिषी को नहीं देखा था, तो वे उसके चारों ओर खड़े हो गए और उसे निहारने लगे। उसके रूप की

सुंदरता और उसकी युवावस्था की लालित्य पर आश्चर्यचकित होकर उन्होंने उससे कहा, हे हमारे स्वामी, अल्लाह की कसम, राजा अल-गयूर की पुत्री से विवाह करने की अपनी महत्वाकांक्षा के कारण इस प्रकार स्वयं को प्रकट न करो; बल्कि अपनी दृष्टि इन लटके हुए सिरों की ओर मोड़ो; क्योंकि इनके स्वामी इसी कारण मारे गए हैं, और उनकी महत्वाकांक्षा ने उन्हें विनाश की ओर अग्रसर किया है। — परन्तु कमर-एज़-ज़ेमान ने उनकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। इसके विपरीत, उसने अपनी आवाज ऊँची की और फिर से पुकारा, मैं ही लेखक हूँ, गणनाकार हूँ! मैं खोजकर्ता के लिए छिपे हुए खजाने लाता हूँ! — लोग अब भी उससे विनती करते रहे और उसे मना करते रहे; लेकिन उनकी बात न सुनकर उसने फिर से ऊँची आवाज़ में चिल्लाना शुरू कर दिया। इस पर वे सब उस पर क्रोधित हो गए और उससे कहने लगे, “तू एक घमंडी और मूर्ख युवक के सिवा कुछ नहीं है। अपनी जवानी और कोमलता, और अपनी सुंदरता और आकर्षण पर दया कर।” लेकिन वह चिल्लाया और बोला, “मैं ज्योतिषी हूँ, हिसाब-किताब करने वाला हूँ! क्या कोई और भी है?” जब लोग उसे ऐसा करने से रोकने की कोशिश कर रहे थे, तभी राजा अल-गयूर ने लोगों का रोना और शोर सुना और वज़ीर से कहा, “इस ज्योतिषी को हमारे पास लाओ।” तो वज़ीर नीचे उतरा और कमर-एज़-ज़ेमान को ले आया, जिसने राजा के पास जाकर उसके सामने ज़मीन चूमी और ये दो श्लोक पढ़े: “आठ गौरवशाली गुण तुझमें समाहित हैं; इनके द्वारा भाग्य तेरा सेवक बना रहे।” — निश्चय ही ज्ञान, धर्मपरायणता, कुलीनता, उदारता, धाराप्रवाह बोलना, वाक्पटुता, श्रेष्ठता और विजय। और जब बादशाह अल-गयूर ने उसे देखा, तो उसे अपने पास बैठाया और विनम्रतापूर्वक उससे कहा, "हे मेरे पुत्र, अल्लाह की कसम, अपने आप को ज्योतिषी मत कहो और मेरी शर्त मत मानो; क्योंकि मैंने

यह वचन दिया है कि जो कोई मेरी पुत्री से मिलने आएगा और उसे उसकी बीमारी से ठीक नहीं करेगा, मैं उसका सिर काट दूंगा; और जो कोई उसे ठीक करेगा, मैं उसका विवाह उससे करवा दूंगा। इसलिए अपनी सुंदरता, आकर्षण और सुडौल रूप से खुद को धोखा मत दो। अल्लाह की कसम! अल्लाह की कसम! यदि तुम उसे ठीक नहीं करोगे, तो मैं तुम्हारा सिर काट दूंगा!" — कमार्च-ज़कमैन ने उत्तर दिया, "मैं इस शर्त से सहमत हूँ।" इसलिए बादशाह अल-घायूर ने कदी से उसके खिलाफ गवाही देने का अनुरोध किया और उसे हिजड़े के हवाले करते हुए कहा, "इस व्यक्ति को महिला बुदूर के पास ले चलो।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.95%** है।

और राजकुमारी बुदूर। 115 इसलिए हिजड़े ने उसका हाथ पकड़ा और उसके साथ गलियारे से आगे बढ़ा; परन्तु कमारेज़-ज़ेमान उससे आगे निकल गया; और हिजड़ा उससे कहने लगा, हे भगवान! अपनी बर्बादी की ओर जल्दी मत करो। अल्लाह की कसम, मैंने तुम्हारे सिवा किसी ज्योतिषी को अपनी बर्बादी की ओर जल्दी करते नहीं देखा! परन्तु तुम अपने आगे आने वाली विपत्तियों को नहीं जानते। — तब हिजड़े ने कमारेज़-ज़ेमान को दरवाजे पर लगे पर्दे के पीछे खड़ा कर दिया; और कमारेज़-ज़ेमान ने उससे कहा, इन दोनों तरीकों में से कौन सा तुम्हें अधिक पसंद आएगा: यहाँ तुम्हारी मालकिन का इलाज करना, या उसके पास जाकर पर्दे के भीतर उसका इलाज करना? हिजड़ा उसकी बातों पर आश्चर्यचकित हुआ और उत्तर दिया, यदि तुम उसका इलाज यहीं करोगे, तो यह तुम्हारी उत्कृष्ट कुशलता का और भी बड़ा प्रमाण होगा। अतः इस पर कमार-एज़ज़ेमान पर्दे के पीछे बैठ गए और स्याही और कलम लेकर कागज़ पर ये शब्द लिखे: — जिसे विरह ने सताया है, उसे अपने प्रियतम

के वचन को पूरा करने से मुक्ति मिल सकती है; परन्तु दुख उसका भाग्य है जिसने अपने जीवन से निराश होकर अपने अंत को निश्चित मान लिया है; जिसके दुखी हृदय का कोई सहारा या सहायक नहीं है, और जिसकी नींद न आने वाली आँखों को चिंता से कोई राहत नहीं मिलती; जो अपना दिन जलने में और रात यातना में गुजारता है; जिसका शरीर निरंतर क्षीण होता जा रहा है; और जिसके पास उसके प्रियतम की ओर से कोई संदेशवाहक नहीं आया है। — फिर उन्होंने ये छंद लिखे: — मैं तेरे चिंतन में लीन हृदय से, और रक्त के आँसू बहाती घायल पलकों से, और तीव्र लालसा और दुःख से क्षीणता के वस्त्र से ढके, और वश में किए हुए शरीर से तड़प रहा हूँ। मैं तुझसे अपने प्रेम की पीड़ा और धैर्य की पूर्ण समाप्ति की शिकायत करता हूँ। हे कृपा, दया और करुणा, क्योंकि मेरा हृदय मेरे तीव्र प्रेम के कारण टूट रहा है। और इन छंदों के नीचे उन्होंने लिखा: — प्रियतम के साथ मिलन से हृदय का उपचार होता है; और ईश्वर ही एकमात्र चिकित्सक है जो उस व्यक्ति का उपचार कर सकता है जिसे उसके प्रेम के पात्र ने सताया है। यदि तुम या हम छलकारी रहे हैं, तो छल करने वाले को निराशा ही मिले। एक ऐसे प्रेमी से अधिक आकर्षक कुछ भी नहीं है जो अपने भावहीन प्रेम के पात्र के प्रति वफादार हो। — फिर, अपने पत्र के अंत में उन्होंने इस प्रकार लिखा: — विक्षिप्त और दुखी, भावुक और उलझन में पड़े, जिन्हें लालसा और तीव्र इच्छा ने बेचैन कर दिया है, उन्माद और व्याकुलता के बंदी, शाह-ज़ेमान के पुत्र जामर-एज़-ज़ेमान से लेकर अपनी उम्र की अद्वितीय और सुंदर इलूरीवेहों में सर्वोत्कृष्ट, राजा अल-गयूर की पुत्री, लेडी बुदूर तक;

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.16%** है।

 — जान लो कि मैंने अपनी

रात अनिद्रा में और दिन व्याकुलता में गुज़ारे, अत्यधिक कमज़ोरी और बीमारी, और प्रेम और इच्छा से पीड़ित, भरपूर आहें भरता और आँसुओं की धारा बहाता, प्रेम का गुलाम, वासना का शिकार, इच्छा से सताया हुआ, रोग का साथी। मैं वह बेचैन हूँ जिसकी आँखें कभी नहीं सोतीं, प्रेम का गुलाम जिसके आँसू कभी नहीं रुकते: मेरे हृदय की आग कभी नहीं बुझती; और मेरी इच्छा की लौ कभी नहीं बुझती। — इसके बाद, उन्होंने पत्र के हाशिये पर यह प्रशंसित छंद लिखा: — मेरे प्रभु के उपहारों के खजानों से शांति उस पर हो जो मेरी आत्मा और मेरे हृदय की स्वामी है। और उन्होंने आगे कहा: — मुझे अपने कुछ शब्द प्रदान करो, ताकि तुम मुझ पर दया दिखा सको, या मेरे हृदय को शांति मिल सके। तुम्हारे प्रति मेरे अत्यधिक प्रेम और मेरे उन्माद के कारण, मैं उस चीज़ को तुच्छ समझता हूँ जो मुझे मैं बेहद दयनीय था। ईश्वर उन लोगों की रक्षा करे जिनका निवास मुझसे दूर था, और जिनका रहस्य मैंने हर परिस्थिति में गुप्त रखा! परन्तु अब भाग्य ने अपनी कृपा से मुझ पर कृपा की है और मुझे मेरे प्रियतम के द्वार तक पहुँचा दिया है। मैंने बुदूर को अपने बगल में पलंग पर देखा; और उसके सूर्य से मेरे भाग्य का चंद्रमा प्रकाशित हुआ। फिर, पत्र को सील करके, उसने पते की जगह ये पंक्तियाँ लिखीं: — मेरे पत्र में जो लिखा है, उसे पढ़ो, और अक्षर तुम्हें मेरे उल्लास और पीड़ा से अवगत करा देंगे। मेरा हाथ लिखते समय मेरे आँसू बह रहे हैं, और मेरी इच्छा कागज़ पर मेरी बेचैनी की शिकायत कर रही है। मेरे आँसू कागज़ पर लगातार बह रहे हैं। अगर वे रुक गए, तो मैं उन्हें अपने खून से बहा दूँगा। और उसने यह दूसरी पंक्ति जोड़ी: — मैंने तुम्हारी अंगूठी भेज दी है जो मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए बदले में ली थी: तो मुझे मेरी भेज दो। (क्योंकि उसने बुदूर की अंगूठी पत्र में डाल दी थी।) फिर उसने पत्र हिजड़े को सौंप दिया, जिसने उसे लिया और अंदर चला गया। बुदूर नाम की

महिला को; उसने उसके हाथ से वह पत्र लिया और उसमें अपनी अंगूठी पाई। जब उसने उसे पढ़ा और उसका अर्थ समझा, तो वह जान गई कि उसका प्रियतम कमार-एज़-ज़ेमान है, और वही है जो पर्दे के बाहर खड़ा है; यह सुनकर वह इतनी प्रसन्न हुई कि उसकी चेतना उड़ गई। वह तुरंत उठी और अपने पैरों को दीवार से दबाकर, पूरी ताकत से लोहे के पट्टे को तोड़ दिया, और उसे अपनी गर्दन से अलग कर दिया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.52%** है।

और राजकुमारी बुदूर ने 117 जंजीरें तोड़ीं और बाहर निकलकर कैमर-एज़-ज़ेमिन पर टूट पड़ीं, उनके मुंह को चूमते हुए, जैसे कोई कबूतर अपने बच्चे को दूध पिलाता है। उसने आवेश में आकर उन्हें गले लगाया और कहा, "हे मेरे स्वामी, क्या मैं यह जागते हुए देख रही हूँ या नींद में? क्या ईश्वर ने वास्तव में कृपा करके हमारा मिलन कराया है?" फिर उसने ईश्वर की स्तुति की और निराशा के बाद उन्हें फिर से मिलाने के लिए उनका धन्यवाद किया। जब हिजड़े ने उसे इस अवस्था में देखा, तो वह दौड़कर राजा अल-गयूर के पास गया और उनके सामने जमीन चूमते हुए कहा, "हे मेरे प्रभु, जान लीजिए कि यह ज्योतिषी सभी ज्योतिषियों में सबसे बुद्धिमान है; क्योंकि इसने पर्दे के पीछे खड़े-खड़े ही आपकी बेटी को ठीक कर दिया, और उसके पास नहीं गया।" - "क्या यह खबर सच है?" राजा ने कहा। — हे मेरे स्वामी, हिजड़े ने उत्तर दिया, उठो और उसे देखो, कैसे उसने लोहे की जंजीरें तोड़कर ज्योतिषी के पास आकर उसे चूमा और गले लगाया। तब राजा अल-गयूर उठे और अपनी पुत्री के पास गए; और जब उसने उन्हें देखा, तो वह उठी और अपना सिर ढँक लिया। राजा, उसके ठीक होने पर प्रसन्न हुए, और उसकी आँखों के बीच चूमा; क्योंकि वह उससे अत्यधिक प्रेम करते थे; और फिर कृपापूर्वक कमर-एज़-ज़ेमान से

उनकी स्थिति के बारे में पूछा, और कहा, तुम किस देश से हो? तब कमर-एज़-ज़ेमान ने उन्हें अपने पद के बारे में बताया, और उन्हें सूचित किया कि उनके पिता राजा शाह-ज़ेमान थे, और उन्हें पूरी कहानी शुरू से अंत तक सुनाई, और उन्हें बुदूर महिला के साथ हुई सारी घटनाओं से अवगत कराया, और बताया कि कैसे उन्होंने उसकी उंगली से अंगूठी उतारी और उसने अपनी अंगूठी पहनाई। यह सुनकर राजा अल-घायूर आश्चर्यचकित हुए और बोले, "तुम्हारी कहानी किताबों में लिखी जानी चाहिए और पीढ़ी-दर-पीढ़ी पढ़ी जानी चाहिए।" फिर उन्होंने तुरंत कादियों और गवाहों को बुलाया और बुदूरी का विवाह कर्नार-एज़-ज़ेमान से संपन्न कराया तथा सात दिनों तक शहर को सजाने का आदेश दिया। एक भोज तैयार किया गया, शहर को सजाया गया और लोगों ने ईश्वर की स्तुति की कि उन्होंने बुदूरी को राजाओं के पुत्रों में से एक सुंदर युवक से प्रेम करवाया। स्त्रियों ने उसे राजा के सामने प्रस्तुत किया और विवाह संपन्न हुआ; अगले दिन राजा ने एक भोज का आयोजन किया, जिसमें भीतरी और बाहरी द्वीपों के सभी निवासी (जो इच्छुक थे) आमंत्रित थे, और यह भोज पूरे एक महीने तक चला। इसके बाद कर्नार-एज़-ज़ेमान ने अपने पिता के बारे में सोचा और स्वप्न में उन्हें देखा और सुना कि वे कह रहे हैं, "हे मेरे पुत्र, क्या तू मेरे साथ ऐसा व्यवहार करता है?" इसलिए वे दुखी होकर जागे और अपनी पत्नी को स्वप्न के बारे में बताया। इसलिए वह उसके साथ अपने पिता के पास गई, और उन्हें यह बात बताकर उन्होंने यात्रा पर जाने की अनुमति मांगी; और उन्होंने उसे अनुमति दे दी: लेकिन महिला

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.69%** है।

118 राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी: बुदूर ने कहा, "हे मेरे पिता, मैं उनका वियोग सहन नहीं कर सकती।" इस पर उन्होंने उत्तर दिया, "तुम

उनके साथ यात्रा करो।" उन्होंने बुदूर को कमर-एज़-ज़ेमान के साथ पूरे एक वर्ष रहने की अनुमति दी और उसके बाद उनसे अपने पिता से प्रतिवर्ष मिलने का अनुरोध किया। इस पर बुदूर ने अपने पिता के हाथ चूमे और कमर-एज़-ज़ेमान ने भी ऐसा ही किया। फिर राजा अल-ग़यूर ने अपनी पुत्री और उसके पति के लिए यात्रा की व्यवस्था की: उन्होंने उनके लिए यात्रा का सामान तैयार किया, घोड़े और ऊँट भेजे, साथ ही अपनी पुत्री के लिए पालकी भी भेजी, खच्चरों और ऊँटों पर सामान लादा और यात्रा के लिए आवश्यक सभी चीजें उन्हें प्रदान कीं। प्रस्थान के दिन, उन्होंने कमर-एज़-ज़ेमान को विदाई दी और उन्हें रत्नों से जड़ा सोने का एक भव्य वस्त्र भेंट किया, साथ ही उन्हें धन-संपत्ति का खजाना भी दिया और अपनी पुत्री बुदूर की देखभाल का दायित्व सौंपा। इसके बाद वह उन दोनों के साथ द्वीपों की सीमा तक गया, जहाँ उसने कामर-एज़-ज़ेमान को फिर से विदाई दी, और अपनी बेटी बुदूर के पास गया, जो पालकी में लेटी हुई थी, उसे गले लगाया और रोया। फिर बाहर आकर

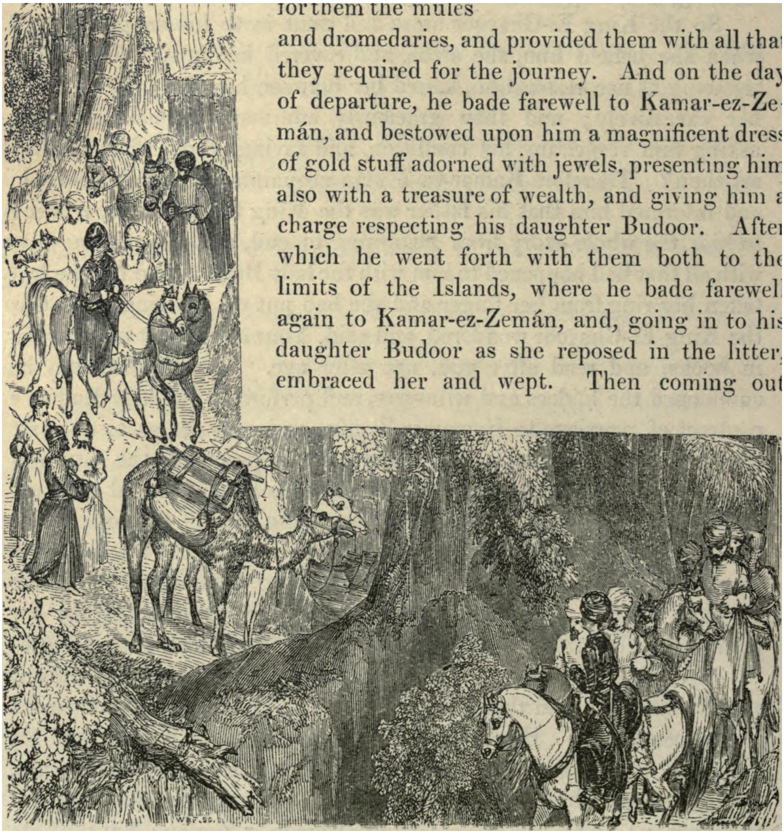

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.61%** है।

और जब वह महिला बुदूर से अलग हुई, तो वह उसके पति के पास गई, और फिर उसे विदाई दी और चूमा; ऐसा करने के बाद, वह उनसे विदा हो गई और अपने सैनिकों के साथ अपने द्वीपों पर लौट गई, इससे पहले उसने कमर-एज़-ज़ेमिन और उसकी पत्नी को अपनी यात्रा जारी रखने का आदेश दिया था। इस प्रकार कमर-एज़-ज़ेमिन और बुदूर की पत्नी अपने सेवकों के साथ पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे दिन तक यात्रा करते रहे और एक महीने तक चलते रहे। फिर वे एक विशाल घास के मैदान में उतरे, जो वनस्पतियों से भरपूर था; और वहाँ उन्होंने अपने तंबू लगाए,

और खाया-पिया और विश्राम किया। और जब बुदूर की पत्नी सो गई, तो कमर-एज़-ज़ेमिन ने अंदर झाँका और उसे खुबानी रंग की रेशमी कमीज़ पहने और सिर पर रत्नों से सजी सोने की कूफीयेह पहने हुए सोता हुआ पाया। और उसने देखा कि एक कीमती पत्थर, जो 'अंदैन' की तरह लाल था,65 उसकी पतलून के पट्टे से बंधा हुआ था, जिस पर दो पंक्तियाँ खुदी हुई थीं, जिन्हें पढ़ा नहीं जा सकता था।66 कमर-एज़-ज़ेमान यह देखकर आश्चर्यचकित हुआ और मन ही मन बोला, यदि यह कीमती पत्थर उसके लिए इतना महत्वपूर्ण न होता तो वह इसे अपनी पतलून के पट्टे पर इस प्रकार न बाँधती और न ही छिपाती, ताकि वह इसे अपने से दूर न होने दे। फिर वह इसका क्या करेगी; और इसमें कौन सा गुप्त गुण छिपा है? — तब उसने उसे उठाया और तम्बू से बाहर जाकर प्रकाश में उसे देखने लगा; लेकिन जैसे ही वह उसकी जाँच कर रहा था, अचानक एक पक्षी उस पर झपटा और उसके हाथ से छीनकर उड़ गया और फिर उसे लेकर जमीन पर बैठ गया।67 कमर-एज़-ज़ेमान कीमती पत्थर खोने के डर से पक्षी के पीछे भागा; लेकिन पक्षी उसी गति से आगे बढ़ता रहा जिस गति से कमर-एज़-ज़ेमान उसका पीछा करता रहा, घाटी से घाटी और पहाड़ी से पहाड़ी तक, जब तक रात नहीं हो गई और अंधेरा नहीं छा गया। फिर पक्षी एक ऊँचे पेड़ पर बैठ गया, जबकि कमर-एज़-ज़ेमान उसके नीचे भूख और थकान से व्याकुल और बेहाल खड़ा रहा। उसने खुद को खोया हुआ समझा और वापस लौटना चाहा; लेकिन उसे वह जगह याद नहीं थी जहाँ से वह आया था; और जब रात छा गई, तो उसने कहा, सर्वशक्तिमान, महान ईश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है! फिर वह उस पेड़ के नीचे सो गया जिस पर पक्षी बैठा था, सुबह तक। जब वह नींद से जागा, तो उसने पाया कि पक्षी अभी-अभी उठा था और पेड़ से उड़ गया था। इसलिए वह उसके पीछे चल पड़ा; और पक्षी उसी गति से

धीरे-धीरे उड़ता रहा जिस गति से कमर-एज़-ज़ेमान उड़ता रहा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.46%** है।

राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी: कमर-एज़-ज़ेमान चल रहे थे; उन्हें देखकर वे मुस्कुराए और बोले, “अल्लाह! यह कितना अद्भुत है कि यह पक्षी कल मेरी दौड़ने की गति से उड़ रहा था, और आज, यह जानते हुए कि मैं थका हुआ हूँ और दौड़ नहीं सकता, मेरी चलने की गति से उड़ रहा है! सचमुच यह अद्भुत है! लेकिन मुझे इस पक्षी का पीछा करना ही होगा, और यह मुझे या तो मेरे जीवन की रक्षा करेगा या मेरी मृत्यु की ओर। इसलिए मैं इसका पीछा करूँगा जहाँ भी यह जाए; क्योंकि यह किसी भी हालत में किसी आबादी वाले देश के अलावा कहीं नहीं ठहरेगा।” फिर वे उस पक्षी का पीछा करते रहे, जो हर रात एक पेड़ पर बैठता था; और उन्होंने दस दिनों तक उसका पीछा किया, ज़मीन के पौधों को खाकर और नदियों का पानी पीकर; जिसके बाद उन्हें एक शहर दिखाई दिया, और पक्षी पलक झपकते ही उस शहर में घुस गया, और कमर-एज़-ज़ेमान की नज़रों से ओझल हो गया, जो नहीं जानते थे कि वह कहाँ गया। इस पर वह आश्चर्यचकित हुआ और बोला, "ईश्वर की स्तुति हो जिसने मेरी रक्षा की और मुझे इस नगर में पहुँचाया!" फिर वह जल के किनारे बैठ गया, अपने हाथ-पैर और चेहरा धोया और कुछ देर विश्राम किया, अपने सुखमय अतीत के बारे में विचार किया और अपने देश और मित्रों से दूरी, भूख और थकान की वर्तमान स्थिति पर गौर किया। इस प्रकार विश्राम करने के बाद, वह नगर के द्वार से प्रवेश कर गया, यह न जानते हुए कि कहाँ जाना है, और पूरे नगर में घूमा। उसने भूमि द्वार से प्रवेश किया और तब तक चलता रहा जब तक वह समुद्र द्वार से बाहर नहीं निकल गया, बिना किसी निवासी से मिले। नगर समुद्र के किनारे पर

था; और जब वह समुद्र द्वार से बाहर निकला, तो वह तब तक चलता रहा जब तक वह नगर के उद्यानों में नहीं पहुँच गया; और वह वृक्षों के बीच प्रवेश कर गया और एक उद्यान के द्वार के पास जाकर खड़ा हो गया; इस पर माली उसके पास आया और उसका स्वागत करते हुए बोला, "अल्लाह का शुक्र है कि तुम इस शहर के लोगों से बच निकले! तो जल्दी से इस बाग में प्रवेश करो, इससे पहले कि यहाँ का कोई निवासी तुम्हें देख ले।" — इस पर, कमर-एज़-ज़ेमान भटकते हुए बाग में दाखिल हुआ और माली से पूछा, "इस शहर के निवासियों का इतिहास क्या है?" माली ने उत्तर दिया, "जान लो कि इस शहर के सभी लोग मगी हैं; और मैं अल्लाह की कसम खाकर तुमसे विनती करता हूँ कि मुझे बताओ कि तुम इस जगह के लिए इतने उत्सुक क्यों हो और हमारे देश में आने का तुम्हारा क्या कारण था।"68 इसलिए कमर-एज़-ज़ेमान ने उसे अपने साथ घटी सारी बातें बता दीं; माली को इस पर बहुत आश्चर्य हुआ और उसने उससे कहा, "हे मेरे पुत्र, जान लो कि अल-इस्लाम6" के देश यहाँ से बहुत दूर हैं: उनके और इस स्थान के बीच समुद्र मार्ग से चार महीने की यात्रा का समय है; और भूमि मार्ग से पूरे एक वर्ष की यात्रा का। हमारे पास एक जहाज है जो हर साल अल-इस्लाम के निकटतम देश के लिए माल लेकर रवाना होता है।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.38%** है।

और राजकुमारी बुदूर। 12i यहाँ से आबनूस द्वीप समूह के समुद्र की ओर बढ़ रहे हैं,70 और वहाँ से खालिदन द्वीप समूह की ओर, जिसके राजा सुल्तान शाह-ज़ेमाऊ हैं। — और इस पर, कमर-एज़-ज़ेमान ने कुछ देर मन ही मन विचार किया, और उसे पता चला कि उसके लिए माली के साथ वहीं रहने और उपज के एक चौथाई हिस्से के लिए उसका सहायक

बनने से बेहतर कोई योजना नहीं है।71 इसलिए उसने उससे कहा, क्या तुम मुझे इस शर्त पर अपना सहायक रखोगे कि मुझे इस बगीचे की उपज का एक चौथाई हिस्सा मिले? और माली ने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। फिर उसने उसे पेड़ों के बीच पानी पहुँचाने का तरीका सिखाया;72 और कमर-एज़-ज़ेमान ने खुद को यह करने और घास खोदने में लगा दिया: माली ने उसे घुटनों तक पहुँचने वाली नीली बनियान पहनाई; और वह पेड़ों को पानी देने, आँसू बहाने और रात-दिन अपनी प्रिय बुदूर के विषय में कविताएँ पढ़ने में मग्न हो गया। परन्तु उसकी पत्नी, बुदूर, नींद से जाग उठी और अपने पति, कमर-एज़-ज़ेमान को पुकारने लगी; परन्तु वह नहीं मिला; और अपनी पतलून की गाँठ छूकर उसने पाया कि वह खुली हुई है और कीमती पत्थर खो गया है; तब उसने मन ही मन कहा, हे अल्लाह! यह तो आश्चर्य की बात है! मेरा प्रिय कहाँ है? लगता है वह पत्थर लेकर चला गया है और उसे उस गुप्त गुण का ज्ञान नहीं है जो उसमें निहित है। वह कहाँ चला गया होगा? कोई अद्भुत घटना ही उसके जाने का कारण रही होगी; क्योंकि वह एक घंटे के लिए भी मुझसे दूर नहीं रह सकता। धिक्कार हो उस पत्थर पर और उस घड़ी पर जब उसने यह विपत्ति लाई! फिर उसने मन ही मन सोचा, “यदि मैं सेवकों के पास जाकर उन्हें अपने पति के निधन की सूचना दूँगी, तो वे मुझ पर ईर्ष्या करेंगे; इसलिए मुझे कोई तरकीब अपनानी होगी।” अतः उसने कमर-एज़-ज़ेमान के वस्त्र और उनके समान पगड़ी धारण की, और अपने चेहरे के कुछ भाग पर एक लिथम (73) डालकर अपनी पालकी में एक दासी को बिठाया। इसके बाद वह अपने तम्बू से बाहर निकली और युवकों को पुकारा, जो तुरंत उसके लिए घोड़ा ले आए। उसने घोड़े पर सवार होकर बोझ बाँधने का आदेश दिया। उन्होंने ऐसा ही किया और आगे बढ़ गए। उसने अपना रूप छिपाए रखा, क्योंकि वह कमर-एज़-

ज़ेमान जैसी दिखती थी, इसलिए किसी को भी उस पर संदेह नहीं हुआ कि वह वास्तव में वही है। वह अपने सेवकों के साथ दिन-रात यात्रा करती रही, जब तक कि उसे समुद्र के किनारे बसा एक शहर दिखाई नहीं दिया। वहाँ वह उतरी और विश्राम के लिए अपने तम्बू गाड़ दिए। फिर उसने उस शहर का नाम पूछा, और उसे उत्तर मिला, "यह आबनूस का शहर है, और इसका राजा अरमानूस है, जिसकी एक बेटी है जिसका नाम हयात-एन-नुफूस है।"74 ii. ii

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.07%** है।

जब बुदूर महिला विश्राम करने के लिए यहाँ उतरीं, तो राजा अरमानूस ने अपने महल से एक दूत भेजा ताकि वह उस (कथित) राजा के बारे में जानकारी प्राप्त करे जिसने शहर के बाहर डेरा डाला हुआ था। दूत जब दल के पास पहुँचा, तो उसने उनसे पूछताछ की और उन्होंने उसे बताया कि यह एक राजा का पुत्र है जो अपने मार्ग से भटक गया है और खालिदान द्वीप समूह में राजा शाहज़ेमान से मिलने जा रहा है। इसलिए दूत राजा अरमानूस के पास लौट आया और उन्हें यह खबर दी; और जैसे ही राजा ने यह सुना, वह अपने साम्राज्य के सरदारों के साथ उस अजनबी से मिलने के लिए नीचे उतरे। जैसे ही वह तम्बुओं के पास पहुँचे, बुदूर महिला पैदल ही उनकी ओर बढ़ीं, और राजा अरमानूस नीचे उतरे और दोनों ने एक-दूसरे को प्रणाम किया। फिर उन्होंने उन्हें अपने साथ शहर में ले जाकर अपने महल में ऊपर ले गए, जहाँ उन्होंने भोज तैयार करने और उन्हें मनोरंजन कक्ष में ले जाने का आदेश दिया; और वह वहाँ तीन दिन रहीं।

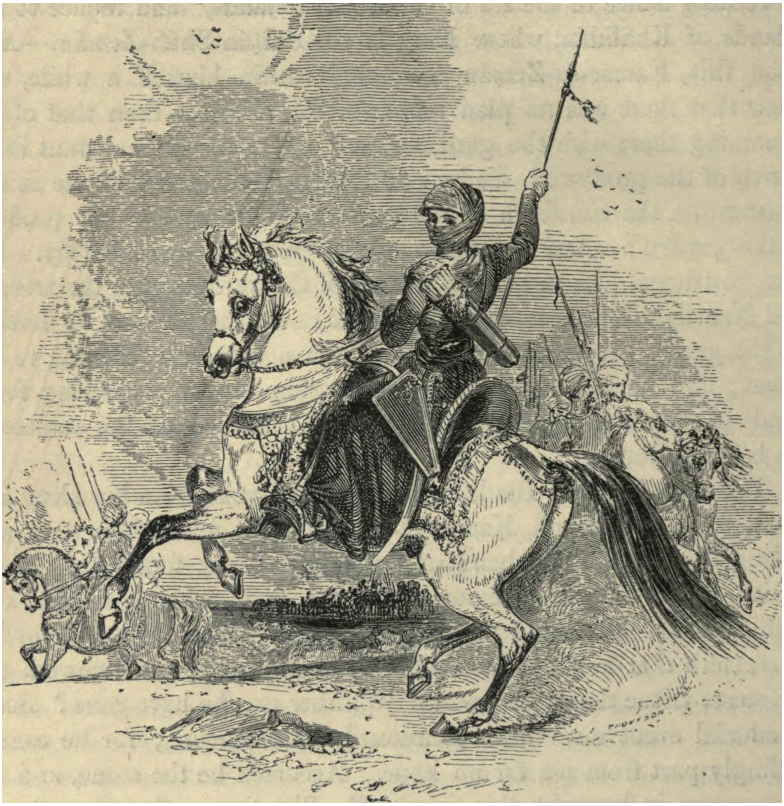

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.56%** है।

राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी, इत्यादि। 123 इसके बाद, ऐसा हुआ कि बुदूर नाम की महिला स्नानघर में दाखिल हुई, और उसका चेहरा पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह चमक रहा था, जिससे उसे देखने वाले सभी लोग उसकी सुंदरता की प्रशंसा से भर उठे। उसने सोने की कढ़ाई वाली रेशमी बनियान पहनी हुई थी और गहनों से सजी हुई थी। तब राजा अरमानूस ने विनम्रतापूर्वक उससे बात की और कहा, "हे मेरे पुत्र, जान लो कि मैं अब बहुत बूढ़ा हो गया हूँ, और अपने जीवन में मुझे पुत्री के सिवा कोई संतान नहीं हुई, जो रूप, कद, सुंदरता और आकर्षण में तुम्हारे समान है। मैं अब राजा के कर्तव्यों का निर्वाह करने में असमर्थ हूँ। तो हे

मेरे पुत्र, क्या तुम मेरे देश में निवास करोगे? यदि हाँ, तो मैं तुम्हारा विवाह अपनी पुत्री से करा दूँगा और तुम्हें अपना राज्य दे दूँगा।” यह सुनकर बुदूर नाम की महिला ने अपना सिर झुका लिया और शर्म से उसका माथा लाल हो गया। उसने मन ही मन कहा, “मैं क्या करूँ, क्योंकि मैं एक स्त्री हूँ? यदि मैं उसकी आज्ञा का उल्लंघन करके चली जाऊँ, तो शायद वह मेरे पीछे सेना भेजकर मुझे मार डालेगा; और यदि मैं उसकी आज्ञा मानूँ, तो शायद मेरा अपमान होगा। मैंने अपने प्रिय कामर-एज़-ज़ेमान को खो दिया है और मुझे नहीं पता कि उसका क्या हुआ है; और मेरे पास खुद को बचाने का कोई साधन नहीं है, सिवाय उसकी इच्छा मानकर उसके साथ रहने के, जब तक कि ईश्वर अपना भाग्य पूरा न कर दे।” तब उसने अपना सिर उठाया और राजा के सामने यह कहते हुए समर्पण किया, “मैं सुनती हूँ और आज्ञा मानती हूँ।” इस पर राजा प्रसन्न हुआ और उसने आदेश दिया कि पूरे आबनूस द्वीप समूह में उत्सव मनाया जाए और घरों को सजाया जाए। उसने अपने साम्राज्य के सभी सरदारों, लेफ्टिनेंटों, अमीरों, वज़ीरों और अन्य सरदारों तथा नगर के कादियों को इकट्ठा किया और सिंहासन त्यागकर बुदूर महिला को अपना सुल्तान नियुक्त किया तथा उन्हें राजसी वस्त्र पहनाए। सभी अमीर उनके सामने उपस्थित हुए और उनकी कम उम्र पर कोई आपत्ति नहीं जताई; और उनमें से हर कोई जो उन्हें देखता था, उनकी असीम सुंदरता और आकर्षण से चकित रह जाता था। जब बुदूर महिला को सुल्तान बनाया गया और इस शुभ अवसर की घोषणा के लिए ढोल बजाए गए, तो राजा अरमानूस ने अपनी बेटी हयात-ए-नुफूस के विवाह की तैयारी की; और कुछ दिनों बाद, उन्होंने बुदूर महिला का हयात-ए-नुफूस से परिचय कराया। वे एक-दूसरे के बगल में खड़े दो पूर्णिमा के चंद्रमाओं या एक साथ उगे दो सूर्यों के समान लग रही थीं। और जब परिचारकों ने उनके लिए दरवाजे बंद कर दिए, पर्दे गिरा

दिए, मोमबत्तियाँ जला दीं और बिस्तर बिछा दिया, तब बुदूर और हयात-एन-नुफूस साथ बैठीं और अपने प्रिय कमर-एज़-ज़ेमान को याद करते हुए उनका शोक तीव्र हो गया और वे फूट-फूट कर रोने लगीं और कुछ छंद पढ़े जो इस प्रकार शुरू होते हैं: — »

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.34%** है।

124 राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी। हे मुझे छोड़कर चले गए, मेरा हृदय दुःख से भरा है, तुम्हारी अनुपस्थिति ने मेरे शरीर में जीवन नहीं छोड़ा! फिर हयात-एन-नुफूस के पास बैठकर, उसने उसके मुँह पर चुंबन किया, और अचानक उठकर वज़ू किया, और तब तक प्रार्थना करती रही जब तक हयात-एन-नुफूस सो नहीं गई, फिर वह बिस्तर पर लेट गई, और सुबह तक उसकी ओर पीठ करके सो गई। और जब सुबह हुई, तो बूढ़े राजा और उनकी पत्नी अपनी बेटी के पास आए, और उससे पूछा कि वह कैसी है। तो उसने उन्हें सारी घटना और सुने हुए श्लोकों के बारे में बताया। लेकिन रानी बुदूर... बाहर जाकर, सिंहासन पर विराजमान होने के बाद, सभी अमीर और साम्राज्य के अन्य सरदार, और सभी प्रमुख और सैनिक उनके पास गए और सिंहासनारोहण पर उन्हें बधाई दी, उनके सामने जमीन चूमी और उनके लिए प्रार्थना की। उन्होंने मुस्कुराते हुए उनका अभिवादन किया, उन्हें सम्मान के वस्त्र प्रदान किए और अमीरों की जागीरों में वृद्धि की। इस प्रकार सभी सैनिक और प्रजा उनसे प्रेम करते थे और उनके शासनकाल की निरंतरता के लिए प्रार्थना करते थे, क्योंकि उन्हें इसमें कोई संदेह नहीं था कि वह एक पुरुष थीं। उन्होंने आदेश दिए, निषेध किए, न्याय और निष्पक्षता का पालन किया, जेलों में बंद लोगों को रिहा किया और सीमा शुल्क माफ कर दिया। वह रात तक न्याय कक्ष में बैठी रहीं, और फिर अपने लिए तैयार किए गए कक्ष में

प्रवेश करने पर उन्होंने हयात-एन-नुफूस को वहाँ बैठे हुए पाया। इसलिए वह उसके पास बैठ गई, उसकी पीठ थपथपाई, उसे प्यार से सहलाया और उसकी आँखों के बीच चूमा, और फिर पहले की तरह अपने पति की अनुपस्थिति पर शोक व्यक्त करते हुए कुछ छंद पढ़े; इसके बाद, वह उठी और अपने आँसू पोंछकर, वज़ू किया और प्रार्थना की, और तब तक प्रार्थना करती रही जब तक कि हयात-एन-नुफूस को नींद नहीं आ गई। फिर रानी बुदूर उसके पास लेट गई और सुबह तक वहीं रही; जब वह उठी, तो उसने सुबह की नमाज़ पढ़ी, सिंहासन पर बैठी, आदेश दिए और मना किए, और न्याय और निष्पक्षता का संचालन किया। इसी बीच, राजा अरमानूस अपनी बेटी के पास गए, और उसने उन्हें अपने साथ हुई सारी घटना बताई, रानी बुदूर द्वारा पढ़े गए छंदों को दोहराते हुए, और उनसे कहा, "हे मेरे पिता, मैंने अपने पति से अधिक संवेदनशील या लज्जित किसी को नहीं देखा; वह तो बस रोते और आहें भरते रहते हैं।" इसलिए उसके पिता ने उत्तर दिया, “हे मेरी पुत्री, केवल इस तीसरी रात तक उसके साथ धैर्य रखो; और यदि वह तुम्हारे साथ उचित सम्मानपूर्वक व्यवहार न करे, तो हम जान लेंगे कि उसके साथ क्या करना है: मैं उससे राजसी अधिकार छीन लूँगा और उसे हमारे राज्य से निकाल दूँगा।”

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.21%** है।

और महारानी बुदूर। }.,5 देश। — इस प्रकार उन्होंने अपनी बेटी से ऐसा करने का वादा किया और मन में यही निश्चय कर लिया। अगली रात जब रानी बुदूर सिंहासन से उठीं और महल में अपने लिए तैयार किए गए कक्ष में लौटकर देखा तो मोमबत्तियाँ जल रही थीं और हयात-एन-नुफूस वहाँ बैठी थीं; तब उन्हें अपने पति और पिछले कुछ दिनों में उनके साथ घटी घटनाओं का ख्याल आया; वे रोने लगीं, कराहती रहीं और अपनी दुखी

अवस्था को व्यक्त करने वाले कुछ छंदों का पाठ किया। फिर उन्होंने प्रार्थना करने के लिए उठने की इच्छा जताई; लेकिन हयात-एन-नुफूस ने उनके वस्त्रों को पकड़ लिया और उनसे कहा, हे मेरी स्वामिनी, क्या आपको मेरे पिता के प्रति ऐसा व्यवहार करने में शर्म नहीं आती, जिन्होंने आपके साथ इतनी दयालुता का व्यवहार किया है, और मेरे प्रति इस लंबे समय तक उदासीनता का भाव रखने में? जब रानी बुदूर ने यह सुना, तो वे बैठ गईं और बोलीं, हे मेरे प्रिय, तुम क्या कहते हो? — हयात-एन-नुफूस ने उत्तर दिया, "मैं यह कह रही हूँ कि मैंने तुम्हारे समान आत्मसंतुष्ट किसी को नहीं देखा। क्या हर सुंदर स्त्री ऐसी ही स्वार्थी होती है? लेकिन मैं यह अपने लिए नहीं कह रही हूँ: मैं ऐसा केवल राजा अरमानूस से तुम्हारे प्रति अपने भय के कारण कर रही हूँ; क्योंकि उसने निश्चय कर लिया है कि यदि तुम मेरा उचित सम्मान नहीं करोगी, तो वह तुम्हें कल ही सत्ता से बेदखल कर देगा और अपने देश से निर्वासित कर देगा; और संभवतः उसका क्रोध इतना बढ़ जाए कि वह तुम्हें मार डाले। इसलिए मुझे तुम पर दया आ रही है और मैंने तुम्हें अच्छी सलाह दी है; अब यह तुम्हारा निर्णय है कि तुम क्या करोगी।" — ये शब्द सुनकर रानी बुदूर ने अपना सिर नीचे झुका लिया और अपनी स्थिति को लेकर व्याकुल हो गई, मन ही मन कहने लगी, "यदि मैं उसकी इच्छा का विरोध करूँगी, तो मैं मर जाऊँगी; और यदि मैं उसकी आज्ञा मानूँगी, तो मैं अपमानित हो जाऊँगी।" लेकिन अब मैं सभी आबनूस द्वीपों की रानी हूँ, और वे मेरे शासन के अधीन हैं, और मैं कमर-एज़-ज़ेमाऊ से इस स्थान के अलावा कहीं और नहीं मिल सकती; क्योंकि उसके अपने देश लौटने का एकमात्र मार्ग आबनूस द्वीपों से होकर ही है। इसलिए मैं अपना मामला ईश्वर पर छोड़ती हूँ, जो सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक है। — फिर उसने हयात-एन-नुफूस से कहा, हे मेरे प्रिय, तुम्हारा उपेक्षित होना अनैच्छिक था। और उसने उसे

शुरू से अंत तक अपने साथ घटी सारी बातें बताईं, और कहा, मैं अल्लाह की कसम खाकर तुमसे विनती करती हूँ कि मेरा मामला छुपाए रखो और मेरा रहस्य तब तक गुप्त रखो जब तक ईश्वर मुझे मेरे प्रिय कमर-एज़-ज़ेमान से फिर से न मिला दे, और उसके बाद हम देखेंगे कि क्या होता है। — यह सुनकर हयात-एन-नुफूस अत्यंत आश्चर्यचकित हुई, और उस पर दया करते हुए, उसके प्रिय से पुनर्मिलन के लिए प्रार्थना की, और उससे कहा, हे मेरी बहन, भयभीत मत हो और न ही घबराओ; बल्कि धैर्य रखो जब तक ईश्वर वह पूरा न कर दे जो होना ही है। भोले-भाले लोगों के हृदय रहस्यों के मकबरे होते हैं; और तेरा रहस्य मैं नहीं जानूंगा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.11%** है।

126 राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी का खुलासा। — फिर वे आपस में खेलने लगे, एक-दूसरे को गले लगाया और सुबह की नमाज़ के समय तक सोए रहे, जब हयात-एन-नुफूस की माँ उनके पास आई और उनकी रिपोर्ट से संतुष्ट हुई। रानी बुदूर ने सुबह की नमाज़ अदा करने के बाद न्याय कक्ष में जाकर सिंहासन पर बैठकर लोगों का न्याय किया; और राजा अरमानूस ने जो सुना उससे प्रसन्न हुए: उनका हृदय आनंदित हुआ और उन्होंने भोज दिए; और यह सिलसिला काफी देर तक चलता रहा। — ये थे कमर-एज़-ज़ेमान और रानी बुदूर के कारनामे। लेकिन राजा शाह-ज़ेमान की बात करें तो, जैसा कि पहले बताया गया है, अपने बेटे के मरज़ावतीन के साथ शिकार पर जाने के बाद, उन्होंने दूसरी रात तक इंतज़ार किया; और जब उनका बेटा नहीं आया, तो वे व्याकुल हो गए और उस रात सो नहीं पाए। वह अत्यंत बेचैन हो गया, उसकी उत्तेजना चरम पर थी और वह चिंता से व्याकुल था; और सुबह होते-होते वह उठ गया। वह दोपहर तक अपने बेटे की प्रतीक्षा करता रहा; लेकिन वह नहीं

आया; और उसका हृदय वियोग के भय से भर गया, और वह अपने बेटे के लिए भय से व्याकुल हो गया। वह इतना रोया कि उसके कपड़े आंसुओं से भीग गए, और फिर, आंसू पोंछकर, उसने अपनी सेनाओं को आगे बढ़ने का आदेश देते हुए एक घोषणा जारी की, और उन्हें एक लंबी यात्रा पर निकलने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार सभी सैनिक सवार हो गए, और सुल्तान अपने बेटे के लिए व्याकुल हृदय और शोक से भरा हुआ आगे बढ़ा। उसने अपनी सेना को छह भागों में, दाएं और बाएं, और आगे और पीछे, तैनात किया, और उनसे कहा, "कल तुम सब सड़क के मोड़ पर मिलोगे।" इस प्रकार विभाजित होकर, घुड़सवार आगे बढ़े, और उस दिन के शेष समय तक अंधेरा होने तक चलते रहे; वे पूरी रात और अगले दिन दोपहर तक चलते रहे, जब वे एक ऐसी जगह पहुँचे जहाँ सड़क चार शाखाओं में बँट गई थी; इसलिए उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि किस तरफ जाएँ। लेकिन यहाँ उन्होंने फटे हुए कपड़े और क्षत-विक्षत मांस देखा, खून के निशान देखे और कपड़ों के हर टुकड़े को गौर से देखा। जब राजा शाह-ज़ेरमिन ने यह देखा, तो वह दिल से रोया और बोला, "हे मेरे बेटे!" उसने अपना चेहरा थपथपाया, अपनी दाढ़ी नोची और अपने कपड़े फाड़ डाले, क्योंकि उसे अपने बेटे की मृत्यु का पूरा यकीन हो गया था। उसका रोना-धोना बहुत ज़्यादा था और सैनिक भी उसके साथ रो रहे थे, क्योंकि वे सब कमर-एज़-ज़ेमान के विनाश को निश्चित मान रहे थे। उन्होंने अपने सिर पर धूल डाली और रात उन पर छा गई, जबकि वे रोते-बिलखते मरणासन्न हो गए थे। राजा शाह-ज़ेमान। फिर वह अपने बेटे की मृत्यु के प्रति आश्वस्त होकर अपनी सेना के साथ अपने शहर लौट आया और इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.14%** है।

और राजकुमारी बुदूर।]27 या तो किसी जंगली जानवर या डाकू ने उस पर हमला किया और उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया। उसने खालिदन के द्वीपों में यह घोषणा जारी की कि लोग उसके बेटे कमर-एज़-ज़ेमान के शोक के प्रतीक के रूप में काले कपड़े पहनें, और उसने अपने लिए एक इमारत बनवाई जिसका नाम उसने विलापगृह रखा; और हर गुरुवार और सोमवार को वह अपनी सेना और प्रजा के मामलों का फैसला करता था; बाकी का हफ्ता वह विलापगृह में अपने बेटे के लिए शोक मनाते और शोकगीत गाते हुए बिताता था। इस बीच, रानी बुदूर आबनूस देश की शासक बनी रही, लोग उसकी ओर उंगली करके कहते थे, यह राजा अरमानूस का दामाद है; और हर रात वह हयात-एन-नुफूस के साथ सोती थी, अपने पति कमर-एज़-ज़ेमान की अनुपस्थिति की शिकायत करती थी, और उसे उसकी सुंदरता और प्रेम* का वर्णन करती थी, और सपने में ही सही, उससे मिलने की इच्छा रखती थी। अब कमर-एज़-ज़ेमान काफी समय तक बाग में उसके मालिक के साथ रहे, दिन-रात रोते, आहें भरते और अपने बीते सुख-सुविधाओं के लिए कविताएँ लिखते रहे। माली उन्हें सांत्वना देते हुए कहता कि साल के अंत में जहाज मुसलमानों के देश के लिए रवाना होगा। इस प्रकार वे तब तक वहीं रहे जब तक एक दिन उन्होंने लोगों को इकट्ठा होते नहीं देखा, जिसे देखकर वे आश्चर्यचकित रह गए। माली उनके पास आया और बोला, "हे मेरे पुत्र, आज काम बंद कर दो और पेड़ों को पानी मत दो; क्योंकि आज लोगों का त्योहार है, जिसमें वे एक-दूसरे से मिलने आते हैं। इसलिए आराम करो और केवल बाग पर नजर रखो; क्योंकि मैं तुम्हारे लिए जहाज की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, क्योंकि अब बहुत कम समय बचा है, और तुम्हें मुसलमानों के देश भेजना चाहता हूँ।" — तब माली चला गया; और कमर-एज़-ज़ेमान बाग में अकेले रह गए। उसका हृदय टूट गया था, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे, और वह

तब तक रोता रहा जब तक कि बेहोश होकर गिर नहीं पड़ा; और जब उसे होश आया, तो वह उठा और बगीचे में घूमने लगा, अपनी बदकिस्मती और लंबे समय से चले आ रहे अलगाव और जुदाई पर विचार करता रहा। उसकी बुद्धि इस प्रकार विचलित हो गई, वह लड़खड़ाकर अपने चेहरे के बल गिर पड़ा, और उसका माथा एक पेड़ की जड़ से इतनी ज़ोर से टकराया कि उसका खून बह निकला और उसके आँसुओं में मिल गया। फिर भी उसने खून पोंछा और अपने आँसू सुखाए, और अपने माथे पर एक कपड़ा बाँधकर उठा और बगीचे में घूमना जारी रखा। तभी उसकी नज़र एक पेड़ पर पड़ी जिस पर दो पक्षी आपस में लड़ रहे थे; उनमें से एक ने दूसरे को हरा दिया, उसकी गर्दन पर चोंच मारी और उसका सिर धड़ से अलग कर दिया, और सिर लेकर उड़ गया। इस प्रकार मरे हुए पक्षी का शरीर ज़मीन पर गिर पड़ा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.64%** है।

कमर-एज़-ज़ेमान के सामने, जब वह पक्षी वहाँ पड़ा था, तभी अचानक दो बड़े पक्षी उस पर झपटे। उनमें से एक पक्षी उसके ऊपरी हिस्से पर और दूसरा उसकी पूंछ पर बैठ गया। उन्होंने अपने पंख उस पर फैला दिए और अपनी गर्दन उसकी ओर बढ़ाकर विलाप करने लगे। जब कमर-एज़-ज़ेमान ने उन दो पक्षियों को अपने साथी पर विलाप करते देखा, तो वह अपनी पत्नी से बिछड़ने के कारण रोने लगा। इसके बाद उसने देखा कि दोनों पक्षियों ने एक गड्ढा खोदा और उसमें मारे गए पक्षी को दफना दिया। ऐसा करने के बाद वे आकाश में उड़ गए। कुछ देर बाद वे उस पक्षी को लेकर वापस आए जिसने हत्या की थी। वे उसे लेकर वध किए गए पक्षी की कब्र पर उतरे, और वहाँ उस पर झुककर उसे मार डाला: उन्होंने उसका शरीर चीर डाला, उसकी आँतें निकाल लीं, और उसका खून वध किए गए

पक्षी की कब्र पर डाल दिया: फिर उन्होंने उसके मांस को बिखेर दिया, उसकी खाल फाड़ दी, और उसके अंदर जो कुछ भी था उसे निकालकर अलग-अलग जगहों पर बिखेर दिया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.43%** है।

तिल*! राजकुमार कामाऊ की कहानी, 4]3$-ज़ेमा, आदि। 129 यह सब कामाऊ-एज़-ज़ेमा की हैरानी भरी निगाहों के सामने घट रहा था; और जब उसकी नज़र उस जगह पर पड़ी जहाँ दो बड़े पक्षियों ने दूसरे को मार डाला था, तो उसने कुछ चमकता हुआ देखा। वह उसके पास गया और

देखा कि वह पक्षी का पेट था: उसने उसे उठाया और खोला, और उसमें वह पत्थर पाया जो उसकी पत्नी से उसके बिछड़ने का कारण था। उसे देखते ही वह समझ गया और खुशी से झूम उठा; और जब उसे होश आया तो उसने मन ही मन कहा, यह एक शुभ संकेत है, और मेरी प्रेमिका से मेरे पुनर्मिलन का शगुन है! फिर उसने उसकी जाँच की, उसे अपनी आँख पर रखा,75 और उसे अपनी बांह पर बाँध लिया, उससे एक सुखद परिणाम की उम्मीद करते हुए; जिसके बाद वह उठा और माली की प्रतीक्षा में इधर-उधर घूमने लगा। वह रात तक उसकी तलाश करता रहा; लेकिन वह नहीं आया। इसलिए कर्णर-एज़-ज़ेमान सुबह तक अपनी सामान्य जगह पर सोता रहा, फिर उठा और काम पर लग गया। उसने खजूर के रेशों से बनी रस्सी से खुद को बांधा, कुदाल और टोकरी ली और बगीचे के बीच में चला गया, जहाँ तक कि वह एक बबूल के पेड़ के पास नहीं पहुँच गया। उसने कुदाल से उसकी जड़ पर प्रहार किया, जिससे ज़ोरदार आवाज़ गूंजी। उसने मिट्टी हटाई; और ऐसा करने पर उसे एक गुप्त द्वार मिला, जिसे खोलने पर उसे एक छेद दिखाई दिया; वह उसमें उतर गया और उसने थारनूद और आद के ज़माने का एक पुराना कमरा देखा, जो विशाल था और लाल सोने से भरे कई घड़ों से भरा हुआ था; यह देखकर उसने मन ही मन कहा, थकान दूर हो गई है, और आनंद और खुशी आ गई है! फिर वह उस जगह से बगीचे में वापस आया और गुप्त द्वार को बंद करके बगीचे के पेड़ों को पानी पहुँचाने का अपना काम फिर से शुरू कर दिया। इस प्रकार वह दिन ढलने तक अपने काम में व्यस्त रहा, तभी माली उसके पास आया और बोला, “हे मेरे पुत्र, अपने जन्मस्थान पर शीघ्र लौटने की खुशखबरी सुनो; क्योंकि व्यापारियों ने यात्रा की तैयारी कर ली है और तीन दिन बाद जहाज़ आबनूस नगर के लिए रवाना होगा, जो मुसलमानों के प्रमुख नगरों में से एक है; और जब

तुम वहाँ पहुँच जाओगे, तो छह महीने तक ज़मीन के रास्ते खालिदान द्वीप और शाह-ज़ेमान के राजा के पास जाओगे।" यह सुनकर कमर-एज़-ज़ेमान बहुत प्रसन्न हुआ और माली का हाथ चूमते हुए बोला, "हे मेरे पिता, जैसे आपने मुझे खुशखबरी दी है, वैसे ही मैं भी आपको खुशखबरी देता हूँ।" और उसने उसे सराय के मामले की जानकारी दी। इस पर माली भी प्रसन्न हुआ और बोला, मैं अस्सी वर्षों से इस बगीचे में कुछ भी नहीं पा रहा था, और तुम मेरे साथ एक वर्ष से भी कम समय में यह खोज लाई हो: इसलिए यह तुम्हारा पुरस्कार है, और तुम्हारे दुःख का अंत करने का साधन है; II. S

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.59%** है।

130 राजकुमार कामर-ज़-ज़कमान की कहानी' और मैं तुम्हें तुम्हारे परिवार में लौटने और तुम्हारे प्रियतम से मिलने में सहायता करूँगा। लेकिन कामर-ज़-ज़मदन ने कहा, इसे निश्चित रूप से मेरे और तुम्हारे बीच बाँटना होगा। फिर उसने माली को लिया और उसे उस कक्ष में ले गया, और उसे बीस जारों में रखा सोना दिखाया: तो उसने दस और माली ने दस ले लिए। और माली ने उससे कहा, हे मेरी आत्मा, अपने लिए बड़े-बड़े जारों में इस बगीचे में उगे 'असाफीरी जैतून' भर लो; क्योंकि ये केवल हमारे देश में ही पाए जाते हैं, और व्यापारी इन्हें अन्य सभी देशों में निर्यात करते हैं: और तुम सोने को जारों में और जैतून को सोने के ऊपर रख दो: फिर उन्हें बंद कर दो और जहाज पर ले जाओ। इसलिए कमर-एज़-ज़ेमाई तुरंत उठे और पचास बड़े घड़े भरकर उनमें सोना भर दिया, और सोने के ऊपर जैतून रखकर प्रत्येक घड़े को बंद कर दिया; 79 और एक घड़े में उन्होंने कीमती पत्थर रख दिया। इसके बाद वे माली से बातचीत करने बैठ गए और अपने परिवार से शीघ्र मिलने के प्रति आश्वस्त होकर मन ही मन

कहने लगे, “जब मैं आबनूस द्वीप पहुँच जाऊँगा, तो वहाँ से अपने पिता के देश की यात्रा करूँगा और अपनी प्रिय बुदूर के बारे में पूछताछ करूँगा: परन्तु मुझे आश्चर्य है कि क्या वह अपने देश लौट आई है, या अपने पिता के देश की यात्रा पर चली गई है, या रास्ते में उसके साथ कोई दुर्घटना हो गई है।” फिर वे दिन बीतने की प्रतीक्षा में बैठ गए और माली को पक्षियों की कहानी और उनके बीच घटी घटनाओं के बारे में बताया, जिस पर माली आश्चर्यचकित रह गया। इसके बाद दोनों सुबह तक सोए रहे, और माली बीमार होकर उठा, और दो दिन तक बीमार ही रहा; और तीसरे दिन उसकी बीमारी इतनी बढ़ गई कि उसके जीवन की आशा ही नहीं रही। इसलिए कमर-एज़-ज़ेइमिन माली के लिए दुखी हुआ; और जब वह इस हालत में था, तभी जहाज़ का मालिक नाविकों के साथ आया और माली के बारे में पूछताछ की: उसने उन्हें उसकी बीमारी के बारे में बताया। तब उन्होंने पूछा, "वह युवक कहाँ है जो हमारे साथ आबनूस के द्वीप पर जाना चाहता है?" और कमर-एज़-ज़ेइमिन ने उत्तर दिया, "वह वही युवक है जो आपके सामने है।" और उसने उनसे बर्तनों को जहाज़ पर ले जाने का अनुरोध किया। इसलिए उन्होंने उन्हें जहाज़ पर रख दिया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.80%** है।

और टिक इमजिंक्स ह्ल'डोर। 131 और कामर-एज़-ज़ेमान से कहा, जल्दी करो; क्योंकि हवा धीमी हो गई है। और उसने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। फिर उसने अपना राशन जहाज़ पर पहुँचाया, और माली को विदाई देने के लिए वापस लौटा; लेकिन उसने उसे मृत्यु की पीड़ा में पाया: इसलिए वह उसके सिर के पास तब तक बैठा रहा जब तक उसकी मृत्यु नहीं हो गई; और उसने उसकी आँखें बंद कर लीं, और उसके शरीर को दफ़नाने के लिए तैयार किया, और उसे दफ़ना दिया। यह

करने के बाद, वह जहाज़ पर गया। हालाँकि, उसने पाया कि जहाज़ ने अपने पाल फैला दिए थे और चल पड़ा था; और वह समुद्र को चीरता हुआ तब तक चलता रहा जब तक कि वह उसकी आँखों के सामने से ओझल नहीं हो गया। वह व्याकुल और परेशान हो गया, और वह चिंतित और दुखी होकर बगीचे में लौट आया, और अपने सिर पर धूल डाली। उसने बगीचे को उसके मालिक से किराए पर लिया, और पेड़ों को पानी देने में मदद करने के लिए एक आदमी को काम पर रखा; और गुप्त द्वार से नीचे उतरकर वह बैठक कक्ष में गया और शेष सोने को पचास अन्य बड़े जारों में भरकर उसके ऊपर जैतून रख दिए।81 फिर उसने जहाज के बारे में पूछताछ की, और लोगों ने उसे बताया कि वह साल में एक बार से अधिक नहीं चलता। उसका मानसिक कष्ट बढ़ गया और वह अपने ऊपर आई विपत्ति, विशेषकर लेडी बुदूर के कीमती पत्थर के खो जाने पर शोक मनाने लगा। वह रात-दिन रोता और कविताएँ पढ़ता रहा। इसी बीच, हवा जहाज के अनुकूल हो गई और वह आबनूस द्वीप पर पहुँच गया। और नियति के अनुसार, रानी बुदूर एक खिड़की पर बैठी थीं और उन्होंने जहाज को किनारे पर लंगर डालते हुए देखा। यह देखकर उनका हृदय व्याकुल हो गया और वह सरदारों और दरबारियों के साथ सवार होकर किनारे पर गईं और जहाज के पास रुक गईं, जब चालक दल माल को गोदामों में ले जा रहा था। उन्होंने तुरंत जहाज के कप्तान को बुलाया और उनसे पूछा कि वह क्या लाए हैं; और उसने उससे कहा, “हे महाराज, इस पात्र में मेरे पास सुगंधित पदार्थ, औषधीय पाउडर, काजल, लेप, मलहम, धन-दौलत, कीमती सामग्रियाँ और कीमती सामान है, जिन्हें ऊँट और नावें नहीं ढो सकतीं; इनमें कई प्रकार के सुगंध, मसाले, अगरबत्ती, इमली और असाफीरी जैतून हैं, जो इस देश में मुश्किल से मिलते हैं।” यह सुनकर उसे जैतून खाने की इच्छा हुई और उसने जहाज के मालिक से पूछा, “तुम

कितने जैतून लाए हो?" उसने उत्तर दिया, "मेरे पास पचास बड़े घड़े भरे हुए हैं; लेकिन उनके मालिक हमारे साथ नहीं आए; और महाराज उनमें से जो चाहें ले सकते हैं।" तो उसने कहा, "इन्हें किनारे लगाओ, ताकि मैं इन्हें देख सकूँ।" और जहाज के मालिक ने अपने दल को बुलाया, जिस पर वे पचास घड़े बाहर ले आए; और उसने एक घड़ा खोला, और जैतून देखकर कहा, "मैं ये पचास घड़े ले लूँगी।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.42%** है।

132 राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी और मैं तुम्हें इनकी कीमत दे दूँगी, चाहे जो भी हो। जहाज़ के कप्तान ने उत्तर दिया, हमारे देश में इनकी कोई कीमत नहीं है; लेकिन इनका मालिक हमसे पीछे रह गया है, और वह एक गरीब आदमी है। लेकिन उसने पूछा, इनकी कीमत क्या है? और उसने उत्तर दिया, एक हज़ार चाँदी के सिक्के। — मैं इन्हें ले लूँगी, उसने उत्तर दिया, एक हज़ार चाँदी के सिक्कों में। फिर उसने आदेश दिया कि इन्हें महल ले जाया जाए; और जब रात हुई, तो उसने एक घड़ा लाने का आदेश दिया; और उसने उसे खोला। कमरे में उसके और हयात-एरी-नुफूस के अलावा कोई नहीं था; और उसने अपने सामने एक थाली रखी, और जब उसने घड़े की कुछ सामग्री उसमें डाली, तो थाली में लाल सोने का ढेर गिर गया; जिस पर उसने हयात-ए-नुफूस से कहा, यह तो सोने के सिवा कुछ नहीं है! इसलिए उसने सब कुछ जांचा और पाया कि सभी घड़ों में सोना भरा हुआ था, और जैतून एक घड़े को भी पूरी तरह से नहीं भर पा रहे थे। सोने में खोजते हुए उसे उसके साथ एक कीमती पत्थर मिला। उसने उसे उठाया और जांचा, और पाया कि यह वही पत्थर था जो उसकी पतलून के पट्टे से बंधा हुआ था और जिसे कमर-एज़-ज़ेमान ने ले लिया था। जैसे ही उसने उसे पहचाना, वह खुशी से चिल्लाई और बेहोश

हो गई। जब उसे होश आया, तो उसने मन ही मन कहा, "यह कीमती पत्थर मेरे प्रिय कमर-एज़-ज़ेमान से बिछड़ने का कारण था; लेकिन यह सौभाग्य का संकेत है!" फिर उसने हयात-एन-नुफूस को बताया कि इसका मिलना उसके पुनर्मिलन का संकेत है। और जब सुबह हुई, तो वह सिंहासन पर बैठी और जहाज के कप्तान को बुलाया, जो आकर उसके सामने जमीन चूमने लगा; और उसने उससे कहा, "तुमने इन जैतूनों के मालिक को कहाँ छोड़ा था?" उसने उत्तर दिया, “हे युग के राजा, हमने उसे मगी लोगों के देश में छोड़ दिया है; वह एक माली है।” तब उसने कहा, “यदि तुम उसे नहीं लाओगे, तो तुम नहीं जानते कि तुम पर और तुम्हारे जहाज पर क्या विपत्ति आएगी।” उसने तुरंत व्यापारियों के गोदामों पर मुहर लगाने का आदेश दिया और उनसे कहा, “इन जैतूनों का स्वामी मेरा अपराधी है और मेरा ऋणी है; और यदि वह नहीं आया, तो मैं तुम सबको मार डालूँगी और तुम्हारा माल ज़ब्त कर लूँगी।” तब उन्होंने जहाज के स्वामी से विनती की और उसे जहाज का किराया चुकाने का वादा किया, यदि वह लौट आए, और उससे कहा, “हमें इस अत्याचारी से बचाओ।” तब स्वामी जहाज पर सवार हुआ और पाल खोल दिए, और ईश्वर ने उसकी सुरक्षा सुनिश्चित की, जिससे वह मगी लोगों के द्वीप पर पहुँच गया; और रात में वहाँ पहुँचकर वह बगीचे में चला गया। कमर-एज़-ज़ेमान के लिए रात उबाऊ हो गई थी, और वह बगीचे में बैठकर अपनी प्रेमिका के बारे में सोच रहा था, उन दुर्भाग्य के लिए रो रहा था जो उसके साथ घटे थे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.15%** है।

 उस पर विपत्ति आ पड़ी; और जहाज के स्वामी ने उसके बगीचे का द्वार खटखटाया, इसलिए उसने द्वार खोला और

उसके पास गया, और तुरंत नाविक उसे उठाकर ले गए, और उसके साथ सवार होकर पाल खोल दिए और चले गए। उन्होंने कई दिनों और रातों तक अपनी यात्रा जारी रखी, जबकि कमर-एज़-ज़ेमान को इस घटना का कारण पता नहीं चला। उसने उनसे कारण पूछा, और उन्होंने उत्तर दिया, "तू आबनूस द्वीप समूह के राजा, राजा अरमानूस के पुत्र का अपराधी है, और तूने उसकी संपत्ति चुराई है, हे दुर्भाग्यशाली!" लेकिन उसने उत्तर दिया, "अल्लाह की कसम, मैंने अपने जीवन में कभी उस देश में प्रवेश नहीं किया, और न ही मैं उसे जानता हूँ।" उन्होंने उसके साथ अपनी यात्रा जारी रखी जब तक कि वे आबनूस द्वीप समूह के दर्शन नहीं कर पाए, और उसे महिला बुदूर के पास ले गए, जिसने उसे देखते ही पहचान लिया, और कहा, "उसे हिजड़ों के हवाले कर दो, ताकि वे उसे स्नानागार में ले जा सकें।" फिर उसने 1-* की आशंका को दूर कर दिया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.36%** है।

134 राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी: वह व्यापारियों से डरती थी, इसलिए उसने जहाज के स्वामी को दस हजार सोने के सिक्कों के बराबर एक सम्मान वस्त्र भेंट किया; इसके बाद, वह हयात-एन-नुफ़ूस के पास गई और उसे घटना की जानकारी देते हुए कहा, "जब तक मेरी इच्छा पूरी न हो जाए और मैं एक ऐसा कार्य न कर लूँ जिसे दर्ज किया जाए और बाद में राजाओं और प्रजा को सुनाया जाए, तब तक इस खबर को छुपा कर रखना।" जब हयात-एज़-ज़ेमान ने उसे स्नानघर ले जाने का आदेश दिया, तो उन्होंने ऐसा ही किया और उसे राजाओं के वस्त्र पहनाए; और जब वह स्नानघर से बाहर आया, तो वह पूर्वी विलो की शाखा या किसी ऐसे ग्रह की तरह प्रकट हुआ जिसके प्रकट होने पर सूर्य और चंद्रमा लज्जित हो गए; और उसकी आत्मा उसमें लौट आई। फिर वह उसके

पास गया और महल में प्रवेश किया; लेकिन जब हयात-एन-नुफूस ने उसे देखा, तो उसने अपने हृदय को वश में कर लिया, ताकि उसका उद्देश्य पूरा हो सके। उसने उसे नौकर-चाकर, ऊँट और खच्चर दिए, उसे धन का खजाना दिया और उसे तब तक पदोन्नति देती रही जब तक कि उसे कोषाध्यक्ष नहीं बना दिया और सारा खजाना उसकी देखरेख में सौंप दिया। उसने उसे उच्च कोटि का दर्जा दिया और सभी सरदारों को उसकी पदवी से अवगत कराया, और वे सभी उससे प्रेम करने लगे। रानी बुदूर प्रतिदिन उसकी नियुक्तियाँ बढ़ाती रही, और कमर-एज़-ज़ेमान को यह समझ नहीं आया कि वह उसे इस प्रकार सम्मानित क्यों कर रही है। अपनी अपार संपत्ति से उसने उदारतापूर्वक उपहार दिए; और उसने राजा अरमानूस की इतनी लगन से सेवा की कि वह उससे प्रेम करता था, जैसा कि सरदार, अन्य बड़े लोग और आम जनता भी करते थे, यहाँ तक कि उन्होंने उसकी जान की कसम खाई।83 लेकिन इस पूरे समय कमर-एज़-ज़ेमान रानी बुदूर द्वारा दिखाए गए सम्मानों पर आश्चर्यचकित होता रहा और मन ही मन कहता रहा, अल्लाह की कसम, इस प्रेम का कोई कारण अवश्य होगा; या शायद यह राजा किसी बुरी मंशा से मुझ पर इतना अनुग्रह कर रहा है: इसलिए मुझे उसके देश से जाने की अनुमति लेनी चाहिए। इसलिए, वह रानी बुदूर के पास गया और उससे कहा, "हे महाराज, आपने मुझ पर बहुत कृपा की है, और आपकी कृपा पूर्ण हो जाएगी यदि आप मुझे जाने की अनुमति दें और मुझसे वह सब कुछ ले लें जो आपने मुझ पर किया है।" रानी बुदूर मुस्कुराई और बोली, "जब आप पर इतनी कृपा और असाधारण दान है, तो आपको यात्रा करने और खतरों में कूदने की इच्छा क्यों हो रही है?" - "हे महाराज," कमर-एज़ज़ेनिन ने उत्तर दिया, "यदि यह कृपा बिना किसी कारण के है, तो यह अत्यंत आश्चर्यजनक है, विशेष रूप से इसलिए कि आपने मुझे वृद्धों के

योग्य पद प्रदान किए हैं, जबकि मैं अभी बच्चा ही हूँ।" तब रानी बुदूर उसे एक निजी कक्ष में ले गई और अपना परिचय दिया: और उसने पाया कि वह उसकी पत्नी, रानी बुदूर, द्वीपों और समुद्रों के स्वामी राजा अल-घायूर की पुत्री थी; जिसके बाद उन्होंने एक-दूसरे को गले लगाया और चूमा। उसने उसे सब कुछ बताया जो हुआ था

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.31%** है।

और राजकुमारी बुदूर। 135 उसके साथ शुरू से अंत तक जो कुछ हुआ; और उसने भी उसे अपने साथ घटी सारी बातें बता दीं। और जब अगली सुबह हुई और उसकी रोशनी फैली, तो रानी बुदूर ने राजा अरमानूस को संदेश भेजा और उसे अपने मामले की सच्चाई बताई, कि वह कमारेज़-ज़ेमान की पत्नी थी, और उसे अपनी कहानी और उनके अलग होने का कारण बताया; और राजा अरमानूस ने उसकी कहानी सुनकर बहुत आश्चर्य किया। उसने इसे सोने के अक्षरों में लिखने का आदेश दिया, और फिर कमारेज़-ज़ेमान की ओर देखकर उससे कहा, हे राजा के पुत्र, क्या तुम मेरी पुत्री हयात-एन-नुफूस से विवाह करके मेरे साथ गठबंधन करोगे? उसने उत्तर दिया, मुझे रानी बुदूर से परामर्श करना होगा; क्योंकि मैं उसका असीम ऋणी हूँ। लेकिन जब उसने उससे परामर्श किया, तो उसने उत्तर दिया, यह प्रस्ताव बहुत अच्छा है! इसलिए उससे विवाह करो, और मैं उसकी दासी बन जाऊँगी; क्योंकि मैं उसका ऋणी हूँ, उस पर दया, उपकार और कृतज्ञता का, विशेषकर इसलिए कि हम उसके निवास में हैं, और उसके पिता की कृपा से हम पर बहुत कृपा हुई है।84 — इसलिए जब कर्नार-एज़-ज़ेमान ने देखा कि रानी बुदूर इस बात से सहमत हैं और हयात-एन-नुफूस से ईर्ष्या नहीं करतीं, तो उन्होंने इस विषय पर रानी से सहमति जताई और राजा अरमानूस को रानी बुदूर की कही बात से

अवगत कराया कि वह विवाह को स्वीकार करती हैं और हयात-एन-नुफूस की दासी बनेंगी। कर्नार-एज़-ज़ेमान से ये शब्द सुनकर राजा अरमानूस अत्यंत प्रसन्न हुए। वह तुरंत बाहर गया और अपने सिंहासन पर बैठ गया। उसने सभी अमीरों, वज़ीरों, दरबारियों और साम्राज्य के अन्य सरदारों को बुलाया और उन्हें कमर-एज़-ज़ेमान और उसकी पत्नी रानी बुदूर की पूरी कहानी सुनाई। उसने बताया कि वह अपनी बेटी हयात-एन-नुफूस का विवाह कमर-एज़-ज़ेमान से करना चाहता है और उसे रानी बुदूर के स्थान पर उनका सुल्तान नियुक्त करना चाहता है। इस पर सभी ने कहा, "चूंकि कमर-एज़-ज़ेमान रानी बुदूर का पति है, जो उससे पहले हमारी संप्रभु थी, जब हम उसे अपने राजा अरमानूस का दामाद मानते थे, इसलिए हम सभी उसे अपना सुल्तान पाकर संतुष्ट हैं और हम उसके सेवक बने रहेंगे और कभी भी उसके प्रति अपनी निष्ठा से विचलित नहीं होंगे।" इसलिए राजा अरमानूस इस बात से अत्यंत प्रसन्न हुए: उन्होंने कादियों, गवाहों और साम्राज्य के प्रमुख अधिकारियों को बुलाया और अपनी पुत्री, रानी हयास-एन-नुफूस से कमार-एज़-ज़ेमान का विवाह संपन्न कराया। उन्होंने उत्सव मनाया, भव्य भोज दिए, सभी अमीरों, सरदारों और सैनिकों को कीमती सम्मान वस्त्र प्रदान किए, गरीबों और जरूरतमंदों को दान दिया और सभी कैदियों को रिहा कर दिया; और जनता ने इस अवसर पर खूब आनंद मनाया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.22%** है।

130 दो राजकुमारों की कहानी: राजा कर्नार-एज़-ज़ेरनान के राज्याभिषेक के समय, उनकी महिमा, समृद्धि, सुख और सम्मान की निरंतरता के लिए प्रार्थना की गई। सुल्तान बनते ही, कामार-एज़-ज़ेरनान ने सीमा शुल्क माफ कर दिया; उन्होंने अपनी प्रजा के प्रति प्रशंसनीय आचरण किया और

अपनी पत्नियों के साथ सुख, आनंद, निष्ठा और प्रसन्नता में रहे, दोनों के प्रति निष्पक्ष व्यवहार किया। इस प्रकार वे लंबे समय तक रहे; उनकी चिंताएँ और दुख मिट गए; और वे अपने पिता, राजा शाहज़ेमान, और उनके अधीन प्राप्त महिमा और शक्ति को भूल गए। दो राजकुमारों अल-आम जाद और अल-असद की कहानी। इसके बाद, ईश्वर (जिनका नाम महान हो!) ने कामार-एज़-ज़ेरनान को उनकी दो पत्नियों से दो पुत्रों का आशीर्वाद दिया। वे दो चमकते चाँद के समान थे: उनमें से बड़ा रानी बुदूर का पुत्र था, जिसका नाम राजकुमार अल-अमजद था; और छोटा हयात-एन-नुफ़ूस का पुत्र था, जिसका नाम राजकुमार अल-असद था; और अल-असद अपने भाई अल-अमजद से अधिक सुंदर था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

28.07% है।

एल-अमजद और अल-असद का पालन-पोषण भव्यता और कोमलता से हुआ, और उन्हें शिष्टाचार और कलाओं में निपुणता प्राप्त हुई। उन्होंने सुलेख, सामान्य विज्ञान, शासन कला और घुड़सवारी सीखी, जब तक कि वे पूर्णता की ओर अग्रसर नहीं हो गए और असाधारण सुंदरता और आकर्षण से विख्यात हो गए, जिससे महिलाएं उनके आकर्षण में मोहित हो गईं। वे सत्रह वर्ष की आयु तक हमेशा एक-दूसरे के साथ रहे, खाते-पीते रहे और कभी अलग नहीं हुए; और इस कारण सभी लोग उनसे ईर्ष्या करते थे। जब वे वयस्क हो गए और दोनों ही सभी गुणों से परिपूर्ण हो गए, तो उनके पिता जब भी यात्रा करते, उन्हें बारी-बारी से न्याय कक्ष में बिठाते, और उनमें से प्रत्येक एक-एक दिन के लिए लोगों का न्याय करता। अब, नियति और भाग्य के अनुसार, राजा के महल में दो महिलाएं, जिन पर राजा का स्नेह था, दो राजकुमारों, अल-अमजद और अल-असद से मोहित हो गईं। इन दोनों स्त्रियों में से प्रत्येक अपने प्रेमी के साथ खेलती, उसे चूमती और अपने सीने से लगाती थी; और जब उसकी माँ ने यह देखा, तो उसने सोचा कि यह केवल माता-पिता का स्नेह है। प्रेम ने दोनों स्त्रियों के दिलों पर पूर्णतः कब्जा कर लिया था, और जब वे लंबे समय तक अपने मिलन का कोई रास्ता न पाकर प्रतीक्षा करती रहीं, तो उन्होंने भोजन-पानी त्याग दिया और नींद का आनंद भी छोड़ दिया। तब राजा शिकार पर गए और अपने दोनों पुत्रों को अपनी जगह न्याय करने का आदेश दिया, रिवाज के अनुसार, एक-एक दिन के लिए। इस प्रकार पहले दिन, रानी बुदूर के पुत्र अल-अमजद ने न्याय किया, और आदेश दिए और निषेध किए, नियुक्तियाँ दीं और पदच्युत किए, और प्रदान किया और अस्वीकार किया। और उनकी प्रेमिका ने उन्हें एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने राजा को प्रसन्न करने का प्रयास किया, यह घोषणा

की कि वह पूरी तरह से उनके प्रति समर्पित हैं और उनके प्रेम से व्याकुल हैं, उन्होंने अपनी पूरी स्थिति राजा के सामने रखी और उनसे विवाह करने की इच्छा व्यक्त की। उसने एक कागज़ लिया और उस पर ये शब्द लिखे: — उस गरीब, प्रेम में व्याकुल स्त्री से; उस शोकग्रस्त, विमुख स्त्री से; जिसकी जवानी तेरे प्रेम में डूबी है, और जिसका कष्ट तेरे कारण लंबा खिंच गया है। — अगर मैं तुझे अपने दुःख की गहराई, अपने दुख, अपने हृदय में उमड़ते प्रचंड प्रेम, अपने रोने-धोने, अपने शोकग्रस्त हृदय के टुकड़े-टुकड़े होने, अपने निरंतर शोक, लगातार चिंताओं, और वियोग, उदासी और तीव्र इच्छा से होने वाले दर्द का वर्णन करूँ, तो मेरे मामले का वर्णन एक पत्र के लिए बहुत लंबा हो जाएगा, और कोई भी इसकी सीमा का अनुमान नहीं लगा सकता। धरती और आकाश ने

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.10%** है।

दो राजकुमारों की कहानी मेरे लिए विकट हो गई है, और मुझे तुझ पर ही भरोसा है; क्योंकि मैं मृत्यु के कगार पर पहुँच गई हूँ, और विनाश की भयावहता झेल चुकी हूँ। मेरा उत्साह, मेरे अलगाव और विरक्ति के साथ, अत्यधिक बढ़ गया है, और यदि मैं अपनी तीव्र इच्छा का वर्णन करूँ, तो कागज़ इसके लिए अपर्याप्त होंगे। — और इसके बाद, उसने ये दो छंद लिखे: — यदि मैं अपने द्वारा अनुभव की जाने वाली जलन, बीमारी, प्रेम के उन्माद और बेचैनी को समझाऊँ, तो न तो कागज़ बचेगा, न कलम, न स्याही, न ही लिखने के लिए कोई टुकड़ा। फिर उसने पत्र को कस्तूरी और अंबरग्रीस से सुगंधित एक कीमती रेशम के टुकड़े में लपेट दिया, और उसके साथ अपने बालों की रेशमी लटें रख दीं,88 जिनकी कीमत में खजाने खर्च हो जाते; इसके बाद उसने पूरे पत्र को एक रुमाल में लपेटकर एक हिजड़े को दे दिया और उसे राजकुमार अल-अमजद तक

पहुँचाने का आदेश दिया। हिजड़ा चला गया, उसे अपने भविष्य के गुप्त भाग्य का कोई ज्ञान नहीं था (क्योंकि जो भविष्य के सभी रहस्यों को जानता है, वही घटनाओं को अपनी इच्छा से निर्धारित करता है); और जब वह राजकुमार अल-अमजद के पास पहुँचा, तो उसने उनके सामने ज़मीन चूमी और पत्र सहित रुमाल उन्हें सौंप दिया। राजकुमार अल-अमजद ने उससे रुमाल ले लिया और उसे खोलकर पत्र देखा; और जब उन्होंने उसका अर्थ समझा, तो उन्हें पता चला कि उस स्त्री ने छल की योजना बनाई थी और अपने पिता, राजा कमर-एज़-ज़ेमान के प्रति विश्वासघात किया था। इस पर वह भयंकर क्रोधित हो गए और स्त्रियों के इस आचरण के लिए उन्हें कोसते हुए बोले, "धोखेबाज़ स्त्रियों पर धिक्कार है, जो बुद्धि और धर्म से रहित हैं!" फिर उसने अपनी तलवार निकाली और हिजड़े से कहा, "धिक्कार है तुझ पर, ऐ दुष्ट दास! क्या तू अपने स्वामी की स्त्री का विश्वासघात का पत्र लेकर आया है? अल्लाह की कसम, तुझमें कोई अच्छाई नहीं है, ऐ काले रंग के! ऐ घृणित दिखने वाले और चरित्रहीन!" और उसने तलवार से उसकी गर्दन पर वार किया, जिससे उसका सिर धड़ से अलग हो गया। इसके बाद उसने रूमाल को मोड़कर अपनी जेब में रख लिया और अपनी माँ के पास गया, और उसे सारी घटना बताई, उसे भी गालियाँ दीं और कहा, "तुममें से हर कोई किसी न किसी रूप में दूसरे से बुरा है। अल्लाह की कसम," उसने आगे कहा, "अगर मुझे अपने पिता कमर-एज़-ज़ेमान के प्रति दुर्व्यवहार करने का डर न होता, तो मैं उसके पास जाकर उसका सिर भी काट देता, जैसे मैंने हिजड़े का काटा।" • — फिर वह अपनी माता, रानी बुदूर से अत्यधिक क्रोधित अवस्था में निकल गया। और जब उसे पता चला कि उसने क्या किया है...

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

26.59% है।

अल-अमजद और अल-असद। 139 हिजड़ा अपनी प्रेमिका के पास पहुँचा, उसने उसे बुरा-भला कहा, शाप दिया और उसके विरुद्ध एक दुष्ट षड्यंत्र रचा। राजकुमार अल-अमजद ने अगली रात क्रोध, रोष और मानसिक पीड़ा से क्षीण होकर बिताई, उसे न तो भोजन और न ही पेय भाया, और न ही नींद आई। अगली सुबह, उसका भाई, राजकुमार अल-असद, अपने पिता, राजा कैनार-एज़-ज़ेमान के स्थान पर लोगों का न्याय करने के लिए बैठा; और उसने न्याय किया, न्याय का प्रशासन किया, नियुक्तियाँ दीं और पदच्युत किए, आदेश दिए और निषेध किए, और दान दिया और प्रदान किया; और वह दोपहर की नमाज़ के समय तक न्याय-कक्ष में बैठा रहा। तब उसकी प्रेमिका ने एक कपटी बूढ़ी औरत को संदेश भेजा और अपने दिल की बात उससे कह कर, एक कागज लेकर राजकुमार अल-असद को पत्र लिखा, जिसमें उसने अपने अत्यधिक प्रेम और उसके लिए अपने जुनून की शिकायत की। उसने राजकुमार को ये शब्द लिखे: — प्रेम और इच्छा के जुनून में मर रही उस स्त्री से, स्वभाव और रूप में सबसे आकर्षक, अपनी सुंदरता पर घमंडी, अपने प्रेममय रूप पर अभिमानी, जो अपने मिलन की इच्छा रखने वाली से घृणा करता है, जो विनम्र और दीन लोगों पर कृपा दिखाने में अनिच्छुक है, — क्रूर और तिरस्कारपूर्ण राजकुमार अल-असद को, जो असाधारण सुंदरता और अद्भुत आकर्षण से संपन्न है, तेजस्वी मुखमंडल और तेजस्वी माथा और अपार चमक से। यह मेरा पत्र है उसे, जिसके प्रेम ने मेरे शरीर को क्षीण कर दिया है, मेरी चमड़ी और हड्डियों को चूर-चूर कर दिया है। जान लो कि मेरा धैर्य टूट चुका है, और मैं अपनी स्थिति को लेकर व्याकुल हूँ: इच्छा और अनिद्रा ने मुझे बेचैन कर दिया है, और धैर्य और नींद ने मुझे नकार दिया है: शोक और जागना मुझसे अविभाज्य हो गए हैं, और तीव्र प्रेम

और इच्छा ने मुझे रोग और दुर्बलता के साथ पीड़ित किया है। लेकिन मेरा प्राण तेरे लिए बलिदान हो; और यदि प्रेम में डूबे लोगों का वध तुझे प्रसन्न करता है, तो अल्लाह तेरा जीवन लंबा करे, और तुझे हर बुराई से बचाए! और उसने ये पंक्तियाँ जोड़ीं: भाग्य ने तय किया है कि मैं तेरी प्रेमिका बनूँ, हे तू, जिसका आकर्षण पूर्णिमा के चाँद की तरह चमकता है! तू पूर्ण सौंदर्य और वाक्पटुता का स्वामी है; और सुंदरता में समस्त सृष्टि से परे है। मैं तुझे अपना कष्ट देने के लिए तैयार हूँ, तो क्या तू मुझे एक दृष्टि प्रदान करेगा? वह व्यक्ति धन्य है जो तेरे प्रेम में मरता है। वह निकम्मा है जो तुझे पसंद नहीं करता और तुझसे प्रेम नहीं करता। फिर उसने चिट्ठी को तेज सुगंध वाले कस्तूरी से अच्छी तरह सुगंधित किया और उसे अपने रेशमी बालों की लटों में लपेट दिया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.16%** है।

अल-एराक का रेशम, जिसमें आयताकार पन्ना लटकन के रूप में लगे थे, मोतियों और रत्नों से सजा हुआ था।89 ऐसा करने के बाद, उसने इसे बूढ़ी औरत को सौंप दिया और उसे राजकुमार अल-असद को देने का आदेश दिया। इसलिए बूढ़ी औरत उसे प्रसन्न करने के लिए चली गई और तुरंत राजकुमार अल-असद के पास गई, जो उसके प्रवेश करने पर अकेले थे; और उसने उन्हें वह कागज़, जिसमें कुछ लिखा था, सौंप दिया और उत्तर की प्रतीक्षा में बहुत देर तक रही। इस बीच राजकुमार अल-असद ने कागज़ पढ़ा और उसकी सामग्री समझ ली; और उसे रेशम की डोरियों में फिर से लपेटकर अपनी जेब में रख लिया। वह अत्यंत क्रोधित हो गया और धोखेबाज़ स्त्रियों को शाप दिया: फिर उठकर उसने अपनी तलवार म्यान से निकाली और बूढ़ी औरत की गर्दन पर प्रहार करके उसका सिर धड़ से अलग कर दिया; इसके बाद, वह उठा और अपनी माँ के पास गया

और स्त्री द्वेष में उसे भी अपशब्द कहे। फिर वह उससे अलग होकर अपने भाई, राजकुमार अल-अमजद के पास गया और उसे अपने साथ घटी सारी घटना बताई। उसने बताया कि उसने उस बुढ़िया को मार डाला है जो उसे पत्र लाई थी। राजकुमार अल-अमजद ने उत्तर दिया, "अल्लाह की कसम, हे मेरे भाई, कल जब मैं सिंहासन पर बैठा था, ठीक वैसा ही मेरे साथ भी हुआ जैसा आज तुम्हारे साथ हुआ है।" और उसने उसे सारी घटना से अवगत कराया। वे उस रात आपस में बातें करते रहे, धोखेबाज़ स्त्रियों को कोसते रहे और एक-दूसरे को इस मामले को छुपाने की सलाह देते रहे, कहीं ऐसा न हो कि उनके पिता को पता चल जाए।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.14%** है।

दो राजकुमारों की कहानी, इत्यादि। राजा को इसके बारे में पता चले और

वह उन दोनों स्त्रियों को मार डाले। इसलिए वे सुबह तक लगातार शोक में डूबी रहीं। अगली सुबह जब राजा अपने सैनिकों के साथ शिकार से लौटे और अपने महल में गए; उन्होंने सरदारों को विदा किया और उठकर महल में प्रवेश किया, जहाँ उन्होंने अपने बेटों के साथ ऐसा व्यवहार करने वाली दोनों स्त्रियों को बिस्तर पर अत्यंत दुर्बल अवस्था में लेटे हुए देखा। उन्होंने दोनों राजकुमारों के विरुद्ध एक षड्यंत्र रचा था और उन्हें नष्ट करने का निश्चय किया था; क्योंकि उन्होंने राजकुमारों की दृष्टि में अपना अपमान किया था और अपने इस अपराध के ज्ञात होने के परिणाम से भयभीत थीं। इसलिए जब राजा ने उन्हें इस अवस्था में देखा, तो उन्होंने उनसे पूछा, तुम्हें क्या हुआ है? वे दोनों उठ खड़ी हुईं और उनके हाथों को चूमकर, सच्चाई को उलटते हुए बोलीं, "हे महाराज, जान लीजिए कि आपके दोनों पुत्र, जो आपकी कृपा से पले-बढ़े हैं, उन्होंने हमारे प्रति अपने आचरण से आपके साथ विश्वासघात किया है और आपका अपमान किया है।" जब कमर-एज़-ज़ेमान ने ये शब्द सुने, तो उनके चेहरे पर अंधेरा छा गया और वे भयंकर क्रोधित हो गए, यहाँ तक कि क्रोध के कारण उनकी बुद्धि भी काम करना बंद कर गई। उन्होंने कहा, "मुझे इस घटना का अर्थ समझाइए।" तब उन दोनों ने अपनी-अपनी कहानी सुनाई और राजा के सामने फूट-फूटकर रोने लगीं। जब राजा ने उनका रोना देखा और उनकी बातें सुनीं, तो उन्हें उनकी सच्चाई का पूरा यकीन हो गया; और वे अत्यंत क्रोधित होकर अपने दोनों पुत्रों पर टूट पड़ने और उन्हें मार डालने की इच्छा से उठ खड़े हुए। तभी उनके ससुर, राजा अरमानूस, उनसे मिले। वे उनके शिकार से लौटने की खबर सुनकर उनका अभिवादन करने के लिए ही अंदर आ रहे थे। और उसने उसे हाथ में खींची हुई तलवार लिए और क्रोध के कारण नाक से खून बहते हुए देखा। उसने उससे पूछा कि उसे क्या परेशान कर रहा है, और कामर-एज़-ज़ेमान ने उसे अपने बेटों

अल-अमजद और अल-असद द्वारा किए गए सभी कार्यों के बारे में बताया (जैसा कि उसने अनुमान लगाया था), और उससे कहा, मैं अब उनके पास जा रहा हूँ ताकि उन्हें अत्यंत अपमानजनक तरीके से मार डालूँ और उन्हें एक बड़ा शर्मनाक उदाहरण बना दूँ। उसके ससुर, राजा अरमानूस, भी उन पर समान रूप से क्रोधित थे, और उन्होंने उससे कहा, हे मेरे पुत्र, तू जो कार्य करना चाहेगा वह उत्तम होगा; और ईश्वर उन्हें, और ऐसे किसी भी पुत्र को, जो अपने पिता के सम्मान के विरुद्ध कार्य करता है, आशीर्वाद न दे; परन्तु हे मेरे पुत्र, कहावत के रचयिता कहते हैं, जो परिणाम की चिंता नहीं करता, भाग्य उसका साथ नहीं देता; और वे हर हाल में तेरे पुत्र हैं। यह उचित होगा कि तू उन्हें अपने हाथों से न मारे। क्योंकि ऐसा करने से तुम उनकी पीड़ा का आनंद लोगे,90 और बाद में पछताओगे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.15%** है।

जब पश्चाताप से कोई लाभ न हो, तो उन्हें मृत्युदंड दे दो। परन्तु उन्हें किसी ममलुक के साथ भेज दो, ताकि वह उन्हें रेगिस्तान में, तुम्हारी दृष्टि से ओझल होने पर मार डाले। अतः जब राजा कमर-एज़-ज़ेमिन ने अपने ससुर, राजा अरमानूस के ये शब्द सुने, तो उसने उन्हें न्यायसंगत पाया। अतः उसने अपनी तलवार म्यान में रख ली, और लौटकर अपने सिंहासन पर बैठ गया, और अपने कोषाध्यक्ष को बुलाया, जो एक बहुत बूढ़ा व्यक्ति था, और मामलों के प्रबंधन तथा भाग्य के उतार-चढ़ाव का अनुभवी था। उसने उससे कहा, "मेरे दो पुत्रों अल-अमजद और अल-असद के पास जाओ, उनके हाथ पीछे की ओर कसकर बाँध दो, और उन्हें दो संदूकों में डालकर एक खच्चर पर बिठा दो; फिर तुम उस पर सवार होकर उनके साथ रेगिस्तान के बीच में जाओ, और उनका वध कर दो;

उसके बाद उनके रक्त से दो काँच की बोतलें भर दो, और उन्हें शीघ्र मेरे पास ले आओ।” कोषाध्यक्ष ने उत्तर दिया, “मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।” फिर वह तुरंत उठा और अल-अमजद और अल-असद की ओर चल पड़ा, जहाँ महल के प्रवेश द्वार से निकलते हुए वे दोनों उससे मिले। वे अपने पिता से मिलने, उन्हें प्रणाम करने और शिकार से उनके सुरक्षित लौटने पर बधाई देने के उद्देश्य से अपने सबसे कीमती वस्त्र पहने हुए थे। जब कोषाध्यक्ष ने उन्हें देखा, तो उसने उन्हें पकड़ लिया और कहा, "हे मेरे दोनों पुत्रों, जान लो कि मैं एक आज्ञाकारी दास हूँ, और तुम्हारे पिता ने मुझे एक आदेश दिया है: क्या तुम उसका पालन करोगे?" उन्होंने उत्तर दिया, "हाँ।" इस पर कोषाध्यक्ष ने उनके हाथ पीछे बाँध दिए, उन्हें दो संदूकों में रखा और एक खच्चर की पीठ पर बिठाकर उन्हें शहर से बाहर ले गया। वह उनके साथ दोपहर तक रेगिस्तान में चलता रहा, फिर एक सुनसान और वीरान जगह पर रुक गया, और घोड़े से उतरकर खच्चर की पीठ से दोनों संदूक नीचे रखे, उन्हें खोला और उनमें से अल-अमजद और

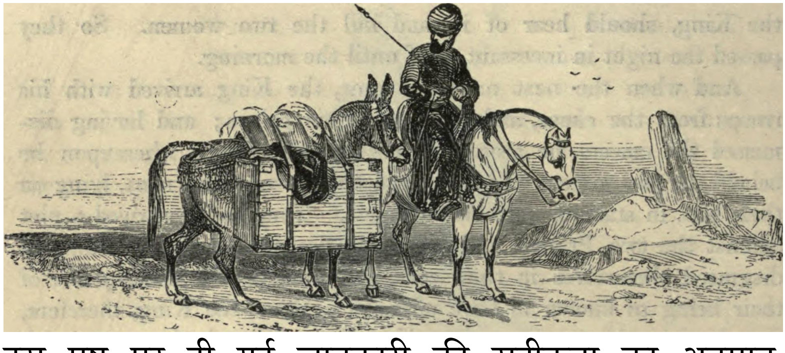

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.78%** है।

दो राजकुमारों का प्रेम प्रसंग, पृष्ठ 143 अल-असद। जब उसने उन्हें देखा, तो उनकी सुंदरता और आकर्षण को निहारते हुए वह फूट-फूट कर रोया,

और फिर अपनी तलवार तानकर उनसे कहा, अल्लाह की कसम, हे मेरे स्वामियों, तुम्हारे साथ यह घिनौना काम करना मेरे लिए बहुत कष्टदायी है; परन्तु इस मामले में मैं क्षमायोग्य हूँ; क्योंकि मैं आज्ञा का गुलाम हूँ, और तुम्हारे पिता राजा कमर-एज़-ज़ेमान ने मुझे तुम्हारे सिर काटने का आदेश दिया है। और उन्होंने उत्तर दिया, हे अमीर, राजा के आदेश का पालन करो; क्योंकि हम धैर्यपूर्वक उस बात को स्वीकार करते हैं जो ईश्वर (जिसकी समस्त शक्ति और महिमा है!) ने हम पर आने का निश्चय किया है; और तुम हमारा रक्त बहाने के अपराध से मुक्त हो। फिर उन्होंने एक-दूसरे को गले लगाया और एक-दूसरे को विदाई दी; अल-असद ने कोषाध्यक्ष से कहा, "अल्लाह की कसम, हे चाचा, मुझे अपने भाई का दुख और आहें न पीने दो; बल्कि मुझे उसके सामने मार डालो, ताकि मेरा अंत आसान हो जाए।" अल-अमजद ने भी कोषाध्यक्ष से वही कहा जो अल-असद ने कहा था, और उसे अपने भाई के सामने मारने के लिए फुसलाया, "मेरा भाई मुझसे छोटा है; इसलिए मुझे उसका दुख न चखने दो।" तब दोनों भाई ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे, और कोषाध्यक्ष भी उनका विलाप देखकर रोने लगा; फिर दोनों भाई एक-दूसरे से गले मिले और विदा हुए, उनमें से एक ने दूसरे से कहा, "निःसंदेह यह सब उन दो धोखेबाज़ औरतों की चालबाज़ी के कारण हुआ है; और सर्वशक्तिमान, महान अल्लाह के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है! निश्चय ही हम अल्लाह के हैं, और निश्चय ही हम उसी के पास लौटेंगे!" — और अल-असद ने अपने भाई को गले लगाकर कराहते हुए ये आयतें पढ़ीं: — हे शिकायतकर्ताओं के शरणदाता और भयभीत लोगों के आश्रयदाता! 1-12 तू हर प्रार्थना सुनने के लिए तत्पर है! मेरे पास तेरे द्वार पर दस्तक देने के सिवा कोई चारा नहीं; और अगर मुझे ठुकरा दिया जाए, तो मैं किसके द्वार पर दस्तक दूँ? हे हे, हे कृपा के खजाने जो 'बे' शब्द से ही

उपलब्ध हो जाते हैं, हे कृपा कर; क्योंकि सारी भलाई तुझमें ही है! और जब अल-अमजद ने अपने भाई का रोना सुना, तो वह भी रोने लगा और उसे अपने सीने से लगाकर ये दो आयतें पढ़ीं: — हे हे, तूने मुझ पर अनेक कृपाएँ की हैं और तेरे उपहार अनगिनत हैं! आज तक मुझ पर कोई विपत्ति नहीं आई, जिसमें मैंने तुझे मेरी सहायता के लिए तत्पर नहीं पाया! तब अल-अमजद ने कोषाध्यक्ष से कहा, "मैं सर्वशक्तिमान, राजा, रक्षक, ईश्वर की कसम खाकर तुमसे विनती करता हूँ कि मुझे मेरे भाई अल-असद के सामने मार डालो; शायद इससे मेरे हृदय की आग शांत हो जाए और वह फिर न भड़के।" लेकिन अल-असद रोते हुए बोला, "कोई नहीं मारेगा।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.21%** है।

1 14 दो राजकुमारों की कहानी: पहले मुझे नहीं मारा जाना चाहिए। तो अल-अमजद ने कहा, सबसे अच्छी योजना यह होगी कि तुम मुझे गले लगाओ और मैं तुम्हें, ताकि तलवार हम पर गिरे और एक ही वार में हमें मार डाले। और जब वे दोनों आमने-सामने गले मिले और एक-दूसरे से लिपट गए, तो कोषाध्यक्ष ने उन्हें रस्सियों से बांध दिया और ऐसा करते हुए रोया। फिर उसने अपनी तलवार निकाली और कहा, अल्लाह की कसम, हे मेरे स्वामियों, तुम्हें मारना मेरे लिए वाकई मुश्किल है। क्या तुम्हारी कोई ज़रूरत है? अगर है, तो मैं उसे पूरा करूँगा। या कोई आदेश? अगर है, तो मैं उसे पूरा करूँगा। या कोई संदेश? अगर है, तो मैं उसे पहुँचा दूँगा। — और अल-अमजद ने उत्तर दिया, हमारी कोई ज़रूरत नहीं है; लेकिन आदेश के बारे में, मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि मेरे भाई अल-असद को नीचे और मुझे ऊपर रखो, ताकि वार पहले मुझ पर पड़े; और जब तू हमें मार डाले और बादशाह के पास लौट आए, और वह तुझसे पूछे,

"उनकी मृत्यु से पहले तूने उनसे क्या सुना?" तो तू उसे उत्तर देना, "निःसंदेह तेरे दोनों पुत्र तुझे सलाम भेजते हैं और तुझसे कहते हैं, 'तू नहीं जानता कि वे निर्दोष थे या दोषी, और तूने उन्हें मार डाला, और न ही तूने उनके दोष का निश्चय किया और न ही उनके मामले पर विचार किया।' फिर उसे ये दो आयतें सुना: 'निःसंदेह स्त्रियाँ हमारे लिए बनाई गई शैतान हैं। मैं शैतानों के छल से अल्लाह की शरण माँगता हूँ। वे संसार और धर्म के मामलों में मानव जाति के बीच प्रकट हुई सभी विपत्तियों का स्रोत हैं।' फिर अल-अमजद ने कहा, 'हम तुझसे केवल यही चाहते हैं कि तू उसे ये दो आयतें दोहराए जो तूने सुनी हैं, और साथ ही, मैं तुझसे अल्लाह की कसम देकर विनती करता हूँ कि जब मैं अपने भाई को ये दो अन्य आयतें सुनाऊँ तो तू हमारे साथ धैर्य रखे।' और, फूट-फूटकर रोते हुए उसने कहा, - हमारे पूर्व के राजाओं में हमारे उदाहरण हैं। कितने ही, बड़े और छोटे, इस मार्ग पर चले हैं! और जब कोषाध्यक्ष ने अल-अमजद के ये शब्द सुने, तो वह फूट-फूटकर रोने लगा, यहाँ तक कि उसकी दाढ़ी भीग गई; और अल-असद की आँखें आँसुओं से भर गईं, और उसने ये आयतें पढ़ीं:91 - भाग्य अपने स्वभाव से ही छल-कपट से भरा है, और कपट और चालबाज़ियों से परिपूर्ण है। रेगिस्तान का सरब95 उसके लिए चमकते दाँतों के समान है; और अंधकार का भय, काली पलकों के समान है। उसके विरुद्ध मेरा अपराध (उसका स्वभाव घृणित है) उस तलवार के समान है जब योद्धा अपनी तलवार पीछे खींचता है। जब अल-असद ने अपनी आयतें समाप्त कर लीं, तो उसने अपने भाई अल-अमजद को गले लगा लिया, जिससे वे एक ही व्यक्ति की तरह दिखाई दिए, और कोषाध्यक्ष ने अपनी तलवार निकाली, और उन पर प्रहार करने ही वाला था। लेकिन,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

26.68% है।

अल-अमजद और अल-असद 145 देखो, उसका घोड़ा डर के मारे रेगिस्तान में भाग गया। वह हज़ार सोने के सिक्कों के बराबर कीमती था, और उस पर एक शानदार काठी थी, जिसकी कीमत बहुत अधिक थी। इसलिए कोषाध्यक्ष ने अपने हाथ से तलवार फेंक दी और अपने घोड़े के पीछे चल पड़ा। उसका हृदय क्रोधित था, और वह घोड़े को पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ता रहा, जब तक कि वह एक जंगल में नहीं पहुँच गया; और वह उसके पीछे घुस गया; लेकिन घोड़ा जंगल के बीचोंबीच अपना रास्ता बनाता रहा, अपने खुरों से ज़मीन पर पटकता रहा, जिससे धूल उड़ती रही, और घोड़ा क्रोध में हिनहिनाता और गुर्राता रहा। अब उस जंगल में एक भयानक शेर था, जिसका रूप डरावना था, उसकी आँखों से चिंगारियाँ निकल रही थीं; उसका चेहरा क्रूर था, और उसका रूप रोंगटे खड़े कर देता था: और कोषाध्यक्ष ने उसकी ओर देखते हुए उस शेर को अपनी ओर आते देखा, और उसके पास तलवार न होने के कारण उसे उससे बचने का कोई रास्ता नहीं सूझा। इसलिए उसने मन ही मन कहा, सर्वशक्तिमान, महान ईश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है! यह विपत्ति मुझ पर अल-अमजद और अल-असद के विरुद्ध किए गए अपराध के कारण ही आई है, और वास्तव में यह यात्रा प्रारंभ से ही दुर्भाग्यपूर्ण रही है! इसी बीच, अल-अमजद और अल-असद के लिए गर्मी तीव्र हो गई।

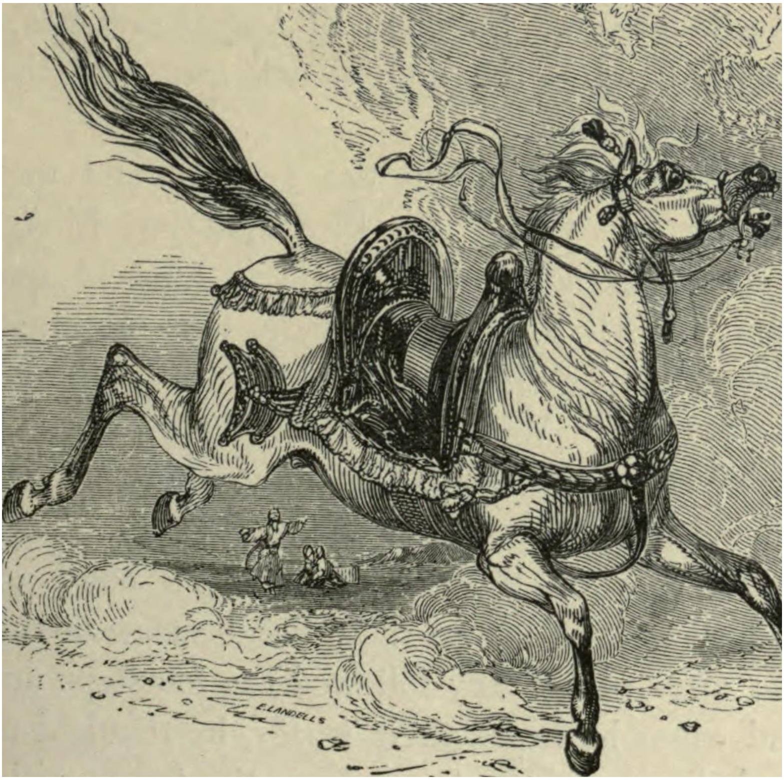

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.40%** है।

146 दो किनारों की कहानी, इत्यादि। और वे भयंकर प्यास से पीड़ित थे, जिससे उनकी जीभें लटक रही थीं; और वे प्यास से राहत के लिए प्रार्थना कर रहे थे। लेकिन किसी ने उनकी मदद नहीं की; और उन्होंने कहा, काश हम मर जाते और इस कष्ट से मुक्त हो जाते; लेकिन हम नहीं जानते कि घोड़ा कहाँ भाग गया है, कोषाध्यक्ष उसके पीछे गया है और हमें बंधा हुआ छोड़ गया है। अगर वह हमारे पास आकर हमें मार डालता, तो यह हमारे लिए इस यातना को सहने से कहीं अधिक आसान होता। — लेकिन बाद में अल-असद ने कहा, हे मेरे भाई, धैर्य रखो, और परमेश्वर (जिसकी पूर्णता की प्रशंसा हो, और जिसका नाम ऊंचा हो!) की राहत हम तक

पहुँचेगी; क्योंकि घोड़ा इसलिए नहीं भागा क्योंकि परमेश्वर हम पर कृपालु है, और इस प्यास के सिवा हमें कोई कष्ट नहीं दे रहा है। फिर उसने अपने आप को झटका दिया, और दाएं-बाएं छटपटाया; जिसके बाद उसके बंधन खुल गए; और वह उठा, और अपने भाई के बंधन भी खोल दिए; इसके बाद उसने अमीर की तलवार ली और अपने भाई से कहा, अल्लाह की कसम, हम यहाँ से तब तक नहीं जाएँगे जब तक हम उसके मामले की जाँच न कर लें और यह न जान लें कि उसके साथ क्या हुआ है। फिर वे पदचिह्नों का अनुसरण करने लगे और वे उन्हें जंगल में ले गए। तब उनमें से एक ने दूसरे से कहा, निश्चय ही घोड़ा और कोषाध्यक्ष इस जंगल से आगे नहीं बढ़े हैं। तब अल-असद ने अपने भाई से कहा, तुम यहीं रुको, मैं जंगल में जाकर जाँच करता हूँ। लेकिन अल-अमजद ने उत्तर दिया, मैं तुम्हें अकेले अंदर नहीं जाने दूँगा, और हम साथ-साथ ही अंदर जाएँगे; इसलिए यदि हम बचेंगे तो साथ बचेंगे, और यदि हम मरेंगे तो साथ मरेंगे। तदनुसार वे दोनों अंदर गए और उन्होंने पाया कि शेर कोषाध्यक्ष पर झपटा था, जो उसके नीचे एक चिड़िया की तरह पड़ा था, लेकिन अल्लाह से प्रार्थना कर रहा था और आकाश की ओर इशारा कर रहा था। तब अल-अमजद ने उसे देखा, उसने तलवार ली और शेर पर झपटकर उसकी आँखों के बीचोंबीच तलवार से वार किया और उसे मार डाला। शेर ज़मीन पर गिर पड़ा, और अमीर उठ खड़ा हुआ, यह देखकर आश्चर्यचकित हुआ कि उसके स्वामी के पुत्र अल-अमजद और अल-असद वहाँ खड़े थे; उसने उनके चरणों में गिरकर उनसे कहा, "अल्लाह की कसम, हे मेरे स्वामियों, यह उचित नहीं था कि मैं तुम्हारे साथ इतनी क्रूरता करूँ कि तुम्हें मार डालूँ। जो तुम्हें मारना चाहे, उसका नाश हो! मैं अपनी जान देकर तुम्हें छुड़ाऊँगा।" फिर वह तुरंत उठा, उसने उन्हें गले लगाया और उनसे उनके बंधन खुलने और उसके पास आने का कारण पूछा। उन्होंने बताया कि

उन्हें प्यास लगी थी, और उनमें से एक का बंधन खुल गया था, इसलिए उसने दूसरे का बंधन भी उनके नेक इरादों के कारण खोल दिया; जिसके बाद वे उसके पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए उसके पास आ गए। और जब उसने उनकी बातें सुनीं, तो उसने उनके इस कार्य के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और उनके साथ जंगल से बाहर चला गया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.42%** है।

जब वे जंगल से बाहर निकले, तो उन्होंने उससे कहा, "हे चाचा, हमारे पिता ने जो आज्ञा दी है, वही करो।" लेकिन उसने उत्तर दिया, "अल्लाह न करे कि मैं तुम्हें कोई हानि पहुँचाने का प्रयास करूँ! फिर भी, जान लो कि मैं तुम्हारे वस्त्र उतारकर तुम्हें अपने वस्त्र पहनाना चाहता हूँ, और दो काँच की बोतलों में शेर का खून भरना चाहता हूँ। इसके बाद, मैं राजा के पास जाऊँगा और उसे बताऊँगा कि मैंने तुम्हें मार डाला है। फिर तुम दूसरे देशों में चले जाओ; क्योंकि अल्लाह की धरती विशाल है। और जान लो, हे मेरे स्वामियों, कि तुम्हारा मुझसे वियोग मेरे लिए कष्टदायी होगा।" यह कहकर वह और दोनों युवक रोने लगे। बाद वालों ने अपने वस्त्र उतार दिए, और कोषाध्यक्ष ने उन्हें अपने वस्त्र पहनाए, और राजा के पास गया। उसने सामान लिया, और प्रत्येक युवक के लिनेन को अपने पास मौजूद एक लबादे में बाँध दिया, और दो काँच की बोतलों में शेर का खून भर दिया; और उसने दोनों लबादों को घोड़े की पीठ पर अपने सामने रख दिया। फिर उसने युवकों को विदाई दी और शहर की ओर प्रस्थान करते हुए तब तक चलता रहा जब तक कि वह अंदर नहीं चला गया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.41%** है।

148 दो राजकुमारों की कहानी राजा ने अपने सामने ज़मीन चूमी। राजा ने उसे बदले हुए चेहरे के साथ देखा (क्योंकि यह बदलाव शेर के साथ हुए उसके संघर्ष के कारण हुआ था), और उसने सोचा कि यह उसके बेटों के वध का परिणाम है: इसलिए वह खुश हुआ, और उससे कहा, क्या तुमने काम पूरा कर लिया है? कोषाध्यक्ष ने उत्तर दिया, हाँ, हे हमारे स्वामी। और उसने उसे कपड़े वाले दो लट्ठे और खून से भरी दो कांच की बोतलें सौंप दीं। राजा ने उससे कहा, तुमने उनके व्यवहार में क्या देखा, और क्या उन्होंने तुम पर कोई आरोप लगाया है? उसने उत्तर दिया, मैंने उन्हें

धैर्यवान, अपने भाग्य को सहने के लिए तैयार पाया, और उन्होंने मुझसे कहा, वास्तव में हमारे पिता क्षमा के पात्र हैं; अतः उसे हमारा प्रणाम कहो और उससे कहो, "तुम हमारे वध और हमारे रक्तपात के दोष से मुक्त हो गए हो। परन्तु हम तुम्हें आज्ञा देते हैं कि तुम उसे ये दो आयतें दोहराओ: "निःसंदेह स्त्रियाँ हमारे लिए सृजित शैतान हैं। हम शैतानों के छल से ईश्वर की शरण मांगते हैं। संसार और धर्म के मामलों में मानवजाति में जो भी विपत्तियाँ आई हैं, उनका मूल कारण स्त्रियाँ ही हैं।" जब राजा ने कोषाध्यक्ष से ये शब्द सुने, तो वह बहुत देर तक अपना सिर झुकाए बैठा रहा और समझ गया कि उसके दोनों पुत्रों के ये शब्द इस बात का संकेत देते हैं कि उनकी हत्या अन्यायपूर्वक की गई थी। फिर स्त्रियों के छल और उनके कारण उत्पन्न विपत्तियों पर विचार करते हुए, उसने दोनों लट्ठे लिए और उन्हें खोलकर अपने पुत्रों के वस्त्र पलटने लगा और रोने लगा। जब उसने अपने पुत्र अल-असद के वस्त्र खोले, तो उसकी जेब में उस स्त्री के हाथ से लिखा हुआ एक कागज़ मिला, जिसने उस पर आरोप लगाया था, साथ ही उसके बालों की रेशमी डोरियाँ भी मिलीं। अत: उसने कागज़ खोला और पढ़ा, उसका अर्थ समझा और जान गया कि उसके पुत्र अल-असद के साथ अन्याय हुआ था। जब उसने अल-अमजद के कपड़े पलटे, तो उसकी जेब में दूसरी स्त्री, यानी उस पर आरोप लगाने वाली स्त्री के हाथ से लिखा एक कागज़ मिला, जिसमें उसके बालों की रेशमी डोरियाँ लिपटी हुई थीं; उसने उस कागज़ को खोला और पढ़ा, और जान गया कि उसके साथ भी अन्याय हुआ था। उसने अपने हाथ आपस में पटके और कहा, "सर्वोच्च, महान ईश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ नहीं! मैंने अपने पुत्रों को अन्यायपूर्वक मार डाला!" — फिर वह अपना चेहरा पीटते हुए बोला, "हे मेरे पुत्रों! हे मेरे दुःख की गहराई!" — और उसने एक घर में दो कब्रें बनवाने का आदेश दिया, जिसका नाम उसने विलाप का घर

रखा, और उन दोनों कब्रों पर अपने दोनों पुत्रों के नाम खुदवाए। और वह अल-अमजद की कब्र पर गिर पड़ा, रोने, आहें भरने और विलाप करने लगा, और पाठ करने लगा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.15%** है।

केएल-अमजद और एल-असद। 149 छंद; और वे एल-असद पर भी इसी तरह लागू होते हैं। उन्होंने अपने मित्रों और घनिष्ठ मित्रों का साथ त्याग दिया, विलापगृह में एकांतवास में चले गए, अपने पुत्रों के लिए रोते रहे, और अपनी स्त्रियों, साथियों और परिवार के परिचितों से दूर रहे। — उनकी यही स्थिति थी। अब अल-अमजद और अल-असद की बात करें तो, वे रेगिस्तान पार करते हुए, धरती की जड़ी-बूटियाँ खाते और वर्षा के बचे हुए पानी को पीते रहे। रात में, एक सोता और दूसरा आधी रात तक जागता रहता; फिर दूसरा सो जाता और पहला जागता रहता।98 इस प्रकार वे पूरे एक महीने तक चलते रहे, जब तक कि उनका रास्ता उन्हें काले चकमक पत्थर के एक पहाड़ पर नहीं ले आया, जिसका आगे का छोर अज्ञात था। इस पहाड़ पर सड़क दो भागों में बँट गई: एक सड़क उसके बीच से होकर गुज़रती थी, और दूसरी उसकी चोटी तक जाती थी। और वे पहाड़ की चोटी की ओर चल पड़े, और पाँच दिनों तक उस पर चढ़ते रहे; लेकिन उन्हें उसका कोई अंत नहीं दिखाई दिया। थकान उन पर हावी हो गई थी; क्योंकि वे न तो पहाड़ों पर और न ही कहीं और चलने के आदी थे; और जब वे निराश हो गए अपने अंतिम पड़ाव पर पहुँचकर वे लौट आए और पहाड़ के बीच से होकर जाने वाले रास्ते पर चल पड़े। वे उसी रास्ते पर पूरे दिन रात तक चलते रहे; परन्तु अल-असद अपनी लंबी यात्रा से थक गया था और उसने अपने भाई से कहा, हे मेरे भाई, मैं अब और नहीं चल सकता; क्योंकि मैं अत्यधिक कमजोर हो गया हूँ। अल-

अमजद ने उत्तर दिया, हे मेरे भाई, हिम्मत रखो: शायद ईश्वर हमारी पीड़ा दूर कर दे। फिर वे रात के एक घंटे तक चलते रहे; परन्तु अल-असद अत्यधिक थका हुआ था और उसने कहा, हे मेरे भाई, मैं चलते-चलते थक गया हूँ। और वह ज़मीन पर गिर पड़ा और रोने लगा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.85%** है।

150 दो राजकुमारों की कहानी: भाई अल-अमजद ने उसे उठाया और उसके साथ चलने लगा, कुछ दूर चलने के बाद आराम करने के लिए बैठ गया, जब तक कि भोर नहीं हो गई। इस प्रकार वह उसके साथ पहाड़ पर चढ़ गया, और उन्हें एक झरना फूटता हुआ मिला, जिससे एक धारा बह रही थी, और उसके पास एक अनार का पेड़ था, और प्रार्थना के लिए एक ताक थी। 7 और उन्हें यह दृश्य देखकर मुश्किल से विश्वास हुआ। फिर वे उस झरने के पास बैठ गए, और उसका पानी पीकर और उस पेड़ के अनार खाकर, सूर्योदय तक वहीं सो गए; फिर वे बैठे और झरने पर स्नान किया, और पेड़ पर लगे अनार खाए, और दोपहर की नमाज़ के समय तक सो गए। इसके बाद वे अपनी यात्रा जारी रखना चाहते थे; लेकिन अल-अमजद आगे बढ़ने में असमर्थ था: उसके पैर सूजे हुए थे। तो वे वहाँ

तीन दिन तक रुके रहे, जब तक कि उन्होंने विश्राम नहीं कर लिया। फिर वे आगे बढ़े और प्यास से बेहाल होकर कई दिनों तक पहाड़ पर अपनी यात्रा जारी रखी, जब तक कि दूर से उनके सामने एक शहर दिखाई नहीं दिया। यह देखकर वे प्रसन्न हुए; और वे उसकी ओर बढ़े; और जब वे उसके निकट पहुँचे, तो उन्होंने अल्लाह का शुक्र अदा किया, जिसका नाम महान है! तब अल-अमजद ने अल-असद से कहा, "हे मेरे भाई, तुम यहाँ बैठो, मैं इस शहर में जाकर देखूँ कि यह कैसा स्थान है और इसके बारे में जानकारी प्राप्त करूँ, ताकि हम जान सकें कि हम अल्लाह की विशाल धरती पर कहाँ हैं और इस पर्वत श्रृंखला को पार करते हुए हमने किन-किन देशों को पार किया है। यदि हम इसके मध्य भाग से होकर यात्रा न करते, तो हम पूरे एक वर्ष में भी इस शहर तक नहीं पहुँच पाते। इसलिए, हमारी सुरक्षा के लिए अल्लाह का शुक्र है!" लेकिन अल-असद ने उत्तर दिया, "अल्लाह की कसम, हे मेरे भाई, मेरे सिवा कोई भी उस शहर में नहीं जाएगा; और मैं तुम्हारा बलिदान बनूँगा।" क्योंकि यदि तुम मुझे छोड़कर नीचे उतर जाओ और मुझसे दूर हो जाओ, तो मैं तुम्हारे बारे में चिंतित विचारों में डूब जाऊँगी; और मुझमें इतनी शक्ति नहीं होगी कि मैं

tree, slept there u
sat and washed the
again of the pome
until the time of a
they desired to co
As'ad was unabl
swollen. So they
until he had rest

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

27.35% है।

एल-अमजद और एल-असद। 151 मेरी अनुपस्थिति सहन करो। तब एल-अमजद ने उससे कहा, जाओ, और देर मत करो। इसलिए एल-असद कुछ सोने के सिक्के लेकर पहाड़ से नीचे उतरा; और अपने भाई को अपने लौटने की प्रतीक्षा करने के लिए छोड़ दिया। वह चला गया, और पहाड़ की तलहटी में बिना रुके चलता रहा, जब तक कि वह शहर में प्रवेश नहीं कर गया; और जब वह उसकी गलियों से गुजर रहा था, तो रास्ते में उसे एक बूढ़ा आदमी मिला, जिसकी उम्र बहुत अधिक थी; उसकी दाढ़ी उसकी छाती पर लटकी हुई थी, और दो भागों में बंटी हुई थी, उसके हाथ में एक छड़ी थी, उसने कीमती वस्त्र पहने हुए थे, और उसके सिर पर एक बड़ी लाल पगड़ी थी।98 इसलिए जब एल-असद ने उसे देखा, तो वह उसके पहनावे और रूप-रंग पर आश्चर्यचकित हुआ; और उसकी ओर बढ़ते हुए, उसने उसे प्रणाम किया, और उससे कहा, हे मेरे स्वामी, बाजार का रास्ता कौन सा है? उसकी बातें सुनकर बूढ़े व्यक्ति ने मुस्कुराते हुए कहा, “हे मेरे पुत्र, तुम तो अजनबी लगते हो।” अल-असद ने उत्तर दिया, “जी हाँ, मैं अजनबी हूँ, हे चाचा।” बूढ़े व्यक्ति ने कहा, “हे मेरे पुत्र, तुमने अपने आगमन से हमारे देश को प्रसन्न किया है, और अपनी अनुपस्थिति से अपने परिवार के देश को उजाड़ दिया है। और तुम बाज़ार से क्या चाहते हो?” अल-असद ने उत्तर दिया, “हे चाचा, मेरा एक भाई है जिसे मैं पहाड़ पर छोड़कर आया हूँ, और हम एक दूर देश से यात्रा कर रहे हैं। हमें तीन महीने लगे हैं और अब हम इस शहर के पास पहुँच गए हैं; इसलिए मैं यहाँ कुछ भोजन खरीदने आया हूँ ताकि उसे अपने भाई के पास ले जा सकूँ और हम उससे अपना पेट भर सकें।” — और बूढ़े ने उत्तर दिया, “हे मेरे पुत्र, हर सुख की खबर सुनो, और जान लो कि मैंने एक भोज तैयार किया है, जिसमें बहुत से अतिथि आए हैं, और मैंने

उनके लिए स्वादिष्ट और लज़ीज़ पकवान तैयार किए हैं, जो सबकी भूख मिटा देंगे। तो क्या तुम मेरे साथ मेरे घर चलोगे? यदि हाँ, तो मैं तुम्हें तुम्हारी हर ज़रूरत पूरी करूँगा, और इसके लिए तुमसे कोई पैसा नहीं लूँगा। मैं तुम्हें इस नगर के बारे में भी बताऊँगा। और हे मेरे पुत्र, ईश्वर का धन्यवाद हो कि मैं तुमसे मिला, और मेरे सिवा कोई और तुमसे नहीं मिला!" तब अल-असद ने कहा, "जैसा तुम्हारा मन करे, वैसा करो, और मेरे भाई मेरा इंतज़ार कर रहे हैं, और उनका दिल मुझसे मिलने के लिए तरस रहा है।" इसलिए बूढ़े व्यक्ति ने अल-असद का हाथ पकड़ा और मुस्कुराते हुए उसके साथ एक संकरी गली में लौट आया और उससे कहा, "उसकी महिमा हो जिसने तुझे इस शहर के लोगों से बचाया है!" वह उसके साथ चलता रहा जब तक कि वह एक विशाल घर में नहीं पहुँच गया, जिसमें एक सराय थी, और उस सराय में चालीस वृद्ध पुरुष एक घेरे में बैठे थे, जिनके बीच में एक जलती हुई आग थी। बूढ़े पुरुष उसके चारों ओर बैठकर उसकी पूजा कर रहे थे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.63%** है।

152 दो राजकुमारों की कहानी, जिन्होंने उसके सामने साष्टांग प्रणाम किया। और जब अल-असद ने यह देखा, तो उसका शरीर कांप उठा, हालांकि वह उनके इतिहास से अनभिज्ञ था। तब पहले उल्लेखित बूढ़े व्यक्ति ने इस समूह से कहा, हे अग्नि के शेखों, यह कितना धन्य दिन है! और उसने पुकार कर कहा, "हे ग़दबन!" तभी एक काला दास उसके पास आया, जिसका चेहरा अत्यंत भयानक, नाक चपटी, शरीर झुका हुआ और आकृति डरावनी थी। बूढ़े ने उस दास को इशारा किया; और ऐसा करने के बाद, बूढ़े ने उससे कहा, "इसे नीचे तहखाने में ले जाओ, और वहाँ छोड़ दो, और फलाँ दासी से कहो, इसे रात-दिन यातना देने का

काम करो,100 और इसे रात-दिन एक रोटी खिलाओ, जब तक कि नीले सागर और आयरलैंड के पर्वत की यात्रा का समय न आ जाए, जब हम इसे पर्वत पर बलि के रूप में मार डालेंगे।”101 तदनुसार, दास उसे उस कमरे में ले गया, और उसे उस दासी को सौंप दिया, जिसने उसे यातना देना शुरू कर दिया, और उसे दिन की शुरुआत में एक रोटी और रात की शुरुआत में एक रोटी, और सुबह-सुबह एक मग नमकीन पानी देती रही। सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त और सूर्यास्त के बीच तक यही सिलसिला चलता रहा। तब बूढ़े लोगों ने आपस में कहा, "जब अग्नि पर्व का समय आएगा, तो हम उसे पहाड़ पर बलि चढ़ाएंगे और उसे अर्पित करके अग्नि को प्रसन्न करेंगे।" दासी उसके पास गई और उसे इतनी बुरी तरह पीटा कि उसके अंगों से खून बहने लगा और वह बेहोश हो गया; इसके बाद उसने उसके सिर पर रोटी का एक टुकड़ा और नमक के पानी का एक मग रखा और उसे वहीं छोड़कर चली गई। अल-असद को आधी रात को होश आया, जब उसने खुद को जंजीरों में जकड़ा हुआ पाया और पिटाई से उसे बहुत पीड़ा हो रही थी। इसलिए वह फूट-फूटकर रोया और अपनी पिछली शान-शौकत, समृद्धि, प्रभुत्व और प्रभुत्व को याद करते हुए विलाप और विलाप करते हुए ये छंद पढ़े: - घर के खंडहरों पर रुककर हमारे बारे में पूछताछ करो और यह मत सोचो कि हम पहले जैसे हैं। भाग्य, जो हमें अलग करता है, ने हमें अलग कर दिया है; फिर भी हमारे शत्रुओं के हृदय हमारे भाग्य से शांत नहीं हुए हैं। एक नीच स्त्री मुझे कोड़ों से प्रताड़ित करने के लिए नियुक्त की गई है, और उसका हृदय मेरे प्रति घृणा से भरा है। फिर भी, शायद ईश्वर हमें फिर से मिला दे, और उन्हें दंडित करके हमारे शत्रुओं को हमसे दूर कर दे। फिर उसने अपना हाथ अपने सिर की ओर बढ़ाया, तो उसे रोटी का एक टुकड़ा और नमक के पानी का एक मग मिला। इसलिए उसने अपनी मरणासन्न आत्मा को शांत करने के लिए

एक टुकड़ा खाया, थोड़ा पानी पिया, और कीड़े-मकोड़ों की बहुतायत के कारण सुबह तक सो नहीं पाया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.37%** है।

अल-अमजद और अल-असअल> 153 और जब सुबह हुई, तो दासी फिर उसके पास आई और उसके कपड़े उतार दिए। वे खून से लथपथ थे और उसकी त्वचा से चिपक गए थे, जिससे त्वचा कमीज़ के साथ उतर गई; और वह चीख उठा और रोते हुए बोला, आह! और बोला, हे मेरे प्रभु, यदि तू इसे पसंद करता है, तो इसे मुझ पर और बढ़ा दे; 102 क्योंकि तू उसे नहीं भूला जिसने मुझ पर अत्याचार किया है! इसलिए उससे मेरा बदला ले! — फिर वह कराह उठा और ये आयतें पढ़ीं: — अपने मामलों की परवाह न करो और उन्हें भाग्य के मार्ग पर छोड़ दो; क्योंकि अक्सर जो बात तुम्हें क्रोधित करती है, वह अंततः तुम्हें प्रसन्न कर सकती है; और कभी-कभी जो तंग है वह फैल सकता है; और जो खुला है, वह सिकुड़ सकता है। ईश्वर जो चाहेगा वही करेगा: इसलिए तुम घृणा मत करो; लेकिन शीघ्र आने वाले सुख की आशा में आनंदित हो, जो तुम्हें बीते हुए कल को भुला देगा। जैसे ही उसने ये छंद पढ़े, दासी ने उसे तब तक पीटा जब तक वह बेहोश नहीं हो गया। फिर उसने उसे रोटी का एक टुकड़ा दिया और नमक का पानी एक घड़ा में रख दिया; इसके बाद वह उसके पास से उठी और उसे अकेले छोड़ दिया, उसके अंगों से खून बह रहा था; और वह अपने मित्रों से दूर, जंजीरों में बंधा पड़ा रहा, अपने भाई और उस गौरवशाली जीवन के बारे में सोचता रहा जिसमें वह पहले जी रहा था; वह तड़पता, विलाप करता, आहें भरता, शिकायत करता, आंसू बहाता और छंद पढ़ता रहा। इस बीच, उसका भाई अल-अर्नजद दोपहर तक उसकी प्रतीक्षा करता रहा; और जब वह नहीं लौटा, तो उसका दिल ज़ोर से

धड़कने लगा, विरह का दर्द तीव्र हो गया, और वह फूट-फूट कर रोने लगा, रोते हुए बोला, हे मेरे दुख! मुझे विरह से कितना डर लग रहा था! फिर पहाड़ से उतरकर, गालों पर आँसू बहते हुए, वह शहर में दाखिल हुआ और बाज़ार तक चलता रहा। वहाँ पहुँचकर उसने कुछ लोगों से शहर का नाम और उसके निवासियों के बारे में पूछा; उन्होंने बताया, "इसे मगी लोगों का शहर कहते हैं, और इसके निवासी [ज़्यादातर] सर्वशक्तिमान राजा की पूजा करने के बजाय अग्नि की पूजा करते हैं।" फिर उसने उनसे आबनूस शहर के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा, "हमारे और उसके बीच ज़मीन से एक साल की यात्रा है; और समुद्र से चार महीने की यात्रा। उसके राजा का नाम आर्मसिनूस है, और उसने एक राजा को अपना दामाद बनाकर उसे अपने स्थान पर बिठाया है, और इस राजा का नाम कमर-एज़-ज़रनीन है। वह न्यायप्रिय, परोपकारी, उदार और शांतिप्रिय व्यक्ति है।" और जब अल-अमजद ने अपने पिता का ज़िक्र सुना, तो वह व्याकुल हुआ, रोया, आहें भरीं और विलाप किया। और उसे समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ जाए। उसने कुछ खाने का सामान खरीदा और अपने साथ ले गया, और छिपने के लिए एक जगह पर चला गया,104 और खाने के लिए बैठ गया; लेकिन अपने भाई को याद करके वह रोने लगा, और अगर- x

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.06%** है।

 उसने अपनी मरुस्थल को शांत करने के लिए पर्याप्त भोजन किया; फिर वह उठा और अपने भाई का समाचार प्राप्त करने के लिए शहर में घूमने निकल पड़ा। उसे एक मुसलमान दर्जी अपनी दुकान में मिला; इसलिए वह उसके पास बैठ गया और उसे अपनी कहानी सुनाई; दर्जी ने उससे कहा, यदि वह किसी मगी के हाथ में पड़

गया है, तो तुम उसे आसानी से दोबारा नहीं देख पाओगे; लेकिन शायद ईश्वर तुम्हें उससे मिला दे। फिर उसने पूछा, हे मेरे भाई, क्या तुम मेरे यहाँ ठहरोगे? उसने उत्तर दिया, हाँ। यह सुनकर दर्जी प्रसन्न हुआ। अल-अमजद कई दिनों तक उसके साथ रहा, और दर्जी ने उसे सांत्वना दी, धैर्य रखने का आग्रह किया और उसे सिलाई की कला सिखाई जिससे वह निपुण हो गया। इसके बाद, एक दिन वह समुद्र तट पर गया और अपने कपड़े धोए। फिर वह स्नानघर में दाखिल हुआ और साफ कपड़े पहनकर शहर में मनोरंजन करने के लिए स्नानघर से बाहर निकला। रास्ते में उसे एक ऐसी स्त्री मिली जो अत्यंत सुंदर, आकर्षक और सुडौल कद-काठी की थी, जिसकी सुंदरता अतुलनीय थी। उसे देखते ही उसने अपने चेहरे से घूंघट हटाया और अपनी भौहों और आँखों से उसे संकेत दिए, उसे निहारते हुए ये पंक्तियाँ पढ़ीं: — हे सुडौल, मैंने तुम्हें आते हुए देखा और अपनी आँखें नीचे कर लीं, मानो तुम चमकते सूरज हो; क्योंकि तुम अब तक प्रकट हुए सबसे सुंदर व्यक्ति हो, और आज तुम कल से भी अधिक सुंदर हो।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.58%** है।

अल-अमजद और अल-अस'अत 155 यदि इसकी सुंदरता को बाँट दिया जाए, तो इसका पाँचवाँ भाग, या पाँचवें भाग का एक हिस्सा, यूसुफ का होगा; और शेष केवल तुम्हारा होगा। तो फिर, हर आत्मा तुम्हारे लिए बलिदान हो! और जब अल-अमजद ने उसके शब्द सुने, तो उसका हृदय उससे प्रसन्न हुआ और उसके प्रति स्नेह से भर गया; प्रेम के हाथ उसके साथ खेलने लगे, और उसे इशारा करते हुए, उसने उत्तर में ये छंद पढ़े: — गालों के गुलाब के ऊपर भालों के कांटे हैं। 108 तो फिर कौन अपने आप को इकट्ठा करने का प्रस्ताव रखेगा? इसकी ओर हाथ मत बढ़ाओ; क्योंकि हमारी इस पर टकटकी लगाने वाली निगाहों के कारण ये भाले लंबे समय से युद्ध फैलाते रहे हैं। उससे कहो जिसने अत्याचार किया और प्रलोभन दिया, और जो न्यायसंगत व्यवहार करने पर और भी अधिक प्रलोभनकारी होती, तेरा चेहरा यदि ढका होता तो हमारी उलझन बढ़ा

देता, और मैं देखता हूँ कि तेरे जैसी सुंदरता की रक्षा के लिए खुला रहना ही सबसे अच्छा है; जैसे सूरज का नंगा चेहरा तुम नहीं देख सकते; परन्तु जब वह हल्की धुंध से ढका हो, तब देख सकते हो। कंजूस स्त्री अपनी कंजूसी से ही सुरक्षित रहती है: तो कबीले के पहरेदारों से पूछो कि वे हमें क्यों रोक रहे हैं: यदि वे मेरा वध करना चाहते हैं, तो वे अपनी सारी दुश्मनी खत्म कर दें और हमें आज़ाद छोड़ दें; क्योंकि यदि वे हमला करते हैं, तो वे उस स्त्री की आँख से ज़्यादा हत्यारे नहीं हैं जिस पर तिल लगा हो, जब वह हमसे मिलती है। तब उसने उससे कुछ बातचीत करने की विनती की: तो उसने उससे कहा, क्या तुम मुझसे मिलने आओगी, या मैं तुम्हारे घर आऊँ? इस पर वह शर्म से अपना सिर ज़मीन की ओर झुकाकर, परमेश्वर के शब्दों को दोहराने लगी, — पुरुषों को स्त्रियों पर श्रेष्ठता प्राप्त होगी, क्योंकि परमेश्वर ने दोनों को पुरुषों पर श्रेष्ठता दी है। K9 तो अल-अमजद उसकी बात समझ गया और जान गया कि वह उसके साथ उसके गंतव्य तक जाना चाहती है। इसलिए उसे उसके लिए जगह ढूंढनी पड़ी; और जिस दर्जी के यहाँ वह ठहरा हुआ था, उसके घर उसे ले जाने में शर्म महसूस करते हुए, वह उसके आगे चलने लगा। वह उसके पीछे-पीछे चली, और वह उसे गलियों से गलियों और जगहों से जगहों पर ले जाता रहा, जब तक कि वह थक नहीं गई, और उसने उससे कहा, हे मेरे स्वामी, आपका घर कहाँ है? उसने उत्तर दिया, हमारे सामने है, और बस थोड़ी ही दूरी बची है। फिर वह उसे लेकर एक सुंदर गली में मुड़ गया, और उस पर चलता रहा, वह उसके पीछे-पीछे चलती रही, जब तक कि वह उसके अंत तक नहीं पहुँच गया, जहाँ उसने पाया कि वह कोई मुख्य सड़क नहीं थी। तब उसने कहा, सर्वशक्तिमान, महान ईश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ नहीं है! और गली के ऊपरी छोर की ओर देखते हुए, उसने वहाँ दो मेहराबों वाला एक बड़ा दरवाजा देखा; लेकिन

वह बंद था। इसलिए अल-अमजद एक मस्तबाह पर बैठ गया, और युवती भी बैठ गई।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.28%** है।

156 दो राजकुमारों की कहानी दूसरी ओर, उसने उससे कहा, हे मेरे स्वामी, आप किस बात की प्रतीक्षा कर रहे हैं? इस पर, उसने अपना सिर बहुत देर तक ज़मीन की ओर झुकाए रखा; फिर उसने अपना सिर उठाया और उससे कहा, मैं अपने मेमलुक की प्रतीक्षा कर रहा हूँ; क्योंकि उसके पास चाबी है, और मैंने उससे कहा है, जब तक मैं स्नान करके बाहर आऊँ, तब तक हमारे लिए भोजन और पेय, और शराब के लिए फूल110 तैयार कर देना। — तब उसने मन ही मन कहा, शायद उसे समय लंबा लगने लगा होगा, और इसलिए वह चली जाएगी और मुझे यहीं छोड़ देगी। लेकिन जब उसे समय लंबा लगने लगा, तो उसने उससे कहा, हे मेरे स्वामी, आपका मेमलुक हमारे पास लौटने में देर कर रहा है, जबकि हम सड़क पर बैठे हैं। और वह उठी और एक पत्थर लेकर लकड़ी के ताले111 के पास गई। तब अल-अमजद ने उससे कहा, जल्दी मत करो; बल्कि धैर्य रखो जब तक मेमलुक न आ जाए। लेकिन उसने उसकी बातों पर ध्यान न देते हुए, लकड़ी के ताले पर पत्थर से प्रहार किया और उसे दो टुकड़ों में तोड़ दिया; जिससे दरवाजा खुल गया। तब उसने उससे कहा, "तुम्हें क्या हो गया है कि तुमने ऐसा किया?" - "हे मेरे स्वामी," उसने कहा, "क्या हुआ है? क्या यह आपका घर नहीं है?" - उसने उत्तर दिया, "हाँ, लेकिन ताला तोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं थी।" तब वह युवती घर में प्रवेश कर गई; और अल-अमजद घर के लोगों से डरकर व्याकुल हो गया और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। युवती ने उससे कहा, "हे मेरे स्वामी, मेरी आँखों के प्रकाश और मेरे हृदय के प्राण, आप अंदर

क्यों नहीं आ रहे हैं?" उसने उत्तर दिया, "मैं सुनता और आज्ञा मानता हूँ: लेकिन मेमलुक मुझे लौटने में देर कर रहा है, और मुझे नहीं पता कि उसने मेरे आदेश का पालन किया है या नहीं।" तब वह घर के लोगों से डरते हुए अत्यंत चिंतित अवस्था में उसके साथ अंदर चला गया। जब वह घर में दाखिल हुआ, तो उसने उसमें एक सुंदर बैठक देखी, जिसमें चार लीवान (आस-पास के कमरे) थे,112 जो एक-दूसरे के आमने-सामने थे, और रेशम और ब्रोकेड के कपड़ों से सजे हुए कोठरी और सिदिल्लेह113 थे। उसके बीच में एक कीमती फव्वारा था, जिसके पास रत्नों से जड़े और फलों और सुगंधित फूलों से भरे बर्तन रखे थे; उसके बगल में पीने के बर्तन थे, और एक मोमबत्ती लगी हुई मोमबत्तीदानी थी। वह जगह कीमती सामानों से भरी हुई थी; उसमें संदूक थे, और कुर्सियाँ रखी थीं, और प्रत्येक कुर्सी पर कपड़ों का एक आवरण था,114 और इनमें से प्रत्येक पर सोने के सिक्कों से भरा एक थैला था। घर अपने मालिक की समृद्धि का प्रमाण था, क्योंकि उसका फर्श संगमरमर से बना था। जब अल-अमजद ने यह देखा, तो वह अपनी स्थिति पर व्याकुल हो गया, और मन ही मन बोला, मेरा जीवन व्यर्थ हो गया! निश्चय ही हम ईश्वर के हैं, और निश्चय ही हम उसी के पास लौटेंगे! लेकिन जब उस युवती ने यह स्थान देखा, तो वह अत्यंत प्रसन्न हुई और बोली, अल्लाह की कसम, मेरी

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.65%** है।

अल-अमजद और अल-असद। 157 हे स्वामी, तेरा मेमलुक अपना काम पूरा करने में कभी असफल नहीं हुआ; उसने जगह साफ की, खाना पकाया और फल तैयार किए; और मैं बिल्कुल सही समय पर आई हूँ। लेकिन अल-अमजद ने उसकी ओर देखा तक नहीं; उसका मन घर के लोगों के डर से व्याकुल था। तब उसने कहा, हे स्वामी, आप इस प्रकार

क्यों खड़े हैं? फिर एक गहरी आह भरते हुए उसने अल-अमजद को अखरोट के टूटने जैसी आवाज़ के साथ चूमा और उससे कहा, हे स्वामी, यदि आपने मेरे अलावा किसी और से मिलने का समय तय किया है, तो मैं अपनी कुशलता से उसकी सेवा करूँगी। इस पर अल-अमजद क्रोध से भर उठा और हँसते हुए आगे बढ़ा और बैठ गया, हाँफते हुए और मन ही मन कहने लगा, हे स्वामी के आने पर मुझे कितना अपमानजनक वध सहना पड़ेगा! — युवती उसके पास बैठ गई और खिलखिलाकर हंसने लगी, जबकि अल-अर्नजद चिंतित और भौंहें चढ़ाए अपने मन में हजारों बातें सोच रहा था, और मन ही मन कह रहा था, इस शराबखाने का मालिक ज़रूर आएगा; और मैं उससे क्या कहूँगा? वह मुझे निश्चित रूप से मार डालेगा! — फिर युवती उठी, अपनी आस्तीनें ऊपर कीं, और एक मेज लेकर उस पर खाना रखा,115 और खाने लगी, अल-अर्नजद से बोली, खाओ, मेरे मालिक। तो वह खाने के लिए आगे बढ़ा; लेकिन ऐसा करने से उसे कोई आनंद नहीं मिला: इसके विपरीत, वह दरवाजे की ओर देखता रहा जब तक कि युवती ने खाना खाकर तृप्त नहीं हो गई, और मेज हटाकर मिठाई ले आई; जिसके बाद उसने सूखे मेवे खाने शुरू कर दिए। फिर वह पेय लेकर आई, और मदिरा खोलकर एक प्याला भरा, जो उसने अल-अर्नजद को दे दिया; और उसने उससे प्याला ले लिया, मन ही मन कहते हुए, "अरे, अरे! जब इस घर का मालिक आएगा और मुझे देखेगा तो मुझे क्या अनुभव होगा?" उसकी निगाहें प्रवेश कक्ष की ओर थीं, प्याला उसके हाथ में था, और जब वह इस अवस्था में था, तभी अचानक घर का मालिक आ गया। वह एक मेमलुक था, शहर के संभ्रांतों में से एक; क्योंकि वह राजा का मुख्य घुड़सवार था; और उसने उस बैठक को अपने आनंद के लिए सजाया था, ताकि वह उसमें आराम कर सके और वहाँ अपनी पसंद के लोगों की संगति का निजी तौर पर आनंद ले

सके; और उस दिन उसने अपने एक प्रिय को बुलाया था और उसके लिए कमरा तैयार करवाया था। उस मेमलुक का नाम बहादुर था।116 वह उदार, दयालु, परोपकारी और मददगार स्वभाव का व्यक्ति था। जब वह भोजनालय के पास पहुँचा, तो उसने देखा कि दरवाजा खुला है; इसलिए वह धीरे-धीरे अंदर गया, और सिर आगे बढ़ाकर देखा तो उसे अल-अमजद और युवती, उनके सामने फलों की थाली और शराब का सेट दिखाई दिया। उस समय, अल-अमजद शराब का प्याला पकड़े हुए था, उसकी नज़र दरवाजे की ओर थी; और जैसे ही

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.12%** है।

158 दो राजकुमारों की कहानी। जब उसकी नज़र घर के मालिक से मिली, तो उसका चेहरा पीला पड़ गया और उसकी कमर की मांसपेशियां कांपने लगीं। लेकिन जब बहादिर ने देखा कि उसका चेहरा पीला पड़ गया है और उसकी हालत बदल गई है, तो उसने अपने होंठों पर जीभ रखकर उसे इशारा किया, मानो कह रहा हो, चुप रहो और मेरे पास आओ। तो अल-अमजद ने अपने हाथ से प्याला नीचे रख दिया और उसके पास जाने के लिए उठ खड़ा हुआ। युवती ने उससे कहा, तुम कहाँ जा रहे हो? उसने अपना सिर हिलाया और उसे इशारा किया कि वह बस एक मिनट के लिए ही बाहर जाएगा। फिर वह नंगे पैर बरामदे की ओर गया: 117 और जब उसने बहादिर को देखा, तो वह समझ गया कि वही घर का मालिक है। इसलिए वह जल्दी से उसके पास गया और उसका हाथ चूमकर उससे कहा, "हे मेरे स्वामी, अल्लाह की कसम, इससे पहले कि आप मुझे कोई हानि पहुँचाएँ, मेरी बात सुन लें।" फिर उसने उसे अपनी पूरी कहानी सुनाई, अपने देश और राजसी राज्य को छोड़ने का कारण बताया और उसे आश्वस्त किया कि वह अपनी मर्जी से उस भोजनालय में नहीं आया

था, बल्कि उस युवती ने ही लकड़ी का ताला तोड़कर दरवाजा खोला था और ये सब किया था। जब बहादुर ने उसकी बातें सुनीं और जाना कि वह एक राजा का पुत्र है, तो उसे उस पर दया आई और उसने कहा, "हे अमजद, मेरी बात सुन और मेरी आज्ञा मानो, मैं तुम्हारी रक्षा उस चीज़ से करूँगा जिससे तुम डरते हो; लेकिन यदि तुम मेरी अवज्ञा करोगे, तो मैं तुम्हें मार डालूँगा।" तब अल-अमजद ने उत्तर दिया, "आप जो चाहें मुझे आदेश दें, मैं कभी आपकी अवज्ञा नहीं करूँगा।" क्योंकि मैं तुम्हारी मानवता के कारण ही बच पाया हूँ। और बहादिर ने उससे कहा, "फिर से इस सभागार में प्रवेश करो, और जहाँ तुम बैठे थे वहीं बैठ जाओ, और शांत रहो। मैं अभी तुम्हारे पास आता हूँ। मेरा नाम बहादिर है। और जब मैं तुम्हारे पास आऊँ, तो मुझे गालियाँ दो, मेरा अपमान करो, और मुझसे कहो, 'तुम अब तक क्यों नहीं आए?' और मेरी कोई बात मत मानो; बल्कि उठो और मुझे मारो; और यदि तुम मुझ पर दया दिखाओगे, तो मैं तुम्हारी जान ले लूँगा। फिर अंदर आओ, और मजे करो; और जो कुछ भी तुम मुझसे चाहोगे, वह तुम्हें तुरंत मिल जाएगा। तो आज रात जैसे चाहो वैसे बिताओ, और कल अपने रास्ते चले जाओ। मैं ऐसा इसलिए कर रहा हूँ ताकि अजनबी होने के नाते तुम्हारा सम्मान कर सकूँ; क्योंकि मैं अजनबी से प्रेम करता हूँ, और उसका सम्मान करना मेरा कर्तव्य है।" - इसलिए अल-अमजद ने उसका हाथ चूमा, और फिर अंदर चला गया। उसका चेहरा अब लाल और सफेद रंग से ढका हुआ था; और जैसे ही वह अंदर आया, उसने युवती से कहा, हे मेरी स्वामिनी, तुमने अपनी उपस्थिति से इस स्थान को आनंदित कर दिया है, और यह एक धन्य रात है। युवती ने उत्तर दिया, यह वास्तव में अद्भुत है कि तुम अब मेरे प्रति यह मिलनसारिता दिखा रहे हो। तब उसने कहा, अल्लाह की कसम, हे मेरी स्वामिनी, मुझे विश्वास है कि मेरी स्मृति

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.37%** है।

बहादिर ने मुझसे कुछ रत्नों के हार चुरा लिए थे, जिनमें से प्रत्येक की कीमत दस हजार सोने के सिक्के थी। इसलिए, मैं अभी इस बारे में सोचते हुए बाहर गई और उन्हें ढूंढा, और वे मुझे अपनी जगह पर मिल गए; लेकिन मुझे नहीं पता कि मेमलुक अब तक क्यों नहीं आया, और मुझे उसे दंडित करना होगा। अल-अमजद के इन शब्दों से युवती शांत हो गई, और वे साथ में खेलने-कूदने लगे, शराब पीने लगे और मौज-मस्ती करते रहे, और सूर्यास्त तक आनंद मनाते रहे। फिर बहादिर उनके पास आया। उसने अपने कपड़े बदल लिए थे, कमर कस ली थी और पैरों में मेमलुकों जैसे जूते पहन लिए थे; और प्रणाम करके और जमीन चूमकर, उसने अपने हाथ जोड़े और अपना सिर जमीन की ओर झुका लिया, मानो वह अपना अपराध स्वीकार कर रहा हो। तब ऐत-ऐनजद ने उसे क्रोध भरी निगाहों से देखा और उससे कहा, हे मेमलुकों में सबसे निर्धन, तेरे देर करने का क्या कारण है? — हे मेरे स्वामी, उसने उत्तर दिया, मैं अपने कपड़े धोने में व्यस्त था और मुझे पता ही नहीं चला कि आप यहाँ हैं; क्योंकि मेरा और आपका नियत समय सूर्यास्त का है, दिन का नहीं। इस पर अल-अमजद उस पर चिल्लाया और बोला, हे सबसे अशुभ दिखने वाले, तू झूठ बोल रहा है! अल्लाह की कसम, मुझे तुझे पीटना ही पड़ेगा! — फिर उठकर उसने बहादिर को ज़मीन पर लिटाया और एक छड़ी लेकर उसे धीरे से पीटा। लेकिन युवती उठी और जस के हाथ से छड़ी छीनकर बहादिर को इतनी बुरी तरह पीटा कि उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.42%** है।

160 दो राजकुमारों की कहानी: उसने राहत के लिए प्रार्थना की और अपने दांत भींच लिए। अल-अमजद ने उसे पुकारा, "इस तरह दंगा मत करो!" लेकिन उसने उत्तर दिया, "मुझे उससे अपना क्रोध शांत करने दो।" तब अल-अमजद ने उससे छड़ी छीन ली और उसे धक्का देकर दूर कर दिया। तब बहादिर उठा, अपने चेहरे से आंसू पोंछे और कुछ देर उनकी सेवा में खड़ा रहा; जिसके बाद उसने सभागार की सफाई की और दीपक जलाए। इस बीच, जब भी बहादिर अंदर आता या बाहर जाता, वह युवती उसे कोसती और गालियां देती; और अल-अमजद उस पर क्रोधित हो गया और उससे कहा, "अल्लाह की कसम (जिसका नाम महान है!), मेरे मेमलुक को छोड़ दो; क्योंकि वह इसकी आदत नहीं रखता।" वे खाते-पीते रहे और बहादिर आधी रात तक उनकी सेवा करता रहा, जब वह प्रतीक्षा करते-करते और मार खाते-पिटते थक गया, और सभागार के बीच में सो गया और खर्राटे लेने लगा। तब वह युवती नशे में चूर होकर अल-अमजद

से बोली, "उठो; यहाँ टंगी हुई यह तलवार उठाओ और इस मेमलुक का सिर काट दो। अगर तू ऐसा नहीं करेगा, तो मैं तेरे ही नाश के साधन अपना लूँगी।" अल-अमजद ने कहा, "तुम्हें क्या हो गया है कि तू मेरे मेमलुक को मारना चाहती है?" उसने उत्तर दिया, "उसे मारे बिना मेरी प्रसन्नता पूर्ण नहीं होगी; और अगर तू नहीं उठेगा, तो मैं स्वयं उठकर उसे मार डालूँगी।" तब अल-अमजद ने कहा, "अल्लाह की कसम, मैं तुझसे विनती करता हूँ कि तू ऐसा न करे।" लेकिन उसने उत्तर दिया, "मुझे यह करना ही होगा।" और उसने तलवार उठाई और उसे खींच लिया, और उसे मारने का निश्चय कर लिया। इसलिए अल-अमजद ने मन ही मन कहा, "यह वह व्यक्ति है जिसने हम पर दया दिखाई है, हमारी रक्षा की है, हमारे साथ परोपकार किया है, और मेरे लिए मेमलुक बन गया है। हम उसे कत्ल करके कैसे दंडित कर सकते हैं?" ऐसा कभी नहीं होगा! — फिर उसने उस युवती से कहा, यदि मेरे मेमलुक को मारना अनिवार्य है, तो मैं तुमसे अधिक उसे मारने के योग्य हूँ। और, उससे तलवार छीनकर, उसने अपना हाथ उठाया और युवती की गर्दन पर वार किया, जिससे उसका सिर धड़ से अलग हो गया; और उसका सिर घर के मालिक पर गिरा: तब वह जागा और बैठ गया, और अपनी आँखें खोलीं, और पाया कि अल-अमजद खून से सनी तलवार हाथ में लिए खड़ा है। तब युवती की ओर देखकर उसने पाया कि वह मर चुकी है। इसलिए उसने उससे उसकी तंदुरुस्ती के बारे में पूछा; और अल-अमजद ने उसके शब्दों को दोहराते हुए उससे कहा, उसने तुम्हें मारने के अलावा कुछ भी करने से इनकार कर दिया; और यही उसका प्रतिफल है। इस पर, बहादिर उठा, और अल-अमजद के सिर को चूमते हुए उससे कहा, हे मेरे स्वामी, काश आपने उसे क्षमा कर दिया होता! अब केवल उसे सुबह होने से पहले तुरंत बाहर ले जाना बाकी है। तब बहादिर ने कमर कस ली और उस युवती को लेकर,

उसे एक लबादे में लपेटकर, खजूर के पत्तों की एक बड़ी टोकरी में रख दिया और उसे ले जाते हुए अल-अर्नजाद से कहा, "तुम अजनबी हो और किसी को नहीं जानते।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.66%** है।

इसलिए तुम अपनी जगह पर बैठे रहो और सूर्योदय के समय मेरे लौटने की प्रतीक्षा करो। यदि मैं तुम्हारे पास लौट आऊँ, तो मुझे तुम्हारा बड़ा उपकार करना होगा और तुम्हारे भाई के बारे में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करना होगा; परन्तु यदि सूर्योदय हो जाए और मैं तुम्हारे पास न लौटूँ, तो जान लेना कि मुझ पर ईश्वर का आदेश पूरा हो गया है: और तुम पर शांति हो; और यह घर, इसमें मौजूद धन-संपत्ति और सामान सहित, तुम्हारा ही होगा। — यह कहकर वह टोकरी लेकर चला गया और सभागार से निकलकर बाज़ार की गलियों से होते हुए समुद्र की ओर जाने वाले रास्ते पर चल पड़ा। परन्तु जब वह लगभग समुद्र के पास पहुँच गया, तो उसने एक तरफ देखा और पाया कि वली और उसके मुख्य अधिकारियों ने उसे घेर लिया है। उसे पहचानकर वे आश्चर्यचकित हुए; और उन्होंने टोकरी खोली और उसमें एक मृत स्त्री पाई। इसलिए उन्होंने उसे पकड़ लिया और रात भर जंजीरों में बांधे रखा, सुबह तक। फिर वे टोकरी लेकर उसके साथ राजा के पास गए और उसे सारी बात बताई। जब राजा को पता चला, तो वह भयंकर क्रोधित हुआ और उससे बोला, “धिक्कार है तुम पर! तू ऐसा ही करता है! तू लोगों को मारता है और उन्हें समुद्र में फेंक देता है, और उनकी सारी संपत्ति छीन लेता है! तू इससे पहले कितने कत्ल कर चुका है?” — लेकिन बहादुर ने राजा के सामने अपना सिर झुका लिया। राजा उस पर चिल्लाया और बोला, “धिक्कार है तुम पर! इस युवती को किसने मारा?” — “हे मेरे स्वामी,” बहादुर ने

उत्तर दिया, “मैंने उसे मारा है, और सर्वशक्तिमान ईश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है!” राजा क्रोधित हुआ और उसे फांसी देने का आदेश दिया। तो राजा के आदेश पर जल्लाद उसके साथ नीचे उतरा, और वली एक उद्घोषक के साथ नीचे गया, जिसने शहर की गलियों में यह घोषणा की कि लोग राजा के मुख्य दरबारी बहादुर का तमाशा देखने आएं। और वह उसे गलियों और बाज़ार की सड़कों से घुमाता रहा। लेकिन अल-अमजद के लिए, जब सुबह हुई और सूरज निकल आया और बहादुर उसके पास नहीं लौटा, तो वह चिल्लाया, "सर्वोच्च, महान ईश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है! मुझे आश्चर्य है कि उसके साथ क्या हुआ है!" और जब वह इस प्रकार सोच रहा था, तभी उद्घोषक ने घोषणा की कि लोग बहादुर का तमाशा देखने आएं; क्योंकि उन्हें दोपहर में फांसी दी जानी थी। तो जब अल-अमजद ने यह सुना, तो वह रो पड़ा और चिल्लाया, "निःसंदेह हम ईश्वर के हैं, और निःसंदेह हम उसी के पास लौटेंगे! उसने मेरे कारण अपनी मृत्यु चाही है, जबकि मैंने ही उसे मारा है!" अल्लाह की कसम, ऐसा कभी नहीं होगा! — फिर वह सैलून से बाहर निकला, उसे बंद किया और शहर के बीच से होते हुए बहादिर के पास पहुँचा; वहाँ वली के सामने खड़े होकर उसने उससे कहा, हे मेरे स्वामी, II. Y

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.75%** है।

162 दो राजकुमारों की कहानी: बलनीदिर को मत मारो; क्योंकि वह निर्दोष है। अल्लाह की कसम, उसे मेरे सिवा किसी ने नहीं मारा। इसलिए जब वली ने उसकी बात सुनी, तो उसने उसे और बहादिर को अपने साथ राजा के पास ले जाकर, अल-ऐनजद से सुनी हुई सारी बातें राजा को बताईं। राजा ने अल-ऐनजद की ओर देखकर उससे पूछा, क्या तुमने उस

युवती को मारा है? उसने उत्तर दिया, हाँ। राजा ने उससे कहा, मुझे उसके मारने का कारण बताओ और सच-सच बताओ। उसने उत्तर दिया, हे राजा, मेरे साथ एक अद्भुत और असाधारण घटना घटी है: यदि यह मेरे मन में अंकित हो जाए, तो यह उसे सबक सिखाएगी जिसे नसीहत दी जानी चाहिए। फिर उसने राजा को अपनी कहानी सुनाई, और उसे अपने और अपने भाई के साथ शुरू से अंत तक घटी सारी बातें बताईं। यह सुनकर राजा अत्यंत आश्चर्यचकित हुए और उनसे कहा, "अब मैं जानता हूँ कि तुम क्षमायोग्य हो। परन्तु हे नौजवान," उन्होंने आगे कहा, "क्या तुम मेरे वज़ीर बनोगे?" उन्होंने उत्तर दिया, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।" राजा ने उन्हें और बहादिर को भव्य सम्मान वस्त्र प्रदान किए, और अल-अमजद को नौकरों और अधिकारियों सहित एक सुंदर महल दिया, उनकी सभी आवश्यकताओं को पूरा किया, उन्हें पेंशन और आपूर्ति प्रदान की, और उन्हें अपने भाई अल-असद की खोज करने का आदेश दिया। अतः अल-अमजद ने वज़ीर के रूप में पदभार ग्रहण किया, और अधिकार तथा न्यायसंगत प्रशासन किया, तथा नियुक्तियाँ और पदावनतियाँ कीं, तथा धन-संपत्ति ली और दी। उन्होंने अपने भाई का पता लगाने के लिए शहर की गलियों में उद्घोषक को भी भेजा; और कई दिनों तक उद्घोषक ने मुख्य सड़कों और बाज़ारों में अपना उद्घोष दोहराया; परन्तु न तो उन्हें उसके बारे में कोई खबर मिली और न ही उसका कोई सुराग मिला। — अल-अमजद का यही हाल था। अल-असद की बात करें तो, मगी लोग उसे पूरे एक साल तक दिन-रात, शाम-सुबह यातना देते रहे, जब तक कि मगी लोगों का त्योहार नज़दीक नहीं आ गया। तब बहराम118, मगी (वह बूढ़ा व्यक्ति जिसने अल-असद को अपने घर में फुसलाकर बुलाया था),119 ने अपनी यात्रा की तैयारी की और अपने लिए एक जहाज़ तैयार किया। अल-असद को एक संदूक में बंद करके,

उसे जहाज़ पर ले गया। संयोग से, जब वह संदूक को जहाज़ पर ले जा रहा था, उसी समय अल-अमजद, भाग्य और नियति के अनुसार, समुद्र को निहारते हुए अपना मनोरंजन कर रहा था। उसने देखा कि लोग सामान को जहाज़ पर ले जा रहे थे। यह देखकर उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा और उसने अपने जवानों को अपना घोड़ा लाने का आदेश दिया। अपने सेवकों के साथ घोड़े पर सवार होकर वह समुद्र की ओर चल पड़ा। वहाँ मगी के जहाज़ के पास रुककर, उसने

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.26%** है।

अल-अमजद और क्ल-असई (133) ने अपने साथियों को जहाज पर चढ़कर उसकी तलाशी लेने का आदेश दिया। वे जहाज पर चढ़े और पूरे जहाज की तलाशी ली; लेकिन उन्हें उसमें कुछ नहीं मिला, और वे उससे उतर गए और यह बात अल-अमजद को बताई। इसलिए वह फिर से सवार होकर अपने निवास स्थान पर लौट आया; और जब वह वहाँ पहुँचा और महल में प्रवेश किया, तो उसका हृदय व्याकुल हो गया, और महल के एक हिस्से की ओर देखते हुए उसने एक दीवार पर दो पंक्तियाँ खुदी हुई देखीं; और वे ये दो छंद थे: — हे मेरे मित्रों, यदि तुम मेरी आँखों से ओझल हो, तो तुम मेरे हृदय और मेरे मन से नहीं हो। परन्तु तुमने मुझे घोर पीड़ा में छोड़ दिया है और सोते समय मेरी पलकों से विश्राम छीन लिया है। और जब अल-अमजद ने उन्हें पढ़ा, तो उसने अपने भाई को याद किया और रो पड़ा। बहरीन नामक जादूगर जहाज पर सवार हुआ और नाविकों को पुकार कर उन्हें जल्दी से पाल खोलने का आदेश दिया। उन्होंने पाल खोल दिए और चल दिए। वे दिन-रात यात्रा करते रहे, हर दो दिन में अल-असद को उतारकर उसे थोड़ा सा भोजन और पानी देते रहे, जब तक कि वे अग्नि पर्वत के निकट नहीं पहुँच गए। तभी अचानक तेज़

हवा का तूफ़ान आ गया और समुद्र में लहरें उफान पर आ गईं, जिससे जहाज अपने मार्ग से भटक गया।

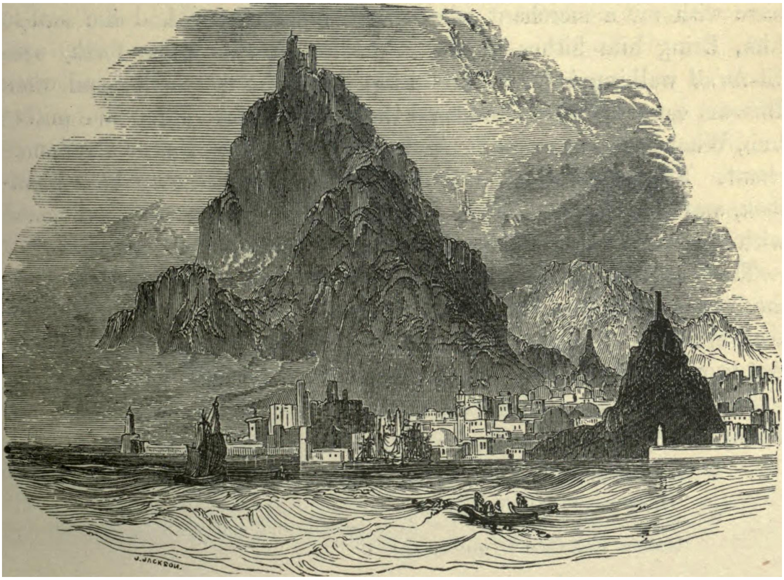

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.14%** है।

164 दो राजकुमारों की कहानी: वे अपने मार्ग से भटक गए और गलत दिशा में चलते हुए समुद्र तट पर बने एक शहर में पहुँचे, जहाँ एक महल था जिसकी खिड़कियाँ समुद्र की ओर खुलती थीं। इस शहर की शासक एक महिला थी, जिसका नाम रानी मरजानेह था। 12° और जहाज के कप्तान ने बहराम से कहा, हे मेरे स्वामी, हम अपने मार्ग से भटक गए हैं, और हमें विश्राम करने के लिए इस शहर के बंदरगाह में प्रवेश करना होगा, और उसके बाद, ईश्वर जो चाहेगा वही करेगा। बहराम ने उत्तर दिया, आपकी सलाह उत्तम है, और मैं उसी के अनुसार कार्य करूँगा। तब कप्तान ने उससे कहा, यदि रानी हमसे प्रश्न पूछने के लिए भेजे, तो हमारा उत्तर क्या होगा? रानी मरजानेह एक सच्ची मुस्लिम हैं; और यदि उन्हें पता चला कि हम मगी हैं, तो वह हमारे जहाज को जब्त कर लेंगी

और हम सभी को मार डालेंगी। 121 — बहराम ने उत्तर दिया, मेरे साथ यह मुसलमान है: इसलिए हम उसे मेमलुक के वस्त्र पहनाएँगे और उसे अपने साथ ले जाएँगे; और यदि रानी उसे देख लेगी, तो वह उसे मेमलुक समझेगी; और मैं उससे कहूँगा, मैं मेमलुक का आयातक, विक्रेता और खरीदार हूँ; और मेरे पास बहुत से मेमलुक थे; लेकिन मैंने उन्हें बेच दिया है, और केवल यही एक बचा है। — और कप्तान ने उत्तर दिया, यह प्रस्ताव अच्छा है। फिर वे शहर पहुँचे, और पाल ढीले करके लंगर डाल दिए; और जब जहाज रुका, तो देखो, रानी मरजानेह अपने सैनिकों के साथ उनके पास आई, और जहाज के पास रुककर कप्तान को पुकारा। इसलिए वह किनारे पर उसके पास गया, और उसके सामने जमीन चूमी, और उसने उससे कहा, तुम्हारे इस जहाज में क्या है, और तुम्हारे साथ कौन है? — हे युग की रानी, उसने उत्तर दिया, मेरे साथ एक व्यापारी है जो मेमलुक बेचता है। और उसने उससे कहा, उसे मेरे पास यहाँ लाओ। और देखो, बहराम बाहर आया, उसके पीछे अल-असद एक मेमलुक के वेश में चल रहा था; और जब बहराम उसके पास पहुँचा, तो उसने उसके सामने ज़मीन चूमी। उसने उससे पूछा, तुम्हारा क्या काम है? उसने उत्तर दिया, मैं दास व्यापारी हूँ। तब उसने अल-असद की ओर देखा, उसे मेमलुक समझकर, और उससे पूछा, तुम्हारा नाम क्या है? और लगभग रोते-रोते उसका गला भर आया, उसने कहा,122 मेरा वर्तमान नाम, या वह जो मेरा पहले था? — तो क्या तुम्हारे दो नाम हैं? उसने पूछा। उसने उत्तर दिया, हाँ: पहले मेरा नाम अल-असद था; लेकिन अब मेरा नाम अल-मोतार है।123 और उसका हृदय उसके प्रति स्नेह से भर गया, और उसने उससे पूछा, क्या तुम लिख सकते हो? उसने उत्तर दिया, हाँ। तो उसने उसे एक स्याही की दवात, एक कलम और कागज देते हुए कहा, कुछ लिखो, ताकि मैं उसे देख सकूँ। तदनुसार, उन्होंने ये दो छंद लिखे:—

हे न्यायकर्ता, जब भाग्य हर परिस्थिति में ईश्वर के सेवक का पीछा करता है, तो उसके पास क्या उपाय बचता है? जब ईश्वर उसे हाथ बांधकर गहरे पानी में डाल देता है और उससे कहता है, सावधान रहो, सावधान रहो, कहीं तुम भीग न जाओ।1-4

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.97%** है।

अल-अमजद और अल-असद। 165 जब उसने वह कागज़ देखा, तो उसे उस पर दया आ गई और उसने बहराम से कहा, "मुझे यह मेमलुक बेच दो।" उसने उत्तर दिया, "हे मेरी स्वामिनी, मैं इसे नहीं बेच सकता; क्योंकि मैंने अपने सभी मेमलुक बेच दिए हैं, सिवाय इसके।" लेकिन रानी मरजानेब ने कहा, "मैं इसे तुमसे अवश्य ले लूँगी, चाहे बेचकर या उपहार के रूप में।" उसने उससे कहा, "मैं इसे न तो बेचूँगा और न ही उपहार में दूँगा।" फिर भी, उसने उसे पकड़ लिया और अपने साथ महल में जाकर बहराम को संदेश भेजा, "यदि तू आज रात हमारे शहर से रवाना नहीं हुआ, तो मैं तेरी सारी संपत्ति ले लूँगी और तेरे जहाज़ को नष्ट कर दूँगी।" इसलिए जब यह संदेश उसे मिला, तो वह बहुत दुखी हुआ और बोला, "यह यात्रा सचमुच दुर्भाग्यपूर्ण रही है!" फिर वह उठा, तैयार हुआ, और अपनी मनचाही सारी चीज़ें लेकर रात होने का इंतज़ार करने लगा ताकि वह अपनी यात्रा पर निकल सके। उसने नाविकों से कहा, “अपना सामान ले लो, अपनी मशकें पानी से भर लो, और रात ढलते ही हमारे साथ रवाना हो जाओ।” इस प्रकार नाविक अपने काम में लग गए। इसी बीच, रानी मरजानेह ने अल-असद को महल में ले जाकर समुद्र की ओर खुलने वाली खिड़कियाँ खोल दीं और दासियों को भोजन लाने का आदेश दिया। वे उसके और अल-असद के लिए भोजन लाईं, और दोनों ने भोजन किया। फिर उसने उन्हें शराब लाने का आदेश दिया; वे शराब लाईं, और

उसने अल-असद के साथ शराब पी। और ईश्वर (जिसकी पूर्णता की महिमा हो, और जिसका नाम महान हो!) ने उसके मन में अल-असद के लिए प्रेम की भावना जगाई; और वह प्याला भरती रही और उसे तब तक पिलाती रही जब तक कि उसकी चेतना चली नहीं गई। इसके बाद वह उठा और बैठक से नीचे उतरा, और एक खुला दरवाजा देखकर वह उससे होकर गुजरा और तब तक चलता रहा जब तक वह एक बड़े बगीचे में नहीं पहुँच गया जहाँ तरह-तरह के फल और फूल थे; वह बगीचे में स्थित एक फव्वारे के पास पहुँचा और वहाँ पीठ के बल लेटकर सो गया, और रात उस पर छा गई। इसी बीच, जब रात हुई, बहराम ने जहाज के नाविकों को पुकारा और उनसे कहा, "अपने पाल खोलो और हमारे साथ यात्रा पर चलो।" उन्होंने उत्तर दिया, "हम सुनते हैं और आज्ञा मानते हैं: लेकिन तब तक प्रतीक्षा करें जब तक हमारी पानी की मशकें भर न जाएँ, उसके बाद हम पाल खोल देंगे।" तब नाविक पानी की मशकें लेकर किनारे पर उतरे और महल के चारों ओर घूमे, और बगीचे की दीवारों के अलावा कुछ भी न पाकर, वे उन पर चढ़ गए और बगीचे में उतर गए, और फव्वारे की ओर जाने वाले रास्ते का अनुसरण किया; और वहाँ पहुँचकर उन्होंने अल-असद को पीठ के बल लेटा हुआ पाया। उन्होंने उसे तुरंत पहचान लिया और उसे पाकर प्रसन्न हुए। इसलिए उन्होंने अपने मशक भर लिए और उसे उठाकर दीवार से नीचे कूद गए, और उसे जल्दी से मागी बहरीन के पास ले गए, और उससे कहा, "उसका स्वागत करो।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.05%** है।

तेरी इच्छा की पूर्ति और तेरे हृदय की संतुष्टि का समाचार सुनकर, तेरा ढोल बज चुका है और तेरी बांसुरी बज चुकी है। 123 तेरे बंदी के लिए, जिसे रानी मरजानेह तुझसे ज़बरदस्ती ले गई थी, हमने उसे पा लिया है

और अपने साथ ले आए हैं। फिर उन्होंने उसे उसके सामने पटक दिया। और जब बहराम ने उसे देखा तो उसका हृदय आनंद से उछल पड़ा और उसका हृदय चौड़ा हो गया। उसने उन्हें वस्त्र दिए और उन्हें जल्दी से पाल खोलने का आदेश दिया। इसलिए उन्होंने पाल खोले और अग्नि पर्वत की ओर अपनी यात्रा पर चल पड़े और सुबह तक अपना मार्ग जारी रखा। अब रानी मरजानेह की बात करें तो, अल-असद के उसके पास से चले जाने के बाद, वह कुछ देर उसके लौटने की प्रतीक्षा करती रही; और जब वह वापस नहीं आया, तो वह उठी और उसे खोजने लगी, लेकिन वह नहीं मिला। इसलिए उसने मोमबत्तियाँ जलाईं और दासियों को उसे खोजने का आदेश दिया। फिर वह स्वयं नीचे उतरी और बगीचा खुला देखकर वह जान गई कि वह उसमें प्रवेश कर गया होगा। इसलिए वह अंदर गई और फव्वारे के किनारे उसके जूते पाए; और उसने पूरे बगीचे में उसकी तलाश शुरू की; लेकिन वह कहीं नहीं मिला। वह सुबह तक बगीचे की सीमाओं के आसपास उसकी तलाश करती रही, फिर उसने जहाज के बारे में पूछताछ की, और उन्होंने उसे बताया कि वह रात के पहले तिहाई हिस्से में रवाना हो गया था। इस प्रकार वह जान गई कि चालक दल उसे अपने साथ ले गया था, और इस घटना से उसे बहुत दुख हुआ; वह बहुत क्रोधित हुई, और उसने तुरंत दस बड़े जहाज तैयार करने का आदेश दिया। उसने स्वयं को भी युद्ध के लिए तैयार किया, और दस जहाजों में से एक में सवार हो गई; उसके सैनिक भी उसके साथ सवार हुए, जो शानदार साजो-सामान और युद्ध के हथियारों से लैस थे। उन्होंने पाल खोल दिए; और उसने जहाजों के कप्तानों से कहा, जब तुम मागी के जहाज को पकड़ लोगे, तो तुम्हें मुझसे सम्मान के वस्त्र और धन प्राप्त होंगे; या, यदि तुम उसे नहीं पकड़ पाओगे, तो मैं

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.68%** है।

दो राजकुमारों की कहानी, इत्यादि। 167 तुम्हें मार डालेगा। हर एक को। इसलिए नाविकों में बहुत भय और आशा का भाव उत्पन्न हुआ। वे उस दिन, अगली रात, दूसरे और तीसरे दिन भी जहाजों में आगे बढ़ते रहे; और चौथे दिन, बहरीन नामक जादूगर का जहाज उन्हें दिखाई दिया; और वह दिन तब तक नहीं बीता जब तक रानी के जहाजों ने जादूगर के जहाज को घेर नहीं लिया। बहरीन ने उसी समय अल-असद को बाहर निकाला, उसे पीटा और यातना दी, जबकि अल-असद राहत और मुक्ति के लिए पुकार रहा था। लेकिन उसे राहत या मुक्ति देने वाला कोई प्राणी नहीं मिला, और भीषण पिटाई ने उसे और भी पीड़ा दी। और जादूगर, जब वह उसे यातना दे रहा था, उसने एक तरफ देखा और पाया कि रानी के जहाजों ने उसके जहाज को घेर लिया है, और उसे इस प्रकार घेर लिया है जैसे आँख का सफेद भाग उसके काले भाग को घेर लेता है। उसने अपने विनाश को सुनिश्चित कर लिया, और आह भरी, और चिल्लाया, हे असद, तुझ पर धिक्कार! यह सब तेरे कारण हुआ है! फिर उसने उसका हाथ पकड़कर नाविकों को उसे समुद्र में फेंकने का आदेश दिया और कहा,

“अल्लाह की कसम, मैं अपनी मृत्यु से पहले तुझे मार डालूँगा!” तदनुसार, नाविकों ने उसे हाथों और पैरों से पकड़कर समुद्र के बीचोंबीच फेंक दिया। परन्तु ईश्वर (जिसकी पूर्णता की महिमा हो और जिसका नाम महान हो!) ने उसकी सुरक्षा और उसके जीवन की अवधि बढ़ाने की इच्छा से उसे डूबने और फिर से उठने दिया; और उसने अपने हाथों और पैरों से तब तक प्रहार किया जब तक कि ईश्वर ने उसकी कठिनाई दूर नहीं कर दी। उसे राहत मिली, और लहरें उसे छूते हुए मगी के जहाज से दूर ले गईं, और वह तट पर पहुँच गया। वह किनारे पर उतरा, उसे अपने बचने पर मुश्किल से ही विश्वास हो रहा था। किनारे पर पहुँचकर उसने अपने कपड़े उतारे और निचोड़े, फिर उन्हें सुखाने के लिए फैला दिया और नग्न अवस्था में बैठकर अपने ऊपर आई विपत्तियों और कैद पर रोने लगा। उसने ये दो आयतें पढ़ीं: “हे अल्लाह, मेरा धैर्य और संसाधन क्षीण हो गए हैं, मेरा हृदय क्षीण हो गया है और मेरे साधन सीमित हो गए हैं! अभागा अपनी स्थिति की शिकायत किससे करे, सिवाय प्रभु के, हे प्रभुओं के प्रभु?” इसके बाद वह उठा और अपने कपड़े पहने; पर उसे पता नहीं था कि कहाँ जाना है। उसने धरती की जड़ी-बूटियाँ और वृक्षों के फल खाए और नदियों का पानी पिया, रात-दिन यात्रा करता रहा, जब तक कि उसे एक शहर दिखाई नहीं दिया। यह देखकर वह प्रसन्न हुआ और शहर की ओर तेज़ी से बढ़ा; पर जब वह वहाँ पहुँचा, तो शाम हो चुकी थी और शहर का द्वार बंद था। यह वही शहर था जिसमें वह बंदी था, और जिसके राजा का उसका भाई वज़ीर था। और जब अल-असद ने देखा कि उसका द्वार बंद है, तो उसने

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.25%** है।

वह कब्रिस्तान की ओर लौटा, जहाँ पहुँचकर उसने एक बिना दरवाजे

वाली कब्र देखी। इसलिए वह उसमें प्रवेश कर गया और अपना चेहरा उसकी छाती में रखकर सो गया।126 बहरीन मागी, जब रानी मरजानेह अपने जहाजों के साथ उसके पास पहुँची, तो उसने अपनी चतुराई और चालाकी से उसे हरा दिया। वह सुरक्षित अपने शहर की ओर लौट आया और तुरंत खुशी से वहाँ चला गया। कब्रिस्तान से गुजरते हुए, भाग्य और नियति के अनुसार, वह जहाज से उतरा और कब्रिस्तान में घूमकर देखा कि जिस कब्र में अल-असद लेटा हुआ था, वह खुली हुई थी। इसलिए वह आश्चर्यचकित हुआ और बोला, मुझे इस कब्र में देखना चाहिए। और जब उसने अंदर देखा, तो उसने अल-असद को वहाँ अपना सिर उसकी छाती में रखे हुए सोते हुए पाया। इसलिए उसने उसका चेहरा देखा और उसे पहचान लिया, जिस पर उसने उससे कहा, क्या तुम अभी भी जीवित हो? फिर उसने उसे उठाया और अपने घर ले गया। उसके घर में एक भूमिगत कोठरी थी, [जिसका पहले उल्लेख किया गया है,] जो मुसलमानों को यातना देने के लिए तैयार की गई थी, और उसकी एक बेटी थी जिसका नाम बुस्तान था;127 और उसने भारी

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.71%** है।

दो राजकुमारों की कहानी, इत्यादि। 169 अल-असद के पैरों में बेड़ियाँ डालकर, उसने उसे उस कोठरी में डाल दिया और अपनी बेटी को आदेश दिया कि वह उसे दिन-रात तब तक यातना दे जब तक उसकी मृत्यु न हो जाए। ऐसा करने के बाद, उसने उसे बुरी तरह पीटा और कोठरी बंद कर

दी, और चाबियाँ अपनी बेटी को दे दीं। तो उसकी बेटी बुस्तान उसे पीटने के लिए नीचे गई; लेकिन उसे एक सुंदर, सौम्य चेहरे वाला, धनुषाकार भौंहों और काली आँखों वाला युवक पाकर, उसके प्रति स्नेह उसके मन में जागा, और उसने उससे पूछा, तुम्हारा नाम क्या है? उसने उत्तर दिया, मेरा नाम अल-असद है। और उसने उससे कहा, तुम भाग्यशाली हो, और तुम्हारे दिन सौभाग्यशाली हों! 123 तुम यातना के योग्य नहीं हो, और मैं जानती हूँ कि तुम्हारे साथ अन्याय हुआ है। — और उसने बातचीत से उसका मन बहलाया, और उसकी बेड़ियाँ खोल दीं। फिर उसने उससे इस्लाम धर्म के बारे में पूछा। और उसने उसे बताया कि यह सच्चा और सही धर्म है, और हमारे प्रभु मोहम्मद असाधारण चमत्कारों और प्रत्यक्ष संकेतों के दाता हैं, और अग्नि की पूजा लाभ के बजाय हानि पहुँचाती है: उसने उसे इस्लाम के मूल सिद्धांतों से भी अवगत कराया; और उसने उसकी बातों को मान लिया। धर्म के प्रति प्रेम उसके हृदय में प्रवेश कर गया, और ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) ने उसके हृदय में अल-असद के प्रति स्नेह भर दिया; इसलिए उसने धर्म की दो प्रतिज्ञाएँ कीं,129 और सुखी लोगों में से एक हो गई। वह उसे भोजन और पेय देने, उससे बातचीत करने और प्रार्थना करने, और उसके लिए मुर्गे का दलिया तैयार करने में लगी रही, जब तक कि उसे शक्ति नहीं मिल गई, उसके रोग दूर नहीं हो गए, और वह अपने पूर्व स्वास्थ्य में लौट आया। इसके बाद, बहराम की बेटी अल-असद से बाहर निकली और दरवाजे पर खड़ी हो गई; और देखो, उद्घोषक ने घोषणा की और कहा, "जिस किसी के पास फलां-फलां रूप का सुंदर युवक हो और वह उसे प्रस्तुत करे, उसे धन में जो चाहे वह मिल जाएगा; और जो कोई उसे अपने संरक्षण में रखे और इनकार करे, उसे उसके घर के द्वार पर फांसी दे दी जाएगी, उसकी संपत्ति लूट ली जाएगी और उसका घर ध्वस्त कर दिया जाएगा।" अल-असद ने बहरीन

की पुत्री बुस्तान को अपने साथ घटी सारी घटना से अवगत करा दिया था; इसलिए जब उसने यह सुना, तो वह जान गई कि वही वह व्यक्ति है जिसकी तलाश की जा रही है। इसलिए वह उसके पास गई और उसे खबर सुनाई; और वह बाहर आया और वज़ीर के महल में गया; और जैसे ही उसने वज़ीर को देखा, वह चिल्लाया, “अल्लाह की कसम, यह वज़ीर मेरा भाई अल-अमजद है!” वह अपने पीछे युवती को लेकर महल में गया; और अपने भाई अल-अमजद को देखते ही वह उस पर टूट पड़ा; इस पर अल-अमजद ने उसे पहचान लिया और उसी प्रकार उस पर झपट पड़ा, और दोनों ने एक दूसरे को गले लगा लिया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.32%** है।

170 नीमेह और नोआम की कहानी। मेमलुक उनके चारों ओर आ गए, और अल-असद और अल-अमजद कुछ देर के लिए बेहोश हो गए; जब उन्हें होश आया, तो अल-अमजद अपने भाई को लेकर सुल्तान के पास गया और उसे अपनी कहानी सुनाई; जिस पर सुल्तान ने उसे बहरीन के घर को लूटने का आदेश दिया। इसलिए वज़ीर ने कुछ लोगों को इसके लिए भेजा; और वे बहराम के घर गए, उसे लूटा और उसकी बेटी को वज़ीर के पास ले आए, जिसने उसका सम्मानपूर्वक स्वागत किया। अल-असद ने तब अपने भाई को अपने द्वारा झेली गई सभी यातनाओं और बहरीन की बेटी द्वारा उसके प्रति किए गए दयालु कार्यों के बारे में बताया। इसलिए अल-अमजद ने उसके साथ और भी अधिक सम्मानपूर्वक व्यवहार किया। और इसके बाद उसने अल-असद को उस युवती के साथ हुई सारी घटनाएँ बताईं, और बताया कि कैसे वह फाँसी से बच निकला और वज़ीर बन गया। फिर उनमें से प्रत्येक ने एक-दूसरे से अपने भाई के बिछड़ने से हुए कष्ट का बखान किया। सुल्तान ने मगी को बुलवाया और

उसका सिर कलम करने का आदेश दिया। बहराम ने कहा, हे महाराज, क्या आपने मुझे मारने का निश्चय कर लिया है? सुल्तान ने उत्तर दिया, हाँ। तब बहराम ने कहा, हे महाराज, मुझ पर थोड़ी दया कीजिए। बहराम ने अपना सिर ज़मीन की ओर झुका लिया और तुरंत सिर उठाकर इस्लाम की प्रतिज्ञा की और सुल्तान के समक्ष मुसलमान होने का वचन दिया। इस प्रकार वे उसके इस्लाम अपनाने पर प्रसन्न हुए। तब अमजद और असद ने उसे अपने साथ घटी सारी घटना सुनाई; और बहराम ने उनसे कहा, हे मेरे स्वामियों, यात्रा की तैयारी कीजिए, मैं आपके साथ चलूँगा। वे इस बात पर प्रसन्न हुए, जैसे वे उसके इस्लाम अपनाने पर प्रसन्न हुए थे; परन्तु वे फूट-फूटकर रोने लगे। इसलिए बहराम ने उनसे कहा, हे मेरे स्वामियों, रोओ मत; क्योंकि अंततः तुम अपने परिवार से मिल जाओगे, जैसे नीमेह और नोआम मिले थे। और उन्होंने उससे पूछा, नीमेह और नोआम का क्या हुआ? उसने इस प्रकार उत्तर दिया: नीमेह और नोआम की कहानी। 1*' लोगों ने बताया है (परन्तु ईश्वर सर्वज्ञ है), कि अल-कूफेह131 नगर में, उसके निवासियों के सरदारों में से एक, एर-रबीआ, हातिनी का पुत्र, रहता था। वह बहुत धनी और समृद्ध था, और उसे एक पुत्र का आशीर्वाद प्राप्त था जिसका नाम उसने नियरनेट-अल्लाह रखा था।132 और एक दिन जब वह दास-व्यापारियों के बाज़ार में था, तो उसने एक दासी को भेंट करते हुए देखा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.53%** है।

नेमेह और नोआम की कहानी। 171 बिक्री के लिए, एक अत्यंत सुंदर और आकर्षक बच्ची अपनी गोद में लिए हुए थी। तब एर-रबीया ने दास-व्यापारी को इशारा किया और उससे पूछा, इस दासी और उसकी बेटी को कितने में बेचा जाएगा? उसने उत्तर दिया, पचास सोने के सिक्कों में। एर-

रबीया ने कहा, अनुबंध लिखो, पैसे लो और उसे उसके मालिक को दे दो। फिर उसने दास-व्यापारी को दासी की कीमत चुकाई और उसे उसकी दलाली भी दे दी; और दासी और उसकी बेटी को लेकर वह उनके साथ घर चला गया। जब उसके चाचा की बेटी (जो उसकी पत्नी थी) ने उस दासी को देखा, तो उसने उससे कहा, हे मेरे चाचा के पुत्र, यह दासी कौन है? उसने उत्तर दिया, मैंने इसे इस बच्ची को पाने की इच्छा से खरीदा है जो इसकी गोद में है; और जान लो कि जब वह बड़ी हो जाएगी, तो अरबों या विदेशियों के देशों में उसके जैसी कोई नहीं होगी, और उससे अधिक सुंदर कोई नहीं होगी। और उसके चाचा की बेटी ने उससे पूछा, हे दासी, तेरा नाम क्या है? उसने उत्तर दिया, हे मेरी स्वामिनी, मेरा नाम तौफीक है।133 — और उसने पूछा, तेरी पुत्री का नाम क्या है? उसने उत्तर दिया, साद।134 और उसने कहा, तूने सही कहा। तू भाग्यशाली है, और वह भी भाग्यशाली है जिसने तुझे खरीदा है। — फिर उसने कहा, हे मेरे चाचा के पुत्र, तू उसका क्या नाम रखेगा? — जो तू चाहे, उसने उत्तर दिया। उसने उत्तर दिया, हम उसका नाम नोआम रखेंगे।135 और एर-रबीया ने कहा, ऐसा नाम रखने में कोई हानि नहीं है। छोटी नोआम को एर-रबीया के पुत्र नेमेह136 के साथ एक ही पालने में पाला गया, और दस वर्ष की आयु तक वे इसी प्रकार पली-बढ़ीं; और वे दोनों एक-दूसरे से अधिक सुंदर थीं।137 लड़का उससे कहा करता था, हे मेरी बहन। और वह उससे कहती थी, हे मेरे भाई। फिर जब एर-रबीया और उसका बेटा नेमेह इस उम्र के हो गए, तो एर-रबीया ने उनसे कहा, हे मेरे बेटे, नोआम तेरी बहन नहीं है; बल्कि वह तेरी दासी है; और मैंने उसे तेरे लिए तब खरीदा था जब तू पालना में था: इसलिए आज से उसे अपनी बहन मत कहना। तब नेमेह ने अपने पिता से कहा, यदि ऐसा है, तो मैं उससे विवाह करूँगा। फिर वह अपनी माँ के पास गया और उसे यह बात बताई; और

उसने कहा, हे मेरे बेटे, वह तेरी दासी है। इसलिए एर-रबीया के बेटे नेमेह ने उसे पत्नी के रूप में स्वीकार किया और उससे प्रेम किया। इस प्रकार उनके जीवन के चार वर्ष बीत गए, और अल-कूफेह में नोआम से अधिक सुंदर, मधुर या आकर्षक कोई कन्या नहीं थी। वह पली-बढ़ी, कुरान और विज्ञान की किताबें पढ़ीं, और कई तरह के वाद्ययंत्र बजाने में निपुण हो गई। वह गायन और वाद्य संगीत दोनों में निपुण थी, यहाँ तक कि अपनी उम्र के सभी लोगों से आगे थी। और एक दिन जब वह अपने साथ बैठी थी...

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.49%** है।

172 नेमेह और नोआम की कहानी। जब नोआम, एर्लाबिेका के पुत्र नेमेह, भोजन कक्ष में बैठा, तो उसने वीणा उठाई, उसके तार कसे और ये दो छंद गाए: — जब तक तू मेरा स्वामी है, जिसकी कृपा से मैं जीती हूँ, और वह तलवार जिससे मैं विपत्तियों का नाश करती हूँ, मुझे कभी ज़ैद या अमर की शरण नहीं लेनी पड़ेगी, 139 और तेरे सिवा किसी और की नहीं, यदि मेरे मार्ग तंग हो जाएँ। और नेमेह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उससे फिर से गाने का अनुरोध किया; और जब उसने गा लिया, तो युवक ने कहा, हे नोआम, तू ईश्वरीय रूप से प्रतिभाशाली है। लेकिन जब वे अत्यंत सुखमय जीवन व्यतीत कर रहे थे, तब अल-हज्जाज,140 अपने वायसराय महल में कह रहे थे, "मुझे इस युवती, जिसका नाम नोआम है, को यहाँ से ले जाकर अमीरुल मोमिनीन, 'अब्द-अल-मेलिक, मरवान के पुत्र के पास भेजना होगा; क्योंकि उनके महल में उसके समान कोई नहीं है, और न ही वहाँ उसके समान मधुर गायन सुना जाता है।" तब उन्होंने एक बूढ़ी स्त्री, एक कहरामनेह (गायिका), को बुलाया और उससे कहा, "एर-इलाबीआ के घर जाओ और युवती नोआम से मिलो और उसे यहाँ से

ले जाने का प्रबंध करो; क्योंकि पृथ्वी पर उसके समान कोई नहीं है।" बूढ़ी स्त्री ने अल-हज्जाज की बात मान ली; और जब वह अगली सुबह उठी, तो उसने ऊनी वस्त्र पहने,141 अपने गले में हजारों मोतियों की माला टांगी,142 और हाथ में एक छड़ी और यमन में बनी चमड़े की पानी की बोतल लेकर वहाँ की ओर चल पड़ी, और जाते हुए कहती रही, "ईश्वर की पूर्णता की स्तुति हो, और ईश्वर की प्रशंसा हो, और ईश्वर के सिवा कोई देवता नहीं है, और ईश्वर सबसे महान है, और सर्वोच्च, महान ईश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है!" उसका हृदय छल और कपट से भरा हुआ था, और वह ईश्वर की स्तुति और प्रार्थना करती रही, जब तक कि वह दोपहर की नमाज़ के समय एर-इल्लाबिया के पुत्र नेमेह के घर नहीं पहुँच गई; और उसने दरवाजा खटखटाया; जिस पर द्वारपाल ने उसके लिए दरवाजा खोला और उससे कहा, "तुम क्या चाहती हो?" उसने उत्तर दिया, "मैं एक गरीब स्त्री हूँ, जो ईश्वर की सेवा में स्वयं को समर्पित करती हूँ, और दोपहर की नमाज़ का समय हो गया है; इसलिए मैं इस पवित्र स्थान पर नमाज़ पढ़ना चाहती हूँ।" द्वारपाल ने उत्तर दिया, "हे बुढ़िया, यह नेमेह, एर-रबीआ के पुत्र का घर है, और यह न तो कोई सामूहिक मस्जिद है और न ही कोई उपासना स्थल।" उसने उत्तर दिया, "मैं जानती हूँ कि नेमेह, एर-रबीआ के पुत्र के घर जैसा कोई सामूहिक मस्जिद या उपासना स्थल नहीं है, और मैं मोमिनों के राजकुमार के महल से आई एक कहरामनेह हूँ, जो उपासना और यात्रा के लिए निकली हूँ।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.18%** है।

नेमेह और नोआम की कहानी। 173 द्वारपाल ने उससे कहा, "तुम्हारा प्रवेश वर्जित है।" उनके बीच बहुत बातें हुईं, अंत में बुढ़िया उससे लिपट गई और बोली, "क्या मुझ जैसी स्त्री को एर-रबीआ के पुत्र नेमेह के घर

में प्रवेश करने से रोका जाएगा, जबकि मैं अमीरों और रईसों के घरों में जाती हूँ?” नेमेह बाहर आया और उनकी बातें सुनकर हँसा और उसे अपने पीछे आने का आदेश दिया। नेमेह अंदर गया और बुढ़िया उसके पीछे-पीछे तब तक गई जब तक वह उसे नोआम के पास नहीं ले गई; वहाँ पहुँचकर बुढ़िया ने नोआम का हार्दिक अभिवादन किया। जब उसने नोआम को देखा, तो वह उसकी अत्यधिक सुंदरता पर आश्चर्यचकित हुई और उससे बोली, “हे मेरी स्वामिनी, मैं तुम्हें ईश्वर की शरण में सौंपती हूँ, जिसने तुम्हें और तुम्हारे स्वामी को सुंदरता और आकर्षण में एक समान बनाया है।” तब वह बूढ़ी औरत ताक में बैठ गई, 143 और दिन ढलने और रात के घने अंधेरे में आने तक प्रार्थना, प्रणाम और विनती करती रही। तब युवती ने कहा, हे मेरी माँ, थोड़ी देर अपने पैरों को आराम दो। लेकिन बूढ़ी औरत ने उत्तर दिया, हे मेरी स्वामिनी, जो आने वाले संसार की खोज करता है वह इस संसार में स्वयं को थका देता है; और जो इस संसार में स्वयं को नहीं थकाता वह आने वाले संसार में धर्मियों के महलों को प्राप्त नहीं कर पाएगा। तब नोआम बूढ़ी औरत के लिए भोजन लाया और उससे कहा, मेरा भोजन खाओ और मेरे लिए कृपा और दया की भीख मांगो। लेकिन बूढ़ी औरत ने उत्तर दिया,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.65%** है।

174 नीमेह और नोआम की कहानी। निश्चय ही मैं उपवास कर रहा हूँ; परन्तु तुम तो एक युवती हो, और खाना-पीना और आनंद करना तुम्हारे लिए उचित है। ईश्वर तुम पर कृपा करे! ईश्वर (जिसका नाम महान है!) ने कहा है, सिवाय उसके जो पश्चाताप करे, विश्वास करे और धार्मिक कार्य करे। 144 — युवती कुछ देर तक उस बूढ़ी औरत के साथ बैठी रही और उससे बातें करती रही; फिर उसने अपने स्वामी से कहा, हे मेरे स्वामी, इस बूढ़ी औरत को कुछ समय के लिए हमारे साथ ठहराने का अनुरोध कीजिए; क्योंकि उसके चेहरे पर भक्ति की छाप है। तब उसने उत्तर दिया, केवल उसके लिए ही एक कमरा बना दीजिए, और किसी को भी उसके पास न जाने दीजिए; और शायद ईश्वर (जिसकी पूर्णता की प्रशंसा हो, और जिसका नाम महान है!) हमें उसके आशीर्वाद से लाभान्वित करे,

और हमें अलग न करे। और वह बूढ़ी औरत रात भर प्रार्थना करती रही और कुरान पढ़ती रही, सुबह तक। फिर वह नेंच और नोआम के पास आई और उन्हें सुप्रभात कहकर बोली, मैं आप दोनों को ईश्वर की देखरेख में सौंपती हूँ। लेकिन नोआम ने उससे कहा, हे मेरी माँ, तुम कहाँ जा रही हो? मेरे स्वामी ने मुझे तुम्हारे लिए एक कमरा आरक्षित करने का आदेश दिया है जिसमें तुम एकांत में ध्यान कर सको। बूढ़ी औरत ने उत्तर दिया, ईश्वर उन्हें सलामत रखे और तुम दोनों पर अपनी कृपा बनाए रखे; लेकिन मैं तुमसे निवेदन करती हूँ कि तुम द्वारपाल को यह आदेश दो कि वह मुझे तुम्हारे पास आने से न रोके; और यदि ईश्वर की इच्छा हो (जिसका नाम महान हो!), तो मैं प्रतिदिन रात और दिन अपनी प्रार्थना और आराधना के अंत में पवित्र स्थानों पर जाकर तुम दोनों के लिए प्रार्थना करूँगी। फिर वह घर से चली गई, जबकि युवती नोआम उसके वियोग पर रोती रही, क्योंकि उसे पता नहीं था कि वह उसके पास क्यों आई थी। वह वृद्धा अल-हज्जाज के पास गई; और उसने उससे पूछा, तुमने क्या किया है? उसने उत्तर दिया, मैंने उस युवती को देखा है, और वह इतनी सुंदर है कि उसकी उम्र में किसी और स्त्री ने उससे अधिक सुंदर जन्म नहीं दिया है। अल-हज्जाज ने उससे कहा, यदि तुम वह काम करो जो मैंने तुम्हें करने का आदेश दिया है, तो मेरी ओर से तुम्हें भरपूर सौभाग्य प्राप्त होगा। उसने उत्तर दिया, मैं आपसे पूरे एक महीने की मोहलत चाहती हूँ। और उसने उससे कहा, मैं तुम्हें एक महीने की मोहलत देता हूँ। — फिर उस वृद्धा ने नेमेह और नोआम के घर जाना शुरू कर दिया, जहाँ उसका बहुत सम्मान किया जाने लगा। वह उनके साथ सुबह-शाम बिताती रही, घर के सभी लोग उसका स्वागत करते थे, यहाँ तक कि एक दिन, जब वह युवती के साथ अकेली थी, तो उसने कहा, हे मेरी स्वामिनी, अल्लाह की कसम, जब मैं पवित्र स्थानों की यात्रा करूँगी, तो मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँगी;

और मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे साथ चलो, ताकि तुम वहाँ आने वाले शेखों145 को देख सको, और वे तुम्हारे लिए तुम्हारी मनचाही दुआएँ करें। और युवती नोआम ने उत्तर दिया, अल्लाह की कसम,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.12%** है।

नेमेह और नोआम की कहानी। 175 0 111 हे मेरी माँ, मुझे अपने साथ ले चलो। तब उस बूढ़ी औरत ने उससे कहा, अपनी सास से अनुमति मांगो, और मैं तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगी। तब उस युवती ने अपनी सास, नेमेह की माँ से कहा, हे मेरी स्वामिनी, मेरे स्वामी से विनती करो कि मुझे और तुम्हें एक दिन मेरी माँ, उस बूढ़ी औरत के साथ, पवित्र स्थानों में गरीब भक्तों के साथ प्रार्थना और विनती करने जाने दें। और जब नेमेह आया और बैठ गया, तो बूढ़ी औरत उसके पास गई और उसका हाथ चूमा; लेकिन उसने उसे ऐसा करने से मना किया: और उसने उसके लिए प्रार्थना की, और घर से बाहर चली गई। और अगले दिन वह फिर आई, जब नेमेह घर में नहीं था, और युवती नोआम से बात करते हुए उससे कहा, हमने कल तुम्हारे लिए प्रार्थना की थी; लेकिन अब उठो और अपना मनोरंजन करो, और अपने स्वामी के आने से पहले लौट जाओ। तब उस युवती ने अपनी सास से कहा, “अल्लाह की कसम खाकर तुमसे विनती करती हूँ कि मुझे इस नेक स्त्री के साथ पवित्र स्थानों में अल्लाह के संतों के दर्शन करने की अनुमति दे दो, और मैं अपने मालिक के आने से पहले जल्दी लौट आऊँगी।” नीमे की माँ ने उत्तर दिया, “मुझे डर है कि कहीं तुम्हारे मालिक को पता न चल जाए।” लेकिन उस बूढ़ी औरत ने कहा, “अल्लाह की कसम, मैं उसे ज़मीन पर नहीं बैठने दूँगी; बल्कि वह खड़े-खड़े ही देखेगी और देर नहीं करेगी।” फिर उसने इस तरकीब से युवती को अपने साथ अल-हज्जाज के महल में ले जाकर उसे एक निजी कमरे में

ठहराकर अपने आने की सूचना दी। अल-हज्जाज आया और उसे देखा, और पाया कि वह अपनी उम्र की सबसे सुंदर स्त्री थी, और उसके जैसी सुंदरता उसने पहले कभी नहीं देखी थी। लेकिन जब नोआम ने उसे देखा, तो उसने अपना चेहरा ढक लिया। उसने अपने दरबारी को बुलाए बिना उसे नहीं छोड़ा। उसने अपने साथ पचास घुड़सवारों को भेजा और उसे आदेश दिया कि वह युवती को एक उत्तम और तेज ऊंट पर बिठाकर दमिश्क ले जाए और उसे अमीरुल मोमिनीन, मरवान के पुत्र अब्द-अल-मेलिक को सौंप दे, जिन्हें उसने एक पत्र लिखा था। उसने अपने दरबारी से कहा, "उन्हें यह पत्र दे दो, उनसे उत्तर लेकर आओ और शीघ्र लौट आओ।" इसलिए दरबारी गया और युवती को ऊंट पर बिठाकर उसके साथ यात्रा पर निकल पड़ा। युवती अपने स्वामी के वियोग के कारण लगातार आंसू बहाती रही, जब तक कि वे दमिश्क नहीं पहुँच गए। उसने अमीरुल मोमिनीन से मिलने की अनुमति मांगी, जिन्होंने उसे अनुमति दे दी। वह उनके पास गया और युवती के मामले से उन्हें अवगत कराया; जिसके बाद खलीफा ने उसके लिए एक अलग निजी कमरा आरक्षित कर दिया। फिर खलीफा अपने हरम में गया और अपनी पत्नी को देखकर उससे कहा, "अल-हज्जाज ने मेरे लिए एक दासी खरीदी है।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.95%** है।

176 नेमेह और नोआम की कहानी। अल-कूफ़ेह के राजाओं की बेटियों में से,14(J ने दस हज़ार सोने के सिक्कों के बदले में मुझे यह पत्र भेजा है, और पत्र के साथ उसे भी भेजा है। उसकी पत्नी ने उत्तर दिया, अल्लाह तुझ पर अपनी कृपा बढ़ाए! इसके बाद, खलीफ़े की बहन उस युवती के पास गई; और जब उसने उसे देखा, तो उसने कहा, अल्लाह की कसम, जिसके घर में तू है, वह निराश नहीं होता, चाहे तेरी कीमत एक लाख

सोने के सिक्के ही क्यों न हो! और युवती नोआम ने उससे कहा, हे सुंदर मुख वाली, यह महल किन राजाओं का है, और यह कौन सा शहर है? उसने उत्तर दिया, यह दमिश्क शहर है, और यह मेरे भाई, अमीरुल मोमिनीन, मरवान के बेटे अब्द-अल-मेलिक का महल है। फिर उसने युवती से कहा, लगता है कि तुम्हें यह पता नहीं था। - अल्लाह की कसम, हे मेरी स्वामिनी, नोआम ने उत्तर दिया, मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं थी। खलीफ़े की बहन उसने कहा, “जिसने तुझे बेचा और तेरा दाम लिया, क्या उसने तुझे यह नहीं बताया कि खलीफा ने तुझे खरीदा है?” जब उस युवती ने ये शब्द सुने, तो उसकी आँखों से आँसू बहने लगे, और वह विलाप करने लगी, और मन ही मन बोली, “मेरे विरुद्ध चाल पूरी हो गई है।” फिर उसने मन ही मन कहा, “अगर मैं बोलूँगी, तो कोई मेरा विश्वास नहीं करेगा; इसलिए मैं चुप रहूँगी और धैर्य रखूँगी; क्योंकि मैं जानती हूँ कि ईश्वर की सहायता निकट है।” और वह शर्म से अपना सिर झुकाए रही, और देर से यात्रा करने और धूप के कारण उसके गाल लाल हो गए थे। खलीफा की बहन उस दिन उसे छोड़कर चली गई, और अगले दिन उसके पास लिनेन और रत्नों के हार लेकर आई, और उसे पहनाया। इसके बाद, अमीरुल मोमिनीन उसके पास आया, और उसके बगल में बैठ गया, और उसकी बहन ने उससे कहा, “इस युवती को देखो जिसमें ईश्वर ने सुंदरता और आकर्षण के सभी गुण समाहित किए हैं।” तब खलीफा ने नोआम से कहा, “अपने चेहरे से घूंघट हटाओ।” उसने उसे नहीं हटाया, और उसने उसका चेहरा नहीं देखा। हालाँकि, उसने उसकी कलाइयाँ देखीं, और उसके लिए उसके दिल में प्रेम उमड़ आया, और उसने अपनी बहन से कहा, मैं तीन दिन बाद ही उससे मिलने आऊँगा, ताकि इस बीच वह तुम्हारी बातों से खुश हो जाए। फिर वह उठा और उससे दूर चला गया। और वह युवती अपनी स्थिति पर विचार करती रही, और अपने

स्वामी नीमेब से बिछड़ने पर आहें भरती रही। और जब अगली रात आई, तो उसे बुखार हो गया, और उसने न कुछ खाया-पिया, और उसका चेहरा और उसकी सुंदरता बदल गई। इसलिए उन्होंने यह बात खलीफा को बताई, और उसकी हालत देखकर वह बहुत दुखी हुआ, और उसने उसके लिए चिकित्सकों और जानकारों को बुलाया; लेकिन कोई भी उसके लिए कोई उपाय नहीं खोज सका। इसी बीच, उसका स्वामी नीमेब अपने घर आया, और अपने बिस्तर पर बैठकर पुकारा, हे नोआम! लेकिन उसने उसे उत्तर दिया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.24%** है।

नेमेह और नोआम की कहानी। 177 नहीं। इसलिए वह जल्दी से उठा और फिर से पुकारा; लेकिन कोई उसके पास नहीं आया; क्योंकि घर की हर दासी उसके डर से छिप गई थी। इसलिए वह अपनी माँ के पास गया और उसे अपने गाल पर हाथ रखे बैठे पाया; और उसने उससे कहा, हे मेरी माँ, नोआम कहाँ है? - हे मेरे बेटे, उसने उत्तर दिया, वह एक ऐसी महिला के साथ है जो उसके मामले में मुझसे भी अधिक भरोसेमंद है; अर्थात्, धर्मपरायण बूढ़ी औरत; क्योंकि वह उसके साथ गरीब भक्तों से मिलने और वापस आने गई है। - और उसने पूछा, वह ऐसा कब से करती आ रही है? और वह किस समय जाती है? - उसने उत्तर दिया, वह सुबह जल्दी जाती है। - और तुमने उसे ऐसा करने की अनुमति कैसे दी? उसने पूछा। - हे मेरे बेटे, उसने उत्तर दिया, उसी ने मुझे इसके लिए राजी किया था। और नेमेह ने कहा, सर्वोच्च, महान परमेश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है! तब वह व्याकुल अवस्था में अपने घर से निकला और पुलिस प्रमुख के पास जाकर उससे बोला, “क्या तुम मेरे विरुद्ध छल कर रहे हो और मेरी दासी को मेरे घर से ले गए हो? मैं निश्चय ही तुम्हारे विरुद्ध

अल्लाह के पास शिकायत करूँगा।” तब पुलिस प्रमुख ने पूछा, “उसे किसने लिया?” उसने उत्तर दिया, “एक बूढ़ी औरत, जिसका हुलिया फलाँ-फलाँ था, ऊनी वस्त्र पहने हुए थी और उसके हाथ में एक माला थी जिसके हजारों मनके थे।” पुलिस प्रमुख ने उत्तर दिया, “मुझे उस बूढ़ी औरत के बारे में बताओ, और मैं तुम्हें तुम्हारी दासी सौंप दूँगा।” नेमेह ने पूछा, “उस बूढ़ी औरत को कौन जानता है?” पुलिस प्रमुख ने कहा, “और कौन, इंद्रियों से छिपी हुई बातों को जानता है, सिवाय ईश्वर के, जिसकी पूर्णता की प्रशंसा की जाती है और जिसका नाम महान है? परन्तु वह जानता था कि वह एक धूर्त स्त्री थी जिसे अल्लाह ने नियुक्त किया था।” तब नीमे ने उससे कहा, मैं अपनी दासी को ढूंढ रही हूँ।

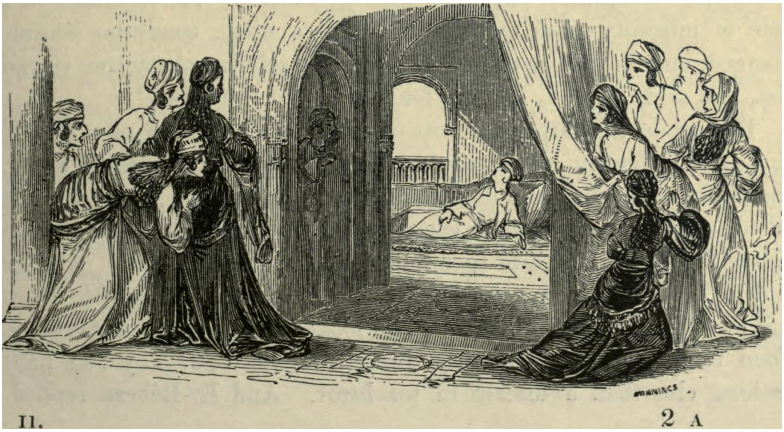

II. 2 A

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.47%** है।

178 नीमेह और नोआम की कहानी। "तुम्हारे सिवा किसी से मत पूछना, और अल-हज्जाज मेरे और तुम्हारे बीच फैसला करेगा।" उसने उत्तर दिया, "तुम जिसके पास जाना चाहो, जाओ।" अतः नीमेह अल-हज्जाज के महल में गया। उसका पिता अल-कूफेह के प्रमुख लोगों में से एक था; इसलिए जब वह अल-हज्जाज के निवास पर पहुँचा, तो दरबारी ने अंदर

जाकर उसे मामले की सूचना दी, और अल-हज्जाज ने कहा, "उसे मेरे पास लाओ।" जब वह उसके सामने खड़ा हुआ, तो अल-हज्जाज ने उससे कहा, "तुम्हारा क्या काम है?" नीमेह ने उत्तर दिया, "मेरे साथ ऐसी-ऐसी घटनाएँ घटी हैं।" अल-हज्जाज ने कहा, "पुलिस प्रमुख को मेरे पास लाओ, और हम उसे उस बूढ़ी औरत को खोजने का आदेश देंगे।" तदनुसार, जब पुलिस प्रमुख आया, तो उसने उससे कहा, "मैं तुमसे यह चाहता हूँ कि तुम एर-रबीआ के पुत्र नीमेह की दासी को खोजो।" पुलिस प्रमुख ने उत्तर दिया, "इंद्रियों से छिपी हुई बातों को केवल ईश्वर ही जान सकता है, जिसका नाम महान है!" लेकिन अल-हज्जाज ने उससे कहा, "तुम्हें अपने साथ घुड़सवार ले जाने होंगे और सड़कों पर, तथा नगरों में उस युवती को खोजना होगा।" फिर उसने नेमेह की ओर देखकर उससे कहा, "यदि तुम्हारी दासी वापस न आए, तो मैं तुम्हें अपने महल से दस दासियाँ और पुलिस प्रमुख के महल से दस दासियाँ दे दूँगा।" और उसने पुलिस प्रमुख से कहा, "युवती को खोजने के लिए निकल पड़ो।" अतः वह निकल पड़ा। नेमेह व्यथा व्याकुल था और जीवन से विरक्त हो गया था। उसकी आयु चौदह वर्ष हो चुकी थी और उसके चेहरे के दोनों ओर बाल नहीं थे। वह रोता-पीटता रहा और अपने घर से अलग होकर सुबह तक रोता रहा। उसके पिता ने आकर उससे कहा, “हे मेरे पुत्र, निश्चय ही अल-हज्जाज ने कन्या के विरुद्ध चाल चली है और उसे अगवा कर लिया है; परन्तु ईश्वर क्षण-क्षण राहत देता है।” फिर भी नीमे की चिंता बढ़ती गई, और वह समझ नहीं पा रहा था कि क्या कहे, और आने वाले किसी को भी पहचान नहीं पा रहा था। वह तीन महीने तक दुर्बलता की अवस्था में रहा, जिससे उसकी पूरी हालत बिगड़ गई, और उसके पिता उससे निराश हो गए; चिकित्सकों ने उसका इलाज किया और कहा, “ कन्या के सिवा उसका कोई इलाज नहीं है।” परन्तु एक दिन जब उसके पिता बैठे थे, तो

उन्होंने एक कुशल चिकित्सक, एक फारसी चिकित्सक के बारे में सुना, जिसके बारे में लोगों का कहना था कि उसे चिकित्सा, ज्योतिष और भूगर्भ विद्या का पूर्ण ज्ञान है। इसलिए एर-रबीया ने उसे बुलाया; और जब वह आया, तो उसने उसे अपने पास बैठाया, उसका आदर किया, और उससे कहा, "मेरे पुत्र की हालत देखो।" और उसने नीमे से कहा, "मुझे अपना हाथ दो।" इसलिए उसने अपना हाथ उसे दे दिया, और वैद्य ने उसके जोड़ों को महसूस किया, उसके चेहरे को देखा और हँस पड़ा। फिर अपने पिता की ओर देखते हुए उसने कहा, तुम्हारे हृदय में रोग के सिवा कुछ नहीं है। और एर-रबीया ने उत्तर दिया,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.46%** है।

हे ज्ञानी, आपने सत्य कहा है: तो फिर मेरे पुत्र के मामले पर अपने ज्ञान से विचार कीजिए और मुझे उसकी सारी परिस्थितियाँ बताइए, और उसके बारे में मुझसे कुछ भी न छिपाइए। तब फारसी ने कहा, वह एक युवती के प्रेम में लीन है, और वह युवती अल-बसरा या दमिश्क में है, और आपके पुत्र के लिए उसके साथ विवाह के सिवा कोई उपाय नहीं है। तब एर-रबीया ने कहा, यदि आप उन दोनों का विवाह करा दें, तो आपको मुझसे वह सब कुछ प्राप्त होगा जो आपको प्रसन्न करेगा, और आप अपना सारा जीवन धन और आनंद में व्यतीत करेंगे। फारसी ने उत्तर दिया, यह मामला शीघ्र ही सुलझ जाएगा, और आसान है। फिर नेमेह की ओर देखते हुए उसने उससे कहा, तुम्हें कोई हानि नहीं होगी; इसलिए निश्चिंत रहो और प्रसन्न रहो। और उसने एर-रबीया से कहा, अपनी संपत्ति में से चार हजार सोने के सिक्के निकाल लो। इसलिए उसने उन्हें बाहर निकाला और फारसी को सौंप दिया। फारसी ने उससे कहा, "मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा पुत्र मेरे साथ दमिश्क चले, और यदि ईश्वर की इच्छा हो (जिसका नाम

महान है!), तो मैं उस युवती के साथ ही लौटूँगा।" तब उसने युवक की ओर देखा और उससे पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?" उसने उत्तर दिया, "नेमेह।" फारसी ने कहा, "हे नेमेह, बैठो और ईश्वर की शरण में रहो (जिसका नाम महान है!); ईश्वर ने तुम्हें उस युवती से मिला दिया है।" यह सुनकर वह उठ बैठा। फारसी ने उससे कहा, "हिम्मत रखो; क्योंकि हम आज ही अपनी यात्रा पर निकलेंगे: इसलिए खाओ-पियो और आनंद लो, ताकि तुम्हें यात्रा के लिए शक्ति मिले।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.37%** है।

180 नीमेह और नोआम की कहानी। फारसी ने अपनी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने में जुट गया और नीमेह के पिता से दस हजार सोने के सिक्के, साथ ही यात्रा के दौरान सामान ढोने के लिए आवश्यक घोड़े, ऊंट और अन्य जानवर प्राप्त किए। इसके बाद, नीमेह ने अपने माता-पिता को विदा किया और ऋषि के साथ अलेप्पो की यात्रा पर निकल पड़ा। लेकिन उसे उस युवती के बारे में कोई खबर नहीं मिली।

फिर वे दमिश्क पहुंचे; और वहां तीन दिन रहने के बाद, फारसी ने एक दुकान ली और उसकी अलमारियों को कीमती चीनी मिट्टी के बर्तनों और ढक्कनों से भर दिया, अलमारियों को सोने और कीमती सामग्रियों से सजाया, अपने सामने कांच की बोतलों में तरह-तरह के मरहम और सिरप रखे, बोतलों के चारों ओर क्रिस्टल के प्याले लगाए और अपने सामने ज्योतिष यंत्र रखा। उसने ऋषियों और चिकित्सकों के वस्त्र धारण किए और नेमेह को अपने सामने खड़ा किया। उसने नेमेह को रेशम की कमीज़ और दुपट्टा पहनाया और सोने की कढ़ाई वाला रेशमी रुमाल बांधा। फिर उसने नेमेह से कहा, "हे नेमेह, आज से तू मेरा पुत्र है; इसलिए मुझे अपने पिता के सिवा मत पुकार, और मैं भी तुझे पुत्र ही कहूँगा।" नेमेह ने उत्तर दिया, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।" दमिश्क के लोग अब उस फ़ारसी दुकानदार के सामने एकत्रित हो गए, वे नेमेह की सुंदरता और दुकान तथा उसमें रखे सामानों की सुंदरता को निहार रहे थे। फ़ारसी दुकानदार नेमेह से फ़ारसी भाषा में बात की; नेमेह ने भी उससे फ़ारसी में बात की; क्योंकि वह फ़ारसी भाषा जानता था, जैसा कि महान लोगों के पुत्रों के साथ अक्सर होता था। दमिश्क के लोगों में फ़ारसी दुकानदार प्रसिद्ध हो गया, और लोग उसे अपनी पीड़ाएँ बताने लगे, और उसने उन्हें उपचार दिए। वह लोगों की ज़रूरतों को पूरा करता रहा, और दमिश्क के निवासी उसके पास आने लगे, उसकी प्रसिद्धि पूरे शहर में और बड़े-बड़े लोगों के घरों तक फैल गई। एक दिन जब वह बैठा था, तभी अचानक एक बूढ़ी औरत उसके पास आई, जो रत्नों से सजी जटाधारी गधे पर सवार थी; वह फ़ारसी की दुकान पर रुकी, और गधे की लगाम खींचकर उसे इशारा किया, और कहा, मेरा हाथ पकड़ो। उसने उसका हाथ पकड़ लिया, और वह गधे से उतर गई, और बोली, क्या तुम वही फ़ारसी वैद्य हो जो अल-एराक से आए हो? उसने उत्तर दिया, हाँ। उसने कहा, जान लो

कि मेरी एक बेटी है, और वह एक बीमारी से पीड़ित है। उसने उसे बीमारी के लक्षण बताए, और उसने उससे कहा, हे मेरी स्वामिनी, इस युवती का नाम क्या है, ताकि मैं उसकी नक्षत्र 147 देख सकूँ, और जान सकूँ कि उसे दवा किस समय पीना उचित होगा। — हे फारसी भाई,148 उसने उत्तर दिया, उसका नाम नोआम है। और जब फारसी ने यह नाम सुना

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.58%** है।

नेमेह और नोआम की कहानी। 181 नोआम ने हिसाब लगाना शुरू किया और अपने हाथ पर लिखने लगा; 149 और उससे कहा, "हे मेरी स्वामिनी, मैं उसके लिए तब तक कोई उपाय नहीं बताऊंगा जब तक मुझे यह पता न चल जाए कि वह किस देश से है, क्योंकि हवा में अंतर होता है। इसलिए मुझे बताइए कि वह किस देश में पली-बढ़ी है और उसकी उम्र कितनी है।" तो बूढ़ी औरत ने उत्तर दिया, "उसकी उम्र चौदह वर्ष है और वह एलकूफे प्रांत के एल-एराक में पली-बढ़ी है।" फारसी ने पूछा, "वह इस देश में कितने महीनों से है?" बूढ़ी औरत ने उत्तर दिया, "वह इस देश में कुछ ही महीनों से रह रही है।" जब नेमेह ने बूढ़ी औरत की बातें और अपनी दासी का नाम सुना, तो उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। तब फारसी ने उससे कहा, "उसके लिए ये और ये उपाय उपयुक्त होंगे।" तब उस बूढ़ी औरत ने उससे कहा, “जो तुमने बताया है, वह मुझे दे दो, और ईश्वर (जिसका नाम महान है!) का आशीर्वाद उस पर बना रहे।” और उसने दुकान की चौकी पर उसे दस सोने के सिक्के फेंक दिए। तब उस ऋषि ने नेमेह की ओर देखा और उसे आदेश दिया कि वह उसके लिए उन औषधियों को तैयार करे जिनसे औषधि बननी थी; और बूढ़ी औरत ने नेमेह को देखकर कहना शुरू किया, “हे मेरे पुत्र, मैं तुम्हारे लिए ईश्वर की रक्षा की प्रार्थना करती हूँ! सचमुच उसका रूप तुम्हारे जैसा है!” — फिर

उसने उस फारसी से कहा, “हे फारसियों के भाई, क्या यह तुम्हारी मेमलुक है या तुम्हारा पुत्र?” उसने उत्तर दिया, “यह मेरा पुत्र है।” तब नेमेह ने उसके लिए रखी हुई वस्तुओं को एक छोटे से डिब्बे में रखा और एक कागज लेकर उस पर ये दो पंक्तियाँ लिखीं: — यदि नोआम मुझ पर एक दृष्टि डाले तो मुझे परवाह नहीं कि सोआकला कृपा करे या जुवेनाइल 15° लाभ प्रदान करे। उन्होंने मुझसे कहा, इसे छोड़ दो और इसके जैसी बीस औरतें ले लो। लेकिन इसके जैसी कोई नहीं है, और मैं इसे नहीं छोड़ूंगा। उसने कागज को छोटी सी डिब्बी में रखा, उसे सील कर दिया और उसके ढक्कन पर कूफी लिपि में लिखा,151 मैं एल-कूफी का एर्रबीया का पुत्र नीमेह हूँ। फिर उसने वह छोटी सी डिब्बी बूढ़ी औरत के सामने रख दी। उसने उसे लिया और उन्हें विदाई देकर खलीफा के महल की ओर चल दी। जब वह सामान लेकर युवती के पास गई, तो उसने दवाइयों की छोटी सी डिब्बी उसके सामने रखते हुए कहा, हे मेरी स्वामिनी, जान लो कि हमारे शहर में एक फारसी वैद्य आया है, जो बीमारियों के बारे में इतना जानकार है कि मैंने उसे पहले कभी नहीं देखा। मैंने उसे तुम्हारी बीमारी के लक्षण बताने के बाद तुम्हारा नाम बताया; जिसके बाद उसने तुम्हारी बीमारी पहचान ली और इलाज बताया। फिर उसने अपने बेटे को आदेश दिया, जिसने तुम्हारे लिए यह दवाइयाँ पैक कर दीं। और दमिश्क में इससे अधिक सुंदर कोई नहीं है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.66%** है।

वह अपने बेटे से अधिक सुंदर नहीं था, न ही वस्त्रों में उससे अधिक आकर्षक था। और न ही किसी की दुकान उसके जैसी थी। - तो उसने वह छोटी सी डिब्बी उठाई और उसके ढक्कन पर अपने मालिक और उसके पिता का नाम लिखा देखा। यह देखकर उसका चेहरा बदल गया और

उसने कहा, इसमें कोई संदेह नहीं कि दुकान का मालिक मेरे कारण ही आया है। फिर उसने बूढ़ी औरत से कहा, मुझे इस युवक का वर्णन करो। उसने उत्तर दिया, उसका नाम नेमेह है, और उसकी दाहिनी भौं पर एक निशान है; उसने कीमती वस्त्र पहने हैं, और वह अत्यंत सुंदर है। तब उस युवती ने कहा, मुझे दवा दे दो, और ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) का आशीर्वाद और सहायता मुझ पर बनी रहे। उसने दवा ली और हंसते हुए उसे निगल लिया और बूढ़ी औरत से कहा, यह सचमुच आशीर्वादित दवा है। इसके बाद उसने उस छोटी सी डिब्बी में खोजा और कागज देखा। इसलिए उसने उसे खोला और पढ़ा; और जब उसे इसका अर्थ समझ आया, तो उसे यकीन हो गया कि लेखक उसका स्वामी है; इस प्रकार उसका मन प्रसन्न हुआ और वह आनंदित हुई; और जब बूढ़ी औरत ने उसे हंसते देखा, तो उसने उससे कहा, निश्चय ही यह एक धन्य दिन है। तब नोआम ने कहा, हे कहरामनेह, मुझे भोजन और पेय चाहिए। और बूढ़ी औरत ने दासियों से कहा, अपनी मालकिन के लिए मेजें और स्वादिष्ट व्यंजन लाओ। तदनुसार वे उसके लिए व्यंजन ले आईं, और वह खाने के लिए बैठ गई। और देखो, मरवान का पुत्र अब्द-अल-मेलिक उनके पास आया, और युवती को भोजन करते हुए देखकर वह प्रसन्न हुआ। और कहरामनेह ने कहा, हे विश्वासियों के राजकुमार, आपकी दासी नोआम का स्वास्थ्य आपको प्रसन्न करे; क्योंकि इस शहर में एक शुभ यात्रा आ रही है।

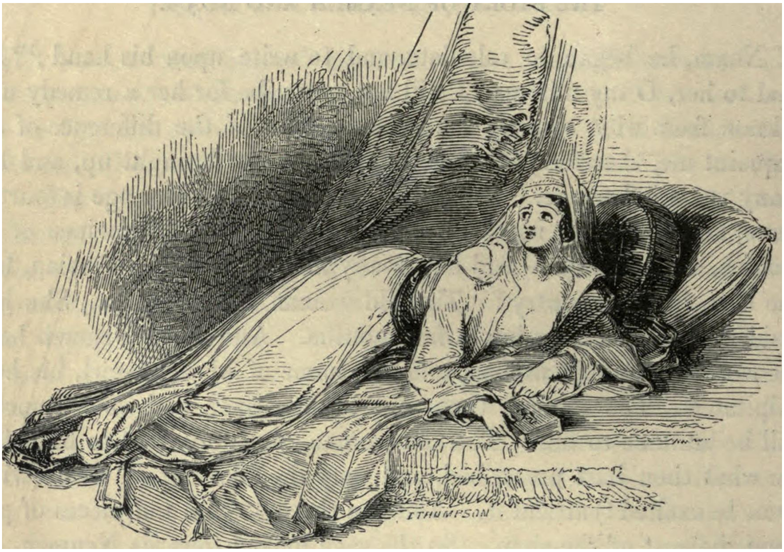

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.14%** है।

नेमेह और नोआम की कहानी। 183 एक चिकित्सक, जिनसे अधिक रोगों और उनके उपचारों का ज्ञान मैंने किसी और में नहीं देखा; और मैं उनके द्वारा लाई गई कुछ दवा उसके लिए लाया, और हे विश्वासियों के राजकुमार, एक बार सेवन करने के बाद ही वह स्वस्थ हो गई। इस पर, विश्वासियों के राजकुमार ने कहा, एक हजार सोने के सिक्के लो, और उसके पूर्ण स्वास्थ्य लाभ के लिए उपाय करो। फिर वह युवती के स्वस्थ होने पर प्रसन्न होकर चला गया, और वह बूढ़ी औरत एक हजार सोने के सिक्के लेकर फारसी की दुकान पर गई, और उसे ये सिक्के देते हुए बताया कि वह खलीफा की दासी है। और उसने उसे एक कागज दिया जो नोआम ने लिखा था। तो फारसी ने उसे लिया, और नेमेह को दे दिया, जिसने उसे देखते ही उसकी लिखावट पहचान ली, और बेहोश हो गया; और जब वह होश में आया, तो उसने कागज़ खोला और उसमें लिखा पाया, — उस दासी की ओर से, जो अपने सुख से वंचित है, जो अपने

मन में मोह में डूबी है, जो अपने प्रियतम से बिछड़ी है। — आगे। तुम्हारा पत्र मुझ तक पहुँच गया है, और इसने मेरे हृदय को आनंदित कर दिया है; और यह वैसा ही था जैसा कवि ने कहा है, — पत्र पहुँच गया है, और ईश्वर करे कि इसे लिखने वाली उंगलियाँ मुझे तब तक जीवित रहें जब तक कि वे मीठी सुगंध से भर न जाएँ। यह वैसा ही था जैसे मूसा अपनी माँ के पास लौट आया था; या जैसे यूसुफ का वस्त्र याकूब के पास लाया गया था।152 जब नीमे ने यह दोहा पढ़ा, तो उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। तब कब्रार्मिनेह ने उससे कहा, हे मेरे पुत्र, तुझे क्या रुला रहा है? ईश्वर कभी तेरी आँखों से आँसू न बहाए! और फारसी ने कहा, "हे मेरी स्वामिनी, मेरा पुत्र रोना कैसे रोक सकता है, जब वह इस दासी, एल-कूफेह के एर-रबीया के पुत्र नेमेह का स्वामी है, और जब इस कन्या का स्वास्थ्य उसे देखने पर निर्भर करता है, और उसे केवल उससे प्रेम है? हे मेरी स्वामिनी (उसने आगे कहा), ये हज़ार सोने के सिक्के अपने लिए ले लो, और तुम्हें मुझसे इससे अधिक मिलेगा; और हम पर दया दृष्टि डालो; क्योंकि इस मामले को सुलझाने का हमें तुम्हारे सिवा कोई उपाय नहीं सूझता।" तब उसने नेमेह से कहा, "क्या तुम उसके स्वामी हो?" उसने उत्तर दिया, "हाँ।" और उसने कहा, "तुमने सत्य कहा है; क्योंकि वह तुम्हारा ज़िक्र करना नहीं छोड़ती।" तब नेमेह ने उसे अपने साथ घटी सारी बातें बताईं; और बूढ़ी औरत ने कहा, "हे युवक, तुम उससे मेरे सिवा किसी और माध्यम से नहीं मिल सकते।" फिर वह घोड़े पर सवार हुई और तुरंत वापस लौट आई, और उस युवती के पास जाकर उसके चेहरे की ओर देखा, हँसी और उससे कहा, यह

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.78%** है।

184 नेमेह और नोआम की कहानी। हे मेरी पुत्री, तेरे स्वामी, एलकूफेह

के एर-रबीआ के पुत्र नेमेह के वियोग के कारण तेरा रोना और बीमार पड़ना उचित नहीं है। तब नोआम ने कहा, तेरे सामने से पर्दा हट गया है और तुझे सच्चाई का पता चल गया है। और उस बूढ़ी औरत ने उत्तर दिया, तेरी आत्मा प्रसन्न हो और तेरा हृदय आनंदित हो; क्योंकि अल्लाह की कसम, मैं तुम दोनों को मिला दूँगी, चाहे इसके लिए मुझे अपनी जान ही क्यों न देनी पड़े। फिर नेमेह के पास लौटकर उसने उससे कहा, मैं उस युवती के पास गई और उससे बात की, और पाया कि वह तेरे लिए तुझसे कहीं अधिक तीव्र इच्छा रखती है; क्योंकि मोमिनों का राजकुमार उससे मिलना चाहता है, और वह उससे मिलने से इनकार करती है। अब यदि तुम्हारा हृदय दृढ़ और मनमौजी है, तो मैं तुम दोनों को साथ लाऊँगी और तुम्हारे लिए स्वयं को खतरे में डालूँगी, और एक ऐसी योजना और युक्ति बनाऊँगी जिससे तुम्हें अमीरुल मोमिनीन के महल में प्रवेश कराया जा सके, ताकि तुम उस युवती से मिल सको; क्योंकि वह बाहर नहीं जा सकती। — तब नीमे ने उत्तर दिया, अल्लाह तुम्हें अच्छा प्रतिफल दे! फिर उसने उसे विदा किया और युवती के पास गई और उससे कहा, निश्चय ही तुम्हारे स्वामी की आत्मा तुम्हारे प्रेम के कारण देह से विदा हो रही है और वह तुमसे मिलना चाहता है। तो इस विषय पर तुम्हारा क्या कहना है? — नोआम ने उत्तर दिया, और मैं भी उसी स्थिति में हूँ: मेरी आत्मा देह से विदा हो रही है और मैं उससे मिलना चाहता हूँ। इस पर, उस बूढ़ी औरत ने महिलाओं के आभूषणों से भरा एक लबादा और महिलाओं के वस्त्र लिए और फिर से नीमे के पास जाकर उससे कहा, मेरे साथ कहीं अकेले आ जाओ। इसलिए वह उसके साथ दुकान के पीछे एक कमरे में गया; और उसने उसकी उंगलियों के सिरों पर मेहंदी लगाई, उसकी कलाई को कंगन से सजाया, उसके बालों को रेशम की अलंकृत डोरियों से सजाया,153 और उसे दासी के वस्त्र पहनाए, उसे उन बेहतरीन चीजों से

सजाया जिनसे दासियों को सजाया जाता है, जिससे वह स्वर्ग की काली आंखों वाली कुंवारी कन्याओं में से एक जैसा दिखने लगा। और जब कहरामनेह ने उसे इस अवस्था में देखा, तो वह बोली, धन्य है अल्लाह, सर्वश्रेष्ठ सृष्टिकर्ता! अल्लाह की कसम, तुम उस युवती से भी अधिक सुंदर हो! - फिर उसने उससे कहा, चलो, और बायां कंधा आगे और दायां कंधा पीछे झुकाओ, और अपने कूल्हों को अगल-बगल हिलाओ।154 इसलिए वह उसके निर्देशानुसार उसके सामने चलने लगा; और जब उसने देखा कि वह स्त्रियों के चलने-फिरने का वाकिफ है, तो उसने उससे कहा, "अगली रात मेरे आने तक प्रतीक्षा करो, यदि यह ईश्वर की इच्छा हो (जिसका नाम महान हो!), तब मैं तुम्हें अपने साथ महल में ले जाऊंगी; और जब तुम दरबारी और नौकरों को देखो, तो निडर रहना, अपना सिर झुका लेना और किसी से बात मत करना। मैं उन्हें तुमसे बात करने से रोकूंगी; और मैं ईश्वर पर भरोसा रखती हूं कि वह सफल होगा।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.61%** है।

नेमेह और नोआम की कहानी। 185 इसके अनुसार, अगली सुबह जब कहरामनेह उसके पास लौटी, तो वह उसे अपने साथ महल में ले गई। वह उससे पहले अंदर चली गई, और वह उसके पीछे-पीछे चला; लेकिन दरबारी ने उसे अंदर जाने से रोकने की कोशिश की; इसलिए उसने उससे कहा, हे सबसे अशुभ दास, यह नोआम की दासी है, जो विश्वासियों के राजकुमार की रखैल है, और तुम उसे अंदर जाने से रोकने का साहस कैसे करते हो? तब उसने कहा, हे दासी, अंदर जाओ। इसलिए वह उस बूढ़ी औरत के साथ अंदर चला गया; और वे बिना रुके महल के प्रांगण में खुलने वाले द्वार तक पहुँचे, तब बूढ़ी औरत ने उससे कहा, हे नेमेह, अपने आप को मजबूत करो और अपने दिल को दृढ़ करो, और महल में प्रवेश

करो; फिर बाईं ओर मुड़ो, और पाँच द्वार गिनो, और छठे द्वार से प्रवेश करो; क्योंकि वही द्वार तुम्हारे लिए तैयार किए गए स्थान का है; और यदि कोई तुमसे बात करे तो डरो मत; लेकिन उससे बात मत करना। और वह उसके साथ चलती रही जब तक कि वे दरवाज़े पर नहीं पहुँच गए। तभी दरवाज़ों की रखवाली के लिए नियुक्त दरबारी ने उसे रोककर पूछा, “यह दासी कौन है?” बूढ़ी औरत ने उत्तर दिया, “हमारी मालकिन इसे खरीदना चाहती हैं।” हिजड़े ने कहा, “मुसलमान की अनुमति के बिना कोई प्रवेश नहीं कर सकता; इसलिए इसे वापस ले जाओ; क्योंकि मैं इसे अंदर नहीं जाने दूँगा, जैसा कि मुझे आदेश दिया गया है।” – “हे महान दरबारी,” खलीफा ने उत्तर दिया, “तुम्हारी अक्ल कहाँ है? वास्तव में खलीफा की दासी नोआम, जिससे उसका दिल प्यार करता है, स्वस्थ हो गई है, और मुसलमान को उसके ठीक होने पर मुश्किल से विश्वास हो रहा है, और वह इस युवती को खरीदना चाहती है; इसलिए उसे अंदर जाने से मत रोको, कहीं ऐसा न हो कि उसे पता चल जाए कि तुमने ऐसा किया है, और वह तुम पर क्रोधित हो जाए; क्योंकि यदि वह तुम पर क्रोधित हुई तो वह तुम्हारा सिर कलम करवा देगी।” तब उसने कहा, “हे दासी, प्रवेश करो, और उसकी बातों पर ध्यान मत दो, और अपनी स्वामिनी को मत बताओ कि दरबारी ने तुम्हारे प्रवेश का विरोध किया है।” इसलिए नेमेह ने सिर झुकाया और प्रवेश किया, और बाईं ओर मुड़ने का इरादा किया; लेकिन वह भूल गया और दाईं ओर मुड़ गया; और उसका इरादा पाँच द्वार गिनने और छठे में प्रवेश करने का था; लेकिन उसने छह गिन लिए और सातवें में प्रवेश किया। और जब वह इस द्वार से प्रवेश कर गया, तो उसने एक कमरा देखा जो जटाओं से सजा हुआ था; उसकी दीवारों पर सोने की कढ़ाई वाले रेशम के पर्दे लगे थे; और उसमें अगरबत्ती, अंबरग्रीस और तेज सुगंध वाले कस्तूरी के सुगंधित बर्तन थे; और उसने ऊपरी सिरे पर

जटाओं से सजा हुआ एक पलंग देखा। इसलिए नेमेह उस पर बैठ गया, यह जाने बिना कि परमेश्वर की गुप्त योजना में उसके लिए क्या निर्धारित था; और जब वह बैठकर अपनी स्थिति पर विचार कर रहा था, तभी देखो, विश्वासियों के राजकुमार की बहन उसके पास आई, उसके साथ वह भी थी। 2 B

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.85%** है।

186 नेमेह और नोआम की कहानी। उसकी दासी। वहाँ बैठे युवक को देखकर उसने उसे दासी समझा; इसलिए वह उसके पास गई और बोली, हे दासी, तू कौन है? तेरा क्या वृत्तांत है? तू यहाँ क्यों आई है? परन्तु नेमेह ने कुछ नहीं कहा और न ही कोई उत्तर दिया। तब उसने कहा, हे दासी, यदि तू मेरे भाई की रखेलों में से एक है और वह तुझसे क्रोधित है, तो मैं तेरे प्रति उसका अनुग्रह कर दूँगी। परन्तु नेमेह ने फिर भी कोई उत्तर नहीं दिया। इस पर उसने अपनी दासी से कहा, कमरे के द्वार पर खड़ी हो जा, और किसी को अंदर न आने दे। तब वह उसके पास गई और उसकी सुंदरता देखकर बोली, हे कन्या, मुझे बता, तेरा नाम क्या है, और तू यहाँ क्यों आई है? क्योंकि मैंने तुझे हमारे महल में पहले कभी नहीं देखा। परन्तु नेमेह ने फिर भी कोई उत्तर नहीं दिया। तब राजा की बहन क्रोधित हो गई और उसने नेमेह के सीने पर हाथ रखा; और यह देखकर कि उसका सीना स्त्री के सीने जैसा नहीं है, वह उसके बाहरी वस्त्र उतारने ही वाली थी कि वह कौन है। तब नेमेह ने उससे कहा, हे मेरी स्वामिनी, मैं एक मेमलुक हूँ, कृपया मुझे खरीद लें; मैं आपकी सुरक्षा की याचना करता हूँ; इसलिए मुझे यह प्रदान करें। और उसने कहा, कोई हानि नहीं।

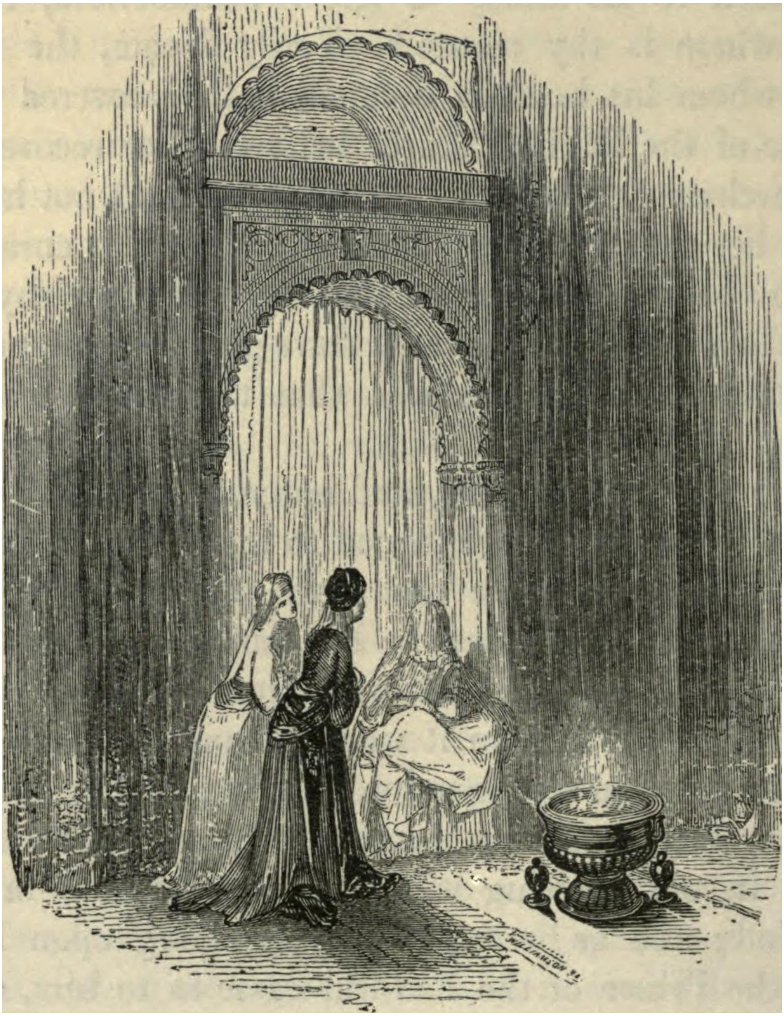

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.81%** है।

नेमेह और नोआम की कहानी। 187 तुझ पर विपत्ति आएगी। तो तू कौन है, और तुझे मेरे इस कमरे में किसने प्रवेश दिया? - नेमेह ने उत्तर दिया, हे रानी, मैं एल-कूफेह के एर-रबीया का पुत्र नेमेह हूँ, और मैंने अपनी दासी नोआम के लिए अपने प्राण जोखिम में डाले हैं, जिसे एल-हज्जाज ने उसके विरुद्ध एक चाल चलकर पकड़ लिया है और यहाँ भेज दिया है।

उसने फिर कहा, तुझे कोई हानि नहीं होगी। फिर उसने अपनी दासी को बुलाकर कहा, नोआम के निजी कमरे में जा। अब कहरामनेह नोआम के कमरे में गई और उससे पूछा, क्या तेरा स्वामी तेरे पास आया है? उसने उत्तर दिया, नहीं, अल्लाह की कसम। तो कहरामनेह ने कहा, शायद उसने गलती की है, और तेरे कमरे के बजाय किसी दूसरे कमरे में चला गया है, और तेरे कमरे का रास्ता भटक गया है। और नोआम ने कहा, “सर्वोच्च, महान ईश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है! हमारा नियत समय समाप्त हो गया है, और हम नाश हो रहे हैं!” — तब वे सब मिलकर विचार-विमर्श करने लगे, और जब वे इसी अवस्था में थे, तभी खलीफा की बहन की दासी उनके पास आई और नोआम को प्रणाम करके उससे बोली, “मेरी स्वामिनी ने तुम्हें अपने भोज में बुलाया है।” नोआम ने उत्तर दिया, “मैं सुनती हूँ और आज्ञा मानती हूँ।” तब खलीफा की बहन ने कहा, “शायद तुम्हारा स्वामी खलीफा की बहन के साथ है, और पर्दा हट गया है।” तब नोआम तुरंत उठी और खलीफा की बहन के पास गई, जिस पर उसकी बहन ने उससे कहा, “यह तुम्हारा स्वामी है जो मेरे साथ बैठा है, और ऐसा लगता है कि उसे जगह का भ्रम हो गया है; लेकिन तुम्हें डरने की कोई आवश्यकता नहीं है, न ही उसे, यदि यह ईश्वर की इच्छा है, जिसका नाम महान है!” जब नोआम ने खलीफा की बहन से ये शब्द सुने, तो उसका मन शांत हो गया। वह अपने स्वामी नीमेह के पास गई, और जब नीमेह ने उसे देखा तो वह उसके पास उठ खड़ा हुआ। दोनों ने एक-दूसरे को सीने से लगा लिया और बेहोश होकर गिर पड़े। जब उन्हें होश आया, तो खलीफा की बहन ने उनसे कहा, बैठ जाओ, ताकि हम इस विकट परिस्थिति से निकलने का उपाय ढूंढ सकें। दोनों ने उत्तर दिया, हम सुनते हैं और आज्ञा मानते हैं; और आदेश देना आपका अधिकार है। उसने कहा, अल्लाह की कसम, हमारी ओर से तुम पर कभी कोई विपत्ति नहीं

आएगी। फिर उसने अपनी दासी से कहा, भोजन और पेय लाओ। दासी उन्हें ले आई। उन्होंने भरपेट भोजन किया; उसके बाद वे पीने के लिए बैठ गए। प्याले उनके बीच घूमते रहे और उनके दुख दूर हो गए; लेकिन नीमेह ने कहा, काश मुझे पता होता कि इसके बाद क्या होगा! तब खलीफ़े की बहन ने उससे कहा, "हे नेमेह, क्या तुम अपनी दासी नोआम से प्रेम करते हो?" उसने उत्तर दिया, "हे मेरी स्वामिनी, वास्तव में उसी के प्रेम ने मुझे इस संकट में डाल दिया है।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.73%** है।

188 नीमेह और नोआम की कहानी। मेरा जीवन जिसमें मैं अब हूँ। और उसने नोआम से कहा, हे नोआम, क्या तुम अपने स्वामी नीमेह से प्रेम करते हो? - हे मेरी स्वामिनी, उसने उत्तर दिया, निश्चय ही उसी के प्रेम ने मेरे शरीर को क्षीण कर दिया है और मेरी पूरी स्थिति बदल दी है। और खलीफा की बहन ने उत्तर दिया, अल्लाह की कसम, तुम एक दूसरे से प्रेम करते हो, और जो भी तुम्हें अलग करना चाहे, उसका अस्तित्व ही समाप्त हो जाए! तो तुम्हारी आँखें प्रसन्न हों, और तुम्हारी आत्माएँ प्रसन्न हों! - इस पर वे प्रसन्न हुए। तब नोआम ने एक वीणा माँगी, और वे उसे उसके पास ले आए। उसने उसे लेकर सुर मिलाया और अपने श्रोताओं को अपनी मधुर ध्वनियों से प्रसन्न करते हुए ये छंद गाए:— जब निंदा करने वाले हमारे अलगाव के अलावा किसी और बात से संतुष्ट नहीं थे, यद्यपि हम दोनों में से किसी का भी उन पर कोई रक्तपात नहीं था, और उन्होंने हमारे कानों में युद्ध का शोर भर दिया, और उस समय मेरे रक्षक और सहायक असफल हो गए, तो मैंने उनसे तेरी आँखों, अपने आँसुओं और अपनी साँसों से, तलवार, जलप्रपात और आग से युद्ध किया। और उसने वीणा अपने गुरु नेमेह को सौंपते हुए कहा, हमें कुछ छंद सुनाओ।

तो उसने वीणा लेकर सुर मिलाया और कुछ आनंददायक स्वर बजाकर ये छंद गाए:— पूर्णिमा का चाँद तेरे समान होता, यदि वह चित्तीदार न होता; और सूर्य तेरे समान होता, यदि वह ग्रहणग्रस्त न होता। सचमुच मैं आश्चर्यचकित हूँ—पर प्रेम कितना आश्चर्यों से भरा है: चिंताओं, उत्साह और जुनून से भी!—कि जब मैं प्रेमिका के पास जाता हूँ तो मुझे रास्ता छोटा लगता है, और जब उससे दूर जाता हूँ तो लंबा। और जब उसने अपना गीत समाप्त किया, तो नोआम ने उसके लिए एक प्याला भरा और उसे दे दिया। इसलिए उसने उसे लिया और पी लिया; फिर उसने एक और प्याला भरा, जिसे उसने खलीफा की बहन को दिया। उसने उसे पी लिया और वीणा लेकर उसके तारों को सुरबद्ध करते हुए यह दोहा गाया: — मेरे हृदय में दुःख और मातम बसे हैं, और मेरे हृदय में तीव्र वासना उमड़ रही है। मेरे शरीर का क्षय स्पष्ट हो गया है, और इच्छा ने मेरे शरीर को दुर्बल बना दिया है। फिर उसने वीणा एर-रबीआ के पुत्र नेमेह को दी, जिसने उसे लेकर उसके तारों को सुरबद्ध किया और यह दूसरा दोहा गाया: — हे जिसे मैंने अपनी आत्मा अर्पित की, और जिसने इसे यातना दी, और जिससे मैं इसे मुक्त करना चाहता था, पर नहीं कर सका! प्रेमी को मरने से पहले विनाश से बचाने का उपाय प्रदान करो; क्योंकि यही उसकी अंतिम साँस है!

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.56%** है।

नेमेह और नोआम की कहानी। 189 वे मधुर सुरों में गीत गाते और पीते रहे, आनंद, प्रसन्नता, उल्लास और प्रसन्नता से परिपूर्ण; और जब वे इसी अवस्था में थे, तभी विश्वासियों के राजकुमार उनके पास आए। जैसे ही उन्होंने उन्हें देखा, वे उनके पास उठे और उनके सामने ज़मीन चूमी; और उन्होंने नोआम की ओर देखा, जिसके हाथ में वीणा थी, और कहा, हे

नोआम, परमेश्वर की स्तुति हो जिसने तुझसे तेरा दुख और पीड़ा दूर कर दी! फिर नेमेह की ओर देखते हुए, जो अभी भी उसी अवस्था में थी, उन्होंने [अपनी बहन से] कहा, हे मेरी बहन, नोआम के पास यह युवती कौन है? उसकी बहन ने उत्तर दिया, हे विश्वासियों के राजकुमार, आपकी रखेलों में एक दासी है, जो आपकी प्रसन्नता की साथी है, और नोआम उसके बिना न खाता है और न पीता है। और उसने कवि की यह बात दोहराई: — • वे दो विपरीत चीजें हैं, और साथ मिलकर अलग-अलग आकर्षण प्रकट करती हैं; और एक विपरीत चीज की सुंदरता दूसरी के विपरीत से प्रकट होती है। —खलीफे ने कहा, अल्लाह की कसम, वह वाकई नूआम की तरह सुंदर है, और कल मैं उसके लिए नूआम के कमरे के बगल में एक अलग कमरा बनवाऊंगा, और उसके लिए फर्नीचर और चादरें भिजवाऊंगा, और नूआम के सम्मान में उसके लिए वह सब कुछ भेजूंगा जो उसके लिए उपयुक्त हो। खलीफे की बहन ने खाना मांगा, और उसे अपने भाई के सामने रखा, जिसने खाना खाया और उनके साथ बैठा रहा। फिर उसने एक प्याला भरा, और नूआम को इशारा किया कि वह उसके लिए कुछ छंद गाए; दो प्याले पीने के बाद उसने वीणा उठाई और यह दोहा गाया: — जब मेरे साथी ने मुझे बार-बार तीन मीठे प्याले पिलाए, तो मैं रात भर गर्व से अपने वस्त्र घसीटती रही, मानो मैं तेरी राजकुमारी हूँ, हे विश्वासियों के राजकुमार। और विश्वासियों का राजकुमार प्रसन्न हुआ, और उसने एक और प्याला भरा और उसे नोआम को देते हुए उसे फिर से गाने का आदेश दिया। तदनुसार, प्याला पीने के बाद उसने वीणा के तारों को छुआ और ये छंद गाए: — हे इस युग के सबसे श्रेष्ठ पुरुष, जिसकी कोई बराबरी नहीं कर सकता! हे गरिमा और उदारता में अद्वितीय! हे प्रधान और राजा, हर चीज में विख्यात! हे पृथ्वी के सभी राजाओं के संप्रभु, जो उदारता से देते हैं, फिर भी न तो कोई बाध्यता

थोपते हैं और न ही कोई कष्ट! हे प्रभु, तेरी रक्षा करे, तेरे शत्रुओं को पराजित करे, और सफलता और विजय तेरे भाग्य को उज्ज्वल करे!

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.68%** है।

190 नीमेह और नोआम की कहानी। जब खलीफ़े ने नोआम से ये आयतें सुनीं, तो उसने उससे कहा, हे नोआम, तू ईश्वरीय वरदान से परिपूर्ण है! तेरी ज़बान कितनी वाक्पटु है, और तेरी भाषा कितनी स्पष्ट है! इस प्रकार वे आधी रात तक आनंद और प्रसन्नता में समय बिताते रहे, जब खलीफ़े की बहन ने कहा, हे विश्वासियों के सरदार, सुनो, मैंने किताबों में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति की कहानी देखी है। खलीफ़े ने पूछा, वह कहानी क्या है? उसकी बहन ने उत्तर दिया, हे विश्वासियों के सरदार, जान लो कि अल-कूफ़ेह नगर में एर-रबीआ के पुत्र नीमेह नाम का एक युवक था; और उसकी एक दासी थी जिससे वह प्रेम करता था, और वह भी उससे प्रेम करती थी। वह उसके साथ एक ही बिस्तर पर पली-बढ़ी थी; जब वे दोनों बड़े हुए और उनके बीच आपसी प्रेम जागा, तो भाग्य ने उन पर विपत्तियाँ बरसाईं और उन्हें विपत्तियों से पीड़ित किया और उनके अलगाव का फरमान सुनाया। निंदकों ने उसके खिलाफ एक चाल चली, जब तक कि वह उसके घर से बाहर नहीं आ गई, और उन्होंने उसे उसके निवास स्थान से चुपके से अगवा कर लिया। फिर उसे चुराने वाले ने उसे दस हजार सोने के सिक्कों में एक राजा को बेच दिया। अब दासी को अपने स्वामी से उतना ही प्रेम था जितना उसे उससे था: इसलिए उसने अपना परिवार और घर छोड़ दिया और उसकी तलाश में निकल पड़ा, और उससे मिलने के उपाय सोचे। वह अपने परिवार और घर से अलग रहा, और अपनी दासी से मिलने तक अपना सब कुछ दांव पर लगाकर खुद को खतरे में डालता रहा।155 लेकिन जब वह उसके पास आया, तो वे मुश्किल से

बैठे ही थे कि जिस राजा ने उसे चुराने वाले से खरीदा था, वह उनके पास आया और जल्दी से उन्हें मौत की सजा देने का आदेश दिया; न तो निष्पक्षता बरती गई, न ही उन्हें अपने फैसले में कोई छूट दी गई। हे विश्वासियों के राजकुमार, इस राजा के निष्पक्षता के अभाव के विषय में आप क्या कहते हैं? — विश्वासियों के राजकुमार ने उत्तर दिया, "यह वास्तव में एक आश्चर्यजनक बात थी, और यह उचित ही था कि इस राजा ने क्षमा कर दी जबकि वह दंड देने में सक्षम था; क्योंकि उनके प्रति अपने व्यवहार में उन्हें तीन बातों का ध्यान रखना अनिवार्य था: पहली, कि वे आपसी प्रेम से बंधे थे; दूसरी, कि वे उनके निवास स्थान और उनकी शक्ति के अधीन थे; और तीसरी, कि राजा को अन्य लोगों का न्याय करते समय विवेकपूर्ण होना चाहिए; और फिर उस मामले में तो और भी अधिक, जिसमें वह स्वयं शामिल है? इसलिए, इस राजा ने राजाओं के आचरण के विपरीत कार्य किया।" — तब उसकी बहन ने उससे कहा, "हे मेरे भाई, स्वर्ग और पृथ्वी के राजा की कसम, मैं आपसे विनती करती हूँ कि आप नोआम को गाने का आदेश दें, और आप वह सब सुनें जो वह गाएगी।" तो उसने कहा, हे नोआम, मेरे लिए गाओ। और, मनमोहक स्वरों में उसने ये छंद गाए: —

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.09%** है।

नेमेह और नोआम की कहानी। भाग्य क्रूर था, और हमेशा से ऐसा ही रहा है, दिलों को तोड़ता और चिंताओं को बढ़ाता है। और प्रेमियों को उनके मिलन के बाद अलग कर देता है, जिससे तुम उनके गालों पर आँसुओं की धारा बहते देख सकते हो। वे थे, और मैं उनके साथ थी, और मेरा जीवन आनंदमय था, और भाग्य ने हमें बार-बार मिलाया। इसलिए मैं तुम्हारे बिछड़ने के शोक में रात-दिन अपने आँसुओं के साथ खून बहाऊँगी। और

जब विश्वासियों के राजकुमार ने ये पंक्तियाँ सुनीं, तो वे अत्यधिक प्रसन्न हुए। तब उनकी बहन ने उनसे कहा, हे मेरे भाई, जो स्वयं पर फैसला सुनाता है उसे उसे पूरा करना चाहिए, और जैसा उसने कहा है वैसा ही करना चाहिए; और तुमने इस निर्णय से स्वयं पर फैसला सुना दिया है। और उसने कहा, हे नेमेह, अपने पैरों पर खड़े हो जाओ; और तुम भी खड़े हो जाओ, हे नोआम। तो वे दोनों खड़े हो गए। और खलीफा की बहन ने कहा, ऐ मोमिनों के सरदार, यहाँ खड़ी यह महिला वही चुराई हुई नोआम है, जिसे यूसुफ़ एथ-थकाफ़ी के बेटे अल-हज्जाज ने चुराया था और अपने पत्र में झूठ बोलकर तुम्हारे पास भेजा था; अर्थात् उसने उसे दस हज़ार सोने के सिक्कों में खरीदा था। और यह

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

27.80% है।

192 कहानी का निष्कर्ष: यहाँ खड़ा व्यक्ति एर-रबीआ का पुत्र नीमेह है, जो उसका स्वामी है। मैं तुझसे तेरे पवित्र पूर्वजों के सम्मान की कसम खाकर विनती करता हूँ कि तू उन्हें क्षमा कर दे और उन्हें एक-दूसरे से मिला दे, ताकि तू उनके कर्मों का प्रतिफल प्राप्त कर सके; क्योंकि वे तेरे अधिकार में हैं और तेरे भोजन और पेय का सेवन कर चुके हैं। मैं उनके लिए मध्यस्थ हूँ और तुझसे उनके जीवन का उपहार माँगता हूँ। इस पर खलीफा ने कहा, तूने सत्य कहा है: मैंने यह निर्णय सुनाया है, और मैं निर्णय सुनाकर उसे रद्द नहीं करता। फिर उसने कहा, हे नोआम, क्या यह तेरा स्वामी है? उसने उत्तर दिया, हाँ, हे विश्वासियों के राजकुमार। और उसने कहा, तुम दोनों में से किसी को कोई हानि नहीं होगी; क्योंकि मैं तुम दोनों को एक-दूसरे के हवाले करता हूँ। फिर उसने कहा, हे नीमे, तूने उसकी स्थिति कैसे जानी और तुझे इस स्थान का वर्णन किसने किया? हे विश्वासियों के राजकुमार, उसने उत्तर दिया, मेरी कहानी सुनो, और मेरा वृत्तांत ध्यान से सुनो; क्योंकि तुम्हारे पवित्र पूर्वजों की कसम, मैं तुमसे कुछ भी नहीं छिपाऊँगा। उसने उसे अपने सारे मामले का ब्योरा दिया, बताया कि कैसे फ़ारसी ऋषि ने उसके साथ व्यवहार किया, कैसे कहरामनेह ने उसे महल में लाया, और कैसे उसने दरवाज़ों को पहचानने में गलती की। खलीफ़ा को इस पर बहुत आश्चर्य हुआ। तब उसने कहा, उस फ़ारसी को मेरे पास लाओ। तो वे उसे उसके सामने ले आए; और उसने उसे अपने प्रमुख अधिकारियों में से एक नियुक्त किया, उसे सम्मान के वस्त्र दिए, और एक सुंदर उपहार देने का आदेश दिया, यह कहते हुए, जिसने ऐसा कार्य किया है, उसे अपने प्रमुख अधिकारियों में से एक बनाना हमारा कर्तव्य है। खलीफ़ा ने नीमेह और नोआम के साथ भी दयालुता से व्यवहार किया, उन पर और कहरामनेह पर कृपा की; और

नीमेह और नोआम सात दिन तक उसके साथ सुख और आनंद में रहे, एक अत्यंत सुखद जीवन व्यतीत किया। तब नीमे ने अपनी दासी के साथ जाने की अनुमति मांगी, और उसने उन्हें अल-कूफे जाने की अनुमति दे दी। तदनुसार वे अपनी यात्रा पर निकल पड़े, और नीमे अपने पिता और माता से फिर से मिल गया, और उन्होंने अत्यंत सुखमय जीवन व्यतीत किया, जब तक कि उनके जीवन में सुखों का अंत करने वाली और साथियों को अलग करने वाली विपत्ति नहीं आ पड़ी। अल-अमजद और अल-असद की कहानी का निष्कर्ष, आदि। जब अल-अमजद और अल-असद ने बहराम से यह कहानी सुनी, तो उन्हें इस पर बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने अगली रात आराम से बिताई, और जब अगली सुबह हुई, तो वे घोड़ों पर सवार हुए और राजा के पास जाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने प्रवेश करने की अनुमति मांगी, और राजा ने उन्हें अनुमति दे दी।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.60%** है।

अल-अमजद और अल-असद। 193 जब वे अंदर गए, तो राजा ने उनका आदरपूर्वक स्वागत किया और वे बैठकर बातें करने लगे। लेकिन जब वे बैठे ही थे, तभी अचानक शहर के लोग चिल्लाने लगे और एक-दूसरे से मदद की गुहार लगाने लगे; और दरबारी राजा के पास आया और उससे कहा, "कोई राजा अपनी सेना के साथ हमारे शहर के सामने उतरा है, और उनके पास तलवारें हैं, और हम नहीं जानते कि उनका क्या उद्देश्य है।" इसलिए राजा ने अपने वज़ीर अल-अमजद और उसके भाई अल-असद को दरबारी से सुनी हुई बात बताई, और अल-अमजद ने कहा, "मैं उसके पास जाकर उसके आने का कारण पता लगाऊंगा।" तो अल-अमजद शहर से बाहर गया और उसने राजा को असंख्य सैनिकों और घुड़सवारों के साथ पाया। और जब उन्होंने उसे देखा, तो वे समझ गए कि

वह शहर के राजा का दूत है। इसलिए वे उसे पकड़कर सुल्तान के सामने ले आए; और जब वह उसके सामने आया, तो उसने उसके सामने ज़मीन चूमी; और देखो, [कथित] राजा एक स्त्री थी, जिसका चेहरा लिथम से ढका हुआ था। उसने कहा, जान लो कि इस शहर में मुझे तुमसे दाढ़ीविहीन मेमलुक के अलावा कुछ नहीं चाहिए, और अगर वह तुम्हारे पास मिल जाए, तो तुम्हें कोई हानि नहीं होगी; लेकिन अगर वह नहीं मिला, तो मेरे और तुम्हारे बीच भयंकर युद्ध होगा; क्योंकि मैं उसे ढूंढने के अलावा किसी और उद्देश्य से नहीं आई हूँ। तब अल-अमजद ने कहा, हे रानी, इस मेमलुक का विवरण क्या है, उसकी कहानी क्या है, और उसका नाम क्या है? उसने उत्तर दिया, उसका नाम अल-असद है, और मेरा नाम मरजानेह है; और यह मेमलुक बहरीन मगी के साथ मेरे पास आया था, जिसने उसे बेचने से इनकार कर दिया था: इसलिए मैंने उसे उससे ज़बरदस्ती ले लिया; लेकिन वह उस पर टूट पड़ा और रात में चुपके से उसे मुझसे ले गया; और उसके विवरण के अनुसार, वह इस प्रकार का है। और जब अल-अमजद ने यह सुना, तो वह समझ गया कि यह उसका भाई अल-असद है। इसलिए उसने रानी से कहा, "हे युग की रानी, उस ईश्वर की स्तुति हो जिसने हमें राहत दी! निश्चय ही यह मेमलुक मेरा भाई है।" फिर उसने रानी को अपनी कहानी सुनाई और निर्वासन में उनके साथ जो कुछ हुआ था, वह बताया, साथ ही उन्हें आबनूस द्वीप समूह से उनके प्रस्थान का कारण भी बताया; यह सुनकर रानी मरजानेह आश्चर्यचकित हुई; और अल-असद को पाकर प्रसन्न हुई, और उसने अपने भाई अल-अमजद को सम्मान का वस्त्र भेंट किया। इसके बाद, अल-अमजद राजा के पास लौटा और उसे सारी घटना बताई; यह सुनकर सब प्रसन्न हुए। फिर राजा अल-अमजद और अल-असद के साथ रानी के पास गया; और जब वे अंदर गए तो बैठ कर बातें करने लगे। और जब वे बातों में मशगूल

थे, तभी धूल उड़ने लगी और उसने 2.2 को ढक लिया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.44%** है।

194 अल-अमजद और अल-असद की कहानी का निष्कर्ष: आसपास के इलाकों में भीड़ उमड़ पड़ी, और कुछ देर बाद वह शांत हो गई, और उन्होंने विशाल सेनाएँ देखीं, जो उमड़ते हुए समुद्र की तरह थीं, साजो-सामान और हथियारों से लैस; और वे शहर के पास पहुँचे, और फिर उसे इस तरह घेर लिया जैसे अंगूठी छोटी उंगली को घेरती है, और अपनी तलवारें निकाल लीं। इस पर अल-अमजद और अल-असद ने कहा, "निःसंदेह हम ईश्वर के हैं, और निःसंदेह हम उसी के पास लौटेंगे! यह विशाल सेना क्या है? निःसंदेह यह शत्रु है; और यदि हम रानी मरजारीह के साथ उनसे लड़ने के लिए गठबंधन नहीं करते, तो वे हमसे शहर छीन लेंगे और हमें मार डालेंगे; और हमारे पास उनके पास जाकर यह पता लगाने के अलावा कोई चारा नहीं होगा कि वे किस लिए आए हैं।" — तब अल-अमजद उठे, और रानी मरजारीह की सेना के साथ शहर के द्वार से निकल गए; जब वह दूसरी सेना के पास पहुँचा, तो उसने पाया कि वह उसके दादा, राजा अल-गयूर की सेना थी, जो उसकी माता, रानी बुदूर के पिता थे। इसलिए जब वह उनके समक्ष पहुँचा, तो उसने उनके सामने ज़मीन चूमी और उन्हें संदेश दिया; इस पर राजा ने कहा, "मेरा नाम राजा अल-गयूर है, और मैं यात्रा पर निकला हूँ, क्योंकि मेरी पुत्री बुदूर के खो जाने से मैं विपत्ति में हूँ; वह मुझे छोड़कर चली गई और वापस नहीं लौटी, और मुझे न तो उसके बारे में कोई खबर मिली है, न ही उसके पति कमर-एज़-ज़ेमान के बारे में। क्या आपको उनके बारे में कोई खबर है?" यह सुनकर अल-अमजद कुछ देर तक अपना सिर ज़मीन की ओर झुकाए बैठा रहा, सोचता रहा, जब तक कि उसे यह विश्वास नहीं हो गया कि यह

उसके दादा, उसकी माता के पिता हैं। फिर उसने अपना सिर उठाकर उनके सामने ज़मीन चूमी और उन्हें बताया कि वह उनकी पुत्री बुदूर का पुत्र है। जैसे ही बादशाह को पता चला कि वह उनकी बेटी का बेटा है, वह उस पर टूट पड़ा और दोनों रोने लगे। बादशाह अल-गयूर ने कहा, "हे मेरे बेटे, अल्लाह का शुक्र है कि उसने तुझे बचाए रखा और तुझसे मेरी मुलाक़ात हुई!" अल-अमजद ने उन्हें बताया कि उनकी बेटी बुदूर और उनके पिता कमर-एज़-ज़ेमान दोनों ठीक हैं और वे काले द्वीपों के शहर नामक एक कस्बे में हैं। उसने यह भी बताया कि उसके पिता कमर-एज़-ज़ेमान उससे और उसके भाई से बहुत नाराज़ थे और उन्हें जान से मारने का आदेश दिया था, लेकिन कोषाध्यक्ष को उन पर दया आ गई और उसने उन्हें मारे बिना छोड़ दिया। इस पर बादशाह अल-गयूर ने कहा, "मैं तेरे और तेरे भाई को तेरे पिता के पास ले जाऊंगा, और तुम दोनों से सुलह कराऊंगा और तुम्हारे साथ रहूंगा।" तब अल-अमजद ने उनके सामने ज़मीन चूमी। फिर बादशाह अल-गयूर ने अपनी बेटी के बेटे अल-अमजद को सम्मान का वस्त्र पहनाया; और वह मुस्कुराते हुए शहर के बादशाह के पास लौटा और उसे बादशाह अल-गयूर के मामले से अवगत कराया। बादशाह को इस पर बहुत आश्चर्य हुआ। उसने बादशाह अल-गयूर को संदेश भेजा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.69%** है।

आतिथ्य सत्कार के लिए भेंट, घोड़े, ऊँट, भेड़ें, चारा और अन्य वस्तुएँ, उसने रानी मरजानेह को भेजीं और उन्हें घटना की सूचना दी। इस पर रानी ने कहा, मैं अपनी सेना के साथ आपके साथ चलूँगी और शांति बनाए रखने का प्रयास करूँगी। और जब वे इस स्थिति में थे, तभी अचानक धूल उठी और आसपास के इलाकों में फैल गई, जिससे दिन

अंधकारमय हो गया। उन्होंने उसके नीचे चीखें, चिल्लाहटें, घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज़ सुनी, और चमकती तलवारें और उठे हुए भाले देखे। जब यह सेना नगर के पास पहुँची और उसने दूसरी दो सेनाओं को देखा, तो उन्होंने ढोल बजाए। यह देखकर नगर के राजा ने कहा, यह तो धन्य दिन है! ईश्वर की स्तुति हो जिसने हमें इन दोनों सेनाओं के साथ शांति स्थापित करने में सहायता की; और यदि ईश्वर की इच्छा होगी, तो वह हमें इस दूसरी सेना के साथ भी शांति प्रदान करेगा। फिर उसने कहा, "हे अमजद, तुम और तुम्हारा भाई अल-असद जाओ और हमें इन सैनिकों के आने का कारण बताओ; क्योंकि ये बहुत बड़ी सेना है; मैंने इतनी बड़ी सेना पहले कभी नहीं देखी।"

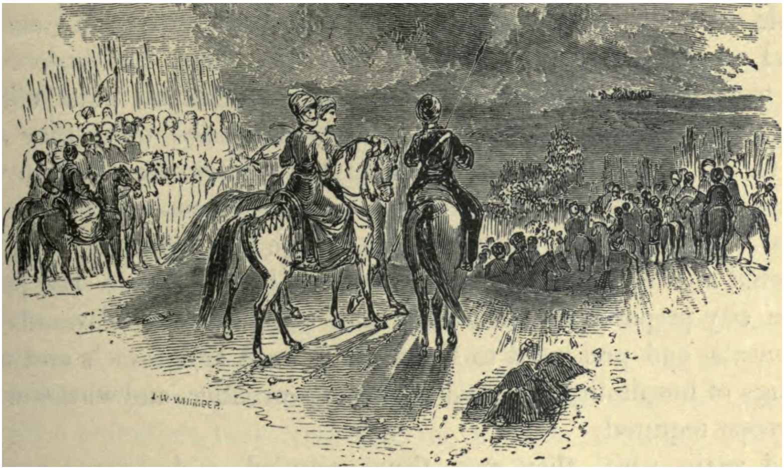

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.76%** है।

कहानी का पहला भाग: अल-अमजद और उसका भाई अल-असद बाहर निकले। राजा ने शहर को घेरने वाली सेना के डर से द्वार बंद कर दिया था, इसलिए उन्होंने द्वार खोल दिया और दोनों भाई आगे बढ़े। वे उस सेना के पास पहुँचे जो अभी-अभी आई थी। वहाँ पहुँचकर उन्होंने पाया कि यह आबनूस द्वीप समूह के राजा की सेना थी और उनके साथ उनके पिता

कमारेज़-ज़ेमान भी थे। [क्योंकि उन्हें सूचना मिल गई थी कि उन्हें मृत्युदंड नहीं दिया गया है।] जैसे ही उन्होंने उन्हें देखा, वे उनके सामने ज़मीन चूमने लगे और रोने लगे। जब कमारेज़-ज़ेमान ने उन्हें देखा, तो वे उन पर गिर पड़े और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगे। उन्होंने उनसे क्षमा मांगी और उन्हें अपने सीने से लगा लिया। फिर उन्होंने उन्हें बताया कि उनके बिछड़ने से उन्हें कितना गहरा दुख हुआ है। अल-अमजद और अल-असद ने उन्हें बताया कि राजा अल-ग़यूर उनसे मिलने आए हैं। तो कमर-एज़-ज़ेमान अपने प्रमुख अधिकारियों के साथ घोड़े पर सवार हुए और अपने दो बेटों को साथ लेकर राजा अल-ग़यूर की सेना के निकट पहुँचे; तभी उनमें से एक राजा के पास गया और उसे सूचित किया कि कमर-एज़-ज़ेमान आ गया है। राजा उसका स्वागत करने के लिए आगे आया और दोनों मिले। वे इस बात पर आश्चर्यचकित हुए कि वे उस स्थान पर कैसे मिले। नगरवासियों ने उनके लिए तरह-तरह के पकवानों और मिठाइयों से भोज तैयार किया और उन्हें घोड़े, ऊँट और आतिथ्य सत्कार के अन्य उपहार, साथ ही चारा और सेना की आवश्यकता की हर चीज़ भेंट की। और फिर, जब वे इस प्रकार भोज में मग्न थे, तभी धूल उठी और आसपास के इलाकों में फैल गई, और घोड़ों के नीचे धरती काँप उठी; ढोल की आवाज़ तूफ़ानी हवाओं जैसी गूंज रही थी, और पूरी सेना हथियारों और कवच से सुसज्जित थी: सभी सैनिक काले वस्त्र पहने हुए थे, और उनके बीच एक बहुत बूढ़ा व्यक्ति था, जिसकी ठुड्डी उसके सीने से लगी हुई थी, और उसने भी काले वस्त्र पहने हुए थे। जब नगरवासियों ने इस विशाल सेना को देखा, तो नगर के राजा ने अन्य राजाओं से कहा, "ईश्वर की स्तुति हो कि तुम सब ईश्वर की अनुमति से (जिसका नाम महान हो!) एक ही दिन में एकत्रित हुए, और मित्र सिद्ध हुए! यह विशाल सेना कौन सी है जिसने हमारे सामने के क्षेत्रों को घेर लिया है?" अन्य राजाओं ने उत्तर दिया,

"इससे मत डरो; क्योंकि हम तीन सम्राट हैं, और हममें से प्रत्येक के पास विशाल सेना है: इसलिए, यदि वे शत्रु हैं, तो हम तुम्हारे साथ मिलकर उनसे लड़ेंगे; और यदि उनकी संख्या तीन गुना भी बढ़ जाए, तो भी हम ऐसा ही करेंगे।" और जब वे इस प्रकार बातचीत कर रहे थे, तभी अचानक उन सेनाओं में से एक दूत नगर की ओर आ रहा था। अत: वे उसे कमर-एज़-ज़ेमान, राजा अल-ग़यूर, रानी मरजानेह और नगर के राजा के सामने लाए; और उसने चूमा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.12%** है।

करनर-एज़-ज़ेमान ने कहा, "यह राजा अल-अजम क्षेत्र से है; इसका बेटा कई वर्षों से लापता है और यह विभिन्न देशों में उसकी खोज कर रहा है। यदि वह उसे तुम्हारे बीच पा ले, तो तुम्हें कोई हानि नहीं होगी; परन्तु यदि वह उसे न पाए, तो तुम्हारे और उसके बीच युद्ध छिड़ जाएगा और वह तुम्हारे नगर को उजाड़ देगा।" करनर-एज़-ज़ेमान ने उत्तर दिया, "वह ऐसा नहीं कर पाएगा।" लेकिन उसने पूछा, अल-अजम क्षेत्र में उसे क्या कहते हैं? दूत ने उत्तर दिया, "उसे शाहज़ेमान, खालिदन द्वीप समूह का स्वामी कहते हैं; और उसने अपने बेटे की खोज में जिन क्षेत्रों से होकर गुजरा है, वहाँ यह सेना एकत्र की है।" करनर-एज़-ज़ेमान ने दूत की बात सुनकर जोर से चीख मारी और बेहोश होकर गिर पड़ा, और वह काफी देर तक बेहोशी की हालत में रहा। फिर संभलकर वह फूट-फूटकर रोने लगा और अल-अमजद, अल-असद और उनके प्रमुख अधिकारियों से बोला, “मेरे पुत्रों, दूत के साथ जाओ और अपने दादा, मेरे पिता, बादशाह शाहज़ेमान को प्रणाम करो और उन्हें मेरे यहाँ होने की खुशखबरी दो; क्योंकि वे मेरे जाने का शोक मना रहे हैं और अब तक मेरे लिए काले वस्त्र धारण किए हुए हैं।” फिर उसने वहाँ उपस्थित सभी बादशाहों को अपने यौवनकाल

की सारी घटनाएँ सुनाईं; और वे सब आश्चर्यचकित रह गए। इसके बाद वे कमर-एज़-ज़ेरनान के साथ नीचे गए और उसके पिता के पास पहुँचे। कमर-एज़-ज़ेमान ने अपने पिता को प्रणाम किया और दोनों गले मिले और अत्यधिक खुशी के मारे बेहोश होकर गिर पड़े; जब उन्हें होश आया, तो बादशाह शाहज़ेमान ने अपने पुत्र को सारी घटनाएँ सुनाईं। फिर अन्य बादशाहों ने भी उसे प्रणाम किया। उन्होंने मरजानेह को उसके देश वापस भेज दिया; अल-असद से उसका विवाह करवा दिया और उसे निर्देश दिया कि वह उनसे पत्र व्यवहार करना न छोड़े। उन्होंने बहराम की पुत्री बुस्तान से अल-अमजद का विवाह कराया; और वे सब आबनूस नगर की यात्रा पर निकल पड़े, जहाँ कमर-गज़-ज़ेमान ने अपने ससुर [अरमानूस] से निजी मुलाकात की और उन्हें अपने बारे में सारी जानकारी दी, साथ ही यह भी बताया कि वे अपने पुत्रों से कैसे मिले; यह सुनकर अरमानूस प्रसन्न हुए और उनकी सुरक्षा की कामना की। फिर रानी बुदूर के पिता, राजा अल-गयूर, अपनी पुत्री के पास गए, उन्हें प्रणाम किया और उनके साथ रहकर अपनी प्रेम-प्रसंग की तीव्र इच्छा को शांत किया, और वे पूरे एक महीने तक आबनूस नगर में रहे; इसके बाद, राजा अल-गयूर अपनी पुत्री और सेवकों के साथ अल-अमजद को अपने साथ लेकर अपने देश लौट गए। और जब वे अपने राज्य में फिर से स्थापित हो गए, तो उन्होंने अल-अमजद को उनके दादा के स्थान पर शासक नियुक्त किया। कमर-एज़-ज़ेमान ने अपने दादा अमुई के शहर में अपने बेटे अल-असद को अपना शासक नियुक्त किया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.08%** है।

198 एड-अमजद और अल-अस'अल की कहानी का निष्कर्ष)। नूस; उनके दादा ने इसे स्वीकार किया। 6 फिर कमर-एज़-ज़ेमान ने स्वयं को

तैयार किया और अपने पिता राजा शाह-ज़ेमान के साथ खालिदतिन के द्वीपों तक यात्रा की। शहर को उनके लिए सजाया गया था, और इस शुभ अवसर के उत्सव में पूरे एक महीने तक ढोल बजते रहे, और कमर-एज़-ज़ेमान अपने पिता के स्थान पर शासन करते रहे, जब तक कि उनके पास सुखों का अंत करने वाला और साथियों को अलग करने वाला नहीं आ गया। — और ईश्वर सर्वज्ञ है। 157 जब शहज़ाद ने यह कहानी समाप्त की, तो राजा शाहरियार ने कहा, हे शहज़ाद, वास्तव में यह कहानी अत्यंत अद्भुत है! — हे राजा, उसने उत्तर दिया, यह अलाएद-बीन अबू-श-शमत की कहानी से अधिक अद्भुत नहीं है। राजा ने कहा, और वह कहानी क्या है? और उसने उसे इस प्रकार सुनाया: —

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

26.76% है।

अध्याय दस के लिए टिप्पणियाँ। टिप्पणी 1. इस कहानी में वर्णित मुख्य घटनाओं के दृश्य, हालांकि मैं उन्हें किसी भी भूगोलवेत्ता की रचनाओं में नहीं पहचान सकता, ने मुझे फ़ारसी मूल के निशान खोजने के लिए प्रेरित किया है; लेकिन मुझे ऐसे किसी मूल का कोई संकेत नहीं मिला है; और चूंकि कहानी का चरित्र पूरी तरह से अरबी है, इसलिए मैं इसे एक अरबी रचना मानता हूँ। जो कोई भी अरबों और उनके साहित्य से थोड़ा भी परिचित है, वह देखेगा कि कहानी अपने वर्तमान स्वरूप में, उस जाति के जीवन, रीति-रिवाजों और विचारों को पूरी तरह से प्रदर्शित करती है। हालाँकि, इसकी एक प्रमुख खूबी इसकी संरचना में निहित है; और यह भी, मुख्य रूप से केवल उसी जाति के विचारों के साथ संगत है। मेरा मानना है कि यह कहानी 'हजार और एक रात' को, जिस रूप में यह हमें ज्ञात है, लगभग पूरी तरह से एक अरबी रचना मानने के कुछ सबसे मजबूत कारण प्रस्तुत करती है, हालांकि यह एक बहुत पुरानी रचना के मॉडल पर आधारित है; और मुझे यह बताते हुए अत्यंत संतोष होता है कि इस कहानी के बारे में मेरी राय ईसाई जगत के सबसे महान अरबी विद्वान की राय से मेल खाती है, जिनके विचारों का मैं यहाँ अनुवाद कर रहा हूँ। "खालिदान के वंशजों के द्वीप के राजकुमार कमर-एज़-ज़ेमान, जो फारस के तटों से बीस दिन की समुद्री यात्रा की दूरी पर स्थित है, और चीन की राजकुमारी बुदूर1 के प्रेम प्रसंग की कहानी अन्य कहानियों की तुलना में न तो भारतीय है और न ही फारसी। कमर-एज़-ज़ेमान के पिता, राजा, की प्रजा मुसलमान थी; युवा राजकुमार की माता का नाम फातिमा था, और कमर-एज़-ज़ेमान अपनी जेल में कुरान पढ़ने (या यूँ कहें कि सुनाने) में व्यस्त रहता था। इन घटनाओं में हस्तक्षेप करने वाले जिन्न भी उन्हीं में से थे जिनका सुलेमान से संबंध था।" संक्षेप में, इस कहानी में मगी नगर

और अग्नि उपासकों के बारे में जो कुछ भी कहा गया है, उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि इसमें किसी मुस्लिम लेखक की रचना के अलावा और कुछ भी होने का संदेह नहीं किया जा सकता है।2 नोट 2. ब्रेस्लाउ संस्करण में ऐसा ही है। काहिरा संस्करण में, एक नकलची की गलती से, "शाहरामन" लिखा है। 1 फ्रांसीसी संस्करण में, "बदौरक"— मैंने उपरोक्त अनुच्छेद में इस और अन्य अरबी शब्दों को अपनी सामान्य प्रणाली के अनुसार लिखा है। 2 Memoire sur 1'origine du reeueil de contes intitule Les Mjlle et Unc Nuits. (Memoires d'Histoire et de Litterature Orientale, extraits des tomes ix. et x. des Memoires de Tlnstitut, Academic des Inscriptions et Belles Lettres. Par M. le Huron .— Paris, 1832.)— पृष्ठ 237.

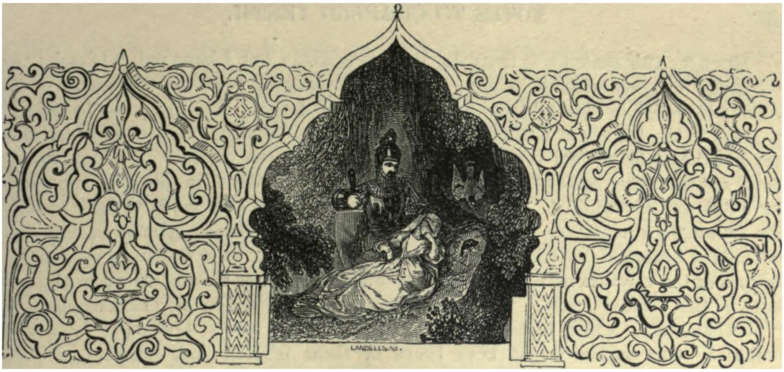

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.93%** है।

अध्याय दसवें के लिए 200 टिप्पणियाँ। टिप्पणी 3. यह वाक्य ब्रेस्लाउ संस्करण से लिया गया है; लेकिन मैंने आगे के भाग से मेल खाने के लिए "द्वीप" के स्थान पर "द्वीप" लिखा है। — यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि इस कहानी में वर्णित घटनाओं के दृश्य काल्पनिक हैं। मैं खालिदन के

द्वीपों की स्थिति निर्धारित करने में असमर्थ हूँ, सिवाय उस अस्पष्ट तरीके के जिसमें उनका उल्लेख पुराने संस्करण में किया गया है, यानी फारस के तटों से लगभग बीस दिनों की समुद्री यात्रा की दूरी पर, महासागर में स्थित; क्योंकि इस मामले में गैलैंड ने अपने मूल पाठ का अनुसरण किया प्रतीत होता है। डी सैसी, जिन्होंने अपने शब्दों से ऐसा प्रतीत होता है कि हज़ार और एक रातों के संबंध में अपनी टिप्पणियों को मुख्य रूप से गैलैंड के मूल पाठ की जाँच पर आधारित किया है, इन द्वीपों का उल्लेख (गैलैंड के संस्करण की तरह ही, उन्हें खालिदन के बच्चों के द्वीप कहते हुए) उसी तरह करते हैं, जैसा कि इस श्रृंखला की पहली टिप्पणी में पहले ही दिखाया जा चुका है। "खालिदान" शब्द "अल-खालिदत" या "अल-खालिदेतन" का बिगड़ा हुआ रूप हो सकता है, ये नाम अरबों द्वारा भाग्यशाली द्वीपों या कैनरी द्वीप समूह को दिए गए हैं। हमारे लेखक ने शायद इन द्वीपों के बारे में सुना होगा और उनकी स्थिति से अनभिज्ञ होने के कारण, उन्हें उस समुद्र में मान लिया होगा जो फारस और भारत के तटों को छूता है; इस समुद्र के साथ-साथ चीन के समुद्र के बारे में भी उनकी धारणाएँ स्पष्ट रूप से बहुत गलत थीं। यहाँ यह भी ध्यान देने योग्य है कि अरबी शब्द ("जेज़ीरेह"), जिसका सामान्य अर्थ "एक द्वीप" होता है, अक्सर प्रायद्वीप के लिए प्रयोग किया जाता है और अक्सर उचित रूप से "देश" के रूप में अनुवादित किया जा सकता है; अरब, फारस, भारत आदि को कई अरबी लेखकों द्वारा द्वीप कहा गया है। विचाराधीन कहानी में यह निहित है कि "खालिदान के द्वीपों" से "एबोनी द्वीपों" और "चीन क्षेत्र के आंतरिक द्वीपों" तक एक भूमि मार्ग था। इन सभी "द्वीपों" के निवासियों को मुसलमान बताया गया है। और तौर-तरीकों, पहनावे आदि में अरबों के समान। लेकिन एक काल्पनिक कहानी में यह बात उन लोगों को आश्चर्यचकित नहीं करेगी जो अरब भूगोलवेत्ताओं के कार्यों और उनके

अपने देशवासियों द्वारा देखे गए स्थानों के विवरणों से परिचित हैं। इब्न-अल-वर्दी, "एज़-ज़ुलमेह सागर, जो कि अटलांटिक महासागर का पश्चिमी भाग है" का वर्णन करते हुए कहते हैं, "इसके द्वीपों में खालिदेतान द्वीप समूह भी शामिल है। ये दो द्वीप हैं जिन पर कठोर पत्थर से बनी दो प्रतिमाएँ हैं: प्रत्येक की ऊँचाई सौ क्यूबिट है, और प्रत्येक के शीर्ष पर तांबे की एक आकृति है, जो अपना हाथ पीछे की ओर इशारा करते हुए कह रही है, 'वापस लौट जाओ; क्योंकि मेरे पीछे कुछ नहीं है।'" यमन के प्राचीन राजाओं में से एक, हेमीरी ज़ू-1-मेनार ने इनका निर्माण करवाया था। वह ज़ू-1-कर्नेयन का पुत्र था; लेकिन कुरान में वर्णित व्यक्ति का पुत्र नहीं था। 3 — लेकिन जब इब्न-अल-वर्दी ने लिखा था, उस समय कैनरी द्वीप समूह केवल प्राचीन वृत्तांतों से ही यूरोपीय लोगों को ज्ञात थे। 1345 में, उस भूगोलवेत्ता की मृत्यु से तीन या चार वर्ष पहले, कुछ जेनोइस और स्पेनिश नाविकों द्वारा इनकी पुनः खोज की गई थी। टिप्पणी 4. मूल पाठ में, "अल-'अजम" है; जिसका अर्थ यहाँ फारसियों के लिए ही सीमित प्रतीत होता है। अन्यथा पाठ का अर्थ यह होगा कि खालिदन के द्वीप अरब जगत से इतर सीमा पर स्थित थे। भाग्यशाली द्वीपों, अल-खालिदेतन के बारे में इस प्रकार बोलना अरबी धारणाओं के अनुरूप होगा; लेकिन इस अंश का पूर्व अर्थ कहानी के समग्र स्वरूप के साथ अधिक मेल खाता है। टिप्पणी 5. आजकल अरबों में संतान प्राप्ति के उद्देश्य से दो रकअह (4) की नमाज़ अदा करना एक आम रिवाज है; विशेषकर पुरुष के अपनी दुल्हन से पहली मुलाकात के अवसर पर, जैसा कि अध्याय 4 की टिप्पणी 39 के अंतिम अनुच्छेद में उल्लेख किया गया है। टिप्पणी 6. यह वाक्य भी ब्रेस्लाउ संस्करण से लिया गया है। यह एक ऐसे रिवाज का वर्णन करता है, जो पिछली टिप्पणी में वर्णित रिवाज की तरह, आजकल अरबों द्वारा ईश्वर को प्रसन्न करने और संतान प्राप्ति के लिए अक्सर

किया जाता है। इसी उद्देश्य से गरीबों को दान दिया जाता है ताकि उनकी प्रार्थनाएं प्राप्त हों; और संतों की कब्रों पर जाकर उनकी मध्यस्थता का अनुरोध किया जाता है। टिप्पणी 7. "कमार-एज़-ज़ेमान" का अर्थ है "युग का चंद्रमा"। खारसेदेत क्ल-'अजैब (मेरे पास पांडुलिपि है)। •* प्रस्तावना की टिप्पणी 1 देखें।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.18%** है।

अध्याय दसवें के लिए टिप्पणियाँ। 201 टिप्पणी 8. — अरब महिलाओं द्वारा अपने बालों को संवारने के तरीके पर। यहाँ उल्लिखित दो रीति-रिवाज, उंगलियों को मेहंदी से रंगना और पलकों के किनारों को काजल से काला करना, पहले ही उल्लेखित किए जा चुके हैं।5 अब अरब महिलाओं द्वारा अपने बालों को संवारने के तरीके का वर्णन किया जा सकता है। उन्हें घने और लंबे बाल बेहद पसंद हैं; और इस प्राकृतिक आभूषण से भरपूर होने के बावजूद, इसकी सुंदरता बढ़ाने के लिए वे कला का सहारा लेती हैं। लेकिन पैगंबर, सभी झूठे आकर्षणों से घृणा करते हुए, जो पहले तो पति को धोखा दे सकते हैं और फिर उसे निराश कर सकते हैं, "उस महिला को शाप दिया जिसने अपने बालों को दूसरे के बालों में या दूसरे के बालों को अपने पति की अनुमति के बिना जोड़ा: इसलिए यदि वह ऐसा उसकी अनुमति से करती है, तो यह निषिद्ध नहीं है, जब तक कि वह मानव बालों का उपयोग न करे; क्योंकि यह पूरी तरह से वर्जित है।"*' इसलिए अरब महिलाएं अपने बालों में रेशम की माला जोड़ना पसंद करती हैं। — माथे के ऊपर, बाल थोड़े छोटे काटे जाते हैं; लेकिन चेहरे के दोनों ओर बालों की दो पूरी लटें लटकती हैं: ये अक्सर घुंघराले छल्लों में होती हैं, और कभी-कभी गूंथी भी जाती हैं। बाकी बाल गूंथे या चोटी में बंधे होते हैं, जो पीठ तक लटकते हैं। इनकी संख्या

आमतौर पर ग्यारह से पच्चीस तक होती है; लेकिन हमेशा विषम संख्या में: ग्यारह को कम माना जाता है: तेरह और पंद्रह अधिक सामान्य हैं। बालों के साथ लगभग एक चौथाई लंबाई तक काले रेशमी धागे (बालों की प्रत्येक चोटी में तीन, और प्रत्येक तीन ऊपर से जुड़े हुए) गूंथे जाते हैं; या वे काले रेशमी फीते या पट्टी से जुड़े होते हैं जो सिर के चारों ओर बंधी होती है, और इस स्थिति में वे बालों की चोटियों से पूरी तरह अलग लटकते हैं। ये धागे, सोने के कुछ आभूषणों आदि के साथ मिलकर, "सफा" कहलाते हैं। प्रत्येक धागे के साथ, ऊपरी सिरे से लगभग एक चौथाई या (अधिकतम) एक तिहाई लंबाई को छोड़कर, आमतौर पर सोने के नौ या अधिक छोटे चपटे आभूषण जुड़े होते हैं, जो आमतौर पर सभी एक ही आकार के होते हैं। सबसे आम आकार आयताकार होता है, जिसका निचला सिरा गोल और ऊपरी सिरा नुकीला होता है, या इसका उल्टा भी हो सकता है। इन्हें लगभग एक इंच या उससे थोड़ा अधिक दूरी पर एक दूसरे से जोड़ा जाता है (प्रत्येक सिरे पर एक छोटी अंगूठी लगी होती है); लेकिन प्रत्येक माला के मोतियों को जानबूझकर इस तरह रखा जाता है कि वे दूसरे मोतियों से बिल्कुल मेल न खाएं। प्रत्येक माला के अंत में एक छोटी सोने की नली या एक छोटा बहुभुजाकार सोने का मनका होता है, जिसके नीचे आमतौर पर एक छोटी अंगूठी से आधा इंच से थोड़ा अधिक व्यास का सोने का सिक्का लटकाया जाता है। यह सफा का सबसे सामान्य प्रकार है; लेकिन कुछ महिलाएं सोने के सिक्के के स्थान पर उसी धातु का एक सुंदर आभूषण पहनती हैं, जो या तो साधारण होता है या जिसके केंद्र में एक मोती होता है; या वे इसके स्थान पर मोतियों की एक छोटी माला लटकाती हैं; या वे तीनों मालाओं के निचले सिरे पर बारी-बारी से मोती और पन्ना लगाती हैं, और ऊपर बताए गए सोने के छोटे आभूषणों में से प्रत्येक के साथ एक मोती लगाती हैं।

मूंगे के मनके भी कभी-कभी मोतियों की तरह ही लगाए जाते हैं। — सफा, मेरे विचार से, अरब महिलाओं द्वारा पहने जाने वाले सभी आभूषणों में सबसे सुंदर और साथ ही सबसे अनोखा है। सोने के छोटे-छोटे आभूषणों की झिलमिलाहट और पहनने वाली के चलने पर उनकी आपस में टकराने की आवाज़ एक विशेष रूप से जीवंत प्रभाव डालती है। 7 अलंकृत डोरियों का उल्लेख, हालांकि इस टिप्पणी में संदर्भित छंदों में नहीं किया गया है, कहानी में आगे उल्लेख किया गया है। उनसे संबंधित अंश, कहानियों के इस संग्रह में कई अन्य अंशों के साथ, यह दर्शाते हैं कि इस कृति में वर्णित वेशभूषा लगभग वैसी ही थी जैसी आज भी अरब देशों में प्रचलित है। टिप्पणी 9. पुराने संस्करण में, यहाँ कमर-एज़-ज़ेमान और उनकी माता फातिमा के बीच विवाह के विषय पर चर्चा है, जिनसे शाहज़ेमान ने यह जानने का प्रयास करने का अनुरोध किया था कि क्या उनकी समझाने की शक्ति उन्हें राजा के अनुरोध का पालन करने के लिए प्रेरित करेगी। लेकिन काहिरा संस्करण या ब्रेस्लाउ संस्करण में इस सब का एक शब्द भी नहीं मिलता है। हालाँकि, मैं इसे गैलैंड का आविष्कार नहीं मानता; मूल पाठ की जाँच करने वाले सैसी ने इसका उल्लेख किया है और आंशिक रूप से इस पर एक तर्क आधारित किया है, जैसा कि मैंने पहले ही दिखाया है। 5 पूर्व, अध्याय iv के नोट 36 में: ~ सफा का यह विवरण बाद वाले से संक्षिप्त किया गया है, अध्याय ii के नोट 3-t में। आधुनिक मिस्रियों पर मेरी कृति, परिशिष्ट A. 6 किताब अल-'ओनवान फी मक्कौल एन-निसवान। II. .2 i)

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.82%** है।

अध्याय दसवें के लिए 202 टिप्पणियाँ। टिप्पणी 10. इस अभिव्यक्ति के उदाहरण के लिए, अध्याय 3 की टिप्पणी 14 देखें। टिप्पणी 11.

"एत-ताघूत" शैतान, या किसी भी बहकाने वाले, या किसी भी मूर्ति को दिया गया नाम है। इसलिए इसे यहाँ पहले अर्थ में समझा जाना चाहिए। टिप्पणी 12. कहा जाता है कि उसकी पलकों ने तेज तलवार का तिरस्कार किया, क्योंकि वे स्वयं अधिक भेदक थीं। टिप्पणी 13. कहा जाता है कि यह उसकी अत्यधिक अधीनता को दर्शाता है। अपने राजकुमार के सामने एक प्रजा, या अपने स्वामी के सामने एक सेवक की सामान्य मुद्रा में, जो कुछ अन्य मामलों में भी अपनाई जाती है, विशेषकर पुत्र या पुत्री द्वारा माता-पिता के सामने, दोनों हाथ कमरबंद के सामने, बाएँ हाथ को दाएँ हाथ के अंदर रखकर, एक साथ रखे जाते हैं। टिप्पणी 14. शायद कमर-एज़-ज़ेमान के इस उत्तर पर टिप्पणी करना और पाठक को उस अत्यधिक सम्मान की याद दिलाना अनावश्यक है जो आम तौर पर अरब पुत्र अपने पिता के प्रति दिखाता है। लेकिन यद्यपि कोई भी पाठक इसे हल्के में नहीं लेगा, फिर भी कुछ लोग शायद यह कल्पना न कर पाएं कि इस तरह की अभिव्यक्तियाँ एक पूर्वी माता-पिता के मन में कितना आक्रोश पैदा कर सकती हैं। टिप्पणी 15. एक राजा द्वारा अपने पुत्र को संबोधित ये शब्द, यद्यपि अभद्र हैं और राजा और उसकी पत्नी के सम्मान पर कलंक लगाते हैं, फिर भी यह सही ढंग से दर्शाते हैं कि एक अरब, चाहे उसका पद कितना भी ऊँचा क्यों न हो, कभी-कभी क्रोध में आकर कितनी अतिशयता में पड़ जाता है। टिप्पणी 16. फराश एक नौकर होता है जो कालीन, गद्दे आदि बिछाता है, घर के अन्य सामानों की देखभाल करता है और यात्रा के दौरान तंबू लगाता है। टिप्पणी 17. शिक्षित मुसलमानों द्वारा कुरान को आमतौर पर कंठस्थ किया जाता है, और ऐसा करना कई लोगों के लिए दैनिक अभ्यास है: दूसरों के लिए भी यह बहुत आम बात है। — एक ही अरबी शब्द का प्रयोग पुस्तक पढ़ने और कंठस्थ करने दोनों के लिए किया जाता है। टिप्पणी 18. "गाय"

अध्याय दूसरा है; तीसरा अध्याय "इमरान का परिवार"; छत्तीसवाँ "यासीन"; पचपनवाँ "दयालु"; सड़सठवाँ "धन्य है वह जिसके हाथ में राज्य है"; और अंतिम दो अध्याय "दो निवारक" हैं। इन दोनों का नाम इसलिए ऐसा रखा गया है क्योंकि ये बुरी नज़र या जादू-टोने के प्रभावों से बचाव करते हैं। कहा जाता है कि ये अध्याय पैगंबर को इसलिए अवतरित हुए ताकि वे इनका जाप करके जादू-टोने से मुक्त हो सकें; और इनका प्रयोग अक्सर सुरक्षात्मक मंत्रों के रूप में किया जाता है। — कामारेज़-ज़ेमान द्वारा कुरान के इन अध्यायों का पाठ करना अतिरिक्त है; लेकिन अक्सर मुसलमान एकांत में अपनी प्रार्थना इसी प्रकार समाप्त करते हैं। उनकी "प्रार्थना" से तात्पर्य अपनी पसंद के शब्दों में की गई एक संक्षिप्त विनती से है। इस प्रार्थना को दोहराते समय, उपासक अपने दोनों हाथों की हथेलियों को देखता है, जिन्हें वह खुली किताब की तरह अपने सामने रखता है; और प्रार्थना पूरी होने पर, वह उन्हें अपने चेहरे पर, माथे से नीचे की ओर फेरता है। "ईश्वर की शरण मांगना" से तात्पर्य इन शब्दों को दोहराना है, "मैं शापित शैतान से ईश्वर की शरण मांगता हूँ।" — नीचे टिप्पणी 44 देखें। टिप्पणी 19. "मादीनी" का अर्थ "खनिज" और "धात्विक" है, और संभवतः यहाँ यह साटन के रंग को दर्शाता है; लेकिन अधिक संभावना है कि इसका अर्थ "मादीन नामक स्थान के कपड़े" से है; क्योंकि रेशम आदि को अक्सर उन स्थानों के नाम पर रखा जाता है जहाँ वे बनाए जाते हैं। मैं इस मामले में इसके अर्थ के बारे में कोई अन्य अनुमान नहीं लगा सकता; और चूंकि मेरे शेख ने इसकी व्याख्या नहीं की है, इसलिए मैं अनुमान लगाता हूं कि उन्हें भी इसके बारे में संदेह था; जो आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि कई समान शब्द अब समझ में नहीं आते हैं। ब्रेस्लाउ संस्करण में इसका उल्लेख नहीं है। अरबी भूगोलवेत्ताओं द्वारा मादीन एन-नकराह या एन-नकीरेह नामक एक बड़े और घनी आबादी वाले

शहर का उल्लेख उस बिंदु पर किया गया है जहाँ अल-बसरा और अल-कूफेह से तीर्थयात्रा मार्ग मिलते हैं। अरबी में, "d-mo'owwidlietan," vuljj., " cl-mo'owwizcteyn.'

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.23%** है।

अध्याय दसवें के लिए टिप्पणियाँ। 203 टिप्पणी 20. जिस शब्द का अनुवाद मैंने "रूमाल" (अर्थात "मिकना") के रूप में किया है, वह एक प्रकार का पर्दा है, जो किना के समान है, लेकिन संकरा है और महिलाओं द्वारा शायद ही कभी पहना जाता है। संभवतः इसका अर्थ यह है कि कमर-एज़-ज़ेमान इसका उपयोग मच्छरों से बचने के लिए करते थे। टिप्पणी 21. मैंने "सैलून" के स्थान पर "टावर" शब्द का प्रयोग किया है; क्योंकि आगे के पाठ में यह परिवर्तन आवश्यक था। टिप्पणी 22. मूल पाठ में, "रूमानी" शब्द का प्रयोग किया गया है। आधुनिक अरबी में इस शब्द और सामूहिक "रूमान" का प्रयोग क्रमशः "रोमन" और "रोमन लोगों" के लिए किया जाता है। "रूमान" और "रूमानीयून" ("रूमानी" का बहुवचन) शब्द इटली के निवासियों, बाद के युगों के यूनानियों ("अल-अरवाम") और अन्य लोगों के लिए प्रयोग किए जाते हैं, जो रोमन साम्राज्य के अधीन हो गए थे।10 इसलिए अध्याय 2 के नोट 13 में "रूमान" की मेरी व्याख्या यही है। लेकिन "रूम" पूर्वी रोमन या बाद के यूनानी साम्राज्य के अधीन लोगों और आधुनिक यूनानियों के लिए अधिक उपयुक्त नाम है। नोट 23. "मेमूनेह" ("मेमून" का स्त्रीलिंग) का अर्थ "भाग्यशाली" है। नोट 24. "जन्न" यहाँ "जिन्न" का पर्यायवाची है। - प्रस्तावना के नोट 21 देखें। नोट 25. वह स्वर्गदूतों की बातचीत को चुपके से सुनने के लिए सात स्वर्गों में सबसे निचले स्वर्ग की सीमाओं की ओर चढ़ गई। - ठीक पहले संदर्भित नोट और इस श्रृंखला में नोट 36 देखें।

नोट 2G. हम मान सकते हैं कि वह या तो खिड़की से या गुजरते हुए सैलून में दाखिल हुई। ठोस दीवार के पार। टिप्पणी 27. — तावीज़ों पर। "तावीज़" अरबी शब्द "तलसैन" का बिगड़ा हुआ रूप है। मैं इस शब्द को उसी तरह लिख रहा हूँ जिस तरह से आम तौर पर अरब इसका उच्चारण करते हैं, और जिस तरह से मेरे शेख ने इसे यहाँ और इस कृति के अन्य भागों में लिखा है: कुछ लोग इसे "तिलसेम" और "तिलिस्म" लिखते हैं। यह रहस्यमय चिह्नों के लिए प्रयुक्त एक शब्द है; और साथ ही उन मुहरों, मूर्तियों आदि के लिए भी जिन पर ऐसे चिह्न उत्कीर्ण या अंकित होते हैं। ये चिह्न ज्योतिषीय या किसी अन्य जादुई प्रकार के होते हैं। तावीज़ों के निर्माण के उद्देश्य विविध हैं; एक में जादू-टोने से, या किसी विशेष दुर्घटना से, या कई प्रकार की बुराइयों से बचाने का गुण होता है; दूसरा उस खजाने की रक्षा करता है जिसके साथ इसे रखा जाता है; तीसरा, रगड़ने से, एक जिन्न की उपस्थिति और सेवाएँ प्राप्त होती हैं। टिप्पणी 28. उच्च कोटि के जिन्न वे हैं जो उच्च लोकों में निवास करते हैं और अच्छे कर्म करते हैं; निम्न कोटि के जिन्न... वे जो शौचालय जैसी नीची जगहों में रहते हैं और बुरे काम करते हैं; और तीसरी श्रेणी वे हैं जो समुद्र में गोता लगाते हैं।11 टिप्पणी 29. एमवी शेवख टिप्पणी करते हैं कि यह नाम आमतौर पर "शेमहूरिश" लिखा जाता है; लेकिन सही रूप से, "शेमहरूश" है। टिप्पणी 30. मैंने पहले ही उल्लेख किया है कि इस कहानी में वर्णित घटनाओं के दृश्य काल्पनिक क्षेत्रों में हैं। जब इस कृति में चीन और उसके समुद्र के द्वीपों का उल्लेख किया जाता है, तो हमें उन क्षेत्रों और उनके निवासियों के बारे में सभी सही धारणाओं को अपने दिमाग से निकाल देना चाहिए, जिन्हें आम तौर पर यहां धर्म, रीति-रिवाज, पहनावे आदि में अरबों के समान वर्णित किया गया है। टिप्पणी 31. "अल-घायूर" का अर्थ है "ईर्ष्यालु" (प्रेम या सम्मान के संबंध में), या "उत्साही"; और कुछ

मामलों में, "परिवर्तनशील"। टिप्पणी 32. उपरोक्त विवरण कुछ हद तक संक्षिप्त है। मूल में इसकी अतिशयोक्ति का श्रेय आंशिक रूप से दहनश के उत्साह को दिया जा सकता है। 9 अध्याय iii के नोट 2 देखें। डेप्पिंग की "अपेरु हिस्टो10" का अरबी अनुवाद। उदाहरण के लिए, इन्हें स्थानों आदि के नामों की एक शब्दकोश में इस प्रकार लागू किया जाता है, जिनके आगे n लगा होता है। शेख मोहम्मद रिफ़ियाह की उनकी पुस्तक "कलाइद अल-मेफ़ाख़िर" (1833 में काहिरा के बंदरगाह बूलक में मुद्रित) के हाशिये पर लिखे नोट्स से।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.18%** है।

अध्याय दसवें के लिए 204 टिप्पणियाँ। टिप्पणी 33. उन महलों की संख्या और जिन कीमती सामग्रियों से उनका निर्माण हुआ है, उनका उल्लेख संभवतः सात स्वर्गों या स्वर्ग के सात चरणों से तुलना करने के लिए किया गया है। — प्रस्तावना की टिप्पणी 2 देखें। टिप्पणी 34. "बुदूर" "बेद्र" का बहुवचन है और इसका अर्थ है "पूर्णिमा"। उनका नाम इस प्रकार रखा गया था ताकि यह संकेत मिले कि, "अपनी अत्यधिक सुंदरता के कारण उनकी तुलना अनेक पूर्णिमाओं से की जा सकती है; केवल एक से नहीं।"12 पुराने संस्करण में उन्हें गलत तरीके से "बदौरा" कहा गया है। टिप्पणी 35. अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द के अभाव में मैं अरबी नाम "कहरमानेह" दे रहा हूँ। इसका अर्थ कभी-कभी "एक महिला विश्वासपात्र" होता है (जैसा कि मैंने पहले अनुवाद किया है); अन्य मामलों में, "एक षड्यंत्रकारी दासी", "एक दाई" और "एक वीर महिला"। लेकिन आम तौर पर, जैसा कि इस उदाहरण में है, इसका प्रयोग एक अनुभवी, भरोसेमंद महिला दासी के लिए किया जाता है, जिसे दूसरों पर अधिकार दिया जाता है या किसी महत्वपूर्ण पद का जिम्मा सौंपा जाता

है। यह फारसी शब्द "कहरमन" से आया है, जिसका अर्थ है "एक वीर योद्धा", जो फारस के एक प्रसिद्ध काल्पनिक नायक का नाम है। टिप्पणी 30. पाठक शायद पूछें, "मैमूनेह को युवक के इतिहास की जानकारी कैसे हुई?" - संभवतः, दहनश से मिलने से पहले, वह सबसे निचले स्वर्ग की सीमा तक पहुँच गई थी, और वहाँ उसने स्वर्गदूतों को इस विषय पर बातचीत करते हुए सुना था; जिन्न आमतौर पर इसी तरह उन चीजों का ज्ञान प्राप्त करते हैं जो अन्यथा उनसे छिपी रहतीं। टिप्पणी 37. यहाँ जिस अग्नि का उल्लेख किया गया है, वह वही अग्नि है जिससे जिन्न उत्पन्न हुए हैं। - प्रस्तावना की टिप्पणी 21 देखें। टिप्पणी 38. सिर के आभूषणों की खनक का उल्लेख इस श्रृंखला की आठवीं टिप्पणी में किया गया है। पायल भी आपस में टकराकर झनझनाहट पैदा करती हैं। इन विशिष्ट छंदों में से अंतिम में जिस गंध का उल्लेख किया गया है, वह पसीने से उत्पन्न होने वाली गंध है। एक सुंदर अरब युवती को अक्सर इस प्रकार की प्राकृतिक सुगंध बिखेरते हुए वर्णित किया जाता है, जैसे स्वर्ग में रहने वाले धन्य लोग, जिनका पसीना कस्तूरी की तरह सुगंधित होता है। इस प्रकार, इमरा-अल-कीज़ के मोअल्लाका में, कवि के प्रेम की दो पूर्व वस्तुओं के संदर्भ में कहा गया है, "जब वे उठती हैं, तो उनसे कस्तूरी की सुगंध फैलती है, जैसे हवा की साँस लौंग की सुगंध लाती है।" ऐसे कई और उदाहरण दिए जा सकते हैं, लेकिन उन्हें अक्सर गलत समझा जाता है: उनमें से एक को पूर्वी महिलाओं के इत्र के प्रति प्रेम को साबित करने के उद्देश्य से उद्धृत किया जाता है, जबकि यह केवल पुरुषों में ऐसे प्रेम का संकेत देता है। हालांकि, यह सच है कि दोनों लिंगों को इत्र बहुत पसंद होते हैं, और कुछ ही महिलाएं पैगंबर के निम्नलिखित कथन के उत्तरार्ध में दिए गए निर्देश का पालन करती हैं; कि, "पुरुष के इत्र में गंध होनी चाहिए, रंग नहीं; और जो चीजें महिलाएं मलती हैं उनमें रंग होना चाहिए,

गंध नहीं।"13 — [पैगंबर के पसीने की गंध का भी यहाँ उल्लेख किया जा सकता है, हालाँकि यह पाठ में दिए गए विशेष उदाहरण पर शायद ही लागू होता है। इस गुण की मुस्लिम प्रशंसा, सामान्य तौर पर, पैगंबर की इस कथित विशेषता से प्रेरित नहीं प्रतीत होती है। — संपादक] टिप्पणी 39. मेरे शेख यहाँ "कुतुब" शब्द की व्याख्या इस प्रकार करते हैं, "एक ऐसा जानवर जिसके आगे के पैर लंबे हों; उनमें से एक जो सुबह-सुबह हरकत में आ जाता है।" कामोस में इसे "एक छोटा जानवर जो पूरे दिन घूमता रहता है" के रूप में वर्णित किया गया है; और उसी शब्द (कुतुब) को वहाँ "गंजा भेड़िया" और "नर भेड़िये" के लिए भी प्रयोग किया गया है। शेख मोहम्मद (फेह) द्वारा हाशिये पर लिखी गई टिप्पणी के अनुसार, इन शानदार अनी'कीइद में से एक का अक्सर दौरा किया जाता था, जिसे वह गलती से कुट्ठबेह कहते हैं और 13 मिश्कात अल-मसुबीह, खंड 2, पृष्ठ 361 में एक महिला के रूप में वर्णित करते हैं: और यह कि, कब्रों के उल्लंघन के परिणामस्वरूप, लोगों ने कुछ समय के लिए अपने मृतकों को दफनाने से परहेज किया। 11 पूर्व-संग्रह के परिचय में टिप्पणी 21 देखें। [क्ल-मकरीज़ी एक ऐतिहासिक तथ्य के रूप में बताते हैं कि काहिरा का महान कब्रिस्तान (कारा-संपादक]

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.86%** है।

अध्याय दसवें के लिए टिप्पणियाँ। 205 नोट 40. ब्रेस्लाउ संस्करण में ऐसा ही है। काहिरा संस्करण में, "अवी-1-कुब्बेति-ल-मेबनीयेब," जिसका अनुवाद "या [गुंबदनुमा] संरचना" के रूप में किया जा सकता है। नोट 41. अध्याय 3 के नोट 15 देखें। नोट 42. यहाँ "पंचक" के रूप में अनुवादित शब्द, जो इसका शाब्दिक अर्थ है, सामान्यतः "जीवंत अवधियों" को दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है। हम शायद यहाँ

इसका अर्थ "जीवंत पैरों" के रूप में समझ सकते हैं। अरब विशेष रूप से उन युवतियों की प्रशंसा करते हैं जिन्होंने अपना पूर्ण विकास प्राप्त नहीं किया है; और विवाह जुलूस को देखकर, यदि दुल्हन औसत कद की हो तो अक्सर असहमति व्यक्त की जाती है, या नजरों से इंगित की जाती है। नोट 43. मेरे शेख ने यहाँ इसका अर्थ "मज्जा" बताया है। - अध्याय 3 के नोट 11 का पूर्व भाग इस व्याख्या को स्पष्ट करेगा। टिप्पणी 44. जब मुसलमान कुरान और सुन्नत द्वारा निर्धारित नमाज़ें अदा कर लेता है, और यदि वह अतिरिक्त नमाज़ें अदा करना चाहता है, तो वह बैठा रहता है (परन्तु वह अधिक आराम से बैठ सकता है), और "सिंहासन-श्लोक" पढ़ता है, जो कुरान के दूसरे अध्याय का 256वाँ श्लोक है (जिसकी शुरुआत "अल्लाह! उसके सिवा कोई देवता नहीं है" से होती है और अंत "वह सर्वोच्च, महान है" से होता है); और सामान्यतः वह कहता है, "हे सर्वोच्च! हे महान! तेरी पूर्णता की मैं प्रशंसा करता हूँ।" फिर वह दोहराता है, "अल्लाह की पूर्णता!" (तैंतीस बार)। "अल्लाह की पूर्णता, महान, जिसकी प्रशंसा सदा के लिए है!" (एक बार)। "अल्लाह की स्तुति हो!" (तैंतीस बार)। "उसकी महिमा की प्रशंसा हो! उसके सिवा कोई देवता नहीं है!" (एक बार)। "अल्लाह सबसे महान है!" (तैंतीस बार)। “अल्लाह महानता में सबसे महान है, और अल्लाह की प्रशंसा भरपूर है!” (एक बार)। वह इन पुनरावृत्तियों को मोतियों की एक माला से गिनता है, जिसमें निन्यानवे मोती हैं और प्रत्येक तैंतीस के बीच एक चिह्न है: ये अगरबत्ती या अन्य सुगंधित या कीमती लकड़ी, या मूंगे, या कुछ फलों की गुठलियों, या बीजों आदि से बने हैं। टिप्पणी 45. यह उद्गार (“अल्लाह तुम्हारी जवानी की रक्षा करे!”), जिसका प्रयोग केवल महिलाएं करती हैं, जैसा कि मेरे शेख ने टिप्पणी की है, वज़ीर के मुख से अनुचित है। टिप्पणी 46. यह भी महिलाओं का उद्गार है। — अध्याय 4 की टिप्पणी

65 देखें। टिप्पणी 47. यहाँ "समाचार" के रूप में अनुवादित शब्द का सामान्य अर्थ "खुशखबरी" होता है। मेरे शेख का कहना है कि इसका प्रयोग हँसी उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। टिप्पणी 48. "कुब्बे" के विभिन्न अर्थों में से, यहाँ सबसे उपयुक्त अर्थ या तो "गुंबद" या "गुंबद से सुशोभित भवन या कक्ष आदि" प्रतीत होता है। टिप्पणी 49. ये बारह चंद्र महीनों के नाम हैं जिनसे मुहम्मदी वर्ष बनता है। इनका उल्लेख उनके क्रमानुसार किया गया है; लेकिन मुहर्रम वह महीना है जिससे वर्ष की शुरुआत होती है। — यहाँ पूछे गए प्रश्न वे हैं जो आम तौर पर अरब लोग किसी व्यक्ति से यह जाँचने के लिए पूछते हैं कि वह मानसिक रूप से स्वस्थ है या नहीं। टिप्पणी 50. "किसरा" या "केसरा," फारसी शब्द "खुसरो" से लिया गया है जिसका अर्थ "एक महान राजा" होता है, और जिसे रोमनों ने "कोसरो" (एक उपनाम जो उन्होंने सासानियन राजवंश के लगभग हर राजा को दिया था) में परिवर्तित कर दिया था, यह एक ऐसा नाम है जो अरबों द्वारा प्रयोग किया जाता है। (रोमन साम्राज्य में सेसर की तरह) फारस के कई प्राचीन राजाओं के लिए। फारसी और अरब इतिहासकारों के अनुसार, अल-इस्लाम से पहले फारस के राजाओं ने चार राजवंशों का गठन किया; अर्थात्, पेशदादियन, जिसका कालक्रम अज्ञात है; कयानी-इन्स, जिसका अंत 331 ईसा पूर्व में हुआ, जब फारस पर सिकंदर महान ने विजय प्राप्त की; अश्कानियन, जिसका अंत 202 ईस्वी में हुआ; और ससानियन, जिनमें से अंतिम को अरबों ने हराया था। 636. टिप्पणी 51. इस वाक्य के प्रारंभ से पैराग्राफ के अंत तक का अंश ब्रेस्लाउ संस्करण से लिया गया है। टिप्पणी 52. काहिरा संस्करण में, बुदूर महिला द्वारा बूढ़ी औरत की हत्या करने की बात कही गई है; लेकिन ब्रेस्लाउ संस्करण और पुराने संस्करण में, उसे केवल पीटने वाली बताया गया है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.87%** है।

अध्याय 11 के दसवें भाग के लिए टिप्पणियाँ। टिप्पणी 53. काहिरा के पागलखाने में, पागलों को गर्दन से जंजीरों में बांधकर, प्रत्येक को अलग-अलग कोठरी में रखा जाता है। मुझे डर है कि वहाँ उनके साथ अनावश्यक रूप से कठोर व्यवहार किया जाता है; लेकिन यात्री अक्सर इस बात को लेकर भ्रमित हो जाते हैं; क्योंकि आगंतुकों की यह प्रथा है कि वे पागलों को बांटने के लिए अपने साथ रोटी ले जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनमें से कई लोग किसी अजनबी के आने पर रोटी के लिए चिल्लाते हैं, मानो वे भूख से मर रहे हों। कभी-कभी, जब किसी पागल को रोटी मिल जाती है, तो वह उसे देने वाले के चेहरे पर फेंक देता है। [इस टिप्पणी के लिखे जाने के बाद से, काहिरा के पागलखाने को सुल्तान अल-मेलिक अल-मंसूर कलाउन द्वारा स्थापित पुराने मरिस्तान से, जो शहर की मुख्य सड़क पर स्थित है, यूरोपीय जिले में स्थानांतरित कर दिया गया है। अब इसका संचालन फ्रांसीसी चिकित्सकों द्वारा किया जाता है, और रोगियों की स्थिति में काफी सुधार हुआ है।] — संपादक] टिप्पणी 54. ब्रेस्लाउ के संस्करण में, और स्पष्ट रूप से उस पांडुलिपि में जिससे गैलैंड ने अनुवाद किया था, उनके संस्करण में इसे "टॉर्फ" लिखा गया है। काहिरा संस्करण में, fi EtTeyreb" टिप्पणी 55. ये स्त्रीलिंग नाम हैं, जिनका प्रयोग काल्पनिक नामों के रूप में किया जाता है। "सुलेयनु" "सेल्मा" का लघु रूप है; और बाद वाले की तरह, इसका प्रयोग अक्सर एक सुंदर महिला को दर्शाने के लिए किया जाता है। "एर-रबाब" का अर्थ है "सफेद कली" और "भौंह";15 और "उबाब" का प्रयोग "एक ऐसी कली के लिए भी किया जाता है जो अभी सफेद है, और जल्द ही काली हो जाएगी;" और इसलिए यह "एक महिला" के लिए प्रयुक्त एक शब्द है, जो

परिवर्तनशीलता को दर्शाता है। "तेन'ओम" एक क्रिया के अओरिस्ट का तृतीय पुरुष एकवचन स्त्रीलिंग रूप है जिसका अर्थ है "कोमल, सौम्य, आदि होना।" नोट 56. "'अंदम" "ब्राज़ील-वुड" (जिसे "बक्कम" भी कहा जाता है) और हमारे द्वारा "ड्रैगन ब्लड" कहे जाने वाले रेज़िनस पदार्थ का अरबी नाम है। नोट 57. इसका अर्थ है, "मेरी उंगलियां मेहंदी से रंगी नहीं हैं।" - अध्याय iv के नोट 3G देखें। नोट 58. यह और इससे पहले वाला श्लोक, पूर्ववर्ती श्लोक की श्रेष्ठता के कारण, विद्वानों द्वारा अक्सर दोहराया जाता है। नोट 59. उसमें लुकमान की बुद्धिमत्ता (जो मुसलमानों में प्रसिद्ध है), यूसुफ की सुंदरता (जो समान रूप से प्रसिद्ध है), दाऊद की मधुर आवाज (जिसके प्रभावों के लिए अध्याय i के नोट 18 देखें), और कुंवारी मरियम की पवित्रता है; जबकि / याकूब के समान शोक (यूसुफ के खोने पर), योना के समान पश्चाताप (मछलियों द्वारा निगल लिए जाने पर), अय्यूब के समान पीड़ा (जब परमेश्वर ने उसकी परीक्षा ली, क्योंकि उसने अपने भेजे हुए व्यक्ति की पत्नी से विवाह किया, और अपनी पिछली पत्नियों से संतुष्ट नहीं था),19 और आदम के समान अवस्था में है जिसे स्वर्ग से निकाल दिया गया था। नोट: यह कहने के बराबर है कि वह ऐसी पीड़ा में है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। 15 दो प्रकार के दुख हैं जिन्हें "रबीब" कहा जाता है, जिसने उसे इसी तरह की बीमारी से पीड़ित किया। दूसरा, जिसका वर्णन मैंने आधुनिक मिस्रियों पर अपने काम में किया है, खंड 2, अध्याय 5। एक गरीब भिखारी उसके दरवाजे पर रुका, और उसने उसे निराश होकर लौटा दिया। तीसरा, एक व्यक्ति जो उत्पीड़ित था, उसने उसकी सहायता की याचना की, और उसने उसके उत्पीड़क के खिलाफ उसकी सहायता नहीं की। 16 मुख्य रूप से शेख मोहम्मद इयाद की एक हाशिये की टिप्पणी से। एक चौथा, 17 उसी द्वारा हाशिये पर टिप्पणी। कि उनके समय में एक अत्याचारी राजा था जिसने

उन्हें अपने घोड़ों को चराने के लिए भूमि का एक हिस्सा सौंपा था, और विद्वान लोग राजा डेविड के समय में रहते थे; हालाँकि कुछ का दावा है कि वह अय्यूब की बहन या मौसी का पुत्र था। कुछ लोग उसे वेसॉप मानते हैं। 18 इस प्रसिद्ध व्यक्ति के देश और युग अज्ञात हैं। उसे आम तौर पर एक बदसूरत काले गुलाम के रूप में वर्णित किया जाता है, और कहा जाता है कि वह राजा डेविड के समय में रहता था; हालाँकि कुछ का दावा है कि वह अय्यूब की बहन या मौसी का पुत्र था। कुछ का मानना है कि वह अय्यूब सीरिया का निवासी था (जिसके पास अल-बेथनेह और अल-जाबियेह और [दिमश्क, या दमिश्क प्रांत में अन्य स्थान] थे); अरब लेखकों द्वारा ईश्वर द्वारा शैतान को शक्ति प्रदान करने के संबंध में लगभग सभी इस बात पर सहमत हैं कि उसने अय्यूब को सताना कभी नहीं छोड़ा। एक लेखक कहता है कि एक बीमार व्यक्ति उस देश में आया, और उसने उसे घृणा से देखा, और उसे अपने घर के आंगन से बाहर निकाल दिया। यह भी उनकी आम धारणा है कि वह एसाव का परपोता था, जिसे उन्होंने 'ईसू' कहा। — मिर्-इत एज़-ज़ेमान।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.07%** है।

अध्याय दसवें के लिए टिप्पणियाँ। 207 टिप्पणी 61. मेरा मानना है कि यह शिष्टाचारवश कहा गया है; क्योंकि, जैसा कि मेरे शेख ने टिप्पणी की है, यह कहानी के अनुरूप नहीं है; क्योंकि कमर-एज़-ज़ेनुइन ने अपने पिता और अन्य लोगों को इस घटना से अवगत कराया था, जबकि बुदूर महिला ने अपने पिता को इससे अवगत नहीं कराया था। टिप्पणी 62. इस श्रृंखला की पचासवीं टिप्पणी देखें। टिप्पणी 63. — भू-ज्योतिष पर, भू-ज्योतिष के विज्ञान और अभ्यास पर, जिसे "इल्म-एर-हमल" और "दारब-एर-रैनल" कहा जाता है, पूर्वी लेखकों द्वारा कई ग्रंथ हैं; लेकिन मुझे

इनमें से कोई भी नहीं मिला है; न ही मैंने कोई भू-ज्योतिषीय पट्टिका देखी है; जिसे, यदि मैंने देखा होता, तो शायद मैं संतोषजनक ढंग से वर्णित करने में असमर्थ होता। भू-ज्योतिष रेत (जिससे इसका नाम पड़ा) या कागज पर, स्पष्ट रूप से यादृच्छिक रूप से बनाए गए कुछ चिह्नों या बिंदुओं के संयोजन से भविष्यवाणी करने की एक विधि है; लेकिन मुझे बताया गया है कि यह मुख्य रूप से ज्योतिष पर आधारित है; इसलिए मेरा मानना है कि भू-ज्योतिषीय पट्टिका ज्योतिषीय आरेखों आदि से उत्कीर्ण एक उपकरण है। मैंने केवल कागज पर भू-ज्योतिषीय प्रयोग करने का तरीका देखा है। इस विज्ञान के आविष्कार का श्रेय कुछ लोग इदरीस या एनोक को देते हैं; कुछ दानियेल को; कुछ नूह के पुत्र हाम को; और अन्य हर्मेस ट्रिस्मेगिस्टस को देते हैं। टिप्पणी 61. शाब्दिक रूप से, "मैं पुस्तक लिखता हूँ," या "लेख।" इस वाक्यांश का प्रयोग विवाह अनुबंध बनाने वाले शब्दों के एक रूप को लिखने, या, अधिक सामान्यतः, केवल दोहराने के लिए किया जाता है। यह स्पष्ट है कि यहाँ इसका यही अर्थ है, और यह ज्योतिषीय गणनाओं की ओर इशारा करता है जो अक्सर विवाह से पहले की जाती हैं, और जिनका मैंने अध्याय 5 की टिप्पणी 74 में वर्णन किया है। — वह टिप्पणी और इस श्रृंखला की टिप्पणी 147 देखें। एनसीटीई 65. इस श्रृंखला की छप्पनवीं टिप्पणी देखें। टिप्पणी 60. इस प्रकार ताबीज़ों पर अंकित चिह्न आज भी अनेक मुसलमान धारण करते हैं; परन्तु एक अधिक सामान्य प्रकार का ताबीज़ कागज़ का एक टुकड़ा होता है जिस पर आंशिक रूप से ऐसे चिह्न अंकित होते हैं और जिसे सोने, चाँदी या चमड़े के आवरण में रखा जाता है। टिप्पणी 67. हमारे युग की आठवीं और नौवीं शताब्दी में, प्रारंभिक अब्बासी खलीफ़ों के समय में, लोकप्रिय यूरोपीय कहानियाँ अरबों के बीच पहुँची होंगी, साथ ही इसी प्रकार की फ़ारसी और भारतीय कहानियाँ भी। स्पेन में अरब साम्राज्य की स्थापना,

धर्मयुद्ध और वेनिसवासियों का मिस्र और सीरिया के साथ व्यापक व्यापार निस्संदेह अरबों से यूरोप और यूरोप से अरबों तक इसी प्रकार की कहानियों के प्रसार का कारण बना। इस प्रकार के प्रसार और विभिन्न देशों की लोकप्रिय कहानियों और काल्पनिक कथाओं की समानता के विषय पर, श्री कीथली की एक कृति से बहुत सी जानकारी और मनोरंजन प्राप्त किया जा सकता है, जिसका एक अंश मुझे यहाँ उद्धृत करना होगा। प्रोवेंस के पीटर और सुंदर मैगुएलोन की उस मनमोहक पुरानी फ्रांसीसी प्रेम कहानी में, एक ऐसी घटना है जो अरेबियन नाइट्स की कहानी से इतनी मिलती-जुलती है कि ऐसा लगता है मानो यह पूर्व से आई हो। मुझे इस कहानी की आयु का पता नहीं है, लेकिन यह निश्चित रूप से नेपल्स में एंजेविन राजवंश की स्थापना के बाद की है। चूंकि यह कभी कविता के रूप में मौजूद नहीं रही, इसलिए मैं इसे पंद्रहवीं शताब्दी का मानूंगा। प्रोवेंस के काउंट के पुत्र पीटर ने नेपल्स के राजा की पुत्री मैगुएलोन की सुंदरता के बारे में सुनकर स्वयं वहां जाकर उस अद्वितीय कन्या को देखने का निश्चय किया। तदनुसार, वह भेस बदलकर नेपल्स के दरबार में गया और वहां एक अज्ञात योद्धा के रूप में उसने टूर्नामेंटों में इतना उत्कृष्ट प्रदर्शन किया कि उसने राजा का स्नेह और सुंदर मैगुएलोन का दिल जीत लिया। कुछ समय बाद, प्रोवेंस लौटने की इच्छा से उसने राजकुमारी को अपने साथ उड़ान भरने के लिए राजी कर लिया। उसने अपनी सहमति दे दी, और वे चुपके से महल छोड़कर घोड़ों पर सवार होकर निकल पड़े, साथ में एक तीसरा घोड़ा भी ले गए जिस पर खाने-पीने का सामान लदा हुआ था। दूसरे दिन वे समुद्र के पास एक पहाड़ पर घने जंगल में पहुँचे, और गर्मी से थककर और बेहाल होकर, वे अपने घोड़ों से उतरकर उन्हें आराम देने लगे; और राजकुमारी ने पीटर की गोद में सिर रखकर गहरी नींद सो गई और *' 20 "मैं अनुवाद कर रहा हूँ," श्री कीथली कहते हैं,

"एक पुस्तकालय से, जो 1519 में सेविले में छपा था; संभवतः यह उस प्रेम कहानी का स्पेनिश अनुवाद है जो राजा के उसी संस्करण में है जिसे सेर्वेंटेस ने पढ़ा था।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.81%** है।

अध्याय दसवें के लिए 208 टिप्पणियाँ। जैसा कि कहा गया है, जब मगालोना अपने प्रिय पीटर की गोद में सो रही थी, तब पीटर अपनी प्रेमिका की असीम सुंदरता को निहारकर आनंदित हो रहा था; और जब उसने उसके सुंदर मुखमंडल को निहारकर, उसके मीठे और मनमोहक, छोटे और सुंदर होंठों की प्रशंसा की और उन्हें चूमा, तो वह उसे और अधिक निहारने से खुद को रोक नहीं पाया: तब वह उसे थोड़ा सा नग्न करने और उसके सबसे सुंदर और सफेद सीने को निहारने से खुद को रोक नहीं पाया, जो क्रिस्टल से भी अधिक सफेद था; और उसने उसके मीठे सीने को छुआ, और ऐसा करते ही वह प्रेम में इतना डूब गया कि उसे लगा जैसे वह स्वर्ग में है, और उसे कभी कोई कष्ट नहीं हो सकता। लेकिन वह सुख अधिक समय तक नहीं रहा; क्योंकि उसे असहनीय पीड़ा और दुर्भाग्य का सामना करना पड़ा, जैसा कि आप आगे पढ़ेंगे, जो मनुष्य कभी सोच भी नहीं सकता। और कुलीन मगालोना को भी कम कष्ट नहीं सहना पड़ा, क्योंकि बाद में उसे कई बड़े कष्टों से गुजरना पड़ा। इस प्रकार सुंदर मगलोना को निहारते और स्पर्श करते हुए, पतरस ने उसके सीने में एक रंगीन रेशम का टुकड़ा पाया, जो मुड़ा हुआ था, और उसे यह जानने की तीव्र इच्छा हुई कि उसमें क्या है। उसने उसे खोलना शुरू किया और उसमें अपनी माँ की तीन अंगूठियाँ पाईं, जो उसने मगलोना को दी थीं और जिन्हें उसने प्रेमवश संभाल कर रखा था। जब पतरस ने उन्हें देखा, तो उसने उन्हें फिर से मोड़कर अपने पास एक पत्थर पर रख दिया; और

उसने अपनी दृष्टि सुंदर मगलोना की ओर मोड़ी और उसे प्रेम से देखा, और वह प्रेम और आनंद से लगभग बेहोश हो गया। परन्तु हमारे प्रभु ने दिखाया कि इस संसार में दुख के बिना सुख नहीं है, न ही पूर्ण सुख है। क्योंकि एक शिकारी पक्षी ने उस रंगीन रेशम को मांस का टुकड़ा समझकर उड़कर आया और उस रेशम को लेकर पहाड़ पर उड़ गया और एक बहुत ऊँचे पेड़ पर बैठ गया। जब पतरस ने यह देखा तो वह बहुत दुखी हुआ, और उसने सोचा कि मगलोना भी दुखी होगी, जिसे वह दुनिया में किसी भी व्यक्ति से अधिक प्रसन्न करना चाहता था। उसने अपना लबादा मगलोना के सिर के नीचे रख दिया, और फिर चुपचाप उठ गया, बिना उसे कुछ पता चले। और वह उस पक्षी का पीछा करने लगा, और उस पर पत्थर फेंकने लगा, ताकि वह अपने साथ ले जा रहा रेशम गिरा दे। वहाँ ज़मीन के पास एक छोटी सी चट्टान थी। लेकिन चट्टान और ज़मीन के बीच बहुत सारा पानी था, और कोई भी तैरे बिना उस चट्टान तक नहीं जा सकता था। और वह पक्षी एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ता हुआ उस खतरनाक चट्टान पर बैठ गया, और पतरस ने उस पर एक पत्थर फेंका, जिससे वह पक्षी वहाँ से चला गया और रेशम समुद्र में गिर गया; और पतरस वहाँ नहीं जा सका, क्योंकि वह तैरना नहीं जानता था। फिर भी, क्योंकि दूरी ज़्यादा नहीं थी, उसने इधर-उधर खोजना शुरू किया कि क्या उसे कुछ ऐसा मिल सकता है जिसके सहारे वह चट्टान तक जाकर उसे खोज सके। तब पतरस ने कहा, क्या मैं... हे ईश्वर, काश मैंने अंगूठियाँ और रेशम वहीं से न लिए होते जहाँ से लिए थे, और न ही उनमें कोई छेड़छाड़ की होती, क्योंकि वे मुझे बहुत भारी पड़ेंगे, और मगलोना को तो और भी अधिक; क्योंकि यदि मैं और देर करता हूँ तो मगलोना मुझे ढूँढ़ने आ जाएगी। और जब पतरस इस प्रकार समुद्र के किनारे खोज रहा था, तो उसे एक पुरानी नाव मिली, जिसे मछुआरों ने बेकार समझकर

छोड़ दिया था; और पतरस उसमें चढ़ गया और बहुत प्रसन्न हुआ, परन्तु उसकी प्रसन्नता क्षणभंगुर रही। और उसने कुछ लकड़ियाँ लीं जो उसने चप्पू चलाने के लिए उठाई थीं, और चट्टान की ओर चल पड़ा। परन्तु ईश्वर, जो सब कुछ अपनी इच्छा से करता है, ने ज़मीन की ओर से एक तेज़, ठंडी और बलुई हवा चलाई, जिसने पतरस और उसकी नाव को, उसकी इच्छा के विरुद्ध, बहुत दूर समुद्र में बहा दिया, और उसका सारा चप्पू चलाना व्यर्थ हो गया; क्योंकि समुद्र बहुत ऊँचा और बहुत गहरा था, और वह किनारे तक नहीं पहुँच सका, और हवा उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध बहा ले गई। मुझे यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि कैसे पीटर को एक जहाज द्वारा मिस्र ले जाया गया, जहाँ वह सुल्तान का बहुत प्रिय बन गया, और कैसे मैगुएलॉन प्रोवेंस गई, और एक अस्पताल की निदेशक बनाई गई, जहाँ पीटर को एक कंगाल के रूप में लाया गया, और कैसे उसने उसे पहचाना, और अपना परिचय दिया, और कैसे वे एक हो गए, और उन्होंने अपने दिन निरंतर सुख में बिताए।"21 21 "कहानियाँ और लोकप्रिय कथाएँ; उनकी समानता, और देश-दर-देश प्रसारण," पृ. 82-86.

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.11%** है।

अध्याय तेजथ 200 पर टिप्पणियाँ: श्री कीथली कमारेज़-ज़ेमान की कहानी में इसी तरह की घटना पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं, "जिसकी मुख्य कहानी (क्योंकि इसके आकस्मिक प्रसंग निश्चित रूप से नहीं हैं) संभवतः," वे कहते हैं, "फ़ारसी मूल की है;" लेकिन, जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, डी सैसी की तरह, मुझे इस राय का कोई आधार नहीं दिखता; और निश्चित रूप से इसमें बहुत कुछ ऐसा है जो पूरी तरह से असंगत है। श्री कीथली बाद में कमारेज़-ज़ेमान और पीटर ऑफ़ प्रोवेंस की कहानी के

बीच एक और समानता का उल्लेख करते हैं, जिसका उल्लेख मैं उचित स्थान पर करूँगा; और वे आगे कहते हैं, "इसलिए, मुझे लगता है, यह बिल्कुल भी असंभव नहीं है कि कम से कम प्राच्य कहानी का कुछ हिस्सा पश्चिम की ओर गया हो।" मुझे यह अधिक संभावित लगता है कि इन दोनों कहानियों के लेखक कमारेज़-ज़ेमान की कहानी से कहीं अधिक पुरानी किसी कहानी के ऋणी थे - एक ऐसी कहानी जो अनुकरण करने योग्य बहुत कम थी। केवल दो बिंदुओं में समानता होने के कारण, मैं इस राय की पुष्टि करता हूँ कि हज़ार और एक रातों की कहानियाँ, सामान्यतः, उन सभी कहानियों से अत्यंत भिन्न हैं जिन पर वे आधारित हो सकती हैं। क्योंकि कमर-एज़-ज़ेमान की कहानी पीटर ऑफ़ प्रोवेंस की कहानी से अतुलनीय रूप से श्रेष्ठ है, इसलिए मुझे लगता है कि यह अत्यधिक असंभव है कि बाद वाली कहानी पहले वाली पर आधारित हो सकती है; या यह कि पहले वाली कहानी, यहाँ उल्लेखित बिंदुओं के अलावा, किसी अन्य कहानी से प्रेरित हो सकती है जिसकी नकल बाद वाली कहानी हो। पहली कहानी का मुख्य श्रेय मैं पूरी तरह से एक अरबी लेखक को देता हूँ। टिप्पणी 68. पाठक को यह बताना शायद अनावश्यक है कि कमर-एज़-ज़ेमान को मगी नगर में जिस खतरे का सामना करना पड़ा था, वह इस विचार के विपरीत है कि उनकी कहानी "हेज़र अफ़सानेह" से ली गई हो सकती है; अर्थात्, यह एक प्राचीन फ़ारसी मूल की कहानी है। इसी प्रकार, कहानी में आगे चलकर अल-असद के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया जाता है। टिप्पणी 69. "अल-इस्लाम" शब्द का प्रयोग अक्सर "मुसलमानों" के लिए किया जाता है। टिप्पणी 70. पिछली कहानी में, "भारत के सुदूर भागों के राजा" को "आबनूस द्वीप का स्वामी" कहा गया है। — खंड 1, पृष्ठ 143 देखें। टिप्पणी 71. जिस सिद्धांत के कारण मोहम्मद ने जुए के सभी खेलों पर प्रतिबंध लगाया था, उसी सिद्धांत का

उन्होंने वाणिज्य और उद्योग से संबंधित अपने कानूनों में भी कड़ाई से पालन किया, जैसे कि "मुसाका" और "मुज़ारा" के मामलों में। "मुसाका" का अर्थ है किसी व्यक्ति द्वारा अपने पेड़ों को किसी दूसरे व्यक्ति को सौंप देना, ताकि वह उनकी देखभाल करे और उन्हें पानी देकर उनकी उपज के एक निश्चित अनुपात (जैसे आधा, एक तिहाई या एक चौथाई) के बदले उन्हें बेहतर बनाए। मुज़ारा भूमि को सौंपना है, जिस पर इसी प्रकार की शर्तों पर खेती की जानी है।2* ऐसा प्रतीत होता है कि मोहम्मद ने बाद वाली प्रथा पर प्रतिबंध लगाया था, और परिणामस्वरूप कुछ परिस्थितियों में पहले वाली प्रथा पर भी। खदीज के पुत्र इलाफे कहते हैं, "मेरे दो चाचाओं ने मुझे बताया कि पैगंबर के साथी इस समझौते के तहत ज़मीन किराए पर देते थे कि बोने वाला अपना बीज बोएगा और छोटे तालाबों के किनारों पर जो कुछ भी उगेगा वह उनके लिए होगा; या वे ज़मीन का एक हिस्सा तय कर लेते थे और कहते थे, 'इस पर जो कुछ भी उगेगा वह हमारा है और बाकी तुम्हारा।' तब पैगंबर ने इसे मना कर दिया, क्योंकि शायद उस हिस्से पर कुछ भी न उगे:" यानी उसके एक हिस्से पर। लेकिन मोहम्मद के एक साथी ने यह भी कहा है, "निःसंदेह अल्लाह के पैगंबर ने इस अर्थ में मुज़ाराह को मना किया है, यह कहकर, 'इस हिस्से में जो कुछ भी पैदा होगा वह मेरा है और दूसरे हिस्से में तुम्हारा;' और निश्चित किराया तय किया और कहा, 'इसमें कोई डर नहीं है।' " इसलिए यह स्पष्ट है कि उन्होंने मुज़ाराह के कुछ ऐसे तरीकों को मना किया जो अनुचित थे। लेकिन मुझे लगता है कि यह भी स्पष्ट है कि उन्होंने उन मामलों में इस प्रथा को मना नहीं किया जिनमें भूमि के स्वामी और मजदूर दोनों को समान जोखिम उठाना पड़ता था। दूसरे खलीफा उमर ने लोगों के साथ यह समझौता किया कि यदि उन्हें बीज मिले तो उसकी आधी उपज उन्हें मिलेगी; और यदि मजदूर बीज लाएँ तो दो-तिहाई उनके लिए और शेष

उनके लिए होगा। स्वयं मोहम्मद ने भी, "खैबर के एक यहूदी को खैबर के पेड़ और जमीन इस शर्त पर सौंप दिए कि वह उन पर अपने खर्च पर काम करेगा और उसकी आधी उपज उन्हें देगा।"23—! 22 मिशकीत अल-मसीबच, खंड 2, पृष्ठ 48, टिप्पणी। 23 /tfew, खंड 2, पृष्ठ 48—51। II. 2 E

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.34%** है।

अध्याय दसवें के लिए 210 टिप्पणियाँ। मिस्र में भी ऐसी ही योजना अपनाए जाने पर अत्यंत प्रसन्नता होगी: इससे सरकार का राजस्व बहुत बढ़ जाएगा; और किसानों की मुख्य समस्या का समाधान हो जाएगा। जिस कहानी को यह टिप्पणी उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करती है, उसमें कमर-एज़-ज़ेमान केवल एक सहायक था, इसलिए बाग की उपज का एक चौथाई हिस्सा उसके लिए उचित पारिश्रमिक था। टिप्पणी 72, अध्याय 4 की टिप्पणी 25 देखें। टिप्पणी 73, अध्याय 6 की टिप्पणी 32 देखें। टिप्पणी 74, "हयात-एन-नुफूस" का अर्थ है "आत्माओं का जीवन"। टिप्पणी 75, उसने यह आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए किया। टिप्पणी 76, थामूद और 'आद प्राचीन अरबों की दो जनजातियाँ थीं, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे विशाल कद-काठी की थीं, और कुछ अपवादों को छोड़कर, वे अपनी हठी मूर्तिपूजा के कारण नष्ट हो गईं। 'आद जनजाति अधिक प्राचीन थी; लेकिन दोनों इब्राहीम के समय से पहले रहती थीं। टिप्पणी 77. मूल पाठ में, "अमतार" "मात्र" का बहुवचन है। "मात्र" और "मात्रह" शब्द लकड़ी या चमड़े के बड़े जार या बोतल के लिए प्रयोग किए जाते हैं, जिनका उपयोग पानी के लिए किया जाता है। टिप्पणी 78. मुझे "असाफीरी" नामक किसी प्रकार के जैतून के बारे में जानकारी नहीं है; और न ही मुझे यह नाम किसी शब्दकोश में मिलता है।

टिप्पणी 79. "ठीक इसी प्रकार, प्रोवेंस के पीटर ने मिस्र छोड़ते समय अपनी कीमती वस्तुओं को नमक से भरे बैरल में रखा; और सगोना द्वीप में सो जाने के बाद, जहाज उसे वहीं छोड़कर चला गया। मागुएलॉन के निवास स्थान पर पहुँचने पर, कप्तान ने उसे अस्पताल के उपयोग के लिए नमक के बैरल दे दिए, और उनमें उसे खजाना मिला।"23 टिप्पणी 80. यह विनम्रता की एक सामान्य अभिव्यक्ति है। एक अरब, अपने से श्रेष्ठ व्यक्ति को लिखते समय, अक्सर खुद को उसका दास कहता है। टिप्पणी 81. इससे हमें यह समझना चाहिए कि माली का कोई स्वाभाविक उत्तराधिकारी नहीं था। टिप्पणी 82. अरब देशों में इमली को आमतौर पर गोल, चपटी टिकियों के रूप में बनाया जाता है, जिनके बीच में एक छेद होता है। सूखने पर इन्हें एक साथ पिरोया जाता है। टिप्पणी 83. मुसलमानों को न केवल बार-बार और व्यर्थ में ईश्वर की कसम खाने की मनाही है, बल्कि विशेष रूप से किसी भी सृजित वस्तु की कसम खाने की भी मनाही है। हालाँकि, उनमें से कुछ ही ऐसे हैं जो इन दोनों निषेधों के विपरीत कार्य करने की आदत में नहीं हैं। उनकी सबसे आम शपथें "ईश्वर की कसम!" और "पैगंबर के अस्तित्व की कसम!" होती हैं, लेकिन वे अक्सर किसी सम्मानित व्यक्ति के जीवन की कसम भी खाते हैं; और जिस व्यक्ति को वे संबोधित कर रहे होते हैं, उसके जीवन, सिर या दाढ़ी की कसम भी खाते हैं। टिप्पणी 84. — बहुविवाह पर, 86. पिछली टिप्पणी 26 में मैंने लिंग पृथक्करण के कानून के कुछ लाभकारी परिणामों का उल्लेख किया है; यह समान लिंग और विभिन्न वर्गों के व्यक्तियों के बीच अधिक स्वतंत्र और व्यापक मेलजोल को बढ़ावा देता है, और मुसलमानों के बीच घरेलू सुख को बढ़ाने की प्रवृत्ति रखता है। अब मुझे इसी कानून के कुछ अन्य प्रभावों पर टिप्पणी करनी चाहिए। प्रथम, विवाह से पूर्व पुरुषों और महिलाओं के बीच यौन संबंध पर प्रतिबंध कुछ

लोगों के लिए तलाक की सुविधा को अपरिहार्य बना देता है; क्योंकि यह अन्यायपूर्ण होगा यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी से, जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा, अपनी अपेक्षाओं में निराश पाता है, तो उसे तलाक देने में सक्षम न होना। द्वितीय, यह कभी-कभी बहुविवाह की स्वतंत्रता को अपरिहार्य बना देता है; क्योंकि जो व्यक्ति अपनी पहली पत्नी को अपने लिए अनुपयुक्त पाता है, वह ऐसा नहीं कर सकता। 2* स्लीख मोहम्मद द्वारा हाशिये पर टिप्पणी 21 कीथली की कहानियां और लोकप्रिय कथाएं, पृष्ठ 88. 'इयाद। 26 अध्याय 9 का नोट 4।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.29%** है।

अध्याय दसवें पर टिप्पणियाँ। 211 उसे अभावग्रस्त किए बिना तलाक देने में सक्षम; और इस मामले में बहुविवाह की स्वतंत्रता उतनी ही आवश्यक हो जाती है जितनी कि दूसरे मामले में तलाक की। तीसरा, बहुविवाह की स्वतंत्रता महिलाओं की खुशी के लिए तलाक की सुविधा को अधिक वांछनीय बनाती है; क्योंकि जब किसी पुरुष की दो या अधिक पत्नियाँ होती हैं, और उनमें से एक अपनी स्थिति से असंतुष्ट होती है, तो वह उसे मुक्त करने में सक्षम होता है। चौथा, तलाक की स्वतंत्रता अक्सर बहुविवाह पर रोक का काम करती है; क्योंकि अपनी पहली पत्नी या उसके रिश्तेदारों के प्रभाव से दूसरी शादी करने पर उसे तलाक देने के लिए बाध्य होने का डर अक्सर एक पुरुष को ऐसा करने से रोकता है। इस प्रकार ये दोनों स्वतंत्रताएँ मुस्लिम समाज के संविधान के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत द्वारा आवश्यक हैं, और प्रत्येक कुछ नैतिक लाभ प्रदान करती है। इनकी उपयोगिता के प्रश्न पर विचार करते समय, हमें यह भी याद रखना चाहिए कि बांझपन गर्म जलवायु में समशीतोष्ण जलवायु की तुलना में कहीं अधिक आम है। ईसाई धर्म स्पष्ट रूप से बहुविवाह का

विरोध करता है; लेकिन जहाँ तक तलाक का सवाल है, कुछ लोगों का तर्क है कि यह केवल पत्नी को उसकी इच्छा के विरुद्ध छोड़ने से रोकता है, सिवाय एक कारण के।27 ईसाई अक्सर मुस्लिम कानूनों और सिद्धांतों की निंदा करने में सबसे अन्यायपूर्ण होते हैं, और विशेष रूप से उन कानूनों और सिद्धांतों की निंदा करते हैं जो मूसा संहिता और पवित्र पुरुषों के रीति-रिवाजों से सहमत हैं; जैसे बहुविवाह (जिसे मोहम्मद ने सीमित किया), तलाक, धर्म की रक्षा के लिए युद्ध, शुद्धिकरण और यहाँ तक कि छोटी-मोटी बातें भी।28 मोहम्मद ने बहुविवाह और तलाक के प्रमुख कारणों में से एक को दूर करने का प्रयास किया, यह सुझाव देकर कि एक पुरुष को उस महिला से मिलना चाहिए जिसे वह अपनी पत्नी बनाना चाहता है।29 हम कल्पना कर सकते हैं कि यदि उन्होंने अधिक स्वतंत्रता दी होती, जिससे पुरुष को अपनी पसंद की महिला के साथ उसके पुरुष या महिला रिश्तेदारों (जिनमें से महिलाएँ घूंघट में हो सकती हैं) की उपस्थिति में सीमित यौन संबंध बनाने की अनुमति मिलती, तो वे अपने अनुयायियों के बीच इन प्रथाओं को आज की तुलना में कम प्रचलित बना सकते थे, और हमेशा से ऐसा ही रहा है, बिना लिंगों के पृथक्करण के सामान्य कानून का उल्लंघन किए। लेकिन उन्होंने देखा कि ऐसी स्वतंत्रता शायद ही कभी दी जाएगी: अरबों में, निम्न वर्गों को छोड़कर, शायद ही कोई माता-पिता उस थोड़ी सी स्वतंत्रता की अनुमति देते हैं जिसकी उन्होंने सिफारिश की थी। कई पत्नियों की अनुमति देने के लिए उनकी निंदा करने के बजाय, मुझे लगता है कि यदि हम उनकी संख्या को कम करने और सीमित करने के लिए उनकी प्रशंसा करें तो हम अधिक तर्कसंगत होंगे। मुझे यह भी लगता है कि, जैसा कि मूसा ने अपने लोगों को अनुमति दी थी, उनके हृदय की कठोरता के कारण, अपनी पत्नियों को त्याग देना, और जब पूर्वजों ने बहुविवाह का अभ्यास किया

तब ईश्वर ने इसकी निंदा नहीं की, शास्त्रों में विश्वास करने वालों के रूप में हमें अधिक सुसंगत होना चाहिए यदि हम इन प्रथाओं की अनुमति को उनके निषेध की तुलना में नैतिकता के लिए अधिक सहायक मानते हैं, उन लोगों के बीच जो प्राचीन जेन के समान थे जिन्हें मूसा ने ऐसी स्वतंत्रता दी थी। जहाँ तक मोहम्मद द्वारा स्वयं को दूसरों की तुलना में अधिक पत्नियाँ रखने के विशेषाधिकार का सवाल है, मैंने कहीं और टिप्पणी की है कि ऐसा करने में, वे पुरुष संतान की कमी से प्रेरित हो सकते हैं न कि कामुकता से; हालाँकि, ऐसा लगता है कि वे इन दोनों उद्देश्यों से प्रभावित थे। "बहुविवाह के विषय पर," एक हालिया लेखक, जिसने मुस्लिम संस्थाओं और उनके प्रभावों का गहन अध्ययन किया है, कहते हैं, "एक यूरोपीय को एक तुर्की महिला के साथ चर्चा में पूरा लाभ होता है, क्योंकि उसकी भावनाएँ निश्चित रूप से अपने विरोधियों के पक्ष में होती हैं; लेकिन फिर उसके पास दोनों प्रणालियों के व्यावहारिक प्रभावों की तुलना में और व्यापक रूप से फैले हुए उत्तर देने की जबरदस्त क्षमता होती है। यूरोप की निर्दयता और दुराचार की अफवाहें। हमारी आदतों और कानूनों की सभी मान्यताएँ उस देश के विरुद्ध शत्रुतापूर्ण रूप से खड़ी हैं जहाँ बहुविवाह के सिद्धांत को राज्य के कानूनों में स्वीकार किया जाता है; लेकिन फिर भी, जब हम इस्लामवाद पर बहुविवाह का आरोप लगाते हैं, तो इस्लामवाद भी हम पर आरोप लगा सकता है। "हंगरी के प्रोटेस्टेंट इस मामले में दिए जा सकने वाले तर्क को स्वीकार करते हैं। मैं 'अपरिवर्तनीय घृणा' का दोषी हूँ।" - उर्कहार्ट की 'स्पिरिट ऑफ द ईस्ट', खंड 2, पृष्ठ 416। जब मैं पहली बार पूर्व गया था, तो मैंने उंगलियों से खाने की प्रथा का पालन न करने का निश्चय किया था; हालाँकि, जब मैंने पहली बार ऐसा करते देखा, तो मैंने तुरंत उस प्रथा को अपना लिया और उसे जारी रखा। मैंने उत्तर दिया, "इसे 'पशुवत तरीका'

मत कहो: इसे जानवरों का तरीका कहो।" 29 देखें मजशकत अल-मसिबीह, खंड 2, पृष्ठ 81, हमारे प्रभु और उनके प्रेरित।" लेकिन कुछ बहाना

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.90%** है।

अध्याय दसवें के लिए 212 टिप्पणियाँ। व्यावहारिक बहुविवाह के साथ, जो कानून द्वारा अस्वीकृत और रीति-रिवाज द्वारा निंदनीय है, नैतिक पतन के साथ-साथ मानसिक पतन को भी बढ़ाता है।"30 - यह भी ध्यान देने योग्य है कि बहुविवाह को मान्यता देकर मोहम्मद ने इस प्रथा को सामान्य नहीं बनाया: बल्कि, वे ऐसा कर ही नहीं सकते थे। यह कठोर हृदय वालों के लिए एक छूट है, जो उन्हें बुरे आचरण से रोकती है, और कुछ मामलों में, जैसा कि पहले ही दिखाया जा चुका है, कोमल हृदय वालों के लिए एक सहारा है। "यह अनुमति," ऊपर उद्धृत लेखक कहते हैं, "पुरुषों और महिलाओं के अनुपात को नहीं बदलती है।" अतः, यद्यपि प्रकृति का नियम समुदाय के संदर्भ में इस प्रथा को असंभव बनाता है, फिर भी यह उन कुछ लोगों के बीच और भी अधिक प्रतिबंधित है जिनके पास इसमें लिप्त होने के साधन हैं, क्योंकि इससे घरेलू अशांति उत्पन्न होती है और यह सार्वजनिक निंदा और बदनामी का पात्र है।1 — मैंने अपने पिछले लेख में उल्लेख किया है कि बहुविवाह निम्न वर्गों की तुलना में उच्च और मध्यम वर्गों [मिस्र में, और मेरा मानना है कि अन्य अरब देशों में भी] में अधिक दुर्लभ है; और निम्न वर्गों में यह बहुत आम नहीं है। एक गरीब आदमी दो या दो से अधिक पत्नियों से अपना भरण-पोषण कर सकता है, जिनमें से प्रत्येक किसी न किसी कला या व्यवसाय से लगभग अपनी जीविका स्वयं ही चला सकती है; लेकिन उच्च और मध्यम वर्ग के अधिकांश लोग खर्च और असुविधा के कारण ऐसा करने से हिचकते हैं। जिस व्यक्ति की

पत्नी बांझ होती है, और वह उससे इतना अधिक जुड़ा होता है कि उसे तलाक नहीं दे सकता, वह कभी-कभी केवल संतान प्राप्ति की आशा में दूसरी पत्नी ले लेता है; और एक ही मकसद से, वह तीसरी और चौथी भी ले सकता है; लेकिन चंचल वासना बहुविवाह और बार-बार तलाक दोनों का सबसे स्पष्ट और सामान्य कारण है। ऐसे लोग अपेक्षाकृत कम हैं जो इस वासना को पहले तरीके से संतुष्ट करते हैं। मेरा मानना है कि बीस पतियों में से एक से अधिक की दो पत्नियां नहीं होतीं।32 मुझे उम्मीद है कि मैंने यह स्पष्ट कर दिया है कि, हालांकि मैं मुस्लिम समाज की संरचना में बहुविवाह को आवश्यक मानता हूं, ताकि उस दुराचार को रोका जा सके जो यूरोपीय देशों में इतनी अधिक मात्रा में प्रचलित दुराचार से भी बदतर होगा, जहां घनिष्ठ आपसी परिचय के बाद विवाह बंधन में बंध जाते हैं, मैं इसे एक आवश्यक बुराई मानता हूं। — जब एक ही पुरुष की दो या दो से अधिक पत्नियां एक साथ रहती हैं, या जब वे एक-दूसरे से मिलने जाती हैं, तो आम तौर पर ईर्ष्या की भावना महसूस की जाती है, और अक्सर प्रकट भी होती है, खासकर उस पत्नी या पत्नियों की ओर से जो दूसरी या अन्य पत्नियों से पहले शादी करने के कारण या पति द्वारा अधिक पसंद किए जाने के कारण वरीयता का दावा नहीं कर सकतीं।33 पहली शादी करने वाली पत्नी आमतौर पर सर्वोच्च स्थान रखती है: इसलिए माता-पिता अक्सर अपनी बेटी का विवाह ऐसे पुरुष से करने पर आपत्ति जताते हैं जिसकी पहले से ही दूसरी पत्नी हो; और अक्सर ऐसा होता है कि जिस स्त्री से विवाह का प्रस्ताव रखा जाता है, वह इस तरह के विवाह का विरोध करती है। कानून बहुविवाह से उत्पन्न असुविधाओं को कुछ हद तक कम करने का प्रावधान करता है, प्रत्येक पत्नी को अलग आवास का अधिकार देता है, जिसमें सोने, खाना पकाने आदि की सुविधाएँ उपलब्ध हों; और पति को हर मामले में अपनी पत्नियों के प्रति

निष्पक्ष रहने का निर्देश देता है। लेकिन संतानोत्पत्ति और असाधारण सुंदरता ऐसे गुण हैं जो अक्सर दूसरी, तीसरी या चौथी पत्नी को पहली पत्नी का स्थान लेने में सक्षम बनाते हैं; हालाँकि कई मामलों में, जैसा कि मैंने एक अन्य टिप्पणी में उल्लेख किया है, स्थायी पसंदीदा सबसे सुंदर नहीं होती है। फिर भी, सह-पत्नियों के दिलों में सच्चे स्नेह के अनेक उदाहरण मिलते हैं। आधुनिक मिस्र के इतिहासकार अल-जबार्टी के पिता की दो पत्नियों की निम्नलिखित कहानी, जो स्वयं उनके द्वारा सुनाई गई है और निर्विवाद रूप से सत्य है, एक सुखद उदाहरण है। — इन दो पत्नियों में से पहली के बारे में बात करते हुए, इतिहासकार कहते हैं, — "उसके वैवाहिक धर्मपरायणता और समर्पण के कार्यों में से एक यह था कि वह 30 उर्कुनार्ट की 'स्पिरिट ऑफ द ईस्ट', खंड ii, पृष्ठ 415 "चोट" खरीदा करती थी, क्योंकि साथी पत्नियां आमतौर पर एक-दूसरे के साथ हानिकारक व्यवहार का अनुभव करती हैं। 416. मैं यहां "हरम का जीवन" और "महिलाओं की स्थिति" पर इसके दो अध्यायों को पढ़ने की सिफारिश कर सकता हूं, जिसे मुझे लगता है कि इसका सबसे उपयुक्त भाग है। आम बोलचाल की अरबी में "दार्राह" शब्द (एक ज़ोरदार 'd' के स्थान पर नरम और 'a' के स्थान पर 'u' का प्रयोग करके) "दुर्राह" उच्चारित किया जाता है, जिसका सही अर्थ है "एक 31 वही।" तोता।" "सहपत्नी का जीवन कड़वा होता है" 32 आधुनिक मिस्रवासी, खंड i. अध्याय vi. ("'ईशेत एड-दुर्राह रनूर्राह") एक आम कहावत है। 33 अरबी में सहपत्नी को "दार्राह" क्रिया कहा जाता है। — मेरे एक शेख के हाशिये पर लिखे नोट्स में से एक शब्द "दारार" से लिया गया है, जिसका अर्थ है कनियार-एज़-ज़ेनुइन की कहानी।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.22%** है।

अध्याय दसवें पर टिप्पणियाँ। 213 उसने अपने पति के लिए सुंदर रखैल दासियाँ खरीदीं, उन्हें अपने धन से आभूषणों और वस्त्रों से सजाया, और उन्हें उसके सामने प्रस्तुत किया, इस विश्वास के साथ कि उसे इस आचरण के लिए [स्वर्ग में] पुरस्कार और प्रतिफल मिलेगा। उसने उसके अलावा कई अन्य स्वतंत्र महिलाओं से भी विवाह किया और दासियाँ खरीदीं, लेकिन इसके परिणामस्वरूप उसमें वह ईर्ष्या नहीं आई जो आमतौर पर महिलाओं में होती है। अन्य विचित्र घटनाओं में से एक यह थी। इस संस्मरण के विषय [लेखक के पिता] ने जब 1156 ईस्वी (1743-4 ई.) में तीर्थयात्रा की, तो मक्का में उनकी मुलाकात शेख उमर अल हलाबसे से हुई, जिन्होंने उन्हें एक श्वेत दासी खरीदने का आदेश दिया, जो कुंवारी हो, अभी तक वयस्क न हुई हो और उसमें कुछ अन्य गुण हों। तीर्थयात्रा से लौटने पर, उन्होंने दास व्यापारियों के बीच दासियों की खोज की, ताकि उनमें से अपनी पसंद की दासी चुन सकें, और तब तक खोजते रहे जब तक उन्हें अपनी मनचाही दासी नहीं मिल गई और उन्होंने उसे खरीद लिया। वे उसे अपनी पत्नी के पास ले आए, ताकि वह उसके साथ तब तक रहे जब तक कि वे उसे उस व्यक्ति के साथ न भेज दें जिसे उन्हें यात्रा के लिए उसे सौंपने का आदेश दिया गया था; और जब उसके प्रस्थान का समय आ गया, तो उन्होंने अपनी पत्नी को इसकी सूचना दी, ताकि वह यात्रा के लिए भोजन और अन्य आवश्यक वस्तुएं तैयार कर सके। लेकिन उसने उनसे कहा, 'मुझे इस दासी से बहुत प्रेम हो गया है, और मैं उससे वियोग सहन नहीं कर सकती।' मेरे कोई बच्चे नहीं हैं, और मैंने उसे बेटी की तरह अपनाया है।' लड़की भी रो पड़ी और बोली, 'मैं अपनी मालकिन से कभी अलग नहीं होऊंगी, न ही कभी उसे छोड़ूंगी।' 'तो फिर क्या किया जाए?' उसने पूछा। उसने उत्तर दिया, 'मैं अपनी संपत्ति से उसकी कीमत चुका दूंगी, और तुम दूसरी खरीद लो।'

उसने ऐसा ही किया। तब उसने लड़की को मुक्त कर दिया, विवाह अनुबंध द्वारा उसे उसे सौंप दिया, उसका सामान तैयार किया और उसके लिए एक अलग कमरा तैयार किया; और उसने उसे 65 ईस्वी में अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया। उसकी पूर्व पत्नी उससे एक घंटे के लिए भी अलग नहीं रह सकती थी, यद्यपि वह उसकी सहपत्नी बन चुकी थी और उसे बच्चे भी दे चुकी थी। उपर्युक्त 82 ईस्वी में, मुक्त की गई दासी बीमार पड़ गई, और वह (पहली पत्नी) अपनी सहेली की बीमारी के कारण बीमार पड़ गई। बीमारी दोनों पर हावी हो गई; और सुबह दासी उठी, और अपनी मालकिन को देखा जब वह मरने वाली लग रही थी, और रोते हुए बोली, 'हे मेरे ईश्वर और मेरे प्रभु, यदि तूने मेरी मालकिन की मृत्यु का निश्चय किया है, तो मेरा दिन उसके दिन से पहले कर दे।' फिर वह लेट गई, और उसकी बीमारी बढ़ गई, और अगली रात उसकी मृत्यु हो गई; और उन्होंने उसे उसकी मालकिन के पास लपेट दिया। और उसकी मालकिन रात के अंत में जाग उठी, और उसे हाथ से छूकर कहने लगी, 'ज़ेलीखा! ज़ेलीखा!'34 उन्होंने उससे कहा, 'वह सो रही है।' लेकिन उसने उत्तर दिया, 'मेरा हृदय कहता है कि वह मर चुकी है: और मैंने अपने सपने में ऐसा कुछ देखा जिससे इस घटना का संकेत मिला।' तब उन्होंने उससे कहा, 'तेरी आयु लंबी हो!'35 और जब उसने इस बात की पुष्टि कर ली, तो वह उठी, और बैठ गई, और बोली, 'उसके बाद मेरे लिए कोई जीवन नहीं बचा है।' और वह सुबह होने तक रोती-बिलखती रही, जब उन्होंने दासी के शीघ्र अंतिम संस्कार की तैयारी शुरू की; उन्होंने उसके सामने शव को धोया और उसे कब्र में ले गए। फिर वह अपने बिस्तर पर लौट आई और मृत्यु की पीड़ा में तड़पने लगी, और दिन ढलते ही उसकी मृत्यु हो गई; और अगले दिन उन्होंने उसके शव को उसी प्रकार कब्र में ले गए। — यह उन सबसे विचित्र चीजों में से एक थी जिन्हें मैंने देखा,

अनुभव किया और याद रखा है। उस समय मेरी उम्र चौदह वर्ष थी।"36 नोट 85. "अल-अमजद" का अर्थ है "अधिक या सबसे गौरवशाली।" नोट 86. "अल-असद" का अर्थ है "अधिक या सबसे भाग्यशाली, समृद्ध या सुखी।" नोट 87. मैं यहाँ एक ऐसी व्याख्या छोड़ रहा हूँ जो हर व्यक्ति को घृणा उत्पन्न कर सकती है। * यह दासी का नाम था। "कौन मर गया है?" नाम बताइए। 33 किसी व्यक्ति को यह सूचित करने का यह सामान्य तरीका है कि कोई दूसरा व्यक्ति मर गया है। कई लोग इसी मामले में कहते हैं, 'आप जीवित रहें!' और फिर, पूछे जाने पर, 36 आधुनिक मिस्र का इतिहास (एमएस. मेरे पोस्टसेशन में), खंड 1. उड़ान के वर्ष का शोक संदेश 1188।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.45%** है।

अध्याय दसवें के लिए 214 टिप्पणियाँ। अच्छे स्वाद के संदर्भ में। इस मामले में, और इसी तरह के कई अन्य मामलों में, पुराना संस्करण मूल पाठ से मेल खाता है, कम से कम तब तो यह मूल पाठ के प्रति पूरी तरह से वफादार रहता है जब ऐसा होना बिल्कुल अनावश्यक होता है, और तब बेवफा हो जाता है जब वफादारी सबसे अधिक वांछनीय होती है। जो व्यक्ति मूल पाठ से परिचित नहीं है, उसे सूचित किया जाना चाहिए कि इसमें कई ऐसे अंश हैं जो ऐसा प्रतीत होता है मानो किसी कॉफी शॉप में सार्वजनिक रूप से कविता पाठ करने वाले के सबसे निचले वर्ग के श्रोताओं को संतुष्ट करने के लिए जोड़े गए हों। ये अंश हमें उच्च पदस्थ पुरुषों और महिलाओं को ऐसी अशिष्टता से चित्रित करते हैं जो निश्चित रूप से निम्न वर्ग के अरबों में असामान्य नहीं है; लेकिन मैं इससे अधिक कुछ नहीं कह सकता; क्योंकि यद्यपि यहाँ उल्लिखित मामलों में हमारे मूल पाठ को उचित ठहराने के लिए कई उपाख्यान प्रस्तुत किए जा सकते

हैं, वे स्पष्ट रूप से संदिग्ध स्रोत के हैं। यह अत्यंत संभव है कि हारून-एर-रशीद अक्सर अबू-नुवास को उनके हरम में घटी घटनाओं का अतिरंजित या यहाँ तक कि मनगढ़ंत वर्णन सुनाकर उनकी चतुराई का इस्तेमाल करते थे; और इससे भी अधिक, यह कि अबू-नुवास अपने मित्रों को ये किस्से सुनाते समय सच्चाई की कहीं अधिक अवहेलना करते थे। टिप्पणी 88. इस श्रृंखला में टिप्पणी 8 देखें। — पत्र के साथ अपने बालों की रेशमी मालाएँ भेजकर, हम यह समझते हैं कि महिला ने अत्यंत विनम्रता का प्रमाण देने का इरादा किया था। बालों को स्वयं भेजकर यही अर्थ अधिक सशक्त तरीके से व्यक्त किया गया है। इस प्रकार, जब 564 ईस्वी (1168 ई.) में फ्रैंकों ने काहिरा को घेर लिया, तो फातिमा वंश के अंतिम खलीफा अल-अदीद ने सीरिया के सुल्तान नूर-ए-दीन महमूद को सहायता की गुहार लगाते हुए पत्र भेजे और उनके साथ अपनी स्त्रियों के बाल भी भेजे,37 ताकि उनकी और अपनी अधीनता प्रदर्शित की जा सके। टिप्पणी 89. यह उन अंशों में से एक है जिनका उल्लेख इस श्रृंखला की टिप्पणी 8 के अंत में किया गया है। टिप्पणी 90. "दूसरे के दुख को पीना" से तात्पर्य "उसके दुख को देखकर उसमें भागीदार होना" है। यही और इसी तरह का एक और वाक्यांश कुछ ही समय बाद आता है, जहाँ अर्थ अधिक स्पष्ट है। टिप्पणी 91. यहाँ जिसे "कोषाध्यक्ष" (सामान्य उच्चारण "खज़िंदर") कहा गया है, उसे ब्रेस्लाउ संस्करण में "अमीर जेंदर" और पुराने संस्करण में "गियॉन्डर नामक एक अमीर" कहा गया है। डॉ. स्कॉट ने "गियॉन्डर" को "जेहौं-दार" में परिवर्तित किया है। लेकिन "जेंडर" एक उचित नाम नहीं है। यह शब्द, जिसे अधिक उचित रूप से "जंदार" लिखा जाता है, मिस्र के सुल्तानों के अधीन अधिकारियों के एक वर्ग की उपाधि थी, जिनका कर्तव्य सुल्तान के द्वार की रक्षा करना, अमीरों के संबंध में उनके आदेशों को संप्रेषित या लागू करना और

ज़र्दाखाना नामक कारागार की रक्षा करना था, जिसमें उच्च पदस्थ व्यक्तियों को रखा जाता था। अमीर जेंदर इन अधिकारियों का प्रमुख था। यह ध्यान देने योग्य है कि प्रस्तुत रचना उन सुल्तानों के पदों का बहुत ही अपूर्ण परिचय प्रस्तुत करती है, जिनके शासन को तुर्की विजेता सलीम ने उखाड़ फेंका था। सीरिया और मिस्र पर तुर्की विजय (1517 ई.) के बाद रचित या पुनर्गठित किसी भी रचना में ऐसी ही स्थिति की अपेक्षा की जा सकती है। टिप्पणी 92. यह प्रार्थना ईश्वर को संबोधित है। टिप्पणी 93. जब ईश्वर किसी चीज की इच्छा करता है, तो वह उससे कहता है, "हो जा," और वह हो जाती है।33 टिप्पणी 94. मूल पाठ में, अल-असद के मुख से तीन कविताएँ कही गई हैं। जो मैंने दी है वह उनमें से दूसरी है। टिप्पणी 95. सरब (जिसे आमतौर पर यूरोपीय लोग "मृगतृष्णा" कहते हैं) वह अद्भुत वाष्प है जो अक्सर रेगिस्तान में दिखाई देती है, प्यासे यात्री को झील का आभास कराकर परेशान करती है। यह भ्रम इतना पूर्ण है कि मैंने इब्न-एश-शेहने को देखा है। [अल-मकरीज़े भी, -खितात; अल-फुस्तात के विनाश का विवरण; थोड़े से बदलाव के साथ। इसी घेराबंदी में अल-अदीद का शासनकाल था। - संपादक] पुराने शहर को, जिसे अब गलती से मिस्र (या 3एस हाशिये पर मेरे शेख द्वारा टिप्पणी। यह कहावत, मिस्र) अल-अतीक:इह को वेज़ीर श्तफ़्वीर के आदेश पर जला दिया गया था; यह आग 51 दिनों तक चली, कुर-इउ।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.80%** है।

एस टू चैप्टेल टेन्थ. 215 इसके भीतर या इसके बाहर स्थित वस्तुओं की वंशावली इसकी सतह द्वारा स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित होती है।— जिस श्लोक में इस वाष्प का उल्लेख है, उसमें "कहल" शब्द, जिसका मैंने अनुवाद "काली किनारी वाली पलक" किया है, का शाब्दिक अर्थ है

"आँख में पाई जाने वाली प्राकृतिक कालिमा, जो काजल नामक पाउडर से उत्पन्न कृत्रिम कालिमा के समान है।" टिप्पणी 96. यह वाक्य मैंने ब्रेस्लाउ संस्करण से लिया है। टिप्पणी 97. एक छोटा प्रार्थना कक्ष, जिसमें मक्का की दिशा दर्शाने वाला एक आला होता है, 19 अक्सर मुस्लिम देशों में किसी झरने, कुएँ, जलाशय या एक बड़े पानी के घड़े के किनारे देखा जाता है, जिसे यात्रियों के उपयोग के लिए प्रतिदिन भरा जाता है। कभी-कभी इसे विश्राम स्थल के रूप में भी बनाया जाता है, जो उत्तर की ओर खुला एक छोटा, छत वाला कक्ष होता है। टिप्पणी 98. काले द्वीपों के युवा राजा की कहानी में, मुसलमानों, ईसाइयों, यहूदियों और मगी लोगों, जो उनकी प्रजा थे, को क्रमशः परिवर्तित किया गया था। सफेद, नीला, पीला और लाल रंग की मछलियाँ; और यहाँ एक मजीयन का वर्णन लाल पगड़ी पहने हुए किया गया है। जब ईसाइयों और यहूदियों को क्रमशः नीली और पीली पगड़ी पहनकर अपनी पहचान स्पष्ट करनी पड़ी (जैसा कि अध्याय 2 के नोट 55 में उल्लेख किया गया है), और सफेद पगड़ी मुसलमानों की विशेषता बन गई, तो सामरियों को भी लाल पगड़ी पहननी पड़ी; और ऐसा लगता है कि हमारे लेखक ने इसी कारण से लाल रंग को मजीयनों का विशिष्ट रंग बनाया है; क्योंकि अल-मकरीज़ी द्वारा सामरियों के अपने विवरण में उद्धृत एक अरब लेखक159 कहता है कि इस बाद वाले लोगों के सिद्धांत यहूदी धर्म और मुस्लिम धर्म का मिश्रण थे।— मुझे लगता है कि यह व्याख्या उस व्याख्या से अधिक संभावित है जो तुर्की शब्द "किज़िलबाश" या "लाल सिर" से निकाली जा सकती है, जो तुर्कों द्वारा एक फारसी को दिया गया उपनाम था, और फारसियों द्वारा स्वयं भी इसी नाम का प्रयोग किया गया था। ऐसा कहा जाता है कि यह शब्द सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ में शाह इस्माइल के अधीन फारसी सैनिकों द्वारा पहनी जाने वाली लाल टोपी से लिया गया है।

मैं पहले प्रस्तावित व्याख्या को प्राथमिकता देता हूँ क्योंकि यह ऊपर उल्लिखित सभी मछलियों के विशिष्ट रंगों की व्याख्या करती है। टिप्पणी 99. "ग़दबन" का अर्थ है "क्रोधित" या "गुस्से में"। टिप्पणी 100. इस अनुच्छेद का शेष भाग ब्रेस्लाउ संस्करण से लिया गया है। — यहाँ मैं यह उल्लेख करना चाहूँगा कि पुराने संस्करण में, बूढ़ा व्यक्ति अपनी "बेटियों, बोस्तामा और कावामा" को अल-असद को यातना देने का आदेश देता है: ब्रेस्लाउ संस्करण में, कहा गया है कि उसने अपनी "बेटी बुस्तान और दासी कवाम" को यह काम सौंपा था। इससे पता चलता है कि वह वही व्यक्ति है जिसका उल्लेख बाद में बहरीन के नाम से किया गया है; जो काहिरा संस्करण में इतनी स्पष्ट रूप से नहीं दिखाया गया है। इस संस्करण के अनुसार, मैंने यहाँ बहरीन की बेटी का उल्लेख नहीं किया है; मुझे लगता है कि कहानी के अंत में एक घटना को अल-असद को यातना देने वाली के रूप में वर्णित करके अनावश्यक रूप से अविश्वसनीय बना दिया गया है। टिप्पणी 101. - माजियाई अग्नि उत्सवों पर। चूंकि यह कहानी माजियाई धर्म से शायद ही कोई परिचय दर्शाती है, इसलिए मुझे उस जाति के अनुष्ठानों के संदर्भों का कोई स्पष्टीकरण देना लगभग अनावश्यक लगता है। "नीला सागर और अग्नि पर्वत" को मैं पूरी तरह से काल्पनिक मानता हूँ। लेकिन वर्ष के एक विशेष समय में, "अग्नि उत्सव" (जैसा कि बाद में कहा गया है) के अवसर पर मानव बलि का विचार, दो माजियाई उत्सवों के अनुष्ठानों की एक अस्पष्ट धारणा से लिया गया हो सकता है। इनमें से पहला अदुर या अज़ूर महीने में मनाया जाता था, जो (फ़ारस के मध्य युग को छोड़कर, जब कैलेंडर में परिवर्तन किया गया था) नवंबर के महीने के साथ मेल खाता था। जिस देवदूत के नाम पर इस महीने का नाम रखा गया है, वह अग्नि का स्वामी था; जिसके परिणामस्वरूप, नौ तारीख को, उसके नाम दिवस पर, पूरा देश जलते हुए

चिताओं से जगमगा उठा; जबकि ज्ञानी पुरुषों ने, ज़ोरोएस्टर के आदेशानुसार, पूरे साम्राज्य में उस तत्व के सभी मंदिरों का बड़े ही धूमधाम से दौरा किया, जो इस अवसर पर शानदार ढंग से सजाए और प्रकाशित किए गए थे। इस दिन नाखून काटना और बाल मुंडवाना धार्मिक महत्व का माना जाता था, इस विचार के साथ कि, उसकी "क्लिटैट" (आग पर विजय प्राप्त करने के लिए)।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.84%** है।

अध्याय t E के 210 नोट्स: इन उभारों के साथ, उन्होंने अपने सभी पापों और दोषों को भी त्याग दिया।"4"—अगले महीने (देई) में, "11वें, या देवदूत के दिन," राज्य भर में लिरे का दूसरा "महान उत्सव" मनाया गया; इस उत्सव की उत्पत्ति के लिए, कई पारंपरिक कारण बताए गए हैं; उनमें से एक विचित्र है: कहते हैं कि एक बार, उस दिन की वर्षगांठ पर, शीत ऋतु ने नरक से आने का मन बना लिया, जो उसके लिए बहुत गर्म प्रतीत होता था, इसलिए उनके पूर्वजों ने उसे यह विश्वास दिलाने के लिए कि वह और भी अधिक नरकीय स्थान पर पहुँच गया है, और उसे पृथ्वी से वापस अंधकार की छाया में धकेलने के लिए तुरंत आग के ढेर जला दिए। रात्रि के वैभव के सामान्य दृश्य को बेहतर बनाने के लिए, इस अवसर पर, राजा और उसके दरबारी जंगली जानवरों और पक्षियों से बंधी सूखी जड़ी-बूटियों के बड़े गुच्छों में आग लगा देते थे, जिन्हें फिर छोड़ दिया जाता था, जिससे खेत, पहाड़, और हवा में तुरंत ही एक सार्वभौमिक अस्थायी ज्वाला फैल गई, जो अक्सर आस-पास के जंगलों में आकस्मिक आग लगने से और भी तेज हो जाती थी, जहाँ भयभीत जानवर स्वाभाविक रूप से शरण लेने के लिए भाग जाते थे। . . . इसी तरह की एक प्रथा इस शताब्दी में इंग्लैंड में भी प्रचलित थी; श्रॉपशायर और अन्य स्थानों में

बारहवीं रात को, सर्दियों को विदाई देने और वसंत का स्वागत करने के लिए, पहाड़ों की चोटियों और अन्य ऊंचे स्थानों पर अलाव जलाने की प्रथा थी। इस महीने की 15 तारीख एक और विलक्षण समारोह के लिए उल्लेखनीय थी: वे मिट्टी या पेस्ट से कई मूर्तियाँ बनाते थे, जो उन मृत व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करती थीं जिन्हें वे सम्मानित करना चाहते थे, जिन्हें वे सबसे सार्वजनिक स्थानों पर, विशेष रूप से जहाँ कई सड़कें या गलियाँ मिलती थीं, रखते थे और उन्हें बड़ी श्रद्धापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद, उन्हें बहुत औपचारिकता के साथ जला देते थे।'11 - क्या इस अंतिम प्रथा ने अरबों के बीच इस आम धारणा को जन्म नहीं दिया होगा कि मागी लोग मानव बलि देते थे? नोट 102. - सूफी पर। इस विशिष्ट अंश पर, मेरे शेख हाशिये में टिप्पणी करते हैं कि सूफी संप्रदाय के लोगों में यह आम बात है कि वे अपने कष्टों को बढ़ाने की प्रार्थना करते हैं। सूफी संप्रदाय को या तो अरबी शब्द "सूफ" से यह नाम दिया गया है, जिसका अर्थ "ऊन" है, क्योंकि वे ऊनी वस्त्र पहनते हैं, या ग्रीक शब्द "क्रॉटिब्स" से, क्योंकि उनके दार्शनिक सिद्धांत ऊनी हैं। मुस्लिम दरवेशों का एक संप्रदाय है जिसे सूफी कहा जाता है, "जो आम दरवेशों की तुलना में अधिक नियमित और चिंतनशील जीवन का पालन करते हैं; और इस वर्ग के कई लोगों ने आध्यात्मिकता, भक्ति और चिंतन पर पुस्तकें लिखी हैं, जिन्हें अधिकतर 'तसुवुफ' यानी आध्यात्मिक जीवन की पुस्तकें कहा जाता है।"42 मिस्र में इस संप्रदाय का पहला मठ सलाहुद्दीन द्वारा स्थापित किया गया था, जिन्हें यूरोपीय लेखक आमतौर पर सलादीन कहते हैं। लेकिन सूफी की उपाधि कई ऐसे लोग भी धारण करते हैं जो दरवीशों के इस संप्रदाय से संबंधित नहीं हैं -1, वे लोग जो चिंतन और दार्शनिक धर्म का जीवन व्यतीत करते हैं; और इस वर्ग में कई उत्कृष्ट पुरुष हैं, जो सुसमाचार के नैतिक और अन्य अधिकांश सिद्धांतों का विशेष आदर करते

हैं। उनका मूल सिद्धांत ईश्वर प्रेम प्रतीत होता है। सुन्नी सूफी काफी हद तक रहस्यवादी और उदारवादी हैं; लेकिन फारसी संप्रदाय के सूफियों जितने नहीं। टिप्पणी 103. ब्रेस्लाउ संस्करण और पुराने संस्करण में यही स्थिति है। काहिरा संस्करण में, समुद्र द्वारा दूरी छह महीने बताई गई है। बेहतर पाठ "चार महीने" है, क्योंकि यह शहर स्पष्ट रूप से वही शहर है जिसके पड़ोस में कमरज़ेमान माली के साथ रहते थे। कहा जाता है कि दोनों राजकुमारों ने तीन महीनों में वह यात्रा पूरी की जिसमें आमतौर पर एक साल लगता था; इसलिए हमें यह मानना होगा कि उन्होंने इतने कम समय में एक ऐसे कठिन मार्ग से यात्रा की जो आम तौर पर अपनाया नहीं जा सकता था और कारवां के लिए अव्यवहारिक था। शहर की पहली खोज पर अल-अमजद की टिप्पणी से यही संकेत मिलता है। नोट 104. मुसलमान मानते हैं (और मेरा मानना है कि वे अपने इस मत की पुष्टि में अपने पैगंबर का एक कथन भी उद्धृत करेंगे) कि किसी गली या अन्य स्थान पर खाना अनुचित है जहाँ *° रिचर्डसन का शब्दकोश, फ़ारसी, अरबी, और *2 डी'हर्बेलोट, बिब्लियोथेक ओरिएंटिटेल, लेख। अंग्रेज़ी (जॉनसन का संस्करण), स्वर "नुइह।" "सोफी।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.40%** है।

अध्याय दसवें के लिए टिप्पणियाँ। «>17 बहुत से लोग गुजर रहे हैं; क्योंकि ऐसा करने वाला व्यक्ति सभी राहगीरों को नहीं दे सकता जो हिस्सा लेना चाहते हैं; और जब वह अपनी सारी सामर्थ्य दे चुका होता है, तो शेष को ईर्ष्यालु दृष्टि से देखा जा सकता है, जिससे वह हानिकारक या कम से कम लाभहीन हो जाता है। टिप्पणियाँ 105. आजकल, पूर्व के कई हिस्सों में, फ्रैंक ईसाई मुसलमान की तरह कपड़े पहन सकते हैं: लेकिन पहले, मुसलमानों को अन्य सभी लोगों से, विशेष रूप से पगड़ी के

रंग और आकार से अलग पहचाना जाता था। पूर्वी ईसाई और यहूदी, कुछ अपवादों को छोड़कर, अभी भी पगड़ी से पहचाने जाते हैं, जो आमतौर पर काले या नीले रंग की, या धूसर या हल्के भूरे रंग की होती है। — अध्याय 2 की टिप्पणी 55 और इस श्रृंखला की टिप्पणी 98 देखें। टिप्पणी 106. इसका अर्थ है, "तेरी सुंदरता निरंतर बढ़ रही है।"113 टिप्पणी 107. इस श्रृंखला की टिप्पणी 59 देखें। टिप्पणी 108. "भाले के कांटों" से शायद यह कहना अनावश्यक है कि यहाँ आँखों या पलकों को भेदने का तात्पर्य है। टिप्पणी 109. यह वाक्य कुरान के चौथे अध्याय के अड़तीसवें श्लोक से शुरू होता है। "जिसका नाम महान है" से हमारा सर्वप्रथम अर्थ ईश्वर है। मुसलमान कुरान को केवल ईश्वर के वचन के रूप में ही उद्धृत करते हैं, और ऐसा करते समय वे सामान्यतः कहते हैं, "जिसका नाम महान है उसने इस उत्तम पुस्तक में कहा है," - इस संदर्भ में वे पैगंबर का उल्लेख कभी नहीं करते, सिवाय इसके कि वे इस प्रकार के किसी वाक्यांश का प्रयोग करें, "ईश्वर ने अपने पैगंबर की वाणी से कहा है।" टिप्पणी 110. जिस शब्द का अनुवाद मैं "फूल" (अर्थात "सोहबे") करता हूँ, उसका अर्थ "एक शाखाओं वाला मोमबत्ती स्टैंड या कैंडलस्टैंड, जिसमें अनेक मोमबत्तियाँ हों" भी होता है। दोनों ही अर्थ यहाँ उपयुक्त होंगे। लेकिन शराब के संदर्भ में, इसका सामान्य अर्थ "फूलों का गुच्छा" होता है, जिसे अक्सर शराब परोसने के बर्तनों के बीच में मोमबत्ती स्टैंड में रखा जाता है।44 टिप्पणी 111. लकड़ी का ताला, जो अरब देशों में घरों और कमरों के दरवाजों के लिए आम तौर पर इस्तेमाल होता है, का वर्णन और चित्रण आधुनिक मिस्रियों पर मेरे काम की प्रस्तावना में दिया गया है। टिप्पणी 112. अध्याय iii की टिप्पणी 12 देखें। टिप्पणी 113. मेरे द्वारा रचित एक पांडुलिपि अरबी शब्दकोश में, मैंने देखा कि "सिदिल्लेह" (एक ऐसा शब्द जो मुझे किसी अन्य शब्दकोश में नहीं

मिलता) का एकमात्र अर्थ जो मैंने दिया है, वह "एक लंबी सीट या सोफा" है; और तदनुसार, एक पूर्व उदाहरण में (खंड i, पृष्ठ 122), मैंने इस शब्द के बहुवचन को, इससे पहले आने वाले "मस्तबाह" के साथ, "विभिन्न प्रकार की बेंच" के रूप में अनुवादित किया है। वर्तमान मामले में, मेरे शेख ने "सिदिल्लेह" के बहुवचन को "थोड़ी ऊँची जगहें, जैसे कि सुफ़्रेह" शब्दों से समझाया है; यह अंतिम शब्द "पत्थर की एक प्रकार की शेल्फ या चौखट" और "एक बेंच या सोफा" के लिए प्रयोग किया जाता है। काहिरा में "सिदिल्लेह" शब्द का प्रयोग बिना खिड़की वाले थोड़े ऊँचे स्थान और लगभग आधा फुट ऊँचे पत्थर के चबूतरे के लिए किया जाता है। टिप्पणी 114. यहाँ जिन कपड़ों का उल्लेख किया गया है, वे वे कपड़े हैं जो आमतौर पर शराब पार्टियों में पहने जाते थे। - अध्याय 3 (खंड 1, पृष्ठ 197) की टिप्पणी 22 देखें। टिप्पणी 115. यहाँ "सुफ़्रेह" का सबसे उपयुक्त अर्थ "एक गोल कपड़ा" प्रतीत होता है। गोल ट्रे वाली कुर्सी को भी सुफ़्रेह कहा जाता है; और यह शब्द चमड़े के एक गोल टुकड़े के लिए प्रयोग किया जाता है, जो भोजन के लिए मेज का काम करता है और जिसे आमतौर पर जमीन पर बिछाया जाता है; मुख्य रूप से यात्रियों द्वारा उपयोग किया जाता है, इसलिए इसका नाम सुफ़्रेह पड़ा। टिप्पणी 116. यह शब्द फ़ारसी और तुर्की भाषा का है, और इसका अर्थ है "साहसी," "बहादुर," "नायक।" अरब लोग इसका उच्चारण वैसे ही करते हैं जैसे मैंने लिखा है; फ़ारसी लोग इसे "बलुइदार" कहते हैं; और तुर्क लोग इसे "बेहादिर" कहते हैं। तुर्की और फ़ारसी नाम शेख मोहम्मद 'ईया द्वारा टिप्पणी में शामिल किए गए थे। ** अध्याय iii की टिप्पणी 22 देखें। (खंड i. पृष्ठ 2. 2 F)

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.81%** है।

अध्याय दसवें के लिए 218 टिप्पणियाँ। अब्बासी खलीफों के समय में अनीबों के लिए फुमिलुर, और बाद के समय में तो और भी अधिक। टिप्पणी 117. ऐसा कहा जाता है कि यह उनके मन की अशांत अवस्था को और अधिक स्पष्ट रूप से दर्शाता है; क्योंकि फर्श के कालीन वाले हिस्से से उतरते ही पैरों को जूतों या चप्पलों में डालना सामान्य बात है। टिप्पणी 118. "बहरीन" एक सामान्य फ़ारसी नाम है। यह माई ग्रह का भी एक नाम है; और इसका अर्थ है "एक राजा," "एक तलवार," आदि। टिप्पणी 119. इस श्रृंखला में टिप्पणी 100 देखें। टिप्पणी 120. आधुनिक अरबी में "मरजंच" (बोलचाल की भाषा में, "इनुरजानेह") का अर्थ है "मूंगे का एक टुकड़ा।" इसका अर्थ "एक छोटा मोती" और "एक प्रकार की वसंतकालीन जड़ी बूटी" भी है। टिप्पणी 121. यह वाक्य मैंने ब्रेस्लाउ संस्करण से लिया है। टिप्पणी 122. यहाँ, मैंने ब्रेस्लाउ संस्करण से कुछ शब्द लिए हैं, जो "अल-मोतार" पर समाप्त होते हैं। टिप्पणी 123. "अल-मोतार" का अर्थ है "गरीब," "निर्धन," "वह जो अपनी ज़रूरत की चीज़ें माँगने का साहस नहीं करता।" यह नाम "अल-असद" या "सबसे भाग्यशाली" के विपरीत माना जाता है। पुराने संस्करण में, इसे "मोतार" लिखा गया है, और इसका अनुवाद "बलिदान के लिए समर्पित" किया गया है। टिप्पणी 124. "ये दो आयतें मुरजिया या मुरजिस संप्रदाय के एक व्यक्ति की हैं,45 और सुन्नी (या रूढ़िवादी मुसलमानों) में से एक ने इनका उत्तर देते हुए कहा, 'यदि ईश्वर उसकी रक्षा करे, तो उसे कोई नमी नहीं छूएगी, और उसे हाथ बांधकर फेंके जाने की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है;46 परन्तु यदि ईश्वर ने उसे डुबोने का निश्चय किया है, तो वह डूब जाएगा, चाहे उसे रेगिस्तान में ही क्यों न फेंक दिया जाए।' "इस प्रकार मेरे शेख इस टिप्पणी से संबंधित दो छंदों पर टिप्पणी करते हैं। कहानी स्वयं भी अल-असद के इतिहास में एक बाद की घटना (जो

बहुत ही असंभव प्रकृति की नहीं है) द्वारा उनकी त्रुटि को दर्शाती है। ब्रेस्लाउ संस्करण में, कुछ मामूली भिन्नताओं और त्रुटियों के साथ, उनके स्थान पर वे छंद डाले गए हैं जिनका अनुवाद इस कृति के पहले खंड के पृष्ठ 299 पर एक पूर्व कहानी में दिया गया है; और यही स्थिति उस पांडुलिपि में भी प्रतीत होती है जिससे गैलैंड ने अनुवाद किया था। टिप्पणी 125. ढोल और बांसुरी अरब देशों में उत्सव के अवसरों पर सबसे अधिक उपयोग किए जाने वाले वाद्य यंत्र हैं; जैसे कि दूल्हा या दुल्हन के जुलूस में, खतना होने वाले लड़के के जुलूस में, और पवित्र स्थानों से अपने घर लौट रहे तीर्थयात्री के जुलूस में। टिप्पणी 126. अरब शहरों के निकटवर्ती कब्रिस्तानों में आम तौर पर कब्रों के ऊपर निर्मित कई गुंबददार संरचनाएं होती हैं, जो अक्सर रात में फंसे यात्रियों को आश्रय प्रदान करती हैं। टिप्पणी 127." बुस्तान का अर्थ है "एक बगीचा"। टिप्पणी 128. यह उनके नाम के संदर्भ में कहा गया है, जिसका अर्थ है "अधिक या सबसे भाग्यशाली"। टिप्पणी 129. अध्याय 6 की टिप्पणी 9 देखें। 43 मुसलमानों का एक संप्रदाय जो पूरी तरह से ईश्वर के प्रति समर्पित प्रतीत होता है। मेरा मानना है कि अधिकांश मुर्जी इसी वर्ग के थे, जो मुख्य रूप से कर्मों को दिए जाने वाले बहुत कम महत्व से पहचाने जाते थे। यह संप्रदाय चार वर्गों में विभाजित है; और यहाँ जिस व्यक्ति का उल्लेख किया गया है, वह जेबरी वर्ग का प्रतीत होता है, जो मनुष्य में स्वतंत्र इच्छाशक्ति को नकारते हुए, उसके कार्यों को उसकी रक्षा के लिए निर्धारित करते हैं। कम से कम, यही रूढ़िवादी सिद्धांत है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.13%** है।

अध्याय दसवें के लिए टिप्पणियाँ। 219 टिप्पणी 130. ब्रेस्लाउ के संस्करण में, यह कहानी एक अलग स्थान रखती है, सातवें खंड से शुरू

होती है। टिप्पणी 131. "अल-कूफ़ेह" वह शहर है जिसे यूरोपीय लेखक आमतौर पर "कुफ़ाह" और "कूफ़ा" कहते हैं, जो यूफ़्रेट्स नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है। इसकी स्थापना खलीफ़ा उमर के शासनकाल में हुई थी और यह अरबी विद्या का एक प्रसिद्ध केंद्र था। अल-कूफ़ेह के निवासी ऐसे लोग थे जिन्हें प्रसन्न करना कठिन था, वे हमेशा विद्रोह के लिए तैयार रहते थे और अपने शासकों की लगातार शिकायत करते रहते थे। एक दिन उनमें से एक समूह खलीफ़ा अल-मामून के समक्ष उनके एक अधिकारी के विरुद्ध शिकायत लेकर गया। उनमें से एक ने उस अधिकारी को इतनी बुरी तरह से अपमानित किया कि खलीफ़ा ने अपने अधिकारी का पक्ष लिया और सभी के साथ किए गए कठोर न्याय के लिए उसकी बहुत प्रशंसा की। इस पर, शिकायतकर्ताओं में से एक ने उत्तर दिया कि खलीफ़ा ने जो कुछ भी कहा वह बिल्कुल सत्य था और उनके नगरवासियों द्वारा अधिकारी के विरुद्ध लगाए गए सभी आरोप सरासर झूठे थे; फिर भी, चूंकि हर जगह न्याय होना आवश्यक था, इसलिए यह उचित नहीं था कि अल-कूफ़ेह के लोगों के साथ अन्याय किया जाए। केवल अल-कूफ़े को ही ऐसे व्यक्ति के होने का लाभ मिलना चाहिए, जबकि साम्राज्य के अन्य सभी प्रांत उससे वंचित थे। "हे हमारे स्वामी, अपने लोगों को," उसने आगे कहा, "उसे कहीं और भेजकर, तेरी समान रूप से प्रशंसा और आशीर्वाद करने का कारण बना।"47 नोट 132, "नेमत-अल्लाह" का अर्थ है "ईश्वर का वरदान।" नोट 133. "तौफ़ीक" का अर्थ है "समृद्धि या सुखद बनाना," इत्यादि। नोट 134. "साद" का अर्थ है "समृद्धि," "खुशी," "सौभाग्य।" नोट 135. "नोआम" "साद" का पर्यायवाची है। नाम इसलिए बदला गया ताकि यह नेमत-अल्लाह के नाम से मेल खा सके। नोट 136. "नेमत-अल्लाह" और इसी तरह के नामों में, बाद वाला शब्द अक्सर हटा दिया जाता है। इस मामले में, पहले वाले में

अंतिम t को h में बदल दिया जाता है। नोट 137. अर्थात्, उनमें से प्रत्येक कुछ मामलों में दूसरों से अधिक सुंदर। टिप्पणी 138. मैंने यहाँ "नौ" के स्थान पर "चार" लिखा है, क्योंकि आगे की आवश्यकता है। टिप्पणी 139. "ज़ैद" और "अम्र" का प्रयोग यहाँ काल्पनिक नामों के रूप में किया गया है, उसी प्रकार जैसे अरबी व्याकरणविदों द्वारा किया जाता है। टिप्पणी 140.— अल-हज्जाज और उनका चरित्र। यूसुफ एथथकाफी के पुत्र अल-हज्जाज, उमियेह वंश के पाँचवें और छठे खलीफा अब्द-अल-मेलिक और उनके पुत्र अल-वेलीद के अधीन लगभग बीस वर्षों तक, अपनी मृत्यु तक, हेजाज़ और अरब एरक के राज्यपाल रहे। उनकी मृत्यु पलायन के वर्ष 95 (713-14 ईस्वी) में हुई। वे अपनी वाक्पटुता और साहस के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध थे, लेकिन अपने अत्याचार के लिए निंदा के पात्र थे। हालाँकि, उनकी क्रूरता को शायद शियाई या शीई लोगों द्वारा इसे बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया, जिनके प्रति वह विशेष रूप से घृणित हो गया था; और मैं उसके चरित्र के निम्नलिखित उदाहरणों की सत्यता पर पूरी तरह से भरोसा नहीं करता, जिन्हें मैं उनकी विलक्षण प्रकृति के कारण शामिल कर रहा हूँ। अपनी अंतिम बीमारी में, उसने एक ज्योतिषी से यह जानने का साहस किया कि क्या उस वर्ष तारों की स्थिति किसी सत्ताधारी व्यक्ति की मृत्यु की भविष्यवाणी करती है। जिस पर ज्योतिषी ने उत्तर दिया कि एक राजकुमार की शीघ्र ही मृत्यु होगी, जिसका उपनाम कुलेब था या हो सकता है; और अल-हज्जाज ने स्वीकार किया कि उसकी माँ बचपन में उसे इसी नाम से पुकारती थी (शायद पिल्ला 48), ज्योतिषी ने जल्दबाजी में 47 डी'हर्बेलोट, लिब्लियोथक्वुक, ओरिकंटेल, लेख। यह नाम अभी भी प्रचलित है, हालाँकि अन्य अरबों में इसके बाद अक्सर "कौफा" नहीं आता है। बेदावी लोगों के बारे में बात करते हुए, बर्क46 "कुलेब" का अर्थ है "एक छोटा कुत्ता।" यह एक कठिन

बात थी, "अरबों में शिशु को जन्म के तुरंत बाद नाम देने की आम प्रथा है। नाम उसकी जाति से लिया जाता है, और बेदावेक लोगों में यह प्रथा किसी मामूली दुर्घटना या किसी वस्तु से प्रेरित होती है।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.83%** है।

अध्याय दसवें के 220 नोटों में यह घोषित किया गया कि जिसकी मृत्यु का संकेत दिया गया है वह स्वयं के अलावा कोई और नहीं हो सकता। 'कम से कम एक तो मुझसे पहले मरेगा,' अल-हज्जाज ने कहा, और उस दुर्भाग्यशाली जादूगर को सेवकों द्वारा तुरंत मार डालने का आदेश दिया गया। — यह क्रूर अत्याचारी, जिसकी स्मृति को शियाओं ने पर्याप्त बदनामी से भर दिया है, और जिसे वह स्वयं निर्दय प्रतिशोध से सताना कभी नहीं भूला, हिज्र के पचानवेवें वर्ष में, रमज़ान के पच्चीसवें दिन के आसपास, चौवन वर्ष की आयु में चल बसा। अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले उसने शिकायत की कि उसके पेट को कुत्तों ने चीर दिया है; और चिकित्सकों द्वारा उसके गले में रेशम का एक लचीला टुकड़ा डाला गया, तो वह कीड़ों से ढका हुआ निकला। और यद्यपि इससे उनके शासन में कोई सुधार नहीं हुआ, फिर भी यह दर्ज है, संभवतः सार्वजनिक व्यय में उनकी असीम फिजूलखर्ची के प्रमाण के रूप में, कि कुरान के शिष्यों में वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने एक अवसर पर लोगों के मनोरंजन के लिए एक हजार मेजें लगाईं; या एक ही दान में दस लाख दिरहम वितरित किए। युद्ध में मारे गए लोगों को छोड़कर, जिनकी संख्या का अनुमान केवल सर्वज्ञानी ही लगा सकता है, अल-हज्जाज के मनमाने आदेशों से कम से कम एक लाख बीस हजार लोग मारे गए। फिर भी, एक स्वप्न में, जिसमें कहा जाता है कि वे अपनी मृत्यु के कुछ समय बाद किसी को दिखाई दिए, उन्होंने घोषणा की कि यद्यपि उनके क्रोध के शिकार हुए इन असंख्य लोगों

में से प्रत्येक के लिए, ईश्वरीय न्याय ने उन्हें केवल एक मृत्यु की सजा देकर संतुष्ट किया, फिर भी केवल सईद 49 की हत्या के लिए, उन्हें सत्तर गुना कष्ट सहने की सजा दी गई। जब ईश्वर ने मानव जाति को उसके अत्याचारों से मुक्त करने का निर्णय लिया, तब उसके शासनकाल की विभिन्न जेलों में तीस हजार से कम पुरुष और बीस हजार महिलाएं नहीं पाई गईं; इनमें से कई को उसी प्रकार की बिना छत वाली जेल में बंद किया गया था, जिसका आविष्कार उसने स्वयं किया था; जिसमें, सूर्य की झुलसा देने वाली किरणों और ठंड, गर्मी और बारिश के उतार-चढ़ाव के बीच, दुर्भाग्यपूर्ण पीड़ितों को हर प्रकार के दर्द और पीड़ा से ग्रस्त रहने के लिए छोड़ दिया गया था। 50 नोट 141. इस खंड के पृष्ठ 59 के अंत में एक नोट देखें। नोट 142. कई मुस्लिम भक्तों की यह प्रथा है कि वे गले में सैकड़ों मोतियों की माला कई बार घुमाकर लटकाते हैं। इसका उद्देश्य या तो ईश्वर की स्तुति में कुछ उद्गारों को दोहराने के लिए इन मोतियों का उपयोग करना है, या दूसरों को यह विश्वास दिलाना है कि पहनने वाला इस प्रकार इनका उपयोग करने का आदी है। — इस श्रृंखला का चौवालीसवाँ नोट देखें। अध्याय 4 के नोट 15 में हजार मोतियों की माला और उसके उपयोग का उल्लेख किया गया है। इस कहानी में पाखंडी बूढ़ी औरत के पहनावे, तौर-तरीकों और भावों का आपका पूरा वर्णन अत्यंत सटीक है। यह उन लोगों पर पूरी तरह लागू होता है जो आज भी काहिरा की सड़कों पर कभी-कभार देखे जा सकते हैं, हालांकि संभवतः इनमें से कई लोगों का चरित्र सच्चा हो सकता है। इस प्रकार स्वयं को विशिष्ट बनाने वाली महिला भक्तों की संख्या पुरुषों की तुलना में बहुत कम है। मैं यह भी कहना चाहूंगा कि इस कहानी में वर्णित बूढ़ी औरत के प्रति नोआम का व्यवहार इसी तरह के मामलों में आम तौर पर अरब महिलाओं के व्यवहार के अनुरूप है। वास्तव में, यह कहानी अरब

रीति-रिवाजों का उतना ही सटीक चित्रण है जितना कि इस संग्रह की कोई अन्य कहानी। नोट 143. कुछ अरब घरों में, एक या अधिक कमरों में, दीवारों में से किसी एक पर एक आला बनाया या चित्रित किया जाता है, जो मक्का की दिशा को इंगित करता है। लेकिन आम तौर पर एक प्रार्थना-कालीन भी उसी उद्देश्य को पूरा करता है, जिसका पैटर्न माँ या बच्चे के जन्म के समय उपस्थित किसी भी महिला की पसंद को आकर्षित करता है। इस प्रकार, यदि इस अवसर पर न्याय निकट होता, तो शिशु का नाम संभवतः 'किलितब' रखा जाता, जो 'केल्ब' से लिया गया है, जिसका यह बहुवचन है। (जेलेदुइन्स और वहाबियों पर नोट्स, 8vo. संस्करण, खंड i, पृष्ठ 97।) [अध्याय ii के नोट 30 में अल-हज्जाज का एक और किस्सा अध्याय 14 के नोट्स के बाद आता है। — संपादक]

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.29%** है।

अध्याय दसवें पर टिप्पणियाँ। 221 एक ताक के आकार का, जिसका सिरा मक्का की ओर है, ताकि आगंतुक को प्रार्थना करते समय अपने मेज़बान से यह न पूछना पड़े कि उसे अपना मुख किस दिशा में करना है। टिप्पणी 144. ये शब्द कुरान के पच्चीसवें अध्याय के सत्तरवें श्लोक की शुरुआत हैं। ये दुष्टों के विरुद्ध निंदा के बाद आते हैं, और माना जाता है कि नोआम को इनसे पहले के शब्दों के साथ-साथ श्लोक के शेष भाग का भी ज्ञान था, जो इस प्रकार है: — "क्योंकि ईश्वर उनके बुरे कर्मों को अच्छाई में बदल देगा; और ईश्वर क्षमा करने के लिए तत्पर और दयालु है।" टिप्पणी 145. यहाँ "शेखों" से हमारा तात्पर्य संतों या धार्मिक कार्यों में स्वयं को समर्पित करने वाले व्यक्तियों से है। और इसी अंश में उल्लिखित "पवित्र स्थान" वे मस्जिदें और अन्य इमारतें हैं जिनमें संतों की कब्रें या स्मारक हैं; ऐसे भवनों में पुरुष और महिलाएं अक्सर आते-जाते

रहते हैं, इस विश्वास के साथ कि वहां की गई प्रार्थनाएं विशेष रूप से प्रभावी होती हैं। — अध्याय iii के नोट 63 देखें। नोट 146. इससे तात्पर्य यह है कि वह अल-कूफेह के राजाओं की वंशज थीं; लेकिन लेखक शायद इस बात से अनभिज्ञ थे कि ऐसे कोई राजा नहीं थे। यदि "राजाओं" से केवल "शासकों" का तात्पर्य है, तो भी वह त्रुटि में हैं; क्योंकि अल-कूफेह के शासक, इसकी स्थापना से ही, मुसलमान थे; और उनकी बेटियों को गुलाम के रूप में बेचा नहीं जा सकता था। नोट 147. — ज्योतिषीय गणनाओं पर। मेरे शेख ने हाशिये पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि यहां वर्णित गणना नाम बनाने वाले अक्षरों के संख्यात्मक मानों पर आधारित है। इस प्रकार, नोआम (अरबी में) तीन अक्षरों, नून, ऐन और मीम से मिलकर बना है: नून 50 है; ऐन, 70; और मीम, 40: इन तीनों का योग 160 है: इसमें से 9 और 9, या 12 और 12, और इसी तरह घटाते रहें जब तक कि 12 या 12 से कम न रह जाए: शेषफल उस राशि का अंक है जो उस व्यक्ति को प्रभावित करता है जिसका नाम है: 1, मेष; 2, वृषभ; 3, मिथुन; और इसी तरह। मैंने इसी प्रकार की गणना करने के दो अन्य तरीके बताए हैं; लेकिन ऊपर दिए गए विवरण से स्पष्ट है कि मुझे उन दो तरीकों में से पहले की व्याख्या करते समय यह बताना चाहिए था कि गणना कभी-कभी (और शायद सामान्यतः) केवल उस व्यक्ति के नाम के अक्षरों के संख्यात्मक मानों पर आधारित होती है जिसकी राशि ज्ञात करनी है, और फिर राशि का अंक ऊपर वर्णित तरीके से प्राप्त किया जाता है। पाठक ने देखा है कि मेरे शेख के निर्देशों के अनुसार दो अलग-अलग परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। उन्होंने यह नहीं बताया है कि नाम के अंक से 9 या 12 घटाना सामान्य प्रक्रिया है। टिप्पणी 148. "हे फारसियों के भाई" (या अख़ा-1-फ़ुर्स) "हे फारसी" का पर्यायवाची है। "हे अरबों के भाई" एक अरब को संबोधित करने के लिए

प्रयुक्त एक सामान्य अभिव्यक्ति है। टिप्पणी 149. अरब दुकानदार अक्सर हथेली पर लिखकर हिसाब-किताब करते हैं। टिप्पणी 150. "सोआदा" और "जुमल" महिलाओं के काल्पनिक नाम हैं। इन्हें शब्दों के खेल के लिए चुना गया है, जिसे मैं अनुवाद में बरकरार नहीं रख सका। टिप्पणी 151.— कूफी अक्षर के बारे में। कूफी अक्षर (जिसे यूरोपीय लेखक आमतौर पर "कूफिक" कहते हैं) का नाम अल-कूफी शहर के नाम पर रखा गया है, जहाँ निस्संदेह इसकी उत्पत्ति हुई थी, और जिसकी स्थापना पलायन के सत्रहवें वर्ष में हुई थी। मिस्र में मिले कुछ पैपिरिलियों से पता चलता है कि इससे पहले हेजाज़ के अरबों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली लिपि, कूफी लिपि से बहुत कम भिन्न थी, जिसे बाद में कूफी लिपि के स्थान पर इस्तेमाल किया जाने लगा और जो आज तक अरबों द्वारा सामान्यतः प्रयोग में है।52 लेकिन पैगंबर के समय से पहले यमन और संभवतः अरब के कई अन्य हिस्सों में इस्तेमाल की जाने वाली लिपि और भाषा (जिसे हेमीरी या हिमयारिटिक कहा जाता है) अज्ञात है। मेरे विद्वान मित्र एम. फुलजेंस फ्रेस्नेल ने एक भाषा की खोज की है जो अभी भी प्रचलित है (अध्याय V के नोट 74 में देखें)। पीसी सैक की ग्रेटनमैरिक अरब, द्वितीय संस्करण, खंड i.p.

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.65%** है।

अध्याय दसवें के लिए 222 टिप्पणियाँ। एल-यमन के कुछ हिस्सों में बोली जाने वाली, प्राचीन हेमीरी की एक बोली; और यह आशा की जा सकती है कि उनकी खोज महत्वपूर्ण परिणाम उत्पन्न करेगी, और बाइबिल साहित्य में मूल्यवान होगी। चौथी शताब्दी में प्रचलन में आई एक अलंकृत शैली, अफ्लेक्सियस कूफी अक्षर को कई यूरोपीय लेखकों ने गलती से कार्मेटिक अक्षर कहा है और माना है कि इसका आविष्कार

कर्मती नामक राष्ट्र या लोगों ने किया था।53 यह गलती "कर्मताह" शब्द की गलत व्याख्या से उत्पन्न हुई प्रतीत होती है, जिसे कामूस में "लिखने की एक छोटी शैली और चलने में एक छोटा कदम" के रूप में परिभाषित किया गया है।54 टिप्पणी 152. सूरह यूसुफ (कुरान का बारहवां अध्याय) में वर्णित है कि यूसुफ के लिए शोक से याकूब की आँखें सफेद हो गईं; लेकिन जब यूसुफ ने मिस्र में अपने भाइयों को स्वयं को प्रकट किया, तो उसने उन्हें अपना भीतरी वस्त्र दिया और उनसे इसे अपने पिता के चेहरे पर डालने का अनुरोध किया; और ऐसा करने पर याकूब की दृष्टि वापस आ गई। - जेललेन की टीका में हमें बताया गया है कि यह वस्त्र "उसकी कमीज थी" इब्राहीम, जिसे उन्होंने आग में फेंके जाने के समय पहना था।55 यह कुएँ में उनके [यूसुफ के] गले में था; और यह जन्नत से था। जिब्रील या [गैब्रियल] ने उन्हें इसे भेजने का आदेश दिया, और कहा कि इसमें उसकी सुगंध है, [अर्थात जन्नत की सुगंध,] और इसे किसी भी पीड़ित व्यक्ति पर नहीं फेंकना चाहिए, अन्यथा वह स्वस्थ हो जाएगा। टिप्पणी 153. इस वाक्य में कोष्ठकों के बीच संलग्न शब्दों के सम्मिलन के लिए, मेरे शेख का अधिकार है। टिप्पणी 154. अध्याय 8वीं की टिप्पणी 65 देखें। टिप्पणी 155. मेरे मूल पाठ में यहाँ जोड़ा गया है, "और उसका नाम नोआम था," जो खलीफा की बहन द्वारा अभी तक छिपाए जाने वाले तथ्य को स्पष्ट करता है। टिप्पणी 156. हम मान सकते हैं कि मरजानेह उनके साथ वहाँ आई थी। टिप्पणी 157. "और ईश्वर सर्वज्ञ है" शब्द जोड़े गए हैं। कथावाचक यह संकेत देता है कि कहानी शायद पूरी तरह सच न हो! 58 इस खंड के प्रारंभ में अध्याय 9 के शीर्ष पर अरबी शब्द (जिसका अर्थ है, "ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु और कृपालु है") इस शैली का एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। 54 मेरा मानना है कि इस त्रुटि को सर्वप्रथम एम. फ्रसेन ने मई 1828 में जर्नल

एशियाटिक के 5वें अंक में उजागर और खंडित किया था। 55 यह ज़ुमरूद (या निमरूद) के आदेश पर किया गया था, और इसका उल्लेख कुरान के इक्कीसवें अध्याय में है। कुलपति आग से बिना किसी क्षति के बाहर आ गए।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.07%** है।

दो सौ उनतालीसवीं रात के एक भाग से शुरू होकर दो सौ उनसठवीं रात के एक भाग पर समाप्त होने वाली कहानी: अला-ए-दीन अबू-श-शमत*। हे सुखी राजा, मुझे बताया गया है कि प्राचीन काल में काहिरा2 में शेम्स-ए-दीन नाम का एक व्यापारी था। वह सभी व्यापारियों में सर्वश्रेष्ठ और सबसे वाचाल था, और उसके पास नौकर और अन्य आश्रित, काले पुरुष दास, महिला दास, और मेमलुक थे, और वह अपार धन का स्वामी था, और काहिरा के व्यापारियों का शाह-बंदर3 था। उसके साथ एक पत्नी रहती थी, जिससे वह प्रेम करता था और जो उससे प्रेम करती थी: लेकिन वह उसके साथ चालीस वर्ष तक रहा, और उसे न तो कोई पुत्री हुई और न ही कोई संतान।

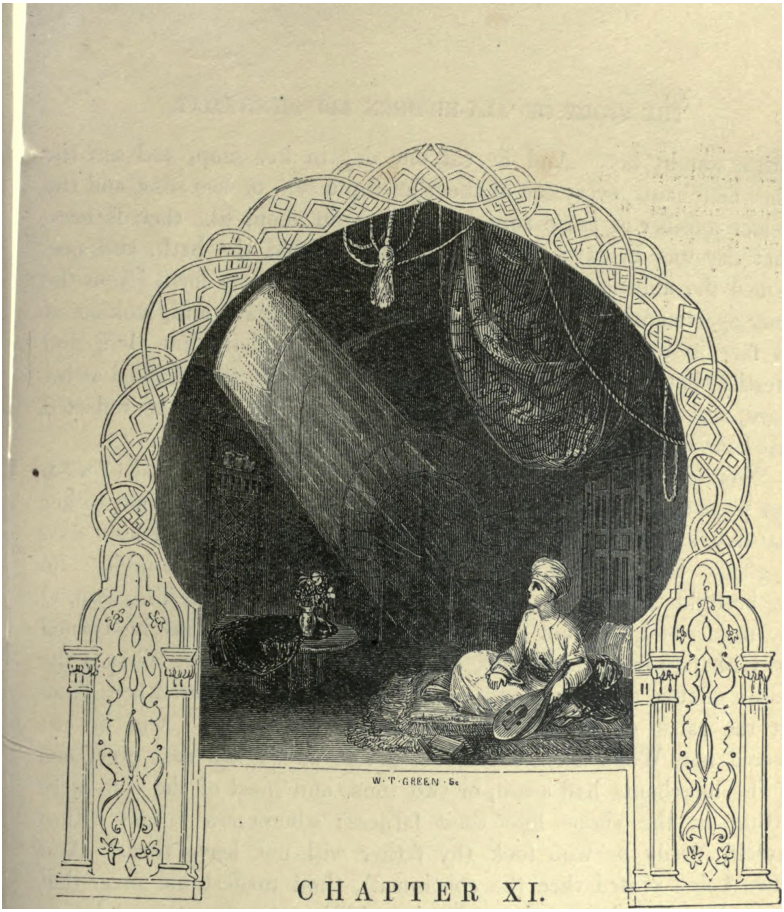

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.16%** है।

224 अला-ए-दीन की कहानी, जिसका एक बेटा था। एक दिन वह अपनी दुकान में बैठा था और उसने दूसरे व्यापारियों को देखा, जिनमें से प्रत्येक का एक या दो बेटे थे, और उनमें से अधिकांश अपने पिता की तरह दुकानों में बैठे थे। वह दिन शुक्रवार था: इसलिए वह व्यापारी स्नानघर में गया और शुक्रवार का स्नान किया; 4 और जब वह [अंदर के कमरे से] बाहर आया, तो उसने नाई का दर्पण लिया और उसमें अपना चेहरा देखकर कहा, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई देवता

नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं! 5 फिर उसने अपनी दाढ़ी देखी और पाया कि सफ़ेद बाल काले बालों पर हावी हो रहे थे; और उसने सोचा कि बुढ़ापा मृत्यु का संकेत है। उसकी पत्नी को उसके आने का समय पता था, और वह उसका स्वागत करने के लिए स्नान करती और तैयार होती थी; और जब वह उस दिन घर आया, तो उसने उससे कहा, शुभ संध्या: लेकिन उसने उत्तर दिया, मैंने कोई अच्छी चीज़ नहीं देखी। उसने दासी से कहा, "भोजन की मेज लाओ।" तो वह भोजन ले आई; और व्यापारी की पत्नी ने उससे कहा, "भोजन करो, हे मेरे स्वामी।" - उसने उत्तर दिया, "मैं कुछ नहीं खाऊंगा।" और उसने मेज से अपना चेहरा फेर लिया। तब उसने उससे कहा, "इसका क्या कारण है, और तुम्हें किस बात का दुख है?" उसने उत्तर दिया, "तुम ही मेरे दुख का कारण हो।" - "क्यों?" उसने पूछा। और उसने उत्तर दिया, "आज जब मैंने अपनी दुकान खोली, तो मैंने देखा कि हर व्यापारी का एक या दो बेटे थे, और अधिकांश दासियाँ अपने पिता की तरह दुकानों में बैठी थीं; तब मैंने मन ही मन कहा, "सचमुच जिसने तुम्हारे पिता को लिया है, वह तुम्हें नहीं छोड़ेगा।"6 और जब मैं पहली बार तुमसे मिलने आया (उसने आगे कहा), तुमने मुझसे शपथ ली थी कि मैं तुम्हारे अलावा किसी और पत्नी को नहीं रखूंगा, न ही किसी अबीसीनियाई, न किसी यूनानी, न ही किसी अन्य दासी को रखैल के रूप में रखूंगा; और

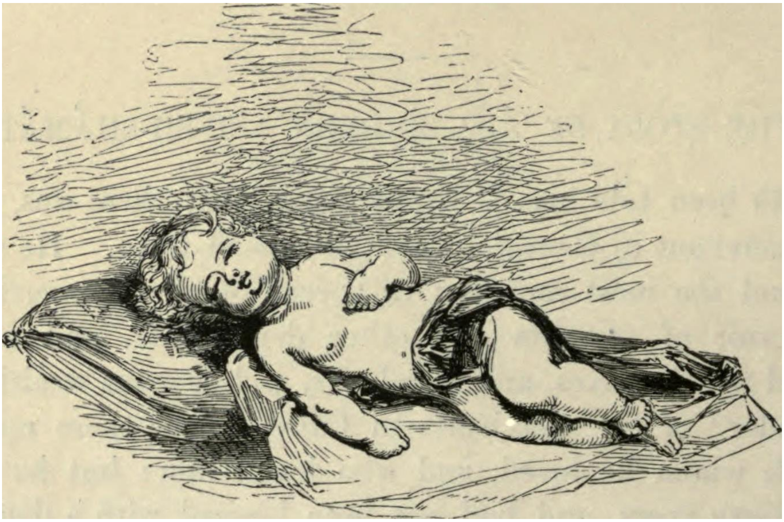

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.35%** है।

'अला-ए-डीक अबू-श-स्तलमत की कहानी 225 तू बांझ है। - लेकिन उसकी पत्नी ने उसे इस तरह फटकारा कि उसने रात गुजारी और सुबह उठकर पछतावा किया कि उसने उसे फटकारा था, और उसे भी पछतावा हुआ कि उसने उसे फटकारा था। और इसके तुरंत बाद, उसकी पत्नी ने उसे बताया कि उसकी इच्छा पूरी होने वाली है। पुत्र का जन्म हुआ, और दाई ने मोहम्मद और अली के नाम दोहराकर उसे वश में किया और उसके कान में तकबीर और अदान8 का उच्चारण किया, और उसे लपेटकर उसकी माँ को दे दिया जिसने उसे दूध पिलाया, और उसने पेट भरकर भोजन किया और सो गया। दाई तीन दिन तक उनके साथ रही, जब तक कि उन्होंने सातवें दिन बांटने के लिए मिठाई नहीं बना ली; फिर उन्होंने शिशु पर नमक छिड़का।9 व्यापारी अंदर गया और अपनी पत्नी को उसकी सुरक्षा की बधाई दी, और उससे कहा, “ईश्वर का खजाना कहाँ है?”10 इस पर उसने उसे एक अत्यंत सुंदर शिशु दिखाया, जो सर्वशक्तिमान ईश्वर की रचना था। वह सात दिन का शिशु था; परन्तु जो

भी उसे देखता, वह कहता कि वह एक वर्ष का बच्चा है; और व्यापारी ने उसके चेहरे को देखा, और पाया कि वह चमकते हुए पूर्णिमा के चंद्रमा के समान था, और उसके गालों पर तिल थे। उसने अपनी पत्नी से कहा, "तुमने उसका क्या नाम रखा है?" और उसने उत्तर दिया, "यदि यह लड़की होती, तो मैं उसका नाम रखती; परन्तु यह लड़का है; इसलिए इसका नाम तुम्हारे सिवा कोई नहीं रखेगा।"11 उस युग के लोग अपने बच्चों का नाम शगुन के आधार पर रखते थे; और जब वे व्यापारी के पुत्र के नाम पर विचार कर रहे थे, तभी एक ने अपने साथी से कहा, "हे मेरे स्वामी 'अला-ए-दीन।" तब व्यापारी ने अपनी पत्नी से कहा, "हम इसका नाम 'अला-ए-दीन अबू-श-शमत रखेंगे।"12 उसने दाइयों को उसका पालन-पोषण करने का आदेश दिया, और बच्चा दो वर्ष तक दूध पीता रहा; जिसके बाद उन्होंने उसका दूध छुड़ा दिया, और वह बड़ा होकर ज़मीन पर चलने लगा। जब वह सात वर्ष का हो गया, तो उन्होंने उसे एक गुप्त द्वार के नीचे एक कमरे में रख दिया,13 क्योंकि उन्हें उस पर बुरी नज़र का डर था, और उसके पिता ने कहा, "जब तक इस लड़के की दाढ़ी न उग जाए, तब तक इसे गुप्त द्वार के नीचे से बाहर नहीं निकाला जाएगा।"14 व्यापारी ने उसकी सेवा के लिए एक दासी और एक काले दास को नियुक्त किया: दासी उसके लिए मेज तैयार करती थी, और काला दास उसे उसके पास लाता था। फिर उसके पिता ने उसका खतना किया, और उसके लिए एक भव्य भोज का आयोजन किया; और इसके बाद उन्होंने उसे पढ़ाने के लिए धर्म और कानून के एक प्रोफेसर को बुलाया; और प्रोफेसर ने उसे लेखन, कुरान और विज्ञान पढ़ाया, जब तक कि वह कुशल और विद्वान नहीं हो गया। लेकिन एक दिन ऐसा हुआ कि काला गुलाम उसके पास मेज लेकर गया और अनजाने में उसका दरवाज़ा खुला छोड़ दिया; जिसके बाद अला-एद्दीन उसमें से बाहर निकला और

अपनी माँ के पास चला गया। II. 2 G के साथ

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.98%** है।

उसके साथ उच्च कोटि की स्त्रियों का एक समूह था, और जब वे उससे बातचीत कर रही थीं, तभी अचानक वह उनके पास आया, अपनी सुंदरता के अतिशय में मदहोश मेमलुक जैसा। जब स्त्रियों ने उसे देखा, तो उन्होंने अपने चेहरे ढँक लिए और उसकी माँ से कहा, हे ऐसी स्त्री! अल्लाह तुझे इसका बदला दे! तूने इस विचित्र मेमलुक को हमारे पास कैसे भेजा? क्या तुझे नहीं पता कि लज्जा ईमान के सिद्धांतों में से एक है? — लेकिन उसने उनसे कहा, अल्लाह का नाम लो! 15 निश्चय ही यह मेरा पुत्र है, और मेरे दिल का लाडला, व्यापारियों के शाहबंदर का पुत्र, और दाई, हार, रोटी और चूरा का बच्चा! 16 — उन्होंने उत्तर दिया, हमने अपने जीवन में कभी तेरा पुत्र नहीं देखा। तब उसने कहा, निश्चय ही उसके पिता को उस पर बुरी नज़र पड़ने का डर था, इसलिए उन्होंने उसके पालन-पोषण के लिए एक भूमिगत कक्ष बनाया, जो एक गुप्त द्वार के नीचे था; और शायद नपुंसक ने अनजाने में दरवाज़ा खुला छोड़ दिया था, और परिणामस्वरूप वह उससे बाहर आ गया; लेकिन हमारी यह इच्छा नहीं थी कि वह बाहर आए।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.27%** है।

अला-ए-दीन अबू-श-शाम की कहानी, अध्याय 1.227: जब तक उसकी दाढ़ी न बढ़ जाए, तब तक वह उसे रखेगी। इसलिए महिलाओं ने उसे बधाई दी। और युवक उनसे निकलकर घर के आंगन में गया, और फिर मक़द17 पर चढ़ गया, और वहाँ बैठ गया; और जब वह वहाँ बैठा था, तभी दास उसके पिता के खच्चर के साथ घर में दाखिल हुए; इस पर अला-ए-दीन ने उनसे पूछा, यह खच्चर कहाँ था? उन्होंने उत्तर दिया, हम तुम्हारे पिता को दुकान तक ले गए थे, उस पर सवार हुए थे, और उसे वापस लाए हैं। और उसने उनसे पूछा, मेरे पिता का क्या काम है? -

उन्होंने उत्तर दिया, तुम्हारे पिता मिस्र देश में व्यापारियों के शाह-बंदर हैं, और वे अरबों के पुत्रों के सुल्तान हैं।18 इस पर, अला-ए-दीन अपनी माँ के पास गया, और उससे कहा, हे मेरी माँ, मेरे पिता का क्या काम है? उसने उससे कहा, "हे मेरे पुत्र, तेरा पिता व्यापारी है, और वह मिस्र देश में व्यापारियों का शाहबंदर और अरबों के पुत्रों का सुल्तान है। उसके दास उससे किसी भी वस्तु की बिक्री के संबंध में सलाह नहीं लेते, सिवाय उस वस्तु के जिसकी न्यूनतम कीमत एक हजार सोने के सिक्के हो। नौ सौ सोने के सिक्के या उससे कम की वस्तु की बिक्री के संबंध में भी वे उससे सलाह नहीं लेते, बल्कि अपनी इच्छा से बेचते हैं। और अन्य स्थानों से जो भी माल आता है, चाहे थोड़ा हो या ज्यादा, वह उसके पास ही प्रस्तुत किया जाता है, और वह उसे अपनी इच्छा अनुसार बेचता है; और कोई भी माल पैक करके अन्य स्थानों पर नहीं भेजा जाता, बल्कि वह तेरे पिता के अधीन होता है। हे मेरे पुत्र, ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) ने तेरे पिता को अपार धन दिया है, जिसकी गणना नहीं की जा सकती।" तब उसने उससे कहा, "हे मेरी माता, ईश्वर की स्तुति हो कि मैं अरबों के पुत्रों के सुल्तान का पुत्र हूँ, और मेरे पिता व्यापारियों के शाहबंदर हैं!" लेकिन हे मेरी माँ, तुम मुझे किस कारण से एक गुप्त द्वार के नीचे वाले कमरे में बंद करके वहाँ कैद करके छोड़ देती हो? — उसने उत्तर दिया, हे मेरे पुत्र, हमने तुझे गुप्त द्वार के नीचे वाले कमरे में इसलिए नहीं रखा है क्योंकि हमें मनुष्यों की दृष्टि के प्रभाव से तेरे लिए भय है; क्योंकि दृष्टि का प्रभाव सत्य है,19 और कब्रों में रहने वाले अधिकांश लोग दृष्टि के शिकार होते हैं। लेकिन उसने उससे कहा, हे मेरी माँ, भाग्य से बचने का स्थान कहाँ है? सावधानी भाग्य को नहीं रोक सकती, और जो लिखा है उससे कोई बच नहीं सकता। निश्चय ही जिसने मेरे दादा को लिया है, वह मेरे पिता को नहीं छोड़ेगा: इसलिए यदि वह आज जीवित है, तो वह कल जीवित

नहीं रहेगा; और जब मेरे पिता की मृत्यु हो जाएगी, और मैं जाकर कहूँगा, मैं व्यापारी शेम्सदीन का पुत्र अला-एद्दीन हूँ, तो कोई भी मुझ पर विश्वास नहीं करेगा, और वृद्ध कहेंगे, हमने अपने जीवनकाल में शेम्सदीन का एक भी पुत्री या पुत्री नहीं देखी। तब सरकारी खजाने के अधिकारी आएंगे और मेरे पिता की संपत्ति ले लेंगे। अल्लाह

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.69%** है।

228 'अला-ए-दीन अबू-श-शमात की कहानी। उस पर दया करो जिसने कहा, उदार मन वाला व्यक्ति मर जाता है, उसका धन चला जाता है, और सबसे नीच व्यक्ति उसकी स्त्रियों को ले जाता है। तो हे मेरी माँ, मेरे पिता से कहो कि वह मुझे अपने साथ बाजार ले जाएं और मेरे लिए एक दुकान खोलें, और मैं उसमें सामान के साथ बैठूंगा, और वह मुझे बेचने-खरीदने, लेने-देने की कला सिखाएंगे। — उसने उत्तर दिया, हे मेरे पुत्र, जब तुम्हारे पिता आएंगे तो मैं उन्हें तुम्हारी इच्छा बता दूंगी। और जब व्यापारी अपने घर लौटा, तो उसने अपने पुत्र 'अला-ए-दीन अबू-श-शमात को अपनी माँ के साथ बैठे हुए पाया: तो उसने उससे कहा, तुमने उसे फँसाव द्वार के नीचे से क्यों निकाला? — हे मेरे चाचा के पुत्र, उसने उत्तर दिया, मैंने उसे नहीं निकाला; बल्कि नौकरों ने अनजाने में फँसाव द्वार खुला छोड़ दिया था, और जब मैं बैठी थी कुछ संभ्रांत महिलाओं के साथ, वह हमारे पास आया। और उसने उसे वह सब बताया जो उसके बेटे ने कहा था; इस पर व्यापारी ने उससे कहा, हे मेरे बेटे, कल, यदि ईश्वर की इच्छा हुई (जिसका नाम महान है!), तो मैं तुझे अपने साथ बाजार ले चलूँगा; परन्तु, हे मेरे बेटे, बाजार और दुकानों में बैठने के लिए हर परिस्थिति में शिष्ट और सलीकेदार व्यवहार आवश्यक है। तो अला-ए-दीन ने अगली रात अपने पिता के शब्दों से प्रसन्न होकर बिताई; और जब सुबह हुई, तो उसके

पिता उसे स्नानघर ले गए और उसे एक कीमती सूट पहनाया। नाश्ता करने और शरबत पीने के बाद, व्यापारी अपने खच्चर पर सवार हुआ और अपने बेटे को दूसरे खच्चर पर बिठाकर उसे अपने पीछे लेकर बाजार की ओर चल पड़ा; और बाजार के लोगों ने व्यापारियों के शाह-बंदर को आते देखा, जिसके पीछे वह युवक था जिसका चेहरा चौदहवीं रात का चाँद। यह प्रथा थी कि जब शाह-बंदर सुबह अपने घर से निकलकर अपनी दुकान में बैठते थे, तो बाज़ार का नकीब20 व्यापारियों के पास जाकर उन्हें फ़तीह पढ़ता था, जिसके बाद वे उठकर उनके साथ शाह-बंदर के पास आते और उन्हें फ़तीह21 पढ़कर सुप्रभात कहते थे; फिर वे सब अपनी-अपनी दुकान पर चले जाते थे। लेकिन उस दिन जब शाह-बंदर अपनी प्रथा के अनुसार अपनी दुकान में बैठे, तो व्यापारी उनके पास नहीं आए, जैसा कि वे अक्सर आते थे। इसलिए उन्होंने नकीब (जिनका नाम शेख मोहम्मद सिमसिम22 था, और जो एक गरीब आदमी थे) को बुलाया और उनसे पूछा, व्यापारी अपनी प्रथा के अनुसार क्यों नहीं आए? नकीब ने उत्तर दिया कि वे उनके साथ आए युवक के विषय में बहस कर रहे थे, यह सोचकर कि वह कौन हो सकता है, और उन्होंने पूछा, क्या वह तुम्हारा मेमलुक है, या क्या वह तुम्हारा रिश्तेदार है? पत्नी?—~.

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.34%** है।

शाहबंदर ने कहा, "यह मेरा बेटा है।" नकीब ने उत्तर दिया, "हमने अपने जीवन में कभी तुम्हारा बेटा नहीं देखा।" तब शाहबंदर ने कहा, "आँखों के बुरे प्रभाव से बचने के लिए मैंने उसे एक गुप्त कमरे में, एक गुप्त द्वार के नीचे पाला था, और मेरी इच्छा थी कि जब तक वह अपनी दाढ़ी को हाथ से पकड़ना न सीख जाए, तब तक वह वहाँ से बाहर न आए; लेकिन उसकी माँ ने सहमति नहीं दी; और उसने मुझसे एक दुकान खोलने, उसे

सामान देने और उसे खरीद-बेचने की कला सिखाने का अनुरोध किया।" तब नकीब व्यापारियों के पास गया और उन्हें सारी बात बताई; यह सुनकर वे सब उठे और उसके साथ शाहबंदर के पास गए, और उसके सामने खड़े होकर फ़ज़ीतेहा पढ़ी, और उसे इस युवक के पुत्र होने पर बधाई दी, और उससे कहा, "हमारे प्रभु, उसकी जड़ और शाखा दोनों को सलामत रखें!" लेकिन (उन्होंने आगे कहा) हमारे बीच जो गरीब है, जब उसके घर बेटा या बेटी पैदा होता है, तो उसे अपने भाइयों के लिए 'असेकदेह'25 का एक बर्तन बनाना और अपने परिचितों और रिश्तेदारों* को आमंत्रित करना आवश्यक है।

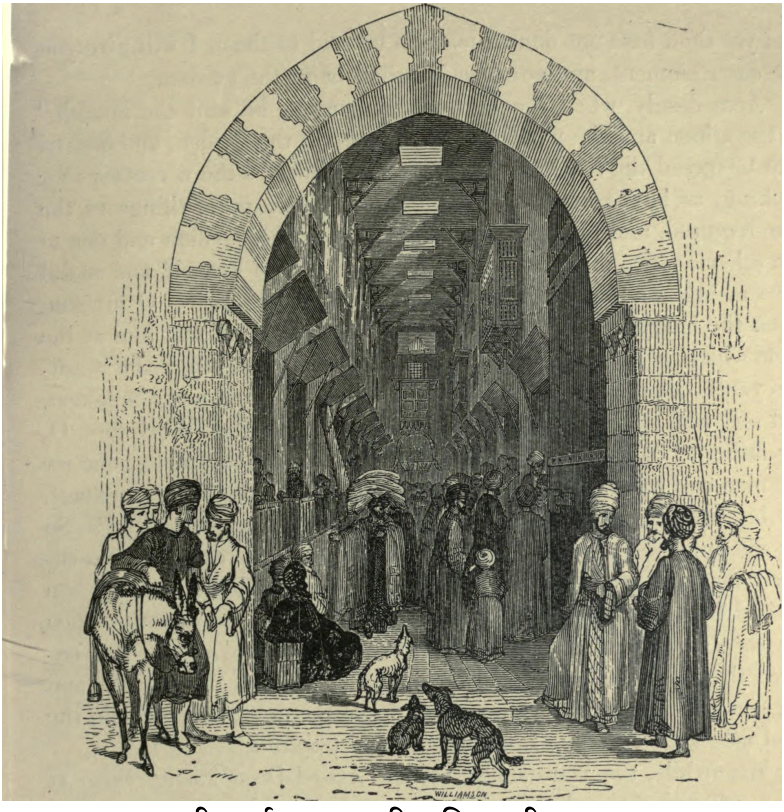

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.44%** है।

230 वला*-एद-दीन अबू-श-शामत की कहानी\ और फिर भी तुमने यह नहीं किया। इसलिए उसने उनसे कहा, मैं तुम्हें दावत दूंगा, और हमारी मुलाकात बगीचे में होगी। तदनुसार, अगली सुबह जब हुई, तो उसने फराश24 को बगीचे में स्थित सैलून और मंडप25 में भेजा, और उनसे उनमें फर्नीचर लगाने का अनुरोध किया। उसने खाना पकाने की आवश्यक वस्तुएँ भी भेजीं, जैसे मेमने और घी, और ऐसी अन्य चीजें जो आवश्यकतानुसार थीं, और दो मेजें तैयार कीं, एक मंडप में और एक सैलून में। व्यापारी शेम्स-एद-दीन ने कमर कसी, और उसके बेटे अला-एद-दीन ने भी, और पहले वाले ने दूसरे वाले से कहा, हे मेरे बेटे, जब बूढ़ा आदमी आएगा, तो मैं उससे मिलूंगा, और उसे मंडप में रखी मेज पर बैठाऊंगा; और हे मेरे बेटे, जब बिना दाढ़ी वाला युवक आएगा, तो तुम उसे ले जाना और उसे सैलून में ले जाना, और उसे वहाँ मेज पर बैठाओ। उसके बेटे ने उससे कहा, “हे मेरे पिता, आपने दो मेजें क्यों तैयार की हैं, एक पुरुषों के लिए और एक युवकों के लिए?” व्यापारी ने उत्तर दिया, “हे मेरे बेटे, दाढ़ीविहीन युवक पुरुषों की उपस्थिति में खाने में शर्म महसूस करता है।”26 तो उसके बेटे ने इसे स्वीकार कर लिया। और जब व्यापारी आए, तो शेम्स-ए-दीन ने पुरुषों से मुलाकात की और उन्हें मंडप में बैठाया; और उसके बेटे अला-ए-दीन ने युवकों से मुलाकात की और उन्हें बैठक कक्ष में बैठाया। फिर नौकरों ने भोजन परोसा, और सभी ने खाया-पिया, आनंद लिया और प्रसन्न हुए, उन्होंने शरबत पिया, और नौकरों ने इत्र का धुआँ उड़ाया; जिसके बाद, वृद्ध लोग विज्ञान और परंपरा पर बातचीत करने बैठे।27 इस बीच, युवकों ने अला-ए-दीन को कमरे के ऊपरी छोर पर अपने बीच बैठाया, और उनमें से एक ने अपने साथी से कहा, “हे मेरे स्वामी हसन, मुझे राजधानी के बारे में जानकारी दें।” अपनी उस संपत्ति के बारे में बताओ, जिसके द्वारा तुम खरीदते-बेचते हो, वह तुम्हें

कैसे मिली? उसने उत्तर दिया, जब मैं बड़ा हुआ और जवान हुआ, तो मैंने अपने पिता से कहा, हे मेरे पिता, मुझे कुछ सामान दे दो: — लेकिन उन्होंने उत्तर दिया, हे मेरे पुत्र, मेरे पास कुछ नहीं है; फिर भी जाओ और किसी व्यापारी से पैसा जुटाओ, और उससे व्यापार करो, और बेचने-खरीदने, लेने-देने की कला सीखो। तो मैं एक व्यापारी के पास गया, और उससे एक हजार सोने के सिक्के उधार लिए, और उससे कुछ सामान खरीदकर, मैं उनके साथ सीरिया गया, जहाँ मुझे दुगुना मूल्य मिला। फिर मैंने सीरिया से सामान लिया, और उसके साथ बगदाद गया, जहाँ मैंने उसे बेचा, और फिर दुगुना मूल्य प्राप्त किया; और मैंने तब तक व्यापार करना जारी रखा जब तक कि मेरी पूंजी लगभग दस हजार सोने के सिक्के नहीं हो गई। — और प्रत्येक युवक ने अपने साथी से इसी तरह की बातें कहीं, जब तक कि बोलने की बारी 'अलू-ए-ईन अबू-श-शिमीत की नहीं आ गई; तब उन्होंने उससे कहा, एंक्ल

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.92%** है।

'अल-ए-दीन' की कहानी। 231 हे हमारे स्वामी, उन्होंने उत्तर दिया, "मेरा पालन-पोषण एक गुप्त द्वार के नीचे एक भूमिगत कक्ष में हुआ था, और मैं इस सप्ताह उससे बाहर आया हूँ, और मैं दुकान जाता हूँ और वहाँ से घर लौटता हूँ।" इस पर उन्होंने उनसे कहा, "तुम्हें घर में रहने की आदत है, और तुम्हें यात्रा का आनंद नहीं पता, और यात्रा केवल मनुष्यों के लिए है।" उन्होंने उत्तर दिया, "मुझे यात्रा की कोई आवश्यकता नहीं है; और आराम अनमोल है।" उनमें से एक ने अपने साथी से कहा, "यह मछली के समान है: जब वह पानी छोड़ती है तो मर जाती है।" तब उन्होंने उससे कहा, "हे अल-ए-दीन, व्यापारियों के पुत्रों का गौरव लाभ के लिए यात्रा करने के अलावा और कुछ नहीं है।" ये सुनकर अहीदीन क्रोधित हो गया

और रोती आँखों और दुखी हृदय से युवकों के बीच से निकलकर अपने खच्चर पर सवार होकर घर चला गया। उसकी माँ ने उसे अत्यधिक क्रोधित और रोते हुए देखा, तो उसने उससे कहा, हे मेरे पुत्र, तुझे क्या रुला रहा है? उसने उत्तर दिया, सभी व्यापारियों के पुत्रों ने मुझे ताना मारा है और कहा है कि व्यापारियों के पुत्रों का गौरव केवल सोने-चाँद कमाने के लिए यात्रा करने में है। उसकी माँ ने उससे कहा, हे मेरे पुत्र, क्या तू यात्रा करना चाहता है? उसने उत्तर दिया, हाँ। फिर उसने उससे पूछा, तू किस देश की यात्रा करना चाहता है? उसने उत्तर दिया, बगदीद शहर की; क्योंकि वहाँ मनुष्य अपने माल की लागत से दुगुना लाभ कमाता है। तब उसकी माँ ने उससे कहा, हे मेरे पुत्र, तेरे पिता के पास बहुत धन है; लेकिन अगर वह अपने धन से तुम्हारे लिए माल तैयार न करे, तो मैं अपने धन से तुम्हारे लिए कुछ माल तैयार कर दूँगी। उसने उत्तर दिया, "सर्वोत्तम उपकार वह है जो शीघ्रता से किया जाए; और यदि दया दिखानी हो, तो यही सही समय है।" इसलिए उसने दासों को बुलाया और उन्हें माल पैक करने वालों के पास भेजा, और एक गोदाम खोलकर उसमें से उसके लिए कुछ माल निकाला, और उन्होंने उसके लिए दस बोरे माल पैक कर दिया। इसी बीच उसके पिता ने चारों ओर देखा, और अपने पुत्र अला-ए-दीन को बगीचे में नहीं पाया। इसलिए उन्होंने उसके बारे में पूछताछ की, और उन्हें बताया गया कि वह अपने खच्चर पर सवार होकर घर गया है; इस पर वह भी खच्चर पर सवार होकर उसके पीछे गए; और जब वे अपने घर में पहुँचे, तो उन्होंने पैक किए हुए बोरे देखकर उनके बारे में पूछा। तब उसकी पत्नी ने उन्हें बताया कि व्यापारियों के पुत्रों ने उसके पुत्र अला-ए-दीन के साथ कैसा व्यवहार किया था। इस पर उन्होंने उससे कहा, "हे मेरे पुत्र, विदेश यात्रा पर लानत हो!" क्योंकि अल्लाह के रसूल (अल्लाह उन पर रहमत फरमाए और उनकी रक्षा करे!) ने कहा है, मनुष्य का सौभाग्य है

कि वह अपने देश में ही अपना जीवन यापन करे; और प्राचीन काल से ही यह कहा गया है, यात्रा से बचो, चाहे वह एक मील की ही क्यों न हो।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.32%** है।

21° अला एड-डीक्स की यात्रा की कहानी। — तब उसने अपने बेटे से कहा, क्या तूने यात्रा करने का निश्चय कर लिया है, और क्या तू अपना इरादा नहीं छोड़ेगा? उसके बेटे ने उत्तर दिया, मुझे माल लेकर बगदाद जाना ही है, नहीं तो मैं अपने कपड़े उतारकर दरवेशों का वेश धारण कर देशों में भटकता फिरूँगा। तब उसके पिता ने उससे कहा, मैं न तो जरूरतमंद हूँ, न ही दरिद्र; बल्कि इसके विपरीत, मेरे पास बहुत धन है। और उसने उसे अपना सारा धन, माल और सामान दिखाया, और उससे कहा, मेरे पास हर देश के लिए उपयुक्त सामान और अन्य वस्तुएँ हैं। और उसने उसे ऐसे सामान के चालीस बोरे दिखाए, जिनमें से प्रत्येक पर उसकी कीमत, एक हजार सोने के सिक्के लिखी हुई थी। तब उसने उससे कहा, "हे मेरे पुत्र, चालीस बोझ उठा लो, और दस बोझ जो तेरी माता ने तुझे दिए हैं, और परमेश्वर की शरण में यात्रा करो, जिसका नाम महान है! परन्तु, हे मेरे पुत्र, मुझे तेरे मार्ग में एक वन के कारण भय है, जिसे सिंह वन कहा जाता है, और वहाँ एक घाटी है जिसे कुत्तों की घाटी कहा जाता है; क्योंकि उन दोनों स्थानों पर निर्दयतापूर्वक प्राणों की बलि दी जाती है।" — "ऐसा क्यों, हे मेरे पिता?" उसके पुत्र ने कहा। व्यापारी ने उत्तर दिया, "एक बेदावी द्वारा, जो मार्ग का अवरोधक है, जिसका नाम 'एजलान है।" परन्तु उसके पुत्र ने उत्तर दिया, "रक्षा के साधन परमेश्वर की ओर से हैं, और यदि उनमें मेरा कोई हिस्सा बचा है, तो मुझे कोई हानि नहीं होगी।" तब वह अपने पिता के साथ घोड़े पर सवार होकर बोझ ढोने वाले पशुओं के बाजार की ओर चल पड़ा। और देखो, एक अक्कम2s

अपने खच्चर से उतरा और व्यापारियों के शाहबंदर का हाथ चूमकर उससे बोला, अल्लाह की कसम, हे मेरे स्वामी, आपने हमें बहुत समय से व्यापारिक कार्यों में नहीं लगाया है। शाहबंदर ने उत्तर दिया, हर समय का अपना भाग्य और अपने लोग होते हैं।29 हे मुकद्दम30, यात्रा करने की इच्छा रखने वाला मेरा यह बेटा ही है। — और अक्कम ने कहा, अल्लाह उसे आपके पास सुरक्षित रखे! तब शाहबंदर ने अपने बेटे और अक्कम के बीच एक समझौता किया कि पहला दूसरे के बेटे के समान होगा, और अक्कम को अलादीन के बारे में एक ज़िम्मेदारी सौंपी और उससे कहा, अपने जवानों के लिए ये सौ सोने के सिक्के ले लो। इसके बाद उन्होंने साठ खच्चर खरीदे और सैय्यदी अब्दुल कादिर अल-गीलानी के लिए एक आवरण खरीदा, और अपने बेटे से कहा, "हे मेरे बेटे, जब मैं अनुपस्थित रहूँ, तो यह अक्कम मेरी जगह तेरा पिता होगा, और वह तुझसे जो कुछ भी कहे, तू उसका पालन करना।" फिर वह खच्चरों और युवकों के साथ लौट आए, और अगली रात उन्होंने पूरे कुरान का पाठ करवाया और शेख अब्दुल कादिर अल-गीलानी के सम्मान में एक उत्सव मनाया।32 और जब अगली सुबह हुई, तो व्यापारियों के शाह-बंदर ने उसके बेटे को दस हजार सोने के सिक्के देते हुए कहा, "जब

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.12%** है।

अला-ए-दीन अबू-शख्मत की कहानी। 233 जब तुम बगदाद में प्रवेश करो, यदि तुम्हें आसानी से बिकने वाली वस्तुएँ मिलें, तो उन्हें बेच दो; परन्तु यदि उनकी मांग न हो, तो इन सोने के सिक्कों को खर्च कर दो। फिर उन्होंने खच्चरों पर सामान लादा, एक दूसरे को विदाई दी और दल शहर से निकल पड़ा। वे रेगिस्तानों और बंजर भूमि से होते हुए तब तक आगे बढ़ते रहे जब तक कि उन्हें दमिश्क दिखाई नहीं दिया, और दमिश्क

से वे तब तक आगे बढ़ते रहे जब तक कि वे अलेप्पो में प्रवेश नहीं कर गए, और वहाँ से वे तब तक आगे बढ़ते रहे जब तक कि उनके और बगदाद के बीच एक दिन की यात्रा की दूरी नहीं रह गई। वे तब तक आगे बढ़ते रहे जब तक कि वे एक घाटी में नहीं उतर गए, और अला-ए-दीन ने वहाँ रुकने की इच्छा व्यक्त की; परन्तु अक्कम ने कहा, यहाँ मत रुको: अपने रास्ते पर चलते रहो और अपनी गति बढ़ाओ: शायद हम बगदाद के द्वार बंद होने से पहले वहाँ पहुँच जाएँ; लोग उन्हें न तो खोलते हैं और न ही बंद करते हैं, सिवाय सूरज निकलने के, इस डर से कि कहीं राफिदी33 शहर पर कब्जा न कर लें और विज्ञान की किताबों को टिगरिस नदी में न फेंक दें। लेकिन अला-एद-दीन ने उत्तर दिया, "हे मेरे पिता, मैं इस माल के साथ इस शहर में व्यापार के लिए नहीं, बल्कि विदेशी देशों के दर्शन करने के लिए आया हूँ।" - "हे मेरे पुत्र," अक्कम ने उत्तर दिया, "अरबों के कारण हमें तुम्हारी और तुम्हारी संपत्ति की चिंता है।" लेकिन अला-एद-दीन ने कहा, "हे मनुष्य, क्या तू सेवक है या किसी की सेवा में? मैं बगदाद में सुबह के अलावा प्रवेश नहीं करूँगा, ताकि बगदाद के लोग मेरा माल देख सकें और मुझे पहचान सकें।" - तब अक्कम ने उत्तर दिया, "जो तू चाहे कर; मैंने तुझे सलाह दी है, और तू स्वयं निर्णय ले सकता है।" और अला-एद-दीन ने उन्हें खच्चरों की पीठ से बोझ उतारने का आदेश दिया; और उन्होंने ऐसा ही किया, और तंबू गाड़कर आधी रात तक वहीं रहे। फिर अला-ए-दीन तंबू से बाहर निकले और दूर से कुछ चमकता हुआ देखा। उन्होंने अक्कम से कहा, हे मुकद्दम, यह चमकती हुई चीज़ क्या है? अक्कम ने ध्यान से और बारीकी से देखते हुए पाया कि जो चमक रहा था वह बेदावी हथियारों और तलवारों के भाले और लोहे थे। और देखो, वे अरब थे, जिनका सरदार अरबों का शेख़ एजलान अबू-नैब था; और जब ये अरब उनके पास आए और उनके सामान देखे, तो उन्होंने एक-दूसरे से

कहा, हे लूट की रात! जैसे ही यात्रियों ने उन्हें यह कहते सुना, मुकद्दम कमाल-ए-दीन, अक्कम, चिल्लाया, दूर हो जाओ, हे सबसे छोटे अरब! लेकिन अबू-नैब ने अपने भाले से उसकी छाती पर वार किया, और वह चमकता हुआ उसकी पीठ से बाहर निकल आया; इसके बाद वह तम्बू के द्वार पर गिर पड़ा और मारा गया। तब सक्का34 चिल्लाया, "दूर हो जाओ, हे अरबों में सबसे नीच!" और उनमें से एक ने तलवार से उसके कंधे पर वार किया, और तलवार उसके भीतर से चमकती हुई निकल गई, और वह भी गिर पड़ा और मारा गया। II. 2 H

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.60%** है।

यह सब अला-ए-दीन के सामने घट रहा था। अरबों ने काफिले को घेर लिया और उस पर बेरहमी से हमला किया, और अला-ए-दीन के सभी सेवकों को मार डाला, एक को भी नहीं बख्शा; इसके बाद, उन्होंने खच्चरों की पीठ पर बोझ लादा और पीछे हट गए। तब अला-ए-दीन ने मन ही मन कहा, "तुम्हारे वध का कारण केवल तुम्हारा खच्चर और तुम्हारा यह वस्त्र ही होगा।" इसलिए वह उठा, और वस्त्र उतारकर अपने खच्चर की पीठ पर फेंक दिया, केवल कमीज़ और पतलून पहने रह गया; और अपने सामने, तम्बू के द्वार की ओर देखा, तो उसे मृतकों का खून बहता हुआ दिखाई दिया; और वह कमीज़ और पतलून सहित उसमें लोटने लगा, जिससे वह अपने खून में डूबे हुए मृत व्यक्ति जैसा प्रतीत हुआ। इसी बीच, अरबों के शेख, 'एजलान ने अपने सैनिकों से कहा, "हे अरबों, क्या यह काफिला मिस्र से आ रहा था, या बगदाद से जा रहा था?" उन्होंने उत्तर दिया, “हम मिस्र से बगदाद आ रहे हैं।” उसने उनसे कहा, “मृतकों के पास लौट जाओ; क्योंकि मुझे लगता है कि इस काफिले का मुखिया मरा नहीं है।” इसलिए अरब लोग मृतकों के पास लौट गए और उन्हें तब

तक भाले से गोदते और मारते रहे जब तक वे अला-ए-दीन के पास नहीं पहुँच गए। अला-ए-दीन मृतकों के बीच कूद पड़ा था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.39%** है।

अला-एद-दीन की कहानी (अबीत-श-सियामत) 235 और जब वे उसके पास आए तो उन्होंने कहा, तूने मरने का नाटक किया है; इसलिए हम तेरा वध पूरा करेंगे। और एक बेदावी ने अपना भाला उठाया और अला-एद-दीन की छाती में घोंपने ही वाला था; तभी अही-एद-दीन ने कहा, हे मेरे स्वामी अब्द-अल-कादिर, हे गिलानी! और उसने देखा कि एक हाथ ने भाले को उसकी छाती से हटाकर मुकद्दम कमाल-एद-दीन, अक्कम की

छाती की ओर मोड़ दिया; जिससे बेदावी ने उसे भाले से भेद दिया और अला-एद-दीन को छोड़कर चला गया; इसके बाद, अरबों ने खच्चरों की पीठ पर बोझ लाद दिया और उनके साथ चले गए। तब अही-एद-दीन ने देखा और पाया कि पक्षी अपने लूटे हुए माल के साथ उड़ गए हैं, तो वह उठा और भाग गया। लेकिन देखो, बेदावी अबू-नैब ने अपने साथियों से कहा, "हे अरबों, मैंने दूर से किसी वस्तु की धुंधली सी झलक देखी है।" उनमें से एक आगे आया और उसने अला-ए-दीन को भागते हुए देखा; इस पर उसने उससे कहा, "जब तक हम तुम्हारे पीछे हैं, भागने से तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा।" और उसने अपनी घोड़ी को मुट्ठी से मारा, और वह उसके पीछे दौड़ पड़ी। अला-ए-दीन ने अपने सामने पानी से भरा एक तालाब देखा, और उसके बगल में एक कुंड था: इसलिए वह कुंड की एक खिड़की पर चढ़ गया, और वहाँ लेटकर सोने का नाटक किया, और कहा, "हे दयालु रक्षक, मुझे अपनी उस अटूट सुरक्षा के आवरण से ढक दो!"36 और देखो, बेदावी कुंड के नीचे रुक गया, और अला-ए-दीन को पकड़ने के लिए अपना हाथ बढ़ाया; इस पर अला-ए-दीन ने कहा, "हे आपके आशीर्वाद, हे मेरी देवी नेफीसेह!" ये तुम्हारा समय है!37 — और देखो, एक बिच्छू ने बेदावी के हाथ की हथेली में डंक मार दिया; और वह चिल्लाया और बोला, हे अरबों, मेरे पास आओ, क्योंकि मुझे डंक लगा है! और वह अपनी घोड़ी की पीठ से उतर गया, और उसके साथी उसके पास आकर उस पर फिर से सवार हो गए, और उससे पूछा, क्या हुआ है? उसने उन्हें उत्तर दिया, मुझे एक बिच्छू ने डंक मारा है। और फिर उन्होंने कारवां का सामान लिया और चले गए। अला-ए-दीन कुछ देर तक कुएँ की खिड़की में सोता रहा। फिर उठकर वह आगे बढ़ा और बगदाद में प्रवेश किया। जब वह गलियों से गुजर रहा था तो कुत्ते उसके पीछे भौंक रहे थे, और शाम को, जब वह अंधेरे में चल रहा था, तो उसने एक मस्जिद का

दरवाजा देखा, और उसके प्रवेश द्वार में प्रवेश करके वह उसमें छिप गया। और तभी, एक प्रकाश उसकी ओर आया, और जब उसने ध्यान से उसकी ओर देखा, तो उसने दो व्यापारियों के आगे चल रहे दो काले गुलामों के हाथों में दो लालटेन देखीं। इनमें से एक सुंदर चेहरे वाला बूढ़ा व्यक्ति था, और दूसरा एक युवक था; और उसने युवक को युवक से यह कहते सुना, "अल्लाह की कसम, हे मेरे चाचा, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मेरी चचेरी बहन, तुम्हारी बेटी, मुझे लौटा दो।" इस पर बूढ़े व्यक्ति ने उत्तर दिया, "क्या मैंने ऐसा किया?"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.20%** है।

जब तू अपनी पत्नी को तलाक दे रहा था, तब क्या मैंने तुझे कई बार मना नहीं किया?38 तब बूढ़े ने दाईं ओर देखा और अला-ए-दीन को चाँद के टुकड़े के समान प्रकट होते देखा; और उसने उससे कहा, तुझ पर सलाम हो! अला-ए-दीन ने भी अभिवादन किया, और बूढ़े ने उससे कहा, हे युवक, तू कौन है? उसने उत्तर दिया, मैं अला-ए-दीन हूँ, काहिरा के व्यापारियों के शाहबंदर शेम्स-ए-दीन का बेटा। मैंने अपने पिता से माल देने का अनुरोध किया, और उन्होंने मेरे लिए पचास बोझ माल तैयार किया, और मुझे दस हजार सोने के सिक्के दिए; और मैं यात्रा करता रहा जब तक कि मैं सिंह वन नहीं पहुँच गया, तभी अरबों ने मुझ पर हमला किया और मेरा सारा धन और सामान छीन लिया; और मैं इस शहर में घुस गया, यह न जानते हुए कि रात कहाँ बिताऊँ: इसलिए, इस जगह को देखकर, मैंने अपने आप को इसमें छिपा लिया। तब बूढ़े ने उससे कहा, “हे मेरे पुत्र, मैं तुझे एक हजार सोने के सिक्के और एक हजार सोने के सिक्कों के बराबर कीमत का वस्त्र क्यों दे रहा हूँ?” “हे मेरे चाचा, आप मुझे ये चीजें किसलिए दे रहे हैं?” अला-ए-दीन ने उत्तर दिया, “यह युवक

जो मेरे साथ है, मेरे भाई का पुत्र है, और उसके पिता का उसके सिवा कोई पुत्र नहीं है; और मेरी एक पुत्री है, और उसके सिवा मेरी कोई पुत्री नहीं है, जिसका नाम ज़ुबैदेह अल-ओदेयेह है। वह अत्यंत सुंदर और आकर्षक है, और मैंने उसका विवाह उससे किया है, और वह उससे प्रेम करता है; परन्तु वह उससे घृणा करती है; और मैंने तीन बार तलाक की शपथ ली है, और मुश्किल से ही अपनी पत्नी से मिल पाया है।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.73%** है।

अला-एद-दीन अबू-श-शमत की कहानी। 237 जब उसने उससे अलग होने का फैसला किया, तब उसने यह सुना। और उसने अपने सभी परिचितों को मुझसे सिफारिश करने के लिए कहा कि मैं उसे उसे वापस लौटा दूं। तो मैंने उससे कहा, यह तब तक ठीक नहीं होगा जब तक किसी

मुस्तहल के माध्यम से न हो। 40 और मैंने उससे सहमति जताई कि हम किसी विदेशी को मुस्तहल नियुक्त करें, ताकि इस मामले के कारण कोई उसे दोषी न ठहराए। अब चूंकि तुम विदेशी हो, तो हमारे साथ आओ, ताकि हम तुम्हारा उससे विवाह अनुबंध लिख सकें, और कल तुम उसे तलाक दे दोगे, और हम तुम्हें वह देंगे जिसका मैंने उल्लेख किया है। - तो अला-एद-दीन ने मन ही मन कहा, उसकी बात मानना गलियों और चौराहों में रातें गुजारने से बेहतर होगा। तदनुसार वह उन दो आदमियों के साथ काकली चला गया। जब कदी ने उसे देखा, तो उसका हृदय उसके प्रति स्नेह से भर गया, और उसने युवती के पिता से पूछा, “आपकी क्या इच्छा है?” बूढ़े ने उत्तर दिया, “हमारी इच्छा है कि हम इस व्यक्ति को अपनी पुत्री के लिए दहेज के रूप में नियुक्त करें; लेकिन हम उसके विरुद्ध एक अनुबंध लिखेंगे, जिसमें यह लिखा होगा कि दहेज के रूप में अग्रिम भुगतान की जाने वाली राशि दस हजार सोने के सिक्के है; और यदि वह कल सुबह उसे तलाक दे देता है, तो हम उसे एक हजार सोने के सिक्कों की कीमत का एक वस्त्र, उसी कीमत का एक खच्चर और एक हजार सोने के सिक्के अतिरिक्त देंगे; लेकिन यदि वह उसे तलाक नहीं देता है, तो उसे दस हजार सोने के सिक्के देने होंगे।”41 इस प्रकार उन्होंने इस शर्त पर अनुबंध तय किया, और युवती के पिता ने इस आशय का अनुबंध प्राप्त किया। फिर उसने अला-ए-दीन को अपने साथ लिया, उसे वस्त्र पहनाए, और उसके साथ तब तक चलता रहा जब तक वे उसकी पुत्री के घर नहीं पहुँच गए, जहाँ उसने उसे घर के द्वार पर खड़ा किया, और अपनी पुत्री के पास जाकर उससे कहा, “अपने दहेज का अनुबंध स्वीकार करो; मैंने तुम्हारा विवाह एक सुंदर युवक, अला-ए-दीन अबू-श-शमत से लिख दिया है; इसलिए तुम उसके प्रति अत्यंत सतर्क रहना। उसने उसे वचन दिया और अपने घर चला गया। अब उस युवती के चचेरे भाई (उसके पूर्व

पति) का एक कहरामनेह (दासी) था जो अक्सर ज़ुबैदेह अल-ओदेयेह के घर आता था और उसके साथ अच्छा व्यवहार करता था; उसने उससे कहा, "हे मेरी माँ, यदि मेरे चाचा की पुत्री ज़ुबैदेह इस सुंदर युवक को देख ले, तो वह मुझे स्वीकार नहीं करेगी; इसलिए मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम कोई ऐसा उपाय करो जिससे युवती उससे दूर रहे।" - उसने उत्तर दिया, "तुम्हारी जवानी की कसम, मैं उसे अपने पास नहीं आने दूँगी।" तब वह अला-ए-दीन के पास गई और उससे कहा, "हे मेरे पुत्र, मैं तुम्हें ईश्वर (जिसका नाम महान है!) के नाम पर अच्छी सलाह देती हूँ।" इसलिए मेरी सलाह मानो और उस युवती के पास मत जाओ, बल्कि उसे अकेला छोड़ दो और न तो उसे छुओ और न ही

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.24%** है।

238 'अला-एद-दीन की कहानी अहु-श-शमत। उसके पास आओ। — क्यों? उसने कहा। और उसने उत्तर दिया, वास्तव में उसकी पूरी त्वचा हाथीपांव से ग्रसित है, और मुझे तुम्हारे लिए डर है कि कहीं वह तुम्हारे सुंदर, युवा शरीर को यह रोग न फैला दे।42 तो उसने उत्तर दिया, मुझे उसकी कोई आवश्यकता नहीं है। तब वह उस युवती के पास गई, और उससे वही कहा जो उसने 'अला-एद-दीन से कहा था; और युवती ने उत्तर दिया, मुझे उसकी कोई आवश्यकता नहीं है: इसके विपरीत, मैं उसे अकेला छोड़ दूंगी, और सुबह वह अपने रास्ते चला जाएगा। और उसने एक दासी को बुलाया, और उससे कहा, भोजन सहित मेज ले आओ, और उसे दे दो ताकि वह भोजन कर सके। इसलिए दासी भोजन सहित मेज उसके पास ले गई, और उसे उसके सामने रख दिया, और उसने तृप्त होने तक खाया, और फिर या-सेकन का अध्याय पढ़ते हुए बैठ गया,43 एक मधुर आवाज में; और उस युवती ने उसकी बातें सुनकर पाया कि

उसकी आवाज़ दाऊद के परिवार द्वारा गाए जाने वाले भजनों जैसी थी। 44 इसलिए उसने मन ही मन कहा, अल्लाह इस बुढ़िया पर मुसीबत भेजे जिसने मुझे बताया कि वह हाथीपांव से पीड़ित है! क्योंकि जो इस हालत में होता है उसकी आवाज़ ऐसी नहीं होती। निश्चय ही यह बात उसके विरुद्ध झूठ है। — फिर उसने अपने हाथों में भारतीय निर्मित वीणा लेकर उसके तारों को सुर दिया और आकाश में पक्षियों को भी स्तब्ध कर देने वाली आवाज़ में ये दो छंद गाए: — मैं एक मंद काली आँखों वाले हिरण के बच्चे पर मोहित हूँ: जब वह चलता है तो विलो की शाखाएँ उससे ईर्ष्या करती हैं। वह मुझे ठुकरा देता है और दूसरा उसकी संगति का आनंद लेता है, जो अल्लाह का वरदान है जिसे वह चाहता है। और जब उसने उसके शब्द सुने, अध्याय का पाठ समाप्त करने के बाद उसने उत्तर में यह श्लोक गाया: — वस्त्रों में छिपी आकृति को मेरा प्रणाम, और गालों के उद्यानों में खिले गुलाबों को। इस पर युवती का प्रेम उसके लिए और बढ़ गया, और उसने पर्दा उठाया; और जब अला-एद-दीन ने उसे देखा, तो उसने ये दो श्लोक पढ़े: — वह चंद्रमा के समान प्रकट हुई, और विलो की शाखा के समान झुकी हुई थी; अंबर जैसी सुगंध बिखेर रही थी, और हिरण जैसी आँखों से देख रही थी। ऐसा लग रहा था मानो मेरे हृदय पर दुःख का प्रेम सवार हो गया हो, और जब वह चली जाएगी, तो उस पर अधिकार कर लेगी। फिर वह सुंदर चाल से आगे बढ़ी; लेकिन जैसे ही वह उसके पास पहुँची, उसने उससे कहा, मुझसे दूर हो जाओ, कहीं तुम अपना रोग मुझ तक न पहुँचा दो। तो उसने अपनी कलाई खोली, जो दो भागों में बंटी हुई थी,45 और उसकी सफेदी चाँदी जैसी थी; इसके बाद उसने उससे कहा, मुझसे दूर चले जाओ; क्योंकि तुम हाथीपांव से पीड़ित हो, और शायद तुम मर जाओगे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

26.98% है।

अला-ए-दीन ऐयू-श-सिलामएक्सटी. 239 की कहानी, बीमारी की सूचना देने के लिए। इसलिए उसने उससे पूछा, तुम्हें किसने बताया कि मैं हाथीपांव से पीड़ित हूँ? उसने उत्तर दिया, बूढ़ी औरत ने मुझे इसके बारे में बताया। और उसने जवाब दिया, बूढ़ी औरत ने मुझे यह भी बताया कि तुम कुष्ठ रोग से पीड़ित हो। फिर उसने उसके सामने अपनी बाहें खोलीं, और उसने पाया कि उसकी त्वचा शुद्ध चांदी जैसी थी। इसलिए उसने उसे अपना पति स्वीकार कर लिया। और अगली सुबह उसने उससे कहा, हाय, यह खुशी अधूरी है! कौआ इसे ले गया और उड़ गया! 46 — इसलिए उसने कहा, इन शब्दों का क्या अर्थ है? और उसने उसे उत्तर दिया, हे मेरी स्वामिनी, मुझे तुम्हारे साथ केवल यही एक घंटा रहना है। — ऐसा कौन कहता है? उसने पूछा। — तुम्हारे पिता ने, उसने उसे उत्तर दिया, मेरे विरुद्ध एक अनुबंध लिखा था, जिसमें मुझे तुम्हारे दहेज के रूप में दस हजार सोने के सिक्के देने के लिए बाध्य किया गया था; और अगर मैं इसे आज पेश नहीं करती, तो वे मुझे इसके लिए कदी के घर में कैद कर देंगे; और अब मेरा हाथ दस हजार सोने के सिक्कों में से एक आधा दिरहम भी देने में असमर्थ है। लेकिन उसने उससे कहा, हे मेरे स्वामी, क्या वैवाहिक बंधन आपके हाथ में है, या उनके हाथ में? उसने उत्तर दिया, बंधन मेरे हाथ में है; लेकिन मेरे पास कुछ भी नहीं है। उसने पलटकर कहा, मामला आसान है; और डरने की कोई बात नहीं; बस ये सौ सोने के सिक्के ले लो। अगर मेरे पास और होते, तो मैं तुम्हें तुम्हारी इच्छा पूरी कर देती। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकती; क्योंकि मेरे पिता ने अपने भाई के बेटे के प्रति स्नेह के कारण अपनी सारी संपत्ति मेरे हाथों से अपने घर में स्थानांतरित कर दी है: यहाँ तक कि मेरे सारे गहने भी उन्होंने ले लिए हैं। लेकिन जब आज सुबह न्याय अदालत से कोई सार्जेंट तुम्हारे

पास आए और कदी और मेरे पिता तुमसे तलाक़ देने को कहें, तो तुम उनसे कहना, किस नियम के अनुसार यह उचित है कि मैं सूर्यास्त के समय विवाह करूँ और सुबह तलाक़ दूँ? तब तुम कदी का हाथ चूमना और उसे भेंट देना; और इसी प्रकार तुम प्रत्येक शहीद का हाथ चूमना और उसे दस सोने के सिक्के देना। और वे सब तुमसे बात करेंगे: और यदि वे तुमसे कहें, तुम तलाक़ क्यों नहीं दोगे और हज़ार सोने के सिक्के, खच्चर और वस्त्र, उस शर्त के अनुसार जो हमने तुम पर लगाई है, क्यों नहीं लोगे? तो तुम उन्हें उत्तर देना, उसके सिर का हर बाल मेरी नज़र में हज़ार सोने के सिक्कों के बराबर है, और मैं उसे कभी तलाक़ नहीं दूँगा, न ही कोई वस्त्र या कुछ और लूँगा। यदि काज़ी तुमसे दहेज देने को कहे, तो उत्तर देना, मैं इस समय दहेज देने में असमर्थ हूँ। तब काज़ी और शहीद तुम पर दया करेंगे और तुम्हें कुछ समय की मोहलत देंगे। अब जब वे इस प्रकार बातचीत कर रहे थे, काज़ी के सार्जेंट ने दरवाजा खटखटाया। तो वह बाहर गया, और सार्जेंट ने कहा

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.94%** है।

240 अल-ए-दीन की कहानी: उसने उससे कहा, "प्रतिवादी के बुलावे का उत्तर दो; 49 क्योंकि तुम्हारे ससुर ने तुम्हें बुलाया है।" अल-ए-दीन ने उसे पाँच सोने के सिक्के देते हुए कहा, "हे सार्जेंट, किस नियम के अनुसार मुझे सूर्यास्त के समय विवाह करना और सुबह तलाक देना अनिवार्य है?" उसने उत्तर दिया, "ऐसा करना हमारे लिए किसी भी स्थिति में उचित नहीं है; और यदि तुम कानून से अनभिज्ञ हो, तो मैं तुम्हारा प्रतिनिधि बनूँगा।" वे न्यायलय गए, और कादी ने अल-ए-दीन से कहा, "तुम स्त्री को तलाक क्यों नहीं देते, और अनुबंध के अनुसार जो तुम्हारे लिए निर्धारित है उसे क्यों नहीं लेते?" इस पर वह कदी के पास गया और उसका हाथ चूमकर

उसमें पचास सोने के सिक्के रख दिए और उससे कहा, "हे हमारे स्वामी कदी, किस नियम के अनुसार यह जायज़ है कि मैं सूर्यास्त के समय विवाह करूँ और सुबह ज़बरदस्ती तलाक़ दूँ?" कदी ने उत्तर दिया, "मुसलमानों के किसी भी नियम के अनुसार ज़बरदस्ती तलाक़ जायज़ नहीं है।" तब युवती के पिता ने कहा, "यदि तुम तलाक़ नहीं देते, तो मुझे दस हज़ार सोने के सिक्के दहेज में दो।" अला-ए-दीन ने उत्तर दिया, "मुझे तीन दिन की मोहलत दो।" लेकिन कदी ने कहा, "तीन दिन की मोहलत काफ़ी नहीं होगी: मैं तुम्हें दस दिन की मोहलत दूँगा।" वे इस पर सहमत हो गए और दस दिन बाद उसे या तो दहेज़ देने या तलाक़ देने के लिए बाध्य कर दिया। इस शर्त पर वह वहाँ से चला गया और ज़रूरत का सारा मांस, चावल, घी और अन्य खाने-पीने की चीज़ें लेकर घर लौट आया और युवती के पास जाकर उसे अपने साथ हुई सारी घटना बताई। उसने उत्तर दिया, “दिन और रात के बीच चमत्कार घटित होते हैं; और ईश्वर प्रदत्त वह है जिसने कहा, ‘क्रोध से व्याकुल होने पर शांत रहो, और विपत्ति आने पर धैर्य रखो; क्योंकि रातें घटनाओं से भरी होती हैं, और हर प्रकार के चमत्कार को जन्म देती हैं।’ फिर वह उठी, भोजन तैयार किया, और मेज लगाई, और उन्होंने खाया-पिया, आनंद लिया, और खूब हँसे; और उसने उससे संगीत बजाने का अनुरोध किया। तो उसने वीणा उठाई, और इस प्रकार बजाई कि मानो कोई पत्थर भी खुशी से नाचने लगे, तारों की ध्वनि दाऊद की आवाज से प्रतिस्पर्धा कर रही थी;50 और उसने वादन का तीव्र भाग शुरू किया।51 लेकिन जब वे आनंद, हंसी-मजाक, और उल्लास और प्रसन्नता से भरे हुए थे, तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। इसलिए उसने उससे कहा, ‘उठो, और देखो दरवाजे पर कौन है।’ इसलिए वह नीचे गया और दरवाजा खोलकर उसने देखा कि वहाँ चार दरवेश खड़े हैं। उसने उनसे पूछा, “तुम क्या चाहते हो?” उनमें से एक ने उत्तर दिया, “हे मेरे

स्वामी, हम”

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.01%** है।

अला-ए-दीन अबू-श-शमात की कहानी। 241 विदेशी दरवेश: हमारी आत्माओं का भोजन संगीत और कविता की मधुरता में निहित है, और हम आज रात सुबह तक, जब हम अपने रास्ते पर चलेंगे, तब तक इनसे अपना मनोरंजन करना चाहते हैं; और तुम्हें ईश्वर (जिसका नाम महान है!) से तुम्हारा प्रतिफल मिलेगा; क्योंकि हम संगीत के बेहद शौकीन हैं, और हममें से कोई भी ऐसा नहीं है जिसे स्तुतिगान, कविताएँ और गीत याद न हों।52 अला-ए-दीन ने उत्तर दिया, मुझे परामर्श करना होगा। और वह ऊपर गया, और युवती को सूचित किया; और उसने उससे कहा, उनके लिए दरवाजा खोल दो। तो उसने उनके लिए दरवाजा खोल दिया, और उन्हें ऊपर ले जाकर बैठाया और उनका स्वागत किया, और उनके लिए भोजन लाया। लेकिन उन्होंने खाने से इनकार कर दिया, और उनमें से एक ने उससे कहा, हे मेरे स्वामी, वास्तव में हमारा भोजन हमारे हृदयों से ईश्वर का स्मरण है, और हमारे कानों से गीत सुनना है; और वह दिव्य रूप से प्रतिभाशाली था जिसने कहा, - हमारी इच्छा केवल समाज के आनंद के लिए है; और खाना तो केवल पशुओं का एक लक्षण है। हमने अभी-अभी आपके घर में कुछ मधुर संगीत सुना; लेकिन जब हम ऊपर आए, तो वह बंद हो गया; और हम जानना चाहते थे कि जो प्रदर्शन कर रही थी वह एक श्वेत या काली दासी थी, या कोई महिला थी। - अला-एद-दीन ने उत्तर दिया, वह मेरी पत्नी है। और उसने उन्हें अपने साथ घटी सारी बातें बताईं, और उनसे कहा, मेरे ससुर ने मुझे उसकी दहेज के रूप में दस हजार सोने के सिक्के देने का वचन दिया है, और उन्होंने मुझे दस दिन की मोहलत दी है। इस पर, दरवेशों में से एक ने उससे कहा, दुखी मत हो,

और सौभाग्य के अलावा किसी और चीज की आशा मत करो; क्योंकि मैं मठ का शेख हूँ, मेरे अधीन चालीस दरवेश हैं जिन पर मेरा अधिकार है, और मैं तुम्हारे लिए उनसे दस हजार सोने के सिक्के एकत्र करूँगा, और तुम अपने ससुर को देय दहेज का भुगतान करोगे। परन्तु उससे (उन्होंने आगे कहा) हमारे लिए संगीत की एक धुन बजाने का अनुरोध करो, ताकि हम प्रसन्न और उत्साहित हो जाएँ; क्योंकि संगीत कुछ लोगों के लिए भोजन के समान है; कुछ के लिए औषधि के समान; और कुछ के लिए पंखे के समान। — अब ये चार दरवेश खलीफा हारून एर-रशीद, वज़ीर जाफ़र अल-बरमेकी, हनी के पुत्र अबू नुवास अल-हसन,53 और जल्लाद मेसरूर थे। और उनके इस घर से गुजरने का कारण यह था कि खलीफा का हृदय संकुचित था; इसलिए उन्होंने वज़ीर से कहा, हे वज़ीर, हमारी इच्छा है कि हम नीचे उतरें और शहर में घूमें; क्योंकि मुझे सीने में संकुचन का अनुभव हो रहा है। इसलिए उन्होंने दरवेशों के वस्त्र धारण किए और शहर में गए, और इस घर के पास से गुजरते हुए उन्होंने संगीत को इकट्ठा किया और कारण का पता लगाना चाहा। उन्होंने रात वहाँ सुख और व्यवस्था से बिताई। 11. 2

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.93%** है।

242 THK 'अला-ए-दीन अबू-श-शामत की कहानी, और एक के बाद एक कहानियां सुनाते-सुनाते सुबह हो गई, जब खलीफा ने नमाज़ की चटाई के नीचे सौ सोने के सिक्के रख दिए, और वह और उसके साथी 'अला-ए-दीन से विदा लेकर चले गए। जब युवती ने नमाज़ की चटाई उठाई, तो उसने उसके नीचे सौ सोने के सिक्के देखे। और उसने अपने पति से कहा, "नमाज़ की चटाई के नीचे मिले ये सौ सोने के सिक्के ले लो; क्योंकि दरवेशों ने बिना हमारी जानकारी के जाने से पहले इन्हें रख

दिया था।" तो 'अला-ए-दीन ने उन्हें ले लिया, और बाज़ार जाकर मांस, चावल, घी और अपनी ज़रूरत की सभी चीज़ें खरीदीं। और अगली रात उसने मोमबत्तियां जलाईं, और अपनी पत्नी से कहा, "दरवेश दस हज़ार सोने के सिक्के नहीं लाए हैं जिनका उन्होंने मुझसे वादा किया था; वे गरीब आदमी हैं।" हालांकि, जब वे बात कर रहे थे, तभी दरवेशों ने दरवाज़ा खटखटाया। दरवाजा; और उसने उससे कहा, नीचे जाओ और उनके लिए दरवाजा खोल दो। उसने वैसा ही किया, और वे ऊपर आए, और उसने उनसे कहा, क्या तुम दस हजार सोने के सिक्के लाए हो जो तुमने मुझसे वादा किया था? उन्होंने उत्तर दिया, अभी तक कोई राशि उपलब्ध नहीं कराई गई है; लेकिन किसी बात की चिंता मत करो: यदि यह ईश्वर की इच्छा है (जिसका नाम महान हो!), तो कल हम तुम्हारे लिए एक रासायनिक प्रक्रिया करेंगे; और अब तुम अपनी पत्नी से कहो कि वह संगीत की एक उत्कृष्ट प्रस्तुति से हमारे कानों को तृप्त करे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.53%** है।

दिलों में इससे खुशी आ सकती है; क्योंकि हमें संगीत पसंद है। इसलिए उसने उनके लिए वीणा पर एक ऐसी धुन बजाई, जो पत्थर को भी नचा दे। और उन्होंने रात आनंद, खुशी, बातचीत और उल्लास में बिताई, जब तक कि सुबह नहीं हुई और उसकी रोशनी नहीं फैली; तब खलीफा ने फिर से नमाज़ की चटाई के नीचे सौ सोने के सिक्के रख दिए, और वह और उसके साथी अला-एद्दीन से विदा लेकर चले गए। इस प्रकार वे नौ रातों तक ऐसा करते रहे; खलीफा हर रात नमाज़ की चटाई के नीचे सौ सोने के सिक्के रखता रहा, जब तक कि दसवीं रात नहीं आ गया; और उनके आना बंद करने का कारण यह था। खलीफा ने एक बड़े व्यापारी को संदेश भेजा और उससे कहा, "काहिरा से आयातित पचास भार तैयार

करो, प्रत्येक भार की कीमत एक हजार सोने के सिक्कों के बराबर हो, और प्रत्येक भार पर उसकी कीमत लिखो; और मेरे लिए एक अबीसीनियाई पुरुष दास का प्रबंध करो।” व्यापारी ने उसके आदेशानुसार सब कुछ तैयार कर दिया। इसके बाद खलीफा ने दास को सोने का एक पात्र और एक सुराही, एक अन्य उपहार और पचास भार सौंप दिए। उसने काहिरा के व्यापारियों के शाहबंदर शेम्स-ए-दीन, जो अला-ए-दीन के पिता थे, की ओर से एक पत्र लिखा और दास को कहा, “इन भारों और इनमें जो कुछ भी है, उसे लेकर उस इलाके में जाओ जहाँ व्यापारियों के शाहबंदर का घर है, और कहो, ‘मेरा मालिक अला-ए-दीन अबू-श-शमत कहाँ है?’ तब लोग तुम्हें उस इलाके और घर का रास्ता बता देंगे।” इसलिए दास ने बोझ और उसमें रखा सामान उठाया और खलीफा के आदेशानुसार चला गया। इसी बीच, युवती का चचेरा भाई उसके पिता के पास गया और उनसे कहा, "चलो, हम अही-ए-दीन के पास चलें, ताकि हम अपने चचेरे भाई का तलाक करवा सकें।" पिता नीचे उतरे और उसके साथ अही-ए-दीन के पास गए; लेकिन जब वे घर पहुँचे, तो उन्होंने पचास खच्चर देखे, जिन पर पचास बोझ लदे हुए थे, और एक खच्चर पर एक काला दास बैठा था; उन्होंने उससे पूछा, "ये बोझ किसके हैं?" उसने उत्तर दिया, "मेरे मालिक अही-ए-दीन अबू-श-शमत के हैं; क्योंकि उनके पिता ने उनके लिए माल तैयार किया और उन्हें बगदाद शहर की यात्रा पर भेजा, और अरबों ने उन पर हमला किया और उनका सारा धन और बोझ छीन लिया; और यह खबर उनके पिता तक पहुँच गई; इसलिए उन्होंने मुझे उनके बदले बोझ लेकर उनके पास भेजा।" उसने मेरे साथ पचास हजार सोने के सिक्कों से लदा एक खच्चर, एक बहुमूल्य वस्त्र, एक काले फर का लबादा, और सोने का एक पात्र और सुराही भी भेजी। इस पर युवती के पिता ने कहा, "यह मेरा दामाद है, और मैं तुम्हें घर का रास्ता

दिखाऊंगा।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.35%** है।

244 अला-ए-दीन अल-श-शमत की कहानी। जब अला-ए-दीन घर में गहरे शोक में डूबे बैठे थे, तभी दरवाजा खटखटाया गया; और उन्होंने कहा, ऐ ज़ुबैदेह, अल्लाह सर्वज्ञ है; लेकिन ऐसा लगता है कि तुम्हारे पिता ने मेरे पास कादी या वली से एक सिपाही भेजा है। उसने उत्तर दिया, नीचे जाकर देखो कि क्या बात है। तो वह नीचे गए और दरवाजा खोला, और अपने ससुर को देखा, जो व्यापारियों के शाह-बंदर, ज़ुबैदेह के पिता थे; और उन्होंने वहाँ एक सांवले रंग और सुंदर चेहरे वाले अबीसीनियाई दास को खच्चर पर सवार पाया। दास खच्चर से उतरकर उनके हाथों को चूमा; और उन्होंने उनसे कहा, तुम क्या चाहते हो? उसने उत्तर दिया, “मैं अपने स्वामी अला-ए-दीन अबू-श-शर्नत का दास हूँ, जो मिस्र देश के व्यापारियों के शाह-बंदर शेम्स-ए-दीन का पुत्र है; और उसके पिता ने मुझे यह पत्र उसके पास भेजा है।” फिर उसने उसे पत्र दिया; और अला-ए-दीन ने उसे लिया, खोला और पढ़ा, और उसमें ये शब्द लिखे पाए: — पूर्ण अभिवादन, प्रशंसा और आदरपूर्ण शुभकामनाओं के बाद, शेम्स-ए-दीन की ओर से उसके पुत्र अला-ए-दीन अबू-श-शर्मत को — • हे मेरे पुत्र, जान लो कि तेरे आदमियों के वध और तेरे धन और भार की लूट की खबर मुझ तक पहुँच गई है; और इसलिए मैंने उनके स्थान पर तेरे लिए मिस्र के वस्त्रों के ये पचास बोरे, वस्त्रों का एक सेट, काले फर का एक वस्त्र, और सोने का एक पात्र और एक सुराही भेजी है। और किसी बुराई से मत डरो। हे मेरे पुत्र, यह धन ही तेरा प्रायश्चित है; और तुझ पर कभी दुःख न आए। तेरी माता और घरवाले कुशल मंगल हैं, सुख-समृद्धि में हैं; और वे तुझे हार्दिक शुभकामनाएँ देते हैं। इसके अतिरिक्त, हे मेरे पुत्र,

मुझे यह समाचार प्राप्त हुआ है कि उन्होंने तुझे युवत ज़ुबैदेह अल-ऊदीयेह के लिए मुस्तहल नियुक्त किया है, और तुझसे उसके दहेज के रूप में दस हज़ार54 सोने के सिक्के वसूल किए हैं। इसलिए पचास हज़ार सोने के सिक्के बोझ सहित तेरे दास सलीम के साथ तेरे पास लाए जाएँगे।55 जैसे ही अला-एद-दीन ने पत्र पढ़ना समाप्त किया, उसने बोझ ले लिया, और अपने ससुर की ओर देखकर उनसे कहा, हे मेरे ससुर जी, अपनी पुत्री ज़ुबैदेह के दहेज के दस हज़ार सोने के सिक्के स्वीकार कीजिए; बोझ भी स्वीकार कर लीजिए, और उनका निपटान कर दीजिए, और लाभ आपका होगा; केवल मुझे लागत मूल्य लौटा दीजिए। लेकिन उसने जवाब दिया, नहीं, अल्लाह की कसम, मैं कुछ नहीं लूंगा; और जहाँ तक तुम्हारी पत्नी के दहेज का सवाल है, तुम उससे इस बारे में समझौता कर लो। तब अलादीन अपने ससुर के साथ उठे और सामान अंदर लाने के बाद घर में चले गए। और ज़ुबैदा ने अपने पिता से कहा, हे मेरे पिता,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.60%** है।

अबू शशमत (1:45) 1:45 में लिखा है, "ये बोझ किसके हैं?" उसने उससे उत्तर दिया, "ये बोझ तुम्हारे पति अला-ए-दीन के हैं। उसके पिता ने ये उसे उन वस्तुओं के बदले भेजे हैं जो अरबों ने उससे ले ली थीं; और उन्होंने उसे पचास हजार सोने के सिक्के, एक लबादा, एक काले फर का वस्त्र, एक खच्चर, एक सोने का पात्र और एक सुराही भेजी है। और जहाँ तक तुम्हारे दहेज की बात है, इस बारे में निर्णय लेना तुम्हारा काम है।" तब अला-ए-दीन उठा और संदूक खोलकर उसे उसका दहेज दे दिया। युवती के चचेरे भाई ने कहा, "हे मेरे चाचा, अला-ए-दीन मेरी पत्नी को मेरे लिए तलाक दे दे।" लेकिन युवती के पिता ने उत्तर दिया, "यह बात अब किसी भी हालत में संभव नहीं है, क्योंकि वैवाहिक बंधन उसके हाथ में

है।" और इस पर वह युवक दुखी और व्यथित होकर चला गया, और अपने घर में बीमार पड़ गया, और वहीं उसकी मृत्यु हो गई। अला-ए-दीन ने सामान मिलने के बाद बाज़ार जाकर, अपनी इच्छानुसार भोजन, पेय और घी प्राप्त किया, और पिछली रात की तरह ही नियमित तैयारी की, और ज़ुबैदेह से कहा, देखो, इन झूठे दरवेशों ने हमसे वादा किया और उसे तोड़ दिया। उसने उत्तर दिया, तुम व्यापारियों के शाहबंदर के पुत्र हो, फिर भी तुम्हारा हाथ आधा दिरहम भी नहीं बना सका। तो फिर बेचारे दरवेशों का क्या हाल है? - उसने उत्तर दिया, ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) ने हमें उनसे मुक्त कर दिया है, और यदि वे हमारे पास फिर से आएँ तो मैं उनके लिए द्वार नहीं खोलूँगा। लेकिन उसने उससे कहा, ऐसा क्यों, जबकि सौभाग्य तो हमें उनके आने के कारण ही प्राप्त हुआ है; हर रात वे हमारे लिए नमाज़ की चटाई के नीचे सौ सोने के सिक्के रखते हैं? इसलिए, यदि वे आएं तो तुम्हारे लिए दरवाज़ा खोलना बिलकुल ज़रूरी है। — और जब दिन ढलकर रात हो गई, तो उन्होंने मोमबत्तियाँ जलाईं, और अलादीन ने अपनी पत्नी से कहा, ऐ ज़ुबैदा, उठो और हमारे लिए एक संगीत बजाओ। और तुरंत ही दरवाज़ा खटखटाया गया: तो उसने उससे कहा, उठो और देखो कौन है। इसलिए वह नीचे उतरा और दरवेशों को देखकर बोला, ओह! झूठ बोलने वालों का स्वागत है! ऊपर आओ। — तदनुसार वे उसके साथ ऊपर गए, और उसने उन्हें बिठाया, और उनके लिए खाने की मेज़ लगाई; और उन्होंने खाया-पिया, आनंद लिया और खुशियाँ मनाईं। फिर उन्होंने उससे कहा, ऐ हमारे मालिक, वास्तव में हमारे दिल आपके विषय में बहुत व्याकुल हैं। आपके ससुर के साथ क्या हुआ है? उन्होंने उत्तर दिया, “ईश्वर ने हमें हमारी इच्छा से कहीं अधिक प्रतिफल दिया है।” उन्होंने कहा, “अल्लाह की कसम, हमें आपसे डर लग रहा था, और धन जुटाने के लिए हमारे पास साधनों की कमी के अलावा

और कोई कारण नहीं था जिससे हम आपके पास दोबारा आ सकें।” उन्होंने उत्तर दिया,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.82%** है।

मुझे मेरे प्रभु की ओर से शीघ्र राहत मिली है, और मेरे पिता ने मुझे पचास हजार सोने के सिक्के, पचास बोझ कपड़े भेजे हैं, प्रत्येक बोझ की कीमत एक हजार सोने के सिक्कों के बराबर है, और एक पोशाक, एक काले फर का चोला, एक खच्चर, एक दास, और सोने का एक पात्र और एक सुराही भेजी है। मेरे और मेरे ससुर के बीच सुलह हो गई है, और मेरी पत्नी मेरे लिए वैध हो गई है; और इसके लिए अल्लाह का शुक्र है! फिर खलीफा उठे और चले गए; और वज़ीर जाफ़र, अला-ए-दीन की ओर झुकते हुए, उनसे बोले, अपने ऊपर अच्छे व्यवहार का दायित्व डालो; क्योंकि तुम अमीरुल मोमिनीन की संगति में हो। - अला-ए-दीन ने पूछा, मैंने अमीरुल मोमिनीन की संगति में अच्छे व्यवहार के विपरीत क्या किया है, और तुममें से अमीरुल मोमिनीन कौन है? वज़ीर ने उसे उत्तर दिया, “जो तुमसे बात कर रहा था और जो अभी-अभी एकांतवास में गया है, वह मोमिनों का सरदार, हित्रून एर-कशीद है।”

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.88%** है।

और 'अला-ए-दीन अबू-श-शमत की कहानी। 247 और मैं वज़ीर जाफ़र हूँ, और यह खलीफ़ा का जल्लाद मेसरूर है, और यह हनी का बेटा अबू-नुवास अल-हसन है। तो हे अला-ए-दीन, अपने विवेक से विचार करो और सोचो कि काहिरा से बगदाद की यात्रा में कितने दिन लगते हैं। - उसने

उत्तर दिया, पैंतालीस दिन। तब जाफ़र ने कहा, तुम्हारा सामान तो केवल दस दिन पहले ही ले जाया गया था; और यह खबर तुम्हारे पिता तक कैसे पहुँची, और उन्होंने तुम्हारे लिए बाकी सामान कैसे पैक किया, और ये सामान पैंतालीस दिनों की यात्रा दस दिनों में कैसे तय कर सकते हैं? - हे मेरे स्वामी, अला-ए-दीन ने कहा, और ये सामान मेरे पास कहाँ से आए? वज़ीर ने उत्तर दिया, खलीफ़ा, मोमिनों के सरदार, से, तुम्हारे प्रति उनके अत्यधिक स्नेह के कारण। — और जब वे इस प्रकार बातचीत कर रहे थे, तभी खलीफ़े आ पहुँचे। तब अलादीन उठे और उनके सामने ज़मीन चूमकर बोले, “हे मोमिनों के सरदार, अल्लाह आपकी रक्षा करे, आपकी आयु दीर्घ करे, और मानवजाति कभी भी आपकी कृपा और परोपकार से वंचित न रहे!” खलीफ़े ने कहा, “हे अलादीन, आपकी सुरक्षा के लिए इनाम के तौर पर ज़ुबैदा हमारे लिए एक संगीतमय प्रस्तुति दें।”57 तब उसने वीणा पर एक अत्यंत मनमोहक रचना प्रस्तुत की, ऐसी कि मानो पत्थर भी आनंद से काँप उठें, और वीणा की ध्वनि दाऊद की आवाज़ से भी अधिक मधुर थी।5S उन्होंने रात बड़े सुखपूर्वक बिताई, और सुबह खलीफ़े ने अलादीन से कहा, “कल दरबार में आना।” और अलादीन ने उत्तर दिया, "हे धनिलों के सरदार, मैं सुनता और मानता हूँ, यदि यह अल्लाह की इच्छा हो (जिसका नाम महान है!), और आप समृद्धि में बने रहें।" फिर अलादीन ने दस थालियाँ लीं और उन पर कीमती उपहार रखे; और अगले दिन वह उन्हें लेकर दरबार में गया। और जब खलीफा सभा कक्ष में सिंहासन पर बैठे थे, तभी अलादीन द्वार से आगे बढ़े और ये दो आयतें पढ़ीं: - "हर सुबह समृद्धि और महिमा आपका स्वागत करे, और आपके ईर्ष्यालु का नाक धूल में मिल जाए; और आपके दिन हमेशा सफेद रहें, और आपके शत्रु के दिन काले हों!" खलीफा ने उत्तर दिया, "स्वागत है, हे अलादीन।" और अला-ए-दीन ने कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन, बेशक

पैगंबर (अल्लाह उन पर रहमत फरमाए!) ने एक भेंट स्वीकार की थी; और ये दस थालियाँ, जिन पर ये रखी हुई हैं, मेरी ओर से आपको भेंट हैं। अमीरुल मोमिनीन ने उन्हें स्वीकार कर लिया। उन्होंने अला-ए-दीन को सम्मान का वस्त्र पहनाने का आदेश दिया, उन्हें व्यापारियों का शाह बंदर नियुक्त किया और उन्हें सभा-कक्ष में बैठाया। और जब अला-ए-दीन

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.60%** है।

248 अला-ए-दीन अबू-श-शमत की कहानी। वह वहाँ बैठा था, तभी उसके ससुर, ज़ुबैदेह के पिता, वहाँ पहुँचे और उसे अपने स्थान पर बैठे और सम्मान का वस्त्र पहने हुए देखकर, अमीरुल मोमिनीन से कहा, हे युग के राजा, यह व्यक्ति मेरे स्थान पर क्यों बैठा है और सम्मान का वस्त्र क्यों पहने हुए है? खलीफा ने उत्तर दिया, मैंने उसे व्यापारियों का शाहबंदर नियुक्त किया है; और पद नियुक्ति द्वारा दिए जाते हैं, शाश्वतता के लिए नहीं; और तुम्हें पदच्युत कर दिया गया है। इस पर उसने उत्तर दिया, वह हमारे परिवार और हमारे संबंधियों में से है, और हे अमीरुल मोमिनीन, आपने जो किया है वह उत्कृष्ट है। ईश्वर हमें सदा हमारे मामलों का नेतृत्व करने के लिए सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति प्रदान करे! और कितने ही छोटे व्यक्ति महान बन गए हैं! खलीफा ने अलादीन के लिए एक फरमान लिखा और उसे वली को दे दिया, वली ने उसे जल्लाद को दे दिया, और उसने दरबार में ऐलान किया, "व्यापारियों का शाहबंदर अलादीन अबू-श-शमत के सिवा कोई नहीं है; और उसकी बात सुनी जानी चाहिए, और उसका आदर किया जाना चाहिए: वह सम्मान, आदर और गौरव का पात्र है!" और जब दरबार भंग हो गया, तो वली उद्घोषक के साथ अलादीन के सामने उतरा, और उद्घोषक ने ऐलान किया, "व्यापारियों का शाहबंदर मेरे मालिक अलादीन अबू-श-शमत के सिवा कोई नहीं है!" और वे उसके

साथ बगदाद की मुख्य सड़कों पर घूमते रहे, उद्घोषक वही घोषणा दोहराता रहा। इसलिए अगली सुबह, अला-ए-दीन ने गुलाम के लिए एक दुकान खोली और उसे उसमें बैठाकर खरीद-फरोख्त करने को कहा, जबकि वह घोड़े पर सवार होकर खलीफा के दरबार में अपने स्थान पर आसीन हो गया। एक दिन वह अपनी आदत के अनुसार अपने स्थान पर बैठा था, और जैसे ही वह बैठा, एक व्यक्ति ने खलीफा से कहा, "हे धनिलों के सरदार, आपका सिर ऐसे साथी से दीर्घायु हो;59 क्योंकि वह अल्लाह (जिसका नाम महान है!) की दया में शामिल हो गया है, और आपका जीवन लंबा हो!" खलीफा ने कहा, "अला-ए-दीन अबू-श-शमत कहाँ है?" तो वह खलीफा के समक्ष उपस्थित हुआ, जिसने उसे देखकर उसे एक भव्य सम्मान वस्त्र प्रदान किया, उसे अपना साथी नियुक्त किया और उसे एक हजार सोने के सिक्कों का मासिक वेतन दिया। और अला-ए-दीन उनके घनिष्ठ मित्र बनकर उनके साथ रहे। फिर एक दिन ऐसा हुआ कि वे अपनी प्रथा के अनुसार खलीफा की सेवा में अपने स्थान पर बैठे थे, तभी एक अमीर तलवार और ढाल लेकर दरबार में आया और बोला, हे धनी के राजकुमार, आपका सिर दीर्घायु हो, क्योंकि आज आपका निधन हो गया है। खलीफा ने अला-ए-दीन अबू-श-शमत के लिए सम्मान का वस्त्र लाने का आदेश दिया और उन्हें अला-ए-दीन के स्थान पर राजेस एस-सित्तीन नियुक्त किया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.58%** है।

'अला-ए-दीन अबू-श-शामात की कहानी, पृष्ठ 249 मृतक। उनके न कोई पुत्र था, न पुत्री, न पत्नी। इसलिए अला-ए-दीन नीचे गए और अपनी संपत्ति पर हाथ रखा; और खलीफा ने उनसे कहा, उन्हें दफना दो, और उनकी बची हुई सारी संपत्ति, पुरुष दास, महिला दास और हिजड़े ले लो।

फिर खलीफा ने रूमाल हिलाया,61 और दरबार तितर-बितर हो गया; और अला-ए-दीन अपने साथ खलीफा के अंगरक्षकों के दाहिने दल के मुकद्दम अहमद एड-देनेफ को अपने चालीस अनुयायियों के साथ दाहिनी ओर रकाब से बांधकर चले गए; और उनके बाईं ओर खलीफा के अंगरक्षकों के बाएं दल के मुकद्दम हसन शूमाऊ अपने चालीस अनुयायियों के साथ थे। और अला-ए-दीन ने मुकद्दम हसन शूमन और उनके अनुयायियों की ओर देखा और उनसे कहा, "तुम मुकद्दम अहमद एड-देनेफ से सिफारिश करो कि वह मुझे अल्लाह के सामने एक वाचा के द्वारा अपना पुत्र स्वीकार कर लें।" और उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया और उससे कहा, "मैं और मेरे चालीस अनुयायी प्रतिदिन दरबार में तुम्हारे आगे चलेंगे।" इसके बाद, अला-ए-दीन कई दिनों तक खलीफा की सेवा में रहे। एक दिन ऐसा हुआ कि वह दरबार से उतरे और अपने घर गए, और अहमद एड-देनेफ और उनके सेवकों को विदा करके अपनी पत्नी जुबैदेह अल-उदीयेह के साथ बैठ गए, जिन्होंने मोमबत्तियाँ जलाकर पास के एक कमरे में चली गईं; और जब वह अपनी जगह पर बैठे थे, तो उन्होंने एक ज़ोरदार चीख सुनी। इसलिए वह जल्दी से यह देखने के लिए उठा कि कौन रो रहा है, और उसने देखा कि आवाज़ देने वाले व्यक्ति के रूप में उसकी पत्नी ज़ुबैदेह अल-ऊदीये ज़मीन पर पड़ी हुई है। उसने गिरी हुई युवती के सीने पर हाथ रखा और पाया कि वह मर चुकी है। उसके पिता का घर अला-एद्दीन के घर के सामने था, और उसने भी उसकी रोने की आवाज़ सुनी थी। इसलिए वह आया और उसके पति से पूछा, "क्या बात है, हे मेरे स्वामी अला-एद्दीन?" अला-एद्दीन ने उत्तर दिया, "हे मेरे पिता, आपकी पुत्री ज़ुबैदेह अल-ऊदीये दीर्घायु हो; लेकिन अब, हे मेरे पिता, हमें शव को दफ़नाकर सम्मान देना चाहिए।" और अगली सुबह, उन्होंने युवती के शरीर को दफ़नाया; और अला-एद्दीन और ज़ुबैदेह के पिता ने एक-दूसरे को

सांत्वना दी। अला-ए-दीन ने मातम के वस्त्र धारण किए, दरबार से अलग हो गए और रोती आँखों और शोकग्रस्त हृदय से दरबार में मँडराए रहे। तब खलीफा ने जाफर से कहा, ऐ वज़ीर, अला-ए-दीन के दरबार से अनुपस्थित रहने का क्या कारण है? वज़ीर ने उत्तर दिया, ऐ अमीरुल मोमिनीन, वे अपनी पत्नी ज़ुबैदा के लिए शोक मना रहे हैं और उनके निधन पर सांत्वना देने आए लोगों से मिल रहे हैं। इस पर खलीफा ने कहा, हम पर यह कर्तव्य है कि हम उन्हें सांत्वना दें। (संख्या 2)

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.90%** है।

250 'अला-ए-दीन अबू-श-शमत की कहानी। और वज़ीर ने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। तब खलीफ़ा जाफ़र और कुछ घरेलू सेवकों के साथ नीचे उतरे, फिर वे घोड़ों पर सवार होकर अलादीन के घर गए। जब वह बैठे थे, तभी खलीफ़ा, वज़ीर और उनके सेवक उनके पास आए; तब वह उनसे मिलने उठे और खलीफ़ा के सामने ज़मीन चूमी, जिन्होंने उनसे कहा, अल्लाह तुम्हें भरपूर प्रतिफल दे! अलादीन ने उत्तर दिया, ऐ मोमिनों के सरदार, अल्लाह हमें आपकी उम्र लंबी करे! खलीफ़ा ने कहा, ऐ अलादीन, दरबार से अलग होने का क्या कारण है? उन्होंने उत्तर दिया, ऐ मोमिनों के सरदार, मेरी पत्नी ज़ुबैदा के लिए मेरा शोक। खलीफ़ा ने उत्तर दिया, अपने मन से चिंता दूर करो; क्योंकि वह अल्लाह (जिसका नाम महान है!) की दया पाने के लिए चली गई है, और शोक करने से तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा। कुछ नहीं। लेकिन अला-ए-दीन ने कहा, मैं उसके लिए तब तक शोक मनाता रहूंगा जब तक मैं मर न जाऊं और मुझे उसके पास दफना न दिया जाए। खलीफा ने उत्तर दिया, निःसंदेह ईश्वर के पास हर हानि का प्रतिफल है, और न तो कोई युक्ति और न ही धन किसी को मृत्यु से बचा सकता है। ईश्वरीय वरदान प्राप्त

वह व्यक्ति था जिसने कहा, — प्रत्येक स्त्री का पुत्र, चाहे वह लंबे समय तक जीवित रहे, एक दिन मरणासन्न अर्थी पर ले जाया जाएगा।f2 तो फिर वह कैसे जीवन में आनंद या प्रसन्नता पाएगा जिसके गालों पर धूल डाली जानी है? — और जब उसने उसे सांत्वना देना समाप्त कर दिया, तो उसने उसे आदेश दिया कि वह दरबार से अलग न हो, और लौट गया। अला-ए-दीन ने तब रात बिताई, और जब सुबह हुई, तो वह घोड़े पर सवार होकर दरबार में गया, और खलीफा के पास जाकर उसके सामने जमीन चूमी। और खलीफा ने सिंहासन से थोड़ा उठकर उसका स्वागत और अभिवादन किया; और उसे अपने स्थान पर बैठने के लिए कहने के बाद, उसने उसने उससे कहा, “हे अलादीन, तुम आज रात मेरे मेहमान हो।” तब खलीफा उसे अपने महल में ले गया और कूट-अल-कुलूब नाम की एक दासी को बुलाया,64 और उससे कहा, “अलादीन की एक पत्नी थी जिसका नाम ज़ुबैदेह अल-ऊदीयेह था, और वह उसे चिंता और शोक से दूर रखती थी; लेकिन वह अल्लाह (जिसका नाम महान है!) की दया पाने के लिए इस दुनिया से चली गई है, और मैं चाहता हूँ कि तुम उसे वीणा की एक उत्कृष्ट प्रस्तुति से प्रसन्न करो, ताकि वह चिंता और दुखों से दूर हो जाए।” तो उस युवती ने संगीत की एक उत्कृष्ट प्रस्तुति दी; और खलीफा ने कहा, “हे अलादीन, इस दासी की आवाज़ के बारे में तुम्हारा क्या कहना है?” — • उसने उत्तर दिया, “निश्चित रूप से ज़ुबैदेह की आवाज़ इससे बेहतर थी; लेकिन वह वीणा बजाने में अत्यंत कुशल है।” वीणा; क्योंकि वह एक चट्टान बनाना चाहती थी

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.51%** है।

THK STOKY 01- 'AL.\-Kl)-1)Ki-:X Am%SH-SH \M.\T.

251 नाचने के लिए। और खलीफा ने उससे कहा, क्या उसने तुम्हें

किराए पर दिया है? उसने उत्तर दिया, हे विश्वासियों के राजकुमार, उसने मुझे प्रसन्न किया है। तब खलीफा ने कहा, मेरे सिर की कसम और मेरे पूर्वजों की कब्रों की कसम, निश्चय ही वह मेरी ओर से तुम्हारे लिए एक उपहार है, अपनी दासियों सहित। और अली-ए-दीन ने सोचा कि खलीफा उससे मजाक कर रहा है। लेकिन जब खलीफा सुबह उठा, तो वह अपनी दासी कूट-अल-कुलूब के पास गया और उससे कहा, मैंने तुम्हें अला-ए-दीन के लिए उपहार बनाया है। और वह इस पर प्रसन्न हुई; क्योंकि उसने उसे देखा था और उससे प्रेम करती थी। फिर वह महल के मंडप से सभा-कक्ष में गया, और। उसने कुली बुलाकर उनसे कहा, "कूत-अल-कुलूब का सामान हटाओ और उसे पालकी में रखो,65 और उसे उसकी दासियों सहित अला-एद्दीन के घर ले चलो।" अतः वे उसे उसकी दासियों और सामान सहित घर ले गए और उसे मंडप में ले गए। और खलीफा न्याय कक्ष में दिन के अंत तक बैठे रहे, जब तक कि अदालत की कार्यवाही समाप्त नहीं हो गई, और वे अपने मंडप में चले गए।

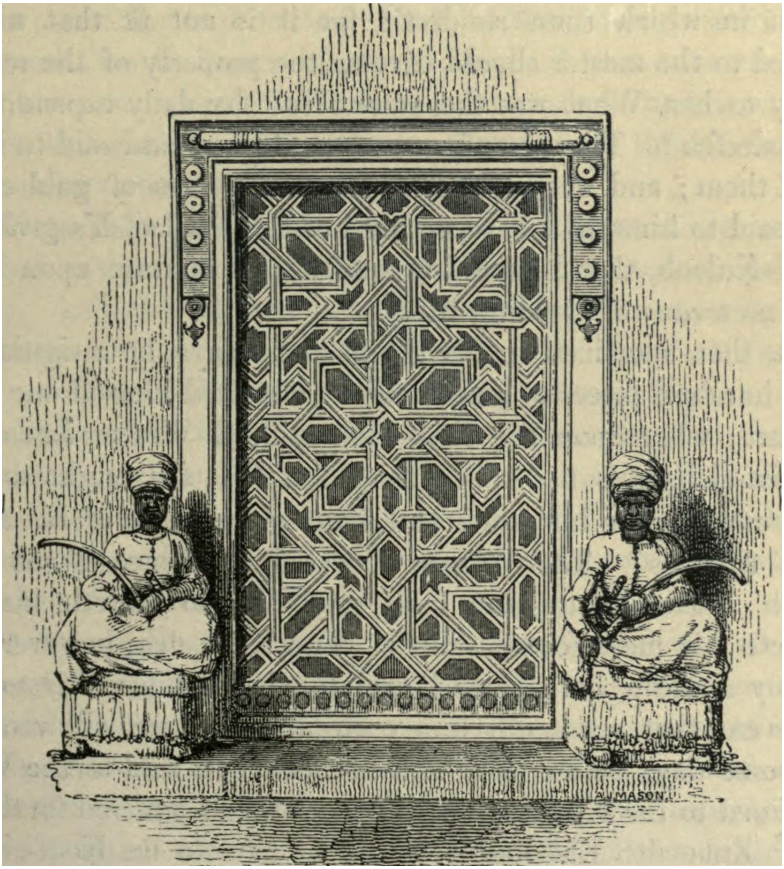

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.11%** है।

252 अला-ए-दीन की कहानी (अतुत-स्ती स्ती,\एम.\टी.) अब, जब कूट-अल-कुलूब अपनी चालीस दासियों और हिजड़ों के साथ अला-ए-दीन के तंबू में दाखिल हुई, तो उसने दो हिजड़ों से कहा, “तुम दोनों में से एक दरवाजे के दाहिनी ओर कुर्सी पर बैठे और दूसरा बाईं ओर कुर्सी पर; और जब अला-ए-दीन आए, तो उसके हाथों को चूमकर उससे कहना, ‘हमारी स्वामिनी कूट-अल-कुलूब तंबू में आपकी उपस्थिति चाहती हैं; क्योंकि खलीफा ने उन्हें उनकी दासियों सहित आपको सौंप दिया है।’ उन्होंने उत्तर दिया, “हम सुनते हैं और आज्ञा मानते हैं।” फिर उन्होंने वैसा ही किया

जैसा उसने उन्हें आदेश दिया था। जब अला-ए-दीन वहाँ पहुँचे, तो उन्होंने खलीफ़े के दो हिजड़ों को दरवाज़े पर बैठे पाया। वे इस घटना पर आश्चर्यचकित हुए और मन ही मन सोचने लगे, “शायद यह मेरा घर नहीं है; या अगर है भी, तो क्या हुआ है?” हिजड़ों ने उन्हें देखकर उनके पास आकर उनके हाथ चूमे और कहा, “हम खलीफ़े के आश्रित और कूट-अल-कुलूब के दास हैं। वह आपको प्रणाम करती हैं और कहती हैं कि खलीफ़े ने उन्हें और उनकी दासियों को आपको सौंप दिया है और वे आपकी संगति चाहती हैं।” अला-ए-दीन ने उत्तर दिया, “उनसे कहिए, आपका स्वागत है; लेकिन जब तक आप उनके निवास में हैं, वे उस तंबू में प्रवेश नहीं करेंगे जिसमें आप निवास करते हैं।” क्योंकि यह उचित नहीं है कि जो स्वामी का हो वह सेवक की संपत्ति बन जाए: और उससे पूछो, खलीफा के साथ तुम्हारा दैनिक खर्च कितना था? इसलिए वे उसके पास गए और उससे वही कहा जो उसने उनसे चाहा था; और उसने उत्तर दिया, प्रतिदिन सौ सोने के सिक्के। तब उसने मन ही मन कहा, मुझे खलीफा से कूट-अल-कुलोब देने की कोई आवश्यकता नहीं है कि मैं उस पर इस प्रकार खर्च करूं; लेकिन मेरे पास इससे बचने का कोई साधन नहीं है। फिर वह कई दिनों तक उसके निवास पर रही, वह उसे प्रतिदिन सौ सोने के सिक्के देता रहा, जब तक कि वह एक दिन दरबार से अनुपस्थित नहीं हो गया; तब खलीफा ने कहा, हे वज़ीर जाफ़र, मैंने अली-एद-दकन को कूट-अल-कुलोब केवल इसलिए नहीं दी थी कि वह उसे अपनी पत्नी के शोक से विचलित कर दे; और उसके हमसे अनुपस्थित होने का क्या कारण है? वज़ीर ने उत्तर दिया, ऐ मोमिनों के सरदार, जिसने कहा है, वह सत्य है कि जो अपने मित्रों को पा लेता है, वह अपने मामूली परिचितों को भूल जाता है। खलीफ़ा ने जवाब दिया, शायद किसी ऐसी घटना के अलावा और कोई कारण नहीं है जिसके कारण वह हमसे दूर रहा हो;

लेकिन हम उससे मिलने ज़रूर जाएँगे। — अब, इससे कुछ दिन पहले, अला-एद-दीन ने वज़ीर से कहा था, मैंने खलीफ़ा से अपनी पत्नी ज़ुबैदेह अल-ऊदीयेह के निधन के दुख के बारे में शिकायत की, और उन्होंने मुझे कूट-द-कुलूब दे दी। वज़ीर ने कहा, अगर वह तुमसे प्यार नहीं करता, तो वह उसे तुम्हें नहीं देता।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.42%** है।

आरएम: स्टोइन ओके 'अल-ए-दीन अब्त-श-शमत। हे 'अल-ए-दीन, क्या तुमने उससे मुलाकात की है? - उसने उत्तर दिया, नहीं, अल्लाह की कसम; और न ही मैं उसकी ऊँचाई और चौड़ाई में अंतर जानता हूँ।66 - और ऐसा क्यों? वेज़र ने पूछा। 'अल-ए-दीन ने उत्तर दिया, हे वेज़र, जो मालिक के लिए उपयुक्त है, वह सेवक के लिए उपयुक्त नहीं है। - फिर खलीफा और जाफ़र ने वेश बदलकर 'अल-ए-दीन से मिलने गए; और वे बिना रुके उसके पास पहुँच गए; जैसे ही उसने उन्हें पहचाना, वह उठा और खलीफा के हाथों को चूमा। और जब खलीफा ने उसे देखा, तो उसने उसके चेहरे पर मातम का भाव पाया: इसलिए उसने उससे कहा, हे 'अल-ए-दीन, इस मातम का क्या कारण है जो तुम सह रहे हो? क्या तुमने कूट-अल-कुलूब से मुलाकात नहीं की है? - ऐ अमीरुल मोमिनीन, उसने उत्तर दिया, जो मालिक के लिए उचित है, वह सेवक के लिए उचित नहीं है; और निश्चय ही अब तक मैंने उससे मुलाकात नहीं की है, और न ही मैं उसकी लंबाई और चौड़ाई में अंतर जानता हूँ: इसलिए मुझे उससे दूर रखो। खलीफा ने कहा, मैं उससे मिलना चाहता हूँ, ताकि मैं उससे उसकी स्थिति के बारे में पूछ सकूँ। और अला-ए-दीन ने उत्तर दिया, ऐ अमीरुल मोमिनीन, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। तब खलीफा उसके पास गए; और जब उसने उन्हें देखा, तो वह उठी और उनके सामने जमीन

चूमी; और उन्होंने उससे कहा, क्या अला-ए-दीन ने तुमसे मुलाकात की है? उसने उत्तर दिया, नहीं, ऐ अमीरुल मोमिनीन: मैंने उसे आमंत्रित करने के लिए भेजा था; लेकिन वह नहीं आया। और खलीफा ने उसे महल लौटने का आदेश दिया, और अला-ए-दीन से कहा, हमसे दूर मत रहो। फिर वह अपने महल लौट गया। अलादीन ने वह रात आराम से बिताई और सुबह घोड़े पर सवार होकर दरबार में गया और रासे एस-सित्तीन के स्थान पर बैठ गया। खलीफा ने कोषाध्यक्ष को आदेश दिया कि वह वज़ीर जाफ़र को दस हज़ार सोने के सिक्के दे। वज़ीर ने उसे वह राशि दे दी; और खलीफा ने वज़ीर से कहा, मैं तुमसे यह अपेक्षा करता हूँ कि तुम दासी बाज़ार जाओ और दस हज़ार सोने के सिक्कों से अलादीन के लिए एक दासी खरीद लो। वज़ीर ने खलीफा के आदेश का पालन किया। वह अलादीन को अपने साथ लेकर दासी बाज़ार गया। आज ऐसा हुआ कि बगदाद के वली, जो खलीफा की नियुक्ति से पद पर आसीन थे और जिनका नाम अमीर खालिद था, अपने बेटे के लिए एक दासी खरीदने के उद्देश्य से बाजार गए; और कारण यह था कि उनकी पत्नी का नाम खातून67 था, और उनसे उनका एक बदसूरत दिखने वाला बेटा था, जिसका नाम हबालाम बाज़ाज़ा68 था, जो बीस वर्ष का हो चुका था और घुड़सवारी नहीं जानता था। लेकिन उसका पिता साहसी और वीर था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.22%** है।

T. रक्षा में बलवान, घुड़सवारी में निपुण, और रात्रि के सागरों में विचरण करने वाला।61 और उसकी माता ने उसके पिता से कहा, मैं चाहती हूँ कि हम उसका विवाह कर दें; क्योंकि अब वह विवाह योग्य आयु का हो गया है। परन्तु अमीर ने उत्तर दिया, वह घिनौना दिखता है, दुर्गंधयुक्त है,

मैला-कुचैला है: कोई स्त्री उसे स्वीकार नहीं करेगी। तो उसने कहा, हम उसके लिए एक दासी खरीद लेंगे। — और ऐसा हुआ, ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) द्वारा निर्धारित एक घटना की पूर्ति के लिए, कि जिस दिन वज़ीर और अला-एद-दीन बाज़ार गए, उसी दिन अमीर खालिद, वली, भी अपने पुत्र हबज़लाम बज़ाज़ाह के साथ वहाँ गए। और जब वे बाज़ार में थे, तो देखो, वहाँ एक दासी थी जो बेहद सुंदर, आकर्षक और सुडौल कद-काठी की थी, और एक दलाल के पास थी। वज़ीर ने कहा, "हे दलाल, इसके लिए एक हज़ार सोने के सिक्कों के बारे में बात करो।" लेकिन दलाल उसे लेकर वली के पास से गुज़रा, और हबज़लम बाज़ाज़ाह ने उसे देखकर हज़ार आहें भरीं, और वह उस पर मोहित हो गया, और उसके लिए प्रेम ने उसे पूरी तरह से अपने वश में कर लिया: इसलिए उसने कहा, "हे मेरे पिता, मेरे लिए इस दासी को खरीद दो।" तब वली ने दलाल को बुलाया और दासी से उसका नाम पूछा। उसने उत्तर दिया, "मेरा नाम यास्मीन है।" वली ने अपने बेटे से कहा, "हे मेरे बेटे, अगर वह तुम्हें पसंद आए, तो उसके लिए ज़्यादा बोली लगाओ।" उसने कहा, "हे दलाल, तुम्हें क्या कीमत बताई गई है?" दलाल ने उत्तर दिया, "एक हज़ार सोने के सिक्के।" और हबज़लाम बाज़ाज़ा ने कहा, "इसे एक हज़ार एक सोने के सिक्कों में मेरी कर दो।" तो दलाल अला-ए-दीन के पास गया और उसने उसके लिए दो हज़ार की बोली लगाई; और हर बार जब वली का बेटा एक सोने का सिक्का ज़्यादा लगाता, तो अला-ए-दीन एक हज़ार बढ़ा देता। इस पर वली का बेटा क्रोधित हो गया और बोला, "हे दलाल, दासी की कीमत में मुझसे ज़्यादा बोली कौन लगा रहा है?" दलाल ने उत्तर दिया, "वज़ीर जाफ़र उसे अला-ए-दीन अबू-श-शमत के लिए खरीदना चाहता है।" और अंत में अला-ए-दीन ने उसके लिए दस हज़ार सोने के सिक्के लगाए; जिस पर उसके मालिक ने अपनी सहमति दे दी और

उसकी कीमत ले ली; और अला-ए-दीन ने उसे ले लिया और उससे कहा, "मैं तुझे अल्लाह के नाम पर आज़ाद करता हूँ, जिसका नाम महान है!" फिर उसने उससे विवाह का अनुबंध लिखा और उसके साथ घर चला गया। दलाल अपना माल लेकर लौटा; और वली के बेटे ने उसे पुकारा और पूछा, दासी कहाँ है? उसने उत्तर दिया, 'अला-ए-दीन ने उसे दस हज़ार सोने के सिक्कों में खरीदा है, उसे आज़ाद कर दिया है और उससे विवाह का अनुबंध लिख दिया है।' यह सुनकर युवक क्रोधित हो गया; वह बहुत आहें भरता रहा और दुर्बलता की अवस्था में घर लौट आया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.64%** है।

अला-एद्दीन अबू श-शमत की कहानी। 255 युवती के प्रति अपने प्रेम के कारण वह बिस्तर पर गिर पड़ा। उसने भोजन त्याग दिया और उसका प्रेम और वासना अत्यधिक बढ़ गई। जब उसकी माँ ने उसे इस दुर्बल अवस्था में देखा, तो उसने उससे कहा, हे मेरे पुत्र, अल्लाह तुझे सलामत रखे! तेरी इस दुर्बलता का क्या कारण है? उसने उत्तर दिया, हे मेरी माँ, मेरे लिए यास्मीन खरीद ला। उसकी माँ ने कहा, जब सुगंधित फूलों का विक्रेता यहाँ से गुजरेगा, तो मैं तेरे लिए चमेली से भरी एक टोकरी खरीद लाऊँगी। 71 उसने उत्तर दिया, मेरा मतलब वह चमेली नहीं है जिसे लोग सूंघते हैं; बल्कि एक दासी है जिसका नाम यास्मीन है, जिसे मेरे पिता ने मेरे लिए नहीं खरीदा। तो उसने अपने पति से कहा, तुमने उसके लिए यह दासी क्यों नहीं खरीदी? उसने उत्तर दिया, जो स्वामी के लिए उपयुक्त है, वह सेवक के लिए उपयुक्त नहीं है; और मेरे पास उसे लेने की शक्ति नहीं है; उसे केवल अला-एड बीन, एस-सित्तीन जाति के लोगों ने ही खरीदा था। इसके परिणामस्वरूप, युवक की बीमारी इतनी बढ़ गई कि उसने नींद और भोजन त्याग दिया; और उसकी माँ ने शोक के रुमालों से अपना सिर बाँध

लिया। और जब वह अपने घर में अपने बेटे के लिए शोक मना रही थी, तभी एक बूढ़ी औरत उसके पास आई। वह अहमद कामाकिम नामक कुख्यात चोर की माँ थी; और यह कुख्यात चोर बीच की दीवार तोड़कर, ऊपर की दीवार पर चढ़कर आँखों से काजल चुराता था।72 अपने शुरुआती दिनों में ही वह इन घृणित कृत्यों के लिए जाना जाता था। फिर उसे पहरेदारों का मुखिया बना दिया गया, और उसने कुछ पैसे चुरा लिए, जिसके परिणामस्वरूप वह पकड़ा गया: वली अचानक उस पर टूट पड़ा, और उसे पकड़कर खलीफा के सामने ले गया, जिसने उसे खून से लथपथ करने का आदेश दिया।73 लेकिन उसने वज़ीर से शरण माँगी, जिसकी सिफ़ारिश को खलीफा कभी अस्वीकार नहीं करता था; और उसने उसके लिए सिफ़ारिश की। खलीफा ने उससे कहा, “तुम एक ऐसे विषैले साँप के लिए सिफारिश क्यों कर रहे हो जो मनुष्यों के लिए घातक है?” उसने उत्तर दिया, “हे धनी सरदार, इसे कैद कर दो; क्योंकि जिसने पहली जेल बनवाई थी वह एक बुद्धिमान व्यक्ति था, क्योंकि जेल जीवितों की कब्र होती है और उसमें बंद लोगों पर शत्रुओं के उल्लास का कारण बनती है।” इस पर खलीफा ने उसे जंजीरों में जकड़ने का आदेश दिया और उसकी जंजीरों पर लिखवाया, “मृत्यु तक रहने के लिए नियुक्त: इन्हें मुर्दों के कपड़े धोने वाले के आसन पर ही खोला जाएगा।” और उन्होंने उसे जंजीरों में जकड़कर जेल में डाल दिया। अब उसकी माँ अक्सर अमीर खालिद वली के घर जाया करती थी और जेल में अपने बेटे से मिलने जाती थी और उससे कहती थी, “क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था, ‘अवैध कर्मों से पश्चाताप करो’?” और वह जवाब देता था, ईश्वर ने यही तय किया है कि मेरे साथ ऐसा ही होगा: लेकिन, हे मेरी माँ, जब तुम वली की पत्नी के पास जाओ, तो उसे मना लेना कि वह मेरे लिए उससे सिफारिश करे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.63%** है।

जब बुढ़िया वली की पत्नी के पास गई और उसे शोक के रुमाल से सिर बांधे हुए पाया, तो उसने उससे पूछा, तुम क्यों शोक मना रही हो? उसने उत्तर दिया, मेरे बेटे हबज़लाम बाज़ाज़ाह के खोने पर। बुढ़िया ने कहा, अल्लाह तुम्हारे बेटे की रक्षा करे! उसे क्या हुआ है? वली की पत्नी ने उसे पूरी कहानी सुनाई। इस पर बुढ़िया ने कहा, तुम उस व्यक्ति के बारे में क्या कहती हो जो कोई असाधारण कार्य करके तुम्हारे बेटे की रक्षा करेगा? वली की पत्नी ने पूछा, तुम क्या करोगी? बुढ़िया ने उत्तर दिया, मेरा एक बेटा है जिसका नाम अहमद कमाकिरन है, जो एक बड़ा चोर है, और वह जेल में जंजीरों में जकड़ा हुआ है, और उसकी जंजीरों पर लिखा है, मृत्यु तक यहीं रहने के लिए नियुक्त किया गया है। इसलिए तुम अपने पास मौजूद सबसे शानदार वस्त्र पहनो और सर्वोत्तम ढंग से सज-धज कर अपने आप को संवार लो; फिर प्रसन्न और मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ अपने पति के सामने उपस्थित हो जाओ और उससे कहो, जब कोई पुरुष अपनी पत्नी से कुछ मांगता है, तो वह उससे तब तक विनती करता है जब तक उसे वह मिल न जाए; परन्तु यदि पत्नी अपने पति से कुछ मांगती है, तो वह उसकी इच्छा पूरी नहीं करता। तब वह तुमसे पूछेगा, तुम क्या चाहती हो? तब तुम उत्तर देना, जब तुम्हारे पास...

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.72%** है।

अला-एद्दीन अब्त-श-शमत की कहानी। 257 शपथ लेकर, मैं तुम्हें बताऊँगा। परन्तु यदि वह अपने सिर की या अल्लाह की कसम खाए, तो उससे कह, मुझसे तलाक की कसम खा। 74 और जब वह तलाक की कसम खा ले, तो उससे कह, कारागार में अहमद कामाकिम नाम का एक मुकद्दम है, और उसकी एक गरीब माँ है, जिसने मुझसे मदद माँगी है, और मुझसे आग्रह किया है कि मैं तुमसे सुलह कराऊँ, और मुझसे कहा है, उसे मेरे बेटे के लिए खलीफा से सिफारिश करने के लिए प्रेरित करो, ताकि मेरा बेटा पश्चाताप करे, और तुम्हारे पति को उसका बदला मिल जाए। — और वली की पत्नी ने उत्तर दिया, मैं सुनती हूँ और आज्ञा मानती हूँ। तदनुसार, जब वली अपनी पत्नी के पास आया, तो उसने उसे वही शब्द कहे जो उस बूढ़ी औरत ने बताए थे; और उसने उसे तलाक की कसम खाई। अगले दिन सुबह उसने सुबह की नमाज़ अदा की और जेल जाकर बोला, “हे अहमद कमाकिन, हे बड़े चोर, क्या तू अपने आचरण से

पश्चाताप करेगा?” उसने उत्तर दिया, “निःसंदेह मैं पश्चाताप के साथ अल्लाह की ओर लौटता हूँ, अपने पापों को त्यागता हूँ और अपने हृदय और ज़बान से कहता हूँ, मैं अल्लाह से क्षमा माँगता हूँ।” — तो वली ने उसे जेल से रिहा कर दिया और उसे जंजीरों में जकड़े हुए ही अपने साथ दरबार ले गया। फिर खलीफ़ा की ओर बढ़ते हुए उसने उनके सामने ज़मीन चूमी; इस पर खलीफ़ा ने उससे कहा, “हे अमीर खालिद, तू क्या चाहता है?” और वह अहमद कमाकिन को जंजीरों में जकड़े हुए हाथों को हिलाते हुए खलीफ़ा के सामने ले आया, जिसने उसे देखकर कहा, “हे कमाकिन, क्या तू अभी भी जीवित है?” — “हे मोमिनों के सरदार,” उसने उत्तर दिया, “निःसंदेह इस पापी का जीवन लंबा खिंचा है।” खलीफा ने कहा, “हे अमीर खालिद, तुम इसे यहाँ किसलिए लाए हो?” वली ने उत्तर दिया, “निःसंदेह इसकी एक निर्धन, निर्धन माता है, जिसका इसके सिवा कोई पुत्र नहीं है, और उसने आपके दास से विनती की है कि वह आपसे, हे धनिकों के सरदार, इसकी सिफारिश करे और आपसे इसे जंजीरों से मुक्त करने की याचना करे, और यह अपने पूर्व आचरण के लिए पश्चाताप करेगा; और आप इसे पहले की तरह ही पहरेदारी का मुकद्दम नियुक्त कर दें।” इस पर खलीफा ने अहमद कामाकिम से कहा, “क्या तुम अपने पूर्व आचरण के लिए पश्चाताप करते हो?” उसने उत्तर दिया, “हे धनिकों के सरदार, मैं पश्चाताप के साथ अल्लाह की ओर लौटता हूँ।” खलीफा ने लोहार को लाने का आदेश दिया, और उसने मुर्दों को धोने वाले के चबूतरे पर उसकी जंजीरें खोल दीं।75 फिर खलीफा ने उसे पुनः पहरेदारी का मुकद्दम नियुक्त किया, और उसे अच्छे और ईमानदार आचरण का आदेश दिया। अत: उसने खलीफ़े के हाथों को चूमा और पहरेदार के मुक़द्दम के रूप में अपने पदचिह्न धारण करके नीचे उतरा, और उन्होंने उसकी नियुक्ति की घोषणा कर दी। इसके बाद, जब वह कुछ

समय तक अपने पद पर रहा, तो उसकी माँ वली की पत्नी के पास गई, और वली ने उससे कहा, ईश्वर की स्तुति हो।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.32%** है।

258 अला-एद्दीन अबू-श-शमात की कहानी। ईश्वर का धन्यवाद जिसने तुम्हारे पुत्र को कारागार से रिहा किया है और वह इस समय स्वस्थ और सुरक्षित है! लेकिन अब, उसने आगे कहा, तुम उसे यह क्यों नहीं कहते कि वह यासरीन नाम की युवती को मेरे पुत्र हबज़लाम बाज़ाज़ाह के पास लाने का कोई उपाय निकाले? बुढ़िया ने उत्तर दिया, मैं उसे बता दूँगी। इसलिए वह वहाँ से चली गई और अपने पुत्र के पास गई, जो नशे में धुत था; और उसने उससे कहा, हे मेरे पुत्र, कारागार से तुम्हारी रिहाई का कारण वली की पत्नी है, और वह तुमसे चाहती है कि तुम अला-एद्दीन अबू-श-शमात को मारने का कोई उपाय निकालो और यासरीन नाम की युवती को उसके पुत्र हबज़लाम बाज़ाज़ाह के पास ले आओ। उसने उत्तर दिया, यह तो सबसे आसान काम होगा। मुझे आज रात ही कोई उपाय निकालना होगा। — अब उस रात नए महीने की पहली रात थी, और अमीरुल मोमिनीन की यह प्रथा थी कि वे ज़ुबैदेह महिला के साथ समय बिताते थे, किसी दासी या किसी दासी को मुक्त कराने के उद्देश्य से, या इसी तरह के किसी अन्य उद्देश्य से। उनकी यह आदत थी कि वे राजसी वस्त्र उतार देते थे, और माला, कटार और राजसी मुहर को बैठक कक्ष में कुर्सी पर रख देते थे। खलीफा के पास एक सोने का दीपक भी था, जिसमें सोने के तार पर तीन रत्न जड़े हुए थे; और वह दीपक उन्हें बहुत प्रिय था। उन्होंने हिजड़ों को वस्त्र, दीपक और बाकी चीजों की देखभाल का जिम्मा सौंपा और ज़ुबैदेह महिला के निजी कक्ष में प्रवेश किया। फिर अहमद कामाकिम ने तब तक प्रतीक्षा की जब तक आधी रात नहीं बीत

गई, सूर्य प्रकाशित नहीं हो गया, मनुष्य सो नहीं गए, और सृष्टिकर्ता ने उन्हें अंधकार के पर्दे से ढक नहीं दिया; जब उसने अपनी तलवार निकाली और उसे अपने दाहिने हाथ में लिया, और अपने बाएँ हाथ में अपना हथियार लिया, और खलीफा के बैठक कक्ष के पास पहुँचकर अपनी सीढ़ी लगाई। उसने अपना हथियार बैठक कक्ष पर फेंका, और वह उस पर अटक गया, और वह सीढ़ी पर चढ़कर छत पर गया, बैठक कक्ष का दरवाज़ा खोला और उसमें उतर गया, और उसने हिजड़ों को सोते हुए पाया; और उसने उन्हें कुछ बेनज 7G दिया, खलीफा के वस्त्र, माला, कटार, रूमाल, मुहर और रत्नों से सजे दीपक को लिया, और उसी रास्ते से नीचे उतर गया जिससे वह ऊपर गया था। फिर वह अला-ए-दीन अबू-श-शमत के घर गया, जो उस रात युवती के विवाह समारोहों में व्यस्त था और उसके घर चला गया था। और अहमद कामाकिम, जो एक कुख्यात चोर था, अला-ए-दीन के दफ्तर में घुस गया, वहाँ से संगमरमर की एक पटिया उखाड़ ली,77 और उसके नीचे एक गड्ढा खोदकर उसमें चोरी की कुछ चीजें रख दीं, बाकी अपने पास रख लीं। इसके बाद उसने संगमरमर की पटिया को पहले की तरह जिप्सम से जमा दिया, और

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.15%** है।

वह उसी रास्ते से ऊपर चढ़ गया जिससे वह ऊपर चढ़ा था, और मन ही मन बोला, मैं बैठूंगा और शराब पीऊंगा, अपने सामने दीपक रखूंगा, और उसकी रोशनी में प्याला पीऊंगा। फिर वह अपने घर लौट गया। अब जब सुबह हुई, तो खलीफा अपने बैठक कक्ष में गया, और उसने देखा कि हिजड़े बेंज के नशे में चूर थे। उसने उन्हें जगाया, और कुर्सी पर हाथ रखकर देखा तो न तो वस्त्र, न मुहर, न माला, न कटार, न रुमाल, न दीपक; इस पर वह बहुत क्रोधित हुआ, और क्रोध के वस्त्र, जो लाल रंग

का वस्त्र था, पहन लिए,78 और सभा कक्ष में बैठ गया। वज़ीर आगे बढ़ा, और अपने सामने ज़मीन चूमकर बोला, अल्लाह मोमिनों के राजकुमार पर विपत्ति न आने दे! खलीफा ने उत्तर दिया, हे वज़ीर, विपत्ति बहुत बड़ी है। वज़ीर ने उससे पूछा, क्या हुआ है?

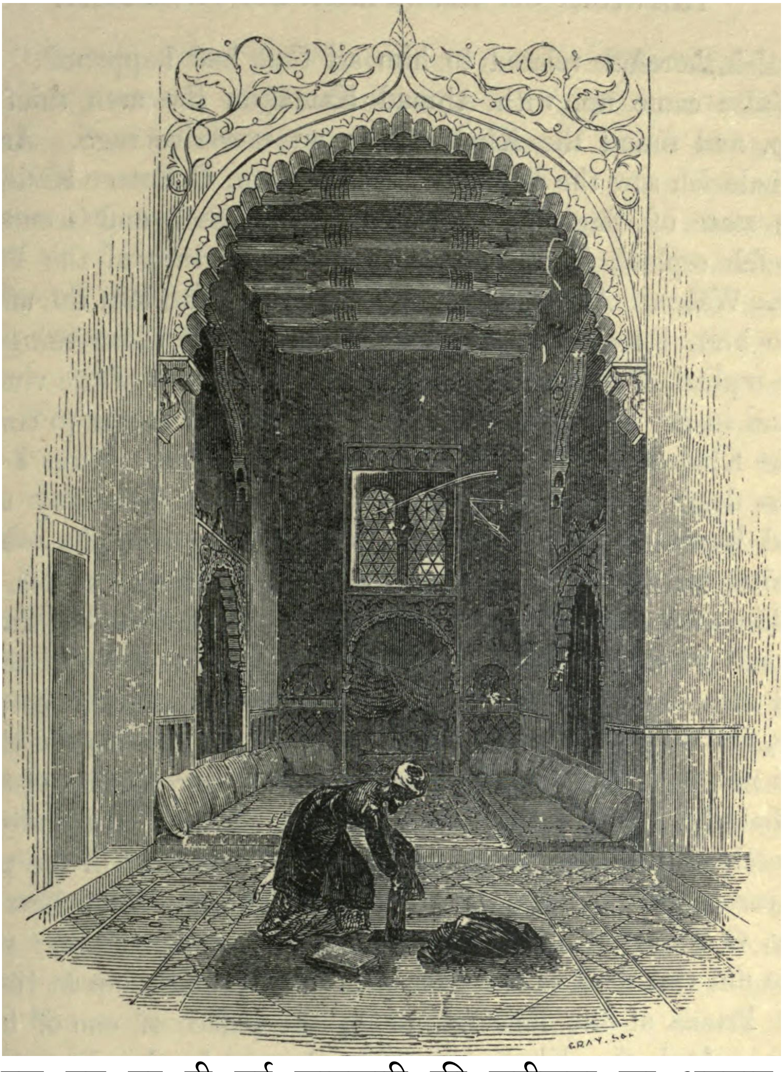

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.33%** है।

260 अला-एद्दीन अबू-श-शमत की कहानी। खलीफा ने उसे सारी घटना बताई। तभी वली, अहमद कामाकिम नामक उस बड़े चोर को रकाब में लेकर आया और खलीफा को बेहद गुस्से में पाया। खलीफा ने वली को देखकर उससे कहा, ऐ अमीर खालिद, बगदाद की क्या हालत है? उसने जवाब दिया, सुरक्षित और महफूज़। खलीफा ने कहा, तू झूठ बोल रहा है। वली ने पूछा, ऐ मोमिनों के सरदार? खलीफा ने उसे सारी बात समझाई और कहा, मैं तुझसे ये सारी चीज़ें लाने को कहता हूँ। वली ने जवाब दिया, ऐ मोमिनों के सरदार, सिरके के कीड़े इसमें हैं और इसमें मौजूद हैं; और कोई अजनबी कभी इस जगह में प्रवेश नहीं कर सकता। खलीफा ने कहा, अगर तू ये चीज़ें मेरे पास नहीं लाएगा तो मैं तुझे मौत के घाट उतार दूँगा। तब वली ने उत्तर दिया, "मुझे मारने से पहले, अहमद कामाकिम, जो एक बड़ा चोर है, को मार डालो; क्योंकि उस लुटेरे और गद्दार को पहरेदार के सिवा कोई नहीं जानता।" इस पर अहमद कामाकिम ने खलीफा से कहा, "वली के लिए मेरी सिफारिश स्वीकार करो, और मैं चोर के लिए तुम्हारे प्रति उत्तरदायी रहूंगा, और मैं उसे तब तक खोजूंगा जब तक वह मिल न जाए: लेकिन मुझे कादी की ओर से दो व्यक्ति और वली की ओर से दो व्यक्ति दो; क्योंकि जिसने यह काम किया है, वह न तो तुमसे डरता है, न ही वली से और न ही किसी और से।" खलीफा ने उत्तर दिया, "तुम्हें वह मिलेगा जो तुम चाहते हो; लेकिन खोज पहले मेरे महल में, फिर वज़ीर के महल में और फिर रेसेस एस-सित्तीन के महल में की जाएगी।" — हे धनिलों के सरदार, आपने सही कहा, अहमद कामाकिम ने कहा: संभवतः जिसने यह काम किया है, वह धनिलों के सरदार के महल में या उनके किसी प्रमुख अधिकारी के महल में पला-बढ़ा है। और खलीफा ने कहा, मेरी कसम, जो कोई भी यह काम करता हुआ प्रतीत होगा, उसे निश्चित रूप से मार डाला जाएगा, चाहे वह मेरा पुत्र ही

क्यों न हो! तब अहमद कामाकिम ने अपनी इच्छा की वस्तु ली और एक लिखित आदेश प्राप्त किया जिसमें उसे घरों में जबरन प्रवेश करने और उनकी तलाशी लेने का अधिकार दिया गया था। तदनुसार, वह अपने हाथ में एक छड़ी लेकर नीचे गया, जिसका एक तिहाई भाग पीतल का, एक तिहाई तांबे का और एक तिहाई लोहे का था;79 और उसने खलीफा के महल और वज़ीर जाफ़र के महल की तलाशी ली और दरबारी और लेफ्टिनेंटों के घरों में तब तक गया जब तक कि वह अला-ए-दीन अबू-श-शमत के घर के पास से नहीं गुजरा। और जब अलादीन ने अपने घर के सामने शोर सुना, तो वह अपनी पत्नी यास्मीन की उपस्थिति से उठे और नीचे उतरकर दरवाजा खोला; वहाँ उन्होंने वली को कोलाहल के बीच पाया। तो उन्होंने उनसे कहा, ऐ अमीर खालिद, क्या बात है? तब वली ने उन्हें सारी बात बताई; और

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.80%** है।

'अला-एड-डीक्स अबू-श-शमत' की कहानी। अलादीन ने कहा, "मेरे घर में प्रवेश करो और तलाशी लो।" वली ने उत्तर दिया, "क्षमा करें, हे मेरे स्वामी: आप सच्चे वफ़ादार हैं; और अल्लाह न करे कि वफ़ादार विश्वासघाती हो जाएँ।" लेकिन अलादीन ने कहा, "मेरे घर की तलाशी अवश्य ली जानी चाहिए।" इसलिए वली, कदी और गवाह अंदर गए; और अहमद कामाकिम, बैठक के दरखा की ओर बढ़ते हुए, उस संगमरमर की पटिया के पास पहुँचे जिसके नीचे उन्होंने चोरी की वस्तुएँ छिपा रखी थीं; जब उन्होंने छड़ी को पटिया पर ज़ोर से मारा, तो संगमरमर टूट गया, और देखो, उसके नीचे कुछ चमक उठा; इस पर मुकद्दम ने कहा, "अल्लाह का नाम! अल्लाह की इच्छा अद्भुत है! हमारे आने पर मिली कृपा से, हमारे लिए एक खजाना खुल गया! मुझे इस भंडारगृह में उतरने दो, और देखो

इसमें क्या है।" और कदी और गवाहों ने उस स्थान की जाँच की, और चोरी की वस्तुएँ पाईं। उन्होंने एक कागज़ लिखा जिसमें कहा गया कि उन्हें ये चीज़ें अला-ए-दीन के घर में मिली हैं, और कागज़ पर अपनी मुहर लगाने के बाद, उन्होंने अला-ए-दीन को पकड़ने का आदेश दिया; और उन्होंने उसके सिर से उसकी पगड़ी उतार ली, और उसकी सारी संपत्ति और धन दर्ज कर लिया। फिर अहमद कामाकिम, जो एक बड़ा चोर था, ने युवती यासेरिन को पकड़ लिया, और उसे अपनी माँ को सौंपते हुए कहा, इसे वली की पत्नी खातून के हवाले कर दो। बुढ़िया यासेरिन को लेकर वली की पत्नी के पास गई; और जब हबज़लाम बाज़ाज़ा ने उसे देखा, तो उसमें फिर से जोश आ गया, और वह तुरंत उठ खड़ा हुआ, अत्यधिक प्रसन्न होकर, और उसके पास गया। लेकिन उसने अपनी कमरबंद से एक खंजर निकाला, और उससे कहा, मुझसे दूर हट जाओ, वरना मैं तुम्हें और खुद को मार डालूँगी! उसकी माँ खातून चिल्लाई, हे निर्लज्ज स्त्री, मेरे बेटे को तुझे पत्नी बनाने दे! यास्मीन ने कहा, "अशिष्ट स्त्री, किस नियम से एक स्त्री को दो पतियों से विवाह करने की अनुमति है? और कौन कुत्तों को शेरों के निवास में प्रवेश देगा?" — इस प्रकार युवक की इच्छा और बढ़ गई, वासना और बेचैनी ने उसे कमजोर कर दिया, और उसने फिर से भोजन त्याग दिया और तकिये का सहारा लिया। वली की पत्नी ने यास्मीन से कहा, "हे निर्लज्ज स्त्री, तू मुझे मेरे पुत्र के लिए दुखी क्यों कर रही है? तुझे अवश्य ही दंड मिलेगा, और जहाँ तक अलादीन का सवाल है, उसे निश्चित रूप से फाँसी दी जाएगी।" — लेकिन यास्मीन ने उत्तर दिया, "मैं उसके प्रेम में मर जाऊँगी।" इस पर वली की पत्नी उठी, और उसके आभूषण और रेशमी वस्त्र उतार दिए, और उसे सूती कपड़े की पैंट और ऊनी कपड़े की कमीज पहनाकर रसोई में भेज दिया, और उसे नौकरानियों में से एक बना दिया, और उससे कहा, "तेरा प्रतिफल

होगा..." यास्मीन ने उत्तर दिया, "तुम लकड़ियाँ तोड़ो, प्याज छीलो और खाना पकाने के बर्तनों के नीचे आग जलाओ, मैं सब कुछ मान लूँगी।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.95%** है।

202 'अला-ए-दीन अबू-श-शमत की कहानी। तरह-तरह की यातना, लेकिन मैं तुम्हारे बेटे को देखने के लिए राज़ी नहीं होऊँगी। लेकिन ईश्वर ने दासियों के दिलों में उसके लिए सहानुभूति जगा दी, और वे उसकी जगह रसोई में काम करने लगीं। — यास्मीन का भी यही हाल था। जहाँ तक 'अला-ए-दीन की बात है, वे उसे खलीफ़ के सामान के साथ ले गए और उसके साथ परिषद कक्ष तक चले गए; और जब खलीफ़ सिंहासन पर बैठा था, तभी वे 'अला-ए-दीन और चोरी की चीज़ों के साथ वहाँ पहुँचे, और खलीफ़ ने पूछा, ये तुम्हें कहाँ मिले? उन्होंने उत्तर दिया, 'अला-ए-दीन अबू-श-शमत के घर के बीच में। इस पर खलीफा क्रोधित हो गया और उसने सामान उठाया, परन्तु उसमें दीपक नहीं पाया। तब उसने कहा, हे अला-एद्दीन, दीपक कहाँ है? उसने उत्तर दिया, मैंने न तो चोरी की है, न ही मुझे इसके बारे में पता है, न ही मैंने इसे देखा है, और न ही मुझे इसकी कोई जानकारी है। लेकिन खलीफा ने उससे कहा, हे गद्दार, यह कैसे हो सकता है कि मैं तुझे अपने पास बुलाता हूँ और तू मुझे ठुकरा देता है, और मैं तुझ पर भरोसा करता हूँ और तू मेरे साथ विश्वासघात करता है? और उसने उसे फाँसी देने का आदेश दिया। तब विली उसके साथ नीचे उतरा और उद्घोषक ने उसके सामने घोषणा की, यह उसका बदला है, और सबसे छोटा बदला है, जो रूढ़िवादी खलीफाओं के साथ विश्वासघात करता है! और जनता फाँसी के तख़्ते पर जमा हो गई। इसी बीच, अला-एद्दीन का मुखिया अहमद एड-देनेफ अपने अनुयायियों के साथ एक बगीचे में बैठा था। और जब वे वहाँ आनंद और प्रसन्नता से बैठे

थे, तभी दरबार का एक जलवाहक उनके पास आया और अहमद एड-देनेफ का हाथ चूमते हुए बोला, "हे मुकद्दम अहमद, हे देनेफ, तुम आनंद में बैठे हो, तुम्हारे पैरों के नीचे पानी बह रहा है, और तुम्हें उस घटना की कोई जानकारी नहीं है जो घटित हुई है?" तब अहमद एड-देनेफ ने उससे पूछा, "क्या खबर है?" जलवाहक ने उत्तर दिया, "निःसंदेह, ईश्वर के समक्ष प्रतिज्ञा के द्वारा तुम्हारे पुत्र, अला-ए-दीन को फाँसी पर चढ़ा दिया गया है।" इस पर अहमद एड-देनेफ ने पूछा, "हे हसन, हे शूमन, तुम क्या चाल चलना चाहते हो?" उसने उत्तर दिया, "निःसंदेह, अला-ए-दीन निर्दोष है, और यह किसी शत्रु द्वारा उसके विरुद्ध रची गई साजिश है।" अहमद एड-देनेफ ने पूछा, "और तुम्हारी क्या सलाह है?" — उसने उत्तर दिया, यदि ईश्वर की इच्छा हुई तो हम उसकी मुक्ति सुनिश्चित करेंगे। तब हसन शूमन जेल गए और जेलर से कहा, हमें कोई ऐसा व्यक्ति दीजिए जो मृत्युदंड के योग्य हो। जेलर ने उन्हें एक ऐसा व्यक्ति दिया जो दिखने में अलादीन अबू शमात के सबसे करीब था। उसने उसका सिर ढँक दिया और अहमद एड-दीनेफ ने उसे अपने और अली एज़-ज़ीबाक के बीच में ले लिया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.05%** है।

अल-अल्लाहुद्दीन अबू-श-शमत की कहानी। 263 काहिरा। तब वे अल-अल्लाहुद्दीन को फांसी देने के लिए आगे लाए; और अहमद एड-दीनफ आगे बढ़ा और जल्लाद के पैर पर अपना पैर रख दिया। तब जल्लाद ने उससे कहा, मुझे जगह दो, ताकि मैं अपना काम कर सकूँ। और अहमद एड-दीनफ ने उत्तर दिया, हे अभिशाप, इस आदमी को ले जाओ और इसे अल-अल्लाहुद्दीन अबू-श-शमत की जगह फांसी दे दो क्योंकि उस पर अन्यायपूर्ण आरोप लगाया गया है, और हम इस्माइल को मेमने से छुड़ा

लेंगे।83 तब जल्लाद ने उस आदमी को लिया और अल-अल्लाहुद्दीन के बदले उसे फांसी दे दी। फिर अहमद एड-दीनफ और काहिरा के अली एज़-ज़ीबक, अला-दीन को अपने साथ अहमद एड-दीनफ के भोज में ले गए। अला-दीन ने अहमद से कहा, "अल्लाह आपको इसका अच्छा प्रतिफल दे, ऐ मेरे सरदार।" लेकिन अहमद एड-दीनफ ने कहा, "ऐ अला-दीन, तुमने यह कैसा काम किया है? अल्लाह उस पर रहम करे जिसने कहा है, 'जो तुझ पर भरोसा करे, उसके साथ विश्वासघात न करना, चाहे तू विश्वासघाती ही क्यों न हो। खलीफा ने तुझे अपने दरबार में स्थान दिया और तुझे 'विश्वसनीय और वफादार' की उपाधि दी। फिर तू उसके साथ ऐसा कैसे कर सकता है और उसका माल कैसे ले सकता है?" अला-दीन ने उत्तर दिया, "अल्लाह की कसम, ऐ मेरे सरदार, यह मेरा काम नहीं है; मैं इसका दोषी नहीं हूँ।" और न ही मुझे पता है कि यह किसने किया। इसलिए अहमद एड-दीनेफ ने कहा, "निःसंदेह, यह काम किसी खुले शत्रु के सिवा किसी ने नहीं किया, और जो कोई भी ऐसा काम करता है, उसे उसका दंड अवश्य मिलेगा। परन्तु, हे अला-दीन, तुम अब बगदाद में नहीं रह सकते; क्योंकि राजा एक उद्देश्य को दूसरे के लिए नहीं छोड़ते, और जिसकी वे खोज में लगे होते हैं, वह बहुत थक जाता है!" - "मैं कहाँ जाऊँ, हे मेरे सरदार?" अला-दीन ने कहा। - "मैं तुम्हें ले चलूँगा," अहमद एड-दीनेफ ने उत्तर दिया, "अलेक्जेंड्रिया; क्योंकि वह एक पवित्र स्थान है, और उसकी दहलीज हरी-भरी है,84 और वहाँ का जीवन सुखमय है।" इस पर अला-दीन ने उत्तर दिया, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ, हे मेरे सरदार।" और अहमद एड-दीनेफ ने हसन शूमन से कहा, "ध्यान रखना, और यदि खलीफा मेरे विषय में पूछताछ करे, तो उत्तर देना, वह प्रांतों का भ्रमण करने गया है।" फिर उन्होंने अला-दीन को लिया, और वे बगदाद से निकले और बिना रुके अंगूर के बागों और बगीचों तक पहुँचे, जहाँ उन्हें

खलीफा के राजस्व संग्रहकर्ताओं में से दो यहूदी दो खच्चरों पर सवार मिले; और अहमद एड-दीनेफ ने उनसे कहा, मुझे पहरा देने का शुल्क दो। उन्होंने कहा, हम तुम्हें पहरा देने का शुल्क क्यों दें? उसने उत्तर दिया, मैं इस घाटी का पहरेदार हूँ। इस पर, उनमें से प्रत्येक ने उसे सौ सोने के सिक्के दिए। इसके बाद, अहमद एड-दीनेफ ने उन्हें मार डाला,85 और दोनों खच्चरों को लेकर, वह उनमें से एक पर सवार हो गया, और अलादीन दूसरे पर सवार हो गया, और वे अय्यद शहर की ओर चल पड़े।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.11%** है।

261 'अला-ए-दीन की कहानी। वहाँ उन्होंने खच्चरों को एक खान में रखा और रात वहीं बिताई; और जब सुबह हुई, तो अली-ए-दीन ने अपना खच्चर बेच दिया और द्वारपाल को अहमद एड-दीन के खच्चर की देखभाल का जिम्मा सौंप दिया। फिर अयास के बंदरगाह में एक जहाज पर सवार होकर वे अलेक्जेंड्रिया के लिए रवाना हुए। अहमद एड-दीन, अला-ए-दीन के साथ उतरे और वे बाजार गए; और देखो, एक दलाल एक दुकान बेचने के लिए चिल्ला रहा था, जिसके भीतर कमरों का एक समूह था, और बोली की रकम नौ सौ पचास बता रहा था;87 जिस पर अला-ए-दीन ने कहा, ये मुझे एक हजार में मिल जाएँ। और विक्रेता ने सरकारी खजाने से संबंधित संपत्ति के लिए उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया; और अला-ए-दीन को चाबियाँ मिलीं, और उन्होंने दुकान और कमरों का समूह खोलकर देखा तो पाया कि कमरा कालीनों आदि से ढका हुआ था और गद्दियों से सुसज्जित था। उन्होंने वहाँ एक गोदाम भी देखा जिसमें पाल, मस्तूल, रस्सियाँ, संदूक, मोतियों और सीपियों से भरे चमड़े के थैले, रकाब, कुल्हाड़ियाँ, गदाएँ, चाकू, कैंची और अन्य वस्तुएँ थीं; क्योंकि उसका मालिक पुराने सामान का व्यापारी था। 8 अतः अला-ए-दीन

दुकान में बैठ गए, और अहमद एड-दीन ने उनसे कहा, “हे मेरे पुत्र, यह दुकान और कमरों का समूह और उनमें जो कुछ भी है, वह सब तुम्हारा है; इसलिए दुकान में बैठो, खरीद-बेच कर सामान बेचो; और नाराज़ मत हो; क्योंकि अल्लाह (जिसका नाम महान है!) ने व्यापार को आशीर्वाद दिया है।” और वह तीन दिन तक उसके साथ रहा, और चौथे दिन उससे विदा लेते हुए कहा, "जब तक मैं खलीफा से तुम्हारी सुरक्षा की खबर लेकर और तुम्हारे खिलाफ इस साजिश को रचने वाले को देखकर तुम्हारे पास वापस न आ जाऊं, तब तक तुम यहीं ठहरो।" फिर वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ा और अयास पहुँचने तक चलता रहा, जहाँ उसने खान से खच्चर लिया और बगदाद चला गया, और हसन शूमन और उसके अनुयायियों से मिलकर उसने कहा...

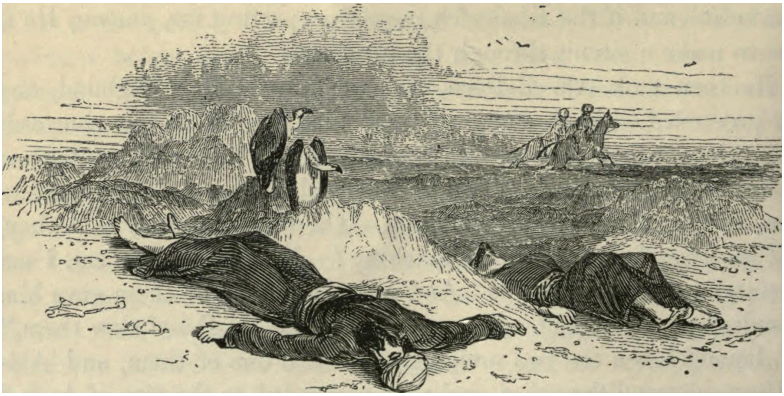

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.14%** है।

अल-ए-दीन की कहानी। 2tf5 हे हसन, क्या खलीफा ने मेरे विषय में पूछताछ की है? - नहीं, हसन ने उत्तर दिया; और न ही तुम्हारा ख्याल उनके मन में आया। इसके बाद, अहमद एड-दीन खलीफा की सेवा में लगे रहे और अल-ए-दीन के मामले के बारे में जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया। एक दिन उन्होंने खलीफा को वज़ीर जाफ़र की ओर देखते हुए

देखा और उनसे कहा, देखो, हे वज़ीर, अल-ए-दीन ने मेरे साथ कैसा व्यवहार किया है। वज़ीर ने उत्तर दिया, हे धनियों के सरदार, आपने उसे फांसी की सजा दी है, और क्या उसे उसका दंड नहीं मिल गया है? खलीफ़े ने जवाब दिया, "हे वज़ीर, मैं नीचे जाकर उसे फांसी पर लटका हुआ देखना चाहता हूँ।" वज़ीर ने कहा, "हे मोमिनों के सरदार, जैसा आप चाहें।" तो खलीफ़े, वज़ीर जाफ़र के साथ नीचे गए और फांसी के तख्ते की ओर बढ़े। ऊपर देखते ही उन्होंने पाया कि वहाँ लटका हुआ शरीर अलादीन, जो विश्वासयोग्य और वफ़ादार थे, का नहीं था। इसलिए उन्होंने कहा, "हे वज़ीर, यह अलादीन नहीं हैं।" वज़ीर ने कहा, "तुम्हें कैसे पता कि यह वह नहीं हैं?" खलीफ़े ने उत्तर दिया, "अलादीन छोटे कद के थे और यह लंबा है।" वज़ीर ने कहा, "फांसी पर लटकाए जाने पर व्यक्ति लंबा हो जाता है।" तब खलीफ़े ने कहा, "अलादीन गोरे थे और इस व्यक्ति का चेहरा काला है।" लेकिन वज़ीर ने उत्तर दिया, ऐ मोमिनों के सरदार, क्या तुम नहीं जानते कि मृत्यु के बाद अंधकार आता है? खलीफ़ा ने शव को फाँसी से उतारने का आदेश दिया; और जब उन्होंने ऐसा किया, तो उन्होंने शव की एड़ियों पर दो शेख़ों के नाम लिखे हुए पाए; इस पर उन्होंने कहा, ऐ वज़ीर, अला-ए-दीन सुन्नी थे और यह राफ़िदी। तो वज़ीर ने उत्तर दिया, अल्लाह की पूर्णता की महिमा हो, जो इंद्रियों से छिपी हुई चीज़ों के बारे में सर्वज्ञ है! हम नहीं जानते कि यह अला-ए-दीन हैं या कोई और। खलीफ़ा ने शव को दफ़नाने का आदेश दिया, और उन्होंने उसे दफ़ना दिया; और अला-ए-दीन पूरी तरह से भुला दिए गए। अब जहाँ तक वली के पुत्र हबज़लाम बज़ाज़ा का सवाल है, उनकी वासना और इच्छाएँ तब तक बढ़ती रहीं जब तक उनकी मृत्यु नहीं हो गई; और उन्होंने उन्हें दफ़ना दिया। और जहाँ तक युवती यास्मीन की बात है, जब अला-ए-दीन से विवाह के बाद उसके नौ महीने पूरे हो गए, तो उसने चाँद के समान

एक लड़के को जन्म दिया। दासियों ने उससे पूछा, तुम उसका क्या नाम रखोगी? उसने उत्तर दिया, यदि उसका पिता जीवित होता, तो वह उसका नाम रख देता, लेकिन मैं उसका नाम एशियन रखूँगी।91 उसने उसे लगातार दो साल तक दूध पिलाया और फिर उसका दूध छुड़ाया; और वह रेंगने और चलने लगा। एक दिन उसकी माँ रसोई के काम में व्यस्त थी, और लड़का बाहर चला गया, और इनाकाद की सीढ़ियाँ देखकर उन पर चढ़ गया। अमीर खालिद, वली, बैठे थे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.57%** है।

वहाँ, उन्होंने उसे उठाया और अपनी गोद में बिठाया, और अपने प्रभु की सृष्टि और रचना की पूर्णता का गुणगान किया; उन्होंने उसके चेहरे को देखा और पाया कि वह अला-ए-दीन अहु-श-शमत से सबसे अधिक मिलता-जुलता था। फिर उसकी माता यास्मीन ने उसे ढूँढा, पर वह नहीं मिली; इसलिए वह मकबरे में गई और देखा कि अमीर खालिद बच्चे को अपनी गोद में लिए बैठे हैं; ईश्वर ने अमीर के हृदय में बच्चे के प्रति स्नेह भर दिया था। बच्चा बगल में देखने लगा और अपनी माँ को देखकर उस पर झपटने को तैयार था; लेकिन अमीर खालिद ने उसे अपनी गोद में कसकर पकड़ लिया और उसकी माँ से कहा, इधर आओ, हे दासी। जब वह आई, तो उन्होंने उससे पूछा, यह बच्चा किसका है? उसने उत्तर दिया, यह मेरा बेटा है, और मेरे दिल का लाडला है। और उन्होंने पूछा, इसका पिता कौन है? उसने उत्तर दिया, "उसके पिता का नाम अला-ए-दीन अबू-श-शमत था; परन्तु अब वह तुम्हारा पुत्र है।" अमीर ने उत्तर दिया, "अला-ए-दीन गद्दार था।" परन्तु उसने कहा, "अल्लाह उसे गद्दारी के आरोप से बचाए! अल्लाह न करे कि कभी किसी मोमिन को गद्दार कहा जाए!" और उसने उससे कहा, "जब यह लड़का बड़ा हो जाए और तुमसे पूछे,

‘मेरा पिता कौन है?’ तो तुम उसे उत्तर देना, ‘तुम अमीर खालिद, वली, पुलिस प्रमुख के पुत्र हो।’” तो उसने उत्तर दिया, “मैं सुनती हूँ और आज्ञा मानती हूँ।”

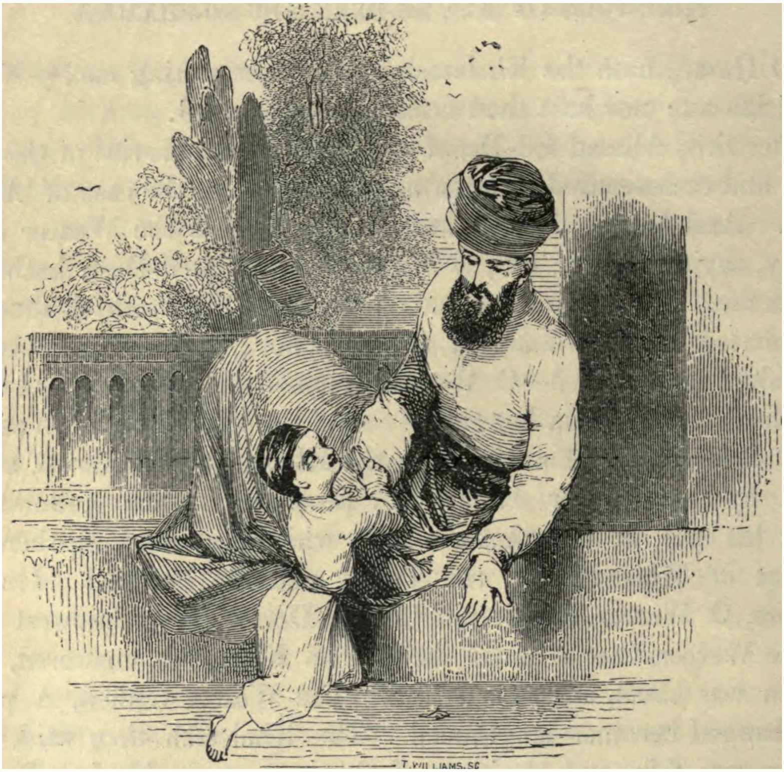

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.87%** है।

'अला-एद-दीख अबू-श-शमत की कहानी। 267 —तब अमीर खालिद ने लड़के का खतना कराया, और उसे ध्यानपूर्वक शिक्षित किया, और उसके लिए धर्म और कानून के एक कुशल शिक्षक को बुलाया, जो सुलेख में निपुण थे, जिन्होंने उसे लेखन और पठन कला सिखाई; और उसने कुरान को पहली और दूसरी बार पढ़ा, और उसे पूरी तरह से सुना दिया; और जैसे-जैसे वह बड़ा हुआ, वह अमीर खालिद से कहा करता था, हे मेरे

पिता। वली अपने अनुयायियों को घुड़सवारी का अभ्यास भी करवाता था, घुड़सवारों को इकट्ठा करता था, और नीचे उतरकर युवक को युद्ध के विभिन्न तरीके, प्रहार और प्रहार सिखाता था, जब तक कि वह घुड़सवारी में निपुण नहीं हो गया, साहस प्राप्त नहीं कर लिया, चौदह वर्ष की आयु प्राप्त नहीं कर ली, और अमीर का पद प्राप्त नहीं कर लिया। इसके बाद एक दिन ऐसा हुआ कि एशियन की मुलाकात अहमद कामाकिम नामक कुख्यात चोर से हुई, और वे साथी बन गए। और एशियन उसके पीछे शराब विक्रेता के पास गया; और देखो, अहमद कामाकिर ने खलीफा के सामान में से रत्नों से सजा हुआ दीपक निकाला और उसे अपने सामने रखकर उसकी रोशनी में प्याला पीकर नशे में चूर हो गया; तब एशियाई ने उससे कहा, हे मुकद्दलाम, मुझे यह दीपक दे दो। उसने उत्तर दिया, मैं इसे नहीं दे सकता। – ऐसा क्यों? एशियाई ने पूछा। उसने उत्तर दिया, क्योंकि इसके कारण जानें गई हैं। तब एशियाई ने पूछा, कौन सी जान गई है? तब अहमद कामाकिर ने उत्तर दिया, एक व्यक्ति यहाँ हमारे पास आया और उसे रासे एस-सित्तीन बनाया गया, जिसका नाम अला-एद-दसेन अबू-श-शमत था, और उसकी मृत्यु इसी दीपक के कारण हुई। – उसकी कहानी क्या है? एशियाई ने पूछा, और उसकी मृत्यु का कारण क्या था? – तुम्हारा एक भाई था, जिसका नाम हबज़लर्न बाज़ाज़ाह था, और जब वह विवाह योग्य आयु का हुआ, तो उसके पिता ने उसके लिए एक दासी खरीदने की इच्छा व्यक्त की। फिर अहमद कामाकिम ने आगे बढ़कर उसे पूरी कहानी शुरू से अंत तक सुनाई, उसे हबज़लर्न बाज़ाज़ाह की बीमारी और अला-ए-दीन के दुर्भाग्यपूर्ण भाग्य के बारे में बताया। तब एशियन ने मन ही मन कहा, शायद वह युवती यास्मीन है, मेरी माँ, और मेरे पिता अला-ए-दीन अबू-श-शमत के सिवा कोई नहीं था। युवक एशियन दुखी होकर उससे विदा हुआ और उसकी मुलाकात मुकद्दम अहमद एड-दीनेफ

से हुई, जिसने उसे देखकर कहा, उसकी पूर्णता की महिमा हो, जिसके समान कोई नहीं! इस पर हसन शूमन (जो उसके साथ था) ने उससे कहा, हे मेरे सरदार, तुम किस बात पर आश्चर्य करते हो? उसने उत्तर दिया, इस युवक एशियन के रूप पर; क्योंकि वह अला-ए-दीन अबू-श-शमत से सबसे अधिक मिलता-जुलता है। और उसने उसे पुकार कर कहा, हे एशियन! और एशियन ने उत्तर देते हुए कहा, तुम्हारी माँ का नाम क्या है? उसने उत्तर दिया, उसका नाम दासी यास्मीन है। तब अहमद एड-डकनेफ ने उससे कहा, हे एशियन।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.60%** है।

2G8 अला-ए-दीन अबू-श-शमात की कहानी। शांत मन और प्रसन्न आँखों से रहो; क्योंकि तुम्हारे पिता अला-ए-दीन अबू-श-शमात के सिवा कोई नहीं थे। हे मेरे पुत्र, अपनी माता के पास जाओ और उनसे अपने पिता के विषय में पूछो। उन्होंने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। तदनुसार, वह अपनी माता के पास गए और उनसे पूछा, और उन्होंने उत्तर दिया, तुम्हारे पिता अमीर खालिद हैं। परन्तु उन्होंने उत्तर दिया, मेरे पिता अला-ए-दीन अबू-श-शमात के सिवा कोई नहीं थे। उनकी माता रो पड़ीं और उनसे बोलीं, हे मेरे पुत्र, तुम्हें यह किसने बताया? उन्होंने उत्तर दिया, मुकद्दम अहमद एड-दीनेफ ने। तब उन्होंने उन्हें सारी घटना सुनाई और उनसे कहा, हे मेरे पुत्र, सत्य प्रकट हो गया है और असत्य दूर हो गया है; और जान लो कि तुम्हारे पिता अला-ए-दीन अबू-श-शमात थे। लेकिन तुम्हारा पालन-पोषण केवल अमीर खालिद ने किया, और उन्होंने ही तुम्हें गोद लिया। अब, हे मेरे पुत्र, जब तुम मुकद्दम अहमद एड-देनेफ से मिलो, तो उनसे कहना, हे मेरे सरदार, मैं अल्लाह की कसम खाकर तुमसे विनती करता हूँ कि तुम मेरे पिता अला-ए-दीन अबू-श-शमत के हत्यारे से

मेरा बदला लो। तो वह वहाँ से निकलकर मुकद्दम अहमद एड-देनेफ के पास गया और उनका हाथ चूमा; और अहमद एड-देनेफ ने कहा, हे एशियाई, तुम क्या चाहते हो? उसने उत्तर दिया, मुझे निश्चित रूप से पता है कि मेरे पिता अला-ए-दीन अबू-श-शमत थे, और मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम मेरे हत्यारे से मेरा बदला लो। अहमद एड-देनेफ ने कहा, तुम्हारे पिता को किसने मारा? और एशियाई ने उत्तर दिया, अहमद कामाकिम, जो एक बड़ा चोर है। और अहमद एड-देनेफ ने कहा, तुम्हें यह किसने बताया? युवक ने उत्तर दिया, "मैंने उसके पास रत्नों से जड़ा हुआ वह दीपक देखा जो खलीफा की अन्य वस्तुओं के साथ खो गया था। मैंने उससे कहा, 'मुझे यह दीपक दे दो', परन्तु उसने देने से इनकार कर दिया। उसने कहा, 'इस दीपक के कारण कई जानें गई हैं।' उसने मुझे यह भी बताया कि वही खलीफा के कमरे में उतरा था और उसने वह सामान चुराया था और उसे मेरे पिता के घर में रख दिया था।" इस पर अहमद एड-देनेफ ने उससे कहा, "जब तुम अमीर खालिद को युद्ध के वस्त्र पहने देखो, तो उससे कहना, 'मुझे भी अपने जैसे वस्त्र पहना दो।' और जब तुम उसके साथ ऊपर जाओ और अमीरुल मोमिनीन के सामने कोई वीरतापूर्ण कार्य दिखाओ, तो खलीफा तुमसे कहेंगे, 'हे एशियाई, जो कुछ तुम चाहो, मुझसे मांगो।' तब तुम कहना, 'मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मेरे पिता की हत्या करने वाले से मेरे लिए उनका बदला लो।'" तब खलीफ़ा तुमसे कहेगा, "तुम्हारे पिता जीवित हैं और वे अमीर खालिद वली हैं।" तुम उत्तर देना, "निःसंदेह मेरे पिता अलादीन अबू शमात थे; और खालिद वली का मुझ पर केवल इसलिए अधिकार है क्योंकि उन्होंने मेरा पालन-पोषण किया है।" उसे अपने और अहमद के बीच घटी सारी बातों से भी अवगत करा देना।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

26.71% है।

कामाकिम, जो कि सबसे बड़ा चोर था, उससे कहो, हे विश्वासियों के राजकुमार, उसे तलाशी का आदेश दो, और मैं उसकी जेब से दीपक निकाल लाऊंगा। — तब एशियन ने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। फिर वह आगे बढ़ा और उसने देखा कि ईनीसर खालिद खलीफा के दरबार में जाने की तैयारी कर रहा था, और उसने उससे कहा, मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे अपने समान युद्ध वस्त्र पहनाओ और मुझे अपने साथ खलीफा के दरबार में ले चलो। और उसने उसे वस्त्र पहनाए और दरबार में ले गया। फिर खलीफा सेना के साथ शहर के बाहर गया, और उन्होंने तंबू और मंडप लगाए, और पंक्तियाँ बनाईं, और वे गेंद और लाठी से खेलने लगे, घुड़सवारों में से एक लाठी से गेंद को मारता था, और दूसरा उसे वापस मारता था। अब सैनिकों में एक जासूस था, जिसे खलीफा को मारने के लिए उकसाया गया था; और उसने गेंद उठाई और उसे डंडे से मारकर खलीफा के चेहरे पर निशाना साधा। लेकिन, देखो, एशियाई ने उसे खलीफा से दूर कर दिया और उसी से उसे मारा जिसने उसे मारा था, और गेंद उसके कंधों के बीच में लगी, जिससे वह जमीन पर गिर पड़ा; और खलीफा ने कहा, हे एशियाई, अल्लाह तुम्हें आशीर्वाद दे! फिर वे अपने घोड़ों की पीठ से उतरे और कुर्सियों पर बैठ गए, और

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.75%** है।

270 अला-एद-दीख अबू-श-सियामत की कहानी। खलीफा ने उस आदमी को लाने का आदेश दिया जिसने उस पर गेंद मारी थी। जब उसे खलीफा के सामने लाया गया, तो उसने उससे पूछा, तुझे यह काम करने के लिए किसने उकसाया? तू तेरा दुश्मन है या दोस्त? उसने जवाब दिया, मैं तेरा दुश्मन हूँ और तुझे जान से मारने की योजना बना रहा था। खलीफा ने पूछा, किस कारण? क्या तू मुसलमान नहीं है? उसने जवाब दिया, नहीं; मैं राफिदी हूँ।92 इस प्रकार खलीफा ने उसे मौत की सजा देने का आदेश दिया। और उसने आशियान से कहा, जो तू चाहता है, मुझसे मांग। उसने जवाब दिया, मैं तुझसे विनती करता हूँ कि तू मेरे पिता का बदला ले और जिसने उन्हें मारा है, उससे बदला ले। खलीफा ने उससे कहा, तेरा पिता जीवित है और अपने पैरों पर खड़ा है। आशियान ने पूछा, मेरा पिता कौन है? खलीफा ने उत्तर दिया, "अमीर खुलिद, वली।" - "हे अमीरुल मोमिनीन," एशियन ने उत्तर दिया, "वह मेरे पिता केवल इसलिए हैं क्योंकि उन्होंने मेरा पालन-पोषण किया है; और मेरे पिता केवल अला-

ए-दीन अबू-श-शमत ही थे।" खलीफा ने कहा, "तेरा पिता गद्दार था।" लेकिन एशियन ने उत्तर दिया, "हे अमीरुल मोमिनीन, अल्लाह न करे कि ऐसा कहा जाए कि अमीर गद्दार था! और उसने तुम्हारे साथ क्या विश्वासघात किया?" खलीफा ने उत्तर दिया, "उसने मेरा वस्त्र और उसके साथ की वस्तुएँ चुरा लीं।" - "हे अमीरुल मोमिनीन," एशियन ने उत्तर दिया, "अल्लाह न करे कि ऐसा कहा जाए कि मेरा पिता गद्दार था! लेकिन, हे मेरे स्वामी," उसने आगे कहा, "जब तुम्हारा वस्त्र खो गया और तुम्हें लौटा दिया गया, तो क्या तुमने दीपक को भी वापस आते देखा?" खलीफा ने उत्तर दिया, "हमें वह नहीं मिला।" तब एशियन ने कहा, मैंने इसे अहमद कामाकिम के पास देखा और उससे यह माँग की; लेकिन उसने मुझे यह नहीं दिया; और कहा, इसके कारण जानें गई हैं। उसने मुझे एर्नीर खालिद के पुत्र हबज़लेन बाज़ाज़ाह की बीमारी, युवती यास्मीन के प्रति उसके प्रेम, और उसके स्वयं के बंधनों से मुक्त होने के बारे में बताया, और मुझे सूचित किया कि वही वह व्यक्ति था जिसने वस्त्र और दीपक चुराया था। इसलिए, हे धनिलों के सरदार, मेरे पिता का बदला मेरे लिए उसके हत्यारे से लो। तब खलीफा ने कहा, अहमद कामाकिम को पकड़ो। और उन्होंने ऐसा ही किया। तब उसने कहा, मुकद्दम अहमद एड्डेनेफ कहाँ है? तब वह उसके सामने आया; और खलीफा ने उससे कहा, कामाकिम की तलाशी लो। उसने अपनी जेब में हाथ डाला और उसमें से रत्नों से जड़ा हुआ दीपक निकाला। इस पर खलीफा ने कहा, "इधर आओ, हे गद्दार। यह दीपक तुम्हें कहाँ से मिला?" उसने उत्तर दिया, "मैंने इसे खरीदा है, हे अमीरुल मोमिनीन।" खलीफा ने उससे पूछा, "तुमने इसे कहाँ से खरीदा? और भला कौन ऐसी वस्तु का मालिक हो सकता है कि वह उसे तुम्हें बेच दे?" तब उन्होंने उसे पीटा और उसने कबूल किया कि उसी ने इसे चुराया था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.64%** है।

अला-ए-दीन अबू-श-शमत की कहानी। 271 उसने अपने वस्त्र और दीपक छीन लिए। खलीफा ने उससे कहा, तूने ये सब क्यों किया, अला-ए-दीन अबू-श-शमत को क्यों नष्ट किया, जो भरोसेमंद और वफादार था? उसने उसे और वली को पकड़ने का आदेश दिया। लेकिन वली ने कहा, ऐ मोमिनों के सरदार, मुझे चोट पहुँची है। आपने मुझे उसे फाँसी देने का आदेश दिया था, और मुझे इस षड्यंत्र की कोई जानकारी नहीं थी; क्योंकि यह सब उस बूढ़ी औरत, अहमद कामकिर्न और मेरी पत्नी ने रचा था, और मुझे इसकी कोई सूचना नहीं थी। ऐ आसियान! मैं आपकी शरण चाहता हूँ! — तो आसियान ने खलीफा से उसके लिए सिफारिश की। तब मोमिनों के सरदार ने पूछा, अल्लाह ने इस युवक की माँ के साथ क्या किया है? वली ने उत्तर दिया, वह मेरे घर में है। खलीफ़े ने कहा, “मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि तुम अपनी पत्नी को उसके वस्त्र और आभूषण पहनाकर उसे उसके स्वामियों के योग्य बनाओ, और अलादीन के घर पर लगी मुहरें हटाकर उसके पुत्र को उसकी संपत्ति और धन दे दो।” खलीफ़े ने उत्तर दिया, “मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।” वह नीचे उतरा और अपनी पत्नी को आदेश दिया, जिसने यास्मीन को उसके वस्त्र पहनाए; और उसने अलादीन के घर से मुहरें हटाकर यास्मीन को चाबियाँ दे दीं। फिर खलीफ़े ने कहा, “हे यास्मीन, जो चाहो मुझसे माँगो।” यास्मीन ने उत्तर दिया, “मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम मुझे मेरे पिता से मिला दो।” खलीफ़े रोते हुए बोला, “संभवतः तुम्हारे पिता ही थे जिन्हें फाँसी दी गई और उनकी मृत्यु हो गई; परन्तु मेरे पूर्वजों की कसम, जो कोई मुझे उनके जीवित होने की खुशखबरी देगा, मैं उसे वह सब कुछ दूँगा जो वह माँगेगा।” इस पर अहमद एड-देनेफ आगे बढ़े और अपने सामने की ज़मीन

चूमकर उनसे कहा, "हे धनी सरदार, मुझे मुआवज़ा दीजिए।" खलीफा ने उत्तर दिया, "तुम्हें मुआवज़ा मिल चुका है।" अहमद एड-देनेफ ने कहा, "मैं आपको यह खुशखबरी देता हूँ कि 'अला-ए-दीन अबू-श-शमत, जो कि विश्वासयोग्य और वफ़ादार हैं, स्वस्थ हैं और अभी जीवित हैं।" खलीफा ने उनसे पूछा, "तुम क्या दावा कर रहे हो?" उन्होंने उत्तर दिया, "तुम्हारी कसम, मेरी बात सच है; क्योंकि मैंने उन्हें मृत्युदंड के योग्य लोगों में से एक दूसरे व्यक्ति को उनके स्थान पर रखकर छुड़ाया और उन्हें अलेक्जेंड्रिया ले गया, जहाँ मैंने उनके लिए पुराने सामान बेचने वाले की दुकान खोली।" इस पर खलीफा ने कहा, "मैं तुम्हें उन्हें लाने का आदेश देता हूँ।" उन्होंने उत्तर दिया, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।" खलीफा ने उन्हें दस हज़ार सोने के सिक्के देने का आदेश दिया और वे अलेक्जेंड्रिया के लिए रवाना हो गए। लेकिन अला-ए-दीन अबू-श-शमत ने दुकान में कुछ वस्तुओं और एक चमड़े के थैले को छोड़कर बाकी सब कुछ बेच दिया। उसने थैले को हिलाया, और उसमें से एक मोती गिरा, जो हाथ में भरने जितना बड़ा था, सोने की चेन से जुड़ा हुआ था, और उसके पाँच फलक थे, जिन पर

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.48%** है।

272 अला-ए-दीन की कहानी: चींटियों के रेंगने से बने निशानों की तरह नाम और ताबीज। और उसने पाँचों चेहरों को रगड़ा; लेकिन किसी ने उसे जवाब नहीं दिया।93 तो उसने मन ही मन कहा, शायद यह गोमेद का मनका है।94 फिर उसने उसे दुकान में लटका दिया। और देखो, एक कौंसल95 गली से गुज़रा, और उसने आँखें उठाकर लटके हुए मनके को देखा; फिर वह अला-ए-दीन की दुकान पर बैठ गया, और उससे कहा, हे मेरे मालिक, क्या यह मनका बिक्री के लिए है? अला-ए-दीन ने उसे उत्तर

दिया, मेरे पास जो कुछ भी है, वह बिक्री के लिए है। और कौंसल ने उससे कहा, क्या तुम इसे मुझे अस्सी हज़ार सोने के सिक्कों में बेचोगे? अला-ए-दीन ने उत्तर दिया, ईश्वर इसे बेचने का कोई बेहतर तरीका दिखाए।9G तब कौंसल ने कहा, क्या तुम इसे एक लाख सोने के सिक्कों में बेचोगे? और उसने उत्तर दिया, मैं इसे तुम्हें एक लाख सोने के सिक्कों में बेचता हूँ: तो मुझे सिक्के दे दो। लेकिन कौंसल ने उत्तर दिया, मैं इतनी रकम नहीं ले जा सकता; और अलेक्जेंड्रिया में लुटेरे और ठग हैं: इसलिए तुम मेरे साथ मेरे जहाज पर चलो, और मैं तुम्हें कीमत, साथ ही अंगोरा ऊन का एक गठ्ठा, साटन का एक गठ्ठा, मखमल का एक गठ्ठा और चौड़े कपड़े का एक गठ्ठा दूंगा। तब अला-एद-दीन उठे और दुकान बंद कर दी, जब उन्होंने उसे मनका दे दिया; और उन्होंने चाबियाँ अपने पड़ोसी को देते हुए कहा,97 कि, जब तक मैं इस कौंसल के साथ जहाज पर जाकर अपने मनके की कीमत लाता हूँ, तब तक इन चाबियों को अपने पास रखना: लेकिन अगर मैं तुमसे लंबे समय तक दूर रहूँ, और मुकद्दम अहमद एड-देनेफ, जिसने मुझे इस जगह पर स्थापित किया है, तुम्हारे पास आए, तो उसे चाबियाँ दे देना, और उसे इस बात की जानकारी दे देना। फिर वह कौंसल के साथ जहाज पर चले गए; जब वह उसके साथ जहाज पर चढ़ा, तो कौंसल ने उसके लिए एक कुर्सी लगाई और उसे उस पर बैठाकर कहा, "पैसे लाओ।" कीमत चुकाने और उसे वादा किए गए चार गठ्ठे देने के बाद, उसने कौंसल से कहा, "हे मेरे स्वामी, मैं चाहता हूँ कि आप मुझे थोड़ा भोजन या एक घूँट पानी पिलाकर मेरे हृदय को तरोताज़ा कर दें।" अला-एद-दीन ने उत्तर दिया, "यदि आपके पास पानी है, तो मुझे पिलाएँ।" कौंसल ने शरबत लाने का आदेश दिया; और उसमें बेंज मिला हुआ था। जब उसने शरबत पी ली, तो वह पीठ के बल गिर पड़ा। उन्होंने कुर्सियाँ हटा दीं और खंभे एक तरफ रख दिए,98 और पाल खोल दिए, और हवा

उनके पक्ष में हो गई जब तक कि वे समुद्र के बीच में नहीं पहुँच गए। तब कप्तान ने अला-एद-दीन को केबिन से ऊपर लाने का आदेश दिया; और वे उसे ऊपर लाए, और उसे बेंज के विषनाशक की गंध सुंघाई: तो उसने अपनी आँखें खोलीं और कहा, "मैं कहाँ हूँ?" कप्तान ने उत्तर दिया, “तुम यहाँ मेरे पास बंधे हुए और हिरासत में हो; और यदि तुमने फिर कहा होता, ‘ईश्वर इसे निपटाने का कोई बेहतर रास्ता दिखाए,’ तो मैं तुम्हें और अधिक राशि देता।” अलादीन ने पूछा, “तुम्हारा पेशा क्या है?” उसने उत्तर दिया, “मैं एक कप्तान हूँ, और मैं तुम्हें अपने प्रियतम के पास ले जाना चाहता हूँ।”

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.73%** है।

अला-ए-दीन अबू-श-सुमत की कहानी। 273 जब वे बातें कर रहे थे, तभी एक जहाज प्रकट हुआ, जिस पर चालीस मुस्लिम व्यापारी सवार थे; और कप्तान ने उन पर हमला किया, उनके जहाज में लोहे की जंजीरें गाड़ दीं, और अपने आदमियों के साथ जहाज पर चढ़कर उसे लूट लिया और उसे अपने कब्जे में लेकर जेनोआ शहर की ओर चल दिए। कप्तान, जिसके पास अला-ए-दीन कैदी था, फिर समुद्र की ओर खुलने वाले एक महल के द्वार पर गया;99 और देखो, एक युवती अपने चेहरे के सामने एक लिथम (एक प्रकार का पत्थर) लहराते हुए नीचे आई और उससे कहा, क्या तुम मनका और उसके मालिक को लाए हो? उसने उत्तर दिया, मैं दोनों को लाया हूँ। और उसने उससे कहा, मुझे मनका दे दो। तो उसने उसे दे दिया। और इसके बाद, वह बंदरगाह पर लौट आया, और अपनी सुरक्षित वापसी की घोषणा करने के लिए तोपों की सलामी दी;100 नगर के राजा को जब उसके आगमन की सूचना मिली, तो वह उसका स्वागत करने के लिए आगे आया और उससे पूछा, “तुम्हारी यात्रा कैसी रही?” उसने उत्तर

दिया, “यह बहुत सफल रही, और इस दौरान मैंने इकतालीस मुस्लिम व्यापारियों से भरे एक जहाज पर कब्जा कर लिया।” तब राजा ने उससे कहा, “इन्हें बंदरगाह पर ले आओ।” और वह उन्हें जंजीरों में जकड़कर ले आया, जिनमें अलादीन भी शामिल था; राजा और सेनापति घोड़ों पर सवार होकर कैदियों को अपने आगे-आगे तब तक चलाते रहे जब तक वे बंदरगाह पर नहीं पहुँच गए।

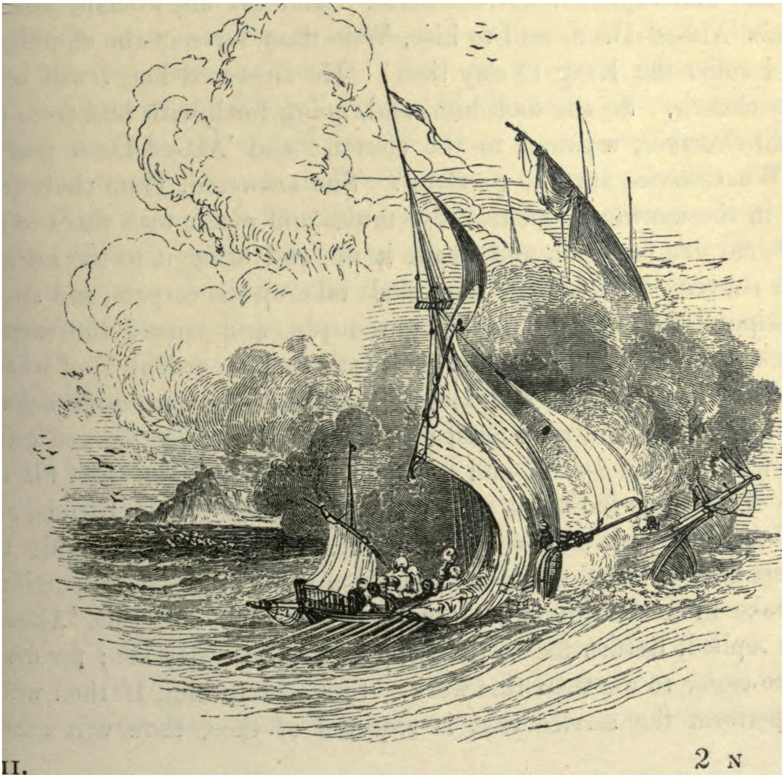

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.33%** है।

271 अला-ए-दीन अबू-श-शामत का स्टॉईव। परिषद कक्ष में, जब वे बैठ गए और पहले कैदी को आगे लाया गया; तो राजा ने उससे कहा, हे मुसलमान, तुम कहाँ से आए हो? उसने उत्तर दिया, अलेक्जेंड्रिया से।

और राजा ने कहा, हे जल्लाद, इसे मार डालो। जल्लाद ने तलवार से उस पर प्रहार किया और उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। दूसरे, तीसरे और उनके साथियों के साथ भी यही किया गया, जब तक कि चालीस लोगों को मार नहीं डाला गया। अला-ए-दीन अंत तक जीवित रहा: इसलिए उसने उनकी आहें पी लीं और मन ही मन कहा, हे अला-ए-दीन, तुम पर अल्लाह की रहमत हो! तुम्हारा जीवन समाप्त हो गया है! तब राजा ने कहा, और तुम किस देश से आए हो? उसने उत्तर दिया, अलेक्जेंड्रिया से। और राजा ने कहा, हे जल्लाद, इसका सिर काट डालो! जल्लाद ने तदनुसार अपना हाथ उठाया। राजा ने तलवार उठाई और अला-ए-दीन का सिर काटने ही वाला था कि तभी एक वृद्धा, आदरणीय रूप से प्रकट हुई; तभी राजा ने सम्मान दिखाने के लिए उसे तलवार से बांध दिया; और उसने कहा, हे राजा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि जब सेनापति बंदियों के साथ आए तो मठ में एक-दो बंदी चर्च में सेवा करने के लिए भेज देना? राजा ने उत्तर दिया, हे मेरी माँ, काश तुम थोड़ा पहले आ जातीं: लेकिन इस बचे हुए बंदी को ले लो। वृद्धा ने अला-ए-दीन की ओर देखते हुए उससे कहा, क्या तुम चर्च में सेवा करोगे, या मैं राजा को तुम्हें मारने दूँ? उसने उत्तर दिया, मैं चर्च में सेवा करूँगा। तो वह उसे अपने साथ ले गई और सभा कक्ष से निकलकर चर्च चली गई; और अला-ए-दीन ने उससे पूछा, मुझे क्या सेवा करनी है? उसने उत्तर दिया, तुम्हें सुबह जल्दी उठना होगा। पाँच खच्चर लेकर जंगल में जाओ, सूखी लकड़ियाँ काटो, उन्हें तोड़ो और मठ की रसोई में ले आओ। उसके बाद, तुम कालीन उठाओ, पत्थर और संगमरमर के फर्श को झाड़-पोंछ कर साफ करो और कालीनों को पहले की तरह बिछा दो। और तुम आधा अर्देब्ब (101) गेहूँ लो, उसे छानो, पीसो, गूँथो और मठ के लिए मिनेनेह (103) बनाओ; और तुम एक वेबेह (103) मसूर लो, उसे हाथ की

चक्की में पीसो और पकाओ। फिर तुम चारों फव्वारों के कुंडों को पानी से भरो, उसे घड़ों में भरकर लाओ, और तीन सौ छियासठ लकड़ी के कटोरे भरो, उनमें मिनेनेह को मसलकर डालो, और उनमें कुछ मसूर का दलिया डालो, और प्रत्येक भिक्षु या कुलपति को उसका कटोरा दो। — इस पर, 'अला-एद्दीन उसने उत्तर दिया, "मुझे राजा के पास लौटा दो और उसे मुझे मार डालने दो; क्योंकि इस काम से मृत्यु मेरे लिए आसान होगी।" उसने उससे कहा, "यदि तुम काम करोगे और तुमसे अपेक्षित सेवा करोगे, तो तुम बच जाओगे।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.37%** है।

अला-ए-दीन अबू-श-शमत की कहानी। वध करो; और यदि तू यह कार्य नहीं करेगा, तो मैं राजा से तुझे मृत्युदंड दिलवा दूँगा। तब अला-ए-दीन व्याकुल होकर बैठा रहा। गिरजाघर में दस अंधे और नपुंसक पुरुष थे, जो उससे सबसे नीच कार्य करवाते थे। तभी एक बूढ़ी औरत आई और उससे बोली, तूने गिरजाघर का काम क्यों नहीं किया? उसने कहा, मेरे पास कितने हाथ हैं कि मैं यह काम कर सकूँ? उसने उत्तर दिया, हे मूर्ख, मैं तुझे केवल काम करवाने के लिए लाई हूँ। फिर उसने कहा, हे मेरे पुत्र, यह छड़ी (जो पीतल की थी और जिसके शीर्ष पर एक क्रॉस बना था) ले और मुख्य सड़क पर जा; और जब नगर का श्वेत व्यक्ति तेरे पास आए, तो उससे कहना, मैं तुझे गिरजाघर की सेवा के लिए बुलाता हूँ। और वह तेरी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करेगा। इसलिए उसे गेहूँ लेकर छानने और पीसने को कहो, फिर उसे दूसरी छलनी से छानने को कहो, फिर उसे गूंथने और उससे कुछ पुआलियाँ पकाने को कहो; और जो कोई तुम्हारी आज्ञा न माने, उसे मारो, और किसी से मत डरो। — तब उसने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। उसने वैसा ही किया जैसा उसने

उसे बताया था, और सत्रह वर्षों तक बड़े-छोटे सभी से निःशुल्क काम करवाता रहा। इसके बाद, जब वह चर्च में बैठा था, तभी एक बूढ़ी औरत उसके पास आई और उससे कहा, मठ से बाहर जाओ। — मैं कहाँ जाऊँ? उसने कहा। उसने उत्तर दिया, आज रात किसी सराय में या अपने किसी साथी के घर में बिताओ। उसने कहा, तुम मुझे चर्च से क्यों भेज रही हो? उसने उत्तर दिया, इस नगर के राजा योहन्ना की पुत्री होस्न-मरियम,104,105 चर्च आना चाहती है, और यह उचित नहीं है कि कोई उसके रास्ते में आए। अतः उसने उसके आदेश का पालन करने का आशय जताते हुए उठ खड़ा हुआ और उससे कहा कि वह गिरजाघर से बाहर जा रहा है; परन्तु मन ही मन उसने कहा, "पता नहीं राजा की पुत्री हमारी स्त्रियों के समान है या उनसे अधिक सुंदर। इसलिए मैं तब तक नहीं जाऊँगा जब तक मैं उसे देखकर तृप्त न हो जाऊँ।" तदनुसार वह एक कोठरी में छिप गया जिसकी खिड़की गिरजाघर की ओर खुलती थी। और जब वह वहाँ से गिरजाघर की ओर देख रहा था, तभी राजा की पुत्री पास आई और उसने उसे एक ऐसी दृष्टि से देखा जिससे उसके मन में आहें भर उठीं; क्योंकि वह उसे बादलों के पीछे से निकलते पूर्णिमा के चाँद के समान प्रतीत हुई; और उसके साथ एक युवती भी थी, जिससे वह कह रही थी, "हे ज़ुबैदेह, तुमने मुझे अपने साथ से प्रसन्न किया है।" और अला-एद-दीन ने उस युवती को ध्यान से देखते हुए पाया कि वह उसकी पत्नी ज़ुबैदेह अल-ऊदीयेह थी, जिसकी (जैसा कि उसने अनुमान लगाया था) मृत्यु हो चुकी थी। तब राजा की पुत्री ने ज़ुबैदेह से कहा, अब हमारे लिए वीणा बजाओ। परन्तु ज़ुबैदेह ने उत्तर दिया, मैं तुम्हारे लिए तब तक नहीं बजाऊँगा जब तक तुम मेरी इच्छा पूरी न कर दो।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.31%** है।

276 यह कहानी 'अला-दीन अबू-श-शमत' की है। मेरा वादा। - मैंने तुमसे क्या वादा किया है? राजा की बेटी ने पूछा। ज़ुबैदेह ने उत्तर दिया, तुमने मुझे मेरे पति 'अला-दीन अबू-श-शमत, जो भरोसेमंद और वफादार हैं, से मिलाने का वादा किया था। राजा की बेटी ने उससे कहा, हे ज़ुबैदेह, शांत मन और प्रसन्न आँखों से हमारे लिए एक संगीतमय प्रस्तुति दो, तुम्हारे पति 'अला-दीन से हमारे मिलन के उपलक्ष्य में। तो ज़ुबैदेह ने कहा, और वह कहाँ है? - राजा की बेटी ने उत्तर दिया, वह इस कोठरी में हमारी बातें सुन रहा है। और इस पर, ज़ुबैदेह ने वीणा पर एक ऐसा संगीतमय वादन किया, जो पत्थर को भी नचा दे। और जब अलादीन ने यह सुना, तो उसके हृदय में तीव्र इच्छाएँ जागृत हुईं, और वह एकांतवास से बाहर आया, और अपनी पत्नी ज़ुबैदेह ईउदियेह को गले लगा लिया, और उसने उसे पहचान लिया। वे एक-दूसरे को गले लगाकर बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़े; तभी राजकुमारी होस्न-मरियम आई, और उन पर गुलाब जल छिड़ककर उन्हें होश में लाया, और कहा, ईश्वर ने तुम दोनों को मिलाया है! अलादीन ने उत्तर दिया, हे मेरी स्वामिनी, तेरी कृपा से। फिर अपनी पत्नी की ओर देखते हुए उसने उससे कहा, हे ज़ुबैदेह, तुम मर चुकी थी, और हमने तुम्हें कब्र में दफना दिया था। तो फिर तुम कैसे जीवित हो उठी और इस महल में आ गई? – हे मेरे स्वामी, उसने उत्तर दिया, मैं मरी नहीं थी; बल्कि जैनों में से एक मुझे उठाकर यहाँ ले आया था; और जिसे तुमने दफनाया, वह एक जिन्न थी, जिसने मेरा रूप धारण कर लिया और मरने का नाटक किया। तुम्हारे दफनाने के बाद उसने कब्र चीरकर बाहर निकली और राजा की पुत्री होस्न-मरियम की सेवा में लग गई। परन्तु मैं सम्मोहित हो गई थी,107 और आँखें खोलकर मैंने देखा कि मैं राजा की पुत्री होस्न-मरियम के साथ थी; और मैंने उससे कहा, तू मुझे यहाँ क्यों लाई है? उसने उत्तर दिया, मैं तेरे पति 'अला-ए-दीन अबू-श-शमत से

विवाह करने के लिए नियत हूँ। और उसने कहा, हे ज़ुबैदेह, क्या तू मुझे अपनी सहपत्नी के रूप में स्वीकार करेगा? मैंने उसे उत्तर दिया, हे मेरी स्वामिनी, मैं सुनती और आज्ञा मानती हूँ; परन्तु मैंने कहा, मेरा पति कहाँ है? और उसने कहा, "उसके माथे पर वह लिखा है जो परमेश्वर ने उसके लिए निर्धारित किया है,108 और जब वह अपने माथे पर लिखी घटनाओं की पूर्ति का अनुभव कर लेगा, तो वह इस स्थान पर अवश्य आएगा; परन्तु तुम उसके वियोग के लिए मधुर संगीत और वाद्ययंत्र बजाकर अपने आप को सांत्वना दोगे, जब तक कि परमेश्वर हमें उससे मिला न दे।" इसलिए मैं इस दौरान उसके साथ रही, जब तक कि परमेश्वर ने मुझे इस गिरजाघर में तुमसे नहीं मिला दिया।100 तब होस्न-मरियम ने उसकी ओर देखकर उससे कहा, "हे मेरे

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.69%** है।

हे मेरे स्वामी, क्या आप मुझे पत्नी के रूप में स्वीकार करेंगे और मेरे पति बनेंगे? 9— हे मेरी स्वामिनी, उसने कहा, मैं मुसलमान हूँ और तुम ईसाई हो: तो मैं तुमसे विवाह कैसे करूँ? 110 परन्तु उसने उत्तर दिया, ईश्वर न करे कि मैं काफ़िर होऊँ! नहीं, मैं मुसलमान हूँ और अठारह वर्षों से मैंने इस्लाम धर्म को दृढ़ता से थामे रखा है और मैं किसी ऐसे धर्म का पालन करने के लिए निर्दोष हूँ जो इस्लाम के विपरीत हो। — तब उसने उससे कहा, हे मेरी स्वामिनी, मैं अपने देश लौटना चाहता हूँ। और उसने उत्तर दिया, जान लो कि मैंने तुम्हारे माथे पर उन घटनाओं को लिखा हुआ देखा है जिनका तुम्हें पूर्ण होना अनुभव करना होगा, और तुम्हारी इच्छा पूरी होगी। ऐ अलादीन, इस खबर से भी प्रसन्न हो जाओ कि तुम्हारा एक बेटा पैदा हुआ है, जिसका नाम एशियाई है, और वह अब खलीफा के दरबार में तुम्हारे स्थान पर बैठा है, और अठारह वर्ष का हो चुका है। यह भी जान

लो,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.44%** है।

278 अला-कदीक अबू-एस की कहानी: सत्य प्रकट हो गया है; और

असत्य दूर हो गया है, और हमारे प्रभु ने खलीफा का माल चुराने वाले से अपनी सुरक्षा का पर्दा हटा लिया है: वह अहमद कामाकिम है, जो सबसे बड़ा चोर और गद्दार है; और वह अब जेल में बंद है, जंजीरों में जकड़ा हुआ है। इसके अलावा, जान लो कि मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसने तुम्हें मनका भेजा था, और उसे दुकान में चमड़े के थैले में तुम्हारे लिए रखवाया था; और मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसने तुम्हें वह सेनापति भेजा था जो तुम्हें और मनका लेकर आया था। और जान लो कि यह सेनापति मुझसे मोहित है, और मुझे पाना चाहता है; लेकिन मैंने उसकी बात नहीं मानी, और मैंने उससे कहा, मैं तुम्हारी विनती तब तक पूरी नहीं करूँगी जब तक तुम मुझे मनका और उसके मालिक को न ला दो। और मैंने उसे सौ थैले दिए,111 और उसे एक व्यापारी के वेश में भेजा, यद्यपि वह एक सेनापति था। फिर, जब चालीस बंदियों को मारने के बाद, जिनके साथ तुम थी, वे तुम्हें मारने के लिए आगे लाए, तो मैंने उस बूढ़ी औरत को तुम्हारे पास भेजा। — तब अला-एद-दीन ने उससे कहा, अल्लाह तुम्हें मेरी तरफ से हर तरह की रहमत से नवाज़े! — तब होस्न-मरियम ने उसके सामने इस्लाम में धर्मांतरण की अपनी प्रतिज्ञा दोहराई; और जब उसे उसकी प्रतिज्ञा की सच्चाई का यकीन हो गया, तो उसने उससे कहा, मुझे इस मनके के गुण बताओ और यह कहाँ से आया। उसने उत्तर दिया, यह मनका एक जादुई खजाने से है, और इसमें पाँच गुण हैं, जो हमें ज़रूरत के समय लाभ पहुँचाएँगे। मेरी दादी, मेरे पिता की माँ, एक जादूगरनी थीं, जो रहस्यों को सुलझाती थीं और खजाने लूटती थीं, और एक खजाने से यह मनका उनके पास आया। और जब मैं बड़ी हुई और चौदह वर्ष की हुई, तो मैंने सुसमाचार और अन्य पुस्तकें पढ़ीं, और पंचग्रन्थ, सुसमाचार, भजन संहिता और फुरकान (अल्लाह उन पर रहमत करे और उनकी रक्षा करे!) का नाम चारों पुस्तकों में देखा। 112 इसलिए मैंने मोहम्मद पर विश्वास

किया और मुसलमान बन गई, और मेरे मन में यह दृढ़ विश्वास हो गया कि सच्चे अर्थ में केवल अल्लाह (जिसका नाम महान है!) की ही पूजा की जानी चाहिए, और मानवजाति का स्वामी इस्लाम के सिवा किसी धर्म को स्वीकार नहीं करता। मेरी दादी ने जब बीमार पड़ीं, तो मुझे यह मनका उपहार में दिया और इसके पाँच गुणों से मेरा परिचय कराया। और मेरी दादी के निधन से पहले, मेरे पिता ने उनसे कहा, मेरे लिए भू-ज्योतिष की एक क्रिया कीजिए और देखिए कि मेरे जीवन का अंत क्या होगा और मेरे साथ क्या होगा। और उन्होंने उनसे कहा, निश्चय ही, मेरे पूर्वज अलेक्जेंड्रिया से आने वाले एक कैदी द्वारा मारे जाएँगे। इसलिए मेरे पिता ने शपथ ली कि वह उस शहर से आने वाले हर कैदी को मार डालेंगे, और उन्होंने अपने इस वचन की जानकारी सेनापति को दी, और उनसे कहा, "तुम्हें मुसलमानों के जहाजों पर हमला करना होगा, और अलेक्जेंड्रिया से आने वाले जिसे भी तुम देखो, उसे मार डालना होगा, या उसे पकड़ लेना होगा।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.62%** है।

: अला-ए-दीन अबू-श-शमत की कहानी। 279 मैं उसके पास आया। इसलिए सेनापति ने उसके आदेश का पालन किया और तब तक उसके सिर के बालों के बराबर लोगों को मार डाला। फिर मेरी दादी का देहांत हो गया; और मैंने मन में सोचते हुए और यह कहते हुए कि मैं जानना चाहती हूँ कि मुझसे कौन विवाह करेगा, भूगर्भीय विद्या का प्रयोग किया। और मुझे यह प्रकट हुआ कि मुझसे केवल अला-ए-दीन अबू-श-शमत, जो भरोसेमंद और वफादार थे, ही विवाह करेंगे; इस पर मैं आश्चर्यचकित हुई; और मैंने उस समय का इंतजार किया जब तक कि वह समय नहीं आ गया, और मैं तुमसे मिली। तब अला-ए-दीन ने उससे विवाह किया,114

और उससे कहा, मैं अपने देश लौटना चाहता हूँ। उसने उत्तर दिया, यदि ऐसा है, तो मेरे साथ आओ। और उसने उसे अपने महल के एक कमरे में छिपा दिया, और अपने पिता के पास चली गई, जिसने उससे कहा, "हे मेरी बेटी, आज मैं आत्माओं के अत्यधिक प्रकोप से पीड़ित हूँ; इसलिए बैठो ताकि मैं तुम्हारे साथ मदहोश हो सकूँ।" सो वह बैठ गई; और उसने शराब का पात्र मंगवाया; और वह उसे भरती रही और उसे तब तक देती रही जब तक वह बेहोश नहीं हो गया। फिर उसने उसके प्याले में थोड़ा सा बेंज डाला, और उसने प्याला पी लिया, और अपनी पीठ के बल गिर पड़ा। तब वह अलादीन के पास आई, और उसे कमरे से बाहर निकालकर उससे कहा, "तेरा शत्रु अपनी पीठ के बल पड़ा है; तो उसके साथ जो चाहो करो; क्योंकि मैंने उसे बेंज से मदहोश कर दिया है।" तब अलादीन अंदर गया, और उसे बेंज से मदहोश देखा; और उसने उसके हाथ पीछे कसकर बाँध दिए, और उसे जंजीरों से जकड़ दिया। इसके बाद उन्होंने उसे बेंज का विषनाशक दिया, और वह होश में आया तो उसने देखा कि अलादीन और उसकी बेटी उसकी गोद में बैठे हैं। उसने कहा, “हे मेरी बेटी, क्या तुम मेरे साथ ऐसा व्यवहार कर रही हो?” उसने उत्तर दिया, “यदि मैं तुम्हारी बेटी हूँ, तो इस्लाम अपना लो; क्योंकि मैंने ऐसा कर लिया है। सत्य मेरे लिए प्रकट हो गया है, और मैंने उसका अनुसरण किया है, और असत्य को त्याग दिया है; और मैंने समस्त प्राणियों के स्वामी, ईश्वर के समक्ष अपना चेहरा झुकाया है, और इस संसार में और परलोक में किसी भी ऐसे धर्म का अनुसरण करने का दोषमुक्त हूँ जो इस्लाम धर्म के विपरीत हो। यदि तुम मुसलमान बन जाओ, तो हम तुम्हारे साथ स्नेह और सम्मान से पेश आएंगे; परन्तु यदि नहीं, तो तुम्हारा वध तुम्हारे जीवन से बेहतर होगा।” तब अलादीन ने भी उसे नसीहत दी। लेकिन उसने इनकार कर दिया और हठधर्मी बना रहा: इसलिए अला-ए-

दीन ने एक खंजर निकाला और उसकी गर्दन एक गर्दन की नस से दूसरी नस तक काट दी, और जो कुछ हुआ था उसे लिखकर उसके माथे पर रख दिया। इसके बाद, उन्होंने हल्का और कीमती सामान लिया और महल से निकलकर चर्च की ओर चल दिए। फिर उसने मनका निकाला और उस पर, जिस पर पलंग खुदा हुआ था, अपना हाथ रखकर उसे रगड़ा; और देखो, उसके सामने एक पलंग आ गया। और वह अला-ए-दीन और उसकी पत्नी के साथ सवार हो गई।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.14%** है।

280 अला-एद-दीन अबू-श-शमत की कहानी। ज़ुबैदेह अल-ऊदीयेह इस पलंग पर बैठीं और बोलीं, “इस मनके पर अंकित नामों, तावीज़ों और वैज्ञानिक चिह्नों के बल पर, हे पलंग! हमारे साथ उठ खड़ी हुईं।” और पलंग उनके साथ उठ खड़ी हुई और उन्हें एक ऐसी घाटी में ले गई जहाँ कोई वनस्पति नहीं थी।115 फिर उन्होंने मनके के अन्य चार फलकों को आकाश की ओर ऊपर कर दिया, और जिस फलक पर पलंग की आकृति बनी थी उसे नीचे की ओर कर दिया, और वह उनके साथ धरती पर उतर आई। फिर उन्होंने उस फलक को घुमाया जिस पर एक मंडप की आकृति बनी थी, और उसे रगड़ते हुए कहा, “इस घाटी में एक मंडप स्थापित किया जाए।” इस पर मंडप स्थापित किया गया और वे उसमें बैठ गए। अब वह घाटी बंजर थी, वनस्पति और जल दोनों से रहित: इसलिए उन्होंने मनके के चार फलकों को आकाश की ओर कर दिया और कहा, “ईश्वर के नामों के बल पर, यहाँ वृक्ष उग आएं, और उनके किनारे एक बड़ी नदी बहे!” और तुरंत ही पेड़ उग आए, और उनके पास से एक बड़ी, कलकल करती नदी बहने लगी, जो लहरों से उथल-पुथल मचा रही थी; उन्होंने उसके जल से स्नान किया, प्रार्थना की और पिया। फिर राजा की बेटी ने

उन तीन अज्ञात चेहरों को देखा, जब तक कि वह एक ऐसे चेहरे के पास नहीं पहुँची जिस पर भोजन से सजी मेज बनी हुई थी, और कहा, ईश्वर के नाम की कृपा से, मेज सजाई जाए! और देखो, एक मेज सजाई गई, जिस पर तरह-तरह के स्वादिष्ट व्यंजन रखे हुए थे; उन्होंने खाया-पिया और आनंद और उल्लास से भर गए। इसी बीच, राजा का पुत्र अपने पिता को जगाने गया और उन्हें मृत पाया; और उसे वह कागज भी मिला जो अला-ए-दीन ने लिखा था: उसने उसे पढ़ा और उसकी सामग्री से परिचित हो गया। फिर उसने अपनी बहन को खोजा, और उसे न पाकर वह गिरजाघर में बैठी बूढ़ी औरत के पास गया और उसके बारे में पूछा; और उसने उत्तर दिया, मैंने उसे कल से नहीं देखा है। इसलिए वह लौटकर सैनिकों के पास गया और उनसे कहा, “घोड़ों पर सवार हो जाओ, हे घुड़सवारों!” और उसने उन्हें सारी घटना बताई। इस पर वे अपने घोड़ों पर सवार होकर आगे बढ़े और तंबू के पास पहुँच गए। तभी होस्न-मरियम ने अपनी नज़र घुमाई और देखा कि धूल ने आस-पास के इलाकों का नज़ारा रोक दिया है। धूल के ऊँची उठकर फैलने के बाद छंट गई और उसके नीचे उसका भाई और सैनिक दिखाई दिए, जो पुकार रहे थे, “जब हम तुम्हारे पीछे हैं तो तुम कहाँ जाओगे?” तब उस युवती ने अला-एद्दीन से पूछा, “युद्ध और लड़ाई में तुम्हारी दृढ़ता कैसी है?” उसने उत्तर दिया, “भूसे में धँसी हुई लकड़ी की तरह; क्योंकि मैं युद्ध और लड़ाई से, न ही तलवारों और भालों से परिचित हूँ।” तब उसने मनका निकाला और उस पर बनी आकृति को रगड़ा जिस पर घोड़े और सवार की आकृति बनी थी; और देखो, रेगिस्तान से एक घुड़सवार प्रकट हुआ और रुका नहीं!

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.81%** है।

अला-ए-दीन अबू-श-शमत की कहानी। 281,0 उसने तलवार से उन पर

तब तक प्रहार किया जब तक कि उसने उन्हें खदेड़कर पीछे नहीं हटा दिया। तब राजा की बेटी ने अला-ए-दीन से पूछा, क्या तुम काहिरा जाओगे या अलेक्जेंड्रिया? उसने उत्तर दिया, अलेक्जेंड्रिया। तो वे पलंग पर चढ़ गए, और उसके द्वारा उस पर मंत्र पढ़ने के बाद, वह उन्हें पलक झपकते ही अलेक्जेंड्रिया ले गया; और अला-ए-दीन उन्हें एक गुफा में ले गया, शहर गया, और वहाँ से उनके लिए वस्त्र लाया, जिन्हें उसने उन्हें पहनाया। फिर वह उन्हें दुकान और कमरों के समूह में ले गया, और उनके लिए भोजन लाने के लिए बाहर गया; और देखो, मुकद्दम अहमद एड-डीकनेफ बगदाद से आ रहा था। अला-ए-दीन ने उसे सड़क पर देखा, और उसने बाहें फैलाकर उसका अभिवादन किया और उसका स्वागत किया; अहमद एड-देनेफ ने उन्हें अपने बेटे एशियन के बारे में खुशखबरी दी और बताया कि वह बीस साल का हो गया है; इसके बाद, अला-एड-दीन ने मुकद्दम को अपने जीवन की सारी बातें शुरू से अंत तक बताईं और उन्हें दुकान और कमरों के समूह में ले गए; अहमद एड-देनेफ उनकी कहानी सुनकर बहुत आश्चर्यचकित हुए। उन्होंने अगली रात वहीं बिताई और सुबह उठने पर अला-एड-दीन ने दुकान बेच दी और उसकी कीमत अपने बाकी पैसों में मिला दी। तब अहमद एड-देनेफ ने उन्हें बताया कि खलीफा उन्हें बुलाना चाहते हैं। लेकिन अला-एड-दीन ने जवाब दिया, मैं काहिरा जा रहा हूँ, अपने माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्यों को प्रणाम करने। तो वे सब एक साथ पलंग पर चढ़े और भाग्यशाली शहर काहिरा के लिए रवाना हुए और दर्ब अल-असफर में उतरे;116 क्योंकि अला-एड-दीन के परिवार का घर उसी इलाके में था; और उन्होंने दरवाजा खटखटाया; तब उनकी माताजी ने पूछा, प्रियतम के बिछड़ने के बाद द्वार पर कौन है? उन्होंने उत्तर दिया, मैं अला-ए-दीन हूँ। यह सुनकर परिवार के सभी सदस्य नीचे आए और उन्हें गले लगाया। फिर उन्होंने अपनी दोनों पत्नियों और अपने साथ

लाए हुए सामान को घर के अंदर भेज दिया और स्वयं अहमद एड-दीनफ के साथ घर में प्रवेश किया। उन्होंने तीन दिन विश्राम किया और उसके बाद बगदाद जाने की इच्छा व्यक्त की। उनके पिता ने उनसे कहा, हे मेरे पुत्र, मेरे साथ रहो। लेकिन उन्होंने उत्तर दिया, मैं अपने पुत्र आशियान से वियोग सहन नहीं कर सकता। और वे अपने पिता और माताजी को साथ लेकर बगदाद के लिए रवाना हुए। तब अहमद एड-दीनफ खलीफा के पास गए और उन्हें अला-ए-दीन के आगमन की खुशखबरी सुनाई। यह सुनकर खलीफा अपने पुत्र आशियान को साथ लेकर उनसे मिलने गए और उन्होंने उन्हें गले लगाया। और खलीफा ने अहमद कामाकिम, जो कि सबसे बड़ा चोर था, को लाने का आदेश दिया, और जब वह उसके सामने आया, तो खलीफा ने कहा, "हे 'अल्लाह, अपने शत्रु से बदला ले।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.28%** है।

283 अला-ए-दीन अबू-श-सियामत की कहानी। इस प्रकार अला-ए-दीन ने अपनी तलवार निकाली और अहमद कामाकिम पर प्रहार करके उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। इसके बाद खलीफा ने कादियों और गवाहों को बुलाकर अला-ए-दीन और होस्न मरियम के विवाह का अनुबंध लिखकर अला-ए-दीन के लिए एक भव्य भोज का आयोजन किया। उन्होंने अपने पुत्र आसियान को रसेस-सित्तीन के पद पर नियुक्त किया और उन दोनों को भव्य सम्मान वस्त्र प्रदान किए; और उन्होंने अत्यंत सुखमय और आनंदमय जीवन व्यतीत किया, जब तक कि उनके जीवन में सुखों का अंत करने वाली और साथियों को अलग करने वाली मृत्यु नहीं आ गई।117

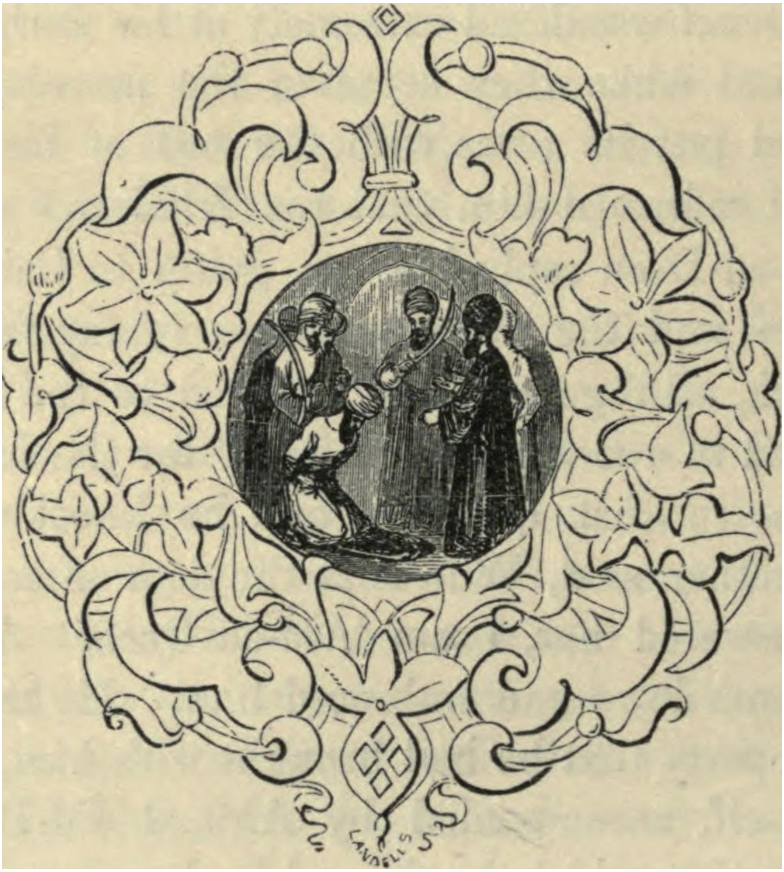

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.00%** है।

अध्याय ग्यारह के लिए टिप्पणियाँ। टिप्पणी 1. यह कहानी ब्रेस्लाउ संस्करण में, साथ ही काहिरा संस्करण में भी है, जिससे मैंने इसका अनुवाद किया है। पहले संस्करण में, यह नीमेह और नोआम की कहानी के बाद आती है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह वॉन हैमर की पांडुलिपि में भी शामिल है; लेकिन थोड़े अलग शीर्षक के साथ; ट्रेबुटियन की "Contes Inedits des Mille et une Nuits" से पहले दी गई पांडुलिपि की विषयसूची में, मुझे काहिरा संस्करण में 'अला-ए-दीन अबू-

श-शमात' की कहानी के स्थान पर "अलादीन ले पेरे डेस एनविएक्स" शीर्षक वाली एक कहानी मिली; जिसमें "ट्रेडिट पार कॉसिन" शब्द जोड़े गए थे। मेरा मानना है कि कॉसिन द्वारा किया गया यह अनुवाद उस संस्करण का हिस्सा है जिसकी प्रति प्राप्त करने का मैंने व्यर्थ प्रयास किया है, जिसे 1806 में पेरिस में लेनोरमेंट द्वारा प्रकाशित किया गया था। अंग्रेजी पाठक के समक्ष 'अला-ए-दीन अबू-श-शमात' की कहानी प्रस्तुत करते हुए, मैं यह राय दे सकता हूँ कि यह विशुद्ध रूप से अरबी कहानी है, जिसमें मिस्र की विशेषताएँ हैं, जो या तो पूरी तरह से रचित है, या कुछ हिस्सों में तुर्की सुल्तान सलीम द्वारा मिस्र की विजय के बाद परिवर्तित की गई है; यह पिछले तीन या चार शताब्दियों के दौरान प्रचलित अरबी रीति-रिवाजों और परंपराओं का सटीक वर्णन करती है। मैंने साबित कर दिया\; v*vo^ \JL un^ oL'ui>, uy tiic iiicuiJiun <Ji it BIU.WV* 'शाह-बंदर" काहिरा के प्रमुख या सामान्य सिंडिक को दी गई एक उपाधि है; लेकिन पूर्व के कुछ हिस्सों में इसका प्रयोग रिसीवर-जनरल के लिए किया जाता है। नोट 2. यहाँ हमेशा की तरह "मिस्र" (बोलचाल की भाषा में "मस्र") से काहिरा का तात्पर्य है। कहानी के अंत में, एक गली के उल्लेख से इसका उल्लेख मिलता है। नोट 4. शुक्रवार की सामूहिक नमाज़ से पहले पूरे शरीर का शुद्धिकरण करना मुसलमान का कर्तव्य है। नोट 5. शीशे में अपना चेहरा देखते हुए इस तरह की बात कहना मुसलमान की आम प्रथा है; लेकिन मेरा मानना है कि इस स्थिति में "हे ईश्वर, हमारे प्रभु मोहम्मद पर कृपा करें!" कहना अधिक प्रचलित है - क्योंकि व्यक्ति अक्सर अपनी ही प्रशंसा भरी नज़र के प्रभाव से भी भयभीत रहता है; क्योंकि इन शब्दों का प्रयोग आम तौर पर बुरी नज़र के प्रभाव को दूर करने के लिए किया जाता है, जिससे प्रशंसा भरी नज़र पड़ने पर हमेशा डर लगता है। - जब कोई व्यक्ति स्नान

से निकलने वाला होता है, तो उसे नाई का शीशा दिया जाता है, और उस पर वह पैसा रखा जाता है जो उसे देना होता है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.14%** है।

अध्याय ग्यारह के लिए द्वितीय टिप्पणी, टिप्पणी 0. यहाँ मृत्यु या मृत्यु के दूत का संकेत है। टिप्पणी 7. यह प्रथा आज भी महिलाओं में प्रचलित है। वे शिशु से कहती हैं, "पैगंबर और उनके चचेरे भाई (उनके चाचा के पुत्र) अली अली के नाम पर।" इसका उद्देश्य बच्चे को जिन्नों के प्रभाव से बचाना है। टिप्पणी 8. यह भी जिन्नों से किसी भी प्रकार की शरारत को रोकने के उद्देश्य से किया जाता है। - "तकबीर" "ईश्वर सबसे महान है!" का उद्गार है और "अज़ान" प्रार्थना के लिए पुकार है। अध्याय 4 की टिप्पणी 24 देखें। टिप्पणी 9. बच्चे के जन्म के बाद सातवें दिन मनाए जाने वाले रीति-रिवाजों पर। बच्चे के जन्म के बाद बांटे जाने वाले भोजन का वर्णन मैंने अपनी पुस्तक 'आधुनिक मिस्रवासियों' के खंड 2, अध्याय 14 में किया है। ये भोजन आमतौर पर जन्म के चौथे या पाँचवें दिन तैयार किए जाते हैं। उपर्युक्त पुस्तक के उसी अध्याय में, मैंने सातवें दिन मनाए जाने वाले रीति-रिवाजों का वर्णन किया है, और मुझे यहाँ लगभग उन्हीं शब्दों में वही दोहराना होगा जो मैंने वहाँ इस विषय पर कहा है। उच्च वर्ग के परिवारों में, पेशेवर महिला गायिकाओं को हरम में शिशु की माँ की सहेलियों के मनोरंजन के लिए नियुक्त किया जाता है, जो इस अवसर पर

उससे मिलने आती हैं; या फिर नीचे पुरुषों द्वारा वाद्य संगीत का कार्यक्रम या संपूर्ण कुरान का पाठ किया जाता है। दाई की देखरेख में माँ को उसकी अपनी कुर्सी पर बैठाया जाता है, और बच्चे को एक सुंदर शॉल या किसी कीमती वस्तु में लपेटकर लाया जाता है; और उसे अभ्यस्त करने के लिए शोर से बचने के लिए, ताकि बाद में संगीत और अन्य आनंदमय ध्वनियों से बच्चा डर न जाए, एक महिला पीतल का ओखली लेती है और उसे मूसल से बार-बार कूटती है, मानो कूट रही हो। इसके बाद, बच्चे को एक छलनी में डालकर हिलाया जाता है; ऐसा माना जाता है कि यह क्रिया उसके पेट के लिए लाभकारी होती है। फिर, उसे हरम के सभी कमरों में कई महिलाओं या लड़कियों के साथ ले जाया जाता है; जिनमें से प्रत्येक के पास कई मोमबत्तियाँ होती हैं, कभी-कभी विभिन्न रंगों की, जिन्हें दो भागों में काटकर जलाया जाता है और एक छोटी गोल ट्रे पर मेहंदी के पेस्ट के छोटे-छोटे टुकड़ों में लगाया जाता है। उसी समय, दाई या कोई अन्य महिला प्रत्येक कमरे के फर्श पर नमक और सौंफ के बीज का मिश्रण या केवल नमक छिड़कती है, जिसे पिछली रात बच्चे के सिर पर रखा गया होता है: ऐसा करते समय वह कहती है, "नमक उस व्यक्ति की आँख में हो जो पैगंबर को आशीर्वाद नहीं देता!" या "गंदा नमक ईर्ष्यालु की आँख में हो!" नमक छिड़कने की रस्म को बच्चे और माँ को बुरी नज़र से बचाने वाला माना जाता है; और उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति को कहना चाहिए, "हे ईश्वर, हमारे प्रभु मोहम्मद पर कृपा करें!"3 बच्चे को लपेटकर, एक सुंदर गद्दे पर लिटाया जाता है, जिसे कभी-कभी चांदी की थाली पर रखा जाता है, और उपस्थित प्रत्येक महिला को दिखाया जाता है, जो उसके चेहरे को देखकर कहती है, "हे ईश्वर, हमारे प्रभु मोहम्मद पर कृपा करें! ईश्वर आपको दीर्घायु प्रदान करें!" इत्यादि, और आमतौर पर बच्चे के सिर पर या उसके बगल में एक कढ़ाई वाला रूमाल रखती है,

जिसके एक कोने में एक सोने का सिक्का (यदि सुंदर या पुराना हो तो और भी अधिक मूल्यवान) बंधा होता है। रूमाल और सोने का यह दान एक ऋण के रूप में माना जाता है, जिसे माँ को चुकाना होता है, यदि दाता उसे भी ऐसा ही उपहार दे; या इसी तरह के किसी अन्य उपहार के लिए ऋण चुकाने के रूप में। सिक्कों का उपयोग आमतौर पर कुछ वर्षों तक बच्चे के सिर के आभूषण को सजाने के लिए किया जाता है। बच्चे के लिए इन उपहारों के बाद, दाई के लिए भी अन्य उपहार दिए जाते हैं। प्रसव से पहले की रात के दौरान सातवें दिन के उत्सव में, सोते हुए बच्चे के सिर के पास पानी से भरी एक बोतल (लड़के के मामले में डड्रक और लड़की के मामले में कुल्लेह4) रखी जाती है, जिसके गले में कढ़ाई किया हुआ रूमाल बंधा होता है। दाई इस बोतल को, पानी सहित, एक थाली में रखकर सभी महिलाओं को भेंट करती है, जो उसके लिए उपहार के रूप में पैसे थाली में रख देती हैं। शाम को, पति आमतौर पर अपने दोस्तों के लिए एक पार्टी आयोजित करता है। 1 मेरे शेख द्वारा हाशिये पर टिप्पणी। * डोरक का गला लंबा और संकरा होता है: 2 इसका उपयोग कुल्लेह में उल्लिखित उद्देश्य के लिए किया जाता है, जिसका गला छोटा और चौड़ा होता है। इस कृति के अध्याय 6 के नोट्स में सबसे आम रूप दिखाया गया है। 3 ऊपर देखें, इस श्रृंखला में नोट 5।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.72%** है।

टिप्पणी 10. अर्थात्, वह नवजात शिशु कहाँ है, जो ईश्वर की धरोहर है? क्योंकि वह ईश्वर का है, जिसने उसे हमारे हवाले किया है; और जब वह उसे लेना चाहता है, तो वह उसे मृत्यु के द्वारा ले जाता है। कवि कहता है, — अध्याय ग्यारह की ओर देखें। 2. धन और परिवार केवल धरोहर हैं, और एक दिन अवश्य आएगा जब धरोहरें वापस कर दी जाएँगी। 3

टिप्पणी 11. पुत्री का नाम उसकी माता के नाम पर रखा गया है; और पुत्र का नाम उसके पिता के नाम पर। टिप्पणी 12. "अला-ए-दीन" का अर्थ है "धर्म की श्रेष्ठता"; और "अबू-स्लीसुइमत," "तिल वाला" (शाब्दिक रूप से, "तिलों का पिता")। पूर्व को आम बोलचाल में "अला-ए-दीन" में बदल दिया गया है, और हम इसे आमतौर पर "अलादीन" लिखते हैं। — व्युत्पत्ति की प्रथा शगुन से प्रेरित नाम रखना बेदावी समुदाय में आज भी प्रचलित है। *. नोट 13. काहिरा के कई घरों में किसी न किसी कमरे (अक्सर अलमारी में) में एक गुप्त दरवाजा होता है, जो किसी गुप्त कक्ष या ऐसे मार्ग में खुलता है जिससे किरायेदार किसी भी खतरे की स्थिति में भाग सके। नोट 14. जब कोई युवक समझदार हो जाता है और नमाज़ पढ़ने और अन्य धार्मिक कर्तव्यों का पालन करने लगता है, तो माना जाता है कि वह लोगों की नजरों से कम प्रभावित होता है; और भी अधिक, जब उसकी दाढ़ी बढ़ जाती है; क्योंकि तब उसकी प्रशंसा, ईर्ष्या या लालसा होने की संभावना कम हो जाती है। कई अरब अपने बच्चों को सार्वजनिक नजरों से इतनी सावधानी से बचाते हैं जितनी कि 'अला-ए-द-दसेन अबू-श-शानुइट के मामले में देखी गई थी। इस विषय पर मैंने अध्याय iv के नोट 24 में कुछ टिप्पणियां की हैं। नोट 15. जब कोई व्यक्ति किसी बच्चे या किसी अन्य वस्तु की प्रशंसा करता है, तो उसे कहना चाहिए, "अल्लाह के नाम पर!" या कुछ इसी तरह के शब्द बोलें, जैसे "माशाअल्लाह!" (इस श्रृंखला के नोट 81 में व्याख्या की गई है)। ऐसा माना जाता है कि ऐसे भाव आँख के प्रभाव को रोकते और उसका प्रतिकार करते हैं। नोट 1G. ये लाक्षणिक अभिव्यक्तियाँ हैं, जो लड़के के सावधानीपूर्वक पालन-पोषण और उसकी सज्जनता की ओर संकेत करती हैं। नोट 17. अध्याय 8 के नोट 20 देखें। नोट 18. चूंकि मिस्र विदेशी राजकुमारों के शासन के अधीन रहा है, इसलिए राज्य के उच्च अधिकारी आम तौर पर, लगभग

पूरी तरह से, विदेशी ही रहे हैं। इसी कारण से, व्यापारियों के शाह-बंदर को यहाँ "अरबों के पुत्रों का सुल्तान" कहा गया है, क्योंकि वह उनमें सबसे धनी व्यक्ति है। "अरब" शब्द अब केवल बेदावी, या रेगिस्तान के अरबों के लिए प्रयोग किया जाता है: नगरवासी और ग्रामीण स्वयं को "ओव्लाद अल-अरब" या "अरबों के पुत्र" कहते हैं। नोट 19. यह पैगंबर का एक कथन है। नोट 20. किसी बाज़ार का नकीब उसके शेख़ या व्यापारी मंडल के अधीन एक अधिकारी होता है। शाहबंदर, सभी व्यापारियों का मुखिया होने के नाते, स्वाभाविक रूप से उस बाज़ार का भी मुखिया होता था जिसमें उसकी दुकान होती थी। टिप्पणी 21. किसी दूसरे के अधिकार के प्रति समर्पण की प्रतिज्ञा करते समय, उसे नवीनीकृत करते समय, साथ ही सौदे को अंतिम रूप देते समय और अन्य कई अवसरों पर फातिहा (कुरान का पहला अध्याय) पढ़ना प्रथा है। टिप्पणी 22. यहाँ उपनाम के रूप में प्रयुक्त "सिमसिम" उस अनाज का नाम है जिसे हम तिल कहते हैं। टिप्पणी 23. "असीदेह" एक प्रकार की कस्टर्ड है, जो उबलते पानी, आटे, घी और शहद से बनाई जाती है। 5 मेरे शेख़ द्वारा हाशिये पर टिप्पणी। 6 वही। 7 मैं

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.97%** है।

अध्याय 11 के लिए 280 टिप्पणियाँ: ग्यारहवाँ। टिप्पणी 21. अध्याय 10 की टिप्पणी 1C देखें। टिप्पणी 25. जिस शब्द का अनुवाद मैं "मंडप" करता हूँ वह है '; कस्र।" इस शब्द का प्रयोग महल, हवेली और मंडप (या एक इमारत, या कमरों का समूह, जो अलग-थलग हो या केवल एक तरफ से दूसरी इमारत से जुड़ा हो; या एक ऊपरी कमरा, जो आम तौर पर अलग-थलग हो या लगभग अलग-थलग हो) के लिए किया जाता है: यह तुर्की शब्द "क्यिश्क" के समान है, जिसे हम आम तौर पर "किओस्क"

और "किओस्क" कहते हैं। इस रचना में "मंडप" शब्द का प्रयोग, सिवाय इसके कि जब इसका स्पष्ट अर्थ "एक बड़ा तम्बू" हो, ऊपर बताए गए दोनों अर्थों में समझा जा सकता है। टिप्पणी 26. अरबों में, सभ्य समाज में बिना दाढ़ी वाले युवक को पुरुषों के साथ भोजन करने के लिए राजी करना बहुत मुश्किल होता है, सिवाय उनके जो पद में उससे बहुत नीचे हों। यह उस शिक्षा का परिणाम है जो बड़ों और उच्च पदस्थ लोगों के प्रति स्नेहपूर्ण सम्मान पैदा करती है, यह मुस्लिम समाज से परिचित हर व्यक्ति को स्पष्ट है; क्योंकि वह अक्सर नौकर को अपने मालिक को पिता कहकर संबोधित करते हुए सुनेगा। कहानी में जिस पर मैं टिप्पणी कर रहा हूँ, उसमें अला-ए-दीन का एक सेवक उसका दत्तक पिता बन जाता है। अला-ए-दीन एक बार उसकी अवज्ञा करता है; लेकिन उसका ऐसा करना एक सामान्य नियम का अपवाद है। अरबों के बीच अपने निवास के दौरान, मुसलमानों द्वारा माता-पिता और अन्य बड़ों तथा स्वामियों के प्रति दिखाए जाने वाले सम्मान ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया। स्वामियों के प्रति सेवकों का यह सम्मान काफी हद तक उन उपहारों के कारण है जो उन्हें समय-समय पर स्वामियों से प्राप्त होते हैं। श्री उर्कहार्ट ने ठीक ही कहा है, "निश्चित, अपरिवर्तनीय और कार्रवाई योग्य वेतन के स्थान पर अनियमित पारिश्रमिक की आदत, सेवकों और स्वामियों के संबंध में मानसिक आदतों में एक ऐसा अंतर पैदा करती है, जिसे मुझे यकीन है कि वर्णन से नहीं समझा जा सकता है।" और फिर भी हर दिन आप यूरोपियों को देखते हैं, वे लोग जो इतने व्यापक दृष्टिकोण और तर्कशक्ति का दिखावा करते हैं, उपहार देने की आदत की निंदा करते हैं, यह न समझते हुए कि यह प्रथा उन दिलचस्प घरेलू संबंधों के संरक्षण की ओर ले जाती है जिन्हें मैं पूर्वी दुनिया द्वारा हमें दिया गया सबसे बड़ा राजनीतिक और नैतिक सबक मानता हूँ।"8 मुस्लिम नौकर आम तौर पर अपने मालिक के

प्रति यूरोपीय नौकर की तुलना में कहीं अधिक सम्मान रखता है, हालाँकि वह अक्सर कम ही दिखाता है। नोट 27. यहाँ, मूल पाठ में, एक घृणित चरित्र को शामिल किया गया है, जो कहानी को आगे बढ़ाने के लिए अनावश्यक है। नोट 28. "अक्कम" शब्द यहाँ उस व्यक्ति के लिए प्रयोग किया गया है जो ऊँटों और अन्य बोझ ढोने वाले जानवरों को बाँधता और लादता है। यह अक्सर उस व्यक्ति के लिए भी प्रयोग किया जाता है जो तंबू और सामान का प्रभारी होता है। नोट 29. इसका अर्थ है, यह मेरा समय नहीं है; क्योंकि मैं बूढ़ा हो गया हूँ।9 नोट 30. "मुकद्दम" का अर्थ है "दूसरों के आगे या ऊपर रखा गया व्यक्ति; एक वरिष्ठ, प्रमुख या निरीक्षक।" टिप्पणी 31. यहाँ जिस प्रकार के "आवरण" का उल्लेख किया गया है, वह संत की समाधि पर निर्मित आयताकार स्मारक पर लगाया जाता है; और यह मक्का स्थित काबेह के आवरण के समान है। 10 'अब्द-अल-कादिर अल-गीलानी एक बहुत प्रसिद्ध संत थे और दरवेशों के एक प्रसिद्ध संप्रदाय, कादिरीयेह के संस्थापक थे, जिनकी मृत्यु बगदाद में पलायन के वर्ष 561 (ई.स. 1165-6) में हुई थी। कहा जाता है कि शाह-बंदर ने उनके लिए एक आवरण खरीदा था क्योंकि उनका पुत्र बगदाद जा रहा था, जहाँ इस संत को दफनाया गया है; और इस भेंट को अपने साथ ले जाकर, वह संत की कृपा और मध्यस्थता प्राप्त करने की आशा कर सकता था। — काबेह के लिए एक नया आवरण हर साल काहिरा से तीर्थयात्रियों के विशाल कारवां के साथ भेजा जाता है: इसे उस शहर से जुलूस में ले जाया जाता है, और माना जाता है कि यह उनके कठिन और खतरनाक यात्रा के दौरान परिचारकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के मुख्य साधनों में से एक है। यात्रा.11— पाठक को सूचित करने की आवश्यकता नहीं है 8 पूर्व की आत्मा, खंड 2, पृष्ठ 402. n काबेह के आवरण के विवरण के लिए, 9 मेरे शेख द्वारा हाशिये पर टिप्पणी। और

तीर्थयात्री के प्रस्थान और वापसी के लिए, काहिरा में, आधुनिक मिस्रियों, खंड 2, अध्याय 11 और 12 देखें।— ईडी

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.71%** है।

अध्याय ग्यारहवें के लिए टिप्पणियाँ। 287 कि अरब देशों में लंबी यात्राओं पर सामान ढोने के लिए आम तौर पर ऊँटों का उपयोग किया जाता है; लेकिन जब ऊँटों की आवश्यकता नहीं होती है, तो धनी लोग खच्चरों को प्राथमिकता देते हैं। टिप्पणी 32. यहाँ जिस त्योहार का उल्लेख किया गया है, वह उन आवधिक त्योहारों के समान है जिनका वर्णन मैंने अध्याय iii की टिप्पणी 63 में किया है, और अध्याय viii की टिप्पणी 37 द्वारा आगे स्पष्ट किया गया है। टिप्पणी 33. "रफीकली" शियाई या शीई का मोहम्मदवादी संप्रदाय है; अली के अनुयायी; जिन्हें सुन्नी विधर्मी मानते हैं। सुन्नियों से उनका मुख्य मतभेद पहले तीन खलीफाओं, अबू-बक्र, उमर और उस्मान के अधिकार को नकारना है; वे दावा करते हैं कि पैगंबर के एकमात्र वैध उत्तराधिकारी अली और उनके वंशज हैं, जिन्हें वे अपना इमाम कहते हैं; बारहवें और अंतिम (अल-महदी) के बारे में उनका मानना है कि वे अभी भी जीवित हैं, हालांकि अदृश्य हैं। शिया धर्म हमारे युग की सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ में, सफी वंश के संस्थापक शाह इस्माइल के शासनकाल में फारस का राष्ट्रीय धर्म बन गया; और उस काल से (जिस काल से अला-ए-दीन अबू-श-शमत की कहानी का चरित्र सबसे अधिक मेल खाता प्रतीत होता है), सुन्नी राजकुमारों और गवर्नरों के पड़ोसी क्षेत्रों पर राफिदियों का हमेशा से ही लालच रहा है और उन्होंने अक्सर उन पर आक्रमण किया है। सुल्तान सलीम के नेतृत्व में उस्मानी सुन्नियों और उपर्युक्त शाह के नेतृत्व में फारसी शियाओं के बीच पहले युद्ध के कारण पूर्व सम्राट ने सीरिया और

मिस्र पर विजय प्राप्त की; क्योंकि यद्यपि इन देशों के निवासी सुन्नी थे, वे शाह इस्माइल के साथ गठबंधन में थे। टिप्पणी 34. सक्का जलवाहक या जल आपूर्ति का प्रभारी व्यक्ति होता है। टिप्पणी 35. "हे तेरा आशीर्वाद!" अलौकिक सहायता के लिए एक प्रार्थना है, जिसे आमतौर पर किसी संत के संदर्भ में "आशीर्वाद" शब्द से दर्शाया जाता है। आगे उल्लिखित हाथ को सैय्यदी अब्द-अल-कादिर का हाथ या उनके द्वारा किए गए किसी चमत्कार का परिणाम समझा जाना चाहिए। टिप्पणी 36. यह प्रार्थना सैय्यदी अब्द-अल-कादिर को नहीं, बल्कि ईश्वर को संबोधित है। टिप्पणी 37. सैय्यदेह नेफीसेह, जो इमाम अल-हसन की परपोती थीं, एक बहुत प्रसिद्ध संत थीं, और उनके द्वारा किए गए कई चमत्कारों का वर्णन मिलता है। उनकी समाधि, जिसका बहुत सम्मान किया जाता है, काहिरा के दक्षिणी उपनगर में एक मस्जिद में है। [उनकी मृत्यु पलायन के वर्ष 208 में हुई थी। - संपादक] टिप्पणी 38. इसका अर्थ है, तू हमेशा तलाक की कसम खाती थी, मानो वह तेरा मुसल्याफ (या उसकी प्रति) हो। कुरान) जिसमें तुम निरंतर पढ़ते थे।12 टिप्पणी 39. "अल-ऊदीयेह" शब्द "ऊद" से लिया गया है, जिसका अर्थ "लकड़ी" और विशेष रूप से "अगरबत्ती की लकड़ी" और "वीणा" आदि होता है। चूंकि ज़ुबैदेह वीणा बजाने में बहुत कुशल थी, इसलिए मुझे लगता है कि यहां "अल-ऊदीयेह" का अर्थ "वीणा वादक" है। मेरे शेख ने हाशिये पर टिप्पणी की है, "शायद उसे ऐसा इसलिए कहा जाता था क्योंकि उसकी गंध अगरबत्ती की तरह मीठी थी; " लेकिन मुझे हजार और एक रातों के ब्रेस्लाउ संस्करण (उदाहरण के लिए, खंड 7, पृष्ठ 205) में "ऊदीयेह" शब्द का प्रयोग "महिला वीणा वादक" के लिए मिलता है, जबकि अधिक उपयुक्त शब्द "ओव्वादेह" है। टिप्पणी 40. मैंने पहले ही उल्लेख किया है कि जब कोई मुसलमान अपनी पत्नी को तीन बार तलाक दे देता है, या एक ही वाक्य में तीन बार तलाक दे

देता है, तो वह उसे दोबारा नहीं ले सकता, सिवाय उसकी अपनी सहमति और नए अनुबंध के, और किसी अन्य पुरुष द्वारा उसके साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करने और उसे तलाक देने के बाद। जब किसी पुरुष को यह कार्य करने के लिए नियुक्त किया जाता है, तो उसे "मुस्तहल" या "मुस्तहिल" या "मोहल्लील" कहा जाता है: लेकिन इस तरह की कार्यवाही को सभी सम्मानित व्यक्तियों द्वारा अपमानजनक माना जाता है, और यह स्पष्ट रूप से इसके विपरीत है। (3 हाशिये पर टिप्पणी: रे शेख)।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.00%** है।

अध्याय ग्यारह के लिए 288 टिप्पणियाँ। यह कानून की भावना के अनुरूप है, जिसने तीसरे या तिहरे तलाक के इस परिणाम को पति पर अंकुश लगाने और पत्नी को रियायत देने के लिए निर्धारित किया है। चूंकि मैं इस विषय पर यहाँ विस्तार से चर्चा नहीं करना चाहता, यदि किसी पाठक को इसके बारे में और जानकारी चाहिए, तो मैं उनसे आधुनिक मिस्रियों पर मेरे कार्य, खंड 1, अध्याय 6 का संदर्भ देने का अनुरोध करता हूँ। मैंने वहाँ एक ऐसी योजना का उल्लेख किया है जो कभी-कभी मुस्तहल को हराने के लिए अपनाई जाती है यदि वह तलाक देने से इनकार करता है। पत्नी भी अपने पूर्व पति के साथ पुनर्मिलन के लिए अपनी सहमति रोक सकती है, जब तक कि वह बालिग न हो, जैसा कि हमें जुबैदेह के मामले में समझना चाहिए। एक बालिग लड़की का विवाह उसके पिता या अन्य वैध अभिभावक द्वारा किया जा सकता है, जिसे वह चाहे। टिप्पणी 41. इस योजना का यह निर्भीक स्वीकारोक्ति कानून के विरुद्ध है; लेकिन निःसंदेह ऐसे कदी भी होंगे जो इस तरह के प्रस्ताव को सुनेंगे। दस हजार सोने के सिक्के जो 'अला-ए-दीन को तलाक न देने की स्थिति में देने थे, हमें दहेज के उस हिस्से के रूप में समझना

चाहिए जो आमतौर पर विवाह अनुबंध संपन्न होने से पहले दिया जाता है; शेष राशि केवल तलाक के समय या पति की मृत्यु के समय छोड़ी गई संपत्ति से ही दी जाती है। लेकिन यदि 'अला-ए-दीन ने अपनी पत्नी को तय समय पर तलाक दे दिया, तो उनसे कोई दहेज नहीं मांगा जाएगा। टिप्पणी 42. पैगंबर ने एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में बीमारियों के संचरण से इनकार किया; लेकिन उन्होंने कहा, "हाथीपांव से पीड़ित व्यक्ति से वैसे ही भागो जैसे बाघ से भागते हो।" फिर भी उन्होंने स्वयं उस रोग से पीड़ित व्यक्ति का हाथ पकड़ा और उसे उस थाली में डाल दिया जिसमें से वह खा रहे थे, और कहा, "मैं ईश्वर पर निर्भर हूँ।" 13 — इस विषय पर, अध्याय 1 के नोट 5 देखें। नोट 43. यह कुरान का छत्तीसवाँ अध्याय है। यह वह अध्याय है जिसका पाठ बहुत बार किया जाता है। नोट 44. "दाऊद का परिवार" से तात्पर्य स्वयं दाऊद (या डेविड) से है, जो आम बोलचाल की भाषा के अनुरूप है।14 डेविड द्वारा भजनों के पाठ पर, अध्याय 1 के नोट 18 देखें। नोट 45. मेरे शेख के अनुसार, यह अभिव्यक्ति कलाई के मध्य में नसों की उपस्थिति को संदर्भित करती है, जो इसे रीढ़ की हड्डी की तरह पीठ को विभाजित करती है। नोट 46. कौवे को अलगाव का अपशगुन माना जाता है। नोट 47. मूल में, "नुस्फ" फद्दाह।" इसी सिक्के को साधारण रूप से "नुस्फ" और बोलचाल की भाषा में "नुस" भी कहा जाता है। अध्याय iii के नोट 17 देखें। नोट 48. कदी की अदालत के "शाहिद" वे अधिकारी होते हैं जिनका काम फैसले के लिए प्रस्तुत किए जाने वाले मामलों के बयानों को सुनना और लिखना होता है। यही शब्द गवाहों के लिए भी प्रयोग किया जाता है। नोट 49. "एफ़ेंडी" एक तुर्की उपाधि है, जो न्यायाधीशों, धर्मगुरुओं, विद्वानों, लेखकों और अन्य लोगों को दी जाती है। यहाँ इसे एक अरब शहर के कदी के लिए अनुचित रूप से प्रयोग किया गया है, उस

समय जब वह शहर तुर्की शासन के अधीन नहीं हुआ था। नोट 50. मूल में, ऐसा कहा जाता है कि सुरों ने पुकारा, हे दाऊद! - ऊपर नोट 44 देखें। नोट 51. अरब संगीतकारों की यह आम प्रथा है कि वे किसी रचना को धीरे-धीरे शुरू करते हैं, और बाद में, मानो उत्तेजित होकर, तेज़ गति से बजाते हैं। जिस शब्द का मैंने अनुवाद "अधिक तीव्र भाग" किया है (मेरे द्वारा दी गई व्याख्या के अनुसार), वह है... शेख) का अर्थ "ट्रिलिंग" या "कांपना" भी होता है। नोट 52. "गीत" शब्द से मेरा तात्पर्य अरबी शब्द "मुवेशशाहत" से है, जो "मुवेशशाह" का बहुवचन है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस शब्द का प्रयोग फारसियों द्वारा एक एक्रोस्टिक के लिए किया जाता है; लेकिन मैंने इस शीर्षक वाली कई अरबी कविताएँ सुनी हैं और मेरे पास उनकी प्रतियाँ भी हैं, जिनमें से कोई भी "मिशक्रफ्त अल-मा*इबीह, खंड ii, पृष्ठ 331 और आगे i* मेरे शेख द्वारा हाशिये पर टिप्पणी।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.29%** है।

अध्याय ग्यारह के लिए टिप्पणियाँ। 2S!) 1 जो इस प्रकार की है: ये छंदों में लिखी गई कविताएँ हैं; एक ही कविता के सभी छंदों की अंतिम तुकबंदी, या अंतिम दो या दो से अधिक तुकबंदियाँ, एक समान होती हैं। कई मामलों में, एक ही कविता के सभी छंद दो जोड़ी अर्ध-छंदों के साथ समाप्त होते हैं जिनमें बारी-बारी से तुकबंदी होती है; प्रत्येक छंद के पूर्ववर्ती अर्ध-छंद भी बारी-बारी से तुकबंदी करते हैं, लेकिन अलग-अलग छंदों में इनकी तुकबंदी भिन्न होती है। इस प्रकार की कविताएँ सामान्यतः गाई जाती हैं। टिप्पणी 53. अबू-नुवास एक प्रसिद्ध कवि और बुद्धिजीवी थे, जो हारून-एर-रशीद के प्रिय थे। उन्हें "अबू-नुवास" उपनाम इसलिए मिला क्योंकि उनके दो लंबे बाल उनके कंधों पर लटके रहते थे। उनका

निधन (अबू-अल-फिदा के अनुसार) उड़ान वर्ष 195 में हुआ, उस समय उनकी आयु उनसठ वर्ष थी। टिप्पणी 54. ब्रेस्लाउ संस्करण में, यहाँ और जहाँ आगे दहेज का उल्लेख है, दोनों जगह यही लिखा है। काहिरा संस्करण में, दोनों ही मामलों में पचास हज़ार लिखा है। टिप्पणी 55. "सेलीन" (जिसे आम तौर पर यूरोपीय लेखक "सेलिम" लिखते हैं) का अर्थ है "स्वस्थ", "सुरक्षित", "संपूर्ण", आदि। इस पत्र की अनुपयुक्त शैली जानबूझकर अपनाई गई प्रतीत होती है। टिप्पणी 56. जब तक उसने दहेज का वह हिस्सा नहीं चुकाया था जो उसने तलाक से इनकार करने की स्थिति में देने का वादा किया था, तब तक उसका विवाह वैध नहीं था। टिप्पणी 57. काहिरा में अक्सर ऐसा होता है (जैसा कि मेरे शेख ने हाशिये पर टिप्पणी में उल्लेख किया है), कि जब कोई व्यक्ति यात्रा से लौटता है, तो उसके मित्र उससे कहते हैं, "अपनी सुरक्षा के लिए हमें दावत दें" (हलावेत एस-सेलामेह): ऐसा ही तब भी होता है जब कोई व्यक्ति बीमारी से ठीक हो जाता है, और अन्य अवसरों पर भी। मुझे वहाँ अक्सर इस प्रथा का पालन करने के लिए कहा जाता था। टिप्पणी 58. इस श्रृंखला की पचासवीं टिप्पणी में मैंने जो कहा है, वह इस अंश पर भी लागू होता है। टिप्पणी 59. "तेरा सिर दीर्घायु हो (या शाब्दिक रूप से, ऐसे व्यक्ति के संबंध में, या उसकी तुलना में, तेरा सिर [दीर्घायु] हो!" किसी व्यक्ति की मृत्यु की घोषणा करते समय प्रयुक्त होने वाला एक सामान्य मुहावरा है, क्योंकि किसी भी बुरी खबर को संप्रेषित करते समय, अरबों में संबोधित व्यक्ति को किसी प्रकार के अभिवादन से संबोधित करना एक सामान्य रिवाज है।14 इसका तात्पर्य यह है कि यहाँ उल्लिखित व्यक्ति खलीफा के नियुक्त शुभ मित्रों में से एक था। मैं अरबी शब्द "नीदीम"* के लिए "शुभ मित्र" शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ, जिसका सही अर्थ "एक प्याला-साथी" है, लेकिन इसका प्रयोग अधिक व्यापक

अर्थ में किया जाता है, जो ऐसे व्यक्ति पर लागू होता है जो सौहार्दपूर्ण या मनोरंजन के अवसरों पर नियमित सहयोगी होता है; सामान्यतः एक कवि, बुद्धिमान व्यक्ति, संगीतकार, या कोई अन्य व्यक्ति जो एक मनोरंजक साथी या पसंदीदा होता है। टिप्पणी 60. "रईस एस-सित्तीन" का अर्थ है "साठ का प्रमुख"; और मेरा मानना है कि यहाँ इसे राज्य के किसी महान अधिकारी की उपाधि के रूप में अनुचित रूप से प्रयोग किया गया है। ब्रेस्लाउ संस्करण में, इसके स्थान पर, हमें एक ऐसी उपाधि मिलती है जो मुझे और भी अनुचित लगती है, अर्थात् "बाश एस-सित्तीन सुल्तान" या "साठ सुल्तानों का प्रमुख"; और साठ सुल्तानों के महलों का उल्लेख बाद में किया गया है। "रईस एस-सित्तीन" का अर्थ "अमीर अशाराह," "अमीर मियाह," आदि के समान प्रतीत होता है, जो हमें मेमलुक सुल्तानों के इतिहास में मिलते हैं, जिसका अर्थ है "दस मेमलुकों का अमीर," "सौ मेमलुकों का अमीर" आदि; भाड़े के सैनिकों के प्रमुख को आमतौर पर "मुकद्दम" कहा जाता है। 16 नोट 61. रूमाल हिलाना किसी के विमोचन का एक सामान्य संकेत है। नोट 62. कवि अर्थी को "घुमावदार" (शाब्दिक रूप से "कूबड़ वाला") कहता है, जो इस खंड में पृष्ठ 213 के निचले भाग में एक टिप्पणी देखें। 15 इस विषय पर, इस खंड में पृष्ठ 213 के नीचे एक टिप्पणी देखें। • क्वाट्रेमेरे, हिस्टोइरे डेस सुल्तांस माम लुक्स, खंड 1, पृष्ठ 173 देखें। 2 ? II.

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.95%** है।

अध्याय ग्यारह के लिए 290 टिप्पणियाँ। अरबज [अर्थात बडडॉसेस] की अर्थी के लिए; क्योंकि वे मृतकों को दो खंभों के बीच बुनी रस्सियों पर ले जाते थे, जिससे शव उनके भीतर दबा रहता था। >7 टिप्पणी 63. खलीफा द्वारा अला-ए-दीन का स्वागत करने के लिए यह इशारा करना

असाधारण विनम्रता का प्रमाण था। टिप्पणी 64. अध्याय 7 की टिप्पणी 21 देखें। टिप्पणी 65. यहाँ जिस पालकी का उल्लेख किया गया है, वह तख्त-रवान है, जिसका वर्णन अध्याय 8 की टिप्पणी 8 में किया गया है। टिप्पणी 66. इससे हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि जब अला-ए-दीन ने खलीफा के महल में कूट-अल-कुलूब को वीणा बजाते सुना, तो वह सामान्य रिवाज के अनुसार एक पर्दे या जालीदार स्क्रीन से उनसे छिपी हुई थी। टिप्पणी 67. यहाँ एक उचित नाम के रूप में प्रयुक्त "खातून" एक फारसी और तुर्की शब्द है जिसका अर्थ "एक महिला" और "एक गृहिणी" है। टिप्पणी 68. "हबज़लाम" और "बज़ाज़ाह" हैं, विश्वास, अर्थहीन शब्द; लेकिन उनकी भद्दी ध्वनि के कारण चुने गए, मानो किसी असभ्य व्यक्ति के लिए उपयुक्त नाम हों। टिप्पणी 69. यह एक लाक्षणिक अभिव्यक्ति है, जो खतरे में बेतहाशा कूदने का संकेत देती है। 18 टिप्पणी 70. "यास्मीन" या "यासिमीन" का अर्थ "चमेली" है। टिप्पणी 71. इसकी व्याख्या ठीक पहले वाली टिप्पणी में की गई है। टिप्पणी 72. "वह आँख से काजल चुरा लेता था" यह वाक्यांश अक्सर चोरी में अद्भुत निपुणता को दर्शाने के लिए प्रयोग किया जाता है। — अध्याय 2 की टिप्पणी 34 देखें। टिप्पणी 73. अध्याय 6 की टिप्पणी 39 देखें। टिप्पणी 74. तलाक की शपथ पर, अध्याय 8 की टिप्पणी 48, इस श्रृंखला की टिप्पणी 40 और अध्याय 4 की टिप्पणी 39 देखें। टिप्पणी 75. यह खलीफा की शपथ को पूरा करने के लिए किया गया था। अरब अक्सर इस शपथ के विभिन्न रूपों का सहारा लेते हैं। इसी तरह के मामलों में। नोट 76. बेन्ज के संबंध में, अध्याय 2 के नोट 46 देखें। - प्रसिद्ध योन हैमर की निम्नलिखित टिप्पणियाँ, जो बेन्ज को हायोस्यानरस (या हेनबेन) मानते हैं, यहाँ जोड़ी जानी चाहिए थीं। "'बेंडज', जिसका कॉप्टिक में बहुवचन 'निबेंडज' है, निस्संदेह वही पौधा है जो 'नेपेंथे' है, जिसने अब तक

होमर के टीकाकारों को बहुत उलझन में डाला है।" हेलेन स्पष्ट रूप से नेपेंथे को मिस्र से लाई थी, और बेंडज को वहाँ अभी भी उन सभी अद्भुत गुणों से युक्त माना जाता है जिनका होमर ने इसे श्रेय दिया है।" 19 नोट 77. "दुरकाह" पक्के फर्श का दबा हुआ भाग है। अध्याय iii के नोट 12 देखें। नोट 78. मुझे याद नहीं है कि मैंने इस प्रथा का उल्लेख किसी अन्य अरबी कृति में पाया हो; लेकिन श्री सलामे, जिनसे मैंने इस विषय पर परामर्श किया है, ने मुझे तुर्कों के बीच इसी तरह की प्रथा के बारे में बताया है। अविश्वासियों से वसूले गए कर के बिल कभी-कभी लाल कागज के होते थे, और इनके जारी होने से करदाताओं में दहशत फैल जाती थी; लाल रंग क्रोध का प्रतीक है, जैसे सफेद और काला (या नीला) क्रमशः खुशी और शोक के रंग हैं। लेकिन अरबों में, लाल रंग हमेशा क्रोध का सूचक नहीं होता था; 3- मेरे शेख द्वारा हाशिये पर टिप्पणी। « Trcbuticn, Contcs In6"dits des Millc ct une 18 /*»»• ज़ुइट्स, खंड. i. पृ. 12, टिप्पणी.

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.09%** है।

अध्याय ग्यारह के लिए टिप्पणियाँ। 291 अरब लोग दावतों में इस रंग के, पीले रंग के, और लाल रंग के कपड़े पहनते थे। हालाँकि, उनके राजकुमार हमारे लेखक द्वारा वर्णित आकर्षक और नाटकीय दृश्य प्रदर्शित करने के आदी रहे होंगे; जो, मेरा मानना है, किसी भी शब्द से अधिक प्रभावी रहा होगा। टिप्पणी 79. काहिरा संस्करण में इस छड़ी या डंडे के वर्णन में एक त्रुटि है: इसलिए मैं ब्रेस्लाउ के संस्करण का अनुसरण करता हूँ। मेरा मानना है कि इस प्रकार की छड़ी का उपयोग यह विश्वास दिलाने के उद्देश्य से किया जाता था कि इसमें कोई जादुई गुण है। टिप्पणी 80. मैंने "उपनाम" शब्द जोड़ा है, क्योंकि बाद में कहा जाता है कि खलीफा ने

अला-ए-दीन को "विश्वसनीय और वफादार" उपनाम दिया था। टिप्पणी 81. जिन शब्दों का मैंने अनुवाद किया है, वे हैं "अल्लाह की इच्छा अद्भुत है!" (माशाअल्लाह!) का प्रयोग कभी-कभी शाब्दिक रूप से "ईश्वर की इच्छा के अनुसार" के लिए किया जाता है, जबकि अन्य मामलों में, जैसा कि इस उदाहरण में है, "ईश्वर की इच्छा के अनुसार!" "यह घटना कितनी अद्भुत है जो योएल ने बिल्ली के लिए लाई है।" टिप्पणी 82. "एज़-ज़ीबक" एक उपनाम है, जिसका अर्थ है "पारा।" काहिरा में अली एज़-ज़ीबक द्वारा किए गए असाधारण कारनामों की कई पारंपरिक कहानियां प्रचलित हैं। मेरा मानना है कि उस शहर में वास्तव में इसी नाम का एक प्रसिद्ध चोर था; लेकिन मुझे उसके बारे में कोई प्रामाणिक रिकॉर्ड नहीं मिला है जिसमें उसके जीवनकाल का उल्लेख हो। टिप्पणी 83. "मुसलमानों में यह सबसे प्रचलित मत है कि इब्राहिम ने जिस पुत्र की बलि दी थी वह इस्माइल था, न कि इसहाक: उस समय इस्माइल ही उसका एकमात्र पुत्र था; क्योंकि इसहाक के जन्म का वादा कुरान के निचले भाग में इस घटना के बाद के समय में उल्लेखित है। वे अपने पैगंबर की गवाही का भी हवाला देते हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्होंने कहा था, 'मैं उन दो का पुत्र हूँ जिनकी बलि दी गई थी;' जिसका अर्थ है उनके महान पूर्वज, इस्माइल, और स्वयं उनके, अब्दुल्ला: अब्द-अल-मुत्तलिब 21 ने मन्नत मांगी थी कि अगर अल्लाह उन्हें ज़मज़म कुआँ ढूंढने और खोलने की इजाज़त दे और उन्हें दस बेटे दे, तो वे उनमें से एक की कुर्बानी देंगे; इसी तरह, जब उनकी दोनों इच्छाएँ पूरी हो गईं, तो उन्होंने अपने बेटों पर पर्ची डाली, और पर्ची अबेल-अल्लाह के नाम निकली, तो उन्होंने सौ ऊँटों की बलि देकर उन्हें छुड़ाया, जो सुन्नत में एक आदमी के खून की कीमत तय की गई थी। ^ टिप्पणी 84. इस अभिव्यक्ति को लाक्षणिक रूप से समझा जाना चाहिए; क्योंकि शाब्दिक

अर्थ में, अलेक्जेंड्रिया से ज़्यादा अनुपयुक्त कोई शहर नहीं है, जो समुद्र और रेगिस्तान से घिरा हुआ है। टिप्पणी 85. यहाँ यह उल्लेख करना उचित है कि हज़ार और एक रातों की अन्य कहानियों में अहमद एड-देनेफ को एक दुष्ट चरित्र बताया गया है; और हसन शूमन भी ऐसा ही है। टिप्पणी 86. मेरा मानना है कि अब एक छोटा सा गाँव उस शहर की जगह पर बसा हुआ है। आयस (माना जाता है कि यह प्राचीन ./EgaV का है), इस्कंदरून की खाड़ी के तट पर। टिप्पणी 87. सिक्के का यहाँ उल्लेख नहीं है, और मैं इस कमी को पूरा करने का प्रयास नहीं कर सकता, क्योंकि संपत्ति का वर्णन बहुत अस्पष्ट है। टिप्पणी 88. अरबी शब्द "सुकाती" का अनुवाद मैं "सेकंड-हैंड सामान का व्यापारी" करता हूँ। मेरे शेख ने एक हाशिये पर टिप्पणी में कहा है कि इस शब्द का यहाँ अनुचित प्रयोग किया गया है; और यह उस व्यक्ति को दर्शाता है जो जानवरों के लट्टू और पैर आदि बेचता है। सामान्यतः ऐसा ही होता है; लेकिन मिस्र में इसका एक अन्य प्रयोग है; और यह विलक्षण है कि मैं अध्याय iii के 20 खंड Xote 22 में दूसरे अक्षर पर ध्यान केंद्रित कर रहा हूँ, हालाँकि इसका स्वर छोटा है; और 21 I.'y Sale, और हमारे अधिकांश अन्य प्राच्यविदों ने शायद इसी कारण से यह गलती की होगी। इस नाम को गलती से "अब्द'अलमो- 2S Sale की श्लोक 101 पर टिप्पणी" लिखा गया है। तल्लेब का 37वाँ अध्याय।" "मुतलिब" में मुख्य ज़ोर जुर-आन पर है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.89%** है।

2!Ji> अध्याय ग्यारह के लिए उद्धरण। मुझे उस अर्थ से परिचित होना चाहिए जिसमें इसका प्रयोग वहाँ किया गया है, और यह कि उस देश के एक विद्वान निवासी को इससे परिचित नहीं होना चाहिए। पीतल या कांसे

की पुरानी कारीगरी वाली छिड़काव की बोतल और सुगंधित पात्र के बारे में पूछताछ करने पर, मुझे बताया गया कि मुझे उन्हें एक सुकाती से लेना चाहिए; और उस नाम के एक व्यक्ति के पास निर्देशित किए जाने पर, मैंने पाया कि वह कई प्रकार की पुरानी और क्षतिग्रस्त वस्तुओं का व्यापार करता है, मुख्य रूप से धातु की, और ज्यादातर पुरानी फर्नीचर आदि की बिक्री से खरीदी गई। प्रोफेसर हैबिच्ट, 'हजार और एक रात' के ब्रेस्लाउ संस्करण के सातवें खंड में, शब्दावली के पृष्ठ 5 पर, इस शब्द की व्याख्या इसी तरह करते हैं। टिप्पणी 89. बगदाद से अलेक्जेंड्रिया जाने और वापस आने के लिए आवश्यक अवधि के दौरान शव का लटका रहना बहुत ही असंभव है। फांसी दिए गए व्यक्ति के अवशेषों को आम तौर पर तीन दिनों तक खुला छोड़ दिया जाता है, और फिर दफनाया जाता है। टिप्पणी 90. "दो शेख़ों" से तात्पर्य अबू-बक्र और उमर से है, जो पहले दो खलीफ़ा थे। कहा जाता है कि कई राफ़िदी या शिया, पहले दो खलीफ़ाओं के नाम, या केवल उमर का नाम, जिनसे वे विशेष रूप से घृणा करते हैं, अपने जूतों के तलवों और एड़ियों पर लिखते हैं, ताकि उन्हें बार-बार रौंदा जा सके, जो उनके प्रति तिरस्कार का प्रतीक है। ऊपर टिप्पणी 33 देखें। टिप्पणी 91. "एशियाई" एक तुर्की शब्द है, जिसका अर्थ है "शेर"। टिप्पणी 92. इससे कुछ पाठकों को गलत धारणा हो सकती है; क्योंकि राफ़िली स्वयं को मुसलमान कहते हैं, हालाँकि सुन्नी अक्सर उन्हें मुसलमान मानने से इनकार करते हैं। यह अंश मुझे बर्कहार्ट द्वारा वर्णित एक किस्से की याद दिलाता है। एक बेदावी (मुसलमान) वहाबियों के साथ युद्ध के दौरान मोहम्मद अली के सामने उपस्थित हुआ, उनकी दाढ़ी चूमी और बोला, "मैंने मुसलमानों का धर्म त्याग दिया है" (या "सच्चे विश्वासियों," जैसा कि वहाबी स्वयं को कहते हैं); "मैंने विधर्मियों का धर्म अपना लिया है" (वहाबी उन सभी मुसलमानों को यही नाम देते हैं जो

उनके अपने पंथ के नहीं हैं); "मैंने मोहम्मद अली का धर्म अपना लिया है।" इस अनजाने में हुई गलती पर सब हंस पड़े; और पाशा ने अपने दुभाषिए के माध्यम से उत्तर दिया (क्योंकि वह अरबी को पूरी तरह से नहीं समझता था), "मुझे आशा है कि तुम हमेशा एक कट्टर विधर्मी रहोगे।" 3 नोट 93. उसने मनके को रगड़कर यह देखने की कोशिश की कि क्या यह कोई ताबीज है, और क्या इस प्रक्रिया से किसी आज्ञाकारी जिन्न की उपस्थिति सुनिश्चित होगी; क्योंकि इस प्रकार से ताबीज के गुणों का सामान्यतः परीक्षण किया जाता है। नोट 94. अर्थात्, संभवतः यह प्राकृतिक रूप से मिश्रित या चिह्नित पत्थर है। टिप्पणी 95. "कॉन्सुल" (अरबों द्वारा "कुंसुल" उच्चारित) मिस्र में अक्सर दी जाने वाली एक उपाधि है, न केवल उन लोगों को जिनके लिए यह उचित रूप से योग्य है, बल्कि किसी भी धनी फ्रैंक को भी। टिप्पणी 96. अरबी वाक्यांश का शाब्दिक अर्थ है "ईश्वर द्वार खोले" या "सहायता करे"। यह आजकल अरब दुकानदारों द्वारा आमतौर पर प्रयोग किया जाता है। टिप्पणी 97. यह घटना विशेष ध्यान देने योग्य है। 'अला-एद-दीन द्वारा किए गए कार्य का वर्णन यहाँ किया गया है, जो अरब दुकानदारों के बीच बहुत आम है और उनकी सामान्य सद्भावना का प्रमाण है। जब कोई अरब दुकानदार उसी दिन वापस आने के इरादे से अपनी दुकान छोड़ता है, तो वह आमतौर पर सामने एक जाल लटका देता है। [अक्सर, वह अपना सामान दुकान पर आने वाले किसी आकस्मिक ग्राहक के भरोसे छोड़ देता है। मुझे कई बार इस तरह कीमती सामान के बीच बैठा छोड़ दिया गया है, जबकि उसका मालिक शायद सामूहिक शुक्रवार की नमाज के लिए या किसी ऐसे काम के लिए चला गया हो जिसमें काफी समय लगता हो।] एक बार एक मनीचेंजर ने मुझे अपने पैसे की देखभाल का जिम्मा सौंपा, जो शायद अनगिनत था, "केट्स ऑन द बेदुइन्स ऑड वाहबीज़," 8vo. संस्करण.

खंड ii. पृ. 284-285.

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.73%** है।

अध्याय ग्यारह के लिए टिप्पणियाँ। 293 -. मेरी पहुँच के भीतर एक छोटी सी पेटी के खुले दराजों में रखा हुआ था। मुझे याद नहीं था कि मैंने उसे पहले कभी देखा था: निश्चित रूप से मैं उसकी दुकान में कभी नहीं बैठा था। - संपादक] टिप्पणी 98. यहाँ जिन डंडों का उल्लेख किया गया है, वे वे हैं जिनका उपयोग किसी जहाज को किनारे से या किसी ऐसे स्थान से, जिस पर वह चल रहा हो, धकेलने, उथले पानी में उसे आगे बढ़ाने और गहराई मापने में किया जाता है। टिप्पणी 99. अरबी शब्द "बाब क'यतून," जिसका अनुवाद मैं "समुद्र पर खुलने वाला द्वार" करता हूँ, मेरे शेख ने समझाया है कि यह नदी पर खुलने वाले द्वार के लिए प्रयोग किया जाता है, जैसे काहिरा में नहर पर खुलने वाले द्वार। टिप्पणी 100. हजार और एक रातों में कई स्थानों पर तोपों का उल्लेख है; लेकिन शायद नकल करने वालों द्वारा। टिप्पणी 101. अध्याय 5 की टिप्पणी 10 देखें। टिप्पणी 102. "मिनीनेह" एक प्रकार का छोटा बिस्कुट या क्रैकनेल है जो थोड़े से घी के साथ बारीक गेहूं के आटे से बनाया जाता है। 24 टिप्पणी 103. "वेबेह" अर्देब्ब का छठा भाग है; इसलिए यह लगभग छह अंग्रेजी गैलन और दो-तिहाई के बराबर है। टिप्पणी 104. "होस्न-मरियम" (शाब्दिक रूप से "मरियम की सुंदरता") का प्रयोग यहाँ "मरियम के समान सुंदर" यानी "कुंवारी मरियम के समान" के लिए किया गया है। टिप्पणी 105. "योहन्ना" अरबी ईसाई नाम है जो "जॉन" के समान है: इसका मुस्लिम नाम "याह्या" है। टिप्पणी 100. "ऑन" का प्रयोग "मरिद"25 के पर्यायवाची के रूप में किया गया है, एक ऐसा नाम जिसे पहले ही सबसे शक्तिशाली वर्ग के दुष्ट जिन्न के लिए प्रयोग किया जाता

है। टिप्पणी 107. मूल पाठ में, "सुरेतु" शब्द का शाब्दिक अर्थ है "मैं क्षुब्ध हो गया था", विशेष रूप से "मिर्गी के दौरे से"। मेरे शेख इसकी व्याख्या "इल्तेबेस्तु बि-1-जिन्नीयी" या "जिनी ने मुझ पर कब्ज़ा कर लिया था" शब्दों से करते हैं; अरबों में आम तौर पर यह मान्यता प्रचलित है कि मिर्गी इसी कारण से होती है। इस बीमारी से ग्रस्त व्यक्ति को वे "मेलबूस" या "जिनके वश में" कहते हैं। टिप्पणी 108. अध्याय 1 की टिप्पणी 5 के अंतिम अनुच्छेद को देखें। टिप्पणी 109. मैंने पहले भी उल्लेख किया है कि हमें यह मानना होगा कि जब अला-ए-दीन ने ज़ुबैदेह से विवाह किया था तब वह नाबालिग थी; इसलिए, उनके साथ उसके पुनर्मिलन के समय, हमें यह निष्कर्ष निकालने की आवश्यकता नहीं है कि उसकी उम्र तीस वर्ष से अधिक थी: क्योंकि कुछ अरब लड़कियों का विवाह दस वर्ष की आयु में हो जाता है; और हम कल्पना कर सकते हैं कि ज़ुबैदेह की दूसरी शादी के समय उनकी उम्र ग्यारह या बारह वर्ष रही होगी; फिर भी शारीरिक रूप से वे लगभग एक महिला ही थीं। टिप्पणी 110. एक मुस्लिम का ईसाई महिला से विवाह पूर्णतः निषिद्ध नहीं है; परन्तु सामान्यतः इसे अस्वीकार किया जाता है। टिप्पणी 111. मिस्र में "पर्स" कहलाने वाली राशि पाँच सौ मिस्री पियास्टर है, जो अब लगभग पाँच पाउंड स्टर्लिंग के बराबर है। टिप्पणी 112. "फुरकान" कुरान का एक नाम है, और कभी-कभी "धर्मग्रंथों की अन्य पुस्तकों" के लिए भी प्रयोग किया जाता है, जो क्रिया 'फराका' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'विभाजित करना' या 'भेद करना'; जैसा कि मुस्लिम विद्वान कहते हैं, ऐसा इसलिए नहीं है कि उन पुस्तकों को अध्यायों या खंडों में विभाजित किया गया है, या अच्छे और बुरे में अंतर करने के लिए; बल्कि उसी धारणा के कारण है कि यहूदी एक ही मूल से व्युत्पन्न शब्द 'पेरेक' या 'पिरका' का प्रयोग किसी खंड को दर्शाने के लिए करते हैं। * मेरे शेख

द्वारा हाशिये पर टिप्पणी। वही। प्रस्तावना की टिप्पणी 21 भी देखें।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.35%** है।

अध्याय ग्यारह के लिए 2आरजेआई नोट्स। धर्मग्रंथ का अंश।" 20 — मुसलमानों का मानना है कि पेंटेट्यूक, भजन संहिता और सुसमाचार की जो प्रतियाँ अब मौजूद हैं, वे दूषित हो चुकी हैं, और उनमें वे अंश जिनमें मोहम्मद के बारे में भविष्यवाणी की गई है, बदल दिए गए हैं या हटा दिए गए हैं: फिर भी वे सेंट जॉन के सुसमाचार की आधुनिक प्रतियों में उनकी भविष्यवाणी खोजने का दावा करते हैं, "पैराक्लीट" के स्थान पर "पेरिक्लीट" पढ़ते हैं, जिसका अर्थ "मोहम्मद" और "अहमद" दोनों के समान है, ये दोनों ही अरब पैगंबर के नाम हैं; इन दोनों नामों में से पहला "अत्यधिक प्रशंसित" का अर्थ है; दूसरा, "अधिक या सबसे प्रशंसनीय।" — यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि मोहम्मद का नाम, जिसका उच्चारण यूरोपीय लोग आमतौर पर अंतिम अक्षर में "अ" के स्थान पर "ई" के साथ करते हैं, एक अरब द्वारा निष्क्रिय के बजाय सक्रिय अर्थ में "अत्यधिक प्रशंसा" के रूप में समझा जा सकता है। नोट 113. शहजाद, इस कहानी को सुनाते हुए, कहती हैं, "दूर मर जाएगा," के बजाय " "t/iuu मर जाएगा," क्योंकि बाद वाला वाक्यांश राजा शाहरियार की मृत्यु की भविष्यवाणी के रूप में प्रतीत हो सकता है, जिसे वह संबोधित कर रही है। अध्याय 2 के नोट 8 देखें। नोट 114. इस मामले में गवाहों के बिना विवाह पूरी तरह से वैध था। नोट 115. इस प्रकार के सिंहासन, कालीन आदि का उल्लेख कई पूर्वी कहानियों में मिलता है,27 जिनके लेखकों ने संभवतः सुलेमान के वायु यात्रा के तरीके की परंपरा से यह विचार लिया होगा। ऐसा कहा जाता है कि उनके पास हरे रेशम का एक कालीन था, जिस पर उनका सिंहासन रखा गया था, जो बहुत लंबा और चौड़ा था,

और उनकी पूरी सेना के खड़े होने के लिए पर्याप्त था, सैनिक उनके दाहिने हाथ पर और आत्माएं [या जिन्न] उनके बाएं हाथ पर बैठते थे; और जब सब कुछ व्यवस्थित हो जाता था, तो हवा, उनके आदेश पर, कालीन को उठा लेती थी, और उस पर रखे सभी लोगों के साथ, जहाँ भी वह चाहता था, उसे ले जाती थी; उसी समय पक्षियों की सेना उनके सिर के ऊपर मंडराती थी, और एक एक तरह की छतरी, जो उन्हें धूप से बचाए।' ^ टिप्पणी 116. "दारब-अल-असफर" काहिरा के उत्तरी भाग में स्थित जमालसेयेह की एक गली है। टिप्पणी 117. यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है कि हज़ार और एक रातों की लंबी कहानियों के बीच कई उपाख्यान शामिल किए गए हैं। मेरा मानना है कि ये मुख्य रूप से अन्य रचनाओं से लिए गए हैं, और इनमें से कई ऐतिहासिक हैं; लेकिन इनमें से अधिकांश लंबी कहानियों की तुलना में रुचि में बहुत कम हैं; और, इनका सरसरी तौर पर अध्ययन करने पर, मैंने पाया कि मेरे अनुवाद में इनमें से अधिकांश को छोड़ देना उचित होगा; शेष को उनके उचित स्थानों पर शामिल करते हुए, लेकिन उन्हें मेरी टिप्पणियों में जोड़ देना चाहिए।29 हज़ार और एक रातों के उस भाग का लगभग पूरा हिस्सा, जो गैलेंड के संस्करण में नहीं है, स्वर्गीय बैरन वॉन हैमर पुर्गस्टाल द्वारा फ्रेंच में अनुवादित किया गया था; और उनके फ्रेंच पांडुलिपि संस्करण से, प्रोफेसर ज़िनसरलिंग द्वारा एक जर्मन अनुवाद किया गया था; लेकिन केवल बाद वाला ही प्रकाशित हुआ; पूर्व वाला बाद में दुर्भाग्य से उस व्यक्ति द्वारा खो गया जिसकी देखरेख में वह था। इसे प्रकाशन के उद्देश्य से इंग्लैंड भेजने का कार्य सौंपा गया था। फिर, जर्मन संस्करण से, एम. ट्रेबुटियन द्वारा एक फ्रांसीसी अनुवाद किया गया और 1828 में पेरिस में प्रकाशित किया गया; और इसी प्रकार अधिकांश लंबी कहानियों और चार उपाख्यानों का एक अंग्रेजी अनुवाद, रेवरेंड जॉर्ज लैम्ब द्वारा

किया गया, जो 1829 में लंदन में प्रकाशित हुआ। मुझे अत्यंत खेद है कि मैं जर्मन संस्करण को पढ़ नहीं पा रहा हूँ; क्योंकि यह अनुमान लगाना स्वाभाविक है कि वॉन हैमर के संस्करण की खूबियाँ, पहले की तुलना में दूसरे में अपूर्ण रूप से परिलक्षित होती हैं। 25 सेल का प्रारंभिक प्रवचन, खंड iii जिस प्रति से मेरा अनुवाद किया गया है, उसकी पूरी प्रति मेरे पास नहीं है और मुझे यह जानने का कोई साधन नहीं था कि उसमें वे उपाख्यान शामिल हैं। ब्राउन की 'शेफर्ड्स पाइप' में पुराने कवि ओकलीव की एक कविता में भी यही बात लागू होती है। जैसे-जैसे ये घटित होंगे, इनका उल्लेख क्रमानुसार किया जाएगा। 23 सेल की टिप्पणी के अनुसार, ये कुरान के हज़ार और एक रातों के 27वें अध्याय के श्लोक 20 पर आधारित हैं और उन टिप्पणियों को स्पष्ट करती हैं जिनमें इन्हें शामिल किया गया है। 29 इनमें से कुछ उपाख्यान अन्य स्रोतों से पहले ही प्राप्त हो चुके हैं; क्योंकि इन्हें शामिल करते समय मुझे काहिरा से संस्करण प्राप्त नहीं हुआ था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.56%** है।

अध्याय ग्यारह के लिए टिप्पणियाँ। 295 1 व्यापक अनुवाद जिनमें से एक दूसरे से किया गया है। वॉन हैमर के संस्करण के संबंध में, मैं केवल ये टिप्पणियाँ कर सकता हूँ: पहला, कि ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने कहानियों को काफी संक्षिप्त कर दिया है; दूसरा, कि उन्होंने उनमें से बहुत कम कहानियों को पूरी तरह से छोड़ा है, केवल उन्हीं को जिनका पहले अनुवाद किया जा चुका है, और सभी को नहीं; और तीसरा, कि उन्होंने आम तौर पर उन छंदों में से सर्वश्रेष्ठ को संरक्षित किया है जिनके साथ वे कहानियाँ समाहित हैं। इस प्रकार, दो मामलों में, उनकी योजना मेरी योजना से भिन्न है; क्योंकि मैं शायद ही कभी किसी भी अंश को संक्षिप्त

करता हूँ, सिवाय कई काव्य रचनाओं को छोड़ने के; लेकिन मैं उन कहानियों को पूरी तरह से अस्वीकार करता हूँ जिन्हें मुझे लगता है कि अंग्रेजी पाठकों को उबाऊ या अन्यथा अरुचिकर लगेगा। और यहाँ मुझे यह उल्लेख करना आवश्यक है कि उपर्युक्त संस्करणों में कुछ उपयुक्त काव्यात्मक अंश उन स्थानों पर पाए जाते हैं जहाँ मेरे संस्करण में कोई अंश नहीं है, या कुछ अंश थोड़े भिन्न हैं, क्योंकि मेरे मूल पाठ में ये अंश हमेशा पूर्ववर्ती संस्करणों के समान अनुवादित नहीं किए जा सकते। पाठक इसका अंदाजा निम्नलिखित उपाख्यानों में से तीसरे में दिए गए पहले काव्यात्मक उद्धरण के मेरे अनुवाद की तुलना एम. ट्रेबुटियन के संस्करण (खंड iii, पृष्ठ 280-1) के संबंधित दोहे से करके लगा सकते हैं, जो इस प्रकार है: — " Leciel a recompense ceux qui honorerent Joseph lorsqu'il <?tait encore dans sa prison; ainsi le ciel me mettra peut-etre un jour en etat de reconnaitre vos bienfaits envers moi." मेरे मूल पाठ में निम्नलिखित लिखा है: — " \Va-'asa-lledhce ahd'a li-yoosufa ahlahu : wa-a'azzahu fi-s-sejni wa-hwa asceru : An yestejeeba lana wa-yejma'a shemlana : wa-llahu rabbu-l-'alameena kadeeru." यही टिप्पणी कई मामलों में गद्य पर भी लागू होती है। मैं श्री लैम्ब के अनुवाद की तुलना में एम. ट्रेल्मटियन के अनुवाद को श्रेष्ठ मानता हूँ; परन्तु मुझे खेद है कि उन्होंने गैलैंड की शैली का अनुकरण करने का प्रयास किया। — मैंने वॉन हैमर और उनके अनुवादकों तथा स्वयं के प्रति न्यायसंगत भाव से उपरोक्त टिप्पणियाँ करना आवश्यक समझा है; क्योंकि मेरा पाठक अब उस बिंदु पर पहुँच गया है जहाँ वह पहली बार ऊपर उल्लिखित अनुवादों की तुलना मेरे अनुवाद से कर सकता है। निम्नलिखित उपाख्यानों को नौ

उपाख्यानों की श्रृंखला से चुना गया है, जो दो सौ उनसठवीं रात के एक भाग से शुरू होकर दो सौ पचासीवीं रात के एक भाग पर समाप्त होती है। हातिम एत-ताई की मृत्यु के बाद उनकी उदारता। हातिम एत-ताई के बारे में कहा जाता है कि,30 जब उनकी मृत्यु हुई, तो उन्हें एक पर्वत की चोटी पर दफनाया गया,31 और उनकी कब्र पर पत्थर के दो कुंड और बिखरे बालों वाली युवतियों की पत्थर की मूर्तियाँ बनाई गईं। उस पर्वत के नीचे एक नदी बहती थी; और जब वहाँ पहुँचने वाले यात्री उस स्थान पर उतरते थे, तो वे पूरी रात, सूर्यास्त से लेकर सुबह तक, ज़ोर-ज़ोर से रोने की आवाज़ सुनते थे; लेकिन जब वे सुबह उठते थे, तो उन्हें पत्थर से तराशी गई युवतियों के अलावा कोई नहीं मिलता था। और जब ज़ु-अल-केला,32 राजा हातिम एट-ताई (यानी तेईयी जनजाति के हातिम) अपने पड़ोसियों और रेगिस्तान के गरीब अरबों के मनोरंजन के लिए अपनी उदारता के लिए सबसे अधिक प्रसिद्ध थे। (डी'हर्बेलोट) वह "अज्ञानता के युग" में रहते थे;31 तेईयी जिले में 'ओवारिद' कहलाते थे, लेकिन उनके बेटे अदी मुसलमान बन गए, और पैगंबर के साथियों में गिने जाते हैं। (कामोस) :2 इसलिए काहिरा संस्करण में हातिम की उदारता का सबसे प्रसिद्ध कार्य ज़ु-अल-कुरिन था। येमेन के दो राजाओं का ज़िक्र कामोस में मिलता है, जिन्हें उसने यूनानी राजदूत ज़ू-1-केला को दिखाया था। सम्राट, जिसे उसके स्वामी के लिए उपहार के रूप में एक बहुत कीमती घोड़ा मांगने के लिए भेजा गया था, कामूस में मिलता है। - मेरे शेखली, जिसका उपनाम 'महान' और 'छोटा' था। यह उपाख्यान "अघानेक" में विस्तार से बताया गया है; लेकिन जिस व्यक्ति ने हातिम के आतिथ्य की मांग की थी, उसका नाम अबू-1-खेयबकेरा था। ज़ू-1-केला, हातिम से बहुत पहले रहता था। यह भी कहा जाता है कि वह अक्सर चालीस ऊंटों को मरवा देता था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.35%** है।

हेमियर का एक व्यक्ति अपने त्रिशूल से निकलकर उस घाटी में उतरा, उसने वहाँ एक रात बिताई, और जब वह उस स्थान के पास पहुँचा तो उसने रोने की आवाज़ सुनी; इसलिए उसने कहा, इस पर्वत की चोटी पर यह विलाप किस बात का है? उन्होंने उसे उत्तर दिया, यहाँ हातिम एत-ताई की समाधि है, जिसके ऊपर पत्थर के दो कुंड हैं, जिनमें बिखरे बालों वाली युवतियों की पत्थर की मूर्तियाँ हैं, और हर रात, जो लोग इस स्थान पर उतरते हैं, वे यह विलाप और रोने की आवाज़ सुनते हैं। इस पर ज़ू-1-केला ने हातिम एत-ताई का उपहास करते हुए कहा, हे हातिम, हम आज रात तुम्हारे मेहमान हैं, और भूख से बेहाल हैं। और जब नींद उस पर हावी हो गई, तो वह घबराकर जागा और चिल्लाया, हे अरहों, मेरे और मेरे पशु के पास आओ! और जब वे आए, तो उन्होंने ऊँटनी को तड़पते हुए पाया; इसलिए उन्होंने उसे मार डाला, उसका मांस भूनकर खाया। फिर उन्होंने उससे इसका कारण पूछा; और उसने उत्तर दिया, मैं सो रहा था, और मैंने सपने में हातिम एत-ताई को देखा, जो मेरे पास तलवार लेकर आया और बोला, तुम हमारे पास तब आए हो जब हमारे पास कुछ भी नहीं है। और उसने मेरी ऊँटनी को तलवार से घायल कर दिया। यदि तुमने उसे न मारा होता, तो वह मर जाती। और जब अगली सुबह हुई, तो ज़ू-1-केला अपने एक साथी के जानवर पर सवार हो गया, और उस आदमी को अपने पीछे बिठा लिया; और दोपहर के समय उन्होंने एक आदमी को एक जानवर पर सवार और दूसरे जानवर को हाथ से पकड़े हुए देखा; और उन्होंने उससे पूछा, तुम कौन हो? उसने उत्तर दिया, मैं हातिम एत-ताई का पुत्र अदी हूँ। और उसने आगे पूछा, हेमियर का राजकुमार ज़ू-1-केला कहाँ है? तो उन्होंने उत्तर दिया, यह वही है। और उसने ज़ू-1-केला से कहा, अपनी

ऊँटनी के बजाय इस ऊँटनी पर सवार हो जाओ; क्योंकि तुम्हारी ऊँटनी को मेरे पिता ने तुम्हारे लिए मारा है। — और किसने तुम्हें यह सूचना दी, ज़ू-1-केला ने पूछा? अदी ने उत्तर दिया, पिछली रात मेरे पिता सपने में मेरे पास आए और मुझसे कहा, हे अदी, ज़ू-1-केला, राजा

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.84%** है।

ग्यारहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। हेमियर ने मुझसे आतिथ्य सत्कार की माँग की है, और मैंने उसके लिए उसकी ऊँटनी का वध किया है: इसलिए तुम उसके लिए एक ऊँटनी लेकर जाओ ताकि वह उस पर सवारी कर

सके, क्योंकि मेरे पास कुछ भी नहीं है। -ज़ू-1-केला ने इसलिए उसे ले लिया, और हातिम द्वारा जीते जी और मरते जी निभाई गई उदारता पर आश्चर्य किया। ज़ैदेह के पुत्र मान का किस्सा। एक दिन जब ज़ैदेह का पुत्र मान शिकार कर रहा था, तो उसे प्यास लगी, और उसने अपने जवानों के साथ कोई पानी नहीं पाया। लेकिन जब वह इस स्थिति में था, तो देखो, तीन युवतियाँ उसके पास पानी की तीन मशकें लेकर आईं। इसलिए उसने उनसे पानी माँगा, और उन्होंने उसे पानी दिया; और उसने अपने जवानों से कुछ पैसे माँगे, ताकि वह युवतियों को दे सके; लेकिन पाया कि उनके पास पैसे नहीं थे। इसलिए उसने प्रत्येक युवती को अपने तरकश से दस-दस तीर भेंट किए, जिनके सिरे सोने के थे। इस पर उनमें से एक ने अपनी सहेलियों से कहा, “यह उदारतापूर्ण व्यवहार ज़ैदेह के पुत्र मान के सिवा किसी और से नहीं आ सकता; इसलिए तुम सब उसकी प्रशंसा में कुछ कविताएँ पढ़ो।” तदनुसार, पहली ने कहा,— 33 ज़ैदेह के पुत्र मान की उदारता की तुलना हियतिम एत-ताई से की गई थी। वह उमवी खलीफ़ों में अंतिम, मरवान के प्रमुख सेनापतियों में से एक था, और अंततः उसे अब्बासी खलीफ़े अल मंसूर का अनुग्रह प्राप्त हुआ। (डी'हर्बेलोट, लेख "मान या मान, ज़ैदेह का पुत्र" देखें, जहाँ उसका एक और अधिक रोचक किस्सा दिया गया है।) 2 Q

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.44%** है।

वह अपने बाणों के आगे सोने की नोक लगाता है, और अपने शत्रुओं पर प्रहार करते हुए उदारता से घायलों का इलाज करता है, और जिनकी मृत्यु हो गई है उनके लिए कफ़न उपलब्ध कराता है। दूसरे ने कहा, — वह इतना उदार योद्धा है कि उसका उपकार मित्रों और शत्रुओं दोनों पर होता है। उसके बाणों के आगे सोने की नोक लगी होती है, ताकि युद्ध भी उसे उदारता के कार्यों से न रोक सके। फिर तीसरे ने एक दोहा सुनाया, जिसका सार पहले वाले के समान ही था। इब्राहीम, अल-महदी के पुत्र,34 इब्राहीम, अल-महदी के पुत्र,3'1 और हारून एर-रशीद के भाई, जब खलीफा का पद उनके भाई एर-रशीद के पुत्र अल-मामून को सौंपा गया, तो उन्होंने उनके प्रति निष्ठा की शपथ लेने से इनकार कर दिया और एर-रेई चले गए,35 जहाँ उन्होंने स्वयं को खलीफा की उपाधि धारण कर ली और इस प्रकार वे एक वर्ष, ग्यारह महीने और बारह दिनों तक इस पद

पर बने रहे। उनके भाई का पुत्र, अल-मामून, उनके आज्ञापालन में लौटने और उनके अनुयायियों के बीच शामिल होने की प्रतीक्षा करता रहा, अंततः, ऐसा न होने पर निराश होकर, वह अपने घुड़सवारों और सैनिकों के साथ एर-रेई के लिए रवाना हो गया। और जब उसके आने की खबर इब्राहीम तक पहुँची, तो उसके पास बगदाद जाने के अलावा कोई चारा नहीं बचा, जहाँ वह छिप गया, क्योंकि उसे डर था कि 3* यह किस्सा, काहिरा संस्करण के लगभग शब्दशः, इब्राहीम अल-अंदालुसी (बाद में एड-दिमश्की) की "कोवकाब अल-वहाज" से अल-इशहाकी द्वारा वर्णित है। 33 यह प्रसिद्ध व्यक्ति एक बहुत ही कुशल संगीतकार, एक प्रशंसनीय गायक, उल्लेखनीय रूप से विनम्र, उदार और वाक्पटु था। उसका रंग बहुत गहरा था; उसकी माँ एक काली दासी थी, जिसका नाम शेकलेह या शिकलेह था, जिससे अल-महदी ने शादी की थी; और वह इतना मोटा था कि उसे एत-तीन या अंजीर उपनाम मिला। (डी'हर्बेलोट, लेख "इब्राहिम अबू इशाक बेन महादिफ-और इब्न खल्लिकान") 31 फारसी 'एरक के उत्तर में एक शहर।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.69%** है।

उसकी जान खतरे में थी; और क्ल-मा-मून ने उसके छिपने की जगह बताने वाले को एक लाख सोने के सिक्के देने का वादा किया। इब्राहीम कहते हैं, जब मैंने इस इनाम के बारे में सुना, तो मुझे अपनी जान का डर सताने लगा और मैं अपनी स्थिति को लेकर व्याकुल हो गया। इसलिए मैं दोपहर के समय अपने घर से निकला, यह नहीं जानता था कि कहाँ जाऊँ, और मैं एक बड़ी गली में गया जो मुख्य मार्ग नहीं थी, और उसके ऊपरी छोर पर एक नाई37 को अपने घर के दरवाजे पर खड़ा देखकर, मैं उसकी ओर बढ़ा और उससे कहा, क्या तुम्हारे पास कोई ऐसी जगह है जहाँ मैं कुछ समय के लिए छिप सकूँ? उसने उत्तर दिया, हाँ: और दरवाजा खोल दिया, और मैं एक साफ-सुथरे घर में प्रवेश कर गया। फिर,

मुझे अंदर लाने के बाद, उसने मेरे ऊपर दरवाजा बंद कर दिया और चला गया। इसलिए मुझे संदेह हुआ कि उसने इनाम के बारे में सुन लिया है, और मैंने मन ही मन कहा, वह मुझे धोखा देने के लिए निकला है। इसलिए मैं आग पर रखे बर्तन की तरह बेचैनी की स्थिति में अपनी स्थिति पर विचार करता रहा; लेकिन जब मैं इस स्थिति में था, तभी वह एक कुली के साथ आया, जिसके पास वह सब कुछ था जो उसे चाहिए था; और मेरी ओर देखकर उसने मुझसे कहा, क्या मैं तुम्हारा उद्धार कर सकता हूँ! मुझे भोजन की कमी थी, और मैंने अपने लिए एक बर्तन भरकर भोजन तैयार किया, जैसा मैंने पहले कभी नहीं खाया था; और जब मैंने उसे खाकर अपना पेट भर लिया, तो उसने कहा, हे मेरे स्वामी, यह 37 के अनुरूप नहीं है। ब्रेस्लाउ संस्करण में, और ट्रेबुटियन के संस्करण में, और एल-इस-हुकी में भी, नाई को एक नीग्रो के रूप में वर्णित किया गया है; लेकिन एक विश्वसनीय स्रोत पर आधारित घटना के विवरण में (डी'हर्बेलोट में, ऊपर देखें), उसे बहुत गहरे रंग का व्यक्ति बताया गया है, जो इस संबंध में इब्राहीम से बहुत मिलता-जुलता है।

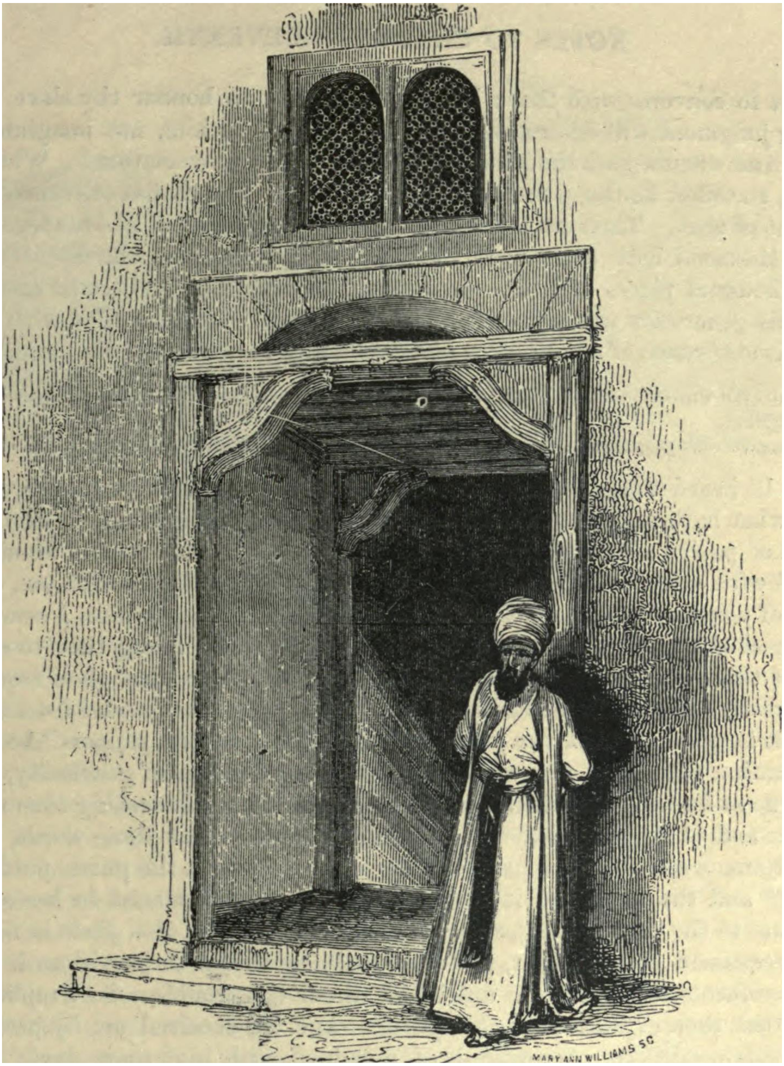

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.58%** है।

अध्याय ग्यारह के 300 नोट्स। मैं तुमसे बात करने के लिए बाध्य हूँ; परन्तु यदि तुम अपने दास का आदर करना चाहो, तो तुम्हारा स्वयं का उत्कृष्ट विवेक ही निर्णय करेगा। इसलिए मैंने उससे कहा, यह कल्पना किए बिना कि वह मुझे जानता है, और तुमने यह कहाँ से जाना कि मैं

वार्तालाप में निपुण हूँ? इस पर उसने कहा, अल्लाह की पूर्णता की महिमा हो! हमारे प्रभु इतने प्रसिद्ध हैं कि मैं उनसे अनभिज्ञ नहीं हो सकता। तुम मेरे स्वामी, इब्राहीम, महदी के पुत्र हो, जिनके विषय में महमून ने घोषणा की है कि जो तुम्हें खोज निकालेगा, उसे एक लाख सोने के सिक्के दिए जाएँगे। — और जब उसने यह कहा, तो वह मेरी नज़रों में ऊँचा उठ गया, और उसकी उदारता मेरे विचार में सिद्ध हो गई: इसलिए मैंने उसकी इच्छा का पालन किया, और अपने बच्चों और परिवार की याद आने पर मैंने कहा, — शायद जिसने यूसुफ को उसका परिवार लौटाया और कैद में रहते हुए उसे गौरवान्वित किया, वही हमारी प्रार्थना का उत्तर दे और हमें फिर से मिला दे; क्योंकि समस्त प्राणियों का स्वामी, ईश्वर, समर्थ है। और जब उसने मेरे ये शब्द सुने, तो उसने कहा, हे मेरे स्वामी, क्या आप मुझे वह दोहराने की अनुमति देंगे जो मेरे मन में आया है? मैंने उत्तर दिया, हाँ। और उसने दो कविताएँ सुनाईं; जिन्हें सुनकर मैं उस पर अत्यंत आश्चर्यचकित हुआ और अत्यंत प्रसन्न हुआ। तब मैंने अपने पास मौजूद सोने के सिक्कों से भरा एक पर्स निकाला और उसे उसकी ओर फेंकते हुए कहा, मैं तुम्हें ईश्वर की देखरेख में सौंपता हूँ; क्योंकि मैं अब तुमसे विदा लेने जा रहा हूँ; मैं तुमसे विनती करता हूँ कि इस पर्स में रखी चीज़ों का इस्तेमाल अपनी कुछ ज़रूरतों को पूरा करने में करो, और जब मैं अपने डर से मुक्त हो जाऊँगा, तो तुम्हें मेरी ओर से भरपूर प्रतिफल मिलेगा। लेकिन उसने मुझे पर्स लौटा दिया और कहा, हे मेरे स्वामी, मुझ जैसे कंगाल का आपके लिए कोई महत्व नहीं है; फिर भी, अपनी उदारता के भाव के अनुरूप, मैं उस उपकार के लिए कैसे भुगतान स्वीकार कर सकता हूँ जो भाग्य ने मुझे दिया है कि आपने मुझ पर इतनी कृपा की और मेरे घर आए? अल्लाह की कसम, अगर तुमने ये शब्द दोहराए और पर्स दोबारा मेरी ओर फेंका, तो मैं खुद को मार डालूँगा। तो मैंने पर्स

उठाया और उसे अपनी आस्तीन में रख लिया,38 और उसका वज़न मुझे असहज कर रहा था; और मैं उसे छोड़कर जाने लगा; लेकिन जब मैं उसके घर के दरवाजे पर पहुँचा, तो उसने कहा, हे मेरे स्वामी, यह जगह आपके छिपने के लिए दूसरी जगहों से ज़्यादा उपयुक्त है, और आपको भोजन-सामान पहुँचाना मेरे लिए कोई बोझ नहीं है; इसलिए मेरे साथ रहो जब तक कि ईश्वर तुम्हारी मुसीबत दूर न कर दे। मैंने उत्तर दिया, इस शर्त पर कि तुम इस थैली से खर्च करो। उसने इस शर्त पर अपनी सहमति जताकर मुझे धोखा दिया। तदनुसार, मैं कुछ दिनों तक उसके साथ रही; लेकिन उसने थैली से कुछ भी खर्च नहीं किया। फिर मैंने महिलाओं के वस्त्र, खुफ्फ33 और घूंघट पहनकर उसके घर से निकल पड़ी। लेकिन जब मैं सड़क पर थी, तो मुझे अत्यधिक भय सताने लगा; और जैसे ही मैं पुल पार करने वाली थी, मैंने खुद को पानी छिड़के हुए स्थान पर पाया,40 और एक सैनिक, जो मेरी सेवा में था, ने मुझे देखा और पहचान लिया; फिर उसने पुकार कर कहा, यही वह व्यक्ति है जिसकी अल-मा-मून तलाश कर रहा है! और उसने मुझे पकड़ लिया। लेकिन मैंने उसे और उसके घोड़े को धक्का दिया और दोनों को उस फिसलन भरी जगह पर गिरा दिया, जिससे सवार सबक लेने वाले के लिए एक उदाहरण बन गया, और लोग उसकी ओर दौड़ पड़े। इसलिए मैं जल्दी से आगे बढ़ता रहा जब तक कि पुल पार नहीं कर लिया, तब मैं एक बड़ी गली में पहुँचा, और एक घर का दरवाजा और गलियारे में खड़ी एक महिला को देखकर मैंने कहा, हे मेरी स्वामिनी, मेरी जान बचाओ; क्योंकि मैं डरा हुआ हूँ। उसने उत्तर दिया, तुम्हें कोई हानि नहीं होगी। और वह मुझे भोजन कक्ष में ले गई, जहाँ उसने मेरे लिए फर्नीचर लगाया और मुझे कुछ भोजन लाकर कहा, तुम्हारा डर शांत हो जाए। और जब वह इस प्रकार मुझे सांत्वना दे रही थी, तभी दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक हुई। इसलिए वह बाहर निकली

और 28 एक अरब अक्सर अपनी लंबी और चौड़ी आस्तीन में सामान रखता है, जिससे हवा को ठंडा करने के साथ-साथ धूल भी जम जाती है; लेकिन बीच में आमतौर पर एक संकरी जगह सूखी रह जाती है; यह विशेष रूप से ऊंटों के लिए आवश्यक है। 40 अरब शहरों की सड़कों आदि पर गर्मियों के दौरान आमतौर पर ज़मीन पर पानी छिड़का जाता है, ताकि हवा को ठंडा किया जा सके और धूल को भी हटाया जा सके; लेकिन बीच में आमतौर पर एक संकरी जगह सूखी रह जाती है; यह विशेष रूप से ऊंटों के लिए आवश्यक है। पूर्वी महिलाएं, चप्पल के अंदर, विदेश में चलते समय या सवारी करते समय।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.52%** है।

मैंने उसका नेतृत्व किया; और देखो, मेरा वह परिचित जिसे मैंने पुल पर धकेल दिया था, अपने पालतू कुत्ते के साथ आगे आया, उसके कपड़ों पर खून बह रहा था, और उसका घोड़ा उसके साथ नहीं था। उसने उससे पूछा, यह क्या है? तुम पर क्या विपत्ति आई है? उसने उत्तर दिया, मैंने उस आदमी को पकड़ा था, और वह मुझसे बचकर भाग गया। उसने उसे सारी घटना बताई। उसने एक कपड़ा निकाला, जिससे उसने उसका सिर बांध दिया; उसके बाद, उसने उसके लिए बिस्तर बिछाया, और वह बीमार पड़ा रहा। फिर मेरे पास आकर उसने मुझसे कहा, मुझे लगता है कि तुम ही वह व्यक्ति हो जिसके बारे में बात हो रही है। मैंने उत्तर दिया, हाँ। और उसने कहा, तुम्हें कोई हानि नहीं होगी। फिर उसने मेरे प्रति अपना उदार व्यवहार दोहराया, और मैं उसके साथ तीन दिन रहा; जिसके बाद उसने मुझसे कहा, मुझे इस आदमी से तुम्हारी चिंता है, कहीं वह तुम्हारे पास न आ जाए, और तुम उस विपत्ति में न पड़ जाओ जिससे तुम डरते हो: इसलिए भागकर अपनी जान बचा लो। लेकिन मैंने उससे रात तक मेरा

प्रस्थान टालने का अनुरोध किया; और उसने कहा, इसमें कोई हर्ज नहीं है। इसलिए जब रात हुई, तो मैंने स्त्रियों के वस्त्र पहने और उसके घर से निकलकर एक मुक्त दासी के घर गया जो हमारी थी; और जब उसने मुझे देखा, तो वह रोई, दुखी हुई और मेरी सुरक्षा के लिए ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) की स्तुति की, और ऐसे चली जैसे वह मेरे भोजन के लिए आवश्यक सामान लाने बाजार जा रही हो। लेकिन अचानक मैंने इब्राहीम अल-मदसिले41 को अपने जवानों और सैनिकों के बीच एक स्त्री के साथ आते देखा; और उसे ध्यान से देखने पर मैंने पाया कि वह वही मुक्त दासी थी, उस घर की मालकिन जहाँ मैं था। वह उनके आगे चलती रही जब तक कि उसने मुझे उनके हवाले नहीं कर दिया, और मुझे स्त्रियों के वस्त्रों में अल-ममून ले जाया गया। उन्होंने एक आम सभा बुलाई और मुझे अपने सामने पेश करवाया; जब मैं अंदर गया, तो मैंने उन्हें खलीफ़ा कहकर अभिवादन किया; 42 परन्तु उन्होंने उत्तर दिया, अल्लाह तुझे सलाम न करे और तुझे बरकत न दे! तब मैंने उनसे कहा, ऐ मोमिनों के सरदार, अपनी इच्छा के अनुसार कार्य कीजिए; आपके पास हुक्म है; इसलिए सज़ा या माफ़ी का फ़ैसला कीजिए; परन्तु माफ़ी धर्मपरायणता के अधिक अनुकूल है। ऐ मोमिनों के सरदार, अल्लाह ने आपकी माफ़ी को हर दूसरे व्यक्ति की माफ़ी से श्रेष्ठ बनाया है, जैसे उसने मेरे अपराध को हर दूसरे अपराध से बड़ा बनाया है; और यदि आप बदला लेंगे तो वह आपके न्याय के अनुरूप होगा, और यदि आप माफ़ी देंगे तो वह आपकी उदारता के अनुरूप होगा। फिर मैंने ये आयतें पढ़ीं:— मेरा अपराध आपके विरुद्ध बड़ा है; परन्तु आप उससे भी बड़े हैं: इसलिए अपना हक वसूल कीजिए, या फिर, अपने स्वभाव के अनुसार, उसे माफ़ कर दीजिए। यदि मैं आचरण में उदार नहीं रहा हूँ, तो आप उदार बन जाइए। तब अल-मा-मून ने अपना सिर उठाया, और मैंने जल्दी से ये अन्य छंद पढ़े: — अध्याय 3 के नोट

22 देखें। « यह कहते हुए, "हे विश्वासियों के राजकुमार, आप पर शांति हो!"

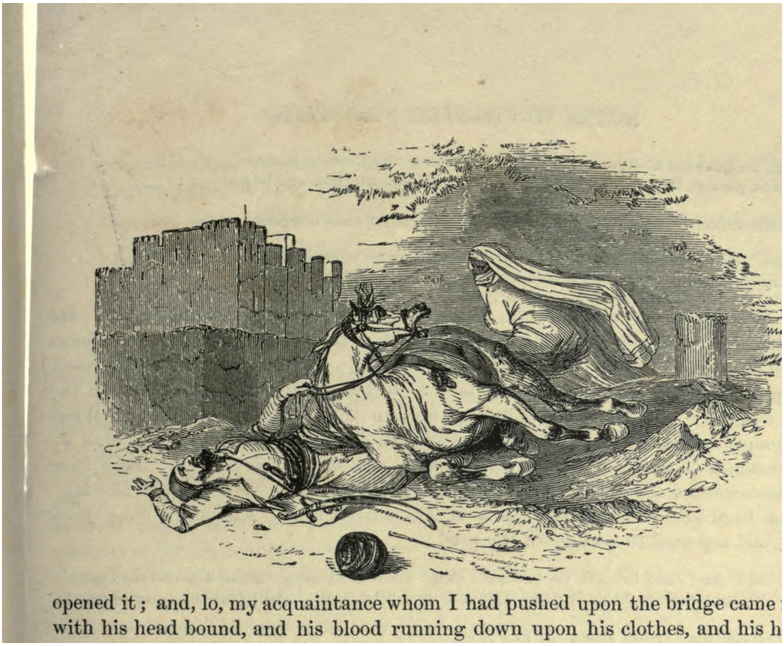

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.07%** है।

अध्याय ग्यारह के लिए 302 टिप्पणियाँ। मैंने एक घोर अपराध किया है; परन्तु आप क्षमा करने को तैयार हैं। यदि आप क्षमा करेंगे, तो आप दयालु होंगे; और यदि आप दंड देंगे, तो आप न्यायसंगत होंगे। और अल-मा-मून ने अपना सिर झुकाया और यह दोहा दोहराया: — जब कोई मित्र मुझे क्रोधित करना चाहता है, और मुझे मेरे क्रोध में घुटन महसूस कराता है, तो मैं उसके अपराधों को क्षमा कर देता हूँ, और उसे क्षमा कर देता हूँ, इस डर से कि कहीं मैं मित्रहीन न हो जाऊँ। इसलिए जब मैंने उससे ये शब्द सुने, तो मुझे उनमें दया की आभा महसूस हुई। फिर उसने अपने चाचा के पुत्र, अपने भाई इसहाक और उपस्थित सभी प्रमुख अधिकारियों

को संबोधित किया और उनसे कहा, आप उसके मामले के लिए कौन सा उपाय उचित समझते हैं? इस पर उनमें से प्रत्येक ने उसे मुझे मार डालने की सलाह दी; परन्तु वध के तरीके पर उनकी राय अलग-अलग थी। अल-मामून ने खालिद के पुत्र अहमद से कहा, “हे अहमद, तुम क्या कहते हो?” अहमद ने उत्तर दिया, “हे धनियों के सरदार, यदि तुम उसे मार डालोगे, तो हमें तुम्हारे जैसा कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिलेगा जिसने उसके जैसे व्यक्ति को मारा हो; और यदि तुम उसे क्षमा कर दोगे, तो हमें तुम्हारे जैसा कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिलेगा जिसने उसके जैसे व्यक्ति को क्षमा किया हो।” जब अल-मामून ने खालिद के पुत्र अहमद की ये बातें सुनीं, तो उसने अपना सिर झुका लिया और कवि के इन शब्दों को दोहराया: “मेरे परिवार ने मेरे भाई उमेयम को मार डाला है: इसलिए यदि मैं उन पर तीर चलाऊँगा, तो मेरा तीर मुझ पर ही वापस आ जाएगा। यदि मैं क्षमा कर दूँगा, तो मैं घोर क्षमा करूँगा; और यदि मैं हमला करूँगा, तो मैं अपनी ही हड्डियाँ कमज़ोर कर लूँगा।”43 और उसने कवि के इन शब्दों को भी दोहराया: “अपने भाई को क्षमा कर दो जब वह सही और गलत को मिला दे।” और चाहे वह आभारी हो या कृतघ्न, उसके प्रति अपनी दयालुता बनाए रखो; और चाहे वह गलती करे या न्याय करे, उसे दोष न दो। क्या तुम नहीं देखते कि जो तुम्हें प्रिय है और जो तुम्हें नापसंद है, वे एक साथ जुड़े हुए हैं? और क्या यह कि दीर्घायु का आनंद सफेद बालों के मिश्रण से भंग हो जाता है? और क्या यह कि कांटे44 फलों के साथ ही शाखाओं पर दिखाई देते हैं? वह कौन है जिसने कभी बुराई नहीं की? और किसने केवल भलाई की है? यदि तुम इस युग के पुत्रों की परीक्षा लो, तो तुम पाओगे कि उनमें से अधिकांश ने गलती की है। उनसे ये आयतें सुनकर, मैंने अपने सिर से पर्दा हटा दिया और जोर से कहा, ईश्वर सबसे महान है! 43— और कहा, हे विश्वासियों के राजकुमार, ईश्वर तुम्हें क्षमा करे!

उन्होंने उत्तर दिया, “हे चाचा, तुम्हें कोई हानि नहीं होगी।” मैंने उत्तर दिया, “हे विश्वासियों के राजकुमार, मेरा अपराध इतना बड़ा है कि मैं उसके लिए कुछ भी बहाना नहीं बना सकता, और आपकी क्षमा इतनी बड़ी है कि मैं अपना धन्यवाद व्यक्त नहीं कर सकता।” फिर, आनंद से भरे स्वरों में, मैंने ये छंद गाए: “निःसंदेह, समस्त गुणों के रचयिता ने उन्हें सातवें इमाम*6 के लिए आदम की कोख में एकत्रित किया। तूने मनुष्यों के हृदयों को अपने प्रति श्रद्धा से भर दिया है, और नम्र हृदय से तू उन सबकी रक्षा करता है। मैंने तुझसे विक्षिप्त होकर, केवल लोभ के कारण ही तुझ पर विद्रोह नहीं किया;47 और तूने उसे क्षमा किया जिसका पहले कभी कोई क्षमा नहीं हुआ, यद्यपि किसी ने तुझसे विनती नहीं की, और तूने उन नन्हे-मुन्नों पर दया की, जो कि एक अधीर माँ की तड़प हैं।” इस पर अल-मा-मून ने उत्तर दिया, मैं अपने प्रभु यूसुफ (हमारे पैगंबर पर आशीर्वाद और शांति हो!) के उदाहरण का अनुकरण करते हुए कहता हूँ, आज तुम पर कोई कलंक नहीं लगेगा: अल्लाह तुम्हें क्षमा करे; क्योंकि वह दया करने वालों में सबसे दयालु है।49 4:! यह अंतिम आयत मेरे मूल पाठ में छूट गई है, 4S कटि एक प्रकार का तीतर है, जो अपना मल त्याग करता है, लेकिन मेरे शेख ने इसे हाशिये में जोड़ दिया है। रेगिस्तान में अंडे, किसी भी पानी से बहुत दूर। 4* मूल में, "और वह रेगिस्तान प्रकट होता है।" इसलिए आयत में तुलना उपयुक्त और सशक्त है।— देखें डी सैसी, क्रेस्टोमैथी शेख। अरबी, दूसरा खंड, खंड 2, पृष्ठ 370। वर्तमान कार्य की प्रस्तावना में नोट 30 से 43 भी देखें। यह विजय का सामान्य मुस्लिम नारा है। *> "सातवें इमाम" से तात्पर्य अब्बासी खलीफ़ियों के सातवें अल-मा-49 से है। ये शब्द, जो "कोई चाँद नहीं होगा, निंदा," से शुरू होते हैं, कुरान, अध्याय 12, खंड 92 से हैं। 47 या, जैसा कि मेरे शेख ने समझाया है, "तेरी क्षमा की लालसा।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.29%** है।

अध्याय ग्यारह 303 की टिप्पणियाँ: और मैं तुम्हें तुम्हारा धन और तुम्हारी भूमि लौटा देता हूँ, हे चाचा, और तुम्हें कोई हानि नहीं होगी। — इसलिए मैंने श्रद्धापूर्वक उन पर आशीर्वाद की प्रार्थना की, और ये छंद पढ़े: तुमने मेरा धन लौटा दिया है, और उसका लोभ नहीं किया; और ऐसा करने से पहले तुमने मेरी जान बख्श दी। मैं तुम्हारी स्वीकृति पाने के लिए अपना खून दे दूँगा, और अपना धन तब तक दे दूँगा जब तक मैं अपने पैर से जूता न उतार दूँ। यदि मैं तुम्हारे द्वारा मुझ पर किए गए उपकारों के लिए कृतघ्न होता, तो मैं तुमसे भी अधिक नीच होता। तब अल-मा-मून ने मेरे साथ सम्मान और दयालुता का व्यवहार किया, और मुझसे कहा, हे चाचा, निश्चय ही अबू-इशाक और अल-अब्बास ने मुझे तुम्हें मारने की सलाह दी थी। मैंने उत्तर दिया, निश्चय ही अबू-इशाक और अल-अब्बास ने तुम्हें निष्ठापूर्वक सलाह दी थी, हे विश्वासियों के राजकुमार; लेकिन तुमने अपने स्वभाव के अनुरूप ही कार्य किया है, और अपनी इच्छा पूरी करके अपने भय को दूर किया है। उसने कहा, मैंने तुम्हारा जीवन बख्शकर अपनी शत्रुता समाप्त कर दी है, और तुम्हें मध्यस्थों के दायित्व में डाले बिना क्षमा कर दिया है। फिर वह लंबे समय तक श्रद्धापूर्वक प्रणाम करता रहा; उसके बाद उसने अपना सिर उठाया और कहा, हे चाचा, क्या आप जानते हैं कि मैंने प्रणाम क्यों किया? मैंने उत्तर दिया, शायद आपने ऐसा इसलिए किया ताकि आप ईश्वर का धन्यवाद कर सकें कि उन्होंने आपको आपके शत्रु पर विजय दिलाई। उन्होंने उत्तर दिया, मेरी ऐसी कोई इच्छा नहीं थी; बल्कि ईश्वर का धन्यवाद करने के लिए कि उन्होंने मुझे तुम्हें क्षमा करने की प्रेरणा दी। तब मैंने उन्हें अपनी स्थिति समझाई, और बताया कि मेरे साथ नाई, सिपाही और उसकी पत्नी, और उस मुक्त दासी के साथ क्या

हुआ था जिसने मुझे धोखा दिया था: जिसके बाद अल-मा-मून ने उस मुक्त दासी को लाने का आदेश दिया। वह अपने घर में इनाम की प्रतीक्षा कर रही थी; जब वह अल-मामून के सामने आई, तो उसने उससे पूछा, तुमने अपने स्वामी के साथ ऐसा क्यों किया? उसने उत्तर दिया, धन की लालसा। उसने पूछा, क्या तुम्हारा कोई बच्चा या पति है? उसने उत्तर दिया, नहीं। इस पर उसने उसे सौ कोड़े मारने का आदेश दिया और उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई। फिर उसने सैनिक, उसकी पत्नी और काँच बनाने वाले को बुलवाया; और जब वे सब आ गए, तो उसने सैनिक से उसके इस कृत्य का कारण पूछा। उसने उत्तर दिया, धन की लालसा। अल-मामून ने कहा, तुम अवश्य काँच बनाने वाले होगे। और तदनुसार उसने एक व्यक्ति को नियुक्त किया कि वह उसे काँच बनाने वाले की दुकान में रखे ताकि वह उसे अपना हुनर सिखा सके। लेकिन उसने सैनिक की पत्नी का सम्मान किया और उसे महल में ले जाकर कहा, यह एक समझदार महिला है, महत्वपूर्ण कार्यों में नियुक्त होने के योग्य है। तब उसने चाय बनाने वाले से कहा, "तेरी उदारता का ऐसा प्रमाण मिला है कि तुझे असाधारण सम्मान देना आवश्यक है।" और उसने आदेश दिया कि उस सैनिक का घर उसे सौंप दिया जाए, और इसके अतिरिक्त उसे पंद्रह हजार सोने के सिक्के भी दिए गए। 'इरेम ज़ात अल-इमाद की खोज और इतिहास, शेद्दाद के पुत्र अद का स्थलीय स्वर्ग'। ऐसा कहा जाता है कि अबू-किलाबेह के पुत्र अबेल-अल्लाह एक भागे हुए ऊँट को खोजने निकले, और जब वे यमन के रेगिस्तान और सेबा जिले से गुजर रहे थे, तो संयोगवश वे एक विशाल शहर में पहुँचे जो विशाल किलेबंदी से घिरा हुआ था, जिसके चारों ओर ऊँचे-ऊँचे मंडप बने हुए थे। इसलिए जब वे उसके पास पहुँचे, तो उन्होंने सोचा कि वहाँ निवासी होंगे, जिनसे वे अपने ऊँट के बारे में पूछ सकते हैं; और तदनुसार वे उस ओर

बढ़े; लेकिन वहाँ पहुँचने पर उसने पाया कि वह वीरान था, उसकी एकांतता को कोई भी दूर नहीं कर पा रहा था। मैं अपनी ऊँटनी से उतरा और उसके पैर बाँधे; फिर, मन को शांत करके, शहर में प्रवेश किया। किलेबंदी के पास पहुँचने पर मैंने पाया कि वहाँ दो विशाल द्वार थे, जिनके आकार और ऊँचाई के समान द्वार दुनिया में कहीं और नहीं देखे गए थे, जो विभिन्न प्रकार के रत्नों और सफेद, लाल और पीले चमेली से जड़े हुए थे। ब्रेस्लाउ संस्करण में अबू-किलाबे द्वारा इसकी खोज का केवल संक्षिप्त विवरण दिया गया है। - अदियों के निर्माण के बारे में जानकारी के लिए अध्याय 2 के नोट 37 देखें। और अंत में उल्लेख किया गया है कि अबेल-अल्लाह का पुत्र

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.73%** है।

और हरा-भरा; और जब मैंने यह देखा, तो मैं अत्यंत आश्चर्यचकित रह गया, और यह दृश्य मुझे चकित कर गया। मैं भयभीत और विचलित मन से किले में प्रवेश किया, और पाया कि वे शहर के समान ही विशाल थे, और उनमें ऊंचे-ऊंचे मंडप बने हुए थे, जिनमें से प्रत्येक में ऊंचे-ऊंचे कमरे थे, और वे सभी सोने और चांदी से निर्मित थे, और माणिक, क्राइसोलाइट, मोती और विभिन्न रंगों के रत्नों से सजे हुए थे। इन मंडपों के तह करने वाले दरवाजे सुंदरता में किले के दरवाजों के समान थे, और उनके फर्श बड़े-बड़े मोतियों और कस्तूरी, अंबरग्रीस और केसर से बने हेज़लनट जैसे गोलों से ढके हुए थे। और जब मैं शहर के बीच में आया, तो मैंने उसमें आदम के पुत्रों में से किसी को भी नहीं देखा; और मैं भय से लगभग मर ही गया। फिर मैंने ऊंचे कमरों और मंडपों के शिखरों से नीचे देखा, और उनके नीचे नदियाँ बहती हुई देखीं; और शहर की मुख्य सड़कों पर फलदार पेड़ और ऊँचे खजूर के पेड़ थे; और शहर का निर्माण सोने

और चाँदी की ईंटों से बारी-बारी से किया गया था: इसलिए मैंने मन ही मन कहा, निःसंदेह यही वह स्वर्ग है जिसका वादा आने वाले समय में किया गया है। मैंने अपनी सामर्थ्य से, उस शहर के कंकड़ जैसे रत्नों और धूल जैसे कस्तूरी को इकट्ठा किया और अपने क्षेत्र में लौट आया, जहाँ मैंने लोगों को इस घटना की सूचना दी। और यह खबर हिजाज़ में अबू-सुफयान के बेटे मुआविया (जो उस समय खलीफा थे) तक पहुँची: इसलिए उन्होंने यमन के सना में अपने लेफ्टिनेंट को लिखा, "उस आदमी को बुलाओ और उससे मामले की सच्चाई का पता लगाओ।"

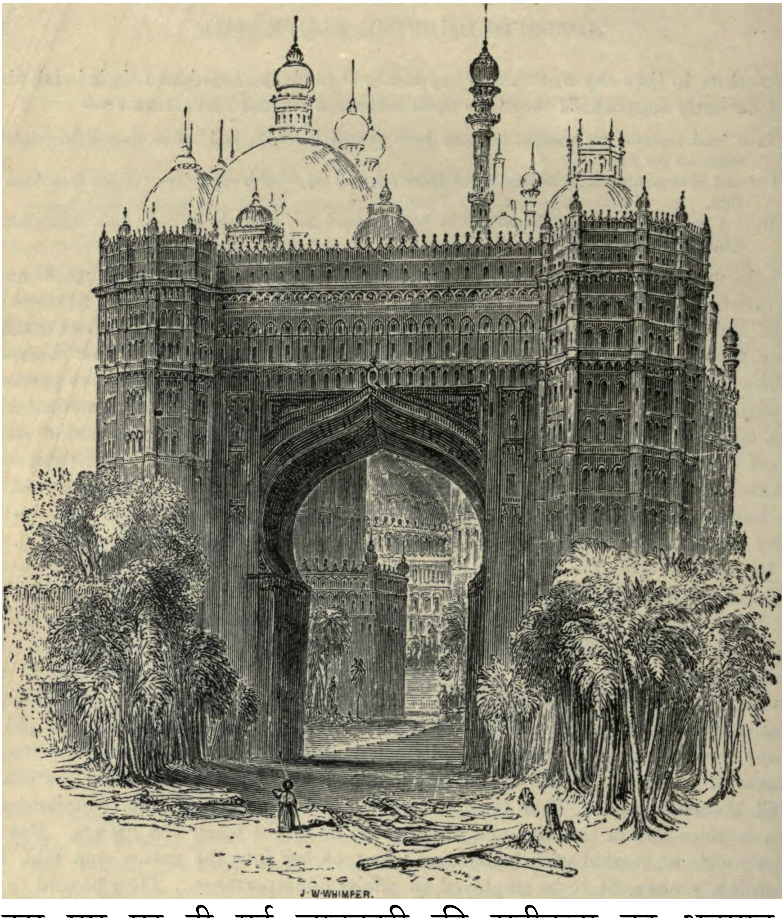

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

26.60% है।

ग्यारहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। :jor> lieutehaht therefofe1 ने मुझे बुलवाया और मुझसे मेरे साहसिक कार्य और मेरे साथ घटी घटनाओं का ब्योरा मांगा; मैंने उसे अपने देखे हुए के बारे में बताया। फिर उसने मुझे मुआविया के पास भेजा और मैंने उसे भी अपने देखे हुए के बारे में बताया, लेकिन उसने इस पर विश्वास नहीं किया। इसलिए मैंने उसे कुछ मोती और अंबर, कस्तूरी और केसर की छोटी-छोटी गोलियां दिखाईं। केसर की मीठी सुगंध अभी भी कुछ हद तक बरकरार थी, लेकिन मोती पीले और बदरंग हो गए थे। इन्हें देखकर मुआविया चकित हुआ और उसने काब-अल-अहबार को अपने सामने बुलवाया और उससे कहा, "हे काब-अल-अहबार, मैंने तुम्हें एक ऐसे मामले के बारे में बुलाया है जिसका सत्य मैं जानना चाहता हूँ और आशा करता हूँ कि तुम मुझे इसकी पुष्टि कर सकोगे।" — हे विश्वासियों के सरदार, यह क्या है? काब-अल-अहबार ने पूछा। मुआविया ने कहा, क्या तुम्हें सोने और चांदी से बने किसी नगर के बारे में जानकारी है, जिसके स्तंभ क्राइसोलाइट और माणिक्य के हों, और जिसकी बजरी मोतियों की हो, और जिसमें कस्तूरी, अंबरग्रीस और केसर से बने हेज़लनट जैसे गोले हों? उसने उत्तर दिया, जी हाँ, हे विश्वासियों के सरदार। यह ज़ात अल-इमाद है,5- जिसके जैसा नगर पृथ्वी के किसी भी क्षेत्र में कभी नहीं बनाया गया; और इसे आद महान के पुत्र शेद्दाद ने बनवाया था। — मुआविया ने कहा, हमें इसके इतिहास के बारे में कुछ बताइए। और काब-अल-अहबार ने इस प्रकार उत्तर दिया: — आद महान के दो पुत्र थे, शेदीद और शेद्दाद; और जब उनके पिता का देहांत हो गया, तो उन्होंने उनके बाद संयुक्त रूप से देशों पर शासन किया, और पृथ्वी के राजाओं में से कोई भी ऐसा नहीं था जो उनके अधीन न हो। और आद के पुत्र शेद्दाद की मृत्यु हो गई; अतः उनके भाई शेद्दाद ने उनके बाद अकेले

ही पृथ्वी पर शासन किया। उन्हें प्राचीन ग्रंथों को पढ़ने का बहुत शौक था; और जब उन्होंने परलोक, स्वर्ग, उसके तंबूओं, ऊंचे कमरों, वृक्षों और फलों तथा स्वर्ग की अन्य वस्तुओं का वर्णन पढ़ा, तो उनके मन में ऊपर वर्णित विधि के अनुसार पृथ्वी पर उसी प्रकार का निर्माण करने की इच्छा जागी। उनके अधीन एक लाख राजा थे, जिनमें से प्रत्येक के अधीन एक लाख वीर सरदार थे, और प्रत्येक के अधीन एक लाख सैनिक थे। उन्होंने उन सभी को अपने समक्ष बुलाया और उनसे कहा, "मैंने प्राचीन ग्रंथों और इतिहासों में परलोक के स्वर्ग का वर्णन पाया है, और मैं उसी प्रकार का स्वर्ग पृथ्वी पर बनाना चाहता हूँ।" इसलिए तुम पृथ्वी के सबसे रमणीय और विशाल खाली मैदान में जाओ, और उसमें मेरे लिए सोने-चांदी का एक नगर बनाओ, और उसकी बजरी में क्राइसोलाइट, माणिक और मोती बिछाओ, और उस नगर की गुंबददार छतों के आधार के रूप में क्राइसोलाइट के स्तंभ बनाओ, और उसे मंडपों से भर दो, और मंडपों के ऊपर ऊंचे कक्ष बनाओ, और उनके नीचे गलियों और मुख्य सड़कों में विभिन्न प्रकार के पके फल देने वाले पेड़ लगाओ, और उनके नीचे सोने-चांदी की नहरों में नदियां बहाओ। — इस पर उन सभी ने उत्तर दिया, हम वह कैसे कर सकते हैं जो आपने हमें बताया है, और हम क्राइसोलाइट, माणिक और मोती कैसे प्राप्त कर सकते हैं जिनका आपने उल्लेख किया है? लेकिन उसने कहा, क्या तुम नहीं जानते कि संसार के राजा मेरे आज्ञाकारी हैं, और मेरे अधिकार में हैं, और इसमें कोई भी मेरी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करता? उन्होंने उत्तर दिया, हाँ, हम जानते हैं। — फिर, उसने कहा, क्राइसोलाइट और माणिक की खानों में जाओ, और उन स्थानों पर जाओ जहाँ मोती, सोना और चांदी पाए जाते हैं; और पृथ्वी से उनकी सामग्री निकालो और इकट्ठा करो, और कोई कसर मत छोड़ो। मेरे लिए भी मनुष्यों के हाथों से वह सब ले लो जो तुम्हें चाहिए, और कुछ भी

मत छोड़ो, और किसी को भी अपने से बचने मत दो; और अवज्ञा से सावधान रहो। 51 हेमियर जनजाति का एक प्रसिद्ध परंपरावादी, जिसे अरब इतिहासकारों द्वारा सत्य बताया गया है और जिसने उमर के शासनकाल में अल-इस्लीम को अपनाया था, अन्य लोगों द्वारा इब्न-खालदून द्वारा कहा गया है कि वह उस्ताद के शासनकाल में, पलायन के वर्ष 32 में मर गया था। (मिस्कात अल-मसीबीह, खंड 1, एक विवेकपूर्ण आलोचक का दावा है कि 'इरेम' एक प्राचीन जनजाति का नाम है, और इस मामले में "इमाद" का अर्थ "तंबू का खंभा" समझा जाना एक कालभ्रम है; "इरेम ज़ात अल-इमाद" को आम तौर पर "ऊँची इमारतों वाला इरेम" समझा जाता है: लेकिन वॉन हैमर ने भी टिप्पणी की है (ट्रेबुटियन के अनुवाद, खंड 3, पृष्ठ 286 देखें), कि इस शहर की कहानी में, "अहलु-अल-इमाद" अभिव्यक्ति का प्रयोग "तंबू में रहने वाले लोगों" को दर्शाने के लिए किया जाता है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.12%** है।

अध्याय 306 ग्यारहवें अध्याय के लिए टिप्पणियाँ। फिर उसने पृथ्वी के सभी क्षेत्रों के राजाओं को पत्र लिखकर आदेश दिया कि वे अपने-अपने क्षेत्रों में मौजूद उपर्युक्त प्रकार की सभी वस्तुएँ एकत्र करें, और उन खानों में जाएँ जहाँ ये वस्तुएँ पाई जाती थीं, और उनमें निहित बहुमूल्य पत्थरों को निकालें, यहाँ तक कि समुद्र तल से भी। और उन्होंने बीस वर्षों के भीतर उसकी आवश्यकता की वस्तुएँ एकत्र कर लीं; 53 इसके बाद, उसने सभी देशों और क्षेत्रों से ज्यामितिज्ञों 54, ऋषियों, श्रमिकों और शिल्पकारों को भेजा, और वे रेगिस्तानों, बंजर भूमि, भूभागों और जिलों में फैल गए, जब तक कि वे एक ऐसे रेगिस्तान में नहीं पहुँच गए जहाँ एक विशाल खुला मैदान था, पहाड़ियों और पर्वतों से मुक्त, और उसमें

झरने फूट रहे थे और नदियाँ बह रही थीं। तब उन्होंने कहा, "यही वह स्थान है जिसे राजा ने हमें खोजने का आदेश दिया था, और हमें खोजने के लिए बुलाया था।" फिर उन्होंने समस्त पृथ्वी के राजा शेद्दाद के निर्देशानुसार शहर का निर्माण कार्य शुरू किया; उन्होंने नदियों के लिए नहरें बनाईं और निर्धारित सीमा के अनुरूप नींव रखी। पृथ्वी के विभिन्न क्षेत्रों के राजाओं ने ऊंटों पर सवार होकर रेगिस्तानों और बंजर भूमि को पार करते हुए रत्न, पत्थर, बड़े और छोटे मोती, कार्नेलियन और शुद्ध सोना भेजा, और समुद्रों के पार बड़े-बड़े जहाज भेजे; और इतनी मात्रा में वस्तुएँ लाई गईं जिनका वर्णन, गणना या परिभाषा संभव नहीं है, और जो इस शहर के निर्माण में तीन सौ वर्षों तक परिश्रम करने वाले कारीगरों के पास पहुँचीं। जब उन्होंने निर्माण कार्य पूरा कर लिया, तो वे राजा के पास आए और उन्हें इसकी पूर्णता की सूचना दी; और राजा ने उनसे कहा, "जाओ, और इसके चारों ओर ऊँची, अभेद्य किलेबंदी करो, और किलेबंदी के चारों ओर एक हजार मंडप बनाओ, जिनमें से प्रत्येक के नीचे एक हजार स्तंभ हों, ताकि प्रत्येक मंडप में एक वज़ीर हो।" अतः वे तुरंत चले गए और बीस वर्षों में यह कार्य पूरा किया; जिसके बाद वे शेद्दाद के समक्ष उपस्थित हुए और उन्हें अपनी इच्छा की पूर्ति की सूचना दी। इसलिए उन्होंने अपने हज़ार वज़ीरों, अपने प्रमुख अधिकारियों और अपने सैनिकों एवं अन्य विश्वासयोग्य व्यक्तियों को प्रस्थान की तैयारी करने और विश्व के राजा, आद के पुत्र शेद्दाद के साथ इरेम ज़ात अल-'एमाद जाने की तैयारी करने का आदेश दिया। उन्होंने अपनी चुनी हुई स्त्रियों और हरम की दासियों तथा हिजड़ों को भी साज-सामान तैयार करने का आदेश दिया। और उन्होंने बीस वर्ष साज-सामान तैयार करने में व्यतीत किए। तब शेद्दाद अपने सैनिकों के साथ अपनी इच्छा की पूर्ति पर प्रसन्न होते हुए तब तक आगे बढ़े जब तक कि उनके और इरेम ज़ात अल-'एमाद के

बीच एक दिन की यात्रा की दूरी शेष नहीं रह गई। जब अल्लाह ने उस पर और उसके साथ आए हठी काफिरों पर अपनी सामर्थ्य के आकाश से एक ज़ोरदार पुकार भेजी, और उस पुकार की तीव्रता से वे सब नष्ट हो गए। 6 न तो शेद्दाद और न ही उसके साथियों में से कोई उस नगर तक पहुँचा या उसे देख पाया, और अल्लाह ने उस नगर तक जाने वाले मार्ग के निशान मिटा दिए; परन्तु वह नगर क़यामत के दिन तक अपने स्थान पर यथावत बना रहेगा। काब-अल-अहबार द्वारा सुनाई गई इस कथा को सुनकर मुआविया को आश्चर्य हुआ और उसने उससे कहा, क्या कोई मनुष्य उस नगर तक पहुँच सकता है? - हाँ, काब-अल-अहबार ने उत्तर दिया: मुहम्मद (उन पर आशीर्वाद और शांति हो!) के साथियों में से एक, जो निःसंदेह यहाँ बैठे इस व्यक्ति के समान शक्ल का है। — एश-शाबी 57 में यह भी कहा गया है कि यमन के हेमियर के विद्वानों के हवाले से यह बताया गया है कि जब शेद्दाद और उसके साथियों को तेज चीख से नष्ट कर दिया गया, तो उसका पुत्र 53 यहाँ यह जोड़ा गया है, "और पृथ्वी पर शासन करने वाले राजाओं की संख्या तीन सौ और साठ थी।" लेकिन यह उस बात से मेल नहीं खाता जो पहले कही जा चुकी है। यह आद जनजाति की अंतिम विपत्ति नहीं थी। इस पूरी जनजाति के कुछ लोग, पैगंबर हुड की चेतावनियों को अस्वीकार करते हुए, गर्म और दम घोंटने वाली हवा से नष्ट हो गए। मूल में, "मुहेंदीसीन" शब्द का प्रयोग अक्सर वास्तुकारों और इंजीनियरों के लिए किया जाता है। एक परंपरावादी थे जिनका उपनाम एशके शाबी था, एक अन्य जिनका उपनाम एश-शोबी था, और एक तीसरे जिनका उपनाम एश शेबी था; और काहिरा संस्करण में, मैंने "अमूद" (स्तंभ) पढ़ा है, जो ब्रेस्लाउ के संस्करण में दिए गए विवरण के अनुरूप है। इनमें से किसका यहाँ अर्थ है, यह मुझे नहीं पता, क्योंकि छोटे स्वर चिह्न नहीं लिखे गए हैं।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.49%** है।

उसके बाद शेद्दाद छोटा शासक बना: क्योंकि उसके पिता शेद्दाद बड़ा ने उसे हाद्रम और सेबा की भूमि में अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनाया था, जब वह अपने साथ आए सैनिकों के साथ इरेम ज़ात अल-इमाद के लिए रवाना हुआ था। और जैसे ही उसे इरेम शहर पहुँचने से पहले रास्ते में अपने पिता की मृत्यु की खबर मिली, उसने आदेश दिया कि उसके पिता के शव को उन रेगिस्तानी इलाकों से हाद्रम तक लाया जाए और एक गुफा में उसके लिए एक समाधि खुदवाई जाए। और जब उन्होंने ऐसा कर लिया, तो उसने उसके शरीर को सोने के पलंग पर रखा और शव को सोने से बुने और कीमती रत्नों से सजे सत्तर वस्त्रों से ढक दिया; और उसने उसके सिर के पास सोने की एक पट्टिका रखी, जिस पर ये छंद खुदे हुए थे: — हे लंबी आयु से धोखा खाए हुए! मैं शेद्दाद, आद का पुत्र, मजबूत किले का स्वामी हूँ; हे शक्ति, सामर्थ्य और असाधारण पराक्रम के स्वामी! पृथ्वी के निवासी मेरी कठोरता और धमकियों से भयभीत होकर मेरी आज्ञा मानते थे; और मैंने पूर्व और पश्चिम पर अपना मजबूत प्रभुत्व स्थापित किया। सच्चे धर्म के एक उपदेशक ने हमें सही मार्ग की ओर आमंत्रित किया; परन्तु हमने उसका विरोध किया और कहा, क्या इससे कोई शरण नहीं है? तभी दूर क्षितिज से एक ज़ोरदार चीख हम पर पड़ी; और हम फसल कटाई के समय मैदान में गिरे अनाज की तरह गिर पड़े; और अब, पृथ्वी के नीचे, हम उस प्रलोभित दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं। — एथ-था'अलिबी भी कहते हैं, ऐसा हुआ कि दो मनुष्य इस गुफा में प्रवेश कर गए, और इसके ऊपरी सिरे पर कुछ सीढ़ियाँ पाईं; और इनसे नीचे उतरकर उन्होंने एक गड्ढा पाया, जिसकी लंबाई सौ क्यूबिट, चौड़ाई चालीस क्यूबिट और ऊँचाई सौ क्यूबिट थी। और इस खुदाई के बीच में

सोने का एक पलंग था, जिस पर एक विशालकाय आदमी था, जो इसकी पूरी लंबाई और चौड़ाई को घेरे हुए था, 58 पैगंबर हुड, जिसे आम तौर पर हेबर माना जाता है।

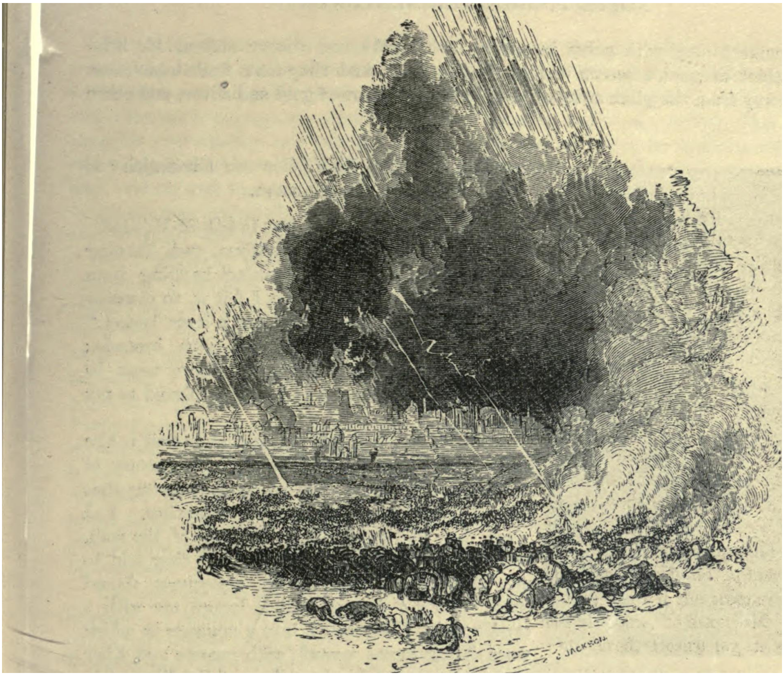

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.04%** है।

अध्याय ग्यारह के नोट्स: आभूषणों से सुसज्जित और सोने-चांदी से बुने हुए वस्त्रों से युक्त; और उनके सिर पर सोने की एक पट्टिका थी, जिस पर एक शिलालेख था। और उन्होंने वह पट्टिका ले ली, और उस स्थान से जितना हो सके सोने-चांदी की छड़ें और अन्य वस्तुएँ ले गए। इसहाक अल-मदसिली, खदीजेह और अल-मामून का एक नोट। इसहाक अल-मदसिली कहते हैं, "एक रात मैं अल-मामून की उपस्थिति से बाहर निकला, और एक गली में मुड़कर मैंने वहाँ के एक घर से कुछ लटका हुआ देखा। इसलिए मैंने यह जानने के लिए उसे छुआ कि वह क्या है,

और पाया कि वह एक बड़ी टोकरी थी, जिसमें चार मूठ थे, और वह जकूज़ी से ढकी हुई थी; जिस पर मैंने मन ही मन कहा, इसका कोई कारण अवश्य होगा। और मैं अपनी स्थिति को लेकर व्याकुल था। नशे में होने के कारण मैं टोकरी में बैठ गया;" और जब मैंने ऐसा किया, तो देखो, घर के लोगों ने मुझे उसमें बिठाकर उसे ऊपर खींच लिया, यह सोचकर कि मैं वही व्यक्ति हूँ जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे थे। और जब उन्होंने उसे दीवार के ऊपर तक उठा लिया, तो देखो, वहाँ चार युवतियाँ थीं, और उन्होंने मुझसे कहा, नीचे उतरो, और तुम्हें भरपूर आनंद मिले। फिर एक युवती मोमबत्ती लेकर मेरे आगे-आगे चलती रही जब तक कि मैं एक ऐसे महल में नहीं उतर गया जिसमें कालीनों और अन्य फर्नीचर से सजे बैठक कक्ष थे, ऐसे कक्ष मैंने खलीफा के महल के अलावा कहीं नहीं देखे थे। और थोड़ी देर बैठने के बाद, अचानक कमरे के एक तरफ से कुछ पर्दे उठे, और देखो, दासियाँ अपने हाथों में मोमबत्तियाँ और अगरबत्ती से भरे सुगंधित बर्तन लिए अंदर आईं; और उनमें से एक युवती उगते हुए पूर्णिमा के चाँद की तरह चमक रही थी। तो मैं उठा; और उसने कहा, तुम्हारा स्वागत है। फिर मुझे बैठने के लिए कहकर, उसने मुझसे मेरी कहानी पूछी। इसलिए मैंने उसे उत्तर दिया, मैं अपने कुछ भाइयों के साथ आया था, और इस गली में मुड़कर मैंने एक टोकरी नीचे लटकी हुई देखी; शराब के नशे में मैं उसमें बैठ गया, और वह मुझे सहित इस घर तक खींच लाई गई। मैंने कहा, यही मेरी स्थिति है। उसने कहा, तुम्हें कोई हानि नहीं होगी, और मुझे आशा है कि तुम अपने इस साहसिक कार्य के परिणाम से संतुष्ट होगे। उसने आगे पूछा, तुम्हारा पेशा क्या है? मैंने उत्तर दिया, बगदाद के बाज़ार में एक व्यापारी। उसने कहा, क्या तुम कुछ कविताएँ सुना सकते हो? मैंने उत्तर दिया, कुछ छोटी-मोटी रचनाएँ। उसने कहा, तो हमें उनका उल्लेख करो और उनमें से कुछ सुनाओ। लेकिन मैंने उत्तर दिया, आगंतुक

संकोची है: तुम ही शुरू करो। उसने कहा, तुमने सही कहा। और उसने प्राचीन और आधुनिक कवियों की कुछ सुंदर कविताएँ सुनाईं, उनकी कुछ सबसे प्रशंसनीय रचनाएँ; और मैंने सुना, और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं उसकी सुंदरता और मनमोहकता पर सबसे अधिक आश्चर्यचकित होऊं या उसके गायन की आकर्षक शैली पर। इसके बाद उसने कहा, क्या तुम्हारा संकोच दूर हो गया है? - हां, अल्लाह की कसम, मैंने उत्तर दिया। और उसने कहा, यदि तुम चाहो, तो हमें कुछ ऐसा सुनाओ जो तुम सुना सकते हो। तो मैंने उसे कई पुराने लेखकों की बहुत सी रचनाएँ सुनाईं; और उसने उन्हें सराहा, और कहा, अल्लाह की कसम, मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि आम लोगों में ऐसा कोई हो सकता है। - एक बहुत प्रसिद्ध संगीतकार, और खली-मा-मून का प्रिय साथी। वह इब्राहीम अल-मसीली का पुत्र था। अध्याय 12, 60 के नोट 22 देखें। इस प्रकार की टोकरी, जिसे "ज़ेम्बील" या "ज़िम्बील" कहा जाता है, ताड़ के पत्तों से बनी होती है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.39%** है।

ग्यारहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। फिर उसने भोजन लाने का आदेश दिया;

और भोजन लाया गया, और वह मेरे सामने रखने लगी; वहाँ कई प्रकार के सुगंधित फूल थे, साथ में ऐसे फल भी थे जो आमतौर पर राजाओं के निवास के अलावा कहीं और नहीं मिलते। बाद में उसने शराब मंगवाई, और एक प्याला पीकर मुझे दिया और कहा, "यह बातचीत और कहानियाँ सुनाने का समय है।" इसलिए मैंने उससे बातचीत शुरू की, और कहा कि मुझे बताया गया है कि ऐसी-ऐसी घटनाएँ हुईं, और एक आदमी ने ऐसा-वैसा कहा, — जब तक कि मैंने उसे कई मनोरंजक कहानियाँ नहीं सुना दीं; जिनसे वह प्रसन्न हुई; और उसने कहा, "मुझे आश्चर्य है कि एक व्यापारी इस तरह की कहानियाँ कैसे दोहरा सकता है; क्योंकि ये तो राजाओं के लिए उपयुक्त हैं।" तो मैंने कहा, "मेरा एक पड़ोसी था जो राजाओं से बातचीत करता था और उनका शुभचिंतक था।" और जब वह खाली होते थे, तो मैं उनके घर जाया करती थी, और कभी-कभी वह मुझे वो बातें सुनाते थे जो तुमने सुनी थीं। — और उसने उत्तर दिया, मेरी कसम, तुमने उन्हें अच्छी तरह याद रखा है। हमारी बातचीत जारी रही, जब भी मैं चुप होती, वह बोलना शुरू कर देती, जब तक कि रात का अधिकांश भाग बीत नहीं गया, अगरबत्ती की खुशबू हवा में लगातार फैली हुई थी; और मैं ऐसी अवस्था में थी कि अगर एल-मा-मून इसकी कल्पना कर पाते, तो वह इसका आनंद लेने के लिए बेताब हो जाते। फिर उसने कहा, सचमुच तुम सबसे सुखद और सभ्य पुरुषों में से एक हो; क्योंकि तुम असाधारण रूप से अच्छे संस्कार वाले व्यक्ति हो; और बस एक ही कमी है। — और क्या, मैंने कहा, वह क्या है? उसने उत्तर दिया, क्या तुम वीणा की धुन पर कविताएँ गा सकते हो? तो मैंने उत्तर दिया, मैं पुराने समय में इस कला में अपना समय व्यतीत करता था; लेकिन इसमें प्रतिभा न होने के कारण, मैंने इसे छोड़ दिया। और इसी कारण मेरा हृदय प्रज्वलित है। मैं इस अवसर पर कुछ अच्छा गाना चाहूँगा, ताकि मेरी रात

का आनंद पूर्ण हो सके। यह सुनकर उसने कहा, लगता है तुमने वीणा लाने का प्रस्ताव रखा है। मैंने उत्तर दिया, यह तुम्हारा निर्णय है: तुम कृपा करने वाली हो, और तुम्हारी दयालुता के लिए धन्यवाद की पात्र हो। और उसने वीणा लाने का आदेश दिया; और जब वीणा लाई गई, तो उसने ऐसी मधुरता, मनमोहक अंदाज़, सुरों को बजाने की अद्भुत कुशलता और पूर्ण उत्कृष्टता के साथ गाया, जिसकी मैंने पहले कभी बराबरी नहीं की थी। इसके बाद उसने कहा, क्या तुम जानते हो कि यह धुन किसने रची है, और इसके बोल किसके हैं? मैंने उत्तर दिया, नहीं। और उसने कहा, इसके बोल फलां व्यक्ति के हैं, और धुन इसहाक की है। मैंने कहा, और क्या इसहाक (मैं तुम्हारा उद्धार करूँ!) इतनी प्रतिभा से संपन्न है? - अद्भुत! अद्भुत! वह बोली: इस कला में इसहाक सबसे श्रेष्ठ है। मैंने कहा, अल्लाह की महिमा हो, जिसने इस व्यक्ति को वह दिया है जो उसने उसके सिवा किसी और को नहीं दिया! उसने आगे कहा, अगर तुम उसके द्वारा गाए गए इस गीत को सुनती तो तुम कितनी मोहित हो जाती! इस प्रकार हम भोर तक समय बिताते रहे, तभी एक बूढ़ी औरत, जो उसकी दाई लग रही थी, ने उससे कहा, समय आ गया है। यह सुनकर वह उठी और बोली, हमारे आचरण को गुप्त रखना; क्योंकि सामाजिक सभाएँ गोपनीय होती हैं। मैंने उत्तर दिया: मैं तुम्हारी सेवा करूँगी! मुझे इस विषय पर कोई शुल्क नहीं चाहिए। फिर मैंने उसे विदा किया, और उसने एक युवती को मेरे आगे घर के दरवाजे तक भेजा, और उसने मेरे लिए दरवाजा खोला, और मैं अपने घर चली गई। वहाँ पहुँचकर मैंने सुबह की नमाज़ पढ़ी और सो गई; तभी अल-मामून का दूत मेरे पास आया; इसलिए मैं उसके पास गया और उस दिन उसके साथ रहा। जब रात हुई, तो मैंने पिछली रात के सुख के बारे में सोचा, और वह ऐसा सुख था जिससे केवल मूर्ख ही वंचित रह सकता था। इसलिए मैं बाहर गया और टोकरी के

पास आकर उसमें बैठ गया, और उसी जगह पर खींच लिया गया जहाँ मैं पिछली रात था। उस युवती ने मुझसे कहा, तुम बहुत मेहनती रहे हो। लेकिन मैंने उत्तर दिया, मुझे नहीं लगता कि मैं लापरवाह के अलावा कुछ और था। फिर हम पिछली रात की तरह बातें करते रहे, हममें से हर कोई बातचीत के विषय बनाता रहा, कविताएँ सुनाता रहा और अजीबोगरीब कहानियाँ सुनाता रहा, भोर तक; फिर मैं अपने घर चला गया, सुबह की नमाज़ पढ़ी और सो गया। फिर अल-मा-मून का दूत मेरे पास आया, और मैं उसके पास गया; और उसके साथ दिन बिताने के बाद, जब रात हुई, तो राजकुमार आया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.77%** है।

अध्याय ग्यारह के लिए 310 टिप्पणियाँ। वफादार ने मुझसे कहा, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम यहाँ तब तक बैठे रहो जब तक मैं जाकर अपना उद्देश्य पूरा करके वापस न आ जाऊँ। लेकिन जब खलीफा मुझसे दूर चले गए, तो मेरे मन में बेचैनी भरे विचार उठने लगे, और अपने बीते हुए सुखों पर विचार करते हुए, मुझे लगा कि वफादारों के राजकुमार से मुझे जो कुछ भी मिलेगा, वह मेरे लिए महत्वहीन होगा। इसलिए मैं उछलकर एकांत में चला गया, और दौड़ता हुआ टोकरी तक पहुँचा; फिर मैं उसमें बैठ गया, और वह मेरे साथ उस स्थान पर खींच ली गई जहाँ मैं पहले गया था; और युवती ने कहा, शायद तुम हमारे मित्र हो? - हाँ, अल्लाह की कसम, मैंने उत्तर दिया। - और उसने कहा, क्या तुमने हमारे घर को अपना निवास स्थान बना लिया है? मैंने उत्तर दिया, मैं तुम्हारा बलिदान बनूँ! एक अजनबी को आतिथ्य का अधिकार तीन दिनों के लिए होता है; और यदि मैं उस अवधि के बाद लौटता हूँ, तो तुम मेरा खून बहाने के लिए स्वतंत्र होगे। — फिर हम पहले की तरह ही बैठकर मनोरंजन

करने लगे; और जब प्रस्थान का समय निकट आया, तो यह जानते हुए कि अल-मा-मून मुझसे अवश्य ही प्रश्न पूछेगा और मामले की व्याख्या के अलावा किसी और बात से संतुष्ट नहीं होगा, मैंने उससे कहा, "मैं तुम्हें उन लोगों में से एक समझती हूँ जिन्हें गायन में आनंद आता है, और मेरा एक चचेरा भाई है जो मुझसे अधिक सुंदर, उच्च पद का और अधिक कुशल है, और वह ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) के सभी प्राणियों में इसहाक से सबसे अधिक परिचित है।" इस पर उसने कहा, "क्या तुम भीख माँगने वाले हो और कोई अनुचित अनुरोध कर रहे हो?" मैंने उसे उत्तर दिया, "तुम इस मामले की निर्णायक हो।" और उसने उत्तर दिया, "यदि तुम्हारा चचेरा भाई वैसा ही है जैसा तुमने बताया है, तो हमें उससे मिलने में कोई आपत्ति नहीं होगी।" — फिर समय आ गया, और मैं उठी और घर की ओर चल पड़ी। लेकिन मेरे घर पहुँचने से पहले ही, अल-मा-मून के दूत मुझ पर टूट पड़े, और मुझे जबरदस्ती उसके पास ले गए। मैंने उसे सिंहासन पर बैठा पाया, और वह मुझसे क्रोधित था; उसने कहा, हे इसहाक, क्या तूने अपनी निष्ठा से विमुख हो गया है? मैंने उत्तर दिया, नहीं, अल्लाह की कसम, हे धनी के सरदार। उसने कहा, तो फिर तेरी कहानी क्या है? मुझे सच्चाई से बता। मैंने उत्तर दिया, ठीक है; लेकिन एकांत में। तब उसने अपने सामने खड़े लोगों को इशारा किया; जिसके बाद वे चले गए; और मैंने उसे पूरी कहानी सुनाई, और उससे कहा, मैंने उससे वादा किया था कि तू उससे मिलने जाएगा। और उसने कहा, तूने अच्छा किया। फिर हम उस दिन अपने सामान्य सुखों में मग्न हो गए; लेकिन अल-मामून का दिल उस युवती पर लगा हुआ था; और नियत समय आते-आते हम वहां से चले गए। मैंने उसे चेतावनी दी, उसके सामने मेरा नाम मत लेना; और उसके सामने ऐसे रहना जैसे तू मेरा सेवक हो। और हम इस विषय पर सहमत हो गए। हम आगे बढ़ते रहे जब तक कि

हम उस स्थान पर नहीं पहुँच गए जहाँ टोकरी लटकी हुई थी, और हमें वहाँ दो टोकरियाँ मिलीं: इसलिए हम उनमें बैठ गए, और वे हमारे साथ उसी स्थान पर खींच ली गईं। फिर युवती आगे बढ़ी और हमें प्रणाम किया; और जब अल-मा-मून ने उसे देखा, तो वह उसकी सुंदरता और आकर्षण पर चकित रह गया। उसने उसे कहानियाँ सुनाना और कविताएँ पढ़ना शुरू किया, और बाद में शराब मंगवाई, और हमने पी; उसने उसे अपना विशेष स्नेह दिया, और उसकी संगति में आनंदित हुई, और उसने भी उसे वही स्नेह दिया, और उसके साथ उतना ही प्रसन्न हुआ। फिर उसने वीणा उठाई, और ये छंद गाए: — fl3 प्रियतम रात ढलते समय मुझसे मिलने आया। मैं उसका सम्मान करने के लिए तब तक खड़ी रही जब तक वह बैठ नहीं गया। मैंने कहा, हे मेरे प्रियतम, और मेरी सारी इच्छा, क्या तुम आज रात आए हो और पहरे से नहीं डरे? उसने उत्तर दिया, प्रेम में डूबे हुए को डर लगता है: लेकिन उसकी इच्छा ने उसे उसकी बुद्धि से विवश कर दिया था। 61 अतः पहले दो मुस्लिम ग्रंथों के कलकत्ता संस्करण में, ये कविताएँ उनके सौ रातों के संदर्भ में ध्यान देने योग्य हैं: काहिरा संस्करण में "लेकिन मैं सुलेमान के गीत से उल्लेखनीय समानता रखूँगा; और, तेरा सेवक बनूँगा।" जैसा कि श्री लेन टिप्पणी करते हैं, C2 पहले दो के कलकत्ता संस्करण से, बाद वाले के उद्देश्य के प्रश्न का निर्णय करते हैं। वे स्पष्ट रूप से सौ रातों के विषय हैं, खंड 1, पृष्ठ 425। [ये छंद, पैगंबर को संबोधित, आध्यात्मिक अर्थ में, और थोड़े भिन्न, उन लोगों द्वारा समझे जाने वाले मुवेशशाहों, या धार्मिक प्रेम-गीतों में से एक का निष्कर्ष बनाते हैं जो उन्हें गाते हैं, हालाँकि आम लोग उन्हें मानवीय प्रेम पर लागू करते हैं, मिस्र में ज़िक्रों में गाए जाते हैं, और आधुनिक मिस्रियों में उद्धृत हैं- आधुनिक मिस्रियों, खंड U- अध्याय 10j देखें। - एप।]

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

27.46% है।

ग्यारहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 31 1 तब उसने मुझसे कहा, “और क्या तुम्हारा चचेरा भाई व्यापारियों में से है?” और उसने अल-मामून की ओर इशारा किया। मैंने उत्तर दिया, “हाँ।” और उसने कहा, “सचमुच तुम दोनों एक-दूसरे से मिलते-जुलते हो।” मैंने उत्तर दिया, “हाँ।” और जब अल-मामून ने तीन पाइंट पी लिए,63 खुशी और उल्लास से भर कर उसने पुकारा, “ओ इसहाक!” मैंने उत्तर दिया, “आपकी सेवा में, हे विश्वासियों के राजकुमार।” — “गाओ,” उसने कहा। और जब उस युवती को पता चला कि वह खलीफा है, तो वह दूसरे कमरे में चली गई। इसलिए जब मैंने अपना गीत समाप्त कर लिया, तो अल-मामून ने मुझसे कहा, “देखो इस घर का मालिक कौन है?” इस पर एक बूढ़ी औरत ने तुरंत उत्तर दिया, “यह अल-हसन, सहल के बेटे का है।” और उसने कहा, उसे मेरे पास लाओ। बुढ़िया कुछ देर के लिए अनुपस्थित रही, और तभी हसन अंदर आया। मामून ने उससे पूछा, क्या तुम्हारी कोई बेटी है? उसने उत्तर दिया, हाँ, उसका नाम खदीजा है।64 खलीफा ने पूछा, क्या उसकी शादी हो चुकी है? हसन ने उत्तर दिया, नहीं, अल्लाह की कसम। तब मामून ने कहा, मैं उसे तुमसे अपनी पत्नी के रूप में मांगता हूँ। हसन ने उत्तर दिया, वह तुम्हारी दासी है, और तुम्हारे अधीन है, ऐ अमीरुल मोमिनीन। खलीफा ने कहा, मैं उससे इस शर्त पर विवाह करता हूँ कि मैं दहेज के रूप में तीस हजार सोने के सिक्के नकद दूँ, जो तुम्हें कल सुबह दिए जाएँगे; इसलिए, जब तुम्हें पैसे मिल जाएँ, तो अगली रात उसे हमारे पास ले आना। उसने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। फिर हम आगे बढ़े; और उसने कहा, ऐ इसहाक, यह कहानी किसी को मत बताना। इसलिए मैंने अल-मामून की मृत्यु तक इसे गुप्त रखा। इन चार दिनों में, दिन में अल-मामून और रात में खदीजेह के साथ रहकर, मुझे जो सुख प्राप्त हुए, वैसे

सुख मुझे पहले कभी नहीं मिले थे। अल्लाह की कसम, मैंने अल-मामून जैसा कोई पुरुष नहीं देखा, और खदीजेह जैसी कोई स्त्री नहीं देखी, न ही कोई ऐसी स्त्री देखी जो बुद्धि, समझ और वाक्पटुता में उसके करीब भी आती हो। और अल्लाह सर्वज्ञ है। [कुछ अरब लेखकों ने, उचित कारण से ही सही, इस किस्से को इसहाक की कल्पना बताया है। यह सर्वविदित है कि अल-मामून ने अपने वज़ीर अल-हसन, जो सहल के पुत्र थे, की पुत्री से विवाह किया था; लेकिन उनका उससे उपरोक्त वर्णित तरीके से परिचय होना अत्यंत असंभव है। विवाह वासित के पास, टिगरिस नदी के किनारे, फर्न एस-सिल्ह में हुआ था, और इसे इतने भव्य तरीके से मनाया गया था कि विश्वास करना मुश्किल है।] दुल्हन के पिता अल-हसन ने उपस्थित अधिकारियों और अन्य प्रमुख व्यक्तियों में हेज़लनट के आकार के कस्तूरी के गोले बिखेर दिए, जिनमें जमीनों और दासियों के नाम, तथा पशुओं का विवरण आदि लिखे हुए कागज थे। जिसके भी हाथ में वह गोला गिरता, उस कागज पर लिखे नाम या विवरण वाली संपत्ति उसे सौंप दी जाती, चाहे वह जमीन का टुकड़ा हो, कोई अन्य संपत्ति हो, घोड़ा हो, दासी हो या मेमलुक हो। इसके बाद, उन्होंने शेष लोगों में सोने-चांदी के सिक्के, कस्तूरी की थैलियाँ और अंबरग्रीस के गोले बिखेर दिए। उन्होंने अल-मा-मून और उनके साथियों, तथा उनके सभी सैनिकों और अन्य परिचारकों, जिनकी संख्या अनगिनत थी, यहाँ तक कि ऊँट चालकों, पशुओं के किराए पर रखे गए चालकों और नाविकों के मनोरंजन पर इतना खर्च किया कि किसी को भी अपने लिए या अपने पशु के लिए कुछ भी खरीदने की आवश्यकता नहीं पड़ी। कहा जाता है कि अल-मा-मून उन्नीस दिनों तक अल-हसन के साथ रहे, और अल-हसन ने खलीफा और उनके साथ रहने वाले सभी लोगों को प्रतिदिन उनकी आवश्यकता की हर चीज मुहैया कराई; और उन पर उन्होंने पचास मिलियन चांदी के

सिक्के खर्च किए।66 अल-मा-मून ने अपने प्रस्थान पर दस मिलियन चांदी के सिक्के भेंट करने का आदेश दिया, और उन्हें एस-सिल्ह को संपत्ति के रूप में आवंटित किया; जिसके बाद अल-हसन ने बैठकर अपने सरदारों, साथियों और दल में धन वितरित किया। अल-मा-मून ने उन्हें फारिस और अल-अहवाज़ शहरों का राजस्व एक वर्ष की अवधि के लिए सौंप दिया। यह भी बताया जाता है कि जब अल-मा-मून पहली बार 63 खंड 1. पृष्ठ 197. 65 शाब्दिक रूप से, "अंडे।" -» उनका असली नाम, या वह नाम जिससे वह आमतौर पर जानी जाती थीं, बोरान था। लगभग सवा दस लाख पाउंड स्टर्लिंग के बराबर।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **23.34%** है।

अध्याय ग्यारह के 312 नोट्स। दुल्हन के कमरे में प्रवेश किया और उसके साथ बैठ गया, उसकी दादी ने सोने की थाली से उन दोनों पर एक हजार बड़े मोती बिखेर दिए; और उस रात सोने के लालटेन में चालीस मेन्यू के वजन वाली अंबरग्रीस की मोमबत्ती जलाई गई; लेकिन अल-मामून ने इसे अस्वीकार कर दिया और इसे फिजूलखर्ची बताया। संभवतः मोम से बना, जिसमें "टॉर" मिला हुआ था; लेकिन मुझे लगता है कि यह अंबरग्रीस प्रेस की गलती है, और सही पाठ "टेनूर" है। 68 "मेनू" को आम तौर पर दो पाउंड कहा जाता है। •< > इब्न-खल्लिकान, डी स्लैंक का संस्करण, खंड 1, पृष्ठ 130-8। जिस पाठ से मैं अनुवाद कर रहा हूँ, उसमें "टूर' या

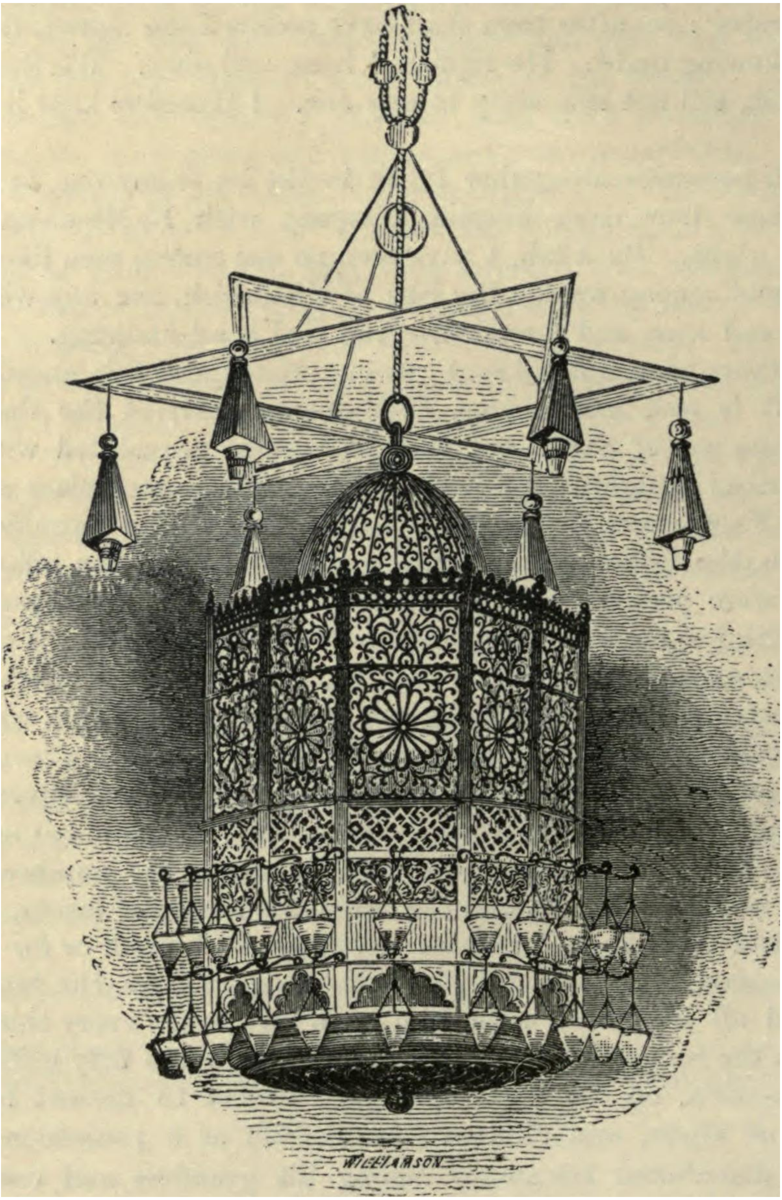

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.35%** है।

अध्याय XII. मुख्यतः बुएस्लाउ के संस्करण से, दो सौ इकहत्तरवीं रात से शुरू होकर दो सौ नब्बेवीं रात पर समाप्त। अबू-अल-हसन (मज़ाकिया)

की कहानी, या जागते हुए सोने वाले की कहानी।1 खलीफा हारून-ए-रशीद के शासनकाल में बगदाद में एक व्यापारी था, जिसका एक बेटा था जिसका नाम अबू-अल-हसन (मज़ाकिया) था।2 इस व्यापारी की मृत्यु हो गई और वह अपने बेटे के लिए अपार धन छोड़ गया। इस पर अबू-अल-हसन ने अपनी संपत्ति को दो बराबर भागों में बाँट दिया, एक भाग उसने अलग रख दिया और दूसरे भाग को खर्च कर दिया। उसने व्यापारियों के कई बेटों को अपना घनिष्ठ मित्र बना लिया। ii. 2 s

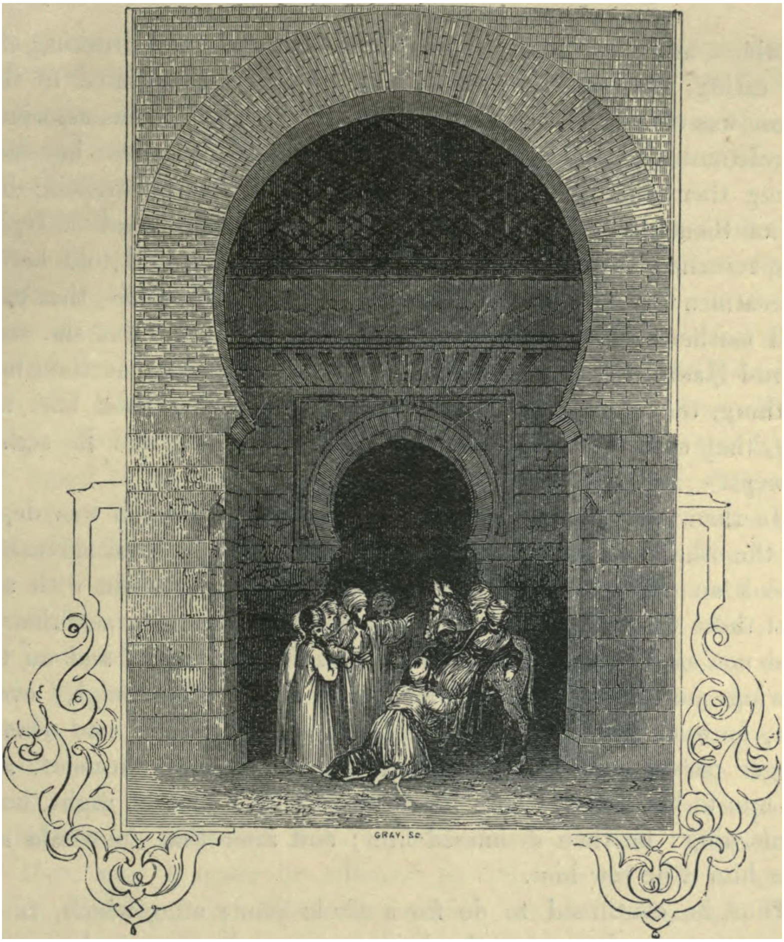

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

27.31% है।

314 अबू-अल-हसन (मज़ाकिया) और अन्य लोगों की कहानी: उसने खूब मौज-मस्ती की और खाने-पीने में इतना मग्न हो गया कि इस उद्देश्य के लिए जमा किया गया सारा धन समाप्त हो गया। इसके बाद वह अपने साथियों, रिश्तेदारों और घनिष्ठ मित्रों के पास गया और उन्हें अपनी आपबीती सुनाई कि उसके पास कितनी कम संपत्ति बची है; परन्तु उनमें से किसी ने भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया और न ही कोई उत्तर दिया। इसलिए वह टूटे हृदय से अपनी माता के पास लौटा और उन्हें अपने साथियों के व्यवहार के बारे में बताया कि उन्होंने न तो उनके साथ न्याय किया और न ही उन्हें कोई उत्तर दिया। पर उनकी माता ने कहा, "हे अबू-अल-हसन, इस युग के पुत्र ऐसे ही हैं: जब तक तुम्हारे पास कुछ होता है, वे तुम्हें अपने पास बुलाते हैं; और जब तुम्हारे पास कुछ नहीं बचता, तो वे तुम्हें त्याग देते हैं।" माता को उस पर बहुत दुख हुआ और वह आहें भरते हुए रोने लगा। फिर वह उछलकर उस जगह गया जहाँ उसकी आधी संपत्ति जमा थी, और उसी पर सुखपूर्वक रहने लगा। उसने शपथ ली कि वह अब से अपने किसी भी परिचित से मेलजोल नहीं रखेगा, बल्कि केवल अजनबी से ही मिलेगा, और किसी से भी एक रात से अधिक नहीं मिलेगा, और अगली सुबह उसे पहचान भी नहीं पाएगा। तदनुसार, हर रात वह पुल पर जाकर बैठ जाता, और जब कोई अजनबी वहाँ से गुजरता, तो वह उसे दावत में आमंत्रित करता और अपने घर ले जाता, जहाँ वह उस रात उसके साथ सुबह तक मौज-मस्ती करता; फिर उसे विदा कर देता; और उसके बाद, अगर वह उसे देखता तो उसे नमस्कार भी नहीं करता। इस प्रकार वह पूरे एक वर्ष तक करता रहा; जिसके बाद, एक दिन जब वह हमेशा की तरह पुल पर बैठा यह देखने के लिए कि कौन आता है, तो एर-रशीद और उसके कुछ नौकर भेस बदलकर वहाँ से

गुजरे; क्योंकि खलीफा के मन में कुछ हलचल हुई थी, और वह लोगों के बीच मनोरंजन करने के लिए बाहर आया था। तो अबू हसन ने उसे पकड़ लिया और उससे कहा, "हे मेरे स्वामी, क्या आप भोजन और पेय लेना चाहते हैं?" और रशीद ने उसकी बात मान ली और कहा, "चलिए।" अबू हसन को पता नहीं था कि उसका मेहमान कौन है। खलीफा उसके साथ तब तक चलता रहा जब तक वे अबू हसन के घर नहीं पहुँच गए। जब रशीद अंदर गया, तो उसने वहाँ एक ऐसा रसोईघर देखा, जिसे देखकर और उसकी दीवारों की ओर देखकर आश्चर्य होता; और यदि उसकी जल-वाहन नलियों को देखता, तो मानो सोने से जड़ा हुआ फव्वारा दिखाई देता। वहाँ बैठने के बाद, अबू हसन ने एक दासी को बुलाया, जो पूर्वी विलो की टहनी जैसी थी। उसने वीणा उठाई और बिना तैयारी के ये छंद गाए:

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.03%** है।

या नींद से जागा हुआ व्यक्ति। 315 हे मेरे हृदय में सदा निवास करने वाले, यद्यपि तेरा स्वरूप मेरी दृष्टि से ओझल है, तू ही मेरी आत्मा है; यद्यपि मैं इसे देख नहीं पाता, फिर भी यह मेरे लिए किसी भी अन्य वस्तु से अधिक निकट है। और जब एर-रशीद ने ये आयतें सुनीं, तो उसने उससे कहा, तूने अच्छा कार्य किया है। अल्लाह तुझे आशीर्वाद दे! — उसकी वाक्पटुता ने उसे प्रसन्न किया, और वह अबू-अल-हसन और उसके आतिथ्य सत्कार पर आश्चर्यचकित हुआ। फिर उसने अबू-अल-हसन से कहा, हे नौजवान, तू कौन है? मुझे अपना इतिहास बता, ताकि मैं तेरी कृपा का प्रतिफल दे सकूँ। — परन्तु अबू-अल-हसन मुस्कुराया, और उत्तर दिया, हे मेरे स्वामी, ऐसा कभी न हो कि जो हुआ है वह पुनः घटे, और मैं इस बार के बाद फिर कभी आपकी संगति में रहूँ! — और ऐसा

क्यों? खलीफेब ने कहा, और तू मुझे अपना मामला क्यों नहीं बताता? — तो अबू हसन ने उन्हें अपनी कहानी सुनाई, और जब खलीफा ने इसे सुना, तो वे ज़ोर से हँसे और बोले, अल्लाह की कसम, ऐ मेरे भाई, इस मामले में तुम क्षमायोग्य हो। फिर उनके सामने भुने हुए हंस का एक व्यंजन और एक उत्तम रोटी रखी गई;3 और अबू हसन बैठ गए, और मांस काटकर खलीफा के मुँह में निवाले डाले, और वे तृप्त होने तक खाते रहे; फिर प्याला और सुराही, पोटैशियम के साथ लाए गए;4 और उन्होंने अपने हाथ धोए। इसके बाद, अबू हसन ने अपने अतिथि के लिए तीन मोमबत्तियाँ और तीन दीपक जलाए, शराब का कपड़ा बिछाया, और साफ़ छनी हुई, पुरानी, सुगंधित शराब लाए, जिसकी गंध सुगंधित कस्तूरी जैसी थी, और पहला प्याला भरकर बोले, ऐ मेरे प्रिय मित्र, तुम्हारी अनुमति से हम शर्म से मुक्त हो गए हैं। तुम्हारा दास तुम्हारे साथ है, मुझे कभी तुम्हारे जाने का कष्ट न हो! और उसने पहला प्याला पिया और दूसरा प्याला भर लिया, जिसे उसने खलीफा को सौंप दिया और सेवक की तरह उनकी सेवा की। खलीफा उसके कार्यों और उसकी विनम्रता से प्रसन्न हुए और मन ही मन कहा, अल्लाह की कसम, मैं इसका बदला ज़रूर लूँगा! फिर अबू हसन ने प्याले को चूमकर खलीफा को सौंप दिया। खलीफा ने उसे उसके हाथ से लिया, चूमा और पिया, और फिर उसे वापस दे दिया। अबू हसन उनकी सेवा करता रहा। उसने प्याला भरा और पिया, फिर भरा और तीन बार चूमने के बाद प्याला खलीफा को सौंप दिया, और ये आयतें पढ़ीं: - हमारे बीच आपकी उपस्थिति हमारे लिए सम्मान की बात है, और हम इसे स्वीकार करते हैं; और यदि आप हमारे बीच से अनुपस्थित हो जाते हैं, तो आपके स्थान पर कोई नहीं है। उसने आगे कहा, पीजिए, और आपको स्वास्थ्य और शक्ति मिले। और वे आधी रात तक शराब पीते और मौज-मस्ती करते रहे।5 इसके बाद खलीफा ने अपने मेज़बान से कहा, ऐ

अबू हसन, क्या कोई ऐसी सेवा है जो तुम करवाना चाहते हो, या कोई इच्छा है?

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.54%** है।

316 द ओच7 ऑफ एआई3यू-एल हासक्स द वैग, आदि। कि तुम उन्हें पूरा करवाना चाहते थे? और अबू-1-हसन ने उत्तर दिया, हमारे पड़ोस में एक मस्जिद है, जिसमें एक इमाम और चार शेख हैं, और जब भी वे संगीत या कोई खेल सुनते हैं, तो वे वली को मेरे खिलाफ भड़काते हैं, मुझ पर जुर्माना लगाते हैं, और मेरा जीवन कष्टमय बनाते हैं, जिससे मुझे उनसे पीड़ा सहनी पड़ती है। इसलिए, यदि वे मेरे वश में होते, तो मैं उनमें से प्रत्येक को एक हजार कोड़े मारता, ताकि मैं उनके अत्यधिक कष्ट से मुक्त हो जाता। इलशीद ने उत्तर दिया, अल्लाह तुम्हारी इच्छा पूरी करे! और बिना उसकी जानकारी के, उसने एक प्याले में बेंज की एक गोली डाली और उसे दे दी; और जैसे ही वह उसके पेट में गई, वह तुरंत सो गया। फिर एर-फ्ताशीद उठे और द्वार पर गए, जहाँ उन्होंने अपने जवानों को उनका इंतज़ार करते हुए पाया। उन्होंने उन्हें अबू-अल-हसन को खच्चर पर बिठाकर महल में वापस जाने का आदेश दिया; अबू-अल-हसन नशे में धुत और बेहोश थे। जब खलीफा महल में विश्राम कर चुके, तो उन्होंने अपने वज़ीर जाफ़र, बगदाद के वली अब्दुल्ला (ताहिर के पुत्र) और अपने कुछ प्रमुख सेवकों को बुलाया और उन सभी से कहा, "सुबह जब तुम इस युवक (अबू-अल-हसन की ओर इशारा करते हुए) को राजसी पलंग पर बैठे हुए देखो, तो उसकी आज्ञा का पालन करना, उसे खलीफा कहकर सलाम करना और जो भी वह तुम्हें आज्ञा दे, उसका पालन करना।" फिर अपनी दासियों के पास जाकर उन्होंने उन्हें अबू-अल-हसन की सेवा करने और उन्हें धनी लोगों का सरदार कहकर संबोधित करने का निर्देश दिया;

इसके बाद वे एक एकांत कक्ष में गए और द्वार पर पर्दा गिराकर सो गए। जब अबू हसन जागे, तो उन्होंने स्वयं को राजसी पलंग पर पाया, जहाँ सेवक उनके चारों ओर खड़े होकर ज़मीन चूम रहे थे; तभी एक दासी ने उनसे कहा, "हे हमारे स्वामी, सुबह की नमाज़ का समय हो गया है।" इस पर वे हँसे और चारों ओर देखते हुए उन्होंने एक मंडप देखा जिसकी दीवारें सोने और नीले रंग से सजी थीं, और छत लाल सोने से मढ़ी हुई थी, जिसके चारों ओर रेशमी कढ़ाई वाले पर्दे लगे कमरों से घिरी हुई थीं; उन्होंने सोने, चीनी मिट्टी और क्रिस्टल के बर्तन, फर्नीचर और कालीन, जलते हुए दीपक, दासियाँ, हिजड़े और अन्य सेवक देखे; यह देखकर वे व्याकुल हो गए और बोले, "अल्लाह की कसम, या तो मैं सपना देख रहा हूँ, या यह स्वर्ग है, और शांति का निवास है।" और उन्होंने अपनी आँखें बंद कर लीं। तब एक हिजड़े ने उनसे कहा, "हे मेरे स्वामी, यह आपकी सामान्य प्रथा नहीं है, हे धनियों के सरदार।" और वह अपनी स्थिति से व्याकुल हो गया, और अपना सिर अपनी छाती में रख लिया, और फिर धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलते हुए हँसने लगा, और कहने लगा, मैं किस हालत में हूँ?

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.57%** है।

मैं स्वयं? और उसने अपनी उंगली काट ली; और जब उसे पता चला कि काटने से उसे दर्द हो रहा है, तो वह चिल्लाया, आह! — और क्रोधित हो गया। फिर अपना सिर उठाकर उसने एक दासी को बुलाया, जिसने उत्तर दिया, आपकी सेवा में, हे विश्वासियों के राजकुमार! और उसने उससे पूछा, तुम्हारा नाम क्या है? उसने उत्तर दिया, स्बेजेरेत-एद-दुर्र।8 और उसने कहा, क्या तुम जानती हो कि मैं कौन हूँ, मैं किस स्थान पर हूँ, और तुम कौन हो, हे विश्वासियों के राजकुमार, उसने उत्तर दिया, अपने महल

में, शाही पलंग पर बैठे हुए। उसने उत्तर दिया, मैं अपने मामले में उलझन में हूँ, मेरी बुद्धि चली गई है, और ऐसा लगता है कि मैं सो रहा हूँ; लेकिन मैं अपने कल के मेहमान के बारे में क्या कहूँ? मैं इसके अलावा कुछ नहीं सोचता कि वह एक शैतान या जादूगर है, जिसने मेरी बुद्धि के साथ खिलवाड़ किया है। इस पूरे समय, खलीफा उस स्थान से हिनीज देख रहा था जहाँ अबू-अल-हसन

myself? And he bit his finger; and when he found that the bite pained him, he cried, Ah!—and was angry. Then raising his head, he called one of the female slaves, who answered him, At thy service, O Prince of the Faithful! And he said to her, What is thy name? She answered, Shejeret-ed-Durr.[6] And he said, Knowest thou in what place I am, and who I am?—Thou art the Prince of the Faithful, she answered, sitting in thy palace, upon the royal couch. He replied, I am perplexed at my case, my reason hath departed, and it seemeth that I am asleep; but what shall I say of my yesterday's guest? I imagine nothing but that he is a devil or an enchanter, who hath sported with my reason.

All this time, the Khaleefeh was observing him, from a place where Abu-l-Hasan

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.01%** है।

31S अबू-अल-हसन की कहानी, जो मज़ाक कर रहा था, उसे देख नहीं सका। — अबू-अल-हसन ने मुख्य हिजड़े की ओर देखा और उसे पुकारा। वह आया और उसके सामने ज़मीन चूमते हुए बोला, "जी, ऐ अमीरुल मोमिनीन।" अबू-अल-हसन ने उससे पूछा, "अमीरुल मोमिनीन कौन है?" उसने उत्तर दिया, "तुम।" अबू-अल-हसन ने कहा, "तुम झूठ बोल रहे हो।" और दूसरे हिजड़े से कहा, "हे मेरे सरदार, जैसा कि तुम अल्लाह की हिफ़ाज़त की उम्मीद रखते हो, मुझे बताओ, क्या मैं अमीरुल मोमिनीन हूँ?" हिजड़े ने उत्तर दिया, "हाँ, अल्लाह की कसम: तुम इस समय अमीरुल मोमिनीन और तमाम प्राणियों के मालिक के खलीफ़ा हो।" अबू-अल-हसन, जो कुछ उसने देखा उससे चकित होकर बोला, "क्या मैं एक ही रात में अमीरुल मोमिनीन बन गया? क्या मैं कल नहीं था?" और क्या आज मैं मोमिनों का सरदार हूँ? — वह सुबह तक असमंजस में रहे, तभी एक हिजड़ा उनके पास आया और बोला, अल्लाह मोमिनों के सरदार को सुप्रभात दे! और उसने उन्हें सोने के बने, कीमती पत्थरों और माणिकों से जड़े हुए जूतों का एक जोड़ा दिया; अबू हसन ने उन्हें लिया और काफी देर तक उन्हें देखने के बाद अपनी आस्तीन में रख लिया। तब हिजड़े ने उनसे कहा, ये चलने वाले जूते हैं। अबू हसन ने उत्तर दिया, तुमने सही कहा। मैंने इन्हें अपनी आस्तीन में इसलिए नहीं रखा क्योंकि मुझे डर था कि ये गंदे न हो जाएँ। इसलिए उन्होंने उन्हें बाहर निकाला और अपने पैरों में पहन लिया। कुछ ही देर बाद दासियाँ उनके लिए सोने का एक पात्र और चाँदी का एक मटका लेकर आईं और उनके हाथों पर पानी डाला; और जब उन्होंने वज़ू कर लिया, तो उन्होंने उनके लिए नमाज़ की चटाई बिछाई; और उन्होंने नमाज़ पढ़ी; लेकिन उन्हें नमाज़ पढ़ने का तरीका नहीं पता था। उन्होंने अपनी साधना और सजदे जारी रखे, यहाँ तक कि बीस रकअत पूरी कर लीं; 7 ध्यान करते हुए और मन ही मन कहते हुए,

अल्लाह की कसम, मैं कुछ भी नहीं हूँ।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.34%** है।

/^4-l ,. «.. 4Oil सोने वाला जाग उठा। 819 वास्तव में, वह मोमिनों के राजकुमार के अलावा कोई और नहीं है; अन्यथा यह एक सपना है, और ये सब बातें सपने में नहीं होतीं। इसलिए उसने खुद को आश्वस्त किया, और अपने मन में दृढ़ निश्चय किया, कि वह मोमिनों का राजकुमार है; और उसने सलाम किया,8 और अपनी नमाज़ पूरी की। फिर वे उसके लिए एक शानदार पोशाक लाए; और जब वह पलंग पर बैठा, तो उसने खुद को देखकर पीछे हटते हुए कहा, यह सब एक भ्रम है, और जन्न की चाल है। और जब वह इस अवस्था में था, तभी एक दरबारी अंदर आया, और उससे कहा, हे मोमिनों के राजकुमार, दरबारी दरवाजे पर है, अंदर आने की अनुमति मांग रहा है। - उसे अंदर आने दो, अबू-1-हसन ने उत्तर दिया। तो वह अंदर आया, और अपने सामने जमीन चूमकर कहा, हे मोमिनों के राजकुमार, आप पर सलाम हो! और अबू हसन उठे और पलंग से उतरकर फर्श पर आ गए; तभी दरबारी ने कहा, अल्लाह!

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.76%** है।

अबू-अल-हसक के संदेश: हे विश्वासियों के राजकुमार! क्या तुम नहीं जानते कि सभी मनुष्य तुम्हारे सेवक हैं और तुम्हारे अधिकार में हैं, और यह उचित नहीं कि विश्वासियों के राजकुमार किसी के सामने झुकें? — अबू-अल-हस को बताया गया कि जाफ़र अल-बरमेकी, अब्दुल्ला (ताहिर का पुत्र) और मर्नलुक्स के सरदारों ने प्रवेश करने की अनुमति मांगी। उन्होंने उन्हें अनुमति दे दी। वे अंदर आए और उनके सामने ज़मीन चूमी, और उनमें से प्रत्येक ने उन्हें विश्वासियों के राजकुमार कहकर संबोधित किया। वे इससे प्रसन्न हुए और उनका अभिवादन लौटाया; इसके बाद

उन्होंने वली को बुलाया, जो उनके पास आए और बोले, हे विश्वासियों के राजकुमार! अबू हसन ने उससे कहा, “तुरंत उस गली में जाओ और अबू हसन वग की माँ को मेरी ओर से सलाम सहित सौ सोने के सिक्के दो; फिर मस्जिद के इमाम और चारों शेखों को पकड़ो और उनमें से प्रत्येक को एक हजार कोड़े मारो; 9 और जब तुम यह कर लो, तो उनके विरुद्ध शपथ सहित एक वचन लिखो कि वे उस गली में नहीं रहेंगे, जब तुम उन्हें जानवरों पर बिठाकर, उनके चेहरे उनकी पूंछों की ओर करके, पूरे शहर में घुमाओगे और उनके सामने यह ऐलान करोगे, ‘यह उन लोगों का बदला है जो अपने पड़ोसियों को परेशान करते हैं!’ और सावधान रहो कि जो मैंने तुम्हें करने का आदेश दिया है, उसकी अवहेलना न करो।” तो वली ने आदेशानुसार किया। और जब अबू हसन ने दिन ढलने तक अपना अधिकार प्रयोग कर लिया, तो उसने दरबारी और बाकी सेवकों की ओर देखा और उनसे कहा, “चले जाओ।” फिर उसने पास ही खड़े एक हिजड़े को बुलाया और उससे कहा, “मुझे भूख लगी है और मैं कुछ खाना चाहता हूँ।” हिजड़े ने उत्तर दिया, “मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।” और वह उसे हाथ पकड़कर भोजन कक्ष में ले गया, जहाँ सेवकों ने उसके सामने स्वादिष्ट व्यंजनों से सजी मेज लगा दी; और

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.15%** है।

दस दासियाँ, सुडौल स्तनों वाली कुंवारी लड़कियाँ, उसके सिर के पीछे खड़ी थीं। अबू हसन ने उनमें से एक को देखकर उससे पूछा, तेरा नाम क्या है? उसने उत्तर दिया, कदीब-अल-बान। 10 तब उसने उससे कहा, ऐ कदीब-अल-बान, मैं कौन हूँ? उसने उत्तर दिया, आप मोमिनों के सरदार हैं। लेकिन उसने कहा, अल्लाह की कसम, तू झूठ बोल रही है, कुतिया! तुम लड़कियाँ मेरा मज़ाक उड़ा रही हो। — तब उसने कहा, “अल्लाह से

डरो, ऐ मोमिनों के सरदार: यह तुम्हारा महल है, और ये दासियाँ तुम्हारी हैं।" इस पर उसने मन ही मन कहा, "यह कोई बड़ी बात नहीं है, क्योंकि वही सर्वशक्तिमान और महिमावान है!" फिर दासियाँ उसका हाथ पकड़कर उसे पीने के कमरे में ले गईं, जहाँ उसने वह देखा जिसने उसके मन को चकित कर दिया; और वह मन ही मन कहता रहा, "निस्संदेह ये जन्न की हैं, और यह व्यक्ति जो मेरा मेहमान था, जन्न के राजाओं में से एक है, जिसने मेरे प्रति अपनी दयालुता का बदला चुकाने और मुझे प्रतिफल देने का कोई और तरीका नहीं देखा सिवाय अपने सरदारों को आदेश देने के।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

25.70% है।

322 अबू-अल-हसन की कहानी, वगैरह। 'मुझे मोमिनों का राजकुमार कहकर संबोधित करते हैं। ये सब जुन्न के लोग हैं। अल्लाह मुझे इनसे सुखपूर्वक बचाए!' - और जब वह इस प्रकार स्वयं से बातें कर रहा था, तभी एक दासी ने उसके लिए शराब का प्याला भरा; उसने उसके हाथ से प्याला लेकर पी लिया; जिसके बाद दासियों ने उसे खूब शराब पिलाई; और उनमें से एक ने उसके प्याले में बेंज की एक गोली डाल दी; और जब वह उसके पेट में गई, तो वह बेहोश होकर गिर पड़ा। तब एर-इलाशीद ने उसे अपने घर ले जाने का आदेश दिया; और नौकरों ने ऐसा ही किया, और उसे बेहोशी की हालत में उसके बिस्तर पर लिटा दिया। तो जब वह रात के उत्तरार्ध में नशे से होश में आया, तो उसने खुद को अंधेरे में पाया; और उसने पुकारा, कुलीब-अल-बारी! शेजेरेत-एड-दुर्र! - लेकिन किसी ने उसे उत्तर नहीं दिया। लेकिन उसकी माँ ने उसे ये नाम पुकारते हुए सुना और उठकर उसके पास आई और उससे बोली, "हे मेरे पुत्र, तुझे क्या हुआ है? क्या तू पागल हो गया है?" — और जब उसने अपनी माँ की बात सुनी, तो उसने उससे कहा, "हे अशुभ बुढ़िया, तू कौन है जो विश्वासियों के राजकुमार को इन शब्दों से संबोधित कर रही है?" उसने उत्तर दिया, "मैं तेरी माँ हूँ, हे मेरे पुत्र।" लेकिन उसने उत्तर दिया, "तुम झूठ बोल रही हो: मैं 'विश्वासियों का राजकुमार', देशों और लोगों का स्वामी हूँ।" - "चुप रहो, नहीं तो तुम्हारी जान चली जाएगी," उसने कहा। और वह उस पर मंत्र और जादू करने लगी, और उससे कहा, "हे मेरे पुत्र, ऐसा लगता है कि तुमने यह सब सपने में देखा है, और यह सब शैतान के द्वारा सुझाया गया एक विचार है।" फिर उसने उससे कहा, "मैं तुम्हें एक खुशखबरी देती हूँ, जिससे तुम प्रसन्न हो जाओगे।" - "और वह क्या है?" उसने पूछा। उसने उत्तर दिया, "खलीफा ने कल इमाम और चारों शेखों को

पीटने का आदेश दिया था, और उनके विरुद्ध शपथपूर्वक एक वचन लिखवाया था कि वे अब से किसी के भी विरुद्ध कोई अत्याचार नहीं करेंगे।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.15%** है।

उनकी गुस्ताखी भरी दखलंदाजी; और उसने मुझे सौ सोने के सिक्के भेजे, साथ में अपना सलाम भी। और जब अबू-अल-हसन ने अपनी माँ से ये शब्द सुने, तो वह ज़ोर से चिल्लाया, जिससे उसकी आत्मा मानो दुनिया से निकल गई; और उसने कहा, मैं ही वह हूँ जिसने शेखों को पीटने का आदेश दिया था, और जिसने तुम्हें सौ सोने के सिक्के भेजे थे, साथ में अपना सलाम भी, और मैं ही मोमिनों का सरदार हूँ। यह कहकर वह अपनी माँ पर टूट पड़ा और बादाम की छड़ी से उसे तब तक पीटता रहा, जब तक कि वह चिल्लाई, ऐ मुसलमानों! और वह उसे और भी ज़ोर से पीटता रहा, यहाँ तक कि पड़ोसियों ने उसकी चीखें सुनीं और उसकी मदद के लिए आ गए। वह उसे पीटता रहा और उससे कहता रहा, ऐ अशुभ बुढ़िया, क्या मैं मोमिनों का सरदार नहीं हूँ? तूने मुझ पर जादू कर दिया है! और जब लोगों ने उसके शब्द सुने, तो उन्होंने कहा, यह आदमी पागल हो गया है। और उसकी पागलपन पर संदेह न करते हुए, वे अंदर आए और उसे पकड़ लिया, उसके हाथ पीछे बांध दिए और उसे पागलखाने ले गए।12 वहाँ वे प्रतिदिन उसे दंडित करते, उसे घिनौनी दवाइयाँ देते और कोड़ों से पीटते, जिससे वह अपनी इच्छा के विरुद्ध पागल हो गया। इस प्रकार वह दस दिनों तक अपने कपड़े उतारकर, गर्दन से एक ऊँची खिड़की से जंजीर से बंधा रहा; जिसके बाद उसकी माँ उससे मिलने आई। और उसने उसे अपनी हालत के बारे में बताया। तो उसकी माँ ने उससे कहा, हे मेरे बेटे, अपने आचरण में ईश्वर से डरो: यदि तुम धनियों के

सरदार होते, तो तुम इस दुर्दशा में न होते। और जब उसने अपनी माँ की बात सुनी, तो उसने उत्तर दिया, अल्लाह की कसम, तुमने सच कहा है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.14%** है।

324 अबू-अल-हसन की कहानी: ऐसा लगता है कि मैं सो रहा था और मैंने सपना देखा कि उन्होंने मुझे खलीफा बना दिया और मेरे साथ नौकर और दासियाँ रख दीं। — तब उसकी माँ ने उससे कहा, हे मेरे बेटे, शैतान इससे भी ज़्यादा लिबास में रहता है। उसने उत्तर दिया, तुमने सच कहा है, और मैं अपने किए गए कर्मों के लिए ईश्वर से क्षमा माँगता हूँ। इसलिए वे उसे पागलखाने से बाहर ले गए और स्नानघर में ले गए; और जब वह स्वस्थ हो गया, तो उसने खाना-पीना तैयार किया और खाने लगा। लेकिन उसे अकेले खाना अच्छा नहीं लगा; और उसने अपनी माँ से कहा, हे मेरी माँ, न तो मुझे अकेले जीना अच्छा लगता है और न ही अकेले खाना। उसने उत्तर दिया, यदि तुम अपनी इच्छा के अनुसार करना चाहते हो, तो तुम्हारा पागलखाने लौटना ही सबसे अधिक संभव है। हालाँकि, उसने

उसकी सलाह पर ध्यान नहीं दिया और वह पुल की ओर चल पड़ा, ताकि वह अपने लिए एक साथी देख सके। और जब वह वहाँ बैठा था, तभी अचानक एर-रशीद एक व्यापारी के वेश में उसके पास आया; क्योंकि उससे विदा होने के बाद से वह प्रतिदिन पुल पर आता था, परन्तु अब तक उसे नहीं पा सका था। अबू-अल-हसन ने उसे देखते ही कहा, “हे जिन्नों के सरदार, आपका हार्दिक स्वागत है!” तो एर-रशीद ने कहा, “मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?” अबू-अल-हसन ने कहा, “हे जिन्नों में सबसे घिनौने, तू इससे अधिक क्या बिगाड़ सकता है जो तूने मेरा बिगाड़ा है? मुझे मार पड़ी, पागलखाने में भर्ती कराया गया, और उन्होंने मुझे पागल घोषित कर दिया। यह सब तेरे कारण हुआ। मैं तुझे अपने घर लाया, और तुझे अपना उत्तम भोजन खिलाया; और उसके बाद तूने अपने शैतानों और अपने शैतानों को मुझ पर पूर्ण अधिकार दे दिया, ताकि वे सुबह से शाम तक मेरी बुद्धि का अपंग करते रहें। इसलिए, तू मुझसे दूर चला जा और अपने मार्ग पर चल। इस पर खलीफा मुस्कुराए और उनके पास बैठकर उनसे विनम्रतापूर्वक कहा, “हे मेरे भाई, जब मैं तुमसे विदा हुआ, तो अनजाने में दरवाजा खुला छोड़ दिया, और शायद शैतान तुम्हारे पास आ गया।”13 अबू हसन ने उत्तर दिया, “मेरे साथ जो हुआ, उसके बारे में मत पूछो।” उन्होंने आगे कहा, “तुम्हें क्या हो गया था कि तुमने दरवाजा खुला छोड़ दिया, जिससे शैतान मेरे पास आ गया, और मेरे साथ ऐसा-ऐसा हुआ?” — और उन्होंने खलीफा को अपने साथ घटी सारी बातें शुरू से अंत तक बताईं, जबकि एर-रशीद हँसे, लेकिन अपनी हँसी छिपा ली। इसके बाद खलीफा ने उनसे कहा, “अल्लाह का शुक्र है कि उसने तुमसे वह चीज़ दूर कर दी जिससे तुम घृणा करते हो, और मैंने तुम्हें फिर से खुशहाली में देखा है!” लेकिन अबू हसन ने उत्तर दिया, मैं तुम्हें फिर कभी अपना मित्र नहीं बनाऊँगा, न ही अपने साथ बैठने के लिए; क्योंकि

कहावत है, जो पत्थर से टकराकर वापस उसी पर चढ़ता है, वह निंदनीय और निंदा का पात्र है: और हे मेरे भाई, मैं तुम्हारे साथ नहीं रहूँगा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.69%** है।

या नींद से जागा हुआ व्यक्ति। 325 मैं न तो दावत करूँगा, न ही तुम्हारे साथ रहूँगा; क्योंकि मुझे तुम्हारे आने से कोई सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है। 14 — खलीफा ने कहा, मैं इमाम और शेखों के संबंध में तुम्हारी इच्छा की पूर्ति का माध्यम बना हूँ। — हाँ, अबू-1-हसन ने उत्तर दिया। और इलाशीद ने आगे कहा, शायद तुम्हारे साथ कुछ ऐसा घटित हो जो तुम्हारे दिल को इससे भी अधिक प्रसन्न करे। — तो तुम मुझसे क्या चाहते हो? अबू-1-हसन ने कहा। — मेरी इच्छा, इलाशीद ने उत्तर दिया, आज रात तुम्हारा मेहमान बनना है। और अंत में अबू-1-हसन ने कहा, इस शर्त पर कि तुम दाऊद के पुत्र सुलेमान (उन दोनों पर शांति हो!) की मुहर पर लिखे हुए की कसम खाकर मुझसे वादा करो कि तुम अपने इफ्रीतों को मेरे साथ खिलवाड़ नहीं करने दोगे। और इलाशीद ने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। अबू हसन उसे अपने घर ले गया और उसके और उसके सेवकों के सामने भोजन परोसा। उन्होंने जी भरकर खाया। भोजन समाप्त होने पर सेवकों ने उनके सामने शराब और मादक पेय परोसे। वे तब तक पीते और मौजमस्ती करते रहे जब तक कि शराब उनके सिर पर चढ़ नहीं गई। अबू हसन ने खलीफा से कहा, "हे मेरे प्रिय मित्र, मैं अपने मामले को लेकर सचमुच व्याकुल हूँ। ऐसा प्रतीत होता है कि मैं धनी लोगों का सरदार था, और मैंने अधिकार का प्रयोग किया, दिया और प्रदान किया। और सचमुच, हे मेरे भाई, यह स्वप्न का भ्रम नहीं था।" खलीफा ने उत्तर दिया, "यह भ्रमित स्वप्न का परिणाम था।" यह कहकर उसने प्याले में बेंज का एक टुकड़ा डाला और कहा, "मेरी जान की

कसम, इसे पी लो।" अबू हसन ने उत्तर दिया, "निश्चित रूप से मैं इसे तुम्हारे हाथ से पी लूँगा।" तो उसने प्याला लिया और जब उसने उसे पी लिया, तो उसका सिर उसके पैरों के सामने गिर पड़ा। तब खलीफा तुरंत उठे और अपने जवानों को अबू हसन को महल में ले जाने और उन्हें पलंग पर लिटाने का आदेश दिया। उन्होंने दासियों को उनके चारों ओर खड़े होने का आदेश दिया। इसके बाद वे एक ऐसी जगह छिप गए जहाँ अबू हसन उन्हें देख न सकें। उन्होंने एक दासी को अपना वीणा लेकर अबू हसन के सिर पर बजाने का आदेश दिया और अन्य दासियों को अपने वाद्य यंत्र बजाने के लिए कहा। तब रात ढल रही थी और अबू हसन जाग उठे। वीणा, डफ और ढोल की आवाज़ें और दासियों के गीत सुनकर वे पुकार उठे, “हे मेरी माँ!” इस पर दासियों ने उत्तर दिया, “हम आपकी सेवा में हैं, हे धनी राजकुमार!” यह सुनकर वे बोले, “सर्वशक्तिमान और सर्वशक्तिमान ईश्वर के सिवा कोई शक्ति नहीं है! इस रात मेरी सहायता करो; क्योंकि यह रात पिछली रात से भी अधिक अशुभ है!” — उसने अपनी माँ के साथ घटी सारी घटनाओं और उसे पीटने के बारे में सोचा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.48%** है।

उसे और उसे पागलखाने में ले जाया गया था, और उसने वहाँ की भीषण गर्मी के निशान देखे। फिर अपने चारों ओर के दृश्य को देखकर उसने कहा, ये सब जहन्नम के लोग हैं, इंसानों के रूप में! मैं अपना मामला अल्लाह के हवाले करता हूँ! और अपने बगल में बैठे एक पागल की ओर देखते हुए उसने उससे कहा, मेरा कान काटो, ताकि मुझे पता चले कि मैं सो रहा हूँ या जाग रहा हूँ। पागल ने कहा, मैं तुम्हारा कान कैसे काटूँ, जब तुम मोमिनों के सरदार हो? लेकिन अबू-अल-हसन ने उत्तर दिया, जैसा मैंने तुम्हें आदेश दिया है वैसा करो, वरना मैं तुम्हारा सिर काट दूँगा। तो

उसने उसका सिर तब तक काटा जब तक उसके दाँत आपस में नहीं टकरा गए, और अबू-अल-हसन ज़ोर से चीख उठा। इलशीद (जो एक कोठरी में पर्दे के पीछे था) और वहाँ मौजूद सभी लोग हँसी से लोटपोट हो गए, और उन्होंने पागल से कहा, क्या तुम पागल हो गए हो कि तुमने खलीफा का कान काट लिया? और अबू हसन ने उनसे कहा, “हे जिन्न के अभागों, क्या मेरे लिए इतना ही काफी नहीं है? लेकिन इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है; गलती तुम्हारे सरदारों की है, जिन्होंने तुम्हें जिन्न के रूप से बदलकर मनुष्य बना दिया। मैं आज रात सिंहासन की आयत, सच्चाई के अध्याय और दो निवारक उपायों के द्वारा तुम्हारे विरुद्ध सहायता की याचना करता हूँ!” 15 — इस पर एर-बशीद ने कहा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.07%** है।

अबू-अल-हसन की कहानी, पृष्ठ 327, पर्दे के पीछे से, "हे अबू-अल-हसन, तुमने हमें मार डाला!" अबू-अल-हसन ने उसे पहचान लिया और उसके सामने ज़मीन चूमकर उसकी महिमा में वृद्धि और दीर्घायु की प्रार्थना की। तब एर-लताशीद ने उसे कीमती वस्त्र पहनाए, उसे एक हज़ार सोने के सिक्के दिए और उसे अपने प्रमुख शुभचिंतकों में से एक बना लिया। इसके बाद अबू-अल-हसन खलीफा के अन्य सभी शुभचिंतकों से अधिक प्रिय हो गए, यहाँ तक कि वे खलीफा और उनकी पत्नी, अल-कासिम की पुत्री ज़ुबैदेह के साथ बैठते थे, और उन्होंने उनकी महिला कोषाध्यक्ष,

नुज़हत-अल-फुजिद से विवाह कर लिया।1 इस पत्नी के साथ वे भोजन और पेय का आनंद लेते हुए सुखमय जीवन व्यतीत करते रहे, यहाँ तक कि उनका सारा धन समाप्त हो गया; तब उन्होंने उससे कहा, "हे नुज़हत-अल-फुजिद!" और उसने उत्तर दिया, "मैं आपकी सेवा में हूँ।" - उन्होंने कहा, "मैं खलीफा पर एक चाल चलना चाहता हूँ, और तुम ज़ुबैदेह पर एक चाल चलो, और हम उनसे तुरंत दो सौ सोने के सिक्के और दो रेशम के सिक्के प्राप्त कर लेंगे।" - उसने उत्तर दिया, "जो तुम चाहते हो, करो।" और उसने पूछा, "वह क्या है?" उन्होंने उत्तर दिया, "हम स्वयं को मृत होने का नाटक करेंगे। मैं तुम्हारे सामने मर जाऊँगा, और..." मैं अपने आप को लिटा दूँ: फिर तुम मेरे ऊपर रेशम का रुमाल फैला दो, और मेरी पगड़ी खोल दो, और मेरे पैर की उंगलियों को बांध दो, और मेरे पेट पर एक चाकू और थोड़ा नमक रख दो:17 इसके बाद, अपने बाल बिखेर दो, और अपनी मालकिन ज़ुबैदेह के पास जाओ, और अपनी बनियान फाड़ दो और अपने चेहरे पर थप्पड़ मारो, और चीखो। तो वह तुमसे कहेगी, तुम्हें क्या हुआ है? और तुम उसे उत्तर दो, तुम्हारा सिर अबू-1-हसन वग से अधिक समय तक जीवित रहे; क्योंकि वह मर गया है! इस पर वह मेरे लिए विलाप करेगी, और रोएगी, और अपनी महिला कोषाध्यक्ष13 को आदेश देगी कि वह तुम्हें सौ सोने के सिक्के और रेशम का एक टुकड़ा दे,19 और तुमसे कहेगी, जाओ, उसके शव को दफनाने के लिए तैयार करो, और उसे कब्र में ले जाओ। तो तुम उससे सौ सोने के सिक्के और रेशम का टुकड़ा लेकर यहाँ आओगे। और जब तुम मेरे पास आओगे, तो मैं उठ जाऊँगी, और तुम... तुम अपनी जगह पर लेट जाओ, और मैं खलीफा के पास जाकर उससे कहूँगी, नुज़हत-अल-फ़ुद्द, तुम्हारा सिर दीर्घायु हो! और मैं अपना वस्त्र फाड़ दूँगी और अपनी दाढ़ी नोच लूँगी; जिस पर वह तुम्हारे लिए शोक मनाएगा और अपने कोषाध्यक्ष से कहेगा, अबू-अल-हसन को

सौ सोने के सिक्के और रेशम का एक टुकड़ा दो: और वह मुझसे कहेगा, जाओ, उसके शव को दफ़नाने के लिए तैयार करो और उसे कब्र तक ले जाओ। तो मैं तुम्हारे पास आऊँगी। और नुज़हत-अल-फ़ुद्द इससे प्रसन्न हुई और बोली, सचमुच यह एक उत्कृष्ट रणनीति है! उसने तुरंत उसकी आँखें बंद कर दीं, उसके पैर बाँध दिए, उसे रुमाल से ढक दिया और वह सब किया जो उसके स्वामी ने उसे बताया था; जिसके बाद, वह

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.87%** है।

328 अबू-अल-हसन की कहानी (i) ने अपनी बनियान फाड़ दी, अपना सिर नंगा कर लिया, अपने बाल बिखेर दिए और चीखती-चिल्लाती हुई ज़ुबैदेह के पास चली गई। जब ज़ुबैदेह ने उसे इस हालत में देखा, तो उसने उससे कहा, "मैं तुम्हें किस हालत में देख रही हूँ, तुम्हारे साथ क्या हुआ है, और किस बात ने तुम्हें रुलाया है?" नुज़त-अल-फ़ुआद रोई और चीखी, और बोली, "हे मेरी स्वामिनी, अबू-अल-हसन वाग का सिर लंबे समय तक जीवित रहे; क्योंकि वह मर गया है!" ज़ुबैदेह ने उसके लिए शोक मनाया और कहा, "बेचारा अबू-अल-हसन वाग!" फिर, उसके लिए कुछ देर रोने के बाद, उसने महिला कोषाध्यक्ष को नुज़त-अल-फ़ुआद को सौ सोने के सिक्के और रेशम का एक टुकड़ा देने का आदेश दिया, और कहा, "0" नुज़हत-अल-फ़ुआद, जाओ, उसके शरीर को दफ़नाने के लिए तैयार करो और उसे ले आओ। तो उसने सौ सोने के सिक्के और रेशम का एक टुकड़ा लिया और खुशी से अपने घर लौटकर अबू-अल-हसन के पास गई और उसे अपने साथ हुई घटना के बारे में बताया; यह सुनकर वह उठा और प्रसन्न हुआ, कमर कसकर नाचने लगा और सौ सोने के सिक्के और रेशम का टुकड़ा लेकर रख दिया। फिर उसने नुज़हत-अल-फ़ुआद को फैलाया और उसके साथ वही किया जो उसने उसके साथ किया था;

इसके बाद उसने अपनी बनियान फाड़ दी, दाढ़ी नोच ली और पगड़ी बिखेर दी और बिना रुके तब तक दौड़ता रहा जब तक वह न्याय कक्ष में बैठे खलीफ़ा के पास नहीं पहुँच गया; और ऊपर वर्णित अवस्था में उसने अपना सीना पीटा। तब खलीफ़ा ने उससे कहा, हे अबू-अल-हसन, तुझ पर क्या विपत्ति आई है? और वह रोते हुए बोला, काश तेरा शुभचिंतक कभी न होता। और न ही उसका समय कभी आया है! 20 तब खलीफा ने उससे कहा, मुझे बताओ। उसने उत्तर दिया, हे मेरे स्वामी, नुज़हेत-अल-फ़ुआद, तेरा सिर दीर्घायु हो! और खलीफा ने कहा, अल्लाह के सिवा कोई देवता नहीं है! और अपने हाथ आपस में टकराए। फिर उसने अबू-अल-हसन को सांत्वना दी और उससे कहा, शोक मत करो: मैं तुझे उसके बदले एक रखैल दूंगा। और उसने अपने कोषाध्यक्ष को सौ सोने के सिक्के और रेशम का एक टुकड़ा देने का आदेश दिया। कोषाध्यक्ष ने आदेशानुसार किया, और खलीफा ने अबू-अल-हसन से कहा, जाओ, उसके शव को दफ़नाने के लिए तैयार करो, उसे ले जाओ और उसका भव्य जनाज़ा करो। और उसने खलीफा द्वारा दी गई वस्तुएँ लीं और प्रसन्न होकर अपने निवास स्थान पर गया, और नुज़हेत-अल-फ़ुआद के पास जाकर उससे कहा, उठो; क्योंकि हमारी इच्छा पूरी हो गई है। तब वह उठी, और उसने उसके सामने सौ सोने के सिक्के और रेशम का एक टुकड़ा रख दिया। रेशम का टुकड़ा। तो वह प्रसन्न हुई; और उन्होंने सोने के इन टुकड़ों को दूसरे टुकड़ों पर और रेशम के टुकड़े को पहले वाले पर रख दिया, और बैठकर बातें करने लगे और एक-दूसरे पर हंसने लगे। लेकिन खलीफा के बारे में, जब अबू-अल-हसन उससे विदा होकर नुज़हत-अल-फ़ुआद के शव को तैयार करने के बहाने चला गया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.13%** है।

या नींद से जाग उठा। 329 दफ़नाने के लिए, उसके लिए शोक मनाया गया, और परिषद को भंग करके, वह उठा और अपने जल्लाद मेसरूर का सहारा लेकर अंदर गया, ताकि वह अपनी दासी के खोने पर ज़ुबैदेह को सांत्वना दे सके। लेकिन उसने उसे रोते हुए और उसके आने की प्रतीक्षा करते हुए पाया, ताकि वह अबू-अल-हसन वग के खोने पर उसे सांत्वना दे सके। खलीफ़ा ने कहा, "तेरी दासी नुज़हत-अल-फ़ूद की मृत्यु के बाद तेरा सिर लंबे समय तक जीवित रहे।" लेकिन उसने उत्तर दिया, "हे मेरे स्वामी, अल्लाह मेरी दासी की रक्षा करे! तू अपने प्रिय साथी अबू-अल-हसन वग की मृत्यु के बाद लंबे समय तक जीवित रहे; क्योंकि वह मर गया है!" और खलीफ़ा मुस्कुराया और अपने हिजड़े से कहा, "हे मेसरूर, वास्तव में स्त्रियाँ कम समझदार होती हैं। अल्लाह की कसम, क्या अबू-अल-हसन अभी मेरे साथ नहीं था?" इस पर, ज़ुबैदेह ने क्रोधित हृदय से हँसते हुए कहा, “क्या तुम अपना मज़ाक बंद नहीं करोगे? क्या अबू-अल-हसन की मृत्यु ही काफ़ी नहीं है, और तुम मेरी दासी को भी मृत घोषित कर रहे हो, मानो हम दोनों को खो बैठे हों, और मुझे अक्लमंद भी कह रहे हो?” खलीफ़े ने उत्तर दिया, “निश्चित रूप से नुज़हत-अल-फ़ुआद ही मरी है।” ज़ुबैदेह ने पलटकर कहा, “सच तो यह है कि वह तुम्हारे साथ नहीं था, और न ही तुमने उसे देखा; और अभी मेरे साथ नुज़हत-अल-फ़ुआद के सिवा कोई नहीं था, जो शोक मना रही थी और रो रही थी, उसके कपड़े फटे हुए थे; और मैंने उसे धैर्य रखने के लिए कहा, और उसे सौ सोने के सिक्के और रेशम का एक टुकड़ा दिया; और मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रही थी, ताकि मैं तुम्हारे प्रिय साथी, अबू-अल-हसन वग़ की मृत्यु पर तुम्हें सांत्वना दे सकूँ।” और मैं तुम्हें बुलवाने ही वाला था। यह सुनकर खलीफा हँस पड़ा और बोला, नुज़हत-अल-फ़ुआद के सिवा कोई नहीं मरा। और ज़ुबैदेह ने कहा, नहीं, नहीं, हे मेरे स्वामी: अबू-अल-हसन के सिवा कोई

नहीं मरा। लेकिन खलीफा क्रोधित हो गया; उसकी आँखों के बीच की नस, जो हाशिम परिवार के सदस्यों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती थी, फड़कने लगी, और उसने जल्लाद मेसरूर को पुकार कर कहा, जाओ और अबू-अल-हसन के घर जाओ और देखो कि उन दोनों में से कौन मरा है। तब मेसरूर दौड़ता हुआ चला गया। और खलीफा ने ज़ुबैदेह से कहा, क्या तुम मुझसे शर्त लगाओगी? उसने उत्तर दिया, हाँ, मैं लगाऊँगी, और मैं कहती हूँ कि अबू-अल-हसन मर गया है। खलीफ़े ने उत्तर दिया, “और मैं शर्त लगाता हूँ, और कहता हूँ कि नुज़हत-अल-फ़ुआद के सिवा कोई नहीं मरा है, और हमारी शर्त यह होगी कि मैं आनंद के बाग़ को तुम्हारे तंबू, चित्रों के तंबू के बदले दांव पर लगाता हूँ।”22 और वे मेसरूर के सूचना लेकर लौटने की प्रतीक्षा करने लगे। मेसरूर बिना रुके दौड़ता रहा जब तक कि वह उस गली में नहीं पहुँच गया जहाँ अबू-अल-हसन का घर था। अबू-अल-हसन खिड़की से टेक लगाकर बैठा था, और उसने अपनी नज़र घुमाकर मेसरूर को गली में दौड़ते हुए देखा। इसलिए उसने नुज़हत-अल-फ़ुआद से कहा, “यह ii. 2 u”

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.60%** है।

330 अबू-अल-हसन वग की कहानी (*) ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे जाने के बाद खलीफा ने दरबार भंग कर दिया और ज़ुबसीदेह को सांत्वना देने के लिए उनके पास गए। उनके आने पर ज़ुबसीदेह उठीं और उन्हें सांत्वना देते हुए कहा, "अल्लाह तुम्हें अबू-अल-हसन वग के नुकसान की भरपूर भरपाई करे!" इस पर खलीफा ने उनसे कहा, "नुज़हत-अल-फ़ुआद के सिवा कोई नहीं मरा। अल्लाह करे तुम्हारा सिर उसके बाद भी तड़पता रहे!" उन्होंने उत्तर दिया, "तुम्हारे घनिष्ठ मित्र अबू-अल-हसन वग के सिवा कोई नहीं मरा।" उन्होंने फिर कहा, "नुज़हत-अल-फ़ुआद के सिवा कोई

नहीं मरा।" इस प्रकार वे अड़ियल हो गए और खलीफा क्रोधित हो गए। उन्होंने शर्त लगा ली, जिसके परिणामस्वरूप जल्लाद मेसरूर को यह देखने के लिए भेजा गया कि कौन मरा है। इसलिए यह अधिक उचित है कि तुम लेट जाओ, ताकि वह तुम्हें देख ले, और जाकर खलीफा को सूचित करो, जो तब मेरे कथन पर विश्वास करेगा। तदनुसार, नुज़हत-अल-फ़ुआद लेट गई, और अबू-अल-हसन ने उसे अपने इज़िर से ढक दिया, और उसके सिर के पास बैठकर रोने लगा। तभी मेसरूर हिजड़ा अबू-अल-हसन के घर में आया, और उसे सलाम किया, और नुज़हत-अल-फ़ुआद को लेटा हुआ देखा; जिस पर उसने उसका चेहरा खोला, और कहा, अल्लाह के सिवा कोई देवता नहीं है! हमारी बहन नुज़हत-अल-फ़ुआद मर गई! भाग्य का प्रहार कितना शीघ्र था! अल्लाह उस पर दया करे, और तुम्हें दोषमुक्त करे! — फिर वह लौटा, और खलीफा और ज़ुबैदा को हँसते हुए सारी घटना सुनाई। तब खलीफा ने उससे कहा, हे तू हे भगवान, यह हंसने का समय नहीं है। हमें बताओ कि उनमें से कौन मर गया है। — तब उसने उत्तर दिया, अल्लाह की कसम, हे मेरे स्वामी, निःसंदेह अबू-अल-हसन ठीक हैं, और नुज़हेत-अल-फ़ुअद के सिवा कोई नहीं मरा है। इस पर खलीफ़े ने ज़ुबैदेह से कहा, तूने अपने खेल में अपना तंबू खो दिया है। और वह उस पर हँसा, और कहा, हे मेसरूर, उसे बताओ कि तूने क्या देखा। तब मेसरूर ने उससे कहा, वास्तव में, हे मेरी स्वामिनी, मैं लगातार दौड़ता रहा जब तक कि मैं अबू-अल-हसन के घर नहीं पहुँच गया; वहाँ मैंने नुज़हेत-अल-फ़ुअद को मृत पाया, और अबू-अल-हसन उसके सिर के पास बैठकर रो रहे थे; और मैंने उन्हें सलाम किया और उन्हें सांत्वना दी, और उनके पास बैठ गया; और नुज़हेत-अल-फ़ुअद का चेहरा खोलकर मैंने देखा कि वह मर चुकी थी, उसका चेहरा सूजा हुआ था। तब मैंने उससे कहा, उसे तुरंत कब्र तक ले चलो, ताकि

हम उसके लिए दुआ कर सकें। और उसने जवाब दिया, जी हाँ। और मैं उसे शव को दफ़नाने की तैयारी करने के लिए छोड़कर आपको सूचित करने आया। इस पर खलीफ़ा हँसा और बोला, अपनी मालकिन को बार-बार बताओ, वह तो बिल्कुल नासमझ है। लेकिन जब ज़ुबैदेह ने मेसरूर की बातें सुनीं, तो वह क्रोधित हो गई और बोली, कोई भी नहीं

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.44%** है।

या फिर नींद से जाग उठा। 331 बुद्धिहीन, परन्तु जो विश्वास करता है वह दास है। और उसने मेसरूर को अपशब्द कहे, जबकि खलीफा हँसता रहा; मेसरूर अप्रसन्न हुआ और खलीफा से कहा, जिसने कहा कि स्त्रियाँ बुद्धि और धर्म में अपंग हैं, उसने सत्य कहा।23 तब ज़ुबैदेह ने कहा, हे विश्वासियों के राजकुमार, आप मेरे साथ खिलवाड़ और मज़ाक कर रहे हैं, और यह दासी आपको प्रसन्न करने के लिए मुझे धोखा दे रही है; परन्तु मैं भेजकर देखूँगी कि उनमें से कौन मर गया है। खलीफा ने उत्तर दिया, ऐसा ही करो। और उसने एक बूढ़ी औरत, एक कहराम को बुलाया और उससे कहा, जल्दी से नुज़हेत-फुद के घर जाओ और देखो कि कौन मर गया है, और लौटने में देर मत करो। और उसने उसे पैसे फेंके। तो बूढ़ी औरत दौड़ती हुई चली गई; खलीफा और मेसरूर हँस रहे थे। वह बुढ़िया लगातार दौड़ती रही जब तक कि वह गली में नहीं पहुँच गई। गली में पहुँचकर अबू हसन ने उसे देखा और पहचान लिया। उसने अपनी पत्नी से कहा, "हे नुज़हत-अल-फ़ुआद, ऐसा लगता है कि ज़ुबैदेह ने हमें यह देखने के लिए भेजा है कि कौन मरा है, और उसने मेसरूर की तुम्हारी मृत्यु के विषय में कही गई बातों पर विश्वास नहीं किया है। इसीलिए उसने इस बुढ़िया, यानी कहराइमिनेह (बुढ़िया) को, सच्चाई जानने के लिए भेजा है। इसलिए अब मेरा मर जाना ही उचित है, ताकि ज़ुबैदेह तुझ पर विश्वास

कर ले।” तब अबू हसन लेट गया, और नुज़हत-अल-फ़ुआद ने उसे ढँक दिया, उसकी आँखों और पैरों को बाँध दिया, और उसके सिर के पास बैठकर रोने लगी। बुढ़िया नुज़हत-अल-फ़ुआद के पास आई और उसे अबू हसन के सिर के पास बैठकर रोते हुए और उसके गुणों का बखान करते हुए देखा। और जब नुज़त-अल-फ़ुआद ने उस बुढ़िया को देखा, तो वह चीख पड़ी और उससे बोली, देखो मुझ पर क्या विपत्ति आई है! अबू-अल-हसन का देहांत हो गया है और वह मुझे अकेला और तन्हा छोड़ गया है! — फिर वह दोबारा चीखी और अपने कपड़े फाड़कर उस बुढ़िया से बोली, हे मेरी माँ, वह कितना अच्छा था! बुढ़िया ने उत्तर दिया, सचमुच तुम क्षमायोग्य हो; क्योंकि तुम उसकी आदी हो गई थी और वह तुम्हारी। — और यह जानकर कि मेसरूर ने खलीफ़े और ज़ुबैदेह के साथ कैसा व्यवहार किया था, उसने नुज़त-अल-फ़ुआद से कहा, मेसरूर खलीफ़े और ज़ुबैदेह के बीच झगड़ा करवाने वाला है। — और इस झगड़े का कारण क्या है, हे मेरी माँ? नुज़त-अल-फ़ुआद ने पूछा। बुढ़िया ने उत्तर दिया, “हे मेरी बेटी, मेसरूर उनके पास आया था और उसने उन्हें बताया कि तुम मर गई हो और अबू हसन ठीक है।” नुज़हत-अल-फ़ुआद ने उत्तर दिया, “हे मेरी चाची, मैं अभी अपनी मालकिन के पास थी और उन्होंने मुझे सौ सोने के सिक्के और रेशम का एक टुकड़ा दिया। मेरी हालत देखो और देखो कि मेरे साथ क्या हुआ है। मैं व्याकुल हूँ; और मैं अकेली क्या करूँ? काश मैं मर गई होती और वह

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.89%** है।

332 अबू-अल-हसन की कहानी, जो एक मज़ाकिया इंसान था! — तब वह रोई, और बुढ़िया भी उसके साथ रोने लगी। आगे बढ़कर उसने अबू-अल-हसन का चेहरा खोला तो देखा कि उसकी आँखें पट्टी से बंधी हुई थीं

और सूजी हुई थीं। उसने उसे ढक दिया और कहा, ऐ नुज़हत-अल-फ़ुआद, तू अबू-अल-हसन के लिए दुखी है। उसने उसे सांत्वना दी और दौड़ती हुई उसके पास से निकल गई, जहाँ से वह ज़ुबैदेह नाम की महिला के पास गई और उसे पूरी कहानी सुनाई। यह सुनकर ज़ुबैदेह महिला हँसी और बोली, खलीफ़े को बताओ, जिसने मुझे कम अक्ल का बताया है और इस मनहूस, झूठी दासी को मेरे साथ अकड़ दिखाने के लिए उकसाया है। लेकिन मेसरूर ने कहा, यह बुढ़िया झूठ बोल रही है; क्योंकि मैंने अबू-अल-हसन को स्वस्थ देखा था, और नुज़हत-अल-फ़ुआद तो मरी पड़ी थी। बुढ़िया ने उत्तर दिया, "झूठ तो तू ही बोलता है, और तू खलीफा और ज़ुबैदेह की पत्नी के बीच झगड़ा करवाना चाहता है।" मेसरूर ने पलटकर कहा, "हे अशुभ बुढ़िया, तेरे सिवा कोई झूठ नहीं बोलता, और तेरी पत्नी इस पर विश्वास करती है, क्योंकि वह मानसिक रूप से विक्षिप्त है।" इस पर ज़ुबैदेह की पत्नी क्रोधित होकर उस पर चिल्लाई और रोने लगी। अंत में खलीफा ने उससे कहा, "मैं झूठ बोलता हूँ, मेरा हिजड़ा झूठ बोलता है, तू झूठ बोलती है, और तेरी दासी भी झूठ बोलती है। मेरे विचार से सही तरीका यह है कि हम चारों साथ चलें और देखें कि हममें से कौन सच बोलता है।" तब मेसरूर ने कहा, "चलो हमारे साथ, ताकि मैं इस अशुभ बुढ़िया पर विपत्ति ला सकूँ और उसके झूठ बोलने के लिए उसे कोड़े मार सकूँ।" - "हे मूर्ख! बुढ़िया चिल्लाई: क्या तेरी बुद्धि मेरी जैसी है?" नहीं, तुम्हारी समझ तो मुर्गी जैसी है। — और मेसरूर उसकी बातों पर क्रोधित हो गया और उस पर हाथ उठाने ही वाला था; लेकिन ज़ुबैदेह ने उसे धक्का देकर दूर कर दिया और उससे कहा, उसकी सच्चाई तुम्हारी सच्चाई से और उसके झूठ तुम्हारे झूठ से तुरंत अलग हो जाएगी। वे चारों उठे और आपस में शर्त लगाकर महल के द्वार से बाहर निकलकर उस गली के द्वार तक चले गए जहाँ अबू हसन वाग रहता था। जब अबू-अल-

हसन ने उन्हें देखा, तो उन्होंने अपनी पत्नी नुज़हत-अल-फ़ुआद से कहा, “सच तो यह है कि हर फिसलन वाली चीज़ पैनकेक नहीं होती, और हर बार घड़े पर प्रहार करने से वह टूटता नहीं है।24 ऐसा लगता है कि बुढ़िया ने जाकर अपनी मालकिन को यह कहानी सुनाई है, और उसे हमारी स्थिति से अवगत कराया है, और उसने मेसरूर हिजड़े से बहस की है, और उन्होंने हमारी मृत्यु के संबंध में शर्त लगाई है: इसलिए खलीफ़ा, हिजड़ा, मालकिन ज़ुबैदेह और बुढ़िया, हम चारों हमारे पास आए हैं।” — इस पर नुज़हत-अल-फ़ुआद अपनी फैली हुई स्थिति से उठीं और बोलीं, “क्या किया जाए?” अबू-अल-हसन ने उन्हें उत्तर दिया, “हम दोनों अपनी मृत्यु का नाटक करेंगे।”

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.71%** है।

या फिर सोने वाला जाग उठा। 333 हम सब मरे हुए की तरह लेट गए, और अपनी साँस रोक ली। और उसने उसके प्रस्ताव को मान लिया। वे दोनों लेट गए, अपने पैर बाँध लिए, आँखें बंद कर लीं और अपनी साँस रोक ली, सिर किबले की दिशा में करके लेट गए,23 और अपने आप को इज़ार से ढक लिया। फिर खलीफ़े, ज़ुबैदेह, मसरूर और बूढ़ी औरत अबू-1-हसन वग के घर में दाखिल हुए और उन्हें और उनकी पत्नी को मृत अवस्था में लेटा हुआ पाया। जब ज़ुबैदेह ने उन्हें देखा, तो वह रो पड़ी और बोली, उन्होंने मेरी दासी की मृत्यु का दावा तब तक किया जब तक वह सचमुच मर नहीं गई; लेकिन मुझे लगता है कि अबू-1-हसन की मृत्यु ने उसे इतना दुखी किया कि वह उसके बाद उसी के कारण मर गई। हालाँकि, खलीफ़े ने कहा, अपनी बातों और दावों से मुझे मत रोको; क्योंकि वह अबू हसन से पहले मर गई, क्योंकि अबू हसन फटे-पुराने कपड़ों में, दाढ़ी नोंचकर और सीने पर दो मिट्टी के ढेले पीटते हुए मेरे पास

आया था; 27 और मैंने उसे सौ सोने के सिक्के और रेशम का एक टुकड़ा दिया, और उससे कहा, जाओ, उसके शरीर को दफ़नाने के लिए तैयार करो, और मैं तुम्हें उससे बेहतर एक रखैल दूँगा, और वह उसकी जगह सेवा करेगी: — और ऐसा प्रतीत होता है कि उसका नुकसान उसके लिए असहनीय था; इसलिए वह उसके बाद मर गया। इसलिए मैंने तुम्हें हरा दिया है, और तुम्हारा दांव जीत लिया है। — लेकिन ज़ुबैदेह ने बहुत कुछ कहा, और उनके बीच एक लंबा विवाद हुआ।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.39%** है।

331 ऐज़ुल हसन की कहानी, आदि। फिर खलीफा दो नकली लाशों के सिर के पास बैठ गया और बोला, अल्लाह के रसूल (अल्लाह उन पर रहमत करे!) की कब्र की कसम, और मेरे पूर्वजों की कब्रों की कसम, अगर कोई मुझे बता दे कि उनमें से कौन पहले मरा, तो मैं उसे हज़ार सोने के सिक्के दूंगा। और जब अबू हसन ने खलीफा के ये शब्द सुने, तो वह तुरंत उठा और उछल पड़ा, और बोला, ऐ अमीरुल मोमिनीन, मैं पहले मरा

था। मुझे हज़ार सोने के सिक्के दे दो, और इस तरह अपनी कसम पूरी कर लो। — तब नुज़हत-अल-फ़ुआद उठा और खलीफा और ज़ुबैदेह के सामने बैठ गया, जो अपनी सुरक्षा देखकर खुश हुए। लेकिन ज़ुबैदेह ने अपनी दासी को डांटा। खलीफा और ज़ुबैदेह ने उन दोनों को उनकी सुरक्षा पर बधाई दी और जान लिया कि यह दिखावटी मृत्यु सोना प्राप्त करने के उद्देश्य से एक चाल थी। इसलिए ज़ुबैदेह ने नुज़हत-अल-फ़ुआद से कहा, "तुम्हें यह सब किए बिना मुझसे अपनी इच्छा मांग लेनी चाहिए थी, न कि अपने कारण मेरे दिल को पीड़ा देनी चाहिए थी।" नुज़हत-अल-फ़ुआद ने उत्तर दिया, "मुझे शर्म आ रही थी, हे मेरी स्वामिनी।" लेकिन खलीफा हंसते-हंसते लगभग बेहोश हो गए और बोले, "हे अबू-अल-हसन, तुम तो अब भी मज़ाक करते रहते हो और अजीबोगरीब हरकतें करते रहते हो।" अबू-अल-हसन ने उत्तर दिया, "हे धनी के सरदार, यह चाल मैंने तुम्हारे हाथ से प्राप्त धन के अपव्यय के कारण चली; क्योंकि मुझे तुमसे दोबारा मांगने में शर्म आ रही थी। जब मैं अकेला था, तो मुझे धन का लालच नहीं था।" लेकिन चूंकि तूने मेरी शादी इस दासी से करा दी है जो मेरे साथ है, अगर मुझे तेरा सारा धन मिल जाता तो मैं उसे खत्म कर देता। और जब मेरा सारा धन समाप्त हो गया, तो मैंने यह चाल चली, जिसके द्वारा मैंने तुझसे ये सौ सोने के सिक्के और रेशम का एक टुकड़ा प्राप्त किया, ये सब हमारे स्वामी की ओर से दान हैं। अब मुझे हजार सोने के सिक्के जल्दी दे दे और अपनी शपथ पूरी कर। इस पर खलीफा और ज़ुबैदेह दोनों हँसे; और महल लौटने के बाद, खलीफा ने अबू हसन को हजार सोने के सिक्के देते हुए कहा, इन्हें मृत्यु से तुम्हारी सुरक्षा के लिए उपहार के रूप में स्वीकार करो। इसी प्रकार ज़ुबैदेह ने भी नुज़हत-अल-फ़ुआद को हजार सोने के सिक्के देते हुए उससे यही कहा। फिर खलीफा ने अबू-हसन को भरपूर वेतन और पर्याप्त आपूर्ति आवंटित की, और वह अपनी पत्नी के

साथ आनंद और सुख में तब तक रहता रहा, जब तक कि उन पर सुखों का अंत करने वाले, साथियों को अलग करने वाले, महलों और घरों को नष्ट करने वाले और कब्रों को भरने वाले का साया नहीं आ पड़ा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.37%** है।

बारहवें अध्याय पर टिप्पणियाँ टिप्पणी 1. यह कहानी काहिरा संस्करण में नहीं है, न ही उस पांडुलिपि में है जिससे क़ल्लांड ने अनुवाद किया था,[1] हालाँकि उन्होंने इसे अपने संस्करण में शामिल किया है; और मुझे इस बात की जानकारी नहीं है कि यह उस कृति की किसी अन्य प्रति में पाई जाती है, सिवाय उस प्रति के जिससे ब्रेस्लाउ संस्करण मुद्रित किया गया है। इन परिस्थितियों और इस तथ्य से कि इसका मुख्य और सर्वश्रेष्ठ भाग एक ऐतिहासिक किस्सा है, जिसे तथ्य के रूप में वर्णित किया गया है, मैं यह मानने को बाध्य हूँ कि यह 'हज़ार और एक रात' की प्रामाणिक कहानी नहीं है, और इसे उस कृति की कुछ प्रतियों में (शायद केवल एक में, किसी कमी को पूरा करने के लिए) जोड़ा गया है। लेकिन चूंकि यह एक प्रति में मौजूद है, और गैलेंड के संस्करण की सर्वश्रेष्ठ कहानियों में से एक है, इसलिए मैंने इसे वर्तमान संग्रह में सहर्ष स्थान दिया है। ब्रेस्लाउ संस्करण में 'रात' के क्रम में इसका स्थान मैंने इस अध्याय के आरंभ में बताया है; लेकिन उस संस्करण में 'तालक्स' के क्रम में, यह 'समुद्र के एस-सिंदिबाद' और 'भूमि के एस-सिंदिबाद' की कहानी के बाद आती है। जिस लेखक द्वारा मैंने इस कहानी का मुख्य भाग एक ऐतिहासिक किस्से के रूप में वर्णित पाया है, वह अल-इशकी हैं, जिन्होंने 'ओ.-मियनली सुल्तान मुस्तफा के शासनकाल के अंत से कुछ समय पहले, संभवतः पलायन के वर्ष में, अपना इतिहास पूरा किया था। 1032 (ई.स. 1623)। उन्होंने अपने स्रोत का उल्लेख नहीं किया है; और क्या यह

किसी पुराने इतिहासकार द्वारा वर्णित है, यह मुझे ज्ञात नहीं है; लेकिन संभवतः यह तथ्यों पर आधारित है। अल-इशकी की रचना में कहानी को सरल और सुखद ढंग से वर्णित किया गया है: ब्रेस्लाउ की 'हजार और एक रात' में इसे अधिक विस्तार से दिया गया है, लेकिन भाषा सामान्य है और त्रुटियों से भरी है, जिनमें से कुछ का विवरण आगे के नोट्स में दिया गया है। इसलिए, मैंने यहाँ इन दोनों रचनाओं का उपयोग किया है, जिनमें से प्रत्येक में कुछ ऐसी खूबियाँ हैं जो दूसरी में नहीं हैं। जहाँ तक संभव हो सका, मैंने पहली रचना का अधिक अनुसरण किया है; लेकिन बाद वाली रचना के सबसे अच्छे हिस्सों को जोड़कर मैंने जो अंश जोड़े हैं, वे कहानी के मेरे अनुवाद का मुख्य भाग हैं। अल-इशकी ने अबू-अल-हसन के विवाह और उसके बाद की घटनाओं का वर्णन नहीं किया है। गैलैंड ने स्पष्ट रूप से इस कहानी में काफी कुछ जोड़ा है। उन्होंने अपनी कल्पना के अनुसार अलंकरण किए, और इसे कई भागों में अरब रीति-रिवाजों और परंपराओं के साथ असंगत बना दिया। 1 वॉन हैमर की "Notice sur les douzc Manaserits conuus dcs Mille et Uno Nuits, qui existent en Europe," देखें, ट्रेबुटियू में।

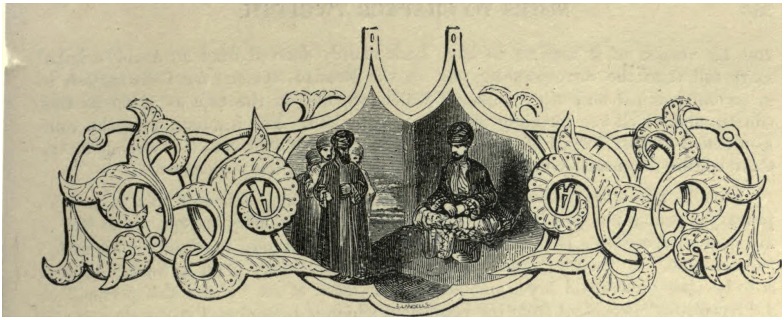

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.10%** है।

अध्याय बारह के लिए टिप्पणियाँ। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि उनका

अनुवाद मुख्य रूप से अरबी मूल पाठ से लिया गया है जो ब्रेस्लाउ संस्करण में दिए गए पाठ से कहीं अधिक विस्तृत है; क्योंकि मुझे इसमें कई काव्यात्मक और अन्य अंश दिखाई देते हैं जो उस संस्करण में दी गई कहानी में नहीं हैं, और निश्चित रूप से उनके द्वारा गढ़े नहीं गए हैं। उदाहरण के लिए, कहानी की शुरुआत के पास, मुझे काहिरा संस्करण में एक पिछली कहानी में मिलने वाले चार छंदों का एक ढीला अनुवाद दिखाई देता है: इस कृति के खंड i में पृष्ठ 305 देखें। टिप्पणी 2. शब्द "खलीआ", जिसका अनुवाद मैं "वैग" करता हूँ (यद्यपि यह इसका प्राथमिक अर्थ नहीं है, और न ही मुझे किसी शब्दकोश में इसका ऐसा अर्थ मिलता है, सिवाय मेरे द्वारा रचित एक पांडुलिपि के), आजकल सामान्यतः "मज़ाकिया", "व्यंग्यपूर्ण" या "हास्यपूर्ण" के अर्थ में प्रयोग किया जाता है, और कई अच्छे लेखकों ने इसका इसी प्रकार प्रयोग किया है। यहाँ इसे इसी अर्थ में समझा जाना चाहिए, न कि "त्यागी व्यक्ति" या "दुष्ट" के अर्थ में, यह कहानी के अंत में इसके प्रयोग के तरीके से स्पष्ट है। इसी प्रकार, "खलाह" का अर्थ "मज़ाकियापन" आदि है। टिप्पणी 3. मूल पाठ में, "कुमाजेह"। यह शब्द फ़ारसी "कुमाज" या "कुमाश" ("खमीर रहित रोटी" या "राख में पकी रोटी") से आया प्रतीत होता है। लेकिन आमतौर पर इसका अर्थ "बारीक आटा" होता है, और मैंने इसे किसी अन्य अर्थ में प्रयुक्त नहीं पाया है। टिप्पणी 4. पोटाश का प्रयोग भोजन के बाद हाथ धोने के लिए किया जाता है; लेकिन साबुन के सबसे आम विकल्प के रूप में मैंने "दुकाक" को देखा है, जो ल्यूपिन का भोजन है, जिसे अरबी में "तुरमुस" और बोलचाल में "तिर्मिस" कहा जाता है। टिप्पणी 5. कहानी के इस भाग के उदाहरण के लिए, हारून एर-रशचेद के चरित्र के संबंध में, अध्याय iii (खंड i, पृष्ठ 194) की टिप्पणी 22 देखें। टिप्पणी 0. अध्याय vii की टिप्पणी 18 देखें। टिप्पणी 7. सुबह

की नमाज़ में केवल चार रकअत होती हैं; अर्थात्, दो सुन्नत (या पैगंबर द्वारा निर्धारित), और दो फरक्ल (ईश्वरीय आदेश से)। "रकअत" के संबंध में, प्रस्तावना की टिप्पणी 1 देखें। टिप्पणी 8. सुन्नत नमाज़ और फ़र्ज़ नमाज़ के बाद, नमाज़ी अपने दाहिने कंधे की ओर देखते हुए कहता है, "आप पर सलाम हो और अल्लाह की रहमत हो!" फिर, अपने बाएं कंधे की ओर देखते हुए, वह इन्हीं शब्दों को दोहराता है। कुछ लोगों का मानना है कि ये अभिवादन केवल उन संरक्षक फ़रिश्तों को संबोधित हैं जो विश्वासी की रक्षा करते हैं और उसके सभी कार्यों पर नज़र रखते हैं; लेकिन अन्य कहते हैं कि ये फ़रिश्तों और मनुष्यों (अर्थात, केवल विश्वासियों) दोनों को संबोधित हैं, जो उपस्थित हो सकते हैं: हालाँकि, कोई भी व्यक्ति इनका उत्तर नहीं देता है। कुछ का मानना है कि प्रत्येक विश्वासी के साथ दो फ़रिश्ते होते हैं; अन्य कहते हैं, पाँच; अन्य कहते हैं, साठ, या एक सौ साठ। टिप्पणी 9. ब्रेस्लाउ संस्करण में, चार सौ कोड़े। टिप्पणी 10. "कदीब-अल-बान" का अर्थ है "पूर्वी विलो की टहनी।" टिप्पणी 11. अध्याय 5 की टिप्पणी 78 देखें। टिप्पणी 12. या अस्पताल। अरब के एक शहर में वही इमारत आम तौर पर बीमारों के अस्पताल और पागलों के आश्रय दोनों के रूप में काम करती है। टिप्पणी 13. पैगंबर ने कहा, "रात को अपने दरवाजे बंद कर लो; और ऐसा करते समय, ईश्वर का नाम याद करो [या बल्कि दोहराओ]; क्योंकि शैतान उस दरवाजे को नहीं खोल सकता जो ईश्वर के नाम पर बंद किया गया हो।"2 - जैसा कि मैंने आधुनिक मिस्रियों पर अपने काम में उल्लेख किया है,3 कई विद्वान और धर्मनिष्ठ व्यक्तियों और कुछ अन्य लोगों की यह आम प्रथा है कि वे दरवाजा बंद करते समय, रोटी ढकते समय, रात में अपने कपड़े बिछाते समय और अन्य अवसरों पर अपनी संपत्ति (साथ ही स्वयं को) बुरी आत्माओं या शैतानों से बचाने के लिए "दयालु, कृपालु ईश्वर के

नाम पर" कहते हैं। * मिश्कात-अल-मसूबच, खंड 2, पृष्ठ 341। 3 खंड 1, अध्याय 10।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.03%** है।

बारहवें अध्याय के लिए टिप्पणियाँ। टिप्पणी 14. शाब्दिक अर्थ है, "मैंने तुम्हें कभी भी मेरे लिए लाभकारी होते नहीं देखा है।" टिप्पणी 15. अध्याय 10 की टिप्पणियाँ 44 और 18 देखें। "ईमानदारी का अध्याय" कुरान का 112वां (या अंतिम से दो पहले वाला) अध्याय है। टिप्पणी 16. "नुज़हत-अल-फ़ुआद" का अर्थ है "दिल की खुशी"। टिप्पणी 17. यहाँ वर्णित दो प्रथाएँ, अर्थात् शव के पैर की उंगलियों को बाँधना और शव पर चाकू या तलवार रखना, कुछ मुस्लिम देशों में अभी भी प्रचलित हैं; लेकिन मैंने मिस्र में इनके पालन के बारे में नहीं सुना, न ही चाकू या तलवार के साथ नमक रखने की प्रथा के बारे में। माना जाता है कि लोहा और नमक दोनों जिन्न को दूर भगाते हैं और उनके आने से रोकते हैं (देखें खंड 1, पृष्ठ 30 और 32), और इसलिए, शायद, इनका इस प्रकार उपयोग किया जाता है। टिप्पणी 18. नुज़हत-अल-फ़ुआद ने अबू-अल-हसन से विवाह करने पर कोषाध्यक्ष के पद से इस्तीफा दे दिया होगा। टिप्पणी 19. अबू-अल-हसन अंतिम संस्कार के खर्चों को पूरा करने के लिए धन और कफ़न के लिए रेशम के टुकड़े की भेंट की उम्मीद कर रहा था। अध्याय 6 की टिप्पणी 11 देखें। टिप्पणी 20. यह एक सामान्य प्रकार का है। वीर्यपात। इस संदर्भ में, "घंटे" से हमारा तात्पर्य या तो "अबू-1-हसन के जन्म का समय" हो सकता है, या वह समय जिसमें उन्हें खलीफा का वरदान प्राप्त साथी नियुक्त किया गया था। नोट 21. शाब्दिक रूप से "हाशिमी नस"। आँखों के बीच क्रोध की नस," हाशिम के वंशजों में विशेष रूप से उल्लेखनीय प्रतीत होती है। क्या यह स्वयं हाशिम

में भी ऐसा था, मुझे इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता; लेकिन इसका उल्लेख उनके परपोते, पैगंबर की विशेषताओं में किया गया है। नोट 22. "चित्र" शब्द का सामान्य अर्थ "नक्काशीदार मूर्तियाँ," "प्रतिमाएँ," या "मॉडल" होता है। मेरा मानना है कि यहाँ चित्रों का अर्थ है क्योंकि नक्काशीदार मूर्तियाँ सामान्यतः जीवित प्राणियों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो मुस्लिम कानून द्वारा निषिद्ध हैं। ["आनंद का उद्यान" का उल्लेख नूर-ए-दीन और अनीस-अल-जलीस की कहानी में किया गया है। - संपादक] नोट 23. यह पैगंबर का एक कथन है, और अक्सर एक मुसलमान अपनी पत्नी को चुप कराने के लिए इसका हवाला देता है। नोट 24. यहाँ पाठ त्रुटिपूर्ण है; लेकिन डॉ. हबीक'त ने सुधारों की ओर इशारा किया है, और मैं उनसे केवल दो कहावतों में से बाद वाली कहावत के अंतिम शब्द में (अरबी में) आर्टिकल जोड़ने में भिन्न हूँ। नोट 25. यहाँ, इसके अलावा, पाठ में त्रुटि प्रतीत होती है। मैंने "कीलेह" या "कीलेह" के स्थान पर "किब्लेह" पढ़ा है। कुछ मुसलमान शव का सिर किब्लेह या मक्का की दिशा में मोड़ते हैं, जबकि अन्य उसे उस दिशा में झुकाते हैं। इसी स्थिति में शव को कब्र में रखा जाता है। टिप्पणी 26. इस अंश में भी, मुझे एक अनुमानित संशोधन का सहारा लेना पड़ रहा है। टिप्पणी 27. "दो ढेले" के रूप में अनुवादित शब्द "पत्थर के दो टुकड़े" या "दो ईंटें" भी दर्शाता है। अत्यधिक संकट की स्थिति में, कठोर, सूखी मिट्टी के दो ढेलों से सीने पर मारना निम्न वर्ग के अरबों में एक आम बात है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.73%** है।

दो सौ पचासीवीं रात के एक भाग से शुरू होकर, दो सौ चौरानवेवीं रात के एक भाग पर समाप्त होता है। मोहम्मद अली जौहरी या 'झूठे खलीफा' की कहानी। ऐसा कहा जाता है कि एक रात खलीफा ह्तिरून-अर-राशिद

को अत्यधिक बेचैनी हुई, जिसके कारण उन्होंने अपने वज़ीर जाफ़र अल-बर्मेकी को बुलाया और उनसे कहा, "मेरा हृदय व्याकुल है, और मैं आज रात बगदाद की गलियों में घूमना और लोगों के कामों को देखना चाहता हूँ; लेकिन इस शर्त पर कि हम व्यापारियों के वेश में रहें, ताकि कोई हमें पहचान न सके।" वज़ीर ने उत्तर दिया, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।" वे तुरंत उठे और अपने शानदार वस्त्र उतारकर व्यापारियों के वस्त्र पहन लिए। वे तीन थे: खलीफा, जाफ़र और जल्लाद मेसरूर।

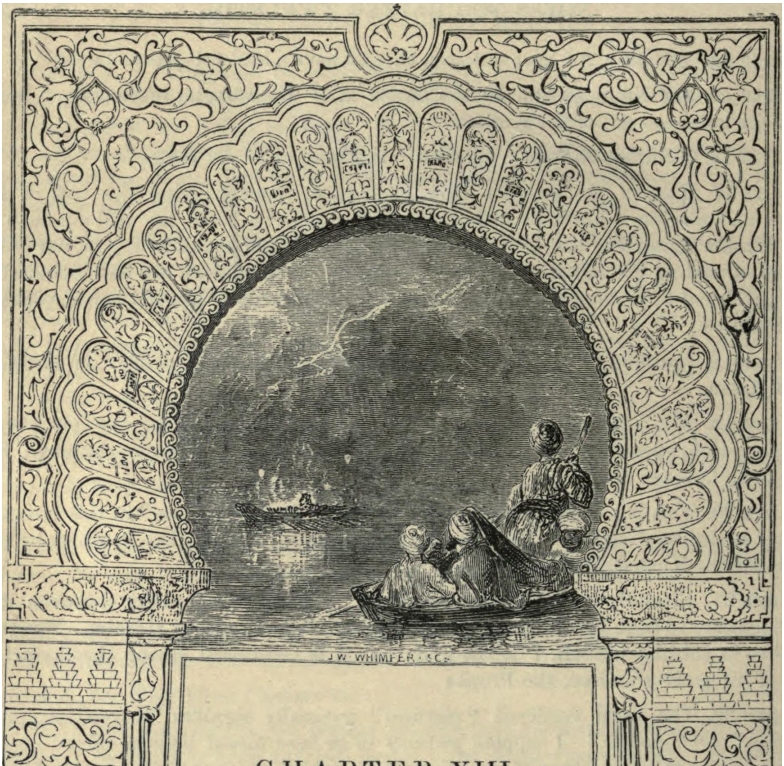

CHAPTER XIII.

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.96%** है।

मोहम्मद अली जौहरी की कहानी, इत्यादि। 339 वे जगह-जगह भटकते हुए टिगरिस नदी पर पहुँचे, जहाँ उन्होंने एक बूढ़े व्यक्ति को नाव में बैठे

देखा; और उसके पास जाकर उन्होंने उसे प्रणाम किया और कहा, हे शेख, हम आपसे कृपा और दया की भीख मांगते हैं कि आप हमें अपनी इस नाव में ठहराएँ और इस सोने के टुकड़े को अपने किराए के रूप में स्वीकार करें। लेकिन शेख ने कहा, यहाँ कौन मनोरंजन कर सकता है? क्योंकि खलीफा इलुरून एर-इलाशेद हर रात एक छोटी नाव में टिगरिस नदी पर सवार होता है, जिसके साथ एक उद्घोषक होता है जो घोषणा करता है और कहता है, हे सभी लोगों के समूह, बड़े और छोटे, कुलीन और आम, नौजवान और युवक, जो कोई भी नाव में सवार होकर टिगरिस नदी पार करता है, मैं उसका सिर काट दूँगा या उसे उसकी नाव के मस्तूल पर लटका दूँगा! — अब आप लगभग उससे मिल चुके हैं; क्योंकि उनकी नाव आ रही है। — तब खलीफा और जाफ़र ने कहा, हे शेख, सोने के ये दो टुकड़े ले लीजिए और हमें उन मेहराबों में से एक में ले जाइए, ताकि हम वहाँ तब तक रहें जब तक खलीफा की नाव गुजर न जाए। शेख ने उत्तर दिया, मुझे सोना दे दीजिए, और हमारा भरोसा उस अल्लाह पर है जिसका नाम महान है! उन्होंने सोना लिया, अपनी नाव को सोने के साथ पानी में उतारा और थोड़ी दूर चले गए; और देखो, टिगरिस नदी के बीच से नाव आ रही थी, और उसमें जलती हुई मोमबत्तियाँ और मशालें थीं।2 तब शेख ने उनसे कहा, क्या मैंने तुम्हें नहीं बताया था कि खलीफा हर रात नदी के किनारे से गुजरते हैं? फिर उन्होंने कहना शुरू किया, हे श्रेष्ठ रक्षक, अपनी सुरक्षा के पर्दों को मत हटाओ! उन्होंने उन्हें एक मेहराब में पहुँचाया और उन पर एक काला पर्दा डाल दिया; और वे पर्दे के नीचे से उस दृश्य को देखकर अपनी जिज्ञासा शांत करने लगे। उन्होंने नाव के अगले सिरे पर एक आदमी को देखा जिसके हाथ में लाल सोने का एक मटका था, जिसमें वह अगरबत्ती जला रहा था। उसने लाल साटन का एक बनियान पहना हुआ था; उसके एक कंधे पर पीले रंग का कढ़ाईदार कपड़ा था;

उसके सिर पर मलमल की पगड़ी थी; और दूसरे कंधे पर हरे रेशम का एक थैला था जो अगरबत्ती से भरा हुआ था, जिससे वह आम लकड़ी के बजाय मटके में ईंधन भर रहा था। उन्होंने नाव के पिछले सिरे पर एक और आदमी को भी देखा, जो पहले वाले की तरह कपड़े पहने हुए था और उसके हाथ में भी वैसा ही मटका था। नाव में दो सौ मेमलुक भी थे, जो दाएं और बाएं खड़े थे; और उस पर लाल सोने का एक सिंहासन रखा हुआ था, जिस पर चंद्रमा के समान एक सुंदर युवक बैठा था, जिसने पीले सोने की कढ़ाई वाला काला वस्त्र पहना हुआ था। उसके सामने वज़ीर जाफ़र जैसा दिखने वाला एक आदमी था, और उसके आगे मेसरूर जैसा एक हिजड़ा हाथ में खींची हुई तलवार लिए खड़ा था। और उन्होंने बीस और शुभचिंतकों को देखा। अब जब खलीफा ने यह देखा, तो उसने कहा, हे जाफ़र,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.28%** है।

310 जौहरी मोहम्मद अली की कहानी, वज़ीर ने उत्तर दिया, ऐ मोमिनों के राजकुमार, मैं आपकी सेवा में तत्पर हूँ। खलीफ़ा ने कहा, शायद यह मेरे बेटों में से एक है; या तो अल-मामून, या अल-एमीन। फिर सिंहासन पर बैठे उस युवक को निहारते हुए, उन्होंने पाया कि वह अत्यंत सुंदर, आकर्षक और कद में उचित है; और ध्यान से देखने के बाद, उन्होंने वज़ीर की ओर देखा और कहा, ऐ वज़ीर। — मैं आपकी सेवा में तत्पर हूँ, जाफ़र ने उत्तर दिया। खलीफ़ा ने कहा, अल्लाह की कसम, सिंहासन पर बैठे इस व्यक्ति ने खलीफ़ा के गुणों में कोई कमी नहीं छोड़ी है; और जो उसके सामने है, वह ऐ जाफ़र, मानो तुम स्वयं हो; और जो हिजड़ा उसके सिर के पास खड़ा है, वह मेसरूर के समान है; और ये शुभचिंतक मेरे शुभचिंतकों के समान हैं। इस मामले से मेरा दिमाग चकरा गया है!

अल्लाह की कसम, मैं इस घटना से आश्चर्यचकित हूँ, ऐ जाफ़र! — और मैं भी, अल्लाह की कसम, ऐ मोमिनों के सरदार, वज़ीर ने उत्तर दिया। — फिर नाव आगे बढ़ती गई और उनकी आँखों से ओझल हो गई; तब शेख अपनी नाव लेकर आगे बढ़े और बोले, हमारी सुरक्षा के लिए अल्लाह का शुक्र है, और यह कि कोई भी हमारे साथ नहीं मिला! खलीफ़ा ने कहा, ऐ शेख, क्या खलीफ़ा हर रात टिगरिस नदी में सवार होते हैं? शेख ने उत्तर दिया, हाँ, ऐ मेरे मालिक; और वे पूरे एक साल से ऐसा करते आ रहे हैं। खलीफ़ा ने कहा, ऐ शेख, हम आपसे निवेदन करते हैं कि आप अगली रात यहाँ हमारा इंतज़ार करें, और हम आपको पाँच सोने के सिक्के देंगे; क्योंकि हम अजनबी हैं और मनोरंजन करना चाहते हैं, और हम अल-खंदक इलाके में ठहरे हुए हैं। शेख ने उत्तर दिया, मैं आपकी सेवा में तत्पर हूँ। तब खलीफा, जाफ़र और मेसरूर शेख से विदा लेकर महल लौट आए और अपने व्यापारी वस्त्र उतारकर राजसी वस्त्र धारण कर अपने-अपने स्थान पर बैठ गए। अमीर, वज़ीर, दरबारी और लेफ्टिनेंट भी आ गए और सभा पूरी तरह से उपस्थित थी। जब दिन ढल गया और सभी वर्ग के लोग अपने-अपने रास्ते चले गए, तब खलीफा हारून-अर-रशीद ने कहा, ऐ जाफ़र, हमारे साथ उठो ताकि हम दूसरे खलीफा को देखकर मनोरंजन कर सकें। इस पर जाफ़र और मेसरूर हँस पड़े। उन्होंने फिर से व्यापारी वस्त्र धारण किए और अत्यंत हर्षोल्लास की अवस्था में शहर में घूमने निकल पड़े। वे एक निजी द्वार से बाहर निकले; और जब वे टिगरिस नदी पर पहुँचे, तो उन्होंने नाव के मालिक शेख को उनका इंतज़ार करते हुए पाया। इसलिए वे उसके साथ नाव में सवार हो गए; और वे उसके साथ ज़्यादा देर बैठे भी नहीं थे कि झूठे यहूदी की नाव आ गई।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.61%** है।

या फिर झूठे खलीफ़े के पास। 341 उनके पास आया; और ध्यान से देखने पर उन्होंने उसमें दो सौ मेमलुक देखे, जो पिछली रात के मेमलुक से भिन्न थे, और मशालें धारण करने वाले हमेशा की तरह घोषणा कर रहे थे। खलीफ़े ने कहा, हे वज़ीर, यह ऐसी बात है कि अगर मैंने इसके बारे में सुना होता तो मैं विश्वास नहीं करता; लेकिन मैंने इसे अपनी आँखों से देखा है। फिर उसने उस नाव के स्वामी से कहा जिसमें वे बैठे थे, हे शेख, ये दस सोने के सिक्के ले लो, और हमें उनकी ओर ले चलो; क्योंकि वे प्रकाश में हैं, और हम अंधेरे में हैं; इसलिए हम उन्हें देखेंगे, और उन्हें देखकर अपना मनोरंजन करेंगे, और वे हमें नहीं देख पाएंगे। इसलिए शेख ने दस सोने के सिक्के लिए, और अपनी नाव को उनकी ओर मोड़कर, झूठे खलीफ़े की नाव के चारों ओर फैले अंधेरे में आगे बढ़ा, जब तक कि वे बागों में नहीं पहुँच गए, जहाँ उन्होंने एक चारदीवारी वाला बाड़ा देखा। इस घेरे में झूठे खलीफ़े की नाव लंगर डालकर रुकी; और देखो, वहाँ कुछ युवक खच्चर पर काठी और लगाम कसकर खड़े थे; झूठे खलीफ़े ने उतरकर खच्चर पर सवार होकर अपने शुभचिंतकों के बीच से आगे बढ़ना शुरू किया; मशाल लिए हुए लोग शोर मचा रहे थे और घर के नौकर झूठे खलीफ़े की सेवा में लगे हुए थे। फिर हारू एर-इलाशे, जाफ़र और मेसरूर के साथ वहाँ उतरे और वे मेमलुक लोगों के बीच से होते हुए उनके आगे चलने लगे। लेकिन कलश धारण करने वालों ने उनकी ओर देखा और पाया कि तीन व्यक्ति व्यापारियों के वस्त्र पहने हुए थे और अजनबी प्रतीत हो रहे थे। वे उनसे नाराज़ हुए और उन्होंने इशारा करके उन्हें झूठे खलीफ़े के सामने पेश करवाया। झूठे खलीफ़े ने उन्हें देखकर पूछा, “तुम यहाँ कैसे आए और इस समय क्यों आए हो?” उन्होंने उत्तर दिया, “हे हमारे स्वामी, हम विदेशी व्यापारियों का एक समूह हैं। हम आज यहाँ आए हैं और आज रात टहलने निकले हैं। तभी आप पास आए और ये

लोग आकर हमें पकड़ लिया और आपके सामने खड़ा कर दिया। यही हमारी कहानी है।” झूठे खलीफ़े ने उत्तर दिया, “तुम्हें कोई हानि नहीं होगी, क्योंकि तुम अजनबी हो; लेकिन यदि तुम बगदाद के होते, तो मैं तुम्हारे सिर काट देता।” फिर उसने अपने वज़ीर की ओर देखकर कहा, “इन लोगों को अपने साथ ले जाओ; क्योंकि ये आज रात हमारे मेहमान हैं।” और वज़ीर ने उत्तर दिया, "हे हमारे स्वामी, मैं सुनता और आज्ञा मानता हूँ।" इसके बाद, झूठा खलीफ़ा और उसके साथी आगे बढ़े, जब तक कि वे एक ऊँचे और भव्य महल में नहीं पहुँच गए, जो मज़बूती से बना था, जैसा किसी सुल्तान के पास नहीं था, जो धूल से उठकर बादलों की तलहटी तक पहुँचता था। उसका दरवाज़ा सज का बना था, जो चमकीले सोने से सजा था; और इस दरवाज़े से होकर एक व्यक्ति दूसरे महल में प्रवेश करता था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **24.95%** है।

एक फव्वारे और थोड़े ऊँचे चबूतरे वाला एक कमरा/ और कालीन, और ब्रोकेड से ढके कुशन, और छोटे तकिए, और लंबे गद्दे;9 उसमें एक पर्दा लटका हुआ था; और वहाँ ऐसा फर्नीचर था जिसने दर्शकों के मन को चकित कर दिया, और जिसका वर्णन करना असंभव था; और दरवाजे पर ये दो छंद खुदे हुए थे: — यह महल — जिस पर आशीर्वाद और शांति हो! — भाग्य ने अपनी सुंदरता से इसे सुशोभित किया है: इसमें अनेक प्रकार के चमत्कार और दुर्लभ वस्तुएँ हैं, इसलिए लेखक इसका वर्णन करने में असमंजस में हैं। झूठा खलीफा, अपने साथियों के साथ प्रवेश करके, आगे बढ़ा और रत्नजड़ित सोने के सिंहासन पर बैठ गया, जिस पर पीले रेशम का प्रार्थना-कालीन था; और जब उसके साथी बैठ गए, और जल्लाद तैनात हो गया

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.81%** है।

मोहम्मद अली जौहरी की कहानी, इत्यादि। 343 अपने स्वामी के सामने, नौकरों ने मेज लगाई और सभी ने भोजन किया। फिर बर्तन हटा दिए गए, हाथ धोए गए और सेवक शराब लेकर आए। बोतलें और प्याले सजाए गए और शराब परोसी गई, यहाँ तक कि वह खलीफा मरून एर-इलाशीद

तक पहुँची; लेकिन उन्होंने पीने से इनकार कर दिया; इस पर झूठे खलीफा ने जाफर से कहा, तुम्हारा साथी क्यों नहीं पी रहा है? - हे मेरे स्वामी, वज़ीर ने उत्तर दिया, उसने बहुत समय से यह पेय नहीं पिया है। तब झूठे खलीफा ने कहा, मेरे पास एक और पेय है, जो तुम्हारे साथी के लिए उपयुक्त है, और यह एक प्रकार की साइडर है। और उसने उसे लाने का आदेश दिया। तो वे उसे तुरंत ले आए; और झूठा खलीफा हारून-एर-हाशीद की ओर बढ़ा और उसके सामने खड़े होकर उससे कहा, जब भी तुम्हारी बारी आए, इस पेय को पी लेना। फिर वे आनंदपूर्वक शराब के प्याले पीते रहे, यहाँ तक कि नशा उनके सिर में चढ़ गया और उनकी बुद्धि पर हावी हो गया; तब खलीफा इलारून-एर-राशिद ने अपने अयज़ेर से कहा, ऐ जाफ़र, अल्लाह की कसम, हमारे पास ऐसे बर्तन नहीं हैं। काश, मुझे इस नौजवान का इतिहास पता होता! — लेकिन जब वे आपस में निजी तौर पर बात कर रहे थे, तो नौजवान ने उनकी ओर एक नज़र डाली और पाया कि वज़ीर खलीफा से कानाफूसी कर रहा है: तो उसने कहा, कानाफूसी करना असभ्यता का कार्य है। इसलिए वज़ीर ने उत्तर दिया, "यहाँ कोई अभद्रता नहीं हुई है; परन्तु मेरे साथी का कहना है, मैंने लगभग सभी देशों की यात्रा की है, महानतम राजाओं के साथ भोज किया है और योद्धाओं के साथ संगति की है, फिर भी मैंने इससे बेहतर दावत नहीं देखी, न ही इससे अधिक आनंदमय रात का अनुभव किया है; सिवाय इसके कि बगदाद के लोग कहते हैं, बिना संगीत के शराब पीने से कभी-कभी सिरदर्द हो जाता है।" और जब झूठे खलीफ़े ने ये शब्द सुने, तो वह मुस्कुराया और प्रसन्न हो गया। उसके हाथ में एक छड़ी थी, और उसने उससे एक गोल तकिये पर प्रहार किया; जिसके बाद एक द्वार खुला, और उसमें से एक हिजड़ा निकला जो चमकीले सोने से जड़ा हुआ हाथीदांत का सिंहासन लिए हुए था, और उसके पीछे एक अत्यंत सुंदर,

आकर्षक, सुरुचिपूर्ण और परिपूर्ण स्त्री थी। हिजड़े ने सिंहासन रखा, और स्त्री उस पर बैठ गई, मानो निर्मल आकाश में सूर्य की तरह चमक रही हो। उसके हाथ में भारतीय निर्मित एक वीणा थी, जिसे उसने अपनी गोद में रखा और माँ की तरह अपने बच्चे पर झुककर उसके लिए गीत गाने लगी। लेकिन पहले, उसने भावपूर्ण ढंग से चौबीस धुनें बजाईं, जिससे श्रोता चकित रह गए। फिर अपनी पहली धुन पर लौटकर, उसने उत्साहपूर्ण लय में ये छंद गाए: —

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.05%** है।

314 मोहम्मद अली (जवाहरात सजे हुए) की कहानी: मेरे हृदय में प्रेम की ज़ुबान तुझसे कहती है, तुझे बताती है कि मैं तुझसे मुग्ध हूँ; और मेरे पास इसका प्रमाण है एक पीड़ादायक हृदय की जलन, एक घायल आँख और लगातार बहते आँसू। मैंने तुझसे प्रेम करने से पहले प्रेम को नहीं जाना था; परन्तु ईश्वर का विधान उसके प्राणियों पर आ पड़ता है। और जब झूठे खलीफ़े ने युवती द्वारा गाए गए इन छंदों को सुना, तो वह ज़ोर से चिल्लाया, और अपने वस्त्र को कमर तक फाड़ डाला; जिसके बाद उस पर एक पर्दा गिरा दिया गया, और सेवक उसके लिए पहले से अधिक सुंदर दूसरा वस्त्र लाए, और उसने उसे पहन लिया। फिर वह पहले की तरह बैठ गया; और जब प्याला उसके पास आया, तो उसने फिर से गोल तकिये पर छड़ी मारी; और देखो, एक द्वार खुला, और उसमें से एक हिजड़ा सोने का सिंहासन लिए हुए निकला, और उसके पीछे पहली युवती से भी अधिक सुंदर युवती थी। और वह सिंहासन पर विराजमान हुई, उसके हाथ में एक ऐसा वीणा था जो ईर्ष्यालु हृदय को भी दुखी कर देता; और उसने उस पर ये दो छंद गाए: — मैं कैसे धैर्य रख सकती हूँ, मेरे हृदय में प्रेम की आग जल रही है, और मेरी आँखों से आँसू लगातार

बह रहे हैं? अल्लाह की कसम, जीवन में मुझे प्रसन्न करने के लिए कोई मिठास नहीं है। और दुःख से भरा हृदय कैसे प्रसन्न हो सकता है? और इन छंदों को सुनकर वह युवक फिर से जोर से रोया, और अपने वस्त्रों को कमर तक फाड़ डाला; और उसके ऊपर पर्दा गिरा दिया गया, और उसके लिए दूसरा वस्त्र लाया गया, जिसे उसने पहन लिया। फिर अपने आसन पर शांत होकर, वह अपनी पूर्वस्थिति में लौट आया, और प्रसन्नतापूर्वक बातचीत में शामिल हो गया; और जब उसके पास प्याला आया, तो उसने गोल तकिये पर प्रहार किया, और एक हिजड़ा बाहर आया जिसके पीछे उससे भी अधिक सुंदर युवती थी। हिजड़े के पास एक सिंहासन था, और युवती उस पर बैठ गई, उसके हाथ में वीणा थी, और उसने ये छंद गाए: — हे मेरे त्याग को त्याग और अपनी क्रूरता को कम करो; क्योंकि मेरा हृदय तुम्हारे अस्तित्व के कारण तुम्हें नहीं छोड़ पाया है! एक विक्षिप्त, दुखी, शोकग्रस्त प्रेमी पर दया करो, जो इच्छा से भरा है, और तुम्हारे लिए अपने जुनून का गुलाम है! बीमारी ने उसे उसके उन्माद के कारण कमजोर कर दिया है, और उसने तुम्हारी स्वीकृति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की है। हे पूर्णिमा,11 जिसका स्थान मेरे हृदय में है! मैं किसी अन्य मनुष्य को तुमसे अधिक कैसे पसंद कर सकता हूँ? और फिर, जब युवक ने ये छंद सुने, तो वह जोर से रोया, अपने कपड़े फाड़ डाले, और उन्होंने उस पर पर्दा गिरा दिया, और उसके लिए दूसरे कपड़े लाए।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.45%** है।

या फिर झूठा खलीफ़े। 345 इसके बाद, वह अपने शुभचिंतकों के साथ अपनी पूर्वस्थिति में लौट आया, और प्याले इधर-उधर घूमने लगे; और जब प्याला उसके पास आया, तो उसने पहले की तरह गोल तकिये पर प्रहार किया; तभी द्वार खुला, और उसमें से एक सिंहासन लिए हुए एक

व्यक्ति निकला, और उसके पीछे एक युवती थी। उसने उसके लिए सिंहासन स्थापित किया, और वह उस पर बैठ गई, और वीणा लेकर उसे धुन दी, और इस प्रकार गाया: — अलगाव और घृणा कब समाप्त होंगे, और बीते हुए सुख कब लौटेंगे? कल हम एक ही घर में एक साथ थे, सुखी वार्तालाप कर रहे थे, और ईर्ष्या करने वालों को बेपरवाह देख रहे थे; परन्तु भाग्य ने हमें धोखा दिया है और हमें अलग कर दिया है, हमारे निवास को रेगिस्तान की तरह छोड़ दिया है। हे मेरे निंदाकार, क्या तू चाहता है कि मैं अपने प्रियतम को छोड़ दूं? मुझे लगता है कि मेरा हृदय निंदाकार की इच्छा का पालन नहीं करेगा। तो मुझे दोष देना बंद कर दे, और मुझे मेरे जुनून में छोड़ दे; क्योंकि मेरा मन प्रियतम के आनंदमय विचारों से खाली नहीं रहा है। हे मेरे स्वामी,12 जो विश्वासघाती और परिवर्तनशील रहे हैं, यह न समझें कि आपके विमुख होने के कारण मेरा हृदय आपको त्याग चुका है। और झूठे खलीफा ने जब युवती का गीत सुना, तो वह फिर से जोर से चिल्लाया, अपने कपड़े फाड़ डाले और गिर पड़ा; जिस पर सेवकों ने हमेशा की तरह उस पर पर्दा गिराने की कोशिश की; लेकिन उसकी डोरियाँ अचल थीं; और इहिरून एर-रशीद ने उस युवक की ओर देखते हुए उसके शरीर पर मिक्राअह से पिटाई के निशान देखे। इसलिए देखने और स्वयं इस तथ्य की पुष्टि करने के बाद, उसने अपने वज़ीर से कहा, हे जाफ़र, अल्लाह की कसम, वह एक सुंदर युवक है, लेकिन एक घिनौना चोर है। - जाफ़र ने कहा, हे विश्वासियों के सरदार, तुमने यह कैसे पता लगाया? खलीफा ने जवाब दिया, क्या तुमने उसकी बगलों पर कोड़ों के निशान नहीं देखे? तब सेवकों ने अपने स्वामी पर पर्दा गिरा दिया और उनके लिए कपड़ों का एक और सेट लाए; और जब उन्होंने उसे पहन लिया, तो वे अपने खास साथियों के साथ पहले की तरह अपनी सीट पर बैठ गए; लेकिन खलीफा और जाफर की ओर देखते हुए

उन्होंने देखा कि वे आपस में निजी बातचीत कर रहे हैं; तब उन्होंने उनसे कहा, हे दोनों नौजवानों, क्या खबर है? तब जाफ़र ने उत्तर दिया, “हे हमारे स्वामी, खुशखबरी है; सिवाय इसके कि यह तथ्य आपसे छिपा नहीं है कि मेरा यह साथी व्यापारियों में से है, और उसने पृथ्वी के सभी महान शहरों और क्षेत्रों की यात्रा की है, और राजाओं और श्रेष्ठ पुरुषों के साथ संगति की है, और वह मुझसे कहता है, “निःसंदेह, आज रात हमारे स्वामी खलीफ़ा ने जो किया है वह अत्यधिक फिजूलखर्ची है, और मैंने पृथ्वी के सभी देशों में किसी को भी ऐसा करते नहीं देखा है; क्योंकि उसने इस प्रकार के मुकदमों को फाड़ डाला है।”

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.53%** है।

316 जौहरी मोहम्मद अली की कहानी, वस्त्र; प्रत्येक सूट की कीमत एक हजार सोने के सिक्कों के बराबर है; और यह तो हद से ज़्यादा खर्चा है। — लेकिन झूठे खलीफा ने उत्तर दिया, यह क्या है! बेशक धन मेरा है, और कपड़ा भी मेरा है; और यह सेवकों और अन्य परिचारकों को उपहार देने का एक साधन है: क्योंकि मेरे द्वारा फाड़ा गया प्रत्येक वस्त्र उपस्थित साथियों में से एक के लिए है, और मैंने प्रत्येक वस्त्र के साथ उन्हें पाँच सौ सोने के सिक्के दिए हैं। तब वज़ीर ने कहा, हे हमारे स्वामी, आपने बहुत अच्छा किया है। और उसने ये दो आयतें पढ़ीं: — सद्गुणों ने तेरे हाथों के बीच में एक महल बनाया है, और तूने अपना धन सभी मनुष्यों के लिए साझा किया है। यदि सद्गुण कभी अपने द्वार बंद कर लें, तो तेरे हाथ वह चाबी होंगे जो उनका ताला खोल देंगे। जब उस नौजवान ने वज़ीर जाफ़र के मुँह से ये आयतें सुनीं, तो उसने उन्हें एक हज़ार सोने के सिक्के और वस्त्र भेंट करने का आदेश दिया। फिर उनके बीच प्याले बाँटे गए, और शराब उन्हें अच्छी लगी। एर-रशीद ने अपने वज़ीर से कहा, "हे

जाफ़र, उससे उसकी बगलों पर पड़े घावों के निशानों के बारे में पूछो, ताकि हम देख सकें कि वह क्या जवाब देता है।" जाफ़र ने उत्तर दिया, "जल्दी मत करो, हे हमारे स्वामी, बल्कि अपने मन को शांत करो; क्योंकि धैर्य अधिक उचित है।" खलीफ़ा ने कहा, "मेरी कसम, और अब्बास की कब्र की कसम, अगर तुम उससे नहीं पूछोगे, तो मैं तुम्हारी साँसें रोक दूँगा।" इस पर उस नौजवान ने वज़ीर की ओर देखा और कहा, "तुम्हें और तुम्हारे साथी को क्या हुआ है कि तुम आपस में फुसफुसा रहे हो? मुझे अपनी बातचीत का विषय बताओ।" जाफ़र ने उत्तर दिया, "यह अच्छा है।" लेकिन उस नौजवान ने जवाब दिया, मैं अल्लाह की कसम खाकर तुमसे विनती करता हूँ कि तुम मुझे अपनी कहानी बताओ और अपने मामले में कुछ भी मत छुपाओ। तब वज़ीर ने कहा, ऐ मेरे मालिक, उसने तुम्हारे शरीर पर कोड़ों और मिक्राआह के निशान देखे और वह बहुत हैरान हुआ और बोला, खलीफ़ा को कैसे पीटा जा सकता है? और वह इसका कारण जानना चाहता है। जब उस नौजवान ने यह सुना, तो वह मुस्कुराया और बोला, जान लो कि मेरी कहानी असाधारण है और मेरा मामला अद्भुत है: अगर यह समझ में अंकित हो जाए, तो यह उसे सबक सिखाएगा जो नसीहत पाना चाहता है। फिर वह कराह उठा और ये आयतें पढ़ीं: - मेरी कहानी अद्भुत है, सभी चमत्कारों से बढ़कर। मैं प्रेम की कसम खाता हूँ कि मेरे रास्ते तंग हो गए हैं। तो अगर तुम मुझे सुनना चाहते हो, तो सुनो; और इस सभा में हर कोई चुप रहे। मेरे शब्दों पर ध्यान दो; क्योंकि वे अर्थपूर्ण हैं, और मेरा वचन सत्य है; वह झूठ नहीं है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.97%** है।

या झूठा खलीफा। C47 मैं वासना और तीव्र जुनून का शिकार हूँ, और मेरी हत्यारी सभी ऊँची छाती वाली युवतियों से बढ़कर है। उसकी आँखें

भारतीय तलवार की तरह गहरी काली हैं, और वह अपनी भौहों के धनुष से तीर चलाती है। अब मेरा हृदय यह महसूस करता है कि तुममें हमारे इमाम, इस युग के खलीफा, और उत्तम वंश के हैं; और तुममें से दूसरे वह हैं जिन्हें जाफ़र कहा जाता है, उनके वज़ीर, एक साहब 15 और एक साहब के पुत्र; और तुममें से तीसरे मेसरूर हैं, उनके जल्लाद: तो यदि मेरा यह कथन असत्य नहीं है, तो इस घटना से मेरी सारी इच्छा पूरी हो गई है; और मेरा हृदय हर तरह से प्रसन्न है। लेकिन जब उन्होंने उसके मुँह से ये शब्द सुने, तो जाफ़र ने अस्पष्ट शपथ का प्रयोग करते हुए उससे कहा कि वे वे लोग नहीं हैं जिनका उसने उल्लेख किया था। इस पर वह युवक हँसा और बोला, "हे मेरे स्वामियों, जान लीजिए कि मैं धनी लोगों का राजकुमार नहीं हूँ, बल्कि मैंने नगरवासियों से अपनी इच्छाएँ पूरी करवाने के लिए ही यह उपाधि धारण की है। वास्तव में, मेरा नाम मोहम्मद अली है, जो जौहरी अली का पुत्र है। मेरे पिता उच्च वर्ग के थे, और उनकी मृत्यु हो गई, और वे मेरे लिए सोने, चाँदी, मोतियों, मूंगे, माणिक, क्राइसोलाइट और अन्य रत्नों के रूप में अपार धन-संपत्ति छोड़ गए, साथ ही साथ भूमि, स्नानघर, खेत, बगीचे, दुकानें, भट्टियाँ, काले पुरुष और महिला दास और सेवक भी। एक दिन ऐसा हुआ कि मैं अपने नौकरों के साथ अपनी दुकान में बैठा था..."

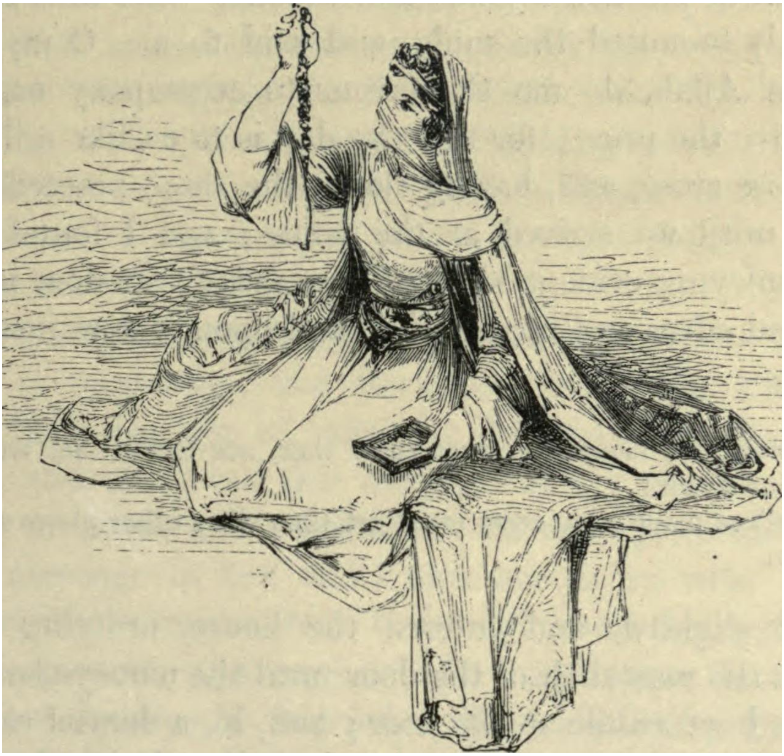

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.37%** है।

148 जौहरी मोहम्मद अली की कहानी, और मेरे आस-पास के आश्रितों के बीच, तभी एक युवती खच्चर पर सवार होकर आई, उसके साथ तीन और युवतियाँ थीं, मानो चाँद हों; जब वह मेरे पास पहुँची, तो मेरी दुकान पर उतरी और मेरे पास बैठकर बोली, क्या आप जौहरी मोहम्मद हैं? मैंने उत्तर दिया, हाँ, मैं ही हूँ, आपका मेमलुक और आपका दास। उसने कहा, क्या आपके पास मेरे लिए उपयुक्त रत्नों का हार है? मैंने उत्तर दिया, हे मेरी स्वामिनी, मेरे पास जो कुछ है, मैं आपको दिखाऊँगा और आपके सामने रखूँगा; और यदि उनमें से कोई आपको पसंद आए, तो यह मेमलुक के सौभाग्य की बात होगी; और यदि कोई भी आपको पसंद न आए, तो यह उसके दुर्भाग्य की बात होगी। मेरे पास सौ रत्नों के हार थे,

और मैंने वे सभी उसे दिखाए; लेकिन उनमें से कोई भी उसे पसंद नहीं आया, और उसने कहा, मुझे इससे बेहतर चाहिए जो मैंने देखा है। मेरे पास एक छोटा सा हार था जिसे मेरे पिता ने एक लाख सोने के सिक्कों में खरीदा था, और वैसा हार किसी भी महान सुल्तान के पास नहीं था। इसलिए मैंने उनसे कहा, मेरे पास भी कीमती पत्थरों और रत्नों से बना एक ऐसा हार है, जैसा किसी भी महान या छोटे सुल्तान के पास नहीं है। उन्होंने उत्तर दिया, मुझे दिखाओ। जब उन्होंने उसे देखा, तो कहा, यही वह चीज है जिसकी मुझे चाह थी, और यही वह चीज है जिसकी मैंने जीवन भर कामना की है। फिर उन्होंने मुझसे पूछा, इसकी कीमत क्या है? मैंने उन्हें उत्तर दिया, मेरे पिता ने इसकी कीमत एक लाख सोने के सिक्के रखी थी। उन्होंने उत्तर दिया, और तुम्हें लाभ के रूप में पाँच हज़ार सोने के सिक्के मिलेंगे। मैंने कहा, हे मेरी स्वामिनी, हार और इसकी मालकिन आपकी सेवा में हैं, और मेरी ओर से कोई विरोध नहीं है। लेकिन उन्होंने उत्तर दिया, तुम्हें लाभ अवश्य मिलेगा, और तुम फिर भी प्रचुर धन्यवाद के पात्र होगे। फिर वह तुरंत उठी, जल्दी से खच्चर पर सवार हुई और मुझसे बोली, "हे मेरे स्वामी, अल्लाह के नाम पर, कृपा करके हमारे साथ चलिए, ताकि आप कीमत वसूल कर लें; क्योंकि आज का दिन हमारे लिए दूध के समान है।"16 इसलिए मैं उठा और दुकान बंद करके उसके साथ सुरक्षित रूप से घर तक गया; और मैंने पाया कि वह एक ऐसा महल था जो समृद्धि के स्पष्ट संकेत दे रहा था: उसका दरवाजा सोने, चांदी और नीले रंग से सजा हुआ था, और उस पर ये दो आयतें खुदी हुई थीं: - "हे महल, तुझमें कभी कोई बुराई न आए, और न ही भाग्य तेरे स्वामी के साथ विश्वासघात करे! तू हर मेहमान के लिए एक उत्तम महल है जब अन्य स्थान उसके लिए तंग हों।" युवती नीचे उतरी और घर में प्रवेश करते हुए मुझे आदेश दिया कि मैं दरवाजे के मस्तबा पर तब तक बैठूं जब तक कि

साहूकार न आ जाए।17 इसलिए मैं कुछ देर दरवाजे पर बैठा रहा; और देखो, एक युवती मेरे पास आई और मुझसे बोली, हे मेरे स्वामी, प्रवेश कक्ष में आइए; क्योंकि आपको बैठना है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.52%** है।

_ आर या झूठा खलीफ़े। 349 द्वार पर खड़े होना अपमानजनक है। इसलिए मैं उठा और प्रवेश कक्ष में गया, जहाँ मैं लकड़ी के सोफे पर बैठ गया; 18 और जब मैं वहाँ बैठा था, एक युवती बाहर आई और मुझसे बोली, हे मेरे स्वामी, मेरी स्वामिनी आपसे कहती है, अंदर आओ और अपने पैसे लेने के लिए भोजनालय के द्वार पर बैठो। तदनुसार मैं उठा और घर में प्रवेश किया, और जब मैं एक क्षण बैठा, तो मैंने सोने का एक सिंहासन देखा, जिस पर रेशमी पर्दा था, और पर्दा उठा, और उसके नीचे वह युवती प्रकट हुई जिसने मुझसे हार खरीदा था। उसका चेहरा चंद्रमा की डिस्क के समान था, और हार उसके गले में था। उस युवती की अत्यधिक सुंदरता और आकर्षण को देखकर मेरी बुद्धि विचलित हो गई और मेरा मन व्याकुल हो गया। और जब उसने मुझे देखा, तो वह सिंहासन से उठी और मेरी ओर आकर बोली, "हे मेरी आँखों की रोशनी, क्या तुम्हारे समान सुंदर हर पुरुष अपने प्रियतम के प्रति सहानुभूति नहीं रखता?" - "हे मेरी स्वामिनी," मैंने उत्तर दिया, "सारी सुंदरता तुममें समाहित है, और यही तुम्हारा आकर्षण है।" और उसने कहा, "हे जौहरी, जान लो कि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ, और मुझे विश्वास नहीं था कि मैं तुम्हें अपने घर ला सकूँगी।" फिर वह मेरे ऊपर झुकी, और मैंने उसे चूमा, और उसने मुझे चूमा; जिसके बाद उसने मुझसे कहा, "मैं एक कुंवारी हूँ जिसके पास कोई पुरुष नहीं पहुँचा है, और मैं इस शहर में अनजान नहीं हूँ। क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ?" - मैंने उत्तर दिया, "नहीं, अल्लाह की कसम, हे मेरी

स्वामिनी।" और उसने कहा, "मैं दुनिया हूँ, खालिद अल-बरमेकी के पुत्र याह्या की पुत्री, और मेरा भाई खलीफा का वईर जाफर है।" जब मैंने उसके ये शब्द सुने, तो मैं उससे पीछे हट गया और उससे कहा, "हे मेरी स्वामिनी, तुम्हारे प्रति प्रेम का भाव विकसित करने में मेरी कोई गलती नहीं है। तुमने ही मेरे मन में प्रेम जगाया है।" लेकिन उसने उत्तर दिया, "तुम्हें कोई हानि नहीं होगी; और तुम्हें अपनी इच्छा उसी तरीके से पूरी करनी होगी जो ईश्वर को मंजूर है; क्योंकि मेरा निर्णय मेरे वश में है, और काज़ी मेरे विवाह की रस्म पूरी करने में मेरी ओर से कार्य करेंगे। मैं तुम्हारी पत्नी बनना चाहती हूँ, और तुम मेरे पति।" फिर उसने काज़ी और गवाहों को बुलाया और तैयारी में जुट गई; और जब वे आए, तो उसने उनसे कहा, "मोहम्मद अली, जौहरी अली के पुत्र ने मुझसे विवाह का प्रस्ताव रखा है और मुझे यह हार दहेज में दिया है; और मैंने उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है।" इस प्रकार उन्होंने मेरा विवाह उससे संपन्न कराया, और मैंने उसे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया। इसके बाद, उसने शराब के पात्र मंगवाए, और प्याले अत्यंत सुचारु और सुव्यवस्थित ढंग से परोसे गए; और जब शराब का नशा हम सब पर चढ़ गया, तो उसने एक वीणा वादक युवती को गाने का आदेश दिया। उसने गाना शुरू किया, और उसके बाद अन्य युवतियों ने भी एक-एक करके गाना गाया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.17%** है।

350 जौहरी मोहम्मद अली की कहानी, जब तक दस युवतियों ने गीत गाए। फिर दुनिया नाम की महिला ने वीणा उठाई और मधुर स्वरों में ये छंद गाए: — मैं तेरे सुंदर, कोमल शरीर की कसम खाकर कहती हूँ कि मैं तेरे विरह की पीड़ा सह रही हूँ। हे रात के अंधेरे में पूर्णिमा के चाँद की तरह चमकते हुए, तेरे प्रेम से तड़पते हुए हृदय पर दया कर! और जब उसने

गीत समाप्त किया, तो मैंने उससे वीणा ले ली और असाधारण ढंग से बजाते हुए इस प्रकार गाया: — हे मेरे प्रभु की पूर्णता का गुणगान किया है जिसने तुझे समस्त सौंदर्य दिया है, जिससे मैं तेरा बंदी बन गया हूँ! हे वह आँख जिससे तू मानवजाति को मोहित करता है, प्रार्थना कर कि मैं तेरे द्वारा चलाए गए तीरों से सुरक्षित रहूँ! और मेरा गीत सुनकर वह अत्यंत प्रसन्न हुई। मैं एक महीने तक उसके साथ रहा, अपनी दुकान, परिवार और घर छोड़कर; और एक दिन उसने मुझसे कहा, "हे आँखों के प्रकाश, हे मेरे स्वामी मोहम्मद, मैंने आज स्नानागार जाने का निश्चय किया है, तुम इसी पलंग पर लेटे रहो, और जब तक मैं तुम्हारे पास न लौट आऊँ, तब तक अपनी जगह से मत हिलना।" उसने मुझे ऐसा करने का आदेश दिया, और मैंने उत्तर दिया, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।" फिर उसने मुझसे शपथ ली कि मैं अपनी जगह से नहीं हिलूँगा, और अपनी दासियों को साथ लेकर स्नानागार चली गई। और अल्लाह की कसम, हे मेरे भाइयों, वह गली के अंत तक भी नहीं पहुँची थी कि दरवाजा खुला और उसमें से एक बूढ़ी औरत अंदर आई, जिसने कहा, "हे मेरे स्वामी मोहम्मद, ज़ुबैदा की पत्नी तुम्हें बुला रही हैं; क्योंकि उन्होंने तुम्हारे शिष्टाचार, तुम्हारी शालीनता और तुम्हारे गायन की उत्कृष्टता के बारे में सुना है।" मैंने उत्तर दिया, "अल्लाह की कसम, मैं अपनी जगह से तब तक नहीं उठूँगा जब तक दुनिया की पत्नी नहीं आ जाती।" लेकिन उस बूढ़ी औरत ने जवाब दिया, "हे मेरे स्वामी, ज़ुबैदेह को अपने विरुद्ध क्रोधित न होने दें और उसे अपना शत्रु न बनने दें। उठिए, उसकी पुकार का जवाब दीजिए और अपने स्थान पर लौट जाइए।" तो मैं तुरंत उठा और उसके पास गया, वह बूढ़ी औरत मुझसे आगे-आगे चलती रही, जब तक कि वह मुझे ज़ुबैदेह के पास नहीं ले गई; और जब मैं उसके पास पहुँचा, तो उसने मुझसे कहा, "हे आँखों की रोशनी, क्या तुम दुनिया की देवी के

प्रिय हो?" मैंने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारा प्रेमी और तुम्हारा दास हूँ।" और उसने कहा, "जिसने तुम्हारा वर्णन सुंदरता, आकर्षण, अच्छे संस्कार और हर मनमोहक गुण से परिपूर्ण बताया है, उसने सत्य कहा है; क्योंकि तुम वर्णन से भी बढ़कर हो: लेकिन मेरे लिए गाओ, ताकि मैं तुम्हें सुन सकूँ।" तो मैंने उत्तर दिया, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।" और उसने मुझे वीणा दी, और मैंने उस पर ये छंद गाए: —

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.80%** है।

या फिर झूठा खलीफ़े। 351 प्रेमी का हृदय प्रेम निवेदन में थक गया है, और उसका शरीर रोगों से ग्रस्त हो गया है। इन लगाम लगे ऊँटों पर सवारों में एक प्रेमी के सिवा कोई और नहीं है, जिसकी प्रेमिका काफिले में है। मैं तुम्हारे तम्बुओं में चाँद जैसी सुंदरी को ईश्वर की देखरेख में सौंपता हूँ, जिसे मेरा हृदय प्रेम करता है, परन्तु जो मेरी आँखों से ओझल है; कभी सहमत, कभी क्रोधित: उसकी बनावटी शर्म कितनी मधुर है! क्योंकि प्रेमिका जो कुछ भी करती है, उसे प्रेम किया जाता है। और जब मैंने गीत समाप्त किया, तो उसने मुझसे कहा, अल्लाह तुम्हारे शरीर को स्वास्थ्य और तुम्हारी आवाज़ को मधुरता दे! क्योंकि तुम सुंदरता, शिष्टाचार और गायन में परिपूर्ण हो। अब उठो और देवी दितिन्या के आने से पहले अपने स्थान पर जाओ; कहीं ऐसा न हो कि वह तुम्हें न पाएँ और तुम पर क्रोधित हो जाएँ। इसलिए मैंने उसके सामने ज़मीन चूमी और आगे बढ़ गया, और उस बुढ़िया को अपने आगे लेकर उस दरवाज़े तक गया जहाँ से मैं आया था। लेकिन जब मैं अंदर गया और पलंग के पास पहुँचा, तो मैंने देखा कि महिला दितिन्या स्नान करके लौट आई थी और पलंग पर सो रही थी। इसलिए मैं उसके पैरों के पास बैठ गया और अपने हाथों से उसे दबाया; 19 इस पर उसने अपनी आँखें खोलीं और मुझे

देखकर अपने पैर ऊपर उठाए और मुझे पलंग से नीचे धकेल दिया और कहा, हे गद्दार, तूने अपनी कसम तोड़ी है और झूठी कसम खाई है। तूने मुझसे वादा किया था कि तू अपनी जगह से नहीं हिलेगा, और तूने अपना वादा तोड़ दिया और महिला ज़ुबैदेह के पास चला गया। अल्लाह की कसम, अगर मुझे अपनी बेइज्ज़ती का डर न होता, तो मैं उसका महल उसके सिर पर गिरा देता! — फिर उसने अपने काले दास से कहा, हे सवाब, उठ और इस झूठे गद्दार का सिर काट डाल; क्योंकि अब हमें इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। तो दास आगे बढ़ा, और अपनी कमीज़ से एक पट्टी फाड़कर मेरी आँखों पर बाँध दी, और मेरा सिर काटने ही वाला था। लेकिन बड़ी और छोटी दासियाँ उसके पास आईं और बोलीं, हे हमारी स्वामिनी, यह पहला नहीं है जिसने कोई गलती की है, और यह आपके स्वभाव को नहीं जानता, न ही इसने कोई ऐसा अपराध किया है जिसके लिए इसे मार डाला जाए। इस पर उसने कहा, अल्लाह की कसम, मुझे इसे अपने क्रोध का कोई न कोई निशान ज़रूर देना होगा। तदनुसार उसने मुझे पीटने का आदेश दिया, जिसके बाद उन्होंने मेरी बगलों पर पीटा, और ये निशान जो आपने देखे हैं, उसी का परिणाम हैं। उसके बाद, उसने मुझे बाहर निकालने का आदेश दिया; और वे मुझे हवेली से कुछ दूर ले गए, और मुझे नीचे फेंक दिया। मैं उठा, और कुछ-कुछ कदम चलकर अपने घर पहुँचा, जहाँ मैंने एक चिकित्सक को बुलवाया, और उसे पिटाई से हुए घाव दिखाए; और उसने मेरे साथ दयालुता से व्यवहार किया, और मेरा इलाज शुरू किया। और जब मैं

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.92%** है।

352 जौहरी मोहम्मद अली की कहानी: जब मैं ठीक हो गया और स्नान करने गया, और मेरे सारे दर्द और विकार दूर हो गए, तो मैं दुकान पर गया

और वहाँ का सारा सामान लेकर बेच दिया, और उससे मिले पैसों से मैंने अपने लिए चार सौ मर्नलुक खरीदे, इतने मर्नलुक जितने किसी राजा ने कभी नहीं जमा किए थे; और हर दिन उनमें से दो सौ मेरे साथ सवारी करते थे। मैंने यह नाव भी बनवाई, जिसके निर्माण में मैंने पाँच हज़ार सोने के सिक्के खर्च किए और मैंने खुद को खलीफा घोषित कर दिया, अपने प्रत्येक सेवक को खलीफा के आश्रितों में से किसी एक के पद पर नियुक्त किया और उसे खलीफा का वेश पहनाया, और घोषणा की, जो कोई भी टाइग्रिस नदी पर मौज-मस्ती करेगा, मैं उसका सिर तुरंत काट दूंगा। इस प्रकार मैं पूरे एक वर्ष तक करता रहा; लेकिन मुझे उस युवती के बारे में कोई खबर नहीं मिली, न ही उसका कोई निशान मिला। तब उस युवक ने विलाप किया, आँसू बहाए और ये आयतें पढ़ीं: — अल्लाह की कसम, मैं उसे कभी नहीं भूलूँगा, और न ही किसी के पास जाऊँगा सिवाय उसके जो उसे मेरी ओर आकर्षित करे। वह अपने रूप में पूर्णिमा के चाँद के समान है। उसके दूध दुहने वाले की महिमा हो! उसके रचयिता की महिमा हो! उसने मुझे शोक से भर दिया है, मेरी नींद हराम कर दी है, मैं प्रेम में व्याकुल हो गया हूँ, और मेरा मन उसके आकर्षण से व्याकुल है। — और जब हारून-रशीद ने उसके शब्द सुने, और उसके उत्साह, जोश और इच्छा को जाना, तो उसका मन उसके लिए दुःख से व्याकुल हो गया, वह आश्चर्यचकित रह गया, और उसने कहा, ईश्वर की महिमा हो, जो हर चीज़ का एक कारण निर्धारित करता है! — तब उन्होंने युवक से जाने की अनुमति माँगी; और उसने उन्हें अनुमति दे दी; र-रशीद ने उसके साथ न्याय करने और उसके साथ अत्यंत उदारता से पेश आने का निश्चय किया। वे उससे विदा लेकर महल की ओर चल दिए; और जब वे कुछ देर वहाँ बैठे रहे, अपने कपड़े बदले और राजसी वस्त्र पहन लिए, तो जल्लाद मेसरूर खलीफा और जाफ़र के सामने खड़ा हुआ। खलीफा ने जाफ़र से

कहा, "हे वज़ीर, उस नौजवान को मेरे पास लाओ जिसके साथ हम कल रात थे।" वज़ीर ने उत्तर दिया, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।" वह उनके पास गया, उन्हें प्रणाम किया और कहा, "धन्यवाद के सरदार, खलीफा हारून-अर-रशीद के बुलावे का जवाब दो।" तो वह नौजवान बुलावे से दुखी मन से उनके साथ महल गया; और जब वह खलीफा के पास पहुँचा, तो उसने उनके सामने ज़मीन चूमी, उनकी महिमा और समृद्धि की निरंतरता, उनकी इच्छाओं की पूर्ति, उनकी कृपा की निरंतरता और बुराई और दंड के निवारण के लिए प्रार्थना की।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.12%** है।

या फिर झूठे खलीफ़े। 353 टिप्पणियाँ, और उन्हें यथासंभव सर्वोत्तम ढंग से संबोधित करते हुए कहा, हे विश्वासियों के सरदार और विश्वासियों के समुदाय के रक्षक, आप पर सलाम हो! फिर उन्होंने ये दो आयतें पढ़ीं: • तेरा द्वार सदा काबा की तरह पूजनीय रहे, और इसकी धूल सदा मनुष्यों के माथे पर अंकित रहे! ताकि समस्त देशों में यह घोषित हो जाए, यही मकाम है, और तू इब्राहीम है।20 खलीफ़े ने उनके चेहरे पर मुस्कुराते हुए अभिवादन का उत्तर दिया, और आदर की दृष्टि से उन्हें अपने पास बुलाकर अपने सामने बैठाया, और उनसे कहा, हे मोहम्मद अली, मैं तुझसे निवेदन करता हूँ कि तू मुझे बताए कि पिछली रात तेरे साथ क्या घटित हुआ; क्योंकि वह एक अद्भुत और आश्चर्यजनक घटना थी। युवक ने उत्तर दिया, क्षमा कीजिए, हे विश्वासियों के सरदार! मुझे क्षतिपूर्ति का रूमाल दो,21 ताकि मेरा भय शांत हो जाए और मेरा हृदय शांत हो जाए। खलीफा ने कहा, तुम्हें भय और दुःखों से सुरक्षा प्राप्त है। तब उस युवक ने उन्हें अपने साथ घटी सारी घटनाएँ शुरू से अंत तक सुनानी शुरू कर दीं। खलीफा यह जानते हुए कि युवक प्रेम में डूबा हुआ है और अपनी प्रेमिका से विदा हो

गया है, उससे बोले, क्या तुम उसे वापस पाना चाहते हो? युवक ने उत्तर दिया, यह धनियों के राजकुमार की अपार कृपा का उदाहरण होगा। तब खलीफा ने वज़ीर की ओर देखकर उससे कहा, हे जाफ़र, अपनी बहन, वज़ीर याह्या (खालिद का पुत्र) की पुत्री, दुनिया को मेरे पास लाओ। जाफ़र ने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। वह उसे तुरंत ले आया; और जब वह उनके सामने खड़ी हुई, तो खलीफा ने उससे पूछा, क्या तुम जानती हो कि यह कौन है? — हे धनवानों के राजकुमार, उसने कहा, स्त्री को पुरुषों का ज्ञान कैसे हो सकता है? खलीफा मुस्कुराए और उससे कहा, हे दुनिया, यह तुम्हारा प्रेमी मोहम्मद अली है, जो जौहरी का पुत्र है: हम इस मामले से परिचित हो चुके हैं, और हमने इसकी पूरी कहानी शुरू से अंत तक सुनी है, और इसमें जो सार्वजनिक और निजी है, उसे समझ लिया है; और यह बात छिपी नहीं है, भले ही इसे ढका गया था। — हे धनवानों के राजकुमार, उसने उत्तर दिया, यह [ईश्वर के आदेशों की] पुस्तक में लिखा है, और मैं अपने द्वारा किए गए कार्यों के लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर से क्षमा मांगती हूँ, और आपसे दया की प्रार्थना करती हूँ कि आप मुझे क्षमा कर दें। इस पर खलीफा हँसे, और कदी और गवाहों को बुलाकर, जौहरी के पुत्र मोहम्मद अली के साथ उसके विवाह का अनुबंध नवीनीकृत किया; और इससे उन्हें अत्यंत सुख प्राप्त हुआ; और ईर्ष्यालु लोगों को अपमान। खलीफा ने यह भी किया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.84%** है।

354 जौहरी मोहम्मद अली की कहानी, इत्यादि। युवक उसका एक घनिष्ठ मित्र था; और वह और उसकी पत्नी सुख, आनंद और प्रसन्नता में तब तक रहे जब तक कि उनके सुखों का अंत करने वाली और साथियों को अलग करने वाली घटना उनके सामने नहीं आ गई।22

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.55%** है।

तेरहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। टिप्पणी 1. मेरा मानना है कि यह कहानी, और इस कृति के अगले अध्याय की कहानी, एम. कॉसिन द्वारा फ्रेंच में अनुवादित की गई हैं और मेरे ग्यारहवें अध्याय की पहली टिप्पणी में उल्लिखित 'हजार और एक रात' के संस्करण में प्रकाशित हुई हैं। टिप्पणी 2. यहाँ जिस प्रकार के मश'अल का उल्लेख किया गया है, उसे अरबी में "मेश'अल" कहा जाता है। यह एक छड़ी होती है जिसके शीर्ष पर एक बेलनाकार ढाँचा (आमतौर पर लोहे का) होता है, जो जलती हुई लकड़ी

से भरा होता है, या इसमें आग रखने के लिए दो, तीन, चार या पाँच पात्र होते हैं। आग रखने के लिए एक ही पात्र वाला मश'अल सबसे आम है, और इसकी कुल लंबाई आमतौर पर लगभग सात फीट होती है। मेरे 'आधुनिक मिस्रवासियों पर' ग्रंथ, खंड 1, अध्याय 6 में दो अलग-अलग प्रकार के मश'अल दिखाए गए हैं। इन्हें विभिन्न रात्रि जुलूसों में ले जाया जाता है, और अक्सर रात में घुड़सवारी करते हुए आगे ले जाया जाता है। टिप्पणी 3. 'मीज़र' या 'मि-ज़र' शब्द का प्रयोग सही मायने में उस कपड़े के लिए किया जाता है जिसे कमर के चारों ओर लपेटा जाता है और जो घुटनों तक या उससे नीचे तक पहुँचता है; और अब इसका प्रयोग एक जोड़ी अंडरवियर के लिए भी किया जाता है। टिप्पणी 4. यहाँ क्या अभिप्राय है, यह संदिग्ध है। घुड़सवार के आगे मशाल धारण करने वाले व्यक्ति को उसके कंधे पर कढ़ाईदार काठी का आवरण धारण किए हुए के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जिसे अरबी में "ग़ाशिया" कहा जाता है। यह आमतौर पर राजा के आगे ले जाया जाता था, और अब उच्च या मध्यम श्रेणी के घुड़सवार के आगे चलने वाले घोड़े के रखवाले के कंधे पर अक्सर एक कम खर्चीला प्रकार देखा जाता है। टिप्पणी 5. अध्याय 2 की टिप्पणी 52 देखें। टिप्पणी 6. शाब्दिक रूप से, "दूसरा, या दूसरा खलीफ़ा।" इसी तरह अन्य उदाहरणों में भी जहाँ मैं "झूठा खलीफ़ा" शब्द का प्रयोग करता हूँ। टिप्पणी 7. "सज" एक भारतीय वृक्ष का नाम है, जिसकी लकड़ी अरब देशों में आयात की जाती है; लेकिन हमारे प्राच्यविद् इसकी प्रजाति के बारे में असहमत हैं। सैसी आई का मानना है कि "सज" संभवतः अरबों द्वारा अपनाया गया एक भारतीय नाम है: यदि ऐसा है, तो इस नाम से पुकारा जाने वाला वृक्ष संभवतः सागौन है (जैसा कि उन्होंने पहले अनुमान लगाया था); इस वृक्ष को संस्कृत में "सका" कहा जाता है। * नोट 8. मूल में, "शधरवान।" यह शब्द, जिसे मैं यहाँ

अपने शेख द्वारा कई स्थानों पर दी गई व्याख्या के अनुसार प्रस्तुत कर रहा हूँ, देखें उनकी क्रेस्टोमैथी अरेबे, खंड iii, पृष्ठ 473 2 जॉनसन का रिचर्डसन के फारसी, tt seq., द्वितीय संस्करण अरबी और अंग्रेजी शब्दकोश, स्वर सज।

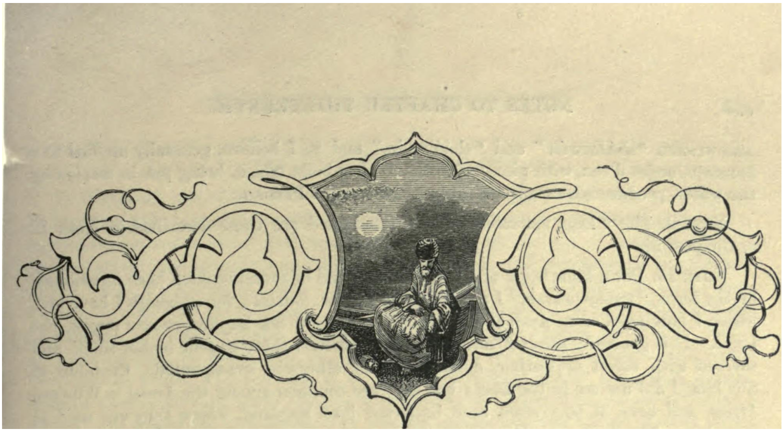

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.97%** है।

• 356 तेरहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। इसे "शदरवान" और "शादिरवान" भी लिखा जाता है, और मेरा मानना है कि यह आम तौर पर कांच के टुकड़ों या कांच की घंटियों वाले फव्वारे या जेट डी'ओ के लिए प्रयोग किया जाता है, जो पानी द्वारा गतिमान होने पर लगातार झनझनाहट पैदा करते हैं। यह शब्द फ़ारसी है। टिप्पणी 9. यहाँ उल्लिखित "लंबे गद्दे" वे हैं जिनका वर्णन अध्याय iii की टिप्पणी 12 में किया गया है। टिप्पणी 10. यहाँ "मुदोव्वारा" शब्द से उल्लिखित विशेष प्रकार के गोल तकिये के बारे में जानकारी के लिए मैं श्री सलामे का आभारी हूँ; क्योंकि मेरे पास एक है, जिसे मैंने जिब्राल्टर में एक अरब से खरीदा था, लेकिन मैंने या तो नाम नहीं पूछा, या भूल गया। यह आम तौर पर लगभग पंद्रह इंच व्यास का, तीन या चार इंच मोटा होता है, और मखमल या चमड़े से ढका होता

है, जिस पर कढ़ाई या अन्य अलंकरण होते हैं। इस प्रकार के तकिये मैंने पूर्व में नहीं देखे। लेकिन ये पश्चिमी अफ्रीका के अरबों में आम हैं, और हाल के वर्षों में इन्हें इंग्लैंड में आयात किया गया है, जहाँ इनका उपयोग फुटस्टूल के रूप में किया जाता है। अरब आमतौर पर इनका उपयोग आराम करने के लिए करते हैं, और कभी-कभी सिर के लिए तकिए के रूप में भी। नोट 11. शाब्दिक रूप से, "हे पूर्णिमा।" बहुवचन का प्रयोग अध्याय 10 के नोट 34 में बताए गए कारण से किया गया है। नोट 12. यहाँ भी मूल पाठ में बहुवचन का प्रयोग किया गया है, ताकि अतिशयोक्तिपूर्ण अर्थ व्यक्त किया जा सके। नोट 13. अरबों में यह एक आम रिवाज है कि जब किसी व्यक्ति से पूछा जाता है "क्या खबर है?" तो वे उत्तर देते हैं, "अच्छी" (खेर), भले ही दी जाने वाली खबर बुरी हो। नोट 14. मुझे लगता है कि मैंने पहले अल-अब्बास का उल्लेख किया है, जो पैगंबर के चाचा और बगदाद के खलीफाओं के पूर्वज थे, जिन्हें इसलिए अब्बासे खलीफा कहा जाता था। नोट 15. प्रस्तावना के नोट 8 देखें। नोट 16. यह। अरबों में यह कहना आम है कि दिन दूध जैसा या दूध की तरह सफेद है, जिसका अर्थ है शुभ; और कीचड़ जैसा या कीचड़ की तरह काला है, जिसका अर्थ है इसके विपरीत। टिप्पणी 17. राजा और बड़े लोग अपने पैसे देने और लेने के लिए मुद्रा विनिमयकर्ता नियुक्त करते हैं। 3 टिप्पणी 18. अध्याय 2 की टिप्पणी 39 देखें। टिप्पणी 19. यहाँ वर्णित क्रिया के साथ हल्की रगड़ भी की जाती है। इस मामले में उद्देश्य महिला को जगाना था। अध्याय 3 की टिप्पणी 55 देखें। टिप्पणी 20. इन दो आयतों की व्याख्या निम्नलिखित विस्तृत व्याख्या द्वारा की जा सकती है: “तेरा महल सदा ही लोगों की चाहत का केंद्र बना रहे, एक ऐसा स्थान जहाँ प्रार्थना का उत्तर मिले, मक्का के मंदिर की तरह असंख्य लोग वहाँ आएँ; और लोग वहाँ प्राप्त सम्मानों या लाभों के प्रतीक हमेशा

ही वहाँ श्रद्धापूर्वक आदर करते हुए प्रदर्शित करें, जैसे कोई व्यक्ति नंगी ज़मीन पर प्रार्थना करने के बाद धूल से सना हुआ अपना सिर प्रदर्शित करता है: इस प्रकार हर देश में यह ज्ञात होगा कि महल इब्राहीम (या अब्राहम) के स्थान के समान है, काबे के भीतरी घेरे में एक ऐसा स्थान जहाँ प्रार्थना विशेष रूप से धन्य है, और तू स्वयं इब्राहीम के समान है।" लेकिन मेरे शेख का कहना है कि ये आयतें इब्राहीम नाम के व्यक्ति की प्रशंसा के अलावा कहीं और उचित नहीं हैं। टिप्पणी 21. अध्याय 5 की टिप्पणी 95 देखें। टिप्पणी 22. इस कहानी के बाद चार उपाख्यान हैं, जो एक अंश के साथ समाप्त होते हैं। दो सौ निन्यानवेवीं रात। इनमें से तीसरी और चौथी यहाँ संलग्न हैं। 3 मेरे शेख द्वारा हाशिये पर टिप्पणी। •» कुरान, अध्याय 2, आयत 119 देखें।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.78%** है।

तेरहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 3— एक निःसंकोची व्यक्ति का किस्सा। कहा जाता है कि 'अहद-अल्लाह अल-कुशेरी5 के पुत्र खालिद अल बसरा के राज्यपाल थे; और उनके पास कुछ लोग एक बेहद सुंदर, सुसंस्कृत और बुद्धिवान युवक को पकड़े हुए आए; वह आकर्षक रूप-रंग, मधुर सुगंध और गंभीर एवं गरिमामय व्यक्तित्व वाला था; और वे उसे खालिद के सामने लाए। खालिद ने उनसे उसकी कहानी पूछी, और उन्होंने कहा, यह एक चोर है, जिसे हमने कल अपने घर में पकड़ा था। जब खालिद ने उसे देखा, तो उसकी सुंदरता और स्वच्छता ने उन्हें प्रभावित किया, और उन्होंने कहा, इसे छोड़ दो। फिर, उसके पास जाकर, उन्होंने उससे उसकी कहानी पूछी; और युवक ने उत्तर दिया, लोगों ने सच कहा है, और मामला वैसा ही है जैसा उन्होंने बताया है। — खालिद ने कहा, "तुम्हें ऐसा करने के लिए किसने उकसाया, जबकि तुम्हारा रूप इतना सुंदर और आकर्षक

है?” उसने उत्तर दिया, “सांसारिक वस्तुओं का लालच और ईश्वर का आदेश, जिसकी पूर्णता की प्रशंसा हो और जिसका नाम महान हो!” इस पर खालिद ने कहा, “तेरी माँ तुझसे वंचित हो जाए! क्या तेरे सुंदर चेहरे, तेरी समझदारी और तेरे अच्छे संस्कार तुझे चोरी करने से नहीं रोकते?” — “ऐ अमीर, इस तरह की भाषा का प्रयोग न करें,” युवक ने उत्तर दिया, “और ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) के आदेश का पालन करें; क्योंकि यही मेरे कर्मों का फल है, और ईश्वर अपने सेवकों पर अत्याचार नहीं करता।” खालिद कुछ देर चुप रहा, युवक की बात पर विचार करता रहा। इसके बाद उसने उसे पास आने के लिए कहा और बोला, "गवाहों के सामने तुम्हारे कबूलनामे ने मुझे इतना उलझन में डाल दिया है कि मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं; और मुझे नहीं लगता कि तुम चोर हो। शायद तुम्हारे पास बताने के लिए कोई और कहानी हो जो चोरी की कहानी न हो। तो मुझे बताओ।" — लेकिन उस युवक ने उत्तर दिया, "हे अमीर, मेरे कबूलनामे के अलावा और कुछ मत सोचो; क्योंकि मेरे पास बताने के लिए इसके सिवा कोई कहानी नहीं है कि मैं इन लोगों के घर में घुसा और जो कुछ चुरा सका, चुरा लिया, और उन्होंने मुझे पकड़ लिया, मुझसे सामान छीन लिया और मुझे तुम्हारे पास ले आए।" इस पर खालिद ने उसे कैद करने का आदेश दिया और एक उद्घोषक को अल-बसरा में यह घोषणा करने का हुक्म दिया, "हे! जो कोई भी इस व्यक्ति को दी जाने वाली सजा और उसके हाथ काटे जाने को देखना चाहता है, वह सुबह इस जगह पर आए!" जब वह युवक कुछ समय तक जेल में रहा और उसके पैरों में बेड़ियाँ डाल दी गईं, तो उसने गहरी आह भरी, खूब आँसू बहाए और ये पंक्तियाँ पढ़ीं: — • खालिद ने मुझे धमकी दी है कि अगर मैंने उसे उसकी कहानी नहीं बताई तो वह मेरा हाथ काट देगा; लेकिन मैंने कहा, मैं कभी भी उसके लिए अपने दिल में बसे प्यार को ज़ाहिर नहीं कर

सकता! जो मैंने कबूल किया है उसके लिए अपना हाथ कटवाना मेरे दिल को उसे अपमानित करने से ज़्यादा आसान है। और जो लोग उसकी पहरेदारी के लिए नियुक्त थे, उन्होंने यह सुनकर खालिद के पास आकर उसे उसकी कही हुई बातें बताईं। रात ढलने पर उसने उसे अपने सामने लाने का आदेश दिया; और जब वह उसके सामने आया, तो उसने उसे बोलने के लिए प्रेरित किया और पाया कि वह समझदार, सभ्य, बुद्धिमान, विनम्र और विवेकशील है। उसने उसे खाना लाने का आदेश दिया; और उसने खाना खाया और कुछ देर उससे बातचीत की; इसके बाद खालिद ने उससे कहा, "मैं जानता हूँ कि तुम्हारे पास बताने के लिए एक ऐसी कहानी है जो चोरी की नहीं है: इसलिए जब सुबह हो और लोग, काज़ी (धार्मिक न्यायाधीश) के साथ उपस्थित हों, और वह तुमसे चोरी के बारे में पूछे, तो इससे इनकार कर देना और ऐसा कुछ कहना जिससे तुम्हें अंग-विच्छेद की सज़ा से बचाया जा सके; क्योंकि अल्लाह के रसूल (अल्लाह उन पर रहमत करे और उन्हें बचाए!) ने कहा है, संदेह की स्थिति में, कानून द्वारा निर्धारित दंडों को टाल दो।" - फिर उसने उसे वापस जेल ले जाने का आदेश दिया, जहाँ वह उस रात रहा। और सुबह लोग उस युवक के अंग-विच्छेद को देखने आए। 5 "अल-कुशायरी" संभवतः किसी नकलची की गलती से "अल-कासरी" के स्थान पर लगभग पंद्रह वर्षों की अवधि में लिखा गया है। इब्न खल्लीकीम द्वारा वर्णित, खलीफे हिशाम के पुत्र क्लुइलिद, जो अब्द-अल-मलिक के पुत्र थे, जिन्हें अब्द-अल्लाह अल-कासरसे के नाम से भी जाना जाता है, अल-एरिक (जिसमें अल-बसरा स्थित है) के एक प्रसिद्ध गवर्नर थे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.82%** है।

तेरहवें अध्याय पर 358 टिप्पणियाँ। और अल-बसरा में कोई भी पुरुष या

स्त्री ऐसा नहीं था जो उस युवक को दंडित होते देखने न आया हो। खालिद, अल-बसरा के प्रमुख व्यक्तियों और अन्य लोगों के साथ घोड़े पर सवार हुए और कदी को बुलाकर युवक को लाने का आदेश दिया। युवक जंजीरों में जकड़ा हुआ उछलता हुआ आया; और वहाँ मौजूद लोगों में से कोई भी उसे देखकर उसके लिए रोने लगा, और स्त्रियों की चीखें तेज हो गईं। तब [प्रमुख] कदी ने स्त्रियों को चुप कराने का आदेश दिया और फिर युवक से कहा, "ये लोग दावा करते हैं कि तू उनके घर में घुसा और उनकी संपत्ति चुराई। शायद तूने निसाब से कम ही चुराया है।" - नहीं, उसने उत्तर दिया, "मैंने पूरा निसाब चुराया है।" - कदी ने फिर कहा, "शायद तू लोगों की कुछ संपत्ति में भागीदार है।" लेकिन उस युवक ने उत्तर दिया, नहीं; यह सब उनका था; इसमें मेरा कोई अधिकार नहीं था। इस पर खालिद क्रोधित हो गया और उसके पास आकर कोड़े से उसके चेहरे पर प्रहार किया, और अपने मामले पर लागू होते हुए इस आयत को दोहराया: — • मनुष्य चाहता है कि उसकी इच्छा पूरी हो; परन्तु ईश्वर केवल वही देता है जो वह स्वयं चाहता है। फिर उसने कसाई को बुलाया, जो आया और चाकू निकाला, और युवक का हाथ आगे बढ़ाकर उस पर चाकू रख दिया। परन्तु स्त्रियों के बीच से एक युवती फटे-पुराने और गंदे वस्त्र पहने हुए आगे आई और चिल्लाते हुए युवक पर टूट पड़ी; जिसके बाद उसका चेहरा चंद्रमा के समान लाल हो गया; जिसके कारण लोगों में भारी शोर मच गया, और इस दृश्य के परिणामस्वरूप दर्शकों की भावनाओं में भयंकर उबाल आ गया। तब उस युवती ने अपनी पूरी आवाज़ में पुकारा, “हे अमीर, अल्लाह की कसम, जब तक आप यह पत्र न पढ़ लें, अंग-विच्छेदन में जल्दी न करें।” उसने खालिद को एक पत्र दिया, जिसे खालिद ने खोलकर पढ़ा, और उसमें ये आयतें लिखी थीं: “हे खालिद, यह व्यक्ति प्रेम का पागल गुलाम है, मेरी पलकों की तीक्ष्ण दृष्टि

से घायल है। मेरी आँख से निकले तीर ने उसे सजदा कर दिया है; क्योंकि वह प्रेम के जुनून में डूबा हुआ है, और अपनी बीमारी से उबर नहीं पाया है! उसने एक ऐसे कर्म का प्रायश्चित किया है जो उसने नहीं किया, यह सोचकर कि यह उसकी प्रेमिका के अपमान से बेहतर है। इसलिए इस पीड़ित प्रेमी पर धैर्य रखें; क्योंकि वह मानवता के श्रेष्ठ लोगों में से एक है, चोर नहीं।" इसलिए जब खालिद ने आयतें पढ़ीं, तो वह लोगों से अलग होकर उस स्त्री को बुलाकर उससे मामले के बारे में पूछताछ करने लगा। तब उसने उसे बताया कि यह युवक उससे प्रेम करता है, और वह भी उससे प्रेम करती है; और वह उससे मिलने की इच्छा से उसके परिवार के घर गया था, और अपने आने की सूचना देने के लिए घर में एक पत्थर फेंका था; लेकिन उसके पिता और भाइयों ने पत्थर की आवाज सुनी और उसके पास आ गए; और जब उसने उन्हें देखा, तो उसने घर के सारे कपड़े इकट्ठा कर लिए, ताकि उन्हें लगे कि वह चोर है, ताकि अपनी प्रेमिका की इज्जत बचा सके। इसलिए जब उन्होंने उसे इस हालत में देखा, तो उन्होंने उसे पकड़ लिया और कहा, "यह चोर है," और उसे तुम्हारे पास ले आए; जिस पर उसने कबूल किया कि उसने चोरी की है, और ऐसा करने पर अड़ा रहा, ताकि वह मुझे शर्मिंदा न करे। उसने ये सब अपनी दयालुता और उदारता के कारण किया, और खुद को चोर साबित किया। और खालिद ने उत्तर दिया, "निःसंदेह वह अपनी इच्छा की पूर्ति के योग्य है।" फिर उस युवक को अपने पास बुलाकर उसने उसकी आँखों के बीच चूमा; और उसने युवती के पिता को अपने समक्ष लाने का आदेश दिया और उससे कहा, "हे शेख, हमने इस युवक को हाथ काटकर दंड देने का निश्चय किया था; परन्तु ईश्वर (जिसकी शक्ति और महिमा को हम सब जानते हैं!) ने मुझे उस कार्य से बचा लिया; और मैंने आदेश दिया है कि उसे दस हजार चांदी के सिक्के दिए जाएं, उसके 6 इस शब्द का अर्थ है

"• संभवतः इसका अर्थ यह है कि उसने अपने दुःख को प्रकट करने के लिए इस प्रकार वस्त्र धारण किए थे। अध्याय 5" के लिए टिप्पणी 32 देखें।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.05%** है।

तेरहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 35'J मैंने तेरे और तेरी पुत्री के सम्मान की रक्षा करने और तुम दोनों को निंदा से बचाने के लिए अपने हाथ का खुला प्रदर्शन किया है। मैंने यह भी आदेश दिया है कि तेरी पुत्री को दस हजार चांदी के सिक्के दिए जाएं, क्योंकि उसने मुझे उस व्यक्ति के बारे में सच्चाई बताई थी; और मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मुझे उससे उसका विवाह करने की अनुमति दे। — हे अमीर, शेख ने उत्तर दिया, मैं तुम्हें इसकी अनुमति देता हूँ। और खालिद ने अल्लाह की प्रशंसा की, उनका शुक्रिया अदा किया और एक प्रभावशाली खुत्बेह पढ़ा;8 जिसके बाद उन्होंने युवक से कहा, मैं यहाँ उपस्थित फलाँ युवती से, उसकी अनुमति और सहमति से, और उसके पिता की अनुमति से, दस हजार चाँदी के सिक्कों के दहेज के बदले विवाह करता हूँ। युवक ने उत्तर दिया, मैं विवाह का यह प्रस्ताव स्वीकार करता हूँ। तब खालिद ने आदेश दिया कि धन को थालियों में रखकर जुलूस के साथ युवक के घर ले जाया जाए; और लोग खुशी से झूम उठे। — मैंने (वर्णनकर्ता कहता है) उस दिन से अधिक विचित्र दिन नहीं देखा, जो रोने और दुर्भाग्य से शुरू हुआ और आनंद और खुशी के साथ समाप्त हुआ। [निम्नलिखित उपाख्यान में, एक अत्यंत दुखद घटना का उल्लेख है, जिसके ज्ञान ने मुझे उतना आनंद नहीं दिया जितना मुझे इस संग्रह की कई बेहतरीन कहानियों में, यदि मैं इस तथ्य से अनभिज्ञ होता, तो मिलता; और इसलिए मुझे लगता है कि मेरे कुछ पाठक इसे बिना पढ़े छोड़ना पसंद कर सकते हैं। अध्याय iv के लिए खंड

39 देखें।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.11%** है।

अध्याय तेरहवें के लिए 360 टिप्पणियाँ। जाफ़र अल-बरमेकी की कहानी। एक दूर रेगिस्तान का एक बेदावी, हर साल जाफ़र अल-बरमेकी के लिए एक कविता लेकर आता था, जिसके बदले जाफ़र उसे एक हज़ार सोने के सिक्के भेंट करता था। बेदावी पैसे लेकर चला जाता था और साल के अंत तक अपने परिवार पर खर्च करता रहता था। अब यह बेदावी अपनी प्रथा के अनुसार जाफ़र के लिए कविता लेकर आया, और जब वह पहुँचा तो उसने जाफ़र को फाँसी पर लटका हुआ पाया। वह उस जगह गया जहाँ जाफ़र को फाँसी दी गई थी, और वहाँ अपने ऊँट को लिटाकर ज़ोर-ज़ोर से रोया, बहुत शोक मनाया, अपनी कविता पढ़ी और सो गया। सपने में उसने जाफ़र अल-बरमेकी को देखा, जिसने उससे कहा, “तूने

स्वयं को थका दिया है और हमारे पास आया है, तथा हमें इस हालत में पाया है; परन्तु अल-बसरा जा, और वहाँ के व्यापारियों में से एक, फलां नाम के व्यक्ति के बारे में पता कर, और उससे कह, जाफ़र अल-बरमेकी तुझे नमस्कार कर रहा है और तुझसे कह रहा है, मुझे एक हजार सोने के सिक्के दे दे, जिसके बदले में एक सेम हो।" जब बेदावी नींद से जागा, तो वह अल-बसरा गया और उस व्यापारी के बारे में पता किया; और उससे मिलकर उसने उसे वे बातें बताईं जो जाफ़र ने सपने में कही थीं; यह सुनकर व्यापारी फूट-फूटकर रोने लगा, मानो उसकी आत्मा निकल ही गई हो। फिर उसने बेदावी का आदरपूर्वक स्वागत किया, उसे अपने पास बैठाया और उसके प्रवास को सुखद बनाया; और बेदावी तीन दिन तक उसके साथ रहा, और उसका सत्कार किया गया। और जब उसने जाने की इच्छा जताई, तो व्यापारी ने उसे एक हजार पाँच सौ सोने के सिक्के देते हुए कहा, "ये हज़ार सिक्के मुझे तुम्हें देने का आदेश दिया गया है, और ये पाँच सौ सिक्के मेरी ओर से तुम्हें उपहार हैं, और तुम्हें हर साल एक हजार सोने के सिक्के मिलेंगे।" और उसके जाने पर, बेदावी ने व्यापारी से कहा, "मैं अल्लाह की कसम खाकर तुमसे विनती करता हूँ कि मुझे सेम के मामले के बारे में बताओ, ताकि मैं इसकी बुनियाद जान सकूँ।" व्यापारी ने उत्तर दिया, "अपने व्यवसाय की शुरुआत में, मैं गरीबी की हालत में था, बगदाद की गलियों में गरमागरम सेम बेचता फिरता था। एक दिन मैं ठंड और बारिश के दिन निकला, मेरे शरीर पर पर्याप्त कपड़े नहीं थे जो मुझे ठंडी हवा से बचा सकें। मैं ठंड से काँप रहा था और बारिश के पानी में गिर रहा था, मेरी हालत इतनी भयानक थी कि सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उस दिन जाफ़र गली के सामने एक तंबू में बैठा था, उसके साथ उसके मुख्य सेवक और रखैलें थीं; उसकी नज़र मुझ पर पड़ी; उसे मेरी हालत पर दया आ गई, और उसने अपने एक नौकर को

मेरे पास भेजा, जो मुझे ले गया और उसके पास ले आया; और जब उसने मुझे देखा, तो उसने मुझसे कहा, 'बेच दो...'" जो सेम तुम अपने पास रखती हो, उसे मेरे सेवकों को दे दो। इसलिए मैंने उन्हें अपने पास मौजूद एक माप से नापना शुरू किया, और जिसने भी सेम का एक माप लिया, उसने उस माप को सोने से भर दिया, जब तक कि मेरे पास जो कुछ भी था वह समाप्त नहीं हो गया, और टोकरी में [एक सेम के अलावा] कुछ भी नहीं बचा। फिर मैंने अपने पास जमा हुए सोने को इकट्ठा किया; और जाफ़र ने मुझसे कहा, क्या तुम्हारे पास कुछ सेम बचा है? मैंने उत्तर दिया, मुझे नहीं पता। और टोकरी में खोजने पर मुझे उसमें एक सेम के अलावा कुछ नहीं मिला; इस पर जाफ़र ने उसे मुझसे ले लिया, और उसे दो भागों में बाँट दिया; और उसने उसका आधा भाग अपने पास रख लिया, और दूसरा आधा भाग अपनी एक रखैल को देते हुए कहा, तुम इस सेम के आधे भाग को कितने में खरीदोगी? उसने उत्तर दिया, इस सोने की दुगुनी मात्रा में। इसलिए मैं अपनी स्थिति पर चकित रह गया, और मन ही मन कहा, यह असंभव है। लेकिन जब मैं सोच ही रहा था, तभी देखा कि रखैल ने अपनी एक दासी को आदेश दिया, जो उस मामले के विवरण से दुगुना सोना लाया था, जिसके बारे में कई अलग-अलग दावे हैं। 9 मूल पाठ में कुछ परिचयात्मक शब्द हैं, जिन्हें मैं छोड़ रहा हूँ क्योंकि वे अनुपयुक्त हैं। 10 मूल पाठ में, "मस्लूब," जिसका सामान्यतः अर्थ है "सूली पर चढ़ाया गया" जाफ़र का पहले सिर कलम किया गया था। ये वे फलियाँ हैं जिन्हें कुछ देर पानी में भिगोकर फिर उबाला जाता है। मुझे लगता है कि विशेष विवरण को छोड़ना उचित है। — मेरे शेख द्वारा टिप्पणी।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.32%** है।

तेरहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। फिर जाफ़र ने कहा, “मैंने जो आधा लिया है, उसे मैं पूरे के दुगुने दाम पर खरीद लूँगा।” और उसने मुझसे कहा, “अपनी फली का दाम ले लो।” और उसने अपने एक सेवक को आदेश दिया, जिसने सारा पैसा इकट्ठा करके मेरी टोकरी में डाल दिया; और मैंने उसे लेकर प्रस्थान किया। उसके बाद, मैं अल-बसरा गया, और अपने पास मौजूद धन से व्यापार किया, और ईश्वर ने मुझे भरपूर धन दिया। इसलिए ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद हो! तो अगर मैं तुम्हें हर साल जाफ़र की उदारता से प्राप्त एक हजार सोने के सिक्के दूँ, तो इससे मुझे कोई हानि नहीं होती। — तो जाफ़र के उदार स्वभाव और जीवित और मृत दोनों अवस्थाओं में उसकी प्रशंसा पर ध्यान दें। ईश्वर (जिसका नाम महान है!) की दया उस पर हो! II. 3 A

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

25.46% है।

अध्याय 14. दो सौ निन्यानवेवीं रात के एक भाग से शुरू होकर तीन सौ पाँचवीं रात के एक भाग पर समाप्त। आलसी अबू मोहम्मद की कहानी। एक दिन हारून-ए-रशीद राजगद्दी पर बैठे थे, तभी एक हिजड़ा युवक उनके पास आया, जिसके सिर पर लाल सोने का मुकुट था, जो मोतियों और रत्नों से जड़ा हुआ था, जिसमें हर तरह के चमेली और ऐसे रत्न थे जिन्हें किसी भी पैसे से नहीं खरीदा जा सकता था। उस युवक ने खलीफा के सामने जमीन चूमी और उनसे कहा, "हे धनियों के राजकुमार, ज़ुबैदा की देवी जमीन चूम रही हैं।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.38%** है।

तेरे सामने आकर, उसने उससे कहा, तू जानता है कि उसने यह मुकुट बनवाया है, और इसके शिखर पर एक बड़ा रत्न जड़ना है; और उसने अपने खजाने में खोजा, पर उसे अपनी इच्छा का कोई बड़ा रत्न नहीं मिला। तब खलीफा ने दरबारी और सेनापतियों से कहा, जुबैदा की इच्छा का एक बड़ा रत्न खोजो। उन्होंने खोजा, पर उन्हें कुछ भी ऐसा नहीं मिला जो उसे पसंद आए; और उन्होंने खलीफा को यह बात बताई; जिसके परिणामस्वरूप उसका हृदय सिकुड़ गया, और उसने कहा, मैं खलीफा और पृथ्वी के राजाओं का राजा होकर भी रत्न क्यों नहीं प्राप्त कर पा रहा हूँ? धिक्कार है तुम पर! व्यापारियों से पूछो। — और उन्होंने व्यापारियों से पूछा; लेकिन उन्होंने जवाब दिया, "हमारे स्वामी खलीफा को वह रत्न अल-बसरा के एक आलसी अबू मोहम्मद के पास ही मिलेगा।" उन्होंने यह बात खलीफा को बताई; और उन्होंने अपने वज़ेर जाफ़र को आदेश दिया कि वह अल-बसरा के राज्यपाल अमीर मोहम्मद एज़-ज़ुबैदी को एक पत्र भेजें, जिसमें उनसे अबू मोहम्मद एज़-ज़ुबैदी को तैयार करने और उसे अमीरुल मोमिनीन के सामने पेश करने का अनुरोध किया गया हो। इसलिए वज़ेर ने इस आशय का एक पत्र लिखा और उसे मेसरूर के माध्यम से भेजा। मेसरूर तुरंत उस पत्र को लेकर अल-बसरा शहर गए और अमीर मोहम्मद एज़-ज़ुबैदी से मिले, जो उन्हें देखकर बहुत प्रसन्न हुए और उनका अत्यंत सम्मान किया। फिर उन्होंने उन्हें अमीरुल मोमिनीन ह्तीरून एर-इलाशीद का पत्र पढ़कर सुनाया, और उन्होंने कहा, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।" उसने तुरंत मेसरूर को अपने कुछ साथियों के साथ आलसी अबू मोहम्मद के पास भेजा, और वे उसके पास गए और उसका दरवाजा खटखटाया; तभी एक सेवक उनके पास आया और मेसरूर ने उससे कहा, अपने स्वामी से कहो कि अमीरुल मोमिनीन ने तुम्हें बुलाया है। तो सेवक अंदर

गया और उसे यह सूचना दी; फिर वह बाहर आया और उसने खलीफा के दरबारी मेसरूर को अमीर मोहम्मद एज-जुबैदी के साथियों के साथ पाया; इस पर उसने अपने सामने जमीन चूमी और कहा, मैं अमीरुल मोमिनीन का आदेश सुनता और मानता हूँ: लेकिन हमारे घर में प्रवेश करो। उन्होंने उत्तर दिया, हम ऐसा नहीं कर सकते, जब तक कि अमीरुल मोमिनीन के आदेशानुसार हमें जल्दी से मिलने न जाना पड़े; क्योंकि वह आपके आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लेकिन उसने कहा, थोड़ा धैर्य रखो, ताकि मैं अपना काम निपटा सकूँ। और बहुत समझाने-बुझाने के बाद वे उसके साथ घर में प्रवेश कर गए; और उन्होंने गलियारे में नीले ब्रोकेड के पर्दे देखे जिन पर लाल सोने की कढ़ाई थी। फिर आलसी अबू मोहम्मद ने अपने कुछ सेवकों को आदेश दिया कि वे मेसरूर को घर में बने स्नानघर में ले जाएं; और उन्होंने ऐसा ही किया। और उसने देखा कि उसकी दीवारें और संगमरमर के फर्श उसी धातु के थे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.55%** है।

3सी.आई. आलसी अबू-मोहम्मद की कहानी। असाधारण निर्माण: यह सोने और चांदी से सजा हुआ था, और इसके पानी में गुलाब जल मिलाया जाता था। सेवकों ने मेसरूर और उनके साथियों का पूरा ध्यान रखा और उनकी उत्तम सेवा की; और जब वे स्नान करके बाहर आए, तो उन्होंने उन्हें सोने से बुने हुए ब्रोकेड के सम्मानजनक वस्त्र पहनाए; जिसके बाद, मेसरूर और उनके साथी अंदर आए और आलसी अबू-मोहम्मद को अपने मंडप में बैठे हुए पाया। उनके सिर के ऊपर सोने से बुने हुए ब्रोकेड के पर्दे लटके हुए थे, जो मोतियों और रत्नों से सजे हुए थे; मंडप लाल सोने से कढ़े हुए कुशनों से सुसज्जित था; और वह अपने गद्दे पर बैठे थे, जो रत्नों से जड़े हुए पलंग पर था। जब मेसरूर उनके पास आए, तो उन्होंने उनका

स्वागत किया और उनसे मुलाकात की, और उन्हें अपने पास बैठाकर मेज लाने का आदेश दिया; और जब मेसरूर ने वह मेज देखी, तो उसने कहा, अल्लाह की कसम, मैंने अमीरुल मोमिनीन के महल में ऐसी मेज कभी नहीं देखी! उसमें तरह-तरह के व्यंजन थे, जो सोने की परत चढ़ी चीनी मिट्टी की थालियों में परोसे गए थे। मेसरूर ने कहा, हमने खाया-पिया और दिन ढलने तक आनंद लिया, जब उसने हममें से प्रत्येक को पाँच हज़ार सोने के सिक्के दिए। और अगले दिन, उन्होंने हमें सोने की कढ़ाई वाले हरे रंग के सम्मानजनक वस्त्र पहनाए और हमारा अत्यंत सम्मान किया। मेसरूर ने फिर आलसी अबू मोहम्मद से कहा, खलीफा के डर से हमारे लिए इससे अधिक समय तक यहाँ रहना असंभव है। लेकिन आलसी अबू मोहम्मद ने उत्तर दिया, हे हमारे स्वामी, कल तक हम पर धैर्य रखें, ताकि हम स्वयं को तैयार कर सकें, और फिर हम आपके साथ चलेंगे। तो वे उस दिन वहीं रहे और रात से सुबह तक का समय बिताया; जब सेवकों ने आलसी अबू मोहम्मद के लिए एक खच्चर तैयार किया, जिस पर सोने की काठी थी।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.74%** है।

अबू-मोहम्मद लाज़व की कहानी। 5 सोने से बना एक मुकुट, जो विभिन्न प्रकार के मोतियों और रत्नों से सजा हुआ था; इस पर मेसरूर ने मन ही मन कहा, जब अबू-मोहम्मद इस साजो-सामान के साथ खलीफा के सामने पेश होंगे, तो मुझे आश्चर्य है कि क्या वह उनसे पूछेंगे कि उन्होंने इतना धन कैसे प्राप्त किया। इसके बाद, उन्होंने मोहम्मद एज़-ज़ुबैदी से विदा ली और अल-बसरा से निकलकर बगदाद शहर तक यात्रा की; और जब वे खलीफा के पास गए और उनके सामने खड़े हुए, तो उन्होंने अबू-मोहम्मद को बैठने का आदेश दिया। तो वह बैठ गए और खलीफा को विनम्रता से संबोधित करते हुए कहा, हे धनियों के सरदार, मैं सेवा के प्रतीक के रूप में एक भेंट लाया हूँ: तो क्या मैं आपकी अनुमति से इसे प्रस्तुत कर सकता हूँ? एर-रशीद ने उत्तर दिया, इसमें कोई हर्ज नहीं है। तदनुसार, अबू-मोहम्मद ने एक संदूक लाने का आदेश दिया, जिसे उन्होंने खोला और उसमें से कुछ दुर्लभ वस्तुएँ निकालीं, जिनमें सोने के वृक्ष थे, जिनके पत्ते सफेद पन्ना से बने थे, और फल लाल और पीले चमेली और सफेद मोती थे; जिसे देखकर खलीफा आश्चर्यचकित रह गए। फिर उन्होंने दूसरा संदूक मंगवाया और उसमें से रेशम का एक तम्बू निकाला, जो मोती, चमेली, पन्ना, क्राइसोलाइट और अन्य कई प्रकार के रत्नों से सजा हुआ था: इसके खंभे नई भारतीय अगरबत्ती की लकड़ी के थे; इसके किनारे पन्ना से सजे थे; और इस पर सभी जीवित प्राणियों, जैसे पक्षियों और जंगली जानवरों के चित्र बने हुए थे; ये सभी चित्र रत्नों, चमेली, पन्ना, क्राइसोलाइट, बलास माणिक और सभी प्रकार के खनिजों से सजे हुए थे। और जब एर रशीद ने इसे देखा, तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए। तब आलसी अबू मोहम्मद ने कहा, "हे धनियों के सरदार, यह मत समझो कि मैं यह तुम्हारे पास किसी डर या अभिशाप के कारण लाया हूँ; क्योंकि सच्चाई यह है कि मैंने स्वयं को आम लोगों में से एक समझा और पाया

कि यह केवल धनियों के सरदार के लिए ही उपयुक्त है; और यदि तुम मुझे अनुमति दो, तो मैं तुम्हें अपने कुछ कारनामे दिखाऊँगा।" इस पर एर-रशीद ने उत्तर दिया, "जो चाहो करो, ताकि हम देख सकें।" और अबू मोहम्मद ने कहा, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।" फिर उन्होंने अपने होंठ हिलाए और महल की प्राचीरों की ओर इशारा किया; जिस पर वे उनकी ओर झुक गईं; और उन्होंने उन्हें एक और इशारा किया, और वे अपनी सही स्थिति में लौट आईं। इसके बाद, उन्होंने अपनी आँख से इशारा किया, और उनके सामने बंद दरवाजों वाले गुप्त कक्ष प्रकट हुए; और उन्होंने उनसे कुछ शब्द कहे, जिस पर पक्षियों की आवाज़ों ने उन्हें उत्तर दिया। और एर-रशीद को इस पर बहुत आश्चर्य हुआ और उसने उससे कहा, तुम्हें यह सारी शक्ति कहाँ से मिली, जबकि तुम अबू के नाम से ही जाने जाते हो।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.51%** है।

366 अली मोहम्मद (आलसी) की कहानी। मोहम्मद (आलसी), और मुझे बताया गया है कि तुम्हारे पिता एक सार्वजनिक स्नानघर में चाय बनाने वाले थे और उन्होंने तुम्हारे लिए कुछ भी नहीं छोड़ा?— हे धनियों के राजकुमार, उन्होंने उत्तर दिया, मेरी कहानी सुनो; क्योंकि यह अद्भुत और असाधारण है: यदि यह समझ में अंकित हो जाए, तो यह उसे सबक सिखाएगी जिसे नसीहत दी जानी चाहिए। एर-रशीद ने कहा, हे अबू मोहम्मद, जो कुछ तुम्हें बताना है, वह बताओ और मुझे उससे अवगत कराओ। तो उन्होंने कहा,— हे धनियों के राजकुमार (अल्लाह आपकी महिमा और शक्ति को बनाए रखे!), जान लो कि लोगों का यह वृत्तांत कि मैं आलसी उपनाम से जाना जाता हूँ और मेरे पिता ने मेरे लिए कोई संपत्ति नहीं छोड़ी, सत्य है; क्योंकि मेरे पिता वही थे जो तुमने कहा है: वे

एक सार्वजनिक स्नानघर में चाय बनाने वाले थे। अपनी जवानी में मैं धरती पर मौजूद सभी प्राणियों में सबसे आलसी था। मेरी आलस इतनी अधिक थी कि जब मैं गर्मी के मौसम में सो रहा होता था और सूरज निकल आता था, तो मैं इतना सुस्त होता था कि उठकर धूप से बचने के लिए छांव में जाने की भी जहमत नहीं उठाता था। इस प्रकार मैं पंद्रह वर्ष तक इसी अवस्था में रहा, जिसके बाद मेरे पिता अल्लाह (जिनका नाम महान है!) की कृपा में चले गए और मेरे लिए कुछ भी नहीं छोड़ा। लेकिन मेरी माँ कुछ लोगों के यहाँ नौकरानी का काम करती थी और मुझे खाना-पीना देती थी, जब मैं करवट लेकर लेटा रहता था। एक दिन मेरी माँ पाँच चाँदी के सिक्के लेकर मेरे पास आई और मुझसे बोली, "हे मेरे बेटे, मुझे पता चला है कि शेख अबू-अल-मुज़फ़्फ़र ने चीन की यात्रा करने का निश्चय किया है। यह शेख गरीबों से प्रेम करते थे और गुणी पुरुषों में से एक थे।" और मेरी माँ ने कहा, "हे मेरे पुत्र, ये पाँच चाँदी के सिक्के ले लो और हमारे साथ उसके पास चलो, हम उससे विनती करेंगे कि वह तुम्हारे लिए चीन से कुछ खरीदे; शायद इससे तुम्हें अल्लाह की कृपा से लाभ हो, जिसका नाम महान है!" परन्तु मैं उठने और उसके साथ जाने में बहुत आलसी था। इस पर उसने अल्लाह की कसम खाकर कहा कि यदि मैं नहीं उठा और उसके साथ नहीं गया तो वह मुझे न तो भोजन देगी, न पानी पिलाएगी, न ही मेरे पास आएगी, बल्कि मुझे भूख और प्यास से मरने के लिए छोड़ देगी। इसलिए जब मैंने उसके शब्द सुने, हे विश्वासियों के राजकुमार, तो मैं जान गया कि वह ऐसा ही करेगी, क्योंकि वह मेरे आलस्य को जानती थी। इसलिए मैंने उससे कहा, "मुझे बिठाओ।" और उसने मुझे बिठाया, जबकि मैं रो रहा था। मैंने कहा, "मेरे जूते लाओ।" और वह उन्हें ले आई; और मैंने कहा, "मेरे पैरों में पहना दो।" और उसने उन्हें पहना दिया। फिर मैंने कहा, "मुझे जमीन से उठाओ।" और जब

उसने ऐसा कर दिया, तो मैंने कहा, “मुझे सहारा दो, ताकि मैं चल सकूँ।” तो उसने मुझे सहारा दिया, और मैं लड़खड़ाते हुए अपने वस्त्रों में उलझते हुए चलती रही, जब तक कि हम नदी के किनारे नहीं पहुँच गए। वहाँ हमने शेख को सलाम किया और मैंने उनसे कहा, हे चाचा, क्या आप अल मुअफ्फर हैं? उन्होंने उत्तर दिया, मैं आपकी सेवा में हूँ। और मैंने कहा, ये लीजिए।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.71%** है।

अबू मोहम्मद आलसी की कहानी। 307 चांदी के सिक्के, और उनसे चीन देश से कुछ खरीदो: शायद अल्लाह मुझे इससे लाभ दे। शेख अबू-अल-मुजफ्फर ने अपने साथियों से कहा, क्या तुम इसे जानते हो? उन्होंने उत्तर दिया, हाँ: यह व्यक्ति अबू मोहम्मद आलसी के नाम से जाना जाता है; और हमने उसे इस अवसर के अलावा कभी भी अपने घर से बाहर निकलते नहीं देखा। तब शेख अबू-अल-मुजफ्फर ने कहा, हे मेरे बेटे, मुझे पैसे दे दो, और अल्लाह (जिसका नाम महान है!) का आशीर्वाद इस पर बना रहे। और उन्होंने मुझसे पैसे लेते हुए कहा, अल्लाह के नाम पर। इसके बाद, मैं अपनी माँ के साथ घर लौट आया। शेख अबू-अल-मुजफ्फर यात्रा पर निकल पड़े, और उनके साथ व्यापारियों का एक समूह था, और वे बिना रुके तब तक चलते रहे जब तक कि वे चीन देश नहीं पहुँच गए; जब शेख ने खरीद-फरोख्त की और अपने साथियों के साथ अपनी इच्छाएँ पूरी करने के बाद लौटने के लिए निकल पड़े। लेकिन जब वे तीन दिन तक समुद्र में रहे, तो शेख ने अपने साथियों से कहा, “जहाज रोको!” व्यापारियों ने पूछा, “तुम्हें क्या चाहिए?” उन्होंने उत्तर दिया, “जान लो कि आलसी अबू मोहम्मद की जो जमा राशि मुझे सौंपी गई थी, वह मैं भूल गया हूँ; इसलिए हमारे साथ लौट आओ, ताकि हम उससे उसके लिए

कुछ ऐसा खरीद सकें जिससे उसे लाभ हो।”

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.22%** है।

368 आलसी अबू मोहम्मद की कहानी। उन्होंने उत्तर दिया, “हम अल्लाह (जिसका नाम महान है!) की कसम खाकर तुमसे विनती करते हैं कि तुम हमें वापस न ले जाओ; क्योंकि हमने बहुत लंबी दूरी तय की है, और इस दौरान हमें बहुत भय और अत्यधिक कष्ट सहना पड़ा है।” फिर भी उन्होंने कहा, “हमें लौटना ही होगा।” इसलिए उन्होंने कहा, “मुझसे पाँच चाँदी के सिक्कों के लाभ से कई गुना अधिक ले लो, और हमें वापस न ले जाओ।” तो उन्होंने उनका प्रस्ताव मान लिया; और उन्होंने उनके लिए एक बड़ी रकम इकट्ठा की। फिर वे आगे बढ़ते रहे जब तक कि उन्हें एक ऐसा द्वीप दिखाई नहीं दिया जहाँ बहुत आबादी थी, जहाँ उन्होंने लंगर डाला; और व्यापारी वहाँ से खनिज, रत्न, मोती और अन्य वस्तुओं का सामान

खरीदने के लिए उतरे। और अबू मुजफ्फर ने एक आदमी को बैठे हुए देखा, जिसके सामने बहुत सारे बंदर थे; और उनमें से एक बंदर के बाल नोचे हुए थे। जब भी मालिक का ध्यान कहीं भटकता, तो दूसरे बंदर उस उखड़े हुए बंदर को पकड़ लेते, उसे पीटते और मालिक पर फेंक देते; मालिक उठ खड़ा होता और उन्हें पीटता, जंजीरों में बांधता और सताता; इस पर सभी बंदर एक-दूसरे पर क्रोधित हो जाते और उसे फिर पीटते। अब जब शेख अबू-अल-मुजफ्फर ने उस बंदर को देखा, तो उन्हें उस पर दया आई और उन्होंने उसके मालिक से कहा, क्या तुम मुझे यह बंदर बेचोगे? मालिक ने उत्तर दिया, हाँ। शेख ने कहा, मेरे पास एक अनाथ लड़के के पाँच चाँदी के सिक्के हैं। क्या तुम उसे मुझे उस कीमत पर बेचोगे? लड़के ने उत्तर दिया, मैं तुम्हें बेच देता हूँ। अल्लाह तुम्हें उसमें बरकत दे! तब शेख ने उसे अपने कब्जे में ले लिया और उसके मालिक को पैसे दे दिए; और शेख के दासों ने बंदर को लिया और उसे जहाज में बांध दिया। इसके बाद, उन्होंने पाल खोल दिए और एक दूसरे द्वीप की ओर चल पड़े, जहाँ उन्होंने लंगर डाला। खनिज, मोती, रत्न और अन्य वस्तुओं की खोज करने वाले गोताखोर नीचे आए; और व्यापारियों ने उन्हें गोताखोरी के बदले पैसे दिए। तो वे गोता लगाने लगे; और बंदर ने उन्हें ऐसा करते देखकर अपनी रस्सी खोल दी, जहाज से छलांग लगाई और उनके साथ गोता लगाया; इस पर अबू-अल-मुज़फ़्फ़र ने कहा, सर्वशक्तिमान, महान ईश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है! हमने उस बंदर को खो दिया, साथ ही उस बेचारे युवक के भाग्य को भी जिसके लिए हमने उसे खरीदा था! — वे बंदर के बारे में निराश हो गए; लेकिन जब गोताखोरों का दल ऊपर आया, तो देखो, बंदर भी उनके साथ ऊपर आया, उसके हाथों में कीमती रत्न थे; और उसने उन्हें अबू-अल-मुज़फ़्फ़र के सामने फेंक दिया, जो इस पर आश्चर्यचकित हुए और बोले, वास्तव में,

इस बंदर में एक बड़ा रहस्य है! फिर उन्होंने पाल खोल दिए और एक द्वीप की ओर चल पड़े जिसे द्वीप कहा जाता था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.32%** है।

+k«, 7.,,, अबू-मुज़फ़्फ़र की कहानी1) ला /ए'. 36'जे ज़ुनूज,5 जो काले लोगों की जाति है, जो आदम के पुत्रों का मांस खाते हैं। और जब काले लोगों ने उन्हें देखा, तो वे नावों में उनके पास आए, और नाव में सवार सभी लोगों को पकड़कर उनके हाथ पीछे बांध दिए, और उन्हें राजा के पास ले गए, जिसने उन्हें कुछ व्यापारियों का वध करने का आदेश दिया। सो उन्होंने उनका वध किया और उनका मांस खाया। शेष व्यापारी रात भर कैद में, बड़ी पीड़ा में रहे; परन्तु रात में बंदर उठा और अबू-मुज़फ़्फ़र के पास आया, और उसकी जंजीरें खोल दीं। और जब व्यापारियों ने अबू-मुज़फ़्फ़र को मुक्त देखा, तो उन्होंने कहा, हे अबू-मुज़फ़्फ़र, ईश्वर करे कि हमारी मुक्ति तेरे हाथों से हो! लेकिन उसने उत्तर दिया, “जान लो कि मुझे अल्लाह (जिसका नाम महान है!) की इच्छा से किसी ने मुक्त नहीं किया, सिवाय इस बंदर के; और मैंने उससे एक हजार सोने के सिक्कों के बदले अपनी आज़ादी खरीदी है।” तब व्यापारियों ने कहा, “और हम भी ऐसा ही करते हैं: हममें से प्रत्येक उससे एक हजार सोने के सिक्कों के बदले अपनी आज़ादी खरीदेगा, यदि वह हमें मुक्त कर दे।” तब बंदर उठा और उनके पास गया, और एक-एक करके उनके बंधन खोलने लगा, जब तक कि उसने उन सभी के बंधन नहीं खोल दिए; और वे जहाज पर गए, और उसमें सवार हो गए, और उसे सुरक्षित पाया; उसमें से कुछ भी नहीं खोया था। उन्होंने तुरंत बंधन खोले, और अपनी यात्रा जारी रखी, और अबू-मुज़फ़्फ़र ने कहा, “हे व्यापारियों, बंदर को जो वादा तुमने किया है उसे पूरा करो।” उन्होंने उत्तर दिया, “हम

सुनते हैं और आज्ञा मानते हैं।” और उनमें से प्रत्येक ने उसे एक हजार सोने के सिक्के दिए। अबू-मुज़फ़्फ़र ने भी अपनी संपत्ति से एक हजार सोने के सिक्के निकाले; और इस प्रकार बंदर के लिए एक बड़ी राशि एकत्र की गई। फिर उन्होंने अपनी यात्रा जारी रखी और अल-बसरा शहर पहुँचे; वहाँ उनके साथी उनसे मिलने आए; और जब वे किनारे पर उतरे, तो अबू-मुज़फ़्फ़र ने पूछा, आलसी अबू-मोहम्मद कहाँ है? यह खबर मेरी माँ तक पहुँची, और जब मैं सो रहा था, तो मेरी माँ मेरे पास आईं और बोलीं, ऐ मेरे बेटे, शेख अबू-मुज़फ़्फ़र आ गए हैं और शहर में आ गए हैं; उठो और उनके पास जाओ, उन्हें सलाम करो और उनसे पूछो कि वे तुम्हारे लिए क्या लाए हैं: शायद अल्लाह (जिसका नाम महान है!) ने तुम्हें कुछ दिया हो। तो मैंने उत्तर दिया, मुझे ज़मीन से उठाओ और सहारा दो, ताकि मैं बाहर जा सकूँ और नदी के किनारे तक चल सकूँ। मैं अपने वस्त्रों में लड़खड़ाते हुए चलता रहा, जब तक कि मैं शेख अबू-मुज़फ़्फ़र के पास नहीं पहुँच गया; और जब उसने मुझे देखा, तो उसने मुझसे कहा, "उसका स्वागत है जिसके धन से मेरी और इन व्यापारियों की मुक्ति हुई, ईश्वर की इच्छा से, जिसका नाम महान हो!" फिर उसने मुझसे कहा, "इस बंदर को ले लो; क्योंकि मैंने इसे तुम्हारे लिए खरीदा है; इसे अपने घर ले जाओ और मेरे आने तक प्रतीक्षा करो।" इसलिए मैंने बंदर को अपने सामने ले लिया। (II. 3 B)

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.45%** है।

और मैं मन ही मन कहने लगा, अल्लाह की कसम, यह तो शानदार माल है! मैं अपने घर में दाखिल हुआ और अपनी माँ से कहा, जब भी मैं सोने के लिए लेटता हूँ, तुम मुझे व्यापार करने के लिए उठने को कहती हो: तो इस माल को देखो। फिर मैं बैठ गया; और जब मैं बैठा ही था, तभी अबू-

अल-मुज़फ़्फ़र के दास मेरे पास आए और मुझसे पूछा, क्या तुम आलसी अबू-मोहम्मद हो? मैंने उन्हें उत्तर दिया, हाँ। और देखो, अबू-अल-मुज़फ़्फ़र उनके पीछे-पीछे आ रहे थे। मैं उनके पास उठा और उनके हाथों को चूमा, और उन्होंने मुझसे कहा, मेरे घर चलो। तो मैंने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। मैं उनके साथ घर में दाखिल हुआ, जहाँ उन्होंने अपने दासों को धन लाने का आदेश दिया; और वे धन ले आए, और उन्होंने कहा, हे मेरे बेटे, अल्लाह ने तुम्हें इस धन से पाँच चाँदी के लाभ के बराबर नवाज़ा है। फिर उन्होंने उसे संदूकों में भरकर अपने सिर पर रख लिया, और उसने मुझे उन संदूकों की चाबियाँ देते हुए कहा, “दासों के आगे-आगे अपने घर चलो; क्योंकि यह सारा धन तुम्हारा है।” इसलिए मैं अपनी माँ के पास गया, और वह यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुई, और बोली, “हे मेरे पुत्र, ईश्वर ने तुझे इस प्रचुर धन से आशीष दी है; इसलिए इस आलस्य को त्याग दे, और बाज़ार जाकर खरीद-फरोख्त कर।” तदनुसार, मैंने अपने आलसी स्वभाव को त्याग दिया, और बाज़ार में एक दुकान खोल ली, और बंदर मेरे साथ मेरे गद्दे पर बैठता था: जब मैं खाता था, वह मेरे साथ खाता था; और जब मैं पीता था, वह मेरे साथ पीता था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.02%** है।

आलसी अबू मोहम्मद की कहानी। 371 और वह प्रतिदिन सुबह से दोपहर तक मुझसे दूर रहता था, फिर आता था, अपने साथ एक हजार सोने के सिक्कों से भरा थैला लेकर, और उसे मेरे पास रखकर बैठ जाता था। इस प्रकार वह लंबे समय तक ऐसा करता रहा, जब तक कि मेरे पास प्रचुर धन जमा नहीं हो गया; जिसके बाद, हे विश्वासियों के राजकुमार, मैंने संपत्ति और रबास खरीदे,6 और बाग लगाए, और मेमलुक और काले पुरुष दास और महिला दास खरीदे। और एक दिन ऐसा हुआ कि मैं बैठा था, और वह बंदर मेरे साथ गद्दे पर बैठा था, और देखो, उसने दाएं और बाएं देखा; जिस पर मैंने मन ही मन कहा, इस बंदर को क्या हुआ है? और ईश्वर ने उस बंदर को एक वाक्पटु जीभ से बोलने का आदेश दिया, और उसने कहा, हे अबू मोहम्मद! यह सुनकर मैं बुरी तरह भयभीत हो गया; लेकिन उसने कहा, डरो मत। मैं तुम्हें अपनी स्थिति से अवगत कराऊंगा। मैं जिन्नों का मारिद हूँ; मैं तुम्हारे दरिद्र होने के कारण तुम्हारे

पास आया हूँ, और अब तुम अपने धन की मात्रा नहीं जानते; और मैं तुमसे एक काम करवाना चाहता हूँ, जिसके पूरा होने से तुम्हारा भला होगा। — वह क्या है? मैंने पूछा। उसने उत्तर दिया, मैं तुम्हारा विवाह पूर्णिमा के आँसुओं के समान एक कन्या से करवाना चाहता हूँ। — और कैसे? मैंने कहा। — कल, उसने उत्तर दिया, अपने कीमती वस्त्र पहनो, सोने की काठी वाले अपने खच्चर पर सवार हो जाओ, और मेरे साथ चारे के विक्रेताओं के बाजार चलो: वहाँ शरीफ की दुकान का पता लगाओ, और उसके पास बैठ जाओ, और उससे कहो, मैं तुम्हारे पास तुम्हारी पुत्री का विवाह करने आया हूँ। और यदि वह तुझसे कहे, "तुम्हारे पास न धन है, न पदवी, न वंश, तो उसे एक हजार सोने के सिक्के दे देना; और यदि वह तुझसे कहे, "मुझे और दो," तो उसे दे देना, और धन के प्रति उसकी लालसा को बढ़ा देना।" तो मैंने उत्तर दिया, "मैं सुनता और मानता हूँ: कल मैं ऐसा करूँगा, यदि यह ईश्वर की इच्छा हो, जिसका नाम महान है!" तदनुसार, जब मैं सुबह उठा, तो मैंने अपने सबसे कीमती वस्त्र पहने, सोने की काठी वाले खच्चर पर सवार हुआ, और चारे के विक्रेताओं के बाजार में जाकर शरीफ की दुकान के बारे में पूछा, और उसे अपनी दुकान में बैठा पाया। इसलिए मैं उतरा और उसे प्रणाम किया, और उसके साथ बैठ गया। मेरे साथ मेरे दस काले दास और अन्य नौकर थे; और शरीफ ने कहा, "शायद तुम्हारा हमसे कोई काम हो, जिसे पूरा करने में हमें खुशी हो।" तो मैंने उत्तर दिया, "हाँ: मेरा तुमसे कुछ काम है।" तो उसने पूछा, "क्या है?" मैंने उत्तर दिया, मैं तुम्हारे पास पुत्री की इच्छा से आया हूँ। उसने कहा, तुम्हारे पास न धन है, न पदवी, न वंश। इस पर मैंने एक हजार लाल सोने से भरा थैला निकालकर उसे भेंट किया और कहा, यही मेरी पदवी और वंश है; और जिसे ईश्वर आशीर्वाद दे और बचाए, उसके पास है...

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.03%** है।

372 अबू मोहम्मद द लाय की कहानी में कहा गया है, धन से प्राप्त उच्च पद है। कवि का यह कथन भी कितना अच्छा है! — जिसके पास दो दिरहम होते हैं, उसके होठों ने अनेक प्रकार के शब्द सीख लिए होते हैं, जिन्हें वह बोलता है: उसके भाई उसके पास आते हैं और उसकी बात सुनते हैं, और तब उसे मनुष्यों के बीच अभिमानी पाते हैं। यदि उसके पास धन न होता, जिस पर वह गर्व करता है, तो वे उसे अत्यंत अपमानजनक स्थिति में पाते। जब धनी व्यक्ति बोलने में गलती करता है, तो वे कहते हैं, तुमने सत्य कहा है, व्यर्थ की बात नहीं की है; परन्तु जब गरीब व्यक्ति सत्य कहता है, तो वे कहते हैं, तुमने झूठ बोला है, और उसके कथन को निष्फल कर देते हैं। 8 निश्चय ही धन, प्रत्येक निवास में, मनुष्य को गरिमा और सुंदरता प्रदान करता है: यह वाक्पटु व्यक्ति के लिए जीभ है, यह युद्ध करने वाले के लिए हथियार है। जब शरीफ ने ये शब्द सुने और आयतों को समझा, तो उसने कुछ देर के लिए अपना सिर ज़मीन की ओर झुका लिया; फिर उसने अपना सिर उठाया और मुझसे कहा, अगर ज़रूरी हो तो मुझे तुमसे तीन हज़ार सोने के सिक्के और चाहिए। तो मैंने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। मैंने तुरंत अपने एक साथी को अपने घर भेजा और वह शरीफ द्वारा माँगी गई धनराशि ले आया; जब शरीफ ने इसे आते देखा, तो वह दुकान से उठा और अपने जवानों से कहा, इसे बंद करो। फिर उसने बाज़ार से अपने साथियों को अपने घर बुलाया और अपनी बेटी से मेरा विवाह संपन्न कराने के बाद मुझसे कहा, दस दिन बाद मैं तुम्हें उससे मिलवाऊँगा। मैं प्रसन्नता से भरा हुआ अपने घर लौटा और एकांत में उस बंदर को सारी बात बताई; जिस पर उसने कहा, तुमने बहुत अच्छा किया। और जब शरीफ़ द्वारा निर्धारित समय

निकट आया, तो वानर ने मुझसे कहा, “मैं तुमसे एक काम करवाना चाहता हूँ: यदि तुम उसे मेरे लिए पूरा कर दोगे, तो तुम्हें मुझसे वह सब कुछ मिल जाएगा जो तुम चाहते हो।” मैंने पूछा, “तुम्हारी क्या इच्छा है?” उसने उत्तर दिया, “उस कक्ष के ऊपरी सिरे पर, जहाँ तुम शरीफ़ की पुत्री से पहली बार मिलने जाओगे, एक कोठरी है, जिसके द्वार पर पीतल का एक छल्ला है और चाबियाँ छल्ले के नीचे हैं। उन्हें लेकर द्वार खोलो। तुम्हें लोहे का एक संदूक मिलेगा, जिसके कोनों पर चार ताबीज़ वाले झंडे लगे हैं; बीच में पैसों से भरा एक पात्र है, और उसके बगल में ग्यारह साँप हैं, और पात्र में एक फटी कलगी वाला सफेद मुर्गा बंधा है; और संदूक के बगल में एक चाकू भी है। चाकू लेकर मुर्गे को मार डालो, झंडों को टुकड़े-टुकड़े कर दो और संदूक खाली कर दो; और उसके बाद दुल्हन के पास जाओ।” मुझे तुमसे यही चाहिए। — और मैंने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। फिर मैं शरीफ के घर गया और बैठक में प्रवेश करते हुए,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.60%** है।

आलस्यपूर्ण अबू-मोहम्मत की कहानी। 373 मैंने उस कोठरी की ओर देखा जिसका वर्णन बंदर ने मुझे किया था। और जब मैं दुल्हन के साथ अकेला रह गया, तो मैं उसकी सुंदरता, आकर्षण और कद-काठी की भव्यता पर मुग्ध हो गया; क्योंकि वह ऐसी थी कि उसकी सुंदरता और आकर्षण का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। मैं उससे अत्यंत प्रसन्न हुआ; और जब आधी रात हुई और दुल्हन सो गई, तो मैं उठा, चाबियाँ लीं और कोठरी खोली, और चाकू लेकर मुर्गे को मार डाला, झंडे नीचे फेंक दिए और संदूक उलट दिया; तभी युवती जाग उठी और देखा कि कोठरी खुली है और मुर्गा मारा गया है; और वह चिल्लाई,

सर्वशक्तिमान, महान ईश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है! मारिद मुझे ले गया है! — और उसके शब्द अभी समाप्त भी नहीं हुए थे कि मारिद ने घर को घेर लिया और दुल्हन को छीन लिया। इस पर हंगामा मच गया; और तभी शरीफ़ पास आया, अपना चेहरा थपथपाते हुए बोला, "हे अबू-मोहम्मद, तुमने हमारे साथ यह क्या किया है? क्या यही तुम्हें इसका प्रतिफल देना है? मैंने अपनी बेटी के डर से इस दुष्ट से बचने के लिए इस कोठरी में यह ताबीज़ बनाया था; क्योंकि वह छह साल से इस युवती को अपने साथ ले जाना चाहता था, पर ऐसा नहीं कर सका। अब तुम हमारे साथ नहीं रहोगे: इसलिए तुम चले जाओ।" तब मैं शरीफ़ के घर से निकल गया और अपने घर लौटकर उस बंदर को ढूंढने लगा; पर वह मुझे नहीं मिला, न ही उसका कोई निशान दिखाई दिया: इसलिए मैं समझ गया कि वह वही मारिद था जिसने मेरी पत्नी को अगवा किया था, और उसने मेरे खिलाफ कोई चाल चली थी ताकि मैं ताबीज़ और मुर्गे का इस्तेमाल करके उसे मेरी पत्नी को अगवा करने से रोक सकूँ। मुझे पश्चाताप हुआ, मैंने अपने कपड़े फाड़ डाले और अपना चेहरा पीट लिया। कोई भी जगह मेरे लिए पर्याप्त चौड़ी नहीं थी; इसलिए मैं तुरंत रेगिस्तान की ओर चल पड़ा और शाम होने तक वहीं रहा; मुझे पता नहीं था कि कहाँ जाऊँ। लेकिन जब मैं ध्यान में लीन था, तभी अचानक दो साँप मेरे पास आए; एक भूरे रंग का था; और दूसरा सफेद; और वे आपस में लड़ रहे थे। इसलिए मैंने ज़मीन से एक पत्थर उठाया और उससे भूरे साँप पर प्रहार किया और उसे मार डाला; क्योंकि वह सफेद साँप को सता रहा था। फिर सफेद साँप चला गया और कुछ देर के लिए गायब रहा; उसके बाद वह दस अन्य सफेद साँपों के साथ लौटा; और वे मरे हुए साँप के पास आए और उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया, जिससे केवल उसका सिर ही बचा रहा; ऐसा करने के बाद वे अपने रास्ते चले गए। तब मैं थकान से चूर

होकर वहीं पेट के बल लेट गया; और जब मैं इस प्रकार लेटा हुआ अपने मामले पर चिंतन कर रहा था, तभी एक ऐसे प्राणी ने, जिसकी वाणी मैंने सुनी, परन्तु जिसका रूप मैंने नहीं देखा, ये दो श्लोक कहे:

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **24.72%** है।

भाग्य को ढीले-ढाले ढंग से चलने दो, और रात को बेफिक्र मन से गुजारो; क्योंकि आँख बंद होने और खुलने के बीच, ईश्वर परिस्थितियों में परिवर्तन कर देता है। यह सुनकर, हे विश्वासियों के राजकुमार, मैं अत्यंत आहत हुआ और मेरे मन में अत्यधिक व्याकुलता उत्पन्न हुई; और मैंने अपने पीछे से एक आवाज सुनी जो यह दोहा पढ़ रही थी: - हे मुसलमान, जिसका मार्गदर्शक कुरान है, उसमें प्रसन्न हो; क्योंकि तुझे सुरक्षा प्राप्त हुई है; और शैतान के प्रलोभनों से मत डर; क्योंकि हम वे लोग हैं जिनका धर्म सच्चा है। तब मैंने उस व्यक्ति से कहा जिसने मुझसे बात की थी, हे ईश्वर, मुझे बताइए कि वे कौन हैं! इस पर अदृश्य वक्ता ने मनुष्य का रूप धारण किया और उत्तर दिया, मत डरो; क्योंकि तुम्हारा दयालु आचरण हमें ज्ञात हो गया है, और हम विश्वासी जिन्नों का एक कबीला हैं; यदि तुम्हें कोई आवश्यकता हो, तो हमें बताइए, ताकि

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.01%** है।

WP TTIHV 1 आलसी अबू मोहम्मद की कहानी"। 373 II हमें इसे करने का सुख मिल सकता है। इसलिए मैंने उससे कहा, "सचमुच मुझे बहुत ज़रूरत है; क्योंकि मैं एक बड़ी विपत्ति से पीड़ित हूँ। और मेरे जैसी विपत्ति किसके साथ हुई है?" - और उसने कहा, "शायद तुम आलसी अबू मोहम्मद हो।" मैंने उत्तर दिया, "हाँ।" और उसने कहा, "हे अबू मोहम्मद, मैं उस सफेद सर्प का भाई हूँ, जिसके शत्रु को तुमने मारा था। हम एक ही

माता-पिता के चार भाई हैं, और हम सब तुम्हारी दयालुता के लिए आभारी हैं। और जान लो कि जो बंदर के रूप में था, और जिसने तुम्हारे साथ यह छल किया, वह जिन्नों में से एक है; और यदि उसने यह चाल न चली होती, तो वह कभी भी उस युवती को नहीं ले जा पाता; क्योंकि वह लंबे समय से उसे लेने की इच्छा रखता था, और यह ताबीज उसे रोक दिया; और अगर ताबीज़ रहता, तो वह उस लड़की तक नहीं पहुँच पाता। लेकिन इस बात से डरो मत: हम तुम्हें उसके पास पहुँचा देंगे, और हम मारिद को मार डालेंगे; क्योंकि तुम्हारी दया व्यर्थ नहीं गई है। — फिर उसने एक भयानक आवाज़ में ज़ोर से चिल्लाया; और देखो, एक टोली उसके पास आई, और उसने उनसे उस बंदर के बारे में पूछा; जिस पर उनमें से एक ने उत्तर दिया, मैं उसका ठिकाना जानता हूँ। उसने कहा, उसका ठिकाना कहाँ है? और उसने उत्तर दिया, पीतल के शहर में, जहाँ सूरज नहीं उगता। और उसने कहा, हे अबू-मोहम्मद, हमारे दासों में से एक को ले लो, और वह तुम्हें अपनी पीठ पर ले जाएगा, और तुम्हें बताएगा कि तुम उस लड़की को कैसे ले जाओगे। लेकिन जान लो कि वह दास मारिदों में से एक है; और जब वह तुम्हें ले जा रहा हो, तो जब तक वह तुम्हें ले जा रहा हो, ईश्वर का नाम मत लेना; क्योंकि अगर तुमने नाम लिया, तो वह भाग जाएगा। तुझसे, तू गिरकर नष्ट हो जाएगा। — तो मैंने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। मैंने उनके एक दास को लिया, और वह झुककर बोला, चढ़। और मैं चढ़ गया, फिर वह मेरे साथ आकाश में ऊपर चला गया जब तक कि वह दुनिया की नज़रों से ओझल नहीं हो गया; और मैंने तारों को दृढ़ पर्वतों के समान देखा, और स्वर्गदूतों को स्वर्ग में ईश्वर की पूर्णता का गुणगान करते सुना। इस पूरे समय मुरियल मुझसे बातें कर रही थी और मेरा मनोरंजन कर रही थी, और मुझे ईश्वर का नाम लेने से रोक रही थी, जिसका नाम महान है! लेकिन जब मैं

इस अवस्था में था, तभी देखो, हरे वस्त्रों में लिपटा हुआ, लंबे बालों वाला, तेजस्वी चेहरा लिए हुए, और हाथ में एक भाला लिए हुए, जिससे चिंगारियाँ निकल रही थीं, एक व्यक्ति मेरे पास आया और मुझसे कहा, हे अबू-मोहम्मद, कह, ईश्वर के सिवा कोई देवता नहीं है: मोहम्मद ईश्वर के रसूल हैं — अन्यथा मैं तुझे इस भाले से मार डालूँगा। मेरा हृदय पहले ही मेरे द्वारा टुकड़े-टुकड़े हो चुका था। ईश्वर का नाम लेने से परहेज करते हुए (जिसका नाम महान है!): इसलिए मैंने कहा, ईश्वर के सिवा कोई देवता नहीं है: मोहम्मद ईश्वर के रसूल हैं। और तुरंत ही उस व्यक्ति ने मारिद पर भाले से प्रहार किया; जिसके बाद वह विलीन हो गया, और बन गया

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.13%** है।

376 आलसी अबू मोहम्मद की कहानी। राख; और मैं उसकी पीठ से गिर गया, और धरती पर तब तक उतरता रहा जब तक कि मैं लहरों से उग्र, उग्र समुद्र में नहीं जा गिरा। लेकिन, देखो, वहाँ एक जहाज था, जिसमें पाँच नाविक थे; और जब उन्होंने मुझे देखा, तो वे मेरे पास आए, और मुझे जहाज में ले गए, और मुझसे एक ऐसी भाषा में बात करने लगे जिसे मैं नहीं जानता था। इसलिए मैंने उन्हें संकेत दिया कि मैं उनकी भाषा नहीं जानता। और वे दिन ढलने तक अपनी यात्रा पर चलते रहे, जब उन्होंने एक जाल डाला, और एक बड़ी मछली पकड़ी, जिसे उन्होंने भूना; और मुझे खाने को दिया। वे अपनी यात्रा जारी रखते रहे जब तक कि वे मुझे अपने शहर नहीं ले गए; जिसके बाद वे मुझे अपने राजा के पास ले गए, और मुझे उनके सामने रखा; और मैंने जमीन चूमी, और उन्होंने मुझे सम्मान का वस्त्र प्रदान किया। अब यह राजा अरबी भाषा से परिचित था, और उसने कहा, मैं तुम्हें अपने अंगरक्षकों में से एक नियुक्त करता हूँ। और मैंने उससे पूछा, इस नगर का नाम क्या है? उसने उत्तर दिया, इसका

नाम हेनाद है, 10 और यह चीन देश में है। तब राजा ने मुझे नगर के वज़ीर के हवाले कर दिया और उसे नगर दिखाने का आदेश दिया। इस नगर के निवासी मूलतः काफ़िर थे; जिसके परिणामस्वरूप, ईश्वर (जिसका नाम

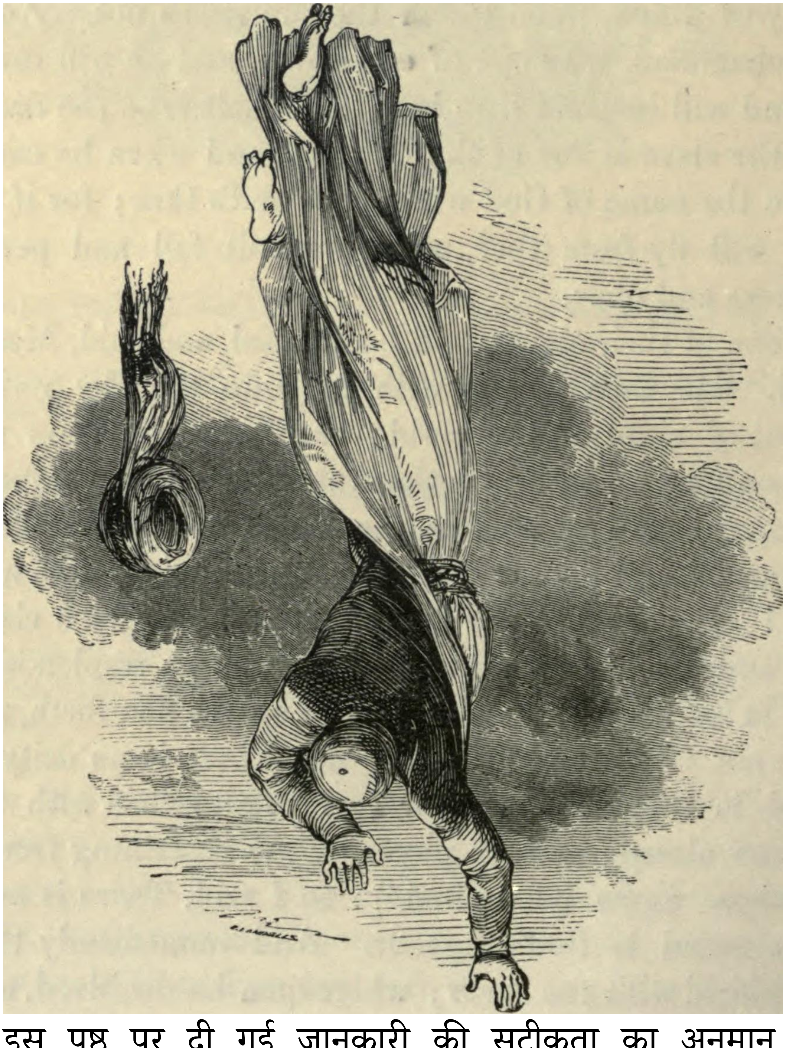

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.79%** है।

अबू मोहम्मद आलसी की कहानी। 377 महान हो!) ने उन्हें पत्थर में

बदल दिया था। मैंने उसका नज़ारा देखकर अपना मनोरंजन किया; और मैंने कहीं भी इतने अधिक वृक्ष और फल नहीं देखे जितने वहाँ थे। मैं वहाँ एक महीने तक रहा, जिसके बाद मैं एक नदी पर गया और उसके किनारे बैठ गया; और जब मैं बैठा था, तभी एक घुड़सवार आया और बोला, क्या तुम अबू मोहम्मद आलसी हो? मैंने उत्तर दिया, हाँ। और उसने कहा, डरो मत; क्योंकि तुम्हारे अच्छे आचरण के बारे में हमें पता चल गया है। तो मैंने उससे पूछा, तुम कौन हो? और उसने उत्तर दिया, मैं सर्प का भाई हूँ, और तुम उस युवती के पास हो जिससे तुम मिलना चाहते हो। फिर उसने अपने कपड़े उतार दिए, और मुझे पहनाकर मुझसे कहा, डरो मत; क्योंकि जो दास तुम्हारे नीचे मरा, वह हमारा ही दास था। इसके बाद घुड़सवार मुझे अपने पीछे बिठाकर एक रेगिस्तान में ले गया, जहाँ उसने मुझसे कहा, "मेरे पीछे से उतर जाओ और इन दो पहाड़ों के बीच से तब तक आगे बढ़ो जब तक तुम्हें पीतल का नगर न दिख जाए: फिर उससे कुछ दूरी पर रुक जाओ और तब तक उसमें प्रवेश मत करना जब तक मैं तुम्हारे पास वापस आकर तुम्हें निर्देश न दे दूँ कि तुम्हें क्या करना है।" मैंने उत्तर दिया, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।" मैं उसके पीछे से उतर गया और तब तक चलता रहा जब तक मैं नगर नहीं पहुँच गया, जहाँ मैंने देखा कि उसकी दीवार पीतल की थी; और मैं उसके चारों ओर घूमने लगा, यह उम्मीद करते हुए कि मुझे उसका कोई द्वार मिल जाएगा: लेकिन मुझे कोई द्वार नहीं मिला। और जब मैं उसके चारों ओर घूम रहा था, तभी अचानक सर्प का भाई मेरे पास आया और मुझे एक ताबीज़ वाली तलवार दी जिससे कोई मुझे देख नहीं सकता था। फिर वह अपने रास्ते चला गया; और उसके जाने के कुछ ही समय बाद चीखें सुनाई देने लगीं, और मैंने कई लोगों को देखा जिनकी आँखें उनकी छाती में थीं; और जब उन्होंने मुझे देखा, तो उन्होंने कहा, "तुम कौन हो, और तुम्हें इस जगह

किसने धकेला है?" अत: मैंने उन्हें घटना के बारे में बताया; और उन्होंने उत्तर दिया, “जिस युवती का तुमने उल्लेख किया है, वह इस नगर में मारिद के साथ है, और हम नहीं जानते कि उसने उसके साथ क्या किया है; और हम सर्प के भाई हैं।” फिर उन्होंने आगे कहा, “उस झरने के पास जाओ, देखो कि पानी किस मार्ग से प्रवेश करता है, और तुम उसे लेकर प्रवेश करो; क्योंकि वह तुम्हें नगर में ले जाएगा।” इसलिए मैंने वैसा ही किया। मैं पानी के साथ धरती के नीचे एक गुफा में प्रवेश कर गया, और वहाँ से उठकर मैंने स्वयं को नगर के बीचोंबीच पाया, और मैंने उस युवती को सोने के पलंग पर बैठे हुए पाया, जिसके ऊपर जकूज़ी का चंदवा था, और चंदवा के चारों ओर सोने के वृक्षों वाला एक बगीचा था, जिनके फल माणिक, क्राइसोलाइट, मोती और मूंगा जैसे बहुमूल्य रत्नों से बने थे। और जब युवती ने मुझे देखा, तो उसने मुझे पहचान लिया; और पहले मुझे प्रणाम करने के बाद उसने मुझसे कहा, “हे मेरे स्वामी, आपको यहाँ कौन लाया है?” अत: मैंने उसे घटी हुई घटनाओं के बारे में बताया। और उसने उत्तर दिया, जान लो कि यह शापित दुष्ट, ii. 3 c

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.44%** है।

378 (आलसी अफको-मोहम्मत की कहानी) मेरे प्रति अपने अत्यधिक स्नेह के कारण, उसने मुझे उन बातों से अवगत कराया है जो उसे हानि पहुँचाएँगी और जो उसे लाभ पहुँचाएँगी, और मुझे बताया है कि इस शहर में एक ताबीज है, जिससे यदि वह शहर में सभी को नष्ट करना चाहे, तो वह उन्हें नष्ट कर सकता है; और वह अपने अनुयायियों को जो भी करने का आदेश दे, वे उसका पालन करेंगे; और वह ताबीज एक स्तंभ पर है। — मैंने पूछा, वह स्तंभ कहाँ है? उसने उत्तर दिया, इस स्थान पर। — मैंने पूछा, वह ताबीज क्या है? उसने उत्तर दिया, यह एक चील की

आकृति है, और उस पर एक शिलालेख है जिसे मैं नहीं जानती। इसे लो, और अपने सामने रखो, और आग से भरा एक धूपदान लो, और उसमें थोड़ा सा कस्तूरी डालो, जिससे उसमें से धुआँ उठेगा जो इफ़्रीतों को आकर्षित करेगा। यदि तुम ऐसा करोगे, तो वे सब तुम्हारे सामने उपस्थित हो जाएँगे; उनमें से एक भी अनुपस्थित नहीं रहेगा; और वे तुम्हारी आज्ञा का पालन करेंगे, और जो कुछ तुम उन्हें करने का आदेश दोगे, वे वही करेंगे। इसलिए उठो और ऐसा करो, और ईश्वर (जिसका नाम महान है!) का आशीर्वाद इस कार्य पर बना रहे। — तो मैंने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। मैं उठा और उस खंभे के पास गया, और वह सब किया जो उसने मुझसे करने को कहा था, और इफ़्रीत आए और मेरे सामने उपस्थित हुए, उनमें से प्रत्येक ने कहा, हे मेरे स्वामी, हम आपकी सेवा में हैं! आप हमें जो भी करने का आदेश देंगे, हम उसे करेंगे। — इसलिए मैंने उनसे कहा, उस मिरिद को जंजीरों में बांध दो जो इस युवती को उसके घर से लाया है। और उन्होंने उत्तर दिया, हम सुनते हैं और आज्ञा मानते हैं। वे तुरंत उस मिरिद के पास गए, और उसे जंजीरों में बांध दिया, उसके बंधन कसकर बांध दिए; और मेरे पास लौटकर कहा, हमने वह किया है जो आपने हमें आदेश दिया था। और मैंने उन्हें लौटने का आदेश दिया। फिर मैं उस युवती के पास वापस गया, और उसे जो कुछ हुआ था, उससे अवगत कराकर कहा, हे मेरी पत्नी, क्या तुम मेरे साथ चलोगी? उसने उत्तर दिया, हाँ। और मैं उसके साथ उस भूमिगत गुफा से होकर गया जिससे मैं पहले गया था। प्रवेश किया; और हम तब तक चलते रहे जब तक हम उस दल के पास नहीं पहुँच गए जिसने मुझे उसके पास भेजा था; तब मैंने उनसे कहा, मुझे वह मार्ग बताएँ जो मुझे मेरे देश ले जाए। तदनुसार उन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया और मुझे समुद्र तट तक ले गए, और हमें एक जहाज पर बिठा दिया; और हवा अनुकूल थी, और

जहाज हमें तब तक ले गया जब तक हम अल-बसरा शहर नहीं पहुँच गए। और जब युवती अपने पिता के घर में दाखिल हुई, तो उसके परिवार ने उसे देखा, और उसके लौटने पर बहुत प्रसन्न हुए। तब मैंने चील को कस्तूरी से धुआँ दिया, और देखो, इफ्रीत हर तरफ से मेरे पास आए और कहने लगे, हम आपकी सेवा में हैं, और आप हमसे क्या करवाना चाहते हैं? और मैंने उन्हें पीतल के शहर में जो कुछ भी था, धन, खनिज और रत्न, सब कुछ अल-बसरा में स्थित मेरे घर ले जाने का आदेश दिया; और उन्होंने ऐसा ही किया। उसके बाद, मैंने उन्हें लाने का आदेश दिया

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.53%** है।

अबू-मोत्फ अम्माद आलसी की कहानी। 879 बंदर; और वे उसे दयनीय और घृणित अवस्था में लाए; तब मैंने उससे कहा, हे अभिशाप, तूने मेरे साथ विश्वासघात क्यों किया? और मैंने उन्हें उसे पीतल की बोतल में डालने का आदेश दिया। सो उन्होंने उसे पीतल की एक संकरी बोतल में डाला और उसे सीसे से बंद कर दिया। और मैं अपनी पत्नी के साथ आनंद और सुख में रहा। हे विश्वासियों के राजकुमार, अब मेरे पास अनमोल खजाने, असाधारण रत्न और प्रचुर धन है, जिसे संख्याओं में व्यक्त नहीं किया जा सकता, न ही सीमाओं में बांधा जा सकता है; और यदि तू धन या किसी अन्य चीज की कोई इच्छा करे, तो मैं जिन्न को उसे तुरंत लाने का आदेश दूंगा। यह सब मुझे ईश्वर की कृपा से प्राप्त हुआ है, जिसका नाम महान है! और विश्वासियों के राजकुमार इस कहानी पर अत्यंत आश्चर्यचकित हुए। उसने उसके उपहार के बदले में उसे शाही उपहार दिए और उसके साथ उचित व्यवहार किया।11

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.24%** है।

चौदहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। टिप्पणी 1. मेरा मानना है कि यह कहानी वही है जिसका शीर्षक ट्रेबुटियन द्वारा दिए गए वॉन हैमर की पांडुलिपि की विषयसूची में "अबूबेकर अलकोज़लान" है; उपनाम, या निकनेम, जिसे मैंने "आलसी" के रूप में अनुवादित किया है, मूल रूप से "एलकेसलान" है। टिप्पणी 2. काहिरा और ब्रेस्लाउ के दो संस्करणों में भी यही है; लेकिन सफेद पन्ना क्या होता है, यह मुझे नहीं पता। शायद जिस शब्द का मैंने "सफेद" अनुवाद किया है, उसका अर्थ यहाँ "चमकीला" हो।

टिप्पणियाँ। यहाँ उल्लिखित प्राचीरें (मूल में, "शरारेफ," "शुर्राफेह" का बहुवचन) सामान्यतः केवल सजावटी होती हैं, और विभिन्न इमारतों में विभिन्न रूपों में पाई जाती हैं। टिप्पणी 4. अरब काउपर आमतौर पर एक नाई होता है, और स्नानघर में रक्तस्राव की तुलना में शेविंग अधिक सामान्य क्रिया है। टिप्पणियाँ। "ज़ुनूज," जिन्हें "ज़िंज" और "ज़ेनज" भी कहा जाता है, वास्तव में एक इथियोपियाई राष्ट्र हैं, जो उस देश के निवासी हैं जिसे हम आम तौर पर "ज़ंगुएबार" कहते हैं। टिप्पणी 6. "संपत्ति" शब्द से हमारा तात्पर्य मकान आदि से है, क्योंकि इस शब्द का सामान्य अर्थ यही है। "राबा" शब्द का प्रयोग आमतौर पर दुकानों या गोदामों के ऊपर बने आवास कक्षों के समूह के लिए किया जाता है। टिप्पणी 7. "शरीफ़" (जिसका अर्थ है "कुलीन") और "सैयद" या "सैय्यिद" ("स्वामी") पैगंबर के किसी भी वंशज को दी जाने वाली उपाधियाँ हैं, चाहे उनका सामाजिक स्तर कितना भी नीचा क्यों न हो। इस जाति के पुरुष और महिलाएं अक्सर अन्य जातियों के लोगों से विवाह करते हैं; और चूंकि शरीफ़ की उपाधि पिता या माता दोनों से विरासत में मिलती है, इसलिए इस उपाधि को प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की संख्या काफी अधिक हो गई है। पुरुषों को हरी पगड़ी पहनने का विशेषाधिकार प्राप्त है; लेकिन सभी ऐसा नहीं करते। कई महिलाएं हरे रंग का नकाब पहनती हैं। टिप्पणी 8. ऐसा कहा जाता है कि एक धनी व्यक्ति ने अपने साथ बैठे मित्रों को बताया कि चूहों ने उसका लोहे का बर्तन खा लिया है, और उन्होंने उसकी बात को सत्य मान लिया: फिर एक गरीब व्यक्ति ने उन्हें बताया कि चूहों ने उसकी लाठी खा ली है, और उन्होंने उसकी बात को असत्य घोषित कर दिया। तो उसने उनसे कहा, “तुम मेरी इस बात को क्यों नहीं मानते कि चूहे ने ताड़ की लकड़ी खाई, जबकि तुम मानते हो कि उसने लोहे की लकड़ी खाई थी?” (मेरे द्वारा हाशिये पर टिप्पणी)

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.85%** है।

अध्याय चौदहवें के लिए टिप्पणियाँ। 381 टिप्पणी 9. इस विवरण से स्पष्ट रूप से एल-क्लीद्र का तात्पर्य है। प्रस्तावना के नोट 2 देखें (खंड 1, पृष्ठ 20) [इस नोट से ठीक पहले उल्लिखित पीतल के शहर को इस अनुवाद के अध्याय 21 में वर्णित उसी नाम के शहर से भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। उस अध्याय के नोट 1 देखें।— संपादक जे नोट 10. "हेनाद" मेरा मानना है कि एक काल्पनिक नाम है, क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि यह शहर जिन्नों के क्षेत्र के निकट था। नोट 11. यहाँ आगे दिए गए तीन किस्से आलसी अबू-मुलुमानद की कहानी के बाद आते हैं और तीन सौ आठवीं रात के एक भाग के साथ समाप्त होते हैं। खालिद अल-बरमेकी के पुत्र याह्या का किस्सा। ऐसा कहा जाता है कि हारून-एर-रशीद ने बरमेकियों के विरुद्ध जाने से पहले अपने एक अंगरक्षक, सालेह को बुलाया, और जब वह उनके सामने आया तो उन्होंने उससे कहा, हे सालेह, मंसूर के पास जाओ और उससे कहो, तू तुम पर दस लाख चांदी के सिक्के बकाया हैं, और हम चाहते हैं कि तुम यह रकम तुरंत हमें लौटा दो। मैं तुम्हें यह भी आदेश देता हूँ, ऐ सालेह, कि अगर यह रकम तुम्हें सूर्यास्त से पहले तुरंत न दी जाए, तो तुम उसका सिर धड़ से अलग करके मेरे पास ले आओ। — इस पर सालेह ने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। वह मंसूर के पास गया और उसे बताया कि अमीरुल

मोमिनीन ने क्या कहा था; इस पर मंसूर चिल्लाया, अल्लाह की कसम, मैं मर जाऊँगा; क्योंकि मेरी सारी संपत्ति और मेरे हाथ में जो कुछ भी है, अगर उसे उसकी उच्चतम कीमत पर बेचा जाए, तो भी एक लाख से अधिक नहीं होगा: तो फिर, ऐ सालेह, मैं शेष नौ लाख चांदी के सिक्के कैसे जुटाऊँगा? इसलिए सालेह ने उससे कहा, अपने लिए कोई ऐसी तरकीब सोचो जिससे तुम जल्दी से खुद को बचा सको, वरना तुम मर जाओगे; क्योंकि मैं तुम्हें खलीफा द्वारा निर्धारित समय के बाद एक पल की भी देरी नहीं दे सकता, और न ही मैं किसी भी बात में चूक कर सकता हूँ। जो कुछ अमीरुल मोमिनीन ने मुझे करने का आदेश दिया है, उसे करने में जल्दी करो। समय समाप्त होने से पहले अपनी जान बचाने के लिए कोई तरकीब अपनाओ। मंसूर ने उत्तर दिया, "हे सालेह, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि मुझे मेरे घर ले चलो, ताकि मैं अपने बच्चों और परिवार को विदाई दे सकूँ और अपने रिश्तेदारों को निर्देश दे सकूँ।" सालेह ने कहा, "तदनुसार, मैं उसके साथ उसके घर गया, और उसने अपने परिवार से विदा लेना शुरू कर दिया; तभी उसके घर में शोर मच गया, लोग रोने-धोने लगे और अल्लाह से मदद की गुहार लगाने लगे, जिसका नाम महान है!" तब सालेह ने उससे कहा, "मेरे मन में यह विचार आया है कि अल्लाह बरमकियों के माध्यम से तुम्हारी मदद करे: इसलिए हमारे साथ खालिद के पुत्र याह्या के घर चलो।" और जब वे खालिद के पुत्र याह्या के पास पहुँचे, तो उसने उसे अपनी स्थिति बताई; यह सुनकर याह्या दुखी हुआ और कुछ देर के लिए अपना सिर ज़मीन की ओर झुका लिया; उसने अपना सिर उठाया और अपने कोषाध्यक्ष को बुलाकर उससे पूछा, कैसे?

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.46%** है।

अध्याय चौदह के लिए 382 टिप्पणियाँ। हमारे खजाने में कितना धन है? उसने उत्तर दिया, पाँच हज़ार चाँदी के सिक्के। और याह्या ने उसे लाने का आदेश दिया। फिर उसने अपने बेटे एलफदल के पास एक दूत भेजा, जिसके साथ एक पत्र था, जिसका अर्थ था, "मुझे कुछ बहुमूल्य संपत्तियाँ बिक्री के लिए पेश की गई हैं, जो कभी नष्ट नहीं होंगी; इसलिए हमें कुछ धन भेजें।" और उसने उसे दस लाख चाँदी के सिक्के भेजे। फिर उसने अपने बेटे जाफ़र के पास एक और आदमी भेजा, जिसके साथ एक पत्र था, जिसका अर्थ यह था: "हमें एक महत्वपूर्ण कार्य निपटाना है, और इसके लिए हमें कुछ धन की आवश्यकता है।" और जाफ़र ने उसे तुरंत दस लाख चाँदी के सिक्के भेजे। और याह्या बरमकियों के पास दूत भेजता रहा, जब तक कि उसने मंसूर के लिए उनसे एक बड़ी रकम एकत्र नहीं कर ली। इस बीच, सालेह और मंसूर को इस कार्यवाही की जानकारी नहीं थी; और मंसूर ने याह्या से कहा, "हे मेरे स्वामी, मैंने आपका आँचल पकड़ लिया है, और मैं यह धन केवल आपसे ही प्राप्त कर सकता हूँ, आपकी सामान्य उदारता के अनुरूप: तो मेरे शेष ऋण को पूरा करें, और मुझे अपना मुक्त दास बना लें।" याह्या ने अपना सिर झुकाया और रोते हुए कहा, “हे सेवक, मोमिनों के सरदार ने हमारी दासी डेननीर को एक

बहुमूल्य रत्न भेंट किया है। तुम उसके पास जाओ और उससे कहो कि वह यह रत्न हमें भेज दे।" — तो सेवक गया और उसे ले आया; और उसने कहा, "हे मंसूर, मैंने यह रत्न मोमिनों के सरदार के लिए व्यापारियों से दो लाख सोने के सिक्कों में खरीदा है, और मोमिनों के सरदार ने इसे हमारी दासी डेननीर, जो वीणा बजाती है, को भेंट किया है; और जब वह इसे तुम्हारे पास देखेगा, तो वह इसे पहचान लेगा, और तुम्हारा सम्मान करेगा, और हमारे सम्मान में तुम्हारी जान बख्श देगा; और हे मंसूर, तुम्हारा धन अब पूरा हो गया है।" सिलेह कहते हैं, "तो मैं धन और रत्न लेकर एर-रशीद के पास गया, मंसूर को अपने साथ लेकर; लेकिन रास्ते में मैंने उसे यह आयत दोहराते हुए सुना, इसे अपने मामले पर लागू करते हुए: "मेरे पैर प्रेम से नहीं गए थे।" उनकी ओर नहीं; बल्कि इसलिए कि मुझे तीरों से घायल होने का डर था। और मैं उसके स्वभाव की दुष्टता, उसकी अयोग्यता और दुराचार, और उसके जन्म और उत्पत्ति की नीचता पर आश्चर्यचकित था; और मैंने उसे जवाब दिया, पृथ्वी पर बरमकियों से बेहतर कोई नहीं है, और न ही तुमसे अधिक नीच या दुष्ट कोई है; क्योंकि उन्होंने तुम्हें मृत्यु से बचाया, और तुम्हें विनाश से बचाया, तुम्हें मुक्ति के साधन प्रदान किए, और तुमने न तो उनका धन्यवाद किया, न उनकी प्रशंसा की, और न ही भोले-भाले लोगों की तरह व्यवहार किया; बल्कि तुमने उनकी दया का प्रतिफल इन शब्दों से दिया। — फिर मैं एर-रशीद के पास गया, और उसे पूरी कहानी सुनाई, और उसे सब कुछ बताया जो हुआ था; और एर-रशीद याह्या की उदारता, उसकी दानशीलता और दयालु स्वभाव पर, और उसकी नीचता पर आश्चर्यचकित था। सालेह ने मंसूर को वापस कर दिया और आदेश दिया कि वह रत्न खालिद के पुत्र याह्या को लौटा दिया जाए, यह कहते हुए कि जो कुछ भी हम उसे देते हैं, उसे वापस लेना उचित नहीं है। सालेह खालिद के पुत्र याह्या के पास लौटा

और उसे मंसूर की कहानी सुनाई, और उसके बुरे आचरण से अवगत कराया। लेकिन याह्या ने उत्तर दिया, "हे सालेह, जब कोई व्यक्ति जरूरतमंद हो, संकुचित हृदय और व्याकुल मन से, तो उससे जो कुछ भी निकले, उसके लिए उसे दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए; क्योंकि वह उसके हृदय से नहीं आता।" और उसने मंसूर के लिए क्षमा याचना की। इस पर सालेह रो पड़ा और बोला, "समय के चक्र कभी भी तुम्हारे जैसे व्यक्ति को अस्तित्व में नहीं ला सकते। हाय, फिर यह कैसे हो सकता है कि तुम्हारे जैसे स्वभाव और उदारता से संपन्न व्यक्ति को धरती में दफना दिया जाए!" और उसने ये छंद पढ़े: "किसी भी नेक इरादे को पूरा करने में शीघ्रता करो; क्योंकि यह हमेशा संभव नहीं है कि उदारता को पूरा किया जा सके।" अभ्यास किया। कितने ही लोग, सक्षम होते हुए भी, गरीबी के कारण उदारता का कार्य करने से खुद को रोकते रहे! 2 इससे उस धन्यवाद और प्रशंसा का संकेत मिलता है जो उसे प्राप्त होती, और जो कभी समाप्त नहीं होती। (मेरे शेख द्वारा हाशिये पर टिप्पणी) * मंसूर के ऋण की राशि के कम से कम चार गुना के बराबर।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.69%** है।

खालिद अल-बरनेकी के पुत्र याह्या का एक और किस्सा। यह भी बताया जाता है कि खालिद के पुत्र याह्या और मलिक अल-खुज़ाई के पुत्र अब्दुल्ला के बीच गुप्त शत्रुता थी, जिसे दोनों में से किसी ने भी प्रकट नहीं किया; 5 और इस शत्रुता का कारण यह था कि मोमिनों के सरदार हारून एर-रशीद, मलिक के पुत्र अब्दुल्ला से इतना प्रेम करते थे कि खालिद के पुत्र याह्या और उनके पुत्रों ने कहा कि अब्दुल्ला ने मोमिनों के सरदार पर जादू कर दिया है। इस प्रकार वे लंबे समय तक अपने दिलों में घृणा लिए रहे। और ऐसा हुआ कि एर-बशीद ने इरमीनीयेह 6 का शासन

मलिक अल-खुज़ाई के पुत्र अब्दुल्ला को सौंप दिया और उन्हें वहाँ भेज दिया। जब उसने सत्ता पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया, तो अल-एराक के निवासियों में से एक व्यक्ति, जो अत्यंत सुसंस्कृत, बुद्धिमान और तीक्ष्ण बुद्धि वाला था, उसके पास आया; परन्तु उसकी आर्थिक स्थिति खराब हो गई थी, उसका धन समाप्त हो गया था और उसकी समृद्धि छिन गई थी। इसलिए उसने खालिद के पुत्र याह्या के नाम से मलिक के पुत्र अब्दुल्ला को एक पत्र लिखा और इरमीनीयेह में उसके पास गया। उसके द्वार पर पहुँचकर उसने पत्र अपने एक दरबारी को सौंप दिया, जिसने पत्र लेकर मलिक अल-खुज़ाई के पुत्र अब्दुल्ला को दे दिया। उसने पत्र खोलकर पढ़ा और उसे पढ़कर समझ गया कि वह जाली है। इसलिए उसने उस व्यक्ति को लाने का आदेश दिया; और जब वह उसके समक्ष उपस्थित हुआ, तो उसने उसके लिए प्रार्थना की और उसकी तथा अपने दरबार के सदस्यों की प्रशंसा की। और मलिक के पुत्र अब्दुल्ला ने उससे कहा, "तुम्हें इतनी लंबी मेहनत करने और मेरे पास जाली पत्र लेकर आने के लिए किसने प्रेरित किया? लेकिन अच्छे बनो।" 5 ब्रेस्लाउ संस्करण में, यह किस्सा कुछ अलग तरह से बताया गया है: वहाँ कहा गया है कि यह जातर अलबरमेकी (याह्या के पुत्र) और मिस्र के एक गवर्नर के बीच दुश्मनी पर आधारित था। कुछ अरब इतिहासकारों की रचनाओं में भी ऐसा ही है: उदाहरण के लिए, डी सैसी की क्रेस्टोमैथी अराबे, खंड 1, अरबी पाठ के पृष्ठ 26, द्वितीय संस्करण में फखर-ए-दीन देखें। इस नाम से या तो पूरे आर्मेनिया या उसके एक भाग को समझा जा सकता है।

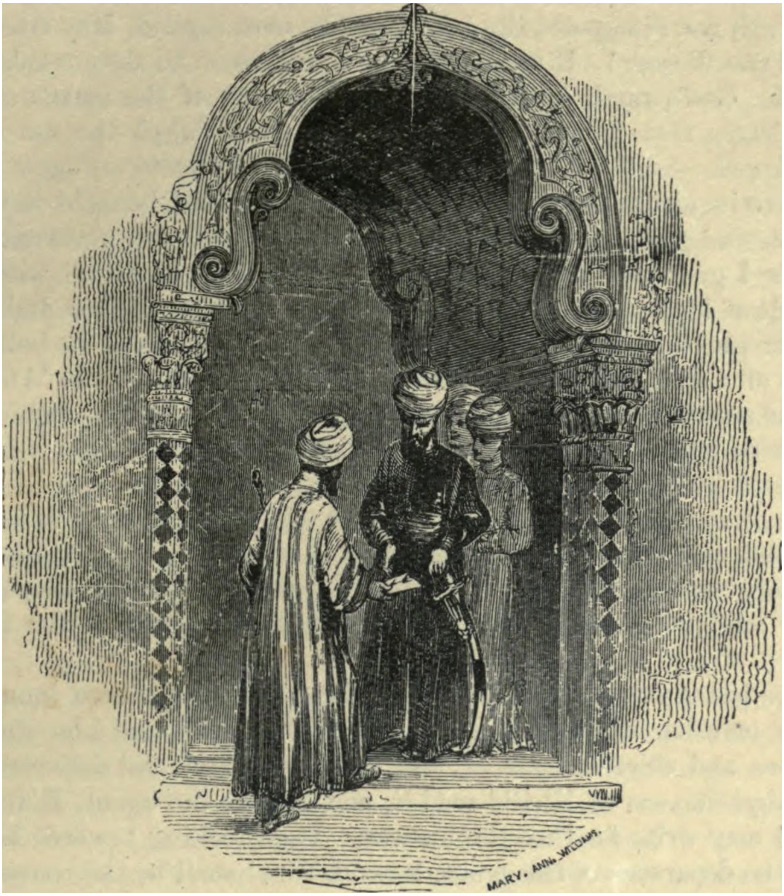

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.43%** है।

अध्याय चौदह के लिए 381 टिप्पणियाँ। हृदय; क्योंकि हम तुम्हारे परिश्रम को व्यर्थ नहीं जाने देंगे। — उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, ईश्वर हमारे प्रभु वज़ीर की आयु लंबी करे! यदि मेरा आना तुम्हारे लिए कष्टदायी हो, तो मुझे रोकने के लिए कोई बहाना मत बनाओ; क्योंकि ईश्वर की धरती विशाल है, और जीविका प्रदान करने वाला विद्यमान है: जो पत्र मैं खालिद के पुत्र याह्या से तुम्हारे लिए लाया हूँ, वह असली है, जाली नहीं। — तब अब्दुल्ला ने कहा, मैं बगदाद में अपने दूत को एक पत्र लिखूंगा, और उसे

आदेश दूंगा कि वह उस पत्र के बारे में पूछताछ करे जो तुम मेरे लिए लाए हो; और यदि यह पत्र सच्चा और प्रामाणिक सिद्ध हो, जाली न हो, तो मैं तुम्हें अपने किसी जिले का शासन सौंप दूँगा, या मैं तुम्हें दो लाख चाँदी के सिक्के, घोड़े और उच्च मूल्य के उत्तम ऊँट दूँगा, और यदि तुम कोई उपहार चाहो तो एक मानद उपहार भी दूँगा। परन्तु यदि पत्र जाली सिद्ध हो, तो मैं आदेश देता हूँ कि तुम्हें लाठी से दो सौ कोड़े मारे जाएँ और तुम्हारी दाढ़ी मुंडवा दी जाए। — फिर अब्दुल्ला ने आदेश दिया कि उसे एक कमरे में ले जाया जाए; और जो कुछ वह चाहता है, उसे वहाँ तब तक रखा जाए जब तक कि वह अपने मामले का पता न लगा ले। इसके बाद, उसने बगदाद में अपने प्रतिनिधि को एक पत्र लिखा, जिसका सार इस प्रकार था: — मेरे पास एक व्यक्ति एक पत्र लेकर आया है, जिसके बारे में वह दावा करता है कि यह खालिद के पुत्र याह्या की ओर से है, और मुझे इस पत्र पर संदेह है। इसलिए यह आवश्यक है कि तुम इस मामले को नज़रअंदाज़ न करो; लेकिन तुम स्वयं जाकर इस पत्र की सच्चाई का पता लगाओ और मुझे शीघ्र उत्तर भेजो, ताकि हम मामले की सत्यता या असत्यता जान सकें। जब पत्र बगदाद में उसके पास पहुँचा, तो वह तुरंत घोड़े पर सवार होकर खालिद के पुत्र याह्या के महल में गया। उसने याह्या को अपने शुभ मित्रों और प्रमुख सेवकों के साथ बैठे हुए पाया, और उसने उन्हें प्रणाम किया और पत्र सौंप दिया; खालिद के पुत्र याह्या ने पत्र पढ़ा और दूत से कहा, कल मेरे पास लौट आना, ताकि मैं तुम्हारे लिए उत्तर लिख सकूँ। फिर दूत के जाने के बाद अपने शुभ मित्रों की ओर देखते हुए उसने कहा, जो मेरे नाम से जाली पत्र लेकर मेरे शत्रु के पास जाता है, उसे क्या दंड दिया जाएगा? और सभी शुभ मित्रों ने अपनी-अपनी राय दी और प्रत्येक ने किसी न किसी प्रकार के दंड का सुझाव दिया। लेकिन याह्या ने उनसे कहा, "तुमने जो प्रस्ताव रखा है,

उसमें तुम भटक गए हो, और यह सलाह जो तुमने दी है, वह तुम्हारे नीच और घृणित मन से उपजी है। तुम सब जानते हो कि अब्दुल्ला को अमीरुल मोमिनीन का कितना प्रिय है, और तुम यह भी जानते हो कि मेरे और उसके बीच कितनी गहरी दुश्मनी और द्वेष है। अब अल्लाह (जिसका नाम महान हो!) ने इस व्यक्ति को हमारे बीच सुलह कराने का माध्यम बनाया है, और उसे इस उद्देश्य के लिए योग्य बनाया है, और उसे हमारे दिलों में बीस वर्षों से बढ़ती नफरत की आग को बुझाने के लिए नियुक्त किया है; और उसके हस्तक्षेप से हमारे मामले शांतिपूर्ण ढंग से सुलझ जाएंगे। मेरा कर्तव्य है कि मैं इस व्यक्ति की राय की जाँच करके और उसकी परिस्थितियों में सुधार करके उसे संतुष्ट करूँ; और मैं उसके लिए अब्दुल्ला, मलिक अल-क्लम्ज़ाई के पुत्र को एक पत्र लिखूँगा, जिसमें यह कहा जाएगा कि वह उसका और अधिक सम्मान करे, और उसे ऊँचा और आदर देना जारी रखे।" और जब उसके शुभचिंतकों ने यह सुना, तो उन्होंने उस पर आशीर्वाद बरसाया और उसकी उदारता और दयालुता की प्रचुरता पर आश्चर्य व्यक्त किया। तब उसने कागज और स्याही माँगी और अब्दुल्ला, मलिक के पुत्र को अपने हाथ से निम्नलिखित आशय का एक पत्र लिखा: - अल्लाह के नाम पर, जो अत्यंत दयालु और कृपालु है। तुम्हारा पत्र पहुँच गया है: अल्लाह तुम्हारी आयु दीर्घ करे! मैंने इसे पढ़ा और तुम्हारी सुरक्षा पर प्रसन्न हुआ और तुम्हारे कुशल-मंगल और समृद्धि की खबर सुनकर प्रसन्न हुआ। अब तुमने सोचा होगा कि उस भोले-भाले व्यक्ति ने मेरे नाम से पत्र जाली बनाया है और मेरे नाम से पत्र नहीं लाया है: परन्तु ऐसा नहीं था; क्योंकि पत्र मैंने स्वयं लिखा था और वह जाली नहीं था; और मुझे आशा है कि आपकी उदारता, दयालुता और उत्कृष्ट स्वभाव के कारण आप उस सरल और उदार व्यक्ति की आशा और इच्छा को पूरा करेंगे, उसे वह सम्मान देंगे जिसका वह हकदार है, उसकी इच्छा

पूरी करवाएंगे और उसे अपनी अपार कृपा और अनुग्रह का विशेष पात्र बनाएंगे; और आप उसके लिए जो कुछ भी करेंगे, मैं स्वयं को उसका पात्र मानूंगा और आपका आभारी रहूंगा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.39%** है।

चौदहवें पत्र के लिए। 585 फिर उसने पत्र को निर्देशित किया, उस पर मुहर लगाई और उसे अपने दूत को सौंप दिया। दूत ने उसे अब्दुल्ला के पास भेजा, जिसने उसे पढ़कर उसकी सामग्री से प्रसन्न हुआ और उस व्यक्ति को अपने पास बुलवाकर उससे कहा, "मैंने तुम्हें जो दो चीजें देने का वादा किया है, उनमें से जो तुम्हें अधिक पसंद आएगी, वह मैं तुम्हें भेंट करूँगा।" उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "उपहार मुझे किसी भी अन्य चीज से अधिक पसंद आएगा।" तदनुसार, अब्दुल्ला ने उसे दो लाख चांदी के सिक्के, दस अरबी घोड़े (जिनमें से पाँच रेशम के आवरण से ढके हों और पाँच रत्नजड़ित काठी से ढके हों, जैसे राजकीय जुलूसों में उपयोग किए जाते हैं), बीस वस्त्रों के संदूक, दस घुड़सवार (मेमलुक) और उचित कीमती आभूषण भेंट करने का आदेश दिया। फिर उसने उसे एक सम्मान का वस्त्र प्रदान किया और उसे भव्य रूप से सुसज्जित करके बगदाद भेज दिया। जब वह बगदाद पहुँचा, तो अपने परिवार के पास जाने से पहले वह खालिद के पुत्र याह्या के महल के द्वार पर गया और उससे अंदर जाने की अनुमति माँगी। दरबारी याह्या के पास गया और उससे कहा, “हे हमारे स्वामी, हमारे द्वार पर एक सुशोभित, सुंदर और स्वस्थ पुरुष अपने कई सेवकों के साथ आया है, जो आपसे मिलना चाहता है।” याह्या ने उसे अंदर जाने की अनुमति दे दी; और जब वह अंदर आया, तो उसने उनके सामने ज़मीन चूमी, और याह्या ने उससे पूछा, “तुम कौन हो?” उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, “हे स्वामी, मैं वही हूँ जिसे भाग्य के अत्याचार ने

मार डाला था, और आपने मुझे विपत्तियों की कब्र से जीवनदान दिया है और मुझे इच्छाओं के स्वर्ग में पहुँचाया है। मैं वही हूँ जिसने आपके नाम से एक पत्र लिखा और उसे मलिक अल-खुज़ाई के पुत्र अब्दुल्ला को पहुँचाया।” याह्या ने पूछा, “उसने तुम्हारे साथ क्या किया है और तुम्हें क्या दिया है?” उसने उत्तर दिया, “उसने मुझे तुम्हारी उदारता और दयालुता से प्राप्त लाभ, तुम्हारी व्यापक कृपा और उदारता, तुम्हारी महानता और अपार दानशीलता से भरपूर उपहार दिए हैं, जिससे मैं समृद्ध हुआ हूँ, उसने मुझे विशेष उपकार से सम्मानित किया है और मुझे भेंटें दी हैं; और मैं उसके सभी उपहार और भेंटें ले आया हूँ; वे द्वार पर हैं, और मामला तुम्हारे समक्ष प्रस्तुत है, तुम इस पर जैसा चाहो निर्णय लो।” इस पर याह्या ने उत्तर दिया, “जो कार्य तुमने मेरे लिए किया है वह उससे श्रेष्ठ है जो मैंने तुम्हारे लिए किया है, और तुम मेरी ओर से प्रचुर धन्यवाद और बड़ी कृपा के पात्र हो, क्योंकि तुमने मेरे और उस परम आदरणीय व्यक्ति के बीच की शत्रुता को सच्ची मित्रता और स्नेह में बदल दिया है।” इसलिए मैं तुम्हें वही दूंगा जो अब्दुल्लाह, मलिक के पुत्र ने तुम्हें दिया है। — फिर उसने आदेश दिया कि उसे धन, घोड़े और कपड़ों के बक्से भेंट किए जाएं, जैसे अब्दुल्लाह ने उसे दिए थे; और इस प्रकार उन दो उदार पुरुषों की कृपा से उस व्यक्ति की मूल समृद्धि उसे वापस मिल गई। II.

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.67%** है।

अध्याय चौदहवें के लिए 38जी टिप्पणियाँ। अल-मामून और एक विद्वान का किस्सा। कहा जाता है कि अल-अहबास के वंशज खलीफ़ियों में अल-मामून से अधिक ज्ञानवान कोई नहीं था। सप्ताह में दो दिन वे विद्वानों की चर्चाओं की अध्यक्षता करते थे; और धर्म और विधि के प्रोफेसर, और विद्वान धर्मशास्त्री, जिनके द्वारा चर्चाएँ संचालित की जाती थीं, अपने-अपने पद और ओहदे के अनुसार उनकी उपस्थिति में बैठते थे। एक बार जब वे उनके साथ बैठे थे, तो उनकी सभा में एक अजनबी आया, जो सफेद, फटे-पुराने वस्त्र पहने हुए था, और वह प्रोफेसरों के पीछे, एक सुनसान जगह पर, नीचे की ओर बैठ गया। और जब उन्होंने चर्चा शुरू की और विभिन्न प्रस्तावों पर विचार करने लगे, - यह उनकी प्रथा थी कि वे एक-एक करके सभा के सदस्यों के समक्ष प्रस्ताव रखते थे, और जो भी दूसरों द्वारा दिए गए प्रस्ताव में कोई अनोखी बात जोड़ सकता था, या कोई असाधारण, हास्यपूर्ण कथन कह सकता था, तो उसका उल्लेख किया जाता था - प्रश्न बारी-बारी से उनसे पूछा गया, जब तक कि वह उस अजनबी के पास नहीं आया; जिस पर उसने सभी प्रोफेसरों के उत्तरों से बेहतर उत्तर दिया; और खलीफा ने इसे स्वीकार किया और आदेश दिया कि उसे उसके पद से उठाकर उच्च पद पर बिठाया जाए। फिर, जब दूसरा प्रश्न उसके पास आया, तो उसने पहले से भी बेहतर उत्तर दिया; और अल-मामून ने आदेश दिया कि उसे और भी उच्च पद पर बिठाया जाए। और जब तीसरा प्रश्न पूछा गया, तो उसने पहले दो उत्तरों से भी बेहतर और अधिक न्यायसंगत उत्तर दिया; जिस पर अल-मामून ने आदेश दिया कि उसे अपने पास बैठाया जाए। और चर्चा समाप्त होने के बाद, सेवकों ने पानी लाया, और मेहमानों ने अपने हाथ धोए; फिर भोजन लाया

गया, और उन्होंने खाया। तब प्रोफेसर उठे और चले गए; लेकिन अल-मामून ने उस अजनबी को अपने साथ जाने से रोक दिया: उन्होंने उसे अपने पास बुलाया और शिष्टाचारपूर्वक उसका स्वागत करते हुए उस पर कृपा और उपकार करने का वादा किया। इसके बाद, शराब की दावत तैयार की गई, सभी करीबी दोस्त आए और शराब बांटी गई; लेकिन जब उस आदमी की बारी आई, तो वह खड़ा हो गया और बोला, "अगर मोमिनों का सरदार मुझे इजाज़त दे, तो मैं एक शब्द बोलूंगा।" अल-मामून ने उत्तर दिया, "जो चाहो कहो।" और उन्होंने कहा, “सर्वोत्तम विवेक के स्वामी (जिनकी श्रेष्ठता ईश्वर बढ़ाए!) जानते हैं कि आज इस महान सभा में वह दास लोगों में गुमनाम और साथियों में नीच था, और धनियों के राजकुमार ने उसे अपने समान स्थान पर बिठाया है, भले ही उसने जो बुद्धि प्रदर्शित की है वह तुच्छ है, और उसे दूसरों से ऊँचा दर्जा दिया है, जिससे उसने वह लक्ष्य प्राप्त कर लिया है जिसकी उसकी महत्वाकांक्षा नहीं थी; और अब वह उससे उस थोड़ी सी बुद्धि को छीनना चाहते हैं जिसने उसे उसकी नीचता के बाद ऊँचा उठाया और उसकी दरिद्रता के बाद उसे समृद्ध बनाया। परन्तु ईश्वर ऐसा न होने दे, और किसी भी प्रकार से ऐसा न होने दे, कि धनियों का राजकुमार उसकी थोड़ी सी बुद्धि, प्रसिद्धि और श्रेष्ठता से ईर्ष्या करे।” क्योंकि यदि दास शराब पीता है, तो बुद्धि उससे दूर हो जाएगी और अज्ञान उसके निकट आ जाएगा, वह अपनी शिष्टता खो देगा और अपने पूर्व के तुच्छ स्थान पर लौट आएगा, और मनुष्यों की दृष्टि में तुच्छ और गुमनाम हो जाएगा। इसलिए मुझे आशा है कि उत्कृष्ट विवेक, उदारता, राजसी गुणों और उत्तम स्वभाव वाला स्वामी उसे इस अनमोल रत्न से वंचित नहीं करेगा। — और जब खलीफा अल-मामून ने उससे ये शब्द सुने, तो उन्होंने उसकी प्रशंसा की और उसे धन्यवाद दिया, उसे फिर से अपने स्थान पर बैठाया और

आदरपूर्वक व्यवहार किया, उसे एक लाख चांदी के सिक्के भेंट करने और घोड़े पर सवार करने का आदेश दिया, और उसे शानदार वस्त्र दिए। और प्रत्येक सभा में उन्होंने उसे सभी प्रोफेसरों से ऊपर उठाया और उसका पक्ष लिया, जिससे वह पद और प्रतिष्ठा में उनमें सर्वोच्च हो गया। — और ईश्वर सर्वज्ञ है। इसी प्रकार का एक किस्सा खंड 1 के पृष्ठ 196 पर मिलता है। — संपादक।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.68%** है।

अध्याय पंद्रह। तीन सौ अट्ठाईसवीं रात के एक भाग से शुरू होकर तीन सौ सत्ताईसवीं रात के एक भाग पर समाप्त। अली शेर और ज़ुमुरुद की कहानी। प्राचीन काल में, खुरासान देश में मेजद-ए-दीन नाम का एक व्यापारी रहता था। उसके पास अपार धन-दौलत, काले दास, नौकर और सेवक थे। वह साठ वर्ष का हो चुका था और उसे कोई पुत्र प्राप्ति नहीं हुई थी। इसके बाद, ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) ने उसे पुत्र का आशीर्वाद दिया और उसका नाम अली शेर रखा।

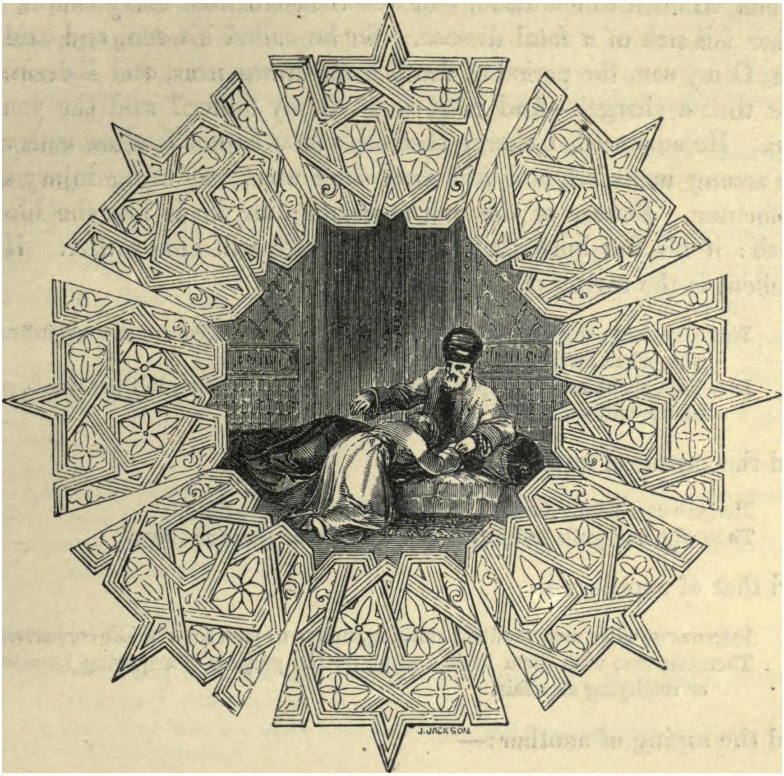

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.26%** है।

388 अली शेली और ज़ुमुकुद की कहानी। जब यह लड़का बड़ा हुआ, तो वह पूर्णिमा के चंद्रमा के समान हो गया; और जब वह जवान हो गया और हर तरह से आकर्षक हो गया, तो उसके पिता एक जानलेवा बीमारी से बीमार पड़ गए। इसलिए उन्होंने अपने बेटे को बुलाया और उससे कहा, "हे मेरे बेटे, मृत्यु का समय निकट आ गया है, और मैं तुझे एक आज्ञा देना चाहता हूँ।" - "क्या है, हे मेरे पिता?" युवक ने पूछा। उसने उत्तर दिया, "मैं तुझे आज्ञा देता हूँ कि तू किसी भी मनुष्य से घनिष्ठ संबंध न रखे, और जो भी हानि और दुर्भाग्य ला सकता है, उससे दूर रहे। बुरे संगति से सावधान रहना; क्योंकि वह लोहार के समान है: यदि उसकी आग तुझे न जलाए,

तो उसका धुआँ तुझे परेशान करेगा।" कवि का कथन कितना उत्कृष्ट है! - "तेरे समय में कोई ऐसा नहीं है जिसकी मित्रता तू चाहे; और न ही कोई ऐसा घनिष्ठ मित्र है जो भाग्य के विश्वासघात के समय वफादार रहेगा।" इसलिए अलग रहो, और किसी पर भरोसा मत करो: मैंने तुम्हें इन शब्दों में अच्छी और पर्याप्त सलाह दी है।4 और दूसरे का कथन: — मनुष्य एक छिपी हुई बीमारी के समान हैं: इसलिए उन पर भरोसा मत करो। यदि तुम उनकी जांच करोगे तो तुम्हें उनमें छल और कपट मिलेगा। और दूसरे का कथन: — मनुष्यों के साथ मेलजोल से कुछ लाभ नहीं होता, सिवाय व्यर्थ की बातचीत में समय बिताने के। इसलिए उनसे कम ही बात करो, सिवाय ज्ञान प्राप्त करने या किसी मामले को सुलझाने के उद्देश्य से। और दूसरे का कथन: — यदि किसी बुद्धिमान व्यक्ति ने मनुष्य को परखा है, तो मैंने उन्हें तब खा लिया है जब उन्होंने अभी-अभी चखा ही था;5 और मैंने देखा है कि उनका स्नेह छल के सिवा कुछ नहीं है, और उनका धर्म पाखंड के सिवा कुछ नहीं है। युवक ने उत्तर दिया, हे मेरे पिता, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। तो फिर आप मुझे आगे क्या करने की सलाह देते हैं? — उसके पिता ने उत्तर दिया, जब तुम सक्षम हो तब भलाई करो; मनुष्यों के प्रति उचित आचरण बनाए रखो और दयालुतापूर्ण कार्यों को करने के अवसरों का लाभ उठाओ; क्योंकि इच्छा हमेशा आसानी से पूरी नहीं होती; और कवि का यह कथन कितना अच्छा है! — परोपकार के कार्य हर समय और हर मौके पर आसानी से नहीं किए जा सकते। जब तुम सक्षम हो, तो उन्हें करने में शीघ्रता करो, अन्यथा वे कठिन हो जाएंगे। पुत्र ने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। तो फिर क्या? — हे मेरे पुत्र, पिता ने उत्तर दिया, ईश्वर का ध्यान रखो: वह तुम्हारा ध्यान रखेगा। अपने धन की रक्षा करो और उसे फिजूलखर्ची न करो; क्योंकि यदि तुम उसे फिजूलखर्ची करोगे, तो तुम्हें ईश्वर की

सहायता की आवश्यकता पड़ेगी।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.10%** है।

अली शेर और ज़ुमुईरुई की कहानी)। 38D मानव जाति में सबसे कमतर: और जान लो कि किसी व्यक्ति का सम्मान उसके दाहिने हाथ में मौजूद धन के अनुसार होता है। कवि का कथन कितना उत्कृष्ट है!— जब मेरा धन कम हो जाता है, तो कोई मित्र मेरा साथ नहीं देता; परन्तु जब वह बढ़ता है, तो सभी मनुष्य मेरे मित्र बन जाते हैं। धन के कारण कितने शत्रुओं ने मेरा साथ दिया है! और धन के खोने पर कितने मित्र मेरे शत्रु बन गए हैं। और इसके अलावा क्या? युवक ने पूछा। उसके पिता ने उत्तर दिया, हे मेरे पुत्र, अपने से बड़े से परामर्श लो, और जो काम तू करना चाहता है, उसे करने में जल्दबाजी न करो; अपने से छोटे पर भी दया करो; तब जो तुमसे बड़ा है, वह तुम पर दया करेगा; और किसी पर अत्याचार न करो, कहीं ऐसा न हो कि ईश्वर तुम्हें अत्याचार करने वाले को ही तुम पर अधिकार दे दे। कवि का कथन कितना उत्कृष्ट है!— अपने निर्णय में दूसरे के निर्णय को भी जोड़ो, और परामर्श लो; सत्य दो लोगों के मन से छिपा नहीं रहता। मनुष्य का मन एक दर्पण है, जो उसे उसका चेहरा दिखाता है; परन्तु दो दर्पणों के द्वारा वह अपनी पीठ देख सकता है। और दूसरे के मन के बारे में: — सोच-समझकर काम करो, और अपनी इच्छा पूरी करने में जल्दबाजी मत करो; और दयालु बनो, तो तुम्हें एक दयालु मिलेगा: क्योंकि कोई हाथ नहीं है जिसके ऊपर अल्लाह का हाथ न हो; और कोई अत्याचारी नहीं है जिसका सामना किसी अत्याचारी से न हो। शराब पीने से सावधान रहो; क्योंकि यह हर बुराई की जड़ है: यह बुद्धि को नष्ट कर देती है, और पीने वाले पर अपमान लाती है: और कवि का यह कथन कितना अच्छा है! — अल्लाह की कसम, जब तक मेरी

आत्मा मेरे शरीर से जुड़ी है, और जब तक शब्द मेरे विचारों को स्पष्ट करते हैं, तब तक शराब मुझे विचलित नहीं करेगी; और न ही मैं कभी बचकाने ढंग से इससे जुड़ूंगा, और न ही किसी को अपना साथी चुनूंगा सिवाय संयमी के। यह मेरा तुम्हें आदेश है, और इसे अपने सामने रखो; और अल्लाह तुम्हें मेरी जगह प्रदान करे! फिर वह बेहोश हो गया और कुछ देर तक मौन रहा; उसके बाद उसे होश आया और उसने ईश्वर से क्षमा मांगी, धर्म की प्रतिज्ञाएं कीं और ईश्वर की दया में शामिल हो गया, जिसका नाम महान है! उसके बेटे ने उसके लिए रोया और विलाप किया। उसने उसके अंतिम संस्कार की उचित व्यवस्था की; बड़े और छोटे सभी उसकी अंतिम यात्रा में शामिल हुए, कुरान के पाठ करने वालों ने उसकी अर्थी के चारों ओर पाठ किया, और उसके बेटे ने मृतक को दिए जाने वाले किसी भी सम्मान को पूरा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.41%** है।

390 अली शेर और ज़ुमुरुद की कहानी। उन्होंने उसके लिए प्रार्थना की और उसे याद किया, और उसकी कब्र पर ये दो छंद खुदवाए: — तू मिट्टी से बना था, जीवन के प्रति उत्साही था, और भाषण कला का ज्ञान प्राप्त किया था; और तू मिट्टी में मिल गया, और एक शव बन गया, मानो तू कभी मिट्टी से निकला ही न हो। उसके पुत्र अली शेर ने उसके लिए गहरा शोक मनाया, और विशिष्ट व्यक्तियों की मृत्यु पर प्रचलित रीति-रिवाजों के अनुसार उसके लिए शोक की रस्में निभाईं। वह अपने पिता के लिए तब तक शोक मनाता रहा जब तक कि उसकी माता का कुछ समय बाद निधन नहीं हो गया; जब उसने अपनी माता के शव के साथ भी वही किया जो उसने अपने पिता के शव के साथ किया था। इसके बाद, वह दुकान में सामान बेचने और खरीदने के लिए बैठ गया, और अपने पिता के आदेश

का पालन करते हुए, ईश्वर की किसी भी रचना (जिसका नाम महान हो!) के साथ मेलजोल नहीं रखा। इस प्रकार वह एक वर्ष तक करता रहा; लेकिन वर्ष बीतने के बाद, व्यभिचारी स्त्रियों के पुत्र छल-कपट से उसके पास पहुँच गए और उसके साथी बन गए, जिससे वह उनके साथ बुराई की ओर झुक गया और सत्य के मार्ग से भटक गया; वह प्यालों भर शराब पीता और सुबह-शाम सुंदरियों के पास जाता; और मन ही मन कहता, मेरे पिता ने मेरे लिए यह धन इकट्ठा किया है, और यदि मैं इसे न बेचूँ, तो किसे दूँ? अल्लाह की कसम, मैं वही करूँगा जो कवि ने कहा है:
- यदि तुम अपने पूरे जीवन भर संपत्ति इकट्ठा करते रहो, तो तुम उस धन का आनंद कब उठाओगे जो तुमने इस प्रकार अर्जित किया है? उसने दिन-रात अपना धन लुटाना बंद नहीं किया, यहाँ तक कि उसने सारा धन खर्च कर दिया और गरीबी में डूब गया। उसकी हालत खराब थी, उसका मन व्याकुल था, और उसने दुकान, घर और अन्य संपत्ति बेच दी; और उसके बाद, उसने अपने कपड़े भी बेच दिए, अपने लिए एक सूट से अधिक नहीं छोड़ा। नशा उतर जाने और चिंतन का क्षण आने पर वह शोक में डूब गया; और एक दिन वह सुबह से दोपहर की नमाज़ तक बिना रोज़ा तोड़े बैठा रहा; तब उसने मन ही मन कहा, मैं उन लोगों के पास जाऊँगा जिन पर मैंने अपना धन खर्च किया है: शायद उनमें से कोई आज मुझे खाना खिला दे। इसलिए वह उन सभी के पास गया; लेकिन हर बार जब उसने उनमें से किसी के दरवाजे पर दस्तक दी, तो उस व्यक्ति ने उसे मना कर दिया और उससे छिप गया; इस प्रकार भूख ने उसे त्रस्त कर दिया। फिर वह व्यापारियों के बाज़ार गया, और वहाँ लोगों की भीड़ देखी; इस पर उसने मन ही मन कहा, इन लोगों के इकट्ठा होने का क्या कारण हो सकता है? अल्लाह की कसम, मैं दोबारा नहीं खाऊँगा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

27.13% है।

अली शेर और ज़ुमुर्रुद की कहानी। §91 'मैं इस स्थान से तब तक नहीं हटूंगा जब तक मैं इस अंगूठी को देखकर तृप्त न हो जाऊं। - फिर आगे बढ़कर उसने वहाँ एक कन्या6 कद की, सुडौल आकृति वाली, गुलाबी गालों वाली, ऊंचे स्तनों वाली युवती को पाया; वह अपनी उम्र की महिलाओं से सुंदरता, आकर्षण, शालीनता और हर तरह के मोह में श्रेष्ठ थी। इस युवती का नाम ज़ुमुर्रुद था;7 और जब अली शेर ने उसे देखा, तो वह उसकी सुंदरता और आकर्षण पर मुग्ध हो गया और बोला, अल्लाह की कसम, मैं तब तक नहीं जाऊंगा जब तक मैं यह न देख लूं कि इस युवती की कीमत कितनी होगी और कौन इसे खरीदेगा। इसलिए वह व्यापारियों के बीच खड़ा हो गया, और उन्होंने सोचा कि वह उसे खरीद लेगा, क्योंकि वे जानते थे कि उसे अपने माता-पिता से कितनी संपत्ति विरासत में मिली है। दलाल युवती के सिरहाने खड़ा होकर बोला, हे व्यापारियों! हे धनवानों! इस युवती के लिए कौन बोली लगाएगा, जो चांदनी जैसी सुंदरता की स्वामिनी है, अनमोल मोती है, ज़ुमुर्रुद परदासा करने वाली है, चाहने वालों की इच्छाओं की वस्तु है और चाहने वालों को प्रसन्न करती है? बोली लगाओ; क्योंकि बोली लगाने वाला निंदा या निंदा का पात्र नहीं है! — और एक व्यापारी ने कहा, इसे पाँच सौ सोने के सिक्कों में मेरी कर दो। दूसरे ने कहा, और दस। और रशीद-ए-दीन नाम के एक शेख, जिसकी नीली आँखें थीं और चेहरा बदसूरत था, ने कहा, और सौ। फिर दूसरे ने कहा, और दस। और उस शेख ने कहा, एक हज़ार सोने के सिक्कों में। इस पर व्यापारियों की ज़बान बंद हो गई और वे चुप हो गए। इसलिए दलाल ने युवती के मालिक से सलाह ली; लेकिन उसने कहा, मैंने शपथ ली है कि मैं उसे केवल उसी को बेचूंगा जिसे वह स्वयं चुनेगी: इसलिए उससे सलाह लो। दलाल ने आकर कहा, "हे चंद्रमा जैसी

सुंदरियों की स्वामिनी, यह व्यापारी तुम्हें खरीदना चाहता है।" उसने उसकी ओर देखा और उसे जैसा हमने वर्णन किया था वैसा देखकर दलाल से कहा, "मैं ऐसे शेख को नहीं बेची जाऊंगी जिसे बुढ़ापे ने इतनी बुरी हालत में पहुंचा दिया है।" ईश्वरीय वरदान प्राप्त वह व्यक्ति जिसने कहा, "एक दिन मैंने उससे चुंबन मांगा; और उसने मेरे बाल सफेद होते देखे (परन्तु मैं धनवान और समृद्ध था), और वह मुझसे मुंह फेरकर बोली, 'नहीं: जिसने मनुष्य को शून्य से बनाया, उसकी कसम, मुझे सफेद बालों की कोई इच्छा नहीं है। क्या जीते जी मेरा मुंह रुई से भरा रहेगा?'" 10 जब दलाल ने उसके शब्द सुने, तो उसने उससे कहा, "अल्लाह की कसम, तुम्हें क्षमा कर दिया गया है, और तुम्हारा मूल्य दस हजार सोने के सिक्के हैं।" फिर उसने उसके मालिक को बताया कि वह उस शेख को पसंद नहीं करती; और उसने उत्तर दिया, "किसी दूसरे के बारे में उससे सलाह लो।" और एक और आदमी आगे आया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.50%** है।

392 अली शेर और ज़िटमुरुंद की कहानी। और कहा, उसे मेरी कर दो, उस रकम पर जो उस शिकल ने उसके लिए दी थी जिसे वह पसंद नहीं करती थी। लेकिन उस युवती ने उस आदमी को देखकर पाया कि उसकी दाढ़ी रंगी हुई थी; इस पर उसने कहा, यह कैसी बेइज्जती है, यह कैसा संदिग्ध व्यवहार है, और सफेद बालों को काला करना कैसा है! और बहुत आश्चर्य व्यक्त करने के बाद, उसने ये आयतें पढ़ीं: — वास्तव में ऐसे व्यक्ति ने मुझे एक ऐसा दृश्य दिखाया, — अल्लाह की कसम, एक ऐसी गर्दन जिसे जूतों से पीटा जाना चाहिए! हे मेरे गालों और आकृति से मोहित होकर, क्या तू इस प्रकार अपना वेश बदलकर निर्लज्ज हो जाता है? क्या तू अपने सफेद बालों को अपमानजनक ढंग से रंगकर धोखे से

छुपाता है? 12 तू एक दाढ़ी के साथ जाता है और दूसरी के साथ लौटता है, मानो तू कठपुतली नचाने वाला हो। 13 और दलाल ने जब उसके छंद सुने, तो उससे कहा, अल्लाह की कसम, तूने सच कहा है। जिस व्यापारी ने उसे बुलाया था, उसने पूछा, उसने क्या कहा? तो दलाल ने उसे छंद दोहराए; और वह समझ गया कि वह गलती पर है, और उसे खरीदने का विचार छोड़ दिया। तब एक और व्यापारी आगे आया और बोला, उससे पूछो कि क्या वह उस रकम के बदले मेरी होने को तैयार है जो तूने सुनी है। इसलिए उसने उसके लिए उससे सलाह ली; और उसने उसकी ओर देखा, और पाया कि वह एक आँख वाला है, और उत्तर दिया, यह आदमी एक आँख वाला है, और कवि ने ऐसे व्यक्ति के बारे में कहा है, - सावधान मत रहो एक आँख वाले के साथ एक दिन के लिए संगति करना; परन्तु उसकी दुर्भावना और झूठ से सावधान रहना; क्योंकि यदि उसमें कोई अच्छाई होती, तो परमेश्वर ने उसकी आँख में अंधापन न किया होता।14 तब दलाल ने [दूसरे की ओर इशारा करते हुए] उससे कहा, क्या तुम उस व्यापारी को बेची जाना चाहती हो? उसने उसकी ओर देखा, और यह देखकर कि वह एक छोटा आदमी था, जिसकी दाढ़ी उसकी कमर तक लटक रही थी, उसने उत्तर दिया, यह वही है जिसके बारे में कवि ने कहा है, - मेरा एक मित्र है जिसकी दाढ़ी परमेश्वर ने इतनी लंबी बढ़ा दी है कि वह बेकार है। यह सर्दियों की रातों में से एक के समान है, लंबी, अंधेरी और ठंडी। इसलिए दलाल ने उससे कहा, हे मेरी स्वामिनी, यहाँ उपस्थित लोगों में से देखो कि तुम्हें कौन पसंद है, और बताओ कि वह कौन है, ताकि मैं तुम्हें उसे बेच सकूँ। तो उसने व्यापारियों के समूह को देखा, और जैसे ही उसने एक-एक करके उनके चेहरे-मोहरे देखे, उसकी नज़र अली शेर पर पड़ी। उसे देखकर उसके मुँह से हज़ार आहें निकलीं, और उसकी उसका हृदय उस पर मोहित हो गया; क्योंकि वह

आश्चर्यजनक रूप से सुंदर था, और उत्तरी हवा से भी अधिक सौम्य था; और उसने कहा, हे दलाल, मैं अपने इस स्वामी के अलावा किसी और को नहीं बेची जाऊंगी।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.17%** है।

अलफेक्टी शेट्ट और ज़िटमुरुद का स्टॉल्ट। 93 सुंदर चेहरा और असाधारण कद-काठी, जिसके बारे में उसके एक वर्णनकर्ता ने इस प्रकार कहा है: — उन्होंने तुम्हारा सुंदर चेहरा दिखाया, और फिर उस व्यक्ति को दोषी ठहराया जो प्रलोभित हुआ। यदि वे मेरी रक्षा करना चाहते, तो वे तुम्हारे सुंदर मुख को ढक लेते। इसलिए मुझे उसके सिवा कोई नहीं पा सकता; क्योंकि उसका गाल चिकना है, और उसके मुँह की नमी सेल्सेबील15 के समान है, जो बीमारों के लिए औषधि है, और उसका आकर्षण कवि और गद्य लेखक को मोहित कर देता है। वह वैसा ही है जैसा कवि ने उसके बारे में कहा है, — उसकी लार शराब के समान है; और उसकी साँस कस्तूरी के समान है; और उसके आगे के दाँत कपूर के समान हैं। किदवान ने उसे अपने निवास से इस डर से निकाल दिया कि हूरिये प्रलोभित न हो जाएँ।16 मनुष्य उसके अभिमान के लिए उसकी निंदा करते हैं; परन्तु अभिमान के लिए पूर्णिमा क्षमा योग्य है। घुंघराले बालों, गुलाबी गालों और मोहक निगाहों वाले उस व्यक्ति के बारे में कवि ने कहा है, — अक्सर एक हिरण जैसे दिखने वाले व्यक्ति ने मुझसे मिलने का वादा किया है, और मेरा दिल बेचैन और आँखें आशा से भरी हुई थीं। उसकी पलकों ने मुझे उसके वादे की सच्चाई का आश्वासन दिया; लेकिन वे, अपनी इस मुरझाई हुई अवस्था में, इसे कैसे पूरा कर सकती हैं? • — और जब दलाल ने अली शेर के आकर्षण पर उसके द्वारा सुनाए गए छंद सुने, तो वह उसकी वाक्पटुता के साथ-साथ उसकी सुंदरता की

भव्यता पर भी आश्चर्यचकित हुआ। लेकिन उसके मालिक ने उससे कहा, उसकी सुंदरता पर आश्चर्य मत करो, जो दिन के सूरज को भी शर्मिंदा कर देती है, और न ही इस बात पर कि उसकी स्मृति कवियों की सुंदर रचनाओं से भरी हुई है; क्योंकि वह कुरान का पाठ सातों पाठों के अनुसार करती है,17 और प्रामाणिक रूप से प्रसारित महान परंपराओं का वर्णन करती है, और सातों प्रकार की लिखावट जानती है,18 और उन विज्ञानों को जानती है जो विद्वान ऋषि भी नहीं जानते, और उसके हाथ सोने-चांदी से भी उत्तम हैं; क्योंकि वह रेशम के पर्दे बनाती है और उन्हें बेचती है, प्रत्येक पर्दे से पचास सोने के सिक्के कमाती है; और वह एक पर्दा आठ दिनों में बुनती है।19 तब दलाल ने कहा, हे उस व्यक्ति का सौभाग्य जिसके घर में यह युवती होगी, और जो उसे अपने अनमोल खजानों में शामिल करेगा! तब उसके मालिक ने उससे कहा, उसे जिसे चाहे उसे बेच दो। तदनुसार दलाल अली शेर के पास लौटा, और उसके हाथों को चूमकर बोला, हे मेरे स्वामी, इस युवती को खरीद लीजिए; क्योंकि उसने आपको चुना है। और उसने उसका वर्णन किया, उसे वह सब बताया जो वह जानती थी, और उससे कहा, यदि तुम उसे खरीदोगे तो तुम्हारा भाग्य शुभ होगा; क्योंकि जिसने अपने उपहारों में कंजूसी नहीं की, उसने उसे तुम्हें प्रदान किया है। इसलिए अली शेर ने कुछ देर के लिए अपना सिर II की ओर झुका लिया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.53%** है।

ज़मीन पर बैठा, उसकी हालत पर हंसते हुए, और मन ही मन कहते हुए, मैं अभी तक नाश्ता नहीं कर पाया हूँ; लेकिन व्यापारियों के सामने यह कहते हुए मुझे शर्म आ रही है कि मेरे पास उसे खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। तब युवती ने उसे सिर झुकाए हुए देखकर दलाल से कहा, मुझे हाथ

पकड़कर उसके पास ले चलो, ताकि मैं उसे खुद को दिखा सकूँ और उसे मुझे पाने की इच्छा जगा सकूँ; क्योंकि मैं उसके सिवा किसी और को नहीं बिकूँगी। तब दलाल उसे ले गया और अली शेर के सामने खड़ा कर दिया और उससे कहा, हे मेरे स्वामी, आपकी क्या इच्छा है? लेकिन उसने कोई उत्तर नहीं दिया। तब युवती ने कहा, हे मेरे स्वामी, और मेरे प्रियतम, आप मुझे क्यों नहीं खरीद रहे हैं? मुझे अपनी इच्छा अनुसार खरीद लें, और मैं आपके लिए सौभाग्य का साधन बनूँगी। तब उसने उसकी ओर सिर उठाया और कहा, क्या किसी को ज़बरदस्ती खरीदा जा सकता है? तुम हज़ार सोने के सिक्कों के बराबर भी कीमती हो। उसने उत्तर दिया, हे मेरे स्वामी, मुझे नौ के भाव खरीद लें।

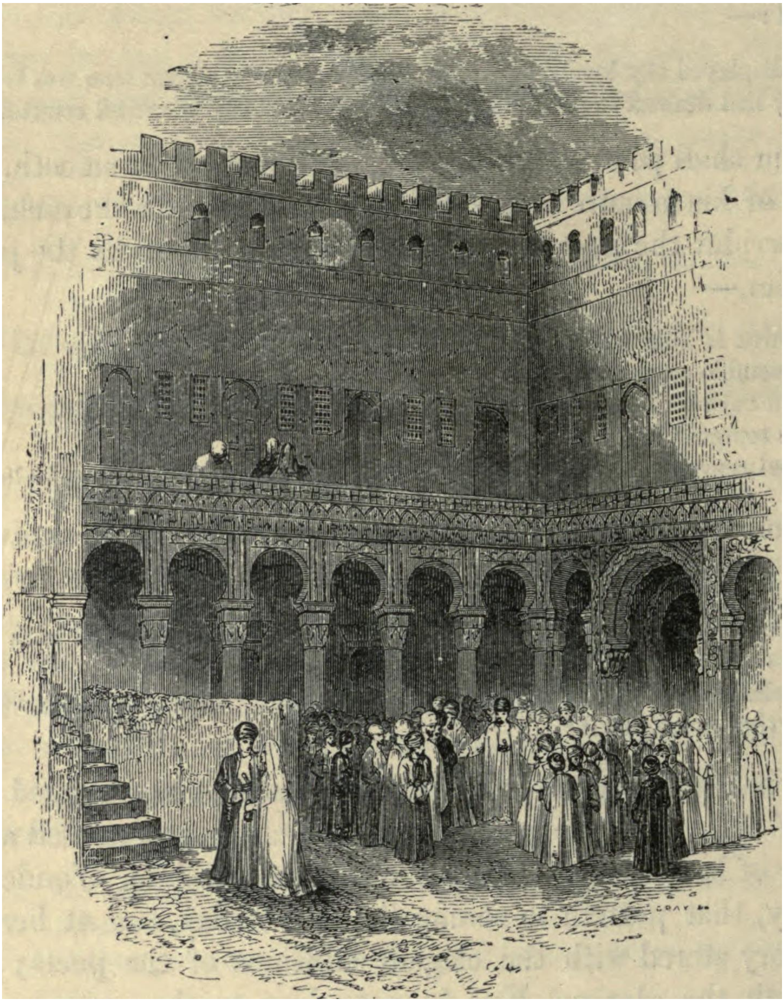

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.69%** है।

अली शेर और ज़मुर्रुद की कहानी। 395 सौ। उसने कहा, नहीं। - उसने पलटकर कहा, आठ सौ। उसने कहा, नहीं। और वह कीमत कम करती रही, यहाँ तक कि उसने उससे कहा, सौ सोने के सिक्कों में। लेकिन उसने कहा, मेरे पास पूरे सौ नहीं हैं। और वह हँसी, और उससे बोली, तुम्हें सौ में से कितना चाहिए? उसने उत्तर दिया, मेरे पास सौ नहीं हैं और

न ही सौ से कम। अल्लाह की कसम, मेरे पास न तो सफेद है और न लाल, न ही चाँदी का सिक्का है और न ही सोने का सिक्का। तो तुम खुद ही कोई और इच्छुक ग्राहक देख लो। - और जब उसे पता चला कि उसके पास कुछ नहीं है, तो उसने उससे कहा, मेरा हाथ पकड़ो, मानो तुम मुझे किसी गली में परख रहे हो। उसने ऐसा ही किया; और उसने अपनी जेब से एक पर्स निकाला जिसमें एक हज़ार सोने के सिक्के थे, और उससे कहा, इसमें से नौ सौ मेरे दाम के रूप में तौल लो, और शेष सौ अपने पास रखो, क्योंकि यह हमारे काम आएगा। इसलिए उसने उसकी इच्छा के अनुसार किया। उसने उसे नौ सौ सोने के सिक्कों में खरीदा और उस थैली से कीमत चुकाकर उसके साथ घर चला गया। जब वह वहाँ पहुँची, तो उसने देखा कि घर में फर्श बिल्कुल साफ-सुथरा था; उसमें न तो फर्नीचर था और न ही बर्तन। इसलिए उसने उसे एक हजार सोने के सिक्के दिए और कहा, बाजार जाओ और हमारे लिए तीन सौ सोने के सिक्कों से घर का फर्नीचर और बर्तन खरीद लाओ। उसने ऐसा ही किया। फिर उसने उससे कहा, हमारे लिए तीन सोने के सिक्कों से भोजन और पेय खरीद लाओ। उसने ऐसा किया। इसके बाद उसने उससे कहा, हमारे लिए एक रेशम का टुकड़ा खरीद लाओ, जो पर्दे के लिए पर्याप्त हो, और सोने-चांदी का धागा और सात अलग-अलग रंगों का रेशम का धागा भी खरीद लो। उसने ऐसा भी किया। फिर उसने घर में फर्नीचर सजाया, मोमबत्तियाँ जलाईं और उसके साथ बैठकर खाना-पीना किया। इसके बाद, उन्होंने एक-दूसरे को गले लगाया और कवि द्वारा वर्णित दृश्य प्रस्तुत किया: — आँखों ने दो प्रेमियों को एक-दूसरे के बगल में, संतुष्टि के वस्त्रों में लिपटे, एक-दूसरे को गले लगाते हुए, कलाई और बांहों से सहारा लेते हुए देखने से अधिक सुंदर दृश्य नहीं देखा है। जब हृदय एक हो जाते हैं, तो निंदा करने वाले ठंडे लोहे पर प्रहार करते हैं। हे प्रेमियों को उनके प्रेम

के लिए कोसने वाले, क्या तुम एक बिगड़े हुए हृदय को सुधार सकते हो? यदि तुम्हारे जीवन में कोई एक व्यक्ति तुम्हें प्रसन्न करता है, तो तुम्हारी इच्छा पूरी हो गई है; उसी के साथ रहो। एक-दूसरे का प्रेम एक-दूसरे के हृदय में बस गया; और अगली सुबह युवती ने पर्दा लिया, उस पर रंगीन रेशम की कढ़ाई की और उसे सोने-चांदी के धागे से सजाया। उसने उस पर पक्षियों की आकृतियाँ बनाईं और उसके चारों ओर जंगली जानवरों की आकृतियाँ उकेरीं, और वहाँ कोई कमी नहीं थी।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.23%** है।

3% अली शेर और ज़ुमुरुद की कहानी। दुनिया के जंगली जानवरों में से एक ऐसा जानवर जिसे वह चित्रित करना भूल गई थी, उसे उसने अपने कपड़े पर चित्रित करने के लिए कहा। वह आठ दिनों तक उस पर काम करती रही; और जब वह पूरा हो गया, तो उसने उसे काटकर चमकाया, और फिर उसे अपने मालिक को देते हुए कहा, इसे लेकर बाजार जाओ और किसी व्यापारी को पचास सोने के सिक्कों में बेच दो, और सावधान रहना कि इसे सड़क पर आने-जाने वाले किसी भी व्यक्ति को मत बेचना, क्योंकि इससे मेरे और तुम्हारे बीच अलगाव हो जाएगा; क्योंकि हमारे दुश्मन हैं जो हमें जानते हैं। और उसने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। वह उसे लेकर बाजार गया और जैसा उसने कहा था, उसे एक व्यापारी को बेच दिया; जिसके बाद उसने रेशम का एक और टुकड़ा, रेशम का धागा, और पहले की तरह सोने और चांदी का धागा, और खाने-पीने का सामान खरीदा, और ये सब चीजें लाकर उसे शेष धन दे दिया। और हर आठ दिन में वह उसे पचास सोने के सिक्कों में बेचने के लिए एक पर्दा देती रही। इस प्रकार वह पूरे एक वर्ष तक ऐसा करती रही। वर्ष की समाप्ति के बाद, वह हमेशा की तरह पर्दा लेकर बाजार गया और उसे

दलाल को दे दिया; वहाँ उसकी मुलाकात एक ईसाई से हुई, जिसने उसे साठ सोने के सिक्के देने की पेशकश की। उसने उसे बेचने से इनकार कर दिया; लेकिन ईसाई ने राशि बढ़ाना बंद नहीं किया और अंत में उसे सौ सोने के सिक्के देने की पेशकश की, और दलाल को दस सोने के सिक्के रिश्वत के तौर पर दे दिए। तब दलाल अली शेर के पास लौटा, उसे दी गई कीमत के बारे में बताया, और चालाकी से उसे ईसाई को पर्दा उस राशि में बेचने के लिए राजी कर लिया, और उससे कहा, "हे मेरे मालिक, इस ईसाई से मत डरिए; इससे आपको कोई हानि नहीं होगी।" व्यापारी भी उठे और उसे प्रोत्साहित किया। इसलिए उसने ईसाई को पर्दा बेच दिया, यद्यपि उसका मन भय से भरा हुआ था, और कीमत लेकर वह घर लौट आया। लेकिन उसने देखा कि ईसाई उसके पीछे-पीछे आ रहा है; और उसने कहा, "हे ईसाई, तुम मेरे पीछे क्यों चल रहे हो?" - "हे मेरे स्वामी," उसने उत्तर दिया, "मुझे गली के ऊपरी छोर पर एक काम पूरा करना है: ईश्वर तुम्हें कभी किसी चीज़ की कमी न होने दे!" और अली शेर अपने घर नहीं पहुँचे थे कि ईसाई ने उन्हें पकड़ लिया: तो उन्होंने उससे कहा, "हे शापित, तुम मेरे पीछे-पीछे क्यों आते हो जहाँ भी मैं जाता हूँ?" ईसाई ने उत्तर दिया, "हे मेरे स्वामी, मुझे एक घूँट पानी दीजिए, क्योंकि मैं प्यासा हूँ, और आपको ईश्वर से आपका प्रतिफल मिलेगा, जिसका नाम महान है!" अली शेर ने मन ही मन कहा, "यह एक करदाता है,20 और इसने मुझसे एक घूँट पानी माँगा है: इसलिए अल्लाह की कसम, मैं इसे निराश नहीं करूँगा।" फिर वह घर में दाखिल हुए और एक मग पानी लिया; और उनकी दासी ज़ुमुर्रुद ने उन्हें देखकर उनसे कहा, "हे मेरे प्रिय, क्या तुमने पर्दा बेच दिया है?" उसने उत्तर दिया, हाँ, और उसने कहा, एक

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.75%** है।

अली शेर और ज़ुमुरुद की कहानी। 397 क्या तुम किसी यात्री से मिले थे? क्योंकि मेरा दिल जुदाई के डर से भरा हुआ है। उसने उत्तर दिया, मैंने इसे केवल एक व्यापारी को बेचा था। लेकिन उसने कहा, मुझे मामले की सच्चाई बताओ, ताकि मैं अपने बचाव के लिए तैयारी कर सकूँ। और उसने आगे कहा, तुमने पानी का मग क्यों लिया? उसने उत्तर दिया, दलाल को पिलाने के लिए। और वह बोली, सर्वशक्तिमान, महान ईश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है! और उसने ये दो श्लोक पढ़े: हे जुदाई चाहने वाले, आराम से काम लो, और प्रियतम के आलिंगन से धोखा मत खाओ! आराम से काम लो; क्योंकि भाग्य का स्वभाव कपटी है, और हर मिलन का अंत वियोग है। फिर वह मग लेकर बाहर गया, और घर के गलियारे में ईसाई को पाया। तो उसने कहा, क्या तू यहाँ अंदर आया है, हे कुत्ते? तुम मेरी अनुमति के बिना मेरे घर में कैसे प्रवेश कर रहे हो? - हे मेरे स्वामी, उसने उत्तर दिया, द्वार और मार्ग में कोई अंतर नहीं है; मैं अपने इस स्थान से बाहर जाने के अलावा नहीं हिलूंगा; फिर भी आपकी उदारता, दयालुता और सहयोग के लिए आपका धन्यवाद। फिर उसने पानी का प्याला लिया और उसमें मौजूद पानी पी लिया; इसके बाद उसने उसे अली शेर को दे दिया, जिसने उसे लिया और उम्मीद की कि वह उठ जाएगा: लेकिन वह नहीं उठा। तो अली शेर ने उससे कहा, तुम क्यों नहीं उठते और अपने रास्ते जाते? ईसाई ने उत्तर दिया, हे मेरे स्वामी, उन लोगों में से मत बनो जो कृपा करते हैं और फिर उसे निंदा का विषय बनाते हैं, न ही उन लोगों में से जिनके बारे में कवि ने कहा है, - वे चले गए जो, यदि तुम द्वार पर खड़े होते, तो तुम्हारी विनती पर सबसे उदार सहायता देते; और यदि तुम उनके बाद किसी के द्वार पर खड़े होते, तो वे तुम्हें दिए गए पानी के एक घूंट के लिए भी निंदा करते। हे मेरे स्वामी, उसने आगे कहा, मैंने पी लिया है; परन्तु मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि

आप मुझे घर में जो कुछ भी हो, उसमें से कुछ खाने को दें: चाहे वह रोटी का एक टुकड़ा हो, बिस्कुट हो या प्याज, मेरे लिए पर्याप्त होगा। — अली शेर ने उत्तर दिया, उठो, बिना झगड़ा किए। घर में कुछ नहीं है। — परन्तु ईसाई ने पुनः कहा, हे मेरे स्वामी, यदि घर में कुछ नहीं है, तो ये सौ सोने के सिक्के ले लीजिए, और बाजार से हमारे लिए कुछ ले आइए, चाहे वह रोटी का एक टुकड़ा ही क्यों न हो, ताकि मेरे और आपके बीच रोटी और नमक का बंधन स्थापित हो सके।21 तब अली शेर ने मन ही मन कहा, निश्चय ही यह ईसाई पागल है: इसलिए मैं इससे सौ सोने के सिक्के ले लूँगा, और इसे दो चाँदी के सिक्कों के बराबर कुछ लाकर दूँगा और इस पर हँसूँगा। और ईसाई ने उससे कहा, हे मेरे स्वामी, मैं केवल कुछ ऐसा चाहता हूँ जो

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.87%** है।

398 अली शेर और ज़ुमुरुद की कहानी। भूख को दूर भगाओ, चाहे वह बासी रोटी और प्याज ही क्यों न हो; क्योंकि सबसे अच्छा भोजन वही है जो भूख मिटाता है, न कि स्वादिष्ट भोजन; और कवि का यह कथन कितना उत्कृष्ट है! - बासी रोटी से भूख दूर हो जाती है। तो फिर मेरे दुख और कंपकंपी इतनी तीव्र क्यों हैं? मृत्यु सबसे न्यायसंगत है, क्योंकि यह खलीफा और गरीब दोनों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करती है। अली शेर ने उससे कहा, यहीं रुको, मैं शराबखाना बंद करके तुम्हारे लिए बाजार से कुछ लाता हूँ। ईसाई ने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। तब अली शेर उससे दूर चला गया और शराबखाने को ताला लगाकर बंद कर दिया; और चाबी लेकर बाजार गया, कुछ तला हुआ पनीर, शहद, केले और रोटी खरीदकर उसके पास ले आया। जब ईसाई ने यह देखा, तो उसने कहा, "हे मेरे स्वामी, यह तो बहुत अधिक मात्रा है, दस आदमियों

के लिए पर्याप्त है, और मैं अकेला हूँ: शायद आप मेरे साथ खाएँगे।" अली शेर ने उत्तर दिया, "तुम अकेले खाओ; क्योंकि मेरा पेट भरा हुआ है।" लेकिन ईसाई ने फिर कहा, "हे मेरे स्वामी, विद्वानों ने कहा है कि जो अपने अतिथि के साथ भोजन नहीं करता, वह नीच कुल का है।" तो जब अली शेर ने ये शब्द सुने, तो वह बैठ गया और उसके साथ थोड़ा भोजन किया; और अपना हाथ हटाने ही वाला था कि ईसाई ने एक केला लिया, उसे छीलकर दो भागों में बाँट दिया, और उसके एक भाग में अफीम मिला हुआ शुद्ध बेंज डाल दिया, जिसकी एक बूंद से हाथी भी गिर पड़ता। फिर उसने केले के इस भाग को शहद में डुबोया, और अली शेर से कहा, "हे मेरे स्वामी, अपने धर्म की कसम, इसे ग्रहण करो।" अली शेर को उससे झूठी कसम खिलवाने में शर्म आई; इसलिए उसने उससे कसम छीन ली और उसे निगल लिया। जैसे ही वह कसम उसके पेट में पची, उसका सिर उसके पैरों के पास गिर पड़ा और वह ऐसा हो गया मानो एक साल से सोया हो। जब ईसाई ने यह देखा, तो वह ऐसे उठा जैसे कोई गंजा भेड़िया हो या भाग्य का स्वामी; उसने सराय की चाबी ली और अली शेर को वहीं गिरा छोड़कर अपने भाई के पास दौड़ा और उसे अपने किए की जानकारी दी। उसके इस व्यवहार का कारण यह था: इस ईसाई का भाई वही बूढ़ा और कमजोर आदमी था जिसने ज़ुमुर्रुद को एक हजार सोने के सिक्कों में खरीदने की इच्छा जताई थी, लेकिन उसने उसे स्वीकार नहीं किया, बल्कि छंदों से उसका उपहास किया। वह दिल से काफिर था, लेकिन बाहरी तौर पर मुसलमान था, और उसने खुद को इल्लाहीद-ए-दीन नाम दिया था। और जब ज़ुमुर्रुद ने उसका उपहास किया और उसे अपना स्वामी स्वीकार नहीं किया, तो उसने अपने भाई, उस ईसाई से शिकायत की, जिसने उसे उसके स्वामी अली शेर से छुड़ाने के लिए यह चाल चली थी, और जिसका नाम बरसूम था; और उसने

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.55%** है।

अली शेर और ज़ुमुरुंद की कहानी। एस'जे'जे ने उत्तर दिया, "इस मामले पर शोक मत करो; मैं उसे बिना किसी सोने या चांदी के सिक्के के ले जाने की एक चाल चलूँगा: क्योंकि वह एक कुशल, धूर्त और दुष्ट जादूगर था।" फिर उसने तब तक षड्यंत्र और चालें बनाना बंद नहीं किया जब तक कि उसने उस चाल का अभ्यास नहीं कर लिया जिसका हमने वर्णन किया है; और चाबी लेकर वह अपने भाई के पास गया और उसे सारी घटना बताई। इस पर रशीद-ए-दीन अपने खच्चर पर सवार हुआ, अपने जवानों को साथ लिया और अपने भाई के साथ अली शेर के घर गया, साथ में एक हजार सोने के सिक्कों से भरा एक थैला भी ले गया, ताकि अगर वली उससे मिले तो वह उसे दे दे। उसने बैठक का दरवाजा खोला और उसके साथ आए आदमियों ने ज़ुमुरुंद पर धावा बोल दिया और उसे जबरदस्ती पकड़ लिया, उसे धमकी दी कि अगर उसने कुछ कहा तो उसे मार डालेंगे। लेकिन उन्होंने घर को वैसे ही छोड़ दिया जैसा उन्हें मिला था, उसमें से कुछ भी नहीं लिया, और अली शेर को गलियारे में पड़ा छोड़ दिया। फिर उन्होंने उसके ऊपर दरवाजा बंद कर दिया, और उसके पास ही बैठक कक्ष की चाबी रख दी; और ईसाई इल्लाहीद-ए-दीन उस युवती को अपने तंबू में ले गया, जहाँ उसने उसे अपनी दासियों और रखेलों के बीच रखा, और उससे कहा, "हे निर्लज्ज युवती, मैं वही शेख हूँ जिसे तूने अपना स्वामी मानने से इनकार कर दिया था, और जिसका तूने उपहास किया था, और मैंने तुझे बिना एक पैसा खर्च किए ले लिया है।" उसने आँसुओं से भरी आँखों से उत्तर दिया, "हे दुष्ट बूढ़े, मुझे मेरे स्वामी से अलग करने का तुझे पर्याप्त दंड मिलेगा।" - "हे निर्लज्ज युवती!" उसने पलटकर कहा, "हे प्रेम से भरी हुई! तू देखेगी कि मैं तुझे क्या यातना

दूँगा।" मेरी कसम, अगर तू मेरी आज्ञा का पालन नहीं करेगा और मेरे धर्म को नहीं अपनाएगा, तो मैं तुझे तरह-तरह की यातनाएँ दूँगा! — लेकिन उसने कहा, चाहे तू मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दे, मैं इस्लाम धर्म नहीं छोड़ूँगी; और शायद अल्लाह (जिसका नाम महान है!) मुझे जल्द ही राहत भेजेगा; क्योंकि वह जो चाहे कर सकता है; और बुद्धिमानों ने कहा है, शरीर की बुराई धर्म की बुराई से बेहतर है। इस पर उसने हिजड़ों और दासियों को पुकारा और उनसे कहा, इसे नीचे गिरा दो! तो उन्होंने उसे नीचे गिरा दिया। और वह उस पर बेरहमी से वार करता रहा, जबकि वह मदद के लिए पुकारती रही; लेकिन उसकी मदद नहीं की गई। तब उसने मदद की गुहार लगाना बंद कर दिया और कहने लगी, अल्लाह ही मेरा सहारा है, और वह सचमुच पर्याप्त है! — जब तक उसकी आवाज बैठ गई और उसकी कराह सुनाई देना बंद हो गई। और जब उसका मन उसे दंडित करने से संतुष्ट हो गया, तो उसने हिजड़ों से कहा, "उसे पैरों से घसीटकर रसोई में फेंक दो और उसे कुछ भी खाने को मत दो।" फिर वह अभागी रात वहीं गुजारती रही, और अगली सुबह उसने उसे लाने को कहा, और उसने फिर से उसकी पिटाई की; जिसके बाद उसने हिजड़ों को आदेश दिया...

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.46%** है।

400 कहानी 0? 'अली शेर और ज़ुमुर्रुद। उसे उसकी जगह पर फेंक दो; और उन्होंने ऐसा ही किया। और जब पिटाई से होने वाला दर्द कम हुआ, तो उसने कहा, अल्लाह के सिवा कोई देवता नहीं है: मोहम्मद अल्लाह के रसूल हैं! अल्लाह ही मेरी पर्याप्तता है, और रक्षक महान है! — फिर उसने हमारे प्रभु मोहम्मद22 से सहायता की याचना की, अल्लाह उन्हें आशीर्वाद दे और उनकी रक्षा करे! — यही उसकी स्थिति थी। अब जहाँ

तक 'अली शेर की बात है, वह अगले दिन तक सोता रहा, जब बेंज के नशे का असर उसके सिर से उतरा, और उसने अपनी आँखें खोलीं, और पुकार कर कहा, हे ज़ुमुर्रुद! लेकिन किसी ने उसे जवाब नहीं दिया। इसलिए वह शराबखाने में गया, और अंदर का हिस्सा वीरान पाया, और वह जगह दूर थी जहाँ से उसे बुलाया गया था: इसलिए वह समझ गया कि यह घटना उसके साथ केवल ईसाई के कारण हुई है; और वह तड़पा, रोया, आहें भरीं, शिकायत की, और कविताएँ पढ़ीं। जब पश्चाताप व्यर्थ हो गया, तब उसने पश्चाताप किया, रोते हुए और अपने कपड़े फाड़ते हुए; और उसने दो पत्थर लिए, और शहर के चारों ओर घूमते हुए, उनसे अपनी छाती पीटते हुए, और चिल्लाते हुए कहा, हे ज़ुन्मर!

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.50%** है।

अली शेर और ज़मुर्रुद की कहानी। 401 रुद! इसलिए बच्चे उसे घेरकर कहने लगे, पागल! पागल! — और उसे जानने वाला हर कोई उसके लिए रोने लगा और कहने लगा, ये तो ऐसा ही है। इसे क्या हो गया है? — वह

दिन ढलने तक ऐसा ही करता रहा: और जब रात का अंधेरा छा गया, तो वह सुबह तक एक गली में सो गया। और वह शाम तक पत्थरों के साथ शहर का चक्कर लगाता रहा, फिर रात बिताने के लिए अपने दफ्तर लौट आया। तब उसकी एक पड़ोसी, जो एक बूढ़ी और नेक महिला थी, ने उससे कहा, हे मेरे बेटे, ईश्वर तुम्हें सलामत रखे! तुम कब पागल हो गए? — और उसने उसे इन दो पंक्तियों में उत्तर दिया: — उन्होंने कहा, तुम जिससे प्रेम करते हो, उस पर पागल हो रहे हो। और मैंने उत्तर दिया, जीवन का आनंद केवल पागलों के लिए है। मेरी दीवानगी का विषय छोड़ो, और उसे लाओ जिस पर मैं बड़बड़ा रहा हूँ। यदि वह मेरी दीवानगी ठीक कर दे, तो मुझे दोष मत देना।23 तो उसकी पड़ोसी, बूढ़ी औरत, जानती थी कि वह अपनी प्रेमिका से बिछड़ा हुआ प्रेमी है; और उसने कहा, सर्वशक्तिमान, महान ईश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ नहीं है! हे मेरे पुत्र, मैं तुझसे विनती करती हूँ कि तू मुझे अपनी विपत्ति की कहानी सुना। शायद ईश्वर अपनी कृपा से मुझे इस पर विजय पाने में तेरी सहायता करने में सक्षम बनाए। — इसलिए उसने उसे वह सब बताया जो उसके साथ बरसूम ईसाई, उस जादूगर के भाई, जो खुद को रशीद-ए-दीन कहता था, के साथ हुआ था; और जब उसने यह जाना, तो उसने उससे कहा, हे मेरे पुत्र, निश्चय ही तुझे क्षमा कर दिया गया है। फिर वह फूट-फूट कर रोने लगी, और उसने ये दो आयतें पढ़ीं: — इस संसार में प्रेमियों का कष्ट पर्याप्त है। अल्लाह की कसम, इसके बाद नरक उन्हें कष्ट नहीं देगा! क्योंकि वे अपने जुनून के कारण नष्ट हो गए, और उन्होंने इसे पवित्रता से छिपाया: और इस बात की सत्यता परंपरा प्रमाणित करती है। 24 और जब उसने ये पद समाप्त कर लिए, तो उसने उससे कहा, हे मेरे पुत्र, अब उठो, और सुनारों द्वारा उपयोग किए जाने वाले बक्सों के समान एक बक्सा खरीदो, और कंगन, मुहर-अंगूठियाँ, कान की बालियाँ और

स्त्रियों के लिए उपयुक्त अन्य आभूषण खरीदो; और धन की बचत मत करो। उन सभी चीजों को बक्से में रखो; फिर बक्सा लाओ, और मैं उसे अपने सिर पर रखूँगी, जैसे कोई दलाल महिला रखती है, और मैं घर में उसकी खोज करती रहूँगी जब तक कि मुझे उसके बारे में खबर न मिल जाए, यदि यह परमेश्वर की इच्छा हो, जिसका नाम महान है! अली शेर उसके शब्दों से प्रसन्न हुआ, और उसके हाथों को चूमा। फिर वह जल्दी से गया, और उसके लिए वह सब कुछ लाया जो वह चाहती थी; और जब चीजें उसके लिए तैयार हो गईं, तो वह उठी और एक पैबंदित गाउन पहना, अपने सिर पर शहद के रंग का इज़ार डाला, और अपने II. 3 एफ

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.61%** है।

402 अली शेर और ज़ुमुरुद की कहानी। एक छड़ी हाथ में लिए, वह पेटी को गलियों और घरों में ले जाती रही, और जगह-जगह, मोहल्ले-मोहल्ले और गली-गली घूमती रही, जब तक कि ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) ने उसे शापित रशीद-ए-दीन ईसाई के तंबू तक नहीं पहुँचा दिया, जिसके भीतर उसने एक कराहने की आवाज़ सुनी। इसलिए उसने दरवाज़ा खटखटाया; तभी एक दासी नीचे आई और उसके लिए दरवाज़ा खोला और उसे प्रणाम किया। बुढ़िया ने उससे कहा, मेरे पास ये छोटी-मोटी चीज़ें बेचने के लिए हैं। क्या तुममें से कोई है जो इनमें से कुछ खरीदेगा? - लड़की ने उत्तर दिया, हाँ: - और वह उसे घर के अंदर ले गई और उसे बैठा दिया। फिर दासियाँ उसके चारों ओर बैठ गईं, और उनमें से प्रत्येक ने उससे कुछ न कुछ ले लिया; और उस बूढ़ी औरत ने उनसे विनम्रता से बात करना शुरू किया और सामान की कीमतें उनके लिए कम कर दीं; जिससे वे उसकी दयालुता और मधुर वाणी से प्रसन्न हो गए। इसी बीच, उसने उस जगह के अलग-अलग कोनों पर गौर से देखा, ताकि उस स्त्री

को ढूंढ सके जिसकी कराहने की आवाज़ उसने सुनी थी, और उसकी नज़र उस पर पड़ी: इसलिए उसने दासियों के साथ और भी ज़्यादा स्नेह और दयालुता से व्यवहार किया; और जिस युवती की कराह उसने सुनी थी, उसे देखकर उसने पाया कि वह ज़मुर्रुद थी, जो ज़मीन पर लेटी हुई थी। उसने उसे पहचान लिया और रोने लगी, और दासियों से कहा, हे मेरी बच्चियों, यह युवती इस हालत में क्यों है? और उन्होंने उसे पूरी कहानी सुनाई, और आगे कहा, यह हमारी मर्ज़ी से नहीं हुआ है; बल्कि हमारे स्वामी ने हमें ऐसा करने का आदेश दिया है; और वह अब यात्रा पर हैं। और उसने कहा, "हे मेरे बच्चों, मैं तुमसे एक विनती करती हूँ कि तुम इस बेचारी कन्या को उसके बंधनों से मुक्त कर दो और उसे तब तक बंधनों में ही रहने दो जब तक कि तुम्हारे स्वामी के लौटने की सूचना न मिल जाए। स्वामी के लौटने पर तुम उसे पहले की तरह फिर से बाँध देना; और तुम्हें समस्त प्राणियों के स्वामी से प्रतिफल मिलेगा।" उन्होंने उत्तर दिया, "हम सुनते हैं और आज्ञा मानते हैं।" और उन्होंने उसे मुक्त कर दिया और उसे भोजन और पानी पिलाया। तब उस बूढ़ी औरत ने कहा, "काश मेरा पैर टूट गया होता और मैं तुम्हारे घर में न आई होती!" और उसके बाद, वह ज़ुमुर्रुद के पास गई और उससे कहा, "हे मेरी बेटी, ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे! ईश्वर तुम्हारे कष्टों को दूर करे।" और उसने उसे बताया कि वह अपने स्वामी अली शेर के पास से आई है और उससे एक समझौता किया है कि वह (ज़ुमुर्रुद) अगली रात एक आवाज़ का इंतज़ार करे; यह कहते हुए कि, "तुम्हारा स्वामी तुम्हारे पास आएगा और तंबू के मस्तबा के पास खड़ा होगा और तुम्हें सीटी बजाएगा।" और जब तुम उसके सबसे करीब पहुँचो, तो उसे सीटी बजाकर बुलाना, और रस्सी के सहारे उसके पास नीचे उतर जाना, और वह तुम्हें लेकर चला जाएगा। इस पर युवती ने उसे धन्यवाद दिया। फिर बुढ़िया चली गई, और अली शेर लौटकर...

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.96%** है।

उसने उसे अपने किए के बारे में बताया और कहा, "अगली रात, आधी रात को, उस जगह जाना; क्योंकि शापित का घर वहीं है, और उसका रूप-रंग ऐसा-ऐसा है। उसके तंबू के नीचे खड़े होकर सीटी बजाना: वह तुम्हारे पास आ जाएगी, और तुम उसे लेकर जहाँ चाहो वहाँ चले जाना।" उसने इसके लिए उसका धन्यवाद किया; और रात के अँधेरे होने और नियत समय आने तक प्रतीक्षा करने के बाद, वह उस जगह गया जिसका उसने वर्णन किया था, जहाँ उसने तंबू देखा और उसे पहचान लिया। और वह उसके नीचे एक तंबू पर बैठ गया; लेकिन नींद उस पर हावी हो गई और वह सो गया। — उस ईश्वर की महिमा हो जो कभी नहीं सोता! — वह बहुत देर तक नहीं सोया, अपने आनंद के चरम पर वह नशे में चूर हो गया। और जब वह सो रहा था, तभी देखो, उसी रात एक डाकू निकला और कुछ चुराने के लिए शहर के बाहरी इलाकों में घूमने लगा; और नियति ने उसे उस ईसाई के तंबू के नीचे ला खड़ा किया। इसलिए वह चला गया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.21%** है।

404 अली शेर और ज़ुमुर्रुद की कहानी। वह उसके चारों ओर घूमता रहा; लेकिन उसे ऊपर चढ़ने और अंदर जाने का कोई रास्ता नहीं मिला; और वह उसके चारों ओर तब तक घूमता रहा जब तक वह मस्तबाह तक नहीं पहुँच गया, जहाँ उसने अली शेर को सोते हुए देखा। और उसने उसकी

पगड़ी ले ली; और जैसे ही उसने ऐसा किया, ज़ुमुरुंद ने तुरंत बाहर देखा, और उसे अंधेरे में खड़ा देखकर, उसे अपना स्वामी समझ लिया। इसलिए उसने उसे सीटी बजाई, और डाकू ने भी उसे सीटी बजाई; और वह सोने से भरे दो थैलों के साथ रस्सी से नीचे उतर गई। जब डाकू ने यह देखा, तो उसने मन ही मन कहा, यह एक अद्भुत घटना है, जो एक असाधारण कारण से हुई है। फिर उसने थैले उठाए, और ज़ुमुरुंद को अपने कंधों पर उठाया, और दोनों को लेकर बिजली की तरह तेज़ी से चला गया; जिस पर युवती ने उससे कहा, बूढ़ी औरत ने मुझे बताया था कि तुम मेरी वजह से बीमार थे; लेकिन देखो, तुम घोड़े से भी अधिक बलवान हो। उसने उसे कोई उत्तर नहीं दिया। तब उसने उसका चेहरा छुआ और पाया कि उसकी दाढ़ी सार्वजनिक स्नानघर की झाड़ू जैसी थी; 25 मानो वह कोई सूअर हो जिसने पंख निगल लिए हों और उनके रोएँ उसके गले से बाहर आ गए हों। वह उससे भयभीत हो गई और उससे बोली, तुम कौन हो? 2G उसने उत्तर दिया, हे कन्या, मैं कुर्दों में सबसे तेज़ जबड़ा हूँ, 27 अहमद एड-देनेफ के गिरोह का: हम चालीस तेज़ जबड़े वाले हैं, और आज रात हम सब तुम्हें अपनी दासी बना लेंगे। और जब उसने उसके शब्द सुने, तो वह रो पड़ी और अपना चेहरा पीट लिया, यह जानते हुए कि भाग्य ने उसे हरा दिया है, और उसके पास ईश्वर की इच्छा के आगे समर्पण के अलावा कोई चारा नहीं है, जिसका नाम महान है! इसलिए उसने धैर्य रखा और स्वयं को ईश्वर (जिसका नाम महान है!) के हवाले कर दिया, और कहा, ईश्वर के सिवा कोई देवता नहीं है! हर बार जब हम चिंता से मुक्त होते हैं, तो हम और भी अधिक चिंता में पड़ जाते हैं! जावीन के ऊपर बताए गए स्थान पर आने का कारण यह था: उसने अहमद एड-देनेफ से कहा, "हे चालाक, मैं आज से पहले इस स्थान पर आया हूँ और शहर के बाहर एक गुफा जानता हूँ, जिसमें चालीस लोग रह सकते हैं; मैं तुमसे पहले वहाँ

जाना चाहता हूँ और अपनी माँ को उस गुफा में रखना चाहता हूँ। फिर मैं शहर लौटकर तुम्हारे सौभाग्य के लिए कुछ चुरा लूँगा और तुम्हारे आने तक उसे तुम्हारे लिए रखूँगा; इस प्रकार उस दिन तुम्हारा भोजन मेरी ओर से होगा।" और अहमद एड-देनेफ ने उत्तर दिया, "जो तुम चाहो करो।" तदनुसार वह उनसे पहले उस स्थान पर गया और अपनी माँ को गुफा में रख दिया; और जब वह वहाँ से निकला, तो उसने एक सैनिक को सोते हुए पाया, जिसके पास एक घोड़ा बंधा हुआ था: इसलिए उसने उसे मार डाला और उसके कपड़े, घोड़ा और हथियार ले लिए और उन्हें अपनी माँ के साथ गुफा में छिपा दिया, घोड़े को भी वहीं बाँध दिया। फिर वह वापस लौट गया

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.08%** है।

वह शहर से होते हुए चलता रहा, जब तक कि वह ईसाई के तंबू तक नहीं पहुँच गया, जहाँ उसने वही किया जिसका हमने वर्णन किया है। वह उस युवती को लेकर बिना रुके दौड़ता रहा और उसे अपनी माँ के पास छोड़ दिया, जिससे उसने कहा, "सुबह मेरे लौटने तक इसका ख्याल रखना।" और इतना कहकर वह चला गया। तब ज़ुमुरुंद ने मन ही मन कहा, "मैं किसी तरकीब से खुद को मुक्त करने में इतनी लापरवाह क्यों हूँ? मुझे इन चालीस आदमियों के आने का इंतज़ार क्यों करना चाहिए?" फिर उसने बूढ़ी औरत, कुर्दी जवारी की माँ की ओर देखा और उससे कहा, "हे मेरी चाची, क्या तुम उठकर मेरे साथ गुफा के बाहर नहीं चलोगी, ताकि मैं धूप में तुम्हारे बाल संवार सकूँ?" बूढ़ी औरत ने उत्तर दिया, "हाँ, अल्लाह की कसम, हे मेरी बेटी; क्योंकि मैं बहुत समय से सार्वजनिक स्नानघर से दूर रही हूँ; ये सूअर मुझे लगातार इधर-उधर भटकाते रहते हैं।" तब ज़ुमुरुंद उसके साथ बाहर गई और तब तक यह प्रक्रिया जारी रखी जब

तक कि बूढ़ी औरत सो नहीं गई। तब ज़ुमुर्रुद उठी और उस सैनिक के वस्त्र धारण किए जिसे कुर्दी जावीन ने मार डाला था। उसने उसकी तलवार अपनी कमर में बाँध ली और उसकी पगड़ी पहन ली, जिससे वह पुरुष जैसी दिखने लगी। फिर वह घोड़े पर सवार हुई और सोने से भरे थैले लेकर बोली, “हे दयालु रक्षक, मेरी रक्षा करो। मैं मोहम्मद की कसम खाकर तुमसे प्रार्थना करती हूँ; अल्लाह उसे आशीर्वाद दे और उसकी रक्षा करे!” फिर उसने मन ही मन कहा, “अगर मैं शहर गई, तो शायद उस सैनिक के परिवार का कोई सदस्य मुझे देख ले; और मेरा भला नहीं होगा।” इसलिए वह

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.78%** है।

406 अली शफीर और ज़ुमुर्रुद की कहानी। वह शहर में प्रवेश करने से परहेज़ करती रही और अपने सामान और घोड़े के साथ बंजर रेगिस्तान को पार करती रही, दस दिनों तक धरती की जड़ी-बूटियाँ खाती रही, घोड़े

को भी वही खिलाती रही और नदियों का पानी पीती रही। ग्यारहवें दिन वह एक सुखमय और सुरक्षित, समृद्ध शहर के पास पहुँची: सर्दी अपनी ठंड के साथ वहाँ से चली गई थी और बसंत अपने फूलों और गुलाबों के साथ आ गया था; उसके फूल देखने में सुंदर और आकर्षक थे, नदियाँ बह रही थीं और पक्षी चहचहा रहे थे। अब जब वह इस शहर में पहुँची और उसके द्वार के पास पहुँची, तो उसने वहाँ सैनिकों, अमीरों और निवासियों के सरदारों को पाया; और उन्हें इस प्रकार एकत्रित देखकर वह आश्चर्यचकित हुई और मन ही मन बोली, इस शहर के सभी लोग इसके द्वार पर एकत्रित हैं, और इसका कोई कारण अवश्य होगा। फिर वह उनकी ओर बढ़ी; और जब वह उनके पास पहुँची, तो सैनिक उससे मिलने के लिए आगे बढ़े और उतरकर उसके सामने ज़मीन चूमते हुए बोले, हे हमारे स्वामी सुल्तान, ईश्वर आपकी सहायता करे! बड़े अधिकारी उसके सामने पंक्तियों में खड़े हो गए और सैनिकों ने लोगों को व्यवस्थित किया और कहा, हे समस्त प्राणियों के सुल्तान, ईश्वर आपकी सहायता करे और आपके आगमन को मुसलमानों के लिए आशीर्वाद बनाए! हे युग के राजा, और इस युग और समय के अतुलनीय, ईश्वर आपको गौरव प्रदान करे! — तब ज़ुमुर्रुद ने उनसे कहा, हे इस नगर के लोगों, आपकी कहानी क्या है? दरबारी ने उत्तर दिया, निःसंदेह, जिसने कृपा करने में कंजूसी नहीं की, उसने आप पर कृपा की है और आपको इस नगर का सुल्तान और इसमें रहने वाले सभी लोगों का शासक बनाया है। जान लें कि इस नगर के निवासियों की यह प्रथा है कि जब उनका राजा मर जाता है और उसका कोई पुत्र नहीं होता, तो सैनिक नगर से बाहर निकलकर तीन दिन तक वहीं रहते हैं; और जिस रास्ते से तुम आई हो, उस रास्ते से जो भी व्यक्ति आता है, वे उसे अपना सुल्तान बना देते हैं। और ईश्वर की स्तुति हो जिसने तुर्कों के वंशजों में से एक सुंदर चेहरे वाले व्यक्ति को हमारे पास

भेजा; क्योंकि यदि तुमसे कम प्रतिष्ठित व्यक्ति हमारे पास आता, तो वह सुल्तान होता। — अब ज़ुमुर्रुद अपने सभी कार्यों में विवेकशील थी; इसलिए उसने कहा, मुझे तुर्कों के आम लोगों में से एक मत समझो: नहीं, मैं महान वंश की हूँ; लेकिन मैं अपने परिवार से क्रोधित थी, और उनसे अलग होकर चली गई; और देखो, सोने से भरे ये दो थैले जो मैं अपने साथ लाई हूँ, ताकि रास्ते भर गरीबों और जरूरतमंदों को दान दे सकूँ। यह सुनकर उन्होंने उसके लिए प्रार्थना की, और उसके आने पर अत्यंत प्रसन्न हुए; और वह भी उनसे प्रसन्न हुई। फिर उसने मन ही मन कहा, चूंकि मैंने यह प्राप्त कर लिया है, शायद ईश्वर मुझे एकजुट करेगा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.72%** है।

अली शेर और ज़मुर्रुद की कहानी। 407 मैं इस स्थान पर अपने स्वामी के साथ हूँ; क्योंकि वह जो चाहे कर सकता है। और वह सैनिकों के साथ आगे बढ़ी, जब तक कि वे शहर में प्रवेश नहीं कर गए, तब सैनिक उतरे और उसके आगे-आगे चलते हुए उसे महल में ले गए। वह वहाँ उतरी, और अमीरों और उच्चाधिकारियों ने उसे बगलों के नीचे से हाथों से पकड़कर सिंहासन पर बैठाया। तब उन सभी ने उसके सामने ज़मीन चूमी। और जब वह सिंहासन पर बैठी, तो उसने खजाने खोलने का आदेश दिया; और वे खोल दिए गए; और उसने सभी सैनिकों को उपहार दिए; जिस पर उन्होंने उसके शासनकाल की निरंतरता के लिए प्रार्थना की; और लोगों और प्रांतों के सभी निवासियों ने उसके अधिकार को स्वीकार किया। वह कुछ समय तक इसी प्रकार आदेश देती और मना करती रही, और उसकी उदारता और वर्जित चीजों से परहेज के कारण लोगों के दिलों में उसके प्रति अत्यधिक आदर का भाव उत्पन्न हो गया। उसने सीमा शुल्क माफ कर दिया, जेलों में बंद लोगों को रिहा कर दिया और अपनी प्रजा के कष्टों का

निवारण किया; जिससे सभी लोग उससे प्रेम करने लगे। परन्तु जब भी वह अपने स्वामी के बारे में सोचती, तो रो पड़ती और ईश्वर से उसके साथ मिलन कराने की प्रार्थना करती। एक रात, उसके बारे में और बीते दिनों के बारे में सोचते हुए, वह फूट-फूट कर रोई और ये दो श्लोक पढ़े: — तुम्हारे लिए मेरी चाहत, यद्यपि लंबे समय से है, फिर भी ताजा है; और आँसुओं ने मेरी आँखों को घायल कर दिया है और बढ़ते जा रहे हैं। जब मैं रोती हूँ, तो तीव्र प्रेम के दर्द से रोती हूँ; क्योंकि प्रेमी के लिए वियोग एक भयंकर पीड़ा है। और इन श्लोकों को समाप्त करके, उसने अपने आँसू पोंछे और मंडप में चली गई। फिर वह हरम में दाखिल हुई और दासियों और रखेलों के लिए अलग-अलग कमरे बनवाए, उन्हें भत्ते और सामान मुहैया कराए, और कहा कि वह एकांत में रहकर भक्ति में तल्लीन रहना चाहती है। उसने उपवास और प्रार्थना शुरू कर दी, जिससे अमीरों ने कहा, "यह सुल्तान तो वाकई अत्यंत धर्मपरायण है।" उसने अपने सेवा-कार्य के लिए केवल दो लड़कों को ही रखा। एक वर्ष तक वह अपने राज्य के सिंहासन पर बैठी रही, और उसे अपने स्वामी की कोई खबर नहीं मिली, न ही उसका कोई सुराग मिला। इससे वह व्याकुल हो गई, और उसकी व्याकुलता इतनी बढ़ गई कि उसने वज़ीरों और दरबारियों को बुलाया और उन्हें ज्यामितिज्ञों और शिल्पकारों को लाने का आदेश दिया, और यह भी आदेश दिया कि वे महल के नीचे उसके लिए एक मील लंबा और एक मील चौड़ा घुड़सवारी का मैदान बनाएँ। उन्होंने उसके आदेशानुसार बहुत कम समय में काम कर दिया, और घुड़सवारी का मैदान उसकी इच्छा के अनुरूप बना।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.48%** है।

 और जब यह पूरा हो गया, तो

वह उसमें उतरी। उसके लिए उसमें एक बड़ा मंडप लगाया गया था, अमीरों के लिए कुर्सियाँ लगाई गई थीं, और उसने आदेश दिया कि उस घुड़सवारी मार्ग में सभी प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजनों से सजी एक लंबी मेज लगाई जाए; और उन्होंने वैसा ही किया जैसा उसने आदेश दिया था। फिर उसने साम्राज्य के सरदारों को खाने का आदेश दिया; और उन्होंने खाया; जिसके बाद उसने अमीरों से कहा, मैं चाहती हूँ कि जब नया महीना शुरू हो, तो तुम ऐसा करो, और शहर में घोषणा करो कि कोई भी अपनी दुकान न खोले, बल्कि सभी लोग आएं और राजा के भोज में भोजन करें; और जो कोई भी इस आदेश के विपरीत कार्य करेगा, उसे उसके घर के द्वार पर लटका दिया जाएगा।28 इसलिए जब नया महीना शुरू हुआ, तो उन्होंने वैसा ही किया जैसा उसने उन्हें आदेश दिया था; और उन्होंने दूसरे वर्ष के पहले महीने के प्रारंभ तक इस प्रथा का पालन करना जारी रखा; जब ज़ुमुर्रुद घुड़सवारी मैदान में उतरी, और उद्घोषक ने घोषणा की, "हे सभी लोगों, जो कोई भी अपनी दुकान, भंडारगृह या घर खोलेगा, उसे तुरंत उसके घर के द्वार पर ही फाँसी दे दी जाएगी; क्योंकि तुम सब पर यह अनिवार्य है कि तुम राजा के भोज में शामिल हो जाओ!" और जब घोषणा समाप्त हुई, और मेज़ तैयार हो गई, तो लोग समूहों में आए, और उसने उन्हें मेज़ पर बैठने और सभी व्यंजनों को तृप्त होने तक खाने का आदेश दिया। तदनुसार, वे बैठ गए और उसने जैसा आदेश दिया था, वैसा ही खाया, जबकि वह अपने राज्य के सिंहासन पर बैठी उन्हें देख रही थी; और मेज़ पर बैठे प्रत्येक व्यक्ति ने मन ही मन कहा, "राजा केवल मुझे ही देख रहा है।" वे खाते रहे, और एमीरों ने लोगों से कहा, "खाओ, और लज्जित मत हो; क्योंकि राजा को तुम्हारा ऐसा करना पसंद है।" इसलिए वे तृप्त होने तक खाते रहे, और राजा के लिए प्रार्थना करते हुए चले गए। और उनमें से कुछ ने दूसरों से कहा, हमने अपने जीवन में इस सुल्तान की

तरह गरीबों से प्रेम करने वाला कोई सुल्तान नहीं देखा। उन्होंने उसके दीर्घायु के लिए प्रार्थना की; और वह अपने महल में लौट आई, अपनी बनाई योजना से प्रसन्न होकर, और मन ही मन बोली, यदि यह ईश्वर की इच्छा है (जिसका नाम महान है!), तो इस तरह मुझे अपने स्वामी अली-शेर का समाचार प्राप्त होगा। और जब दूसरा महीना शुरू हुआ, तो उसने हमेशा की तरह वही किया। उन्होंने मेज तैयार की, और ज़ुमुरुंद नीचे उतरी, और अपने सिंहासन पर बैठ गई, और लोगों को बैठने और खाने का आदेश दिया। और जब वह मेज के मुखिया पर बैठी थी, और लोग एक-एक करके बैठ रहे थे, तो उसकी नज़र ईसाई बरसूम पर पड़ी, जिसने उसके स्वामी का पर्दा खरीदा था; और उसने उसे पहचान लिया, और कहा, यह मेरे कष्टों के निवारण और मेरी इच्छा की पूर्ति की शुरुआत है। तब बरसूम आगे बढ़ा, और लोगों के बीच बैठ गया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.87%** है।

अली शेर और ज़मुरुंद की कहानी। -109 लोग खाने के लिए खड़े थे। उसने चीनी छिड़के हुए मीठे चावल की एक थाली देखी; लेकिन वह उससे दूर थी; इसलिए वह उसकी ओर बढ़ा, और हाथ बढ़ाकर उसे अपने सामने रख लिया। इस पर उसके बगल में खड़े एक आदमी ने उससे कहा, जो तुम्हारे सामने है, उसे तुम क्यों नहीं खाते? क्या यह तुम्हारे लिए शर्म की बात नहीं है? तुम दूर रखी चीज़ की ओर हाथ क्यों बढ़ाते हो? क्या तुम्हें शर्म नहीं आती? - लेकिन बरसूम ने उत्तर दिया, मैं इसके सिवा कुछ नहीं खाऊंगा। तो उस आदमी ने कहा, खाओ: अल्लाह तुम्हें इसमें आनंद न दे! और एक हशशश29 आदमी ने कहा, उसे खाने दो, ताकि मैं भी उसके साथ खा सकूं। लेकिन ऊपर बताए गए व्यक्ति ने उससे कहा, "हे सबसे अशुभ हशशश, यह तुम्हारा भोजन नहीं है, बल्कि यह अमीरों का भोजन

है; इसलिए इसे छोड़ दो ताकि यह उनके पास लौट जाए जिनका यह है, ताकि वे इसे खा सकें।" लेकिन बरसूम ने उसकी बात नहीं मानी: उसने उसमें से एक निवाला लिया और अपने मुँह में डाल लिया, और दूसरा निवाला लेने ही वाला था कि ज़ुमुरुंद ने उसे देखकर कुछ सैनिकों को बुलाया और उनसे कहा, "इस आदमी को मीठे चावल की थाली के सामने लाओ, और इसे अपने हाथ में रखा हुआ निवाला न खाने दो; बल्कि इसे अपने हाथ से फेंक दो।" तब चार सैनिक उसके पास आए और उसके हाथ से निवाला फेंकने के बाद उसे घसीटकर उसके मुँह के बल गिरा दिया; और उसे ज़ुमुरुंद के सामने खड़ा कर दिया। इस पर लोगों ने खाना छोड़ दिया; उनमें से एक दूसरे से कह रहा था, "अल्लाह की कसम, यह अन्याय था; क्योंकि इसने अपने वर्ग के लोगों के लिए उपयुक्त भोजन नहीं खाया।" दूसरे ने कहा, मैं अपने सामने मौजूद इस भोजन से संतुष्ट था। और तीसरे ने कहा, ईश्वर की स्तुति हो, जिसने मुझे कुछ भी खाने से रोका।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

27.29% है।

410 अली शेर और ज़ुमुर्रुद की कहानी। मीठे चावल के इस व्यंजन के लिए; मैं उसके सामने इसके रुकने और उसके इसका आनंद लेने की प्रतीक्षा कर रहा था, ताकि मैं भी उसके साथ खा सकूँ; लेकिन जो हमने देखा वही उसके साथ हुआ। और लोगों ने आपस में कहा, प्रतीक्षा करो, हम देखेंगे कि उसका क्या होगा। अब जब वे उसे रानी ज़ुमुर्रुद के सामने लाए, तो उसने उससे कहा, हे नीली आँखों वाले, तुझ पर धिक्कार! तेरा नाम क्या है, और तू हमारे देश में क्यों आया है? — और उस शापित ने अपना असली नाम बताने से इनकार कर दिया, और सफेद पगड़ी पहने हुए,31 उसने उत्तर दिया, हे राजा, मेरा नाम अली है, और मेरा व्यवसाय बुनकर का है, और मैं व्यापार के लिए इस शहर में आया हूँ। ज़ुमुर्रुद ने कहा, मेरे लिए एक भूगर्भीय पट्टिका और पीतल की कलम लाओ। और वे तुरंत उसकी माँगी हुई चीज़ें ले आए; और उसने भू-ज्योतिषीय पट्टिका और कलम ली, और भू-ज्योतिषीय क्रिया करते हुए कलम से एक बंदर जैसी आकृति बनाई; फिर उसने अपना सिर उठाया, और लंबे समय तक बर्सूम को ध्यान से देखा, और उससे कहा, हे कुत्ते, तू राजाओं से झूठ क्यों बोलता है? क्या तू ईसाई नहीं है, क्या तेरा नाम बर्सूम नहीं है, और क्या तू कुछ खोजने नहीं आया है? तो मुझे सच बता, वरना ईश्वर की महिमा की कसम, मैं तेरा सिर काट दूंगी! — और ईसाई व्याकुल हो गया; और उपस्थित अन्य राजा और सरदारों ने कहा, यह राजा भू-ज्योतिष से परिचित है। जिसने उसे यह ज्ञान दिया है, उसकी पूर्णता की प्रशंसा हो! — फिर उसने ईसाई को पुकार कर कहा, मुझे सच बता, वरना मैं तुझे नष्ट कर दूंगी! और ईसाई ने उत्तर दिया, क्षमा करें, हे युग के राजा! आपका भू-ज्योतिषीय पूर्वानुमान सही है; सबसे दूर का व्यक्ति एक ईसाई है। इसलिए उपस्थित अमीरों और अन्य लोगों ने भू-ज्योतिष द्वारा

सत्य का पता लगाने में राजा की सटीकता पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा, "यह राजा वास्तव में एक ऐसा ज्योतिषी है जिसका संसार में कोई सानी नहीं!" तब रानी ने आदेश दिया कि ईसाई की खाल उतारी जाए, उसकी खाल में भूसा भरकर उसे घुड़दौड़ के द्वार पर लटका दिया जाए, और शहर के बाहर एक गड्ढा खोदा जाए, जिसमें उसका मांस और हड्डियाँ जला दी जाएँ, और उसकी राख पर मिट्टी और मैल डाल दिया जाए। उन्होंने उत्तर दिया, "हम सुनते हैं और आज्ञा मानते हैं" और उन्होंने रानी के सभी आदेशों का पालन किया। जब लोगों ने ईसाई के साथ हुई घटना को देखा, तो उन्होंने कहा, "उसका दंड वही है जो उसके साथ हुआ है: और यह उसके लिए कितना दुर्भाग्यपूर्ण है!" उनमें से एक ने कहा, "यदि मैं यह प्रतिज्ञा तोड़ता हूँ तो मुझे तलाक हो जाएगा: मैं अपने जीवन में कभी मीठे चावल नहीं खाऊँगा!" 33 तब उस हशशश ने कहा, “ईश्वर की स्तुति हो जिसने मुझे उस विपत्ति से बचाया जो इस व्यक्ति पर आई है, क्योंकि उसने मुझे बचा लिया।”

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.34%** है।

अली शेर और ज़ुमुरुंद की कहानी। 41 1 उस चावल को खाओ! तब सभी लोग बाहर चले गए; और उन्हें उस ईसाई के स्थान पर मीठे चावल के सामने बैठने से मना कर दिया गया था। फिर, जब तीसरा महीना शुरू हुआ, तो उन्होंने हमेशा की तरह मेज लगाई, और उस पर व्यंजन रखे, और रानी ज़ुमुरुंद सिंहासन पर बैठीं, सैनिक प्रथागत तरीके से खड़े थे, लेकिन उनकी भयानक शक्ति से भयभीत थे। तब शहर के लोग हमेशा की तरह अंदर आए, और चावल के व्यंजन के स्थान की तलाश में मेज के चारों ओर गए; और उनमें से एक ने दूसरे से कहा, हे हाजी 34 खलफ! दूसरे ने उत्तर दिया, आपकी सेवा में, हे हाजी खालिद! और पहले वाले ने

कहा, मीठे चावल के व्यंजन से दूर रहो, और इसे खाने से सावधान रहो; क्योंकि यदि तुम इसे खाओगे तो तुम्हें फांसी दी जाएगी। फिर वे खाने के लिए मेज के चारों ओर बैठ गए; जब वे भोजन कर रहे थे और रानी ज़ुमुर्रुद सिंहासन पर बैठी थीं, तभी उनकी नज़र घुड़सवारी के द्वार से तेज़ी से अंदर आते एक व्यक्ति पर पड़ी। उन्होंने ध्यान से देखा तो पाया कि वह जवान कुर्दी था, वही डाकू जिसने सैनिक की हत्या की थी। उसके आने का कारण यह था: वह अपनी माँ को छोड़कर अपने साथियों के पास गया और उनसे कहा, "कल मुझे बहुत अच्छा माल मिला: मैंने एक सैनिक की हत्या की और उसका घोड़ा ले लिया; और उसी रात मुझे सोने से भरे दो थैले और एक ऐसी युवती मिली जिसका मूल्य थैलों में रखे सोने से भी अधिक है; और मैंने यह सारा माल अपनी माँ के साथ गुफा में रख दिया है।" यह सुनकर वे प्रसन्न हुए और दिन ढलने पर गुफा की ओर चल पड़े। जवान कुर्दी उनसे पहले गुफा में प्रवेश कर गया और वे उसके पीछे-पीछे गए; वह उन्हें वे चीजें देना चाहता था जिनके बारे में उसने उन्हें बताया था; लेकिन उसे वह स्थान वीरान मिला। इसलिए उसने अपनी माँ से मामले की सच्चाई जानने की कोशिश की, और उसने उसे सारी घटना बताई; यह सुनकर उसने पश्चाताप में अपने हाथ काट लिए,35 और कहा, अल्लाह की कसम, मैं इस निर्लज्ज स्त्री को ढूँढूँगा और उसे उसके ठिकाने से निकाल लाऊँगा, चाहे वह पिस्ता के छिलके में ही क्यों न हो, और मैं उससे अपना बदला लूँगा! तदनुसार, वह उसे खोजने के लिए निकल पड़ा, और आसपास के इलाकों में तब तक खोजता रहा जब तक कि वह रानी ज़ुमुर्रुद के शहर में नहीं पहुँच गया। और जब वह शहर में दाखिल हुआ, तो उसे वहाँ कोई आदमी नहीं मिला: इसलिए उसने खिड़कियों से झाँक रही कुछ महिलाओं से पूछा,38 और उन्होंने उसे बताया कि हर महीने की पहली तारीख को सुल्तान एक दावत देता है, और लोग उसमें खाने जाते

हैं; और उन्होंने उसे उस घुड़दौड़ के मैदान की ओर इशारा किया जहाँ मेज़ लगी होती है। इसलिए वह जल्दी से आगे बढ़ा, और जब उसे वहाँ कोई खाली जगह नहीं मिली तो

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.50%** है।

ऊपर बताए गए पकवान के ठीक सामने बैठने के अलावा, एक व्यक्ति वहाँ बैठ गया और, क्योंकि पकवान उसके सामने था, उसने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया। इस पर लोगों ने उसे पुकार कर कहा, हे हमारे भाई, तुम क्या करना चाहते हो? उसने उत्तर दिया, मैं इस पकवान को तब तक खाना चाहता हूँ जब तक मेरा पेट न भर जाए। उनमें से एक ने उससे कहा, यदि तू इसे खाएगा तो तुझे फाँसी दी जाएगी। परन्तु उसने उत्तर दिया, चुप रहो और ये शब्द मत बोलो। फिर उसने अपना हाथ पकवान की ओर बढ़ाया और उसे अपने सामने खींच लिया। ऊपर बताया गया हशशश उसके बगल में बैठा था और जब उसने जवान को पकवान को अपने सामने खींचते देखा, तो वह अपनी जगह से भाग गया; हशीशेह 37 का प्रभाव उसके सिर से तुरंत दूर हो गया और वह दूर जाकर बैठ गया और बोला, मुझे इस पकवान से कोई लेना-देना नहीं है। कुर्दी जवान ने अपना हाथ पकवान की ओर बढ़ाया, और वह कौवे के पैर जैसा लग रहा था; और उसने चावल को चम्मच से निकाला, और उसे ऊँट के पैर की तरह आगे बढ़ाया।33 फिर उसने मुट्ठी भर चावल को दबाकर गेंद का आकार दिया, जिससे वह एक बड़े संतरे जैसा हो गया; उसने उसे तेज़ी से अपने मुँह में डाला, और वह उसके गले में उतर गया, जिससे गरज जैसी आवाज़ हुई; और थाली का तल जहाँ से निकाला गया था, वहीं दिखाई दिया। तब उसके पास खड़े एक आदमी ने उससे कहा, ईश्वर की स्तुति हो, जिसने मुझे तेरे सामने मांस का व्यंजन नहीं बनाया; क्योंकि तूने एक

ही निवाले में थाली को खाली कर दिया! और हशशश ने कहा, उसे खाने दो; क्योंकि मुझे उसमें फाँसी पर लटकाए गए व्यक्ति की आकृति दिखाई देती है। फिर उसकी ओर देखकर उसने उससे कहा, खाओ; ईश्वर तुझे सुख न दे! और जवान ने चावल लेने के लिए अपना हाथ बढ़ाया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.26%** है।

'अल्क्क शेख और ज़िलतुक्कुद की कहानी। दूसरा निवाला लेते हुए, वह उसे पहले निवाले की तरह गेंद का आकार देने ही वाला था कि रानी ने कुछ सैनिकों को बुलाया और उनसे कहा, "उस आदमी को जल्दी लाओ, और उसे उसके हाथ में जो निवाला है उसे खाने मत दो।" सैनिक दौड़कर उसके पास गए, जबकि वह थाली पर सिर झुकाए हुए था, और उन्होंने उसे पकड़कर रानी ज़ुमुर्रुद के सामने पेश कर दिया। इस पर लोग उस पर खुशी मनाने लगे और आपस में कहने लगे, "यह सचमुच इसके लायक है; क्योंकि हमने उसे अच्छी सलाह दी थी, और उसने उसका पालन नहीं किया। यह जगह उस व्यक्ति के वध के लिए नियत है जो इसमें बैठता है,

और वह चावल हर उस व्यक्ति के लिए अशुभ है जो इसे खाता है।" तब रानी ज़ुमुर्रुद ने उससे पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है, तुम्हारा पेशा क्या है, और तुम हमारे शहर में क्यों आए हो?" — हे हमारे स्वामी सुल्तान, उसने उत्तर दिया, मेरा नाम उस्मान है, और मेरा पेशा माली का है, और इस शहर में आने का कारण यह है कि मैं अपनी खोई हुई वस्तु की खोज में भटक रहा हूँ। रानी ने कहा, मुझे भूगर्भीय पट्टिका लाओ। तो उन्होंने उसे रानी के सामने रख दिया; और रानी ने कलम उठाई, और भूगर्भीय विद्या का अभ्यास करके कुछ देर उस पर मनन किया; जिसके बाद उसने अपना सिर उठाया और उससे कहा, हे दुष्ट! तुझ पर धिक्कार हो! तू राजाओं से झूठ कैसे बोलता है? इस भूगर्भीय विद्या के प्रयोग से मुझे पता चला है कि तेरा नाम जवान कुर्दी है, और तेरा पेशा डाकू का है, कि तू अन्यायपूर्ण तरीकों से लोगों की संपत्ति छीनता है, और उस आत्मा का वध करता है जिसे ईश्वर ने उचित कारण के अलावा मारने से मना किया है। — फिर उसने उसे पुकार कर कहा, हे सूअर, मुझे अपनी सच्ची कहानी बताओ, वरना मैं तेरा सिर काट दूँगी! जब उसने रानी की बातें सुनीं, तो उसका चेहरा पीला पड़ गया, उसके दाँत दिखने लगे, और यह सोचकर कि सच बोलने से वह बच जाएगा, उसने उत्तर दिया, “हे राजा, आपने सत्य कहा है; परन्तु मैं अब से आपके सामने पश्चाताप करता हूँ और उस ईश्वर की शरण में लौटता हूँ जिसका नाम महान है!” रानी ने उससे कहा, “मुसलमानों के मार्ग में किसी साँप को छोड़ना मेरे लिए उचित नहीं है।” और उसने अपने कुछ सेवकों से कहा, “इसे ले जाओ और इसकी खाल उतार दो, और इसके साथ वैसा ही करो जैसा तुमने पिछले महीने इसी तरह के एक के साथ किया था।” तो उन्होंने वैसा ही किया जैसा रानी ने उन्हें आज्ञा दी थी। और जब उस व्यक्ति ने सैनिकों को उस आदमी को पकड़ते देखा, तो उसने चावल की थाली की ओर पीठ फेर ली और कहा,

"निःसंदेह, आपके सामने अपना चेहरा करना मेरे लिए कुटिल है!" और जैसे ही उन्होंने खाना समाप्त किया, वे तितर-बितर हो गए और अपने-अपने घरों को चले गए: रानी भी अपने महल में गई और उन लोगों को भी तितर-बितर होने की अनुमति दे दी। और जब चौथा महीना शुरू हुआ, तो वे नीचे उतर गए।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.44%** है।

114 अली शेर और ज़ुमुर्रत्जेड की कहानी। रानी हमेशा की तरह घुड़सवारी के मैदान में आईं और भोज तैयार किया, और लोग अनुमति की प्रतीक्षा में बैठे रहे। तभी रानी पास आईं और सिंहासन पर बैठ गईं, उन्हें देखते हुए; उन्होंने देखा कि चावल की थाली के सामने चार लोगों के बैठने की जगह खाली थी; जिस पर उन्हें आश्चर्य हुआ। और जब वह चारों ओर देख रही थीं, तो उन्होंने एक आदमी को घुड़सवारी के मैदान के द्वार से तेज़ कदमों से प्रवेश करते देखा, और वह तब तक चलता रहा जब तक कि वह मेज पर नहीं रुक गया, जहाँ उसे चावल की थाली के सामने के अलावा कोई जगह खाली नहीं मिली। इसलिए वह वहाँ बैठ गया; और रानी ने उसे ध्यान से देखा, और पाया कि वह वही ईसाई था जिसने अपना नाम रशीद-ए-दीन रखा था; जिस पर उन्होंने मन ही मन कहा, यह भोज कितना सौभाग्यशाली है, जिसके द्वारा यह काफिर फँस गया है! — अब उसके आने का कारण अद्भुत था; और वह यह था। जब वह अपनी यात्रा से लौटा, तो उसके घरवालों ने उसे बताया कि ज़ुमुर्रुद लापता हो गई है, साथ ही पैसों से भरे दो थैले भी। यह सुनकर उसने अपने कपड़े फाड़ डाले, अपना चेहरा पीट लिया और अपनी दाढ़ी नोच ली। फिर उसने अपने भाई बारसूम को आसपास के इलाकों में उसकी तलाश करने भेजा; और जब वह उसकी खबर का इंतज़ार करते-करते थक गया, तो वह खुद

अपने भाई और ज़ुमुरुंद की तलाश में प्रांतों में निकल पड़ा, और नियति उसे ज़ुमुरुंद के शहर ले गई। वह महीने के पहले दिन उस शहर में पहुँचा, और जब वह उसकी मुख्य सड़कों पर चला, तो उसने उन्हें सुनसान पाया, दुकानें बंद देखीं और औरतें खिड़कियों पर बैठी थीं; इसलिए उसने उनमें से कुछ से इस बारे में पूछा, और उन्होंने उसे बताया कि राजा हर महीने की पहली तारीख को सभी लोगों के लिए एक दावत देता है, और सभी उसमें शामिल होते हैं; कोई भी अपने घर या दुकान में नहीं बैठ पाता; और उन्होंने उसे घुड़दौड़ के मैदान की ओर जाने का रास्ता बताया। घुड़दौड़ के मैदान में प्रवेश करते ही उसने देखा कि लोग भोजन के चारों ओर भीड़ लगाए बैठे हैं, और चावल की प्रसिद्ध थाली के सामने वाली जगह को छोड़कर कोई भी जगह खाली नहीं थी। इसलिए वह वहीं बैठ गया और चावल खाने के लिए हाथ बढ़ाया; तभी रानी ने कुछ सैनिकों को बुलाया और कहा, "उस व्यक्ति को लाओ जो चावल की थाली के सामने बैठा है।" वे उसे पहले भी इसी तरह की घटनाओं से पहचान चुके थे, इसलिए उन्होंने उसे पकड़ लिया और रानी ज़ुमुरुद के सामने खड़ा कर दिया, जिसने उससे कहा, "धिक्कार है तुम पर! तुम्हारा नाम क्या है, तुम्हारा पेशा क्या है, और तुम हमारे शहर में क्यों आए हो?" उसने उत्तर दिया, "हे युग के राजा, मेरा नाम रुस्तम है, और मेरा कोई पेशा नहीं है, क्योंकि मैं एक गरीब दरवेश हूँ।" रानी ने अपने सेवकों से कहा, "मुझे ज्योतिष की पट्टिका और पीतल की कलम लाओ।" तो वे उसे वह सब ले आए जो उसने माँगा था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.49%** है।

अली शेर और ज़मुरुंद की कहानी। 415 हमेशा की तरह: और उसने कलम उठाई, और उससे तख्ती पर कुछ निशान बनाए, और कुछ देर तक

उसे निहारती रही: फिर अपना सिर उठाकर उसकी ओर देखते हुए उसने कहा, हे कुत्ते, तू बादशाहों से झूठ क्यों बोलता है? तेरा नाम रशीद-ए-दीन ईसाई है, और तेरा काम मुसलमानों की दासियों के विरुद्ध चालें चलना और उन्हें पकड़ना है; और तू बाहरी रूप से मुसलमान है, परन्तु हृदय से ईसाई है। तो सच बता; क्योंकि यदि तू नहीं बताएगा, तो मैं तेरा सिर काट दूंगी। — और वह उत्तर देने में झिझका • परन्तु बाद में बोला, हे युग के राजा, तूने सत्य कहा है। अतः उसने आदेश दिया कि उसे ज़मीन पर लिटाया जाए, और उसके प्रत्येक पैर पर सौ कोड़े और उसके शरीर पर एक हज़ार कोड़े मारे जाएँ; और उसके बाद, उसकी खाल उतारकर उसमें सन की सख्त पत्तियां भर दी जाएं; फिर शहर के बाहर एक गड्ढा खोदा जाए और उसके शरीर को उसमें जला दिया जाए, और उसकी राख पर मिट्टी और मैल डाल दिया जाए। और उन्होंने वैसा ही किया जैसा उसने उन्हें आज्ञा दी थी। इसके बाद, उसने लोगों को खाने की अनुमति दी, और जब वे खा कर अपने-अपने रास्ते चले गए, तो रानी ज़ुमुरुद अपने महल में गईं और बोलीं, "ईश्वर की स्तुति हो जिसने मुझे दंडित करने वालों को दंडित करके मेरे हृदय को शांति दी है!" और उसने धरती और आकाश के रचयिता का धन्यवाद किया। फिर उसे अपने स्वामी अली शेर की याद आई, और वह फूट-फूटकर रोई; जिसके बाद, होश में आकर, उसने मन ही मन कहा, "शायद ईश्वर, जिसने मुझे मेरे शत्रुओं पर शक्ति दी है, मुझे मेरे प्रियतम की वापसी प्रदान करे।" उसने ईश्वर से क्षमा मांगी (जिसकी शक्ति और महिमा सर्वोपरि है!) और कहा, शायद ईश्वर जल्द ही मुझे मेरे प्रिय अली शेर से मिला देंगे, क्योंकि वह जो चाहे कर सकते हैं और कृपालु हैं।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.80%** है।

416 'अली शेल्ट और ज़ुमुक्कुड की कहानी। अपने सेवकों से बात की और उनकी स्थिति से अवगत हुई। उसने फिर से ईश्वर की स्तुति की, क्षमा के लिए प्रार्थना जारी रखी और भाग्य के मार्ग के प्रति समर्पित हो गई, इस विश्वास के साथ कि हर वह चीज़ जिसका आरंभ होता है, उसका अंत अवश्य होता है; और कवि के इस कथन का पाठ किया: - अपनी स्थिति को शांत मन से सहन करो; क्योंकि सब कुछ ईश्वर के हाथ में है; और जो निषिद्ध है वह तुम्हारे साथ नहीं होगा, और जो नियत है वह तुम्हारे साथ घटित होने से नहीं चूकेगा। वह उस पूरे महीने दिन में लोगों का न्याय करने, आदेश देने और मना करने में और रात में अपने प्रिय 'अली शेल्ट के वियोग पर रोने और विलाप करने में व्यस्त रही; और जब अगला महीना शुरू हुआ, तो उसने हमेशा की तरह घुड़सवारी के मैदान में मेज लगाने का आदेश दिया और लोगों के आगे बैठ गई। वे खाने के लिए उसकी अनुमति की प्रतीक्षा कर रहे थे, और चावल की थाली के सामने की जगह खाली थी; और जब वह मेज के सिर पर बैठी थी, तो उसकी निगाहें घुड़सवारी के

द्वार पर टिकी हुई थीं, ताकि वह उसमें प्रवेश करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को देख सके। और उसने मन ही मन कहा, हे प्रभु, जिसने यूसुफ को याकूब के पास लौटाया और अयूब के कष्ट को दूर किया, हे प्रभु, अपनी शक्ति और महानता से मुझे मेरे स्वामी अली शेर को लौटाकर कृपा प्रदान करो; क्योंकि तू सब कुछ पूरा करने में सक्षम है! हे समस्त प्राणियों के स्वामी! हे भटके हुओं के मार्गदर्शक! हे पुकार सुनने वाले! हे प्रार्थनाओं का उत्तर देने वाले! हे समस्त प्राणियों के स्वामी, मेरी प्रार्थना सुनो! — और उसकी प्रार्थना अभी समाप्त भी नहीं हुई थी कि घुड़सवारी के द्वार से एक व्यक्ति प्रवेश किया, जिसका शरीर पूर्वी विलो की शाखा के समान था; परन्तु वह दुबला-पतला था और उसके चेहरे पर पीलापन दिखाई दे रहा था: वह सबसे सुंदर युवक था, विवेक और शिष्टाचार में परिपूर्ण था। जब वह अंदर आया, तो उसे चावल की थाली के सामने वाली जगह के अलावा कोई जगह खाली नहीं मिली; इसलिए वह वहीं बैठ गया; और जब ज़ुमुर्रुद ने उसे देखा, तो उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। उसने उसे गौर से देखा, और उसे स्पष्ट हो गया कि वह उसका मालिक अली शेर है, और वह खुशी से ज़ोर से चिल्लाना चाहती थी; लेकिन उसने लोगों के बीच खुद को शर्मिंदा होने के डर से अपने मन को शांत किया: उसके भीतर दया का भाव उमड़ आया, और उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था; फिर भी उसने अपने मन की बात छुपा ली। — और अली शेर के आने का कारण यह था: — जब वह मस्तबा पर सो रहा था, और ज़ुमुर्रुद नीचे उतरी, और कुर्दी जवान उसे ले गया, तो वह बाद में जागा, और खुद को बिना ढके सिर के पाया; इसलिए वह समझ गया कि कोई आदमी उसके पास गलत तरीके से आया था, और सोते समय उसकी पगड़ी ले गया था। उसने वह वाक्य कहा जो कहने वाले की रक्षा करता है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

27.45% है।

भ्रमित होने से; अर्थात्, निश्चय ही हम ईश्वर के हैं, और निश्चय ही हम उसी के पास लौटेंगे! फिर वह उस बूढ़ी औरत के पास लौटा जिसने उसे ज़ुमुर्रुद की स्थिति से अवगत कराया था, और उसके द्वार पर दस्तक दी; जिस पर वह उसके पास आई; और वह उसके सामने तब तक रोता रहा जब तक कि वह बेहोश होकर गिर नहीं गया। और जब वह संभला तो उसने उसे अपने साथ घटी सारी घटना बताई; यह सुनकर उसने उसे दोषी ठहराया, और उसके किए के लिए उसे कड़ी फटकार लगाई, और उससे कहा, निश्चय ही तेरी विपत्ति और दुर्भाग्य तूने स्वयं ही उत्पन्न किया है। उसने उसे तब तक दोषी ठहराना बंद नहीं किया जब तक कि उसकी नाक से पानी बहने लगा, और वह फिर से बेहोश होकर गिर पड़ा; और जब वह बेहोशी से उबर गया तो उसने बूढ़ी औरत को अपने कारण रोते हुए, आँसू बहाते हुए, और व्यथा में देखा; और उसने ये दो आयतें पढ़ीं: — प्रेमियों के लिए विरह कितना कड़वा है, और उनके लिए मिलन कितना मधुर है! ईश्वर सभी बिछड़े प्रेमियों को मिलाए और मेरी रक्षा करे, क्योंकि मैं भी उन्हीं में से एक हूँ!40 बुढ़िया उसके लिए शोक मना रही थी और उससे बोली, तुम यहीं बैठो, मैं तुम्हारे लिए खबर पता कर लेती हूँ और जल्दी लौट आती हूँ। उसने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। फिर वह उसे छोड़कर चली गई और दोपहर तक उससे दूर रही, फिर लौटकर उसके पास आई।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.29%** है।

418 अली शेर और ज़ुमुर्रुद की कहानी। कहा, हे अली, मैं केवल यही कल्पना करता हूँ कि तुम अपने शोक में मर जाओगे; क्योंकि तुम अपने प्रियतम को सिरात नदी के सिवा फिर कभी नहीं देख पाओगे; 41 क्योंकि जब तंबू के लोग सुबह उठे, तो उन्होंने बगीचे की ओर खुलने वाली खिड़की को अपनी जगह से हटा हुआ पाया, और ज़ुमुर्रुद गायब थी, और उसके साथ ईसाई के धन से भरे दो थैले भी गायब थे; और जब मैं वहाँ पहुँचा, तो मैंने वाल्से को अपने अधिकारियों के साथ तंबू के द्वार पर खड़ा

पाया; और परमेश्वर, सर्वोच्च, महान के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है! — अब जब अली शेर ने उससे ये शब्द सुने, तो उसके चेहरे का प्रकाश अंधकार में बदल गया; वह जीवन से निराश हो गया, और मृत्यु को निश्चित मान लिया, और तब तक रोता रहा जब तक कि वह फिर से बेहोश होकर गिर नहीं पड़ा; और जब वह बेहोशी से उबर गया, तो प्रेम और विरह ने उसे इतना सताया कि वह एक गंभीर बीमारी से ग्रसित हो गया, और अपने घर में ही कैद हो गया। हालाँकि, बूढ़ी औरत पूरे एक साल तक उसके लिए चिकित्सकों को लाती रही, उसे पेय पदार्थ देती रही, और उसके लिए दलिया बनाती रही, जब तक कि उसकी आत्मा उसे वापस नहीं मिल गई। और जब दूसरा वर्ष शुरू हुआ, तो बूढ़ी औरत ने उससे कहा, हे मेरे पुत्र, यह उदासी और शोक जो तू सह रहा है, तुझे तेरी प्रेमिका वापस नहीं दिलाएगा: तो उठ, हिम्मत जुटा, और आसपास के इलाकों में उसकी खोज कर; शायद तू उससे मिल जाए उसके बारे में खबर लेकर। और वह उसे प्रोत्साहित करती रही और उसका हौसला बढ़ाती रही, जब तक कि वह खुश नहीं हो गया; उसने उसे स्नान कराया, उसे शराब पिलाई और मुर्गे खिलाए। इस प्रकार उसने एक महीने तक प्रतिदिन किया, जब तक कि वह स्वस्थ नहीं हो गया और अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। वह तब तक चलता रहा जब तक कि वह ज़ुमुर्रुद नगर नहीं पहुँच गया। घुड़दौड़ के मैदान में प्रवेश करके, वह मेज पर बैठ गया और खाने के लिए हाथ बढ़ाया; इस पर लोगों ने उसके लिए शोक व्यक्त किया और उससे कहा, हे युवक, यह भोजन मत खाओ; क्योंकि जो इसे खाएगा उस पर विपत्ति आएगी। लेकिन उसने उत्तर दिया, मुझे इसे खाने दो, और उन्हें मेरे साथ जो चाहें करने दो: शायद मुझे इस थकाऊ जीवन से मुक्ति मिल जाए। फिर उसने पहला निवाला खाया; और ज़ुमुर्रुद ने उसे अपने सामने लाने की इच्छा व्यक्त की; लेकिन उसके मन में आया

कि वह भूखा हो सकता है: इसलिए उसने मन ही मन कहा, यह उचित है। मैंने उसे तब तक खाने दिया जब तक वह तृप्त न हो जाए। इसलिए वह खाता रहा; और लोग उसकी हालत देखकर हैरान रह गए, यह देखने के लिए कि उसका क्या होगा। और जब उसने खाकर तृप्त हो गया, तो उसने कुछ हिजड़ों से कहा, उस युवक के पास जाओ जो चावल खा रहा है, और उसे विनम्रतापूर्वक लाओ, और उससे कहो, राजा के बुलावे का उत्तर दो, एक छोटे से प्रश्न का उत्तर दो। तो उन्होंने कहा, हम सुनते हैं और आज्ञा मानते हैं: — और वे उसके पास चले गए।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.31%** है।

अली शेर और ज़ुमुर्रुद की कहानी। 41'जे और, उसके सिर के ऊपर खड़े होकर, उसने उससे कहा, हे हमारे स्वामी, कृपा करके राजा के बुलावे का उत्तर दें, और अपने हृदय को उदार बनाएँ। उसने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ: — और वह हिजड़ों के साथ चला गया; जबकि लोग आपस में कह रहे थे, सर्वोच्च, महान परमेश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है! राजा उसके साथ क्या करेगा? — लेकिन उनमें से कुछ ने कहा, वह उसके साथ केवल भलाई ही करेगा; क्योंकि यदि उसका इरादा उसे हानि पहुँचाने का होता, तो उसने उसे तृप्त होने तक खाने नहीं दिया होता। — और जब वह ज़ुमुर्रुद के सामने खड़ा हुआ, तो उसने प्रणाम किया, और उसके सामने ज़मीन चूमी; और उसने भी उसके प्रणाम का उत्तर दिया, उसका सम्मानपूर्वक स्वागत किया, और उससे कहा, तुम्हारा नाम क्या है, तुम्हारा व्यवसाय क्या है, और इस नगर में आने का तुम्हारा कारण क्या है? तब उसने उत्तर दिया, "हे राजा, मेरा नाम अली शेर है, मैं व्यापारियों के वंश से हूँ, मेरा देश खुरासान है, और मैं इस नगर में अपनी खोई हुई दासी को खोजने आया हूँ। वह मुझे मेरी आँखों और

कानों से भी अधिक प्रिय थी, और जबसे वह खोई है, मेरा प्राण उसी के लिए व्याकुल है। यही मेरी कहानी है।” — तब वह इतना रोया कि बेहोश हो गया; तब रानी ने उसके चेहरे पर गुलाब जल छिड़कने का आदेश दिया; और उन्होंने ऐसा तब तक किया जब तक वह संभल नहीं गया। तब रानी ने कहा, “मेरे लिए भू-ज्योतिषीय पट्टिका और पीतल की कलम लाओ।” तब वे उन्हें ले आए; और रानी ने कलम लेकर भू-ज्योतिषीय क्रिया की, कुछ देर तक उस पर विचार किया, और फिर उससे कहा, “तुमने सत्य कहा है। ईश्वर तुम्हें उससे शीघ्र ही मिला देगा; इसलिए चिंता मत करो।” फिर उसने दरबारी को आदेश दिया कि उसे स्नान के लिए ले जाए, उसे राजाओं के वस्त्र पहनाए, उसे अपने सबसे उत्तम घोड़ों में से एक पर बिठाए, और उसके बाद दिन ढलने पर उसे महल में ले आए। दरबारी ने उत्तर दिया, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ" और उसे उसके सामने से ले जाकर चला गया। लोगों ने आपस में कहा, "राजा ने इस युवक के साथ इतना अच्छा व्यवहार क्यों किया?" एक ने कहा, "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि वह उसे कोई हानि नहीं पहुँचाएगा? क्योंकि उसका रूप सुंदर है; और राजा के संतुष्ट होने तक प्रतीक्षा करने से मुझे यह पता चल गया था।" और उनमें से प्रत्येक ने कुछ न कुछ कहा। फिर लोग तितर-बितर हो गए और अपने-अपने रास्ते चले गए। ज़ुमुर्रुद को मुश्किल से विश्वास हो रहा था कि वह रात निकट आ रही है जब वह अपने प्रियतम के साथ अकेली होगी। और जैसे ही रात हुई, वह अपने कमरे में गई और अपने प्रियतम 'अली शेर' को संदेश भेजा। जब वे उसे लेकर आए, तो उसने उसके सामने ज़मीन चूमी और उसके लिए प्रार्थना की; और उसने मन ही मन कहा, मुझे कुछ देर उससे मज़ाक करना चाहिए, बिना खुद को उसके सामने प्रकट किए। तो उसने कहा, हे 'अली,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

27.46% है।

420 अली शिफिल और ज़मुर्रुद की कहानी: क्या तुम स्नान करने गए हो? उसने उत्तर दिया, हाँ, हे मेरे स्वामी। और उसने कहा, उठो, इस मुर्गे और मांस को खाओ, और चीनी और शराब का यह शरबत पियो; क्योंकि तुम थके हुए हो; और उसके बाद इधर आओ। उसने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ: और उसने वैसा ही किया जैसा उसने उसे आज्ञा दी थी; और जब उसने खाना-पीना समाप्त कर लिया, तो उसने उससे कहा, मेरे पास आओ, और मेरे पैर मल दो। 42 इसलिए उसने उसके पैर और टांगें मलना शुरू किया, और उन्हें रेशम से भी कोमल पाया। और कुछ देर तक उससे मजाक करने के बाद, उसने कहा, हे मेरे स्वामी, क्या यह सब हुआ है, और क्या तुम मुझे नहीं जानते? उसने पूछा, और तुम कौन हो, हे राजा? और उसने उत्तर दिया, मैं तुम्हारी दासी ज़मुर्रुद हूँ। जब उसे यह पता चला, तो उसने उसे चूमा और गले लगाया, मानो शेर भेड़ पर टूट पड़ता है। अगली सुबह ज़ुमुर्रुद ने सभी सैनिकों और साम्राज्य के सरदारों को संदेश भेजा और उन्हें बुलाया, और उनसे कहा, मैं इस व्यक्ति के नगर की यात्रा करना चाहता हूँ। इसलिए, मेरे लौटने तक आप अपने बीच अधिकार संभालने के लिए एक वायसराय चुन लें। उन्होंने उत्तर दिया, हम सुनते हैं और आज्ञा मानते हैं। तब वह यात्रा के लिए आवश्यक सामान, जैसे भोजन, धन, अन्य आपूर्ति, दुर्लभ वस्तुएँ, ऊँट और खच्चर, तैयार करने लगी और नगर से निकल पड़ी; और वह उसके साथ तब तक यात्रा करती रही जब तक वह अली शेर के नगर नहीं पहुँच गई, जहाँ वह अपने निवास में प्रवेश कर गया और उपहार, दान और भेंट दिए। उसे उससे संतान का आशीर्वाद प्राप्त हुआ, और वे दोनों अत्यंत सुख में रहे जब तक कि उनके सुखों का अंत करने वाली और साथियों को अलग करने वाली मृत्यु ने उन्हें अपने वश में नहीं कर लिया। - शाश्वत की पूर्णता

की महिमा हो; और हर मामले में ईश्वर की स्तुति हो!

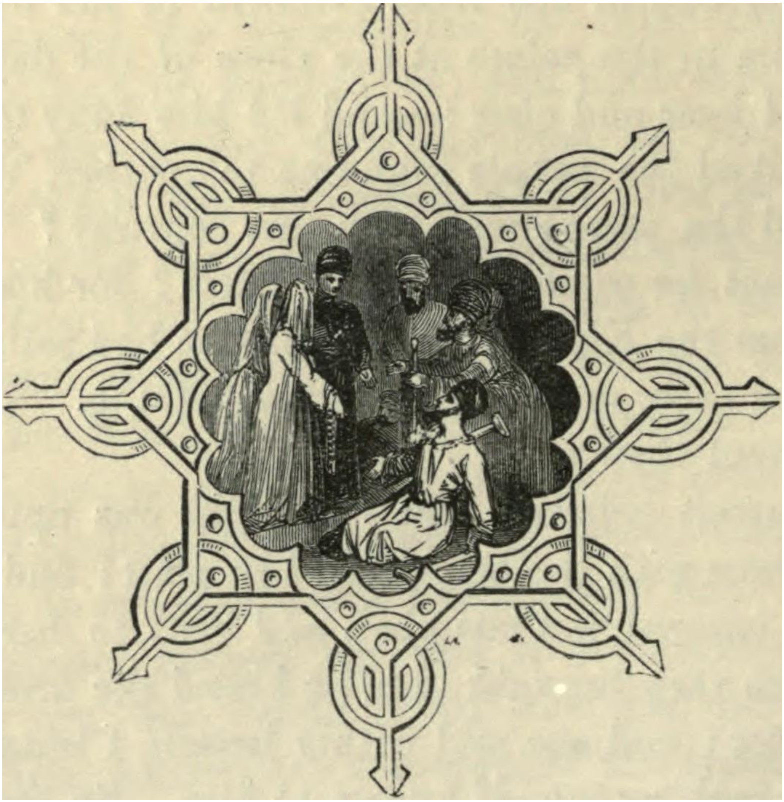

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.89%** है।

पंद्रहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। टिप्पणी 1. यद्यपि इस कहानी के दृश्य खुरासान और उसके आसपास के कुछ इलाकों में हैं, जो फारस के उत्तर या उत्तर-पूर्व में स्थित हैं, फिर भी इसका स्वरूप पूरी तरह अरबी है। टिप्पणी 2. "मेज्द-ए-दीन" का अर्थ है "धर्म की महिमा"। टिप्पणी 3. अली स्लीद्र के इस पहले उल्लेख के समय, जिस संस्करण से मैं अनुवाद कर रहा हूँ, उसमें उपनाम (शेर) छोड़ दिया गया है; अर्थात्, काहिरा संस्करण। जैसा कि वहाँ बाद में लिखा गया है, इस उपनाम का उच्चारण या तो "शार" या (जिसे "इमालेह" कहा जाता है) "शेर" हो सकता है; लेकिन बाद

वाला उच्चारण बेहतर है, क्योंकि यह शब्द स्पष्ट रूप से फारसी "शेर" है, जिसका अर्थ है "शेर"। ब्रेस्लाउ के संस्करण में यह "शीर" या "शेयर" है। टिप्पणी 4. यह दोहा पहले भी आ चुका है: इसी प्रकार छठा दोहा भी, थोड़े से बदलाव के साथ, और आठवां दोहा, और मेरे मूल पाठ में एक दोहा है जिसे मैं छोड़ रहा हूँ क्योंकि यह आठवें दोहे के समान है, जो इसके तुरंत बाद आता है। इस कृति के खंड I, पृष्ठ 240, 334 देखें; और (जिस दोहे को मैं छोड़ रहा हूँ उसके लिए) इस खंड में पृष्ठ 57 देखें। इस अंतिम दोहे के लिए भी, थोड़े से बदलाव के साथ, खंड I, पृष्ठ 240 देखें। टिप्पणी 5. जो व्यक्ति केवल एक टाइलिंग का स्वाद चखता है, उसे उसमें मिठास लग सकती है, जबकि वह दिल से कड़वी होती है। मूल पाठ में "ढाका" को रचनाकार की गलती से "ढाका" लिख दिया गया है।1 टिप्पणी 6. अध्याय 10 की टिप्पणी 42 देखें। टिप्पणी 7. "ज़मनुरुद" का अर्थ "पन्ना" है। टिप्पणी 8. "रशीद-ए-दीन" का अर्थ, इस संदर्भ में, "धर्म में सही दिशा में निर्देशित" या "रूढ़िवादी" है। टिप्पणी 9. आम तौर पर अरबों में नीली आँखों के प्रति पूर्वाग्रह होता है; कहा जाता है कि यह पूर्वाग्रह उनके कुछ उत्तरी शत्रुओं में नीली आँखों वाले व्यक्तियों की बड़ी संख्या के कारण उत्पन्न हुआ है। टिप्पणी 10. वह बूढ़े आदमी की मूंछों की तुलना रुई से करती है, जिसके साथ... (मेरे शेख द्वारा हाशिये पर टिप्पणी)।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.66%** है।

अध्याय पंद्रह के लिए 422 टिप्पणियाँ। शव के नथुने आदि में रुई भरी जाती है (अध्याय 6 की टिप्पणी 11 के दूसरे अनुच्छेद को देखें)। इससे प्रतीत होता है कि अरब कभी-कभी शव के मुंह में रुई भर देते हैं; लेकिन मैंने उन्हें ऐसा करते कभी नहीं सुना। टिप्पणी 11. गर्दन के पीछे थप्पड़ मारना एक आम अरब रिवाज है, जैसे इंग्लैंड में चेहरे पर थप्पड़ मारना या कान खींचना; और जूते या चप्पल से मारना एक अरब द्वारा दी जाने वाली सबसे बड़ी अपमानजनक बातों में से एक है। — जिस श्लोक का यह उल्लेख करता है, मेरे मूल पाठ में, उसके तुरंत बाद एक ऐसा श्लोक है जो अनुवाद करने योग्य नहीं है। टिप्पणी 12. पैगंबर ने बालों को काला रंगने से मना किया था। — मिश्कात अल मसाबीह, खंड 2 देखें। पृष्ठ 360 और 362. टिप्पणी 13. यहाँ जिन कठपुतलियों का उल्लेख किया गया है, वे "चीनी छाया" नामक प्रदर्शन के प्रदर्शक हैं, जो अरब और अन्य पूर्वी देशों में प्रचलित है। टिप्पणी 14. अध्याय 5 की टिप्पणी 81 देखें। टिप्पणी 15. "सेल्सेबील" स्वर्ग में एक फव्वारे का नाम है। टिप्पणी 16. अध्याय 8 की टिप्पणी 53 देखें। टिप्पणी 17. अध्याय 3 की टिप्पणी 48 देखें। टिप्पणी 18. वर्तमान समय में अरबों द्वारा लेखन की सात

अलग-अलग शैलियों का उपयोग किया जाता है। हर्बिन ने अपनी पुस्तक "डेवेलपमेंट्स डेस प्रियूसीप्स डे ला लैंगुए अराबे मॉडर्न" के अंत में "ओरिएंटल कैलीग्राफी पर एक निबंध" में इनका विवरण और नमूने दिए हैं। टिप्पणी 19. हरम के व्यवसायों पर। पति या स्वामी की सेवा, बच्चों की देखभाल और अन्य अनिवार्य घरेलू कर्तव्यों के अलावा, पत्नी या रखैल का सबसे महत्वपूर्ण काम सूत कातना, कताई या कढ़ाई करना होता है। पैगंबर ने कहा, "महिलाओं के लिए एक घंटे तक तकली चलाना एक वर्ष की उपासना से बेहतर है; और उनके द्वारा काते गए सूत से बुने गए प्रत्येक कपड़े के लिए उन्हें शहादत का सवाब मिलेगा।" पैगंबर की पत्नी अफशे ने कताई के गुणों का वर्णन इस प्रकार किया: "महिलाओं से कहो कि मैं क्या कहती हूँ। कोई भी स्त्री जो वस्त्र धारण किए बिना कताई करती है, उसके पापों की क्षमा के लिए सातों स्वर्गों के सभी फ़रिश्ते प्रार्थना करते हैं; और वह क़यामत के दिन अपनी कब्र से जन्नत का वस्त्र पहने और सिर पर पर्दा डाले निकलेगी, उसके आगे एक फ़रिश्ता होगा, और उसके दाहिनी ओर एक फ़रिश्ता होगा जो उसे सेल्सेबील का पानी पिलाएगा;3 और एक और फ़रिश्ता उसके पास आएगा, और उसे अपने पंखों पर उठाकर जन्नत ले जाएगा। और जब वह जन्नत में प्रवेश करेगी, तो अस्सी हज़ार युवतियाँ उससे मिलेंगी, प्रत्येक युवती एक अलग वस्त्र लाएगी; और उसके पास तीन सौ दरवाजों वाले पन्ना रत्नों के महल होंगे, जिनमें से प्रत्येक दरवाजे पर सिंहासन के स्वामी की ओर से उपहार लिए एक फ़रिश्ता खड़ा होगा।"3 — ऊपर वर्णित कलाएँ मध्यम और उच्च वर्गों के हरमों की महिलाओं द्वारा अपनाई जाती हैं। "उनका खाली समय अधिकतर काम में व्यतीत होता है।" सुई; विशेष रूप से रूमाल, सिर के घूंघट आदि की कढ़ाई में, 'मेंसेज' नामक फ्रेम पर रंगीन रेशम और सोने से कढ़ाई करने में। कई महिलाएं, यहां तक कि धनी परिवारों में भी,

रूमालों और अन्य चीजों को इस तरह सजाकर और उन्हें बाजार या अन्य हरमों में बेचने के लिए एक दलाल (या महिला दलाल) को नियुक्त करके अपने निजी पर्स भरती थीं।4 प्राचीन ग्रीस में ऐसा ही होता था। एंड्रोमाचे के बारे में बताया गया है कि - गुंबद के एकांत में, वह उदास होकर करघे पर काम करती थी; फूलों से सजे हुए, वह अपने गुप्त घंटों में बुनाई करती रहती थी।5 2 ऊपर देखें, इस श्रृंखला का नोट 15। * आधुनिक मिस्रियों पर मेरे काम से 3 नुज़हेत अल-मुतैइम्मिल, आदि, खंड 7. खंड 1. अध्याय 6. 5 पोप की होमर की इलियड, पुस्तक 22. पंक्तियाँ 536-9।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.19%** है।

पंद्रहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 493 साम्राज्य के पतन तक रोमन महिलाओं की यही प्रथा थी। ऑगस्टस के बारे में कहा जाता है कि उनके सामान्य वस्त्र पूरी तरह से उनकी पत्नी, बहन, बेटी और भतीजियों द्वारा निर्मित होते थे।6 टिप्पणी 20. जिस शब्द का अनुवाद मैं "करदाता" (अर्थात, "धिम्मी") के रूप में कर लगाता हूँ, उसका अर्थ राज्य का आश्रित या वह व्यक्ति है जो वार्षिक कर चुकाकर मुसलमानों की सुरक्षा और उनके अधिकांश नागरिक अधिकारों का हकदार होता है। टिप्पणी 21. — रोटी और नमक खाने से उत्पन्न दायित्व पर। किसी दूसरे व्यक्ति की रोटी और नमक, या केवल नमक, या किसी दूसरे के साथ ऐसी चीजें खाने से उत्पन्न दायित्व सर्वविदित है; लेकिन इसका निम्नलिखित उदाहरण कुछ पाठकों के लिए नया हो सकता है। — एल-लेस एस-सफ़्तार के पुत्र याकूब ने,7 एक लुटेरे जीवन को अपनाकर, एक रात सिजिस्तान या सीस्तान के गवर्नर दिरहेम के महल में एक मार्ग खोदा; सोने, रत्नों और सबसे कीमती सामानों का एक सुविधाजनक गट्ठा बनाने के बाद, जब वह उसे ले जाने लगा, तभी अंधेरे में उसका पैर ज़मीन पर

किसी कठोर चीज़ से टकरा गया। यह सोचकर कि शायद कोई रत्न हो, शायद हीरा, उसने उसे उठाया और अपनी जीभ से लगाया, और उतनी ही निराशा और हताशा के साथ पाया कि वह सेंधा नमक का एक टुकड़ा था; क्योंकि मालिक के नमक का स्वाद चखने के बाद, उसका लालच आतिथ्य के नियमों के प्रति सम्मान के आगे झुक गया; और उसने अपना कीमती माल नीचे फेंक दिया, उसे वहीं छोड़ दिया, और खाली हाथ अपने घर लौट गया। दिरहम का कोषाध्यक्ष अगले दिन, रिवाज़ के अनुसार, अपने खजाने का निरीक्षण करने आया, तो यह देखकर उतना ही आश्चर्यचकित और भयभीत हुआ कि खजाने और अन्य कीमती सामानों का एक बड़ा हिस्सा गायब हो गया था; लेकिन ज़मीन पर पड़े पैकेट की जाँच करने पर, उसका आश्चर्य कम नहीं हुआ, यह देखकर कि एक भी वस्तु नहीं ले जाई गई थी। इस असाधारण परिस्थिति ने उन्हें तुरंत अपने स्वामी को इसकी सूचना देने के लिए प्रेरित किया; और स्वामी ने पूरे शहर में यह घोषणा करवाई कि इस कृत्य के सूत्रधार को क्षमा कर दिया गया है, और यह भी घोषणा की कि महल में आने पर उनका विशेष सम्मान किया जाएगा। याकूब ने इस निमंत्रण को स्वीकार कर लिया, और इस वादे पर भरोसा किया, जो उनके लिए पूरा हुआ; और इसी समय से वे धीरे-धीरे सत्ता में बढ़ते गए, यहाँ तक कि एक राजवंश के संस्थापक बन गए।8 टिप्पणी 22. पैगंबर को अक्सर मध्यस्थ के रूप में याद किया जाता है; अन्यथा नहीं। टिप्पणी 23. लगभग यही दोहा पहले भी आ चुका है: इस खंड में पृष्ठ 104 देखें। पहले श्लोक के उत्तरार्ध में व्यक्त विचार ड्राइडन के स्पैनिश फ्रायर के एक दोहे में मिलता है: - पागल होने में एक ऐसा आनंद है जिसे केवल पागल ही जानते हैं: और कूपर के टास्क में हमें निम्नलिखित मिलता है: - काव्य पीड़ा में एक ऐसा आनंद है जिसे केवल कवि ही जानते हैं: जिस पर श्री कीथली टिप्पणी करते हैं, "यद्यपि मुझे

लगता है कि यहाँ अनुकरण है, मैं निश्चित रूप से ऐसा नहीं कहूँगा।"9 टिप्पणी 24. जैसा कि मेरे शेख ने हाशिये पर टिप्पणी में कहा है, यह पैगंबर की परंपरा है, अर्थात् उनका यह कथन, "जो कोई प्रेम में है, और पवित्रता से व्यवहार करता है, और [अपने जुनून को] छुपाता है, और मर जाता है, वह शहीद की मृत्यु मरता है।" टिप्पणी 25. यहाँ जिस झाड़ू का उल्लेख किया गया है, जिसे "मिकश्शेह" कहा जाता है, वह छोटी और सुएट है। अगस्त 73. 8 प्राइस का "मोहम्मदन इतिहास," खंड 2. पृष्ठ। "एस-सफ़्तार" का अर्थ है "ब्रेशियर।" 229 et se-]. 9 "कहानियाँ और लोकप्रिय कथाएँ," आदि, पृ. 14.

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.30%** है।

अध्याय पंद्रह के लिए 424 टिप्पणियाँ। चपटा, और कभी-कभी ताड़ की लकड़ी के सबसे मोटे हिस्से से बनाया जाता है; जिसका बड़ा हिस्सा अच्छी तरह से भिगोकर तब तक पीटा जाता है जब तक कि रेशे अलग न हो जाएं। टिप्पणी 26. इस प्रश्न से ऐसा प्रतीत होता है कि उसे डर था कि वह जिन्न हो सकता है। टिप्पणी 27. "कुर्दी" "अल-कुर्द" नामक राष्ट्र के एक व्यक्ति का नाम है, जिसका देश "कुर्दिस्तान" आर्मेनिया के दक्षिण में स्थित है। सलाहुद्दीन (जिसे यूरोपीय लोग आमतौर पर "सलादीन" कहते हैं) इसी राष्ट्र का था। — "जवान" एक फ़ारसी शब्द है, जो लैटिन "जुवेनिस" के समान मूल से आया है, और इसका अर्थ भी वही है। टिप्पणी 28. इस प्रकार के उत्सवों के लिए, अध्याय 8वीं की टिप्पणी 7 देखें। टिप्पणी 29. "हशशश" वह व्यक्ति है जो नशीले भांग का आदी होता है, जिसे "हशीश" और "हशीशेह" कहा जाता है। — अध्याय 2 के नोट 46 और अध्याय 3 के नोट 22 के चौथे पैराग्राफ को देखें। नोट 30. "किश्क" (जैसा कि शब्द का सामान्य उच्चारण है, लेकिन सही उच्चारण

"केशिक") गेहूं से तैयार किया जाता है, जिसे पहले गीला किया जाता है, फिर सुखाया जाता है, भूसी को अलग करने के लिए एक बर्तन में कुचला जाता है, और हाथ की चक्की से दरदरा पीसा जाता है: इस मिश्रण को दूध में मिलाया जाता है, और लगभग छह घंटे बाद इसे थोड़े से भूसे या चोकर पर चम्मच से निकाला जाता है, और फिर दो या तीन दिनों के लिए सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है। उपयोग के लिए आवश्यक होने पर, इसे या तो भिगोया जाता है या कूटा जाता है, और एक बर्तन के ऊपर छलनी में डाला जाता है; और फिर उस पर उबलता पानी डाला जाता है। छलनी में जो बचता है उसे फेंक दिया जाता है: जो बच जाता है उसे आमतौर पर आग पर उबले हुए मांस या मुर्गी के बर्तन में डाल दिया जाता है। प्रत्येक थाली में मक्खन में तले हुए सफेद पान के कुछ पत्ते आमतौर पर डाले जाते हैं।10 नोट 31. अध्याय 2 के नोट 55 और अध्याय 10 के नोट 98 देखें। नोट 32. कथाकार इस अभिव्यक्ति का प्रयोग करता है, क्योंकि वह दूसरे के शब्दों को दोहराते हुए भी "मैं एक ईसाई हूँ" कहने से डरता है।— अध्याय 2 के नोट 8 देखें। नोट 33. यह अभिव्यक्ति, जैसा कि अभी उल्लेख किया गया है, ध्यान देने योग्य है। यदि कोई व्यक्ति इस रचना को जोर से पढ़ते हुए कहे, "यदि मैं अब से मीठे चावल खाऊँगा तो मुझे तलाक लेना पड़ेगा," तो कुछ लोग, उसे ऐसा कहते हुए सुनकर, यह मान सकते हैं कि उसने इन शब्दों को गंभीरता से अपने ऊपर लागू किया है, और इस प्रकार उसने खुद को अपनी पत्नी को तलाक देने के लिए बाध्य कर लिया है यदि वह कभी भी वह व्यंजन खाएगा।— अध्याय 8 के नोट 48 देखें। टिप्पणी 34. "हज" का अर्थ "तीर्थयात्री" है, और यह मक्का और माउंट अराफात की तीर्थयात्रा करने वाले व्यक्ति के लिए सामान्य अरबी उपाधि है। तुर्क और फारसी इसके स्थान पर समानार्थी अरबी शब्द "हज्जी" का प्रयोग करते हैं। [ईसाई भी यरूशलेम

की तीर्थयात्रा करने वाले व्यक्ति को हज की उपाधि देते हैं। - संपादक] टिप्पणी 35. इस खंड के पृष्ठ 61 के अंत में एक टिप्पणी देखें। टिप्पणी 36. शहर के पुरुषों द्वारा सड़कों को खाली कर दिए जाने के कारण, महिलाओं के लिए खिड़कियों से बाहर देखने और पड़ोसियों के लिए आपस में बातचीत करने का यह एक उपयुक्त अवसर था। टिप्पणी 37. ऊपर, टिप्पणी 29 देखें। टिप्पणी 38. "उसका हाथ कौवे के पैर जैसी दिखने वाली थाली में उतरता है [अंगूठा और पहली और दूसरी उंगलियां लगभग जुड़ी हुई हैं, और अन्य उंगलियां हथेली की ओर मुड़ी हुई हैं], और ऊपर आता है [इतना भरा हुआ कि यह] एक "ऊंट" एक आम कहावत है, जिसका प्रयोग एक अशिष्ट पेटू के लिए किया जाता है।— बर्कहार्ट की "अरबी कहावतें," संख्या 756 नोट 39 देखें। सही मायने में, "रुस्तम" (फ़ारसी नायकों में सबसे प्रसिद्ध का नाम); लेकिन अरबों द्वारा, और आम तौर पर, मेरा मानना है, तुर्कों द्वारा, "रुस्तम" उच्चारित किया जाता है। आधुनिक मिस्रियों पर मेरी कृति से, खंड 2, अध्याय 13।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.57%** है।

पंद्रहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 425 टिप्पणी 40. यहाँ "मैं उनमें से हूँ" के रूप में अनुवादित शब्द "मैं मृत्यु के कगार पर हूँ" या "मृत्यु की पीड़ा में हूँ" का भी अर्थ है; परन्तु पहला मेरे शेख का पाठ है, और अधिक तार्किक है। टिप्पणी 41. सिनीत वह पुल है जिसे न्याय के दिन सभी को पार करना होगा, जो नरक के मध्य में फैला हुआ है, बाल से भी महीन और तलवार की धार से भी तेज है। टिप्पणी 42. अध्याय 11 की टिप्पणी 55 देखें।

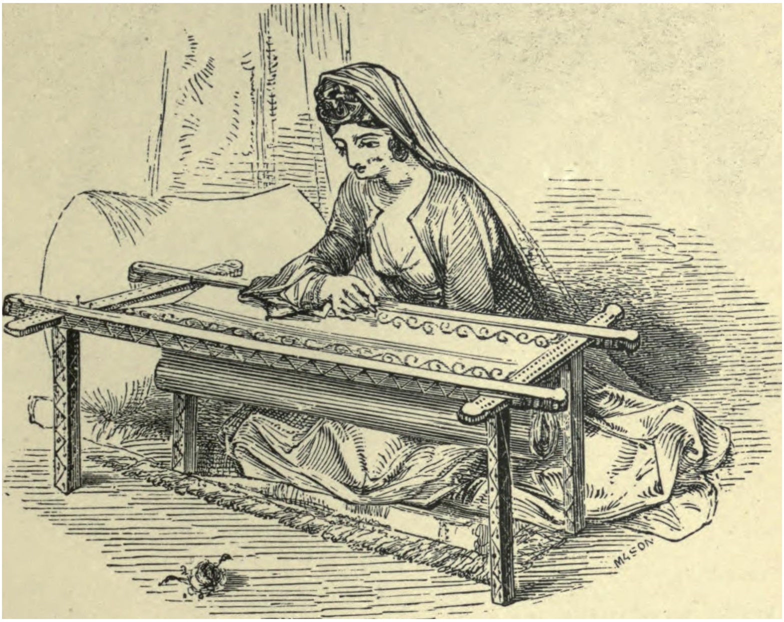

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.07%** है।

अध्याय सोलह। तीन सौ सत्ताईसवीं रात के एक भाग से शुरू होकर तीन सौ चौंतीसवीं रात के एक भाग पर समाप्त। इब्न मंसूर, लेडी बुदूर और जुबैल, जो ओमेल एशशेबानी के पुत्र थे, की कहानी। ऐसा कहा जाता है कि एक रात मोमिनों के सरदार हारून-एर-रशीद बेचैन थे और उन्हें नींद नहीं आ रही थी। वे बेचैनी के मारे लगातार करवटें बदलते रहे। जब इस स्थिति से वे थक गए, तो उन्होंने मेसरूर को बुलाया और उनसे कहा, "हे मेसरूर, मेरे लिए किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढो जो मुझे इस बेचैनी से दूर रख सके।"

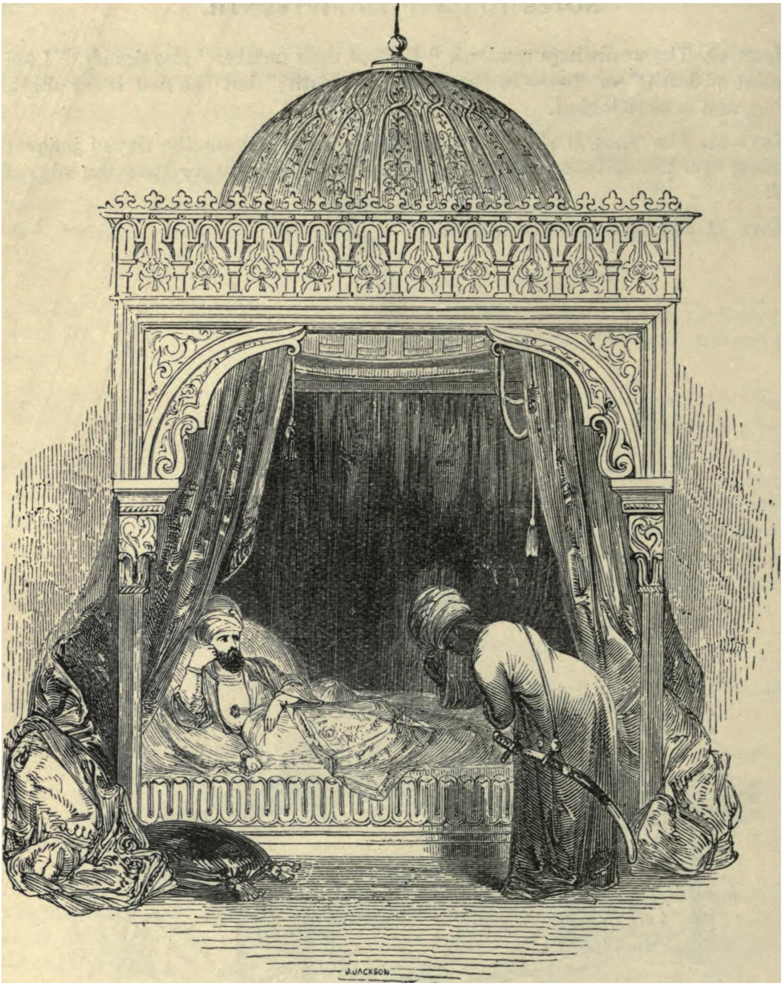

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.41%** है।

इब्न मंसूर की कहानी, पृष्ठ 497 यह बेचैनी।1 मेसरूर ने कहा, हे मेरे स्वामी, क्या आप महल के बगीचे में प्रवेश करेंगे और उसमें मौजूद फूलों को निहारकर अपना मनोरंजन करेंगे, ग्रहों को देखेंगे और उनकी सुंदरता को निहारेंगे, और उनके बीच जल पर चमकते चंद्रमा को देखेंगे? उसने उत्तर दिया, हे मेसरूर, वास्तव में मेरा मन ऐसी किसी भी चीज़ की ओर

नहीं झुकता। — हे मेरे स्वामी, मेसरूर ने उत्तर दिया, आपके महल में तीन सौ रखैलें हैं, जिनमें से प्रत्येक का अपना अलग कमरा है। तो फिर, उनमें से प्रत्येक को अपने कमरे में जाने का आदेश दें, और आप उनके बिना जाने-समझे उन्हें निहारकर अपना मनोरंजन करें। — खलीफा ने उत्तर दिया, हे मेसरूर, महल मेरा है, और दासियाँ मेरी संपत्ति हैं; फिर भी मेरा मन ऐसी किसी भी चीज़ की ओर नहीं झुकता। तब मेसरूर ने कहा, "हे मेरे स्वामी, विद्वानों, ऋषियों और कवियों को अपने समक्ष बुलाएँ, उनसे चर्चा करने, कविताएँ सुनाने और कथाएँ और इतिहास बताने का आदेश दें।" खलीफ़े ने उत्तर दिया, "मेरी आत्मा ऐसी किसी भी चीज़ में रुचि नहीं रखती।" मेसरूर ने कहा, "हे मेरे स्वामी, सेवकों, शुभ मित्रों और शिष्ट पुरुषों को अपने समक्ष बुलाएँ, उनसे अनोखे चुटकुलों से आपका मनोरंजन करने का आदेश दें।" लेकिन खलीफ़े ने उत्तर दिया, "हे मेसरूर, मेरी आत्मा ऐसी किसी भी चीज़ में रुचि नहीं रखती।" तब मेसरूर ने कहा, "हे मेरे स्वामी, मेरा सिर काट दीजिए: शायद इससे आपकी बेचैनी दूर हो जाएगी और आपका कष्ट दूर हो जाएगा।" एर-रशीद उनकी बात सुनकर हँसे और उनसे कहा, "हे मेसरूर, देखिए द्वार पर कौन शुभ मित्र है।" तो मेसरूर बाहर गए और लौटकर बोले, "हे मेरे मालिक, द्वार पर जो हैं, वे दमिश्क के वाग, मंसूर के बेटे अली हैं।" खलीफा ने कहा, "उन्हें मेरे पास लाओ।" मेसरूर गए और उन्हें ले आए; और जब इब्न मंसूर अंदर आए, तो उन्होंने कहा, "आप पर सलाम हो, हे अमीरुल मोमिनीन!" खलीफा ने भी अभिवादन किया और कहा, "हे इब्न मंसूर, हमें अपनी कुछ कहानियाँ सुनाइए।" - "हे अमीरुल मोमिनीन," उन्होंने कहा, "क्या मैं आपको वह बात सुनाऊँ जो मैंने स्वयं देखी हो, या वह बात जिसके बारे में मैंने सुना हो?" अमीरुल मोमिनीन ने उत्तर दिया, "यदि तुमने कोई असाधारण बात देखी हो, तो हमें सुनाओ; क्योंकि दूसरों से सुनी हुई बात स्वयं देखने के

समान नहीं होती।" तो इब्न मंसूर ने कहा, "हे अमीरुल मोमिनीन, आप मुझे अपने सारे श्रवण और बुद्धि सौंप दीजिए।" एर-रशीद ने उत्तर दिया, "हे इब्न-मंसूर, देखो, मैं अपने कानों से सुनता हूँ, अपनी आँखों से तुम्हें देखता हूँ और अपने मन से तुम पर ध्यान देता हूँ।" और इब्न-मंसूर ने कहा, "हे धनिलों के सरदार, जान लो कि बसरा के सुल्तान मोहम्मद, सुलेमान अल-हाशिमी के पुत्र, से मेरी हर साल मुलाकात तय होती है; और मैं हमेशा की तरह उनके पास गया, और जब मैं वहाँ पहुँचा..."

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.55%** है।

428 इब्न मंसूर की कहानी, इत्यादि। लिम, मैंने उन्हें शिकार के लिए तैयार पाया। मैंने उन्हें सलाम किया, उन्होंने भी मुझे सलाम किया और मुझसे कहा, हे इब्न मंसूर, सवार हो जाइए और हमारे साथ शिकार पर चलिए। लेकिन मैंने उत्तर दिया, हे मेरे स्वामी, मुझमें सवारी करने की शक्ति नहीं है: इसलिए मुझे मनोरंजन कक्ष में बैठाइए और मेरे बारे में दरबारी और लेफ्टिनेंटों को निर्देश दे दीजिए। और उन्होंने ऐसा ही किया; और फिर शिकार पर चले गए। और उन्होंने मेरा पूरा सम्मान किया और मेरा बेहतरीन तरीके से सत्कार किया। और मैंने मन ही मन कहा, हे अल्लाह! यह आश्चर्य की बात है कि मैं लंबे समय से बगदाद से अल-बसरा आता-जाता रहा हूँ, और इस जगह पर महल से बगीचे और बगीचे से महल के रास्ते के अलावा कुछ नहीं जानता; और अल-बसरा के इलाकों को देखने का ऐसा अवसर मुझे कब मिलेगा जैसा इस अवसर पर मिला है? अत: मैं तुरंत उठकर अकेले ही बाहर टहलने जाऊँगा ताकि मेरा मनोरंजन हो सके और जो भोजन मैंने खाया है वह पच जाए। तदनुसार, मैंने अपने सबसे उत्तम वस्त्र पहने और अल-बसरा के एक भाग में टहला। हे विश्वासियों के सरदार, आप जानते हैं कि इसमें सत्तर गलियाँ हैं, जिनमें

से प्रत्येक की लंबाई अल-एराक के माप से सत्तर लीग है।3 इसलिए मैं इसकी गलियों में भटक गया और मुझे प्यास लगने लगी; और जब मैं चल रहा था, हे विश्वासियों के सरदार, देखो, मुझे एक बड़ा दरवाजा दिखाई दिया, जिस पर पीले पीतल के दो छल्ले लगे थे और लाल ब्रोकेड के पर्दे लटके हुए थे, और उसके दोनों ओर दो इनस्तबाह थे, और उसके ऊपर अंगूर की बेलों के लिए एक जाली थी, जो उस दरवाजे को छाया दे रही थी। मैं इस हवेली को देखकर अपना मनोरंजन करने के लिए रुक गया; और जब मैं खड़ा था, तो मुझे एक शोकग्रस्त हृदय से विलाप की आवाज़ सुनाई दी, जो मधुर स्वरों में ये छंद गा रही थी: — मेरा शरीर रोगों और कष्टों का निवास स्थान बन गया है, उस हिरण के बच्चे के कारण जिसका घर और ठिकाना दूर है। हे रेगिस्तान की दो हवाओं, जिन्होंने मेरी पीड़ा को जगाया है! अल्लाह, अपने प्रभु की कसम, मेरे [हृदय के] निवास की ओर मुड़ और उसे फटकार लगा; शायद फटकार उसके आचरण को बदल दे। ऊपर दिए गए छंदों के समान पाँच और छंद आए, और मैंने मन ही मन कहा, जिस व्यक्ति से ये मधुर स्वर निकले हैं, यदि वह सुंदर है, तो उसमें सुंदरता, वाक्पटुता और मधुर स्वर का अनूठा गुण है। फिर मैं दरवाजे के पास गया और धीरे-धीरे पर्दा उठाने लगा; और देखो, मैंने एक सुंदर युवती को देखा जो चौदहवीं रात में प्रकट होने वाले चंद्रमा के समान थी, जिसकी भौहें आपस में जुड़ी हुई थीं, पलकें झुकी हुई थीं, और सीना दो अनार के समान था; उसके होंठ पतले थे, जैसे दो जंगली प्याज़ के टुकड़े,4 उसका मुँह सुलेमान की मुहर जैसा था,5 और उसके दाँत ऐसे थे जो बुद्धि को भी चुनौती देते।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.59%** है।

कवि और गद्य-लेखक। वह सौंदर्य के सभी गुणों का साक्षात रूप थीं और

स्त्री-पुरुषों के लिए विघ्न का कारण थीं। उनकी सुंदरता को निहारने से ही कोई तृप्त नहीं हो पाता था; और जैसा कि कवि ने कहा है, — जब वह पास आती हैं, तो मार डालती हैं; और जब वह पीठ फेर लेती हैं, तो सभी पुरुष उन पर मोहित हो जाते हैं। वह सूर्य और पूर्णिमा के समान हैं; परन्तु अत्याचार और घृणा उनके स्वभाव में नहीं हैं। जब वह स्वयं को प्रकट करती हैं, तो स्वर्ग के द्वार खुल जाते हैं और उनके गले के हारों के ऊपर पूर्णिमा दिखाई देती है। अब जब मैं पर्दों के बीच से उन्हें देख रहा था, तभी उन्होंने एक नजर डाली और मुझे दरवाजे पर खड़ा देखा; तब उन्होंने अपनी दासी से कहा, देखो दरवाजे पर कौन है। तब दासी उठी और मेरे पास आकर बोली, हे शेख, क्या आपमें लज्जा नहीं है; क्या बुढ़ापा और लज्जाजनक आचरण एक साथ मौजूद हैं? मैंने उसे उत्तर दिया, हे मेरी स्वामिनी, जहाँ तक उम्र का सवाल है, हमारे पास है

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.62%** है।

430 इब्न मंसूर की कहानी, आदि। मैंने इसका अनुभव किया; लेकिन जहाँ तक अपमानजनक आचरण की बात है, मुझे नहीं लगता कि मैं इसका दोषी हूँ। लेकिन उसकी मालकिन ने कहा, और इससे अधिक अपमानजनक आचरण क्या हो सकता है कि तुम किसी ऐसे घर में घुसपैठ करो जो तुम्हारा अपना नहीं है, और किसी ऐसे हरम को देखो जो तुम्हारा नहीं है? तो मैंने उसे उत्तर दिया, हे मेरी मालकिन, मेरे पास ऐसा

करने का एक बहाना है। — और तुम्हारा बहाना क्या है? उसने पूछा। मैंने उसे उत्तर दिया, वास्तव में मैं एक अजनबी हूँ, और प्यासा हूँ; और प्यास ने मुझे लगभग मार ही डाला है। इस पर उसने कहा, हम तुम्हारा बहाना स्वीकार करते हैं। फिर अपनी एक दासी को बुलाकर उसने कहा, हे लुत्फ़,6 उसे सोने के प्याले में एक घूँट पिलाओ। इस पर वह मेरे लिए मोतियों और रत्नों से जड़ा लाल सोने का एक प्याला लाई, जो तेज सुगंधित कस्तूरी से सुगंधित पानी से भरा था, और हरे रेशम के रुमाल से ढका हुआ था; और मैंने पीना शुरू किया, और धीरे-धीरे पीता रहा, बीच-बीच में उसे देखता रहा, जब तक कि मैं काफी देर तक खड़ा नहीं रहा। फिर मैंने दासी को मग लौटा दिया और खड़ा रहा। तब उसने [महिला ने] कहा, हे शेख, जाइए। लेकिन मैंने उत्तर दिया, हे मेरी स्वामिनी, मैं मन से व्याकुल हूँ। — किस विषय में? उसने कहा। और मैंने उत्तर दिया, भाग्य के परिवर्तन और घटनाओं के उतार-चढ़ाव के विषय में। उसने उत्तर दिया, यह आपके लिए उचित है; क्योंकि भाग्य चमत्कार उत्पन्न करता है। लेकिन (उसने आगे कहा) आपने इसके कौन से चमत्कार देखे हैं, कि आप इस पर विचार कर रहे हैं? — मैं विचार कर रहा हूँ, मैंने उत्तर दिया, इस घर के मालिक पर; क्योंकि वह अपने जीवनकाल में मेरा सच्चा मित्र था। और उसने मुझसे कहा, उसका नाम क्या था? मैंने उत्तर दिया, मोहम्मद, अली जौहरी का पुत्र; और वह बहुत धनी था।7 लेकिन क्या उसने, मैंने पूछा, संतान छोड़ी है? — हाँ, उसने कहा; उनकी एक बेटी है, जिसका नाम बुदूर है,8 और उसे उनकी सारी संपत्ति विरासत में मिली है। तो मैंने उससे कहा, लगता है तुम ही उनकी बेटी हो। उसने उत्तर दिया, हाँ — और हँस पड़ी। फिर उसने कहा, हे शेख, आपने बात को लंबा खींच दिया है; इसलिए जाइए। मैंने उत्तर दिया, मुझे जाना ही होगा; लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम्हारा आकर्षण बदल गया है: तो मुझे अपनी स्थिति

बताइए: शायद ईश्वर मेरे माध्यम से आपको राहत प्रदान करे। और उसने मुझसे कहा, हे शेख, यदि आप उन लोगों में से हैं जो रहस्यों को सौंपे जाने के योग्य हैं, तो हम आपको अपना रहस्य प्रकट करेंगे। इसलिए मुझे बताइए कि आप कौन हैं, ताकि मैं जान सकूँ कि आप रहस्य के लिए उपयुक्त संरक्षक हैं या नहीं; क्योंकि कवि ने कहा है, — कोई भी रहस्य को केवल एक वफादार व्यक्ति ही रखता है: यह सर्वश्रेष्ठ मनुष्यों के साथ भी छिपा रहता है। मैंने अपना रहस्य एक ऐसे घर में ताला लगाकर रखा है, जिसकी चाबी खो गई है और जिसका दरवाजा टूटा हुआ है।9 इसलिए मैंने उससे कहा, हे मेरी स्वामिनी, यदि तुम जानना चाहती हो कि मैं कौन हूँ, तो मैं

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.04%** है।

मैं अली हूँ, मंसूर का पुत्र, दमिश्क का वाग, जो अमीरुल मोमिनीन हीरून एर-रशीद का प्रिय मित्र है। जब उसने मेरा नाम सुना, तो वह अपनी कुर्सी से उतरी, मुझे प्रणाम किया और मुझसे कहा, "आपका स्वागत है, हे इब्न मंसूर। अब मैं आपको अपनी स्थिति से अवगत कराती हूँ और अपना रहस्य आपको सौंपती हूँ। मैं एक विमुख प्रेमी हूँ।" - "हे मेरी स्वामिनी," मैंने कहा, "आप सुंदर हैं और केवल सुंदर पुरुषों से ही प्रेम करती हैं। तो फिर आप किससे प्रेम करती हैं?" - उसने उत्तर दिया, "मैं जुबैर से प्रेम करती हूँ, जो उमैर एशशेबानी का पुत्र है, जो बेनी-शेबान का अमीर है।"10 और उसने मुझे एक ऐसे युवक का वर्णन किया, जिससे अल-बसरा में कोई अधिक सुंदर नहीं था। मैंने उससे कहा, "हे मेरी स्वामिनी, क्या आप दोनों के बीच कोई मुलाकात या पत्राचार हुआ है?" - "हाँ," उसने उत्तर दिया; परन्तु हमने तो ज़ुबान से प्रेम किया है, हृदय और आत्मा से नहीं; क्योंकि उसने न तो कोई वादा पूरा किया है और न ही कोई वाचा

निभाई है। इसलिए मैंने उससे कहा, हे मेरी स्वामिनी, तुम्हारे बीच जो अलगाव हुआ है उसका क्या कारण है? उसने उत्तर दिया, कारण यह था: एक दिन मैं बैठी थी और मेरी दासी मेरे बाल बना रही थी; जब उसने बाल बना लिए, तो उसने मेरी लटों की चोटी बनाई, और मेरी सुंदरता और आकर्षण ने उसे मोहित कर लिया; इसलिए वह मेरे ऊपर झुकी और मेरे गाल चूमे; और ठीक उसी समय वह अचानक अंदर आया, और दासी को मेरे गाल चूमते देख वह तुरंत क्रोधित होकर पीछे हट गया, और उसने हमेशा के लिए अलग होने का निश्चय कर लिया, और ये दो श्लोक पढ़े: —

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

26.85% है।

432 इब्न मंसूर की कहानी, यदि मेरे प्रेम में किसी और का हिस्सा हो, तो मैं अपने प्रियतम को त्यागकर अकेला रहूँगा। मेरा प्रियतम व्यर्थ है यदि वह ऐसी कोई इच्छा करे जो उसके प्रेमी को स्वीकार्य न हो। और जब से वह मुझसे घृणा के कारण विमुख हुआ है, तब से आज तक, हे इब्न मंसूर, उसकी ओर से न तो कोई पत्र आया है और न ही कोई उत्तर। — मैंने कहा, तुम क्या चाहती हो? उसने उत्तर दिया, मैं तुम्हारे द्वारा उसे एक पत्र भेजना चाहती हूँ; और यदि तुम मुझे उसका उत्तर ला कर दो, तो तुम्हें मुझसे पाँच सौ सोने के सिक्के मिलेंगे; और यदि तुम मुझे उसका उत्तर नहीं ला कर दो, तो तुम्हें अपने जाने के मुआवजे के रूप में सौ सोने के सिक्के मिलेंगे। तो मैंने उत्तर दिया, जो तुम्हें उचित लगे वही करो। और उसने कहा, मैं सुनती हूँ और आज्ञा मानती हूँ। फिर उसने अपनी एक दासी को बुलाया और कहा, मेरे लिए एक स्याही की दवात और कागज का एक टुकड़ा लाओ। और वह उन्हें अपने पास ले आई; और उसने ये पद लिखे: — हे मेरे प्रिय, यह अलगाव और घृणा क्यों? और क्षमा और दया कब प्रदान की जाएगी? तू मुझसे घृणा में क्यों विमुख है? तेरा चेहरा वह चेहरा नहीं है जिसे मैं पहले जानती थी। हाँ: निंदा करने वालों ने मेरे शब्दों को तोड़-मरोड़ कर पेश किया है, और तूने उनकी बातों पर विश्वास किया है; इसलिए उन्होंने अपनी ज्यादतियों को बढ़ा दिया है। यदि तूने उनकी कहानी पर विश्वास किया है, तो ईश्वर न करे कि तू ऐसा करना जारी रखे; क्योंकि तू बेहतर जानती है। अपने जीवन की कसम खाकर मुझे बता कि तूने क्या सुना है; क्योंकि तू जानती है कि क्या कहा गया है, और न्यायपूर्वक कार्य करेगी। यदि यह सच है कि मैंने ये शब्द कहे हैं, तो शब्दों की व्याख्या की जा सकती है, और उनमें परिवर्तन भी हो सकता है। मान लीजिए कि ये शब्द ईश्वर द्वारा प्रकट किए गए थे: लोगों ने पंचग्रन्थ

को बदल दिया है और विकृत कर दिया है।11 हमसे पहले के लोगों के बारे में कितनी झूठी बातें कही गई हैं! याकूब के सामने यूसुफ पर भी इल्ज़ाम लगाया गया! मेरे, इल्ज़ाम लगाने वाले और तुम्हारे साथ न्याय का एक भयानक दिन आएगा। फिर उसने चिट्ठी पर मुहर लगा दी और मुझे दे दी; मैंने उसे लिया और उमैर एश-शेबानी के बेटे जुबैर के घर गया। मैंने देखा कि वह शिकार कर रहा था; इसलिए मैं उसका इंतज़ार करने के लिए बैठ गया; और जब मैं बैठा था, तभी वह शिकार से लौटता हुआ आया; और जब मैंने उसे देखा, हे विश्वासियों के राजकुमार, अपने घोड़े पर, तो उसकी सुंदरता और आकर्षण से मेरा मन चकित रह गया। उसने बगल में देखा, तो मुझे अपने घर के दरवाजे पर बैठा हुआ पाया; और जैसे ही उसने मुझे देखा, वह अपने घोड़े से उतरा, और मेरे पास आकर मुझे गले लगाया और सलाम किया; और मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने अपनी बाहों में दुनिया और उसमें मौजूद सब कुछ थाम लिया हो। फिर वह मुझे अपने घर ले गया, और मुझे अपने पलंग पर बैठाया, और मेज लाने का आदेश दिया; इसके बाद वे खुरासान के खुलेंज 12 की एक मेज लेकर आए, जिसके पैर

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.63%** है।

और लेडी लिउदूब, इत्यादि। 433 जो सोने के थे, और उन पर हर तरह के व्यंजन, तरह-तरह के मांस, तले और भुने हुए, और इसी तरह की चीजें रखी थीं; और जब मैं मेज पर बैठा, तो मैंने उस पर नज़र डाली, और उस पर ये आयतें खुदी हुई पाईं: — उन सारसों के पास ठहरो जो कटोरी में बैठे हैं, और तले हुए मांस और सिकबाजेस के बीच बैठो; और काटा की बेटियों पर शोक मनाओ — मैंने ऐसा लगातार किया है — >और मुर्गियों के बीच भुने हुए मांस पर।13 तब उमर के बेटे जुबैर ने कहा, हमारे

भोजन की ओर अपना हाथ बढ़ाओ, और हमारे भोजन को खाकर हमारे दिल को तसल्ली दो। लेकिन मैंने जवाब दिया, अल्लाह की कसम, जब तक तुम मेरी इच्छा पूरी नहीं करोगे, मैं तुम्हारे भोजन का एक निवाला भी नहीं खाऊंगा। उसने कहा, और तुम्हारी इच्छा क्या है? और मैंने उसे एक पत्र दिया; जब उसने पत्र पढ़कर उसका अर्थ समझ लिया, तो उसने उसे फाड़कर ज़मीन पर फेंक दिया और मुझसे कहा, "हे इब्न मंसूर, तुम्हारी जो भी इच्छा हो, हम पूरी करेंगे, सिवाय इस पत्र की लेखिका के विषय में; क्योंकि उसके पत्र का मुझे कोई उत्तर नहीं देना है।" मैं क्रोधित होकर उसके पास से उठ खड़ी हुई; पर उसने मेरा वस्त्र पकड़ लिया और मुझसे कहा, "हे इब्न मंसूर, मैं तुम्हें बताता हूँ कि उसने तुमसे क्या कहा, हालाँकि मैं तुम दोनों के साथ उपस्थित नहीं था।" मैंने उससे पूछा, "उसने मुझसे क्या कहा?" उसने उत्तर दिया, "क्या इस पत्र की लेखिका ने तुमसे यह नहीं कहा था कि यदि तुम मुझे उसका उत्तर ला कर दोगे, तो तुम्हें मुझसे पाँच सौ सोने के सिक्के मिलेंगे; और यदि तुम मुझे उसका उत्तर नहीं ला कर दोगे, तो तुम्हें अपनी यात्रा के बदले में सौ सोने के सिक्के मिलेंगे?" मैंने उत्तर दिया, "हाँ।" और उसने कहा, “आज मेरे साथ बैठो, खाओ-पियो, आनंद लो और मजे करो, और पाँच सौ सोने के सिक्के पाओ।” सो मैं उसके साथ बैठा, खाया-पिया, आनंद लिया और मजे किए, और रात भर उससे बातें कीं; और बाद में मैंने कहा, “हे मेरे स्वामी, आपके घर में संगीत नहीं है।” उसने उत्तर दिया, “सचमुच, बहुत समय से हम बिना संगीत के ही पी रहे हैं।” फिर उसने अपनी एक दासी को बुलाया और कहा, “हे शेजेरेत-एड-दुर्र!” — इस पर एक दासी अपने कमरे से रेशम के थैले में लिपटा हुआ भारतीय निर्मित वीणा लेकर आई; और वह आकर बैठ गई, और वीणा को अपनी गोद में रखकर उस पर इक्कीस धुनें बजाईं; इसके बाद वह मूल धुन पर लौट आई और उत्तेजक

उतार-चढ़ाव के साथ ये छंद गाए: — जिसने प्रेम की मिठास और कड़वाहट का स्वाद नहीं चखा, वह प्रियतम की संगति और अनुपस्थिति में अंतर नहीं कर पाता; और जिसने प्रेम के सही मार्ग से विमुख होकर पथभ्रष्ट हो गया है, वह अपने मार्ग की सुगमता और उबड़-खाबड़ता में अंतर नहीं कर पाता। मैंने प्रेम के उपासकों का तब तक विरोध करना नहीं छोड़ा जब तक मैंने इसकी मिठास और कड़वाहट दोनों का अनुभव नहीं कर लिया; II. 3 K

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.97%** है।

434 द स्टोफी ऑफ और मैंने इसके कड़वेपन का प्याला तब तक पिया है जब तक मैंने खुद को गुलाम और आज़ाद दोनों के सामने नीचा नहीं कर दिया। कितनी रातें मेरी प्रेमिका ने मेरे साथ दावत की हैं, और मैंने उसके होठों से निकले मीठे घूंट पिए हैं! जब हम साथ थे तो हर रात कितनी छोटी थी! रात और सुबह एक साथ होती थी! भाग्य ने कसम खाई थी कि वह हमें अलग कर देगी और अब भाग्य ने अपनी कसम पूरी कर दी है। भाग्य ने फैसला कर लिया है, और सजा को पलटा नहीं जा सकता। कौन है जो अपने स्वामी के आदेश का विरोध कर सकता है? और जब दासी ने अपना गीत समाप्त किया, तो उसके स्वामी ने ज़ोर से चीख मारी और बेहोश होकर गिर पड़ा; जिस पर दासी ने कहा, हे स्वामी, ईश्वर तुम्हें दंडित न करे; क्योंकि बहुत समय से हम बिना संगीत के पीते रहे हैं, अपने स्वामी के लिए डरते हुए, कहीं उसे भी ऐसा ही दौरा न पड़ जाए। लेकिन उस निजी कमरे में जाओ और वहाँ सो जाओ। — तो मैं उस निजी कक्ष में गया जहाँ उसने मुझे जाने को कहा था, और सुबह तक वहीं सोता रहा; तभी, देखो, एक सेवक मेरे पास आया, जिसके पास एक थैली थी जिसमें पाँच सौ सोने के सिक्के थे; और उसने कहा, यही मेरे

मालिक ने वादा किया था; लेकिन तुम उस युवती के पास वापस मत जाना जिसने इसे भेजा है, और ऐसा दिखाओ जैसे तुमने इस मामले के बारे में सुना ही नहीं था, और जैसे हमने भी नहीं सुना था। तो मैंने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। फिर मैंने थैली ली और अपने रास्ते चला गया; लेकिन मैंने मन ही मन कहा, निश्चय ही वह युवती कल से मेरा इंतज़ार कर रही है। अल्लाह की कसम, मुझे उसके पास वापस जाना होगा, और उसे मेरे और उसके बीच जो कुछ हुआ है, उसके बारे में बताना होगा; क्योंकि, अगर मैं उसके पास वापस नहीं गया, तो शायद वह मुझे बुरा-भला कहेगी, और मेरे देश से आने वाले हर किसी को बुरा-भला कहेगी।14 — तदनुसार, मैं उसके पास गया, और उसे दरवाजे के पीछे खड़ा पाया; और जब उसने मुझे देखा, तो उसने कहा, हे इब्न-मंसूर,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.93%** है।

और लेडी बुदूर, इत्यादि। 435 तूने मेरे लिए कुछ भी नहीं किया। — मैंने कहा, तुझे यह किसने बताया? उसने उत्तर दिया, हे इब्न मंसूर, मुझे एक और आभास है; कि जब तूने उसे कागज़ दिया, तो उसने उसे फाड़कर

फेंक दिया और तुझसे कहा, हे इब्न मंसूर, तेरी जो भी ज़रूरत हो, हम उसे पूरा कर देंगे, सिवाय उस महिला के मामले के जिसने यह पत्र लिखा है; क्योंकि मुझे उसे कोई उत्तर नहीं देना है। इस पर तू क्रोधित होकर उसके पास से उठ गया; परन्तु उसने तेरा वस्त्र पकड़ लिया और तुझसे कहा, हे इब्न मंसूर, आज मेरे साथ बैठ; क्योंकि तू मेरा अतिथि है, खा-पी, आनंद ले और मौज-मस्ती कर, और पाँच सौ सोने के सिक्के ले ले। तो तू उसके साथ बैठी, खाया-पिया, आनंद लिया, खुश रही और रात भर उससे बातें करती रही; और दासी ने ऐसा गीत और ऐसी कविताएँ गाईं कि वह बेहोश होकर गिर पड़ा। — तो, हे विश्वासियों के राजकुमार, मैंने उससे कहा, क्या तू हमारे साथ थी? उसने उत्तर दिया, हे इब्न मंसूर, क्या तूने कवि का यह कथन नहीं सुना? — प्रेमियों के हृदयों में आँखें होती हैं, जो वह सब देखती हैं जो देखने वाले नहीं देख पाते। परन्तु, हे इब्न मंसूर, उसने आगे कहा, किसी घटना के दौरान रात और दिन एक दूसरे के बाद नहीं आते, उसे बदले बिना। — फिर उसने अपनी आँखें आकाश की ओर उठाईं और कहा, हे मेरी पूजा के पात्र, मेरे स्वामी, मेरे प्रभु, जिस प्रकार तूने मुझे उमर के पुत्र जुबैर के प्रेम से पीड़ित किया है, उसी प्रकार तू उसे मेरे प्रेम से पीड़ित कर, और मेरे हृदय से स्नेह उसके हृदय में स्थानांतरित कर! इसके बाद, उसने मुझे मेरी यात्रा के मुआवजे के तौर पर सौ सोने के सिक्के दिए, और मैंने उन्हें लेकर अल-बसरा के सुल्तान के पास गया, जो शिकार से लौट आए थे; उनसे मैंने अपना नियुक्ति पत्र प्राप्त किया और बगदाद लौट आया। अगले वर्ष, मैं हमेशा की तरह अपना नियुक्ति पत्र मांगने अल-बसरा गया, और सुल्तान ने मुझे वह दे दिया; और जब मैं बगदाद लौटने ही वाला था, तो मेरे मन में युवती बुदूर का मामला आया, और मैंने कहा, अल्लाह की कसम, मुझे उसके पास जाना ही होगा, और देखना होगा कि उसके और उसके प्रिय के बीच क्या हुआ है। तो मैं उसके

घर गया; और मैंने देखा कि उसके दरवाजे के सामने की ज़मीन साफ और छिड़की हुई थी, और वहाँ नौकर, आश्रित और सेवक मौजूद थे; तब मैंने सोचा, शायद चिंता ने युवती के दिल को व्याकुल कर दिया है, और वह मर गई है, और किसी अमीर ने उसके घर में अपना डेरा डाल लिया है। इसलिए मैंने उसका घर छोड़ दिया और ओमेयर एश-शेबानी के बेटे जुबेर के घर चला गया; और मैंने पाया कि उसके मस्तबाह ध्वस्त हो चुके थे, और उसके दरवाजे पर हमेशा की तरह सेवक नहीं थे; इसलिए मैंने

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **24.98%** है।

मैंने मन ही मन कहा, शायद उसकी मृत्यु हो गई है। तब मैं उसके घर के द्वार पर खड़ी हुई और आँसू बहाते हुए इन पंक्तियों में उसकी हालत पर विलाप किया: — हे मेरे स्वामी, जो चले गए हैं और जिनका मेरा हृदय अनुसरण करता है, लौट आओ, और इस प्रकार मेरे उत्सव के दिन मेरे लिए नए हो जाएँगे! मैं तुम्हारे घर पर रुकता हूँ, अपने निवास स्थान पर विलाप करता हूँ, आँसू बहाता हूँ और पलकें काँपती हैं। मैं शोकग्रस्त अवशेषों से भरे घर से पूछता हूँ, कृपा और अनुग्रह करने वाला कहाँ है? वह उत्तर देता है, जाओ अपने रास्ते; क्योंकि मित्र घर छोड़कर चले गए हैं और धूल में दफ़न हो गए हैं। ईश्वर हमें उनके गुणों के पूर्ण दर्शन से वंचित न करे, और उनके सद्गुण कभी छिपे न रहें! और जब मैं इन छंदों में घर के लोगों के लिए विलाप कर रहा था, हे विश्वासियों के राजकुमार, देखो, घर से एक काला दास मेरे पास आया और बोला, हे शेख, चुप रहो। तुम्हारी माँ को उनके प्रियजनों से वंचित होना पड़े।

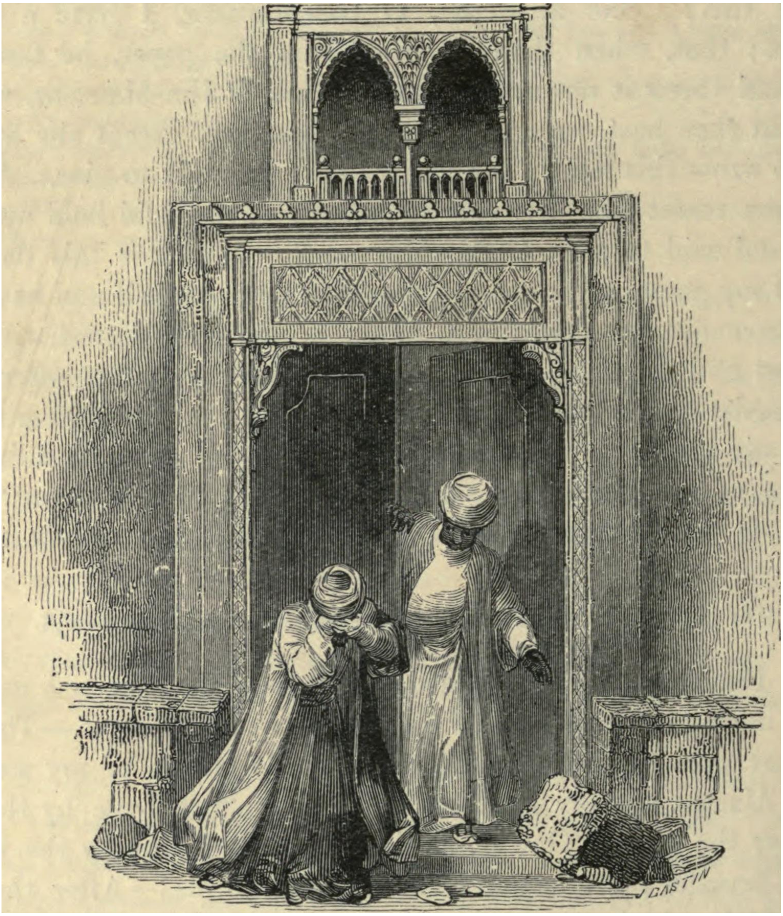

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.52%** है।

इब्न मंसूर की कहानी, इत्यादि। 437 हे प्रभु! मैं तुम्हें इन आयतों में इस घर के लिए विलाप करते हुए क्यों देख रहा हूँ? — तो मैंने उसे उत्तर दिया, मैं इसे अपने एक सच्चे मित्र के निवास के रूप में जानता था। उसने पूछा, और उसका नाम क्या था? मैंने उत्तर दिया, जुबैर, उमर एश-शेबानी का पुत्र। और उसने पूछा, और उसका क्या हाल हुआ? ईश्वर की कृपा से, वह अब भी अपने धन, समृद्धि और संपत्ति से संपन्न है; परन्तु ईश्वर ने उसे बुदूर नाम की एक युवती के प्रेम से पीड़ित कर दिया है, और वह

उसके प्रेम और अपने उन्माद और पीड़ा के कारण इतना व्याकुल है कि वह एक गिरी हुई चट्टान के समान है: क्योंकि जब वह भूखा होता है, तो वह अपने सेवकों से नहीं कहता, मुझे भोजन दो; — और जब वह प्यासा होता है, तो वह नहीं कहता, मुझे पानी दो। — और मैंने कहा, मुझे उसके पास जाने की अनुमति मांगो। — हे मेरे स्वामी, उन्होंने पूछा, क्या तुम उसे जाओगे जो समझता है, या उसे जो नहीं समझता? मैंने उत्तर दिया, चाहे जो भी हो, मुझे उसके पास जाना ही होगा। इसलिए वे घर में गए और अनुमति मांगी, फिर मुझे अनुमति देकर लौट आए। तब मैं उनके पास गया, और मैंने उन्हें एक गिरे हुए पत्थर के ढेर की तरह पाया, जो न तो संकेत समझ पा रहे थे और न ही बोलचाल की भाषा। मैंने उनसे बात की; लेकिन उन्होंने मुझे कोई उत्तर नहीं दिया; और उनके एक सेवक ने मुझसे कहा, हे मेरे स्वामी, यदि आप कोई कविता जानते हैं, तो उसे सुनाइए, और सुनाते समय अपनी आवाज़ ऊँची कीजिए; क्योंकि इससे वे जागृत हो जाएंगे। तदनुसार, मैंने ये दो छंद सुनाए: — क्या तुमने बुदूर के प्रेम को त्याग दिया है, या तुम हठी हो? और क्या तुम रात जागते रहते हो, या तुम्हारी पलकें सोती रहती हैं? यदि तेरे आँसू लगातार बहते रहें, तो जान ले कि तू अनंत काल तक स्वर्ग में रहेगा।^ ये आयतें सुनकर उसने अपनी आँखें खोलीं और मुझसे कहा, "आह्वान हो, हे इब्न मंसूर। मेरा दुबलापन बहुत बढ़ गया है।" — और मैंने उससे पूछा, "हे मेरे स्वामी, क्या आप मुझसे कुछ करवाना चाहते हैं?" उसने उत्तर दिया, "हाँ: मैं उसे एक पत्र लिखना चाहता हूँ और उसे तुम्हारे द्वारा भेजना चाहता हूँ; और यदि तुम मुझे उसका उत्तर ला कर दोगे, तो तुम्हें मुझसे एक हजार सोने के सिक्के मिलेंगे; और यदि तुम मुझे उसका उत्तर नहीं ला कर दोगे, तो तुम्हें अपनी यात्रा के बदले में दो सौ सोने के सिक्के मिलेंगे।" तो मैंने उत्तर दिया, "जो तुम्हें उचित लगे, वही करो।" और उसने अपनी एक दासी को बुलाया और

कहा, "मेरे लिए एक स्याही की दवात और एक कागज लाओ।" तब वह उसके द्वारा माँगी गई वस्तुएँ ले आई; और उन्होंने ये आयतें लिखीं: — हे मेरी प्रेमिका, अल्लाह की कसम खाकर मैं तुमसे विनती करता हूँ, मेरे प्रति नरमी बरतो; क्योंकि प्रेम ने मेरी बुद्धि छीन ली है! तुम्हारे लिए मेरे जुनून ने मुझे गुलाम बना लिया है, और मुझे बीमारी के वस्त्र पहना दिए हैं, और मुझे दीन बना दिया है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.89%** है।

438 इब्न मंसूर की कहानी, इससे पहले मैं प्रेम को हल्के में लेता था और हे मेरी प्रेमिका, इसे एक आसान विषय समझता था; परन्तु जब इसने मुझे अपने सागर की लहरें दिखाईं, तो मैंने ईश्वर के न्याय के आगे समर्पण कर दिया और पीड़ित को क्षमा कर दिया, यदि आप चाहें, तो मुझ पर दया कीजिए और मुझे मिलने का अवसर दीजिए; और यदि आप मुझे मार डालें, तो भी कृपा करना न भूलें।16 तब उसने पत्र पर मुहर लगा दी और मुझे सौंप दिया, और मैंने उसे लेकर बुदूर के घर की ओर चल दिया। मैंने पहले की तरह धीरे-धीरे पर्दा उठाना शुरू किया; और देखो, दस दासियाँ, ऊँची छाती वाली कुंवारी लड़कियाँ, चाँद जैसी; और बुदूर की महिला उनके बीच बैठी थी, तारों के बीच पूर्णिमा के चाँद की तरह, या बादलों से ढके बिना सूर्य की तरह; और वह दुःख और पीड़ा से मुक्त थी। जब मैं उसे देख रहा था और उसकी इस हालत पर हैरान था, तभी उसने मेरी तरफ देखा और मुझे दरवाजे पर खड़ा पाया; तब उसने मुझसे कहा, "हे इब्न मंसूर, आपका हार्दिक स्वागत है! अंदर आइए।" तो मैं अंदर गया और उसे प्रणाम करके वह कागज उसे दे दिया; जब उसने उसे पढ़ा और उसकी बातें समझ लीं, तो वह हंस पड़ी और मुझसे बोली, "हे इब्न मंसूर, कवि ने झूठ नहीं बोला था जब उसने कहा था, 'मैं तुम्हारे लिए अपने प्रेम

को तब तक दृढ़ता से रोके रखूंगा जब तक कि कोई दूत मेरे पास न आ जाए।' हे इब्न मंसूर," उसने आगे कहा, "मैं अब तुम्हारे लिए एक उत्तर लिखूंगी, ताकि वह तुम्हें वह दे जो उसने तुमसे वादा किया है।" और मैंने उत्तर दिया, "अल्लाह तुम्हें इसका अच्छा प्रतिफल दे!" फिर उसने अपनी एक दासी को बुलाया और कहा, "मेरे लिए एक स्याही की दवात और कागज लाओ।" और जब वह उसकी मांग पूरी कर लाई, तो उसने उसे कुछ कठोर छंद लिखे। इसलिए मैंने उससे कहा, ऐ मेरी स्वामिनी, अल्लाह की कसम, उसकी मृत्यु से पहले उसके पास इस पत्र को पढ़ने के बाद समाप्त होने वाले समय से अधिक समय नहीं बचा है। तब मैंने उसे फाड़ दिया और उससे कहा, उसे इन आयतों से अलग कुछ लिखो। उसने उत्तर दिया, मैं सुनती और मानती हूँ — लेकिन उसने उसे पिछली आयतों से भी अधिक कठोर आयतें लिखीं। तब मैंने उससे कहा, ऐ मेरी स्वामिनी, अल्लाह की कसम, वह इन आयतों को पढ़े बिना अपने शरीर को नहीं छोड़ेगा। उसने उत्तर दिया, ऐ इब्न मंसूर, मेरा उत्साह इतना बढ़ गया था कि मैंने जो कहा है वह कह दिया। मैंने जवाब दिया, यदि तुमने इससे अधिक कहा होता, तो यह तुम्हारे लिए उचित होता; परन्तु क्षमा करने की प्रवृत्ति उदार लोगों का गुण है। और जब उसने मेरी बात सुनी, तो उसकी आँखों में आँसू भर आए और उसने उसे एक पत्र लिखा — ऐ मोमिनों के सरदार, अल्लाह की कसम, तुम्हारी सभा में कोई भी ऐसा नहीं है जो इसके समान लिख सके। उसने उसमें ये पंक्तियाँ लिखीं: —

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.23%** है।

और लेडी बुदूर, इत्यादि। 439 यह संकोच और घृणा कब तक जारी रहेगी? तुमने ईर्ष्यालुओं की मेरे प्रति दुर्भावना को शांत कर दिया है। शायद मैंने कुछ गलत किया हो और मुझे इसका एहसास न हो: तो मुझे

बताओ कि मेरे बारे में तुम्हें क्या बताया गया है। हे मेरे प्रिय, मैं तुम्हारा स्वागत उसी प्रकार करना चाहती हूँ जैसे मैं अपनी आँखों और पलकों में नींद का स्वागत करती हूँ: और चूंकि तुमने प्रेम का पवित्र प्याला पी लिया है, यदि तुम मुझे मदहोश देखो, तो मुझे दोष मत देना। और जब उसने पत्र लिखना समाप्त कर दिया और उस पर मुहर लगा दी, तो उसने उसे मुझे सौंप दिया; और मैंने उससे कहा, हे मेरी स्वामिनी, निश्चय ही यह पत्र बीमारों को ठीक करेगा और प्यासों को तृप्त करेगा। मैंने पत्र लिया और बाहर चला गया; और मेरे जाने के बाद उसने मुझे बुलाया और मुझसे कहा, हे इब्न मंसूर, उससे कहो, वह आज रात तुम्हारी मेहमान होगी। तो मैं इस बात से अत्यंत प्रसन्न हुआ। मैं उमरज के बेटे जुबेर को पत्र लेकर गया और जब मैं उसके पास पहुँचा तो मैंने देखा कि वह दरवाजे पर टकटकी लगाए उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था; और जैसे ही मैंने उसे पत्र दिया, उसने उसे खोला और पढ़ा, उसका अर्थ समझ गया, और जोर से चिल्लाते हुए बेहोश होकर गिर पड़ा। और जब वह संभला, तो उसने कहा, हे इब्न मंसूर, क्या उसने यह पत्र अपने हाथ से लिखा है, और क्या उसने इसे अपनी उंगलियों से छुआ है? - हे मेरे स्वामी, मैंने कहा, क्या लोग अपने पैरों से लिखते हैं? - और अल्लाह की कसम, हे धनियों के सरदार, मेरी बात अभी खत्म भी नहीं हुई थी कि हमने गलियारे में उसके पायल की खनक सुनी, जैसे ही वह अंदर आई। उसे देखते ही वह उठ खड़ा हुआ, मानो उसे अब कोई दर्द न हो, और उसे ऐसे गले लगाया जैसे अक्षर लाम अलिफ़ को गले लगाता है,17 और उस व्यक्ति का रोग जो अपने रोग से बच नहीं सकता, उससे दूर हो गया।18 फिर वह बैठ गया, लेकिन वह नहीं बैठी; तो मैंने उससे कहा, हे मेरी स्वामिनी, तुम क्यों नहीं बैठी हो? उसने उत्तर दिया, हे इब्न मंसूर, मैं तब तक नहीं बैठूँगी जब तक हमारे बीच जो शर्त तय नहीं हो जाती। — और मैंने पूछा, तुम दोनों के बीच वह

शर्त क्या है? — उसने उत्तर दिया, प्रेमियों के रहस्य कोई नहीं जानता। फिर उसने अपना मुँह उसके कान के पास ले जाकर उससे कुछ निजी बातें कहीं; जिस पर उसने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और मानता हूँ। और वह उठा, और अपने एक दास से फुसफुसाकर कुछ कहा; जिसके बाद दास थोड़ी देर के लिए चला गया, और फिर एक काकली और दो गवाहों के साथ वापस आया। और जुबेर उठा, और एक लाख सोने के सिक्कों से भरा एक थैला लेकर बोला, "हे कदी, इस कन्या से मेरी शादी की रस्म पूरी कर दीजिए, और इस राशि को दहेज के रूप में ले लीजिए।" तब कदी ने उससे कहा, "कहिए, मैं सहमत हूँ।" और उसने ऐसा ही कहा। तो उन्होंने शादी की रस्म पूरी की; और उसके बाद, कन्या ने थैला खोला, उसमें से कुछ सिक्के अपने हाथ में भर लिए, और

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.78%** है।

140 इब्न मंसूर की कहानी, उसने कदी और गवाहों को दे दी। फिर उसने जुबैर को पर्स में जो बचा था, वह दे दिया, और कदी और गवाह चले गए। मैं उनके साथ आनंद और प्रसन्नता से आधी रात बीतने तक बैठा रहा, फिर मैंने मन ही मन कहा, ये दो प्रेमी हैं, और लंबे समय से अलग हैं, इसलिए मैं तुरंत उठ जाऊँगा, ताकि मैं उनसे दूर किसी जगह सो सकूँ और उन्हें अकेला छोड़ दूँ। तदनुसार मैं उठा; लेकिन उस युवती ने मेरे वस्त्र पकड़ लिए और मुझसे कहा, तुम्हारे मन में क्या विचार आया है? मैंने उत्तर दिया, ऐसी-ऐसी बातें। और उसने कहा, बैठो, और जब हम तुम्हारे जाने की इच्छा करेंगे, तो हम तुम्हें विदा कर देंगे। इसलिए मैं भोर होने तक उनके साथ बैठा रहा, फिर उसने कहा, हे इब्न मंसूर, उस निजी कक्ष में जाओ; क्योंकि हमने उसे तुम्हारे लिए तैयार किया है, और वह तुम्हारा सोने का स्थान है। और मैं उठा, और सुबह तक उसी में सोता रहा; और

जब मैं उठा, तो एक सेवक मेरे पास एक बेसिन और एक सुराही लेकर आया, और मैंने स्नान किया और सुबह की नमाज़ पढ़ी; जिसके बाद मैं बैठ गया। और जब मैं बैठा था, तभी जुबैर और उसकी प्रेमिका घर में बने स्नानघर से बाहर आए, अपने बालों को निचोड़ते हुए; और मैंने उन्हें सुप्रभात कहा, उनकी सुरक्षा और पुनर्मिलन पर बधाई दी, और जुबैर से कहा, जो शर्त से शुरू होता है, वह संतोष से समाप्त होता है। उसने उत्तर दिया, तुमने सत्य कहा है, और तुम उदार व्यवहार के पात्र हो। फिर उसने अपने कोषाध्यक्ष को बुलाकर कहा, मेरे लिए तीन हज़ार सोने के सिक्के लाओ। तो वह उसके लिए उतनी राशि से भरा एक थैला ले आया, और जुबैर ने मुझसे कहा, कृपया इसे स्वीकार कर लो। लेकिन मैंने उत्तर दिया, मैं इसे तब तक स्वीकार नहीं करूँगा जब तक तुम मुझे यह नहीं बताते कि उस अत्यधिक घृणा के बाद प्रेम का उसकी प्रेमिका से तुम्हारी ओर मुड़ने का कारण क्या था। और उसने कहा, मैं सुनता और मानता हूँ। जान लो कि हमारा एक त्योहार है जिसे नव वर्ष का त्योहार कहते हैं, जब लोग नावों में सवार होकर नदी में मौज-मस्ती करते हैं।19 और मैं अपने साथियों के साथ मौज-मस्ती करने निकला, और मैंने एक नाव देखी जिसमें दस दासियाँ चाँद जैसी थीं, और उनके बीच में यह महिला बुदूर थी, जिसके पास उसका वीणा था; और उसने उस पर ग्यारह धुनें बजाईं; जिसके बाद वह पहली धुन पर लौटी, और ये छंद गाए: — फ़िरो मेरे हृदय की आग से भी शीतल है; और चट्टान मेरे स्वामी के हृदय से भी कोमल है। सचमुच मैं उसकी रचना पर आश्चर्य करता हूँ, जिसका हृदय चट्टान जैसा है और शरीर जल के समान कोमल है। • • और मैंने उससे कहा, दो छंद और धुन दोहराओ। लेकिन उसने नहीं माना। इसलिए मैंने नाविकों को उस पर पत्थर फेंकने का आदेश दिया; और उन्होंने उस पर पत्थर फेंके

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.92%** है।

और लेडी बुदूर, इत्यादि, ने 441 संतरे तब तक दिए जब तक हमें यह डर नहीं हो गया कि जिस नाव में वह थी वह डूब जाएगी। फिर वह अपने रास्ते चली गई: और यही उसके दिल से मेरे दिल में प्रेम के स्थानांतरण का कारण बना। — इसलिए, इब्न मंसूर कहते हैं, मैंने उनके पुनर्मिलन पर उन्हें बधाई दी, और पर्स और उसके अंदर की चीजें लेकर बगदीद चला गया। और खलीफा का सीना चौड़ा हो गया, और उसकी बेचैनी और हृदय का संकुचन, जिससे वह पीड़ित था, अब उसे परेशान नहीं कर रहा था। 20 3 L

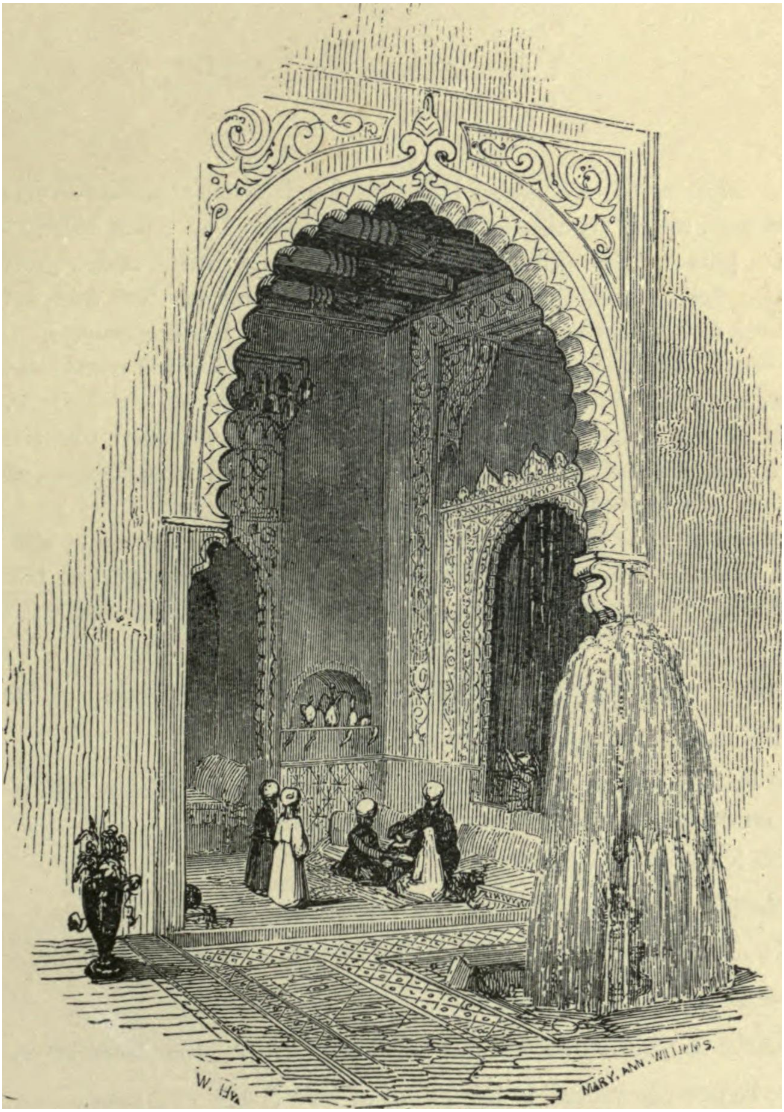

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.26%** है।

सोलहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 1. — अलरोएजे का आविष्कार। हारून एन-इलास्टीड, कई अन्य पूर्वी लोगों की तरह, अनिद्रा से बहुत परेशान थे। इस तरह की परेशानी से राहत पाने या ध्यान भटकाने के लिए आमतौर

पर कहानी सुनाना, संगीत सुनना और शरीर को धीरे से मलना या दबाना जैसे उपाय अपनाए जाते थे; और इसी उद्देश्य से एयर-बेड का आविष्कार किया गया था। अलमक्रीज़ी,1 मिस्र के गवर्नर खुमारवेह2 के निर्माणों के अपने विवरण में, जो अहमद के पुत्र और तोलून के पुत्र थे, बताते हैं कि जब उन्होंने अत्यधिक अनिद्रा की शिकायत की, तो उनके चिकित्सक ने उन्हें पारे का एक कुंड बनाने की सलाह दी। यह कुंड उन्होंने अपने महल के सामने बनवाया, जो उस स्थान पर था जिसे अब इल्लुमेलेह कहा जाता है:3 यह 50 क्यूबिट लंबा और 50 क्यूबिट चौड़ा था; और इसके निर्माण और इसे पारे से भरने में बहुत पैसा खर्च हुआ। तालाब के कोनों पर शुद्ध चांदी के खूंटे लगे थे, जिनसे चांदी के छल्लों से रेशम की मजबूत पट्टियाँ बंधी थीं; और हवा से फुलाए हुए चमड़े का बिस्तर तालाब पर बिछाया गया था और रेशम की पट्टियों से बीच में बांधा गया था, जो राजकुमार के लेटने पर लगातार सुखद रूप से हिलता रहता था। नोट नोट नोट स्वानेह्स। नोट नोट नोट नोट नोट नोट 2. "इब्न" का अर्थ "पुत्र" है और "इब्न-मंसूर" का अर्थ "मंसूर का पुत्र" है। 3. यह निश्चित रूप से एक घोर अतिशयोक्ति है। 4. ब्रेस्लाउ के संस्करण में भी यही है। काहिरा संस्करण में, "दो उक-हो की तरह" यह नाम आम तौर पर कैमोमाइल को दिया जाता है। 5. अध्याय x के नोट 43 देखें। जी. "लुत्फ़" का अर्थ है "लालित्य," "नाजुकता," आदि। 7. हम मान सकते हैं कि उसने यह किसी यात्री से सीखा होगा। 8. अध्याय x के नोट 34 देखें। 9. लगभग यही दोहा पहले भी आ चुका है। अध्याय iii के नोट 19 देखें। 10. "बेनी-शेबान" अरबों की दो जनजातियों का नाम है। 1. उनकी "खितात" में। 2. हमारे युग की नौवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में। [अहमद, औलून का पुत्र, बेनी-औलून के लगभग स्वतंत्र राजवंश का संस्थापक था, जिसने मिस्र पर पलायन के वर्ष (लगभग) 255 से 292 तक शासन किया। अहमद के

पुत्र और उत्तराधिकारी खुमारावेह ने वर्ष 270 से 282 तक शासन किया। - संपादक।] 3. यह एक काहिरा के गढ़ के सामने एक बड़ा खाली स्थान।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.56%** है।

अध्याय सोलहवें के लिए टिप्पणियाँ। 44.3 टिप्पणी 11. अध्याय 11 की टिप्पणी 112 देखें। टिप्पणी 12. "खोलंज," जिसे "खलेंज" भी लिखा जाता है, को शब्दकोशों में एक ऐसे वृक्ष के नाम के रूप में समझाया गया है जिससे लकड़ी के कटोरे बनाए जाते हैं। टिप्पणी 13. जिस शब्द का अनुवाद मैं "क्रेन" ("घरानीक") कर रहा हूँ, वह शायद यहाँ किसी अन्य प्रकार के लंबी गर्दन वाले जलीय पक्षियों को दर्शाता है। जिसका अनुवाद मैं "पोरिंगर्स" कर रहा हूँ, वह "सेकरीज" है, जो "स्नक्रूजेह" का बहुवचन है, जिसे "सुक्रुजेली" और "सुकुरजेह" भी लिखा जाता है, और यह फारसी मूल का है: इसका जो अर्थ मैंने दिया है (और जो मुझे अपने स्वयं के पांडुलिपि शब्दकोश में मिला है) वह मेरे शेख को अज्ञात प्रतीत होता है। "सिकबाज" के बारे में अध्याय 5 की टिप्पणी 98 देखें। लेकिन, मैं यह भी कहना चाहूँगा कि यहाँ जिस सिकबज का ज़िक्र है, उसके अलावा भी कई तरह के सिकबज होते हैं: मेरा मानना है कि सभी सिकबज में सिरका मिलाया जाता है। "शोक करना" के स्थान पर हम "पुकारना" पढ़ सकते हैं; लेकिन मैं पहले वाले अर्थ को ज़्यादा पसंद करता हूँ, क्योंकि यह उस चीज़ की खूबियों का गुणगान करता है जिसके लिए शोक मनाया जा रहा

है। "काटा" एक प्रकार का तीतर है, जिसका ज़िक्र पहले भी हो चुका है। "भूरा हुआ मांस" (मूल में, "मोहम्मर") मांस के छोटे-छोटे टुकड़े होते हैं, जिन्हें लंबे समय तक तला जाता है, जब तक कि वह लाल-भूरे रंग का न हो जाए। मूल पाठ में चार और श्लोक हैं; लेकिन मैंने उन्हें अपने पाठ में छोड़ दिया है, क्योंकि मैं उन्हें अनुपयुक्त और महत्वहीन मानता हूँ। हालाँकि, मैं उन्हें यहाँ शामिल कर रहा हूँ: - हे मेरे हृदय की आहें, सीढ़ियों पर रखी दो मछली की थालियों के लिए! 5 ईश्वर की स्तुति हो उस भोजन के लिए! कितना उत्तम था वह भोजन, जिसमें दालें घड़ों के सिरके में भीगी हुई थीं,6 और चावल भैंस के दूध से पकाए गए थे, जिसमें हाथ बाजूबंद तक डूबे हुए थे! हे मेरी आत्मा, धैर्य रख; क्योंकि ईश्वर उदार है: यदि तेरे साधन सीमित हों, तो वह तुझे राहत देगा। टिप्पणी 14. "मनुष्यों का यही रिवाज है; जब कोई उनके साथ बुरा व्यवहार करता है, तो वे उसे और उसके देश से आने वाले हर व्यक्ति को कोसते हैं।"7 टिप्पणी 15. जो प्रेम से मरता है, वह स्वर्ग का आनंद लेगा। अध्याय 15 की टिप्पणी 24 देखें। टिप्पणी 16. 'अर्थात, मेरे लिए दया की भीख मांगना मत भूलना। टिप्पणी 17. लाम और अलिफ़, जब किसी अन्य अक्षर के साथ नहीं जुड़ते, तो आम तौर पर दो लगभग सीधी रेखाओं के रूप में होते हैं, जो एक दूसरे को तिरछे काटते हैं और नीचे जुड़े होते हैं। टिप्पणी 18. यह वाक्यांश (मूल रूप में, "zalet 'anhu 'illetu-lledhce la ycnsarif"), जिसका मैंने स्वतंत्र रूप से अनुवाद किया है, एक अन्य अर्थ भी रखता है और व्याकरण के एक नियम की ओर इशारा करता है, जिससे अरबी विद्वान परिचित हैं और अन्य लोगों को स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं होगी। टिप्पणी 19.— नव वर्ष के त्योहार पर। वसंत विषुव से शुरू होने वाला नव वर्ष का त्योहार आम तौर पर फारसी मूल का माना जाता है; लेकिन मुझे लगता है कि यह यहूदी फसह से उत्पन्न हुआ

हो सकता है। यह प्राचीन फारसियों का प्रमुख त्योहार था और छह दिनों तक चलता था। पहले दिन [जिसे वे 'नौ-रद्ज़' और अरब 'नद्रूज़' कहते थे] राजा ने जनता की खुशी को बढ़ावा देने पर मुख्य ध्यान दिया; दूसरे दिन उन्होंने चिकित्सकों और ज्योतिषियों का स्वागत किया; तीसरे दिन पुजारियों और राज्य सलाहकारों का; चौथे दिन शाही परिवार के राजकुमारों और रईसों का; पाँचवें दिन शाही बच्चों का; और छठे दिन, जिसे राजा का विशेष दिन माना जाता था, उनके उप-शाब्दिक रूप से "दो रंग" ("लॉन्सिन")। कई अलग-अलग व्यंजनों को आमतौर पर इसी नाम से पुकारा जाता है (क्योंकि मुझे पहले स्वर के बारे में संदेह है)। यह एक छोटे जार के लिए प्रयोग किया जाता है, और मुझे यह ऊपर उल्लिखित शब्दकोश में, और बोचथोर के शब्दकोश में भी मिलता है। जिन शब्दों का अनुवाद मैं "सीढ़ियों पर" ("fi-1-ma'areeji") करता हूँ, उनमें शायद कुछ अंतर हो सकते हैं। कॉसिन डी पर्सेवल की "डिक्शननेयर फ्राईबेहतर व्याख्या है। अरेबे।'* सी "जार" शब्द का अनुवाद "डेकाकीज" है, 'मेरे शेख द्वारा सीमांत नोट।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.66%** है।

अध्याय सोलहवें के लिए 444 टिप्पणियाँ। लोगों ने उन्हें अपने पद के अनुरूप मुफ्त उपहार दिए। नवरोज़ की पूर्व संध्या पर, नव वर्ष का रूप धारण किए एक आकर्षक युवक को शाही शयनकक्ष के द्वार पर तैनात किया गया था, और जैसे ही सूर्य क्षितिज के ऊपर दिखाई दिया, वह बिना किसी औपचारिकता के उसमें प्रवेश कर गया। राजा ने तुरंत उससे कहा, 'तुम कौन हो? तुम कहाँ से आए हो? तुम कहाँ जा रहे हो? तुम्हारा नाम क्या है? तुम यहाँ क्यों आए हो? और तुम क्या लाए हो?' इस पर उन्होंने उत्तर दिया, 'मैं सौभाग्यशाली और धन्य हूँ: मुझे ईश्वर ने यहाँ भेजा है,

और मैं अपने साथ नया साल लेकर आया हूँ।' फिर बैठते ही, एक और व्यक्ति एक बड़ी चाँदी की थाली लेकर प्रकट हुआ, जिसमें गेहूँ, जौ, मटर, तिल और चावल (प्रत्येक के सात भुट्टे और नौ दाने) थे, साथ में चीनी का एक टुकड़ा और सोने के दो नए सिक्के थे, जिन्हें भेंट के रूप में राजा के समक्ष रखा गया। फिर प्रधानमंत्री, सेनापति, कोषाध्यक्ष और युद्ध अधीक्षक प्रवेश कर गए; उनके पीछे-पीछे कुलीन और प्रजा अपने-अपने वर्ग और पद के अनुसार आए। उपर्युक्त अनाजों से बनी एक बड़ी रोटी राजा को भेंट की गई, जिसका कुछ भाग खाने के बाद उन्होंने अपने आस-पास के लोगों को भी कुछ भाग दिया और कहा, 'यह नया दिन है, नए महीने का, नए साल का, नए समय का; जब समय के अनुरूप सभी चीजों का नवीनीकरण होना चाहिए।' फिर उन्होंने अपने कुलीनों को कीमती वस्त्र पहनाकर, आशीर्वाद दिया और लाए गए उपहारों को उनमें बाँट दिया। इस उत्सव की उत्पत्ति उनके प्राचीन राजाओं में से एक, जेमशेद से मानी जाती है, जिन्होंने तब इस्तखर (पर्सेपोलिस) में अपना पहला सार्वजनिक प्रवेश किया था, जिसका निर्माण उन्होंने अभी-अभी पूरा किया था; और, अन्य नियमों के साथ, उन्होंने आदेश दिया कि फारसी युग उसी दिन से प्रारंभ होना चाहिए।"8 इस टिप्पणी में उल्लिखित अंश में वर्णित एक समान प्रथा आज भी मिस्र में प्रचलित है। इसे "शेम एन-नेसीम" (या "ज़ेफिर की गंध") कहा जाता है, और यह खमासीन के पहले दिन मनाया जाता है, जो उनतालीस दिनों की अवधि होती है (जब गर्म दक्षिणी हवाएँ अक्सर चलती हैं), जो कॉप्टिक त्योहार ईस्टर रविवार के ठीक बाद वाले दिन से शुरू होती है और पेंटेकोस्ट या व्हाइट संडे के दिन समाप्त होती है। इस अवधि के पहले दिन की सुबह, कई लोग, विशेषकर महिलाएं, एक प्याज तोड़ती हैं और उसे सूंघती हैं; और दोपहर के समय, काहिरा के कई नागरिक थोड़ी दूर तक ग्रामीण

इलाकों में घोड़े पर सवार होकर या पैदल चलकर जाते हैं, या नावों में सवार होकर, आमतौर पर उत्तर दिशा की ओर, ताज़ी हवा लेने के लिए जाते हैं, या जैसा कि वे कहते हैं, हवा को सूंघने के लिए जाते हैं, जिसका उस दिन उनका मानना है कि अद्भुत रूप से लाभकारी प्रभाव होता है। अधिकांश लोग ग्रामीण इलाकों में या नदी के किनारे भोजन करते हैं। हालाँकि, उलेमा (या विद्वान) अपना शेम-एन-नेसीम सौर वर्ष की एक निश्चित अवधि में मनाते हैं; वसंत-तिमाही के पहले तीन दिन फ़ारसी नौ-रज़ के अनुरूप होते हैं। खमासीन की अवधि का उल्लेख करने के बाद, मैं यह जोड़ना चाहूँगा कि मेरा मानना है कि इसका उल्लेख करने वाले सभी यूरोपीय लेखकों ने, मेरे अलावा, इसे "अल-खमासीन" या इसी शब्द से अलग तरह से व्यक्त किया है, जिसका अर्थ है "पचास;" 5. यानी "पचास दिन;" लेकिन अरब लोग इसे हमेशा "अल-खमासीन" कहते हैं, जिसका अर्थ है "पचास", जो "खमसीन" का एक सामान्य बहुवचन है। इसी प्रकार, अरब लोग यहूदी कैलेंडर की इसी अवधि को "अल-खमासीन" से बिल्कुल मेल खाने वाले शब्द से पुकारते हैं; अर्थात् "अल-खमसीनात"; केवल इसके अंतिम दिन को "अल-खमसीन" कहा जाता है; जैसा कि डी सैसी द्वारा दिए गए अल-मक्रीज़ी के एक उद्धरण में देखा जा सकता है।9 हालांकि, इस प्रख्यात प्राच्यविद् के पास कॉप्टिक कैलेंडर की उपरोक्त अवधि के नाम के लिए यूरोपीय लोगों के अलावा कोई और स्रोत नहीं था; क्योंकि उन्होंने यात्रियों का अनुसरण किया है और इसे "खमसीन" लिखा है। टिप्पणी 20. इस कहानी के बाद सोलह उपाख्यान हैं, जो तीन सौ सत्तावनवीं रात के एक भाग के साथ समाप्त होते हैं; जिनमें से ग्यारह का मैं अनुवाद करता हूँ और यहाँ शामिल करता हूँ। ई. रिचर्डसन की फ़ारसी, अरबी और अंग्रेज़ी, अरबी शब्दकोश का पृष्ठ 98 देखें। जॉनसन के संस्करण, शब्दकोश के पृष्ठ 292 और 320 पर उनके अनुवाद और

टिप्पणियाँ भी देखें। 9 उनकी क्रेस्टोमैथी अराबे, द्वितीय संस्करण, खंड 1 देखें।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.95%** है।

भाग्य के उतार-चढ़ाव के उदाहरण। कहा जाता है कि एक व्यक्ति अनेक ऋणों से दब गया था और उसकी परिस्थितियाँ विकट हो गई थीं; इसलिए उसने अपने लोगों और परिवार को छोड़कर हताशा में भटकना शुरू कर दिया। वह तब तक चलता रहा जब तक कि काफी समय बाद वह ऊँची दीवारों और विशाल इमारतों वाले एक शहर के पास नहीं पहुँच गया, और उसने उसमें बेहद अपमानित और निराश अवस्था में प्रवेश किया। उसकी भूख बहुत बढ़ गई थी और यात्रा ने उसे थका दिया था; और जब वह शहर की एक मुख्य सड़क से गुजर रहा था, तो उसने कुछ बड़े लोगों को गुजरते देखा; तब वह उनके साथ चल पड़ा जब तक कि वे राजाओं के महल जैसे दिखने वाले एक निवास में नहीं पहुँच गए, और वह उनके साथ अंदर चला गया, और वे तब तक अंदर जाते रहे जब तक कि वे महल के ऊपरी छोर पर बैठे एक व्यक्ति के पास नहीं पहुँच गए। वह भव्य और गरिमामय था, और सेवकों और दरबारियों से घिरा हुआ था, मानो वह वज़ीरों के वंशज हों; और जब उसने उस दल को देखा तो वह उनके पास उठा और उनका आदरपूर्वक आतिथ्य सत्कार किया। यह देखकर ऊपर वर्णित व्यक्ति का मन व्याकुल हो गया और वह भवन की सुंदरता, नौकरों और आश्रितों को देखकर चकित रह गया। इसलिए वह अपनी जान के डर से व्याकुल और भयभीत होकर पीछे हट गया, और तब तक लोगों से दूर एक एकांत स्थान पर बैठा रहा ताकि कोई उसे देख न सके। और जब वह बैठा ही था, तभी अचानक एक आदमी उसके पास आया जिसके साथ चार शिकारी कुत्ते थे, जो विभिन्न प्रकार के रेशम और जकूज़ी से सजे हुए थे, और

उनकी गर्दन पर सोने के हार और चांदी की जंजीरें थीं; और उसने उनमें से प्रत्येक को अलग-अलग स्थानों पर जंजीरों से बांध दिया। फिर

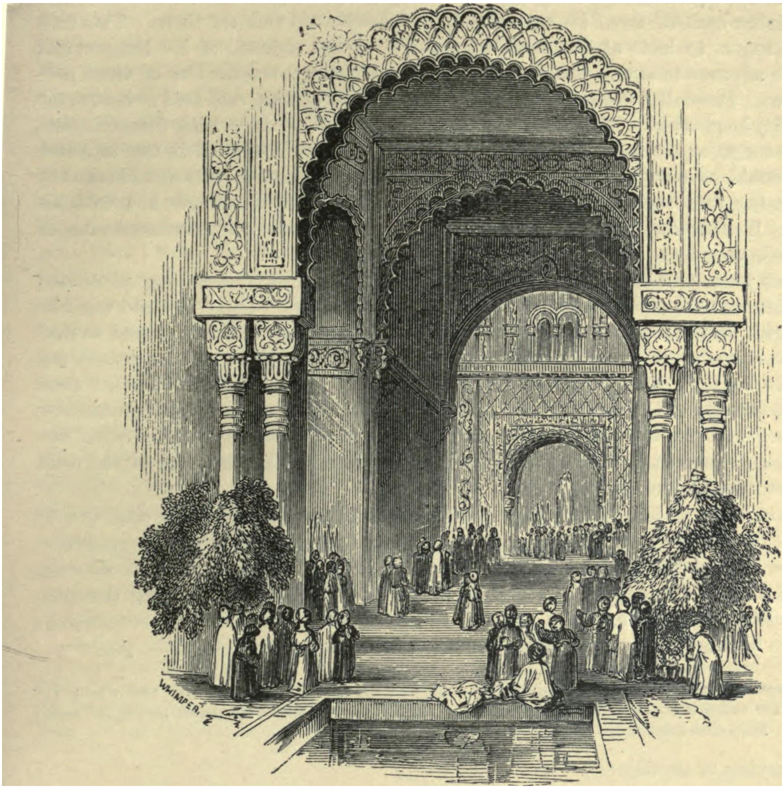

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.95%** है।

अध्याय सोलह के लिए 446 टिप्पणियाँ। वह चला गया, और प्रत्येक कुत्ते के लिए सोने से भरी एक थाली लेकर लौटा, जिसमें भरपूर भोजन था। उसने प्रत्येक कुत्ते के सामने उसकी अलग थाली रखी और उन्हें छोड़कर चला गया। इस प्रकार, वह व्यक्ति अपनी तीव्र भूख के कारण भोजन को देखने लगा और कुत्तों में से किसी एक के पास जाकर उसके साथ भोजन करना चाहता था; परन्तु कुत्तों के भय ने उसे रोक दिया। तभी, एक कुत्ते ने उसकी ओर देखा, और ईश्वर (जिसका नाम महान हो!)

ने उसे उसकी स्थिति का ज्ञान प्रदान किया: अतः वह थाली से पीछे हट गया और उस व्यक्ति को संकेत दिया। इसके बाद वह पास आया और तृप्त होने तक भोजन किया, फिर जाने लगा; परन्तु कुत्ते ने उसे संकेत दिया कि वह थाली, उसमें बचे भोजन सहित, अपने लिए ले ले, और अपने अगले पंजे से उसे उसकी ओर धकेल दिया। अत: उसने थाली ले ली और घर से बाहर निकल गया, और उसके पीछे कोई नहीं आया। फिर वह दूसरे शहर गया, जहाँ उसने वह थाली बेच दी और उससे मिले पैसों से सामान खरीदकर अपने शहर लौट आया। वहाँ उसने अपना सामान बेचकर अपने सारे कर्ज चुका दिए और उसकी संपत्ति इतनी बढ़ गई कि वह अत्यंत समृद्ध और खुशहाल हो गया; और वह लंबे समय तक अपने शहर में ही रहा; फिर उसने मन ही मन सोचा, मुझे उस थाली के मालिक के शहर जाना चाहिए और उसके लिए एक सुंदर और उपयुक्त उपहार ले जाना चाहिए, और उसे उस थाली की कीमत चुकानी चाहिए जो उसके एक कुत्ते ने मुझे दी थी। फिर उसने उस व्यक्ति के लिए उपयुक्त उपहार लिया और थाली की कीमत अपने साथ लेकर अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। वह दिन-रात चलता रहा जब तक कि वह उस शहर में नहीं पहुँच गया, और उस व्यक्ति से मिलने की इच्छा से उसमें प्रवेश किया; और वह उसकी मुख्य सड़कों पर चलता रहा जब तक कि वह उसके घर के पास नहीं पहुँच गया। लेकिन उसे खंडहरों के सिवा कुछ नहीं दिखा, बस एक कौवे की विलाप भरी आवाज़, वीरान घर, बदली हुई परिस्थितियाँ और ऐसी बदली हुई जगह जिसे पहचानना नामुमकिन था; इस पर उसका हृदय और आत्मा व्याकुल हो गए और उसने कवि के शब्दों को दोहराया: — गुप्त स्थान अपने छिपे हुए खजानों से खाली हैं, जैसे हृदय विज्ञान और भक्ति से खाली हैं: और घाटी पूरी तरह बदल गई है, और उसके हिरण अब वे मृग नहीं रहे, न ही उसका रेत का ढेर वह रेत का ढेर रहा। और

दूसरे कवि का कथन: — • सोआडा का प्रेत रात में मुझे जगाने आया, सुबह के समय, जब मेरे साथी रेगिस्तान में सो रहे थे: • लेकिन जब हम रात के प्रेत को देखने के लिए जागे, तो मैंने हवा को खाली और दर्शन का स्थान दूर पाया। और जब उस व्यक्ति ने उन जीर्ण-शीर्ण खंडहरों को देखा, और भाग्य के हाथों उनके खुले हाथों किए गए अत्याचारों को देखा, और पाया कि उनके मूल स्वरूप के केवल निशान ही बचे हैं, तो ज्ञान ने उसे जानकारी मांगने की आवश्यकता नहीं समझा। फिर उसने बगल में देखा, और एक दयनीय व्यक्ति को देखा, जिसकी हालत देखकर रोंगटे खड़े हो जाते थे, और पत्थर भी सहानुभूति से पिघल उठता था; और उसने कहा, हे प्रभु! भाग्य और समय ने इस स्थान के स्वामी के साथ क्या किया है, और उसके चमकते पूर्णिमा के चंद्रमा और उज्ज्वल तारे कहाँ हैं, और उसकी इमारतों के साथ जो हुआ है, उसका कारण क्या है, कि अब केवल दीवारें ही बची हैं? उसने उत्तर दिया, यह वही दयनीय व्यक्ति है जिसे तुम देख रहे हो, जो अपने ऊपर आई विपत्ति के कारण आहें भर रहा है। लेकिन क्या तुम नहीं जानते (उन्होंने आगे कहा) कि प्रेरित के कथन में उसका अनुसरण करने वाले के लिए एक सबक है, और सही राह पर चलने वाले के लिए एक चेतावनी है, - उनका कथन (अल्लाह उसे आशीर्वाद दे और बचाए!), निश्चय ही यह ईश्वर का मार्ग है (जिसका नाम महान है!) 30 "सोआदा" एक स्त्रीवाचक नाम है, और अक्सर इस अभिव्यक्ति का प्रयोग आम तौर पर एक काल्पनिक नाम के रूप में किया जाता है, जो एक सुंदर स्त्री पर लागू होता है, जिसका प्रयोग हल्के तिरस्कार के रूप में किया जाता है। 12 अर्थात्, "उसकी सुंदर युवतियाँ कहाँ हैं, पूर्णिमा के चाँद और तारों के समान?"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.35%** है।

सोलहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 417 क्या इस संसार की किसी भी वस्तु को बिना बाद में उसे नीचे गिराए ऊँचा उठाया जा सकता है? यदि तुम इस घटना के कारण के बारे में पूछताछ करो, तो भाग्य के उतार-चढ़ाव में कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं है। मैं इस स्थान का स्वामी, इसका संस्थापक, मालिक और निर्माता था, और इसके चमकते पूर्णिमा के चंद्रमाओं, भव्य साज-सामान, शानदार दुर्लभ वस्तुओं और सुंदर दासियों का स्वामी था: लेकिन भाग्य ने मुझसे मुंह मोड़ लिया है, और नौकरों और धन को छीन लिया है, और मुझे इस वर्तमान स्थिति में ला खड़ा किया है, और मुझ पर ऐसी घटनाएँ ला दी हैं जिन्हें उसने पहले छिपा रखा था। लेकिन तुम्हारी इस पूछताछ का कोई कारण अवश्य होगा। तो मुझे वह कारण बताओ, और आश्चर्य करना बंद करो। — तब उस व्यक्ति ने उसे सारी बात बताई, जो उस समय दुःख और व्याकुल था, और उससे कहा, मैं तुम्हारे लिए एक ऐसा उपहार लाया हूँ जिसकी आत्माएँ कामना करती हैं, और तुम्हारे सोने के थाले की कीमत जो मैंने ली थी; क्योंकि इसी से मेरी गरीबी दूर हुई और मुझे धन-दौलत मिली, मेरा घर उजाड़ होने के बाद फिर से आबाद हुआ और मेरी चिंता और तंगी दूर हुई। लेकिन दूसरे आदमी ने अपना सिर हिलाया, रोया, आहें भरीं और विलाप करते हुए कहा, "हे! मुझे लगता है तुम पागल हो गए हो, क्योंकि ऐसा व्यवहार किसी समझदार आदमी से नहीं हो सकता। हमारे कुत्तों में से कोई तुम्हें सोने की थाली भेंट करे और मैं उसे वापस ले लूँ? मेरे कुत्ते द्वारा भेंट की गई चीज़ को वापस लेना तो आश्चर्य की बात होगी; और अगर मैं कितनी भी गंभीर चिंता और बीमारी में होता, अल्लाह की कसम, तुम्हारे हाथों से मुझे नाखून के बराबर की कोई भी चीज़ स्वीकार्य नहीं होती। इसलिए जहाँ से तुम आए हो, वहाँ स्वस्थ और सुरक्षित जाओ।" — तब उस आदमी ने उसके पैर चूमे और उसकी प्रशंसा करते हुए वापस चला गया;

और उससे विदा लेते हुए, उसने यह श्लोक पढ़ा:— मनुष्य और कुत्ते एक साथ चले गए; और मनुष्यों और कुत्तों पर शांति हो! •— और कुआँ सर्वज्ञ है।18 l; ट्रिबुलेन के अनुवाद में, इस किस्से का संक्षेप में वर्णन किया गया है। वहाँ कुत्तों के मालिक को भाग्य के अन्याय की शिकायत करते हुए बताया गया है, और दूसरे व्यक्ति ने उत्तर दिया, तुम भाग्य पर अन्याय का आरोप लगाकर गलत हो: यदि तुम अपनी बर्बादी का कारण नहीं जानते, तो मैं तुम्हें बता दूँगा। तुमने कुत्तों को सोने के थालों में खिलाया है, और गरीबों को भूख से मरने के लिए छोड़ दिया है।

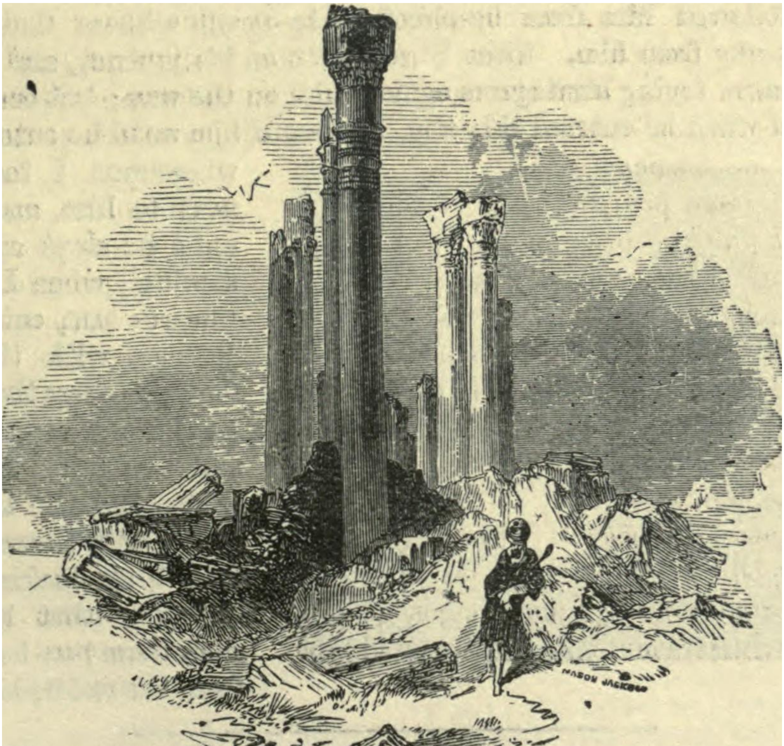

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.11%** है।

44* सोलहवें अध्याय पर टिप्पणियाँ। होसाम-ए-दीन वली और एक

तेजतर्रार। अलेक्जेंड्रिया के किलेबंद तटीय शहर में होसाम-ए-दीन नाम का एक वली था;14 एक रात जब वह अपने कार्यालय में बैठा था, तो एक सैनिक उसके पास आया और उससे कहा, "हे हमारे स्वामी वली, जान लीजिए कि मैं आज रात इस शहर में आया और एक खान में ठहरा और रात के एक तिहाई समय तक वहीं सोया; और जब मैं जागा, तो मैंने पाया कि मेरे दोनों थैले कटे हुए थे और उनमें से एक हजार सोने के सिक्कों से भरा पर्स चोरी हो गया था।" उसके शब्द अभी समाप्त ही हुए थे कि वली ने मुकद्दमों15 को अपने सामने बुलवाया और उन्हें खान में मौजूद सभी लोगों को लाने का आदेश दिया, और उन्हें सुबह तक कैद में रखने का भी हुक्म दिया। अत: जब सुबह हुई, तो उसने दंड के उपकरण लाने का आदेश दिया।16 फिर उसने उन लोगों को धन के स्वामी, सैनिक के समक्ष अपने सामने पेश करवाया और उन्हें दंड देने ही वाला था। परन्तु, देखो, एक व्यक्ति भीड़ में से रास्ता बनाते हुए वली और सैनिक के सामने आकर खड़ा हो गया; और उसने कहा, हे अमीर, इन सभी लोगों को रिहा कर दीजिए; क्योंकि इनके साथ अन्याय हुआ है: मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसने इस सैनिक की संपत्ति ली है, और यह वह बटुआ है जो मैंने उसके थैले से लिया था। फिर उसने उसे अपनी आस्तीन से निकालकर वली और सैनिक के सामने रख दिया। तब वली ने सैनिक से कहा, अपनी संपत्ति ले लो और उस पर अधिकार कर लो, तुम्हें लोगों से और कुछ नहीं माँगना है। और वे लोग, और वहाँ उपस्थित सभी लोग, उस व्यक्ति की प्रशंसा करने लगे और उसके लिए प्रार्थना करने लगे। लेकिन उस आदमी ने कहा, "हे अमीर, तुम्हारे सामने आकर यह बटुआ लाना कोई चतुराई नहीं थी; बल्कि इस सैनिक से दूसरी बार यह बटुआ छीनना अधिक चतुराई भरा होता।" वली ने पूछा, "हे चालाक, तुमने इसे कैसे छीना?" उसने उत्तर दिया, "हे अमीर, मैं काहिरा में पैसे बदलने वालों के बाज़ार में

खड़ा था और मैंने इस सैनिक को देखा जब उसने यह सोना लेकर अपने बटुआ में रखा; और मैं गली-गली उसका पीछा करता रहा, लेकिन उससे यह बटुआ छीनने का कोई तरीका नहीं मिला। फिर वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ा, और मैं शहर-शहर उसका पीछा करता रहा, हर कदम पर उसके खिलाफ चालें चलता रहा; लेकिन उससे बटुआ नहीं छीन सका। और जब वह इस शहर में आया, तो मैं उसका पीछा करता रहा जब तक कि वह इस खान में नहीं आ गया; फिर मैंने उसके बगल में अपना कमरा लिया और उसे तब तक देखता रहा जब तक वह सो नहीं गया और मुझे उसके खर्राटे सुनाई दिए।" जब मैं धीरे से उसकी ओर बढ़ा, तो मैंने इस चाकू से थैलों को चीरकर पर्स निकाल लिया: — ऐसा कहते हुए, उसने अपना हाथ बढ़ाया और वली और सिपाही के सामने से पर्स छीन लिया, वे दोनों, बाकी लोगों के साथ, पीछे हट गए, उसे देखते हुए, और यह मानते हुए कि वह केवल उन्हें यह दिखाएगा कि उसने थैलों से पर्स कैसे निकाला: लेकिन, देखो, उसने... "होसाम-ए-दीन" का अर्थ है "धर्म की तेज तलवार।" 15 उसके मुख्य अधिकारी। '6 कोड़े या डंडे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.00%** है।

सोलहवें चाफर के लिए, 449 भागा और पानी के एक कुंड में कूद गया। 1? तब वली ने अपने आश्रितों को पुकार कर कहा, उसका पीछा करो और उसके पीछे उतर जाओ। लेकिन उन्होंने अपने कपड़े उतारे भी नहीं थे और सीढ़ियों से नीचे उतर ही रहे थे कि वह चालाक आदमी अपने रास्ते चला गया: और उन्होंने उसे खोजा; पर वह नहीं मिला; क्योंकि अलेक्जेंड्रिया की सभी गलियाँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई थीं। इसलिए वे चालाक आदमी को पकड़े बिना लौट गए; और वली ने उस सैनिक से कहा, तुम्हारा लोगों पर कोई अधिकार नहीं है; क्योंकि तुम अपने अपराधी

को जानते थे, और अपनी संपत्ति पर कब्जा कर लिया था, और उसकी रक्षा नहीं की। और सैनिक उठा, उसका पैसा खो गया था, और लोग उसके और वली के हाथों से बच गए, पूरी तरह से ईश्वर की कृपा से, जिसका नाम महान है! तीन वली। अल-मेलिक एन-नासिर 18 ने एक दिन तीनों वलियों, अल-काहिरेह के वली 19, बूलक के वली 20 और मिस्र अल-कदीमेह के वली 21 को बुलाया और कहा, मैं चाहता हूँ कि आप में से प्रत्येक मुझे उस सबसे आश्चर्यजनक घटना से अवगत कराए जो वली के पद पर रहते हुए उसके साथ घटी हो। उन्होंने उत्तर दिया, हम सुनते हैं और आज्ञा मानते हैं। तदनुसार, अल-काहिरेह के वली ने कहा, हे हमारे स्वामी सुल्तान, जान लीजिए कि वली के पद पर रहते हुए मेरे साथ घटी सबसे आश्चर्यजनक घटना इस प्रकार है: — इस नगर में दो विधिक गवाह 22 थे, जिन्होंने रक्त और घावों के संबंध में गवाही दी; परन्तु वे [बदनाम] स्त्रियों के प्रेम, शराब पीने और अधर्म के आदी थे; और मैं उन पर बदला लेने की किसी भी रणनीति में सफल नहीं हो सका। अतः ऐसा करने में असमर्थ होने पर, मैंने शराब विक्रेताओं, सूखे मेवों के विक्रेताओं, ताजे मेवों के विक्रेताओं, मोमबत्ती विक्रेताओं और दुष्टतापूर्ण कार्यों के लिए तैयार घरों के रखवालों को आदेश दिया कि जब भी ये दोनों गवाह कहीं शराब पीते या कोई अधर्म करते हुए पाए जाएँ, चाहे वे साथ हों या अलग-अलग, और यदि उन्होंने या उनमें से किसी ने भी इन व्यक्तियों से कोई ऐसी वस्तु खरीदी हो जो मौज-मस्ती के उद्देश्य से हो, तो वे मुझे सूचित करें; और वे इसे मुझसे न छिपाएँ। उन्होंने उत्तर दिया कि उन्होंने सुना और आज्ञा का पालन किया। फिर एक रात एक व्यक्ति मेरे पास आया और बोला, हे हमारे प्रभु, जान लीजिए कि दोनों गवाह फलाँ स्थान पर, फलाँ गली में, फलाँ व्यक्ति के घर में हैं, और वे घृणित अधर्म में लिप्त हैं। अतः मैं उठा और मैंने अपना वेश बदला, मैं और मेरा साथी,

और मैं अपने साथी के अलावा किसी और के बिना उनके पास गया, और रास्ते में तब तक नहीं रुका जब तक कि मैं दरवाजे के सामने खड़ा होकर दस्तक नहीं दी; तब एक दासी मेरे पास आई और मेरे लिए दरवाजा खोलकर बोली, “तुम कौन हो?” मैंने बिना उत्तर दिए ही प्रवेश किया; और मैंने देखा कि दो गवाह और घर का मालिक आम महिलाओं और भरपूर शराब के साथ बैठे थे। परन्तु जब उन्होंने मुझे देखा, तो वे मेरे पास उठे, मेरा आदरपूर्वक स्वागत किया, मुझे कमरे के ऊपरी हिस्से में बैठाया और मुझसे कहा, “आपका स्वागत है, एक उत्तम अतिथि और एक विनम्र मित्र की तरह!” वे मुझसे बिना डरे या भयभीत हुए मिले; और उसके बाद, घर का मालिक उनके बीच से उठा, और कुछ देर अनुपस्थित रहने के बाद, बिना किसी भय के तीन सौ सोने के सिक्के लेकर लौटा; और उन्होंने कहा, “हे हमारे स्वामी वली, जान लो कि तुम हमें अपमानित करने से कहीं अधिक कर सकते हो, और हमें दंडित करना तुम्हारे वश में है।” लेकिन थकान के अलावा और कुछ भी काम नहीं आएगा। मिस्र के चोर अपनी निपुणता के लिए कुख्यात हैं, और अक्सर अपनी लूट के साथ नील नदी में कूदकर भाग जाते हैं। इस चाल का एक उदाहरण मैंने खुद देखा है। मिस्र के चोर अपनी इस चतुराई के लिए कुख्यात हैं, और अक्सर अपनी लूट के साथ नील नदी में कूदकर भाग जाते हैं। इस चाल का एक उदाहरण मैंने खुद देखा है। » "दो कानूनी गवाह" शब्द "अदल" का द्विवचन है, जिसका शाब्दिक अर्थ "न्यायपूर्ण" है; लेकिन यह एक कानूनी या निर्विवाद गवाह के लिए प्रयुक्त शब्द है। यहां उल्लिखित दोनों व्यक्ति कानूनी गवाह थे क्योंकि उनके अनैतिक आचरण उनके खिलाफ साबित नहीं किए जा सके। 18 मिस्र के कई सुल्तान थे जिनके उपनाम थे। 19 काहिरा; जिसे अब आमतौर पर इसके निवासी "मिस्र" कहते हैं। 80 बूलक काहिरा का प्रमुख बंदरगाह है। 21 यानी, "पुराना मिस्र;" जिसे अब

आमतौर पर कहा जाता है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.96%** है।

अध्याय सोलहवें के अनुच्छेद 45.0 में लिखा है, "ऐसा करने से तुम्हें लाभ होगा। इसलिए यह उचित है कि तुम यह राशि ग्रहण करो और हमारी रक्षा करो, क्योंकि ईश्वर (जिसका नाम महान है!) को श्रेष्ठ रक्षक कहा जाता है, और वह अपने सेवकों में से उन लोगों को पसंद करता है जो उदार रक्षक होते हैं; और तुम्हें इसका प्रतिफल और इनाम मिलेगा।" - इसलिए मैंने मन ही मन कहा, "उनसे यह सोना ले लो और इस बार उनकी रक्षा करो; और यदि वे फिर कभी तुम्हारे वश में आ जाएँ, तो उनसे बदला ले लो।" मुझे धन का लालच हुआ, और मैंने उनसे वह धन ले लिया, और उन्हें छोड़कर चला गया, किसी को पता नहीं चला कि मैंने क्या किया है। लेकिन अचानक अगले दिन काज़ी का एक सार्जेंट मेरे पास आया और बोला, "हे वली, कृपा करके काज़ी के बुलावे का उत्तर दो; क्योंकि उन्होंने तुम्हें बुलाया है।" इसलिए मैं उठा और उसके साथ काज़ी के पास गया, मुझे इसका कारण नहीं पता था। और जब मैं उसके पास गया, तो मैंने देखा कि दो गवाह और घर का मालिक, जिसने मुझे तीन सौ सोने के सिक्के दिए थे, उसके साथ बैठे थे; और घर का मालिक उठा और मुझसे तीन सौ सोने के सिक्के माँगने लगा। मेरे लिए इनकार करना संभव नहीं था; और उसने एक लिखित दायित्व प्रस्तुत किया, और उन दो कानूनी गवाहों ने मेरे विरुद्ध गवाही दी कि मैं वह पैसा बकाया हूँ। इस प्रकार दो गवाहों की गवाही से काज़ी के समक्ष यह बात सिद्ध हो गई, और उसने मुझे वह राशि चुकाने का आदेश दिया। इसलिए मैं तब तक उनके पास से नहीं निकला जब तक उन्होंने मुझसे तीन सौ सोने के सिक्के प्राप्त नहीं कर लिए; और मैं क्रोधित था, उनके विरुद्ध हर प्रकार की बुराई करने का

इरादा कर रहा था, और मुझे पछतावा था कि मैंने उन्हें सताया क्यों नहीं; और मैं अत्यंत व्याकुलता की अवस्था में वहाँ से चला गया। तब बूलक का वली उठा और बोला, हे हमारे स्वामी सुल्तान, मेरे वली बनने के बाद से मेरे साथ जो सबसे आश्चर्यजनक घटना घटी है, वह यह है: — मुझ पर तीन लाख 23 सोने के सिक्कों का ऋण था; और, इससे दुखी होकर, मैंने अपने पीछे, अपने आगे और अपने हाथ में जो कुछ था, सब बेच दिया,24 और इस प्रकार एक लाख सोने के सिक्के ही एकत्र किए, इससे अधिक नहीं। 15 यूई ब्रेस्लाउ संस्करण में, तीन हजार; एक अधिक संभावित राशि। 2i अर्थात्, मेरे पास जो कुछ भी था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.70%** है।

सोलहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 451 इसलिए मैं बहुत व्याकुल रहा; और एक रात जब मैं इसी अवस्था में अपने घर में बैठा था, तभी एक व्यक्ति ने दरवाज़ा खटखटाया; इस पर मैंने एक युवक से कहा, देखो दरवाज़े पर कौन है। वह बाहर गया और फिर पीले चेहरे, बदले हुए रंग और कांपती हुई मांसपेशियों के साथ मेरे पास लौटा। तब मैंने उससे पूछा, क्या हुआ है? उसने उत्तर दिया, सचमुच दरवाज़े पर एक आदमी है जिसने अपने उचित वस्त्र उतार दिए हैं, चमड़े के वस्त्र पहने हैं, उसके पास तलवार है, उसकी कमर में चाकू है, और उसके साथ उसी प्रकार के हथियारों से लैस पुरुषों का एक दल है, और वह तुम्हें बुला रहा है। इसलिए मैंने अपनी तलवार हाथ में ली और यह देखने के लिए बाहर गया कि वे कौन हैं; और देखो, वे वैसे ही थे जैसा उस युवक ने बताया था। मैंने उनसे पूछा, तुम्हारा क्या काम है? उन्होंने उत्तर दिया, “हम लुटेरे हैं, और आज रात हमने बहुत सारा माल लूटा है, और इसे तुम्हें सौंप दिया है, ताकि तुम इससे अपने उस मामले को सुलझा सको जिसके कारण तुम चिंतित हो, और अपना कर्ज चुका सको।” मैंने उनसे पूछा, “तो माल कहाँ है?” वे मेरे सामने सोने और चाँदी के बर्तनों से भरा एक बड़ा संदूक लाए। जब मैंने उसे देखा, तो मैं प्रसन्न हुआ, और मन ही मन कहा, “मैं इससे अपना कर्ज चुका दूँगा, और मेरे पास उस कर्ज की राशि के बराबर धन बच भी जाएगा।” इसलिए मैंने उसे लिया, और घर में प्रवेश किया, और मन ही मन कहा, “मेरे भीतर की मानवता के लिए यह उचित नहीं होगा कि मैं उन्हें बिना कुछ दिए जाने दूँ।” तदनुसार, मैंने अपने पास मौजूद एक लाख सोने के सिक्के लिए, और उन्हें उनके किए के लिए धन्यवाद देते हुए दे दिए; और वे सोने के सिक्के लेकर रात के अंधेरे में चुपके से चले गए, किसी को भी उनके आने की भनक नहीं लगी। लेकिन जब सुबह हुई, तो मैंने देखा कि संदूक में सोने का पानी चढ़ा हुआ पीतल और टिन

था, जिसकी कुल कीमत केवल पाँच सौ चाँदी के सिक्के थी; और यह बात मुझे बहुत दुखी कर गई: मेरे पास जो सोने के सिक्के थे, वे खो गए थे: और मेरा दुःख और बढ़ गया। तब मिस्र अल-कदीमा के वली उठे और बोले, हे हमारे स्वामी सुल्तान, मेरे बारे में, वली के पद पर रहते हुए मेरे साथ जो सबसे आश्चर्यजनक घटना घटी है, वह यह है: मैंने दस डाकुओं को अलग-अलग फाँसी पर लटकाया, और पहरेदारों को आदेश दिया कि वे उन पर नज़र रखें, और लोगों को उनमें से किसी को भी ले जाने न दें। लेकिन अगले दिन जब मैं उन्हें देखने आया, तो मैंने देखा कि दो आदमी एक ही फाँसी पर लटके हुए थे: तो मैंने पहरेदारों से पूछा, यह किसने किया, और वह फाँसी कहाँ है जिस पर इन फाँसी पर लटके हुए आदमियों में से दूसरा था? उन्होंने इस बात से इनकार किया; और मैं उन्हें पीटने ही वाला था कि उन्होंने कहा, हे अमीर, जान लो कि हम कल रात सोए थे, और जब हम जागे तो हमने देखा कि एक फांसी पर लटका हुआ आदमी, जिस फांसी के तख्ते पर उसे लटकाया गया था, चोरी हो गया था; जिससे हम डर गए; और देखो, एक किसान यात्रा पर हमारे पास आया, जिसके पास एक गधा था; और हमने उसे पकड़ लिया और मार डाला, और उसे चोरी हुए आदमी के बदले उसी फांसी के तख्ते पर लटका दिया। और मुझे इस पर आश्चर्य हुआ, और मैंने उनसे कहा, किसान के साथ क्या था? उन्होंने उत्तर दिया, उसके गधे पर दो थैले थे। और मैंने कहा, उनमें क्या था? उन्होंने उत्तर दिया, हमें नहीं पता। और मैंने उनसे कहा, मुझे थैले लाओ। तो उन्होंने उन्हें मेरे सामने रख दिया; और मैंने उन्हें खोलने का आदेश दिया; और देखो, उनमें एक मरा हुआ आदमी था, जिसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए थे; और जब मैंने यह देखा, तो मुझे आश्चर्य हुआ, और मैंने मन ही मन कहा, ईश्वर की पूर्णता की महिमा हो! इस किसान को फांसी दिए जाने का कारण उस हत्या किए गए व्यक्ति

के विरुद्ध उसके द्वारा किए गए अपराध के सिवा कुछ नहीं था; और तेरा प्रभु अपने सेवकों के प्रति अत्याचारी नहीं है! 25 * '•* साहूकार और छल करने वाला। ऐसा कहा जाता है कि एक साहूकार के पास सोने से भरा एक थैला था, और वह लुटेरों के पास से गुजरा; तभी एक छल करने वाले ने कहा, मैं यह थैला ले सकता हूँ। दूसरों ने उससे कहा, तुम क्या करोगे? और उसने उत्तर दिया, देखो। फिर वह साहूकार के पीछे उसके घर तक गया, और बाद वाला अंदर गया, और इस खंड का अंतिम किस्सा, ईश्वरीय न्याय के बारे में बताता है, जो पैगंबर मूसा द्वारा वर्णित के समान है, मिस्र के वली का एक उदाहरण प्रस्तुत करता है। -एप.

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.89%** है।

अध्याय सोलहवें के लिए 452 टिप्पणियाँ। उसने सफ्फे पर बटुआ फेंक दिया,26 और एक दासी को स्नान के लिए पानी का एक सुराही लाने को कहा; दासी सुराही लेकर उसके पास गई और सड़क का दरवाजा खुला छोड़कर उसके पीछे एक निजी कमरे में चली गई। इस प्रकार लुटेरा अंदर गया, बटुआ उठाया और अपने साथियों के पास गया, जिन्हें उसने साहूकार और दासी के साथ हुई घटना के बारे में बताया। उन्होंने उत्तर दिया, अल्लाह की कसम, तुमने जो किया वह एक चालाकी भरा कारनामा था, और हर कोई ऐसा करने में सक्षम नहीं होता; लेकिन (उन्होंने आगे कहा) तुरंत साहूकार निजी कमरे से बाहर आएगा, और बटुआ न पाकर दासी को पीटेगा और उसे दर्दनाक सजा देगा; और ऐसा लगता है कि तुमने ऐसा कुछ नहीं किया जिसके लिए तुम्हारी प्रशंसा की जाए। यदि तुम एक चतुर ठग हो, तो दासी को पिटाई और सजा से बचा लो। — तब उसने उनसे कहा, “यदि परमेश्वर की यही इच्छा हो (जिसका नाम महान हो!), तो मैं दासी और थैली को बचा लूँगा।” तब डाकू

साहूकार के घर लौटा और उसे थैली के कारण दासी को दंड देते हुए पाया; उसने उसके दरवाजे पर दस्तक दी; तब साहूकार ने उससे पूछा, “कौन है?” उसने उत्तर दिया, “मैं कीसारेयेह में आपके पड़ोसी का युवक हूँ।” 2 तब साहूकार उसके पास आया और उससे पूछा, “क्या काम है?” उसने उत्तर दिया, “मेरे स्वामी ने आपको नमस्कार किया है और कहा है कि आपकी आदतें पूरी तरह बदल गई हैं। आप इस थैली जैसी वस्तु को दुकान के दरवाजे पर फेंककर क्यों चले जाते हैं? यदि किसी अजनबी को यह मिल जाती, तो वह इसे लेकर चला जाता।” — और अगर मेरे मालिक ने इसे न देखा होता और इसकी देखभाल न की होती, तो तुम इसे खो देते। — फिर उसने पर्स निकाला और उसे दिखाया; और जब साहूकार ने उसे देखा, तो उसने कहा, यह मेरा ही पर्स है। और उसने साहूकार से पर्स लेने के लिए हाथ बढ़ाया; लेकिन साहूकार ने उससे कहा, अल्लाह की कसम, मैं तुम्हें यह तब तक नहीं दूंगा जब तक तुम मेरे मालिक को एक पत्र लिखकर यह न बता दो कि तुमने मुझसे पर्स ले लिया है; क्योंकि मुझे डर है कि वह मेरी बात पर विश्वास न करे कि तुमने पर्स ले लिया है और उसे सुरक्षित प्राप्त कर लिया है, जब तक तुम मेरे लिए एक पत्र लिखकर उस पर अपनी मुहर न लगा दो। इसलिए साहूकार ने उसके लिए एक पत्र लिखकर पर्स के सुरक्षित पहुँचने की पुष्टि की, जैसा कि उसने उसे बताया था, और लुटेरा पर्स लेकर चला गया, और दासी सजा से बच गई। [अगली कहानी ठीक उसी तरह की एक चाल का वर्णन करती है जैसा कि "तीन वलियों" में से दूसरे ने बताया है;] और इसलिए मैं इसे छोड़ देता हूँ।] उपाख्यान: इब्राहीम, महदी के पुत्र।28 ऐसा कहा जाता है कि मोमिनों के सरदार, अल-मामून ने इब्राहीम, महदी के पुत्र से कहा, “हमें वह सबसे अद्भुत बात बताओ जो तुमने देखी हो।” और उन्होंने उत्तर दिया, “हे मोमिनों के सरदार, मैं सुनता और आज्ञा

मानता हूँ।” 26 "सुफ्फे" शब्द का प्रयोग आम तौर पर टिप्पणियों में, हाशिये पर लिखे नोट में, "मिस्र के लेखक ने इस किस्से को और अधिक विस्तार से बताया है, और कहते हैं कि इसका वर्णन इस प्रकार हुआ था। एक व्यक्ति को दस अपराधी मिले, और उसने उनका पीछा किया, यह सोचकर कि वे किसी दावत में जा रहे हैं: लेकिन, वे वध के लिए जा रहे थे। और जब उन्हें मार डाला गया, और वह वहीं रहा, तो वह खलीफा के सामने लाई गई पानी की बोतलों और कॉफी के प्यालों आदि को सुफ्फे पर रखा जाता है। - अल-महदी के इस बेटे ने यह किस्सा प्रमाण प्राप्त करने के लिए सुनाया। बेंच, या सोफा; और उस आदमी की मुक्ति के लिए: जिसके बाद बरामदा, या छत वाला प्रवेश द्वार, या इसी तरह का कोई स्थान। खलीफे ने उसे क्षमा कर दिया।" - यहाँ हमें अध्याय 5 के नोट 18 में "नाई की अपनी कहानी" का मूल मिलता है। * यह उपाख्यान इस कृति के पहले खंड के पृष्ठ 342 से पहले लिखे गए एक उपाख्यान से थोड़ा भिन्न है। - ऊपर उल्लिखित उपाख्यान एक बहुत प्रसिद्ध मिथक है, जिसके लेखक इब्न-अब्द-कब्बू थे। — आदरपूर्वक या, अधिक उचित रूप से, कॉर्डोवा के एब्बिही •' इब्रफीम एल-महदी के पुत्र, इस खंड में पृष्ठ 298 के अंत में एक टिप्पणी देखें, उनकी मृत्यु पलायन के वर्ष 328 (ए.पी. 940) में हुई थी। — मेरे शेख 82 वर्ष की आयु में।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.82%** है।

सोलहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 453 जान लो कि एक दिन मैं अपना मनोरंजन करने निकला, और मेरा रास्ता मुझे एक ऐसी जगह ले गया जहाँ मुझे भोजन की सुगंध आई, और मेरा मन उसे खाने के लिए तरसने लगा। हे विश्वासियों के राजकुमार, मैं असमंजस में पड़कर रुक गया, न तो उस स्थान से जा पा रहा था और न ही उस घर में प्रवेश कर पा रहा

था; और मैंने अपनी आँखें ऊपर उठाईं, और देखो, वहाँ एक जालीदार खिड़की थी, जिसके पीछे एक हाथ और कलाई थी, जो मैंने पहले कभी इतनी सुंदर नहीं देखी थी। उन्हें देखकर मेरी बुद्धि क्षीण हो गई, और उस हाथ और कलाई के कारण मैं भोजन की सुगंध भूल गया, और उस घर में प्रवेश पाने के लिए एक तरकीब सोचने लगा। और देखो, उस जगह के पास ही एक दर्जी था: मैं उसके पास गया और उसे प्रणाम किया, और उसने भी मुझे प्रणाम किया। तब मैंने उससे पूछा, यह घर किसका है? उसने उत्तर दिया, एक व्यापारी का। और मैंने पूछा, उसका नाम क्या है? — उसने उत्तर दिया, उसका नाम फलां का बेटा है, और वह केवल व्यापारियों के साथ ही मेलजोल रखता है। और जब हम बात कर रहे थे, तभी अचानक दो सुंदर, बुद्धिमान पुरुष पास आए, और उसने मुझे बताया कि वे उसके सबसे खास साथी हैं, और मुझे उनके नाम भी बताए। इसलिए मैंने अपने जानवर को तब तक दौड़ाया जब तक मैं उनसे नहीं मिला, और फिर मैंने उनसे कहा, मैं आपका उद्धार करूँ! फलां के पिता ने सोचा कि आप देर से आए हैं। — और मैं उनके साथ तब तक चलता रहा जब तक हम दरवाजे पर नहीं पहुँच गए; फिर मैं अंदर गया, और वे दोनों पुरुष भी अंदर गए; और जब घर के मालिक ने मुझे उनके साथ देखा, तो उसे कोई संदेह नहीं हुआ कि मैं उनका साथी हूँ: इसलिए उसने मेरा स्वागत किया, और मुझे सबसे ऊँची जगह पर बैठाया। फिर नौकर मेज लेकर आए, और मैंने मन ही मन कहा, ईश्वर ने मुझे इन व्यंजनों के संबंध में मेरी इच्छा पूरी कर दी है, और अब बस हाथ और कलाई बाकी हैं। इसके बाद, हम मौज-मस्ती के लिए दूसरे कमरे में चले गए, जो मुझे सुरुचिपूर्ण वस्तुओं से सजा हुआ मिला; और घर के मालिक ने मुझे शिष्टाचारपूर्वक संबोधित किया, मुझसे इस तरह बात की जैसे मैं उनके मेहमानों का मेहमान हूँ, जबकि वे भी मुझे घर के मालिक का साथी

समझकर अत्यंत विनम्रता से पेश आए। कई प्याले पीने तक वे सभी मेरे प्रति लगातार विनम्रता बनाए रखे, तभी एक सुंदर, लच्छेदार युवती हमारे सामने आई, जो देखने में अत्यंत आकर्षक और सुंदर थी। उसने एक वीणा उठाई और मधुर स्वरों में ये छंद गाए: — क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि हम एक ही घर में हैं, फिर भी तुम न तो पास आते हो और न ही बोलते हो? केवल आँखें ही आत्माओं के रहस्यों को प्रकट करती हैं, और प्रेम की आग से भड़के दिलों के टूटने को। हमारे पास केवल आँखों और भौहों के इशारे, तिरछी निगाहें और हाथ का अभिवादन ही है। हे विश्वासियों के राजकुमार, मेरे मन में बेचैनी के भाव उमड़ रहे थे। मैं उसकी सुंदरता और उसके गाए गीतों की भव्यता से प्रसन्न था और उसकी उत्कृष्ट प्रस्तुति से ईर्ष्या कर रहा था। लेकिन टी ने कहा, हे दासी, तुम्हें एक चीज की कमी है। इस पर उसने क्रोध में अपने हाथ से वीणा फेंक दी और कहा, तुम कब से ऐसे उद्दंड मूर्खों को अपनी सभाओं में लाते आ रहे हो? तब मुझे अपने किए पर पछतावा हुआ और टी ने देखा कि सभी लोग मुझसे नाराज़ हैं। इसलिए मैंने कहा, मेरी सारी आशाएँ पूरी नहीं हुईं और निंदा से बचने का मुझे कोई उपाय नहीं दिख रहा सिवाय इसके: मैंने एक वीणा माँगी और कहा, मैं दिखाऊँगा कि उसने जो धुन बजाई उसमें से क्या छोड़ा था। और सभी ने उत्तर दिया, हम सुनते हैं और आज्ञा मानते हैं। वे तुरंत मेरे लिए एक वायलिन लाए, और मैंने उसके तारों को सुर में लगाया और ये छंद गाए: — यह तेरा प्रेमी है, जो अपने प्रेम में लीन है; वह प्रेम में डूबा हुआ है, जिसके आँसू उसके शरीर पर बह रहे हैं; उसने एक हाथ दयालु से अपनी आशा की पूर्ति के लिए प्रार्थना में उठाया है और दूसरा अपने हृदय पर। हे जो अपने प्रेम में नष्ट होते हुए देख रहे हो... उसकी मृत्यु उसके अपने कर्मों और उसके हाथों से हुई है। वह घर के मालिक को उपनाम से पुकारता है, जैसे "अबू-अल-हसन" या

"हसन का पिता"।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.26%** है।

454, सोलहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। इस पर दासी उछल पड़ी और मेरे चरणों में गिरकर उन्हें चूमते हुए बोली, "हे मेरे स्वामी, यह क्षमा करने का अधिकार आपका है! अल्लाह की कसम, मैंने आपकी गरिमा को न तो कभी जाना है और न ही ऐसा प्रदर्शन कभी सुना है।" — फिर वे लोग अत्यधिक प्रसन्न होकर मेरा सम्मान और प्रशंसा करने लगे; और उनमें से प्रत्येक ने मुझसे गाने का अनुरोध किया। इसलिए मैंने एक जोशीला गीत गाया, और वे लोग मदहोश हो गए, उनका होश उड़ गया, जिससे दोनों अतिथि अपने-अपने घरों में चले गए, और घर का स्वामी दासी के साथ अकेला रह गया। मेरे साथ कुछ प्याले पीने के बाद उसने कहा, "हे मेरे स्वामी, मेरा जीवन व्यर्थ ही बीता है, क्योंकि मैंने आज रात आपके जैसा कोई व्यक्ति नहीं देखा। तो अल्लाह की कसम, हे मेरे स्वामी, मुझे बताइए कि आप कौन हैं, ताकि मैं अपने उस साथी को जान सकूँ जिसके साथ ईश्वर ने मुझे आज रात रखा है।" — और मैंने अपना नाम स्पष्ट रूप से बताए बिना, अस्पष्ट संकेत देने शुरू कर दिए। लेकिन उसने मुझे पहचान लिया: इसलिए मैंने उसे बताया। और जब उसे मेरा नाम पता चला, तो वह उछल पड़ा और बोला, मुझे आश्चर्य हुआ कि यह गुण तुम्हारे सिवा किसी और का हो सकता है; और भाग्य ने मुझे ऐसा उपकार दिया है जिसके लिए मैं उचित धन्यवाद नहीं दे सकता; लेकिन शायद यह एक सपना है; क्योंकि मैंने कब सोचा था कि खलीफा से जुड़ा कोई व्यक्ति मेरे घर आएगा और मेरे साथ रात भर मौज-मस्ती करेगा। मैंने उसे बैठने का आदेश दिया; और वह बैठ गया, और अत्यंत विनम्रता से मुझसे मेरे आने का कारण पूछने लगा। इसलिए मैंने उसे पूरी बात विस्तार से बताई, कुछ

भी नहीं छिपाया, और कहा, भोजन के मामले में, मुझे वह मिल गया जो मैं चाहता था; लेकिन हाथ और कलाई के मामले में, मेरी इच्छा पूरी नहीं हुई। उन्होंने उत्तर दिया, “हाथ और कलाई के विषय में, यदि यह अल्लाह की इच्छा हो, जिसका नाम महान है, तो तुम्हारी इच्छा अवश्य पूरी होगी!” फिर उन्होंने कहा, “हे फलाँ (एक स्त्री का नाम लेते हुए), फलाँ को कहो कि वह नीचे आए।” और उन्होंने अपनी दासियों को एक-एक करके बुलाया और मुझे दिखाया; परन्तु मुझे अपनी प्रियतमा तब तक नहीं दिखी, जब तक उन्होंने यह नहीं कहा, “अल्लाह की कसम, हे मेरे स्वामी, मेरी माँ और मेरी बहन के सिवा कोई नहीं बची; परन्तु अल्लाह की कसम, उन्हें तुम्हारे पास लाया जाना चाहिए और तुम्हें दिखाया जाना चाहिए, ताकि तुम उन्हें देख सको।” और मैं उनकी उदारता और खुलेपन पर चकित रह गई; और मैंने कहा, “क्या मैं आपकी भेंट चढ़ा सकती हूँ?” “तो बहन से शुरू कीजिए।” उन्होंने उत्तर दिया, “खुशी से।” फिर उनकी बहन नीचे आई, और उन्होंने मुझे उसका हाथ दिखाया, और देखो, वह वही थी जिसका हाथ और कलाई मैंने देखी थी। तो मैंने कहा, “क्या मैं आपकी भेंट चढ़ा सकती हूँ!” यह वही युवती है जिसका हाथ और कलाई मैंने देखी थी। उसने युवकों को गवाहों को तुरंत लाने का आदेश दिया। वे उन्हें ले आए; और उसने दो करोड़ 3° सोने के सिक्के पेश किए, और गवाहों से कहा, "हमारे स्वामी, सैय्यदी31 इब्राहीम, अल-महदी के पुत्र, जो अमीरुल मोमिनीन के चाचा हैं, मेरी बहन फलां से विवाह करना चाहते हैं, और मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने उसका विवाह उनसे कर दिया है और उन्होंने उसे दहेज में एक करोड़ दिया है।" इसके बाद उन्होंने कहा, "मैं तुमसे अपनी बहन फलां का विवाह उक्त दहेज के बदले करता हूँ।" मैंने उत्तर दिया, "मैं यह प्रस्ताव स्वीकार करता हूँ और इसे मंज़ूर करता हूँ।" फिर उन्होंने दो करोड़ में से एक अपनी बहन को और दूसरा गवाहों को

दिया; और कहा, "हे हमारे स्वामी, मैं आपके और आपकी पत्नी के लिए एक कमरा उपलब्ध कराना चाहता हूँ।" लेकिन मैं उसकी उदारता के उस अनुभव से लज्जित था और उसके प्रस्ताव को स्वीकार करने में लज्जा महसूस कर रहा था; इसलिए मैंने कहा, उसे तैयार करके मेरे निवास पर भेज दो। और हे विश्वासियों के राजकुमार, तेरे कारण ही उसके सामान से इतनी वस्तुएँ मेरे पास लाई गईं कि हमारे कमरे, चाहे कितने भी विशाल क्यों न हों, उनमें समा नहीं पाईं। फिर उसी के कारण मुझे यह बालक मिला जो तेरे सामने खड़ा है। और अल-मा-मून इस व्यक्ति की उदारता पर आश्चर्यचकित हुआ और बोला, इसे ईश्वरीय वरदान प्राप्त है! मैंने इसके जैसा कभी नहीं सुना! उसने अल-महदी के पुत्र इब्राहीम को उस व्यक्ति को लाने का आदेश दिया ताकि वह उसे देख सके। इसलिए वह उसे 80 के सामने लाया। यहाँ शब्द "असंख्य" का अर्थ है, या कुछ त्योहारों पर, या [मस्जिद अल-होसेन की मस्जिद में] जाने पर "दस हजार [सिक्के]," अर्थात् "बेद्रेह," जिसका प्रयोग आम अरबी में "धन की वह राशि जो एक अमीर या ऐसा कोई व्यक्ति लोगों पर फेंकता है," जैसे कि बाशा। "सैय्यदी" का अर्थ है "मेरा स्वामी।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.71%** है।

सोलहवें अध्याय में, 455 खाइसेफेह ने उससे बोलने की इच्छा जताई, और उसकी विनम्रता और अच्छे व्यवहार से इतना प्रसन्न हुआ कि उसने उसे अपने प्रमुख सेवकों में से एक बना दिया। - और ईश्वर ही दाता और उदार दाता है। एक दानशील स्त्री का किस्सा: ऐसा कहा जाता है कि एक राजा ने अपने राज्य के लोगों से कहा, यदि तुममें से कोई भी दान देगा, तो मैं निश्चय ही उसका हाथ काट दूँगा। इसलिए सभी लोगों ने दान देना बंद कर दिया, और कोई भी दूसरे को दान नहीं दे सका। एक दिन एक

भिखारी एक स्त्री के पास आया, भूख से व्याकुल था, और उसने उससे कहा, मुझे कुछ दान दे दो। - उसने कहा, मैं तुम्हें कैसे दान दे सकती हूँ, जब राजा ऐसा करने वाले हर व्यक्ति का हाथ काट देता है? लेकिन उसने जवाब दिया, मैं ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) की कसम खाकर तुमसे विनती करता हूँ कि तुम मुझे दान दो। जब उसने ईश्वर की कसम खाकर उससे विनती की, तो वह उस पर दया से भर उठी और उसे दो रोटियाँ दे दीं। यह खबर राजा तक पहुँची; और उसने उसे अपने सामने लाने का आदेश दिया; और जब वह आई, तो उसने उसके हाथ काट दिए। और वह अपने घर लौट गई। कुछ समय बाद राजा ने अपनी माँ से कहा, मैं विवाह करना चाहता हूँ; इसलिए, मेरा विवाह एक सुंदर स्त्री से करा दो। और उसने उत्तर दिया, हमारी दासियों में एक ऐसी स्त्री है जो सबसे सुंदर है; लेकिन उसमें एक गंभीर दोष है। - वह क्या है? उसने पूछा। उसने उत्तर दिया, उसके दोनों हाथ अपंग हैं। लेकिन राजा ने कहा, मैं उसे देखना चाहता हूँ। इसलिए वह उसे राजा के पास ले आई, और जब उसने उसे देखा, तो वह उसकी सुंदरता पर मोहित हो गया और उससे विवाह कर लिया। और वह स्त्री वही थी जिसने भिखारी को दो रोटी दी थी, और इसी कारण उसके हाथ काट दिए गए थे। लेकिन जब उसने उससे विवाह किया, तो उसकी सहेलियों को उससे ईर्ष्या हुई और उन्होंने राजा को पत्र लिखकर बताया कि वह व्यभिचारी है: और उसने एक बच्चे को जन्म दिया था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.14%** है।

136. सोलहवें अध्याय पर टिप्पणियाँ। राजा ने उसकी माँ को पत्र लिखा, जिसमें उसने उसे आदेश दिया कि वह उसे अपने साथ रेगिस्तान में ले जाए, उसे वहाँ छोड़ दे और वापस आ जाए। उसकी माँ ने वैसा ही किया: वह उसे रेगिस्तान में ले गई और वापस आ गई। वह स्त्री अपने ऊपर आई विपत्ति पर रोने लगी और ज़ोर-ज़ोर से विलाप करने लगी, उसका विलाप

बेमिसाल था। जब वह बच्चे को अपनी गर्दन पर लिए चल रही थी, तो वह एक नदी के पास पहुँची और प्यास से बेहाल होकर पानी पीने के लिए घुटने टेक दिए; और जब उसने अपना सिर झुकाया, तो बच्चा पानी में गिर गया। वह अपने बच्चे के लिए ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी; और जब वह रो रही थी, तभी दो आदमी वहाँ से गुज़रे और उससे पूछा, तुम्हें रोने का क्या कारण है? उसने उत्तर दिया, मेरे गले में एक बच्चा था, और वह पानी में गिर गया। और उन्होंने कहा, क्या तुम चाहती हो कि हम उसे बचाकर तुम्हें लौटा दें? उसने उत्तर दिया, हाँ। इस पर उन्होंने ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) से प्रार्थना की, और बच्चा सुरक्षित और बिना किसी चोट के उसके पास आ गया। फिर उन्होंने उससे कहा, क्या तुम चाहती हो कि ईश्वर तुम्हारे हाथों को पहले जैसा लौटा दे? उसने उत्तर दिया, हाँ। और उन्होंने ईश्वर (जिसकी पूर्णता की प्रशंसा हो, और जिसका नाम महान हो!) से प्रार्थना की; जिसके बाद उसके हाथ पूरी तरह से ठीक होकर उसे लौट आए। इसके बाद उन्होंने उससे कहा, क्या तुम जानती हो कि हम कौन हैं? उसने उत्तर दिया, ईश्वर सर्वज्ञ है। और उन्होंने कहा, हम तुम्हारी वे दो रोटियाँ हैं जो तुमने भिखारी को दान में दी थीं, और उसी दान के कारण तुम्हारे हाथ काट दिए गए थे।32 इसलिए ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) की स्तुति करो कि उसने तुम्हारे हाथ और तुम्हारे बच्चे को तुम्हें लौटा दिया है। और उसने परमेश्वर की स्तुति की (जिसका नाम महान हो!), और उसकी महिमा की। एक दयालु इस्राएली का किस्सा: इस्राएलियों में एक धर्मनिष्ठ पुरुष था,33 जिसके परिवार में कपास कातने का काम होता था; वह प्रतिदिन काता हुआ धागा बेचता और नया कपास खरीदता था; और उससे प्राप्त लाभ से वह अपने परिवार के लिए भोजन खरीदता था, जिसे वे उस दिन खाते थे। एक दिन वह काता हुआ धागा बेचने निकला, और वहाँ उसे उसका एक भाई मिला, जिसने अपनी ज़रूरत के बारे में उससे

शिकायत की; इस पर उसने उसे धागे की कीमत दे दी, और बिना कपास और भोजन के अपने परिवार के पास लौट आया। तब उन्होंने उससे कहा, कपास और भोजन कहाँ हैं? और उसने उन्हें उत्तर दिया, फलाँ व्यक्ति मुझे मिला, और उसने अपनी ज़रूरत के बारे में मुझसे शिकायत की; इसलिए मैंने उसे धागे की कीमत दे दी। उन्होंने कहा, अब हम क्या करें; क्योंकि हमारे पास बेचने के लिए कुछ भी नहीं है? लेकिन उनके पास एक टूटा हुआ लकड़ी का कटोरा और एक घड़ा था; और वह उन्हें बाज़ार ले गया। लेकिन कोई भी उन्हें उससे खरीदना नहीं चाहता था; लेकिन जब वह बाज़ार में था, तो उसे एक आदमी मिला जिसके पास एक बदबूदार, फूली हुई मछली थी, जिसे कोई भी उससे खरीदना नहीं चाहता था; मछली के मालिक ने उससे कहा, क्या तुम अपनी अनमोल वस्तु मुझे मेरी वस्तु के बदले बेचोगे? उसने उत्तर दिया, हाँ: और उस आदमी को लकड़ी का कटोरा और घड़ा दे दिया, और उससे मछली ले ली, जिसे वह अपने परिवार के पास ले गया। उन्होंने कहा, हम इस मछली का क्या करेंगे? उसने उत्तर दिया, हम इसे भूनेंगे और तब तक खाएंगे जब तक ईश्वर (जिनका नाम महान हो!) हमें जीविका प्रदान न करें। इसलिए उन्होंने मछली ली, और उसका पेट चीर दिया, और उन्हें उसमें एक मोती मिला। तो उन्होंने शेख (भक्त) को सूचित किया; और उन्होंने कहा, देखो कि क्या इसमें छेद है; क्योंकि यदि ऐसा है, तो यह किसी आम आदमी की है; लेकिन अगर यह 32 "अर्थात, ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) "यहूदी," यानी "यहूदी।" [मुसलमानों का मानना है कि इस्राएलियों ने मसीहा के समय तक सच्चे धर्म का पालन किया, यह दावा करते हुए कि मोहम्मद ने कुलपतियों के धर्म को बहाल किया। वे यह भी कहते हैं कि मोहम्मद का आगमन सुसमाचार में भविष्यवाणी की गई थी। सच्चे विश्वास के विषय पर मुसलमान उन्हें "इस्राएल के बच्चे" कहते हैं; लेकिन मसीहा के वंशजों

को वे इस नाम से सम्मानित नहीं करते; उन्हें '

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.21%** है।

सोलहवें अध्याय 457 पर टिप्पणी: यह छिद्रित नहीं है, यह एक उपहार है जो ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) ने तुम्हें दिया है। और उन्होंने देखा, और देखो, यह छिद्रित नहीं था। और जब सुबह हुई, तो वह इसे अपने एक भाई के पास ले गया, जो मोतियों से परिचित था; और उस व्यक्ति ने कहा, हे फलां, तुम्हें यह मोती कहाँ से मिला? उसने उत्तर दिया, यह एक उपहार है जो ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) ने हमें दिया है। और उस व्यक्ति ने कहा, निश्चय ही यह एक हजार चांदी के सिक्कों के बराबर है, और मैं तुम्हें वह राशि दूंगा; लेकिन इसे फलां के पास ले जाओ; क्योंकि वह मुझसे अधिक धनवान और ज्ञानी है। सो वह उसे उसके पास ले गया, और उसने कहा, निश्चय ही यह सत्तर हजार चांदी के सिक्कों के बराबर है: इससे अधिक नहीं। तब उसने उसे सत्तर हजार चांदी के सिक्के दिए; शेख ने कुलियों को बुलाया, जिन्होंने उनके लिए धन ढोया और उनके घर के द्वार तक पहुँचाया; तभी एक भिखारी उनके पास आया और बोला, "मुझे वह दो जो अल्लाह (जिसका नाम महान है!) ने तुम्हें दिया है।" उन्होंने भिखारी से कहा, "हम भी कल तुम्हारे जैसे ही थे। इस धन का आधा ले लो।" जब उन्होंने धन को दो बराबर भागों में बाँट दिया और दोनों ने अपना-अपना भाग ले लिया, तो भिखारी ने उनसे कहा, "अपना धन अपने पास रखो और ले लो; अल्लाह तुम्हें इसमें बरकत दे; क्योंकि मैं तुम्हारे रब का दूत हूँ, जिसने मुझे तुम्हारी परीक्षा लेने के लिए भेजा है।" शेख ने कहा, "अल्लाह की स्तुति और धन्यवाद हो!" और वह और उनका परिवार मृत्यु तक अत्यंत सुखमय जीवन व्यतीत करते रहे। (अबू हसन एज़-ज़ियादी का किस्सा) अबू-हसन एज़-ज़ियादी कहते हैं, एक दिन मेरी

परिस्थितियाँ इतनी विकराल हो गईं कि दुकानदार, बेकर और बाकी व्यापारी मुझसे गुहार लगाने लगे, और मेरी तकलीफ़ बढ़ती चली गई, और मुझे कोई सहारा नहीं सूझा। लेकिन जब मैं इस हालत में था, और समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ, तभी अचानक मेरा एक युवक मेरे पास आया और उसने कहा, दरवाजे पर एक तीर्थयात्री है, जो अंदर आना चाहता है। तो मैंने कहा, उसे अंदर आने दो। और वह अंदर आ गया; और देखो, वह खुरासान का रहने वाला था। उसने मुझे सलाम किया, और मैंने भी उसे सलाम किया; और उसने पूछा, क्या आप अबू-हसन एज़-ज़ियादी हैं? मैंने उत्तर दिया, हाँ। और मैंने पूछा, आपको क्या चाहिए? - उसने उत्तर दिया, मैं एक अजनबी हूँ, और तीर्थयात्रा करना चाहता हूँ, और मेरे पास 3 हज़ार की रकम है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.21%** है।

सोलहवें अध्याय के लिए 4$8 के नोट, धन, जिसे ढोना मेरे लिए बोझ है; इसलिए मैं चाहता हूँ कि ये दस हज़ार चाँदी के सिक्के तुम्हारे पास तब तक रखूँ जब तक मैं अपनी तीर्थयात्रा पूरी करके वापस न आ जाऊँ; और यदि कारवां वापस आ जाए और तुम मुझे न पाओ, तो समझ लेना कि मेरी मृत्यु हो गई है, और यह धन मेरी ओर से तुम्हें उपहार है; परन्तु यदि

मैं लौट आऊँ, तो यह मेरा है। मैंने उत्तर दिया, तुम्हारी इच्छा पूरी की जाएगी, यदि यह परमेश्वर की इच्छा हो, जिसका नाम महान है! और उसने एक चमड़े का थैला निकाला; और मैंने उस युवक से कहा, मेरे लिए एक तराजू लाओ। तो वह एक तराजू ले आया, और उस व्यक्ति ने धन तौला, और मुझे देकर चला गया। फिर मैंने व्यापारियों को बुलाया, और अपने ऋण चुकाए, और खूब खर्च किया और खरीदारी की, मन ही मन कहते हुए, उसके लौटने से पहले, परमेश्वर मुझे अपने कुछ उपहारों से सहायता करेगा। लेकिन एक दिन बाद, वह युवक मेरे पास आया और मुझसे कहा, "तुम्हारा परिचित खुरासान का आदमी दरवाजे पर है।" मैंने उत्तर दिया, "उसे अंदर आने दो।" वह अंदर आया और बोला, "मैंने तीर्थयात्रा करने का निश्चय किया था; लेकिन मुझे अपने पिता के निधन की खबर मिली है; और मैंने वापस लौटने का फैसला किया है; इसलिए मुझे वह धन दे दो जो मैंने कल तुम्हें सौंपा था।" अब जब मैंने उससे ये शब्द सुने, तो मैं अत्यधिक चिंता में डूब गया, ऐसी चिंता जो किसी ने कभी अनुभव नहीं की थी; मैं व्याकुल हो गया और उसे कोई उत्तर नहीं दिया; क्योंकि अगर मैं इनकार करता, तो मैं जानता था कि वह मुझसे शपथ दिलवाएगा और परलोक में मेरा अपमान होगा; और अगर मैं उसे बताता कि मैंने वह धन खर्च कर दिया है, तो [मैंने कल्पना की] वह चिल्लाएगा और मुझे अपमानित करेगा। इसलिए अंत में मैंने कहा, "ईश्वर तुम्हें स्वस्थ रखे! मेरा यह निवास उस धन की रक्षा के लिए न तो सुरक्षित है और न ही मजबूत।" और जब मुझे तुम्हारा चमड़े का थैला मिला, तो मैंने उसे उसके पास भेज दिया जिसके पास वह अब है: इसलिए कल उसे लेने के लिए हमारे पास लौट आना, यदि यह अल्लाह की इच्छा हो, जिसका नाम महान है! — तदनुसार वह मुझसे विदा हो गया; और मैं खुरासान के उस आदमी के लौटने के कारण पूरी रात व्याकुलता में रहा, और उस रात मुझे

नींद नहीं आई, न ही मैं अपनी आँखें बंद कर सका। इसलिए मैं उठा और उस युवक के पास गया, और उससे कहा, मेरे लिए खच्चर पर काठी कस दो। — हे मेरे स्वामी, उसने उत्तर दिया, अब रात का पहला तिहाई भाग हो चुका है, और वास्तव में रात का कुछ भी भाग नहीं बीता है। इसलिए मैं अपने बिस्तर पर लौट आया; लेकिन मुझे नींद नहीं आई, और मैं उस युवक को जगाता रहा, जो मुझे मेरे इरादे से पीछे हटाता रहा, जब तक कि भोर नहीं हो गई, जब उसने मेरे लिए खच्चर पर काठी कसी, और मैं उस पर सवार हो गया। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ जाऊँ, इसलिए मैंने खच्चर की लगाम उसके कंधों पर डाल दी और चिंतन और चिंताओं में मग्न हो गया, जबकि वह बगदाद के पूर्वी भाग की ओर बढ़ रही थी। और जब मैं आगे बढ़ रहा था, तभी मुझे एक टोली दिखाई दी, और मैं उनसे मुँह मोड़कर दूसरे रास्ते पर चला गया; लेकिन वे मेरे पीछे-पीछे आए; और जब उन्होंने मुझे तैयलेसन34 के साथ देखा, तो वे मेरी ओर दौड़े और मुझसे कहा, क्या तुम अबू-हसन एज़-ज़ियादी का पता जानते हो? मैंने उत्तर दिया, मैं ही हूँ। और उन्होंने कहा, मोमिनों के सरदार के बुलावे का जवाब दो। इसलिए मैं उनके साथ चलता रहा जब तक कि मैं अल-मा-मून में नहीं पहुँच गया; और उन्होंने मुझसे पूछा, तुम कौन हो? मैंने उत्तर दिया, काकली अबू यूसुफ के साथियों में से एक, कानून और परंपराओं के प्रोफेसरों में से एक। उन्होंने पूछा, तुम्हें किस उपनाम या रिश्ते से पुकारा जाता है? मैंने उत्तर दिया, मेरा उपनाम अबू-हसन एज़-ज़ियादी है। उन्होंने कहा, मुझे अपना मामला समझाओ। मैंने उन्हें अपनी कहानी सुनाई, और वे फूट-फूटकर रोने लगे और बोले, धिक्कार है तुम पर! अल्लाह के रसूल (अल्लाह उन पर रहमत करे और उनकी रक्षा करे!) ने तुम्हारे कारण मुझे कल रात सोने नहीं दिया; क्योंकि जब मैं रात के आरंभ में सोया, तो उन्होंने मुझे [सपने में] कहा, ऐ अबू-हसन एज़-ज़ियादी।35 और मैं

जागा, और तुम्हें पहचान नहीं पाया। फिर एक 3* मुझे कभी भी तेयलेसन की जांच करने का अवसर नहीं मिला, ताकि मैं इसका सटीक वर्णन कर सकूं। 35 "जो कोई मुझे अपने सपने में देखता है," पैगंबर ने कहा, "वह मुझे सचमुच देखता है; क्योंकि शैतान मेरे रूप की समानता नहीं धारण कर सकता।" - इसलिए मुसलमानों के बीच विवाद के विभिन्न बिंदु कभी-कभी फकीहों (या धर्म और कानून के प्रोफेसरों) के लिए विशिष्ट होते हैं; ?. और आधुनिक मिस्रियों पर अपने काम में, मेरा मानना है कि यह न केवल इस संबंध में, बल्कि अपनी उत्पत्ति में भी, हमारे अकादमिक स्कार्फ और हुड के समान है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.45%** है।

सोलहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 459 दूसरी बार मैं सोया, और वह मेरे पास आया, और मुझसे कहा, हे अबू हसन एज़-ज़ियादी! तुझ पर धिक्कार है! मैं जागा, और तुझे पहचान नहीं पाया। फिर मैं दोबारा सोया, और वह मेरे पास आया, और फिर भी तुझे पहचान नहीं पाया। फिर मैं दोबारा सोया, और वह मेरे पास आया, और मुझसे कहा, हे अबू हसन एज़-ज़ियादी! इसलिए उसके बाद मुझे सोने की हिम्मत नहीं हुई। मैं पूरी रात जागता रहा, और लोगों को जगाया, और उन्हें हर तरफ तुझे ढूंढने के लिए भेजा। फिर उसने मुझे दस हज़ार चाँदी के सिक्के दिए, और कहा, यह खुरासान के आदमी के लिए है। और उसके बाद, उसने मुझे दस हज़ार चाँदी के सिक्के और दिए, और कहा, इससे खूब खरीदारी करो, और इससे अपनी आर्थिक स्थिति सुधारो। फिर उसने मुझे तीस हज़ार चाँदी के सिक्के दिए और कहा, "इसे अपने पास रखो, और जब राजकीय जुलूस का दिन आए, तो मेरे पास आना, ताकि मैं तुम्हें कोई पद दे सकूँ।" तो मैं पैसे लेकर चला गया, और अपने घर लौटकर वहाँ सुबह की नमाज़

अदा की; तभी खुरासान का वह आदमी आया। मैं उसे घर में ले आया, और उसे दस हज़ार सिक्के दिखाते हुए कहा, "यह तुम्हारा पैसा है।" लेकिन उसने जवाब दिया, "यह मेरा पैसा नहीं है।" मैंने कहा, "हाँ।" और उसने पूछा, "इसका क्या कारण है?" तो मैंने उसे पूरी कहानी सुनाई; इस पर वह रोने लगा और बोला, "अल्लाह की कसम, अगर तुमने मुझे शुरुआत में ही सच बताया होता तो मैं तुमसे पैसे नहीं माँगता; और अब, अल्लाह की कसम, मैं इस पैसे में से कुछ भी स्वीकार नहीं करूँगा: तुम इसके संबंध में ज़िम्मेदारी से मुक्त हो।" और वह मुझसे विदा हो गया। फिर मैंने अपने सारे काम निपटा लिए और राजकीय जुलूस के दिन अल-मामून के द्वार पर गया और जब वे बैठे थे, तब मैं उनके पास गया। जब मैं उनके सामने उपस्थित हुआ, तो उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और अपनी नमाज़ की चटाई के नीचे से एक लिखित नियुक्ति पत्र निकाला और कहा, “यह नियुक्ति पत्र है जो आपको इस पवित्र नगर के काज़ी36 का पद प्रदान करता है, मस्जिद के पश्चिमी भाग से, बाब-ए-सलाम37 से, असीमित क्षेत्र तक; और मैंने आपको हर महीने इतना भत्ता दिया है। तो अल्लाह से डरो (जिसकी शक्ति और महिमा है!) और अल्लाह के रसूल (अल्लाह उन पर रहमत और सलाम भेजे!) की तुम्हारे प्रति चिंता को याद रखो।” — और लोग उनके शब्दों पर आश्चर्यचकित हुए और मुझसे उनका अर्थ पूछा: तो मैंने उन्हें पूरी कहानी शुरू से अंत तक बताई, और यह बात लोगों में फैल गई। और अबू-हसन एज़-ज़ियादी, अल-मा-मूऊ के दिनों में अपनी मृत्यु तक, नोबल सिटी में कदी (धार्मिक व्यापारी) बने रहे। अल्लाह की रहमत उन पर हो! संकट में मित्र। ऐसा कहा जाता है कि एक व्यक्ति के पास बहुत धन था, और वह उससे छिन गया, और वह सब कुछ खो बैठा; तब उसकी पत्नी ने उसे सलाह दी कि वह अपने किसी मित्र से कुछ पैसे मांगे जिससे उसकी स्थिति सुधर सके। तो वह अपने

एक मित्र के पास गया और उसे अपनी आवश्यकता बताई; और उस मित्र ने उसे पाँच सौ सोने के सिक्के उधार दिए ताकि वह उनका व्यापार कर सके। अब वह मूल रूप से एक जौहरी था। इसलिए उसने सोना लिया और गहनों के बाजार में गया, जहाँ उसने खरीदने-बेचने की दुकान खोली। और जब वह दुकान में बैठा था, तो तीन आदमी उसके पास आए और उसके पिता के बारे में उससे पूछताछ की; और उसने उन्हें उनकी मृत्यु के बारे में बताया; जिस पर उन्होंने उससे पूछा, क्या उनकी कोई संतान है? उसने उत्तर दिया, उन्होंने इस दास को छोड़ा है जो तुम्हारे सामने है। — और उन्होंने कहा, कौन जानता है कि तुम उसके पुत्र हो? उसने उत्तर दिया, बाज़ार के लोग। और उन्होंने उससे कहा, उन्हें हमारे पास लाओ, ताकि वे गवाही दे सकें कि तुम उसके पुत्र हो। इसलिए उसने उन्हें इकट्ठा किया, और उन्होंने इस तथ्य की गवाही दी। और तीनों पुरुषों ने तीस हज़ार सोने के सिक्कों से भरे दो थैले, साथ ही रत्न और बहुमूल्य खनिज भी पेश किए; और उन्होंने 36 "अल-मदीनेह एश-शरीफेह।" यह 87 यह उस मस्जिद के मुख्य द्वार (दक्षिण-पश्चिम कोने में) का नाम है जिसमें पैगंबर को दफनाया गया है; जिसे यूरोपीय लेखक आमतौर पर "मदीना" कहते हैं। यह विनम्रता की एक सामान्य अभिव्यक्ति है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.13%** है।

अध्याय सोलह के 460 नोट्स। उसने कहा, "यह तुम्हारे पिता के लिए हमारे पास धरोहर के रूप में रखा गया था।" फिर वे चले गए; और उसके पास एक स्त्री आई, जिसने उससे पाँच सौ सोने के सिक्कों के बराबर के कुछ गहने मांगे और उन्हें तीन हजार सोने के सिक्कों में बेचने का प्रस्ताव रखा। उसने उन्हें उसे बेच दिया और अपने मित्र से उधार लिए हुए पाँच सौ सोने के सिक्के लेकर उसके पास गया और उससे कहा, "मैंने तुमसे जो

पाँच सौ सोने के सिक्के उधार लिए थे, उन्हें ले लो; क्योंकि परमेश्वर ने मेरी सहायता की है और मुझे समृद्ध किया है।" लेकिन उसके मित्र ने उत्तर दिया, "मैंने इन्हें परमेश्वर के नाम पर भेंट किया था और त्याग दिया था: इसलिए इन्हें ले लो; और यह पत्र भी ले लो, लेकिन इसे अपने घर पहुँचने तक मत पढ़ना और इसके अनुसार कार्य करना।" अतः उसने धन और पत्र लिया और अपने घर चला गया। और जब उसने कागज़ खोला, तो उसमें ये आयतें लिखी हुई मिलीं: — जो लोग तुम्हारे पास आए थे, वे मेरे रिश्तेदार थे, मेरे पिता, मेरे ससुर और मेरे मामा साले अली के बेटे। इसी तरह, जो कुछ तुमने नकद में बेचा, वह मेरी माँ को बेचा; और पैसा और गहने मेरी तरफ से भेजे गए थे। ऐसा करके मैंने तुम्हें कोई हानि नहीं पहुँचाना चाहा; बल्कि तुम्हें मेरे सामने शर्मिंदगी से बचाना चाहा। यह भी बताया जाता है कि बगदाद के एक व्यक्ति के पास बहुत धन-दौलत थी; लेकिन उसकी दौलत चली गई, उसकी हालत बदल गई, और वह पूरी तरह से कंगाल हो गया, और कड़ी मेहनत के बिना अपना जीवन यापन नहीं कर सकता था। और एक रात वह व्याकुल और दुखी होकर सो गया, और उसने सपने में एक व्यक्ति को देखा जिसने उससे कहा...

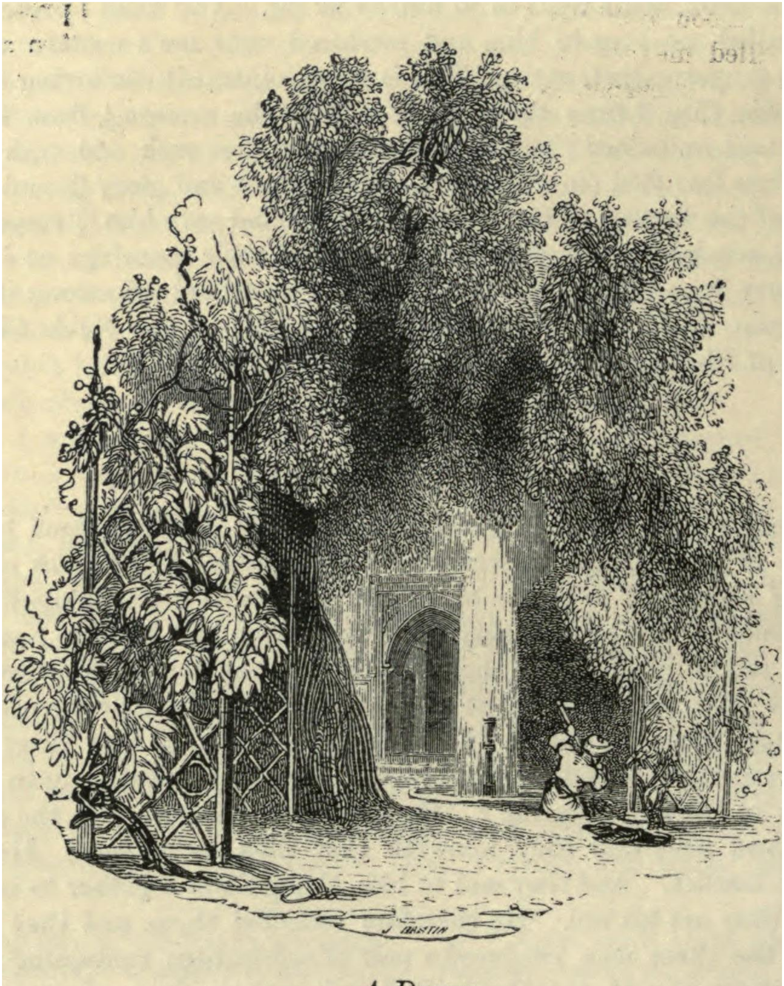

A Dream.

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.76%** है।

सोलहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 461 उसने उससे कहा, निश्चय ही तेरा भाग्य काहिरा में है; अतः उसकी खोज कर वहाँ जा। अतः वह काहिरा के लिए रवाना हुआ; और जब वह वहाँ पहुँचा, तो शाम हो गई और वह एक मस्जिद में सो गया। मस्जिद के पास ही एक घर था; और जैसा कि ईश्वर (जिसका नाम महान है) ने तय किया था, लुटेरों का एक दल मस्जिद में

घुस गया और वहाँ से उस घर में चला गया; लुटेरों के शोर से घरवाले जाग गए और चिल्लाने लगे; तब वली अपने अनुयायियों के साथ उनकी सहायता के लिए आया और लुटेरे भाग गए। वली फिर मस्जिद में घुसा और बगदाद के उस व्यक्ति को वहाँ सोते हुए पाया: अतः उसने उसे पकड़ लिया और मिक्राहों से तब तक बुरी तरह पीटा जब तक वह मृत्यु के कगार पर नहीं पहुँच गया, और उसे कैद कर लिया; और वह तीन दिन तक जेल में रहा; इसके बाद, वली ने उसे बुलवाया और उससे पूछा, तुम किस देश से आए हो? उसने उत्तर दिया, बगदाद से। वली ने आगे कहा, और किस बात के चलते तुम काहिरा आए हो? उसने उत्तर दिया, "मैंने अपने सपने में एक व्यक्ति को देखा जिसने मुझसे कहा, 'निश्चित रूप से तुम्हारा भाग्य काहिरा में है; इसलिए वहाँ जाओ।' और जब मैं काहिरा पहुँचा, तो मुझे वह भाग्य मिला जिसके बारे में उसने मुझे बताया था, यानी मिक्राआह के वे प्रहार जो मुझे तुमसे प्राप्त हुए हैं।" — इस पर वली इतना हँसा कि उसके चक्की चलाने वाले प्रकट हुए और उससे कहा, "हे कम अक्ल वाले, मैंने अपने सपने में तीन बार एक व्यक्ति को देखा जिसने मुझसे कहा, 'निश्चित रूप से बगदाद में, ऐसे इलाके में, ऐसे वर्णन का एक घर है, जिसके आँगन में एक बगीचा है, जिसके निचले सिरे पर एक फव्वारा है, जिसमें बहुत धन है; इसलिए वहाँ जाओ और उसे ले लो।' लेकिन मैं नहीं गया; और तू, अपनी कम अक्ल के कारण, उस चीज़ के कारण शहर-शहर भटकता रहा जो तूने सपने में देखी थी, जबकि वह केवल भ्रमित सपनों का परिणाम थी।" — फिर उसने उसे कुछ पैसे दिए और उससे कहा, "इससे अपना काम चला ले और अपने घर लौट जा।" शहर। इसलिए उसने उसे ले लिया और बगदाद लौट आया। अब बगदाद में जिस घर का वर्णन वली ने किया था, वह उसी आदमी का घर था; इसलिए जब वह अपने निवास पर पहुँचा, तो उसने फव्वारे के नीचे खुदाई

की और प्रचुर धन देखा। इस प्रकार ईश्वर ने उसे समृद्ध और पोषित किया; और यह एक अद्भुत संयोग था।39 अल-मुतावेक्किल और महबूबे। मोमिनों के राजकुमार, अल-मुतावेक्किल 'अला-अल्लाह के महल में चार सौ 40 रखैलें थीं, जिनमें दो सौ यूनानी और दो सौ मुवेलेदेह41 और अबीसीनियाई थीं; और ताहिर के पुत्र ओबेद ने अल-मुतावेक्किल को चार सौ दासियाँ दीं, जिनमें दो सौ श्वेत और दो सौ अबीसीनियाई और मुवेलेदेह थीं। इनमें अल-बसरा की मुवेलेदेहों में से एक दासी थी, जिसका नाम महबूबे42 था। वह सुंदरता और आकर्षण में, और शालीनता और प्रेम में सर्वोपरि थी। शिष्टाचार; वह वीणा बजाती थी, अच्छा गाती थी, कविताएँ लिखती थी और उसकी लिखावट उत्कृष्ट थी; परिणामस्वरूप अल-मुतावेक्किल उस पर मोहित हो गया और उसे अनदेखा नहीं कर सका। 39 यह किस्सा अल-इशकी (अल-मामू के शासनकाल) द्वारा भी सुनाया गया है। [मैंने इसे एक पांडुलिपि (श्री लेन के पास) में भी पाया है जिसका शीर्षक मुर्शिद एज़-ज़ूवर इला कुबूर अल-अबरार (पहले उद्धृत) है; अंतर यह है कि वहाँ यह एक मिस्री संत के बारे में बताया गया है जो बगदाद गया था और ऊपर वर्णित तरीके से ही उसे अल-फुस्तात में उसके घर का पता बताया गया था।— संपादक।] 40 मेरे मूल पाठ में, "चार हज़ार"; लेकिन आगे जो लिखा है उससे यह एक गलती प्रतीत होती है। [यह परिवर्तन किस्से में संगति लाने के लिए आवश्यक है, लेकिन मूल पाठ में गलती अल-मुतावेक्किल के विभिन्न वर्गों की गणना में प्रतीत होती है।] महिला दासों की संख्या उनकी कुल संख्या से अधिक थी, क्योंकि मुझे मीर-अत-ज़ेमान (अल-मुतावेक्किल का शासनकाल) में उनकी संख्या पाँच हज़ार बताई गई मिलती है, और एस-सुयोटी के खलीफ़ों के इतिहास (संपादक: लीज़, कलकत्ता, 1857) में चार हज़ार। यहाँ उल्लिखित दोनों कृतियों में यह किस्सा है, हालाँकि यह एक दूसरे से

और हज़ार और एक रातों के पाठ से भिन्न है। — अल-मुतावेक्किल अल-अब्बास वंश के दसवें खलीफ़े थे; और उन्होंने पलायन के वर्ष 232 से 247 तक शासन किया। मैं उनके चरित्र पर कोई टिप्पणी नहीं करता। महबूबे को किताब अल-अघांस में महिला कवियों में शामिल किया गया है। देखें अली इस्पहानेंसिस लिबर कैंटिलकनारम (प्रस्तावना, पृष्ठ 32), संपादक: कोसेगार्टन.ग्रिप्सवोल्ड: 1840।— ईडी।] 11 ए अरब देश में गुलाम के रूप में जन्मे व्यक्ति को, यदि पुरुष हो तो "मुवेल्लेद" और यदि महिला हो तो "मुवेल्लेदेह" कहा जाता है। « महबूओबेह का अर्थ है "प्रिय"।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.83%** है।

सोलहवें अध्याय के 462 उद्धरण। वह उससे एक घंटे भी दूर नहीं रहा। लेकिन जब उसने उसके प्रति उसका स्नेह देखा, तो उसने उसके प्रति घमंडी व्यवहार किया और उसके उपकारों के लिए कृतघ्न रही: इसलिए वह उस पर बुरी तरह क्रोधित हो गया और उसे छोड़कर महल के निवासियों को उससे बात करने से मना कर दिया। वह कुछ दिनों तक उसी अवस्था में रही; लेकिन अल-मुतावेक्किल को अब भी उससे स्नेह था; और एक दिन वह सुबह उठा और अपने साथियों से कहा, मैंने पिछली रात सपना देखा कि मेरा महबूबे से मेल हो गया है। उन्होंने उत्तर दिया, हम ईश्वर (जिसका नाम महान है!) से प्रार्थना करते हैं कि ऐसा तब हो जब तुम जाग रहे हो। और जब वह बोल ही रहा था, तभी एक दासी आई और उसे कुछ सूचना दी; जिसके बाद वह सभा से उठा और हरेम के निवास में प्रवेश कर गया। और उसने उससे जो संदेश दिया, वह यह था: उसने उससे कहा, "हमने महबूबे के कमरे से गाने और वीणा बजाने की आवाज़ सुनी, और हम इसका कारण नहीं जानते।" और जब वह उसके कमरे में

पहुँचा, तो उसने उसे वीणा बजाते हुए, मधुरता से ये छंद गाते हुए सुना: — मैं महल में भटकती हूँ और मुझे कोई ऐसा नहीं मिलता जिससे मैं शिकायत कर सकूँ, न ही कोई ऐसा जो मुझसे बात करे; मानो मैंने कोई विद्रोह किया हो, जिसके लिए कोई पश्चाताप मुझे बरी नहीं कर सकता। क्या कोई मध्यस्थ है जो मेरे लिए उस राजा से विनती करे जिसने सपने में मुझसे मुलाकात की और मुझसे सुलह की, और जिसने भोर होते ही अपना त्याग कर मुझे उससे अलग कर दिया? इसलिए जब अल-मुतावेक्किल ने उसके शब्द सुने, तो वह इन छंदों और इस अजीब संयोग पर आश्चर्यचकित हुआ; महबूबे के सपने का उसके सपने से मेल खाना। इसलिए वह उसके कमरे में गया; जब वह अंदर आया और महबूबा को उसकी उपस्थिति का आभास हुआ, तो वह जल्दी से उसके पास उठी और उसके चरणों में गिरकर उन्हें चूमते हुए बोली, "अल्लाह की कसम, ऐ मेरे मालिक, मैंने यह दृश्य कल रात अपने सपने में देखा था; और जब मैं जागी, तो मैंने ये आयतें रचीं।" अल-मुतावेक्किल ने उत्तर दिया, "अल्लाह की कसम, मैंने भी अपने सपने में ऐसा ही देखा था।" फिर वे एक-दूसरे को गले लगाकर सुलह कर ली; और वह सात दिन और सात रातें उसके साथ रहा। महबूबा ने अपने गाल पर कस्तूरी से अल-मुतावेक्किल का नाम लिखा था; और उसका नाम जाफ़र था; और जब उसने अपना नाम इस प्रकार लिखा हुआ देखा, तो उसने ये आयतें रचीं और पढ़ीं: "उसने अपने गाल पर कस्तूरी से जाफ़र लिखा। मैं अपनी आत्मा से उसे छुड़ा लूँगा जिसने मेरे गाल पर वह लिखा जो मैंने देखा। अगर उसकी उंगलियों ने उसके गाल पर एक रेखा खींची है, तो उसने मेरे दिल में कई रेखाएँ अंकित कर दी हैं।" हे मनुष्य जाति में जाफ़र की देवी, अल्लाह जाफ़र को अपने प्रेम से भर दे! और जब अल-मुतावेक्किल की मृत्यु हुई, तो उसकी सभी दासियों ने उसे भुला दिया, सिवाय महबूबे के; क्योंकि वह अपनी

मृत्यु तक उसके लिए शोक मनाती रही और उसे उसके बगल में ही दफनाया गया। अल्लाह की रहमत उन सब पर हो! "जाफ़र" का अर्थ है "नदी"।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.39%** है।

अध्याय सत्रह। तीन सौ पचासवीं रात के एक भाग से शुरू होकर तीन सौ इकहत्तरवीं रात के एक भाग पर समाप्त। जादुई घोड़े की कहानी। * प्राचीन काल में, फारसियों के देश में,1 एक शक्तिशाली, महान प्रतिष्ठा वाला राजा था, जिसकी तीन बेटियाँ थीं, जो चमकते हुए पूर्णिमा के चंद्रमा और फूलों के बगीचों के समान थीं; और उसका एक पुत्र था, जो चंद्रमा के समान था। वह दो वार्षिक त्योहार मनाता था, नव वर्ष का दिन और शरद विषुव का दिन;2 और इन त्योहारों पर उसकी यह प्रथा थी कि वह इन त्योहारों पर...

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.04%** है।

464 माफ़्जो की कहानी। राजा अपने महलों को खोलने, उपहार देने, सुरक्षा और संरक्षा की घोषणा करने और अपने दरबारियों और लेफ्टिनेंटों को पदोन्नत करने के लिए विभिन्न अवसरों पर आते थे। उनके राज्य के लोग भी उनके पास जाकर उन्हें प्रणाम करते थे और त्योहार की बधाई

देते हुए उन्हें उपहार और सेवक भेंट करते थे। उन्हें दर्शनशास्त्र और ज्यामिति से प्रेम था। एक दिन, इन्हीं त्योहारों में से एक के दौरान, जब राजा अपने राज्य के सिंहासन पर बैठे थे, तभी तीन ऋषि उनके पास आए। उनमें से एक के पास सोने का मोर था; दूसरे के पास पीतल का तुरही; और तीसरे के पास हाथीदांत और आबनूस का घोड़ा था। इस पर राजा ने उनसे पूछा, ये वस्तुएँ क्या हैं और इनका क्या उपयोग है? मोर के स्वामी ने उत्तर दिया, "इस मोर का उपयोग यह है कि जब भी रात या दिन का एक घंटा बीतता है, यह अपने पंख फड़फड़ाता है और एक आवाज निकालता है।" 4 तुरही के स्वामी ने 5 कहा, "यदि इस तुरही को नगर के द्वार पर रख दिया जाए, तो यह नगर की रक्षक होगी; क्योंकि यदि कोई शत्रु नगर में प्रवेश करे, तो यह तुरही उसके विरुद्ध ध्वनि उत्पन्न करेगी; जिससे वह पहचाना जाएगा और पकड़ा जाएगा।" और घोड़े के स्वामी ने कहा, "हे मेरे स्वामी, इस घोड़े का उपयोग यह है कि यदि कोई व्यक्ति इस पर सवार हो, तो यह उसे उसकी इच्छित भूमि तक पहुंचा देगा।" इस पर राजा ने कहा, "जब तक मैं इन वस्तुओं के उपयोगों का परीक्षण न कर लूँ, तब तक मैं तुम पर कोई कृपा नहीं करूँगा।" तब उसने मोर का परीक्षण किया और पाया कि वह उसके स्वामी के कथनानुसार ही है। और उसने तुरही का भी परीक्षण किया और पाया कि वह उसके स्वामी के कथनानुसार ही है। इसलिए राजा ने दो ऋषियों (मोर और तुरही के स्वामी) से कहा, "मुझसे जो चाहो मांगो।" उन्होंने उत्तर दिया, "हम तुमसे निवेदन करते हैं कि तुम हम दोनों में से एक-एक का विवाह अपनी पुत्रियों से करा दो।" इस पर राजा ने अपनी दो पुत्रियों का विवाह उन्हें सौंप दिया। तब तीसरे ऋषि, जो घोड़े के स्वामी थे, आगे आए और राजा के सामने भूमि चूमकर बोले, "हे युग के राजा, मुझे भी वैसा ही वरदान दो जैसा तुमने मेरे साथियों को दिया है।" राजा ने उत्तर दिया, "जब मैं तुम्हारे

द्वारा लाई गई वस्तु का परीक्षण कर लूंगा।” इस पर राजा का पुत्र आगे आया और बोला, “हे मेरे पिता, मैं इस घोड़े पर सवार होकर इसका परीक्षण करूंगा और इसके उपयोग का प्रमाण प्राप्त करूंगा।” इस पर राजा ने उत्तर दिया, “हे मेरे पुत्र, जैसा तुम चाहो, परीक्षण करो।” राजा का पुत्र उठा और घोड़े पर सवार होकर उसे अपने पैरों से धकेलने लगा; परन्तु घोड़ा अपनी जगह से हिला तक नहीं। तब उसने कहा, हे ऋषि, इसकी वह तीव्र गति कहाँ है जिसका आपने बखान किया था? यह सुनकर ऋषि उसके पास आए और उसे एक घूमने वाली सुई दिखाई, जिससे उसे ऊपर उठाया जा सके; और उससे कहा, इस सुई को घुमाओ। राजा के पुत्र ने सुई घुमाई, और देखो, घोड़ा चल पड़ा और उसके साथ आकाश के ऊपरी भाग की ओर उड़ गया, और उसकी गति रुकी ही नहीं।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.02%** है।

जादुई घोड़े की कहानी। 405 वह उसके साथ तब तक भागा जब तक वह लोगों की नज़रों से ओझल नहीं हो गया; तब राजकुमार अपनी स्थिति पर व्याकुल हो गया और घोड़े पर सवार होने के अपने फैसले पर पछताया। उसने कहा, "ऋषि ने मुझे नष्ट करने के लिए एक चाल चली है, और सर्वोच्च, महान ईश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है!" फिर उसने घोड़े के सभी अंगों की जाँच शुरू की; और ऐसा करते समय उसने घोड़े के दाहिने कंधे पर मुर्गे के सिर जैसी एक चीज़ देखी, और बाएँ कंधे पर भी वैसी ही चीज़ देखी: इसलिए उसने कहा, "मुझे इन दो बटनों के अलावा कोई संकेत नहीं दिखता।" और उसने दाहिने कंधे पर स्थित बटन को घुमाया; जिसके बाद घोड़ा उसे और अधिक गति से आकाश में ऊपर ले गया: इसलिए उसने उस बटन से अपना हाथ हटा लिया, और बाएँ कंधे की ओर देखकर, वहाँ स्थित बटन को देखकर, उसने उसे घुमाया; और

घोड़े की गति कम हो गई, और वह ऊपर जाने से नीचे आने लगा। वह घोड़ा धीरे-धीरे उसे पृथ्वी की ओर ले जा रहा था, और वह अपनी सुरक्षा के लिए लगातार सावधानी बरत रहा था। जब उसने यह देखा और घोड़े के उपयोग को जाना, तो उसका हृदय आनंद और प्रसन्नता से भर गया। उसने ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) का धन्यवाद किया कि उसने उसे विनाश से बचाकर उस पर कृपा की। वह दिन भर लगातार नीचे उतरता रहा, क्योंकि ऊपर चढ़ते समय पृथ्वी उससे दूर हो गई थी। वह अपनी इच्छा अनुसार घोड़े के चारों ओर घूमता रहा, और जब वह चाहता, तो घोड़ा उसे नीचे ले जाता; और जब वह चाहता, तो घोड़ा उसे ऊपर ले जाता। अब जब उसे घोड़े से अपनी इच्छा पूरी हो गई, तो वह उस पर सवार होकर पृथ्वी की ओर चल पड़ा और उसके उन देशों और शहरों को देखने लगा, जिन्हें वह नहीं जानता था; क्योंकि उसने अपने पूरे जीवन में उन्हें कभी नहीं देखा था। और उसने जिन वस्तुओं को देखा, उनमें से एक शहर अत्यंत उत्कृष्ट ढंग से निर्मित था, जो वृक्षों और नदियों से भरपूर हरे-भरे भूभाग के बीचोंबीच स्थित था। उसने मन ही मन इस पर विचार किया और कहा, काश मुझे इस शहर का नाम और यह किस क्षेत्र में स्थित है, पता होता। फिर उसने शहर का चक्कर लगाया और उसे दाएं-बाएं ध्यान से देखा। दिन लगभग ढल चुका था और सूर्य अस्त होने वाला था, इसलिए उसने मन ही मन कहा, मुझे इस शहर से बेहतर रात बिताने के लिए कोई जगह नहीं मिली। इसलिए मैं आज रात यहीं बिताऊंगा और सुबह अपने परिवार और अपने राजमहल में लौटकर अपने परिवार और पिता को अपने साथ घटी घटनाओं के बारे में बताऊंगा और उन्हें अपनी आंखों से देखी गई बातों की जानकारी दूंगा। तदनुसार, वह एक ऐसी जगह की तलाश में निकल पड़ा जहाँ वह अपनी और अपने घोड़े की सुरक्षा सुनिश्चित कर सके और जहाँ उसे कोई देख न सके; और जबकि

n. 3 °

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.34%** है।

जब वह इस प्रकार व्यस्त था, तभी उसने शहर के बीचोंबीच एक ऊँचा महल देखा, जो एक विशाल दीवार और ऊँची प्राचीरों से घिरा हुआ था। तभी उसने मन ही मन कहा, "यह स्थान कितना सुखद है!" उसने वह बटन दबाया जिससे घोड़ा नीचे उतरने लगा, और वह तब तक नीचे की ओर जाता रहा जब तक कि वह महल की सपाट छत पर स्थिर रूप से नहीं उतर गया। वहाँ पहुँचकर उसने घोड़े से उतरकर ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) की स्तुति की, और घोड़े के चारों ओर घूमकर उसकी जाँच करने लगा। उसने कहा, "अल्लाह की कसम, जिसने तुझे ऐसा बनाया है, वह एक कुशल ऋषि था; और यदि ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) मेरी आयु बढ़ा दे, मुझे मेरे देश और मेरे परिवार के पास सुरक्षित वापस ले आए, और मुझे मेरे पिता से मिला दे, तो मैं निश्चित रूप से इस ऋषि पर हर कृपा बरसाऊँगा और उसके साथ अत्यंत उदारता से व्यवहार करूँगा।" फिर वह महल की छत पर तब तक बैठा रहा जब तक उसे यह पता नहीं चल गया कि

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.70%** है।

जादुई घोड़े की कहानी, 467 साथी सो गए थे। भूख और प्यास से वह व्याकुल था; क्योंकि अपने पिता से बिछड़ने के बाद से उसने कुछ नहीं खाया था; और उसने मन ही मन कहा, सचमुच, इस महल में जीवन की आवश्यक वस्तुएँ तो अवश्य ही उपलब्ध हैं। इसलिए उसने घोड़े को एक जगह अकेला छोड़ दिया और कुछ खाने की तलाश में नीचे चला गया; और सीढ़ियाँ देखकर वह इमारत के निचले हिस्से में उतर गया, जहाँ उसे

संगमरमर से बना एक आंगन मिला; वह उस स्थान और उसकी बनावट की सुंदरता पर आश्चर्यचकित रह गया; परन्तु महल में उसे न तो कोई आवाज़ सुनाई दी, न ही किसी निवासी की प्रसन्नता भरी आवाज़। इसलिए वह असमंजस में रुक गया और दाएं-बाएं देखने लगा, उसे समझ नहीं आ रहा था कि कहाँ जाए। फिर उसने मन ही मन कहा, मेरे लिए इससे बेहतर कोई उपाय नहीं है कि मैं उस स्थान पर लौट जाऊं जहाँ मेरा घोड़ा है और रात वहीं बिताऊं; और सुबह होते ही उस पर सवार होकर निकल जाऊं। लेकिन जब वह इन शब्दों से स्वयं को संबोधित कर रहा था, तभी उसने अपने स्थान की ओर आती हुई एक रोशनी देखी, और उस रोशनी को ध्यान से देखने पर उसने पाया कि वह दासियों के एक समूह के साथ थी, जिनमें एक सुंदर युवती भी थी, जिसका कद अलिफ़ अक्षर जैसा था,7 जो शानदार पूर्णिमा के चंद्रमा के समान थी, जैसा कि कवि ने कहा है: — वह बिना किसी पूर्व सूचना के, रात के अंधेरे में, अंधेरे क्षितिज में पूर्णिमा के चंद्रमा की तरह आई; सुडौल; सृष्टि में उसके समान सौंदर्य और स्वभाव का कोई नहीं है। जब मेरी आँखों ने उसकी सुंदरता देखी, तो मैंने कहा, मानव जाति के सृष्टिकर्ता की पूर्णता की महिमा हो! मैं मनुष्यों और भोर के स्वामी की शरण लेकर उसे हर किसी की नज़रों से बचाता हूँ।8 वह युवती इस नगर के राजा की पुत्री थी; और उसके पिता उससे इतना प्रेम करते थे कि उन्होंने उसके लिए यह महल बनवाया था; और जब भी उसका मन उदास होता, वह अपनी दासियों के साथ यहाँ आती और एक-दो दिन या उससे अधिक समय तक यहाँ रहती; उसके बाद वह महल लौट जाती जहाँ वह आमतौर पर रहती थी। उस रात वह मन बहलाने और आराम करने के लिए आई थी, और तलवार से लैस एक हिजड़े के साथ दासियों के बीच टहल रही थी; और जब वे महल में दाखिल हुईं, तो उन्होंने फर्नीचर फैलाया, इत्र के बर्तनों से सुगंध फैलाई

और खेल-कूद और आनंद मनाया। अब जब वे इस तरह मग्न थीं, राजा का पुत्र उस हिजड़े पर झपटा, उसे एक ऐसा प्रहार किया जिससे वह ज़मीन पर गिर पड़ा, और उसके हाथ से तलवार छीनकर राजा की पुत्री के साथ मौजूद दासियों पर झपटा और उन्हें दाएं-बाएं तितर-बितर कर दिया। और जब राजा की पुत्री ने उसकी सुंदरता और आकर्षण देखा, तो उसने कहा, शायद

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.91%** है।

468 जादुई घोड़े की कहानी। तू वही है जिसने कल मेरे पिता से मेरा विवाह मांगा था, और जिसे उन्होंने ठुकरा दिया था, और जिसके बारे में उन्होंने कहा था कि वह बदसूरत दिखता है। अल्लाह की कसम, मेरे पिता ने झूठ बोला था; क्योंकि तू तो एक सुंदर व्यक्ति है। भारत के राजा के पुत्र ने उसके पिता से उसका विवाह मांगा था, और उन्होंने उसे अस्वीकार कर दिया था, क्योंकि वह दिखने में अप्रिय था; और उसने सोचा कि अब उसके सामने जो राजकुमार है, वही है जिसने उसका विवाह मांगा था। फिर वह उसके पास आई, उसे गले लगाया और चूमा, और उसके साथ बैठ गई। लेकिन दासियों ने उससे कहा, हे हमारी स्वामिनी, यह वह व्यक्ति नहीं है जिसने तुम्हारे पिता से तुम्हारा विवाह मांगा था; क्योंकि वह व्यक्ति बदसूरत था, और यह सुंदर है; और जिसने तुम्हारे पिता से तुम्हारा विवाह मांगा था, और जिसे उन्होंने ठुकरा दिया था, वह इस व्यक्ति का सेवक बनने के योग्य नहीं है: लेकिन, हे हमारी स्वामिनी, वास्तव में यह युवक उच्च कोटि का है। इसके बाद दासियाँ उस गिरे हुए हिजड़े के पास गईं और उसे जगाया; यह सुनकर वह घबराकर उठ खड़ा हुआ और अपनी तलवार खोजने लगा, पर वह उसके हाथ में नहीं थी। तब दासियों ने उससे कहा, जिसने तेरी तलवार छीनकर तुझे गिराया है, वह राजा की पुत्री के

साथ बैठा है। राजा ने अपनी पुत्री को विपत्तियों और बुरी घटनाओं से बचाने के लिए इस हिजड़े को उसकी रक्षा का जिम्मा सौंपा था। इसलिए हिजड़ा उठा और पर्दे के पास गया, और जब उसने पर्दा उठाया, तो उसने राजा की पुत्री को राजा के पुत्र के साथ बैठे हुए और बातें करते हुए देखा; और जैसे ही उसने उन्हें देखा, उसने राजा के पुत्र से कहा, हे मेरे स्वामी, क्या आप मनुष्य हैं या जिन्न? इस पर राजा के पुत्र ने उत्तर दिया, हे सबसे दुष्ट दास, तुझ पर धिक्कार! तू राजा के पुत्रों को काफिर शैतानों के समान क्यों समझता है? फिर उसने तलवार हाथ में लेकर उससे कहा, मैं राजा का दामाद हूँ, और राजा ने मेरी शादी अपनी पुत्री से कर दी है और मुझे उससे मिलने का आदेश दिया है। जब हिजड़े ने ये शब्द सुने, तो उसने कहा, हे मेरे स्वामी, यदि आप मनुष्य हैं, जैसा कि आपने कहा है, तो वह आपके सिवा किसी और के योग्य नहीं है, और आप किसी और से अधिक उसके योग्य हैं। तब हिजड़ा चीखता हुआ राजा के पास गया; उसने अपने कपड़े फाड़ डाले थे और अपने सिर पर धूल डाल ली थी। जब राजा ने उसका रोना सुना, तो उसने उससे कहा, क्या हुआ है? तुमने मेरे हृदय को व्याकुल कर दिया है। मुझे जल्दी बताओ, और संक्षेप में बताओ। तब उसने उत्तर दिया, हे राजा, अपनी पुत्री की सहायता के लिए जाइए; क्योंकि एक जिन्न शैतान, मनुष्य के वेश में, और राजाओं के पुत्रों के रूप में, उस पर कब्ज़ा कर लिया है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.73%** है।

जादुई घोड़े की कहानी। 46J उसे: इसलिए उसे पकड़ लो। जब राजा ने उससे ये शब्द सुने, तो उसने उसे मार डालने का मन बनाया और उससे कहा, तूने मेरी बेटी की उपेक्षा कैसे की, जिसके कारण उसके साथ यह घटना घटी? फिर वह उस महल में गया जहाँ उसकी बेटी थी और वहाँ

पहुँचकर उसने दासियों को वहाँ खड़ा पाया और उनसे पूछा, मेरी बेटी के साथ क्या हुआ है? उन्होंने उत्तर दिया, हे राजा, जब हम उसके साथ बैठे थे, अचानक एक युवक, जो पूर्णिमा के चाँद जैसा दिखता था और जिसके चेहरे पर हमने पहले कभी इतना सुंदर व्यक्ति नहीं देखा था, हाथ में तलवार लिए हम पर झपटा; हमने उससे उसके काम के बारे में पूछा, तो उसने कहा कि आपने अपनी बेटी का विवाह उससे किया था: हम इससे अधिक कुछ नहीं जानते; और हम नहीं जानते कि वह मनुष्य है या जिन्न; लेकिन वह पवित्र और सुसंस्कृत है, और किसी भी प्रकार के अपमानजनक कार्य में संलग्न नहीं होता। जब राजा ने उनकी बातें सुनीं, तो उसका क्रोध शांत हो गया। उसने धीरे-धीरे पर्दा उठाया और देखा कि राजा का पुत्र अपनी पुत्री के साथ बैठकर बातें कर रहा है; वह अत्यंत सुंदर था, उसका चेहरा चमकते हुए पूर्णिमा के चंद्रमा के समान था। अपनी पुत्री के प्रति ईर्ष्या के कारण राजा स्वयं को वश में नहीं कर सका। इसलिए उसने पर्दा उठाया और हाथ में खींची हुई तलवार लेकर अंदर प्रवेश किया और उन पर ऐसे टूट पड़ा जैसे कोई पिशाच हो।10 राजा के पुत्र ने उसे देखकर उससे पूछा, क्या यह तुम्हारे पिता हैं? उसने उत्तर दिया, हाँ। यह सुनकर वह उछल पड़ा और हाथ में तलवार लेकर राजा पर इतनी ज़ोर से चिल्लाया कि राजा भयभीत हो गया और तलवार से उस पर हमला करने ही वाला था; लेकिन राजा ने देखा कि राजकुमार उससे अधिक बलवान है, इसलिए उसने अपनी तलवार म्यान में रख ली और तब तक खड़ा रहा जब तक कि राजा का पुत्र उसके पास नहीं आ गया। जब वह उसके पास आया, तो उसने विनम्रता से उसका अभिवादन किया और उससे कहा, हे युवक, क्या तुम

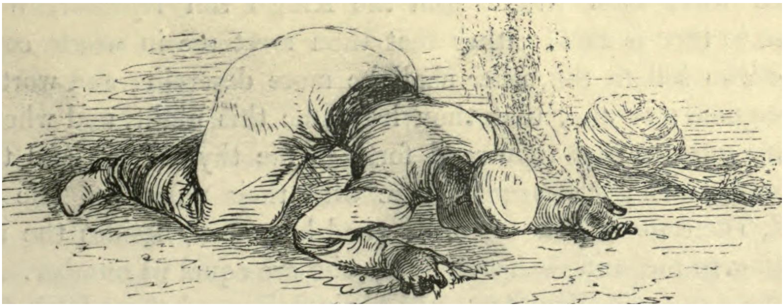

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.80%** है।

470 जादू होल्टस्टी की कहानी। तुम मनुष्य हो या जिन्न? राजा के पुत्र ने उत्तर दिया, यदि मैं तुम्हारे अधिकार और तुम्हारी पुत्री के सम्मान का आदर न करता, तो मैं तुम्हारा रक्त बहा देता। तुम मुझे शैतानों से कैसे जोड़ते हो, जबकि मैं शाही किसरों के पुत्रों में से हूँ, जो यदि तुम्हारा राज्य छीनना चाहें, तो तुम्हें तुम्हारी महिमा और प्रभुत्व से विमुख कर देंगे और तुम्हारे सभी निवासों को लूट लेंगे? — इसलिए राजा,11 उसकी बातें सुनकर, उससे भयभीत और भयभीत हो गया; लेकिन उसने उससे कहा, "यदि तू राजाओं के पुत्रों में से है, जैसा तूने दावा किया है, तो तू मेरी अनुमति के बिना मेरे महल में कैसे प्रवेश कर गया, मेरा अपमान कैसे किया, और मेरी पुत्री के पास आकर यह दावा कैसे किया कि तू उसका पति है, और यह ढोंग कैसे किया कि मैंने तेरा विवाह उससे कराया है, जबकि मैंने राजाओं और राजाओं के पुत्रों को तब मार डाला था जब उन्होंने मुझसे उससे विवाह की मांग की थी? और तुझे मेरी शक्ति से कौन बचाएगा, जबकि यदि मैं अपने दासों और जवानों को पुकार कर तुझे मारने का आदेश दूं, तो वे तुझे तुरंत मार डालेंगे? फिर तुझे मेरे हाथ से कौन छुड़ा सकता है?" राजा के पुत्र ने जब उससे ये शब्द सुने, तो उसने राजा से कहा, "सचमुच मैं तुझ पर और तेरी अज्ञानता पर आश्चर्यचकित हूं। क्या तू अपनी पुत्री के लिए मुझसे बेहतर पति चाहता है?" क्या तुमने

मुझसे अधिक दृढ़ हृदय वाला, प्रतिशोध में श्रेष्ठ, अधिकार, सेना और रक्षकों में अधिक गौरवशाली किसी को देखा है? राजा ने उत्तर दिया, नहीं, अल्लाह की कसम: लेकिन हे नौजवान, मैं चाहता हूँ कि तुम सार्वजनिक रूप से उससे विवाह का प्रस्ताव रखो, ताकि मैं उसका विवाह तुमसे करा सकूँ; क्योंकि यदि मैं उसका विवाह तुमसे गुप्त रूप से कराऊँगा, तो तुम उसे इस प्रकार लेकर मुझे अपमानित करोगे। राजा के पुत्र ने उत्तर दिया, आपने ठीक कहा: लेकिन, हे राजा, यदि आपके दास, सेवक और सैनिक मेरे विरुद्ध एकत्रित होकर मुझे मार डालें, जैसा कि आपने कल्पना की है, तो आप स्वयं को और जनता को अपमानित करेंगे, और जनता आपके प्रति विभाजित हो जाएगी, कुछ विश्वास करेंगे, और अन्य आप पर झूठ का आरोप लगाएंगे। मेरा विचार है कि आपको यह विचार छोड़ देना चाहिए, और उस मार्ग को अपनाना चाहिए जो मैं आपको सुझाऊँगा। तब राजा ने कहा, जो चाहो प्रस्ताव रखो। राजा के पुत्र ने उत्तर दिया, “मैं तुमसे यह प्रस्ताव रखता हूँ: या तो तुम मुझसे एकल युद्ध करो, और जो दूसरे को मार डालेगा वही राज्य का अधिक योग्य और हकदार होगा; या फिर तुम आज रात मुझे छोड़कर चले जाओ, और सुबह होते ही अपने सैनिकों, टुकड़ियों और युवकों को मेरे पास भेज दो; और मुझे उनकी संख्या बता दो।” राजा ने उत्तर दिया, “उनकी संख्या चालीस हजार घुड़सवार हैं, मेरे दासों और उनके अनुयायियों के अलावा, जिनकी संख्या भी लगभग उतनी ही है।” राजा के पुत्र ने कहा, “दिन होते ही उन्हें मेरे पास भेज देना।”

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.98%** है।

जादुई घोड़े की कहानी। 471 और उनसे कहो, “इस व्यक्ति ने मुझसे मेरी बेटी का विवाह इस शर्त पर मांगा है कि वह तुम सब से युद्ध करेगा;

और उसने यह ढोंग किया है कि वह तुम सबको हरा देगा और तुम उस पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते। तो मुझे उनके साथ युद्ध करने के लिए छोड़ दो; और यदि वे मुझे मार डालते हैं, तो यह तुम्हारे रहस्य को छुपाने और तुम्हारे सम्मान की रक्षा करने के लिए अधिक उचित होगा; लेकिन यदि मैं उन्हें हरा देता हूँ और उन पर विजय प्राप्त कर लेता हूँ, तो मैं वह व्यक्ति हूँ जिसे राजा अपने दामाद के रूप में चाहेंगे।" — और जब राजा ने उसकी बातें सुनीं, तो उसने उसकी सलाह को स्वीकार कर लिया, यद्यपि वह उसके कहने पर आश्चर्यचकित था, और अपनी पूरी सेना से युद्ध करने के उसके दृढ़ संकल्प से भयभीत था। फिर वे बातचीत करने बैठ गए। इसके बाद राजा ने हिजड़े को बुलाया और उसे आदेश दिया कि वह तुरंत अपने वज़ीर के पास जाए और उससे कहे कि वह सभी सैनिकों को इकट्ठा करे और उन्हें हथियारबंद होकर अपने घोड़ों पर सवार होने का आदेश दे। तो हिजड़ा वज़ीर के पास गया और उसे राजा के आदेश की जानकारी दी। इस पर वज़ीर ने सेना के प्रमुखों और साम्राज्य के बड़े अधिकारियों को बुलाया और उन्हें अपने घोड़ों पर सवार होकर युद्ध के हथियारों से लैस होकर आगे बढ़ने का आदेश दिया। — इसी बीच, राजा उस युवक से बातचीत करता रहा, उसकी वाक्पटुता, बुद्धिमत्ता और अच्छे व्यवहार से प्रसन्न हुआ; और जब वे बातचीत कर रहे थे, सुबह हो गई। इसलिए राजा उठा और अपने सिंहासन पर गया, अपने सैनिकों को सवार होने का आदेश दिया और अपने पास मौजूद सबसे अच्छे घोड़ों में से एक उत्तम घोड़ा राजा के पुत्र के सामने मंगवाया और उसे सुंदर काठी और साज-सज्जा से सुसज्जित करने का आदेश दिया। लेकिन उस युवक ने राजा से कहा, हे महाराज, मैं सैनिकों को देखे और उनका अवलोकन किए बिना घोड़े पर सवार नहीं होऊंगा। राजा ने उत्तर दिया, जैसा तू चाहता है वैसा ही होगा। तब राजा उस युवक के साथ आगे बढ़े और घुड़सवारी के मैदान

तक पहुँचे, जहाँ युवक ने सैनिकों और उनकी संख्या को देखा। राजा ने पुकार कर कहा, हे सैनिकों, एक युवक मेरे पास मेरी पुत्री से विवाह का प्रस्ताव लेकर आया है, और मैंने उससे अधिक सुंदर, बलवान और साहसी किसी को नहीं देखा। उसने दावा किया है कि वह अकेला ही तुम पर विजय प्राप्त करेगा और तुम्हें अपने अधीन कर लेगा, और कहता है कि तुम, चाहे तुम्हारी संख्या एक लाख ही क्यों न हो, उसकी दृष्टि में अल्प हो। परन्तु जब वह तुमसे युद्ध करने आए, तो उसे अपने भालों और तलवारों की धारों पर मार गिराना; क्योंकि उसने एक महान कार्य करने का बीड़ा उठाया है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.63%** है।

472 जादुई घोड़े की कहानी। राजा ने तब उस युवक से कहा, "हे मेरे पुत्र, उनके साथ जैसा चाहो वैसा करो।" लेकिन उसने उत्तर दिया, "हे राजा, आपने मेरे साथ न्याय नहीं किया। मैं पैदल चलकर उनसे कैसे लड़ूँ, जबकि आपके लोग घोड़ों पर सवार हैं?" तब राजा ने उससे कहा, "मैंने तुझे घोड़े पर सवार होने के लिए कहा था, और तूने इनकार कर दिया। तो फिर घोड़ों में से जो चाहे चुन ले।" उसने उत्तर दिया, "मुझे आपके घोड़े पसंद नहीं हैं, और मैं उसी घोड़े पर सवार होऊंगा जिस पर मैं आया हूँ।" तब राजा ने उससे पूछा, "तेरा घोड़ा कहाँ है?" उसने उत्तर दिया, "वह आपके महल की छत पर है।" राजा ने पूछा, "मेरे महल में किस स्थान पर?" उसने उत्तर दिया, "महल की छत पर।" और जब राजा ने उसकी बात सुनी, तो उसने उससे कहा, "यह तेरे पागलपन का पहला उदाहरण है।" हे भगवान! धिक्कार है तुम पर! घोड़ा छत पर कैसे हो सकता है? अब तुम्हारा झूठ और सच्चाई दोनों सामने आ जाएँगी। — तब राजा ने अपने एक प्रमुख अधिकारी की ओर देखा और उससे कहा, मेरे महल में

जाओ और छत पर जो कुछ भी मिले, उसे ले आओ। और लोग उस युवक की बातों पर आश्चर्यचकित रह गए; एक दूसरे से कहने लगा, यह घोड़ा छत से सीढ़ियों से नीचे कैसे उतर सकता है? सचमुच, हमने ऐसा पहले कभी नहीं सुना! — अब राजा द्वारा महल में भेजा गया व्यक्ति छत पर चढ़ा और वहाँ घोड़े को खड़ा देखा; उसने इससे अधिक सुंदर घोड़ा पहले कभी नहीं देखा था; वह उसके पास गया और उसकी जाँच की, और पाया कि वह आबनूस और हाथीदांत का बना था। राजा के कुछ अन्य प्रमुख अधिकारी भी उस व्यक्ति के साथ ऊपर गए; और जब उन्होंने घोड़े को देखा, तो वे सब एक साथ हँसे और बोले, क्या उस युवक ने ऐसे घोड़े की बात की थी? हम सोचते हैं कि वह पागल के अलावा और कुछ नहीं है: लेकिन उसका मामला जल्द ही हमारे सामने आ जाएगा; और शायद वह कोई बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति हो। फिर उन्होंने घोड़े को अपने हाथों पर उठाया और बिना रुके उसे राजा के सामने ले आए। राजा के सामने उन्होंने घोड़े को रख दिया; और लोग उसके चारों ओर जमा हो गए, उसे निहारते हुए और उसकी सुंदरता, और उसके काठी और लगाम की सुंदरता पर आश्चर्यचकित होते हुए। राजा ने भी उसकी प्रशंसा की और उस पर अत्यंत आश्चर्य व्यक्त किया; और उन्होंने राजा के पुत्र से कहा, हे युवक, क्या यह तुम्हारा घोड़ा है? उसने उत्तर दिया, हाँ, हे राजा, यह मेरा घोड़ा है, और आप इसके द्वारा किया गया चमत्कार देखेंगे। राजा ने उससे कहा, अपना घोड़ा लो और उस पर सवार हो जाओ। लेकिन उसने उत्तर दिया, मैं तब तक इस पर सवार नहीं होऊंगा जब तक कि सेना इससे दूर न हट जाए। इसलिए राजा ने अपने चारों ओर मौजूद सैनिकों को आदेश दिया कि वे इससे उतनी दूर हट जाएं जितनी दूर तीर चलाया जा सकता है। तब युवक ने कहा, हे राजा, मैं अपने घोड़े पर सवार होकर आपकी सेना पर हमला करने जा रहा हूँ, और उन्हें दाहिनी ओर तितर-बितर कर

दूंगा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.55%** है।

और चले गए, और उनके दिलों को चीर दिया। राजा ने उत्तर दिया, जो चाहो करो, और उन पर दया मत करो; क्योंकि वे तुम पर दया नहीं करेंगे। और राजा का पुत्र घोड़े के पास गया और उस पर सवार हो गया। सैनिक उसके सामने पंक्तियों में खड़े थे; और एक ने दूसरे से कहा, जब यह युवक पंक्तियों के बीच आएगा, तो हम भालों की नोकों और तलवारों की धारों से उसका स्वागत करेंगे। लेकिन उनमें से एक ने कहा, अल्लाह की कसम, यह एक विपत्ति है! हम इस सुंदर चेहरे और असाधारण कद वाले युवक को कैसे मारेंगे? और दूसरे ने कहा, अल्लाह की कसम, तुम उस तक किसी भी तरह नहीं पहुँच पाओगे, सिवाय किसी बड़ी घटना के; और इस युवक ने ये कार्य अपने शौर्य और श्रेष्ठता के ज्ञान के कारण ही किए हैं। और जब राजा का पुत्र अपने घोड़े पर मजबूती से बैठ गया, तो उसने चढ़ाई की लगाम घुमाई। दर्शकों की निगाहें यह देखने के लिए तनी हुई थीं कि वह क्या करेगा; और उसका घोड़ा अचानक हरकत करने लगा और ज़ोर-ज़ोर से इधर-उधर भागने लगा, यहाँ तक कि उसने घोड़ों की सबसे असाधारण हरकतें कर दिखाईं और उसका शरीर हवा से भर गया। फिर वह उठा और आकाश में उड़ गया। जब राजा ने देखा कि वह उठकर ऊपर चला गया है, तो उसने अपने सैनिकों को पुकारा और कहा, "धिक्कार है तुम पर! इसे पकड़ लो इससे पहले कि यह तुमसे भाग जाए।" लेकिन उसके वज़ीर और सेनापतियों ने उत्तर दिया, "हे राजा, क्या कोई उड़ते हुए पक्षी को पकड़ सकता है? यह तो कोई और नहीं बल्कि एक बड़ा जादूगर है। ईश्वर ने तुम्हें इससे बचाया है: इसलिए ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) की स्तुति करो कि तुम उसके हाथ से बच गए।" राजा अपने बेटे के इन

कृत्यों को देखने के बाद अपने महल लौट आया; और जब वह अपने महल पहुँचा, तो वह अपनी बेटी के पास गया और उसे घुड़सवारी के दौरान राजा के बेटे के साथ हुई घटना के बारे में बताया; लेकिन उसने पाया कि वह उसके लिए और उससे बिछड़ने के लिए बहुत विलाप कर रही थी; और वह बुरी तरह बीमार पड़ गई और तकिये पर लेट गई। तो जब उसका ii. 3 P

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.08%** है।

474 जादुई घोड़े की कहानी। पिता ने उसे इस हालत में देखा, तो उसे अपने सीने से लगा लिया, उसकी आँखों के बीच चूमा और उससे कहा, "हे मेरी बेटी, ईश्वर (जिसका नाम महान है!) की स्तुति करो और इस धूर्त जादूगर से हमारे बच निकलने के लिए उसका धन्यवाद करो।" उन्होंने राजा के पुत्र के कारनामों का वृत्तांत उसे सुनाना शुरू किया, जो उन्होंने स्वयं देखे थे, और बताया कि वह कैसे हवा में उड़ गया था। परन्तु उसने अपने पिता की एक भी बात नहीं सुनी; उसका रोना और विलाप करना और तीव्र हो गया, और फिर उसने मन ही मन कहा, "अल्लाह की कसम, मैं तब तक न खाऊँगी और न पीऊँगी जब तक ईश्वर मुझे उससे फिर से न मिला दे।" इस कारण उसके पिता राजा को अत्यधिक चिंता सताने लगी;

अपनी बेटी की इस हालत ने उन्हें व्याकुल कर दिया, और वे मन ही मन उसके लिए शोक करने लगे; और हर बार जब वे उसे सांत्वना भरे शब्दों से संबोधित करते, तो उस युवक के प्रति उसका प्रेम और भी बढ़ जाता। — उसकी यही स्थिति थी।12 अब, राजा के पुत्र की बात करें तो, जब वह आकाश में चढ़ गया, तो अकेला होने पर उसने उस युवती की सुंदरता और उसके आकर्षण पर विचार किया। उसने राजा के लोगों से नगर का नाम, राजा का नाम और उसकी पुत्री का नाम पूछा; और वह नगर सना नगर था।13 फिर उसने लगन से अपनी यात्रा जारी रखी जब तक कि वह अपने पिता के नगर के दर्शन नहीं कर पाया; और नगर का चक्कर लगाने के बाद, वह अपने पिता के महल की ओर मुड़ा और छत पर उतर गया। उसने अपना घोड़ा वहीं छोड़ दिया और अपने पिता के पास जाकर उनसे मिला; और उसने पाया कि वे अपने वियोग के कारण शोकग्रस्त और दुखी थे; इसलिए, जब उसके पिता ने उसे देखा, तो वे उठे और उसे गले लगा लिया, उसे अपने सीने से लगा लिया और उसके लौटने पर अत्यंत प्रसन्न हुए। राजकुमार ने अपने पिता से घोड़े के निर्माता ऋषि के विषय में पूछा, "हे मेरे पिता, भाग्य ने उसके साथ क्या किया?" उसके पिता ने उत्तर दिया, "ईश्वर उस ऋषि को और उस घड़ी को आशीर्वाद न दे जिसमें मैंने उसे देखा; क्योंकि वह तुम्हारे हमसे बिछड़ने का कारण था, और हे मेरी आत्मा, जब से तुम हमसे बिछड़े हो, तब से वह कारावास में है।" हालाँकि, उन्होंने उसे रिहा करने और कारावास से निकालकर अपने समक्ष लाने का आदेश दिया; और जब वह उनके समक्ष आया, तो उन्होंने संतुष्टि के प्रतीक के रूप में उसे एक विशेष वस्त्र पहनाया और उसके साथ अत्यंत सौहार्दपूर्ण व्यवहार किया; परन्तु अपनी पुत्री का विवाह उससे करने से इनकार कर दिया। यह देखकर ऋषि अत्यंत क्रोधित हुए और अपने किए पर पश्चाताप किया, क्योंकि वे जानते थे कि राजा के पुत्र को

घोड़े का रहस्य और उसकी चाल का ज्ञान हो गया है। तब राजा ने अपने पुत्र से कहा, “मेरी राय है कि आज के बाद तुम इस घोड़े के पास न जाओ और न ही इस पर सवार हो।” क्योंकि तुम इसके गुणों को नहीं जानते, और तुम धोखे में हो।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.39%** है।

जादुई घोड़े की कहानी। 475 इसके विषय में। राजा के पुत्र ने अपने पिता को बताया कि नगर के स्वामी, राजा की पुत्री के साथ उसका क्या हुआ था, और उसके पिता के साथ उसका क्या हुआ था; और उसके पिता ने उससे कहा, यदि राजा तुझे मारना चाहता, तो वह तुझे मार डालता; परन्तु तेरे जीवन का अंत टल गया। इसके बाद,14 उन्होंने खाया-पिया और आनंद मनाया; और राजा के साथ एक सुंदर दासी थी, जो वीणा बजाती थी; और उसने वीणा ली, और राजा और उसके पुत्र के सामने उस पर शोक गीत गाते हुए उसे बजाना शुरू कर दिया; और उसने ये छंद गाए: — यह मत सोचो कि शोक ने मुझे भुला दिया है: क्योंकि यदि मैं तुम्हें भूल जाऊँ, तो मुझे क्या याद रहेगा? समय बीतता है; परन्तु तुम्हारे लिए हमारा प्रेम कभी समाप्त नहीं होगा: तुम्हारे प्रेम में ही हम मरेंगे और जी उठेंगे। फिर राजा के पुत्र के मन में सना के राजा की पुत्री के प्रेम से चिंता उत्पन्न हुई; वह उठा और घोड़े के पास जाकर उस पर सवार हो गया तथा उड़ान का यंत्र घुमाया; जिसके बाद घोड़ा उसे लेकर आकाश में उड़ उठा और आकाश के ऊपरी भाग की ओर बढ़ गया। सुबह उसके पिता ने उसे न पाकर बहुत दुखी हुए; वे व्याकुल होकर महल की चोटी पर गए और अपने पुत्र को आकाश में उड़ते हुए देखा; यह देखकर वे अपने पुत्र से बिछड़ने के कारण बहुत दुखी हुए और इस बात के लिए अत्यंत पश्चाताप किया कि उन्होंने घोड़े को अपने साथ क्यों नहीं रखा। उन्होंने मन ही मन

कहा, अल्लाह की कसम, अगर मेरा पुत्र मेरे पास लौट आए, तो मैं इस घोड़े को नहीं रखूंगा, ताकि मेरे मन को अपने पुत्र के प्रति शांति मिल सके। और वे फिर से रोने-बिलखने लगे। लेकिन जहाँ तक उसके बेटे की बात है, वह आकाश में अपना सफर तब तक नहीं रोक पाया जब तक वह सना शहर नहीं पहुँच गया। वहाँ पहुँचकर वह उसी जगह उतरा जहाँ वह पहली बार उतरा था, और चुपके से राजा की बेटी के कमरे तक गया; लेकिन उसे न तो वह मिली, न उसकी दासियाँ, और न ही उसका रक्षक हिजड़ा; और इस घटना से वह बहुत दुखी हुआ। फिर वह महल में उसकी तलाश करने लगा, और अंत में उसे उस कमरे से अलग एक दूसरे कमरे में पाया जहाँ वह उसके साथ था। वह तकिये पर लेटी हुई थी, और उसके चारों ओर दासियाँ और दाइयाँ थीं। वह उनके पास गया और उन्हें प्रणाम किया; और जब उस युवती ने उसकी बात सुनी, तो वह उसके पास उठी और उसे गले लगा लिया, और उसकी आँखों के बीच चूमने लगी, और उसे अपने सीने से लगा लिया। उसने उससे कहा, हे मेरी स्वामिनी, तुमने मुझे इस दौरान अकेला छोड़ दिया है। और उसने उत्तर दिया, “तूने मुझे उजाड़ दिया है, और यदि तेरा मुझसे बिछड़ना और अधिक समय तक जारी रहता, तो मैं निःसंदेह मर जाती।”— हे मेरी स्वामिनी,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.73%** है।

उसने उत्तर दिया, “तुम्हारे पिता के प्रति मेरे व्यवहार और उनके मेरे प्रति आचरण के बारे में तुम्हारा क्या विचार है? हे समस्त प्राणियों के लिए प्रलोभन, यदि मैं तुमसे प्रेम न करता, तो मैं उन्हें मार डालता और सबके लिए एक उदाहरण बना देता; परन्तु मैं तुमसे प्रेम करता हूँ।” उसने उससे कहा, “तुम मुझसे कैसे दूर हो सकते हो? क्या तुम्हारे जाने के बाद मेरा जीवन सुखमय होगा?” तब उसने उससे कहा, “क्या तुम मेरी इच्छा

मानोगी और मेरी बात सुनोगी?” उसने उत्तर दिया, “जो चाहो कहो; मैं तुम्हारी आज्ञा का पालन करूँगी और किसी भी बात में तुम्हारा विरोध नहीं करूँगी।” उसने उससे कहा, “मेरे देश और मेरे राज्य में मेरे साथ चलो।” उसने उत्तर दिया, “हाँ, सहर्ष।” जब राजा के पुत्र ने उसकी बात सुनी, तो वह अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसका हाथ पकड़कर उससे ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) की शपथ दिलाई कि वह ऐसा करेगी। फिर वह उसे महल की छत पर ले गया, अपने घोड़े पर सवार हुआ और उसे अपने पीछे बिठा दिया। उसे अच्छी तरह बांधने के बाद, उसने घोड़े के कंधे में लगे उड़ान के पिन को घुमाया और घोड़ा उन दोनों को लेकर आकाश में उड़ गया। यह देखकर दासी चिल्लाई और उसने राजा को अपने पिता और माता को सूचित किया, जो तुरंत महल की छत पर आ गए। राजा ने आकाश की ओर देखा और काले घोड़े को उन दोनों के साथ हवा में उड़ते हुए देखा। राजा व्याकुल हो गया और...

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.98%** है।

जादूई होक्से की कहानी। 477 उसकी बेचैनी बढ़ गई, और उसने पुकार कर कहा, हे राजा के पुत्र, मैं अल्लाह की कसम खाकर तुझसे विनती करता हूँ कि तू मुझ पर दया करे, मेरी पत्नी पर दया करे, और हमें और हमारी बेटी को अलग न करे! राजा के पुत्र ने उसे कोई उत्तर नहीं दिया; बल्कि उसने सोचा कि युवती अपने माता-पिता से बिछड़ने के लिए पछता रही है; इसलिए उसने उससे कहा, हे युग की मोहिनी, क्या तू चाहती है कि मैं तुझे तेरे माता-पिता के पास लौटा दूँ? – हे मेरे स्वामी, उसने उत्तर दिया, अल्लाह की कसम, मेरी यह इच्छा नहीं है: मेरी इच्छा तो यह है कि मैं जहाँ भी तू हो, तेरे साथ रहूँ; क्योंकि तेरे प्रेम ने मुझे हर चीज़ से, यहाँ तक कि अपने माता-पिता से भी विमुख कर दिया है। जब राजा के पुत्र ने

उसका उत्तर सुना, तो वह अत्यंत प्रसन्न हुआ और उसने घोड़े को धीरे-धीरे आगे बढ़ाना शुरू किया ताकि वह उसे विचलित न करे। वह तब तक उसके साथ चलता रहा जब तक उसे एक हरा-भरा मैदान नहीं दिखाई दिया, जिसमें पानी का एक झरना था। वहाँ वे उतरे और खाया-पिया; इसके बाद, राजा का पुत्र अपने घोड़े पर फिर से सवार हुआ, उसे अपने पीछे बिठाया और उसके प्रति भय के कारण उसे बाँध दिया। फिर वह उसके साथ आगे बढ़ा और हवा में तब तक चलता रहा जब तक वह अपने पिता के नगर में नहीं पहुँच गया! वहाँ पहुँचकर उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था; और वह उस युवती को अपनी शक्ति का केंद्र और अपने पिता का राज्य दिखाना चाहता था, और उसे यह बताना चाहता था कि उसके पिता का राज्य उसके पिता के राज्य से कहीं अधिक शक्तिशाली है। इसलिए उसने उसे अपने पिता के पसंदीदा बगीचों में से एक में छोड़ दिया, उसे अपने पिता के लिए तैयार किए गए एक निजी कक्ष में रखा, और उस कक्ष के द्वार पर आबनूस के घोड़े को स्थापित कर दिया, और युवती को उसकी रक्षा करने का आदेश देते हुए उससे कहा, "यहाँ तब तक बैठो जब तक मैं तुम्हें अपना दूत न भेज दूँ; क्योंकि मैं अपने पिता के पास जा रहा हूँ, तुम्हारे लिए एक महल तैयार करवाने और तुम्हें अपना प्रभुत्व दिखाने के लिए।" ये शब्द सुनकर युवती प्रसन्न हुई और उसने उत्तर दिया, "जो आप चाहें, वही करें।" तब उसके मन में यह विचार आया कि उसे अपने पद के अनुरूप सम्मान और आदर के साथ ही शहर में प्रवेश करना चाहिए। अतः राजा का पुत्र उसे वहीं छोड़कर शहर की ओर चल पड़ा और अपने पिता के पास गया; और जब उसके पिता ने उसे देखा, तो वे उसके आने पर प्रसन्न हुए, और उसका स्वागत किया। और राजा के पुत्र ने अपने पिता से कहा, “जान लीजिए कि मैं राजा की उस पुत्री को ले आया हूँ जिसके बारे में मैंने आपको बताया था। मैंने उसे

शहर के बाहर, एक बगीचे में छोड़ा है और आपको उसके आगमन की सूचना देने आया हूँ। आप राजयात्रा तैयार कीजिए और उससे मिलने जाइए, और उसे अपना प्रभुत्व, अपनी सेना और अपने रक्षकों का प्रदर्शन कीजिए।" राजा ने उत्तर दिया, "हाँ, बिल्कुल।" और उसने तुरंत आदेश दिया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.20%** है।

478 जादुई घोड़े की कहानी। शहर के लोगों ने शहर को सबसे सुंदर ढंग से सजाया, और राजा अपने सभी सैनिकों, साम्राज्य के सभी सरदारों, सभी शुभचिंतकों और सेवकों के साथ, सबसे उत्तम ढंग से सुसज्जित और भव्य अलंकरणों से युक्त जुलूस में निकले। राजा के पुत्र ने भी अपने महल से आभूषण, वस्त्र और राजा के खजाने से ऐसी वस्तुएँ निकालीं, और युवती के लिए हरे, लाल और पीले ब्रोकेड की एक पालकी तैयार की, जिसमें उन्होंने भारतीय, यूनानी और अबीसीनियाई दासियों को बैठाया, और अद्भुत खजाने प्रदर्शित किए। फिर उन्होंने ऊँट की पालकी को उसमें बैठे लोगों के साथ छोड़ दिया, और आगे बगीचे में चले गए; और वे उस निजी कक्ष में गए जहाँ उन्होंने युवती को छोड़ा था, और उसकी तलाश की; लेकिन वह न तो मिली और न ही घोड़ा। इस पर उन्होंने अपना चेहरा पीट लिया और अपने कपड़े फाड़ दिए, और भ्रमित मन से बगीचे में चक्कर लगाने लगे; इसके बाद, वह होश में आया और मन ही मन सोचने लगा, "जब मैंने उसे इस घोड़े के बारे में कुछ भी नहीं बताया, तो उसे यह रहस्य कैसे पता चला? शायद घोड़े को बनाने वाले फारसी ऋषि को कोई झूठा मिल गया हो और उसने उसे अपने साथ ले लिया हो, मेरे पिता के किए का बदला लेने के लिए।" — तब राजा के पुत्र ने बाग के रखवालों से पूछा कि उनके पास से कौन गुजरा था, "क्या

आपने किसी को यहाँ से गुजरते हुए इस बाग में प्रवेश करते देखा है?" उन्होंने उत्तर दिया, "हमने फारसी ऋषि के अलावा किसी को इस बाग में प्रवेश करते नहीं देखा; क्योंकि वह उपयोगी जड़ी-बूटियाँ इकट्ठा करने आया था।" इसलिए जब उसने उनकी बात सुनी, तो उसे यकीन हो गया कि उस युवती को ले जाने वाला वही ऋषि था। अब नियति के अनुसार ऐसा हुआ कि जब राजा का पुत्र अपनी पत्नी को बगीचे में स्थित एकांत कक्ष में छोड़कर अपने पिता के महल में अपनी तैयारियों के लिए चला गया, तो फारसी ऋषि कुछ उपयोगी जड़ी-बूटियाँ लेने के लिए बगीचे में गए और उन्होंने हवा में फैली कस्तूरी और अन्य सुगंधों को महसूस किया; और यह मीठी सुगंध राजा की पुत्री की थी। इसलिए ऋषि उस सुगंध की दिशा में तब तक आगे बढ़ते रहे जब तक वे एकांत कक्ष में नहीं पहुँच गए, जहाँ उन्होंने अपने हाथों से बनाए हुए घोड़े को कक्ष के द्वार पर खड़ा देखा। घोड़े को देखकर ऋषि का हृदय आनंद और प्रसन्नता से भर गया; क्योंकि उसके चले जाने के बाद से वे उसके लिए बहुत शोक मना रहे थे। वे उसके पास गए और उसके सभी अंगों की जाँच की, और उसे स्वस्थ पाया; लेकिन जब वे उस पर सवार होकर जाने ही वाले थे, तो उन्होंने मन ही मन कहा, मुझे देखना होगा कि राजा का पुत्र यहाँ घोड़े के साथ क्या लाया और छोड़ गया है। तदनुसार वे अंदर गए।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.00%** है।

जादुई घोड़े की कहानी। 479 एकांत कक्ष में जाकर, उन्होंने देखा कि एक युवती वहाँ बैठी है, जो स्वच्छ आकाश में चमकते सूर्य के समान है। उसे देखते ही वे समझ गए कि वह एक उच्च कोटि की युवती है, और राजा का पुत्र उसे घोड़े पर बिठाकर उस एकांत कक्ष में छोड़कर शहर चला गया है ताकि उसके लिए एक भव्य जुलूस तैयार कर सके और उसे

सम्मानपूर्वक शहर में प्रवेश करा सके। इसलिए ऋषि उसके पास गए और उसके सामने ज़मीन चूमी; युवती ने उनकी ओर आँखें उठाईं और उन्हें देखकर पाया कि उनका रूप-रंग अत्यंत भयंकर और अप्रिय है; और उन्होंने उनसे कहा, तुम कौन हो? उन्होंने उत्तर दिया, हे मेरी स्वामिनी, मैं राजा के पुत्र का दूत हूँ, जिसने मुझे तुम्हारे पास भेजा है और मुझे आदेश दिया है कि मैं तुम्हें शहर के पास एक दूसरे उद्यान में ले जाऊँ। जब उस युवती ने उससे ये शब्द सुने, तो उसने उससे पूछा, “राजा का पुत्र कहाँ है?” उसने उत्तर दिया, “वह अपने पिता के साथ नगर में है, और वह तुरंत एक भव्य जुलूस के साथ तुम्हारे पास आएगा।” लेकिन उसने उससे कहा, “हे प्रभु! क्या राजा के पुत्र को मेरे पास भेजने के लिए तुम्हारे सिवा कोई और नहीं मिला?” ऋषि उसकी बातों पर हँसे और उत्तर दिया, “हे मेरी स्वामिनी, मेरे चेहरे की कुरूपता और मेरे अप्रिय रूप से धोखा मत खाओ; क्योंकि यदि तुमने मुझे वह अनुभव किया होता जो राजा के पुत्र ने किया है, तो तुम मुझे पसंद करतीं। वास्तव में राजा के पुत्र ने विशेष रूप से मुझे तुम्हारे पास भेजने के लिए चुना है, मेरे कुरूप रूप और भयानक आकार के कारण, तुमसे ईर्ष्या और प्रेम के कारण; क्योंकि यदि ऐसा न होता, तो उसके पास अनगिनत नौकर-चाकर, काले दास, सेवक, नौकर और आश्रित होते।” जब युवती ने उसका उत्तर सुना, तो उसे वह तर्कसंगत लगा और उसने उस पर विश्वास कर लिया। वह उठी और उसका हाथ थामकर उसके साथ चल पड़ी। उसने उससे कहा, "हे मेरे पिता, आप मेरे लिए सवारी करने के लिए क्या लाए हैं?" उसने उत्तर दिया, "हे मेरी स्वामिनी, वह घोड़ा जिस पर तुम सवारी करने की ज़िद कर रही हो।" युवती ने कहा, "मैं स्वयं सवारी नहीं कर सकती।" यह सुनकर ऋषि मुस्कुराए और समझ गए कि उन्होंने युवती को पा लिया है। उन्होंने युवती से कहा, "मैं स्वयं तुम्हारे साथ सवारी करूँगा।" फिर वे घोड़े पर सवार हुए

और युवती को अपने पीछे बिठाकर, उसे कसकर बाँध लिया, जबकि युवती को पता ही नहीं था कि वे उसके साथ क्या करना चाहते हैं। इसके बाद उन्होंने घोड़े की सवारी का यंत्र घुमाया, जिससे घोड़े का शरीर हवा से भर गया और वह गतिमान होकर आकाश में उड़ गया। वह उन्हें तब तक निरंतर अपने साथ ले जाता रहा जब तक कि वह शहर की नज़रों से ओझल नहीं हो गया। तब उस युवती ने उससे कहा, हे प्रभु! राजा के पुत्र के विषय में तुमने जो कहा, उसका क्या अर्थ था?

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.85%** है।

480 जादुई घोड़े की कहानी। क्या उसने तुम्हें मेरे पास भेजा है? - ऋषि ने उत्तर दिया, अल्लाह राजा के पुत्र को हर भलाई से बचाए रखे; क्योंकि वह नीच और दुष्ट है! - हे, तुम पर धिक्कार है! वह चिल्लाई; तुम अपने स्वामी की आज्ञा का उल्लंघन कैसे कर रहे हो? उसने उत्तर दिया, वह मेरा स्वामी नहीं है। और क्या तुम जानती हो, उसने आगे कहा, कि मैं कौन हूँ? उसने उत्तर दिया, मैं तुम्हें केवल उतना ही जानती हूँ जितना तुमने मुझे अपने बारे में बताया है। और उसने उससे कहा, वास्तव में तुम्हें यह बताना एक चाल थी जिसका मैंने तुम्हारे और राजा के पुत्र के विरुद्ध प्रयोग किया। मैं इस घोड़े के लिए लगातार विलाप कर रहा था जो तुम्हारे अधीन है, क्योंकि यह मेरी रचना है, और उसने इस पर अपना अधिकार जमा लिया था; लेकिन अब मैंने इसे और तुम्हें भी प्राप्त कर लिया है, और मैंने उसके हृदय को वैसे ही पीड़ा दी है जैसे उसने मेरे हृदय को दी है, और अब वह इसे कभी भी अपने वश में नहीं कर पाएगा। परन्तु हिम्मत रखो और प्रसन्न रहो; क्योंकि मैं तुम्हारे लिए उससे कहीं अधिक उपयोगी साबित होऊंगा। — और जब युवती ने उसके ये शब्द सुने, तो उसने अपना चेहरा थप्पड़ से पीट लिया और रोते हुए बोली, हे मेरे दुख! न तो

मुझे मेरा प्रियतम मिला और न ही मैं अपने पिता और माता के साथ रह पाई! — और वह अपने ऊपर आई विपत्ति पर फूट-फूट कर रोई, जबकि ऋषि उसे लगातार यूनानियों के देश की ओर ले गए,15 जब तक कि वे उसे नदियों और वृक्षों से घिरे एक हरे-भरे मैदान में नहीं ले गए। यह मैदान एक नगर के निकट था, जिसमें एक महान राजा रहता था; और उस दिन संयोगवश नगर का राजा शिकार करने और मनोरंजन के लिए निकला, और उस मैदान से गुजरते हुए उसने ऋषि को घोड़े और युवती के साथ वहाँ खड़े देखा। जब राजा के दास ऋषि पर टूट पड़े और उन्हें, युवती और घोड़े सहित, राजा के सामने ले आए, तो उन्हें उनकी उपस्थिति का पता भी नहीं चला। राजा ने जब उनका कुरूप रूप और बदसूरती देखी, और युवती की सुंदरता और आकर्षण को देखकर उससे कहा, "हे मेरी स्वामिनी, इस शेख का तुमसे क्या संबंध है?" ऋषि ने तुरंत उत्तर दिया, "यह मेरी पत्नी और मेरे चाचा की पुत्री है।" लेकिन युवती ने उनकी बात सुनते ही उन्हें झूठा घोषित कर दिया और कहा, "हे राजा, अल्लाह की कसम, मैं इन्हें नहीं जानती और ये मेरे पति नहीं हैं; बल्कि इन्होंने मुझे जबरदस्ती और छल से अगवा किया है।" जब राजा ने उसकी बात सुनी, तो उन्होंने ऋषि को पीटने का आदेश दिया; और उन्होंने उन्हें तब तक पीटा जब तक वे लगभग मरणासन्न नहीं हो गए। फिर राजा ने आदेश दिया कि उन्हें शहर ले जाकर जेल में डाल दिया जाए; और उन्होंने उनके साथ ऐसा ही किया। और राजा ने उस कन्या और घोड़े को उससे ले लिया; परन्तु वह घोड़े के गुण और उसकी चाल नहीं जानता था। — इस प्रकार ऋषि और कन्या का विपत्ति हुआ।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.11%** है।

जादुई घोड़े की कहानी 481 राजा के पुत्र ने यात्रा के वस्त्र धारण किए

और अपनी आवश्यकता के अनुसार धन लेकर अत्यंत दुर्दशा में यात्रा पर निकल पड़ा। उसने जल्दी ही उनका पता लगाने का प्रयास किया, शहर-शहर और नगर-नगर घूमकर काले घोड़े के बारे में पूछताछ की। जिसने भी काले घोड़े का जिक्र सुना, वह आश्चर्यचकित हुआ और उसकी बातों पर अचंभित हुआ। वह लंबे समय तक ऐसा ही करता रहा; बार-बार पूछताछ करने और उनकी खोज करने के बावजूद, उसे उनके बारे में कोई खबर नहीं मिली। फिर वह युवती के पिता के नगर गया और वहाँ भी उसके बारे में पूछताछ की, लेकिन उसे उसके बारे में कोई खबर नहीं मिली और उसने पाया कि उसका पिता उसके वियोग पर शोक मना रहा था। इसलिए वह लौट आया और यूनानियों के देश में जाकर उनका पता लगाने और उनके बारे में पूछताछ करने का प्रयास किया। और ऐसा हुआ कि वह खानों में से एक के यहाँ उतरा और उसने व्यापारियों के एक समूह को बैठकर बातचीत करते देखा; वह उनके पास बैठ गया और उनमें से एक को कहते सुना, हे मेरे साथियों, मैं II. 3 0 से मिला हूँ।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.93%** है।

482 जादुई घोड़े की कहानी, एक अद्भुत घटना। — और वह क्या थी? उन्होंने पूछा। उसने उत्तर दिया, मैं एक विशेष जिले में, एक शहर में था (और उसने उस शहर का नाम बताया जहाँ वह युवती थी), और मैंने वहाँ के निवासियों को एक विचित्र कहानी सुनाते हुए सुना, जो इस प्रकार थी: — शहर का राजा एक दिन अपने साथियों और अपने साम्राज्य के बड़े अधिकारियों के साथ शिकार पर निकला, और जब वे रेगिस्तान में गए, तो वे एक हरे-भरे मैदान से गुज़रे, और वहाँ उन्होंने एक आदमी को खड़ा

पाया, और उसके बगल में एक स्त्री बैठी थी, और उसके साथ एक काले रंग का घोड़ा था। जहाँ तक उस आदमी की बात है, उसका रूप-रंग बहुत ही भयानक था; और जहाँ तक उस स्त्री की बात है, वह सुंदरता, आकर्षण, शालीनता और परिपूर्णता से परिपूर्ण युवती थी, और उसकी कद-काठी भी सुशोभित थी; और जहाँ तक उस काले घोड़े की बात है, वह एक अद्भुत घटना थी: आँखों ने सुंदरता और बनावट में उससे श्रेष्ठ घोड़ा नहीं देखा था। वहाँ मौजूद लोगों ने उससे पूछा, "राजा ने उनके साथ क्या किया?" उसने उत्तर दिया, "जहाँ तक उस आदमी की बात है, राजा ने उसे पकड़ लिया और उससे उस युवती के बारे में पूछा। उसने झूठ बोला कि वह उसकी पत्नी है और उसके चाचा की बेटी है। लेकिन युवती ने कहा कि उसने झूठ बोला है। इसलिए राजा ने उसे उससे छीन लिया और उसे पीटने और जेल में डालने का आदेश दिया। और उस काले घोड़े का क्या हुआ, मुझे नहीं पता।" — जब राजा के पुत्र ने व्यापारी से ये बातें सुनीं, तो वह उसके पास गया और विनम्रता और शिष्टाचार से उससे तब तक पूछताछ करता रहा जब तक कि उसे शहर का नाम और उसके राजा का नाम पता नहीं चल गया; और जब उसे शहर और उसके राजा का नाम पता चल गया, तो उसने रात सुख से बिताई; और सुबह वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। उसने तब तक अपनी यात्रा जारी रखी जब तक वह उस शहर में नहीं पहुँच गया। लेकिन जब उसने अंदर जाने की इच्छा जताई, तो द्वारपालों ने उसे पकड़ लिया और राजा के समक्ष ले जाना चाहा, ताकि राजा उससे उसकी स्थिति, उस शहर में आने का कारण और उसकी कला या व्यापार के बारे में पूछताछ कर सकें; क्योंकि राजा की यही प्रथा थी कि वह अजनबियों से उनकी स्थिति और उनकी कला या व्यापार के बारे में पूछताछ करता था। लेकिन राजा के पुत्र का उस शहर में आगमन संध्याकाल में हुआ; और यह वह समय था जब राजा

के पास जाना या उनसे परामर्श करना संभव नहीं था। इसलिए द्वारपालों ने उसे पकड़ लिया और उसे जेल में डालने के लिए ले गए। लेकिन जब जेलर ने उसकी सुंदरता और आकर्षण देखा, तो वे उसे जेल में नहीं डाल सके: इसके विपरीत, उन्होंने उसे जेल के बाहर अपने साथ बैठाया; और जब उनके लिए भोजन लाया गया, तो उसने उनके साथ तृप्त होने तक भोजन किया; और भोजन समाप्त करने के बाद, वे बैठकर बातें करने लगे।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.32%** है।

जादुई घोड़े की कहानी। 483 और राजा के पुत्र को संबोधित करते हुए, उन्होंने उससे पूछा, तुम किस देश से हो? उसने उत्तर दिया, मैं फारस देश से हूँ, किसराओं के देश से। जब उन्होंने उसका उत्तर सुना, तो वे हँसे, और उनमें से एक ने उससे कहा, हे किसरावी,16 मैंने मनुष्यों के वचन और उनके इतिहास सुने हैं, और उनकी परिस्थितियों का अवलोकन किया है; परन्तु मैंने इस किसरावी से बड़ा झूठा न तो देखा है, न ही उसके बारे में सुना है, जो हमारे साथ जेल में है। और दूसरे ने कहा, मैंने न ही उसके जैसा बदसूरत या उसके जैसा अप्रिय रूप वाला कोई देखा है। तब राजा के पुत्र ने उनसे कहा, उसके झूठ बोलने का कौन सा उदाहरण तुमने देखा है? उन्होंने उत्तर दिया, "वह व्यक्ति स्वयं को ऋषि होने का ढोंग करता है, और राजा ने उसे शिकार पर जाते हुए देखा। उसके साथ एक अत्यंत सुंदर, आकर्षक, सुरुचिपूर्ण और पूर्ण रूप से सजीव कद-काठी वाली स्त्री थी। उसके साथ एक काले रंग का घोड़ा भी था, जो हमने आज तक इतना सुंदर नहीं देखा। जहाँ तक उस युवती की बात है, वह राजा के साथ है और राजा उससे प्रेम करता है; परन्तु वह स्त्री पागल है; और यदि वह व्यक्ति अपने दावे के अनुसार ऋषि होता, तो वह उसे ठीक कर देता;

क्योंकि राजा उसके उपचार का प्रयास कर रहा है और उसे उसकी बीमारी से मुक्त कराना चाहता है। जहाँ तक काले रंग के घोड़े की बात है, वह राजा के खजाने में है; और जहाँ तक उस भयानक रूप वाले व्यक्ति की बात है, जो उसके साथ था, वह हमारे साथ जेल में है; और जब रात उस पर छा जाती है, तो वह अपने दुःख में रोता-बिलखता है और हमें सोने नहीं देता।" जब जेल के पहरेदारों ने राजा के पुत्र को इन परिस्थितियों से अवगत कराया, तो उसके मन में अपनी इच्छा पूरी करने की योजना बनाने का विचार आया। जब द्वारपालों को सोने की इच्छा हुई, तो उन्होंने उसे जेल में डाल दिया और दरवाजा बंद कर दिया। उसने ऋषि को फारसी भाषा में अपने लिए रोते-पीटते सुना, और विलाप करते हुए सुना, "हाय मुझ पर, मैंने अपने और राजा के पुत्र के साथ जो अन्याय किया है, और उस कन्या के साथ जो किया है, उसके लिए, क्योंकि न तो मैंने उसे छोड़ा और न ही अपनी इच्छा पूरी की। यह सब मेरे कुप्रबंधन के कारण हुआ; क्योंकि मैंने अपने लिए वह चाहा जो मैं योग्य नहीं था और जो मेरे लिए उपयुक्त नहीं था; और जो अपने लिए अनुपयुक्त चीज की तलाश करता है, वह उसी विपत्ति में पड़ जाता है जिसमें मैं पड़ गया हूँ।" राजा के पुत्र ने जब ऋषि के ये शब्द सुने, तो उसने फारसी भाषा में उनसे कहा, "कब तक तुम यह रोना-पीटना जारी रखोगे?" क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारे साथ ऐसा दुर्भाग्य हुआ है जैसा तुम्हारे अलावा किसी और के साथ नहीं हुआ? — और ऋषि ने उसकी बातें सुनकर सांत्वना पाई और अपनी स्थिति और अपने कष्टों के बारे में उससे शिकायत की।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.35%** है।

484 जादुई घोड़े की कहानी। फिर, जब सुबह हुई, तो द्वारपाल राजा के पुत्र को राजा के पास ले गए और उन्हें बताया कि वह पिछले दिन शहर में

ऐसे समय पर पहुँचे थे जब राजा के पास जाना असंभव था। तब राजा ने उनसे पूछा, “तुम किस देश से आए हो, तुम्हारा नाम क्या है, तुम्हारा काम या पेशा क्या है, और तुम इस शहर में क्यों आए हो?” राजा के पुत्र ने उत्तर दिया, “मेरा नाम फारसी में हरजे है; 17 और मेरा देश फारस है; मैं विज्ञानियों में से हूँ, विशेषकर चिकित्सा विज्ञान में; क्योंकि मैं बीमारों और पागलों का इलाज करता हूँ; और इसी उद्देश्य से मैं विभिन्न क्षेत्रों और शहरों में घूमता हूँ, ताकि अपने ज्ञान में और अधिक विज्ञान जोड़ सकूँ; और जब मैं किसी बीमार व्यक्ति को देखता हूँ तो उसका इलाज करता हूँ। यही मेरा पेशा है।” — और जब राजा ने उसकी बातें सुनीं, तो वह अत्यंत प्रसन्न हुआ और उससे कहा, हे श्रेष्ठ ऋषि, आप उस समय हमारे पास आए हैं जब हमें आपकी आवश्यकता है। तब उसने उसे उस युवती के मामले के बारे में बताया और कहा, यदि आप उसका इलाज कर दें और उसे उसके पागलपन से मुक्त कर दें, तो आपको मुझसे वह सब कुछ मिलेगा जो आप चाहेंगे। यह सुनकर राजा के पुत्र ने उत्तर दिया, ईश्वर राजा की शक्ति को मजबूत करे। मुझे उसके पागलपन के बारे में वह सब कुछ बताएं जो आपने देखा है, और मुझे बताएं कि यह पागलपन उसे कितने दिन पहले हुआ था, और आप उसे, घोड़े और ऋषि को कैसे लाए थे। — इसलिए उसने उसे शुरू से अंत तक मामले के बारे में बताया और उससे कहा, ऋषि वहीं हैं।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.07%** है।

जादुई घोड़े की कहानी। 485 कारागार। राजा के पुत्र ने कहा, हे सुखी राजा, आपने उनके साथ वाले घोड़े का क्या किया? राजा ने उत्तर दिया, वह अभी तक मेरे पास है, एक निजी कक्ष में सुरक्षित रखा हुआ है। तब राजा के पुत्र ने मन ही मन कहा, मेरा मानना है कि मुझे सबसे पहले घोड़े की जाँच करनी चाहिए, और यदि वह स्वस्थ है, और उसके साथ कोई दुर्घटना नहीं हुई है, तो मेरी सारी इच्छा पूरी हो जाएगी; लेकिन यदि मैं देखूँ कि उसकी चाल बिगड़ गई है, तो मैं अपनी जान बचाने के लिए कोई न कोई उपाय जरूर सोचूँगा। फिर राजा की ओर देखते हुए उसने कहा, हे राजा, मुझे उस घोड़े को देखना आवश्यक है जिसका आपने उल्लेख किया है। शायद मुझे उसमें कुछ ऐसा मिल जाए जो मुझे उस युवती को वापस लाने में मदद करे। राजा ने उत्तर दिया, अत्यंत प्रसन्नता से। और वह उठे, और उसका हाथ पकड़कर उसे घोड़े के पास ले गए; तब राजा का पुत्र घोड़े के चारों ओर घूमने लगा और उसकी जाँच-पड़ताल करने लगा; उसने

पाया कि घोड़ा पूरी तरह स्वस्थ है, उसमें कोई दोष नहीं है। इसलिए वह अत्यंत प्रसन्न हुआ और बोला, हे ईश्वर, राजा की शक्ति को मजबूत करें! मैं उस युवती के पास जाना चाहता हूँ, ताकि देख सकूँ कि वह कैसी है; और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यदि यह ईश्वर की इच्छा हो, जिसका नाम महान है, तो घोड़े के माध्यम से वह मेरे द्वारा स्वस्थ हो जाए! उसने घोड़े की देखभाल करने का आदेश दिया, और राजा उसे उस कक्ष में ले गया जहाँ युवती थी। जब राजा का पुत्र उसके पास गया, तो उसने देखा कि वह हमेशा की तरह खुद को पीट रही थी और ज़मीन पर गिर पड़ी थी; लेकिन वह किसी पागलपन से पीड़ित नहीं थी, और उसने ऐसा केवल इसलिए किया ताकि कोई उसके पास न आ सके। इसलिए राजा के पुत्र ने उसे इस अवस्था में देखकर उससे कहा, हे समस्त प्राणियों के लिए प्रलोभन! फिर उसने उससे कोमल और विनम्रतापूर्वक बात करना शुरू किया जब तक कि उसने उसे अपने बारे में नहीं बता दिया; और जब उसने उसे पहचान लिया, तो वह ज़ोर से चिल्लाई और अत्यधिक आनंद के कारण बेहोश होकर गिर पड़ी; राजा ने सोचा कि यह बेहोशी उसके डर के कारण हुई है। राजा के पुत्र ने उसके कान के पास जाकर कहा, हे समस्त प्राणियों के लिए प्रलोभन, मेरी और अपनी जान बख्श दो, और धैर्यवान और दृढ़ रहो; क्योंकि यह वह स्थान है जहाँ हमें इस अत्याचारी राजा से बचने के लिए रणनीति बनाने में धैर्य और कुशल प्रबंधन की आवश्यकता है। मेरी रणनीति का एक हिस्सा यह होगा कि मैं उसके पास जाऊँ और उससे कहूँ, “यह जो बीमारी से पीड़ित है, वह एक जिन्न के वश में होने के कारण है,”18 और मैं तुम्हें उसके ठीक होने का आश्वासन देता हूँ। और मैं उससे यह शर्त रखूँगा कि वह तुम्हारे बंधन खोल दे, और उसे आश्वासन दूँगा कि जिस जिन्न ने तुम्हें सताया है, वह तुमसे दूर हो जाएगा। इसलिए यदि वह तुम्हारे पास आए, तो उससे मधुर शब्दों में बात

करना, ताकि वह देख सके

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.03%** है।

486 जादुई घोड़े की कहानी। कि तुम मेरे द्वारा स्वस्थ हो गई हो, और इस प्रकार हमारी सभी इच्छाएँ पूरी होंगी। — और उसने उत्तर दिया, मैं सुन रही हूँ और ओहे। — तब वह उससे दूर चला गया, और राजा के पास लौटकर, आनंद और प्रसन्नता से भरकर बोला, हे भाग्यशाली राजा, मैंने तुम्हारे सौभाग्य से उसका इलाज और उपचार खोज लिया है, और मैंने उसे तुम्हारे लिए ठीक कर दिया है। तो उठो और उसके पास जाओ, और उससे कोमल और विनम्र शब्दों में बात करो, और उसे वह वादा करो जिससे वह प्रसन्न हो; क्योंकि तुम्हारी सभी इच्छाएँ पूरी होंगी। — इसलिए राजा उठा और उसके पास गया; और जब उसने उसे देखा, तो वह उसके पास उठी, और उसके सामने जमीन चूमी, और उसका स्वागत किया; जिससे राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने दासियों और हिजड़ों को उसकी सेवा करने, उसे स्नानघर ले जाने और उसके लिए आभूषण और वस्त्र तैयार करने का आदेश दिया। तो वे उसके पास गए और उसे प्रणाम किया, और उसने भी अत्यंत विनम्रता और मधुर शब्दों से उनका अभिवादन किया। फिर उन्होंने उसे राजसी वस्त्र पहनाए, उसके गले में रत्नों का हार पहनाया, उसे स्नानघर ले गए, उसकी सेवा की और उसे स्नानघर से बाहर लाए, मानो वह पूर्णिमा के चंद्रमा के समान चमक रही हो। और जब वह राजा के पास आई, तो उसने उन्हें प्रणाम किया और उनके सामने जमीन चूमी। राजा उसे इस प्रकार देखकर बहुत प्रसन्न हुए और अपने पुत्र से कहा, "यह सब तुझ पर प्राप्त आशीर्वादों के कारण है! ईश्वर हम पर भी तेरी कृपा बनाए रखे!" — और राजा के पुत्र ने उत्तर दिया, हे महाराज, उसके पूर्ण स्वस्थ होने और उसके मामले के निपटारे के

लिए आपको अपने सभी अंगरक्षकों और सैनिकों के साथ उस स्थान पर जाना होगा जहाँ आपने उसे पाया था, और उसके साथ जो काला घोड़ा था उसे भी अपने साथ ले जाना होगा, ताकि मैं वहाँ उस जिन्न को उससे अलग कर सकूँ जिसने उसे सताया है, और उसे कैद करके मार डालूँ, ताकि वह फिर कभी उसके पास न लौट सके। राजा ने कहा, “हाँ, मैं सहर्ष तैयार हूँ।” तदनुसार, उसने काले घोड़े को उस मैदान में भेजा जहाँ उसने युवती को घोड़े और फारसी ऋषि के साथ पाया था, और राजा अपने सैनिकों के साथ युवती को लेकर घोड़े पर सवार हो गया; और वे नहीं जानते थे कि वह क्या करना चाहता है। जब वे उस मैदान में पहुँचे, तो राजा के पुत्र ने, जिसने स्वयं को ज्ञानी बताया, आदेश दिया कि युवती और घोड़े को राजा और सैनिकों से जहाँ तक संभव हो, दूर रखा जाए। उसने राजा से कहा, “आपकी अनुमति से, मैं सुगंधित तेल जलाना चाहता हूँ, एक प्रकार का झाड़-फूंक मंत्र पढ़ना चाहता हूँ, और जिन्न को यहाँ कैद करना चाहता हूँ, ताकि वह कभी वापस न आए। इसके बाद, मैं काले घोड़े पर सवार होऊंगा और युवती को अपने पीछे बिठाऊंगा; और जब मैं ऐसा कर लूंगा, तो घोड़ा तेज़ी से आगे बढ़ेगा।”

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.73%** है।

•-\ ^f`& •**> *r-जब तक वह तेरे पास न आ जाए, तब तक ऐ समाप्त हो जाएगा, और तू उसके साथ जो चाहे कर सकता है। — और जब राजा ने उसकी बातें सुनीं, तो वह अत्यंत प्रसन्न हुआ। तब राजा का पुत्र घोड़े पर सवार हुआ, और युवती को अपने पीछे बिठा लिया, जबकि राजा और उसके सभी सैनिक उसे देख रहे थे। उसने उसे अपने से सटा लिया, और उसे कसकर बाँध दिया, और चढ़ाई का पिन घुमा दिया; जिसके बाद घोड़ा उनके साथ हवा में उड़ गया। सैनिक उसे तब तक देखते

रहे जब तक वह उनकी आँखों के सामने से ओझल नहीं हो गया; और राजा आधे दिन तक उसके लौटने की प्रतीक्षा करता रहा; परन्तु वह नहीं लौटा: इसलिए वह उससे निराश हो गया, और बहुत पश्चाताप किया, और युवती के वियोग से दुखी हुआ। तब उसने अपने सैनिकों को लिया, और अपने नगर लौट गया। परन्तु राजा का पुत्र अपने पिता के नगर की ओर चल पड़ा, आनन्द से परिपूर्ण JPi!

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.61%** है।

488 जादुई घोड़े की कहानी। और खुशी, और वह अपनी यात्रा में तब तक नहीं रुका जब तक कि वह अपने महल में नहीं उतर गया, जहाँ उसने युवती को महल में उतारा और उसके सुरक्षित होने का आश्वासन दिया। फिर वह अपने पिता और माता के पास गया, उन्हें प्रणाम किया और उन्हें युवती के आगमन की सूचना दी; जिस पर वे अत्यंत प्रसन्न हुए। इस

बीच, यूनानियों का राजा जब अपने शहर लौटा, तो वह अपने महल में शोक और पीड़ा में डूबा हुआ एकांतवास में चला गया। इसलिए उसके सेवक उसके पास गए और उसे सांत्वना देने लगे, उससे कहने लगे, "निश्चित रूप से जिसने युवती को लिया है वह एक जादूगर है; और ईश्वर की स्तुति हो जिसने तुझे उसके जादू और धूर्तता से बचाया है।" और वे तब तक नहीं रुके जब तक कि उसे युवती के खोने के दुख से सांत्वना नहीं मिल गई। — और जहाँ तक राजा के पुत्र की बात है, उसने शहर के लोगों के लिए भव्य भोज आयोजित किए, और उन्होंने पूरे एक महीने तक उत्सव मनाया; इसके बाद, उसने उस युवती से विवाह किया और वे एक-दूसरे से अत्यंत प्रसन्न रहे। उसके पिता ने काले घोड़े को तोड़कर उसकी चाल नष्ट कर दी। तब राजा के पुत्र ने युवती के पिता को पत्र लिखा और उसमें अपनी स्थिति का वर्णन करते हुए बताया कि उसने युवती से विवाह कर लिया है और वह उसके साथ अत्यंत सुखमय जीवन व्यतीत कर रही है। उसने एक दूत के द्वारा पत्र भेजा, जिसमें बहुमूल्य उपहार और दुर्लभ वस्तुएँ थीं। जब दूत युवती के पिता के नगर, यमन के सना में पहुँचा, तो उसने उपहारों सहित पत्र राजा को सौंप दिया। राजा ने पत्र पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की, उपहार स्वीकार किए और दूत का आदरपूर्वक स्वागत किया। फिर उन्होंने अपने दामाद, राजा के पुत्र के लिए एक भव्य उपहार तैयार किया और उसे उसी दूत के द्वारा भेज दिया। दूत उपहार लेकर राजा के पुत्र के पास लौटा और उन्हें बताया कि जब राजा, उस युवती के पिता, ने अपनी पुत्री के आगमन का समाचार उन्हें दिया तो उन्हें कितनी प्रसन्नता हुई। यह सुनकर राजा का पुत्र अत्यंत प्रसन्न हुआ और वह प्रत्येक वर्ष अपने ससुर को पत्र लिखकर उपहार भेजने लगा। यह सिलसिला तब तक चलता रहा जब तक कि राजा, उस युवक के पिता, का देहांत नहीं हो गया। उसके बाद उस युवक ने अपने राज्य पर शासन

किया। उसने अपनी प्रजा पर निष्पक्षता से शासन किया और उनके बीच प्रशंसनीय आचरण किया; देश उसके अधीन था और प्रजा उसकी आज्ञा का पालन करती थी। इस प्रकार वे अत्यंत सुखमय, सुखद, आरामदायक और आनंदमय जीवन व्यतीत करते रहे, जब तक कि उनके जीवन में उस प्रलय का आगमन नहीं हो गया जिसने उनके सुखों का अंत कर दिया, उनके साथियों को अलग कर दिया और उनके महलों को नष्ट कर दिया। इसलिए उस जीवित, जो कभी मरता नहीं, की पूर्णता की प्रशंसा हो, जिसके हाथ में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार का प्रभुत्व है।20

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.15%** है।

सत्रहवें अध्याय पर टिप्पणियाँ। टिप्पणी 1. "फ़ारसी देश में" शब्द मेरे मूल पाठ में नहीं हैं। ब्रेस्लाउ संस्करण में, इसके तुरंत बाद उल्लिखित राजा को "फ़ारसी राजा, जिसका नाम सबूर था" कहा गया है, जो "शापूर" का अरबी रूप है, जो फ़ारस के कई राजाओं का नाम था। पुराने संस्करण में, इस सम्राट का दरबार शीराज़ में बताया गया है। - जादुई घोड़े की कहानी की उत्पत्ति पर इस श्रृंखला की अंतिम टिप्पणी में कुछ टिप्पणियाँ की जाएँगी। टिप्पणी 2. - शरद विषुव के फ़ारसी त्योहार पर। जिस वाक्य का यह टिप्पणी संदर्भ देती है, उसे मैंने ब्रेस्लाउ संस्करण से लिया है, कुछ त्रुटियों को सुधारते हुए। यहां उल्लिखित दो त्योहारों में से पहले त्योहार का मैंने पहले ही कुछ विवरण दिया है।1 शरद विषुव का त्योहार, जिसे "मिहरगान," "मिहरजान," और "महराजन" कहा जाता है (अरब लोग इसे अंतिम नाम से पुकारते हैं), प्राचीन फारसियों द्वारा मनाए जाने वाले सबसे महान त्योहारों में से एक था। यह सातवें महीने मिहर की 16 तारीख को शुरू होता था। इस छह दिवसीय उत्सव की उत्पत्ति के लिए कई पारंपरिक कारण बताए जाते हैं; लेकिन सबसे तर्कसंगत अनुमान हमें इस निष्कर्ष

पर ले जाता है कि इसे शरद विषुव के इस मौसम में उनके महान देवता, सूर्य के सम्मान में स्थापित किया गया था; जैसे नवरोज़ का दूसरा प्रमुख उत्सव, उसी सिद्धांत पर, सूर्य के मेष राशि में प्रवेश का जश्न मनाने के लिए था। सोलहवाँ दिन बाकी दिनों से अधिक विशिष्ट था; जो लोग सामर्थ्य रखते थे, वे उस दिन स्वयं को बान के तेल से अभिषेक करते थे, गुलाब जल छिड़कते थे और विभिन्न प्रकार के फल खाते थे, इस विचार से कि ऐसे अनुष्ठान उन्हें उन अनेक बुराइयों से बचाएंगे जो अन्यथा उन्हें वर्ष के दौरान परेशान कर सकती हैं। इस उत्सव के पहले दिन, राजा बान के तेल से अभिषेक करने के बाद, कई रंगों के शानदार वस्त्र पहनकर, अपने सिर को राजसी ताज (या मुकुट) से सजाकर, जिस पर सूर्य की एक भव्य आकृति थी, अपने सिंहासन पर विराजमान होते थे; जब उच्च एक पुजारी अकेले ही एक बड़ी चांदी की थाली में चीनी, आड़ू, क्विंस, सेब, नींबू, अनार, बेर, कमल, सफेद अंगूरों का एक गुच्छा और सात मर्टल बेरी भरकर लाए और उन पर प्रार्थना करते हुए उन्हें राजा को भेंट किया, जिन्होंने उन सभी को खा लिया; इसके बाद, कुलीन वर्ग और अन्य लोग, अपने पद के अनुसार आते हुए, अपने राजा के उदाहरण का अनुसरण किया; जब अध्याय xvi. II. 2 के नोट 19 में विभिन्न प्रकार के

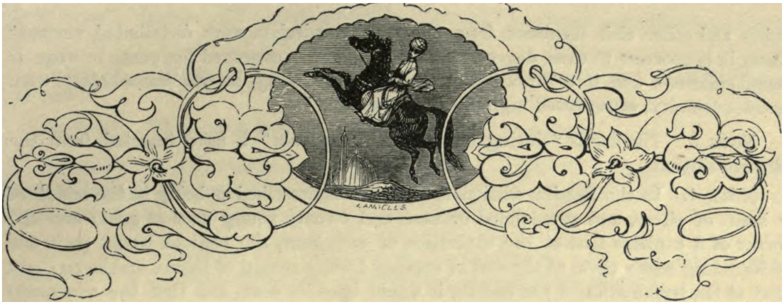

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.06%** है।

सत्रहवें अध्याय के लिए 490 टिप्पणियाँ। शाही भंडारों से वस्त्र और अन्य कीमती साज-सामान उनके बीच उनकी हैसियत के अनुपात में वितरित किए गए थे। इस दिन बच्चों का दूध छुड़ाना या नामकरण करना शुभ माना जाता था और यदि राजा के पुत्र का जन्म होता था, तो उसे तुरंत, अत्यंत धूमधाम से, सूर्य का महायाजक नियुक्त किया जाता था।3 नोट 3. "इन त्योहारों में से एक के दौरान" शब्द मैंने ब्रेस्लाउ संस्करण से लिए हैं। नोट 4. ब्रेस्लाउ संस्करण में, मोर को चांदी के एक पात्र के बीच में और सोने के चौबीस बच्चों से घिरा हुआ बताया गया है; और इसके स्वामी बताते हैं कि प्रत्येक घंटे के अंत में, मोर अपने एक बच्चे को चोंच मारता था; फिर, एक और घंटे के अंत में, दूसरे को; और इसी तरह; और महीने के अंत में, वह अपनी चोंच खोलता था, और उसमें नया चंद्रमा दिखाई देता था। नोट 5. केवल एक तुरही के बजाय, ब्रेस्लाउ संस्करण "सुंदर और कीमती पत्थरों और रत्नों से जड़ी सोने की एक आकृति, जिसके हाथ में सोने की तुरही है" का वर्णन करता है। "नेफीर" के स्थान पर "नाकीर" का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है तुरही। टिप्पणी 6. ब्रेस्लाउ संस्करण में, ऋषि के बारे में कहा गया है कि उन्होंने पहले आबनूस के घोड़े पर सवार होकर उस पर चढ़ाई की और फिर नीचे उतरे। बाद में, राजा की सबसे छोटी बेटी, जिसका विवाह उन्होंने घोड़े के स्वामी से कर दिया था, उस व्यक्ति के भयानक रूप से घृणा करते हुए अपने भाई से सहायता की गुहार लगाती है, जो राजा से विरोध करता है, और उनके द्वारा घोड़े के अद्भुत गुणों को आज़माने के लिए प्रेरित होता है ताकि राजा विवाह के लिए सहमत हो जाएं, लगभग उसी तरह जैसे क्लियोमाडेस और क्लेयरमंड की कहानी में है, जिसके साथ, कुछ अन्य विवरणों में, ब्रेस्लाउ संस्करण में जादुई घोड़े की कहानी काहिरा संस्करण की तुलना में अधिक मेल खाती है; साथ ही इन दोनों संस्करणों की

कहानी गैलैंड के संस्करण की तुलना में अधिक मेल खाती है। क्लियोमाडेस और क्लेयरमंड की कहानी पर मुझे आगे चर्चा करनी होगी। टिप्पणी 7. अध्याय iii की टिप्पणी 15 देखें। 8. शाब्दिक रूप से, "कहो, मैं मनुष्यों के प्रभु की शरण लेता हूँ," और "भोर" द्वारा: "अर्थात, कुरान के अंतिम अध्याय और अंतिम से पहले वाले अध्याय को दोहराकर; जिन्हें "दो निवारक" कहा जाता है।" अध्याय 10 के नोट 18 और अध्याय 8 के नोट 58 देखें। नोट 9. अध्याय 10 के नोट 50 देखें। - यह कहानी को मुसलमानों द्वारा फारस की विजय से पहले के काल से जोड़ता है; लेकिन अरब कथाकार का ऐसा विचार नहीं है। नोट 10. अर्थात्, मानो वह राजकुमार को खा जाएगा। प्रस्तावना के नोट 21 देखें। नोट 11. ब्रेस्लाउ संस्करण में, इस राजा को "कैसर" कहा गया है; अर्थात्, कैसर: लेकिन जिस संस्करण से मैं अनुवाद कर रहा हूँ, उसमें उसका राज्य अल-यमन, या अरब फेलिक्स है। नोट 12. ब्रेस्लाउ संस्करण में, इस राजकुमारी को "शेम्स-एन-नहार" कहा गया है। जिसका अर्थ है "दिन का सूर्य"। टिप्पणी 13. सना यमन की राजधानी है और एक बहुत प्राचीन शहर है। यह अपने वृक्षों और जल के लिए प्रसिद्ध है, और इसलिए इसकी तुलना दमिश्क से की जाती है। टिप्पणी 14. इस अनुच्छेद के प्रारंभ से लेकर दो छंदों के अंत तक, मैंने ब्रेस्लाउ संस्करण से लिया है, जिसमें कुछ स्पष्ट त्रुटियों को सुधारा गया है। टिप्पणी 15. मूल में, "बिलाद-एर-रूम" है। यह नाम कुछ अरब भूगोलवेत्ताओं द्वारा आधुनिक ग्रीस और यूरोपीय तुर्की के क्षेत्रों के लिए प्रयोग किया जाता है; लेकिन अन्य द्वारा, एशिया माइनर के अधिकांश भाग के लिए। बाद वाला, मेरा मानना है कि यह इटिचार्डसन के फारसी, अरबी और अंग्रेजी शब्दकोश, जॉनसन संस्करण, वी "मह" है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.64%** है।

सत्रहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। यहाँ 491 का अर्थ है। "यूनानियों का देश" के स्थान पर, ब्रेस्लाउ संस्करण में चीन है; और गैलैंड के संस्करण में कश्मीर है। टिप्पणी 10. यहाँ "किसरावी" का अर्थ "किसरा की प्रजा" है; अर्थात् फारसी सम्राट की प्रजा। टिप्पणी 1.7. मेरा मानना है कि यह नाम किसी नकलची द्वारा बदल दिया गया है। टिप्पणी 18. अरबों में यह आम धारणा है कि भयंकर या खतरनाक पागलपन रोगी के किसी शैतान या दुष्ट जिन्न के वश में होने के कारण होता है; और इसके लिए प्रयुक्त सामान्य शब्द (अर्थात "जुनून") इसी को दर्शाता है। टिप्पणी 19. शाब्दिक रूप से, "यह दुर्घटना," या "— दुर्भाग्य," इत्यादि। मेरे शेख ने बाद के एक अंश पर टिप्पणी करके उस अनुवाद को अधिकृत किया है जिसे मैंने अपनाया है। टिप्पणी 20. यह कहानी क्लियोमाडेस और क्लेयरमंड की कहानी से इतनी कम भिन्न है कि यह स्पष्ट है कि इनमें से एक कहानी दूसरी से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ली गई है, या दोनों की उत्पत्ति एक ही स्रोत से हुई है। बाद वाली कहानी का श्री कीथली ने एक विस्तृत उद्धरण दिया है,4 जिसमें उन्होंने लकड़ी के जादुई घोड़ों, राजा कैम्बस्कन के पीतल के घोड़े और मांस और रक्त के जादुई घोड़ों के उल्लेख के कई उल्लेख जोड़े हैं। वे दर्शाते हैं कि "क्लियोमाडेस और क्लेयरमंड" हमारे युग की तेरहवीं शताब्दी में लिखा गया था, और टिप्पणी करते हैं, "कहानी, जैसा कि सभी को देखना चाहिए, हजार और एक रातों में जादुई घोड़े की कहानी है; और यह दूर-दराज के क्षेत्रों से काल्पनिक कथाओं के थोड़े-बहुत परिवर्तन के साथ प्रसारित होने का एक बहुत ही उल्लेखनीय उदाहरण है। . . . "जादुई घोड़ा," वे आगे कहते हैं, "मेरी राय में शापूर और यज़्देजर्द के समय की एक प्राचीन फ़ारसी कहानी है।" मैं इसे एक पुरानी फ़ारसी कहानी मानने में उनसे सहमत हूँ, और मुझे लगता है कि यह संभवतः "हेज़र अफ़सानेह" से ली गई है। 4 अपनी "कहानियाँ और

लोकप्रिय कथाएँ," खंड 2 में।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.58%** है।

अध्याय 18वीं। तीन सौ 71वीं रात के एक भाग से शुरू होकर तीन सौ 81वीं रात के एक भाग पर समाप्त। उन्स-अल-वुजूद और अल-वरद फ़ी-अल-अकमम की कहानी। प्राचीन काल में, थेके एक महान प्रतिष्ठावान, गौरवशाली और पूर्ण शक्ति से संपन्न राजा थे, और उनका एक वज़ीर (वरिष्ठ शासक) था जिसका नाम इब्राहीम था। उसकी एक बेटी थी जो आश्चर्यजनक रूप से सुंदर और आकर्षक थी, शालीनता और हर गुण में श्रेष्ठ थी, प्रचुर समझ और उत्कृष्ट शिष्टाचार से संपन्न थी; लेकिन उसे मौज-मस्ती और शराब बहुत पसंद थी।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.47%** है।

उन्स-अल-वुजूद की कहानी, इत्यादि। 493 सुंदर चेहरे, मनमोहक कविताएँ और विचित्र इतिहास। उसके आकर्षण की कोमलता ने मनुष्यों के मन को प्रेम के लिए मोहित कर लिया। उसका नाम अल-वार्ड फ़ी-1-

अकमम था; 2 और उसका यह नाम उसकी अत्यधिक कोमलता और परिपूर्ण शालीनता के कारण रखा गया था; और राजा उसके कुशल व्यवहार के कारण उसके साथ मौज-मस्ती करना पसंद करता था। अब राजा की यह प्रथा थी कि वह हर साल अपने राज्य के प्रमुख पुरुषों को इकट्ठा करता था और गेंद से खेलता था। 3 और ऐसे ही एक दिन जब वह ऐसा कर रहा था, वज़ीर की बेटी अपना मनोरंजन करने के लिए एक जालीदार खिड़की पर बैठी थी; और जब वे खेल में व्यस्त थे, उसने एक नज़र डाली और सैनिकों के बीच एक युवक को देखा, जो दिखने में और रूप-रंग में उससे अधिक सुंदर नहीं था; उसका चेहरा चमकीला था, उसके दाँत हँसते हुए थे, वह उदार और चौड़े कंधों वाला था। वह उसे बार-बार देखती रही, और उसे निहारते-निहारते उसका मन नहीं भरा; उसने अपनी नर्स से पूछा, सैनिकों के बीच इस सुंदर युवक का नाम क्या है? नर्स ने उत्तर दिया, हे मेरी बेटी, वे सभी सुंदर हैं। तो फिर उनमें से कौन? — रुको, युवती ने कहा, जब तक मैं तुम्हें उसे दिखा न दूं। और उसने एक सेब लिया और उस पर फेंक दिया। तब उसने अपना सिर उठाया और खिड़की पर वज़ीर की बेटी को देखा, जो रात के अंधेरे में पूर्णिमा के चंद्रमा के समान लग रही थी; और उसकी नज़रें उससे हटी ही नहीं, क्योंकि उसका दिल उसके लिए प्रेम से भर गया था; और उसने कवि की यह बात दोहराई: — क्या धनुर्धर ने मुझे तीर मारा है, या तुम्हारी आँखों ने? तुमने अपने आप को देखकर मोहित व्यक्ति के दिल को तोड़ दिया है। क्या तीखा तीर अचानक सेना के बीच से या खिड़की से मुझ पर चलाया गया है? और जब खेल समाप्त हुआ, तो युवती ने अपनी दाई से पूछा, "मैंने तुम्हें जिस युवक से मिलवाया है, उसका नाम क्या है?" दाई ने उत्तर दिया, "उसका नाम उन्स-अल-वुजूद है।" इस पर उसने अपना सिर हिलाया और अपने गद्दे पर लेट गई; उसका मन उत्तेजित था, और वह

कराहते हुए इन छंदों का पाठ करने लगी: "जिसने तुझे जगत का आनंद कहा है, वह चूका नहीं है, हे आनंद और उदारता प्रदान करने वाली! हे तुम्हारा चेहरा पूर्णिमा के चंद्रमा के समान है, और तुम्हारा मुख समस्त सृष्टि पर प्रकाश फैलाता है! तुम मनुष्य जाति में अद्वितीय हो, सौंदर्य की महारानी हो, और मेरे पास इसे सिद्ध करने के लिए साक्षी हैं। तुम्हारी भौंहें सुगठित दोपहर के समान हैं; और तुम्हारी आंखें दयालु की रचना, सद के समान हैं।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.48%** है।

494 उन्स-अल-वुजूद की कहानी हे प्रभु, तेरा स्वरूप एक ताज़ी, पतली शाखा के समान है; और यदि कुछ माँगा जाए, तो तू उदारतापूर्वक सब कुछ दे देती है। तू आक्रमण करने, आनंद प्रदान करने, सुंदरता और परोपकार में संसार के घुड़सवारों से भी श्रेष्ठ है। फिर उसने ये छंद एक कागज़ पर लिखे, जिसे उसने सोने की कढ़ाई वाले रेशम के टुकड़े में लपेटकर तकिये के नीचे रख दिया। उसकी एक दाई उसे देख रही थी; इसलिए वह दाई उसके पास आई और उससे बातें करने लगी जब तक कि वह सो नहीं गई। फिर उसने तकिये के नीचे से कागज़ चुरा लिया और उसे पढ़ा। इस प्रकार वह जान गई कि वह उन्स-अल-वुजूद के प्रति तीव्र आसक्त हो गई है; और कागज़ पढ़ने के बाद उसने उसे वापस उसकी जगह पर रख दिया। और जब उसकी स्वामिनी जागी, तो उसने उससे कहा, हे मेरी स्वामिनी, मैं तुझे उपदेश देने वाली और तुझ पर दया करने वाली हूँ। जान लो कि प्रेम कठिन है, और इसे छुपाने से लोहा भी पिघल जाएगा, और इससे रोग और दुर्बलताएँ उत्पन्न होती हैं; और जो प्रेम प्रकट करता है, वह निंदा का पात्र नहीं होता। — इस पर, एल-वार्ड फ़ी-1-अकमम ने उससे कहा, हे मेरी दाई, इच्छा का क्या उपाय है? — दाई ने

उत्तर दिया, इसका उपाय है मुलाकात। — और यह कैसे प्राप्त की जा सकती है? युवती ने पूछा। दाई ने उत्तर दिया, हे मेरी स्वामिनी, यह पत्रों, मीठे शब्दों और बहुत सारी प्रशंसा और अभिवादन के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है; क्योंकि यह तरीका प्रेमियों को एक साथ लाता है, और इससे कठिन चीजें आसान हो जाती हैं; और यदि आपको कोई कार्य करना हो, हे मेरी स्वामिनी, तो मैं आपका रहस्य छुपाने, आपका काम पूरा करने और आपका पत्र ले जाने के लिए सबसे उपयुक्त हूँ। और जब एल-वार्ड फ़ी-1-अकमम ने उससे ये शब्द सुने, तो वह खुशी से बेहोश हो गई; लेकिन उसने जवाब देने से परहेज किया, ताकि वह अपने मामले का परिणाम देख सके, और मन ही मन कहा, "सचमुच यह बात मुझसे किसी को नहीं पता, और मैं इस स्त्री को तब तक नहीं बताऊंगी जब तक मैं उसकी परीक्षा न ले लूं।" तब उस स्त्री ने उससे कहा, "हे मेरी स्वामिनी, मैंने सपने में देखा जैसे कोई पुरुष मेरे पास आया और मुझसे कहा, 'तेरी स्वामिनी और उन्स-अल-वुजूद एक-दूसरे से प्रेम करते हैं; इसलिए उनके मामले को संभालो, उनके पत्र पहुंचाओ, उनकी ज़रूरतें पूरी करो, और उनके मामले और उनके राज़ छुपाओ: तो तुम्हें भरपूर सौभाग्य प्राप्त होगा। अब मैंने तुम्हें वह सब बता दिया है जो मैंने देखा, और अब फैसला करना तुम्हारा काम है।" — और जब अल-वार्ड फ़ी-अल-अकम ने अपनी दाई को उस सपने के बारे में बताया जो उसने (जैसा उसने दिखावा किया था) देखा था, तो उसने उससे कहा, "क्या तुम राज़ छुपाओगी, हे मेरी दाई?" दाई ने उत्तर दिया, "मैं राज़ कैसे न छुपाऊं जब मैं सबसे भोली और पवित्र हूं?" इस पर, युवती ने उसे वह कागज प्रस्तुत किया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.07%** है।

और अल-वार्ड फ़िल-अकमम। 495 जिस पर उसने ये आयतें लिखी थीं,

उससे कहा गया, "मेरी ये चिट्ठी लेकर उन्स-अल-वुजूद के पास जाओ और मुझे इसका जवाब दो।" तो उसने चिट्ठी ली और उन्स-अल-वुजूद के पास गई; और अंदर जाकर उसने उनके हाथों को चूमा, अत्यंत विनम्रता से उनका अभिवादन किया और उन्हें चिट्ठी दे दी; और जब उन्होंने उसे पढ़ा और उसका अर्थ समझ लिया, तो उन्होंने उसके पीछे ये आयतें लिखीं: — मैं अपने आवेश में अपने हृदय को शांत करता हूँ और उसे छुपाता हूँ; परन्तु मेरी अवस्था मेरे प्रेम को प्रकट करती है। जब मेरे आँसू बहते हैं, तो मैं कहता हूँ, मेरी आँख दुख रही है — कहीं ऐसा न हो कि निंदा करने वाला मेरी हालत देख और समझ ले। मैं चिंता मुक्त था और प्रेम क्या होता है, यह नहीं जानता था; परन्तु अब मैं प्रेम में लीन हो गया हूँ और मेरा हृदय वश में है। मैं अपना मामला आपके समक्ष प्रस्तुत करता हूँ, अपने जुनून और उन्माद की शिकायत करता हूँ, इस आशा में कि आप मुझ पर दया करेंगे और करुणा दिखाएंगे। मैंने इसे अपनी आँखों के आँसुओं से लिखा है, शायद यह आपको उस प्रेम को समझा सके जिससे आपने मुझे प्रभावित किया है। उस चेहरे की रक्षा करना कठिन है जो सुंदरता से ढका हो! पूर्णिमा का चाँद उसका दास है और तारे उसके सेवक। सुंदरता में मैंने उसके समान किसी को नहीं देखा; और उसकी चाल से पेड़ की डालियाँ भी लहराना सीख सकती हैं। मैं आपसे निवेदन करता हूँ, बिना आप पर कोई बोझ डाले, कि आप हमसे मिलने आएँ; क्योंकि हम इसे बहुत महत्व देंगे। मैं आपको अपनी आत्मा अर्पित करता हूँ - शायद आप इसे स्वीकार कर लें - क्योंकि मेरे लिए मिलन स्वर्ग है और विमुखता नरक। फिर उसने पत्र को मोड़ा, चूमा और उसे देते हुए कहा, हे नर्स, अपनी मालकिन का स्नेह प्राप्त करो। उसने उत्तर दिया, मैं सुनती हूँ और आज्ञा मानती हूँ। और उसने उससे पत्र लिया और अपनी मालकिन के पास लौटकर उसे दे दिया; और उसने उसे चूमा, और अपने

सिर पर रख लिया; उसके बाद, उसने उसे खोला और पढ़ा, और उसका अर्थ समझा; और उसने उसके नीचे ये पंक्तियाँ लिखीं: — हे जिसका हृदय हमारी सुंदरता पर मोहित है, अपने प्रेम में धैर्य रखो, और शायद तुम हमें पा लोगे। जब हम जानते थे कि तुम्हारा स्नेह सच्चा है, और जिस जुनून ने हमारे हृदय को पीड़ा दी है, उसने तुम्हारे हृदय को भी पीड़ा दी है, तो हम तुम्हें वह मिलन प्रदान करते जो तुम चाहते हो, और उससे भी अधिक; लेकिन हमारे दरबारी ने हमें ऐसा करने से रोक दिया। जब रात अंधेरी हो जाती है, हमारे प्रेम की अधिकता से, हमारे हृदयों में आग लग जाती है, और नींद हमारे बिस्तरों से दूर भाग जाती है, और अक्सर हमारा शरीर हमारे जुनून से पीड़ित होता है। प्रेम के नियमों में एक अनिवार्य नियम है छिपाव। हमारे ऊपर गिरे हुए पर्दों को मत उठाओ। मेरा हृदय हिरण के प्रेम से भरा है। काश वह कभी हमारे घर से दूर न होता! और जब उसने अपनी कविताएँ पूरी कर लीं, तो उसने कागज़ को मोड़कर नर्स को दे दिया, जिसने उसे लेकर वहाँ से चली गई; लेकिन

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.18%** है।

496 उन्स-अल-वुजूद की कहानी: एक दरबारी उससे मिला और उससे पूछा, तुम कहाँ जा रही हो? उसने उत्तर दिया, स्नान करने। वह उससे घबरा गई और घबराहट में दरवाजे से बाहर निकलते समय कागज उससे गिर गया, और एक हिजड़े ने उसे रास्ते में पड़ा देखकर उठा लिया। फिर वज़ीर हरेम से बाहर आया और अपने पलंग पर बैठ गया, और कागज उठाने वाला हिजड़ा उसके पास गया। जब वज़ीर अपने पलंग पर बैठा था, तभी वह हिजड़ा कागज हाथ में लिए उसके पास आया और उससे कहा, हे मेरे स्वामी, मुझे यह कागज घर में पड़ा मिला और मैंने इसे उठा लिया। वज़ीर ने उसे उसके हाथ से, मुड़ा हुआ ही, ले लिया और उसे खोलकर

देखा तो उस पर ऊपर वर्णित आयतें लिखी हुई थीं। उसने उन्हें पढ़ा और उनका अर्थ समझा; फिर, लेख की जाँच करने पर उसने पाया कि यह उसकी बेटी का लिखा हुआ था; तब वह अपनी माँ के पास गया और ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा, जिससे उसकी दाढ़ी भीग गई। उसकी पत्नी ने उससे कहा, हे स्वामी, आपको रोने का क्या कारण है? उसने उत्तर दिया, यह कागज़ लो और इसके अंदर लिखी बातें देखो। उसने कागज़ लिया और पढ़ा, तो पाया कि यह उसकी बेटी अल-वार्ड फ़ी-अकमम का उन्स-अल-वुजूद को लिखा पत्र था; जिसे पढ़कर उसे भी रोने का मन हुआ; लेकिन उसने अपने मन को वश में किया और आँसू रोके, और वज़ीर से कहा, हे स्वामी, रोने से कोई लाभ नहीं है। सही राय यह है कि हम आपकी इज़्ज़त की रक्षा करने और आपकी बेटी के मामले को छुपाने की योजना बनाएँ। और उसने उसे सांत्वना देने और उसके दुख को कम करने का प्रयास किया। लेकिन उसने उससे कहा, वास्तव में मैं अपनी बेटी के क्रोध के कारण उसके लिए चिंतित हूँ। क्या तुम नहीं जानती कि सुल्तान उन्स-अल-वुजूद से बहुत प्रेम करता है? मेरे भय के दो कारण हैं। पहला स्वयं से संबंधित है; क्योंकि वह मेरी पुत्री है। और दूसरा सुल्तान से संबंधित है; क्योंकि उन्स-अल-वुजूद सुल्तान का प्रिय है; और संभवतः इसके परिणामस्वरूप कोई महत्वपूर्ण घटना घटित हो सकती है। तो इस स्थिति में आप क्या उचित समझते हैं? - उसने उत्तर दिया, जब तक मैं सही मार्ग के लिए प्रार्थना न कर लूँ, तब तक धैर्य रखें। फिर उसने दो रकअत की प्रार्थनाएँ कीं, जो सही मार्ग पाने के लिए पैगंबर द्वारा निर्धारित विधि है;9 और जब उसकी प्रार्थनाएँ समाप्त हो गईं, तो उसने अपने पति से कहा, कुनूज़ सागर 10 के बीच में एक पर्वत है जिसे 'बहिर माँ का पर्वत' कहा जाता है (और इसके इस नाम के पीछे का कारण आगे बताया जाएगा), और उस पर्वत पर बड़ी कठिनाई से ही पहुँचा जा सकता है:

इसलिए उसके लिए वहाँ एक स्थान बना दें। तो वज़ीर अपनी पत्नी से सहमत हो गया कि वह वहाँ एक अभेद्य महल बनाएगा, उसे उसमें रखेगा और उसके साथ आवश्यक सामान रखेगा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.53%** है।

और एल-वाफ्टल) फ़ी-एल अकमाम, 497 उसने उसके लिए वर्ष-दर-वर्ष आवश्यक व्यवस्थाएँ कीं, और उसके साथ ऐसे सेवक रखे जो उसका उत्साहवर्धन करें और उसकी सेवा करें। उसने बढ़ई, बिल्डर और वास्तुकारों को इकट्ठा किया और उन्हें उस पर्वत पर भेजा; और उन्होंने उसके लिए एक अभेद्य महल बनाया, जैसा पहले कभी किसी ने नहीं देखा था। फिर उसने यात्रा के लिए रसद और उसके साथ जाने वाले काफिले को तैयार किया; और रात में अपनी बेटी के पास जाकर उसे यात्रा पर निकलने का आदेश दिया। उसके हृदय में विरह की पीड़ा थी, और जब वह बाहर निकली और यात्रा की तैयारी देखी, तो वह फूट-फूटकर रोई और उसने दरवाजे पर कुछ शब्द लिखे ताकि उन्स-अल-वुजूद को अपने उस तीव्र प्रेम का बोध करा सके, जो ऐसा था कि शरीर कांप उठे, पत्थर का दिल पिघल जाए और आंसू बहने लगें। उसने जो लिखा, उसमें ये पंक्तियाँ थीं: - अल्लाह की कसम, ऐ घर, अगर महबूब सुबह के समय प्रेमियों के इशारों से अभिवादन करते हुए यहाँ से गुजरे, तो हमारी ओर से उसे पवित्र और सुगंधित अभिवादन देना; क्योंकि वह नहीं जानता कि हम शाम कहाँ बिताते हैं; और मैं नहीं जानती कि वे रात में हमारे साथ कहाँ चले गए हैं, जल्दी से और हल्के-फुल्के सामान के साथ, जब झाड़ियों के पक्षी डालियों पर बैठकर हमारा विलाप करते हैं और हमारे भाग्य की घोषणा करते हैं; उनकी स्थिति की ज़ुबान कहती है, हाय, प्रेमियों के बिछड़ने से हुए शोक पर! जब मैंने देखा कि जुदाई के प्याले भर चुके हैं, और नियति

हमें बलपूर्वक उन्हें बिना मिलावट के पीने पर मजबूर कर रही है, तो मैंने अपने विवेक को क्षमा करने के लिए उन्हें उचित धैर्य के साथ पी लिया, परन्तु अब धैर्य हमें तुम्हारे बिछोह के दुःख में सांत्वना नहीं दे पा रहा है। और जब उसने अपने छंद समाप्त कर लिए, तो वह घोड़े पर सवार हुई, और वे उसके साथ रेगिस्तानों, वीरान भूमि, मैदानों और ऊबड़-खाबड़ रास्तों को पार करते हुए कुनूज़ सागर तक पहुँचे, जहाँ उन्होंने किनारे पर तंबू गाड़े, और उसके लिए एक बड़ा जहाज़ बनवाया, जिसमें उन्होंने युवती और उसके परिवार को सवार कराया। वज़ीर ने उन्हें आदेश दिया था कि जब वे पर्वत पर पहुँचकर उसे और उसके परिवार को महल में ले जाएँ, तो वे जहाज़ के साथ लौट आएँ, और किनारे पर पहुँचने के बाद उसे तोड़ दें। अतः वे गए और उन्होंने वह सब किया जो उसने उन्हें आदेश दिया था, और जो कुछ हुआ था उस पर रोते हुए लौट आए। — यही उनकी स्थिति थी। लेकिन उन्स-अल-वुजूद नींद से जागा, सुबह की नमाज़ अदा करने के बाद घोड़े पर सवार होकर सुल्तान की सेवा में लग गया। वह हमेशा की तरह वज़ीर के द्वार से होकर गुजरा, इस उम्मीद में कि शायद उसे द्वितीय 3 एस के किसी व्यक्ति से मुलाकात हो जाए।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.82%** है।

वज़ीर के आश्रितों को देखकर, जिनसे वह अक्सर मिलता रहता था, उसने दरवाज़े की ओर देखा और उस पर ऊपर वर्णित आयतें लिखी हुई पाईं। उन्हें देखकर वह बेहोश हो गया; उसके भीतर जैसे आग सी लग गई और वह अपने घर लौट आया। उसे न तो आराम मिला, न ही धैर्य, और रात होने तक उसका मन बेचैन और उतावला बना रहा; रात होने पर उसने अपना रूप छिपाया और भेस बदला; और आधी रात को वह इधर-उधर भटकता रहा, उसे पता नहीं था कि कहाँ जाना है। वह पूरी रात और

अगले दिन तक यात्रा करता रहा, जब तक कि सूरज की गर्मी बहुत तेज़ नहीं हो गई, पहाड़ झुलसने लगे और प्यास उसे बुरी तरह सताने लगी; तभी उसे एक पेड़ दिखाई दिया और उसके पास एक जलधारा बह रही थी। इसलिए वह उस पेड़ के पास गया और उस जलधारा के किनारे उसकी छाया में बैठ गया और पानी पीने की इच्छा की; लेकिन उसने पाया कि पानी का उसके मुँह में कोई स्वाद नहीं था। उसका रंग बदल गया था, चेहरा पीला पड़ गया था, और चलने-फिरने और परिश्रम से उसके पैर सूज गए थे; और वह फूट-फूट कर रोने लगा, आँसू बहाते हुए, और इन छंदों का पाठ करने लगा:

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.74%** है।

اسمها अल-वुजूद, इत्यादि 499 प्रेमी अपने जुनून में मदहोश है; परन्तु जब उसकी इच्छा बढ़ती है, तो वह होश में आ जाता है। अपने प्रेम में व्याकुल, प्रचंड, भ्रमित, उसे न कोई ठिकाना मिलता है, न कोई भोजन जो उसे प्रसन्न करे। अपने प्रियतम से विमुख प्रेमी के लिए जीवन कैसे सुखदायी हो सकता है? यदि ऐसा होता, तो यह आश्चर्य की बात होती। मैं उसके लिए प्रेम से जल उठता हूँ, मेरे आँसू गालों पर धारा बनकर बहते हैं। क्या मैं उसे देख पाऊँगा या उसके निवास स्थान से किसी ऐसे व्यक्ति को देख पाऊँगा जिससे मेरा दुखी हृदय शांत हो सके? और जब उसने अपनी कविताएँ समाप्त कीं, तो वह तब तक रोया जब तक कि ज़मीन भीग नहीं गई। फिर तुरंत उठकर वह उस स्थान से चला गया; जब वह रेगिस्तानों और वीरान इलाकों से गुज़र रहा था, तभी उसके सामने एक शेर आ पड़ा, जिसकी गर्दन घने बालों से ढकी थी, उसका सिर गुंबद जितना बड़ा था, और उसका मुँह दरवाजे से भी चौड़ा था, जिसके दाँत हाथी के दाँतों जैसे थे। जब उन्स-अल-वुजूद ने उसे देखा, तो उसने अपने विनाश को निश्चित मान लिया, और किबले की ओर मुख करके, उसने धर्म की दो प्रतिज्ञाएँ कीं और मृत्यु के लिए तैयार हो गया। लेकिन उसने किताबों में पढ़ा था कि यदि कोई शेर को बहलाने का प्रयास करे, तो वह मीठे शब्दों से बहलाया जा सकता है, और प्रशंसा से शांत हो सकता है। इसलिए उसने उससे कहना शुरू किया, हे वन और मैदान के शेर! हे साहसी शेर! हे उदारों के पिता! हे जंगली जानवरों के सुल्तान! मैं सचमुच एक तड़पता हुआ प्रेमी हूँ, जिसे जुनून और विरह ने त्रस्त कर दिया है, और जब मैं अपने प्रिय से अलग हुआ तो मैंने अपनी बुद्धि खो दी: तो मेरी बात सुनो, और मेरे जुनून और इच्छा पर दया करो। और जब शेर ने

उसकी बात सुनी, तो वह उससे पीछे हट गया और उसकी पूंछ पर बैठ गया; फिर अपना सिर उसकी ओर उठाकर, उसने अपनी पूंछ से उसके साथ चंचल हरकतें करना शुरू कर दिया।

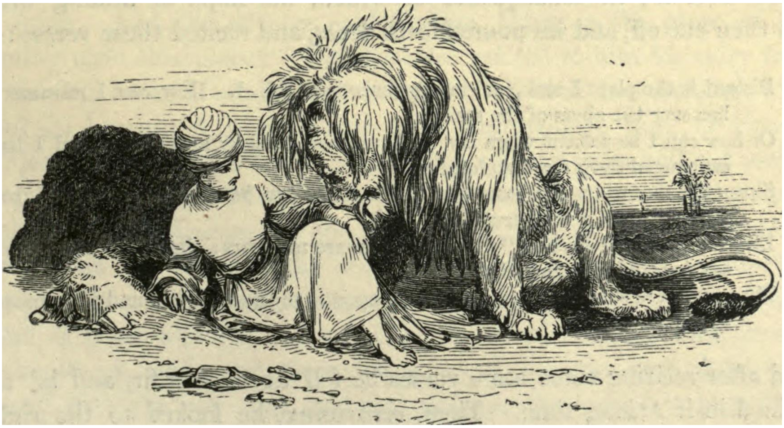

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.01%** है।

500 उन्स-अल-वुजूद की कहानी और आगे के पंजे; और उन्स-अल-वुजूद ने उसे ऐसा करते देख ये छंद पढ़े: - रेगिस्तान के शेर, क्या तू मुझे उससे मिलने से पहले ही मार डालेगा जिसने मुझे गुलाम बना रखा है? मैं न तो शिकार हूँ, न ही मोटा हूँ: मेरी प्रेमिका के बिछड़ने ने मुझे क्षीण कर दिया है, और उससे विरह ने मुझे इस कदर खा लिया है कि मैं कफ़न में लिपटे प्रेत के समान हूँ। हे अबू-अल-हारिथ!12 हे कलह के शेर! मेरे दुख पर बीमाकर्ताओं को प्रसन्न न होने दो। मैं प्रेम की आग में जल रहा हूँ, मेरे आँसुओं ने मुझे डुबो दिया है, और प्रेमिका की अनुपस्थिति ने मेरे मन को व्याकुल कर दिया है, और रात के अँधेरे में उसके विचारों ने मुझे अपने अस्तित्व से बेखबर कर दिया है। और जैसे ही उसने अपने छंद समाप्त किए, शेर उठा और आँसुओं से भरी आँखों से धीरे-धीरे उसकी ओर चलने लगा; जब वह उसके पास आया, तो उसने उसे अपनी जीभ से चाटा, और

फिर उसके आगे-आगे चलने लगा, मानो इशारा कर रहा हो, मानो कह रहा हो, मेरे पीछे आओ। तो वह उसके पीछे चल पड़ा, और शेर कुछ देर तक उन्स-अल-वुजूद के पीछे-पीछे चलता रहा, जब तक कि वह एक पहाड़ की चोटी पर नहीं पहुँच गया। फिर वह उस पहाड़ से नीचे उतरा, और उन्स-अल-वुजूद ने रेगिस्तान में यात्रियों के पदचिह्न देखे, और जान गया कि ये उन लोगों के पदचिह्न हैं जो अल-वार्ड फ़ी-1-अकमम के साथ थे। इसलिए उसने भी उसी पदचिह्न का अनुसरण किया; और जब शेर ने देखा कि वह ऐसा कर रहा है, और जान गया है कि ये उसके प्रिय के सेवकों के पदचिह्न हैं, तो वह लौट आया, और अपने रास्ते चला गया। उन्स-अल-वुजूद कई दिनों और रातों तक उस पदचिह्न पर चलता रहा, जब तक कि वह लहरों से गरजते हुए समुद्र के पास नहीं पहुँच गया; और पदचिह्न समुद्र के किनारे तक पहुँचे, और वहीं समाप्त हो गए। इसलिए वह जानता था कि लोग समुद्र में किसी जहाज पर सवार होकर आगे बढ़ चुके हैं; जिसके परिणामस्वरूप, उन्हें ढूंढने की उसकी आशा समाप्त हो गई, और वह फूट-फूट कर रोने लगा और ये छंद पढ़े: — मैं जिस स्थान की तलाश कर रहा हूँ वह बहुत दूर है, और मेरा धैर्य टूट चुका है। मैं समुद्र की अथाह गहराई को पार करके उसके पास कैसे पहुँच सकता हूँ? या मैं कैसे धैर्य रख सकता हूँ जब मेरा प्राण उसके प्रेम से जल रहा है, और मैंने नींद को जागने से बदल दिया है? जिस दिन से वह अपने घर से निकली है, मेरा हृदय प्रचंड अग्नि से जल रहा है। मेरे आँसू सेयहून, जेयहून13 और यूफ्रेट्स नदी के समान हैं: वे बाढ़ और बारिश से भी अधिक बाढ़ का रूप ले लेते हैं। लगातार रोने से मेरी पलकें दुख रही हैं, और मेरा हृदय आग और चिंगारियों से तड़प रहा है। और कुछ और छंद पढ़ने के बाद वह बेहोश होकर गिर पड़ा, और काफी देर तक उसी अवस्था में रहा। फिर संभलकर उसने दाईं ओर देखा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.53%** है।

और एल-वार्ड फ़िल-अकमम। 501 और वह चला गया; परन्तु रेगिस्तान में उसे कोई नहीं मिला; और जंगली जानवरों के कारण उसे अपनी जान का डर सताने लगा। इसलिए वह एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया, और जब वह वहाँ था, तो उसने एक गुफा में एक मनुष्य की आवाज़ सुनी; उसने उसकी बात सुनी, और देखा कि वह एक भक्त था, जिसने संसार त्याग दिया था और भक्ति में लीन था। उसने गुफा के द्वार पर तीन बार दस्तक दी; परन्तु भक्त ने उसे उत्तर नहीं दिया, न ही वह बाहर आया; इस पर वह विलाप करने लगा और इन श्लोकों का पाठ किया: — मैं अपनी इच्छा की प्राप्ति का उपाय कैसे पाऊँ, और चिंता, कष्ट और थकान से कैसे मुक्ति पाऊँ? सभी भयों ने मिलकर मुझे मेरी जवानी में ही हृदय और मस्तिष्क से बूढ़ा कर दिया है, और मुझे अपने जुनून में कोई सहायक नहीं मिलता, न ही कोई मित्र जो मेरे दुख और परिश्रम को कम कर सके। मैंने कितने कष्ट सहे हैं! ऐसा लगता है कि भाग्य पूरी तरह से मेरे विरुद्ध हो गया है। हे, उस तीव्र और व्याकुल प्रेमी पर दया करो, जिसने विरह और त्याग का प्याला पी लिया है! उसके हृदय में आग लगी है, उसका अंतर्मन जल रहा है, और वियोग के दर्द ने उसकी बुद्धि छीन ली है। वह दिन कितना भयानक था जब मैं उसके निवास पर आया और द्वार पर जो लिखा देखा वह भयानक था! मैं इतना रोया कि ज़मीन भीग गई; परन्तु मैंने अपना दुख निकट और दूर सभी से छुपा लिया। हे भक्त, जो अपनी गुफा में निष्क्रिय बैठा है, मानो तुमने प्रेम का स्वाद चखा हो और उसमें मोहित हो गया हो! इतना सब सहने के बाद, यदि मुझे मेरा लक्ष्य प्राप्त हो जाए, तो मैं चिंता या थकान को भूल जाऊंगा। और जब उसने अपने छंद समाप्त किए, तो देखो, गुफा का द्वार खुला, और उसने एक व्यक्ति को

कहते सुना, हाय! दया करो! — तो वह द्वार से अंदर गया, और भक्त को प्रणाम किया, जिसने भी उसे प्रणाम किया और उससे पूछा, तुम्हारा नाम क्या है? उसने उत्तर दिया, मेरा नाम उन्स-अल-वुजूद है। और उस भक्त ने उससे पूछा, "तुम यहाँ क्यों आए हो?" तब उसने उसे अपनी कहानी शुरू से अंत तक सुनाई, और अपने साथ घटी सारी बातें बताईं। यह सुनकर भक्त रो पड़ा और उससे बोला, "हे उन्स-अल-वुजूद, मैं इस स्थान पर बीस वर्षों से किसी को देखे बिना रहा, जब तक कि हाल ही में मैंने रोने और शोर की आवाज़ नहीं सुनी, और आवाज़ की दिशा में देखने पर मैंने बहुत से लोगों को देखा, और समुद्र के किनारे तंबू लगे हुए थे, और उन्होंने एक नाव बनाई, जिसमें उनमें से कुछ लोग सवार हुए और समुद्र पार चले गए। फिर नाव में सवार हुए कुछ लोग उसे लेकर लौट आए, उसे तोड़ दिया और अपने रास्ते चले गए: और मुझे लगता है कि जो लोग समुद्र पार करके वापस नहीं लौटे, वे वही लोग हैं जिन्हें तू

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.11%** है।

502 यूक्स-एल-वुजूद की कहानी, हे यूक्स-एल-वुजूद। उस स्थिति में, तुम्हारी चिंता बहुत अधिक होगी, और तुम्हें क्षमा किया जाता है: लेकिन ऐसा कोई प्रेमी नहीं है जिसने दुःख न सहे हों। — तब भक्त ने ये श्लोक पढ़े: — हे यूक्स-एल-वुजूद, क्या तुम मुझे चिंता मुक्त समझते हो, जब इच्छा और उन्माद मुझे मारते और फिर से जीवित करते हैं? मैंने बचपन से ही प्रेम और जुनून को जाना है, जब मैं दूध पीकर पोषित होने वाला शिशु था। मैंने प्रेम से लंबे समय तक संघर्ष किया, यहाँ तक कि मैं कुख्यात हो गया: यदि तुम मेरे बारे में पूछोगे, तो वह मुझे जान जाएगा। प्रेम में व्याकुल और तड़पते हुए, मैंने जुनून का प्याला पिया, और अपने शरीर के क्षय से लगभग मर गया। मैं बलवान था; लेकिन मेरा बल क्षीण हो गया,

और मेरे धैर्य की सेना आँखों की तलवारों के नीचे गिर गई। पीड़ा के बिना प्रियतम से मिलन की आशा मत करो; क्योंकि विपरीत चीजें हमेशा एक साथ जुड़ी रहती हैं। प्रेम ने अपने सभी भक्तों के विरुद्ध यह फरमान जारी किया है कि त्याग करना एक घोर पाप है। तब भक्त उठा और उन्स-अल-वुजूद के पास आया, और उसे गले लगा लिया, और वे दोनों इतना रोए कि पहाड़ उनकी चीखों से गूंज उठे। वे तब तक रोते रहे जब तक कि वे दोनों बेहोश होकर गिर नहीं पड़े; और जब उन्हें होश आया, तो उन्होंने ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) में भाई होने की प्रतिज्ञा की; जिसके बाद, भक्त ने उन्स-अल-वुजूद से कहा, मैं आज रात प्रार्थना करूँगा, और ईश्वर से विनती करूँगा कि वह मुझे उस मार्ग का सही मार्गदर्शन दे जिस पर तुम्हें चलना चाहिए। और उन्स-अल-वुजूद ने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। इसी बीच, जब लोग अल-वार्ड फ़ी-अल-अकमम के साथ पहाड़ पर पहुँचे, और उसे महल में ले गए, और उसने उसे देखा, और उसकी व्यवस्था को देखा, तो वह रो पड़ी, और बोली, अल्लाह की कसम, तुम एक सुंदर स्थान हो; परन्तु तू अपने प्रियतम की उपस्थिति चाहती है। उसने उस द्वीप में पक्षियों को देखा; अतः उसने अपने एक सेवक को उनके लिए फंदा लगाने और उनमें से कुछ को पकड़ने का आदेश दिया, और जब भी वह किसी को पकड़े, उन्हें महल के भीतर पिंजरों में रखने को कहा; और उसने वैसा ही किया जैसा उसने आज्ञा दी थी। फिर वह महल की एक जालीदार खिड़की पर बैठ गई, और अपने ऊपर घटी घटनाओं पर विचार करते हुए, उसकी इच्छा, उमंग और बेचैनी बढ़ती गई; और उसने आँसू बहाए, और ये छंद पढ़े: — हे, मैं किससे अपनी उस इच्छा, अपने दुःख, अपने प्रियतम से अपने वियोग और अपने हृदय में भड़कती ज्वाला की शिकायत करूँ; जिसे मैं देखने वाले के भय से प्रकट नहीं करती? मैं वियोग, उमंग और विलाप से एक तीली की तरह कमजोर

हो गई हूँ। प्रियतम की आँख कहाँ है जो देखे कि मेरी यह अवस्था किस प्रकार विक्षिप्त व्यक्ति जैसी हो गई है?

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.74%** है।

और KL-WAKD Fl-L-AKMAM. 503 ने मुझ पर अत्याचार किया जब उन्होंने मुझे उस जगह कैद कर दिया जहाँ वह कभी नहीं आ सकता। मैं सूर्य से प्रार्थना करती हूँ कि वह उदय होते समय और अस्त होते समय उस प्रियतम को हज़ार प्रणाम करे, जो सुंदरता में पूर्णिमा को भी लज्जित करता है और पतली शाखा से भी अधिक सुंदर है। यदि गुलाब की तुलना उसके गाल से की जाए, तो मैं उसके बारे में कहती हूँ, यदि तुम मेरे अंश के न हो, तो तुम उसके समान नहीं हो।14 उसके मुँह की नमी उस सुखद शराब के समान है जो मेरे भीतर की आग को शांत करती है। मैं उसे कैसे छोड़ सकती हूँ जो मेरा हृदय और मेरी आत्मा है, मेरे क्षय और रोग का कारण है, परन्तु मेरा प्रियतम और मेरा चिकित्सक है! और जब रात का अँधेरा उस पर छा गया, तो उसकी इच्छा और भी तीव्र हो गई, और उसने फिर अतीत की घटनाओं पर विचार किया, और कुछ छंद पढ़े जो इस प्रकार शुरू होते हैं: — अँधेरा है, और मेरा उत्साह और रोग उत्तेजित हैं, और इच्छा मेरे सामान्य दर्द को बढ़ा रही है। मेरे हृदय में विरह की पीड़ा निरंतर बनी रहती है, और मन की व्याकुलता ने मुझे निर्धन बना दिया है। अब उन्स-अल-अरुजूद की ओर लौटते हुए— भक्त ने उनसे कहा,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.75%** है।

504 उन्स-अल-वुजूद की कहानी: घाटी में उतरकर खजूर के पेड़ों से कुछ रेशे लाकर दो।15 सो वह उतरा और खजूर के पेड़ों के कुछ रेशे ले आया; और भक्त ने उन्हें लेकर मोड़ा और उनसे एक जाल बनाया,16 जैसा कि भूसा ढोने के लिए इस्तेमाल होता है; इसके बाद उसने कहा, हे उन्स-अल-वुजूद, घाटी के बीच में एक प्रकार का लौकी17 है जो अपनी जड़ों पर उगता और सूखता है: तो उसके पास जाओ, इस जाल को लौकियों से भर दो, इसे बांधो और समुद्र में फेंक दो; फिर उस पर सवार होकर समुद्र

के बीच में चले जाओ: शायद तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाए; क्योंकि जो स्वयं को जोखिम में नहीं डालता, उसे अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं होता। इस पर उन्स-अल-वुजूद ने उत्तर दिया, मैं सुनता और आज्ञा मानता हूँ। और उसने उसे विदाई दी, और भक्त द्वारा प्रार्थना किए जाने के बाद, उसके निर्देशानुसार कार्य करने के लिए उससे विदा लिया। वह बिना रुके घाटी के मध्य में चला गया, और भक्त के कहे अनुसार कार्य किया; और जब वह जाल पर सवार होकर समुद्र के बीचोंबीच पहुँचा, तो उस पर एक हवा चली जिसने उसे जाल सहित तब तक धकेला जब तक कि वह भक्त की आँखों से ओझल नहीं हो गया। वह गहरे समुद्र की सतह पर निरंतर चलता रहा, एक लहर उसे ऊपर उठाती और दूसरी उसे नीचे गिराती, जबकि वह समुद्र के चमत्कारों और भयावहता को देखता रहा, जब तक कि तीन दिनों के बाद नियति ने उसे माता पर्वत पर नहीं पहुँचा दिया। वह भूख और प्यास से व्याकुल एक चंचल युवा पक्षी की तरह उतरा; लेकिन उसने वहाँ बहती नदियाँ, शाखाओं पर चहचहाते पक्षी और एक ही प्रकार के और विभिन्न प्रकार के फलदार वृक्ष पाए; और उसने फल खाए और नदियों का पानी पिया। फिर वह उठा और चलने लगा; और उसने दूर कुछ सफेद देखा; इसलिए वह उस ओर बढ़ता रहा और जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने पाया कि वह एक अभेद्य महल था। वह उसके द्वार पर पहुँचा और उसे बंद पाया; और वह तीन दिन तक वहीं बैठा रहा: लेकिन अंत में, जब वह वहाँ बैठा था, महल का द्वार खुल गया, और उसमें से एक हिजड़ा बाहर आया, जिसने उन्स-अल-वुजूद को बैठे हुए देखकर उससे पूछा, तुम कहाँ से आए हो, और तुम्हें यहाँ कौन लाया है? उसने उत्तर दिया, इस्फ़हान से, और मैं माल के साथ एक यात्रा पर था, और जिस जहाज में मैं था वह टूट गया, और लहरें मुझे इस द्वीप पर फेंक लाईं। यह सुनकर हिजड़ा रो पड़ा, और उसे गले लगाते हुए बोला, हे मित्रों के सरदार! ईश्वर

आपकी आयु दीर्घ करे! निःसंदेह, इस्फ़हान मेरा जन्मस्थान है, और वहाँ मेरी एक चचेरी बहन है, जो मेरे चाचा की बेटी है, जिससे मैं अपनी जवानी में प्यार करता था, और मैं उससे बहुत प्रेम करता था; लेकिन हमसे अधिक शक्तिशाली लोगों ने हम पर युद्ध किया और मुझे अपने साथ लूट के माल में ले गए, जब मैं अभी जवान ही था, और मुझे बेच दिया: इस प्रकार मैं अपनी वर्तमान स्थिति में पहुँच गया हूँ। — और अभिवादन करने के बाद

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.95%** है।

और अल-वार्ड फ़िल-अकमम ने उनका स्वागत किया और उनकी दीर्घायु की कामना करते हुए उन्हें महल के प्रांगण में ले गए, जहाँ प्रवेश करते ही उन्होंने देखा कि एक विशाल तालाब पेड़ों से घिरा हुआ है, जिनकी शाखाएँ फैली हुई हैं, और उसमें सोने के दरवाजों वाले चाँदी के पिंजरों में पक्षी हैं: ये पिंजरे शाखाओं से लटके हुए थे, और उनमें पक्षी चहचहा रहे थे, और दयालु राजा की स्तुति गा रहे थे। उनमें से पहले के पास आकर उन्होंने उसे देखा; और देखो, वह एक कबूतर था; और जब उसने उन्हें देखा, तो उसने ऊँची आवाज़ में पुकारा, 'हे दयालु!' 8 इस पर उन्स-अल-वुजूद बेहोश होकर गिर पड़े; और होश में आने पर उन्होंने कराहते हुए ये छंद पढ़े: - हे कबूतर, क्या तू भी मेरी तरह मोहित है? तो प्रभु से प्रार्थना कर, और चहचहा, हे दयालु! क्या यह तुम्हारा रोना आनंद से उपजा है, या हृदय में बसी इच्छा से? यदि तुम्हारा अर्थ उस प्रियतम के बिछड़ने के कारण होने वाले उल्लास से है जो तुम्हें अकेला और उदास छोड़ गया है, और मेरी तरह तुमने भी अपने प्रियतम को खो दिया है, तो यह वियोग ही तुम्हारे लंबे समय से चले आ रहे आनंद को प्रकट करता है। हे अल्लाह, सच्चे प्रेमी की रक्षा करे! मैं उसे अपने शरीर के सड़ने पर भी नहीं छोड़ूंगा।

और इन छंदों को समाप्त करने के बाद, वह तब तक रोता रहा जब तक कि वह फिर से बेहोश होकर गिर नहीं पड़ा; और जब वह ठीक हो गया, तो वह दूसरे पिंजरों के पास गया, और उसी तरह एक कबूतर, एक हेज़र,19 एक बुलबुल और एक जंगली कबूतर को संबोधित किया, जो मानो उत्तर में ये पंक्तियाँ बोल रहा हो: — • हे प्रेमी, तूने मुझे वह समय याद दिला दिया जब मेरी प्रारंभिक शक्ति कमजोर हो गई थी, और एक प्रेम पात्र, जिसके रूप पर मैं मोहित था, जो अतुलनीय और मोहक सौंदर्य से संपन्न था, जिसकी आवाज़, जब वह रेत के टीले की शाखाओं पर बैठा था, तो मुझे बांसुरी की आवाज़ सुनने से विचलित कर देती थी। एक शिकारी ने उसके लिए जाल बिछाया, और उसे पकड़ लिया, जबकि वह रो रहा था, हे, काश वह मुझे छोड़ दे! मुझे आशा थी कि वह दयालु होगा; या यह कि मुझे प्रेमी देखकर वह मुझ पर दया करेगा। लेकिन ईश्वर ने उसे मार डाला जब उसने इस प्रकार क्रूरता से मुझे मेरे प्रिय से अलग कर दिया। उसके लिए मेरी चाहत अत्यधिक बढ़ गई है, और इसने मुझे अलगाव की आग से तड़पाया है। अल्लाह उस भावुक प्रेमी की रक्षा करे, जिसने प्रेम से संघर्ष किया है और मेरे दुख को जाना है, और मुझे इतने लंबे समय तक अपने पिंजरे में कैद देखकर, दया करके मुझे मुक्त करे ताकि मैं अपने प्रियतम के पास जा सकूँ। फिर उसने अपने मित्र, इस्फ़हान के उस व्यक्ति की ओर देखा और उससे कहा, यह महल क्या है, इसमें क्या है, और इसे किसने बनवाया है? उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, ऐसे राजा के वज़ीर ने इसे अपने लिए बनवाया था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.74%** है।

506 उन्स-अल-वुजूद की कहानी, इत्यादि। बेटी को विपत्तियों और विपत्तियों से बचाने के लिए, उसने उसे और उसके आश्रितों को उसमें

ठहराया है, और यह साल में केवल एक बार खोला जाता है, जब उनके लिए भोजन लाया जाता है। - तो उसने मन ही मन कहा, मेरी इच्छा पूरी हो गई है; लेकिन प्रतीक्षा का समय लंबा है। अब इस दौरान, अल-वार्ड फ़ी-अल-अकरमिर्न को न तो पीने को कुछ अच्छा लगा, न खाने को, न बैठने को और न सोने को। उसकी प्रेम की इच्छा, उन्माद और बेचैनी बढ़ गई थी; और उसने महल के कोनों में खोजबीन की, लेकिन उसे बचने का कोई रास्ता नहीं मिला; और वह रो पड़ी, और इन छंदों का पाठ किया: उन्होंने मुझे मेरे प्रियतम से क्रूरतापूर्वक अलग कर दिया है, और मुझे मेरी कैद में पीड़ा का स्वाद चखाया है। उन्होंने मुझे उसे देखने से रोककर मेरे दिल को प्रेम की आग से तड़पाया है। उन्होंने मुझे समुद्र के बीच में स्थित एक पहाड़ पर एक ऊंचे महल में कैद कर रखा है। यदि वे चाहते हैं कि मैं उसे त्याग दूँ, तो उनकी इच्छा व्यर्थ है, क्योंकि मेरा प्रेम और भी कठिन हो गया है। मैं उसे कैसे त्याग सकती हूँ, जब मेरे सभी कष्टों का कारण उसका चेहरा देखना ही है? मेरा सारा दिन शोक में बीतता है, और रात मैं उसके बारे में सोचते हुए बिताती हूँ। उसकी याद मुझे एकांत में सुकून देती है, जबकि मैं उसकी अनुपस्थिति में खुद को अकेला पाती हूँ। काश, मुझे पता होता कि इन सब के बाद, क्या भाग्य मेरी दिल की इच्छा पूरी करेगा! फिर वह महल की छत पर गई, और बासला-बेक के वस्त्रों में से कुछ लेकर, उनसे खुद को बाँध लिया, और नीचे उतर गई जब तक कि वह ज़मीन पर नहीं आ गई। उसने अपने सबसे शानदार वस्त्र पहने हुए थे, और उसके गले में रत्नों का हार था। और वह आस-पास के रेगिस्तानों और बंजर भूमि को पार करती हुई समुद्र तट पर पहुँची, जहाँ उसने एक मछुआरे को अपनी नाव में समुद्र में मछली पकड़ते हुए देखा। हवा उसे उस द्वीप की ओर ले गई थी, और उसने देखा तो वहाँ अल-वार्ड फ़ी-1-अकमम थी; परन्तु उसे देखते ही वह भयभीत हो गया और अपनी नाव

को तेज़ी से मोड़कर भाग गया। तब उसने उसे पुकारा, अनेक संकेत किए और कुछ श्लोक सुनाए, जिससे उसे पता चला कि वह एक मनुष्य है (जिन्न नहीं, जैसा कि उसे डर था), और उसने अपनी स्थिति स्पष्ट की; यह सुनकर मछुआरा रोने, आहें भरने और विलाप करने लगा, उसे अपने यौवन के दिन याद आ गए जब प्रेम उस पर हावी हो गया था, उसकी इच्छा प्रचंड थी, उसका उन्माद और बेचैनी चरम पर थी, वासना की आग उसे जला रही थी; और उसने उसे श्लोकों में उत्तर दिया, और बताया कि वह अपने यौवन से ही प्रेम से पीड़ित रहा है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **28.25%** है।

फिर उसने अपनी नाव को किनारे से बांध दिया और उससे कहा, “नाव में सवार हो जाओ, ताकि मैं तुम्हें तुम्हारी मनचाही जगह पर पहुंचा सकूं।” सो वह नाव में सवार हो गई; और उसने नाव को उसके साथ पानी में छोड़ दिया, और जब नाव किनारे से थोड़ी दूर चली गई, तो उस पर अनुकूल हवा चलने लगी, और नाव तेजी से आगे बढ़ने लगी जब तक कि किनारा उनकी आंखों से ओझल नहीं हो गया। तब मछुआरा समझ नहीं पा रहा था कि नाव को किस दिशा में ले जाए; और हवा तीन दिनों तक तेज चलती रही; जिसके बाद ईश्वर की कृपा से (जिनका नाम महान हो!) वह शांत हो गई, और नाव उन्हें तब तक ले जाती रही जब तक कि वह समुद्र के किनारे एक शहर में नहीं पहुंच गई, जहां मछुआरा नाव को बांधना चाहता था। इस शहर में दिरबास नाम का एक महान शक्तिशाली राजा था।20 वह उस समय अपने बेटे के साथ अपने महल में बैठा था, और वे एक खिड़की से देख रहे थे, और समुद्र की ओर देखते हुए उन्होंने उस नाव को देखा; और जब उन्होंने ध्यान से उसका अवलोकन किया, तो उन्होंने पाया कि उसमें आकाश में पूर्णिमा के चंद्रमा के समान एक युवती थी, जिसके

कानों में कीमती माणिक्य के झुमके और गले में बहुमूल्य रत्नों का हार था। इसलिए राजा को पता चल गया कि वह उसी वंश की है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.25%** है।

508 उन्स-अल-वुहुद की कहानी: एक राजा अपने महल से नीचे उतरा और समुद्र की ओर खुलने वाले एक द्वार से बाहर निकला; वहाँ उसने देखा कि एक नाव किनारे से बंधी हुई है; और युवती सो रही थी, जबकि मछुआरा नाव को बांधने में व्यस्त था। राजा ने उसे नींद से जगाया, और वह रोते हुए उठी; और राजा ने उससे कहा, तुम कहाँ से आई हो, तुम

किसकी पुत्री हो, और यहाँ आने का क्या कारण है? तो उसने उत्तर दिया, मैं राजा शमीख21 के वज़ीर इब्राहीम की पुत्री हूँ, और मेरे यहाँ आने का कारण एक अद्भुत घटना और एक असाधारण मामला है। और उसने उसे अपनी पूरी कहानी शुरू से अंत तक सुनाई, उससे कुछ भी नहीं छिपाया; जिसके बाद, उसने आहें भरीं और कुछ छंद पढ़े; और राजा ने उनकी बातें सुनकर उसके उत्साह और इच्छा को समझ लिया और उस पर दया आ गई; उसने उससे कहा, "तुम्हें डरने या भयभीत होने का कोई कारण नहीं है। तुम्हारी इच्छा पूरी हो गई है; क्योंकि मैं तुम्हारे लिए तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगा और तुम्हें वह दिलाऊँगा जिसकी तुम्हें तलाश है: और मेरी ये बातें सुनो।" — फिर उसने ये छंद पढ़े: — "हे महान पुत्री, तुमने अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया है। शुभ समाचार सुनो, और यहाँ की थकान से मत डरो। आज मैं धन इकट्ठा करूँगा और उसे शमीख के पास घुड़सवारों और वीरों के साथ भेजूँगा: मैं उसे कस्तूरी, जकूज़ी और सफेद चाँदी के थैले भेजूँगा, और सोना भी भेजूँगा। हाँ; और मेरे पत्र उसे मेरी ओर से सूचित करेंगे कि मैं उससे गठबंधन करना चाहता हूँ; और आज मैं तुम्हारी सहायता के लिए प्रयास करूँगा, ताकि तुम्हारी इच्छा शीघ्र पूरी हो सके।" मैंने प्रेम का स्वाद लंबे समय तक चखा है और उसे जाना है, और जिसने भी वही प्याला पिया है, उसे क्षमा करता हूँ। और जब उसने अपनी कविताएँ समाप्त कर लीं, तो वह अपनी सेना के पास गया, और अपने वज़ीर को बुलाकर उसके लिए अथाह धन इकट्ठा करवाया, और उसे आदेश दिया कि वह उसे लेकर राजा शमीख के पास जाए, और उससे कहा, "तुम्हें उसके साथ मौजूद उन्स-अल-वुजूद नामक व्यक्ति को मेरे पास अवश्य लाना होगा; और उससे कहना, "राजा अपनी पुत्री का विवाह तुम्हारे आश्रित उन्स-अल-वुजूद से करवाकर तुमसे गठबंधन करना चाहता है/2 और उसे मेरे साथ भेजा जाना चाहिए, ताकि उसके पिता के राज्य में उसके साथ

विवाह अनुबंध की रस्म पूरी हो सके।" तब बादशाह दिरबास ने बादशाह शमीख को उपर्युक्त आशय का पत्र लिखा और उसे अपने वज़ीर को सौंप दिया, जिसमें उसे सख्ती से आदेश दिया गया था कि वह उन्सेल-वुजूद को लाए और उससे कहा, यदि तू उसे मेरे पास नहीं लाता, तो तुझे तेरे पद से हटा दिया जाएगा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.57%** है।

और एल-वार्ड एफटी-एल-अकमम। 509 तब वज़ीर ने उत्तर दिया, "मैं सुनता और मानता हूँ," और उपहार लेकर राजा शमीख के पास गया। जब वह उसके पास पहुँचा, तो उसने राजा दिरबास का अभिवादन दिया और उसे वह पत्र और उपहार सौंप दिया जो वह लाया था। परन्तु जब राजा शमीख ने उन्हें देखा, पत्र पढ़ा और उसमें उन्स-अल-वुजूद का नाम देखा, तो वह फूट-फूट कर रोया और अपने पास भेजे गए वज़ीर से कहा, "उन्स-अल-वुजूद कहाँ है? वह चला गया है और हमें नहीं पता कि वह कहाँ है। उसे मेरे पास लाओ, और मैं तुम्हें तुम्हारे लाए हुए उपहारों का दुगुना दूँगा।" तब वह रोया, आहें भरीं और विलाप किया, आँसू बहाए और ये आयतें पढ़ीं: "मेरे प्रिय को मुझे लौटा दो; मुझे धन की कमी नहीं है; न ही मैं रत्नों या मोतियों के उपहार चाहता हूँ।" मैंने उसे बचपन से ही प्यार से पाला-पोसा है, और सचमुच मैं उसके लिए मन ही मन दुखी और व्याकुल हूँ। इसके बाद, उसने उपहार और पत्र लाने वाले वज़ीर की ओर देखा और उससे कहा, अपने स्वामी के पास जाओ और उन्हें सूचित करो कि उन्स-अल-वुजूद एक वर्ष से लापता है, और उसके स्वामी को नहीं पता कि वह कहाँ गया है, न ही उसे उसके बारे में कोई खबर मिली है। लेकिन वज़ीर ने उत्तर दिया, हे मेरे स्वामी, मेरे सम्राट ने मुझसे कहा है, यदि तुम उसे मेरे पास नहीं लाओगे, तो तुम्हें वज़ीर के पद से हटा दिया

जाएगा और तुम मेरे नगर में प्रवेश नहीं कर पाओगे। फिर मैं उसके बिना उसके पास कैसे जा सकता हूँ? — तब राजा शमीख ने अपने वज़ीर इब्राहीम से कहा, तुम उसके साथ कुछ लोगों को लेकर जाओ और उन्स-अल-वुजूद को हर जगह खोजो। और उसने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। तदनुसार, उन्होंने अपने आश्रितों का एक दल लिया और राजा दिरबास के वज़ीर के साथ, वे उन्स-अल-वुजूद की खोज में निकल पड़े; और जब भी वे अरबों23 या किसी अन्य जाति के लोगों के पास से गुज़रते, तो वे उनसे उन्स-अल-वुजूद के बारे में पूछते, और कहते, क्या तुम्हारे यहाँ से कोई ऐसे नाम और ऐसे विवरण वाला व्यक्ति गुज़रा है? जिस पर वे उत्तर देते, हम उसे नहीं जानते। उन्होंने शहरों और गाँवों में पूछताछ करना और मैदानी और ऊबड़-खाबड़ इलाकों, रेगिस्तानों और बंजर भूमि में खोज करना तब तक नहीं छोड़ा, जब तक कि वे समुद्र तट पर नहीं पहुँच गए; वहाँ उन्होंने एक जहाज़ ढूँढा और उसमें सवार होकर तब तक यात्रा की जब तक वे निःसंतान माता के पर्वत के पास नहीं पहुँच गए। इस पर, राजा दिरबास के वज़ीर ने राजा शमीख के वज़ीर से पूछा, इस पर्वत का ऐसा नाम क्यों है? और बाद वाले ने उत्तर दिया, इसका कारण यह है: प्राचीन काल में एक जिन्न यहाँ निवास करती थी, और वह जिन्न चीन की जिन्नों में से थी। वह एक पुरुष से प्रेम करती थी और उससे अत्यधिक आसक्त हो गई थी; परन्तु उसे अपने परिवार का भय था; और उसकी इच्छा के कारण

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.98%** है।

अत्यधिक बेचैनी के कारण, उसने धरती पर ऐसी जगह खोजी जहाँ वह उसे उनसे छिपा सके, और उसे यह पर्वत मिला जो मनुष्यों और जिन्नों दोनों से कटा हुआ था, इसलिए इन दोनों जातियों में से कोई भी (स्वयं

को छोड़कर) वहाँ तक नहीं पहुँच सका। इसलिए उसने अपने प्रियतम को वहाँ ले जाकर रख दिया, और अपने परिवार के पास जाकर उससे अकेले में मिलने जाती रही; और वह लंबे समय तक ऐसा करती रही, जब तक कि उसने उस पर्वत पर उसे कई संतानें नहीं दीं। और जो व्यापारी समुद्र यात्रा के दौरान इस पर्वत से गुजरते थे, वे शिशुओं के रोने की आवाज सुनते थे, जैसे कोई स्त्री अपने बच्चों से बिछड़ी हो; तब वे कहते थे, क्या यहाँ कोई बिछड़ी माँ है? — और राजा दिरबास के वज़ीर को ये शब्द सुनकर आश्चर्य हुआ। फिर वे आगे बढ़ते हुए महल तक पहुँचे, और उन्होंने दरवाजा खटखटाया; दरवाजा खोला गया और एक हिजड़ा बाहर आया, जिसने बादशाह शमीख के वज़ीर इब्राहीम को पहचानते हुए उनके हाथ चूमे। वज़ीर इब्राहीम महल में दाखिल हुए और वहाँ उन्होंने एक गरीब आदमी को पाया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.84%** है।

उन्स-अल-वुजूद की कहानी, इत्यादि। 511 सेवक; और वह उन्स-अल-वुजूद था। उसने उनसे पूछा, यह आदमी कहाँ से आया है? उन्होंने उत्तर दिया, वह एक व्यापारी है: समुद्र में उसकी संपत्ति खो गई थी, और उसने खुद को बचा लिया; और वह संसार से विमुख व्यक्ति है।24 इसलिए वह उसे छोड़कर महल के भीतर चला गया; लेकिन उसे अपनी बेटी का कोई निशान नहीं मिला; और उसने वहाँ मौजूद दासियों से पूछा, और उन्होंने उत्तर दिया, हमें नहीं पता कि वह कैसे गई, और वह हमारे साथ थोड़े समय से अधिक नहीं रुकी। और इस पर, वह फूट-फूट कर रोने लगा, और इन छंदों का पाठ किया: — हे महल, जिसके पक्षी गाते थे, और

जिसकी दहलीज सौभाग्यशाली थी, जब तक कि एक प्रेमी अपनी इच्छा का विलाप करते हुए तेरे पास नहीं आया, और उसने द्वार खुला देखा! 25 काश, मुझे पता होता कि मेरी आत्मा कहाँ चली गई है, जो कुछ समय पहले एक महल में थी जिसकी मालकिन अब दूर चली गई है! वह महल हर तरह की भव्यता से भरा हुआ था, और उसके दरबारी सुखी और ऊंचे दर्जे के थे, और उन्होंने उसे जकूज़ी के पर्दों से सजाया था। हे, उसकी मालकिन कहाँ चली गई? तब वह रोया, आहें भरीं और विलाप किया, और बोला, परमेश्वर ने जो तय किया है, उसके विरुद्ध कोई उपाय नहीं है, और न ही उससे कोई बच सकता है जो उसने पूर्वनियोजित और निर्धारित किया है! और वह महल की छत पर चढ़ गया, और उसने बाला-बेक के वस्त्रों को प्राचीरों से बंधा हुआ और ज़मीन तक पहुँचता हुआ पाया। तब वह जान गया कि वह उस स्थान से नीचे उतर गई है, और किसी व्याकुल और भ्रमित व्यक्ति की तरह चली गई है। और उसने इधर-उधर देखा, और वहाँ दो पक्षी, एक कौआ और एक उल्लू देखा, जिन्हें देखकर उसने अपशगुन का अनुमान लगाया; और वह कराह उठा और इन छंदों का पाठ किया: — मैं अपनी प्रेमिका के घर आया, उसे देखकर अपने आनंद और पीड़ा को शांत करने की आशा में; परन्तु मैंने उसे वहाँ नहीं पाया, और न ही मुझे वहाँ एक अशुभ कौवे और उल्लू के सिवा कुछ मिला; और यह दृश्य मुझे कह रहा था, तूने दो प्रेम-प्रेमियों को अलग करके क्रूरता की है: इसलिए तू भी उस दुःख का स्वाद चखो जो उन्होंने चखा है, और दुःख में जी, रोता और जलता रहे। फिर वह महल की छत से रोते हुए नीचे उतरा और नौकरों को अपनी प्रेमिका को खोजने के लिए पहाड़ पर जाने का आदेश दिया; और उन्होंने ऐसा किया; परन्तु उसे नहीं पाया। — इस बीच, जब उन्स-अल-वुजूद को यह आश्वासन मिला कि अल-वार्ड फ़ी-उकमम चला गया है, तो वह जोर से रोया और बेहोश होकर गिर पड़ा, और वह

काफी देर तक उसी अवस्था में रहा; और उन्होंने कल्पना की कि वह संसार से विमुख हो गया था।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.64%** है।

513 कहानी सीडब्ल्यू एल'एनएस-एल-वुजूद और वह झूठ प्रतिफल देने वाले की महिमा की सुंदरता के चिंतन में डूब गया।20 अब जब वे उन्स-एल-वुजूद को खोजने से निराश हो गए, और वज़ीर इब्राहीम का हृदय अपनी पुत्री एल-वार्ड फ़ी-1-अकमम के खोने से व्याकुल था, तो राजा दिरबास के वज़ीर ने अपने देश लौटने की इच्छा की, यद्यपि उनकी यात्राओं से उनकी इच्छा पूरी नहीं हुई थी। इसलिए वज़ीर इब्राहीम ने उन्हें विदाई देना शुरू किया; और राजा दिरबास के वज़ीर ने उनसे कहा, मैं इस गरीब आदमी को अपने साथ ले जाना चाहता हूँ: शायद ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) उस पर मौजूद आशीर्वाद से राजा के हृदय को मेरी ओर झुका दे; क्योंकि वह संसार से विमुख व्यक्ति है; और उसके बाद, मैं उसे इस्फ़हान भेज दूँगा, क्योंकि यह हमारे देश के निकट है। वज़ीर इब्राहीम ने उत्तर दिया, "जैसा तुम चाहो, वैसा करो।" और सभी वज़ीर अपने-अपने देश चले गए। राजा दिरबास के वज़ीर अपने साथ उन्स-अल-वुजूद को ले गए, जो अभी भी बेहोश था, और तीन दिन तक उसके साथ यात्रा करते रहे। इस दौरान वह लगातार बेहोशी की हालत में खच्चरों पर लादा जाता रहा, और उसे पता भी नहीं चल रहा था कि उसे ले जाया जा रहा है या नहीं। जब वह बेहोशी से ठीक हुआ, तो उसने पूछा, "मैं कहाँ हूँ?" उन्होंने उत्तर दिया, "तुम राजा दिरबास के वज़ीर के साथ हो।" तब वे वज़ीर के पास गए और उसे बताया कि वह ठीक हो गया है; इस पर उसने उसके लिए गुलाब जल और चीनी का शरबत भेजा, जिसे उसने पीकर उसे होश में लाया। वे अपनी यात्रा जारी रखते हुए राजा दिरबास के नगर के पास

पहुँचे, तब राजा ने वज़ीर को संदेश भेजा और कहा, "यदि उन्स-अल-वुजूद तुम्हारे साथ न हो, तो मेरे पास कभी मत आना।" अत: जब उसने राजा का आदेश पढ़ा, तो वह दुखी हो गया। वज़ीर को यह नहीं पता था कि अल-वार्ड फ़ी-1-अकम राजा के साथ है, न ही उसे राजा द्वारा उसे उन्स-अल-वुजूद के पास भेजने का कारण पता था, न ही उससे गठबंधन करने की इच्छा का कारण; और उन्स-अल-वुजूद को यह नहीं पता था कि वे उसके साथ कहाँ जा रहे हैं, न ही यह कि वज़ीर को उसे ढूँढ़ने के लिए भेजा गया है; और न ही वज़ीर को यह पता था कि यह उन्स-अल-वुजूद है। और जब वज़ीर ने देखा कि वह ठीक हो गया है, तो उसने उससे कहा, "सचमुच राजा ने मुझे एक काम पर भेजा है, और वह पूरा नहीं हुआ है; और जब उसे मेरे आने का पता चला, तो उसने मुझे एक पत्र भेजा, जिसमें लिखा था, 'यदि काम पूरा न हो, तो मेरे शहर में प्रवेश मत करना।' और उन्स-अल-वुजूद ने पूछा, राजा का काम क्या है? तब वज़ीर ने उसे पूरी बात बताई।" और उन्स-अल-वुजूद ने उससे कहा, डरो मत; बल्कि बादशाह के पास जाओ और मुझे भी अपने साथ ले जाओ; मैं उन्स-अल-वुजूद के आने की ज़मानत तुम्हारे लिए दूंगा। यह सुनकर वज़ीर प्रसन्न हुआ और उससे बोला, क्या यह सच है कि

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.94%** है।

और एल-वार्ड फ़िल-अकमम। 513 तुम कहते हो? उसने उत्तर दिया, हाँ। और फिर वह उसे अपने साथ लेकर घोड़े पर सवार हुआ और राजा के पास ले गया; जब वे उसके पास पहुँचे, तो राजा ने वज़ीर से पूछा, उन्स-अल-वुजूद कहाँ है? जिस पर उन्स-अल-वुजूद ने उत्तर दिया, हे राजा, मैं जानता हूँ कि उन्स-अल-वुजूद कहाँ है। और राजा ने उसे अपने पास बुलाया और पूछा, वह किस स्थान पर है? उसने उत्तर दिया, बहुत पास

ही; लेकिन मुझे बताइए कि आप उससे क्या चाहते हैं, और फिर मैं उसे आपके सामने लाऊँगा। राजा ने उत्तर दिया, सहर्ष: लेकिन इस मामले में गोपनीयता आवश्यक है। फिर उसने लोगों को एकांत में जाने का आदेश दिया, और उसके साथ एक कोठरी में जाकर, उसे पूरी कहानी शुरू से अंत तक बताई; तब उन्स-अल-वुजूद ने उससे कहा, मुझे कीमती वस्त्र उपलब्ध कराओ और मुझे पहना दो, मैं तुम्हें उन्स-अल-वुजूद शीघ्र ही ला दूंगा। राजा उसके लिए एक कीमती वस्त्र लाया, और उसने उसे पहनकर कहा, मैं उन्स-अल-वुजूद हूँ, और ईर्ष्यालु लोगों के लिए दुख का कारण हूँ। फिर उसने अपनी निगाहों से देखने वालों के दिलों को भेद दिया, और ये छंद पढ़े: - एकांत में प्रियतम का ज़िक्र मुझे प्रसन्न करता है, और विरह की मेरी उदासी को दूर करता है। आँसुओं के सिवा मैं कोई और स्रोत नहीं जानता, जो मेरी आँखों से बहकर मेरी पीड़ा को शांत करते हैं। मेरी तड़प तीव्र है: इसके जैसी कोई और नहीं; और मेरे प्रेम और स्नेह की कहानी अद्भुत है। मैं रात भर जागता रहता हूँ, और जहन्नम और जन्नत के बीच अपने जुनून में भटकता रहता हूँ। मुझमें उचित धैर्य था; लेकिन अब मैंने उसे खो दिया है; और प्रेम का एकमात्र उपहार मुझे पीड़ा है, मैं उससे विरह के दर्द से क्षीण हो गया हूँ, और तड़प ने मेरे रूप और आकार को बदल दिया है, और मेरी पलकें आँसुओं से घायल हैं, जिन्हें मैं रोक नहीं सकता। मेरी शक्ति क्षीण हो गई है, और मैंने अपना दिल खो दिया है; और मैंने कितने ही दुख एक के बाद एक झेले हैं? और मेरा दिल और मेरा दिमाग एक प्रेमिका, सबसे सुंदर प्रेमिका के खोने से बूढ़े हो गए हैं। उसके बावजूद हमारा अलगाव हुआ, और उसकी एकमात्र इच्छा मुझे ढूँढ़ना और मुझसे मिलना है। क्या भाग्य, विरह और दूरी के बाद, मुझे मेरी प्रेमिका के साथ मिलन का आनंद देगा, अलगाव की किताब को खोलने के बाद बंद कर देगा, और मिलन के सुख से मेरे कष्टों को मिटा देगा? और क्या मेरी

प्रेमिका मेरी साथी होगी, और मेरे दुख शुद्ध आनंद में बदल जाएँगे? और जब उसने अपनी कविताएँ समाप्त कर लीं, तो राजा ने उससे कहा, अल्लाह की कसम, तुम दो सच्चे प्रेमी हो, और सौंदर्य के आकाश में दो चमकते सितारे हो; और आपका मामला अद्भुत है, और आपका प्रेम प्रसंग असाधारण है। आईटी. 3 यू

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.52%** है।

514 उन्स-अल-वुजूद की कहानी 1) तब उन्स-अल-वुजूद ने राजा से कहा, "हे युग के राजा, अल-वार्ड फ़ी-अल-अकमम कहाँ हैं?" राजा ने उत्तर दिया, "वह अभी मेरे साथ हैं।" उन्होंने कादी और गवाहों को बुलाया, अल-वार्ड फ़ी-अल-अकमम के साथ उनके विवाह अनुबंध की रस्म पूरी की और उनका सम्मान और सत्कार किया। उन्होंने राजा शमीख को उन्स-अल-वुजूद और अल-वार्ड फ़ी-अल-अकमम के संबंध में हुई सभी घटनाओं की सूचना भेजी। यह सुनकर राजा शमीख अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने राजा दिरबास को एक पत्र भेजा, जिसका सार यह था: "चूँकि अनुबंध की रस्म आपके निवास पर संपन्न हो चुकी है, इसलिए यह उचित है कि उत्सव और विवाह का समापन मेरे निवास पर हो। उन्होंने ऊँट, घोड़े और आदमियों को तैयार किया और उन्हें बुलवाया।" जब उनका पत्र राजा दिरबास के पास पहुँचा, तो उन्होंने उन्हें बड़ी धनराशि से सहायता दी और अपने सैनिकों की एक टुकड़ी के साथ उन्हें भेजा, जो उनके साथ तब तक चलती रही जब तक वे उनके शहर में प्रवेश नहीं कर गए; और वह एक उल्लेखनीय दिन था: इससे अधिक उल्लेखनीय दिन पहले कभी नहीं देखा गया था। राजा शमीख ने आनंद बढ़ाने वाले सभी संगीत वाद्ययंत्र एकत्र किए और भोज आयोजित किए; और यह सिलसिला सात दिनों तक चला; प्रत्येक दिन राजा ने लोगों को कीमती सम्मान वस्त्र प्रदान किए

और उन पर कृपा की। इसके बाद, उन्स-अल-वुजूद, अल-वार्ड फ़ी-अल-अकमम के पास गए और उन्हें गले लगाया; और वे अत्यधिक खुशी और आनंद से रोने लगे; और अल-वार्ड फ़ी-अल-अकमम ने ये छंद पढ़े: - खुशी आ गई है, क्रोध और दुःख को दूर करते हुए। हम एकजुट हैं, और हमने अपने ईर्ष्यालुओं को हरा दिया है। मिलन की सुगंधित हवा बह निकली है, और इसने हृदय, आंत और शरीर को पुनर्जीवित कर दिया है; और आनंद की सुंदरता सुगंध के साथ प्रकट हुई है, और हमारे चारों ओर खुशखबरी के ढोल बज रहे हैं।2? यह मत सोचो कि हम शोक से रो रहे हैं; क्योंकि हमारे आँसू खुशी से बहे हैं। हमने कितने ही भय देखे हैं! लेकिन वे बीत गए हैं; और हमने धैर्य से उस पीड़ा को सहा है जिसने हमें व्यथा कर दिया था। एक घंटे के मिलन ने मुझे वह सब भुला दिया है जिसने हमें अत्यधिक भय से उदास कर दिया था। फिर उन्होंने एक-दूसरे को गले लगाया, और तब तक ऐसा करते रहे जब तक कि वे एक साथ होने के आनंद से बेहोश होकर गिर नहीं पड़े; और जब वे होश में आए, तो उन्स-अल-वुजूद ने ये छंद पढ़े: — हे वादे की पूर्ति की रातें कितनी मधुर होती हैं, जब प्रियतम हमारे साथ होते हैं, और जब हम निरंतर एक साथ होते हैं, और एक अंत होता है, और भाग्य हमारे प्रति कृपा लेकर आता है, हमसे घृणा करने के बाद!

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.68%** है।

और एल-वार्ड फ़ी-ल-अकमम। 515 समृद्धि ने हमारे लिए अपने मानक स्थापित किए हैं, और हमने उसके हाथ से आनंद का प्याला पिया है; और हम मिले, और एक-दूसरे से अपने दुखों और उस दौरान हुए अत्याचारों के बारे में शिकायत की; लेकिन अब हम अपने दुखों को भूल गए हैं, हे मेरी प्रेमिका; और दयालु ईश्वर बीते हुए कल को क्षमा कर दे! जीवन कितना

आनंदमय और कितना मधुर है! मिलन ने तो मेरे प्रेम को और भी बढ़ा दिया है। और इसके बाद, वे फिर से गले मिले, और प्रेम-प्रसंग करते रहे, कविताएँ और सुखद कहानियाँ और इतिहास सुनाते रहे, जब तक कि वे प्रेम के सागर में डूब नहीं गए; और उनके ऊपर सात दिन बीत गए, जब वे अपने आनंद, प्रसन्नता, सुख और उल्लास की अधिकता के कारण रात और दिन का अंतर नहीं जान पाए। ऐसा लग रहा था मानो सात दिन एक दिन के बाद दूसरा दिन नहीं था; और उन्हें सातवें दिन का पता केवल संगीत वाद्ययंत्रों की आवाज से चला।28 फिर वे अपने कमरे से बाहर निकले, और लोगों को धन और वस्त्र दिए। और वे सबसे आनंददायक सुखों में एक साथ रहे, जब तक कि उनके जीवन में सुखों का अंत करने वाली और साथियों को अलग करने वाली घटना नहीं आ गई। उस परिपूर्णता की स्तुति हो जो न बदलता है, न रुकता है, और जिसके पास सब कुछ लौटकर आता है!29

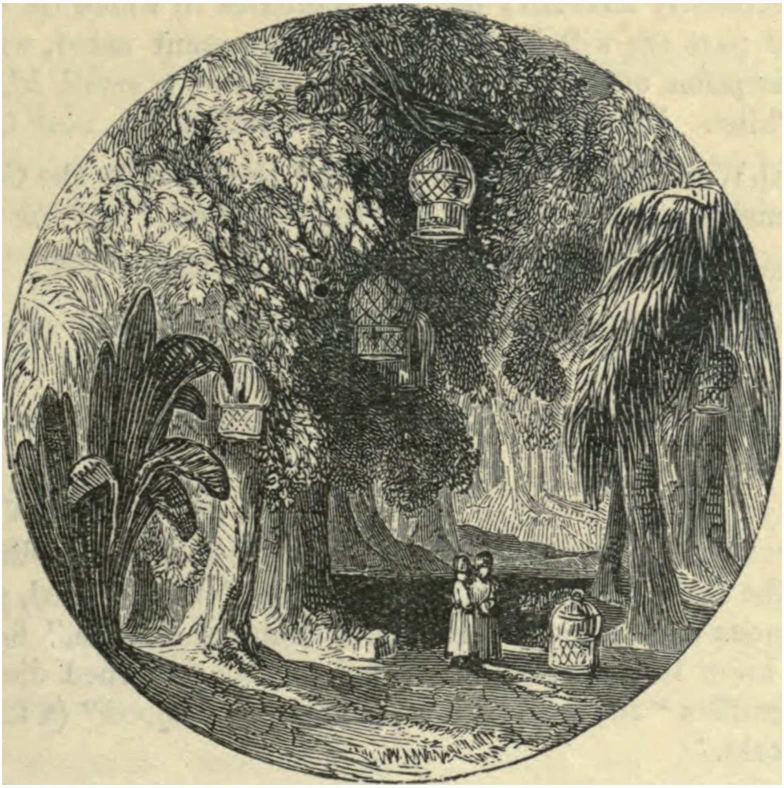

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.76%** है।

अठारहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। टिप्पणी 1. यह कहानी ट्रेबुटियन द्वारा फ्रेंच में, लेकिन काफी संक्षिप्त रूप में, और डॉ. स्कॉट द्वारा अंग्रेजी में, उससे भी अधिक संक्षिप्त रूप में दी गई है। मुझे लगा कि गद्य के पूरे भाग (कुछ शब्दों को छोड़कर) और कविता के आधे से अधिक भाग का अनुवाद किए बिना मूल पाठ का उचित भाव व्यक्त करना संभव नहीं होगा। कविता, अन्य पहलुओं में चाहे जो भी मानी जाए, अपनी विशिष्टता के लिए जानी जाती है; और यद्यपि इस कृति के अन्य भागों में अरबों की प्रेम कविताओं के नमूने मौजूद हैं, मुझे आशा है कि पाठक इस कहानी में उनकी अधिकता को क्षमा करेंगे क्योंकि यह पूरी तरह से प्रेम की कहानी

है। कहानी स्पष्ट रूप से अरबी है; लेकिन जिन देशों में इसके दृश्य घटित हुए हैं, वे संदिग्ध हैं। एक भाग में (जैसा कि बाद की टिप्पणी में दिखाया जाएगा), नील नदी के एक भाग और वहाँ स्थित एक छोटे द्वीप, फिलाए का अतिरंजित वर्णन प्रतीत होता है। एक अन्य पाठ में, इस्फ़हान के निकट एक देश का उल्लेख किया गया है। टिप्पणी 2. "अल-वार्ड फ़ी-1-अकमम" का अर्थ है "पंखुड़ी में गुलाब", या शाब्दिक रूप से, "पंखुड़ी के खंडों में" यानी "गुलाब की कली", या "बिना खिला गुलाब"। टिप्पणी 3. यहाँ जिस खेल का उल्लेख किया गया है, वह गोफ़ का खेल प्रतीत होता है। टिप्पणी 4. पूर्व में जालीदार खिड़कियों में आमतौर पर छोटे फ्रेम होते हैं जो कब्जों पर खुलते हैं। टिप्पणी 5. मैंने अपने शेख की सलाह पर "बुरहतन" के स्थान पर "बघततन" पढ़ा है। टिप्पणी 6. मेरे शेख "उन्स-अल-वुजूद" (जिसे बोलचाल की भाषा में "अना-अल-वुजूद" उच्चारित किया जाता है) का अर्थ "लेज़्ज़ेट (या लेधधेत) एड-दुनिया" शब्दों से समझाते हैं, जिसका अर्थ है "दुनिया का आनंद"। यहां "उन्स" का प्रयोग, और कई अन्य मामलों में भी, "ईनास" ("अनासा" का क्रियापद रूप) के पर्यायवाची के रूप में किया गया है, हालांकि मुझे नहीं पता कि किसी प्रकाशित शब्दकोश में इसकी व्याख्या इस प्रकार की गई है; और "एलवुजूद" का अर्थ अक्सर "दुनिया" होता है; जैसे "लियोस्न-एल-वुजूद" (एक स्त्री नाम), "दुनिया की सुंदरता"। टिप्पणी 7. इस श्लोक में, मूल पाठ में, उन्स-एलवुजूद नाम पर एक शब्द-क्रीड़ा है, जिसका मैंने अनुकरण करने का प्रयास नहीं किया है। टिप्पणी 8. "नून" और "सद" अरबी वर्णमाला के दो अक्षर हैं। पहला, जैसा कि अक्सर होता है, लंबा करने पर एक सुंदर वक्र बनाता है; और दूसरा, बिना...

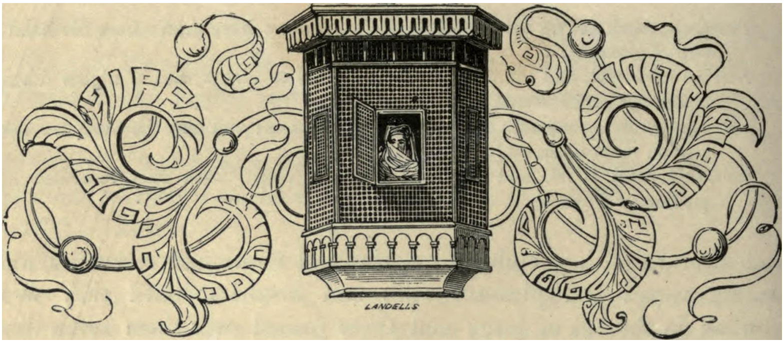

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.91%** है।

चैफर अठारहवें के लिए टिप्पणियाँ। 517 वक्र, जो अकेले आने पर या किसी शब्द के अंत में आने पर इसमें जोड़ा जाता है, बादाम के आकार की मानव आँख की रूपरेखा जैसा दिखता है। — "परोपकारी" ईश्वर के कई विशेषणों में से एक है। टिप्पणी 9. यहाँ उल्लिखित दो रकअह की प्रार्थनाएँ, सही दिशा प्राप्त करने के उद्देश्य से मुसलमानों द्वारा पालन की जाने वाली एकमात्र प्रथा नहीं हैं; कई अन्य प्रथाओं का वर्णन मैंने आधुनिक मिस्रियों पर अपने कार्य में, प्रथम खंड के अध्याय 11 के अंत में किया है। टिप्पणी 10. जिन शब्दों का मैंने अनुवाद "कुनूज़ का सागर" किया है, वे "बहर अल कुनूज़" हैं। "बहर" शब्द का प्रयोग "एक बड़ी नदी" और "समुद्र" दोनों के लिए किया जाता है, और "कुनूज़" का अनुवाद "खजाने" के रूप में किया जा सकता है; लेकिन मैं इन दोनों अरबी शब्दों में से दूसरे को बिना अनुवाद किए रखना पसंद करता हूँ, इसके निम्नलिखित कारण हैं: - नील नदी के तटों और द्वीपों में असवान से काफी उत्तर में वादी एस-सुबूआ तक निवास करने वाले लोगों को "कुनूज़" कहा जाता है; इसलिए नील नदी का वह भाग जो उनके देश से होकर बहता है, उसे उचित रूप से "बहर अल-कुनूज़" कहा जा सकता है; और फ़िला, जो नील नदी के इस भाग में, नूबिया की उत्तरी सीमा के निकट

स्थित है, अब "अनास- (या अधिक उचित रूप से उन्स-) अल-वुजूद का द्वीप" कहलाता है। इसलिए मुझे यह अत्यंत संभावित लगता है कि इस कहानी के लेखक ने इसे फ़िला और उसके आसपास के क्षेत्र में संरक्षित किसी परंपरा पर आधारित किया होगा। उस सुरम्य द्वीप के किसी भी अतिरंजित वर्णन को सुने बिना, उसने संभवतः उसका महिमामंडन करने, उसे एक नया नाम देने (जैसा कि कहानी के लिए आवश्यक था), और एक बड़ी नदी को समुद्र में परिवर्तित करने की स्वतंत्रता ले ली होगी। बर्कहार्ट 1 "अनस-अल-वुजूद" का अनुवाद "वुजूद के सामाजिक सुख" के रूप में करते हैं; और आगे कहते हैं, "अरबों का कहना है कि वुजूद उस शक्तिशाली राजा का नाम था जिसने फ़िले के मंदिरों का निर्माण किया था।" लेकिन, अगर मेरी स्मृति धोखा नहीं दे रही है, तो मुझे वहाँ बताया गया था कि उन मंदिरों के निर्माता का नाम केवल "वुजूद" नहीं बल्कि "अनस-अल-वुजूद" था; और उसके इतिहास के बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं चल सका - उससे संबंधित परंपरा लुप्त हो गई है। टिप्पणी 11. यह आमतौर पर तत्काल मृत्यु की अपेक्षा में किया जाता है। टिप्पणी 12. "अबू-1-हरितिर शेर का उपनाम है, जो उसे उसकी प्रचुर संपत्ति के कारण दिया गया था।2 टिप्पणी 13. सेयहून और जेयहून प्राचीन काल में जैक्सर्टेस और ऑक्सस कहलाने वाली नदियाँ हैं, जो अराल सागर में गिरती हैं। टिप्पणी 14. यानी, क्योंकि वह मेरे हिस्से का है, मेरे शेख के अनुसार। लेकिन क्या इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि, क्योंकि यदि मेरा गाल गुलाबी नहीं है तो उसका गाल गुलाबी कैसे हो सकता है? टिप्पणी 15. इन रेशों से, जो पेड़ के तने के ऊपरी भाग पर उगते हैं और जिन्हें अरबी में "पत्ती" कहा जाता है, अरबों द्वारा उपयोग की जाने वाली अधिकांश रस्सियाँ बनाई जाती हैं। टिप्पणी 16. यहाँ जिस जाल का उल्लेख किया गया है (मूल में "शिनफ"), वह एक बड़े बोरे के आकार का

है। टिप्पणी 17. ब्रेस्लाउ संस्करण में ऐसा ही है। काहिरा संस्करण में, एक बिंदु के लोप के कारण, शब्द "लौकी" के बजाय "शाखा" को दर्शाता है। टिप्पणी 18. प्रस्तावना की टिप्पणी 30 देखें। टिप्पणी 19. "हेज़र" बुलबुल की एक प्रजाति है, और इसे इसकी विभिन्न प्रकार की आवाज़ों के कारण यह नाम दिया गया है; "हेज़र" शब्द (जो फ़ारसी है) का अर्थ "हज़ार" होता है। टिप्पणी 20. "दिरबास" कई अरबी शब्दों में से एक है जिसका अर्थ "शेर" होता है। टिप्पणी 21. "शमीख" का अर्थ "ऊँचा", "महान" और "गर्वित" होता है। टिप्पणी 22. इस धोखे का स्पष्टीकरण अल-वार्ड की पुस्तक "ट्रैवल्स इन नूबिया", पृष्ठ 5 में मेरे शेख द्वारा लिखे गए हाशिये की टिप्पणी में दिया गया है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.38%** है।

अठारहवें अध्याय के लिए £18 टिप्पणियाँ। अकमाम ने राजा को उन्स-अल-वुजूद से अपने विवाह के विरुद्ध खड़ी की गई बाधाओं के संबंध में दान दिया था। टिप्पणी 23. यहाँ "अरबों" से हमारा तात्पर्य बेदावी, या रेगिस्तान के अरबों से है। टिप्पणी 21. इस अंश के उदाहरण के लिए, अध्याय iii की टिप्पणी G3 देखें, विशेष रूप से पृष्ठ 11 से 19 तक। टिप्पणी 25. ऐसा प्रतीत होता है कि वी/ईर इब्नवीम ने अनुमान लगाया कि उन्स-अल-वुजूद इस महल में आया था, और द्वार खुले देखकर अपनी प्रेमिका को ले गया था। टिप्पणी 2G. "लेक्विटर" ईश्वर के विशेषणों में से एक है। टिप्पणी 27. "हमारे चारों ओर" के रूप में अनुवादित शब्दों का शाब्दिक अर्थ "क्षितिज के चारों दिशाओं में" या "झलकते झंडों के बीच" है, जैसा कि मेरे शेख ने हाशिये पर टिप्पणी में समझाया है। शायद इन शब्दों और इनसे जुड़े अन्य शब्दों का अर्थ शुभ समाचार सुनकर हृदय की धड़कन का संकेत देना हो। ऊपर वर्णित अर्थों वाला शब्द "धड़कना" या

"स्पंदन" भी दर्शाता है; और "शुभ समाचारों के हमारे ढोल" के रूप में अनुवादित शब्द को समान रूप से ऐसी खबर सुनाने वाली किसी भी चीज़ पर लागू किया जा सकता है। टिप्पणी 28. "विवाह के सातवें दिन, पत्नी सुबह और दोपहर के दौरान अपनी महिला रिश्तेदारों और सहेलियों से मिलती है; और कभी-कभी पति शाम को अपने दोस्तों का मनोरंजन करता है; आमतौर पर खत्मेह या ज़िक्र करने के लिए लोगों को आमंत्रित करता है।"3 इस अवसर पर, और इसी तरह के अन्य अवसरों पर, मेहमानों के प्रत्येक समूह के मनोरंजन के लिए पेशेवर गायक और वादक कलाकारों को भी अक्सर किराए पर लिया जाता है। जिस मामले का उल्लेख यह टिप्पणी करती है, उसमें हम मान सकते हैं कि संगीतकारों को राजा द्वारा भेजा गया था। टिप्पणी 29. इसके बाद अड़तालीस कहानियों की एक लंबी श्रृंखला आती है, जो चार सौ चौबीसवीं रात के एक भाग के साथ समाप्त होती है। इनमें से बाईस कहानियों को मैंने अनुवाद के लिए चुना है और यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। एक आदमी और उसकी दासी की कहानी: ऐसा कहा जाता है कि अल-बसरा के निवासियों में से एक आदमी ने एक दासी खरीदी, जिसे उसने अच्छी तरह से शिक्षित और अनुशासित किया; और वह उससे बहुत प्यार करता था, और उसके साथ रहते हुए उसने अपनी सारी संपत्ति मनोरंजन और मौज-मस्ती में खर्च कर दी, जिससे उसके पास कुछ भी नहीं बचा, और वह अत्यधिक गरीबी से ग्रस्त हो गया। तब दासी ने उससे कहा, "हे मेरे स्वामी, मुझे बेच दो; क्योंकि तुम्हें मेरी कीमत की आवश्यकता है, और मैं तुम्हारी गरीबी की स्थिति देखकर तुम्हारे लिए दया से भर गई हूँ। यदि तुम मुझे बेचकर मेरी कीमत से अपना गुजारा करते हो, तो यह तुम्हारे लिए मेरे साथ रहने से बेहतर होगा!" और शायद ईश्वर (जिसका नाम महान है!) तुम्हारी जीविका को पर्याप्त बना दे। - अतः उसने अपनी परिस्थितियों के कारण उसके

प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। वह उसे लेकर बाज़ार गया, और दलाल ने उसे अल-बसरा के राज्यपाल, जिसका नाम अब्दुल्ला इब्न मैनार एट-तेमी था, को बेचने की पेशकश की; और वह उसे पसंद आई, और उसने उसे पाँच सौ सोने के सिक्कों में खरीद लिया, जो राशि उसने उसके स्वामी को दे दी। परन्तु जब उसके स्वामी ने धन प्राप्त कर लिया और जाने ही वाला था, तो दासी रोने लगी और यह दोहा पढ़ा: - जो धन तुमने एकत्र किया है, वह तुम्हें प्रसन्न करे! परन्तु मेरे लिए दुःख और चिंता के सिवा कुछ नहीं बचा। मैं अपनी अत्यंत पीड़ित आत्मा से कहती हूँ, थोड़ा शोक करो या अधिक: प्रियतम बिछड़ गया है।4 3 आधुनिक मिस्रियों पर मेरे कार्य से, खंड 2, अध्याय 14, * अर्थात्, मेरा शोक मुझे रोक नहीं पाएगा।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **24.62%** है।

यह सुनकर, उसके स्वामी ने आह भरी और उत्तर दिया: — यदि इस स्थिति में कोई उपाय न हो और मृत्यु के सिवा कुछ न मिले, तो मुझे क्षमा करें। आपके स्मरण से मुझे सांत्वना मिलेगी और मेरा हृदय शांत होगा। आप पर शांति हो! अब से हमारे बीच कोई मुलाकात या मिलन नहीं होगा जब तक कि अल्लाह न चाहे। और जब अल्लाह ने उनकी बातें सुनीं और उनके दुःख को देखा, तो उसने कहा, अल्लाह की कसम, मैं तुम्हें अलग करने का जरिया नहीं बनूंगा। मुझे स्पष्ट हो गया है कि तुम एक-दूसरे से प्रेम करते हो; इसलिए धन और दासी को ले लो, हे पुरुष। अल्लाह तुम्हें इन दोनों में आशीर्वाद दे! क्योंकि दो प्रेमियों का वियोग उनके लिए पीड़ादायक होता है। — इसलिए, दोनों ने उसका हाथ चूमा और चले गए; और वे मृत्यु तक साथ रहे। — उस परमेश्वर की महिमा हो जिसे मृत्यु नहीं पकड़ सकती! टीटो की कहानी: लोककथाओं के शिकार। ओधराह जनजाति का एक सुंदर पुरुष था, जो एक दिन भी प्रेम के आवेश से मुक्त

नहीं रह पाता था। संयोगवश, वह अपनी ही जनजाति की एक सुंदर स्त्री से प्रेम करता था और कई दिनों तक उसे संदेश भेजता रहा; परन्तु वह स्त्री उसके साथ क्रूरता और घृणा का व्यवहार करती रही, यहाँ तक कि वासना, उन्माद और बेचैनी ने उसे इतना वश में कर लिया कि वह भयंकर रूप से बीमार पड़ गया। वह तकिये पर पड़ा रहा और नींद त्याग दी; उसकी हालत लोगों के सामने आ गई और उसका प्रेम सर्वविदित हो गया; उसकी दुर्बलता बढ़ती गई और दर्द इतना बढ़ गया कि वह लगभग मर ही गया था। उसके परिवार और उसकी प्रेमिका के परिवार ने उससे बार-बार मिलने की विनती की; परन्तु उसने इनकार कर दिया, जब तक कि वह मृत्यु के कगार पर नहीं पहुँच गया। जब उन्होंने उसे इस बात की सूचना दी, तो अंततः उसके लिए दया भाव से भर आई और उससे मिलने की कृपा की।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.95%** है।

520 नोट्स टू चैफर अठारहवें। और उसे देखते ही उसकी आँखों से आँसू बहने लगे, और टूटे हुए दिल से उसने ये शब्द कहे: — हे जीवन की कसम, जब मेरा शव चार आदमियों की गर्दन पर लादा हुआ तेरे पास से गुजरेगा, तो क्या तू अर्थी के पीछे नहीं जाएगी, उस कब्र को प्रणाम करने के लिए जिसमें उस शव को दफनाया जाएगा? और जब उसने ये शब्द सुने, तो वह फूट-फूटकर रोई, और उससे कहा, अल्लाह की कसम, मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि तेरी इच्छा इतनी प्रबल हो जाएगी कि तुझे

मृत्यु की गोद में धकेल देगी। अगर मुझे पता होता, तो मैं तेरे काम में तेरी मदद करती, और तुझे वह मिलन मिल जाता जिसकी तू इच्छा करता। — और उसकी बात सुनकर उसके आँसू बारिश की तरह बरसने लगे; और उसने कवि के शब्दों को दोहराया: — वह उस समय मेरे पास आई जब मृत्यु हमें अलग कर रही थी, और उसने मुझे उस समय मिलन का वरदान दिया जब इससे मुझे कोई लाभ नहीं होता। फिर उसने एक कराह भरी, और उसकी मृत्यु हो गई। और इस पर वह उस पर गिर पड़ी, उसे चूमने लगी और रोने लगी, और तब तक रोती रही जब तक कि वह उसके पास गिर नहीं गई। जब वह संभली, तो उसने अपने परिवार को आदेश दिया कि जब उसकी मृत्यु हो जाए तो उसे उसकी कब्र में दफना दें। फिर उसने फूट-फूट कर आंसू बहाए और ये दो छंद पढ़े: — हम धरती पर सुखमय जीवन व्यतीत करते रहे, और हमारा कुल, घर और परिवार हम पर गर्व करते थे: परन्तु भाग्य ने अपने उतार-चढ़ाव से हमें अलग कर दिया, और अब कफ़न हमें मिलाएगा। — अपने छंद समाप्त करने के बाद, वह फूट-फूट कर रोने लगी, और तब तक रोती और विलाप करती रही जब तक कि वह बेहोश होकर गिर नहीं गई, और वह तीन दिन तक इसी अवस्था में रही; और फिर उसकी मृत्यु हो गई, और उसे उसकी कब्र में दफना दिया गया। — यह प्रेम में घटित होने वाले विचित्र संयोगों में से एक था। (स्कूल में लोकेक)। एक लड़का और एक दासी एक ही विद्यालय में पढ़ते थे, और लड़के को दासी के प्रति तीव्र वासना उत्पन्न हो गई: इसलिए, एक दिन, जब अन्य लड़के ध्यान नहीं दे रहे थे, उसने उसकी तख्ती ले ली,5 और उस पर ये दो छंद लिखे: — 5 एक लकड़ी की तख्ती, सफेद रंग से रंगी हुई, जिस पर स्कूली छात्र अपना पाठ लिखता है।

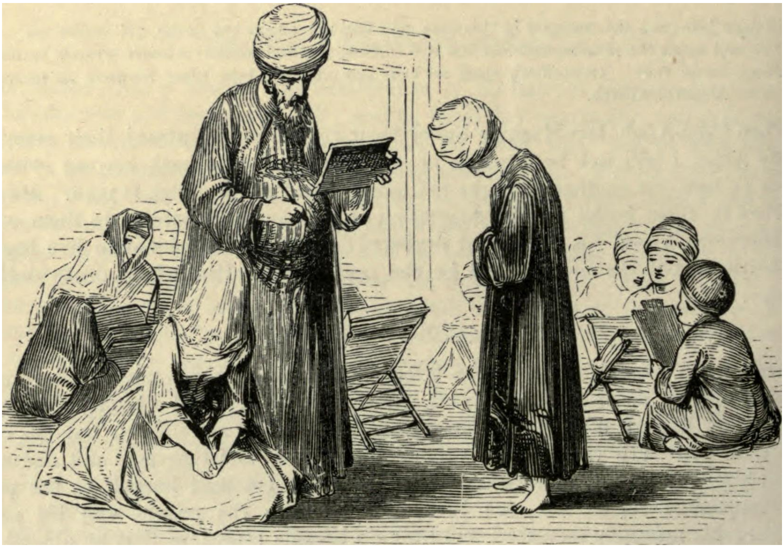

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.11%** है।

अठारहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 521 तुम उस व्यक्ति के विषय में क्या कहोगे जिसे तुम्हारे प्रति अत्यधिक प्रेम ने रोग से क्षीण कर दिया है और जो व्याकुल हो गया है; जो उन्माद और पीड़ा में अपनी वासना का बखान करता है, अपने हृदय की भावनाओं को छुपाने में असमर्थ है? इसलिए जब दासी ने वह पट्टिका उठाई, तो उसने उस पर ये छंद लिखे देखे; और जब उसने उन्हें पढ़ा और उनका अर्थ समझा, तो वह लड़के के प्रति करुणा से रो पड़ी, और उसकी पंक्तियों के नीचे यह दोहा लिखा: — यदि हम किसी प्रेमी को देखें जिसे इच्छा ने पीड़ित किया है, तो हम उस पर कृपा करेंगे; और जो कुछ वह हमसे मांगेगा, वह उसे प्राप्त होगा, चाहे इसके परिणामस्वरूप हमारा कुछ भी हश्र हो। और ऐसा हुआ कि शिक्षक उनके पास आया, और जब पट्टिका पर किसी ने ध्यान नहीं दिया, तो उसे पाकर उसने उसे उठाया और उस पर लिखे हुए को पढ़ा; उनकी दयनीय स्थिति पर दया करते हुए, उन्होंने उनके द्वारा लिखे गए छंदों के नीचे

(लड़की को संबोधित करते हुए) ये दो छंद लिखे:— अपने प्रेमी का स्वागत करो, और दंड से मत डरो; क्योंकि वह अपने प्रेम में उलझ गया है। शिक्षक के विषय में, उसके अधिकार से मत डरो; क्योंकि वह लंबे समय से प्रेम से पीड़ित है। फिर दासी का स्वामी विद्यालय में आया, और उसे लड़की की पट्टिका मिली; उसने उसे उठाया, और दासी, लड़के और शिक्षक के शब्दों को पढ़ा; और उन सभी छंदों के नीचे, उसने यह दोहा लिखा:— ईश्वर तुम दोनों को कभी अलग न करे; और तुम्हारा निंदा करने वाला उलझन में पड़ जाए और थक जाए! शिक्षक के विषय में, अल्लाह की कसम, मैंने कभी षड्यंत्रों का इससे बड़ा पालक नहीं देखा। फिर दासी के स्वामी ने कज़ी और गवाहों को बुलवाया, और उनकी उपस्थिति में युवक के साथ उसका विवाह संपन्न कराया। उसने उनके लिए एक भोज का आयोजन किया और उनका बड़े स्नेह से सत्कार किया; और वे आनंद और प्रसन्नता में तब तक साथ रहे जब तक कि उनके सुखों का अंत करने वाले और साथियों को अलग करने वाले ने उन्हें अपनी चपेट में नहीं ले लिया। एक विश्वासघाती पत्नी की कहानी। एक आदमी के पास एक चक्की थी और एक गधा था जो उसे चलाता था; और उसकी एक दुष्ट पत्नी थी, जिससे वह प्रेम करता था; लेकिन वह उससे घृणा करती थी और अपने एक पड़ोसी से प्रेम करती थी, जो उससे घृणा करता था और उससे दूरी बनाए रखता था। उसके पति ने स्वप्न देखा कि एक व्यक्ति ने उससे कहा, चक्की में गधे के घेरे में इस स्थान पर खोदो: तुम्हें खजाना मिलेगा। जब वह जागा, तो उसने अपनी पत्नी को अपने स्वप्न के बारे में बताया और उसे रहस्य छिपाने का आदेश दिया। लेकिन उसने अपने प्रिय पड़ोसी को यह बात बता दी, ताकि वह उसे प्रसन्न कर सके और उसने रात में उसके पास आने का वादा किया। तदनुसार वह रात में उसके पास आया और चक्की के घेरे में खोदा, और उन्हें खजाना मिल

गया और वे उसे बाहर ले आए। तब उसने उससे पूछा, “हम इसका क्या करेंगे?” उसने उत्तर दिया, “हम इसे दो बराबर भागों में बाँट लेंगे, और तुम अपनी पत्नी से अलग हो जाओगे, और मैं अपने पति से अलग होने की कोई योजना बनाऊँगी; फिर तुम मुझसे विवाह करोगे; और जब हम एक हो जाएँगे, तो हम सारा पैसा एक साथ रख देंगे और वह हमारा हो जाएगा।” उसकी पड़ोसी ने कहा, “मुझे डर है कि शैतान तुम्हें बहकाएगा, और तुम मेरी जगह किसी और पुरुष को अपना बना लोगी; क्योंकि घर में सोना दुनिया में सूर्य के समान है; और सही राय यही है कि सारा पैसा मेरे पास रहे, ताकि तुम अपने पति से छुटकारा पाने और मेरे पास आने के लिए उत्सुक हो जाओ।” लेकिन उसने जवाब दिया, “मुझे भी उसी बात का डर है जिसका तुम्हें डर है, और मैं तुम्हें इस पैसे में से अपना हिस्सा नहीं दूँगी; क्योंकि मैंने ही तुम्हें इसकी सूचना दी थी।” और जब उसने उसके ये शब्द सुने, तो लालच ने उसे उसे मार डालने के लिए उकसाया: इसलिए उसने उसे मार डाला और खजाने के स्थान पर फेंक दिया; जिसके बाद, सुबह हो गई और वह उसे छिपा नहीं सका। और चक्की वाला जागा, और उसने अपनी पत्नी को नहीं पाया; और वह चक्की में गया, ii. 3 x

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.49%** है।

अध्याय अठारहवें के लिए 522 टिप्पणियाँ। मिलर ने उसे वहाँ धकेला और अपनी आवाज़ से उकसाया; जिसके बाद वह आगे बढ़ा और फिर रुक गया। मिलर ने उसे बुरी तरह पीटा; लेकिन हर बार ऐसा करने पर वह पीछे हट जाता था; क्योंकि वह मृत महिला को देखकर भयभीत हो गया था और आगे नहीं बढ़ पा रहा था। इस पूरे समय मिलर को गधे के रुकने का कारण नहीं पता था; उसने एक चाकू लिया और उसे कई बार धकेला;

फिर भी वह अपनी जगह से नहीं हिला, और इस पर वह क्रोधित हो गया और उसने उसकी बगल में चाकू घोंप दिया, और गधा मरकर गिर पड़ा। फिर, जब दिन हुआ, तो मिलर ने गधे को मरा हुआ देखा, और अपनी पत्नी को भी मरा हुआ पाया, और उसे खजाने की जगह पर पाया; खजाने के खो जाने और अपनी पत्नी और गधे की हत्या का पता चलने पर उसका क्रोध और बढ़ गया, और उस पर गहरा शोक छा गया। — यह सब इसलिए हुआ क्योंकि उसने अपना रहस्य अपनी पत्नी को बता दिया था और उसे छुपाया नहीं था। एक मूर्ख और एक चालाक व्यक्ति की कहानी। एक मूर्ख व्यक्ति अकेला चल रहा था, अपने गधे की लगाम पकड़े हुए, जिसे वह अपने पीछे घसीट रहा था; तभी दो चालाक व्यक्तियों ने उसे देखा; तब उनमें से एक ने अपने साथी से कहा, मैं इस आदमी से यह गधा छीन लूँगा। दूसरे ने पूछा, तुम इसे कैसे छीनोगे? पहले ने उत्तर दिया, मेरे पीछे आओ, मैं तुम्हें दिखाता हूँ। तो वह उसके पीछे चल पड़ा; और वह चालाक व्यक्ति गधे के पास जाकर, उसकी लगाम खोलकर उसे अपने साथी को दे दिया; फिर उसने लगाम अपने सिर पर रख ली और मूर्ख व्यक्ति के पीछे तब तक चलता रहा जब तक उसे पता नहीं चल गया कि उसका साथी गधे के साथ चला गया है। फिर वह रुक गया: तो मूर्ख व्यक्ति ने लगाम से उसका पीछा किया; लेकिन वह आगे नहीं बढ़ा। तब उस आदमी ने पीछे मुड़कर देखा, और एक आदमी के सिर पर लगाम देखकर उससे कहा, तुम कौन हो? उस मूर्ख ने उत्तर दिया, "मैं तेरा गधा हूँ, और मेरी कहानी अद्भुत है; और वह यह है: मेरी एक माँ थी, एक गुणी बूढ़ी औरत, और एक दिन मैं नशे की हालत में उसके पास गया; तब उसने मुझसे कहा, 'हे मेरे पुत्र, इन पापों से पश्चाताप करके परमेश्वर (जिसका नाम महान हो!) की शरण में आ।' लेकिन मैंने एक लाठी उठाई और उससे उसे पीटा; और उसने मेरे विरुद्ध शाप दिया; जिस

पर परमेश्वर (जिसका नाम महान हो!) ने मुझे गधे में बदल दिया, और मुझे तेरे अधिकार में छोड़ दिया, और मैं तब से तेरे साथ ही रहा। लेकिन आज मेरी माँ को मेरी याद आई, और परमेश्वर ने उसका हृदय मेरे प्रति झुकाया; इसलिए उसने मेरे लिए प्रार्थना की, और परमेश्वर ने मुझे मेरे पुराने मनुष्य रूप में लौटा दिया।" और उस मूर्ख ने कहा, "सर्वोच्च, महान परमेश्वर के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है!" अल्लाह की कसम, ऐ मेरे भाई, मुझे उन सब बातों के लिए माफ़ कर दे जो मैंने तेरे साथ की हैं, तुझे सवारी कराने में और दूसरी बातों में। — फिर उसने गधे को अपने रास्ते जाने दिया और वह स्वयं चिंता और दुःख से व्याकुल होकर अपने घर लौट आया। उसकी पत्नी ने उससे कहा, तुझे क्या हुआ है और गधा कहाँ है? उसने उससे कहा, क्या तुझे गधे के बारे में कुछ नहीं पता? तो मैं तुझे बताता हूँ। — और उसने उसे पूरी कहानी सुनाई; यह सुनकर वह बोली, हाय, अल्लाह, जिसका नाम महान है, हमें जो सज़ा देगा! यह कैसे हो गया कि इतना समय बीत गया और हम आदम के बेटे से अपने लिए काम करवाते रहे! — फिर उसने दान दिया और प्रायश्चित के रूप में प्रार्थना की।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.08%** है।

अठारहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 523 ईश्वर की क्षमा। और वह व्यक्ति बहुत समय तक घर में बिना काम के रहा। तब उसकी पत्नी ने उससे कहा, तू कब तक घर में बिना काम के रहेगा? बाज़ार जा और हमारे लिए एक गधा खरीद ला, जिससे हम काम कर सकें। — इसलिए वह बाज़ार गया और गधों के पास रुका; और देखो, उसने अपने ही गधे को बिकते हुए देखा। और जब उसने उसे पहचान लिया, तो वह उसके पास गया और अपना मुँह उसके कान के पास ले जाकर उससे कहा, हे अभागे, तुझ पर

धिक्कार! निःसंदेह तू फिर से नशे में धुत हो गया है और अपनी माँ को फिर से पीटा है। अल्लाह की कसम, मैं तुझे फिर कभी नहीं खरीदूँगा! — फिर वह उसे छोड़कर चला गया। अल-हाकिम बि-अमरी-अल्लाह और काहिरा के एक व्यापारी का किस्सा। ऐसा कहा जाता है कि एक दिन अल्लाह अल-हाकिम बि-अमरी-ल्लाह7 अपने राजकीय जुलूस में सवार थे, और वे एक बगीचे से गुज़रे जहाँ उन्होंने एक आदमी को दासों और नौकरों से घिरा हुआ देखा; उन्होंने उससे एक घूँट पानी माँगा। उस आदमी ने उन्हें पानी पिलाया; और फिर कहा, शायद मोमिनों के सरदार मुझे इस बगीचे में आकर दर्शन देंगे। तो सरदार और उनके सैनिक उतरे और उस बगीचे में प्रवेश किया; और ऊपर बताए गए आदमी ने सौ कालीन, सौ चमड़े,8 सौ तकिए, सौ फलों की थालियाँ, सौ मिठाई से भरे कटोरे और सौ चीनी के शरबत से भरी तश्तरियाँ मंगवाईं। अल्लाह अल-हाकिम बि-अमरी-ल्लाह यह देखकर चकित रह गए और उन्होंने कहा, ऐ आदमी, तेरा मामला वाकई अद्भुत है। क्या तुझे हमारे आने की सूचना थी और तूने हमारे लिए यह सब तैयार किया? — उस आदमी ने उत्तर दिया, नहीं, अल्लाह की कसम, ऐ मोमिनों के सरदार: मुझे आपके आने की सूचना नहीं थी। मैं तेरे प्रजाजनों में से एक व्यापारी हूँ, और मेरी सौ रखैलें हैं; जब अमीरुल मोमिनीन ने आकर मुझे सम्मानित किया और मुझसे मिलने आए, तो मैंने उनमें से प्रत्येक को संदेश भेजा और उनसे बगीचे में भोजन भेजने का अनुरोध किया; और उनमें से प्रत्येक ने अपने फर्नीचर में से कुछ और अपने भोजन और पेय का अतिरिक्त भाग भेजा। उनमें से प्रत्येक मुझे प्रतिदिन मांस का एक थाला, ठंडी मिठाई का एक थाला, फलों का एक थाला, मिठाई से भरा एक कटोरा और शरबत की एक छोटी कटोरी भेजती है; और यही मेरा प्रतिदिन का भोजन है: मैंने इसमें तेरे लिए कुछ भी अतिरिक्त नहीं जोड़ा है। — और अमीरुल मोमिनीन ने

सजदा किया, अल्लाह (जिसका नाम महान है!) का शुक्र अदा किया, और कहा, अल्लाह की प्रशंसा हो, जिसने हमारे प्रजाजनों में से एक को ऐसा धन-दौलत प्रदान की है कि वह खलीफा और उसके सैनिकों को बिना तैयारी के, केवल अपने भोजन के अतिरिक्त भाग से ही खिलाता है! फिर उसने आदेश दिया कि उस वर्ष ढाले गए सभी सिक्के, जो सरकारी खजाने में मौजूद थे, उसे प्रस्तुत किए जाएँ; उनकी संख्या 30 लाख 70 लाख थी; और वह तब तक घोड़े पर नहीं चढ़ा जब तक उसने उन्हें मंगवाकर उस व्यक्ति को नहीं दे दिया; और उससे कहा, "अपनी आवश्यकतानुसार इनका उपयोग करना; क्योंकि तुम्हारी उदारता इससे भी बड़े प्रतिफल के योग्य है।" तब राजा घोड़े पर सवार होकर चला गया। अनुशीरवान का किस्सा। एक दिन न्यायप्रिय राजा, किसरा अनुशीरवान,9 शिकार के लिए निकले और अपने सैनिकों से अलग होकर एक हिरण का पीछा करने लगे; और जैसे-जैसे वह उसके पीछे बढ़ते गए, उन्होंने अपने पास ही खेती योग्य भूमि का एक टुकड़ा देखा। उन्हें बहुत प्यास लगी थी; इसलिए वे वहाँ गए और एक परिवार के घर के दरवाजे पर जाकर उन्होंने पीने के लिए कुछ पानी माँगा; तब एक युवती उसके पास आई, जिसने उसे देखा और फिर घर लौट गई, और उसके लिए एक गन्ना निचोड़ा, उसके रस को पानी में मिलाया, उसे एक प्याले में डाला, और उसमें धूल जैसी कोई मीठी सुगंध वाली चीज़ डाल दी। फिर उसने वह प्याला अनूशीरवान को दिया, जिसने प्याले में देखा, और उसमें कुछ देखा। 7 अल-हाकिम बि-अमरी-अल्लाह मिस्र में फदिमा के घराने के तीसरे खली थे - लेकिन इस मामले में, मेरा मानना है कि यह पहले वाले पुरफेह के लिए है। वह अत्याचार और पागलपन के लिए प्रसिद्ध थे, और 9 अनूशीरवान, या नूशीरवान, द्रुषों के धर्म के प्रसिद्ध संस्थापक थे। उन्होंने फारसी सम्राट के रूप में शासन किया, जिनके शासनकाल में मोहम्मद का

जन्म हुआ था, और जिनका न्याय अनगिनत प्राच्य लेखकों का विषय रहा है। 8 या तो भोजन रखने के लिए या बैठने के लिए;

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.46%** है।

धूल के समान। इसलिए उसने धीरे-धीरे पानी पिया, जब तक कि वह खत्म नहीं हो गया। अंत में उसने युवती से कहा, "हे युवती, पानी कितना उत्तम था, और कितना मीठा था, लेकिन सतह पर तैरते उन कणों के कारण; उन्होंने इसे गंदा कर दिया।" युवती ने उत्तर दिया, "हे अतिथि, मैंने जानबूझकर इसमें वे कण डाले थे जिनसे यह गंदा हो गया।" राजा ने पूछा, "तुमने ऐसा क्यों किया?" युवती ने उत्तर दिया, "क्योंकि मैंने तुम्हें बहुत प्यासा देखा था, और मुझे डर था कि तुम इसे एक ही घूंट में पी जाओगे, और यह तुम्हारे लिए हानिकारक होगा; और यदि सतह पर वे कण न होते, तो तुम इसे एक ही बार में जल्दी से पी जाते, और ऐसा करना तुम्हारे लिए हानिकारक होता।" इस प्रकार धर्मात्मा राजा, अनुशीरवान, उसके शब्दों और उसकी बुद्धिमत्ता पर चकित हुए, यह जानते हुए कि उसने जो कहा था वह बुद्धिमत्ता, तीक्ष्ण बुद्धि और उत्कृष्ट समझ से प्रेरित था; और उन्होंने उससे कहा। तुमने कितने गन्नों से यह रस निकाला? उसने उत्तर दिया, एक गन्ने से। अनूशीरवान को आश्चर्य हुआ और उसने उस गाँव से वसूले जाने वाले करों का रजिस्टर मांगा; उसने देखा कि वहाँ कर बहुत कम थे; इसलिए उसने मन ही मन ठान लिया कि जब वह अपने राज्य लौटेगा तो कर बढ़ाएगा; उसने कहा, जिस गाँव के एक गन्ने से इतना रस निकलता है, वहाँ कर इतना कम क्यों होना चाहिए? फिर वह उस गाँव से शिकार के लिए निकल गया; और दिन ढलने पर वह वापस गाँव लौटा, और उस द्वार से अकेले गुजरते हुए उसने दोबारा पीने के लिए पानी मांगा; इस पर वही युवती उसके पास आई;

और उसे देखकर और पहचानकर वह पानी लाने के लिए वापस लौटी। लेकिन वह काफी देर तक उससे दूर रही। इसलिए अनूशीरवान ने उसे जल्दी बुलाया और पूछा, तुम्हें देर क्यों हो गई? उसने उत्तर दिया, क्योंकि एक गन्ने से उतना रस नहीं निकला जितना तुम चाहते हो; इसलिए मैंने तीन छड़ियों को दबाया; और उनसे उतना रस नहीं निकला जितना पहले एक छड़ी से निकलता था। राजा ने पूछा, इसका कारण क्या है? उसने उत्तर दिया, इसका कारण यह है कि सुल्तान का इरादा बदल गया है। इसलिए राजा ने उससे पूछा, तुमने यह कहाँ से सीखा? उसने उत्तर दिया, हमने बुद्धिमानों से सुना है कि जब किसी प्रजा के विरुद्ध सुल्तान का इरादा बदल जाता है, तो उनकी समृद्धि समाप्त हो जाती है और उनके आशीर्वाद कम हो जाते हैं। और अनुशीरवान हँसा और अपने से दूर चला गया।

w
fr
ar
and he said to her
thou press that ju
cane. And Anoosh
the register of the
lage there; and he
wherefore he purp

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

27.25% है।

अठारहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 525 उसने लोगों के विरुद्ध जो योजना बनाई थी, उसे ध्यान में रखते हुए, उसने तुरंत उस युवती से विवाह कर लिया, क्योंकि वह उसकी अत्यधिक बुद्धिमत्ता, तीक्ष्ण बुद्धि और वाणी की उत्कृष्टता से प्रसन्न था। खुसरो, शीरीन और एक मछुआरे की कहानी। खुसरो, जो फारस के राजाओं में से एक था, मछली का शौकीन था; एक दिन वह अपनी पत्नी शीरीन के साथ अपने रसोईघर में बैठा था, तभी एक मछुआरा एक बड़ी मछली लेकर आया और उसने वह मछली खुसरो को दे दी। राजा उस मछली से प्रसन्न हुआ और उसने उस व्यक्ति को चार हजार चांदी के सिक्के भेंट करने का आदेश दिया। लेकिन शीरीन ने उससे कहा, "तुमने जो किया है वह बुरा है!" - और क्यों? उसने पूछा। शीरीन ने उत्तर दिया, "क्योंकि इसके बाद यदि तुम अपने किसी आश्रित को यह राशि दोगे, तो वह इसे तुच्छ समझेगा और कहेगा, 'उसने मुझे भी उतनी ही राशि दी है जितनी उसने मछुआरे को दी है।'" और यदि तुम उसे उससे कम दोगे, तो वह कहेगा, इसने मेरा अपमान किया है और मुझे मछुआरे से कम दिया है। इस पर खुसरो ने उत्तर दिया, तुमने सत्य कहा है; परन्तु राजाओं के लिए अपने उपहार वापस लेना लज्जास्पद होता है, और यह बात पुरानी हो चुकी है। शीरीन ने कहा, मैं तुम्हारे लिए उससे उपहार वापस लेने का उपाय निकालूँगी। खुसरो ने पूछा, कैसे? शीरीन ने उत्तर दिया, यदि तुम ऐसा चाहते हो, तो मछुआरे को बुलाओ और उससे पूछो कि यह मछली किस प्रजाति की है। और यदि वह कहे, इस प्रजाति की, तो उत्तर दो, हमें दूसरी प्रजाति की मछली चाहिए थी। इसलिए खुसरो ने मछुआरे को बुलवाया, जो लौट आया; और यह मछुआरा बुद्धिमान और तीक्ष्ण बुद्धि का व्यक्ति था; और राजा खुसरो ने उससे पूछा कि वह जो मछली लाया है वह किस प्रजाति की है; इस पर मछुआरे ने जमीन चूमकर

कहा, यह मछली मिश्रित प्रजाति की है, किसी विशेष प्रजाति की नहीं। खुसरो ने उसकी बातों पर हँसते हुए आदेश दिया कि उसे चार हज़ार और चाँदी के सिक्के पेश किए जाएँ। मछुआरा कोषाध्यक्ष के पास गया और उससे आठ हज़ार चाँदी के सिक्के लिए, जिन्हें उसने अपने पास मौजूद चमड़े के थैले में रख लिया। उसने थैला अपने गले में उठाया और जाने ही वाला था कि उससे एक चाँदी का सिक्का गिर गया। यह देखकर उसने अपने कंधों से थैला उतार दिया और झुककर उसे उठा लिया। बादशाह और शीरीन उसे देख रहे थे। शीरीन ने कहा, "हे बादशाह, क्या आपने इस आदमी की नीचता और धूर्तता देखी है कि जब उससे चाँदी का सिक्का गिर गया, तो उसने उसे बादशाह के सेवकों में से किसी एक को देने में भी संकोच किया?" शीरीन की बात सुनकर बादशाह उस मछुआरे पर क्रोधित हो गया और बोला, "हे शीरीन, तुमने सच कहा है।" फिर उसने मछुआरे को वापस लाने का आदेश दिया और उससे कहा, “हे थूकहीन! तू मनुष्य नहीं है! तूने अपने कंधों से यह धन कैसे गिरा दिया और चाँदी के एक सिक्के के लिए झुक गया, और इतना लालची था कि उसे वहीं नहीं छोड़ा?” — लेकिन मछुआरे ने ज़मीन चूमकर उत्तर दिया, “ईश्वर राजा की आयु लंबी करे! मैंने चाँदी का वह सिक्का ज़मीन से इसलिए नहीं उठाया क्योंकि वह मेरे लिए मूल्यवान था; बल्कि इसलिए उठाया क्योंकि उसके एक फलक पर राजा की छवि और दूसरे फलक पर उसका नाम अंकित था, और मुझे डर था कि कोई अनजाने में उस पर पैर रख दे, और ऐसा करना राजा के नाम और उसकी छवि का अपमान होगा; और इस अपराध के लिए मुझे ही दोषी ठहराया जाएगा।” और राजा खुसरो परवेज़, या परवेज़, पूर्वी इतिहासकारों के अनुसार एक बहुत प्रसिद्ध सम्राट थे। ऐसा कहा जाता है कि वे अनूशीरवीन के पोते और मोहम्मद के समकालीन थे। अपने चाचा द्वारा देश से निकाले जाने के बाद, उन्होंने

यूनानी सम्राट मौरिस के यहाँ शरण ली, जिनकी सहायता से उन्होंने सत्ता हथियाने वाले को हराया और अपना मुकुट वापस प्राप्त किया। मौरिस के दरबार में रहते हुए, खुसरो ने अपनी बेटी इरीन [जिन्हें फारसी 'शीरीन' कहते थे, जिसका अर्थ 'मीठा' होता है] से शादी की, जो अपनी विलक्षण सुंदरता के लिए पूर्व में बहुत प्रसिद्ध हैं। 10 खुसरो परवेज़, या परवेज़, पूर्वी इतिहासकारों के अनुसार एक बहुत प्रसिद्ध सम्राट थे, जो अनूशीरवीन के पोते थे और मोहम्मद के समकालीन थे। अन्य शानदार आभूषणों, गुंबद में लटके हुए एक हजार ग्लोबों के बीच, उन्होंने विभिन्न गतियों, खगोलीय पिंडों की गतियों को प्रदर्शित किया। 30 हजार कढ़ाई वाले टेपेस्ट्री के टुकड़ों ने दीवारों को सजाया; और नीचे सोने, चांदी और कीमती धातुओं के विशाल खजाने से भरे तहखाने थे। पत्थर।" (रिचर्डसन का फ़ारसी, अरबी और अंग्रेज़ी शब्दकोश, जॉनसन संस्करण, w/ce parwez□)

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.95%** है।

अध्याय अठारहवें के लिए 526 टिप्पणियाँ। उन्होंने उसकी बातों पर ध्यान दिया और उसकी बात को स्वीकार करते हुए उसे चार हज़ार और चाँदी के सिक्के भेंट करने का आदेश दिया। उन्होंने एक उद्घोषक को यह घोषणा करने का भी आदेश दिया, “स्त्रियों की सलाह मानना उचित नहीं है; क्योंकि जो उनकी सलाह मानता है, वह अपने एक चाँदी के सिक्के के साथ दो और चाँदी के सिक्के खो देगा।” याह्या अल-बरमेकी का किस्सा। ऐसा कहा जाता है कि खालिद अल-बरमेकी का पुत्र याह्या खलीफा के महल से अपने घर लौटने के लिए निकला और घर के द्वार पर एक आदमी को देखा, जो उसके पास आने पर उठा और उसे प्रणाम किया और उससे कहा, “हे याह्या, मुझे तुम्हारी वस्तु की आवश्यकता है, और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि तुम मुझ पर कृपा करो।” और याह्या ने आदेश दिया

कि उसे अपने घर में एक स्थान दिया जाए, और अपने कोषाध्यक्ष को आदेश दिया कि वह उसे प्रतिदिन एक हजार चांदी के सिक्के दे, और निर्देश दिया कि उसे उत्तम भोजन परोसा जाए। इस प्रकार वह व्यक्ति पूरे एक महीने तक रहा; जिसके अंत तक उसे तीस हजार चांदी के सिक्के प्राप्त हो चुके थे; परन्तु उसे भय था कि याह्या उससे बड़ी राशि के कारण धन छीन लेगा: अतः वह चुपके से चला गया। और उन्होंने याह्या को इसकी सूचना दी। परन्तु उसने उत्तर दिया, अल्लाह की कसम, यदि वह अपने जीवन भर और अपने सारे दिनों तक मेरे साथ रहता, तो भी मैं अपने उपहारों को नहीं रोकता, और न ही उसे अपने आतिथ्य सत्कार से वंचित करता। — और बरमकियों की श्रेष्ठताएँ अतुलनीय थीं, और उनके गुणों का पूर्ण वर्णन नहीं किया जा सकता: विशेषकर खालिद के पुत्र याह्या के; क्योंकि वह मुख्यतः प्रख्यात कार्यों में निपुण था, जैसा कि कवि ने उसके विषय में कहा है:— मैंने उदारता से पूछा, क्या तू स्वतंत्र है? उसने उत्तर दिया, नहीं; लेकिन मैं खिफ़ल के बेटे याह्या का गुलाम हूँ। क्या यह मेरी खरीद है? मैंने कहा। - अल्लाह न करे! उसने जवाब दिया; क्योंकि वह मुझे अपने पिता से विरासत में पाता आया है। मोहम्मद अल-एमीन और दासी अल-बेद्र अल-कबीर। मूसा अल-हदीन के बेटे जाफ़र की एक दासी थी, जो वीणा बजाती थी, जिसका नाम अल-बेद्र अल-कबीर था,12 और उस समय में उससे सुंदर चेहरे वाली, सुडौल आकृति वाली, आकर्षक और गायन और वाद्य यंत्र बजाने में कुशल कोई नहीं थी: वह अत्यंत सुंदर और सुरुचिपूर्ण थी, और हर तरह के आकर्षण से परिपूर्ण थी। और ज़ुबैदेह के बेटे मोहम्मद अल-एमीन13 ने उसके बारे में सुना, और जाफ़र से उसे बेचने की विनती की: लेकिन उसने उत्तर दिया, तुम जानते हो कि मेरे जैसे व्यक्ति को दासियों को बेचना और रखेलों की कीमत लगाना शोभा नहीं देता; और अगर वह मेरे घर में पली-बढ़ी न

होती, तो मैं उसे तुम्हें उपहार के रूप में भेज देता, और लालच से उसे तुमसे दूर न रखता। फिर एक दिन मोहम्मद अल-एमीन आनंद लेने के उद्देश्य से जाफ़र के घर गए, जहाँ जाफ़र ने उनका मित्रवत आतिथ्य सत्कार किया और अपनी दासी अल-बेद्र अल-कबीर को उनके लिए गाने और उन्हें प्रसन्न करने का आदेश दिया। उसने वाद्ययंत्रों को सुर में बजाया और मधुर स्वर में गाया। मोहम्मद अल-एमीन शराब पीने और आनंद मनाने में मग्न हो गए और प्याले लाने वालों को जाफ़र को खूब शराब पिलाने का आदेश दिया, ताकि वे उसे मदहोश कर दें। फिर वह दासी को अपने साथ लेकर अपने निवास स्थान पर चले गए; लेकिन उन्होंने उसकी ओर हाथ नहीं बढ़ाया। सुबह उन्होंने जाफ़र को आमंत्रित करने का आदेश दिया; और जब वह आए तो उन्होंने उनके सामने शराब रखी और दासी को पर्दे के भीतर उनके लिए गाने का आदेश दिया। इसलिए जब जाफ़र ने उसकी आवाज़ सुनी, तो वह उसे पहचान गया; और वह इस पर क्रोधित हुआ; लेकिन उसने अपने स्वभाव की महानता और उदारता के कारण अपना क्रोध प्रकट नहीं किया; और उसने कोई 11 एल-इलादेक इलारून एर-राशेद का भाई और तत्काल 12 शाब्दिक रूप से, "महान पूर्णिमा" पूर्ववर्ती था। 13 हफिरून एरराशेद का पुत्र और अगला उत्तराधिकारी।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.46%** है।

अठारहवें अध्याय, 527 पर टिप्पणियाँ (अध्याय lii में): सौहार्दपूर्ण बातचीत। जैसे ही भोज समाप्त हुआ, मोहम्मद अल-एमीन ने अपने एक आश्रित को उस नाव को चलाने का आदेश दिया जिसमें जाफ़र सोने-चांदी के सिक्कों, विभिन्न प्रकार के रत्नों, चमेली के फूलों, कीमती वस्त्रों और अत्यधिक धन-दौलत के साथ उनके पास आया था। उसने आदेशानुसार नाव में हज़ारों-हज़ारों सिक्के और हज़ारों बड़े मोती रखे, प्रत्येक मोती की

कीमत बीस हज़ार चांदी के सिक्कों के बराबर थी; और वह तब तक दुर्लभ वस्तुएँ रखता रहा जब तक कि नाविकों ने मदद के लिए पुकार नहीं लगाई और कहा, नाव में अब और कुछ नहीं आ सकता। उसने उन्हें जाफ़र के घर धन पहुँचाने का आदेश दिया। - महान लोगों के ऐसे ही नेक कार्य होते हैं। अल्लाह उन पर रहम करे! अल-फदल और जाफ़र बरमेकी। सईद, सलीम अल-बहिली के बेटे, कहते हैं, हारून एर-कशीद के समय में मेरी परिस्थितियाँ बहुत कठिन हो गईं; मुझ पर बहुत कर्ज़ जमा हो गया, जिससे मेरा बोझ बढ़ गया और मैं उसे चुकाने में असमर्थ हो गया। मेरी आमदनी कम हो गई और मैं परेशान हो गया, समझ नहीं आ रहा था कि क्या करूँ; क्योंकि मुझ पर कर्ज़ चुकाने का दबाव डाला जा रहा था, जिन लोगों का मैं कर्ज़दार था वे मेरे दरवाजे पर जमा हो गए, माँग करने वाले मुझ पर टूट पड़े और लेनदार लगातार मुझे परेशान करते रहे। इस प्रकार मेरे पास कोई उपाय नहीं सूझ रहा था और मेरा मानसिक कष्ट बहुत बढ़ गया था। इसलिए जब मैंने देखा कि मेरे मामले मुश्किल में फँस गए हैं और मेरी परिस्थितियाँ बदल गई हैं, तो मैं अब्दुल्ला, मलिक अल-खुज़ाई के बेटे के पास गया और उनसे सलाह देकर मेरी मदद करने और अपने अच्छे परामर्श से मुझे राहत का रास्ता दिखाने की विनती की; और उन्होंने कहा, कोई भी मुझे बचा नहीं सकता।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.63%** है।

अध्याय अठारहवें के लिए 528 टिप्पणियाँ। बरमकियों को छोड़कर, मैं तुझे तेरी परेशानी, चिंता, तंगी और दुःख से बचा सकता हूँ। मैंने उत्तर दिया, भला कौन उनके घमंड को सहन कर सकता है और उनके अहंकार को सह सकता है? उसने जवाब दिया, तू अपनी परिस्थितियों को सुधारने के लिए यह सहन करेगा। इसलिए मैं उसके सामने से उठा और खालिद के पुत्र याह्या के पुत्र अल-फदल और जाफर के पास गया, उन्हें अपनी स्थिति बताई और उन्हें अपनी दशा दिखाई। उन्होंने कहा, अल्लाह तुझे

अपनी सहायता दे और अपनी कृपा से तुझे अपने प्राणियों से स्वतंत्र कर दे, तुझे भरपूर समृद्धि प्रदान करे और तुझे अपने सिवा किसी भी प्राणी से अधिक पर्याप्तता प्रदान करे; क्योंकि वह जो चाहे कर सकता है, अपने सेवकों पर कृपालु है और उनकी ज़रूरतों से भलीभांति परिचित है। अतः मैं उनसे विदा लेकर भारी मन, व्याकुलता और टूटे हृदय से अब्दुल्ला मलिक के पुत्र के पास लौट आया और उन्हें वही सब बताया जो उन्होंने कहा था। उन्होंने उत्तर दिया, "तुम्हारा आज हमारे साथ रहना ही उचित है, ताकि हम देख सकें कि अल्लाह (जिसका नाम महान है!) क्या निर्णय देगा।" मैं कुछ देर उनके साथ बैठा रहा; तभी मेरा सेवक पास आकर बोला, "हे मेरे स्वामी, हमारे द्वार पर बहुत से खच्चर बोझ लेकर खड़े हैं, और उनके साथ एक आदमी है जो कहता है, मैं अल-फदल, याह्या के पुत्र और जाफर, याह्या का दूत हूँ।" इस पर अब्दुल्ला मलिक के पुत्र ने कहा, "मुझे आशा है कि तुम्हें राहत मिल गई है; तो उठो और देखो क्या मामला है।" इसलिए, मैं उसके सामने से उठा और दौड़कर अपने घर पहुँचा, और अपने दरवाजे पर एक आदमी को एक नोट लिए खड़ा देखा, जिस पर लिखा था, — जब तुम हमारे साथ थे और हमने तुम्हारी बातें सुनीं, तो तुम्हारे जाने के बाद हम खलीफा के पास गए और उन्हें बताया कि तुम्हें भीख माँगने की अपमानजनक स्थिति में डाल दिया गया है; जिस पर उन्होंने हमें सरकारी खजाने से तुम्हें दस लाख चाँदी भेजने का आदेश दिया। लेकिन हमने उनसे कहा, यह पैसा वह अपने लेनदारों को दे देंगे और इससे अपना कर्ज चुका देंगे; तो फिर वह अपना गुजारा कैसे करेंगे? इसलिए उन्होंने तुम्हें तीन लाख चाँदी के सिक्के अतिरिक्त देने का आदेश दिया। और हममें से प्रत्येक ने भी अपनी निजी संपत्ति में से तुम्हें दस लाख चाँदी भेजी है। इसलिए कुल मिलाकर तीन लाख तीन लाख चाँदी के सिक्के हैं, जिनसे तुम अपनी स्थिति सुधार सकते हो। तो इन नेक

लोगों की उदारता देखिए। अल्लाह (जिसका नाम महान है!) उन पर रहम करे! एक धोखेबाज पत्नी की कहानी। • कहा जाता है कि एक औरत ने अपने पति के खिलाफ एक चाल चली; और वह यह थी: — उसके पति ने शुक्रवार को उसके लिए एक मछली लाई और उससे कहा कि वह उसे पकाकर सामूहिक नमाज़ खत्म होने तक तैयार कर दे। फिर वह अपने काम पर चला गया; और उसका दोस्त उसके पास आया और उसे अपने घर में एक शादी में आने का न्योता दिया; जिस पर वह मान गई। उसने मछली को अपने घर में एक पानी के बर्तन में रख दिया और उसके साथ चली गई, और अगले शुक्रवार तक अपने घर से गायब रही; जबकि उसका पति दूसरे घरों में उसकी तलाश करता रहा और पूछताछ करता रहा; लेकिन किसी ने भी उसे उसके बारे में कोई खबर नहीं दी। फिर वह अगले शुक्रवार को आई और मछली को ज़िंदा लेकर उसके पास गई, और उसके सामने कई लोगों को इकट्ठा करके उन्हें अपनी कहानी सुनाई; इस पर उन्होंने उस आदमी को झूठा करार दिया और उससे कहा, यह असंभव है कि मछली इतने समय तक जीवित रहे। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि वह पागल है, और उसे कैद कर लिया और उस पर हँसे। हत्या का एक किस्सा। शरीफ हुसैन, रेयान के पुत्र ने बताया है कि एक दिन मोमिनों के सरदार, उमर, अल-खत्ताब के पुत्र, लोगों का न्याय करने और अपनी प्रजा के बीच न्याय करने के लिए बैठे थे, उनके साथ उनके साथी, जो विवेक और न्यायप्रिय थे, उपस्थित थे। और जब वे बैठे थे, तभी एक व्यक्ति उनके पास आया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.80%** है।

अठारहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। एक युवक, जो अत्यंत सुंदर और स्वच्छ वस्त्र पहने हुए था, उसे दो अन्य सुंदर युवकों ने पकड़ लिया था; और वे

उसे उसकी बनियान के ऊपरी किनारे से घसीटते हुए अमीरुल मोमिनीन के सामने खड़ा कर दिया। अमीरुल मोमिनीन ने उन दोनों युवकों और दूसरे युवक को देखा, और उन्हें अपने से दूर जाने का आदेश देकर, उसे अपने पास बुलाया और उन दोनों युवकों से पूछा, “तुम्हारा उससे क्या संबंध है?” – “हे अमीरुल मोमिनीन,” उन्होंने उत्तर दिया, “हम एक ही माता के दो भाई हैं, और सत्य का अनुसरण करने के योग्य हैं। हमारे पिता एक बहुत वृद्ध, बुद्धिमान, कबीलों में सम्मानित, नीचता से मुक्त, सद्गुणों के लिए प्रसिद्ध व्यक्ति थे, जिन्होंने हमें बचपन से पाला-पोसा और हम पर बहुत कृपा की, वे प्रचुर सद्गुणों और उत्कृष्ट कार्यों वाले व्यक्ति थे, कवि की प्रशंसा के योग्य थे।” – उन्होंने पूछा, “क्या अबू सक्र शेयबान के हैं?” मैंने उन्हें उत्तर दिया, नहीं, मेरी जान की कसम; परन्तु शेयबान उसका वंशज है: * क्योंकि कितने ही पिताओं ने अपने श्रेष्ठ पुत्र से यश प्राप्त किया है, जैसे 'आदिन ने ईश्वर के रसूल से! और वह अपने बाग में आराम करने और पके फल तोड़ने गया, और इस युवक ने सत्य के मार्ग से भटककर उसकी हत्या कर दी। अतः हम तुझसे निवेदन करते हैं कि तू उसके अपराध का बदला ले और ईश्वर के आदेशानुसार उसे दंड दे। तब 'उमर ने उस युवक पर भयभीत दृष्टि डाली और उससे कहा, तूने इन दोनों युवकों की बातें सुन ली हैं। तो तू उत्तर में क्या कहता है? — अब वह युवक दृढ़ हृदय और साहसी वाणी वाला था; उसने कायरता के वस्त्र उतार फेंके और भय का आवरण त्याग दिया; इसलिए वह मुस्कुराया और अत्यंत वाक्पटुता से बोलते हुए, धनियों के सरदार की प्रशंसा सुरुचिपूर्ण शब्दों में की। फिर उसने कहा, "अल्लाह की कसम, ऐ धनियों के सरदार, मैंने उनके आदेश को याद रखा है और उन्होंने जो कुछ भी कहा है, उसमें सत्य है, और ईश्वर का आदेश अटल निश्चय है। लेकिन मैं अपना पक्ष आपके समक्ष रखता हूँ, और इस पर निर्णय लेना आपका कार्य है। ऐ

धनियों के सरदार, जान लीजिए कि मैं सच्चे अरबों में से सर्वश्रेष्ठ हूँ, जो आकाश के नीचे की सभी जातियों में सबसे श्रेष्ठ हैं। मैं रेगिस्तान के इलाकों में पला-बढ़ा हूँ, और मेरे लोगों को दमनकारी बांझपन के अंधकारमय दौर का सामना करना पड़ा; इसलिए मैं अपने परिवार, धन और बच्चों के साथ इस नगर के आसपास आया हूँ।" मैं उसके चारों ओर जाने वाले रास्तों में से एक पर चल पड़ा, जो उसके वृक्षों के बगीचों के बीच से होकर गुजरता था। वहाँ मुझे प्रिय और उच्च कोटि की ऊँटनियाँ थीं, जिनमें एक उच्च नस्ल का, अनेक संतानों वाला और सुंदर नर ऊँट भी था, जिससे वे खूब बच्चे पैदा करती थीं। वह उनके बीच मुकुटधारी राजा की तरह चलता था। तभी एक ऊँटनी इन दोनों युवकों के पिता के बगीचे की ओर भाग गई, और उसके पेड़ दीवार के ऊपर दिखाई देने लगे। वह उन्हें अपने होठों से छूने लगी; इसलिए मैंने उसे उस बगीचे से भगा दिया। तभी अचानक दीवार के एक छेद से एक शेख प्रकट हुआ, उसके क्रोध की ज्वाला चिंगारियाँ बिखेर रही थी, और उसके दाहिने हाथ में एक पत्थर था। वह अपने कदमों से दहाड़ते हुए सिंह की तरह चलता था, और उस पत्थर से नर ऊँट पर प्रहार करके उसे मार डाला; क्योंकि पत्थर उसकी आँख में लगा था। इसलिए जब मैंने देखा कि नर ऊँट मेरे पास गिर पड़ा है, तो मेरे हृदय में क्रोध की धधकती आग भड़क उठी, और मैंने वही पत्थर उठाया और उस पर लिखा, "शेबन" एक जनजाति का नाम है। 15 मैंने अपने शेख की सलाह के अनुसार "हदारा" या "हदिरा" के स्थान पर "खारा" पढ़ा।* II. 3 Y

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.56%** है।

अध्याय अठारह के लिए 530 टिप्पणियाँ? tt. लिन इसके साथ, और यही उसके विनाश का कारण था, इस प्रकार उसे अपने कर्म का बुरा

परिणाम मिला 5 उस आदमी को उसी चीज़ से मार डाला गया जिससे उसने मारा था, और जब उसे पत्थर से मारा गया, तो उसने एक ज़ोरदार चीख और दर्दनाक कराह निकाली; जिस पर मैं अपने स्थान से जल्दी से भागा, लेकिन ये दोनों युवक मेरे पीछे दौड़े और मुझे पकड़ लिया; और वे मुझे तुम्हारे पास लाए और तुम्हारे सामने रख दिया। यह सुनकर उमर (अल्लाह उन पर रहम करे) ने कहा, “तूने अपना गुनाह कबूल कर लिया है; अब मुक्ति पाना मुश्किल है, बदला लेना ज़रूरी है और बचने का कोई रास्ता नहीं है।” युवक ने उत्तर दिया, “मैं इमाम द्वारा सुनाए गए फैसले को सुनता और मानता हूँ, और इस्लाम के कानून के अनुसार चलता हूँ। लेकिन मेरा एक छोटा भाई है, और उसके पिता बूढ़े थे, जिन्होंने अपनी मृत्यु से पहले उसे बहुत धन और एक बड़ा खजाना सौंपा था, और मुझे उसकी देखभाल का जिम्मा देते हुए अल्लाह को गवाह बनाकर कहा था, ‘यह तुम्हारे भाई के लिए तुम्हारे पास अमानत के तौर पर है; इसे संभाल कर रखना।’ इसलिए मैंने उनसे वह धन लिया और उसे दफना दिया, और मेरे सिवा कोई नहीं जानता। इसलिए यदि अब तुम मुझे मृत्युदंड सुनाते हो, तो धन खो जाएगा, और तुम उसके खोने का कारण बनोगे, और जिस दिन अल्लाह उसका न्याय करेगा, उस दिन बच्चा अपने हक के लिए तुम पर मुकदमा करेगा।” लेकिन अगर आप मुझे तीन दिन की मोहलत दें, तो मैं किसी को लड़के का संरक्षक नियुक्त कर दूंगा, और मैं अपना दायित्व निभाने के लिए वापस आऊंगा; और मेरे पास एक ऐसा व्यक्ति है जो इस वादे को पूरा करने के लिए मेरा ज़मानतदार होगा। — और इस पर, अमीरुल मोमिनीन ने अपना सिर झुका लिया। फिर उन्होंने उपस्थित लोगों की ओर देखा और कहा, "उसके अपने स्थान पर लौटने के लिए कौन मेरी ज़मानत देगा?" — और उस युवक ने सभा में उपस्थित लोगों के फीतों की ओर देखा, और उपस्थित अन्य लोगों की तुलना में अबू-धर 18 की

ओर इशारा करते हुए कहा, "यही मेरी गारंटी और मेरी ज़मानत होगी।" तो उमर (अल्लाह, जिसका नाम महान है, उनसे प्रसन्न हो!) ने कहा, "हे अबू-धर, क्या तुमने यह बात सुनी है, और क्या तुम इस युवक के लौटने के लिए मेरी ज़मानत दोगे?" उसने उत्तर दिया, "हाँ, हे अमीरुल मोमिनीन: मैं तीन दिनों के लिए उसकी ज़मानत दूंगा।" उमर, अत: अबू धर ने इस बात पर सहमति जताई और उस युवक को जाने की अनुमति दे दी। और जब प्रतीक्षा अवधि समाप्त होने वाली थी, और समय लगभग समाप्त हो चुका था, या समाप्त हो गया था, तब भी वह युवक उमर की सभा में नहीं आया, जिन्हें सहाबी चाँद के चारों ओर तारों की तरह घेरे हुए थे। अबू धर वहाँ उपस्थित थे, और याचिकाकर्ता प्रतीक्षा कर रहे थे, और उन्होंने कहा, "हे अबू धर, वह अपराधी कहाँ है? जो भाग गया है वह कैसे लौटेगा? हम तब तक अपने स्थान से नहीं हिलेंगे जब तक आप उसे हमारे पास नहीं लाते, ताकि हम अपना रक्त-प्रतिशोध ले सकें।" अबू धर ने उत्तर दिया, "सर्वज्ञ बादशाह की कसम, यदि तीन दिन बीत जाएँ और युवक न आए, तो मैं ज़मानत का दायित्व पूरा करूँगा और इमाम के सामने आत्मसमर्पण कर दूँगा!" और उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो!) ने कहा, "अल्लाह की कसम, यदि युवक आने में देरी करता है, तो मैं निश्चित रूप से अबू धर पर कानून के अनुसार फैसला सुनाऊँगा।" इस्लाम की यही मांग है! इस पर उपस्थित लोगों की आंखों से आंसू बहने लगे, दर्शकों की आहें ऊंची उठ गईं और खूब शोर मच गया। सहाबियों के सरदारों ने दोनों युवकों को आर्थिक मुआवजा लेने और जनता का आभार प्राप्त करने का प्रस्ताव दिया। लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया और खून का बदला लेने के अलावा कुछ भी स्वीकार नहीं किया। जब लोग अबू धर्र के लिए शोक मनाते हुए शोर-शराबे में डूबे हुए थे, तभी वह युवक इमाम के पास आया और उनके सामने खड़ा होकर अत्यंत विनम्रता से उनका अभिवादन

किया। उसका चेहरा पसीने से तरबतर था और दमक रहा था। उसने इमाम से कहा, "मैंने युवक को उसके मामाओं के हवाले कर दिया है और उन्हें उसके सभी मामलों से अवगत करा दिया है और उनकी संपत्ति के बारे में भी बता दिया है। फिर मैं दोपहर की उमस भरी धूप में दौड़ा और एक भोले-भाले व्यक्ति की निष्ठा से अपना वादा पूरा किया।" और लोग उसकी सत्यनिष्ठा और नेक नियति, स्वयं को स्वेच्छा से अर्पित करने की उसकी तत्परता पर आश्चर्यचकित थे। 16 पैगंबर के कथनों और कार्यों का एक प्रसिद्ध और उच्च सम्मानित वर्णनकर्ता। 1; पैगंबर के साथी।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.25%** है।

अठारहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 531 मृत्यु और उसके साहस के लिए। और उनमें से कुछ ने कहा, "तुम कितने उदार युवक हो, और अपने वादे और कर्तव्य के पालन में कितने निष्ठावान हो!" लेकिन युवक ने उत्तर दिया, "क्या तुम आश्वस्त नहीं हो कि जब मृत्यु का समय आ जाता है, तो कोई भी इससे बच नहीं सकता? मैंने अपना वादा इसलिए पूरा किया ताकि यह न कहा जाए कि 'वफ़ादारी मनुष्यों से चली गई है'।" और अबू-धर ने कहा, "अल्लाह की कसम, ऐ मोमिनों के सरदार, मैंने इस युवक के लिए ज़मानत दी और मुझे नहीं पता था कि वह किस कबीले का था, और न ही मैंने उसे उस दिन से पहले देखा था। लेकिन जब वह वहाँ मौजूद सभी लोगों से मुँह मोड़कर मुझसे विनती करने लगा और कहा, 'यह मेरे लिए ज़मानत और गारंटी होगी', तो मैंने उसे अस्वीकार करना उचित नहीं समझा, और मानवता ने उसकी इच्छा को निराश नहीं किया; क्योंकि किसी इच्छा को पूरा करने में कोई बुराई नहीं है, ताकि यह न कहा जाए कि 'सद्गुण मनुष्यों से चला गया है'।" — इस पर उन दोनों युवकों ने कहा, “हे धनवानों के राजकुमार, हम अपने पिता के रक्त को इस युवक को

सौंप दें, क्योंकि इसने दुःख को प्रसन्नता में बदल दिया है, ताकि यह न कहा जाए कि मनुष्यों में दयालुता का अभाव हो गया है।" इमाम उस युवक को क्षमा किए जाने पर प्रसन्न हुए, और अपने कर्तव्य के पालन में उसकी सत्यनिष्ठा और निष्ठा की प्रशंसा की, और उन्होंने अबू-धर की मानवता की उनके साथियों से कहीं अधिक प्रशंसा की, और दयालुता दिखाने के उनके संकल्प को सराहा। उन्होंने उन्हें धन्यवाद दिया और उनके मामले पर लागू होते हुए कवि के इस कथन का पाठ किया: — जो मनुष्यों के बीच दयालुता का व्यवहार करता है, उसे उसका प्रतिफल अवश्य मिलता है। दयालुता न तो ईश्वर के साथ व्यर्थ होती है और न ही मनुष्यों के साथ।" फिर उन्होंने सरकारी खजाने से उनके पिता के रक्त के जुर्माने का भुगतान करने की पेशकश की। लेकिन उन्होंने कहा, "निःसंदेह हमने उसे ईश्वर, जो अत्यंत दयालु और महान हैं, के दर्शन की इच्छा से क्षमा किया; और जिसका इरादा ऐसा होता है, वह अपने उपकार के बदले निंदा या हानि नहीं चाहता।" एक ढीठ चोर की कहानी: एक व्यक्ति, जो लुटेरा था, पश्चाताप के साथ ईश्वर (जिनका नाम महान है!) की ओर मुड़ा, और उसका पश्चाताप सच्चा था, और उसने अपने लिए एक दुकान खोली जिसमें वह सामान बेचता था। उसने लंबे समय तक ऐसा ही जीवन व्यतीत किया; और एक दिन ऐसा हुआ कि उसने अपनी दुकान बंद कर दी और अपने घर चला गया; तभी एक धूर्त लुटेरा आया और दुकान के मालिक का वेश धारण करके अपनी आस्तीन से कुछ चाबियाँ निकाल लीं। यह रात का समय था; और उसने बाजार के चौकीदार से कहा, "मेरे लिए यह मोमबत्ती जला दो।" तो चौकीदार ने उससे मोमबत्ती ले ली और उसे जलाने चला गया; तभी लुटेरे ने दुकान खोली और अपने पास रखी दूसरी मोमबत्ती जला ली। जब चौकीदार वापस आया, तो उसने उसे दुकान में हिसाब-किताब की किताब हाथ में लिए बैठा पाया। वह उसमें

हिसाब-किताब देख रहा था और उंगलियों से हिसाब कर रहा था। वह भोर होने तक ऐसा ही करता रहा। भोर होने पर उसने चौकीदार से कहा, "मेरे लिए एक ऊंट वाला और उसका ऊंट लाओ, ताकि वह मेरे लिए कुछ सामान ले जाए।" तदनुसार, चौकीदार एक ऊंट वाला और उसका ऊंट ले आया। लुटेरे ने उससे कपड़े के चार गट्ठे लिए और उन्हें ऊंट पर रख दिया। फिर उसने दुकान बंद कर दी, चौकीदार को चांदी के दो सिक्के दिए और ऊंट वाले के पीछे चला गया। चौकीदार को लगा कि वह दुकान का मालिक है। जब सुबह हुई और उजाला दिखाई दिया, तो दुकान का मालिक आया और चौकीदार ने चांदी के दो सिक्कों के कारण उसकी समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हुए उसका स्वागत किया। इसलिए दुकान के मालिक ने अपनी बात से इनकार किया और उस पर आश्चर्य व्यक्त किया; और जब उसने दुकान खोली, तो उसने मोमबत्तियों से पिघला हुआ मोम और गिरी हुई खाता-बही देखी; और दुकान की जाँच करने पर उसने पाया कि चार गट्ठे गायब हैं; इस पर उसने चौकीदार से पूछा, क्या हुआ है? तब चौकीदार ने उसे रात में हुई घटना और '3 देखें अध्याय 5 का अध्याय 7'

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.92%** है।

अध्याय अठारहवें के लिए 532 टिप्पणियाँ। गठ्ठों के विषय में ऊँट चालक से क्या कहा गया था; और दुकान के मालिक ने कहा, "उस ऊँट चालक को मेरे पास लाओ जिसने भोर में गठ्ठें उठाई थीं।" चौकीदार ने उत्तर दिया, "मैंने सुना और आज्ञा का पालन किया"; और उसे ले आया। दुकान के मालिक ने उससे पूछा, "भोर में तुमने सामान कहाँ पहुँचाया?" उसने उत्तर दिया, "इस घाट पर, और मैंने उन्हें इस व्यक्ति के जहाज में रख दिया।" व्यापारी ने उससे कहा, "मेरे साथ वहाँ चलो।" वह उसके साथ वहाँ गया

और उससे कहा, "यह जहाज है, और यह इसका मालिक है।" तो उसने नाविक से पूछा, "तुम व्यापारी और सामान कहाँ पहुँचाया?" उसने उत्तर दिया, "इस स्थान पर, और वह मेरे पास एक ऊँट चालक को लाया, जिसने सामान अपने ऊँट पर रखा और चला गया, और मुझे नहीं पता कि वह कहाँ गया।" दुकान के मालिक ने उससे कहा, "उस ऊँट-चालक को मेरे पास लाओ जिसने तुमसे सामान लिया था।" वह उसे ले आया; और उसने उससे पूछा, "तुम व्यापारी के साथ जहाज़ से सामान कहाँ ले गए थे?" - उसने उत्तर दिया, "इस जगह।" और उसने उससे कहा, "मेरे साथ वहाँ चलो और मुझे दिखाओ।" ऊँट-चालक उसके साथ नदी के किनारे से दूर एक जगह पर गया, उसे उस खान के बारे में बताया जहाँ उसने सामान रखा था, और उसे उस [झूठे] व्यापारी का गोदाम दिखाया। तो वह गोदाम के पास गया और उसे खोला, और उसमें सामान की चारों गठरियाँ अपनी मूल अवस्था में, बिना खुली हुई पाईं; और उसने उन्हें ऊँट-चालक को दे दिया। लुटेरे ने अपना लबादा सामान पर रखा था; और सामान के मालिक ने उसे भी ऊँट-चालक को दे दिया, जिसने सारा सामान अपने ऊँट पर रख दिया। फिर उसने गोदाम बंद किया और ऊँट-चालक के साथ चला गया। और देखो, डाकू ने उसका सामना किया और तब तक उसका पीछा किया जब तक उसने अपना सामान नाव में नहीं चढ़ा दिया; फिर उसने उससे कहा, हे मेरे भाई, ईश्वर की कृपा तुम पर बनी रहे! तुमने अपना सामान ले लिया है और उसमें से कुछ भी खोया नहीं है: इसलिए मुझे यह चोगा दे दो। — व्यापारी उस पर हँसा और उसे चोगा दे दिया, और उसे परेशान नहीं किया; और वे दोनों अपने-अपने रास्ते चले गए।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.63%** है।

अठारहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। मोसरूर और इब्न-अल-करीबी के बीच समझौता। एक रात मोमिनों के सरदार हारून-ए-कशीद को अत्यधिक बेचैनी हुई; इसलिए उन्होंने अपने अवीज़ेर जाफ़र, जो याह्या अल-बन्नेकी के पुत्र थे, से कहा, "मैं आज रात सो नहीं पा रहा हूँ, मेरा दिल बेचैन है, और मुझे नहीं पता कि क्या करूँ।" तभी उनका हिजड़ा मोसरूर उनके सामने खड़ा था और हँसने लगा। खलीफ़ ने उससे कहा, "तुम किसलिए हँस रहे हो? क्या तुम मेरा अपमान कर रहे हो, या पागल हो गए हो?" उसने उत्तर दिया, "नहीं, अल्लाह की कसम, ऐ मोमिनों के सरदार, पैगंबरों के सरदार से आपके संबंध के कारण, मैंने जानबूझकर ऐसा नहीं किया।" लेकिन कल मैं महल से बाहर टहलने निकला और टिगरिस नदी के किनारे

तक चला गया, जहाँ मैंने लोगों की भीड़ देखी। मैं रुक गया और मैंने एक आदमी को लोगों को हंसाते हुए देखा। उसका नाम इब्न-अल-करीबी है। मुझे अभी-अभी उसके शब्द याद आए और मुझे हंसी आ गई; जिसके लिए मैं आपसे क्षमा मांगता हूँ, हे धनिलों के सरदार। इस पर खलीफा ने कहा, उसे तुरंत मेरे पास लाओ। इसलिए मेसरूर जल्दी से इब्न-अल-करीबी के पास पहुँचा; और उसने उससे कहा, धनिलों के सरदार के बुलावे का जवाब दो। इब्न-अल-करीबी ने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ। मेसरूर ने उससे कहा, लेकिन इस शर्त पर कि यदि तुम उसके पास जाओ और वह तुम्हें कुछ दे, तो उसका एक चौथाई तुम्हारा होगा और बाकी मेरा। इब्न-अल-करीबी ने उत्तर दिया, नहीं। तुम्हें आधा मिलेगा और मुझे आधा। लेकिन मेसरूर ने कहा, नहीं। और इब्न-अल-करीबी ने कहा, मुझे एक तिहाई मिलेगा और तुम्हें दो तिहाई।19 और बहुत कोशिश के बाद मेसरूर मान गया। फिर इब्न-अल-करीबी उठा और उसके साथ चला गया, और जब वह अमीरुल मोमिनीन के सामने पहुँचा, तो उसने खलीफ़ों को दी जाने वाली सामान्य सलामी दी और उसके सामने खड़ा हो गया; और अमीरुल मोमिनीन ने उससे कहा, अगर तुम मुझे हँसा नहीं पाओगे, तो मैं तुम्हें इस चमड़े के थैले से तीन बार मारूँगा। तो इब्न-अल-करीबी ने मन ही मन कहा, और इस चमड़े के थैले से तीन बार मार पड़ने से कोई बड़ी बात नहीं है, जबकि कोड़ों से मारने में मुझे कोई तकलीफ़ नहीं होती। क्योंकि उसने कल्पना की कि चमड़े का थैला खाली है। फिर उसने तरह-तरह के मज़ाकिया शब्दों से ऐसे कथन कहे जिनसे क्रोधित व्यक्ति भी हँस पड़े। लेकिन अमीरुल मोमिनीन न तो हँसे और न ही मुस्कुराए; इब्न-अल-करिब उन्हें देखकर हैरान, नाराज़ और भयभीत हुए; अमीरुल मोमिनीन ने उनसे कहा, अब तू मार खाने के लायक हो गया है। तदनुसार, उन्होंने चमड़े का थैला लिया और उन्हें एक

बार पीटा; उसमें चार कंकड़ थे, प्रत्येक कंकड़ का वजन दो पौंड था; और प्रहार उनकी गर्दन पर पड़ा: तो वे ज़ोर से चिल्लाए, और मेसरूर के साथ हुए समझौते को याद करते हुए उन्होंने कहा, क्षमा करें, ऐ अमीरुल मोमिनीन! मेरी दो बातें सुनिए! खलीफा ने उत्तर दिया, जो चाहो कहो। और उन्होंने कहा, मेसरूर ने मुझ पर एक शर्त रखी थी, और मैंने उस पर उनसे सहमति जताई थी; और वह यह थी कि अमीरुल मोमिनीन मुझे जो कुछ भी दें, उसका एक तिहाई मेरे लिए और दो तिहाई उनके लिए होगा; और उन्होंने अत्यधिक प्रयास के बाद ही मेरे इस प्रस्ताव को स्वीकार किया। अब तूने मुझे मार के सिवा कुछ नहीं दिया, और यह एक प्रहार मेरा हिस्सा है, और शेष दो प्रहार उसके हिस्से के हैं; क्योंकि मुझे मेरा हिस्सा मिल चुका है, और वह यहाँ खड़ा है, हे धनियों के सरदार; इसलिए उसे उसका हिस्सा दे दे। — और जब धनियों के सरदार ने उसकी बातें सुनीं, तो वह हँसते-हँसते पीछे गिर पड़ा; और मेसरूर को बुलाकर उसने उसे एक प्रहार किया, जिस पर मेसरूर चिल्लाया और बोला, हे धनियों के सरदार, एक तिहाई ही मेरे लिए काफी है, और तू उसे दो तिहाई दे दे। और खलीफा उन पर हँसा, और आदेश दिया कि उनमें से प्रत्येक को एक हजार सोने के सिक्के भेंट किए जाएँ। और वे उस चीज़ से प्रसन्न होकर चले गए जो उसने उन्हें दी थी। 19 मूल पाठ में, "तुम्हें एक तिहाई मिलेगा, और /तुम्हें दो तिहाई मिलेगा;" लेकिन यह पहले और बाद के दोनों कथनों से असंगत है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.21%** है।

534 अध्याय अठारहवें के लिए पांडुलिपि नहीं। एक भक्त का किस्सा, हारून-एर-रशीद का पुत्र।20 विश्वासियों के राजकुमार, हारून-एर-रशीद का एक पुत्र था जो सोलह वर्ष का हो चुका था, और वह संसार से विमुख

होकर संन्यासी और भक्तों के मार्ग का अनुसरण करता था। वह श्मशान घाट जाता और कहता, “तुम संसार के स्वामी थे; परन्तु उससे तुम्हारा उद्धार नहीं हुआ; और तुम अपनी कब्रों में चले गए। काश मैं जान पाता कि तुमने क्या कहा,21 और तुम्हें क्या कहा गया!” — और वह भयभीत और डरपोक की तरह रोया, और कवि के इस कथन का पाठ किया: — • अंत्येष्टि मुझे निरंतर भयभीत करती है, और विलाप करती स्त्रियों का रोना मुझे दुखी करता है। एक दिन ऐसा हुआ कि उसके पिता शान से उसके पास से गुज़रे, उनके चारों ओर उनके वज़ीर और उनके साम्राज्य के बड़े-बड़े लोग और उनके राज्य के लोग थे। उन्होंने देखा कि अमीरुल मोमिनीन का बेटा अपने शरीर पर ऊनी जुब्बे1"2 और सिर पर ऊनी कपड़े का एक टुकड़ा (पगड़ी की तरह) पहने हुए था। तब उनमें से एक ने दूसरे से कहा, "इस युवक ने अमीरुल मोमिनीन को राजाओं के बीच अपमानित किया है, और अगर वह उसे डांटेंगे, तो वह अपना यह आचरण छोड़ देगा।" अमीरुल मोमिनीन ने उनकी बातें सुनकर उससे इस विषय पर बात की और कहा, "हे मेरे बच्चे, तुमने अपने इस जीवन से मुझे अपमानित किया है।" लेकिन उसके बेटे ने उसकी ओर देखा और कोई उत्तर नहीं दिया। फिर उसने महल की एक प्राचीर पर बैठे एक पक्षी को देखा और उससे कहा, "हे पक्षी, जिसने तुझे बनाया है, उसकी कसम, मेरे हाथ पर बैठ जा।" इस पर पक्षी झपट्टा मारकर युवक के हाथ पर बैठ गया। और उसने उससे कहा, "वापस लौट जा।" अपने स्थान पर। और वह लौट आया। तब उसने उससे कहा, विश्वासियों के राजकुमार के हाथ पर गिर पड़ो। परन्तु उसने ऐसा करने से इनकार कर दिया। तब युवक ने अपने पिता से कहा, तूने संसार के प्रति अपने प्रेम के कारण मुझे वलीसों के बीच अपमानित किया है, और मैंने तुझसे विदा लेने का निश्चय कर लिया है, परलोक के सिवा कभी तुझसे नहीं लौटूँगा। तब वह नदी के

किनारे अल-बसरा चला गया, जहाँ वह मज़दूरों के साथ मिट्टी में काम करने लगा; और वह प्रतिदिन एक चाँदी के सिक्के और एक छठे हिस्से के अलावा कोई काम नहीं करता था; छठे हिस्से से वह अपना पेट भरता था; और चाँदी के सिक्के से वह दान देता था। अल-बसरा के अबू-अमीर ने इस प्रकार वर्णित किया है:— मेरे घर की एक दीवार गिर गई, तो मैं उसकी मरम्मत करने के लिए किसी आदमी को देखने के लिए मज़दूरों के स्थान पर गया; और मेरी नज़र एक सुंदर चेहरे वाले आकर्षक युवक पर पड़ी; तब मैं उसके पास गया और उसे प्रणाम किया और उससे कहा, हे मेरे मित्र, क्या तुम क्या तुम सेवा चाहते हो? उसने उत्तर दिया, हाँ। और मैंने कहा, उठो और मेरे साथ दीवार बनाने चलो। उसने उत्तर दिया, कुछ शर्तों पर जो मैं तुम पर लगाऊँगा। - हे मेरे मित्र, मैंने कहा, वे क्या हैं? उसने उत्तर दिया, मजदूरी एक चाँदी का सिक्का और एक छठा हिस्सा होगी; और जब मुएद्दीन 2(1 यह किस्सा एक ऐसे किस्से पर आधारित प्रतीत होता है जिसका मैंने पहले वर्णन किया है, अली के पुत्र अल-मामून से। खंड i, पृष्ठ 210 देखें। 21 यह, जैसा कि मेरे शेख बताते हैं, दो फरिश्तों, मुनकर (जिसे आम बोलचाल में नकीर कहा जाता है) और नेकीर द्वारा पूछे गए प्रश्नों की ओर इशारा करता है, जो मृतकों की जाँच करते हैं, उन्हें, 'दुष्टों को कब्र में यातना दो। - जब काबेह मेरा किबलेह है, और मैं जीकर मरा हूँ, और मुहम्मद ईश्वर के रसूल हैं:' तो एक व्यक्ति (जिसे मुलक्किन कहा जाता है) को आम तौर पर इन सवालों के जवाब देने का तरीका सिखाने के लिए नियुक्त किया जाता है, और वे उसे कहेंगे, 'हे ईश्वर के सेवक, ईश्वर की सुरक्षा में सो जाओ।' (आधुनिक मिस्रियों पर मेरे काम से।) हे ईश्वर की दासी के पुत्र! जान लो कि इस समय, तुम्हारे और तुम्हारे जैसे लोगों के लिए नियुक्त दो फ़रिश्ते तुम्हारे पास आएंगे। 22 अध्याय 6 के नोट 29 देखें। 23 ईश्वर के प्रिय, या

संत। जब वे तुमसे कहें, 'तुम्हारा प्रभु कौन है?' तो उन्हें सच्चाई से उत्तर दो, 'ईश्वर मेरा प्रभु है;' जब वे चूने के साथ या उसके स्थान पर चूने का प्रयोग करते थे, तो वे तुमसे पैगंबर या उस व्यक्ति के बारे में पूछते थे जो 85 दिरहम के छठे भाग का नाम (जो तुम्हारे पास भेजा गया है, उनसे कहो, 'मोहम्मद ईश्वर के रसूल हैं,' सत्यता के साथ; और जब "चांदी का एक टुकड़ा") "दानिक" है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.29%** है।

अध्याय अठारहवाँ। 535 (जब अज़ान हुई, तो मुझे जमात के साथ नमाज़ पढ़ने दो। मैंने कहा, ठीक है। फिर मैं उसे लेकर घर गया, और उसने ऐसे काम किए जैसे मैंने पहले कभी नहीं देखे थे। मैंने उससे खाने के बारे में पूछा; लेकिन उसने कहा, नहीं:— तो मुझे पता चल गया कि वह रोज़ा रख रहा है। और जब उसने अज़ान सुनी, तो उसने मुझसे कहा, तुम स्थिति जानते हो। मैंने उत्तर दिया, हाँ। और उसने अपनी कमरबंद खोली, और उसने ऐसे वज़ू किए जैसे मैंने पहले कभी नहीं देखे।26 फिर वह नमाज़ पढ़ने गया, और जमात के साथ नमाज़ पढ़कर अपने काम पर लौट आया। और जब दोपहर की अज़ान हुई, तो उसने फिर से वज़ू किया और नमाज़ पढ़ने गया, और अपने काम पर लौट आया। इस पर मैंने उससे कहा, हे मेरे मित्र, काम का समय समाप्त हो गया है, क्योंकि मजदूरों का काम दोपहर की नमाज़ तक होता है। लेकिन उसने उत्तर दिया, अल्लाह की परिपूर्णता की प्रशंसा हो! निश्चय ही मेरा काम रात तक चलता है। और वह रात तक काम करता रहा, जब मैंने उसे चाँदी के दो सिक्के दिए। उन्हें देखकर उसने कहा, यह क्या है? मैंने उत्तर दिया, अल्लाह की कसम, यह मेरी सेवा में तुम्हारी परिश्रम के फलस्वरूप तुम्हारी मजदूरी का एक हिस्सा है। परन्तु उसने उन्हें मुझे वापस फेंक दिया और

कहा, मुझे उस राशि में कुछ और नहीं चाहिए जिस पर हम सहमत हुए थे। मैंने उसे समझाया, परन्तु उसे मना नहीं सका। इसलिए मैंने उसे चाँदी का एक सिक्का और एक छठा हिस्सा दिया, और वह चला गया। और जब अगली सुबह हुई, तो मैं जल्दी स्टेशन गया, परन्तु वह वहाँ नहीं मिला। इसलिए मैंने उसके बारे में पूछताछ की, और मुझे बताया गया, वह यहाँ केवल शनिवार को ही आता है। और जब अगला शनिवार आया, तो मैं उस स्थान पर गया, और उसे पाया; और मैंने उससे कहा, अल्लाह के नाम पर, कृपया काम पर आने की कृपा करो। उसने उत्तर दिया, उन शर्तों पर जो तुम जानते हो। मैंने कहा, हाँ। और मैं उसके साथ अपने घर चला गया। मैं घर के पास खड़ा होकर उसे देखता रहा, बिना उसके देखे। उसने मुट्ठी भर मिट्टी ली और उसे दीवार पर रख दिया, और देखो, पत्थर अपने आप एक के ऊपर एक सज गए। तब मैंने कहा, ये तो ईश्वर के चमत्कार हैं! उसने उस दिन काम किया और पहले से कहीं अधिक काम किया। जब रात हुई, तो मैंने उसे उसकी मजदूरी दी और वह लेकर चला गया। फिर, तीसरे शनिवार को, मैं स्टेशन गया; लेकिन वह वहाँ नहीं मिला; इसलिए मैंने उसके बारे में पूछा, और मुझे उत्तर मिला, वह बीमार है और एक महिला की झोपड़ी में लेटा है। वह एक बूढ़ी औरत थी जो अपनी भक्ति के लिए प्रसिद्ध थी, और उसका कब्रिस्तान में सरकंडों की झोपड़ी थी। मैं झोपड़ी में गया और अंदर गया; और देखो, वह जमीन पर लेटा हुआ था, उसके नीचे कुछ भी नहीं था: उसने अपना सिर एक कच्ची ईंट पर रखा हुआ था, और उसका चेहरा प्रकाश से दमक रहा था। मैंने उसे प्रणाम किया, और उसने भी मुझे प्रणाम किया; और मैं उसके सिर के पास बैठ गया, उसकी जवानी के कारण रोता रहा, और अपने जन्मस्थान से उनकी अनुपस्थिति और अपने प्रभु की आज्ञाकारिता के प्रति उनकी तत्परता। तब मैंने उनसे कहा, क्या तुम्हें कोई ज़रूरत है? उन्होंने उत्तर

दिया, हाँ। — और वह क्या है? मैंने पूछा। उन्होंने उत्तर दिया, कल सूर्योदय और दोपहर के बीच के मध्य समय में मेरे पास आना, और तुम मुझे मृत पाओगे। मुझे नहला देना और किसी को बताए बिना मेरी कब्र खोदना; और मुझे इस जुब्बे में लपेट देना जो मुझ पर है; और इसे खोलकर, इसके सीने की तलाशी लेना, इसके भीतर जो कुछ भी है उसे निकाल लेना और अपने पास रखना। फिर, जब तुम मेरे ऊपर प्रार्थना कर लो और मेरे शरीर को धरती में दफना दो, तो बगदाद जाना और खलीफा हारून-ए-रशीद के आने तक उनकी प्रतीक्षा करना, और मेरे जुब्बे के सीने में जो कुछ भी मिले, उसे मेरी ओर से सलाम सहित उन्हें दे देना। — यह कहने के बाद, उन्होंने धर्म की प्रतिज्ञा दोहराई और अपने प्रभु की अत्यंत प्रशंसा की। वाक्पटु शब्दों में, उन्होंने ये आयतें पढ़ीं: — जिसकी मृत्यु निकट है, उसका शव एर-कशीदज ले जाओ, क्योंकि तुम्हें उस कार्य का फल मिलेगा; और उससे कहो, एक अजनबी, जो तुम्हें देखने की इच्छा रखता है, जो लंबे समय से प्रेम करता और दूर रहता है, उसने तुम्हें अपना आदर अर्पित किया है। 26 अनेक प्रार्थनाएँ (छोटी प्रार्थनाएँ) हैं जो फारसियों में अधिक कठोर मुसलमानों द्वारा बोली जाती हैं, खंड 1, अध्याय 52। वज़ू का प्रदर्शन; लेकिन अधिकांश लोग अधिक

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.91%** है।

न तो घृणा और न ही थकान उसे तुझसे दूर कर पाई है; क्योंकि तेरे दाहिने हाथ को चूमने से वह ईश्वर के निकट आ जाता है। हे मेरे पिता, जो उसे तुझसे दूर करता है, वह एक ऐसी आत्मा है जो तेरे सांसारिक सुखों में भागीदार होने से कतराती है। फिर वह ईश्वर से क्षमा मांगने, प्रार्थना करने और धर्मात्माओं के मुखिया पर आशीर्वाद मांगने में लीन हो गया, और कुरान की कुछ आयतें पढ़कर उसने ये पंक्तियाँ दोहराईं: हे मेरे पिता,

भोग-विलास से धोखा न खाओ; क्योंकि जीवन बीत जाएगा; और भोग-विलास का अंत हो जाएगा। जब तुम्हें पता चले कि कोई कौम सता रही है, तो जान लो कि तुमसे उनके बारे में पूछताछ की जाएगी। और जब तुम किसी शव को कब्रों तक ले जाओ, तो जान लो कि तुम्हें भी उसके पीछे ले जाया जाएगा। और जब युवक ने अपना उपदेश और पाठ समाप्त कर लिया, तो मैं उससे विदा लेकर अपने घर चला गया। और अगली सुबह मैं फिर उसके पास गया, दोपहर के मध्य में। सूर्योदय और दोपहर के समय, मैंने देखा कि उसकी मृत्यु हो गई थी। अल्लाह की रहमत उस पर हो! तो मैंने उसे नहलाया, और उसकी कुर्बानी खोली, और उसकी छाती में मुझे हज़ारों सोने के सिक्कों के बराबर एक माणिक मिला; तब मैंने मन ही मन कहा, अल्लाह की कसम, इस नौजवान ने सांसारिक सुखों से पूर्णतः परहेज किया है। फिर, उसे दफनाने के बाद, मैं बगदाद चला गया, और खुल्लेफा के महल में पहुँचकर, मैंने एर-रशीद के आने का इंतज़ार किया, जब तक कि वह नहीं आया, तब मैंने एक गली में उसके सामने खुद को पेश किया, और उसे वह माणिक दिया। जैसे ही उसने उसे देखा, वह पहचान गया, और बेहोश होकर गिर पड़ा; जिस पर नौकरों ने मुझे पकड़ लिया; लेकिन जब वह संभला, तो उसने उनसे कहा, इसे छोड़ दो, और सम्मानपूर्वक महल में भेज दो। तो उन्होंने वैसा ही किया जैसा उसने उन्हें आदेश दिया था; और अपने महल में प्रवेश करते ही, उसने मुझे बुलाया, और मुझे अपने कमरे में ले गया, और मुझसे कहा, इस माणिक के स्वामी ने क्या किया? मैंने उसे उत्तर दिया, वह मर गया है। और मैंने उसे उसकी स्थिति बताई; जिस पर वह रोया और बोला, पुत्र को लाभ हुआ है, और पिता को नहीं।27 अर्थात्, न्याय के दिन तुम्हें अपने पिता के रूप में सम्मान देकर। पैगंबर।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.84%** है।

NOTKS TO CFtAPTttK अठारहवें, r»37 इंगित] तब उसने पुकारा, हे फलाँ! (एक स्त्री का नाम लेते हुए); — और एक स्त्री आगे आई; परन्तु जब उसने मुझे देखा, तो वह वापस जाने ही वाली थी: इसलिए उसने उससे कहा, इधर आओ। तुम्हें उसकी परवाह करने की आवश्यकता नहीं है। — इसलिए वह अंदर आई और प्रणाम किया, और उसने उसे माणिक फेंक दिया; जिसे देखकर वह ज़ोर से रोई और बेहोश होकर गिर पड़ी। और जब वह बेहोशी से उबरी, तो उसने कहा, हे विश्वासियों के राजकुमार, ईश्वर ने मेरे पुत्र के साथ क्या किया है? उसने मुझसे कहा, उसे उसके मामले से अवगत कराओ। और वह रोने लगा।

तदनुसार मैंने उसे उसके मामले के बारे में बताया; और वह रोने लगी, और धीमी आवाज़ में कहने लगी, हे, मैं तुमसे मिलने के लिए कितनी तरस रही थी! हे मेरी आँखों का आनंद! काश [मैंने तुम्हें पानी पिलाया होता जब तुम्हें ऐसा करने वाला कोई नहीं मिला! काश, जब तुम किसी का हौसला नहीं चाहते थे, तब मैं तुम्हारा हौसला बढ़ा पाती! — फिर वह फूट-फूटकर रोई और ये पंक्तियाँ पढ़ीं: मैं उस अजनबी के लिए रोती हूँ जो एकांत में मर गया, जिसके पास कोई मित्र नहीं था जिससे वह अपने दुख का बखान कर सके। यश और अपने प्रियजनों के मिलन के बाद, वह अकेला और निर्जन हो गया, किसी से नहीं मिला। भाग्य जो कुछ समय के लिए छुपाता है, वह प्रकट हो जाता है। मृत्यु हममें से किसी को नहीं छोड़ती। हे अनुपस्थित! मेरे प्रभु ने तुम्हारी अनुपस्थिति तय की; और निकटता के बाद तुम मुझसे दूर हो गए! यद्यपि मृत्यु ने मुझे अब तुमसे मिलने की उम्मीद खो दी है, हे मेरे पुत्र, हम हिसाब के दिन मिलेंगे। और मैंने कहा, हे विश्वासियों के राजकुमार, क्या वह तुम्हारा पुत्र था? उसने उत्तर दिया, हाँ; और इस पद को संभालने से पहले वह विद्वानों से मिलने और धर्मात्माओं की संगति में रहता था; और जब मैंने यह पद संभाला तो उसने मुझसे दूरी बना ली और मुझसे विमुख हो गया। अत मैंने उसकी माता से कहा, “यह युवक ईश्वर (जिसका नाम महान है!) के प्रति समर्पित है, और संभवतः उस पर विपत्तियाँ आ सकती हैं, और वह परीक्षाओं से पीड़ित हो सकता है; इसलिए उसे यह माणिक दे दो, ताकि आवश्यकता पड़ने पर वह इसे पा सके।” तदनुसार, उसने उसे माणिक दे दिया और उसे इसे अपने पास रखने का वचन दिया, और उसने उसकी इच्छा का पालन करते हुए उसे उससे ले लिया। फिर उसने हमारे सांसारिक सुखों को हमारे लिए छोड़ दिया, और हमसे विदा हो गया, और तब तक हमसे विदा नहीं हुआ जब तक कि वह पवित्र और शुद्ध होकर ईश्वर से नहीं मिला, जिसकी शक्ति

और महिमा का बखान किया जाता है! इसके बाद, खलीफा ने मुझसे कहा, "उठो, और मुझे उसकी कब्र दिखाओ।" अत: मैं उसके साथ गया, और तब तक यात्रा करता रहा जब तक कि मैंने उसे उसकी कब्र नहीं दिखा दी; जिस पर वह रोया और विलाप किया, यहाँ तक कि वह बेहोश होकर गिर पड़ा। और जब वह अपने दौरे से उबर गया, तो उसने ईश्वर से क्षमा मांगी और कहा, निश्चय ही हम ईश्वर के हैं, और निश्चय ही हम उसी के पास लौटेंगे! और उसने अपने पुत्र के लिए आशीर्वाद मांगा। इसके बाद, उसने मुझे अपना सहयोगी बनने के लिए कहा; लेकिन मैंने उत्तर दिया, हे विश्वासियों के राजकुमार, आपके पुत्र के मामले में मेरे पास एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपदेश है।80 एक अनपढ़ स्कूल मास्टर का किस्सा। 31 ऐसा कहा जाता है कि महाविद्यालय के छात्रों में से एक व्यक्ति,3- जो न तो लिखना जानता था और न ही पढ़ना, अपनी रोजी-रोटी कमाने के लिए लोगों पर छल-कपट करता था। एक दिन उसके मन में यह विचार आया कि वह अपना एक स्कूल खोले और उसमें लड़कों को पढ़ना सिखाए। इसलिए उसने लेखन-पट्टियाँ और लिखित कागज़ एकत्र किए, और उन्हें एक जगह पर टांग दिया, और उसने अपनी पगड़ी बड़ी कर ली,33 और बैठ गया ?-° मेरी सूचना में अगले दो उपाख्यानों में से पहला (जिनमें से दोनों को मैं छोड़ रहा हूँ) एक स्कूल-मास्टर का है जिसका उल्लेख (खंड i. पृष्ठ 468 में "किताल" के अधिकार पर) किया गया है। यह उपाधि उन व्यक्तियों को दी जाती है जो अध्ययन के उद्देश्य से कॉलेजिएट मस्जिद में रहते हैं या व्याख्यान आदि में भाग लेते हैं।31 मैंने लगभग उसी तरह का एक उपाख्यान बताया है। इसी तरह, एक हालिया घटना के वर्णनात्मक रूप में, s3 आधुनिक मिस्रियों पर मेरे काम (खंड i. अध्याय ii.) में धर्म और कानून के अधिकांश प्रोफेसर एक बहुत बड़ी और औपचारिक पगड़ी पहनते थे, और कई अभी भी पहनते हैं: और एक बड़ी

पगड़ी को आम तौर पर आम लोगों द्वारा महान ज्ञान का संकेत माना जाता है। इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे सूचनादाता का विवरण समय के बारे में सही नहीं था, या यह कि उसके द्वारा संदर्भित व्यक्ति मुख्य रूप से एक नकलची था। बाद वाला असंभव नहीं है, क्योंकि मुझे विश्वसनीय रूप से एच. 3 जेड

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.30%** है।

अध्याय अठारहवें के लिए 53S टिप्पणियाँ। वह विद्यालय के द्वार पर बैठा रहता था। लोग उसके पास से गुजरते हुए, उसकी पगड़ी और लेखन-पट्टियों और कागजों को देखकर यह अनुमान लगाते थे कि वह एक उत्कृष्ट शिक्षक है,31 और अपने बच्चों को उसके पास लाते थे। वह एक बच्चे से कहता, लिखो; और दूसरे से, पढ़ो; और इस प्रकार बच्चे एक-दूसरे को सिखाते थे। लेकिन एक दिन जब वह हमेशा की तरह विद्यालय के द्वार पर बैठा था, तभी अचानक एक स्त्री दूर से हाथ में एक पत्र लिए हुए पास आई; तब उसने मन ही मन कहा, निःसंदेह यह स्त्री मेरे पास इसलिए आई है ताकि मैं उसे वह पत्र पढ़कर सुना सकूँ जो वह पकड़े हुए है; और मैं उससे कैसे निपटूँगा, जब मुझे पढ़ना-लिखना नहीं आता? उसने उससे भागने के लिए नीचे उतरने का विचार किया; लेकिन इससे पहले कि वह नीचे उतर पाता, वह उसके पास आ गई और उससे बोली, तुम कहाँ जा रहे हो? उसने उत्तर दिया, मैं दोपहर की नमाज अदा करना चाहता हूँ और फिर लौटना चाहता हूँ। दोपहर होने में अभी समय है, उसने उत्तर दिया; इसलिए मेरे लिए यह पत्र पढ़ो। उसने पत्र उससे ले लिया, उसे उल्टा कर दिया और उसे देखने लगा; एक पल उसने अपनी पगड़ी झटक दी, दूसरे पल अपनी भौंहें मटकाते हुए क्रोध प्रकट किया। अब उस स्त्री का पति अनुपस्थित था, और पत्र उसी ने उसे भेजा था। जब उसने उस फीकी को

इस हालत में देखा, तो उसने मन ही मन कहा, निस्संदेह मेरा पति मर गया है, और यह फीकी मुझे यह बताने में शर्म महसूस कर रहा है कि वह मर गया है। इसलिए उसने उससे कहा, मेरे स्वामी, यदि वह मर गया है, तो मुझे बताएँ। उसने अपना सिर झटक दिया और चुप रहा। स्त्री ने उससे कहा, क्या मैं अपने कपड़े फाड़ दूँ? फाड़ दूँ, उसने उत्तर दिया। क्या मैं अपने चेहरे पर थप्पड़ मार दूँ? उसने पूछा। उसने उत्तर दिया, थप्पड़ मारो। तो उसने उसके हाथ से पत्र ले लिया और अपने घर लौट गई; और वह और उसके बच्चे रोने लगे; यह सुनकर उसके कुछ पड़ोसियों ने उसकी हालत के बारे में पूछा; और उन्हें उत्तर मिला, "उसे एक पत्र मिला है जिसमें उसके पति की मृत्यु की सूचना दी गई है।" लेकिन उनमें से एक व्यक्ति ने उत्तर दिया, "यह कथन बिल्कुल झूठ है; क्योंकि उसके पति ने कल मुझे एक पत्र भेजा था जिसमें उसने मुझे सूचित किया था कि वह ठीक है, खुशहाल और स्वस्थ है, और दस दिनों के बाद वह उसके पास होगा।" वह तुरंत उठा और उस स्त्री के पास आकर उससे बोला, "तुम्हें जो पत्र मिला है वह कहाँ है?" तब वह उसे पत्र ले आई, और उसने उसे उससे लेकर पढ़ा, और देखो, उसमें ये शब्द थे: — "आगे, मैं ठीक हूँ, खुशहाल और स्वस्थ हूँ, और दस दिनों के बाद मैं तुम्हारे पास आऊँगा; और मैंने तुम्हारे लिए एक रजाई और एक मेकमरा भेजा है।"35 — तब उसने पत्र लिया और उसे लेकर उस फीकी के पास लौट गई और उससे कहा, "तुम्हें ऐसा करने के लिए किसने प्रेरित किया?" और उसने उसे अपने पड़ोसी द्वारा कही गई बात से अवगत कराया, उसके पति की सुरक्षा के बारे में, और उसके द्वारा उसे रजाई और एक मेकमरा भेजने के बारे में। इस पर उसने उत्तर दिया, "तुमने सत्य कहा है; परन्तु हे आदरणीय स्त्री, मुझे क्षमा करो; क्योंकि उस समय मैं क्रोधित था, मन व्याकुल था, और मेकमरा को रजाई में लिपटा देखकर मैंने सोचा कि उसकी मृत्यु हो गई है

और उसे कफ़न पहना दिया गया है।” और स्त्री को मेरी चाल का पता नहीं चला, इसलिए उसने उससे कहा, “तुम्हें क्षमा किया जाता है।” और उसने उससे पत्र लिया और चली गई। रुख़'/» पश्चिमी अफ़्रीका के लोगों का एक व्यक्ति3' विभिन्न क्षेत्रों में यात्रा कर चुका था, और रेगिस्तानों और समुद्रों को पार कर चुका था, और भाग्य ने उसे एक द्वीप पर पहुँचा दिया, जहाँ वह लंबे समय तक रहा। फिर वह अपने देश लौट आया, अपने साथ कलम3* लेकर। यह नाम अब आमतौर पर केवल 3C या रुख़ख को दिया जाता है; लेकिन यह उच्चारण धर्म और कानून में पारंगत व्यक्ति को अच्छी तरह से दर्शाता है; अरब लोग इसे "तेश्दीद" कहते हैं, और मुझे लगता है कि इस तरह के मामले में हमेशा "फिकी" शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए, जो "फकीह" का बिगड़ा हुआ रूप है। यह शब्द आमतौर पर उस व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता है जो केवल पेशेवर रूप से कुरान का पाठ करता है, या जो बच्चों को पढ़ाता है। अरब लोग इसे "अल-मग़रिब" कहते हैं। यह नाम आम तौर पर मिस्र के पश्चिम में उत्तरी अफ्रीका के जिलों को दिया जाता है। उन क्षेत्रों के निवासियों को "मग़रबी" कहा जाता है। "मेकमरा" शब्द की व्याख्या शेख द्वारा की जाती है, लेकिन कुछ अस्पष्ट रूप से। मेरा मानना है कि यह पैसे रखने के लिए थैली वाली एक बेल्ट या कमरबंद है, जिसे अक्सर "कमुर" कहा जाता है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.46%** है।

अठारहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 539 एक नन्हे रुख़ के पंख का एक हिस्सा, जो अंडे में था और अभी तक उससे बाहर नहीं आया था; और उस पंख में एक बकरी की खाल जितना पानी समा सकता था। कहा जाता है कि नन्हे रुख़ के पंख की लंबाई, अंडे से बाहर आने के समय, एक हजार फ़ैदम होती है; और लोग उस चक्की को देखकर आश्चर्यचकित

रह गए। इस व्यक्ति का नाम 'अब्द-एर-अल्लाहमान अल-मग़राबी था; और चीन में लंबे समय तक रहने के कारण वह चीनी उपनाम से प्रसिद्ध हो गया; और वह आश्चर्यजनक किस्से सुनाया करता था।33 प्रेमियों पर संयम का परिणाम: अदी के पुत्र अल-कासिम ने बताया है कि जेनी तेनीम जनजाति के एक व्यक्ति ने कहा, मैं एक भटके हुए जानवर को खोजने निकला, और तेईयी जनजाति के जलक्षेत्र में आकर मैंने लोगों के दो समूह देखे, जो एक-दूसरे के पास थे, और उनमें से एक समूह के लोगों के बीच भी वैसी ही बातें हो रही थीं जैसी दूसरे समूह के लोगों के बीच हो रही थीं। मैंने ध्यान से देखा, और एक समूह में एक युवक को देखा जो बीमारी से इतना कमजोर हो गया था कि वह एक घिसी-पिटी, सूखी मशक जैसा लग रहा था; और जब मैं उसे देख रहा था, तो उसने ये पंक्तियाँ पढ़ीं:— सुंदर युवती वापस क्यों नहीं लौटती? क्या यह उसकी कंजूसी थी, या घृणा? मैं बीमार पड़ गई, और मेरे परिवार के सभी सदस्य मुझसे मिलने आए। तो फिर तुम उनके बीच क्यों नहीं दिखीं? अगर तुम बीमार होतीं, तो मैं तुम्हारे पास आती, और धमकियाँ मुझे ऐसा करने से नहीं रोक पातीं। मैंने तुम्हें उनके बीच बहुत याद किया, और मैं उदास हो गई। हे मेरे दिल के घर, तुम्हारा जाना कितना दुखद था! तभी दूसरे दल की एक युवती ने उसकी बातें सुनीं और उसकी ओर दौड़ी। उसका परिवार भी उसके पीछे आया; लेकिन उसने उनका हाथ पकड़कर विरोध किया; और युवक ने उसे देखकर उसकी ओर छलांग लगाई, जबकि उसके दल के लोग भी उसके पीछे-पीछे दौड़े। हालाँकि, वह उनसे अलग हो गया, और वह भी उसी तरह अपने दल से अलग हो गई जब तक कि वह उनसे मुक्त नहीं हो गई, और वे दोनों एक-दूसरे की ओर दौड़े जब तक कि वे दोनों दलों के बीच नहीं मिल गए, और एक-दूसरे को गले लगा लिया: फिर वे जमीन पर गिर पड़े, मृत। इस पर, एक बूढ़ा आदमी पास के एक

तंबू से बाहर आया, और उनके ऊपर खड़े होकर बोला, निःसंदेह हम अल्लाह के हैं, और निःसंदेह उसी के पास लौटेंगे!— और वह फूट-फूटकर रोने लगा; फिर उसने कहा, अल्लाह (जिसका नाम महान है!) तुम दोनों पर रहम करे! अल्लाह की कसम, अगर तुम अपने जीवन में एक नहीं हुए, तो मैं तुम्हें मृत्यु के बाद अवश्य एक कर दूंगा!— फिर उसने उन्हें दफ़नाने की तैयारी करने का आदेश दिया; और उन्हें नहलाया गया, और एक ही कफ़न में लपेटा गया; उनके लिए एक कब्र खोदी गई, और लोगों ने उनके लिए दुआ की, और उन्हें उसी कब्र में दफ़ना दिया; और दोनों पक्षों में से कोई भी पुरुष या स्त्री ऐसी नहीं थी जिसे मैंने उनके लिए रोते और अपना चेहरा थपथपाते हुए न देखा हो। इसलिए मैंने उस बूढ़े से उनके बारे में पूछा; और उसने मुझे उत्तर दिया, यह मेरी बेटी थी, और यह मेरे भाई का बेटा था। उनके प्रेम ने उन्हें वह संतान दी जो तुमने देखी— मैंने उससे कहा, अल्लाह तुम्हें प्रायश्चित दे! क्या तुमने उनका विवाह नहीं कराया था?— उसने उत्तर दिया, मुझे निंदा का डर था और अपमान, और अब मैं दोनों में पड़ गया हूँ।— यह प्रेमियों के इतिहास के चमत्कारों में से एक है। 3S उनकी अद्भुत कहानियों में से एक, जिसका वर्णन मूल में है, जिसे मैं छोड़ रहा हूँ। इनमें से एक (इब्राहीम के पुत्र का एक साहसिक कार्य, जिसे मैं यहाँ छोड़ रहा हूँ, ताकि मैं एस-सिंदिबाद की यात्राओं की घटनाओं का पूर्वाभास न करूँ; मेरे नोट्स में, यह मुखारिक के लगभग समान नहीं था, जिस पर मुझे खंड 1, पृष्ठ 202 में वापस आने का अवसर मिलेगा; और इसके समान भी। (अध्याय 20 के नोट्स 22 और 62 देखें।)— ऊपर दिए गए उपाख्यान में अल-महदी के पुत्र इब्राहिम के बाद मूल में चार खंड, पृष्ठ 10^ हैं।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **24.88%** है।

540 अठारहवें अध्याय पर टिप्पणियाँ। एक विचलित प्रेमी का किस्सा। अबू-अब्बास अल-मुबार्रद 39 कहते हैं, मैं कुछ काम से अपने कुछ साथियों के साथ अल-बेरीद 40 गया, और हेराक्लियस के मठ 41 के पास से गुजरते हुए हम उसकी छाया में रुके; तभी एक आदमी हमारे पास आया और हमसे कहा, इस मठ में कुछ पागल हैं, जिनमें से एक ज्ञान की बातें करता है; और अगर तुम उसे देखोगे, तो उसकी बातों पर आश्चर्य करोगे। तो हम सब उठे और मठ में प्रवेश किया, और हमने एक आदमी को एक निजी कमरे में चमड़े पर सिर ढके बैठे देखा, उसकी आँखें दीवार की ओर ऊपर उठी हुई थीं। हमने उसे प्रणाम किया, और उसने हमारी ओर देखे बिना ही हमारा प्रणाम लौटाया; और एक आदमी ने कहा, उसे कुछ कविता सुनाओ; क्योंकि जब वह कविता सुनता है, तो वह बोलने लगता है। इसलिए मैंने ये दो श्लोक पढ़े: — हे उन सभी पुरुषों में श्रेष्ठ जिन्हें हव्वा ने जन्म दिया है! तेरे बिना संसार न सुंदर होता, न सुखी। जिस मनुष्य को ईश्वर तेरा रूप दिखाता है, उसे अमरता प्राप्त होती है, और वह न बूढ़ा होता है, न ही वृद्ध। और जब उसने मुझे यह कहते सुना, तो वह हमारी ओर मुड़ा और इस प्रकार बोला: — ईश्वर जानता है कि मैं पीड़ा में हूँ। मैं अपने दर्द को प्रकट नहीं कर सकता। मेरी दो आत्माएँ हैं: एक स्थान में एक आत्मा है; और दूसरे स्थान में दूसरी। मैं कल्पना करता हूँ कि मेरी अनुपस्थित आत्मा मेरी वर्तमान आत्मा के समान है, और वह वही अनुभव करती है जो मैं करता हूँ। तब उसने पूछा, क्या मैंने अच्छा कहा या बुरा? हमने उसे उत्तर दिया, आपने बुरा नहीं कहा; बल्कि अच्छा और प्रशंसनीय कहा है। और उसने अपना हाथ अपने पास पड़े एक पत्थर की ओर बढ़ाया और उसे उठा लिया। इसलिए हमने सोचा कि वह हमें उससे मारेगा, और हम उससे दूर भाग गए। लेकिन वह उससे अपने ही सीने पर ज़ोर-ज़ोर से वार करने लगा और बोला, "क्या तुम नहीं? मेरे पास आओ और मुझसे

कुछ सुनो, मुझसे ग्रहण करो।” इसलिए हम उसके पास गए; और उसने ये छंद पढ़े: “जब उन्होंने अपने सफेद ऊँटों को सुबह होने से पहले घुटने टेकने को कहा, तो वे उन पर सवार हो गए, और ऊँट प्रेमिका को लेकर चला गया। मेरी आँख ने जेल के छेद से उन्हें देखा, और मैंने अपनी पीड़ा में, आँसुओं से लबालब, कहा, ‘हे ऊँट चालक, मुड़ो, ताकि मैं उसे विदाई दे सकूँ; क्योंकि बिछड़ते हुए और उसे विदाई देते हुए मैं मर जाऊँगा। मैं प्रेम की प्रतिज्ञा के प्रति वफादार हूँ, और मैंने उसे नहीं तोड़ा है। काश मुझे पता होता कि उसने इस संबंध में क्या किया है!’” तब उसने मेरी ओर देखा और कहा, “क्या तुम्हें पता है कि प्रेमिका ने क्या किया है?” मैंने उत्तर दिया, “हाँ: वह मर गई है।” अल्लाह (जिसका नाम महान है!) उस पर रहम करे! — और यह सुनकर उसका चेहरा बदल गया, वह उछलकर खड़ा हो गया और बोला, तुम्हें उसकी मृत्यु का कैसे पता चला? मैंने उत्तर दिया, यदि वह जीवित होती, तो वह तुम्हें इस प्रकार छोड़कर नहीं जाती। उसने कहा, अल्लाह की कसम, तुमने सच कहा है, लेकिन उसके जाने के बाद मुझे भी जीना अच्छा नहीं लगता। फिर उसकी कमर की मांसपेशियां कांप उठीं और वह मुंह के बल गिर पड़ा; हम सब जल्दी से उसके पास गए, उसे उठाया और पाया कि वह मर चुका है। अल्लाह (जिनका नाम महान है) की रहमत उन पर हो! और हम इस पर आश्चर्यचकित हुए और उनके लिए बहुत दुखी हुए; हमने उनके शरीर को कब्र के लिए तैयार किया और उन्हें दफना दिया। और जब मैं बगदाद लौटा और अल-मुतावेक्किल में गया, तो उन्होंने मेरे चेहरे पर आँसुओं के निशान देखे; इस पर उन्होंने कहा, यह क्या है? तो मैंने उन्हें सारी कहानी सुनाई; और इससे वे दुखी हुए, और उन्होंने कहा, तुम्हें ऐसा करने के लिए किसने प्रेरित किया? अल्लाह की कसम, अगर मुझे पता होता कि तुम उनके लिए शोक नहीं मना रहे हो, तो मैं तुम्हें इसके लिए फटकारता। — और वे दिन भर

उनके लिए शोक मनाते रहे। एक प्रसिद्ध व्याकरणविद् और अलंकारशास्त्री। उनका निधन 80 वर्ष की आयु में, काहिरा के 80वें वर्ष में हुआ। मेरे पास मौजूद क्ल-मुज़िर, पांडुलिपि, संस्करण में, मैंने "अरहु" और "सूरेतका" को *"स्थान का नाम" के रूप में पढ़ा। ब्रेस्लाउ संस्करण, खंड viii. पृष्ठ 271. 41 अरबों द्वारा "इलिरकल" कहा जाता है, 4* शाब्दिक रूप से, "उनके पास है।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.27%** है।

अठारहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 541 धर्मांतरित मठाधीश। मोहम्मद अल-अंबरी के पुत्र अबू-बेक्र कहते हैं, मैं अपनी यात्राओं में से एक पर अल-अंबर से निकला,4* यूनानियों के देश अम्मूरियेह,46,47 गया,47 और रात में अम्मूरियेह के पास एक गाँव में स्थित प्रकाश के मठ में उतरा, जहाँ मठ के प्रमुख, मठाधीश, जिनका नाम अब्द-अल-मसीह था,48 मेरे पास आए और मुझे मठ में ले गए। मैंने वहाँ चालीस भिक्षुओं को पाया; और उन्होंने उस रात मुझे आतिथ्य सत्कार दिया। फिर अगले दिन मैं उनसे विदा हुआ, क्योंकि मैंने उनके अभ्यास में उनकी अत्यधिक लगन और उनकी भक्ति देखी, जो मैंने दूसरों में नहीं देखी थी, और मैं अल-अंबर लौट आया। अगले वर्ष मैंने मक्का की तीर्थयात्रा की; और जब मैं मठ की परिक्रमा कर रहा था, तो मैंने देखा कि अब्द-अल-मसीह भिक्षु भी परिक्रमा कर रहे थे, और उनके साथ उनके पाँच साथी भिक्षु भी थे। इसलिए जब मुझे यकीन हो गया कि मैं उन्हें जानता हूँ, तो मैं उनके पास गया और उनसे पूछा, क्या आप अब्द-अल-मसीह भिक्षु हैं? उन्होंने उत्तर दिया, मैं अब्द-अल्लाह हूँ, जो प्रार्थना कर रहा है। तब मैं उनके सफ़ेद बालों को चूमने लगा और रोने लगा; और उनका हाथ पकड़कर मैं मंदिर के एक तरफ मुड़ा और उनसे कहा, मुझे इस्लाम में आपके धर्मांतरण का

कारण बताइए। और उन्होंने उत्तर दिया, यह सबसे अद्भुत घटनाओं में से एक थी, और वह यह थी। मुस्लिम श्रद्धालुओं का एक दल उस गाँव से गुज़रा जहाँ हमारा मठ है, और उन्होंने अपने लिए भोजन खरीदने के लिए एक युवक को भेजा, और उसने बाज़ार में एक ईसाई युवती को रोटी बेचते हुए देखा; और वह रूप-रंग में अत्यंत सुंदर थी। उसे देखते ही वह उस पर मोहित हो गया और बेहोश होकर मुंह के बल गिर पड़ा। जब उसे होश आया, तो वह अपने साथियों के पास लौटा और उन्हें अपने साथ हुई घटना के बारे में बताया और कहा, "तुम लोग अपने-अपने काम पर जाओ; मैं तुम्हारे साथ नहीं जा रहा।" उन्होंने उसे फटकारा और समझाया; लेकिन उसने उनकी बात अनसुनी कर दी; इसलिए वे उसे छोड़कर चले गए; और वह गांव में प्रवेश कर उस स्त्री की दुकान के दरवाजे पर बैठ गया। उसने उससे पूछा कि वह क्या चाहता है, और उसने बताया कि वह उस पर मोहित हो गया है; यह सुनकर वह उससे मुंह फेर लिया। वह तीन दिन तक बिना कुछ खाए-पिए वहीं बैठा रहा; उसकी निगाहें उसी स्त्री के चेहरे पर टिकी रहीं। जब उसने देखा कि वह उसे छोड़कर नहीं जा रहा है, तो वह अपने परिवार के पास गई और उन्हें उसके बारे में बताया; और उन्होंने लड़कों को उस पर हमला करने के लिए भेज दिया, जिन्होंने उस पर पत्थर बरसाए, जिससे उसकी पसलियां टूट गईं और उसका सिर चकनाचूर हो गया; फिर भी वह वहां से नहीं गया। इसलिए गाँव वालों ने उसे जान से मारने का निश्चय किया; लेकिन उनमें से एक आदमी मेरे पास आया और मुझे उसकी कहानी सुनाई। इस पर मैं उसके पास गया और उसे ज़मीन पर पड़ा हुआ पाया। मैंने उसके चेहरे से खून पोंछा और उसे मठ ले गया, जहाँ मैंने उसके घावों पर मरहम लगाया और वह चौदह दिन मेरे साथ रहा। जैसे ही वह चलने-फिरने लायक हुआ, वह मठ से निकलकर युवती की दुकान के दरवाजे पर गया और फिर से उसे निहारने

लगा। जब युवती ने उसे देखा, तो वह उसके पास उठी और बोली, "अल्लाह की कसम, मुझे तुम पर दया आ रही है। क्या तुम मेरा धर्म अपनाओगे, ताकि मैं तुमसे विवाह कर सकूँ?" लेकिन उसने उत्तर दिया, "ईश्वर मुझे एकता के धर्म को छोड़ने और बहुदेववाद को अपनाने से बचाए!" युवती ने कहा, "तो फिर मेरे पास से चले जाओ।" उसने उत्तर दिया, "मेरा हृदय ऐसा करने की अनुमति नहीं देता।" और युवती ने उससे मुँह फेर लिया। और लड़कों ने उसे फिर से देखकर उसके पास आकर पहले की तरह उस पर पत्थर फेंके, और वह मुंह के बल गिर पड़ा और बोला, “निःसंदेह मेरा सहायक ईश्वर है, जिसने पुस्तक भेजी है,50 और वह धर्मी लोगों की रक्षा करता है!”— इसलिए मैं मठ से बाहर निकला और लड़कों को उससे दूर भगा दिया, और उसका सिर उठाकर « यूफ्रेट्स नदी पर एक शहर। 4il काबे, जिसकी तीर्थयात्री परिक्रमा करते हैं «« फ्रिगिया में प्राचीन अमोरियम। s.-vcn समय। « एर-लटूम। एम टिन-कुरान। *8 " मसीहा का सेवक।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.69%** है।

जमीन पर, मैंने उसे कहते सुना, "हे मेरे प्रभु, मुझे उसके साथ स्वर्ग में मिला दे!" - मैं उसे मठ ले गया; लेकिन मेरे वहाँ पहुँचने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई; और मैं उसे गाँव से इबर्तली ले आया, उसके लिए एक कब्र खोदी और उसे दफना दिया। और अगली रात, जब आधी रात बीत चुकी थी, वह स्त्री अपने बिस्तर पर लेटी हुई चीख उठी; तब गाँव के लोग उसके पास इकट्ठा हो गए और उससे पूछने लगे कि उसके साथ क्या हुआ है; और उसने उत्तर दिया, "जब मैं सो रही थी, तब यह मुसलमान मेरे पास आया, और मेरा हाथ पकड़कर मुझे स्वर्ग ले गया। लेकिन जब वह मुझे उसके द्वार पर ले गया, तो उसके रक्षक ने मुझे अंदर जाने से रोकते

हुए कहा, "यह काफिरों के लिए वर्जित है।" इसलिए मैंने उसके सामने इस्लाम स्वीकार किया और उसके साथ अंदर चला गया; और मैंने वहाँ ऐसे मंडप और पेड़ देखे जिनका मैं वर्णन नहीं कर सकता। फिर वह मुझे रत्नों से जड़े एक मंडप में ले गया और मुझसे कहा, "निःसंदेह यह मंडप मेरे और तुम्हारे लिए है।" मैं तुम्हारे बिना उसमें प्रवेश नहीं करूँगा; और पाँच रातों के बाद तुम मेरे साथ उसमें रहोगे, यदि यह ईश्वर की इच्छा हो, जिसका नाम महान है! — और फिर उसने उस मंडप के द्वार पर एक पेड़ की ओर हाथ बढ़ाया और उससे दो सेब तोड़े, जो उसने मुझे देते हुए कहा, इसे खाओ और दूसरे को छुपा दो, ताकि भिक्षु उसे देख सकें। इसलिए मैंने एक सेब खाया; और मुझे उससे अधिक मीठा कुछ भी नहीं लगा। फिर उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे अपने घर तक ले गया; और जब मैं जागा, तो मुझे अपने मुँह में सेब का स्वाद मिला, और दूसरा सेब मेरे पास था। — यह कहकर उसने सेब निकाला, और वह रात के अँधेरे में ऐसे चमक रहा था मानो कोई टिमटिमाता तारा हो। इसलिए वे उस स्त्री को और उसके साथ सेब को मठ में ले आए; और उसने हमें दर्शन सुनाया और हमें सेब दिखाया। हमने दुनिया के सारे फलों में ऐसा कुछ नहीं देखा था; मैंने एक चाकू लिया और उसे अपने साथियों की संख्या के अनुसार टुकड़ों में बाँट दिया; और हमने उसके स्वाद से ज़्यादा स्वादिष्ट कुछ नहीं चखा था, न ही उसकी सुगंध से ज़्यादा मीठी कोई चीज़ सूंघी थी। लेकिन हमने सोचा, शायद यह कोई शैतान था जो उसे बहकाने के लिए उसके पास आया था; उसे उसके धर्म से विमुख करने के लिए। और उसका परिवार उसे लेकर चला गया। और उसने खाना-पीना छोड़ दिया: और जब पाँचवीं रात आई, तो वह अपने बिस्तर से उठी, अपने घर से बाहर गई, और उस मुसलमान की कब्र पर गई; और उसने खुद को उस पर गिरा दिया, और मर गई; उसके परिवार को पता भी नहीं चला कि उसने क्या

किया था। फिर, सुबह, गाँव में दो मुस्लिम शेख आए, जो कौतूहल के वस्त्र पहने हुए थे, और उनके साथ दो औरतें भी थीं; और उन्होंने कहा, () गाँव के लोगों, तुम्हारे बीच अल्लाह की एक मुस्लिम महिला है; वह एक मुस्लिम महिला के रूप में मर गई है, और हम उसकी देखभाल करेंगे «>(' उसे वॉन की प्राथमिकता दी। इसलिए 11वीं सदी के लोग एक महिला संत हैं,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.67%** है।

अठारहवें अध्याय के लिए टिप्पणियाँ। r,l3 गाँव ने उस महिला की तलाश की, और उन्होंने उसे कब्र पर पाया, doad. लेकिन उन्होंने कहा, “यह हमारी मित्र थी: वह हमारे धर्म में मरी, और हम उसकी ज़िम्मेदारी लेंगे।” दोनों शेखों ने कहा, “नहीं: वह मुसलमानी मरी, और हम उसकी ज़िम्मेदारी लेंगे।” और उनके बीच कहा-सुनी और विवाद हिंसक हो गया। इसलिए दोनों शेखों में से एक ने कहा, “उसके इस्लाम अपनाने का संकेत यह होगा: मठ के चालीस भिक्षु एक साथ आकर उसे कब्र से खींचेंगे; और यदि वे उसे ज़मीन से उठा सकें, तो वह ईसाई मरी; लेकिन यदि वे ऐसा न कर सकें, तो हममें से एक आगे बढ़कर उसे खींचेगा; और यदि वह उसके साथ आती है, तो वह मुसलमानी मरी।” और गाँव के लोग इस पर

सहमत हो गए। चालीस भिक्षु इकट्ठा हुए, और एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते हुए, उसे उठाने के लिए उसके पास आए; लेकिन वे ऐसा नहीं कर सके; और हमने उसकी कमर में एक बड़ी रस्सी बाँधी, और उसे खींचने का प्रयास किया; लेकिन रस्सी टूट गई, और वह हिली नहीं। गाँव के लोग भी आगे बढ़े और उन्होंने भी ऐसा ही किया: फिर भी वह वह अपनी जगह से हिली नहीं। जब हम उसे किसी भी तरह से उठाने में असमर्थ रहे, तो हमने दोनों शेखों में से एक से कहा, "तुम आगे बढ़ो और उसे उठाओ।" तदनुसार, उनमें से एक उसके पास गया और उसे अपने लबादे में लपेट लिया, और यह कहते हुए, "अल्लाह के नाम पर, जो अत्यंत दयालु और कृपालु है, और अल्लाह के रसूल के धर्म के माध्यम से, अल्लाह उस पर कृपा करे और उसकी रक्षा करे!" - उसने उसे अपनी गोद में उठा लिया। मुसलमानों ने उसे वहाँ एक गुफा में पहुँचाया और उसमें रख दिया; फिर दोनों महिलाएं आईं और उन्होंने उसे नहलाया और कफ़न ओढ़ाया। फिर दोनों शेखों ने उसे उठाया, उस पर प्रार्थना की, और उसकी कब्र के पास उसे दफना दिया और चले गए; हमने यह सब देखा। और जब हममें से कुछ लोग अपने साथियों के साथ एकांत में थे, तो हमने कहा, "निःसंदेह सत्य का पालन करना अत्यंत आवश्यक है, और सत्य हमारे लिए प्रत्यक्ष प्रमाण से प्रकट हो चुका है, और हमारे पास इस्लाम की सच्चाई का इससे बड़ा कोई प्रमाण नहीं हो सकता!" जो हमने अपनी आँखों से देखा था, उससे कहीं अधिक हमें प्रकट हुआ। फिर मैंने इस्लाम को अपनाया, और मठ के सभी भिक्षुओं और गाँव के लोगों ने भी ऐसा ही किया। इसके बाद, हमने अल-जेरेह के लोगों को संदेश भेजा,5- धर्म और कानून के एक प्रोफेसर के लिए प्रार्थना करते हुए, जो हमें इस्लाम के नियमों और धर्म के उपदेशों की शिक्षा दें; और एक प्रोफेसर, एक धर्मात्मा व्यक्ति, हमारे पास आए, और उन्होंने हमें ईश्वर की पूजा के अनुष्ठान और इस्लाम

के उपदेशों की शिक्षा दी; जिससे अब हम प्रचुर सुख का आनंद ले रहे हैं; और ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद हो! अबू-ईसा और कुर्रत-अल-ऐन। मेसादाह के पुत्र अमी* ने बताया है कि एर-रशीद के पुत्र और अल-मामून के भाई अबू-ईसा, हिशाम के पुत्र अली की दासी कुर्रत-अल-ऐन53 से मोहित थे, और वह भी उनसे मोहित थी; लेकिन अबू-ईसा ने अपने प्रेम को छुपाए रखा, न तो किसी को बताया, न ही किसी से इसकी शिकायत की, और न ही किसी को अपने रहस्य से अवगत कराया। ऐसा उन्होंने अपनी उदारता और दयालुता के कारण किया। उन्होंने हर संभव प्रयास किया कि उन्हें उनके स्वामी से प्राप्त कर लें। लेकिन वे अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सके; और जब उनका धैर्य टूट गया, और उनका प्रेम उग्र हो गया, और उन्हें उन्हें प्राप्त करने का कोई उपाय नहीं मिला, तो वे एक त्योहार के दिन, लोगों के चले जाने के बाद, अल-मामून के पास गए और कहा, "हे धनियों के राजकुमार, यदि आप आज अपने हृदय की परीक्षा लें और अचानक लोगों से मिलें, तो आप उदार लोगों को दूसरों से अलग पहचान लेंगे, और उनमें से प्रत्येक का स्थान और उनके मन की गुणवत्ता जान लेंगे।" इन शब्दों से अबू-ईसा ने कुर्रत-अल-ऐन के स्वामी के घर में उनसे मिलने का अवसर प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की। और अल-मामून ने उत्तर दिया, "निःसंदेह यह सलाह सही है।" उन्होंने एक नाव तैयार करने का आदेश दिया जो इसका नाम फाइवर रखा गया था: 4 इसलिए वे इसे उसके सामने लाए, और वह अपने कुछ प्रमुख अधिकारियों के साथ उसमें सवार हो गया; और जिस पहले तंबू में वह दाखिल हुआ वह होमेड - मेसोपोटामिया का था। 54 "एट-तेयार।" शायद यह स्त्रीलिंग "त्सीद्राह" के लिए रखा गया है, जो एक प्रकार के बर्तन का नाम है।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

26.59% है।

51 i > *OTKS TO CHAlTKl: अठारहवाँ। तूस का एत-तावील। वे तंबू में उसके पास तब गए जब उसे उनकी उम्मीद नहीं थी, और उसे चटाई पर बैठे हुए पाया, उसके सामने गायक थे, जिनके हाथों में वीणा, बांसुरी और अन्य वाद्य यंत्र थे; और अल-मामून के कुछ देर बैठने के बाद, उसके लिए जानवरों के मांस के व्यंजन लाए गए, पक्षियों का कोई मांस नहीं था; और अल-मामून ने उन व्यंजनों में से किसी पर भी ध्यान नहीं दिया। तब अबू-ईसा ने कहा, हे विश्वासियों के सरदार, हम इस स्थान पर अचानक आ गए हैं, और इसके स्वामी को आपके आने की जानकारी नहीं थी। तो उठो और हमारे साथ उस स्थान पर चलो जो तुम्हारे लिए तैयार किया गया है और तुम्हारे लिए उपयुक्त है। तदनुसार खलीफा अपने मुख्य अधिकारियों और अपने भाई अहू-केसा के साथ उठे, और वे हिशाम के पुत्र अली के घर गए। और जब उन्हें उनके आने का पता चला, तो उन्होंने उनका अत्यंत सम्मानपूर्वक स्वागत किया और खलीफा के सामने ज़मीन चूमी। फिर उन्होंने उन्हें मंडप में ले जाकर एक ऐसा कमरा खोला, जिसकी सुंदरता बेजोड़ थी। उसका फर्श, खंभे और दीवारें विभिन्न प्रकार के संगमरमर से बनी थीं, वह कई प्रकार के यूनानी चित्रों से सजा हुआ था,1' और उसका फर्श एस-सिंध की चटाइयों से ढका हुआ था,56 और अल-बसरा का फर्नीचर कमरे की लंबाई और चौड़ाई के अनुसार बनाया गया था। अल-मा-मून कुछ देर कमरे, छत और दीवारों को निहारते रहे; फिर उन्होंने कहा, हमें कुछ भोजन दीजिए। और तुरंत उनके लिए लगभग सौ प्रकार के मुर्गे, अन्य पक्षियों, और अन्य प्रकार की सब्ज़ियों, और चावल57 और तले हुए व्यंजन और ठंडी चीज़ें लाई गईं; और जब उन्होंने खा लिया, तो उन्होंने कहा, हमें कुछ पीने को दीजिए, ऐ अली। और उनके लिए सोने, चांदी और क्रिस्टल के बर्तनों में फलों और सुगंधित मसालों से

तैयार की गई सुगंधित शराब लाई गई; और जो लोग वह शराब लाए थे, वे चाँद के समान सुंदर सेवक थे, जिन्होंने अलेक्जेंड्रिया के सोने से बुने हुए वस्त्र पहने थे, और उनके सीने के सामने कस्तूरी से युक्त गुलाब जल से भरी क्रिस्टल की बोतलें थीं। अल-मा-मून ने जो देखा, उसे देखकर वह अत्यंत आश्चर्यचकित हुआ और बोला, हे अबू-अल-हसन।53 इस पर वह कालीन पर कूद पड़ा और उसे चूमा, और फिर खलीफा के सामने खड़े होकर बोला, हे धनियों के राजकुमार, मैं आपकी सेवा में हूँ। खलीफा ने कहा, आइए कुछ आनंदवर्धक गीत सुनें। उसके सेवक ने उत्तर दिया, हे धनियों के राजकुमार, मैं सुनता और आज्ञा मानता हूँ। फिर उसने अपने एक सेवक से कहा, गाने वाली दासियों को लाओ। तो हिजड़े ने उत्तर दिया कि उसने सुना और आज्ञा मानी; और एक क्षण के लिए अनुपस्थित रहने के बाद, वह दस हिजड़ों के साथ दस सोने की कुर्सियाँ लेकर लौटा। जब उन्होंने कुर्सियाँ लगा दीं, तो दस दासियाँ चमकते हुए पूर्णिमा के चाँद और फूलों के बागों की तरह आईं, काले जटाधारी वस्त्र पहने और सिर पर सोने के मुकुट धारण किए; वे आगे बढ़ीं और कुर्सियों पर बैठ गईं, फिर उन्होंने तरह-तरह के गीत गाए। तब वे दासियाँ चली गईं, और दस अन्य आईं और गाने लगीं; फिर उनके बाद दस अन्य आईं; और फिर उनके बाद दस अन्य आईं। तब अल-मा-मून ने कहा, नाव को आगे लाओ। और वह सवार होकर जाने ही वाला था। लेकिन हिशाम का पुत्र अली उठा और बोला, हे धनी सरदार, मेरे पास एक दासी है जिसे मैंने दस हजार सोने के सिक्कों में खरीदा है, और जिसने मेरा दिल मोह लिया है, और मैं उसे धनी सरदार को दिखाना चाहता हूँ। यदि वह उन्हें पसंद आए, और वे उसे स्वीकार कर लें, तो वह उनकी हो जाएगी, और यदि नहीं, तो उन्हें उससे कुछ सुनने को मिले। — तब खलीफा ने कहा, उसे मेरे पास लाओ। और फिर एक युवती प्रकट हुई, जो पूर्वी विलो की टहनी जैसी थी,

जिसकी आँखें मोहक थीं, और भौंहें दो धनुषों जैसी थीं, और उसके सिर पर लाल सोने का मुकुट था जो बड़े मोतियों और रत्नों से जड़ा हुआ था, जिसके नीचे एक पट्टी थी जिस पर क्राइसोलाइट से यह श्लोक उकेरा गया था:— एक जिन्न, और उसके पास जिन्न हैं जो उसे बिना तार के तीर से दिलों को चोट पहुँचाना सिखाते हैं। यह युवती एक भगोड़े हिरण की तरह आगे बढ़ी; और वह किसी भक्त को मोहित कर लेती। वह तब तक आगे बढ़ती रही जब तक कि वह एक कुर्सी पर नहीं बैठ गई; और जब एल्फी या नक्काशी। •"•* एक उपनाम, मेरा मानना है, 'अली का, पश्चिमी भारत के एम के दक्षिण। हिशाम। 5r चूरा या कटा हुआ ब्रेड, शोरबा आदि के साथ।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.12%** है।

अठारहवें अध्याय की टिप्पणियाँ। :,|,' मृत-लाओह ने उसे देखा, वह उसकी सुंदरता और आकर्षण पर मुग्ध हो गया; और अहू-ईसा का हृदय पीड़ा से भर गया; उसका चेहरा पीला पड़ गया, और उसकी पूरी अवस्था बदल गई। तब अल-मामून ने उससे कहा, 'हे अबू-ईसा, क्या बात है कि तुम्हारी अवस्था बदल गई है?' उसने उत्तर दिया, 'हे धनवानों के राजकुमार, यह एक बीमारी के कारण है जो मुझे कभी-कभी घेर लेती है।' तब खलीफा ने उससे कहा, 'क्या तुम इस दासी को आज से पहले से जानते हो?' - 'हाँ, हे धनवानों के राजकुमार,' उसने उत्तर दिया। और क्या चाँद (उसने आगे कहा) छिप सकता है? - तब अल-मामून ने उससे कहा, 'हे युवती, तुम्हारा नाम क्या है?' उसने उत्तर दिया, 'हे धनवानों के राजकुमार, मेरा नाम कुर्रत-अल-ऐन है।' और उसने उससे कहा, "हे क्नारत-अल-एयफ़्ट, हमारे लिए गाओ।" उसने गाया; और खलीफ़ा ने उससे कहा, "तुम्हें ईश्वरीय वरदान प्राप्त है! ये छंद किसने लिखे हैं?" उसने उत्तर दिया,

"देबिल अल-खुअई ने और धुन ज़ुरऊर एस-सगीर ने।" अबू-ईसा ने उसकी ओर देखा और रोते-रोते उनका गला भर आया, जिससे वहाँ मौजूद लोग आश्चर्यचकित रह गए। तब उस युवती ने अल-मामून की ओर देखा और उनसे कहा, "हे विश्वासियों के राजकुमार, क्या आप मुझे अपने गीत के बोल बदलने की अनुमति देंगे?" उन्होंने उत्तर दिया, "जो चाहो गाओ।" और उसने उत्साहपूर्ण लय में ये छंद गाए: "यदि कोई व्यक्ति किसी को प्रसन्न करे और वह तुम्हें सार्वजनिक रूप से भी प्रसन्न करे, तो वह गुप्त रूप से तुम्हारे प्रेम को सुरक्षित रखने में अधिक सावधान रहे; और निंदा करने वालों के आरोपों को नकार दे।" क्योंकि वे प्रेमी के अलगाव के अलावा शायद ही कभी कुछ और चाहते हों। उन्होंने कहा है कि जब भी प्रेमी पास आता है, वे थक जाते हैं; और यह कि दूरी ही वासना का इलाज है। हमने दोनों उपाय आजमाए हैं, और कोई फायदा नहीं हुआ; लेकिन निकटता दूरी से बेहतर है: फिर भी निकटता का कोई लाभ नहीं जब जिसे तुम प्यार करते हो वह तुम्हें प्यार नहीं करता। और जब उसने अपना गीत समाप्त किया, तो अबू-ईसा ने कहा, हे विश्वासियों के राजकुमार, यदि हम अपमानित हों तो भी हमें आराम मिलेगा। क्या आप मुझे उसे जवाब देने की अनुमति देंगे? खलीफा ने उसे उत्तर दिया, हाँ: उससे जो चाहो कहो। और उसने अपने आँसू रोके, और ये दो छंद गाए: मैं चुप रहा, और यह नहीं कहा कि मैं प्रेमी हूँ; बल्कि अपने स्नेह को अपने दिल से छुपाए रखा। यदि मेरा प्रेम फिर भी मेरी आँखों में प्रकट होता है, तो यह इसलिए है क्योंकि यह चमकते चाँद के पास है। फिर उस युवती ने वीणा उठाई और गाना गाया; और फिर अबू-ईसा ने उसके जवाब में गाना गाया; और जब उसने गाना समाप्त किया, तो हिशाम के पुत्र अली उछलकर खड़े हो गए और अपने पैरों को चूमते हुए उनसे कहा, "हे मेरे स्वामी, ईश्वर ने आपकी प्रार्थना सुन ली है, आपका रहस्य जान लिया है, और आपको उसे उसके

सभी दुर्लभ और सुंदर सामानों सहित ले जाने की अनुमति दे दी है, यदि धनियों के राजकुमार को उससे कोई इच्छा न हो।" तब अल-मामून ने कहा, "यदि हमें उससे इच्छा होती, तो हम अबू-ईसा को प्राथमिकता देते और उसकी इच्छा पूरी करने में उसकी सहायता करते।" तब अल-मामून उठे और नाव में सवार हो गए। अबू-ईसा कुर्रत-अल-ऐन को लेने के लिए पीछे रह गए, और उन्होंने उसे लिया और अपने निवास स्थान के लिए प्रस्थान किया, प्रसन्नता से भरे हुए। —तो हिशाम के पुत्र अली की उदारता पर विचार करें। •'••' i'.y हमारे प्यार को प्रकट करते हुए.

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.40%** है।

चार सौ चौबीसवीं रात के एक भाग से शुरू होकर एक सौ चौंतीसवीं रात के एक भाग पर समाप्त होने वाली कहानी, काहिरा के अली की कहानी है। काहिरा शहर में एक व्यापारी था जिसके पास अपार धन-दौलत, गहने, खनिज और अनगिनत संपत्ति थी। उसका नाम बगदाद का जौहरी हसन था। ईश्वर ने उसे एक पुत्र का आशीर्वाद दिया था, जो सुंदर मुख वाला, सुगठित कद-काठी का, गुलाबी गालों वाला, सुरुचिपूर्ण, परिपूर्ण, सुंदर और आकर्षक था।

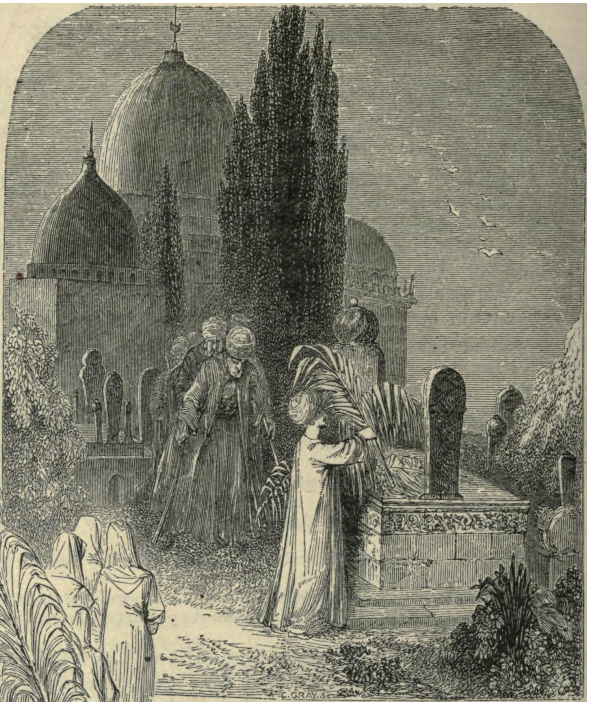

CHAPTER XIX.

COMMENCING WITH PART OF THE FOU
HUNDRED AND TWENTY-FOURTH NIGHT
AND ENDING WITH PART OF THE FOU
HUNDRED AND THIRTY-FOURTH.

THE STORY OF 'ALEE OF CAIRO.

THERE was, in the city of Cairo, a merchant who had abundance o wealth and ready money, and jewels and minerals, and possessions incalculable, and his name was Ḥasan the Jeweller of Baghdád. God had also blessed him with a son, of handsome countenance, of just stature, rosy-cheeked, endowed with elegance and perfection, and beauty and loveliness;

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

27.06% है।

काहिरा के 'अलेक की कहानी। 547 लेई =: और उन्होंने उसका नाम काहिरा के 'अलेक रखा। उन्होंने उसे विद्या, विज्ञान, वाक्पटुता और शिष्ट साहित्य सिखाया; और वह सभी विज्ञानों में निपुण हो गया, और अपने पिता के यहाँ व्यापार में कार्यरत हो गया। अब उसके पिता को एक बीमारी हो गई, और वह इतनी बढ़ गई कि उन्हें मृत्यु का आभास होने लगा। इसलिए उन्होंने अपने पुत्र काहिरा के 'अलेक को बुलाया, और उससे कहा, हे मेरे पुत्र, निश्चय ही यह संसार क्षणभंगुर है, और आने वाला संसार शाश्वत है; प्रत्येक आत्मा को मृत्यु का स्वाद चखना है, और अब, हे मेरे पुत्र, मेरी मृत्यु निकट आ गई है, और मैं तुझे एक आज्ञा देना चाहता हूँ। यदि तू इसके अनुसार कार्य करेगा, तो तू ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) से मिलने तक सुरक्षित और समृद्ध रहेगा। लेकिन यदि तुम इसके अनुसार कार्य नहीं करोगे, तो तुम पर अत्यधिक विपत्ति आएगी, और तुम मेरी आज्ञा का उल्लंघन करने पर पछताओगे। - ऐ अली ने कहा, "हे मेरे पिता, मैं आपकी आज्ञा का पालन करने या उस पर अमल करने से कैसे इनकार कर सकता हूँ, जबकि आपकी आज्ञा का पालन करना ईश्वर द्वारा मुझ पर अनिवार्य है, और आपके वचनों का पालन करना मेरा परम कर्तव्य है?" उसके पिता ने उत्तर दिया, "हे मेरे पुत्र, मैं तुम्हें निवास स्थान, महल, संपत्ति और अथाह धन सौंपता हूँ; यहाँ तक कि यदि तुम उस धन में से प्रतिदिन पाँच सौ सोने के सिक्के खर्च करो, तो भी तुम्हें कोई कमी नहीं होगी। परन्तु हे मेरे पुत्र, ईश्वर का भय धारण करना, उसके द्वारा निर्धारित नियमों का पालन करना और अल-मुस्तफा (अल्लाह उन पर रहमत करे और उनकी रक्षा करे!) के उपदेशों का अनुसरण करना याद रखना, उन बातों में जिनका उन्होंने अपने पारंपरिक कानूनों में आदेश दिया है और निषेध किया है।" परोपकार के कार्यों को लगन से करो,

दयालुता का वितरण करो, और भले, न्यायप्रिय और विद्वान लोगों की संगति करो; और गरीबों और जरूरतमंदों की देखभाल करना, लोभ और कंजूसी से दूर रहना, दुष्टों और संदेह के पात्र लोगों की संगति से बचना; अपने सेवकों और परिवार के साथ-साथ अपनी पत्नी के प्रति भी दयालुता का भाव रखना; क्योंकि वह महान वंश की पुत्री है, और अब वह तुम्हें संतान उत्पन्न कर सकती है: शायद ईश्वर तुम्हें उससे गुणी संतान प्रदान करे। वह उसे लगातार उपदेश देता रहा, रोता रहा और उससे कहता रहा, हे मेरे पुत्र, मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर, महिमामय सिंहासन के स्वामी से प्रार्थना करता हूँ कि वह तुम्हें हर विपत्ति से बचाए और तुम्हारी सहायता करे। और उसका बेटा फूट-फूटकर रोने लगा और बोला, ऐ मेरे पिता, अल्लाह की कसम, इन शब्दों से मेरा दिल पिघल गया है; ऐसा लगता है जैसे आप विदाई की भाषा बोल रहे हैं। उसके पिता ने उत्तर दिया, जी हाँ, ऐ मेरे बेटे; मैं अपनी हालत जानता हूँ; और मेरी आज्ञा को मत भूलो। फिर वह आदमी धर्म की दो प्रतिज्ञाएँ दोहराने लगा और कुरान के कुछ अंश पढ़ने लगा, जब तक कि निर्धारित समय नहीं आ गया; तब उसने अपने बेटे से कहा, ऐ मेरे बेटे, मेरे पास आओ। तो वह उसके पास आ गया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.13%** है।

51S काहिरा के 'अल्क की कहानी। उसके पिता ने उसे चूमा और कराहते हुए कहा, जिसके बाद उसकी आत्मा शरीर से निकल गई और वह ईश्वर की दया में चला गया, जिसका नाम महान है! उसका पुत्र अत्यंत शोक में डूब गया, उसके घर में शोर मच गया और उसके पिता के साथी उसके पास आ गए। उसने शव को दफनाने की तैयारी शुरू की और अंतिम संस्कार में तेजी लाई और शव को भव्य तरीके से ले जाया गया। वे शव को प्रार्थना स्थल पर ले गए और उस पर प्रार्थना की; जिसके बाद वे उसे

लेकर कब्रिस्तान गए और उसे दफनाया और उस पर पवित्र कुरान की कुछ आयतें पढ़ीं। फिर वे घर लौट आए और मृतक के पुत्र को सांत्वना दी और फिर सब अपने-अपने रास्ते चले गए। मृतक के पुत्र ने उसके लिए शुक्रवार की रस्में निभाईं और चालीस दिनों तक पूरे कुरान का पाठ किया। वह घर में ही रहा और प्रार्थना स्थल के अलावा कहीं नहीं गया; और हर शुक्रवार को वह अपने पिता की कब्र पर जाता रहा। उसने लंबे समय तक अपनी प्रार्थना, कुरान के पाठ और भक्ति में निरंतर लीन रहा, यहाँ तक कि उसके साथी, व्यापारियों के पुत्र, उसके पास आए और उसे नमस्कार करते हुए कहा, "तुम्हारा यह शोक कब तक चलेगा, और तुम कब तक अपना व्यवसाय, व्यापार और अपने साथियों के साथ मिलना-जुलना छोड़ोगे? यह आचरण तुम्हें थका देगा और तुम्हारे शरीर को अत्यधिक हानि पहुँचाएगा।" और जब वे उसके पास आए, तो उनके साथ शापित इब्लीस भी था, जो उन्हें बुराई का संकेत दे रहा था। अत: उन्होंने उसे बाज़ार चलने की सलाह दी, और इब्लीस ने उसे बहला-फुसलाकर अपनी बात मनवा ली, यहाँ तक कि वह उनके साथ घर से निकलने के लिए राज़ी हो गया, ताकि परमेश्वर (जिसकी पूर्णता की महिमा हो, और जिसका नाम महान हो!) द्वारा निर्धारित एक कार्य को पूरा किया जा सके। तब उन्होंने उससे कहा, "अपने खच्चर पर सवार हो जाओ, और हमारे साथ ऐसे बगीचे में चलो जहाँ हम आनंद लें, और तुम्हारा दुख और मन की परेशानी दूर हो जाए।" इसलिए वह अपने खच्चर पर सवार हुआ, अपने दास को साथ लिया, और उनके साथ उस बगीचे में गया जहाँ वे जाना चाहते थे। बगीचे में पहुँचकर, उनमें से एक ने उनके लिए भोजन तैयार किया और उसे वहाँ मंगवाया। उन्होंने भोजन किया, आनंद लिया, और दिन ढलने तक बातें करते रहे, फिर वे अपने-अपने घर लौट गए। और उन्होंने रात बिताई; और जब सुबह हुई, तो वे फिर उसके पास आए

और उससे कहा, उठो और मेरे साथ चलो, — कहाँ?

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.21%** है।

काहिरा के अली ने पूछा। अली ने उत्तर दिया, "ऐसे बगीचे में चलते हैं; क्योंकि यह उस बगीचे से बेहतर है जहाँ हम पहले गए थे, और अधिक सुखद है।" वह घोड़े पर सवार होकर उनके साथ उस बगीचे में गया; और जब वे वहाँ पहुँचे, तो उनमें से एक ने जाकर उनका भोजन तैयार किया और मादक शराब के साथ उसे बगीचे में ले आया; और उन्होंने भोजन किया। फिर वे शराब लाए; और उसने उनसे पूछा, "यह क्या है?" उन्होंने उत्तर दिया, "यह वह है जो दुःख को दूर करता है और प्रसन्नता प्रकट करता है।" और वे उसे शराब की प्रशंसा करते रहे जब तक कि वे उसे वश में नहीं कर लिया, और उसने उनके साथ शराब पी; और वे दिन ढलने तक बातें करते और शराब पीते रहे, जब तक कि वे अपने-अपने घरों को नहीं लौट गए। लेकिन काहिरा के अली को शराब पीने से चक्कर आने लगे, और वह इस हालत में अपनी पत्नी के पास गया: तो उसने उससे कहा, "तुम कैसे बदल गए हो?" उसने उत्तर दिया, "आज हम मौज-मस्ती कर रहे थे और आनंद ले रहे थे।" लेकिन हमारे साथियों में से एक हमारे लिए शराब लाया, जिसे मेरे साथियों ने पिया और मैंने भी उनके साथ पी लिया, और मुझे चक्कर आने लगे। तब उसकी पत्नी ने उससे कहा, हे मेरे स्वामी, क्या तुमने अपने पिता की आज्ञा को भुला दिया है और वह काम कर दिया है जो उन्होंने तुम्हें करने से मना किया था, यानी संदेह के पात्र लोगों के साथ संगति करना? लेकिन उसने उत्तर दिया, ये तो व्यापारियों के पुत्र हैं, और संदेह के पात्र नहीं हैं; ये तो केवल मौज-मस्ती करने वाले लोग हैं। वह प्रतिदिन अपने साथियों के साथ इसी प्रकार लगातार करता रहा। वे जगह-जगह खाते-पीते घूमते रहे, यहाँ तक कि उन्होंने उससे कहा,

हमारी बारी समाप्त हो गई है, अब तुम्हारी बारी है। और उसने उत्तर दिया, तुम्हारा हार्दिक स्वागत है! और जब वह सुबह उठा, तो उसने खाने-पीने की सारी व्यवस्था कर ली, जो पहले से कहीं अधिक थी, और अपने साथ रसोइयों, भूखों और कॉफी बनाने वालों को भी ले गया।4 और वे एर-रदाह और नीलमापक केंद्र की ओर चल पड़े।5 वहाँ वे पूरे एक महीने तक रहे, खाते-पीते, संगीत सुनते और आनंद लेते रहे। जब महीना बीत गया, तो अली ने देखा कि उसने बहुत सारा पैसा खर्च कर दिया है; लेकिन शापित इब्लीस ने उसे बहकाया और कहा, "यदि तू प्रतिदिन उतना ही खर्च करता जितना तूने अभी तक किया है, तो तेरा धन कभी समाप्त नहीं होगा।" इसलिए उसने अपना धन खर्च करने की परवाह नहीं की। वह तीन साल तक ऐसा ही करता रहा; उसकी पत्नी उसे समझाती और उसके पिता के आदेश की याद दिलाती रही; लेकिन उसने उसकी बात नहीं मानी, यहाँ तक कि उसका सारा धन समाप्त हो गया। फिर उसने गहने उतारना और उन्हें बेचना शुरू किया, और उनकी कीमत इतनी खर्च कर दी कि वे सब खत्म हो गए। इसके बाद उसने घर बेचना शुरू कर दिया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.13%** है।

• और अन्य अचल संपत्तियाँ, जब तक कि उनमें से कुछ भी शेष न रह जाए। जब वे सब बिक गईं, तो उसने एक-एक करके खेत और बाग-बगीचे बेचना शुरू कर दिया, जब तक कि वे सब भी बिक न जाएँ, और उसके पास अपने निवास स्थान के सिवा कुछ भी नहीं बचा। इसलिए उसने घर के संगमरमर और लकड़ी के काम को उखाड़ दिया और उससे प्राप्त धन को खर्च कर दिया, जब तक कि सब कुछ खत्म न हो जाए; फिर उसने मन में विचार किया और पाया कि उसके पास खर्च करने के लिए कुछ भी नहीं है: इसलिए उसने घर बेच दिया और उसकी कीमत

खर्च कर दी। उसके बाद, जिसने उससे घर खरीदा था, वह आया और उससे कहा, अपने लिए एक आवास ढूंढ लो; क्योंकि मुझे अपने घर की जरूरत है। उसने मन में विचार किया और पाया कि उसकी पत्नी के सिवा, जिसने उसे एक पुत्र और एक पुत्री को जन्म दिया था, उसके पास घर की आवश्यकता वाली कोई चीज नहीं थी; और उसके साथ कोई नौकर नहीं थे; बल्कि केवल वह और उसका परिवार ही थे। इसलिए उसने होशे परिवार के एक घर में एक कमरा किराए पर लिया,6 और वहाँ वह शान-शौकत, विलासिता, नौकरों की बहुतायत और धन-दौलत के साथ रहने लगा; और वह एक दिन के भोजन से वंचित हो गया। तब उसकी पत्नी ने उससे कहा, “मैं तुम्हें इस विषय में पहले भी आगाह करती थी, और कहती थी, अपने पिता की आज्ञा का पालन करना। लेकिन तुमने मेरी बात नहीं मानी; और परमेश्वर, जो सर्वोच्च और महान है, के सिवा कोई शक्ति या सामर्थ्य नहीं है! छोटे बच्चों को भोजन कहाँ से मिलेगा? उठो और अपने साथियों, व्यापारियों के बेटों के पास जाओ। शायद वे तुम्हें कुछ ऐसा दे दें जिससे हम आज अपना गुजारा कर सकें।” — तदनुसार वह उठा और एक-एक करके अपने साथियों के पास गया; लेकिन उनमें से हर एक जिसके पास वह गया, उसने उससे अपना चेहरा छुपा लिया और उसे

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.99%** है।

 दर्द भरे शब्द, जिनसे उसे घृणा होती थी, और उनमें से किसी ने भी उसे कुछ नहीं दिया। इसलिए वह अपनी पत्नी के पास लौट आया और उससे कहा, "उन्होंने मुझे कुछ नहीं दिया।" यह सुनकर वह उठी और अपने पड़ोसियों के पास गई, उनसे कुछ ऐसा मांगने के लिए जिससे वे उस दिन अपना गुजारा कर सकें। वह एक

ऐसी महिला के पास गई जिसे वह पहले से जानती थी, और जब वह उसके घर में गई और उसकी सहेली ने उसकी हालत देखी, तो वह उठी और रोते हुए उसका स्नेहपूर्वक स्वागत किया और उससे पूछा, "तुम्हें क्या हो गया है?" उसने उसे अपने पति के किए हुए सारे कर्म बताए; और उसकी सहेली ने उससे कहा, "तुम्हारा हार्दिक स्वागत है! तुम्हें जो कुछ भी चाहिए, मुझसे बिना किसी मुआवजे के मांग लो।" — और उसने उत्तर दिया, "ईश्वर तुम्हें इसका अच्छा प्रतिफल दे!" तब उसकी सहेली ने उसे इतना भोजन दिया जो उसके और उसके परिवार के लिए पूरे एक महीने के लिए पर्याप्त था; और उसने उसे लिया और अपने घर लौट आई। जब उसके पति ने उसे देखा, तो वह रो पड़ा और उससे पूछा, “तुम्हें यह कहाँ से मिला?” उसने उत्तर दिया, “ऐसी स्त्री से; क्योंकि जब मैंने उसे उस घटना के बारे में बताया, तो उसने कोई कसर नहीं छोड़ी; बल्कि मुझसे कहा, ‘तुम्हें जो कुछ भी चाहिए, मुझसे मांग लो।’ इस पर उसके पति ने उससे कहा, “चूँकि तुम्हारे पास यह है, तो मैं उस स्थान पर जाऊँगा जहाँ मैं जाना चाहता हूँ। शायद ईश्वर (जिसका नाम महान है!) हमारी परेशानी दूर कर दे।” उसने उससे विदा ली, अपने बच्चों को चूमा और आगे बढ़ गया, यह जाने बिना कि कहाँ जाना है। वह बिना रुके चलता रहा जब तक कि वह बूहीक नहीं पहुँच गया, जहाँ उसने एक जहाज को दिम्यत जाने के लिए रवाना होते देखा; और उसके पिता के एक साथी ने उसे देखा; इसलिए उसने उसे प्रणाम किया और उससे पूछा, “तुम कहाँ जाना चाहते हो?” उसने उत्तर दिया, “मैं दिम्यत जाना चाहता हूँ।” क्योंकि मेरे कुछ साथी हैं जिनके बारे में मैं पूछताछ करना चाहता हूँ और जिनसे मैं मिलना चाहता हूँ; फिर मैं लौट आऊँगा। और उस व्यक्ति ने उसे अपने घर ले जाकर उसका सम्मानपूर्वक स्वागत किया, और उसे अपने घर में ले जाकर...

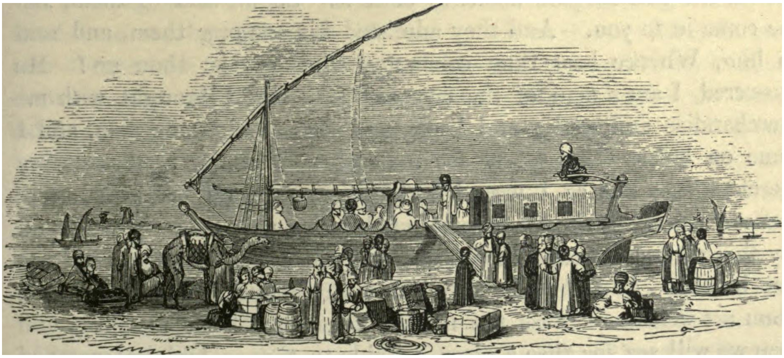

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.40%** है।

ओ.->2 द स्टोउव ओके 'एल्क ओप काइरो)। यात्रा के लिए भोजन सामग्री के लिए, और उसे कुछ सोने के सिक्के देकर, उसे दीन्यंत जाने वाले जहाज पर सवार कर दिया। जब वे उस स्थान पर पहुँचे, तो वह उतरा, लेकिन उसे पता नहीं था कि कहाँ जाना है। हालाँकि, जब वह चल रहा था, तो व्यापारियों में से एक ने उसे देखा, और उस पर दया आ गई, और वह उसे अपने घर ले गया। इसलिए वह कुछ समय तक उसके साथ रहा; जिसके बाद उसने मन ही मन कहा, मैं कब तक इस तरह दूसरों के घरों में रहूँगा? फिर वह उस व्यापारी के घर से बाहर निकला, और उसने सीरिया जाने के लिए एक जहाज को रवाना होते देखा; और जिस व्यक्ति के साथ वह ठहरा हुआ था, उसने उसके लिए यात्रा के लिए भोजन सामग्री तैयार की, और उसे उस जहाज पर सवार कर दिया, और वह अपने यात्रियों के साथ सीरिया के तट पर पहुँचने तक चलता रहा। काहिरा का अली वहाँ उतरा, और उसने दमिश्क में प्रवेश करने तक यात्रा की; जब वह शहर की मुख्य सड़कों पर चल रहा था, तभी एक दयालु व्यक्ति ने उसे देखा और अपने घर ले गया, जहाँ वह कुछ समय तक रहा। उसके बाद, वह आगे बढ़ा और उसने बगदाद जा रहे एक कारवां को देखा; तभी उसके मन में यह विचार आया कि उसे भी उनके साथ यात्रा करनी

चाहिए। इसलिए वह उस व्यापारी के घर लौटा जिसके यहाँ वह ठहरा हुआ था, उससे विदा ली और कारवां के साथ चल पड़ा; और ईश्वर (जिसकी महिमा हो और जिसका नाम ऊंचा हो!) ने एक व्यापारी को उसके प्रति सहानुभूति दिखाई: इसलिए उसने उसे अपने घर में मेहमान बना लिया, और अलेक ने उसके साथ तब तक खाया-पिया जब तक बगदाद और उनके बीच एक दिन की यात्रा की दूरी नहीं रह गई। तभी रास्ते में लुटेरों के एक गिरोह ने कारवां पर हमला कर दिया और वे सब कुछ लूट ले गए, केवल कुछ ही लोग बच पाए। कारवां का हर व्यक्ति शरण लेने के लिए निकल पड़ा। लेकिन काहिरा के अली की बात करें तो, वह बगदाद के लिए रवाना हुए और सूर्यास्त के समय वहाँ पहुँचे; हालाँकि, वे शहर के द्वार तक तब तक नहीं पहुँच पाए जब तक उन्होंने द्वारपालों को उसे बंद करने की तैयारी करते नहीं देखा। तब उन्होंने उनसे कहा, मुझे अंदर आने दीजिए। उन्होंने उन्हें अपने बीच आने दिया और उनसे पूछा, तुम कहाँ से आए हो और कहाँ जा रहे हो? उन्होंने उत्तर दिया, मैं काहिरा शहर का निवासी हूँ और अपने साथ माल, खच्चर, बोझ, दास और युवक लाया हूँ। मैं उनसे आगे इसलिए आया था ताकि अपने माल को रखने के लिए कोई जगह देख सकूँ; लेकिन जब मैं अपने खच्चर पर सवार होकर उनके आगे चल रहा था, तो रास्ते में मुझे रोकने वालों के एक दल ने रोक लिया। उन्होंने मेरा खच्चर और मेरा सामान छीन लिया और मैं अपनी अंतिम साँस तक उनसे बच नहीं पाया। उन्होंने उनका सम्मानपूर्वक स्वागत किया और उनसे कहा, आपका स्वागत है। सुबह तक हमारे साथ रात बिताइए, फिर हम आपके लिए एक उपयुक्त जगह देखेंगे। — और उन्होंने खोजबीन की

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.43%** है।

काहिरा के अली का इतिहास, 553: अली ने अपनी जेब में सोने का एक टुकड़ा ढूंढा, जो बूलक के व्यापारी ने उसे दिया था। उसने वह टुकड़ा एक द्वारपाल को देते हुए कहा, "इसे ले लो और बदलवा लो, और हमारे लिए कुछ खाने को लाओ।" उसने वह टुकड़ा लिया और बाज़ार गया, जहाँ उसने उसे बदलवाया और अली के लिए रोटी और पका हुआ मांस लाया। अली ने उन्हें खाया और सुबह तक उनके साथ सोता रहा। फिर एक द्वारपाल उसे ले गया और बग़ल्द के एक व्यापारी के पास ले गया, जिसे उसने अपनी कहानी सुनाई। उस व्यापारी ने उस पर विश्वास कर लिया, यह सोचकर कि वह एक व्यापारी है और अपने साथ माल का ढेर लाया है। इसलिए उसने अली को अपनी दुकान में बुलाया, उसका सम्मानपूर्वक स्वागत किया और उसे अपने घर भेजा, जहाँ से उसने अपने कपड़ों का एक शानदार सूट मंगवाया; और उसे स्नानघर में ले गया। — काहिरा के अली कहते हैं, मैं उनके साथ स्नानघर गया, और जब हम बाहर आए, तो उन्होंने मुझे अपने घर ले गए, जहाँ हमारे लिए भोजन लाया गया, और हमने खाया और आनंद लिया। फिर उन्होंने अपने एक दास से कहा, "हे मसूद, अपने स्वामी को ले जाओ, और उन्हें उस स्थान पर स्थित दो घर दिखाओ, और उनमें से जो भी उन्हें पसंद आए, उसकी चाबी उन्हें दे दो, और वापस आ जाओ।" इसलिए मैं दास के साथ तब तक गया जब तक हम एक गली में नहीं पहुँच गए, जहाँ तीन घर एक-दूसरे से सटे हुए थे, नए और बंद; उन्होंने पहला घर खोला, और मैंने उसे देखा, और हम बाहर आए, और दूसरे घर में गए, जिसे उन्होंने खोला, और मैंने उसे देखा। फिर उन्होंने मुझसे कहा, "मैं तुम्हें इन दोनों में से किसकी चाबी दूँ?" मैंने उनसे कहा, "और यह बड़ा घर किसका है?" उन्होंने उत्तर दिया, "हमारा।" तो मैंने उनसे कहा, "इसे खोलो, ताकि हम इसे देख सकें।" उसने उत्तर दिया, “तुम्हें इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।” मैंने पूछा, “क्यों?” उसने उत्तर

दिया, "क्योंकि यह प्रेतवाधित है, और इसमें कोई भी रात नहीं बिताता, सुबह तक वह एक लाश बन चुका होता है; और हम मुर्दों को बाहर निकालने के लिए इसका दरवाजा नहीं खोलते; बल्कि दो अन्य घरों में से किसी एक की छत पर जाकर उसे बाहर निकालते हैं; और इसी कारण मेरे मालिक ने इसे छोड़ दिया है, और कहा है, मैं अब से इसे किसी को नहीं दूंगा।" लेकिन मैंने उससे कहा, "मेरे लिए इसे खोल दो, ताकि मैं इसे देख सकूँ।" और मैंने मन ही मन कहा, "यही तो मेरी इच्छा है। मैं इसमें रात गुजारूंगा, और सुबह एक लाश बन जाऊंगा, और इस हालत से छुटकारा पा लूंगा जिसमें मैं अभी हूँ।" तो उसने दरवाजा खोल दिया, और मैं अंदर गया, और देखा कि यह एक शानदार घर था, जैसा कोई दूसरा नहीं था; और मैंने दास से कहा, "मैं इस घर के अलावा कोई और घर नहीं चाहता; इसलिए मुझे इसकी चाबी दे दो।" लेकिन उसने उत्तर दिया, "मैं अपने मालिक से सलाह लिए बिना चाबी नहीं दूंगा।" फिर वह अपने स्वामी के पास गया और उससे कहा, 4 के एन का व्यापारी।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **25.91%** है।

liSi T1IK STORY OK 'ALMK < >!• कैको। कैरो ने कहा, मैं बड़े घर के अलावा कहीं और नहीं ठहरूँगा। — इसलिए वह उठा और कैरो के अली के पास आया और उससे कहा, हे मेरे स्वामी, आपको इस घर की कोई आवश्यकता नहीं है। अली ने उत्तर दिया, मैं इसके अलावा कहीं और नहीं ठहरूँगा, और मुझे इन शब्दों की परवाह नहीं है। तब उस व्यक्ति ने उससे कहा, मेरे और तुम्हारे बीच एक लिखित समझौता लिखो, ताकि अगर कोई घटना घटित हो, तो मैं तुम्हारे साथ दोषी न ठहराया जाऊँ। अली ने उत्तर दिया, ठीक है। व्यापारी काज़ी के दरबार से एक शहीद को लाया और उसके विरुद्ध गवाही देते हुए एक प्रमाण पत्र लिखा,

और उसे अपने पास रखकर उसे चाबी दे दी। उसने चाबी ली और घर में प्रवेश किया; व्यापारी ने एक दास के साथ उसके पास फर्नीचर भेजा, जिसने उसे दरवाजे के पीछे बने मुस्तबा पर बिछा दिया और वापस चला गया। इसके बाद, काहिरा के अली उठे और घर के आंगन में गए, और उन्होंने घर के आंगन में एक कुआँ देखा, जिस पर एक बाल्टी रखी थी: इसलिए उन्होंने बाल्टी को कुएँ में उतारा और उसे भर लिया, और उसके पानी से वज़ू किया और अपनी ईश्वरीय प्रार्थनाएँ पढ़ीं। फिर वे थोड़ी देर बैठे; और दास अपने मालिक के घर से उनके लिए रात का भोजन लेकर आया, साथ ही एक मेमना, एक मोमबत्ती और मोमबत्तीदान, एक पात्र और एक सुराही और एक पानी की बोतल भी लाया; और उन्हें छोड़कर अपने मालिक के घर लौट गया। इसलिए अली ने मोमबत्ती जलाई, भोजन किया, आनंद लिया और रात्रि की नमाज़ पढ़ी; इसके बाद उसने मन ही मन कहा, उठो, ऊपर जाओ, पलंग उठाओ और यहाँ सोने के बजाय वहाँ सो जाओ। तदनुसार वह उठा, पलंग उठाया और ऊपर ले गया; और उसने एक भव्य कक्ष देखा, जिसकी छत सोने से मढ़ी हुई थी, और उसका फर्श और दीवारें रंगीन संगमरमर से सजी हुई थीं। उसने अपना पलंग बिछाया और बैठकर पवित्र कुरान का कुछ अंश पढ़ने लगा; तभी अचानक एक व्यक्ति ने उसे पुकारा और कहा, हे अली! हे हसन के पुत्र! क्या मैं तुम पर सोना बरसाऊँ? - अली ने कहा, वह सोना कहाँ है जो तुम बरसाना चाहते हो? और उसने अभी इतना कहा भी नहीं था कि उस पर गुलेल से सोने की वर्षा होने लगी; और सोना तब तक बरसता रहा जब तक कि कक्ष भर नहीं गया। और जब यह सब समाप्त हो गया, तो उस व्यक्ति ने कहा, मुझे मुक्त कर दो, ताकि मैं अपने रास्ते जा सकूँ; क्योंकि मेरी सेवा पूरी हो गई है। इस पर अली ने कैरो ने उससे कहा, मैं अल्लाह की कसम खाकर तुमसे विनती करता हूँ कि मुझे इस सोने के आने का कारण

बताओ। उसने उत्तर दिया, यह सोना प्राचीन काल से एक ताबीज़ द्वारा तुम्हारे लिए सुरक्षित रखा गया था, और हम इस घर में आने वाले हर व्यक्ति के पास जाकर उससे कहते थे, ऐ अली! ऐ हसन के बेटे! क्या हम सोना नीचे भेजें? वह हमारी बात सुनकर डर जाता और चिल्ला उठता;

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **23.95%** है।

तब हम उस पर हमला करके उसकी गर्दन तोड़ देंगे और चले जाएंगे। जब तुमने विनती की, तो हमने तुम्हारा और तुम्हारे पिता का नाम लेकर तुमसे पूछा, क्या हम सोना नीचे भेज दें? तुमने कहा, सोना कहाँ है? तब हम समझ गए कि तुम ही उसके मालिक हो, और हमने उसे नीचे भेज दिया। यमन में तुम्हारे लिए एक खजाना भी बचा है; और यदि तुम यात्रा करके उसे ले आओगे और यहाँ लाओगे, तो यह तुम्हारे लिए अच्छा होगा। और मैं तुमसे यह चाहता हूँ कि तुम मुझे रिहा कर दो, ताकि मैं अपने रास्ते जा सकूँ। लेकिन अली ने कहा, अल्लाह की कसम, मैं तुम्हें तब तक रिहा नहीं करूँगा जब तक तुम यमन में जो कुछ है उसे मेरे पास यहाँ नहीं ला देते। अली ने कहा, यदि मैं उसे तुम्हारे पास ला दूँ, तो क्या तुम मुझे और उस खजाने के सेवक को रिहा कर दोगे? — हां, अली ने उत्तर दिया। और उसने उससे कहा, मुझसे शपथ लो। तो उसने शपथ ली। और वह जाने ही वाला था कि काहिरा के अली ने उससे कहा, मुझे अभी तुमसे एक काम करवाना है — और वह क्या है? उसने पूछा। अली ने उत्तर दिया, काहिरा में मेरी पत्नी और बच्चे हैं।

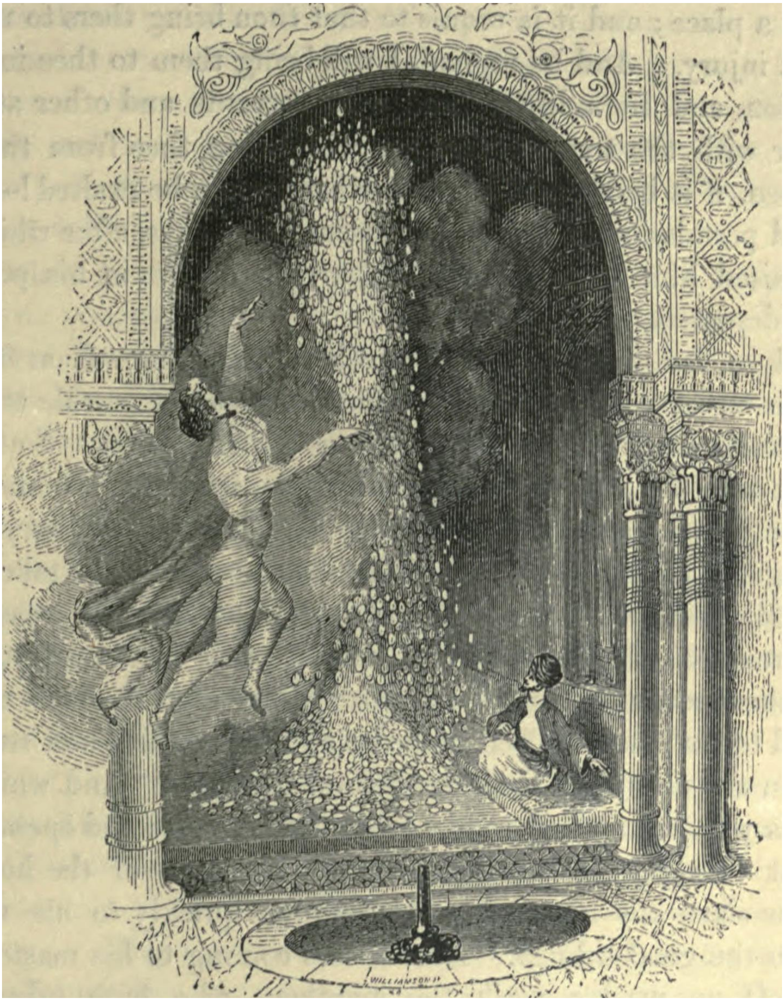

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.22%** है।

556 काहिरा के अली की कहानी। ऐसी जगह पर; और यह आवश्यक है कि तुम उन्हें आसानी से, बिना किसी नुकसान के मेरे पास ले आओ। और उसने उत्तर दिया, मैं उन्हें एक भव्य जुलूस में, पालकी में,10 और नौकरों और अन्य परिचारकों के साथ, उस खजाने के साथ जो हम यमन की भूमि से तुम्हारे लिए लाएंगे, अगर यह ईश्वर की इच्छा हो, जिसका नाम

महान है! — तब उसने उससे तीन दिन अनुपस्थित रहने की अनुमति प्राप्त की, जिसके बाद उसने उसे वादा किया कि वह सारा खजाना उसके अधिकार में होगा; और वह चला गया। और सुबह, अली ने सोने को रखने के लिए एक जगह की तलाश में सराय में खोजबीन की; और उसने सराय के लीवान के किनारे पर संगमरमर की एक पटिया देखी, जिसमें एक कुंडी लगी हुई थी। तो उसने कुंडी घुमाई, और पटिया हट गई, और उसे एक दरवाजा दिखाई दिया, जिसे उसने खोला, और वह अंदर गया, और उसने एक बड़ा खजाना देखा, जिसमें सिले हुए लिनेन के थैले थे। इसलिए उसने थैले उठाए और उन्हें सोने से भरकर खजाने में रखने लगा, जब तक कि सारा सोना खजाने में नहीं चला गया। फिर उसने दरवाजा बंद कर दिया और पिन घुमा दी; जिसके बाद संगमरमर की पटिया अपनी जगह पर लौट आई। फिर वह उठा और नीचे उतरा, और दरवाजे के पीछे बने मस्तबाह पर बैठ गया। जब वह बैठा था, तभी किसी ने उसके दरवाजे पर दस्तक दी; वह उठा और दरवाजा खोला, और देखा कि वह व्यक्ति घर के मालिक का गुलाम था; गुलाम ने उसे वहाँ देखकर तुरंत अपने मालिक के पास खुशखबरी देने के लिए लौट गया। अपने मालिक के पास पहुँचकर उसने कहा, "हे मेरे मालिक, जिन्नों से प्रेतवाधित घर में डेरा डाले हुए व्यापारी ठीक है, समृद्ध है, और वह दरवाजे के पीछे बने मस्तबाह पर बैठा है।" तो उसका मालिक खुशी से उठा और नाश्ता लेकर उस घर की ओर चल पड़ा; और जब उसने काहिरा के अली को देखा, तो उसने उसे गले लगाया, उसकी आँखों के बीच चूमा और उससे पूछा, अल्लाह ने तुम्हारे साथ क्या किया है? उसने उत्तर दिया, अच्छा; और मैं केवल ऊपर, संगमरमर से बने उस कमरे में सोया। व्यापारी ने उससे पूछा, क्या तुम्हें कुछ दिखाई दिया, या तुमने कुछ देखा? - नहीं, अली ने उत्तर दिया; मैंने केवल उतना ही पढ़ा जितना मुझे आसान लगा, और सुबह तक सोता

रहा, जब मैं उठा, और वज़ू किया, और नमाज़ पढ़ी, और नीचे उतरकर इस मस्तबा पर बैठ गया। व्यापारी ने कहा, तुम्हारी सुरक्षा के लिए अल्लाह का शुक्र है! फिर वह उठा और उसे छोड़कर चला गया, और उसके पास काले दास, मेमलक, और महिला दास, और फर्नीचर भेजा, और उन्होंने घर को ऊपर और नीचे से साफ किया, और उसके लिए शानदार फर्नीचर बिछाया; और उसके साथ तीन मेमलक और तीन काले पुरुष दास रह गए।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.45%** है।

काहिरा के अली की कहानी। चार दासियाँ उसकी सेवा में थीं; बाकी सब अपने मालिक के घर लौट गईं। जब व्यापारियों ने उसके बारे में सुना, तो उन्होंने उसे हर कीमती वस्तु, यहाँ तक कि खाने-पीने की चीजें और कपड़े भी उपहार में भेजे, और उसे अपने साथ बाज़ार ले गए और उससे पूछा, तुम्हारा माल कब आएगा? उसने उत्तर दिया, तीन दिन बाद आएगा। फिर, जब तीन दिन बीत गए, तो पहले खजाने का सेवक, जो घर से उसके लिए सोना उंडेलता था, उसके पास आया और उससे कहा, उठो, उस खजाने से मिलो जो मैं तुम्हारे लिए यमन से लाया हूँ, और अपने हरम से, जिनके साथ खजाने का एक हिस्सा कीमती माल के रूप में है; और जो भी उसके साथ हैं, खच्चर, घोड़े, ऊँट, सेवक और मेमलुक, वे सब जन्न के हैं। अब वह सेवक काहिरा गया, जहाँ उसने पाया कि अली की पत्नी और उसके बच्चे इस दौरान अत्यधिक नग्नता और भूख से ग्रस्त हो गए थे; और उसने उन्हें पालकी में बिठाकर काहिरा के बाहरी इलाके में पहुँचाया, और उन्हें यमन के खजाने से प्राप्त शानदार वस्त्र पहनाए। जब वह अली के पास पहुँचा और उसे यह खबर दी, तो वह उठा और व्यापारियों के पास गया, और उनसे कहा, उठो, और हमारे साथ शहर से

बाहर निकलो, उस कारवां से मिलने के लिए जिसमें हमारा माल है, और अपने हरम को हमारे हरम से मिलवाकर हमारा सम्मान करो। तो उन्होंने उत्तर दिया, "सुनो और आज्ञा मानो।" उन्होंने अपने हरम को बुलवाया, सब एक साथ निकले, और शहर के एक बगीचे में उतरे, जहाँ वे बैठकर बातें करने लगे। और जब वे इस तरह बातें कर रहे थे, तभी अचानक रेगिस्तान के बीचोंबीच धूल उठी। इसलिए वे यह देखने के लिए उठे कि उस धूल का कारण क्या है; और वह धूल छंट गई, और खच्चर, अक्कम, पंखे और प्रकाशवाहक दिखाई दिए,11 जो गाते-नाचते हुए उनके पास आने लगे; जब अक्कमों का सरदार काहिरा के अली के पास पहुँचा, तो उसने उनका हाथ चूमा और उनसे कहा, “हे मेरे स्वामी, हमें रास्ते में देर हो गई; क्योंकि हम कल ही प्रवेश करना चाहते थे; लेकिन हमें रास्ते में रुकावटों का डर था; इसलिए हम चार दिन तक अपने स्थान पर रुके रहे, जब तक कि ईश्वर (जिसका नाम महान है!) ने उन्हें हमसे दूर नहीं कर दिया।” फिर व्यापारी उठे और अपने खच्चरों पर सवार होकर काफिले के साथ आगे बढ़े; हरम की महिलाएं काहिरा के अली की हरम के साथ पीछे रह गईं, जब तक कि वे उनके साथ सवार नहीं हो गईं; और वे एक भव्य जुलूस में प्रवेश कर गईं। व्यापारी संदूकों से लदे खच्चरों को देखकर आश्चर्यचकित रह गए, और व्यापारियों की स्त्रियां व्यापारी अली की पत्नी और उसके बच्चों के वस्त्रों को देखकर आश्चर्यचकित रह गईं, और कहने लगीं, “सचमुच, ऐसे वस्त्र तो कहीं और नहीं मिलते।”

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.82%** है।

बगदाद के राजा या किसी अन्य राजा, महान पुरुषों और व्यापारियों के स्वामित्व में। काहिरा के व्यापारी अलीक के साथ पुरुष और उनकी हरसीन के साथ महिलाएं अपने भव्य जुलूस में तब तक आगे बढ़ती रहीं

जब तक कि वे घर में प्रवेश करके नीचे नहीं उतर गईं और अपने भार से लदे खच्चरों को आंगन के बीच में नहीं ले आईं। फिर उन्होंने भार नीचे रखा और गोदामों में रख दिया, और हरम अलीक की हरम के साथ बैठक में गईं, और उन्होंने देखा कि वह एक बगीचे की तरह था जो पेड़ों से भरा हुआ था और शानदार फर्नीचर से सजा हुआ था। वे आनंद और प्रसन्नता से बैठी रहीं और दोपहर तक बैठी रहीं, जब उनके लिए भोजन लाया गया, जिसमें बेहतरीन व्यंजन और मिठाइयाँ थीं; उन्होंने खाया और उत्तम शरबत पिया, और उसके बाद गुलाब जल और इत्र से खुद को सुगंधित किया।
12 फिर उन्होंने उनसे विदा ली और अपने-अपने घरों को चली गईं, पुरुष और महिलाएं। और जब व्यापारी अपने घरों में लौट आए, तो उन्होंने उन्हें संदेश भेजा।

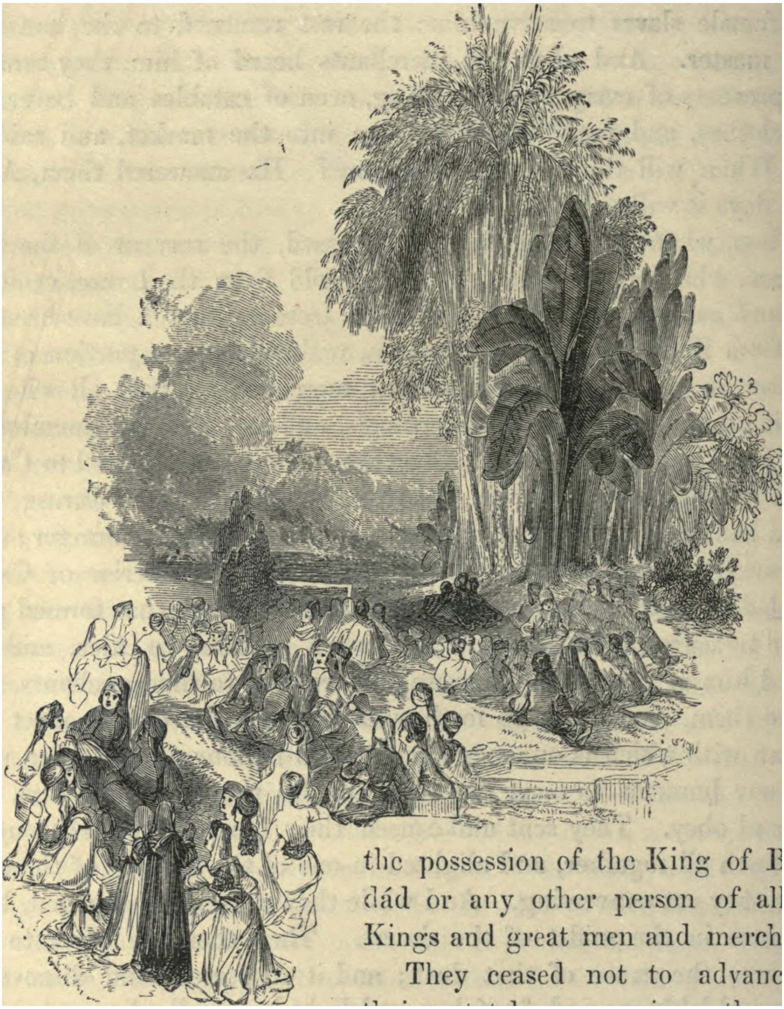
the possession of the King of B
dád or any other person of al
Kings and great men and merch
They ceased not to advanc

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.73%** है।

अली की कहानी उनकी परिस्थितियों के अनुसार प्रस्तुत की गई है। उनके हरम ने भी अली के हरम को उपहार भेजे, यहाँ तक कि उनके पास प्रचुर मात्रा में दासी, काले दास, और मेमलुक, और अनाज, चीनी और अन्य अनगिनत वस्तुओं की बहुतायत हो गई। बगदाद के व्यापारी, जो उस घर का मालिक था जिसमें अली ठहरे हुए थे, वह उनके साथ ही रहे और उन्हें

नहीं छोड़ा; उन्होंने उससे कहा, दासों और नौकरों को खच्चरों और अन्य जानवरों को विश्राम के लिए किसी एक घर में ले जाने दो। लेकिन अली ने उत्तर दिया, वे आज रात किसी स्थान के लिए अपनी यात्रा पर निकलेंगे। उन्होंने उन्हें शहर से बाहर जाने की अनुमति दी, ताकि रात होने पर वे अपनी यात्रा पर निकल सकें; और उन्हें मुश्किल से ही विश्वास हुआ कि उन्होंने उन्हें ऐसा करने की अनुमति दे दी है, जब उन्होंने उनसे विदा ली और शहर के बाहर चले गए, और उड़ते हुए निकल पड़े। अपने-अपने घरों की ओर लौटते हुए, व्यापारी अली अपने घर के मालिक के साथ रात के एक तिहाई समय तक बैठा रहा, फिर वे अलग हो गए और घर का मालिक अपने घर चला गया। तब व्यापारी अली अपने घर के मालिक के पास गया और उन्हें प्रणाम करते हुए पूछा, मेरे जाने के बाद इस दौरान तुम्हारे साथ क्या हुआ? उसकी पत्नी ने उसे बताया कि उन्हें भूख, नंगेपन और थकान से कितना कष्ट सहना पड़ा; और उसने उससे कहा, ईश्वर की स्तुति हो।

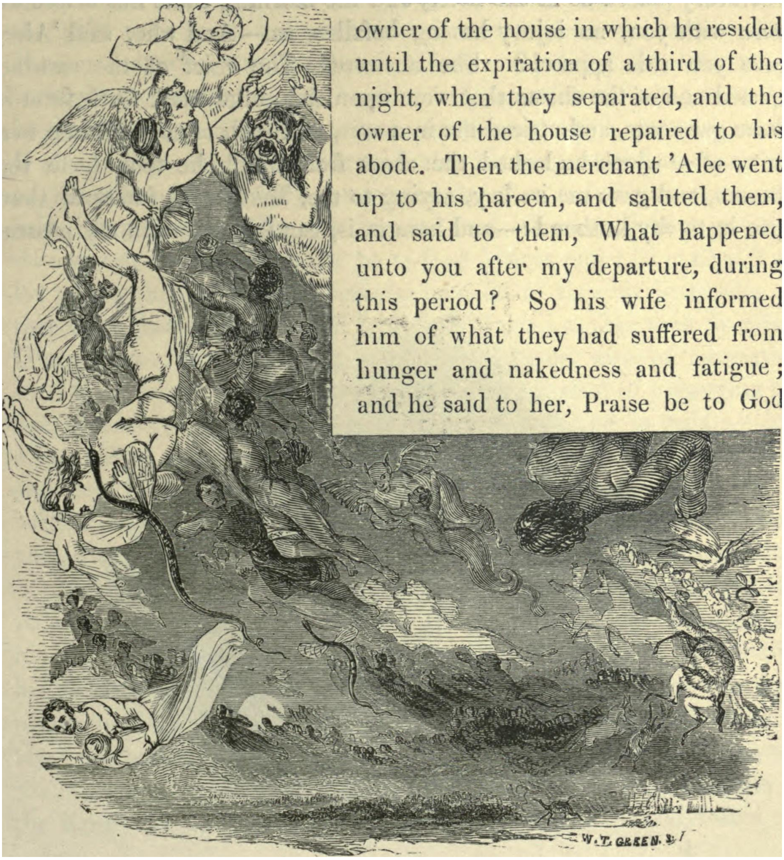
owner of the house in which he resided until the expiration of a third of the night, when they separated, and the owner of the house repaired to his abode. Then the merchant 'Alee went up to his ḥareem, and saluted them, and said to them, What happened unto you after my departure, during this period? So his wife informed him of what they had suffered from hunger and nakedness and fatigue; and he said to her, Praise be to God

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.74%** है।

560 अली की कहानी > काहिरा, सुरक्षा के लिए! और तुम कैसे आए? — हे मेरे स्वामी, उसने उत्तर दिया, मैं कल रात अपने बच्चों के साथ सो रही थी, और अचानक किसी ने मुझे और मेरे बच्चों को ज़मीन से उठा लिया, और हम हवा में उड़ने लगे; लेकिन हमें कोई चोट नहीं आई; और हम तब तक उड़ते रहे जब तक कि हम अरबों के शिविर जैसी जगह पर ज़मीन पर नहीं उतर गए, जहाँ हमने बोझ से लदे खच्चर और दो बड़े खच्चरों द्वारा उठाई जा रही एक पालकी देखी, जो सेवकों और नौकरों से घिरी हुई थी। तो मैंने उनसे कहा, तुम कौन हो, ये क्या बोझ हैं, और हम

कहाँ हैं? और उन्होंने उत्तर दिया, हम काहिरा के व्यापारी अली के सेवक हैं, जो जौहरी व्यापारी हसन के पुत्र हैं, और उन्होंने हमें आपको लेने और बगदाद शहर में उनके पास पहुँचाने के लिए भेजा है। मैंने उनसे पूछा, हमारे और बगदाद के बीच की दूरी लंबी है या छोटी? और उन्होंने मुझे उत्तर दिया, छोटी; क्योंकि हमारे और उसके बीच की दूरी रात के अंधेरे में तय की जाने वाली दूरी से अधिक कुछ नहीं है। फिर उन्होंने हमें पालकी में लिटाया, और सुबह होने से पहले ही हम तुम्हारे पास पहुँच गए, हमें कोई चोट नहीं आई। — और किसने, 'अली ने पूछा, तुम्हें ये वस्त्र दिए? उसने उत्तर दिया, कारवां के मुखिया ने खच्चरों पर रखे संदूकों में से एक को खोला, उसमें से ये वस्त्र निकाले, और मुझे एक सूट पहनाया, और तुम्हारे प्रत्येक बच्चे को भी एक सूट पहनाया; इसके बाद उसने उस संदूक को बंद कर दिया जिसमें से उसने वस्त्र निकाले थे, और मुझे उसकी चाबी देते हुए कहा, जब तक तुम इसे अपने पति को न दे दो, तब तक इसका ध्यान रखना: — और यह रहा, मेरे पास सुरक्षित रखा हुआ।

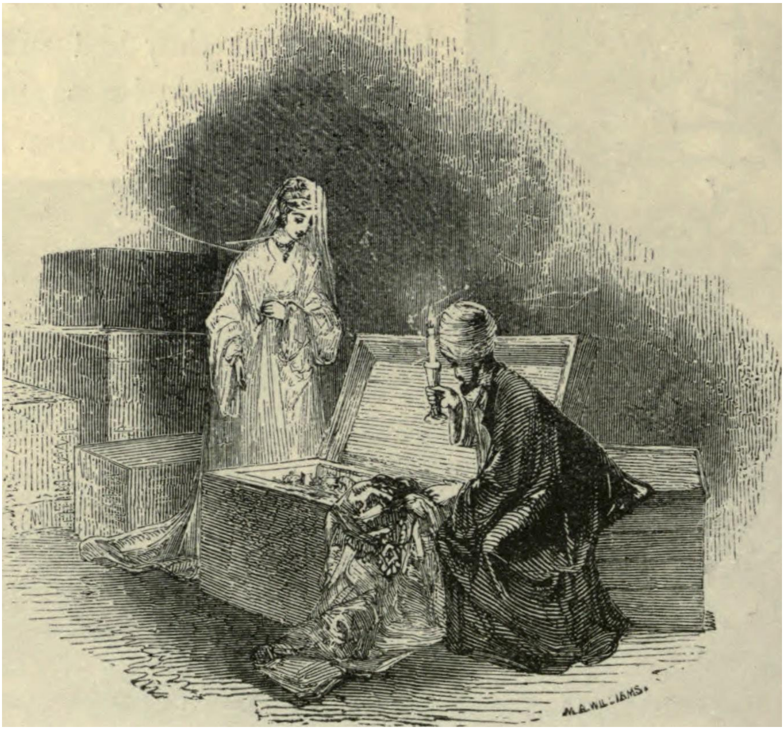

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.15%** है।

काहिरा के अल्के की कहानी। 501 — तब उसने उसे संदूक दिखाया; और उसने उससे कहा, क्या तुम संदूक जानती हो? उसने उत्तर दिया, हाँ, मैं जानती हूँ। तब वह उठा और उसके साथ गोदाम में गया, और उसे संदूक दिखाए; और उसने उससे कहा, यह वही संदूक है जिसमें से उसने वस्त्र निकाले थे। तब उसने उससे चाबी ली, और उसे ताले में डालकर संदूक खोला; और उसने उसमें कई वस्त्र, साथ ही अन्य सभी संदूकों की चाबियाँ देखीं: इसलिए उसने उन्हें निकाला, और एक-एक करके संदूक खोलने लगा, और उनके अंदर रखी कीमती वस्तुओं को देखकर आश्चर्यचकित हो गया, जिनमें बहुमूल्य रत्न और खनिज थे, जो किसी भी राजा के पास नहीं थे। फिर उसने संदूकों को बंद किया, उनकी चाबियाँ

लीं, और अपनी पत्नी के साथ बैठक में गया, और उससे कहा, यह ईश्वर की कृपा है, जिसका नाम महान है! इसके बाद, वह उसे अपने साथ ले गया और उस संगमरमर की पटिया के पास ले गया जिसमें कुंडा लगा हुआ था। उसने कुंडा घुमाकर खजाने का दरवाजा खोला और उसके साथ अंदर जाकर उसे वह सोना दिखाया जो उसने उसमें जमा किया था। इस पर उसने उससे पूछा, यह सब तुम्हें कहाँ से मिला? उसने उत्तर दिया, यह मुझे मेरे प्रभु की कृपा से मिला है। उसने उसे शुरू से अंत तक अपने साथ घटी सारी बातें बताईं। यह सुनकर उसने उससे कहा, हे मेरे स्वामी, यह सब तुम्हारे पिता की प्रार्थना के फलस्वरूप है, जब उन्होंने अपनी मृत्यु से पहले तुम्हारे लिए प्रार्थना की थी और कहा था, मैं ईश्वर से विनती करता हूँ कि वह तुम्हें बिना शीघ्र राहत दिए कष्ट में न डाले। इसलिए ईश्वर (जिसका नाम महान है!) की स्तुति हो, जिसने तुम्हें राहत दी और तुम्हारे द्वारा खोई गई हानि से अधिक देकर तुम्हारा प्रायश्चित किया! हे मेरे स्वामी, मैं अल्लाह की कसम खाकर तुमसे विनती करती हूँ कि तुम संदेह के पात्र लोगों के साथ संगति करने के अपने पुराने रास्ते पर न लौटो। निजी और सार्वजनिक रूप से अल्लाह (जिसका नाम महान है!) का भय बनाए रखने का ध्यान रखो। — वह उसे नसीहत देती रही, और उसने उत्तर दिया, मैं तुम्हारी नसीहत स्वीकार करता हूँ, और अल्लाह (जिसका नाम महान है!) से प्रार्थना करता हूँ कि वह दुष्टों को हमसे दूर कर दे, और हमें उसकी आज्ञाकारिता और उसके पैगंबर के उपदेशों का पालन करने के लिए अनुकूल बना दे; अल्लाह उसे आशीर्वाद दे और उसकी रक्षा करे! वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ अत्यंत सुखमय जीवन व्यतीत करता था, और उसने व्यापारियों के बाज़ार में एक दुकान ली, उसमें कुछ रत्न और कीमती खनिज रखे, और अपने बच्चों और रिश्तेदारों के साथ उसमें बैठता था, और बगदाद शहर का सबसे बड़ा व्यापारी बन गया। बगदाद के

बादशाह ने उसके बारे में सुना, और उसकी उपस्थिति की इच्छा से एक दूत भेजा; और जब दूत उसके पास आया, तो उसने उससे कहा, राजा के बुलावे का उत्तर दो; क्योंकि वह तुम्हें बुला रहा है। उसने उत्तर दिया, मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ; — 11. 4 c

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.16%** है।

5(52 TIIH STO15Y OF 'ALEE OF CAIKO.) उसने राजा के लिए एक उपहार तैयार किया। उसने लाल सोने की चार थालियाँ लीं और उन्हें ऐसे रत्नों और खनिजों से भर दिया जो राजा के पास पहले कभी नहीं थे; और वह थालियाँ लेकर राजा के पास गया; और जब वह अंदर पहुँचा, तो उसने राजा के सामने ज़मीन चूमी और उनकी महिमा और आशीर्वाद की निरंतरता के लिए प्रार्थना करते हुए, यथासंभव सर्वोत्तम तरीके से उनका अभिवादन किया। राजा ने उससे कहा, हे व्यापारी, तुमने अपने आगमन से हमारे देश को प्रसन्न किया है। और उसने उत्तर दिया, हे युग के राजा, दास आपके लिए एक उपहार लाया है और आशा करता है कि आप इसे अपनी कृपा से स्वीकार करेंगे। फिर उसने चारों थालियाँ राजा के सामने रख दीं; और राजा ने उन्हें खोलकर देखा और पाया कि उनमें ऐसे रत्न थे जो उनके पास नहीं थे, जिनका मूल्य धन के खजानों के बराबर था। इसलिए उसने राजा से कहा, तुम्हारा उपहार है हे व्यापारी, स्वीकार है; और यदि यह ईश्वर (जिसका नाम महान है!) की इच्छा हो, तो हम तुम्हें इसके समान ही प्रतिफल देंगे। अली ने राजा के हाथों को चूमा और वहाँ से चला गया। तब राजा ने अपने उच्चाधिकारियों को बुलाया और उनसे कहा, कितने राजाओं ने मेरी पुत्री से विवाह का प्रस्ताव रखा है? उन्होंने उत्तर दिया, अनेकों। राजा ने उनसे पूछा, क्या उनमें से किसी ने मुझे इस उपहार के समान कोई भेंट दी है? उन सभी ने उत्तर दिया, नहीं;

क्योंकि उनमें से किसी के पास भी इसके समान कोई वस्तु नहीं है। राजा ने कहा, मैं ईश्वर (जिसका नाम महान है!) से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे अपनी पुत्री का विवाह इस व्यापारी से करने का सौभाग्य प्राप्त हो। तो तुम क्या कहते हो? उन्होंने उत्तर दिया, जैसा तुम समझोगे वैसा ही होगा। राजा ने हिजड़ों को आदेश दिया कि वे चारों थालियों को उनके भीतर रखी वस्तुओं सहित उसके महल में ले जाएँ। तब उसने अपनी पत्नी से मुलाकात की और थालियों को उसके सामने रख दिया; उसने उन्हें खोला और उनमें ऐसी वस्तुएँ देखीं जो इस प्रकार थीं: उसके पास एक भी वस्तु नहीं थी। इसलिए उसने उससे पूछा, यह किस राजा की ओर से है? शायद यह उन राजाओं में से किसी एक की ओर से है जिन्होंने मेरी बेटी से विवाह का प्रस्ताव रखा है। उसने उत्तर दिया, नहीं: बल्कि यह काहिरा के एक व्यापारी की ओर से है, जो इस शहर में हमारे पास आया है; और जब मैंने उसके आने की सूचना सुनी, तो मैंने उसे एक दूत भेजा ताकि वह उसे हमारे पास लाए ताकि हम उससे परिचित हो सकें, क्योंकि शायद हमें उसके पास कुछ गहने मिल जाएं जिन्हें हम अपनी बेटी के लिए खरीद सकें। इसलिए उसने हमारी आज्ञा का पालन किया और ये चार थालियाँ हमारे लिए उपहार के रूप में लाया; और मैंने उसे एक सुंदर, गरिमापूर्ण रूप वाला, पूर्ण बुद्धि वाला और आकर्षक कद-काठी वाला युवक पाया, लगभग राजाओं के पुत्रों में से एक जैसा। और उसे देखकर मेरा दिल उसकी ओर आकर्षित हो गया, और उसे निहारते हुए मेरा हृदय प्रज्वलित हो गया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.95%** है।

काहिरा के अली की कहानी, 563: मैंने अपनी बेटी का विवाह उससे करने की इच्छा की। मैंने अपने राज्य के बड़े लोगों को यह उपहार दिखाया

और उनसे पूछा, कितने राजाओं ने मेरी बेटी से विवाह का प्रस्ताव रखा है? उन्होंने उत्तर दिया, अनेकों। मैंने पूछा, क्या उनमें से किसी ने मुझे वैसी ही बेटी दी है? इस पर उन सभी ने उत्तर दिया, नहीं, अल्लाह की कसम, हे युग के राजा; क्योंकि उनमें से किसी के पास भी वैसी ही बेटी नहीं है। मैंने उनसे कहा, मैं ईश्वर (जिसका नाम महान है!) से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे अपनी बेटी का विवाह उससे करने का सौभाग्य प्राप्त हो। तो फिर आप क्या कहते हैं? उन्होंने उत्तर दिया, जो तुम तय करोगी वही होगा। अब तुम क्या कहते हो? उसने उत्तर दिया, यह मामला ईश्वर और तुम्हारे, हे युग के राजा, के निर्णय पर निर्भर है; और ईश्वर की इच्छा ही पूरी होगी। और उसने उत्तर दिया, "यदि यह ईश्वर की इच्छा हो (जिसका नाम महान हो!), तो हम उसका विवाह इसी युवक से करेंगे।" उसने अगली रात आराम किया, और जब सुबह हुई, तो वह अपने दरबार में गया, और काहिरा के व्यापारी अलीक और बगदाद के सभी व्यापारियों को लाने का आदेश दिया। वे सब आए, और जब वे राजा के सामने उपस्थित हुए, तो उसने उन्हें बैठने का आदेश दिया। वे बैठ गए। फिर उसने कहा, "दरबार के कादसे को लाओ।" और वह उसके सामने आया; और राजा ने उससे कहा, "हे कादसे, मेरी पुत्री का विवाह काहिरा के व्यापारी अलीक से लिखो।" लेकिन काहिरा के अलीक ने कहा, "क्षमा करें, हे हमारे स्वामी सुल्तान। मेरे जैसे व्यापारी का राजा का दामाद होना उचित नहीं है।" राजा ने उत्तर दिया, "मैंने तुम्हें यह कृपा प्रदान की है, साथ ही वज़ीर का पद भी।" फिर उसने उसे तुरंत वज़ीर का वस्त्र पहना दिया। तब वह वज़ीर की कुर्सी पर बैठ गया और बोला, "हे युग के राजा, आपने मुझ पर यह कृपा की है और मैं आपकी उदारता से सम्मानित महसूस करता हूँ; परन्तु मेरी एक बात सुनिए।" राजा ने उत्तर दिया, "बोलिए, और भयभीत न हों।" उसने कहा, "चूँकि आपको अपनी पुत्री का विवाह करने का महान आदेश

दिया गया है, इसलिए यह उचित है कि उसका विवाह मेरे पुत्र से हो।" राजा ने पूछा, "क्या आपका कोई पुत्र है?" अली ने उत्तर दिया, "हाँ।" राजा ने कहा, "उसे तुरंत बुलवाइए।" अली ने उत्तर दिया, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।" राजा ने अपने एक दूत को अपने पुत्र के पास भेजा और उसे बुलवाया। जब वह राजा के समक्ष आया, तो उसने उनके सामने भूमि को चूमा और आदरपूर्वक खड़ा हो गया। राजा ने उसे देखकर पाया कि वह अपनी पुत्री से अधिक सुंदर, कद-काठी में, रूप-रंग में, और हर तरह से उससे अधिक आकर्षक है। उसने उससे कहा, हे मेरे पुत्र, तेरा नाम क्या है? उसने उत्तर दिया, हे हमारे स्वामी सुल्तान, मेरा नाम हसन है। उस समय उसकी आयु चौदह वर्ष थी। तब राजा ने कदी से कहा,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.53%** है।

मेरी बेटी होस्न-अल-वुजूद13 का विवाह काहिरा के व्यापारी अली के पुत्र हसन से लिखो। तो उन्होंने विवाह का अनुबंध लिख दिया, और यह मामला अत्यंत सुखद ढंग से संपन्न हुआ; जिसके बाद, दरबार में उपस्थित सभी लोग अपने-अपने रास्ते चले गए, और व्यापारी काहिरा के वज़ीर अली के पीछे-पीछे तब तक चलते रहे जब तक कि वे अपने घर नहीं पहुँच गए, जहाँ उन्हें वज़ीर के पद पर नियुक्त किया गया था; और उन्होंने उन्हें इस अवसर पर बधाई दी और अपने-अपने रास्ते चले गए। फिर वे अपनी पत्नी के कमरे में गए, जिसने उन्हें वज़ीर के वस्त्र में देखकर उनसे पूछा, यह क्या है? तब उन्होंने उसे शुरू से अंत तक सारी बात बताई और कहा, बादशाह ने अपनी बेटी का विवाह मेरे पुत्र हसन से कर दिया है। और वह इस बात से अत्यंत प्रसन्न हुई। फिर काहिरा के अली ने रात वहीं बिताई, और सुबह होते ही वह दरबार में गए। राजा ने उनका बड़े आदर से स्वागत किया और उन्हें अपने पास बैठाकर विशेष

स्नेह दिखाया। राजा ने उनसे कहा, “हे वज़ीर, हम उत्सव मनाना चाहते हैं और तुम्हारे पुत्र का मेरी पुत्री से परिचय कराना चाहते हैं।” अली ने उत्तर दिया, “हे हमारे स्वामी सुल्तान, जो आप उचित समझें वही उचित है।” राजा ने उत्सव मनाने का आदेश दिया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.82%** है।

काहिरा के अली की कहानी। उत्सव मनाया गया। उन्होंने शहर को सजाया और तीस दिनों तक हर्षोल्लास और उल्लास के साथ उत्सव मनाया। तीस दिन बीतने के बाद, वज़ीर अली के पुत्र हसन ने राजा की पुत्री से विवाह किया और उसकी सुंदरता और आकर्षण से मोहित हो

गया। राजा की पत्नी ने भी जब अपनी पुत्री के पति को देखा, तो उसे बहुत प्रेम किया; और इसी प्रकार वह उसकी माता से भी अत्यंत प्रसन्न हुई। तब राजा ने वज़ीर के पुत्र हसन के लिए एक महल बनवाने का आदेश दिया; और उसके लिए शीघ्र ही एक भव्य महल बनवाया गया, जिसमें वह रहने लगा; और उसकी माता कुछ दिन उसके साथ रहती और फिर अपने घर लौट जाती। तब राजा की पत्नी ने अपने पति से कहा, हे युग के राजा, हसन की माता अपने पुत्र के साथ रहकर वज़ीर को नहीं छोड़ सकती, और न ही वह वज़ीर के साथ रहकर अपने पुत्र को छोड़ सकती है। उसने उत्तर दिया, तुमने सत्य कहा है। और उसने वज़ीर के पुत्र हसन के महल के पास एक तीसरा महल बनवाने का आदेश दिया; और उन्होंने कुछ ही दिनों में उसे बना लिया; इसके बाद बादशाह ने वज़ीर का सामान उस महल में ले जाने का आदेश दिया; और उन्होंने ऐसा ही किया; और वज़ीर उसमें रहने लगा। तीनों महल आपस में जुड़े हुए थे; इसलिए जब बादशाह को वज़ीर से बात करनी होती थी, तो वह रात में पैदल चलकर उसके पास जाता था या उसे बुलवाता था; और इसी तरह हसन, उसकी माँ और उसके पिता भी जाते थे। वे लंबे समय तक सौहार्दपूर्ण ढंग से एक साथ रहते रहे और सुखमय जीवन व्यतीत करते रहे। इसके बाद, बादशाह बीमार पड़ गया और उसकी बीमारी बढ़ गई; इसलिए उसने अपने राज्य के बड़े अधिकारियों को बुलाया और उनसे कहा, "मुझे एक गंभीर बीमारी हो गई है, और शायद यही मेरी मृत्यु का कारण बनेगी; इसलिए मैंने आपको एक मामले पर सलाह लेने के लिए बुलाया है, और कृपया मुझे वह सलाह दें जो आपको उचित लगे।" उन्होंने कहा, “हे बादशाह, आप किस विषय में हमसे सलाह लेना चाहते हैं?” उन्होंने उत्तर दिया, “मैं बूढ़ा हो गया हूँ, बीमार पड़ गया हूँ और शत्रुओं के कारण अपने बाद अपने राज्य के लिए भयभीत हूँ; इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप सब मिलकर

एक व्यक्ति का चुनाव करें, ताकि मैं उसे अपने जीवनकाल में राजा बना सकूँ और आप निश्चिंत हो सकें।" इस पर उन सबने उत्तर दिया, "हम सब आपकी बेटी के पति, वज़ीर अली के पुत्र हसन को पसंद करते हैं; क्योंकि हमने उनकी समझदारी, निपुणता और बुद्धिमत्ता देखी है, और वे बड़ों और छोटों का भेद जानते हैं।" बादशाह ने उनसे कहा, "क्या आप इसे पसंद करते हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "हाँ।" उन्होंने उनसे कहा, "शायद आप मेरे प्रति विनम्रता और आदर के कारण मेरे सामने ऐसा कहते हैं, और मेरी पीठ पीछे कुछ और कहेंगे।" लेकिन उन सबने उत्तर दिया, "अल्लाह की कसम, हमारे वचन सार्वजनिक और गुप्त रूप से एक ही हैं; वे बदलते नहीं; और हम उन्हें पूरी तरह से पसंद करते हैं।"

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.59%** है।

566 काहिरा के अली की कहानी। आनंदित हृदय और प्रफुल्लित हृदय। इसलिए उन्होंने उनसे कहा, यदि मामला ऐसा है, तो कल पवित्र कानून के काज़ी, सभी चैंबरलेन, लेफ्टिनेंट और राज्य के प्रमुख व्यक्तियों को मेरे सामने लाओ, और हम इस मामले को सबसे सुखद तरीके से निपटा देंगे। और उन्होंने उत्तर दिया, हम सुनते हैं और आज्ञा मानते हैं। वे उनके पास से चले गए, और सभी उलेमाओं,14 और अमीरों में प्रमुख व्यक्तियों को बुलाया, और जब सुबह हुई, तो वे दरबार में गए, और राजा को अंदर आने की अनुमति माँगी; और उन्होंने उन्हें अनुमति दे दी। तो वे अंदर गए, और उन्हें प्रणाम किया, और कहा, हम सब आपके सामने आए हैं। और राजा ने उनसे कहा, हे बगदाद के अमीरों, मेरे बाद तुम किसे अपना राजा बनाना चाहते हो, ताकि मैं अपने जीवनकाल में तुम सबके सामने उसका राज्याभिषेक कर सकूँ? उन सबने उत्तर दिया, "हम वज़ीर अली के पुत्र और तुम्हारी पुत्री के पति हसन को स्वीकार करने के लिए सहमत हो गए

हैं।” उसने कहा, “यदि ऐसा है, तो तुम सब उठो और उसे मेरे सामने लाओ।” वे सब उठे और उसके महल में प्रवेश करके उससे बोले, “हमारे साथ राजा के पास चलो।” उसने पूछा, “किसलिए?” उन्होंने उत्तर दिया, “एक ऐसे कार्य के लिए जो हमारे और तुम्हारे लिए लाभकारी है।” इसलिए वह उठा और उनके साथ राजा के पास गया, जहाँ हसन ने राजा के सामने ज़मीन चूमी; और राजा ने उससे कहा, “बैठो, हे मेरे पुत्र।” वह बैठ गया; और राजा ने उससे कहा, “हे हसन, सभी अमीरों ने तुम्हारे पक्ष में निवेदन किया है और मेरे बाद तुम्हें अपना राजा बनाने के लिए सहमत हुए हैं, और मैं इस मामले को निपटाने के लिए अपने जीवनकाल में तुम्हारा राज्याभिषेक करना चाहता हूँ।” लेकिन इस पर हसन उठे और बादशाह के सामने ज़मीन चूमते हुए बोले, “हे महाराज, बेशक अमीरों में मुझसे बड़ा और ऊँचा ओहदा रखने वाला एक है; इसलिए मुझे इस मामले से मुक्त कर दीजिए।” सभी अमीरों ने कहा, “हम यही चाहते हैं कि आप ही हमारे राजा बनें।” उन्होंने उनसे कहा, “मेरे पिता मुझसे बड़े हैं, और मैं और मेरे पिता एक ही हैं, इसलिए मुझे उनसे ऊपर उठाना उचित नहीं है।” लेकिन उनके पिता ने उत्तर दिया, “मैं केवल उसी बात को स्वीकार करता हूँ जिसे मेरे भाई स्वीकार करते हैं, और उन्होंने तुम्हें स्वीकार किया है और तुम्हें राजा बनाने के लिए सहमति दी है; तुम बादशाह के आदेश का और अपने भाइयों के आदेश का विरोध न करो।” हसन ने बादशाह और अपने पिता के प्रति विनम्रतापूर्वक अपना सिर ज़मीन की ओर झुका लिया। तब बादशाह ने उनसे पूछा, “क्या तुम उसे स्वीकार करते हो?” उन्होंने उत्तर दिया, “हाँ, हम उसे स्वीकार करते हैं।” और उन्होंने गवाही के तौर पर कुरान का पहला अध्याय सात बार पढ़ा। तब बादशाह ने कहा, “हे कदी, इन अमीरों की ओर से एक कानूनी प्रमाण लिखो कि वे मेरी बेटी के पति हसन को सुल्तान के रूप में स्वीकार करने के लिए सहमत हो गए हैं, और

वह उनका पुत्र होगा।”

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.50%** है।

काहिरा के अली की कहानी। 567 में, अली ने राजा बनने का आदेश दिया। उन्होंने इस आशय का प्रमाण पत्र लिखा और उस पर हस्ताक्षर किए, जब सभी ने उन्हें राजा के रूप में ताज पहना दिया। राजा ने भी ऐसा ही किया और उन्हें राज्य के सिंहासन पर बैठने का आदेश दिया। इसके बाद, सभी उठे और वज़ीर के पुत्र राजा हसन के हाथों को चूमा और उन्हें सम्मान दिया; उस दिन उन्होंने प्रशंसनीय ढंग से सत्ता का प्रयोग किया और राज्य के उच्चाधिकारियों को भव्य सम्मान वस्त्र प्रदान किए। फिर दरबार समाप्त हुआ और हसन अपनी पत्नी के पिता के पास गए और उनके हाथों को चूमा; और उन्होंने उनसे कहा, हे हसन, अपनी प्रजा के प्रति अपने आचरण में ईश्वर का भय बनाए रखना। हसन ने उत्तर दिया, हे मेरे पिता, आपके मेरे लिए किए गए प्रार्थना के द्वारा मुझे ईश्वर का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। फिर वह अपने महल में गए और उनकी पत्नी, उनकी माता और उनके आश्रितों ने उनका स्वागत किया और उनके हाथों को चूमा और उनसे कहा, आपका दिन मंगलमय हो! और उन्होंने उसे उस पदवी के लिए बधाई दी जिस पर उसे बिठाया गया था। फिर वह उठा और अपने महल से अपने पिता के महल में गया; और उन्होंने उस कृपा पर अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की जो ईश्वर ने उसे संप्रभुता प्रदान करके दी थी; और उसके पिता ने उसे ईश्वर का भय बनाए रखने और अपनी प्रजा के प्रति दयालुता से पेश आने का आदेश दिया। उसने अगली रात आनंद और प्रसन्नता में बिताई, सुबह तक; जब उसने अपनी ईश्वरीय रूप से निर्धारित प्रार्थनाएँ कीं और अपनी अंतिम प्रार्थना पूरी की,15 और दरबार में गया। सभी सैनिक और गणमान्य व्यक्ति भी वहाँ गए; और उसने लोगों के बीच

न्याय किया, दयालुता से कार्य करने का आदेश दिया और अधर्म को मना किया, और उसने शासन किया और पदच्युत किया, और पृथ्वी के अंत तक अपना अधिकार प्रयोग करता रहा; जिसके बाद दरबार अत्यंत सुखद ढंग से समाप्त हुआ, और सैनिक तितर-बितर हो गए, प्रत्येक व्यक्ति अपने मार्ग पर चला गया। फिर हसन उठा और महल में प्रवेश किया; और उसने देखा कि उसकी पत्नी के पिता की बीमारी उन पर भारी पड़ गई है; इसलिए उसने उनसे कहा, "तुम्हें कोई हानि न हो!" बूढ़े राजा ने अपनी आँखें खोलीं और उनसे कहा, "हे हसन!" उन्होंने उत्तर दिया, "हे मेरे स्वामी, मैं आपकी सेवा में हूँ।" बूढ़े राजा ने उनसे कहा, "अब मेरे जीवन का अंत निकट आ गया है; इसलिए अपनी पत्नी और उसकी माता का ध्यान रखना, और ईश्वर का भय बनाए रखना, और अपने माता-पिता के प्रति स्नेहपूर्ण आज्ञाकारिता रखना; न्याय करने वाले राजा की महिमा का आदर करना, और यह जानना कि ईश्वर न्याय और भलाई करने का आदेश देता है।" राजा हसन ने उत्तर दिया, "मैं सुनता हूँ और आज्ञा मानता हूँ।" — इसके बाद बूढ़े राजा तीन दिन तक वहीं रहे, और ईश्वर की दया में आ गए, जिनका नाम महान है! इसलिए उन्होंने उनके शरीर को दफनाने के लिए तैयार किया, उसे कफन में लपेटा, और उनके लिए चालीस दिनों के अंत तक कुरान के कुछ अंशों और पूरे कुरान का पाठ किया।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **24.51%** है।

5GS TJIK STOKY OF 'ALEE OF C All JO. • — और वज़ीर के पुत्र, राजा हसन, निरंकुश शासक बन गए। उनकी प्रजा उनसे प्रसन्न थी, और उनके सभी दिन सुखमय रहे, और उनके पिता उनके दाहिने हाथ पर मुख्य वज़ीर बने रहे, और उन्होंने अपने बाएं हाथ पर एक और वज़ीर

नियुक्त किया। उनके कार्य सुव्यवस्थित थे, और वे लंबे समय तक बगदाद के राजा रहे; उन्हें पुराने राजा की पुत्री से तीन पुत्रों का आशीर्वाद प्राप्त हुआ, और उन्होंने उनके बाद राज्य का उत्तराधिकार प्राप्त किया; और उन्होंने एक अत्यंत सुखमय और आरामदायक जीवन व्यतीत किया, जब तक कि उन पर सुखों के अंत और साथियों के वियोग का साया नहीं पड़ा। — उस शाश्वत ईश्वर की पूर्णता की स्तुति हो, जिसकी शक्ति में रद्द करना और पुष्टि करना निहित है! 16

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.26%** है।

उन्नीसवें अध्याय की टिप्पणियाँ। टिप्पणी 1. "अल-मुस्तफा" मोहम्मद के नामों में से एक है, और इसका अर्थ है "चुने हुए"। टिप्पणी 2. पैगंबर ने कहा, "जब तुममें से कोई मर जाए, तो उसे घर में मत रखो; बल्कि उसे जल्दी से उसकी कब्र तक ले जाओ।" और फिर उन्होंने कहा, "जल्दी से अर्थी उठाओ; क्योंकि यदि मृतक एक अच्छा आदमी है, तो उसे जल्दी से उठाकर उसकी कब्र तक ले जाना अच्छा है, ताकि अच्छाई को सुख मिले; और यदि मृतक एक बुरा आदमी है, तो यह एक ऐसा पाप है जिसे तुम अपने गले से उतारते हो।" टिप्पणी 3. - मृत्यु के बाद किए जाने वाले समारोह। पहले शुक्रवार की पूर्व संध्या पर, और अक्सर गुरुवार की सुबह, मृतक के परिवार की महिलाएं अपने घर में कुछ सहेलियों के साथ विलाप करती हैं। मृतक के पुरुष मित्र भी सूर्यास्त से कुछ समय पहले या बाद में घर आते हैं; और तीन या चार व्यक्तियों को पूरे कुरान का पाठ करने के लिए बुलाया जाता है। अगली सुबह, मृतक के परिवार के कुछ या सभी सदस्य, विशेषकर महिलाएं, कब्र पर जाते हैं; वे या उनके नौकर ताड़ की शाखाएँ, और कभी-कभी मीठी तुलसी, कब्र पर चढ़ाने के लिए लाते हैं। ताड़ की शाखा को कई टुकड़ों में तोड़ा जाता है, और ये टुकड़े, या केवल पत्तियाँ, कब्र पर रखी जाती हैं। अक्सर, आगंतुक अपने साथ कुछ खाद्य पदार्थ, जैसे रोटी, पैनकेक, विभिन्न प्रकार के मीठे केक, या खजूर भी लाते हैं, ताकि इस अवसर पर गरीबों में बाँट सकें। वे कुरान का पहला अध्याय पढ़ते हैं। या, यदि वे खर्च वहन कर सकते हैं, तो किसी व्यक्ति को नियुक्त करके पहले छत्तीसवाँ अध्याय, या कुरान का एक बड़ा हिस्सा पढ़वाते हैं; और कई लोग इस उद्देश्य के लिए नियुक्त पुरुषों द्वारा कब्र पर या घर में पूरे कुरान का पाठ करवाते हैं। — ये समारोह अगले दो सप्ताहों के उन्हीं दिनों में दोहराए जाते हैं > और फिर अंतिम संस्कार के बाद चालीस दिनों की पहली अवधि पूरी होने वाले या उसके

बाद आने वाले शुक्रवार की पूर्व संध्या और सुबह को भी दोहराए जाते हैं; इसलिए इस शुक्रवार को "अल-अरबईन" या "जुमात अल-अरबईन" कहा जाता है। नोट 4. यह उन उदाहरणों में से एक है जिसमें हजार और एक रातों में कॉफी का उल्लेख इस तरह से किया गया है जिसे गलत नहीं समझा जाना चाहिए; लेकिन शायद किसी नकल करने वाले द्वारा। शब्द मिश्कात अल-मसाबीह, खंड 1, पृष्ठ 387। 2 वही, पृष्ठ 374। II. 3 फी उत्पत्ति, 1. 3. 4 डी

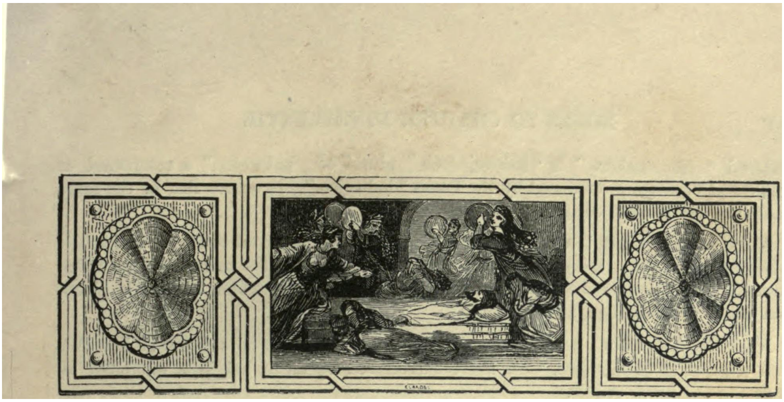

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.59%** है।

अध्याय उन्नीसवें के लिए 570 टिप्पणियाँ। "कॉफी बनाने वाले" के लिए "कहवेजेयेह" का अनुवाद "कहवेजी" है, जो अरबी और तुर्की का संयुक्त शब्द है, जिसका उच्चारण तुर्क "कहवेजी" करते हैं। यह ब्रेस्लाउ संस्करण में भी उसी अंश में आता है। टिप्पणी 5. एर-रद्दाह नील नदी में लगभग ढाई मील लंबा एक बहुत ही रमणीय द्वीप है, जो काहिरा के पास स्थित है; यह उस शहर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। इसके नाम का अर्थ "उद्यान" आदि है। नीलमापी इसके दक्षिणी छोर पर है, जिसका एक दृश्य पृष्ठ 550 पर दिए गए चित्रों में से एक से लिया गया है। टिप्पणी 6. "होश" शब्द का सामान्य अर्थ घर का आंगन होता है; लेकिन इसका

प्रयोग अक्सर, जैसा कि इस मामले में है, निम्न वर्ग के लोगों द्वारा आबाद, साधारण आवासों से घिरे एक आंगन के लिए किया जाता है। टिप्पणी 7. बूलक काहिरा का प्रमुख बंदरगाह है। इसकी स्थापना आठवीं शताब्दी (या हमारे युग की चौदहवीं शताब्दी) में हुई थी और यह एक महत्वपूर्ण शहर बन गया था। जिस मैदान पर यह स्थित है, वह नील नदी के मार्ग में क्रमिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप बना, जो पहले काहिरा के पश्चिमी किनारे के बहुत पास बहती थी। टिप्पणी 8. दिम्यात वह शहर है जिसे हम आमतौर पर दमिएटा कहते हैं। आधुनिक मिस्रवासी आमतौर पर इसका उच्चारण दुमयात करते हैं। टिप्पणी 9. अध्याय 11 की टिप्पणी 48 देखें। टिप्पणी 10. एक तख्तरावन, जिसका वर्णन अध्याय 8 की टिप्पणी 8 में किया गया है। टिप्पणी 11. "अक्कम" और "फर्राश" शब्दों की व्याख्या अध्याय 11 की टिप्पणी 28 और अध्याय 10 की टिप्पणी 16 में की गई है। "प्रकाश वाहक" से तात्पर्य उन पुरुषों से है जो वर्णित प्रकार का मशाल धारण करते हैं। अध्याय 13 का नोट 2। नोट 12. अध्याय 3 का नोट 8 देखें। नोट 13. "होस्न अल-वुजूद" का अर्थ है "संसार की सुंदरता"। अध्याय 18 का नोट 6 देखें। नोट 14. "उलेमा" "आलिम" का बहुवचन है, जिसका अर्थ है विज्ञान या विद्वता का ज्ञाता, लेकिन यह विशेष रूप से विधि के विद्वान के लिए प्रयोग किया जाता है। यूरोपीय लेखक आमतौर पर एकवचन के लिए इस उपाधि के बहुवचन रूप का प्रयोग करते हैं। नोट 15. अध्याय 10 का नोट 18 देखें। नोट 16. इस कहानी के बाद एक उपाख्यान है, जिसका अनुवाद मैं यहाँ दे रहा हूँ। एक तीर्थयात्री और एक विद्वान की कहानी। ऐसा कहा जाता है कि तीर्थयात्रियों में से एक व्यक्ति लंबी नींद सो गया, और जब वह जागा तो उसे अन्य तीर्थयात्रियों का कोई निशान नहीं मिला। इसलिए वह उठा और आगे बढ़ गया; लेकिन वह रास्ते से भटक गया, और वह तब तक चलता

रहा जब तक उसने एक तम्बू और उसके दरवाजे पर एक बूढ़ी औरत को नहीं देखा। और उसने देखा कि उसके पास एक कुत्ता सो रहा है। वह तम्बू के पास गया, बूढ़ी औरत को प्रणाम किया और उससे कुछ खाने की भीख मांगी; इस पर उसने उससे कहा, उस घाटी में जाओ और जितने सांप तुम्हारे लिए पर्याप्त हों, उतने पकड़ लो, ताकि मैं उनमें से कुछ तुम्हारे लिए खरीद सकूँ। आदमी ने उत्तर दिया, मैं सांप पकड़ने की हिम्मत नहीं करता, और मैंने उन्हें कभी नहीं खाया है। तब बूढ़ी औरत ने कहा, मैं तुम्हारे साथ चलूँगी और उनमें से कुछ पकड़ लूँगी, तुम डरो मत। फिर वह उसके साथ चली गई, और कुत्ता भी उसके पीछे-पीछे गया, और उसने जितने सांप पर्याप्त थे, उतने पकड़ लिए और उनमें से कुछ को भूनने लगी। तीर्थयात्री खाने से खुद को रोक नहीं सका; क्योंकि उसे भूख और कमजोरी का डर था: इसलिए उसने उन सांपों को खा लिया। इसके बाद, प्यास लगने पर उसने बूढ़ी औरत से पीने के लिए पानी मांगा; और उसने उससे कहा, झरने पर जाओ और पानी पी लो। तदनुसार वह झरने पर गया; लेकिन वह उसका पानी कड़वा लगा; फिर भी वह उसे पीने से खुद को रोक नहीं सका।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.57%** है।

प्यास की तीव्रता के कारण उसका पानी अत्यधिक कड़वा था। इसलिए उसने पानी पिया और फिर उस बूढ़ी औरत के पास लौटकर उससे कहा, "हे बूढ़ी औरत, मुझे तुझ पर आश्चर्य होता है, और इस स्थान पर तेरे रहने पर, इस भोजन से अपना पेट भरने पर, और इस पानी को पीने पर भी।" बूढ़ी औरत ने पूछा, "तो फिर तेरा देश कैसा है?" उसने उत्तर दिया, "निःसंदेह हमारे देश में विशाल और आलीशान घर हैं, पके और स्वादिष्ट फल हैं, मीठा पानी प्रचुर मात्रा में है, उत्तम भोजन है, वसायुक्त मांस है,

असंख्य भेड़ें हैं, और हर अच्छी चीज़ है, और ऐसी आशीषें हैं जिनका वर्णन केवल उस स्वर्ग में है जिसका वर्णन ईश्वर (जिसका नाम महान हो!) ने अपने धर्मी सेवकों के लिए किया है।" बूढ़ी औरत ने उत्तर दिया, "यह सब मैंने सुना है; लेकिन मुझे बताइए, क्या आपके यहाँ कोई ऐसा सुल्तान है जो आप पर शासन करता है, और अपने शासन में आप पर अत्याचार करता है; और जो आप में से किसी के अपराध करने पर उसकी संपत्ति छीन लेता है और उसे नष्ट कर देता है?" और कौन चाहेगा कि तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाल दे और तुम्हारा पूरी तरह से सफाया कर दे? उस आदमी ने उससे कहा, ऐसा कभी-कभी होता है। और बूढ़ी औरत ने जवाब दिया, अगर ऐसा है, तो अल्लाह की कसम, वह स्वादिष्ट भोजन, सुरुचिपूर्ण जीवन और वे सुखदायक आराम, अत्याचार और ज़ुल्म के साथ मिलकर घातक ज़हर हैं; और हमारा भोजन, सुरक्षा के साथ मिलकर, एक लाभकारी औषधि है। क्या तुमने नहीं सुना कि इस्लाम के बाद सबसे उत्तम वरदान सुरक्षा और स्वास्थ्य हैं।4 अब ये सुल्तान के न्याय, जो इस धरती पर ईश्वर का प्रतिनिधि है, और उसकी अच्छी नीति के माध्यम से हो सकते हैं। पुराने समय के सुल्तान सबसे कम भयावहता से पहचाने जाना पसंद करते थे; क्योंकि जब उनकी प्रजा उन्हें देखती थी, तो वे उनसे डरती थीं: लेकिन इस युग का सुल्तान सबसे उत्तम नीति और अत्यधिक भयावहता से पहचाने जाना पसंद करता है; क्योंकि अब के लोग पुराने दिनों के लोगों जैसे नहीं हैं। हमारा यह युग निंदनीय और अत्यंत विपत्तिपूर्ण लोगों का युग है; क्योंकि वे मूर्खता और कठोर हृदय के लिए जाने जाते हैं, और घोर घृणा और शत्रुता पर तुले रहते हैं। इसलिए, यदि सुल्तान (अल्लाह, जिसका नाम महान है, हमारा आश्रय हो!) उनके बीच कमजोर हो, या कूटनीति और क्रूरता से युक्त न हो, तो निःसंदेह यही देश के विनाश का कारण होगा। और कहावतों में से एक यह है: - सुल्तान का

सौ वर्षों का अत्याचार, एक वर्ष के लिए भी प्रजा द्वारा एक-दूसरे पर अत्याचार करने से बेहतर है। - और जब प्रजा अत्याचार करती है, तो अल्लाह उन पर एक अत्याचारी सुल्तान और हिंसक राजा को नियुक्त कर देता है। इस प्रकार इतिहास में वर्णित है कि एक दिन यूसुफ के पुत्र अल-हज्जाज5 के पास एक याचिका भेजी गई, जिसमें लिखा था, अल्लाह से डरो, और अल्लाह के सेवकों पर हर प्रकार का अत्याचार मत करो। और जब उसने याचिका पढ़ ली, तो वह मंच पर चढ़ गया (और वह बहुत वाक्पटु था), और उसने कहा, हे लोगों, निश्चय ही परमेश्वर (जिसका नाम महान हो!) ने तुम्हारे कर्मों के कारण मुझे तुम पर नियुक्त किया है; और यदि मैं मर जाऊं, तो भी तुम इन दुष्ट कर्मों के उत्पीड़न से मुक्त नहीं हो पाओगे; क्योंकि परमेश्वर (जिसका नाम महान हो!) ने सृष्टि की है। * निम्नलिखित शब्द कथावाचक के प्रतीत होते हैं। अध्याय 10 के नोट 140 देखें।

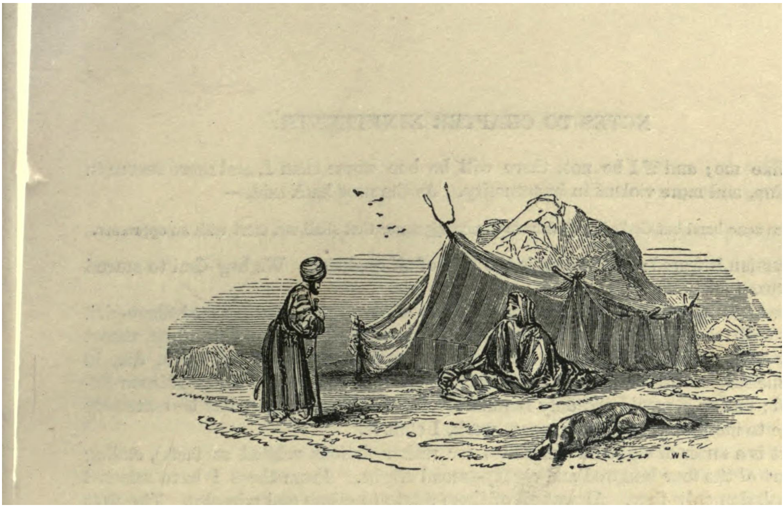

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.78%** है।

अध्याय उन्नीसवें के लिए 572 टिप्पणियाँ। मेरे जैसे अनेक हैं; और यदि

मैं नहीं, तो मुझसे भी बदतर कोई होगा, जो अत्याचार में अधिक कठोर और उग्र स्वभाव का होगा। जैसा कि कवि ने कहा है, — ऐसा कोई हाथ नहीं है जिस पर ईश्वर का हाथ न हो, और न ही कोई अत्याचारी है जिसका सामना किसी अत्याचारी से न हो। — अत्याचार से भय होता है; परन्तु न्याय सर्वोपरि है। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह हमारी स्थिति में सुधार करे। [उपरोक्त उपाख्यान के बाद विद्वान दासी तवद्दुद की कहानी है, जो चार सौ 62वीं रात के एक भाग के साथ समाप्त होती है। यह कहानी लगभग पूरी तरह से धर्म आदि में तवद्दुद के गहन ज्ञान के प्रदर्शन पर आधारित है, जिसमें उसने हारून एर काशीद के समक्ष एक परीक्षा में सबसे प्रतिष्ठित प्रोफेसरों को भी पीछे छोड़ दिया था; और चूंकि इसके लिए न केवल एक विस्तृत व्याख्या की आवश्यकता होगी, बल्कि वर्तमान कृति के अधिकांश पाठकों के लिए यह अत्यंत थकाऊ भी होगा, इसलिए मैं इसे छोड़ रहा हूँ।] इसके बाद अठारह उपाख्यानों (या यूँ कहें कि तथ्यों के रूप में वर्णित काल्पनिक कथाओं) की एक श्रृंखला है, जो चार सौ बयासीवीं रात के एक भाग के साथ समाप्त होती है। इनमें से मैंने अनुवाद के लिए केवल चार का चयन किया है। लगभग सभी उपाख्यान संतों और चमत्कारों से संबंधित हैं। इनमें से जिसका मैं अनुवाद कर रहा हूँ, मूल पाठ में इसी प्रकार के दो उपाख्यानों से पहले है।] एक अत्याचारी राजा और मृत्यु का दूत। इस्राएल के वंशजों के राजाओं में से एक अत्याचारी राजा एक दिन अपने सिंहासन पर बैठा था, और उसने महल के द्वार से प्रवेश करने वाले एक व्यक्ति को देखा, जिसका रूप-रंग घृणित और भयानक था। राजा उसके अचानक प्रवेश से काँप उठा और उसके रूप-रंग से भयभीत हो गया; और वह उसके सामने उछल पड़ा और बोला, हे मनुष्य, तू कौन है? तुझे मुझ पर आक्रमण करने की अनुमति किसने दी? और तुझे मेरे निवास पर आने का आदेश किसने दिया? उसने उत्तर

दिया, “स्वर्ग के स्वामी ने मुझे आदेश दिया है, और कोई मुझे रोक नहीं सकता, न ही मुझे राजाओं के पास जाने के लिए अनुमति की आवश्यकता है, न ही मैं किसी सुल्तान के शासन से डरता हूँ, न ही पहरेदारों की भीड़ से: मैं वह हूँ जिसे कोई अत्याचारी नहीं रोक सकता, और कोई भी मेरी पकड़ से बच नहीं सकता: मैं सुखों का अंत करने वाला और साथियों को अलग करने वाला हूँ।” जब राजा ने ये शब्द सुने, तो वह मुँह के बल गिर पड़ा, उसके शरीर में कंपकंपी दौड़ गई, और वह बेहोश होकर गिर पड़ा; और होश में आने पर उसने कहा, “क्या तुम मृत्यु के दूत हो?” उसने उत्तर दिया, “हाँ।” और राजा ने कहा, “मैं अल्लाह की कसम खाकर तुमसे एक दिन की मोहलत मांगता हूँ, ताकि मैं अपने पाप की क्षमा मांग सकूँ, अपने प्रभु से क्षमा माँग सकूँ, और मेरे खजाने में जो धन है उसे उसके मालिकों को लौटा दूँ, ताकि मुझे उसके हिसाब-किताब की पीड़ा और उसके कारण मिलने वाली सजा से न जूझना पड़े।” लेकिन मृत्यु के दूत ने उत्तर दिया, "ऐसा कभी न हो! मेरी यह इच्छा पूरी नहीं हो सकती। मैं तुम्हें कैसे मोहलत दे सकता हूँ, जबकि तुम्हारे जीवन के दिन गिने-चुने हैं, तुम्हारी साँसें सीमित हैं और तुम्हारे क्षण निश्चित और लिखे हुए हैं?" राजा ने कहा, "मुझे एक घंटे की मोहलत दे दो।" उसने उत्तर दिया, "वह घंटा तो हिसाब में है ही, और तुम्हारी लापरवाही में वह बीत चुका है, और तुम्हारी बेपरवाही में ही समाप्त हो गया है। तुमने अपनी साँसों की संख्या पूरी कर ली है, बस एक साँस बाकी है।" राजा ने कहा, "जब मुझे मेरी कब्र में ले जाया जाएगा, तो मेरे साथ कौन होगा?" उसने उत्तर दिया, "तुम्हारे साथ तुम्हारे कर्मों के सिवा कुछ नहीं होगा।" राजा ने उत्तर दिया, "मैंने कोई कर्म नहीं किया है।" मृत्यु के दूत ने कहा, "निस्संदेह तुम्हारा ठिकाना आग में होगा; और तुम्हारा गंतव्य सर्वशक्तिमान के क्रोध का सामना करना होगा।" — फिर उसकी आत्मा पर वशीकरण हुआ; वह

अपने सिंहासन से गिर पड़ा और ज़मीन पर जा गिरा; और उसके राज्य के लोगों में शोर मच गया; उनकी आवाज़ें बुलंद हो गईं, और उनका रोना-धोना ज़ोर-ज़ोर से सुनाई देने लगा; और यदि वे जानते कि उसे अपने प्रभु से कितना क्रोध सहना पड़ेगा, तो उनका रोना और विलाप और भी तीव्र और व्यापक होता। (इस खंड के पृष्ठ i~j(i) पर टिप्पणी देखें।)

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.04%** है।

उन्नीसवें अध्याय के नोट्स। 573 धर्मपरायणता और परिश्रम के गुण: इस्राएलियों में एक भला आदमी था, जो ईश्वर की उपासना में लगन से लगा रहता था और सांसारिक सुखों से विरक्त रहता था, उन्हें अपने हृदय से त्याग देता था; और उसकी एक पत्नी थी जो उसके इस कार्य में उसकी सहायता करती थी और सदा उसकी आज्ञा मानती थी। वे दिनभर ट्रे और पंखे बनाकर अपना जीवन यापन करते थे; और दिन के अंत में, वह अपने हाथों में बनाई हुई वस्तुएँ लेकर गलियों और सड़कों पर घूमता था, उन्हें बेचने के लिए खरीदार की तलाश करता था; और वे निरंतर उपवास करते रहे।1' अब एक दिन9 वह व्यक्ति हमेशा की तरह बाहर निकला, तभी उसके साथ एक ऐसी घटना घटी जिसने उसे अपने प्रभु की अवज्ञा से बचने के लिए एक ऊँचे भवन की छत से कूदने के लिए विवश कर दिया: परन्तु ईश्वर ने उसके पास एक दूत भेजा, जिसने उसे अपने पंखों पर उठाकर सुरक्षित रूप से जमीन पर उतार दिया, उसे कोई चोट नहीं आई। और जब वह जमीन पर पहुँचा, तो उसने ईश्वर (जिसकी शक्ति और महिमा का वर्णन किया जाता है!) की स्तुति की, जिसने उसे सुरक्षा प्रदान की थी, और उस दया के लिए जो उसने उस पर बरसाई थी, और बिना किसी बाधा के अपनी पत्नी के पास लौट आया। वह उससे बहुत दिनों से दूर था, और अपने साथ कुछ भी नहीं लाया था: इसलिए उसने

उससे उसकी देरी का कारण, उसके हाथ में लिए हुए टाइलों के बारे में, और उसने उनके साथ क्या किया, और वह बिना कुछ लिए कैसे लौट आया, पूछा। तब उसने उसे अपने साथ घटी परीक्षा के बारे में बताया, और यह भी बताया कि उसने उस स्थान से कूदकर आत्महत्या कर ली थी, और ईश्वर ने उसे बचा लिया था। और उसकी पत्नी ने कहा, "प्रभु की स्तुति हो जिसने तुझे प्रलोभन से बचाया और तुझे विपत्ति से बचाया! फिर उसने कहा, 'हे पुरुष, हमारे पड़ोसी तो हमेशा से देखते आए हैं कि हम हर रात चूल्हा जलाते हैं, और अगर वे आज रात हमें बिना आग के देखें, तो वे जान जाएँगे कि हम दरिद्र हैं। ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का अर्थ है अपनी दरिद्रता को छुपाना, और आज रात के उपवास को कल के उपवास के साथ मिलाकर रखना, और इसे ईश्वर की सेवा में व्यतीत करना, जिसका नाम महान है!'" तदनुसार वह उठी और चूल्हे के पास गई, उसमें लकड़ियाँ भरीं और अपने पड़ोसियों को धोखा देने के लिए उसमें आग लगा दी; और ये आयतें पढ़ीं: - "मैं अपनी इच्छाओं और दुखों को छुपाऊँगी, और अपने पड़ोसियों को धोखा देने के लिए आग जलाऊँगी। मैं अपने प्रभु के विधान को स्वीकार करती हूँ: शायद वह मेरा समर्पण देखकर मुझे स्वीकार कर ले।" इसके बाद वह और उसका पति उठे, वज़ू किया और नमाज़ पढ़ने लगे। तभी उनकी एक पड़ोसी ने चूल्हा जलाने की इजाज़त माँगी। उन्होंने उससे कहा, “चूल्हे पर जाओ और जो चाहो करो।” जब वह औरत चूल्हे के पास आग लेने पहुँची, तो उसने पुकारा, “अमुक स्त्री!” (उस जगह की स्त्री का नाम लेते हुए) “जलने से पहले अपनी रोटी ले लो।” तब उसने अपने पति से कहा, “क्या तुमने सुना इस स्त्री ने क्या कहा?” उसने उत्तर दिया, “उठो और देखो।” तब वह उठी और चूल्हे के पास गई, और देखा कि वह उत्तम सफेद रोटी से भरा हुआ था; उसने रोटी के टुकड़े लिए और अपने पति के पास जाकर, ईश्वर (जिसकी शक्ति और महिमा है!) का

धन्यवाद किया, जिसने उसे इतनी कृपा और अनुग्रह प्रदान किया था। उन्होंने रोटी खाई, पानी पिया और ईश्वर की स्तुति की, जिसका नाम महान है! तब उस स्त्री ने अपने पति से कहा, “आओ, हम ईश्वर से प्रार्थना करें (जिनका नाम महान है!) : शायद वह हमें कुछ ऐसा अनुग्रह प्रदान करें जिससे हम जीविका कमाने के लिए आवश्यक कष्टों और काम की थकान से मुक्त हो जाएँ, और हमें उनकी उपासना में लीन होने और “पहले वाले सरकंडे आदि से बने होते हैं; बाद वाले, “दो त्यौहार,” जब उपवास करना वर्जित होता है; ताड़ के पत्तों या पंखों से बने होते हैं। और अन्य उदाहरणों का उल्लेख इतिहासकारों द्वारा किया गया है। अर्थात्, प्रतिदिन; केवल रात में भोजन करना।” •> मेरे मूल पाठ का एक भाग मैं यहाँ छोड़ रहा हूँ। मुझे काहिरा में एक व्यक्ति याद है जिसने ऐसा किया था, सिवाय

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.25%** है।

अध्याय उन्नीसवें के लिए 574 टिप्पणियाँ। उन्होंने उत्तर दिया, "ठीक है।" तब उस पुरुष ने अपने प्रभु से प्रार्थना की, और स्त्री ने उसकी प्रार्थना पर 'आमीन' कहा; और देखो, छत फट गई, और उसमें से एक माणिक्य नीचे गिरा, जिसने अपने प्रकाश से कमरे को रोशन कर दिया; जिसके बाद वे कृतज्ञता और स्तुति में और अधिक बढ़ गए। वे उस माणिक्य से बहुत प्रसन्न हुए, और उन्होंने उतनी प्रार्थनाएँ कीं जितनी ईश्वर (जिनका नाम महान हो!) ने चाहा।10 फिर, रात के अंत में, वे सो गए; और स्त्री ने अपने सपने में देखा मानो वह स्वर्ग में प्रवेश कर गई हो, और उसने कई मंचों को क्रम से व्यवस्थित और कुर्सियाँ सजी हुई देखीं; जिसके बाद उसने कहा, "ये मंच क्या हैं, और ये कुर्सियाँ क्या हैं?" उसे उत्तर दिया गया, "ये नबियों के मंच हैं, और ये धर्मी और भले लोगों की कुर्सियाँ हैं।"

और उसने कहा, "मेरे पति की कुर्सी कहाँ है?" उसे उत्तर दिया गया, "यह है।" और उसने उसकी ओर देखा, और देखा कि उसके एक किनारे में एक छेद था। उसने पूछा, यह छेद क्या है? उसे उत्तर मिला, यह उस माणिक का छेद है जो तुम्हारे घर की छत से तुम पर गिरा था। — तब वह अपने पति की कुर्सी के टूटे होने पर रोते-बिलखते जाग उठी; और उसने कहा, हे पुरुष, अपने प्रभु से प्रार्थना करो कि वह इस माणिक को उसके स्थान पर वापस रख दे; क्योंकि अल्प दिनों में भूख और गरीबी सहना तुम्हारे उच्च पदस्थ लोगों के बीच तुम्हारी कुर्सी में छेद होने से कहीं अधिक सूक्ष्म बात होगी। और उस पुरुष ने अपने प्रभु से प्रार्थना की, और देखो, माणिक उनकी आँखों के सामने छत पर उड़ गया: और वे अपनी गरीबी और भक्ति में तब तक बने रहे जब तक कि वे उस ईश्वर से नहीं मिले, जिसकी शक्ति और महिमा का बखान किया जाता है। एक मुस्लिम महिला और एक ईसाई युवती की कहानी। अमीरुल मोमिनीन, उमर बिन अल-खत्ताब ने सीरिया में शत्रु के विरुद्ध मुसलमानों की सेना भेजी और उन्होंने शत्रु के एक किले को घेर लिया। उन मुसलमानों में दो भाई थे, जिन्हें ईश्वर ने शत्रु के विरुद्ध साहस और प्रखरता प्रदान की थी। इस प्रकार उस किले के सरदार ने अपने सहायक सैनिकों और अपने वीर सैनिकों से कहा, “यदि ये दोनों मुसलमान बंदी बना लिए जाएँ या मारे जाएँ, तो मैं शेष मुसलमानों के विरुद्ध तुम्हारा सामना करने के लिए पर्याप्त हूँ।” उन्होंने इन दोनों को पकड़ने के लिए जाल बिछाना और उनके विरुद्ध रणनीति अपनाना बंद नहीं किया। उन्होंने घात लगाकर हमला किया और छिपने के स्थानों में सैनिकों की संख्या बढ़ाते गए, यहाँ तक कि एक मुसलमान बंदी बना लिया गया और दूसरा शहीद हो गया। इस प्रकार बंदी मुसलमान को उस किले के सरदार के पास ले जाया गया। और जब दूसरे ने उसे देखा, तो उसने कहा, “निःसंदेह इस आदमी का वध करना एक बुराई होगी, और

मुसलमानों के पास उसका लौटना एक विपत्ति होगी। मेरी इच्छा है कि वह ईसाई धर्म अपना ले, ताकि वह हमारा सहायक और मददगार बन सके।" तब उसके एक बतरीक ने कहा, "हे अमीर, मैं उसे बहकाऊँगा ताकि वह अपने धर्म से विमुख हो जाए; क्योंकि अरब स्त्रियों के बहुत शौकीन होते हैं, और मेरी एक बेटी है जो बेहद सुंदर और आकर्षक है: इसलिए यदि वह उसे देखेगा, तो वह उसके प्रति आकर्षित हो जाएगा।" तब अमीर ने कहा, "वह तुम्हारे हवाले है: तो उसे ले चलो।" तदनुसार, वह उसे अपने घर ले गया, और उस युवती को ऐसे वस्त्र पहनाए जिससे उसकी सुंदरता और आकर्षण और बढ़ गया; इसके बाद, उसने उस आदमी को घर में ले जाकर भोजन मंगवाया; और ईसाई युवती उसके सामने एक दासी की तरह खड़ी रही, मानो वह अपने स्वामी की सेवा कर रही हो और उसके किसी आदेश का पालन करने की प्रतीक्षा कर रही हो। और जब मुसलमान ने देखा कि उसके साथ क्या हुआ है, तो उसने ईश्वर (जिसका नाम महान है) की शरण लेकर पाप से खुद को बचाया; उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने प्रभु की उपासना और कुरान पढ़ने में लीन हो गया। अब उसकी आवाज बहुत अच्छी थी और उसे गाने में वह माहिर था; और ईसाई युवती को उससे तीव्र प्रेम हो गया और वह उस पर पूरी तरह मोहित हो गई; और यह 10 यानी, बहुत से। एक ऐसे व्यक्ति के लिए जिसने दस हजार सैनिकों की कमान संभाली थी। 11 "बतरीक," या "बितरीक," ("पैट्रियस" से) को "बतरीक" या "बतराक" के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए, जो एक उपाधि है जो पहले अरबों द्वारा एक ईसाई सेनापति को दी जाती थी; इजियामूस के अनुसार,

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.36%** है।

उन्नीसवें अध्याय की टिप्पणियाँ। 575 स्थिति सात दिनों तक बनी रही,

जब तक कि युवती ने कहा, काश वह मुझे इस्लाम अपनाने की अनुमति दे दे! और जब उसका धैर्य टूट गया और उसका हृदय संकुचित हो गया, तो वह उसके सामने गिर पड़ी और बोली, मैं तुम्हारे धर्म की कसम खाकर तुमसे विनती करती हूँ कि मेरी बात सुनो! उसने उत्तर दिया, और तुम क्या कहना चाहती हो? उसने उत्तर दिया, मुझे इस्लाम अपनाने का प्रस्ताव दो। तो उसने उसे प्रस्ताव दिया और वह मुसलमान बन गई। फिर उसने स्वयं को पवित्र किया, और उसने उसे नमाज़ पढ़ना सिखाया; और जब उसने ऐसा कर लिया, तो उसने कहा, हे मेरे भाई, वास्तव में मैंने तुम्हारे कारण और तुम्हें अपने निकट रखने की इच्छा से इस्लाम अपनाया है। उसने उत्तर दिया, इस्लाम विवाह की अनुमति नहीं देता जब तक कि दो वैध गवाह, दहेज और एक अभिभावक न हों;12 और मुझे न तो दो गवाह मिले, न अभिभावक, न दहेज; लेकिन यदि तुम हमारे इस स्थान से निकलने का कोई उपाय निकालो, तो मुझे मुसलमानों के निवास स्थान तक पहुँचने की आशा है, और मैं तुमसे यह वचन लूँगा कि मैं तुम्हारे सिवा किसी और मुस्लिम स्त्री से विवाह नहीं करूँगा। तब उसने कहा, मैं इसके लिए कोई उपाय ढूँढ़ लूँगा। फिर उसने अपने पिता और माता को बुलाया और उनसे कहा, इस मुसलमान का हृदय कोमल हो गया है, और वह धर्म अपनाना चाहता है; और मैं उसकी इच्छा पूरी करूँगा। उसने कहा है, "ऐसा मेरे साथ उस नगर में नहीं होगा जहाँ मेरे भाई की हत्या हुई थी; लेकिन यदि मैं वहाँ से निकल जाऊँ, ताकि मेरा मन प्रसन्न हो जाए, तो मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार करूँगा। यदि तुम मुझे उसके साथ किसी दूसरे नगर में भेज दो, तो कोई हानि नहीं होगी; क्योंकि मैं तुम्हारी और बादशाह की इस इच्छा की ज़मानत हूँ।" तब उसके पिता अपने अमीर के पास गए और उन्हें यह सूचना दी; और वह इससे बहुत प्रसन्न हुआ, और उसने उसे अपने साथ उस नगर में भेजने का आदेश दिया जिसका उसने उल्लेख

किया था। तदनुसार वे चले गए, और जब वे नगर पहुँच गए, और दिन भर वहीं रहे, और रात का अंधेरा उन पर छा गया, तो वे वहाँ से चले गए, और अपने मार्ग पर चल पड़े, जैसा कि एक कवि ने कहा है, - उन्होंने कहा, हमारे जाने का समय निकट आ गया है। मैंने उत्तर दिया, मुझे कितनी बार जाने की धमकी दी जाएगी? मुझे बस इस वीरान भूमि को पार करना है, और मील दर मील पृथ्वी पर यात्रा करनी है। मैं अपने प्रियतम की यात्रा पर दूसरे देश की ओर चल पड़ा, मार्ग का पुत्र; मैंने अपनी इच्छा को अपना मार्गदर्शक बनाया, और वह मुझे बिना किसी अन्य मार्गदर्शक के मार्ग दिखाती है। और वे पूरी रात चलते रहे। युवक एक तेज़ घोड़े पर सवार हुआ और उसे अपने पीछे बिठाया; और वह सुबह होने तक लगातार चलता रहा। सुबह होते ही वह उसे लेकर रास्ते से मुड़ा और उसे नीचे उतारा; और उन्होंने स्नान किया और सुबह की नमाज़ पढ़ी। लेकिन जब वे इस काम में लगे हुए थे, तो उन्होंने हथियारों की खड़खड़ाहट, लगाम और लगाम की झनझनाहट, लोगों की आवाज़ें और घोड़ों के खुरों की आवाज़ सुनी। तब उसने उससे कहा, "हे फलाँ (उसका नाम लेते हुए), यह ईसाइयों की एक टुकड़ी है जो हमारा पीछा कर रही है और हमें पकड़ लिया है; अब हमारा क्या सहारा होगा, जब घोड़ा इतना थक गया है कि एक कदम भी नहीं चल सकता?" लेकिन उसने उत्तर दिया, "धिक्कार है तुम पर! क्या तुम घबराए हुए हो?" उसने कहा, "हाँ।" - "तो फिर," उसने पूछा, "तुम्हारे प्रभु की शक्ति कहाँ है, जिसके बारे में तुमने मुझे बताया था, और जो लोग उसकी सहायता चाहते हैं, उनके लिए उसकी सहायता कहाँ है? आओ, हम स्वयं को विनम्र करें।" उसके सामने झुककर उससे प्रार्थना करो: शायद वह हमें अपनी सहायता प्रदान करे और हमें अपनी कृपापूर्ण सुरक्षा में भागीदार बनाए; उसकी पूर्णता की प्रशंसा हो और उसका नाम महान हो! — और उसने उत्तर दिया, अल्लाह की कसम, जो

तुमने कहा है वह उत्तम है! तदनुसार वे ईश्वर (जिसका नाम महान है!) के समक्ष स्वयं को विनम्र करने लगे, और उसने ये आयतें पढ़ीं: — निश्चय ही मुझे हर घंटे तेरी सहायता की आवश्यकता है, और चाहे मेरे सिर पर ताज रखा हो, मुझे तेरी सहायता की आवश्यकता होगी। तू मेरी सबसे बड़ी आवश्यकता है, और यदि मेरे हाथ से मेरी इच्छा पूरी हो जाए, तो मेरी कोई आवश्यकता शेष नहीं रहेगी। 12 नोट 39 देखें अध्याय 4 (खंड 1, पृष्ठ 285 और 236)।

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **26.74%** है।

हे प्रभु, तू कुछ भी नहीं रोकता; तेरी उदारता की बाढ़ भरपूर और उफान पर है; परन्तु मैं अपने पाप के कारण इससे वंचित हूँ: फिर भी हे दयालु, तेरी क्षमा का प्रकाश तेजस्वी है! हे चिंता दूर करने वाले, मेरी पीड़ा दूर कर! क्योंकि तेरे सिवा कौन इस चिंता को दूर कर सकता है? और जब वह प्रार्थना कर रहा था, और युवती उसकी प्रार्थना पर 'आमीन' कह रही थी, और घोड़ों के पैरों की आहट उनके पास आ रही थी, तभी उस युवक ने अपने शहीद भाई की आवाज़ सुनी, जो कह रहा था, हे मेरे भाई, डरो मत और शोक मत करो; क्योंकि आने वाली सेना ईश्वर की सेना है, और वे उसके दूत हैं, जिन्हें उसने तुम्हारे विवाह के साक्षी के रूप में भेजा है। निःसंदेह अल्लाह ने अपने फ़रिश्तों के सामने आपकी महिमा की है, और आपको धन्य और शहीदों का प्रतिफल दिया है, और आपके लिए धरती का अनुबंध किया है, ताकि सुबह आप मदीने के पहाड़ों में हों। और जब आप खत्ताब के पुत्र उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे) से मिलें, तो मेरी ओर से उन्हें सलाम करें, और उनसे कहें, अल्लाह मुसलमानों के लिए आपको अच्छा प्रतिफल दे; क्योंकि आपने अच्छी सलाह दी है, और परिश्रम से काम किया है। — तब फ़रिश्तों ने ऊँची आवाज़ में उन्हें और

उनकी पत्नी को सलाम किया, और कहा, निःसंदेह अल्लाह (जिसका नाम महान हो!) ने आपके पिता आदम (उन पर शांति हो!) की रचना से दो हज़ार वर्ष पहले ही आपकी पत्नी का विवाह आपसे तय कर दिया था। और इस पर उन्हें आनंद, प्रसन्नता, सुरक्षा और प्रसन्नता का अनुभव हुआ; उनका आत्मविश्वास बढ़ा और धर्मपरायणों का मार्गदर्शन पुष्ट हुआ; और जब भोर हुई, तो उन्होंने सुबह की नमाज़ अदा की। उमर, अल-खत्ताब के पुत्र (अल्लाह उनसे प्रसन्न रहे!), भोर से पहले अंधेरे में सुबह की नमाज़ अदा किया करते थे; और कभी-कभी वे दो पुरुषों के साथ मस्जिद में नमाज़ पढ़ने की जगह में प्रवेश करते थे और मवेशियों के अध्याय 18 या महिलाओं के अध्याय 14 से शुरू करते थे; 14 जिस पर सोने वाला जाग जाता था, और जो वज़ू करता था वह वज़ू करता था, और जो दूर था वह भी आ जाता था, इस प्रकार पहली रकअत पूरी होने से पहले ही मस्जिद लोगों से भर जाती थी। फिर वे 33 कुरान का छठा अध्याय। एम उसी का चौथा अध्याय।

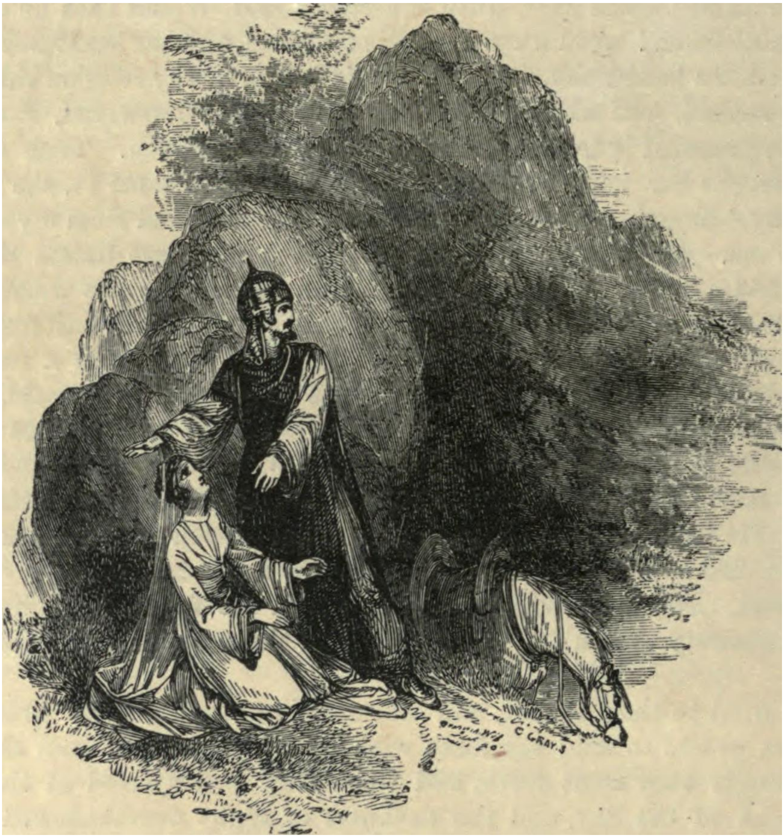

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.43%** है।

उन्नीसवें अध्याय पर टिप्पणियाँ। 577 ने दूसरी रकअत एक हल्के अध्याय के पाठ के साथ, और उसे जल्दी से किया। लेकिन उस दिन, उसने पहली रकअत में एक हल्का अध्याय जल्दी से पढ़ा, और दूसरी में भी ऐसा ही किया; और जब उसने अभिवादन किया,15 तो उसने अपने साथियों की ओर देखा और कहा, हमारे साथ बाहर आओ ताकि हम दूल्हा और दुल्हन से मिल सकें। तो उसके साथी आश्चर्यचकित हुए और उसकी बात नहीं समझ पाए; और वह आगे बढ़ा, और वे उसके पीछे-पीछे शहर के द्वार तक गए। जैसे ही उसे प्रकाश दिखाई दिया, और उसने अल-

मदीनेह के झंडे देखे, वह युवक अपनी पत्नी के साथ द्वार की ओर बढ़ा; और उमर और उसके साथी मुसलमानों ने उससे मुलाकात की और उसे सलाम किया। और जब वे शहर में प्रवेश कर गए, तो उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो!) ने दावत तैयार करने का आदेश दिया; और मुसलमान आए और भोजन किया। युवक अपनी दुल्हन के साथ अंदर गया; और परमेश्वर (जिसका नाम महान हो!) ने उसके द्वारा उसे ऐसे बच्चों का आशीर्वाद दिया जिन्होंने परमेश्वर के मार्ग में संघर्ष किया।16 और उन्होंने अपनी वंशावली को आगे बढ़ाया, क्योंकि वे उनमें गौरव महसूस करते थे; और वे अत्यंत सुखमय जीवन व्यतीत करते रहे और परम सुख का आनंद लेते रहे, जब तक कि उनके जीवन में सुखों का अंत करने वाली और साथियों को अलग करने वाली घटना नहीं आ पड़ी। ईश्वरीय न्याय। एक भविष्यवक्ता एक ऊँचे पर्वत पर भक्ति में लीन था, जिसके नीचे एक जलस्रोत बहता था; और वह दिन के समय पर्वत की चोटी पर बैठता था, ताकि लोग उसे देख न सकें। वहाँ वह परमेश्वर (जिसका नाम महान हो!) की स्तुति करता था और उन लोगों को देखता था जो जलस्रोत पर पानी पीने आते थे। एक दिन जब वह जलस्रोत की ओर देखते हुए बैठा था, तो उसने एक घुड़सवार को देखा, जो पास आया और अपने घोड़े से उतरा, अपने गले में लटकी चमड़े की थैली नीचे रखी, विश्राम किया और पानी पिया; इसके बाद वह चमड़े की थैली वहीं छोड़कर चला गया, जिसमें सोने के टुकड़े थे। और देखो, एक आदमी पानी पीने आया, उसने पैसों से भरा चमड़े का थैला लिया, पानी पिया और सुरक्षित चला गया। फिर उसके पीछे एक लकड़हारा आया, जिसकी पीठ पर लकड़ियों का भारी गट्ठा था, और वह पानी पीने के लिए झरने के किनारे बैठ गया। लेकिन देखो, पहले जिस घुड़सवार का ज़िक्र हुआ था, वह घबराया हुआ आया और उसने लकड़हारे से पूछा, “यहाँ जो चमड़े का थैला था, वह कहाँ है?” उसने

उत्तर दिया, “मुझे उसके बारे में कुछ नहीं पता।” घुड़सवार ने अपनी तलवार निकाली, लकड़हारे पर वार किया और उसे मार डाला; उसने उसके कपड़ों में तलाशी ली, पर कुछ नहीं मिला; इसलिए वह उसे वहीं छोड़कर चला गया। और उस नबी ने कहा, “हे प्रभु, एक व्यक्ति ने हज़ार सोने के सिक्के लिए, और दूसरे को अन्यायपूर्वक मार डाला गया।” लेकिन परमेश्वर ने उसे रहस्योद्घाटन द्वारा कहा, “अपनी भक्ति में लगे रहो; क्योंकि राज्य का शासन तुम्हारा काम नहीं है।” निःसंदेह इस घुड़सवार के पिता ने इस व्यक्ति के पिता की संपत्ति से एक हजार सोने के सिक्के जबरदस्ती छीन लिए थे; अतः मैंने पुत्र को उसके पिता की संपत्ति का अधिकार दे दिया है; और निःसंदेह लकड़हारे ने इस घुड़सवार के पिता की हत्या कर दी थी; अतः मैंने पुत्र को बदला लेने का अधिकार दे दिया है। — और तब उस नबी ने कहा, तेरे सिवा कोई देवता नहीं! तेरी पूर्णता की स्तुति हो! तू गुप्त बातों का सर्वज्ञ है! 17 [उपरोक्त कहानियों के चुने हुए किस्सों की श्रृंखला के आगे हसीब करीम-ए-दीन की कहानी आती है, 8 या यूँ कहें कि हसीब, बुलूकिया और जनशाह की कहानियों का एक संयोजन, जो पाँच सौ छत्तीसवीं रात को समाप्त होता है। यह उसकी प्रार्थनाओं के अंत में है। कुरान, अध्याय 18, पद 64, अध्याय 12 देखने के लिए नोट 8 देखें। धमकी देते हुए, "और [चट्टान पर आते हुए] उन्हें 16 यानी, धर्म की रक्षा के लिए, हमारे सेवकों में से एक मिला।" यह पैगंबर मूसा थे। यह कहानी 18 एल-कज़वीनी द्वारा वॉन हैमर की पुस्तक, अजैब अल-मखलूकात की प्रस्तावना में भी वर्णित है, जिसे "जमास्प" कहा जाता है। इसी तरह की एक बेहतर कहानी के लिए, जो पार्नेल की "हर्मिट" से अधिक मेल खाती है, II. 4 E

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल **27.27%** है।

अध्याय उन्नीसवें के लिए 578 टिप्पणियाँ। मुख्यतः यह अत्यंत अतिरंजित बेतुकी बातों का मिश्रण है, और मेरे विचार से, जनशाह से संबंधित भाग को छोड़कर, वर्तमान अनुवाद के कई पाठकों के लिए अत्यंत उबाऊ होगा; लेकिन यह अपने सामान्य स्वरूप और उन घटनाओं में, जिन पर यह मुख्य रूप से आधारित है, हसन अल-बसरा की कहानी के समान है, जिसे मैं इस कृति में शामिल करने का इरादा रखता हूँ। इसलिए मैं पाँच सौ सैंतीसवीं रात की ओर बढ़ता हूँ, जिससे समुद्र के एस-सिंदिबाद (प्रसिद्ध यात्री) और भूमि के एस-सिंदिबाद की कहानी शुरू होती है। जिन कहानियों को मैं इन खंडों में छोड़ रहा हूँ, उन्हें मैं रुचि या मूल्य से रहित नहीं मानता, और न ही मैं उन्हें, कुछ को छोड़कर, अंग्रेजी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने के अयोग्य मानता हूँ, यदि कुछ को संक्षिप्त किया गया हो, और अन्य में काफी परिवर्तन किए गए हों, जब बड़े अंशों को छोड़ने से वे असंगत हो जाएँगी; लेकिन भले ही उन्हें इस प्रकार संक्षिप्त और परिवर्तित किया गया हो, मुझे उन्हें इस संग्रह में शामिल करना उचित नहीं लगता, क्योंकि इस संग्रह का उद्देश्य ऐसी कहानियों को शामिल न करना है जो पुराने संस्करण की कहानियों की तुलना में रुचि में बहुत कमतर हों।] दूसरे खंड का अंत। लंदन: विलियम क्लोव्स एंड संस लिमिटेड, ड्यूक स्ट्रीट, स्टैमफोर्ड स्ट्रीट, दक्षिण-पूर्व और ग्रेट विंडमिल स्ट्रीट, पश्चिम द्वारा मुद्रित।

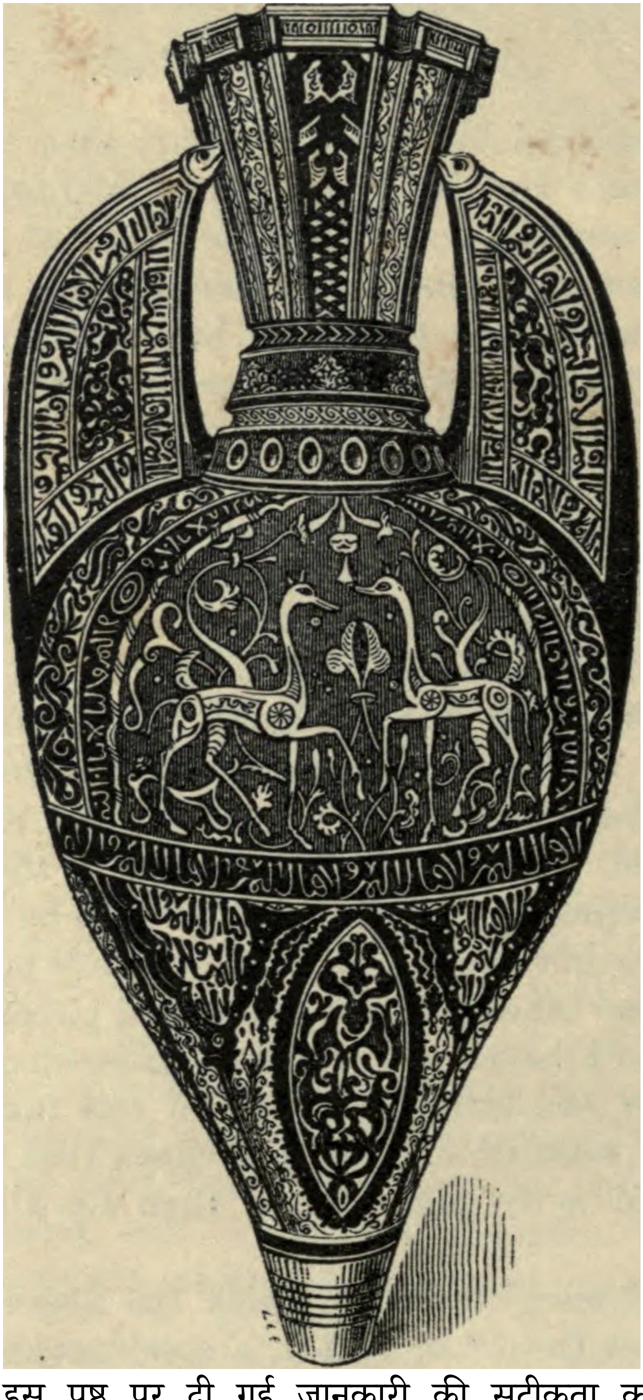

इस पृष्ठ पर दी गई जानकारी की सटीकता का अनुमान केवल

25.05% है।

PJ 7715 .L3 1912 v.2 SMC अरेबियन नाइट्स। अंग्रेज़ी। हज़ार और एक रातें; आमतौर पर कहा जाता है, अरेबियन नाइट्स 47081104